महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

( सचित्र 'अन्वयप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम् )

दयालोक प्रकाशन संस्थान

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

( सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम् )

## षष्ठः खण्डः

दशमः स्कन्धः पूर्वार्धः

टीकाकर्त्री

**श्रीमती दयाकान्ति देवी**

धर्मपत्नी—श्रीलोकमणिलाल



**दयालोक प्रकाशन संस्थान**

१४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद, २११००२

प्रकाशक—दयालोक प्रकाशन संस्थान, १४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद

विक्रमसंवत् २०४६, प्रथम संस्करण १०००

❀

प्राप्ति-स्थान
दयालोक प्रकाशन संस्थान
१४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद—२११००२

❀

मूल्य : ४०० रूपये मात्र

❀

मुद्रक—
शाकुन्तल मुद्रणालय
३४, बलराम हाउस इलाहाबाद

## नम्र निवेदन

यह हमारे संस्करण का छठा खंड श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध का पूर्वार्ध है। दशम स्कन्ध सब से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उसमें भी इसका पूर्वार्ध। पूर्वार्ध में ही भगवान् श्रीकृष्ण का पूर्णावतारत्व प्रकट किया गया है। जिसका तत्त्व न जानने के कारण कतिपय लोग भगवान् श्रीकृष्ण के चरित्र पर आक्षेप करते हैं। अतः इस पर थोड़ा प्रकाश डालना आवश्यक है।

श्रीकृष्ण पूर्णावतार थे (श्रीमद्भागवत १।३।१३) के अनुसार श्रीकृष्ण परब्रह्म के बीसवें अवतार थे, किन्तु "एते चांशकला राजन् कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्।" इस भागवत सिद्धान्त के प्रमाण से वे पूर्णावतार थे। पर ब्रह्म के स्वभाव का विरुद्ध धर्माश्रयत्व दिखलाने वाली श्रुतियाँ कहती हैं—'अणोरणीयान् महतो महीयान्।' 'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः' इत्यादि। अर्थात् परब्रह्म सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है और महान् से भी महान् है। उसके हाथ-पैर नहीं है किन्तु वह सब को पकड़ लेता है और बहुत तेजी से दौड़ता है। उसकी आँख नहीं हैं, पर वह सब को देखता है। उसके कान नहीं हैं, पर सब कुछ सुनता है। वह सब को जानता है, पर उसे कोई नहीं जानता। इत्यादि।

अब भगवान् श्रीकृष्ण के विरुद्ध धर्मों पर दृष्टिपात करें—कहाँ तो उनकी असमर्थता और अंगों की कोमलता इतनी थी कि जब वे बछड़े की पूँछ पकड़ते तो बछड़ा उन्हें कहीं से कहीं खींच ले जाता। यथा 'वत्सैरितस्तत उभावभिकृष्यमाणौ (श्रीमद्भागवत १०।८।२४) और कहाँ उनमें सामर्थ्य इतनी थी कि अनायास गोवर्धन पर्वत को उठा लिया। वे हलके इतने थे कि यशोदा जी उन्हें गोद में लेकर दूध पिलाती थी, पर उसी शैशव में भारी इतने हुए कि पूतना और तृणावर्त राक्षस को भी ले पड़े। उन्होंने ब्रह्मा जी को उसी क्षण अपने ही स्वरूप में एकत्व तथा अनेकत्व, द्विभुजत्व तथा चतुर्भुजत्व दिखलाया। इस प्रकार विरुद्धधर्माश्रयत्व जो परब्रह्म का ही चिह्न है भगवान् श्रीकृष्ण में कूट कूट कर भरा था।

परब्रह्म अपनी इच्छा से अपने में ही प्रपंच का प्रादुर्भाव करते हैं, यह ब्रह्म की पूर्ण शक्ति है। सो भगवान् कृष्ण ने भी दो बार यशोदा को अपने मुखारविन्द में तीनों लोक का दर्शन कराया। (दे० भागवत १०।७।३५–३६)। इत्यादि उदाहरणों एवं प्रमाणों से उनका पूर्णावतारत्व सिद्ध होता है।

उनकी रासलीला के सम्बन्ध में कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि यदि श्रीकृष्ण भगवान् के अवतार थे तो भगवान् सत्यमूर्ति एवं न्यायमूर्ति माने गये हैं। तब पर-नारी गोपियों को उन्होंने रासलीला के लिये कैसे प्रेरित किया? पर-नारियों के साथ विहार करना साक्षात् अन्याय है।

इसका उत्तर यह है कि भगवान् श्रीकृष्ण ने गोपियों को रासलीला के लिए प्रेरित नहीं किया, प्रत्युत "रजन्येषा घोररूपा" इत्यादि श्लोकों में उन्होंने रासलीला न रचने के लिए बहुत मना किया। परन्तु जब वेद-ऋचाओं (श्रुतियों) की अवतार एवं परमात्मा श्रीकृष्ण में परम अनुरक्त (जीवात्मा परमात्मा में अनुरक्त हो यह जीव का परम लक्ष्य माना गया है) गोपियों ने उनकी एक भी न सुनी तब भक्तवश्य भगवान् ने रासलीला में सम्मिलित हो नृत्य, गीत आदि किये।

"कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च। नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते" अर्थात् काम, क्रोध, भय, स्नेह, ऐक्य, बन्धुत्व—इनमें से चाहे किसी भाव से भगवान् से जो पूर्ण प्रेम करता है वह अन्त में भगवत् स्वरूप को प्राप्त करता है। भागवत के ही इस श्लोक के प्रमाण से यदि गोपियों ने काम भाव से ही भगवान् से प्रेम किया तो क्या क्षति है। पुनः भागवत के ही अनुसार सत्य संकल्प श्रीकृष्ण भगवान् ने अनुरागिणी गोपियों से घिरे रहने पर भी अपने में ही वीर्य को रोक कर सारी चाँदनी रात (जो एक वर्ष की हुई थी) प्रेम की बातों में ही बिता डाली—"एवं शशांकांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरताबलागणः। सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः शरत्काव्यकथारसाश्रयः।" (भागवत दशम स्कन्ध)। एक और बात है—जिस समय भगवान् ने रासलीला की थी, उस समय उनकी बाल्यावस्था सात वर्ष की ही थी—"यः सप्तहायनो बालः"—भागवत दशम स्कन्ध। इस दृष्टि से उनकी रासलीला बाललीला ही कही जायेगी। भले उनके भगवदीय गुण के कारण गोपियों को रासलीला में परितृप्ति मिल गई हो। अतः श्रीकृष्ण और उनके चरित्र पर अंगुली उठाना सूर्य पर थूकने के समान ही है।

अन्त में मैं इस संस्करण के प्रकाशन में सहायता करने वाले अपने आराध्य पतिदेव श्री लोकमणि लाल गुप्त जी तथा आचार्य श्री तारिणीश झा को कृतज्ञता पूर्वक धन्यवाद देना अपना कर्तव्य मानती हूँ। भागवत महापुराण के मुद्रक श्री उपेन्द्र त्रिपाठी को भी धन्यवाद देती हूँ।

कागज आदि के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण विवश होकर इस खण्ड का मूल्य बढ़ाना पड़ा है।

गंगा दशहरा<br>सं० २०४९, कालि सं० ५०९३<br>श्रीकृष्ण संवत् ५११८<br>सन् १९९२ ई०

निवेदिका<br>दयाकान्ति देवी

श्रीहरिः शरणम्

विषय-सूची

१. नम्र निवेदन    २. विषय-सूची

दशमः स्कन्धः

(पूर्वार्धः)

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

# श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

## दशमः स्कन्धः

## पूर्वार्धः

यद् भक्ति न विना मुक्तिर्यः सेव्यः सर्वयोगिनाम् ।
तं वन्दे परमानन्दघनं श्रीनन्दनन्दनम् ।।

RADHA KRISHNA ( OM )
S S BRIJBASI & SONS

श्रीगणेशाय नमः

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### प्रथमः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— कथितो वंशविस्तारो भवता सोमसूर्ययोः ।
राज्ञां चोभयवंश्यानां चरितं परमाद्भुतम् ॥१॥

पदच्छेद— कथितः वंश विस्तारः भवता सोम सूर्ययोः ।
राज्ञाम् च उभय वंश्यानाम् चरितम् परम अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कथितः | १२. | वर्णन किया | राज्ञाम् | ६. | राजाओं के |
| वंश | ५. | वंश के | च | ३. | और |
| विस्तारः | ६. | विस्तार (तथा) | उभय | ७. | दोनों |
| भवता | १. | आपने | वंश्यानाम् | ८. | वंशों के |
| सोम | २. | चन्द्र | चरितम् | ११. | चरित का |
| सूर्ययोः । | ४. | सूर्य (दोनों) | परम अद्भुतम् ॥ | १०. | अत्यन्त अद्भुत |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपने चन्द्र और सूर्य दोनों वंश के विस्तार तथा दोनों वंश के राजाओं के अत्यन्त अद्भुत चरित का वर्णन किया ॥

### द्वितीयः श्लोकः

यदोश्च धर्मशीलस्य नितरां मुनिसत्तम ।
तत्रांशेनावतीर्णस्य विष्णोर्वीर्याणि शंस नः ॥२॥

पदच्छेद— यदोः च धर्मशीलस्य नितराम् मुनि सत्तम ।
तत्र अंशेन अवतीर्णस्य विष्णोः वीर्याणि शंस नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदोः | ७. | यदुवंश का (वर्णन किया) | तत्र | ८. | उसी वंश में |
| च | ३. | और | अंशेन | ९. | अपने अंश बलराम जी के साथ |
| धर्म | ६. | धर्म परायण | अवतीर्णस्य | १०. | अवतीर्ण हुये |
| शीलस्य | ४. | आपने स्वभाव से ही | विष्णोः | ११. | भगवान् श्रीकृष्ण के |
| नितराम् | ५. | अत्यन्त | वीर्याणि | १२. | परम पवित्र चरित्र |
| मुनि | १. | हे मुनि | शंस | १४. | सुनाइये |
| सत्तम । | २. | श्रेष्ठ | नः ॥ | १३. | हमें |

श्लोकार्थ—हे मुनि श्रेष्ठ ! आपने स्वभाव से ही धर्मपरायण यदुवंश का वर्णन किया । उसी वंश में अपने अंश बलराम जी के साथ अवतीर्ण हुये भगवान् श्रीकृष्ण के परम पवित्र चरित्र हमें सुनाइये ॥

## तृतीयः श्लोकः

**अवतीर्य यदोर्वंशे भगवान् भूतभावनः ।**
**कृतवान् यानि विश्वात्मा तानि नो वद विस्तरात् ॥३॥**

पदच्छेद— अवतीर्य यदोः वंशे भगवान् भूत भावनः ।
कृतवान् यानि विश्वात्मा तानि नः वद विस्तरात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अवतीर्य | ७. अवतार लेकर | कृतवान् | ९. कर्म किये |
| यदोः | ५. यदु के | यानि | ८. जो |
| वंशे | ६. वंश में | विश्वात्मा | ३. सर्वात्मा |
| भगवान् | ४. भगवान् श्रीकृष्ण ने | तानि नः | १०. उनका हम लोगों को |
| भूत | १. समस्त प्राणियों के | वद | १२. श्रवण कराइये |
| भावनः । | २. जीवनदाता (एवम्) | विस्तरात् ॥ | ११. विस्तार से |

श्लोकार्थ—समस्त प्राणियों के जीवनदाता एवम् सर्वात्मा भगवान् श्रीकृष्ण ने यदु के वंश में अवतार लेकर जो कर्म किये उनका हम लोगों को विस्तार से श्रवण कराइये ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**निवृत्ततर्षैरुपगीयमानाद् भवौषधाच्छ्रोत्रमनोऽभिरामात् ।**
**क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥४॥**

पदच्छेद— निवृत्त तर्षैः उपगीयमानात् भव औषधात् श्रोत्र मनः अभिरामात् ।
कः उत्तम श्लोक गुण अनुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निवृत्त | २. रहित (मुमुक्षु जनों द्वारा) | कः | १४. कौन |
| तर्षैः | १. तृष्णा की प्यास से | उत्तम श्लोक | ९. भगवान् श्रीकृष्ण के |
| उपगीयमानात् | ३. गाये जाने वाले | गुण | १०. गुणों का |
| भव | ४. भवरोग की | अनुवादात् | ११. वर्णन करने से |
| औषधात् | ५. ओषधि (तथा) | पुमान् | १५. मनुष्य |
| श्रोत्र | ६. श्रवण (और) | विरज्येत | १६. विमुख हो सकता है |
| मनः | ७. मन को | विना | १३. अतिरिक्त |
| अभिरामात् । | ८. आह्लाद देने वाले | पशुघ्नात् ॥ | १२. पशुघाती या आत्मघाती के |

श्लोकार्थ—तृष्णा की प्यास से रहित मुमुक्षुजनों द्वारा गाये जाने वाले, भवरोग की ओषधि, श्रवण और मन को आह्लाद देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन करने से पशुघाती या आत्मघाती के अतिरिक्त कौन मनुष्य विमुख हो सकता है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**पितामहा मे समरेऽमरञ्जयैर्देवव्रताद्यातिरथैस्तिमिङ्गिलैः ।**
**दुरत्ययं कौरवसैन्यसागरं कृत्वातरन् वत्सपदं स्म यत्प्लवाः ॥५॥**

पदच्छेद— पितामहाः मे समरे अमरञ्जयैः देवव्रत आद्यि अतिरथैः तिमिङ्गिलैः ।
दुरत्ययम् कौरव सैन्य सागरम् कृत्व अतरत् वत्स पदम् स्म यत् प्लवाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पितामह | ८. | दादा पाण्डव | दुरत्ययम् | १०. | अपार |
| मे | ७. | मेरे | कौरव सैन्य | ९. | कौरव सेनारूपी |
| समरे | १. | कुरुक्षेत्र के युद्ध में | सागरम् | ११. | सागर को |
| अमरञ्जयैः | २. | देवताओं को जीत लेने वाले | कृत्वा अतरत् | १५. | मानकर पार कर गये |
| देवव्रत | ३. | भीष्म पितामह | वत्स पदम् | १४. | बछड़े के खुर के समान |
| आद्यि | ४. | आदि | स्म | १६. | थे |
| अतिरथैः | ६. | अतिरथियों से | यत् | १२. | जिन श्रीकृष्ण के |
| तिमिङ्गिलैः । | ५. | तिमिङ्गिल मच्छों की भाँति | प्लवाः ॥ | १३. | चरणों की नौका के सहारे |

श्लोकार्थ—कुरुक्षेत्र के युद्ध में देवताओं को जीत लेने वाले भीष्म पितामह आदि तिमिङ्गिल मच्छों की भाँति अतिरथियों से मेरे दादा पाण्डव कौरव सेनारूपी अपार सागर को जिन श्रीकृष्ण के चरणों की नौका के सहारे बछड़े के खुर के समान मानकर पार कर गये थे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**द्रौण्यस्त्रविप्लुष्टमिदं मदङ्गं सन्तानबीजं कुरुपाण्डवानाम् ।**
**जुगोप कुक्षिं गत आत्तचक्रो मातुश्च मे यः शरणं गतायाः ॥६॥**

पदच्छेद— द्रौणि अस्त्र विप्लुष्टम् इदम् मत् अङ्गम् सन्तान बीजम् कुरु पाण्डवानाम् ।
जुगोप कुक्षिम् गतः आत्तचक्रः मातुः च मे यः शरणम् गतायाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| द्रौणि | ८. | अश्वत्थामा के | जुगोप | १६. | रक्षा की थी |
| अस्त्र विप्लुष्टम् | ९. | ब्रह्मास्त्र से जले हुये | कुक्षिम् गतः | १५. | गर्भ में प्रवेश करके |
| इदम् | १०. | इस | आत्तचक्रः | १३. | चक्र धारण करके |
| मत् | ११. | मेरे | मातुः | २. | माता के |
| अङ्गम् | १२. | शरीर की | च | १४. | और |
| सन्तान बीजम् | ७. | वंश बीजरूप (तथा) | मे यः | १. | जिन्होंने मेरी |
| कुरु | ५. | कौरवों (और) | शरणम् | ३. | शरण में |
| पाण्डवानाम् । | ६. | पाण्डवों के | गतायाः ॥ | ४. | जाने पर |

श्लोकार्थ—जिन्होंने मेरी माता के शरण में जाने पर कौरवों और पाण्डवों के वंश बीजरूप तथा अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र से जले हुये इस मेरे शरीर की चक्र धारण करके और गर्भ में प्रवेश करके रक्षा की थी ॥

## सप्तमः श्लोकः

**वीर्याणि तस्याखिलदेहभाजामन्तर्बहिः पूरुषकालरूपैः ।**
**प्रयच्छतो मृत्युमुतामृतं च माया मनुष्यस्य वदस्व विद्वन् ॥७॥**

पदच्छेद— वीर्याणि तस्य अखिल देहभाजाम् अन्तः बहिः पूरुष कालरूपैः ।
प्रयच्छतः मृत्युम् उत अमृतम् च माया मनुष्यस्य वदस्व विद्वन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **वीर्याणि** | १४. | लीलाओं का | प्रयच्छतः | १०. | दान कर रहे हैं |
| **तस्य** | ११. | उन | मृत्युम् उत | ९. | मृत्यु का अथवा |
| **अखिल** | २. | समस्त | अमृतम् | ८. | जो अमृतत्व |
| **देहभाजाम्** | ३. | शरीर धारियों के | च | १५. | और |
| **अन्तः** | ४. | भीतर | माया | १२. | माया से |
| **बहिः** | ६. | बाहर | मनुष्यस्य | १३. | मनुष्यरूप धारण करने वाले |
| **पूरुष** | ५. | आत्मा रूप से और | वदस्व | १६. | वर्णन कीजिये |
| **कालरूपैः ।** | ७. | कालरूप से रहकर | विद्वन् ॥ | १. | हे विद्वन् ! |

**श्लोकार्थ**—हे विद्वन् ! समस्त शरीर धारियों के भीतर आत्मा रूप से और वाहर कालरूप से रहकर जो अमृतत्व अथवा मृत्यु का दान कर रहे हैं उन माया से मनुष्यरूप धारण करने वाले श्रीकृष्ण की लीलाओं का और चरित्र का वर्णन कीजिये ॥

## अष्टमः श्लोकः

**रोहिण्यास्तनयः प्रोक्तो रामः सङ्कर्षणस्त्वया ।**
**देवक्या गर्भसम्बन्धः कुतो देहान्तरं विना ॥८॥**

पदच्छेद— रोहिण्याः तनयः प्रोक्तः रामः सङ्कर्षणः त्वया ।
देवक्याः गर्भ सम्बन्धः कुतः देहान्तरम् विना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **रोहिण्याः** | २. | रोहिणी के | देवक्याः | ५. | देवकी के (पुत्ररूप में) |
| **तनयः** | ३. | पुत्र के रूप में | गर्भ | १०. | गर्भ |
| **प्रोक्तः** | ७. | बताया है तो | सम्बन्धः | ११. | सम्बन्ध |
| **रामः** | ४. | बलराम और | कुतः | १२. | कैसे माना जाय |
| **सङ्कर्षणः** | ६. | संकर्षण नाम | देहान्तरम् | ८. | दूसरे शरीर के |
| **त्वया ।** | १. | आपने | विना ॥ | ९. | विना |

**श्लोकार्थ**—आपने रोहिणी के पुत्र के रूप में बलराम और देवकी के पुत्र रूप में संकर्षण नाम बताया है । तो दूसरे शरीर के विना गर्भ सम्बन्ध कैसे माना जाय ? ॥

## नवमः श्लोकः

**कस्मान्मुकुन्दो भगवान् पितुर्गेहाद् व्रजं गतः।**
**क्व वासं ज्ञातिभिः सार्धं कृतवान् सात्वतांपतिः ॥९॥**

पदच्छेद— कस्मात् मुकुन्दः भगवान् पितुः गेहात् व्रजम् गतः।
क्व वासम् ज्ञातिभिः सार्धम् कृतवान् सात्वताम् पतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कस्मात् | ६. क्यों | | क्व | १२. कहाँ |
| मुकुन्दः | २. श्रीकृष्ण | | वासम् | १३. निवास |
| भगवान् | १. भगवान् | | ज्ञातिभिः | १०. गोपबन्धुओं के |
| पितुः | ३. पिता का | | सार्धम् | ११. साथ |
| गेहात् | ४. घर छोड़कर | | कृतवान् | १४. किया |
| व्रजम् | ५. व्रज में | | सात्वताम् | ८. भक्तवत्सल |
| गतः। | ७. चले गये | | पतिः ॥ | ९. प्रभु ने |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण पिता का घर छोड़कर व्रज में क्यों चले गये। भक्तवत्सल प्रभु ने गोप-बन्धुओं के साथ कहाँ निवास किया? ॥

## दशमः श्लोकः

**व्रजे वसन् किमकरोन्मधुपुर्यां च केशवः।**
**भ्रातरं चावधीत् कंसं मातुरद्धातदर्हणम् ॥१०॥**

पदच्छेद— व्रजे वसन् किम् अकरोत् मधुपुर्याम् च केशवः।
भ्रातरम् च अवधीत् कंसम् मातुः अद्धा अतदर्हणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व्रजे | २. व्रज में | | भ्रातरम् | ११. भाई |
| वसन् | ५. रहकर | | च | ८. और |
| किम् | ६. कौन-कौन सी | | अवधीत् | १३. (क्यों) मार दिया |
| अकरोत् | ७. लीलायें कीं | | कंसम् | १२. मामा कंस को |
| मधुपुर्याम् | ४. मधुपुरी में | | मातुः | १०. अपनी माँ के |
| च | ३. और | | अद्धा | ९. वस्तुतः |
| केशवः। | १. ब्रह्मा और शंकर का भी शासन करने वाले प्रभु ने | | अतदर्हणम् ॥ | १४. वह मामा होने के कारण वध के योग्य नहीं थे |

श्लोकार्थ—ब्रह्मा और शंकर का भी शासन करने वाले प्रभु ने व्रज में और मधुपुरी में रहकर कौन-कौन सी लीलायें कीं? और वस्तुतः अपनी माँ के भाई मामा कंस को क्यों मार दिया? वह मामा होने के कारण वध के योग्य नहीं थे ॥

## एकादशः श्लोकः

**देहं मानुषमाश्रित्य कति वर्षाणि वृष्णिभिः ।**
**यदुपुर्यां सहावात्सीत् पत्न्यः कत्यभवन् प्रभोः ॥११॥**

पदच्छेद— देहम् मानुषम् आश्रित्य कति वर्षाणि वृष्णिभिः ।
यदुपुर्याम् सह अवात्सीत् पत्न्यः कति अभवन् प्रभोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| देहम् | २. शरीर | यदुपुर्याम् | ४. द्वारकापुरी में |
| मानुषम् | १. मानव | सह | ६. साथ |
| आश्रित्य | ३. धारण करके | अवात्सीत् | ९. निवास किया और |
| कति | ७. कितने | पत्न्यः कति | ११. पत्नियाँ कितनो |
| वर्षाणि | ८. वर्षों तक | अभवन् | १२. थीं |
| वृष्णिभिः । | ५. यदुवंशियों के | प्रभोः ॥ | १०. प्रभु की |

श्लोकार्थ—मानव शरीर धारण करके द्वारकापुरी में यदुवंशियों के साथ कितने वर्षों तक निवास किया और प्रभु की पत्नियाँ कितनो थीं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**एतदन्यच्च सर्वं मे मुने कृष्ण विचेष्टितम् ।**
**वक्तुमर्हसि सर्वज्ञ श्रद्दधानाय विस्तृतम् ॥१२॥**

पदच्छेद— एतत् अन्यत् च सर्वम् मे मुने कृष्ण विचेष्टितम् ।
वक्तुम् अर्हसि सर्वज्ञ श्रद्दधानाय विस्तृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एतत् | ६. यह | विचेष्टितम् । | १०. लीलायें |
| अन्यत् | ८. अन्य | वक्तुम् | १२. बताने के |
| च | ७. और | अर्हसि | १३. योग्य हैं |
| सर्वम् | ९. सब | सर्वज्ञ | २. सब-कुछ करने के कारण |
| मे | ३. मुझ | श्रद्दधानाय | ४. श्रद्धालु को |
| मुने | १. हे मुने ! आप | विस्तृतम् ॥ | ११. विस्तार से |
| कृष्ण | ५. भगवान् श्रीकृष्ण की | | |

श्लोकार्थ—हे मुने ! आप सब-कुछ जानने के कारण मुझ श्रद्धालु को भगवान् श्रीकृष्ण की यह और अन्य सब लीलायें विस्तार से बताने के योग्य हैं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**नैषातिदुःसहा क्षुन्मां त्यक्तोदमपि बाधते।**
**पिबन्तं त्वन्मुखाम्भोजच्युतं हरिकथामृतम् ॥१३॥**

पदच्छेद— न एषा अतिदुःसहा क्षुत् माम् त्यक्त उदम् अपि बाधते।
पिबन्तम् त्वत् मुख अम्भोज च्युतम् हरि कथा अमृतम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १५. | नहीं | बाधते। | १६. | सताती है |
| एषा | १०. | यह | पिबन्तम् | ७. | पान करते हुये |
| अति | ८. | अत्यधिक | त्वत् मुख | १. | आपके मुख |
| दुःसहा | ९. | कठिनाई से सहने योग्य | अम्भोज | २. | कमल से |
| क्षुत् | ११. | भूख | च्युतम् | ३. | झरती हुई |
| माम् | १४. | मुझे | हरि | ४. | भगवान् की |
| त्यक्त | १३. | त्याग कर देने पर | कथा | ६. | लीला कथा का |
| उदम् अपि | १२. | जल का भी | अमृतम् ॥ | ५. | सुधामयी |

श्लोकार्थ—हे भगवन्! आपके मुख कमल से झरती हुई भगवान् की सुधामयी लीला कथा का पान करते हुये अत्यधिक कठिनाई से सहने योग्य यह भूख जल का भी त्याग कर देने पर मुझे नहीं सताती है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**एवं निशम्य भृगुनन्दन साधुवादं वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातम्।**
**प्रत्यर्च्य कृष्णचरितं कलिकल्मषघ्नं व्याहर्तुमारभत भागवतप्रधानः ॥१४॥**

पदच्छेद—एवम् निशम्य भृगुनन्दन साधुवादं वैयासकिः सः भगवान् अथ विष्णुरातम्।
प्रत्यर्च्य कृष्णचरितम् कलि कल्मषघ्नम् व्याहर्तुम् आरभत भागवत प्रधानः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ९. | इस प्रकार | प्रत्यर्च्य | १२. | उनका अभिनन्दन करके |
| निशम्य | १०. | सुनकर | कृष्ण | १५. | श्रीकृष्ण की |
| भृगुनन्दन | १. | हे शौनक जी! | चरितम् | १६. | लीलाओं का |
| साधुवादम् | ८. | समयोचित प्रश्न | कलि | १३. | कलियुग के |
| वैयासकिः | ६. | शुकदेव जी ने | कल्मषघ्नम् | १४. | पापों को धोने वाली |
| सः | ४. | उन | व्याहर्तुम् | १७. | वर्णन करना |
| भगवान् | ५. | महाराज | आरभत | १८. | आरम्भ किया |
| अथ | ११. | तदनन्तर | भागवत | २. | भगवत्प्रेमियों में |
| विष्णुरातम्। | ७. | भगवान् की लीला विषयक | प्रधानः ॥ | ३. | अग्रगण्य |

श्लोकार्थ—हे शौनक जी! भगवत् प्रेमियों के अग्रगण्य उन महाराज शुकदेव जी ने भगवान् की लीला विषयक समयोचित प्रश्न इस प्रकार सुनकर तदनन्तर उनका अभिनन्दन करके कलियुग के पापों को धोने वाली श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करना आरम्भ किया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**सम्यग्व्यवसिता बुद्धिस्तव राजर्षिसत्तम ।**
**वासुदेवकथायां ते यज्जाता नैष्ठिकी रतिः ॥१५॥**

पदच्छेद— सम्यक् व्यवसिता बुद्धिः तव राजर्षि सत्तम ।
वासुदेव कथायाम् ते यत् जाता नैष्ठिकी रतिः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सम्यक् | ५. | ठीक ही | वासुदेव | ८. | भगवान् की |
| व्यवसिता | ६. | निश्चय किया है | कथायाम् | ९. | कथा में |
| बुद्धिः | ४. | वुद्धि ने | ते | १०. | आपकी |
| तव | ३. | आपकी | यत् | ७. | जो कि |
| राजर्षि | १. | हे राजर्षि | जाता | १२. | उत्पन्न हो गयी है |
| सत्तम । | २. | शिरोमणि | नैष्ठिकी रतिः ।। | ११. | स्वभाविक प्रीति |

श्लोकार्थ—हे राजर्षि शिरोमणि ! आपकी बुद्धि ने ठीक ही निश्चय किया है, जो कि भगवान् की कथा में स्वाभाविक प्रीति उत्पन्न हो गई है ।।

## षोडशः श्लोकः

**वासुदेवकथाप्रश्नः पुरुषांस्त्रीन् पुनाति हि ।**
**वक्तारं पृच्छकं श्रोतॄंस्तत्पादसलिलं यथा ॥१६॥**

पदच्छेद— वासुदेव कथा प्रश्नः पुरुषान् स्त्रीन् पुनाति हि ।
वक्तारम् पृच्छकम् श्रोतॄन् तत् पाद सलिलम् यथा ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वासुदेव | १. | भगवान् श्रीकृष्ण की | वक्तारम् | ६. | वक्ता |
| कथा | २. | कथा के सम्बन्ध में | पृच्छकम् | ७. | प्रश्नकर्ता (एवम्) |
| प्रश्नः | ३. | किये गये प्रश्न ही | श्रोतॄन् | ८. | श्रोता को |
| पुरुषान् | ४. | पुरुषों | तत् पाद | ९. | भगवान् के चरणों के |
| स्त्रीन् | ५. | स्त्रियों | सलिलम् | १०. | जल (गंगाजी के) |
| पुनाति हि । | १२. | पवित्र कर देते हैं | यथा ।। | ११. | समान |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की कथा के सम्बन्ध में किये गये प्र न ही पुरुषों, स्त्रियों, वक्ता, प्रश्नकर्ता एवम् श्रोता को भगवान् के चरणों के जल गंगाजी के समान पवित्र कर देते हैं ।।

## सप्तदशः श्लोकः

भूमिर्दृप्तनृपव्याजदैत्यानीकशतायुतैः ।
आक्रान्ता भूरिभारेण ब्रह्माणं शरणं ययौ ॥१७॥

पदच्छेद— भूमिः दृप्त नृप व्याज दैत्य अनीक शतायुतैः ।
आक्रान्ता भूरि भारेण ब्रह्माणम् शरणम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भूमिः | ६. पृथ्वी को | आक्रान्ता | ९. आक्रान्त कर रखा था |
| दृप्त नृप | ४. घमंडी राजाओं का | भूरि | ७. अपने भारी |
| व्याज | ५. रूप धारण करके | भारेण | ८. भार से |
| दैत्य | २. दैत्यों के | ब्रह्माणम् | १०. तब वह ब्रह्मा जी की |
| अनीक | ३. दल ने | शरणम् | ११. शरण में |
| शतायुतैः । | १. लाखों | ययौ ॥ | १२. गयी |

श्लोकार्थ—लाखों दैत्यों के दल ने घमंडी राजाओं का रूप धारण करके पृथ्वी को अपने भारी भार से अक्रान्त कर रखा था । तब वह पृथ्वी ब्रह्माजी की शरण में गई ॥

## अष्टादशः श्लोकः

गौर्भूत्वाश्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुणं विभोः ।
उपस्थितान्तिके तस्मै व्यसनं स्वमवोचत ॥१८॥

पदच्छेद— गौः भूत्वा अश्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुणम् विभोः ।
उपस्थित अन्तिके तस्मै व्यसनम् स्वम् अवोचत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गौः | १. गौ रूपधारी पृथ्वी ने | उपस्थित | ९. पहुँचकर |
| भूत्वा | ४. होकर | अन्तिके | ८. समीप |
| अश्रुमुखी | २. अश्रुयुक्त मुख तथा | तस्मै | १०. उनसे |
| खिन्ना | ३. खिन्न मन | व्यसनम् | १२. कष्ट कहानी |
| क्रन्दन्ती | ६. क्रन्दन करती हुई | स्वम् | ११. अपनी |
| करुणम् | ५. करुणा | अवोचत ॥ | १३. सुनाई |
| विभोः । | ७. ब्रह्माजी के | | |

श्लोकार्थ—गौ रूपधारी पृथ्वी ने अश्रुयुक्त मुख तथा खिन्न मन होकर करुण क्रन्दन करती हुई ब्रह्माजी के समीप पहुँच कर अपनी कष्ट कहानी सुनाई ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**ब्रह्मा तदुपधार्याथ सह देवैस्तया सह।**
**जगाम सत्रिनयनस्तीरं क्षीरपयोनिधेः ॥१९॥**

पदच्छेद— ब्रह्मा तत् उपधार्य अथ सह देवैः तया सह।
जगाम सत्रिनयनः तीरम् क्षीर पयोनिधेः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ब्रह्मा तत् | २. ब्रह्माजी ने उसे | सह। | ७. साथ (और) |
| उपधार्य | ३. सुनकर तथा | जगाम | १२. गये |
| अथ | १. तदनन्तर | सत्रिनयनः | ८. शिवजी के साथ |
| सह | ५. साथ | तीरम् | ११. तट पर |
| देवैः | ४. देवताओं के | क्षीर | ९. क्षीर |
| तया | ६. उस पृथ्वी के | पयोनिधेः ॥ | १०. सागर के |

श्लोकार्थ—तदनन्तर ब्रह्माजी ने उसे सुनकर तथा देवताओं के साथ उस पृथ्वी के और शिवजी के साथ क्षीरसागर के तट पर गये ॥

## विंशः श्लोकः

**तत्र गत्वा जगन्नाथं देवदेवं वृषाकपिम्।**
**पुरुषं पुरुषसूक्तेन उपतस्थे समाहितः ॥२०॥**

पदच्छेद— तत्र गत्वा जगन्नाथम् देव देवम् वृषाकपिम्।
पुरुषम् पुरुष सूक्तेन उपतस्थे समाहितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र | १. वहाँ | वृषाकपिम्। | ७. भगवान् विष्णु की |
| गत्वा | २. जाकर | पुरुषम् | ६. परमात्मा |
| जगन्नाथम् | ३. संसार के स्वामी | पुरुषसूक्तेन | ८. पुरुष सूक्त के द्वारा |
| देव | ४. देवों के | उपतस्थे | ९. स्तुति करते हुये |
| देवम् | ५. आराध्य देव | समाहितः ॥ | १०. समाधिस्थ हो गये |

श्लोकार्थ—वहाँ जाकर संसार के स्वामी देवों के आराध्यदेव परमात्मा भगवान् विष्णु की पुरुष सूक्त के द्वारा स्तुति करते हुये समाधिस्थ हो गये ॥

## एकविंशः श्लोकः

**गिरं समाधौ गगने समीरितां निशम्य वेधास्त्रिदशानुवाच ह ।**
**गां पौरुषीं मे शृणुतामराः पुनर्विधीयतामाशु तथैव मा चिरम् ॥२१॥**

पदच्छेद— गिरम् समाधौ गगनने समीरिताम् निशम्य वेधाः त्रिदशान् उवाच ह ।
गाम् पौरुषीम् मे शृणुत अमराः पुनः विधीयताम् आशु तथा एव मा चिरम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गिरम् | ३. | वाणी द्वारा | पौरुषीम् | ११. | भगवान् की |
| समाधौ | १. | समाधि में | मे | १०. | मुझसे |
| गगने | २. | अकाश | शृणुत | १३. | सुनो |
| समीरिताम् | ४. | कही बात | अमराः | ६. | हे देवताओ ! |
| निशम्य | ५. | सुनकर | पुनः | १४. | और फिर |
| वेधाः | ६. | ब्रह्माजी ने | विधीयताम् | १७. | करो |
| त्रिदशान् | ७. | देवताओं से | आशु | १५. | तत्काल |
| उवाच ह । | ८. | कहा | तथा एव | १६. | वैसा ही |
| गाम् | १२. | वाणी | मा चिरम् ॥ | १८. | देर मत करो |

श्लोकार्थ—समाधि में आकाशवाणी द्वारा कही बात सुनकर ब्रह्मा जी ने देवताओं से कहा । हे देवताओ ! मुझसे भगवान् की वाणी सुनो । और फिर तत्काल वैसा ही करो, देर मत करो ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**पुरैव पुंसावधृतोधराज्वरो भवद्भिरंशैर्यदुषूपजन्यताम् ।**
**स यावदुर्व्या भरमीश्वरेश्वरः स्वकालशक्त्या क्षपयंश्चरेद् भुवि ॥२२॥**

पदच्छेद— पुरा एव पुंसा अवधृतः धरा ज्वरः भवद्भिः अंशैः यदुषु उपजन्यताम् ।
सः यावत् उर्व्याःभरम् ईश्वर-ईश्वरः स्वकाल शक्त्या क्षपयन् चरेत् भुवि ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरा एव | ४. | पहले से ही | सः | ७. | वे परमात्मा |
| पुंसा | १. | भगवान् को | यावत् | १२. | जब-तक |
| अवधृत | ५. | मालूम है | उर्व्याःभरम् | १०. | पृथ्वी का भार |
| धरा | २. | पृथ्वी का | ईश्वर-ईश्वरः | ६. | ईश्वर के भी ईश्वर |
| ज्वरः | ३. | कष्ट | स्वकाल | ८. | अपनी काल |
| भवद्भिः | १५. | (तब-तक) आप लोग | शक्त्या | ६. | शक्ति के द्वारा |
| अंशैः | १६. | अपने अंशों के साथ | क्षपयन् | ११. | नष्ट करते हुये |
| यदुषु | १७. | यदुकुल में | चरेत् | १४. | विचरण करें |
| उपजन्यताम् । | १८. | जन्म लेकर रहो | भुवि ॥ | १३. | पृथ्वी पर |

श्लोकार्थ—भगवान् को पृथ्वी का कष्ट पहले से ही मालूम है । ईश्वर के भी ईश्वर वे परमात्मा अपनी काल-शक्ति के द्वारा पृथ्वी का भार नष्ट करते हुये जब-तक पृथ्वी पर विचरण करें तब-तक आप लोग अपने अंशों के साथ यदुकुल में जन्म लेकर रहो ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**वसुदेवगृहे साक्षात् भगवान् पूरुषः परः ।**
**जनिष्यते तत्प्रियार्थं सम्भवन्तु सुरस्त्रियः ॥२३॥**

पदच्छेद— वसुदेव गृहे साक्षात् भगवान् पूरुषः परः ।
जनिष्यते तत् प्रियार्थम् सम्भवन्तु सुरस्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वसुदेव | १. | वसुदेव जी के | जनिष्यते | ७. | प्रकट होंगे |
| गृहे | २. | घर में | तत् | ८. | उनकी और |
| साक्षात् | ३. | साक्षात् | प्रियार्थम् | ९. | उनकी प्रिया की सेवा के लिये |
| भगवान् | ६. | परमात्मा | सम्भवन्तु | ११. | जन्म ग्रहण करें |
| पूरुषः | ५. | पुरुष | सुरस्त्रियः ॥ | १०. | देवाङ्गनायें |
| परः । | ४. | परम | | | |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी के घर में साक्षात् परम पुरुष परमात्मा प्रकट होंगे । उनकी और उनकी प्रिया की सेवा के लिये देवाङ्गनायें जन्म ग्रहण करें ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**वासुदेवकलानन्तः सहस्रवदनः स्वराट् ।**
**अग्रतो भविता देवो हरेः प्रियचिकीर्षया ॥२४॥**

पदच्छेद— वासुदेव कला अनन्तः सहस्र वदनः स्वराट् ।
अग्रतः भविता देवः हरेः प्रिय चिकीर्षया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वासुदेव | ४. | भगवान् की | अग्रतः | ११. | पहले |
| कला | ५. | कला होने के कारण | भविता | १२. | जन्म लेंगे |
| अनन्तः | ६. | अनन्त हैं | देवः | १०. | देव |
| सहस्र | २. | सहस्र | हरेः | ७. | भगवान् का |
| वदनः | ३. | मुख शेष जी भी | प्रिय | ८. | प्रिय कार्य |
| स्वराट् । | १. | स्वयं प्रकाश | चिकीर्षया ॥ | ९. | करने की इच्छा से वे |

श्लोकार्थ—स्वयं प्रकाश सहस्र मुख शेष जी भगवान् की कला होने के कारण अनन्त हैं । भगवान् का प्रिय करने की इच्छा से वे देव पहले जन्म लेंगे ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत् ।**
**आदिष्टा प्रभुणांशेन कार्यार्थे सम्भविष्यति ॥२५॥**

पदच्छेद— विष्णोः माया भगवती यया सम्मोहितम् जगत् ।
आदिष्टा प्रभुणा अंशेन कार्य अर्थे सम्भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विष्णोः | १. | भगवान् की | आदिष्टा | ८. | आज्ञा से |
| माया | ३. | योग माया | प्रभुणा | ७. | प्रभु की |
| भगवती | २. | ऐश्वर्यशालिनी | अंशेन | ११. | अंशरूप से |
| यया | ४. | जिसने | कार्य | ९. | उनका कार्य |
| सम्मोहितम् | ६. | मोहित कर रखा है | अर्थे | १०. | सम्पन्न करने के लिये |
| जगत् । | ५. | सारे संसार को | भविष्यति ॥ | १२. | अवतार ग्रहण करेगी |

श्लोकार्थ—भगवान् की ऐश्वर्यशालिनी योगमाया जिसने सारे संसार को मोहित कर रखा है। प्रभु की आज्ञा से उनका कार्य सम्पन्न करने की इच्छा से अंशरूप से अवतार ग्रहण करेगी ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**इत्यादिश्यामरगणान् प्रजापतिपतिर्विभुः ।**
**आश्वास्य च महीं गीर्भिः स्वधाम परमं ययौ ॥२६॥**

पदच्छेद— इति आदिश्य अमर गणान् प्रजापति पतिः विभुः ।
आश्वास्य च महीम् गीर्भिः स्वधाम परमम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ६. | इस प्रकार | आश्वास्य | ११. | समझा-बुझाकर |
| आदिश्य | ७. | उपदेश देकर | च | ८. | और |
| अमर | ४. | देवताओं के | महीम् | १०. | पृथ्वी को |
| गणान् | ५. | समूह को | गीर्भिः | ९. | अपनी वाणीसे |
| प्रजापति | १. | प्रजापतियों के | स्वधाम | १२. | अपने धाम को |
| पतिः | २. | स्वामी | परमम् | १३. | परम |
| विभुः । | ३. | भगवान् ब्रह्माजी | ययौ ॥ | १४. | चले गये |

श्लोकार्थ—प्रजापतियों के स्वामी भगवान् ब्रह्माजी देवाओं के समूह को इस प्रकार उपदेश देकर और अपनी वाणी से पृथ्वी को समझा-बुझाकर अपने परम धाम को चले गये ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**शूरसेनो यदुपतिर्मथुरामावसन् पुरीम् ।**
**माथुराञ्छूरसेनांश्च विषयान् बुभुजे पुरा ॥२७॥**

पदच्छेद— शूरसेनः यदुपतिः मथुराम् आवसन् पुरीम् ।
माथुरान् शूरसेनान् च विषयान् बुभुजे पुरा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शूरसेनः | ३. शूरसेन | माथुरान् | ७. माथुर मण्डल |
| यदुपतिः | २. यदुवंशी राजा | शूरसेनान् | ९. शूरसेन मण्डल का |
| मथुराम् | ४. मथुरा | च | ८. और |
| आवसन् | ६. रहकर | विषयान् | १०. राज्य शासन |
| पुरीम् । | ५. पुरी में | बुभुजे | ११. करते थे |
| | | पुरा ॥ | १. प्राचीनकाल में |

श्लोकार्थ—प्राचीनकाल में यदुवंशी राजा मथुरा पुरी में रहकर माथुर मण्डल और शूरसेन मण्डल का राज्य-शासन करते थे ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**राजधानी ततः साभूत् सर्वं यादवभूभुजाम् ।**
**मथुरा भगवान् यत्र नित्यं संनिहितो हरिः ॥२८॥**

पदच्छेद— राजधानी ततः सा अभूत् सर्व ,यादव भू भुजाम् ।
मथुरा भगवान् यत्र नित्यम् संनिहितः हरिः ॥

शब्दार्थं—

| | | | |
|---|---|---|---|
| राजधानी | ६. राजधानी | मथुरा | ३. मथुरा ही |
| ततः | १. उसी समय से | भगवान् | ९. भगवान् |
| सा | २. वह | यत्र | ८. जहाँ |
| अभूत् | ७. हो गई | नित्यम् | ११. नित्य |
| सर्वयादव | ४. समस्त यदुवंशी | संनिहितः | १२. विराजमान रहते हैं |
| भूभुजाम् । | ५. पृथ्वीपतियों की | हरिः ॥ | १०. श्री हरि |

श्लोकार्थ—उसी समय से वह मथुरा ही समस्त यदुवंशी पृथ्वीपतियों की राजधानी हो गई । जहाँ भगवान् श्री हरि नित्य विराजमान रहते हैं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

तस्यांतु कर्हिचिच्छौरिर्वसुदेवकृतोद्वहः ।
देवक्या सूर्यया सार्धं प्रयाणे रथमारुहत् ॥२९॥

पदच्छेद— तस्याम् तु कर्हिचित् शौरिः वसुदेव कृत उद्वहः ।
देवक्या सूर्यया सार्धम् प्रयाणे रथम् आरुहत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्याम् तु | २. | उस मथुरा में | देवक्या | ८. | देवकी के |
| कर्हिचित् | १. | एक बार | सूर्यया | ७. | नव विवाहिता पत्नी |
| शौरिः | ३. | शूरसेन के पुत्र | सार्धम् | ९. | साथ |
| वसुदेवः | ४. | वसुदेव जो | प्रयाणे | १०. | घर जाने के लिये |
| कृत | ६. | करके | रथम् | ११. | रथ पर |
| उद्वहः । | ५. | विवाह | आरुहत् ॥ | १२. | सवार हुये |

श्लोकार्थ—एक बार उस मथुरा में शूरसेन के पुत्र वसुदेव जो विवाह करके अपनी नववधू पत्नी देवकी के साथ घर जाने के लिये रथ पर सवार हुये ॥

## त्रिंशः श्लोकः

उग्रसेनसुतः कंसः स्वसुः प्रियचिकीर्षया ।
रश्मीन् हयानां जग्राह रौक्मैः रथशतैर्वृतः ॥३०॥

पदच्छेद— उग्रसेन सुतः कंसः स्वसुः प्रिय चिकीर्षया ।
रश्मीन् हयानाम् जग्राह रौक्मैः रथ शतैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उग्रसेन | १. | उग्रसेन के | रश्मीन् | ८. | लगाम |
| सुतः | २. | पुत्र | हयानाम् | ७. | उसके घोड़ों की |
| कंसः | ३. | कंस ने | जग्राह | ९. | पकड़ ली |
| स्वसुः | ४. | अपनी चचेरी बहन को | रौक्मैः रथ | ११. | सोने के रथों से |
| प्रिय | ५. | प्रसन्न | शतैः | १०. | यद्यपि वह सैकड़ों |
| चिकीर्षया । | ६. | करने की इच्छा से | वृतः ॥ | १२. | घिरा हुआ था |

श्लोकार्थ—उग्रसेन के पुत्र कंस ने अपनी चचेरी बहन को प्रसन्न करने की इच्छा से उसके घोड़ों की लगाम पकड़ ली । यद्यपि वह सैकड़ों सोने के रथों से घिरा हुआ था ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

चतुःशतं पारिबर्हं गजानां हेममालिनाम् ।
अश्वानामयुतं सार्धं रथानां च त्रिषट्शतम् ॥३१॥

पदच्छेद — चतुः शतम् पारिबर्हम् गजानाम् हेम मालिनाम् ।
अश्वानाम् अयुतम् सार्धम् रथानाम् च त्रिषट् शतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुः | ४. | चार | अयुतम् | ७. | दस हजार |
| शतम् | ५. | सौ | सार्धम् | ९. | साथ |
| पारिबर्हम् | १. | वैवाहिक उपहार स्वरूप | रथानाम् च | १२. | रथ प्रदान किये |
| गजानाम् | ६. | हाथी | त्रिषट् | १०. | अठारह |
| हेम | २. | सोने के | शतम् ॥ | ११. | सौ |
| मालिनाम् । | ३. | हारों से विभूषित | | | |
| अश्वानाम् | ८. | घोड़ों के | | | |

श्लोकार्थ—वैवाहिक उपहार स्वरूप सोने के हारों से विभूषित चार सौ हाथी, दस हजार घोड़ों के साथ अठारह सौ रथ प्रदान किये ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

दासीनां सुकुमारीणां द्वे शते समलङ्कृते ।
दुहित्रे देवकः प्रादाद् याने दुहितृवत्सलः ॥३२॥

पदच्छेद— दासीनाम् सुकुमारीणाम् द्वे शते सम्अलङ्कृते ।
दुहित्रे देवकः प्रादात् याने दुहितृ वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दासीनाम् | १०. | दासियाँ | दुहित्रे | ४. | अपनी कन्या देवकी को |
| सुकुमारीणाम् | ९. | सुकुमारी | देवकः | ३. | देवक ने |
| द्वे | ७. | दो | प्रादात् | ११. | प्रदान कीं |
| शते | ८. | सौ | याने | ५. | विदा के समय |
| सम्अलङ्कृते । | ६. | विभूषित | दुहितृ | १. | पुत्री पर |
| | | | वत्सलः ॥ | २. | स्नेह करने वाले |

श्लोकार्थ—पुत्री पर स्नेह करने वाले देवक ने अपनी कन्या देवकी को विदा के समय विभूषित दो सौ सुकुमारी दासियाँ प्रदान कीं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**शङ्खतूर्यमृदङ्गाश्च नेदुर्दुन्दुभयः समम् ।**
**प्रयाणप्रक्रमे तावद् वरवध्वोः सुमङ्गलम् ॥३३॥**

पदच्छेद— शङ्ख तूर्य मृदङ्गाः च नेदुः दुन्दुभयः समम् ।
प्रयाण प्रक्रमे तावत् वर वध्वोः सुमङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शङ्ख | ७. | शङ्ख | प्रयाण | २. | विदाई |
| तूर्य | ८. | तुरही | प्रचक्रमे | ३. | के समय |
| मृदङ्गाः | ९. | मृदङ्ग | तावत् | १. | तभी |
| च | १०. | और | वर | ४. | वर |
| नेदुः | १३. | बजने लगे | वध्वोः | ५. | वधू के |
| दुन्दुभयः | ११. | दुन्दुभियाँ | सुमङ्गलम् ॥ | ६. | मङ्गल के लिये |
| समम् । | १२. | एक साथ | | | |

श्लोकार्थ—तभी विदाई के समय वर-वधू के मङ्गल के लिये शङ्ख, तुरही, मृदङ्ग और दुन्दुभियाँ एक साथ बजने लगीं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**पथि प्रग्रहिणं कंसमाभाष्याहाशरीरवाक् ।**
**अस्यास्त्वामष्टमो गर्भो हन्ता यां वहसेऽबुध ॥३४॥**

पदच्छेद— पथि प्रग्रहिणम् कंसम् आभाष्य आह अशरीरवाक् ।
अस्याः त्वाम् अष्टमः गर्भः हन्ता याम् वहसे अबुध ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पथि | १. | मार्ग में | त्वाम् | १३. | तुझे |
| प्रग्रहिणम् | २. | रथ हाँकते समय | अष्टमः | ११. | आठवाँ |
| कंसम् | ३. | कंस को | गर्भः | १२. | गर्भ (बालक) |
| आभाष्य | ४. | सम्बोधित करके | हन्ता | १४. | मारने वाला होगा |
| आह | ६. | कहा | याम् | ८. | जिसे तू |
| अशरीरवाक् । | ५. | आकाश वाणी ने | वहसे | ९. | लिये जा रहा है |
| अस्याः | १०. | इसी का | अबुध ॥ | ७. | अरे मूर्ख |

श्लोकार्थ—मार्ग में रथ हाँकते समय कंस को सम्बोधित करके आकाश वाणी ने कहा—अरे मूर्ख ! जिसे तू लिये जा रहा है, इसी का आठवाँ गर्भ (बालक) तुझे मारने वाला होगा ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**इत्युक्तः स खलः पापो भोजानां कुलपांसनः ।**
**भगिनीं हन्तुमारब्धः खड्गपाणिः कचेऽग्रहीत् ॥३५॥**

पदच्छेद— इति उक्तः सः खलः पापः भोजानाम् कुल पांसनः ।
भगिनीम् हन्तुम् आरब्धः खड्गपाणिः कचे अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | ऐसा | भगिनीम् | ८. | बहिन के |
| उक्तः | २. | सुनते ही | हन्तुम् | १३. | उसे मारने के लिये |
| सः | ५. | वह | आरब्धः | १४. | तैयार हो गया |
| खलः | ७. | दुष्ट | खड्गः | १२. | तलवार लेकर |
| पापः | ६. | पापी | पाणिः | ११. | हाथ में |
| भोजानाम् | ३. | भोज | कचे | ९. | केश |
| कुल पांसनः । | ४. | वंश का कलंक | अग्रहीत् ॥ | १०. | पकड़कर |

श्लोकार्थ—ऐसा सुनते ही भोजवंश का कलंक वह पापी दुष्ट बहिन के केश पकड़कर हाथ में तलवार लेकर उसे मारने के लिये तैयार हो गया ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**तं जुगुप्सितकर्माणं नृशंसं निरपत्रपम् ।**
**वसुदेवो महाभाग उवाच परिसान्त्वयन् ॥३६॥**

पदच्छेद— तम् जुगुप्सित कर्माणम् नृशंसम् निरपत्रपम् ॥
वसुदेवः महाभागः उवाच पसिान्त्वयन् ।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ५. | उससे | वसुदेवः | ७. | वसुदेव जी |
| जुगुप्सित | १. | पाप | महाभागः | ६. | महात्मा |
| कर्माणम् | २. | कर्म करने वाले | उवाच | ९. | इस प्रकार बोले |
| नृशंसम् | ३. | अत्यन्त क्रूर | परिसान्त्वयन् ॥ | ८. | सान्त्वना देते हुये |
| निरपत्रपम् । | ४. | निर्लज्ज | | | |

श्लोकार्थ—पाप कर्म करने वाले अत्यन्त क्रूर और निर्लज्ज उससे महात्मा वसुदेव जी सान्त्वना देते हुये इस प्रकार बोले ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**श्लाघनीयगुणः शूरैर्भवान् भोजयशस्करः ।**
**स कथं भगिनीं हन्यात् स्त्रियमुद्वाहपर्वणि ॥३७॥**

पदच्छेद— श्लाघनीय गुणः शूरैः भवान् भोज यशस्करः ।
स: कथम् भगिनीम् हन्यात् स्त्रियम् उद्वाह पर्वणि ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्लाघनीय | २. प्रशंसित | सः | ११. ऐसे |
| गुणः | ३. गुणों वाले (तथा) | कथम् | १२. कैसे |
| शूरैः | १. शूरवीरों द्वारा | भगिनीम् | ७. अपनी बहिन |
| भवान् | ६. आप | हन्यात् | १३. मारेंगे |
| भोज | ४. भोजवंश की | स्त्रियम् | ८. स्त्री को |
| यशस्करः । | ५. कीर्ति को बढ़ाने वाले | उद्वाह | ९. विवाह के |
| | | पर्वणि ।। | १०. अवसर पर |

श्लोकार्थ—शूरवीरों के द्वारा प्रशंसित गुणों वाले तथा भोजवंश की कीर्ति को बढ़ाने वाले आप अपनी बहिन स्त्री को विवाह के अवसर पर कैसे मारेंगे ।।

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**मृत्युर्जन्मवतां वीर देहेन सह जायते ।**
**अद्य वाब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः ॥३८॥**

पदच्छेद-- मृत्युः जन्मवताम् वीर देहेन सह जायते ।
अद्य वा अब्द शत अन्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनाम् ध्रुवः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मृत्युः | ३. मृत्यु तो | अद्य | ७. आज हो |
| जन्मवताम् | २. जन्म लेने वालों की | अब्दशतअन्ते | ९. सौ वर्ष बाद हो |
| वीर | १. हे वीरवर ! | वा | ८. अथवा |
| देहेन | ४. शरीर के | मृत्युर्वै | ११. मृत्यु तो |
| सह | ५. साथ ही | प्राणिनाम् | १०. प्राणियों की |
| जायते । | ६. उत्पन्न होतो है | ध्रुवः ।। | १२. निश्चित ही है |

श्लोकार्थ—हे वीरवर ! जन्म लेने वालों की मृत्यु तो शरीर के साथ ही उत्पन्न होती है । आज हो अथवा सौ वर्ष बाद हो प्राणियों की मृत्यु तो निश्चित ही है ।।

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**देहे पञ्चत्वमापन्ने देही कर्मानुगोऽवशः।**
**देहान्तरमनुप्राप्य प्राक्तनं त्यजते वपुः ॥३९॥**

पदच्छेद— देहे पञ्चत्वम् आपन्ने देही कर्म अनुगः अवशः।
देह अन्तरम् अनुप्राप्य प्राक्तनम् त्यजते वपुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| देहे | १. शरीर के | देह | ८. शरीर को |
| पञ्चत्वम् | २. पञ्चतत्त्वों में | अन्तरम् | ७. दूसरे |
| आपन्ने | ३. मिल जाने पर | अनुप्राप्य | ९. प्राप्त करके |
| देही | ४. जीवात्मा | प्राक्तनम् | १०. पुराने |
| कर्मअनुगः | ५. कर्म के अनुसार | त्यजते | १२. छोड़ देता है |
| अवशः। | ६. परतन्त्र होकर | वपुः ॥ | ११. शरीर को |

श्लोकार्थ—शरीर के पञ्चतत्त्वों में मिल जाने पर जीवात्मा कर्म के अनुसार परतन्त्र होकर दूसरे शरीर को प्राप्त करके पुराने शरीर को छोड़ देता है ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**व्रजंस्तिष्ठन् पदैकेन यथैवैकेन गच्छति।**
**यथा तृणजलूकैवं देही कर्मगतिं गतः ॥४०॥**

पदच्छेद— व्रजन्तिष्ठन् पदा एकेन यथा एव एकेन गच्छति।
यथा तृण जलूका एवम् देही कर्म गतिम् गतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्रजन् | २. चलते समय | यथा | ९. जैसे |
| तिष्ठन् | ५. रख कर | तृण | ११. अगले तिनके को पकड़ कर ही पहले के तिनके को छोड़ती है |
| पदा | ४. पैर को | जलूका | १०. जोंक |
| एकेन | ३. एक | एवम् | १२. उसी प्रकार |
| यथा | १. जैसे | देही | १३. जीव भी |
| एव | ६. ही | कर्म | १४. कर्म की |
| एकेन | ७. दूसरा पैर | गतिम् | १५. को |
| गच्छति। | ८. उठाता है और | गतः ॥ | १६. प्राप्त करता है |

श्लोकार्थ—जैसे चलते समय मनुष्य एक पैर को रख कर ही दूसरा पैर उठाता है और जैसे जोंक अगले तिनके को पकड़ कर ही पहले के तिनके को छोड़ती है उसी प्रकार जीव भी कर्म की गति को प्राप्त करता है ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**स्वप्ने यथा पश्यति देहमीदृशं मनोरथेनाभिनिविष्टचेतनः ।**
**दृष्टश्रुताभ्यां मनसानुचिन्तयन् प्रपद्यते तत् किमपि ह्यपस्मृतिः ॥४१॥**

पदच्छेद— स्वप्ने यथा पश्यति देहम् ईदृशम् मनोरथेन अभिनिविष्ट चेतनः ।
दृष्ट श्रुताभ्याम् मनसा अनुचिन्तयन् प्रपद्यते तत् किम् अपि हि अपस्मृतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्वप्ने | ५. स्वप्नावस्था में | श्रुताभ्याम् | १०. सुने हुये विषयों का |
| यथा | १. जैसे | मनसा | ११. मन से |
| पश्यति | ८. देखता है | अनुचिन्तनयन् | १२. चिन्तन करते हुये |
| देहम् | ७. शरीर को | प्रपद्यते | १७. प्राप्त करता है |
| ईदृशम् | ६. उसी प्रकार के | तत् | १६. उसी स्थिति को |
| मनोरथेन | ३. मनोरथों में | किम् | १३. कभी कभी तो जाग्रत् में |
| अभिनिविष्ट | ४. संलग्न होकर | अपिहि | १४. भी |
| चेतनः । | २. कोई पुरुष | अपस्मृतिः ॥ | १५. पूर्वस्थिति को भूलकर |
| दृष्ट | ९. देखे (और) | | |

श्लोकार्थ—जैसे कोई पुरुष मनोरथों में संलग्न होकर स्वप्नावस्था में उसी प्रकार के शरीर को देखता है । देखे और सुने हुये विषयों का मन से चिन्तन करते हुये कभी, कभी जाग्रत् में भी पूर्वस्थिति को भूलकर उसी स्थिति को प्राप्त करता है ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**यतो यतो धावति दैवचोदितं मनोविकारात्मकमाप पञ्चसु ।**
**गुणेषु मायारचितेषु देह्यसौ प्रपद्यमानः सह तेन जायते ॥४२॥**

पदच्छेद—यतः यतः धावति दैव चोदितम् मनः विकार आत्मकम् आप पञ्चसु ।
गुणेषु माया रचितेषु देही असौ प्रपद्यमानः सह तेन जायते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यतः यतः | ११. जिस जिसका | गुणेषु | ५. गुणों से युक्त |
| धावति | १२. चिन्तन करता हुआ | माया | ३. माया के द्वारा |
| दैव | ८. कर्मों की वासना से | रचितेषु | ४. रचे हुये |
| चोदितम् | ९. प्रेरित हुआ | देही | २. जीव का |
| मनः | १०. यह मन | असौ | १. इस |
| विकार | ६. अनेक विकारों का | प्रपद्यमानः | १५. वैसा सोचता हुआ |
| आत्मकम् | ७. पुञ्ज | सह | १७. साथ |
| आप | १४. प्राप्त करता है | तेन | १६. उसी शरीर के |
| पञ्चसु । | १३. पाञ्चभौतिक शरीर को | जायते ॥ | १८. उत्पन्न होता है |

श्लोकार्थ—इस जीव का माया के द्वारा रचे हुये गुणों से युक्त, अनेक विकारों का पुञ्ज, कर्मों की वासना से प्ररित हुआ यह मन जिस-जिसका चिन्तन करता हुआ पाञ्चभौतिक शरीर को प्राप्त करता है, वैसा सोचता हुआ उसी शरीर के साथ उत्पन्न होता है ॥

# त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

**ज्योतिर्यथैवोदकपार्थिवेष्वदः समीरवेगानुगतं विभाव्यते ।**
**एवं स्वमायारचितेष्वसौ पुमान् गुणेषु रागानुगतो विमुह्यति ॥४३॥**

पदच्छेद— ज्योतिः यथा एव उदक पार्थिवेषु अदः समीर वेग अनुगतम् विभाव्यते ।
एवम् स्वमाया रचितेषु असौ पुमान् गुणेषु राग अनुगतः विमुह्यति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ज्योतिः | ५. चमकीली वस्तुयें | एवम् | १०. इसी प्रकार |
| यथा एव | १. जिस प्रकार | स्वमाया | १३. अपनी माया द्वारा |
| उदक | ४. जल में प्रतिबिम्बित | रचितेषु | १४. रचित |
| पार्थिवेषु | ३. घड़े आदि में भरे | असौ | ११. यह |
| अदः | २. यहाँ | पुमान् | १२. पुरुष |
| समीर | ६. वायु के | गुणेषु | १५. गुणों में (शरीरों में) |
| वेग | ७. चलने के | राग | १६. राग के |
| अनुगतम् | ८. साथ चलती हुई | अनुगतः | १७. कारण |
| विभाव्यते । | ९. प्रतीत होती है | विमुह्यति ॥ | १८. मोहित सा हो रहा है |

श्लोकार्थ—जिस प्रकार यहाँ घड़े आदि में भरे जल में प्रतिबिम्बित चमकीली वस्तुयें वायु के चलने के साथ चलती हुई प्रतीत होती हैं उसी प्रकार यह पुरुष अपनी माया द्वारा रचित गुणों में शरीरों में राग के कारण मोहित सा हो रहा है ॥

# चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तस्मान्न कस्यचित् द्रोहमाचरेत् स तथाविधः ।**
**आत्मनः क्षेममन्विच्छन् द्रोग्धुर्वै परतो भयम् ॥४४॥**

पदच्छेद— तस्मात् न कस्यचित् द्रोहम् आचरेत् सः तथा विधः ।
आत्मनः क्षेमम् अन्विच्छन् द्रोग्धुः वै परतः भयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. इसलिये | आत्मनः | २. अपना |
| न | ९. नहीं | क्षेमम् | ३. कल्याण |
| कस्यचित् | ७. किसी से भी | अन्विच्छन् | ४. चाहने वाला |
| द्रोहम् | ८. द्रोह | द्रोग्धुः | १२. द्रोह करने वाले को |
| आचरेत् | १०. करे | वै | ११. क्योंकि |
| सः तथा | ५. वह मनुष्य ऐसा | परतः | १३. दूसरे लोक में भी |
| विधः । | ६. होने के कारण | भयम् ॥ | १४. भय होता है |

श्लोकार्थ—इसलिये अपना कल्याण चाहने वाला वह मनुष्य ऐसा होने के कारण किसी से भी द्रोह नहीं करे। क्योंकि द्रोह करने वाले को दूसरे लोक में भी भय होता है ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**एषा तवानुजा बालाकृपणा पुत्रिकोपमा ।**
**हन्तुं नार्हसि कल्याणीमिमां त्वं दीनवत्सलः ॥४५॥**

पदच्छेद— एषा तव अनुजा बाला कृपणा पुत्रिका उपमा ।
हन्तुम् न अर्हसि कल्याणीम् इमाम् त्वम् दीनवत्सलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एषा | १. यह | हन्तुम् | १२. | मारने |
| तव | २. तुम्हारी | न | १४. | नहीं हैं |
| अनुजा | ३. बहिन देवकी | अर्हसि | १३. | योग्य |
| बाला | ४. बच्ची | कल्याणीम् | ११. | कल्याणी को |
| कृपणा | ५. बहुत दीन | इमाम् | १०. | इस |
| पुत्रिका | ६. कन्या के | त्वम् | ९. | आप |
| उपमा । | ७. समान है | दीनवत्सलः ॥ | ८. | दीनों पर स्नेह करने वाले |

श्लोकार्थ—यह तुम्हारी बहन देवकी बच्ची बहुत दीन और कन्या के समान है। दीनों पर स्नेह करने वाले आप इस कल्याणी को मारने योग्य नहीं हैं ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**एवं स सामभिर्भेदैर्बोध्यमानोऽपि दारुणः ।**
**न न्यवर्तत कौरव्य पुरुषादाननुव्रतः ॥४६॥**

पदच्छेद— एवम् सः सामभिः भेदैः बोध्यमानः अपि दारुणः ।
न न्यवर्तत कौरव्य पुरुष आदान् अनुव्रतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. इस प्रकार | न | ११. | (अपने निश्चय से) नहीं |
| सः | ३. वे वसुदेव जी के | न्यवर्तत | १२. | लौटा |
| सामभिः | ४. सामनीति आदि | कौरव्य | १. | परीक्षित् |
| भेदैः | ५. भेद नीति से | पुरुषादान् | ८. | एवं राक्षसों का |
| बोध्यमानः | ६. समझाये जाने पर | | | |
| अपि दारुणः । | ७. भी क्रूर | अनुव्रतः ॥ | ९. | अनुयायी होने के कारण |

श्लोकार्थ— इस प्रकार वे वसुदेव जी के सामनीति आदि भेदनीति से समझाये जाने पर भी एवं क्रूर राक्षसों का अनुयायी होने के कारण अपने निश्चय से नहीं लौटा ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**निर्बन्धं तस्य तं ज्ञात्वा विचिन्त्यानकदुन्दुभिः ।**
**प्राप्तं कालं प्रतिव्योढुमिदं तत्रान्वपद्यत ॥४७॥**

पदच्छेद— निर्बन्धम् तस्य तम् ज्ञात्वा विचिन्त्य आनकदुन्दुभिः ।
प्राप्तम् कालम् प्रतिव्योढुम् इदम् तत्र अन्वपद्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| निर्बन्धम् | ४. हठ को | प्राप्तम् | ७. | प्राप्त हुये |
| तस्य | २. उस कंस के | कालम् | ८. | इस समय को |
| तम् | ३. ऐसे | प्रतिव्योढुम् | ९. | टाल देना चाहिये |
| ज्ञात्वा | ५. जानकार | इदम् | ११. | इस निश्चय पर |
| विचिन्त्य | ६. विचार किया कि | तत्र | १०. | तब वे |
| आनकदुन्दुभिः । | १. वसुदेव जी ने | अन्वपद्यत ॥ | १२. | पहुँचे |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने उस कंस के ऐसे निश्चय को जानकर विचार किया कि प्राप्त हुये इस समय को टाल देना चाहिये । तब वे इस निश्चय पर पहुँचे ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**मृत्युर्बुद्धिमतापोह्यो यावद् बुद्धिबलोदयम् ।**
**यद्यसौ न निवर्तेत नापराधोऽस्ति देहिनः ॥४८॥**

पदच्छेद— मृत्युः बुद्धिमता अपोह्यः यावत् बुद्धि बल उदयम् ।
यदि असौ न निवर्तेत न अपराधः अस्ति देहिनः ॥

शब्दार्थ –

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मृत्युः | ६. मृत्यु को | यदि | ८. | फिर भी |
| बुद्धिमता | १. बुद्धिमान् पुरुष को | असौ न | ९. | वह न |
| अपोह्यः | ७. टालना चाहिये | निवर्तेत | १०. | टल सके तो |
| यावत् | २. जहाँ-तक | न | १३. | नहीं |
| बुद्धि | ३. बुद्धि और | अपराधः | १२. | कोई दोष |
| बल | ४. बल | अस्ति | १४. | है |
| उदयम् । | ५. साथ दे | देहिनः ॥ | ११. | प्राणी का |

श्लोकार्थ—बुद्धिमान् पुरुष को जहाँ-तक बुद्धि और बल साथ दे मृत्यु को टालना चाहिये । वह टल न सके तो प्राणी का कोई दोष नहीं है ॥

## एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**प्रदाय मृत्यवे पुत्रान् मोचये कृपणामिमाम् ।**
**सुता मे यदि जायेरन् मृत्युर्वा न म्रियेत चेत् ॥४९॥**

पदच्छेद— प्रदाय मृत्यवे पुत्रान् मोचये कृपणाम् इमाम् ।
सुताः मे यदि जायेरन् मृत्युः वा न म्रियेत चेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रदाय | ३. प्रदान करके | मे | ८. मेरे |
| मृत्यवे | १. मृत्यु रूप कंस को | यदि | ७. यदि |
| पुत्रान् | २. पुत्र | जायेरन्। | १०. उत्पन्न हों |
| मोचये | ६. बचा लूँ | मृत्युः | १३. मृत्यु रूप यह कंस |
| कृपणाम् | ५. दीन देवकी को | वा | ११. अथवा |
| इमाम् । | ४. इस | न म्रियेत | १४. न मरे |
| सुताः। | ९. सन्तान | चेत् ॥ | १२. सम्भव है |

श्लोकार्थ—मृत्यु रूप कंस को पुत्र प्रदान करके इस दीन देवकी को बचा लूँ। यदि मेरे पुत्र उत्पन्न हों। अथवा सम्भव है मृत्यु रूप यह कंस न मरे ॥

## पञ्चाशत्तमः श्लोकः

**विपर्ययो वा किं न स्याद् गतिर्धातुर्दुरत्यया ।**
**उपस्थितो निवर्तेत निवृत्तः पुनरापतेत् ॥५०॥**

पदच्छेद— विपर्ययः वा किम् न स्यात् गतिः धातुः दुरत्यया ।
उपस्थितः निवर्तेत निवृत्तः पुनः आपतेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| विपर्ययः | ४. विपरीत | दुरत्यया । | ३. कठिन विधान वश |
| वा | १. अथवा | उपस्थितः | ८. उपस्थित मृत्यु |
| किम् | ६. क्यों | निवर्तेत | ९. टल जाती है और |
| न स्यात् | ७. नहीं होगी (क्योंकि कभी-कभी) | निवृत्तः | १०. टली हुई मृत्यु |
| गतिः | ५. गति (स्थिति) | पुनः | ११. पुनः |
| धातुः | २. विधि के | आपतेत् ॥ | १२. लौट आती है |

श्लोकार्थ—अथवा विधि के कठिन विधान वश विपरीत गति (स्थिति) क्यों नहीं होगी क्योंकि कभी-कभी उपस्थित मृत्यु टल जाती है और टली हुई मृत्यु पुनः लौट आती है ॥

## एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**अग्नेर्यथा दारुवियोगयोगयोरदृष्टतोऽन्यन्न निमित्तमस्ति ।**
**एवं हि जन्तोरपि दुर्विभाव्यः शरीरसंयोगवियोगहेतुः ॥५१॥**

पदच्छेद— अग्नेः यथा दारु वियोग योगयोः अदृष्टतः अन्यत् न निमित्तम् अस्ति ।
एवम् हि जन्तोः अपि दुर्विभाव्यः शरीर संयोग वियोग हेतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अग्नेः | २. वन की अग्नि का | एवम् | ११. | इसी प्रकार |
| यथा | १. जिस प्रकार | हि | १०. | निश्चय ही |
| दारु | ३. किस लकड़ी से | जन्तोः | १२. | प्राणी का |
| वियोग | ३. वियोग | अपि | १३. | भी |
| योगयोः | ५. संयोग होगा यह | दुर्विभाव्यः | १८. | जानना कठिन है |
| अदृष्टतः | ६. अदृष्ट के सिवा | शरीर | १४. | किस शरीर से |
| अन्यत् न | ७. अन्य नहीं | संयोग | १५. | संयोग अथवा |
| निमित्तम् | ८. किसी कारण के अधीन | वियोग | १६. | वियोग होगा, इसका |
| अस्ति | ९. है | हेतुः ॥ | १७. | कारण |

श्लोकार्थ—जिस प्रकार वन की अग्नि का किस लकड़ी से वियोग अथवा संयोग होगा यह अदृष्ट के सिवा अन्य किसो के अधीन नहीं है। निश्चय ही इसी प्रकार प्राणी का भी किस शरीर से संयोग अथवा वियोग होगा, इसका कारण जानना कठिन है ॥

## द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**एवं विमृश्य तं पापं यावदात्मनिदर्शनम् ।**
**पूजायामास वै शौरिर्बहुमानपुरः सरम् ॥५२॥**

पदच्छेद— एवम् विमृश्य तम् पापम् यावत् आत्म निदर्शनम् ।
पूजयामास वै शौरिः बहुमान पुरः सरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एवम् | ५. इस प्रकार | निदर्शनम् । | ४. | अनुसार |
| विमृश्य | ६. विचार करके | पूजयामास | १२. | बड़ी प्रशंसा को |
| तम् | ११. उस कंस की | वै | २. | निश्चय ही |
| पापम् | १०. पापो | शौरिः | ७. | वसुदेव जी ने |
| यावत् | १. तब | बहुमान | ८. | बहुत सम्मान |
| आत्म | ३. बुद्धि के | पुरः सरम् ॥ | ९. | पूर्वक |

श्लोकार्थ—तब निश्चय ही बुद्धि के अनुसार इस प्रकार विचार करके वसुदेव जी ने बहुत सम्मान पूर्वक पापी उस कंस की बहुत प्रशंसा की ॥

## त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**प्रसन्नवदनाम्भोजो नृशंसं निरपत्रपम् ।**
**मनसा दूयमानेन विहसन्निदमब्रवीत् ॥५३॥**

पदच्छेद— प्रसन्नवदन अम्भोजः नृशंसम् निरपत्रपम् ।
मनसा दूयमानेन विहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रसन्नवदन | ३. | प्रसन्न मुख | मनसा | १. | मन से |
| अम्भोजः | ४. | कमल से | दूयमानेन | २. | दुःखी होते हुये |
| नृशंसम् | ६. | क्रूर और | विहसन् | ५. | हँसते हुये से वसुदेव जी ने |
| निरपत्रपम् । | ७. | निर्लज्ज | इदम् अब्रवीत् ॥ | ८. | उस कंस से ऐसा कहा |

श्लोकार्थ—मन से दुःखी होते हुये प्रसन्न मुख कमल से हँसते से वसुदेव जी ने उस कंस से ऐसा कहा ॥

## चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**वसुदेव उवाच—न ह्यस्यास्ते भयं सौम्य यद् वागाहाशरीरिणी ।**
**पुत्रान् समर्पयिष्येऽस्या यतस्ते भयमुत्थितम् ॥५४॥**

पदच्छेद— न हि अस्याः ते भयम् सौम्य यद् वाक्आह अशरीरिणी ।
पुत्रान् समर्पयिष्ये अस्याः यतः ते भयम् उत्थितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न हि | १. | नहीं है | पुत्रान् | ९. | पुत्रों को |
| अस्याः | ४. | इस देवकी से तो | समर्पयिष्ये | १०. | मैं आपको सौंप दूँगा |
| ते | ५. | तुम्हें | अस्याः | ८. | इसके |
| भयम् | ६. | भय | यतः | ११. | जिससे |
| सौम्य यत् | १. | हे सौम्य ! जैसा कि | ते | १२. | तुम्हें |
| वाक् आह | ३. | वाणी ने कहा है कि | भयम् | १३. | भय |
| अशरीरिणी । | २. | आकाश | उत्थितम् ॥ | १४. | उत्पन्न हो गया है |

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! जैसा कि आकाशवाणी ने कहा है कि इस देवकी से तो तुम्हें भय नहीं है । इससे पुत्रों को मैं तुम्हें सौंप दूँगा । जिससे तुम्हें भय उत्पन्न हो गया है ॥

## पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्री शुक उवाच—स्वसुर्वधान्निववृते कंसस्तद्वाक्यसारवित् ।
वसुदेवोऽपि तं प्रीतः प्रशस्य प्राविशद् गृहम् ॥५५॥

पदच्छेद— स्वसुः वधात् निववृते कंसः तत् वाक्य सारवित् ।
वसुदेवः अपि तम् प्रीतः प्रशस्य प्राविशद् गृहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वसुः | ५. | बहिन को | वसुदेवः | ८. | वसुदेव जी |
| वधात् | ६. | मारने का विचार | अपि | ९. | भी |
| निववृते | ७. | छोड़ दिया | तम् | १०. | उससे |
| कंसः | १. | कंस ने | प्रीतः | ११. | प्रसन्न होकर |
| तत् | २. | उनके | प्रशस्य | १२. | उसकी प्रशंसा करके |
| वाक्य | ४. | वचनों को सुनकर | प्राविशद् | १४. | चले गये |
| सारवित् । | ३. | सार युक्त | गृहम् ॥ | १३. | घर को |

श्लोकार्थ—कंस ने उनके सारयुक्त वचनों को सुनकर बहिन को मारने का विचार छोड़ दिया ; वसुदेव जी भी उससे प्रसन्न होकर तथा उसकी प्रशंसा करके घर को चले गये ॥

## षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

अथ काल उपावृत्ते देवकी सर्वदेवता ।
पुत्रान् प्रसुषुवे चाष्टौ कन्यां चैवानुवत्सरम् ॥५६॥

पदच्छेद— अथ काले उपावृत्ते देवकी सर्वदेवता ।
पुत्रान् प्रसुषुवे चाष्टौ कन्यां च एव अनुवत्सरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | इसके बाद | पुत्रान् | ९. | पुत्रों को |
| काल | २. | समय | प्रसुषुवे | १३. | जन्म दिया |
| उपावृत्ते | ३. | बीतने पर | च | १०. | और |
| देवकी | ६. | देवकी ने | अष्टौ | ८. | आठ |
| सर्व | ४. | सब | कन्याम् | ११. | एक कन्या |
| देवता । | ५. | देवस्वरूप | च एव | १२. | को भी |
| | | | अनुवत्सरम् ॥ | ७. | प्रत्येक वर्ष के क्रम से |

श्लोकार्थ—इसके बाद समय बीतने पर सब देव स्वरूप देवकी ने प्रत्येक वर्ष के क्रम से आठ पुत्रों को और एक कन्या को भी जन्म दिया ॥

## सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

कीर्तिमन्तं प्रथमजं कंसायानकदुन्दुभिः ।
अर्पयामास कृच्छ्रेण सोऽनृतादतिविह्वलः ॥५७॥

पदच्छेद— कीर्तिमन्तम् प्रथमजम् कंसाय आनकदुन्दुभिः ।
अर्पयामास कृच्छ्रेण सः अनृतात् अति विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कीर्तिमन्तम् | ४. | कीर्तिमान् को | कृच्छ्रेण | २. | कष्टपूर्वक |
| प्रथमजम् | ३. | प्रथम पुत्र | सः | ७. | क्योंकि वे |
| कंसाय | ५. | कंस को | अनृतात् | ८. | झूठ बोलने के भय से |
| आनकदुन्दुभिः । | १. | वसुदेव जी ने | अति | ९. | अत्यन्त |
| अर्पयामास | ६. | समर्पित कर दिया | विह्वलः ॥ | १०. | व्याकुल हो रहे थे |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने कष्टपूर्वक प्रमथ पुत्र कीर्तिमान् को समर्पित कर दिया । क्योंकि वे झूठ बोलने के भय से अत्यन्त व्याकुल हो रहे थे ॥

## अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

किं दुःसहं नु साधूनां विदुषां किमपेक्षितम् ।
किमकार्यं कदर्याणां दुस्त्यजं किं धृतात्मनाम् ॥५८॥

पदच्छेद— किम् दुः सहम् नु साधूनाम् विदुषाम् किम् अपेक्षितम् ।
किम् अकार्यम् कदर्याणाम् दुस्त्यजम् किम् धृत आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | २. | कुछ भी | किम् | ९. | कौन सा |
| दुःसहम् | ३. | दुः सह | अकार्यम् | १०. | कार्य नहीं कर सकता |
| नु | ४. | नहीं है | कदर्याणाम् | ८. | नीच पुरुष |
| साधूनाम् | १. | सज्जन पुरुषों के लिये | दुस्त्यजम् | १४. | त्यागना असम्भव नहीं है |
| विदुषाम् | ५. | ज्ञानियों को | किम् | १३. | कुछ भी |
| किम् | ६. | किसी वस्तु की | धृत | १२. | धारण करने वालों के लिये |
| अपेक्षितम् । | ७. | अपेक्षा नहीं होती | आत्मनाम् ॥ | ११. | भगवान् को हृदय में |

श्लोकार्थ—सज्जन पुरुषों के लिये कुछ भी दुःसह नहीं है । ज्ञानियों को किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं होती । नीच पुरुष कौन सा कार्य नहीं कर सकता । भगवान् को हृदय में धारण करने वालों के लिये कुछ भी त्यागना असम्भव नहीं है ॥

## एकोनषष्टितमः श्लोकः

**दृष्ट्वा समत्वं तच्छौरेः सत्ये चैव व्यवस्थितिम् ।**
**कंसस्तुष्टमना राजन् प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥५९॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा समत्वम् तत् शौरेः सत्ये च एव व्यवस्थितिम् ।
कंसः तुष्ट मनाः राजन् प्रहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ८. | देखकर | कंसः | ९. | कंस ने |
| समत्वम् | ३. | इस प्रकार सम-भाव | तुष्ट | १०. | सन्तुष्ट |
| तत् शौरेः | २. | उन वसुदेव जी का | मनाः | ११. | मन से |
| सत्ये | ५. | सत्य में | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| च | ४. | और | प्रहसन् | १२. | हँसते हुये |
| एव | ६. | भी | इदम् | १३. | इस प्रकार |
| व्यवस्थितिम् । | ७. | स्थिति को | अब्रवीत् ॥ | १४. | कहा |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उन वसुदेव जी का इस प्रकार सम-भाव और सत्य में स्थिति को देखकर कंस ने सन्तुष्ट मन से हँसते हुये इस प्रकार कहा ॥

## षष्टितमः श्लोकः

**प्रतियातु कुमारोऽयं न ह्यस्मादस्ति मे भयम् ।**
**अष्टमाद् युवयोर्गर्भान्मृत्युर्मे विहितः किल ॥६०॥**

पदच्छेद— प्रतियातु कुमारः अयम् न हि अस्मात् अस्ति मे भयम् ।
अष्टमात् युवयोः गर्भात् मृत्युः मे विहितः किल ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रतियातु | ३. | ले जाइये | अष्टमात् | १०. | आठवें |
| कुमारः | २. | सुकुमार बालक को | युवयोः | ९. | आपके |
| अयम् | १. | आप इस | गर्भात् | ११ | गर्भ से उत्पन्न सन्तान से |
| न हि | ६. | नहीं | मृत्युः | १३. | मृत्यु |
| अस्मात् | ४ | इससे | मे | १२. | मेरी |
| अस्ति | ७. | है | विहितः | १४. | बताई गई है |
| मे भयम् । | ५. | मुझे भय | किल ॥ | ८. | क्योंकि निश्चय ही |

श्लोकार्थ—आप इस प्रकार सुकुमार बालक को ले जाइये । इससे मुझे भय नहीं है । क्योंकि निश्चय ही आप दोनों के आठवें गर्भ से उत्पन्न सन्तान से मेरी मृत्यु बताई गई है ॥

## एकषष्टितमः श्लोकः

**तथेति सुतमादाय ययावानकदुन्दुभिः ।**
**नाभ्यनन्दत तद्वाक्यमसतोऽविजितात्मनः ॥६१॥**

पदच्छेद— तथा इति सुतम् आदाय ययौ आनकदुन्दुभिः ।
न अभ्यनन्दत तत् वाक्यम् असतः अविजित आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथा | १. | ठीक है | न | १३. | नहीं किया |
| इति | २. | इस प्रकार कह कर | अभ्यनन्दत | १२. | अभिनन्दन |
| सुतम् | ३. | पुत्र को | तत् | ७. | उन्होंने |
| आदाय | ४. | लेकर | वाक्यम् | ११. | वचन का |
| ययौ | ६. | चले गये | असतः | ८. | दुष्ट तथा |
| आनकदुन्दुभिः । | ५. | वसुदेव जी | अविजित | ९. | असंयत |
| | | | आत्मनः ॥ | १०. | मन वाले उस कंस के |

श्लोकार्थ—ठीक है । इस प्रकार कह कर पुत्र को लेकर वसुदेव जी चले गये । उन्होंने दुष्ट तथा असंयत मन वाले उस कंस के वचन का अभिनन्दन नहीं किया ॥

## द्विषष्टितमः श्लोकः

**नन्दाद्या ये व्रजे गोपा याश्चामीषां च योषितः ।**
**वृष्णयो वसुदेवाद्या देवक्याद्या यदुस्त्रियः ॥६२॥**

पदच्छेद— नन्द आद्याः ये व्रजे गोपा याः च अमीषाम् च योषितः ।
वृष्णयः वसुदेव आद्याः देवकी आद्याः यदु स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्द आद्याः | ३. | नन्द आदि | वृष्णयः | १०. | वृष्णिवंशी यादव |
| ये | २. | जो | वसुदेव | ८. | वसुदेव |
| व्रजे | १. | व्रज में रहने वाले | आद्या | ९. | आदि |
| गोपाः | ४. | गोप | देवकी | ११. | देवकी |
| याः च | ५. | और जो | आद्या | १२. | आदि |
| अमीषाम् | ६. | उनकी | यदु | १३. | यदुवंश की |
| च योषितः । | ७. | स्त्रियाँ हैं वे | स्त्रियः ॥ | १४. | स्त्रियाँ देवता हैं |

श्लोकार्थ—व्रज में रहने वाले जो नन्द आदि गोप और जो उनकी स्त्रियाँ हैं वे, वसुदेव आदि वृष्णिवंशी यादव और देवकी आदि यदुवंश की स्त्रियाँ सब देवता हैं ॥

# त्रिषष्टितमः श्लोकः

**सर्वे वै देवताप्राया उभयोरपि भारत ।**
**ज्ञातयो बन्धुसुहृदो ये च कंसमनुव्रताः ॥६३॥**

पदच्छेद— सर्वे वै देवता प्रायाः उभयोः अपि भारत ।
ज्ञातयः बन्धु सुहृदः ये च कंसम् अनुव्रताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सर्वे | ११. ये सब | ज्ञातयः | ५. | बान्धव |
| वै | १. निश्चय ही | बन्धुः | ४. | बन्धु |
| देवता | १३. देवता | सुहृदः | ६. | सगे सम्बन्धी |
| प्रायाः | १४. ही हैं | ये | ८. | जो |
| उभयोः | ३. नन्द वसुदेव दोनों के | च | ७. | और |
| अपि | १२. भी | कंसम् | ९. | कंस के |
| भारत । | २. हे परीक्षित् | अनुव्रताः ॥ | १०. | सेवक हैं |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! निश्चय ही नन्द, वसुदेव, दोनों के बन्धु-बान्धव, सगे सम्बन्धी और जो कंस के सेवक हैं, वे सब भी देवता ही हैं ॥

# चतुःषष्टितमः श्लोकः

**एतत् कंसाय भगवाञ्छशंसाभ्येत्य नारदः ।**
**भूमेर्भारायमाणानां दैत्यानां च वधोद्यमम् ॥६४॥**

पदच्छेद— एतत् कंसाय भगवान् शशंस अभ्येत्य नारदः ।
भूमेः भारायमाणानां दैत्यानाम् च वध उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एतत् | ७. यह | भूमेः | ८. | पृथ्वी का |
| कंसाय | ३. कंस के | भारायमाणानां | ९. | भार बढ़ जाने के कारण |
| भगवान् | १. भगवान् | दैत्यानाम् | १०. | दैत्यों के |
| शशंस | ५. बताया कि | च | ६. | और |
| अभ्येत्य | ४. पास पहुँच कर | वध | ११. | वध की |
| नारदः । | २. नारद जीने | उद्यमम् ॥ | १२. | तैयारी की जा रही है |

श्लोकार्थ—भगवान् नारद जी ने कंस के पास पहुँच कर बताया कि यह पृथ्वी का भार बढ़ जाने के कारण दैत्यों के वध की तैयारी की जा रही है ॥

## पञ्चषष्टितमः श्लोकः

ऋषेर्विनिर्गमे कंसो यदून् मत्वा सुरानिति ।
देवक्या गर्भसम्भूतं विष्णुं च स्ववधं प्रति ॥६५॥

पदच्छेद— ऋषेः विनिर्गमे कंसः यदून् मत्वा सुरान् इति ।
देवक्याः गर्भं सम्भूतम् विष्णुम् च स्ववधम् प्रति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऋषेः | २. देवर्षि नारद के | देवक्याः | ९. देवकी के |
| विनिर्गमे | ३. चले जाने पर | गर्भं | १०. गर्भ से |
| कंसः | ४. कंस ने | सम्भूतम् | ११. उत्पन्न हुये |
| यदून् | ५. यदुवंशियों को | विष्णुम् | १२. भगवान् विष्णु को |
| मत्वा | ७. मान लिया | च | ८. और |
| सुरान् | ६. देवता | स्ववधम् | १३. अपने वध का |
| इति । | १. इस प्रकार | प्रति ॥ | १४. कारण समझ लिया |

श्लोकार्थ—इस प्रकार देवर्षि नारद के चले जाने पर कंस ने यदुवंशियों को देवता मान लिया । और देवकी के गर्भ से उत्पन्न भगवान् विष्णु को अपने वध का कारण समझ लिया ॥

## षट्षष्टितमः श्लोकः

देवकीं वसुदेवं च निगृह्य निगडैर्गृहे ।
जातं जातमहन् पुत्रं तयोरजनशङ्कया ॥६६॥

पदच्छेद— देवकीम् वसुदेवम् च निगृह्य निगडैः गृहे ।
जातम् जातम् अहन् पुत्रम् तयोः अजन शङ्कया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| देवकीम् | १. देवकी | जातम् | ८. उत्पन्न |
| वसुदेवम् | ३. वसुदेव को | जातम् | ९. उत्पन्न हुए प्रत्येक |
| च | २. और | अहन् | १३. मारता गया |
| निगृह्य | ५. बाँधकर | पुत्रम् | १०. पुत्र को |
| निगडैः | ४. जंजीरों से | तयोः | ७. फिर वह |
| गृहे । | ६. घर में डाल दिया | अजन | ११. भगवान् विष्णु की |
| | | शङ्कया ॥ | १२. शङ्का से |

श्लोकार्थ—देवकी और वसुदेव को जंजीरों से बाँधकर घर में डाल दिया । फिर वह उत्पन्न हुये प्रत्येक पुत्र को भगवान् विष्णु की शङ्का से मारता गया ॥

## सप्तषष्टितमः श्लोकः

**मातरं पितरं भ्रातॄन् सर्वांश्च सुहृदस्तथा।**
**घ्नन्ति ह्यसुतृपो लुब्धा राजानः प्रायशो भुवि ॥६७॥**

पदच्छेद— मातरम् पितरम् भ्रातॄन् सर्वान् च सुहृदः तथा।
घ्नन्ति हि असुतृपः लुब्धाः राजानः प्रायशः भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मातरम् | ६. माता | | घ्नन्ति हि | १३. मार डालते हैं |
| पितरम् | ७. पिता | | असुतृपः | ३. प्राणों का पोषण करने वाले |
| भ्रातॄन् | ८. भाई | | लुब्धाः | ४. लोभी |
| सर्वान् | १२. सबको भी | | राजानः | ५. राजा अपने स्वार्थ के लिये |
| च | ११. और | | प्रायशः | २. प्रायः |
| सुहृदः | ९. इष्ट मित्र बन्धु | | भुवि ॥ | १. पृथ्वी में |
| तथा। | १०. तथा | | | |

श्लोकार्थ—पृथ्वी पर प्रायः प्राणों का पोषण करने वाले लोभी राजा अपने स्वार्थ के लिये माता, पिता भाई, इष्ट मित्र-बन्धु तथा और सबको भी मार डालते हैं ॥

## अष्टषष्टितमः श्लोकः

**आत्मानमिह सञ्जातं जानन् प्राग् विष्णुना हतम्।**
**महासुरं कालनेमिं यदुभिः स व्यरुध्यत ॥६८॥**

पदच्छेद— आत्मानम् इह सञ्जातम् जानन् विष्णुना हतम्।
महा असुरं कालनेमिम् यदुभिः सः व्यरुध्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आत्मानम् | २. अपने को | महा | ५. महान् |
| इह | १०. और अब मैं यहाँ | असुरम् | ६. असुर |
| सञ्जातम् | ११. उत्पन्न हुआ हूँ | कालनेमि | ७. कालनेमि था |
| जानन् | ३. यह जानते हुये कि मैं | यदुभिः | १२. यदुवंशियों से |
| प्राक् | ४. पहले | सः | १. कंस ने |
| विष्णुना | ८. भगवान् विष्णु ने | व्यरुध्यत ॥ | १३. विरोध कर लिया |
| हतम्। | ९. मुझे मारा था और | | |

श्लोकार्थ—कंस ने यह जानते हुये कि मैं पहले महान् असुर कालनेमि था, भगवान् विष्णु ने मुझे मारा था और अब मैं यहाँ उत्पन्न हुआ हूँ । यदुवंशियों से विरोध कर लिया ॥

## एकोनसप्ततितमः श्लोकः

**उग्रसेनं च पितरं यदुभोजान्धकाधिपम् ।**
**स्वयं निगृह्य बुभुजे शूरसेनान् महाबलः ॥६९॥**

**पदच्छेद—** उग्रसेनम् च पितरम् यदु भोज अन्धक अधिपम् ।
स्वयम् निगृह्य बुभुजे शूरसेनान् महाबलः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उग्रसेनम् | ८. | उग्रसेन को | स्वयम् | ९. | स्वयं |
| च | १. | और | निगृह्य | १०. | कैद करके |
| पितरम् | ७. | अपने पिता | बुभुजे | १२. | राज्य करने लगा |
| यदुभोज | ४. | यदु भोज | शूरसेनान् | ११. | शूरसेन देश का |
| अन्धक | ५. | अन्धक वंश के | महा | २. | महान् |
| अधिपम् । | ६. | अधिनायक | बलः ॥ | ३. | बलवान् कंस |

**श्लोकार्थ—**और महान् बलवान् कंस यदु, भोज, अन्धक वंश के अधिनायक अपने पिता उग्रसेन को स्वयं कैद करके शूरसेन देश का राज्य करने लगा ॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### द्वितीयः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— प्रलम्बबकचाणूरतृणावर्तमहाशनैः ।
मुष्टिकारिष्टद्विविदपूतनाकेशिधेनुकैः ॥१॥

पदच्छेद— प्रलम्ब बक चाणूर तृणावर्त महाशनैः ।
मुष्टिक अरिष्ट द्विविद पूतना केशि धेनुकैः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रलम्ब | १. | प्रलम्बासुर | मुष्टिक | ६. | मुष्टिक |
| बक | २. | बकासुर | अरिष्ट | ७. | अरिष्टासुर |
| चाणूर | ३. | चाणूर | द्विविद | ८. | द्विविद |
| तृणावर्त | ४. | तृणावर्त | पूतना केशि | ९. | पूतना, केशी और |
| महाशनैः । | ५. | अघासुर | धेनुकैः ।। | १०. | धेनुक आदि थे |

श्लोकार्थ—उस कंस के साथी प्रलम्बासुर, बकासुर, चाणूर, तृणावर्त, अघासुर, मुष्टिक, अरिष्टासुर, द्विविद, पूतना, केशी और धेनुक आदि थे ।।

### द्वितीयः श्लोकः

अन्यैश्चासुरभूपालैर्बाणभौमादिभिर्युतः ।
यदूनां कदनं चक्रे बली मागधसंश्रयः ॥२॥

पदच्छेद— अन्यैः च असुर भूपालैः बाण भौम आदिभिः युतः ।
यदूनाम् कदनम् चक्रे बली मागध संश्रयः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्यैः | ५. | अन्य | युतः । | ११. | युक्त होकर |
| च | ४. | और | यदूनाम् | १२. | यदुवंशियों का |
| असुर | ६. | दैत्य | कदनम् | १३. | संहार |
| भूपालैः | १०. | राजाओं से | चक्रे | १४. | करने लगा |
| बाण | ७. | बाणासुर | बली | १. | अत्यन्त बलवान कंस |
| भौम | ८. | भौमासुर | मागध | २. | मगध नरेश की |
| आदिभिः | ९. | आदि | संश्रयः ।। | ३. | सहायता पाकर |

श्लोकार्थ—अत्यन्त बलवान् कंस मगध नरेश की सहायता पाकर और अन्य दैत्य बाणासुर, भौमासुर आदि राजाओं से युक्त होकर यदुवंशियों का संहार करने लगा ।।

## तृतीयः श्लोकः

ते पीड़िता निविविशुः कुरुपाञ्चालकेकयान् ।
शाल्वान् विदर्भान् निषधान् विदेहान् कोशलानपि ॥३॥

पदच्छेद— ते पीडिताः निविविशुः कुरु पाञ्चाल केकयान् ।
शाल्वान् विदर्भान् निषधान् विदेहान् कोशलान् अपि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते | १. | वे लोग | शाल्वान् | ६. | शाल्व |
| पीडिताः | २. | भयभीत होकर | विदर्भान् | ७. | विदर्भ |
| निविविशुः | १२. | भाग गये | निषधान् | ८. | निषध |
| कुरु | ३. | कुरु | विदेहान् | ९. | विदेह और |
| पाञ्चाल | ४. | पाञ्चाल | कोशलान् | १०. | कोशल देशों में |
| केकयान् | ५. | केकय | अपि ॥ | ११. | भी |

श्लोकार्थ—वे लोग भयभीत होकर कुरु, पाञ्चाल, केकय, शाल्व, विदर्भ, निषध, विदेह और कोशल देशों में भी भाग गये ॥

## चतुर्थः श्लोकः

एके तमनुरुन्धाना ज्ञातयः पर्युपासते ।
हतेषु षट्सु बालेषु देवक्या औग्रसेनिना ॥४॥

पदच्छेद— एके तम् अनुरुन्धानाः ज्ञातयः परि उपासते ।
हतेषु षट्सु बालेषु देवक्याः औग्रसेनिना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एके | १. | कुछ | हतेषु | १०. | मार डाले |
| तम् | ३. | ऊपर से उसके | षट्सु | ८. | छः |
| अनुरुन्धाना | ४. | अनुसार करते हुये | बालेषु | ९. | बालक |
| ज्ञातयः | २. | लोग | देवक्या | ७. | देवकी के |
| परि उपासते । | ५. | उसकी सेवा में लगे रहे | औग्रसेनिना ॥ | ६. | जब कंस ने |

श्लोकार्थ—कुछ लोग ऊपर से उसके अनुसार काम करते हुये उसकी सेवा में लगे रहे । जब कंस ने देवकी के छः बालक मार डाले ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**सप्तमो वैष्णवं धाम यमनन्तं प्रचक्षते ।**
**गर्भो बभूव देवक्या हर्षशोकविवर्धनः ॥५॥**

पदच्छेद— सप्तमः वैष्णवम् धाम यम् अनन्तम् प्रचक्षते ।
गर्भः बभूव देवक्याः हर्ष शोक विवर्धनः ॥

शब्दार्थ -

| | | | |
|---|---|---|---|
| सप्तमः | १. देवकी के सातवें | गर्भः | २. गर्भ में |
| वैष्णवम् | ३. भगवान् के | बभूव | ८. वे पधारे |
| धाम | ४. अंशस्वरूप शेष जी | देवक्याः | ९. जो देवकी के |
| यम् | ५. जिन्हें | हर्ष | १०. हर्ष और |
| अनन्तम् | ६. अनन्त भी | शोक | ११. शोक को |
| प्रचक्षते । | ७. कहते हैं | विवर्धनः ॥ | १२. बढ़ाने वाले थे |

श्लोकार्थ—देवकी के सातवें गर्भ में भगवान् के अंशस्वरूप शेष जी, जिन्हें अनन्त भी कहते हैं, वे पधारे । जो देवकी के हर्ष और शोक को बढ़ाने वाले थे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**भगवानपि विश्वात्मा विदित्वा कंसजं भयम् ।**
**यदूनां निजनाथानां योगमायां समादिशत् ॥६॥**

पदच्छेद— भगवान् अपि विश्वात्मा विदित्वा कंसजम् भयम् ।
यदूनाम् निज नाथानाम् योगमायाम् सम् आदिशत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भगवान् | २. भगवान् ने | यदूनाम् | ६. यदुवंशियों को |
| अपि | ३. भी | निज | ४. स्वयं को |
| विश्वात्मा | १. विश्व के आत्मा | नाथानाम् | ५. स्वामी मानने वाले |
| विदित्वा | ९. जानकर | योगमायाम् | १०. योगमाया को |
| कंसजम् | ७. कंस के द्वारा | सम् | ११. यह |
| भयम् । | ८. भयभीत | आदिशत् ॥ | १२. आदेश दिया |

श्लोकार्थ—विश्वात्मा भगवान् ने भी स्वयं को स्वामी मानने वाले यदुवंशियों को कंस के द्वारा भयभीत जानकर योगमाया को यह आदेश दिया ॥

## सप्तमः श्लोकः

**गच्छ देवि व्रजं भद्रे गोपगोभिरलङ्कृतम् ।**
**रोहिणी वसुदेवस्य भार्याऽऽस्ते नन्दगोकुले ।**
**अन्याश्च कंससंविग्ना विवरेषु वसन्ति हि ॥७॥**

पदच्छेद— गच्छ देवि व्रजम् भद्रे गोप गोभिः अलङ्कृतम् ।
रोहिणी वसुदेवस्य भार्या आस्ते नन्द गोकुले ।
अन्यान् च कंस संविग्ना विवरेषु वसन्ति हि ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गच्छ | ६. | जाओ | आस्ते | १२. | निवास करती हैं |
| देवि | १. | हे देवि ! | नन्द | ७. | वहाँ नन्द बाबा के |
| व्रजम् | ५. | व्रज में | गोकुले | ८. | गोकुल में |
| भद्रे | २. | कल्याणी तुम | अन्यान् | १४. | उसकी अन्य पत्नियाँ |
| गोपगोभिः । | ३. | ग्वालों और गौओं से | च | १३. | और |
| अलङ्कृतम् । | ४. | सुशोभित | कंस | १५. | कंस से |
| रोहिणी | ११. | रोहिणी | संविग्ना | १६. | डरकर |
| वसुदेवस्य | ९. | वसुदेव की | विवरेषु | १७. | गुप्त स्थानों में |
| भार्या | १०. | पत्नी | वसन्ति हि | १८. | रहती हैं |

श्लोकार्थ—हे देवि कल्याणी ! तुम ग्वालों और गौओं से सुशोभित व्रज में जाओ । वहाँ नन्द बाबा के गोकुल में वसुदेव की पत्नी रोहिणी निवास करती हैं । और उनकी अन्य पत्नियाँ कंस से डर कर गुप्त स्थानों में रहती हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

**देवक्या जठरे गर्भं शेषाख्यं धाम मामकम् ।**
**तत् संनिकृष्य रोहिण्या उदरे संनिवेशय ॥८॥**

पदच्छेद— देवक्या जठरे गर्भम् शेष आख्यम् धाम मामकम् ।
तत् संनिकृष्य रोहिण्याः उदरे संनिवेशय ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देवक्याः | ५. | देवकी के | मामकम् । | १. | इस समय मेरा |
| जठरे | ६. | उदर में | तत् | ८. | उसे वहाँ से |
| गर्भम् | ७. | गर्भरूप से स्थित है | संनिकृष्य | ९. | निकालकर तुम |
| शेष | २. | शेष | रोहिण्याः | १०. | रोहिणी के |
| आख्यम् | ३. | नामक | उदरे | ११. | पेट में |
| धाम | ४. | अंश | संनिवेशय ॥ | १२. | रख दो |

श्लोकार्थ—इस समय मेरा शेष नामक अंस देवकी के उदर में गर्भ रूप में स्थित है । उसे वहाँ से निकालकर तुम रोहिणी के पेट में रख दो ॥

## नवमः श्लोकः

अथाहमंशभागेन देवक्याः पुत्रतां शुभे ।
प्राप्स्यामि त्वं यशोदायां नन्दपत्न्यां भविष्यसि ॥९॥

पदच्छेद— अथ अहम् अंश भागेन देवक्याः पुत्रताम् शुभे ।
प्राप्स्यामित्वम् यशोदायाम् नन्दपत्न्याम् भविष्यसि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | २. | अब | प्राप्स्यामि | ७. | बनूँगा (और) |
| अहम् | ३. | मैं | त्वम् | ८. | तुम |
| अंशभागेन | ४. | अपने अंशों सहित | यशोदायाम् | ११. | यशोदा के गर्भ से |
| देवक्याः | ५. | देवकी का | नन्द | ९. | नन्द बाबा की |
| पुत्रताम् | ६. | पुत्र | पत्न्याम् | १०. | पत्नी |
| शुभे ॥ | १. | हे कल्याणी | भविष्यसि ॥ | १२. | जन्म लेना |

श्लोकार्थ—हे कल्याणी ! अब मैं अपने अंशों सहित देवकी का पुत्र बनूँगा । और तुम नन्द बाबा की पत्नी यशोदा के गर्भ से जन्म लेना ॥

## दशमः श्लोकः

अर्चिष्यन्ति मनुष्यास्त्वां सर्वकामवरेश्वरीम् ।
धूपोपहारबलिभिः सर्वकामवरप्रदाम् ॥१०॥

पदच्छेद— अर्चिष्यन्ति मनुष्याः त्वाम् सर्वकामवरेश्वरीम् ।
धूप उपहार बलिभिः सर्वकामवर प्रदाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अर्चिष्यन्ति | ९. | पूजा करेंगे | धूप | ६. | धूप दीप |
| मनुष्याः | ४. | सभी मनुष्य | उपहार | ७. | उपहार तथा |
| त्वाम् | ५. | तुम्हारी | बलिभिः | ८. | नैवेद्य आदि से |
| सर्व | १. | समस्त | सर्वकाम | १०. | तुम समस्त |
| काम | २. | कामनाओं को | वर | ११. | वर दान |
| वरेश्वरीम् । | ३. | पूर्ण करने वाली जानकर | प्रदाम ॥ | १२. | देने में समर्थ होओगी |

श्लोकार्थ—समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली जानकर सभी मनुष्य तुम्हारी धूप दीप, उपहार तथा नैवेद्य आदि से पूजा करेंगे । तुम समस्त वरदान देने में समर्थ होओगी ॥

## एकादशः श्लोकः

नामधेयानि कुर्वन्ति स्थानानि च नरा भुवि।
दुर्गेति भद्रकालीति विजया वैष्णवीति च ॥११॥

पदच्छेद— नामधेयानि कुर्वन्ति स्थानानि च नराः भुवि।
दुर्गाइति भद्रकालीइति विजया वैष्णवी इति च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नामधेयानि | १०. अनेक नामों से | दुर्गेति | ५. दुर्गा |
| कुर्वन्ति | ११. पुकारेंगे | भद्रकालीइति | ६. भद्रकाली |
| स्थानानि | ३. अनेक स्थान बनाकर | विजया | ७. विजया |
| च | ४. और | वैष्णवी | ९. वैष्णवी आदि |
| नराः | २. लोग | च ॥ | ८. और |
| भुवि। | १. पृथ्वी में | | |

श्लोकार्थ—पृथ्वी में लोग अनेक स्थान बनाकर और दुर्गा, भद्रकाली, विजया और वैष्णवी आदि अनेक नामों से पुकारेंगे ॥

## द्वादशः श्लोकः

कुमुदा चण्डिका कृष्णा माधवी कन्यकेति च।
माया नारायणीशानी शारदेत्यम्बिकेति च ॥१२॥

पदच्छेद— कुमुदा चण्डिका कृष्णा माधवी कन्यका इति च।
माया नारायणी ईशानी शारदा इति अम्बिका इति च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुमुदा | १. कुमुदा | माया | ७. माया |
| चण्डिका | २. चण्डिका | नारायणी | ८. नारायणी |
| कृष्णा | ३. कृष्णा | ईशानी | ९. ईशानी |
| माधवी | ४. माधवी | शारदा | १०. शारदा |
| कन्यका | ५. कन्या | इति | १३. आदि |
| इति | ६. इत्यादि तथा | अम्बिकाइति | १२. अम्बा |
| च। | १४. और भी अनेक नामों से पुकारेंगे | च ॥ | ११. और |

श्लोकार्थ—कुमुदा, चण्डिका, कृष्णा, माधवी, कन्या इत्यादि तथा माया नारायणी, ईशानी, शारदा और अम्बा आदि और भी अनेक नामों से पुकारेंगे ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**गर्भसंकर्षणात् तं वै प्राहुः संकर्षणं भुवि ।**
**रामेति लोकरमणाद् बलं बलवदुच्छ्रयात् ॥१३॥**

पदच्छेद— गर्भ संकर्षणात् तम् वै प्राहुः संकर्षणं भुवि ।
रामेति लोक रमणात् बलम् बलवत् उच्छ्रयात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गर्भ | ३. देवकी के गर्भ से | रामेति | १०. राम कहेंगे (और) |
| संकर्षणात् | ४. खींचे जाने के कारण | लोक | ८. लोक |
| तम् | २. शेष जी को | रमणात् | ९. रञ्जन करने के कारण |
| वै | १. निश्चय ही | बलम् | १३. बलभद्र भी (कहेंगे) |
| प्राहुः | ७. कहेंगे | बलवत् | ११. बलवानों में |
| संकर्षणं | ६. संकर्षण | उच्छ्रयात् ॥ | १२. श्रेष्ठ होने कारण |
| भुवि । | ५. पृथ्वी पर लोग | | |

श्लोकार्थ—निश्चय ही शेष जी को देवकी के गर्भ से खींचे जाने के कारण पृथ्वी पर लोग संकर्षण कहेंगे। लोक रञ्जन करने के कारण राम कहेंगे। और बलवानों में श्रेष्ठ होने के कारण बलभद्र कहेंगे ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**सन्दिष्टैवं भगवता तथेत्योमिति तद्वचः ।**
**प्रतिगृह्य परिक्रम्य गां गता तत् तथाकरोत् ॥१४॥**

पदच्छेद— सन्दिष्टा एवम् भगवता तथा इति ओमिति तत् वचः ।
प्रतिगृह्य परिक्रम्य गाम् गता तत् तथा अकरोत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सन्दिष्टा | ३. आदेश दिया तब माया ने | प्रतिगृह्य | ९. उसे स्वीकार करके |
| एवम् | २. इस प्रकार | परिक्रम्य | १०. उनकी परिक्रमा करके और |
| भगवता | १. जब भगवान् ने | गाम् | ११. पृथ्वी लोक में |
| तथा | ४. जो आज्ञा | गता | १२. जाकर |
| इति | ५. ऐसा कहकर | तत् | १३. उसने |
| ओमिति | ८. शिरोधार्य | तथा | १४. वैसा ही |
| तत् | ६. उनकी | अकरोत् ॥ | १५. किया |
| वचः । | ७. बात | | |

श्लोकार्थ—जब भगवान् ने आदेश दिया तब माया ने जो आज्ञा ऐसा कहकर उनकी बात शिरोधार्य की। उसे स्वीकार करके उनकी परिक्रमा करके और पृथ्वी लोक में जाकर उसने वैसा ही किया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**गर्भे प्रणीते देवक्या रोहिणीं योगनिद्रया ।**
**अहो विस्रंसितो गर्भ इति पौरा विचुक्रुशुः ॥१५॥**

पदच्छेद— गर्भे प्रणीते देवक्याः रोहिणीम् योगनिद्रया ।
अहो विस्रंसितः गर्भः इति पौराः विचुक्रुशुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गर्भे | ४. गर्भ ले जाकर | अहो | १०. हाय |
| प्रणीते | ६. रख दिया | विस्रंसितः | १२. नष्ट हो गया |
| देवक्याः | ३. देवकी का | गर्भः | ११. बेचारी देवकी का गर्भ |
| रोहिणीम् | ५. रोहिणी के उदर में | इति | ९. कहने लगे |
| योग | १. योग | पौराः | ७. तब पुरवासी लोग |
| निद्रया । | २. माया ने | विचुक्रुशुः ॥ | ८. दुःख के साथ |

श्लोकार्थ—योग माया ने देवकी का गर्भ ले जाकर रोहिणी के उदर में रख दिया । तब पुरवासी लोग दुःख के साथ कहने लगे—हाय बेचारी देवकी का गर्भ नष्ट हो गया ॥

## षोडशः श्लोकः

**भगवानपि विश्वात्मा भक्तानामभयङ्करः ।**
**आविवेशांशभागेन मन आनकदुन्दुभेः ॥१६॥**

पदच्छेद— भगवान् अपि विश्वात्मा भक्तानाम् अभयङ्करः ।
आविवेश अंश भागेन मनः आनकदुन्दुभेः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भगवान् | ४. भगवान् | आविवेश | १०. प्रकट हो गये |
| अपि | ५. भी | अंश | ६. अपनी समस्त कलाओं |
| विश्वात्मा | ३. विश्वरूप | भागेन | ७. सहित |
| भक्तानाम् | १. भक्तों को | मनः | ९. मन में |
| अभयङ्करः । | २. अभय करने वाले | आनकदुन्दुभेः ॥ | ८. वसुदेव जी के |

श्लोकार्थ—भक्तों को अभय करने वाले विश्वरूप भगवान् भी अपनी समस्त कलाओं सहित वसुदेव जी के मन में प्रकट हो गये ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**स बिभ्रत् पौरुषं धाम भ्राजमानो यथा रविः ।**
**दुरासदोऽतिदुर्धर्षो भूतानां सम्बभूव ह ॥१७॥**

पदच्छेद— सः बिभ्रत् पौरुषम् धाम भ्राजमानः यथा रविः ।
दुरासदः अति दुर्धर्षः भूतानाम् सम्बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सः | १. वसुदेव जी | रविः । | ५. | सूर्य के |
| बिभ्रत् | ४. धारण करने के कारण | दुरासदः | १०. | तेजस्वी और |
| पौरुषम् | २. भगवान् की | अति | ६. | अत्यधिक |
| धाम | ३. ज्योति को | दुर्धर्षः | ११. | प्रभावशाली |
| भ्राजमानः | ७. तेजस्वी हो गये | भूतानाम् | ८. | वे प्राणियों में |
| यथा | ६. समान | सम्बभूव ह ॥ | १२. | हो गये |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी भगवान् की ज्योति को धारण करने के कारण सूर्य के समान तेजस्वी हो गये । वे प्राणियों में अत्यधिक तेजस्वी और प्रभावशाली हो गये ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**ततो जगन्मङ्गलमच्युतांशं समाहितं शूरसुतेन देवी ।**
**दधार सर्वात्मकमात्मभूतं काष्ठा यथाऽऽनन्दकरं मनस्तः ॥१८॥**

पदच्छेद— ततः जगत् मङ्गलम् अच्युत अंशम् समाहितम् शूरसूतेन देवी ।
दधार सर्वआत्मकम् आत्मभूतम् काष्ठा यथा आनन्दकरम् मनस्तः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ततः | १. तब | दधार | १२. | उसी प्रकार धारण किया |
| जगत् | २. जगत् का | सर्वआत्मकम् | ४. | सर्वात्मा एवम् |
| मङ्गलम् | ३. मङ्गल करने वाले | आत्मभूतम् | ५. | आत्मस्वरूप |
| अच्युत | ६. भगवान् के | काष्ठा | १४. | प्राची दिशा |
| अंशम् | ७. उस अंश को | यथा | १३. | जैसे |
| समाहितम् | ६. आधान किये जाने पर | आनन्दकरम् | १५. | चन्द्रमा को धारण करती है |
| शूरसुतेन | ८. वसुदेव जी के द्वारा | मनस्तः ॥ | ११. | मन से |
| देवी । | १०. देवी देवकी ने विशुद्ध | | | |

श्लोकार्थ—तब जगत् का मङ्गल करने वाले सर्वात्मा एवम् आत्मस्वरूप भगवान् के उस अंश को वसुदेव जी के द्वारा आधान किये जाने पर देवी देवकी ने विशुद्ध मन से उसी प्रकार धारण किया जैसे प्राची दिशा चन्द्रमा को धारण करती है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**सा देवकी सर्वजगन्निवासनिवासभूता नितरां न रेजे ।**
**भोजेन्द्रगेहेऽग्निशिखेव रुद्धा सरस्वती ज्ञानखले यथा सती ॥१९॥**

पदच्छेद— सा देवकी सर्व जगन्निवास निवासभूता नितराम् न रेजे ।
भोजेन्द्र गेहे अग्नि शिखा इव रुद्धा सरस्वती ज्ञानखले यथा सती ॥

| शब्दार्थ—सा | १. | वह | भोजेन्द्र | ७. | कंस के |
|---|---|---|---|---|---|
| देवकी | २. | देवकी | गेहे | ८. | कारागार में |
| सर्व | ३. | समस्त | अग्नि | १६. | दीपक का |
| जगन्निवास | ४. | संसार के निवास स्थान | शिखेव | १७. | प्रकाश नहीं फैलता |
| निवासभूता | ५. | भगवान् का निवास स्थान | रुद्धा | १५. | अवरुद्ध |
| नितराम् | ९. | अत्यधिक | सरस्वती | १४. | श्रेष्ठ विद्या और |
| न | ११. | नहीं हुई | ज्ञानखले | १३. | ज्ञानखल की |
| रेजे । | १०. | सुशोभित | यथा | १२. | जैसे |
| | | | सती ॥ | ६. | होती हुई |

श्लोकार्थ—वह देवकी समस्त संसार का निवास स्थान भगवान् के निवास स्थान होती हुई कंस के कारागार में अत्यधिक सुशोभित नहीं हुई जैसे ज्ञानखल को श्रेष्ठ विद्या और अवरुद्ध दीपक का प्रकाश नहीं फैलता है ॥

## विंशः श्लोकः

**तां वीक्ष्य कंसः प्रभया जितान्तरां विरोचयन्तीं भवनं शुचिस्मिताम् ।**
**आहैष मे प्राणहरो हरिर्गुहां ध्रुवं श्रितो यन्न पुरेयमीदृशी ॥२०॥**

पदच्छेद—ताम्वीक्ष्य कंसः प्रभया अजित अन्तराम् विरोचयन्तीम् भवनम् शुचिस्मिताम् ।
आह एषः मे प्राण हरः हरिः गुहाम् ध्रुवम् श्रितः यत् न पुरा इयम् ईदृशी ॥

| शब्दार्थ—ताम् वीक्ष्य | ८. | उस देवकी को देखकर | एषः | ११. | इसके |
|---|---|---|---|---|---|
| कंसः | १. | कंस ने | मे प्राण | १३. | मेरे प्राणों को |
| प्रभया | ४. | अपनी कान्ति से | हरः हरिः | १४. | हरने वाले भगवान् ने |
| अजित | ३. | भगवान् को धारण किये | गुहाम् | १२. | गर्भ में |
| अन्तराम् | २. | गर्भ में | ध्रुवम् | १०. | निश्चय ही |
| विरोचयन्तीं | ६. | जगमगाते हुये | श्रितः | १५. | प्रवेश किया है |
| भवनम् | ५. | वंदी गृह को | यत् | १६. | क्योंकि |
| शुचिस्मिताम् | ७. | पवित्र मुसकान से युक्त | न | १९. | नहीं थी |
| आह | ९. | कहा | पुरा इयम् | १७. | पहले यह |
| | | | ईदृशी ॥ | १८. | ऐसी |

श्लोकार्थ—कंस ने गर्भ में भगवान् को धारण किये अपनी कान्ति से बन्दीगृह को जगमगाते हुये पवित्र मुसकान से युक्त उस देवकी को देखकर कहा—निश्चय ही इसके गर्भ में मेरे प्राणों को हरने वाले भगवान् ने प्रवेश किया है । क्योंकि पहले यह ऐसी नहीं थी ॥

## एकविंशः श्लोकः

**किमद्य तस्मिन् करणीयमाशु मे यदर्थतन्त्रो न विहन्ति विक्रमम्।**
**स्त्रियाः स्वसुर्गुरुमत्या वधोऽयं यशः श्रियं हन्त्यनुकालमायुः ॥२१॥**

पदच्छेद— किम् अद्य तस्मिन् करणीयम् आशु मे यत् अर्थतन्त्रः न विहन्ति विक्रमम्।
स्त्रियाः स्वसुः गुरुमत्याः वधः अयम् यशः श्रियम् हन्ति अनुकालम् आयुः ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | ४. | क्या | स्त्रियाः | १०. | यह स्त्री |
| अद्य | १. | आज | स्वसुः | ११. | बहन और |
| तस्मिन् | ३. | इसके प्रति | गुरुमत्याः | १२. | गर्भवती है अतः |
| करणीयम् | ५. | करना चाहिये | वधः | १४. | वध तो |
| आशु मे | २. | तत्काल मुझे | अयम् | १३. | इसका |
| यत् | ६. | जिससे | यशः श्रियम् | १५. | मेरा यश लक्ष्मी और |
| अर्थतन्त्रः | ७. | स्वार्थ वश होकर | हन्ति | १८. | नष्ट कर देगा |
| न विहन्ति | ९. | नष्ट न हो | अनुकालम् | १७. | तत्काल |
| विक्रमम्। | ८. | मेरा पराक्रम | आयुः ॥ | १६. | आयु को |

श्लोकार्थ—आज तत्काल मुझे इसके प्रति क्या करना चाहिये। जिससे स्वार्थ वश होकर मेरा पराक्रम नष्ट न हो। यह स्त्री, बहन और गर्भवती है। अतः इसका वध तो मेरा यश लक्ष्मी और आयु को तत्काल नष्ट कर देगा ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**स एष जीवन् खलु सम्परेतो वर्तेत योऽत्यन्तनृशंसितेन।**
**देहे मृते तं मनुजाः शपन्ति गन्ता तमोऽन्धं तनुमानिनो ध्रुवम् ॥२२॥**

पदच्छेद— सः एष जीवन् खलु सम्परेतः वर्तेत यः अत्यन्त नृशंसितेन।
देहे मृते मनुजाः शपन्ति गन्ता तमः अन्धम् तनुमानिनः ध्रुवम् ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः एष | २. | वह ऐसा मनुष्य तो | देहे मृते | ९. | शरीर के मर जाने पर |
| जीवन् | ३. | जीते जी | तम् मनुजाः | १०. | उसे लोग |
| खलु | १. | निश्चय ही | शपन्ति | ११. | गाली देते हैं |
| सम्परेतः | ४. | मरे के समान है | गन्ता | १६. | जाता है |
| वर्तेत | ८. | व्यवहार करता है | तमः | १५. | घोर नरक में |
| यः | ५. | जो | अन्धम् | १४. | अन्धकारमय |
| अत्यन्त | ६. | अत्यन्त | तनुमानिनः | १३. | देहाभिमानियों के योग्य |
| नृशंसितेन। | ७. | क्रूरता का | ध्रुवम् ॥ | १२. | निश्चय ही वह |

श्लोकार्थ—निश्चय ही वह ऐसा मनुष्य तो जीते जी मरे के समान है, जो अत्यन्त क्रूरता का व्यवहार करता है। शरीर के मर जाने पर उसे लोग गाली देते हैं। निश्चय ही वह देहाभिमानियों के योग्य अन्धकारमय घोर नरक में जाता है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**इति घोरतमाद् भावात् सन्निवृत्तः स्वयं प्रभुः ।**
**आस्ते प्रतीक्षंस्तज्जन्म हरेर्वैरानुबन्धकृत् ॥२३॥**

पदच्छेद— इति घोर तमाद् भावात् सन्निवृत्तः स्वयम् प्रभुः ।
आस्ते प्रतीक्षन् तत् जन्म हरेः वैर अनुबन्धकृत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **इति** | २. इस प्रकार | आस्ते | १४. | करने लगा |
| **घोर** | ४. कठिन | प्रतीक्षन् | १३. | प्रतीक्षा |
| **तमाद्** | ३. अत्यन्त | तत् | ११. | उनके |
| **भावात्** | ५. निर्णय से | जन्म | १२. | जन्म की |
| **सन्निवृत्तः** | ७. हट गया (और) | हरेः | ८. | भगवान् से |
| **स्वयम्** | ६. स्वयम् | वैर | ९. | वैर की |
| **प्रभुः ।** | १. सामर्थ्यवान् (वह कंस) | अनुबन्धकृत् ॥ | १०. | गांठ बांधकर |

श्लोकार्थ—सामर्थ्यवान् वह कंस इस प्रकार अत्यन्त कठिन निर्णय से स्वयम् हट गया । भगवान् से वैर की गाँठ बाँधकर उनके जन्म की प्रतीक्षा करने लगा ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**आसीनः संविशंस्तिष्ठन् भुञ्जानः पर्यटन् महीम् ।**
**चिन्तयानो हृषीकेशमपश्यत् तन्मयं जगत् ॥२४॥**

पदच्छेद— आसीनः संविशन् तिष्ठन् भुञ्जानः पर्यटन् महीम् ।
चिन्तयानः हृषीकेशम् अपश्यत् तत् मयम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **आसीनः** | १. वह स्थित रहते हुये | चिन्तयानः | ८. | चिन्तन करता हुआ |
| **संविशन्** | २. उठते | हृषीकेशम् | ७. | श्रीकृष्ण का |
| **तिष्ठन्** | ३. बैठते | अपश्यत् | १२. | देखने लगा |
| **भुञ्जानः** | ४. खाते और | तत् | १०. | उन श्रीकृष्ण |
| **पर्यटन्** | ६. घूमते हुये | मयम् | ११. | मय |
| **महीम् ।** | ५. पृथ्वी पर | जगत् ॥ | ९. | समस्त संसार को |

श्लोकार्थ—वह स्थित रहते हुये, उठते, बैठते, खाते और पृथ्वी पर घूमते हुये श्रीकृष्ण का चिन्तन करता हुआ समस्त संसार को उन श्रीकृष्णमय देखने लगा ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**ब्रह्मा भवश्च तत्रैत्य मुनिभिर्नारदादिभिः ।**
**देवैः सानुचरैः साकं गीर्भिर्वृषणमैडयन् ॥२५॥**

पदच्छेद— ब्रह्मा भवः च तत्र एत्य मुनिभिः नारद आदिभिः ।
देवैः सानुचरैः साकम् गीर्भिः वृषणम् ऐडयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्रह्मा | २. | ब्रह्मा | देवैः | ८. | समस्त देवताओं ने |
| भवः च | ३. | और शङ्कर जी | सानुचरैः | ७. | अनुचरों सहित |
| तत्र | १. | वहाँ कारागार में | साकम् | ६. | साथ ही |
| एत्य | ९. | जाकर | गीर्भिः | ११. | सुमधुर वाणी से |
| मुनिभिः | ५. | ऋषियों सहित | वृषणम् | १०. | श्रीहरि की |
| नारदआदिभिः | ४. | नारद इत्यादि | ऐडयन् ॥ | १२. | स्तुति की |

श्लोकार्थ—वहाँ कारागार में ब्रह्मा और शंकर जी, नारद इत्यादि ऋषियों सहित साथ ही अनुचरों सहित समस्त देवताओं ने जाकर श्रीहरि की सुमधुर वाणी से स्तुति की ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।**
**सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥२६॥**

पदच्छेद — सत्यव्रतम् सत्य परम् त्रिसत्यम् सत्यस्य योनिम् निहितम् च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यम्ऋत सत्यनेत्रम् सत्य आत्मकम् त्वाम् शरण् प्रपन्नाः ॥

शब्दार्थ— :

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्यव्रतम् | १. | हे सत्य संकल्प | सत्यस्य | ९. | आप सत्य के भी |
| सत्य परम् | २. | सत्य ही आपकी प्राप्ति का साधन है | सत्यम् | १०. | सत्य (परमार्थ सत्य हैं) |
| त्रिसत्यम् | ३. | उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय में आप ही सत्य हैं | ऋतसत्यनेत्रम् | ११. | मधुर वाणी और समदर्शन के प्रवर्तक हैं |
| सत्यस्य | ४. | आप ही सत्य के | सत्य | १२. | हे सत्य |
| योनिम् | ५. | कारण हैं | आत्मकम् | १३. | स्वरूप परमात्मा, हम |
| निहितम् | ८. | स्थित हैं | त्वाम् | १४. | आपकी |
| च | ६. | और | शरणम् | १५. | शरण में |
| सत्ये । | ७. | सत्यरूप में | प्रपन्नाः ॥ | १६. | आये हैं |

श्लोकार्थ—हे सत्य संकल्प ! सत्य ही आपकी प्राप्ति का साधन है । उत्पत्ति-स्थिति प्रलय में आप ही सत्य के कारण हैं और सत्यरूप में स्थित हैं । आप परमार्थ सत्य हैं । आप मधुर वाणी और समदर्शन के प्रवर्तक हैं । हे सत्य स्वरूप परमात्मा ! हम आपकी शरण में आये हैं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**एकायनोऽसौ द्विफलस्त्रिमूलश्चतूरसः पञ्चविधः षडात्मा ।**
**सप्तत्वगष्टविटपो नवाक्षो दशच्छदी द्विखगो ह्यादिवृक्षः ॥२७॥**

पदच्छेद — एक अयनः असौ द्विफलः त्रिमूलः चतूरसः पञ्चविधः षडात्मा ।
सप्तत्वक् अष्टविटपः नव अक्षः दशच्छदी द्विखगः हि आदि वृक्षः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एक | ४. | एक | सप्तत्वक् | ११. | सात धातुरूपी छाल वाला |
| अयनः | ५. | प्रकृतिरूप आश्रय वाला | अष्ट विटपः | १२. | आठ शाखाओं वाला |
| असौ | १. | यह संसार रूपी | नव | १३. | नव |
| द्विफलः | ६. | दो फलों वाला | अक्षः | १४. | द्वार वाला |
| त्रिमूलः | ७. | तीन अरों वाला | दशच्छदी | १५. | दश प्राणरूपी पत्ते वाला है |
| चतूरसः | ८. | चार रसों वाला | द्विखगः हि | १६. | इस पर दो पक्षी विराजमान हैं |
| पञ्चविधः | ९. | पाँच प्रकार से जानने योग्य | आदि | २. | सनातन |
| षडात्मा । | १०. | छः स्वभाव वाला | वृक्षः ॥ | ३. | वृक्ष |

श्लोकार्थ—यह संसार रूपी सनातन वृक्ष एक प्रकृति रूप आश्रय वाला, दो फलों वाला, तीन अरों वाला, चार रसों वाला, पाँच प्रकार से जानने योग्य, छः स्वभाव वाला, सात धातुरूपी छाल वाला, आठ शाखाओं वाला, नव द्वार वाला, दस प्राणरूपी पत्ते वाला है । इस पर दो पक्षी विराजमान हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**त्वमेक एवास्य सतः प्रसूतिस्त्वं संनिधानं त्वमनुग्रहश्च ।**
**त्वन्मायया संवृतचेतसस्त्वां पश्यन्ति नाना न विपश्चितो ये ॥२८॥**

पदच्छेद— त्वम् एक एव अस्य सतः प्रसूतिः त्वम् सत्निधानम् त्वम् अनुग्रहः च ।
त्वत् मायया संवृत्त चेतसः त्वाम् पश्यन्ति नाना न विपश्चितः ये ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वम् | ३. | आप | त्वत् | ११. | आपकी |
| एकएव | ४. | एक मात्र ही | मायया | १२. | माया से |
| अस्य | २. | इस संसार वृक्ष के | संवृत | १३. | आवृत्त हो रहा है |
| सतः | १. | कार्यरूप | चेतसः | १०. | जिसका चित्त |
| प्रसूतिः | ५. | कारण हैं | त्वाम् | १४. | वे ही आपको |
| त्वम् | ६. | आप में ही | पश्यन्ति | १६. | देखते हैं |
| सत्निधानम् | ७. | इसका प्रलय होता है | नाना | १५. | अनेक रूपों में |
| त्वम् अनुग्रहः | ८. | आप ही इसके पालक हैं | न | १८. | वे नहीं देखते हैं |
| च । | ९. | और | विपश्चितः ये ॥ | १७. | जो विद्वान् हैं |

श्लोकार्थ—कार्यरूप इस संसार वृक्ष के आप ही एक मात्र कारण हैं । आप में ही इसका प्रलय होता है । आप ही इसके पालक हैं । और जिनका चित्त आप की माया से आवृत हो रहा है, वे ही आपको अनेक रूपों में देखते हैं । जो विद्वान् हैं वे नहीं देखते है ॥

# एकोनत्रिंश श्लोकः

**बिभर्षि रूपाण्यवबोध आत्मा क्षेमाय लोकस्य चराचरस्य ।**
**सत्त्वोपपन्नानि सुखावहानि सतामभद्राणि मुहुः खलानाम् ॥२९॥**

पदच्छेद— बिभर्षि रूपाणि अवबोध आत्मा क्षेमाय लोकस्य चराचरस्य ।
सत्त्व उपपन्नानि सुखावहानि सताम् अभद्राणि मुहुः खलानाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **बिभर्षि** | ७. | धारण करते हैं | सत्त्व | ९. | सत्त्वमय होते हैं जो |
| **रूपाणि** | ६. | अनेकों रूप | उपपन्नानि | ८. | विशुद्ध अप्राकृत |
| **अवबोधः** | १. | आप ज्ञानस्वरूप ! | सुखालहानि | ११. | सुख देते हैं और |
| **आत्मा** | २. | आत्मा हैं | सताम् | १०. | सन्त पुरुषों को |
| **क्षेमाय** | ५. | कल्याण के लिये | अभद्राणि | १४. | कष्ट देते हैं |
| **लोकस्य** | ४. | संसार के | मुहुः | १३. | बार-बार |
| **चराचरस्य ।** | ३. | आप चराचर | खलानाम् ॥ | १२. | दुष्टों को |

श्लोकार्थ—आप ज्ञानस्वरूप आत्मा हैं । आप चराचर संसार के कल्याण के लिये अनेकों रूप धारण करते हैं । आपके वे रूप विशुद्ध अप्राकृत सत्त्वमय होते हैं जो सन्त पुरुषों को सुख देते हैं और दुष्टों को बार-बार कष्ट देते हैं ॥

# त्रिंशः श्लोकः

**त्वय्यम्बुजाक्षाखिलसत्त्वधाम्नि समाधिनाऽऽवेशितचेतसैके ।**
**त्वत्पादपोतेन महत्कृतेन कुर्वन्ति गोवत्सपदं भवाब्धिम् ॥३०॥**

पदच्छेद— त्वयि अम्बुज अक्ष अखिलसत्त्व धाम्नि समाधिना आवेशित चेतसा एके ।
त्वत्पाद पोतेन महत् कृतेन कुर्वन्ति गोवत्स पदम् भव अब्धिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **त्वयि** | ४. | आपके | त्वत्पाद | १२. | आपके चरण कमलरूपी |
| **अम्बुज** | १. | कमल के समान कोमल | पोतेन | १३. | जहाज से |
| **अक्ष** | २. | नेत्रों वाले प्रभु | महत् | १०. | सन्तजनों द्वारा |
| **अखिल सत्त्व** | ५. | समस्त प्राणियों के | कृतेन | ११. | बताए गये |
| **धाम्नि** | ६. | आश्रय स्वरूप रूप में | कुर्वन्ति | १८. | कर लेते हैं |
| **समाधिना** | ८. | पूर्ण एकाग्रता से | गोवत्स | १६. | गाय के बछड़े के |
| **आवेशित** | ९. | लगा पाते हैं (और) | पदम् | १७. | खुर के समान पार |
| **चेतसः** | ७. | अपना चित्त | भव | १४. | भव |
| **एके ।** | ३. | विरले लोग ही | अब्धिम् ॥ | १५. | सागर को |

श्लोकार्थ—कमल के समान कोमल नेत्रों वाले प्रभु ! विरले लोग ही आपके समस्त प्राणियों के आश्रय स्वरूप रूप में अपना चित्त पूर्ण एकाग्रता से लगा पाते हैं और सन्तजनों द्वारा बताये गये आपके चरण कमल रूपी जहाज से भवसागर को गाय के बछड़े के खुर के समान पार कर लेते हैं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन् भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदाः ।**
**भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥३१॥**

पदच्छेद— **स्वयम्** समुत्तीर्य सुदुस्तरम् द्युमन् भव अर्णवम् भीमम् अदभ्र सौहृदाः ।
भवत् पदाम्भोरुह नावम् अत्र ते निधाय याताः सत् अनुग्रहः भवान् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वयम् | ८. | स्वयं | भवत् | १०. | आपके |
| समुत्तीर्य | ९. | पार करके | पदाम्भोरुह | ११. | चरण कमलों की |
| सुदुस्तरम् | ४. | कष्ट से पार करने योग्य | नावम् | १२. | नौका को |
| द्युमन् | १. | हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! | अत्र ते | १३. | यहीं वे |
| भव | ६. | संसार | निधाय | १४. | स्थापित कर |
| अर्णवम् | ७. | सागर को | याताः | १५. | जाते हैं |
| भीमम् | ५. | अत्यन्त भयंकर | सत् | १६. | सत्पुरुषों पर |
| अदभ्र | २ | समस्त प्राणियों से | अनुग्रहः | १८. | महान् कृपा है |
| सौहृदाः । | ३. | स्नेह करने वाले आपके भक्तजन | भवान् ॥ | १७. | आपकी |

श्लोकार्थ—हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! समस्त प्राणियों से स्नेह करने वाले आपके भक्तजन कष्ट से पार करने योग्य अत्यन्त भयंकर संसार सागर को स्वयं पार करके वे आपके चरण कमलों की नौका को यहीं स्थापित कर जाते हैं । सत्पुरुषों पर आपकी महान् कृपा है ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**येऽन्येऽरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।**
**आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधोऽनादृतयुष्मदङ्घ्रयः ॥३२॥**

पदच्छेद— ये अन्ये अरविन्दाक्ष विमुक्त मानिनः त्वयि अस्तभावाद् अविशुद्ध बुद्धयः ।
आरुह्य कृच्छ्रेण परम् पदम् ततः पतन्ति अधः अनादृत युष्मद् अङ्घ्रयः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ये | ८. | जो | आरुह्य | १२. | पहुँचने के |
| अन्ये | ९. | अन्य लोग हैं वे | कृच्छ्रेण | १०. | बड़े कष्ट पूर्वक |
| अरविन्दाक्ष | १ | हे कमलनयन ! | परम् पदम् | ११. | ऊँचे पद पर |
| विमुक्त | २. | अपने को मुक्त | ततः | १३. | बाद |
| मानिनः | ३. | मानने वाले | पतन्ति | १८. | गिर जाते हैं |
| त्वयि | ४. | आपके प्रति | अधः | १७. | नीचे |
| अस्तभावाद् | ५. | भक्ति-भाव से रहित | अनादृत | १६. | अनादर करने के कारण |
| अविशुद्ध | ६. | अशुद्ध | युष्मद् | १४. | आप के |
| बुद्धयः । | ७. | बुद्धि वाले | अङ्घ्रयः ॥ | १५. | चरण कमलों का |

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! अपने को मुक्त मानने वाले आपके प्रति भक्ति-भाव से रहित अशुद्ध बुद्धि वाले जो अन्य लोग हैं वे बड़े कष्ट पूर्वक ऊँचे पद पर पहुँचने के बाद आपके चरण कमलों का अनादर करने के कारण नीचे गिर जाते हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तथा न ते माधव तावकाः क्वचिद् भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदाः।**
**त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्धसु प्रभो ॥३३॥**

पदच्छेद— तथा न ते माधव तावकाः क्वचित् भ्रश्यन्ति मार्गात् त्वयि बद्धसौहृदाः।
त्वया अभिगुप्ताः विचरन्ति निर्भयाः विनायक अनीकप मूर्धसु प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथा | ६. | ज्ञानाभिमानियों की भाँति | बद्धसौहृदाः। | ४. | प्रीति बाँध ली है |
| न | १०. | नहीं होते हैं | त्वया | १२. | आप के द्वारा |
| ते | ५. | वे | अभिगुप्ताः | १३. | रक्षित लोग |
| माधव | १. | हे भगवन्! | विचरन्ति | १८. | विचरण करते हैं |
| तावकाः | २. | आपके निज जन | निर्भयाः | १७. | निर्भय होकर |
| क्वचित् | ८. | कभी भी | विनायक | १४. | विघ्न डालने वालों की |
| भ्रश्यन्ति | ९. | पतित | अनीकप | १५. | सेना के सरदारों के |
| मार्गात् | ७. | साधन मार्ग से | मूर्धसु | १६. | सिर पर पैर रखकर |
| त्वयि | ३. | जिन्होंने आप में | प्रभो ॥ | ११. | हे प्रभो! |

श्लोकार्थ—हे भगवन्! आपके निजजन जिन्होंने आप में प्रीति बाँध ली है। वे ज्ञानाभिमानियों की भाँति साधन मार्ग से कभी भी पतित नहीं होते हैं। हे प्रभो! आपके द्वारा रक्षित लोग विघ्न डालने वालों की सेना के सरदारों के सिर पर पैर रखकर निर्भय होकर विचरण करते हैं॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**सत्त्वं विशुद्धं श्रयते भवान् स्थितौ शरीरिणां श्रेयउपायनं वपुः।**
**वेदक्रियायोगतपःसमाधिभिस्तवार्हणं येन जनः समीहते ॥३४॥**

पदच्छेद— सत्त्वम् विशुद्धं श्रयते भवान् स्थितौ शरीरिणाम् श्रेयउपायनम् वपुः।
वेदक्रिया योगतपः समाधिभिः तव अर्हणम् येन जनः समीहते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्त्वम् | ६. | सत्त्व रूप | वपुः। | ७. | शरीर का |
| विशुद्धम् | ५. | विशुद्ध | वेद क्रिया | १०. | वेद कर्मकाण्ड |
| श्रयते | ८. | आश्रय लेते हैं | योगतपः | ११. | अष्टाङ्ग योग तपस्या और |
| भवान् | १. | आप | समाधिभिः | १२. | समाधि के द्वारा |
| स्थितौ | २. | संसार की स्थिति के लिये | तव अर्हणम् | १३. | आप की आराधना |
| शरीरिणाम् | ३. | शरीरधारियों को | येन जनः | ९. | जिससे भक्त जन |
| श्रेय उपायनम् | ४. | परम कल्याण प्रदान करने वाले | समीहते ॥ | १४. | करते हैं |

श्लोकार्थ—आप संसार की स्थिति के लिये शरीरधारियों को परम कल्याण प्रदान करने वाले विशुद्ध सत्त्वमय शरीर का आश्रय लेते हैं। जिससे भक्त जन वेद, कर्मकाण्ड, अष्टाङ्गयोग, तपस्या और समाधि के द्वारा आपकी आराधना करते हैं॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**सत्त्वं न चेद्धातरिदं निजं भवेद् विज्ञानमज्ञानभिदापमार्जनम् ।**
**गुणप्रकाशैरनुमीयते भवान् प्रकाशते यस्य च येन वा गुणः ॥३५॥**

पदच्छेद— सत्त्वम् न चेत् धातः इदम् निजम् भवेत् विज्ञानम् अज्ञानभिदा अपमार्जनम्
गुण प्रकाशैः अनुमीयते भवान् प्रकाशते यस्य च येन वा गुणः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्त्वम् | ४. | विशुद्ध सत्त्वमय | अपमार्जनम् । | ६. | नष्ट करने वाला |
| न | ६. | न | गुण प्रकाशैः | १७. | गुणों की प्रकाशक वृत्तियों से |
| चेत् | २. | यदि | अनुमीयते | १८. | अनुमान ही होता है |
| धातः | १. | हे प्रभो ! | भवान् | १६. | आपका तो |
| इदम् | ३. | आपका यह | प्रकाशते | १५ | प्रकाशित होते हैं ऐसे |
| निजम् | ५. | निज स्वरूप | यस्य | १३. | जिसके हैं |
| भवेत् | ७. | हो तो | च | ११. | और |
| विज्ञानम् | १०. | अपरोक्ष ज्ञान ही न हो | येन वा | १४. | अथवा जिसके द्वारा |
| अज्ञानभिदा | ८. | अज्ञान और तत्कृत भेद-भाव को | गुणः ॥ | १२. | ये गुण |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! यदि आपका यह विशुद्ध सत्त्वमय निजस्वरूप न हो तो अज्ञान और तत् कृत भेद-भाव को नष्ट करने वाला अपरोक्ष ज्ञान ही न हो । और ये गुण जिसके हैं अथवा जिसके द्वारा प्रकाशित होते हैं ऐसे आपका तो गुणों की प्रकाशक वृत्तियों से अनुमान ही होता है ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**न नामरूपे गुणजन्मकर्मभिर्निरूपितव्ये तव तस्य साक्षिणः ।**
**मनोवचोभ्यामनुमेयवर्त्मनो देव क्रियायां प्रतियन्त्यथापि ॥३६॥**

पदच्छेद — न नामरूपे गुण जन्म कर्मभिः निरूपितव्ये तव तस्य साक्षिणः ।
मनः वचोभ्याम् अनुमेय वर्त्मनाः देव क्रियायाम् प्रतियन्ति अथापि हि ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ११. | नहीं किया जा सकता | मनः वचोभ्याम् | २. | मन और वेदवाणी के द्वारा |
| नामरूपे | ९. | नाम और रूप का | अनुमेय | ४. | अनुमान मात्र होता है |
| गुण-जन्म | ७. | आपके गुण जन्म और | वर्त्मनः | ३. | आपके मार्ग का |
| कर्मभिः | ८. | कर्म आदि के द्वारा आपके | देव | १. | हे प्रभो ! |
| निरूपितव्ये | १०. | निरूपण | क्रियायाम् | १३. | क्रिया योगादि के द्वारा |
| तव तस्य | ५. | आप उनके | प्रतियन्ति | १४. | आपको प्राप्त करते हैं |
| साक्षिणः । | ६. | साक्षी हैं | अथापि हि ॥ | १२ | फिर भी निश्चय ही आपके भक्तजन |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मन और वेदवाणी के द्वारा आपके मार्ग का अनुमान मात्र होता है । आप उनके साक्षी हैं । आपके गुण, जन्म और कर्म आदि के द्वारा आपके नाम और रूप का निरूपण नहीं किया जा सकता । फिर भी निश्चय ही आपके भक्तजन क्रियायों आदि के द्वारा आपको प्राप्त करते हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**शृण्वन् गृणन् संस्मरयंश्च चिन्तयन् नामानि रूपाणि च मङ्गलानि ते।**
**क्रियासु यस्त्वच्चरणारविन्दयोराविष्टचेता न भवाय कल्पते ॥३७॥**

पदच्छेद— शृण्वन् गृणन् संस्मरयन् च चिन्तयन् नामानि रूपाणि च मङ्गलानि ते।
क्रियासु यः त्वत् चरणारविन्दयोः आविष्ट चेताः न भवाय कल्पते ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शृण्वन् | ७. | श्रवण | क्रियासु | १२. | आराधना में ही |
| गृणन् | ८. | कीर्तन | यः | १. | जो पुरुष |
| संस्मरयन् | ९. | स्मरण | त्वत् | २. | आपके |
| च चिन्तयन् | १०. | और ध्यान करते हैं | चरणारविन्दयोः | ११. | और आपके चरण कमलों को |
| नामानि | ४. | नामों | आविष्ट | १४. | लगाये रहते हैं |
| रूपाणि | ६. | रूपों का | चेताः | १३. | चित्त |
| च | ५. | और | न | १७. | नहीं |
| मङ्गलानि | ३. | मङ्गलमय | भवाय | १६. | संसार चक्र में |
| ते। | १५. | इन्हें | कल्पते ॥ | १८. | आना पड़ता है |

श्लोकार्थ—जो पुरुष आपके मङ्गलमय नामों और रूपों का श्रवण, कीर्तन, स्मरण और ध्यान करते हैं। और आप के चरण कमलों की आराधना में ही चित्त लगाये रहते हैं उन्हें संसार चक्र में नहीं आना पड़ता है ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**दिष्ट्या हरेऽस्या भवतः पदो भुवो भारोऽपनीतस्तव जन्मनेशितुः।**
**दिष्ट्याङ्किता त्वत्पदकैः सुशोभनैर्द्रक्ष्याम गां द्यां च तवानुकम्पिताम् ॥३८॥**

पदच्छेद—दिष्ट्या हरेः अस्याः भवतः पदः भुवः भारः अपनीतः तव जन्मना ईशितुः।
दिष्ट्या अङ्किताम् त्वत् पदकैः सुशोभनैः द्रक्ष्याम गाम् द्याम् च तव अनुकम्पिताम् ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्ट्या | ५. | भाग्यवश | दिष्ट्या | ९. | यह बड़े सौभाग्य की बात है |
| हरे | १. | दुःखों को हरने वाले प्रभो ! | अङ्किताम् | १३. | चिह्नों से युक्त |
| अस्याः | ७. | इसका | त्वत् | १०. | हम लोग आपके |
| भवतः पदः | ४. | आपका चरण कमल ही है | पदकैः | ११. | चरण कमलों के द्वारा |
| भुवः | ३. | यह पृथ्वी तो | सुशोभनैः | १२. | विभूषित सुन्दर सुन्दर |
| भारः अपनीतः | ८. | भार दूर हो गया | द्रक्ष्याम | १५. | देखेंगे और आप |
| तव जन्मना | ६. | आपके अवतार मे | गाम् | १४. | पृथ्वी को |
| ईशितुः। | २ | आप सर्वेश्वर हैं | द्याम् | १८. | द्युलोक को भी कृतार्थ करेंगे |
| | | | च तव | १६. | अपनी |
| | | | अनुकम्पिताम् ॥ | १७ | कृपा से |

श्लोकार्थ—दुःखों को हरने वाले प्रभो ! आप सर्वेश्वर हैं। यह पृथ्वी तो आपका चरण ही है। भाग्यवश आपके अवतार से इसका भार दूर हो गया। यह बड़े सौभाग्य की बात है। हम लोग आपके चरण कमलों के द्वारा विभूषित सुन्दर सुन्दर चिह्नों से युक्त पृथ्वी को देखेंगे। और आप अपनी कृपा से द्युलोक को भी कृतार्थ करेंगे ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**न तेऽभवस्येश भवस्य कारणं विना विनोदं बत तर्कयामहे ।**
**भवो निरोधः स्थितिरप्यविद्यया कृता यतस्त्वय्यभयाश्रयात्मनि ॥३९॥**

पदच्छेद— न ते अभवस्य ईश भवस्य कारणम् विना विनोदम् बत तर्कयामहे ।
भवः निरोधः स्थितिः अपि अविद्यया कृता यतः त्वयि अभय आश्रय आत्मनि ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ७. कुछ नहीं कहा जा सकता है | तर्कयामहे । | १०. कह सकते हैं । |
| ते | ३. आपके | भवः | ११. जगत् की |
| अभवस्य | २. आप अजन्मा हैं | निरोधः | १३. प्रलय |
| ईश | १. हे प्रभो ! | स्थितिः | १२. स्थिति और |
| भवस्य | ४. जन्म के | अपि अविद्यया | १४. भी अविद्या |
| कारणम् | ५. कारण के | कृता: यतः | १५. कृत ही है जो |
| विना | ६. सम्बन्ध में | त्वयि अभय | १६. आप अभय स्वरूप |
| विनोदम् | ९. उसे लीला विनोद ही | आश्रय | १८. स्थित हैं |
| बत | ८. वस्तुतः | आत्मनि ॥ | १७. परमात्मा में |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप अजन्मा हैं । आपके जन्म के कारण के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता है । वस्तुतः उसे लीला विनोद ही कह सकते हैं । जगत् की स्थिति और प्रलय भी अविद्या कृत ही है । जो अभय स्वरूप परमात्मा में स्थित है ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंसराजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः ।**
**त्वं पासि नस्त्रिभुवनं च यथाधुनेश भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते ॥४०॥**

पदच्छेद—मत्स्य अश्व कच्छप नृसिंह वराह हंस राजन्य विप्र विबुधेषु कृतअवतारः त्वम् ।
त्वं पासि नः त्रिभुवनम् यथा अधुना ईश भारम् भुवः हर यदूत्तम वन्दनम् ते ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| मत्स्य | १. मत्स्य | पासि | १३. रक्षा की है |
| अश्व | २. हयग्रीव | नः | १०. हमारी |
| कच्छप | ३. कच्छप | त्रिभुवनम् | ११. तीनों लोकों की और |
| नृसिंह | ४. नृसिंह | यथा | १२. जिस प्रकार |
| वराह हंस | ५. वराह हंस | अधुना | १४. उसी प्रकार अब |
| राजन्य | ६. राम | ईश | १५. हे परमात्मा ! आप |
| विप्र विबुधेषु | ७. परशुराम और वामन | भारम् भुवः | १६. पृथ्वी का भार |
| कृत अवतारः । | ८. अवतार धारण करके | हर यदूत्तम | १७. हरण कीजिये हे यदुनन्दन |
| त्वम् | ९. आप ने | वन्दनम् ते ॥ | १८. हम आपके चरणों की वन्दना करते हैं |

श्लोकार्थ—मत्स्य, हयग्रीव, कच्छप, नृसिंह, वराह हंस, राम, परशुराम और वामन अवतार धारण करके हमारी और तीनों लोकों की रक्षा जिस प्रकार की है उसी प्रकार अब हे परमात्मा ! आप पृथ्वी का भार हरण कीजिये । हे यदुनन्दन ! हम आपके चरणों की वन्दना करते हैं ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**दिष्ट्याम्ब ते कुक्षिगतः परः पुमानंशेन साक्षाद् भगवान् भवाय नः ।**
**मा भूद्भयं भोजपतेर्मुमूर्षोर्गोप्ता यदूनां भविता तवात्मजः ॥४१॥**

**पदच्छेद**—दिष्ट्या अम्ब ते कुक्षिगतः परः पुमान् अंशेन साक्षात् भगवान् भवाय नः ।
मा भूद् भयम् भोजपते मुमूर्षोः गोप्ता यदूनाम् भविता तव आत्मजः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्ट्या | २. | यह बड़े सौभाग्य की बात है | मा | १२. | नहीं |
| अम्ब | १. | माता जी ! | भूत् | १३. | होना चाहिये क्योंकि |
| ते कुक्षिगतः | ३. | आपकी कोख में | भयम् | ११. | भय |
| परः पुमान् | ८. | श्रेष्ठ पुरुष | भोजपतेः | १०. | अब कंस ने भी |
| अंशेन | ९. | अंशों के साथ पधारे हैं | मुमूर्षोः | १४. | वह मरने वाला है |
| साक्षात् | ६. | स्वयम् | गोप्ता | १७. | रक्षक |
| भगवान् | ७. | भगवान् | यदूनाम् | १६. | यदुवंश का |
| भवाय | ५. | कल्याण करने के लिये | भविता | १८. | होगा |
| नः । | ४. | हम सबका | तव आत्मजः ॥ | १५. | आपका पुत्र |

**श्लोकार्थ**—माता जी ! यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आपकी कोख में हम सबका कल्याण करने के लिये स्वयम् भगवान् श्रेष्ठ पुरुष अंशों के सहित पधारे हैं । अब कंस से भी भय नहीं होना चाहिये । क्योंकि वह मरने वाला है । आपका पुत्र यदुवंश का रक्षक होगा ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**श्री शुक उवाच—इत्यभिष्टूय पुरुषं यद्रूपमनिदं यथा ।**
**ब्रह्मेशानौ पुरोधाय देवाः प्रतिययुर्दिवम् ॥४२॥**

**पदच्छेद**— इति अभिष्टूय पुरुषम् यद्रूपम् अनिदम् यथा ।
ब्रह्म ईशानौ पुरोधाय देवाः प्रतिययुः दिवम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | ब्रह्म | ८. | ब्रह्मा और |
| अभिष्टूय | ३. | स्तुति करके | इशानौ | ९. | शङ्कर जी को |
| पुरुषम् | २. | भगवान् की | पुरोधाय | १०. | आगे करके |
| यद्रूपम् | ४. | उसका जो रूप है | देवाः | ७. | देवगण |
| अनिदम् | ५. | वह ऐसा है नहीं कहा जा सकता | प्रतिययुः | १२. | चले गये |
| यथा । | ६. | लोग जैसा कहते हैं वैसा ही है | दिवम् ॥ | ११. | स्वर्ग में |

**श्लोकार्थ**—इस प्रकार भगवान् की स्तुति करके उसका जो रूप है वह ऐसा है नहीं कहा जा सकता लोग जैसा कहते हैं वैसा ही है । देवगण ब्रह्मा और शंकर जी को आगे करके स्वर्ग में चले गये ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे**
**गर्भगतविष्णोः ब्रह्मादिकृतस्तुतिः नाम द्वितीयः अध्यायः ॥२॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## तृतीयः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्री शुक उवाच - अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः ।
यर्ह्येवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम् ॥१॥

पदच्छेद— अथ सर्व गुण उपेतः कालः परम शोभनः ।
यर्हि एव अजन जन्म ऋक्षं शान्त ऋक्ष ग्रहतारकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | तदनन्तर | यर्हि एव | ८. | उस समय |
| सर्व | २. | समस्त | अजन जन्म | ९. | भगवान् का जन्म हुआ |
| गुण | ३. | गुणों से | ऋक्षं | १०. | नक्षत्र (रोहिणी) था |
| उपेतः | ४. | युक्त | शान्त | १४. | शान्त थे |
| कालः | ७. | समय आया | ऋक्ष | ११. | आकाश में नक्षत्र |
| परम | ५. | बहुत | ग्रह | १२. | ग्रह (और) |
| शोभनः । | ६. | सुहावना | तारकम् ॥ | १३. | तारे |

श्लोकार्थ—तदनन्तर समस्त गुणों से युक्त बहुत सुहावना समय आया। उस समय भगवान् का जन्म नक्षत्र रोहिणी था। आकाश में ग्रह और तारे शान्त थे ॥

### द्वितीयः श्लोकः

दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोडुगणोदयम् ।
मही मङ्गलभूयिष्ठपुरग्रामव्रजाकरा ॥२॥

पदच्छेद— दिशः प्रसेदुः गगनम् निर्मल उडुगण उदयम् ।
मही मङ्गल भूयिष्ठ पुर-ग्राम व्रज आकरा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिशः | १. | दिशायें | मही | ७. | पृथ्वी के |
| प्रसेदुः | २. | स्वच्छ प्रसन्न थीं | मङ्गल | ११. | मङ्गलमय |
| गगनम् | ३. | आकाश में | भूयिष्ठ | १२. | हो रही थी |
| निर्मल | ४. | निर्मल | पुर-ग्राम | ८. | बड़े-बड़े, नगर-गाँव |
| उडुगण | ५. | तारे | व्रज | ९. | अहीरों की बस्तियाँ |
| उदयम् । | ६. | जगमगा रहे थे | आकरा ॥ | १०. | हीरे आदि के खानें |

श्लोकार्थ—दिशायें स्वच्छ प्रसन्न थीं। आकाश में तारे जगमगा रहे थे। पृथ्वी के बड़े-बड़े नगर, गाँव, अहीरों की बस्तियाँ, हीरे की खानें मङ्गलमय हो रही थीं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**नद्यः प्रसन्नसलिला ह्रदा जलरुहश्रियः ।**

**द्विजालिकुलसंनादस्तबका वनराजयः ॥३॥**

पदच्छेद— नद्यः प्रसन्न सलिलाः ह्रदाः जलरुह श्रियः ।
द्विज अलिकुल संनाद स्तबकाः वन राजयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नद्यः | १. नदियों का | | द्विज | ७. पक्षी और |
| प्रसन्न | ३. निर्मल हो गया था | | अलिकुल | ८. भौंरों का समूह |
| सलिला | २. जल | | संनाद | ९. गुनगुना रहा था |
| ह्रदाः | ४. सरवरों में | | स्तबकाः | १२. पुष्पों के गुच्छों से युक्त थीं |
| जलरुह | ५. कमल | | वन | १०. वन में |
| श्रियः । | ६. खिल रहे थे | | राजयः ॥ | ११. वृक्षों की डालियाँ |

श्लोकार्थ—नदियों का जल निर्मल हो गया था। सरोवरों में कमल खिल रहे थे। पक्षी और भौंरों का समूह गुनगुना रहा था। वन में वृक्षों की डालियाँ पुष्पों के गुच्छों से युक्त थीं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**ववौ वायुः सुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहः शुचिः ।**

**अग्नयश्च द्विजातीनां शान्तास्तत्र समिन्धत ॥४॥**

पदच्छेद— ववौ वायुः सुख स्पर्शः पुण्य गन्धवहः शुचिः ।
अग्नयः च द्विजातीनाम् शान्ताः तत्र समिन्धत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ववौ | ८. बह रही थी तथा | | अग्नयः | १०. अग्निहोत्रादि अग्नियाँ |
| वायुः | ४. वायु | | च | ११. और |
| सुख | ७. सुखदान करती हुई | | द्विजातीनाम् | ९. ब्राह्मणों की |
| स्पर्शः | ५. अपने स्पर्श से | | शान्ताः | १२. शान्त हुई |
| पुण्य | ६. पुण्यात्माओं को | | तत्र | १. उस समय |
| गन्धवहः | ३. शीतलमन्दसुगन्ध | | समिन्धत ॥ | १३. प्रज्ज्वलित हो उठी थीं |
| शुचिः । | २. परम पवित्र | | | |

श्लोकार्थ—उस समय परम पवित्र शीतल-मन्द-सुगन्ध वायु अपने स्पर्श से पुण्यात्माओं को सुखदान करती हुई बह रही थी। तथा ब्राह्मणों की शान्त हुई अग्निहोत्रादि अग्नियाँ प्रज्ज्वलित हो उठी थीं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

मनांस्यासन् प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम् ।
जायमानेऽजने तस्मिन् नेदुर्दुन्दुभयो दिवि ॥५॥

पदच्छेद— मनांसि आसन् प्रसन्नानि साधूनाम् असुर द्रुहाम् ।
जायमाने अजने तस्मिन् नेदुः दुन्दुभयः दिवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मनांसि | ४. | मन | जायमाने | ९. | अवतार के समय |
| आसन् | ६. | हो गये | अजने | ८. | भगवान् के |
| प्रसन्नानि | ५. | प्रसन्न | तस्मिन् | ७. | उस समय |
| साधूनाम् | ३. | सन्त पुरुषों के | नेदुः | १२. | बजने लगीं |
| असुर | १. | असुरों से | दुन्दुभयः | ११. | दुन्दुभियाँ |
| द्रुहाम् । | २. | द्रोह करने वाले | दिवि ॥ | १०. | स्वर्ग में |

श्लोकार्थ—असुरों से द्रोह करने वाले सन्त पुरुषों के मन प्रसन्न हो गये । उस भगवान् के अवतार के समय स्वर्ग में दुन्दुभियाँ बजने लगीं ॥

## षष्ठः श्लोकः

जगुःकिन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः ।
विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं तदा ॥६॥

पदच्छेद— जगुः किन्नर गन्धर्वाः तुष्टुवुः सिद्ध चारणाः ।
विद्याधर्यः च ननृतुः अप्सरोभिः समम् तदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जगुः | ४. | गाने लगे (तथा) | विद्याधर्यः | ९. | विद्याधर |
| किन्नर | २. | किन्नर और | च | ८. | और |
| गन्धर्वाः | ३. | गन्धर्व | ननृतुः | १२. | नाचने लगे |
| तुष्टुवुः | ७. | स्तुति करने लगे | अप्सरोभिः | १०. | अप्सराओं के |
| सिद्ध | ५. | सिद्ध और | समम् | ११. | साथ |
| चारणाः । | ६. | चारण | तदा ॥ | १. | उस समय |

श्लोकार्थ—उस समय किन्नर और गन्धर्व गाने लगे । तथा सिद्ध और चारण स्तुति करने लगे । और विद्याधर-अप्सराओं के साथ नाचने लगे ॥

## सप्तमः श्लोकः

मुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदान्विताः ।
मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरनुसागरम् ॥७॥

पदच्छेद - मुमुचुः मुनयः देवाः सुमनांसि मुदा अन्विताः ।
मन्दम् मन्दम् जलधराः जगर्जुः अनु सागरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुमुचुः | ६. | वर्षा करने लगे | मन्दम् | १०. | धीरे |
| मुनयः | २. | ऋषि-मुनि | मन्दम् | ११. | धीरे |
| देवाः | १. | देवता | जलधराः | ७. | जल से भरे बादल |
| सुमनांसि | ५. | पुष्पों की | जगर्जुः | १२. | गर्जन करने लगे |
| मुदा | ३. | आनन्द से | अनु | ९. | पास आकर |
| अन्विताः । | ४. | भर कर | सागरम् ॥ | ८. | समुद्र के |

श्लोकार्थ—देवता, ऋषि-मुनि आनन्द में भरकर पुष्पों की वर्षा करने लगे । जल से भरे बादल समुद्र के पास जाकर धीरे-धीरे गर्जन करने लगे ॥

## अष्टमः श्लोकः

निशीथे तमउद्भूते जायमाने जनार्दने ।
देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः ।
आविरासीद् यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ॥८॥

पदच्छेद— निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने ।
देवक्यां देवरूपिण्याम् विष्णुः सर्व गुहाशयः ।
आवरिासीत् यथा प्राच्याम् दिशि इन्दुः इव पुष्कलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशीथे | ५. | रात्रि में | सर्व | ८. | सबके |
| तम | ३. | अन्धकार से | गुहाशयः । | ९. | हृदय में विराजमान |
| उद्भूते | ४. | युक्त | आविःआसीत् | १२. | प्रकट हुये |
| जायमाने | २. | अवतार के समय | यथा | ११. | उसी प्रकार |
| जनार्दने । | १. | भगवान् के | प्राच्याम् दिशि | १४. | पूर्व दिशा में |
| देवक्या | ७. | देवकी के गर्भ से | इन्दुः | १६. | चन्द्रमा का उदय होता है |
| देवरूपिण्याम् | ६. | देव रूपिणी | इव | १३. | जैसे |
| विष्णुः | १०. | भगवान् विष्णु | पुष्कलः ॥ | १५. | समस्त कलाओं से युक्त |

श्लोकार्थ—भगवान् के अवतार के समय अन्धकार से युक्त रात्रि में देव रूपिणी देवकी के गर्भ से सबके हृदय में विराजमान भगवान् विष्णु उसी प्रकार प्रकट हुये जैसे पूर्व दिशा में समस्त कलाओं से युक्त चन्द्रमा का उदय होता है ॥

## नवमः श्लोकः

**तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं चतुर्भुजं शङ्खगदायुदायुधम् ।**
**श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम् ॥९॥**

पदच्छेद— तम् अद्भुतम् बालकम् अम्बुज ईक्षणम् चतुर्भुजम् शङ्ख गदा अरि उद् आयुधम् ।
श्रीवत्स लक्ष्मम् गल शोभि कौस्तुभम् पीताम्बरम् सान्द्रपयोद सौभगम् ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १५. | उस | श्रीवत्स | ७. | वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का |
| अद्भुतम् | १६. | आश्चर्यमय | लक्ष्मम् | ८. | चिह्न |
| बालकम् | १७. | बालक को देखा | गल | ९. | गले में |
| अम्बुज | १. | कमल के समान | शोभि | ११. | सुशोभित |
| ईक्षणम् | २. | नेत्रों वाले | कौस्तुभम् | १०. | कौस्तुभ मणि से |
| चतुर्भुजम् | ३. | चार भुजाओं वाले | पीताम्बरम् | १४. | पीताम्बर पहने |
| शङ्ख | ४. | शङ्ख | सान्द्रपयोद | १२. | घने बादलों के समान |
| गदा अरि | ५. | गदा-पद्म-चक्र | सौभगम् ॥ | १३. | सुन्दर शरीर पर |
| उद्आयुधम् । | ६. | लिये हुये | | | |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने कमल के समान नेत्रों वाले, चार भुजाओं वाले, शङ्ख गदा-पद्म-चक्र लिये हुये, वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का चिह्न, गले में कौस्तुभ मणि से सुशोभित, घने बादलों के समान सुन्दर शरीर पर पीताम्बर पहने उस आश्चर्यमय बालक को देखा ॥

## दशमः श्लोकः

**महार्हवैदूर्यकिरीटकुण्डलत्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम् ।**
**उद्दामकाञ्च्यङ्गदकङ्कणादिभिर्विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत ॥१०॥**

पदच्छेद— महार्ह वैदूर्य किरीट कुण्डल त्विषा परिष्वक्त सहस्र कुन्तलम् ।
उद्दाम काञ्ची अङ्गद कङ्कण आदिभिः विरोचमानम् वसुदेवः ऐक्षत ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महार्ह | १. | बहुमूल्य | उद्दाम | ९. | चमचमाती |
| वैदूर्य | २. | वैदूर्य मणि से | काञ्ची | १०. | करधनी |
| किरीट | ३. | किरीट और | अङ्गद | ११. | बाजू बन्द |
| कुण्डल | ४. | कुण्डल की | कङ्कण | १२. | कङ्कण |
| त्विषा | ५. | कान्ति से | आदिभिः | १३. | आदि से |
| परिष्वक्त | ६. | सुन्दर | विरोचमानम् | १४. | सुशोभित उस बालक को |
| सहस्र | ८. | सूर्य की किरणों के समान चमक रहे थे | वसुदेवः | १५. | वसुदेव जी ने |
| कुन्तलम् । | ७ | घुंघराले बाल | ऐक्षत ॥ | १६. | देखा |

श्लोकार्थ—बहुमूल्य वैदूर्य मणि के किरीट और कुण्डल की कान्ति से सुन्दर घुंघराले बाल सूर्य की किरणों के समान चमक रहे थे । चमचमाती करधनी, बाजूबन्द, कङ्कण आदि से सुशोभित उस बालक को वसुदेव जी ने देखा ॥

## एकादशः श्लोकः

**स विस्मयोत्फुल्लविलोचनो हरिं सुतं विलोक्यानकदुन्दुभिस्तदा।**
**कृष्णावतारोत्सवसम्भ्रमोऽस्पृशन्मुदा द्विजेभ्योऽयुतमाप्लुतो गवाम् ॥११॥**

पदच्छेद—सः विस्मयः उत्फुल्ल विलोचनः हरिम् सुतम् विलोक्य आनकदुन्दुभिः तदा।
कृष्ण अवतार उत्सव सम्भ्रमः अस्पृशन्मुदा द्विजेभ्यः अयुतम् आप्लुतः गवाम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | ५. | उन | कृष्ण | १०. | श्री कृष्ण के |
| विस्मयः | २. | आश्चर्य से | अवतारः | ११. | अवतार का |
| उत्फुल्ल | ३. | खिले हुये | उत्सव | १२. | उत्सव मानाने की |
| विलोचनः | ४. | नेत्रों वाले | सम्भ्रमः | १३ | उतावली में |
| हरिम् | ७. | भगवान् को | अस्पृशन् मुदा | १४. | तत्काल प्रसन्नतापूर्वक |
| सुतम् | ८. | पुत्र रूप में | द्विजेभ्यः | १५. | ब्राह्मणों को |
| विलोक्य | ९. | देखकर | अयुतम् | १६. | दस हजार |
| आनकदुन्दुभिः | ६. | वसुदेव जी ने | आप्लुतः | १८. | संकल्प कर दिया |
| तदा। | १. | उस समय | गवाम् ॥ | १७. | गायों का |

श्लोकार्थ—उस समय आश्चर्य से खिले हुये नेत्रों वाले उन वसुदेव जी ने भगवान् को पुत्र रूप में देखकर श्रीकृष्ण के अवतार का उत्सव मनाने को उतावली में तत्काल प्रसन्नतापूर्वक ब्राह्मणों को दस हजार गायों का संकल्प कर दिया ॥

## द्वादशः श्लोकः

**अथैनमस्तौदवधार्य पूरुषं परं नताङ्गःकृतधीः कृताञ्जलिः।**
**स्वरोचिषा भारत सूतिकागृहं विरोचयन्तं गतभीः प्रभाववित् ॥१२॥**

पदच्छेद—अथ एनम् अस्तौत् अवधार्य पूरुषम् परम् नत अङ्गः कृत धीः कृतअञ्जलिः।
स्वरोचिषा भारत सूतिका गृहम् विरोचयन्तम् गतभीः प्रभाववित् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १६. | फिर | धीः | ११. | अपनी बुद्धि को |
| एनम् | १७. | भगवान् की | कृतअञ्जलिः। | १५. | हाथ जोड़कर |
| अस्तौत् | १८. | स्तुति करने लगे | स्वरोचिषा | २. | अपनी कान्ति से |
| अवधार्य | ८. | निश्चय हो जाने पर तथा | भारत | १. | हे परीक्षित् ! |
| पूरुषम् | ७. | पुरुष परमात्मा के बारे में | सूतिका | ३. | सूतिका |
| परम् | ६ | परम | गृहम् | ४. | गृह को |
| नत | १४. | झुकाकर तथा | विरोचयन्तम् | ५. | प्रकाशित करने वाले |
| अङ्ग | १३. | मस्तक | गतभीः | १०. | वसुदेव जी का भय जाता रहा |
| कृत | १२. | स्थिर करके | प्रभाववित् ॥ | ९. | उनका प्रभाव जान लेने पर |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अपनी कांन्ति से सूतिका गृह को प्रकाशित करने वाले परम पुरुष परमात्मा के बारे में निश्चय हो जाने पर तथा उनका प्रभाव जान लेने पर वसुदेवजी का भय जाता रहा। उन्होंने अपनी बुद्धि को स्थिर करके मस्तक झुकाकर हाथ जोड़कर फिर भगवान् की स्तुति करने लगे ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**वसुदेव उवाच—विदितोऽसि भवान् साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः ।**
**केवलानुभवानन्दस्वरूपः सर्वबुद्धिदृक् ॥१३॥**

पदच्छेद— विदितः असि भवान् साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः ।
केवल अनुभव आनन्द स्वरूपः सर्व बुद्धि दृक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विदितः | १. | मैं जान गया कि | केवल | ९. | केवल |
| असि | ७. | हैं | अनुभव | १०. | अनुभव और |
| भवान् | २. | आप | आनन्द | ११. | आनन्दरूप हैं |
| साक्षात् | ५. | साक्षात् | स्वरूपः | ८. | आपका स्वरूप |
| पुरुषः | ६. | पुरुषोत्तम | सर्व | १२. | आप समस्त |
| प्रकृतेः | ३. | प्रकृति से | बुद्धि | १३. | बुद्धियों के |
| परः । | ४. | परे | दृक् ॥ | १४. | एकमात्र साक्षी हैं |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं जान गया कि आप प्रकृति से परे साक्षात् पुरुषोत्तम हैं । आपका स्वरूप केवल अनुभव और आनन्द स्वरूप है । आप समस्त बुद्धियों के एकमात्र साक्षी हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**स एव स्वप्रकृत्येदं सृष्ट्वाग्रे त्रिगुणात्मकम् ।**
**तदनु त्वं ह्यप्रविष्टः प्रविष्ट इव भाव्यसे ॥१४॥**

पदच्छेद— सः एव स्वप्रकृत्या इदम् सृष्ट्वा अग्रे त्रिगुण आत्मकम् ।
तत् अनु त्वम् हि प्रविष्टः अप्रविष्टः इव भाव्यसे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | आप | तत् | ९. | तत् |
| एव | २. | ही | अनु | १०. | पश्चात् |
| स्वप्रकृत्या | ४. | अपनी प्रकृति से | त्वम् हि | ११. | आप |
| इदम् | ५. | इस | अप्रविष्टः | १२. | उसमें प्रविष्ट न होकर भी |
| सृष्ट्वा | ८. | सृष्टि करके | प्रविष्टः | १३. | प्रविष्ट के |
| अग्रे | ३. | सर्ग के आदि में | इव | १४. | समान |
| त्रिगुण | ६. | निर्गुण | भाव्यसे ॥ | १५. | जान पड़ते हैं |
| आत्मकम् | ७. | स्वरूप जगत् की | | | |

श्लोकार्थ—आप ही सर्ग के आदि में अपनी प्रकृति से इस निर्गुण स्वरूप की सृष्टि करके तत् पश्चात् आप उसमें प्रविष्ट न होकर भी प्रविष्ट के समान जान पड़ते हैं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**यथेमेऽविकृता भावास्तथा ते विकृतैः सह ।**
**नानावीर्याः पृथग्भूता विराजं जनयन्ति हि ॥१५॥**

पदच्छेद— यथा इमे अविकृताः भावाः तथा ते विकृतैः सह ।
नानावीर्याः पृथक् भूताः विराजम् जनयन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **यथा** | १. | जैसे | सह । | ८. | साथ रहते हैं |
| **इमे** | २. | ये | नाना | ११. | अनेक |
| **अविकृताः** | ४. | पृथक् पृथक् हैं | वीर्याः | १२. | कार्यों को उत्पन्न करके |
| **भावः** | ३. | कारण तत्त्व | पृथक् | ९. | वे अलग-अलग |
| **तथा** | ५. | उसी प्रकार | भूताः | १०. | रहकर भी |
| **ते** | ६. | वे इन्द्रियादि | विराजम् | १३. | ब्रह्माण्ड को |
| **विकृतैः** | ७. | सोलह विकारों के | जनयन्ति हि ॥ | १४. | उत्पन्न करते हैं |

श्लोकार्थ—जैसे ये कारण तत्त्व पृथक्-पृथक् हैं । उसी प्रकार वे इन्द्रियादि सोलह विकारों के साथ रहते हैं । वे अलग-अलग रहकर भी अनेक कार्यों को उत्पन्न करके ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करते हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

**सन्निपत्य समुत्पाद्य दृश्यन्तेऽनुगता इव ।**
**प्रागेव विद्यमानत्वान्न तेषामिह सम्भवः ॥१६॥**

पदच्छेद— सन्निपत्य समुत्पाद्य दृश्यन्ते अनुगताः इव ।
प्राक् एव विद्यामानत्वात् न तेषाम् इह सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सन्निपत्य** | १. | इसमें मिलकर | एव | ७. | ही |
| **समुत्पाद्य** | २. | इसे उत्पन्न करके | विद्यमानत्वात् | ८. | वहाँ विद्यमान होने से |
| **दृश्यन्ते** | ५. | दिखाई देते हैं | न | १२. | नहीं हो सकती है |
| **अनुगताः** | ३. | वे अनुप्रविष्ट के | तेषाम् | ९. | उनको |
| **इव ।** | ४. | समान | इह | १०. | यहाँ |
| **प्राक्** | ६. | पहले के जैसे | सम्भवः ॥ | ११. | उत्पत्ति |

श्लोकार्थ—इसमें मिलकर इसे उत्पन्न करके वे अनुप्रविष्ट के समान दिखाई देते हैं । पहले के जैसे ही वहाँ विद्यमान होने से उनकी यहाँ उत्पत्ति नहीं हो सकती है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**एवं भवान् बुद्ध्यनुमेयलक्षणैर्ग्राह्यैर्गुणैः सन्नपि तद्गुणाग्रहः ।**
**अनावृतत्वाद् बहिरन्तरं न ते सर्वस्य सर्वात्मन आत्मवस्तुनः ॥१७॥**

पदच्छेद— एवम् भवान् बुद्धि अनुमेय लक्षणैः ग्राह्यैः गुणैः सन् अपि तत्गुण आग्रहः ।
अनावृतत्वात् बहिः अन्तरम् न ते सर्वस्य सर्व आत्मनः आत्म वस्तुनः ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शब्दार्थ—एवम् | १. | इस प्रकार | अनावृतत्वात् | १०. | गुणों में रहने के कारण |
| भवान् बुद्धि | २. | आप के बुद्धि के द्वारा | बहिः | १२. | बाहर है न |
| अनुमेय | ४. | अनुमान ही होता है | अन्तरम् | १३. | भीतर है (क्योंकि) |
| लक्षणैः | ३. | गुणों के लक्षणों का | न ते | ११. | आप में न तो |
| ग्राह्यैः | ६. | ग्रहण से | सर्वस्य | १४. | आप सब के |
| गुणैः | ५. | उन गुणों के | सर्व | १५. | आप सब कुछ हैं |
| सन्अपि | ७. | भी | आत्मनः | १६. | सबके अन्तर्यामी और |
| तत् गुण | ८. | आपके गुणों का | आत्म | १७. | आत्म |
| आग्रहः । | ९. | ग्रहण नहीं होता | वस्तुनः ॥ | १८. | स्वरूप हैं |

श्लोकार्थ—इस प्रकार बुद्धि के द्वारा आपके गुणों के लक्षणों का अनुमान ही होता है । उन गुणों के ग्रहण से भी आपके गुणों का ग्रहण नहीं होता । गुणों में रहने के कारण आप में न तो बाहर है न भीतर है । क्योंकि आप सबके सब कुछ हैं । सबके अन्तर्यामी और आत्म स्वरूप हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**य आत्मनो दृश्यगुणेषु सन्निति व्यवस्यते स्वव्यतिरेकतोऽबुधः ।**
**विनानुवादं न च तन्मनीषितं सम्यग् यतस्त्यक्तमुपाददत् पुमान् ॥१८॥**

पदच्छेद— यः आत्मनः दृश्य गुणेषु सन् इति व्यवस्यते स्व व्यतिरेकतः अबुधः ।
विना अनुवादम् न च तत् मनीषितम् सम्यक् यतः त्यक्तम् उपाददत् पुमान् ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शब्दार्थ—यः आत्मनः | १. | जो अपने इन | विना | १२. | अलावा |
| दृश्य गुणेषु | २. | दृश्य गुणों को | अनुवादम् | ११. | वाक् विलास के |
| सन् | ५. | हुआ | न च | १३. | कुछ नहीं सिद्ध होते |
| इति | ७. | वह | तत् मनीषितम् | १०. | विचार करने पर वे |
| व्यवस्यते | ६. | सत्य समझता है | सम्यक् | ९. | भलीभाँति |
| स्व | ३. | अपने से | यतः | १४. | क्योंकि |
| व्यतिरेकतः | ४. | पृथक् मानता | त्यक्तम् | १५. | बाधित विषय को सत्य मानने वाला |
| अबुधः । | ८. | अज्ञानी है | उपाददत् पुमान् ॥ | १६. | व्यक्ति बुद्धिमान् कैसे हो सकता है |

श्लोकार्थ—जो अपने इन दृश्य गुणों को अपने से पृथक् मानता हुआ सत्य समझता है वह अज्ञानी है । भलीभाँति विचार करने पर वे वाक् विलास के अलावा कुछ नहीं सिद्ध होता है । क्योंकि बाधित विषय को सत्य मानने वाला व्यक्ति बुद्धिमान् कैसे हो सकता है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**त्वत्तोऽस्य जन्मस्थितिसंयमान् विभो वदन्त्यनीहादगुणादविक्रियात्।**
**त्वयीश्वरे ब्रह्मणि नो विरुध्यते त्वदाश्रयत्वादुपचर्यते गुणैः ॥१६॥**

पदच्छेद—त्वत्तः अस्य जन्म स्थिति संयमान् विभो वदन्ति अनीहात् अगुणात् अविक्रियात् ।
त्वयि ईश्वरे ब्रह्मणि नः विरुध्यते त्वत् आश्रय त्वात् उपचर्यते गुणैः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वत्तः | २. | लोग आप में ही | त्वयि | १०. | आप |
| अस्य | ३. | इस जगत् की | ईश्वरे | १२. | परमात्मा में यह बात |
| जन्मस्थिति | ४. | सृष्टि स्थिति | ब्रह्मणि | ११. | पर ब्रह्म |
| संयमान् | ५. | और प्रलय | नो | १४. | नहीं है (क्योंकि) |
| विभो | १. | हे प्रभो ! | विरुध्यते | १३. | असंगत |
| वदन्ति | ६. | बताते हैं | त्वत् | १५. | आपके |
| अनीहात् | ७. | वह इच्छारहित | आश्रयत्वात् | १६. | आश्रय होने के कारण |
| अगुणात् | ८. | गुण रहित और | उपचर्यते | १८. | आरोप किया जाता है |
| अविक्रियात् । | ९. | विकार रहित हैं | गुणैः | १७. | गुणों का आप में ही |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! लोग आप में ही इस जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलय बताते हैं। वह इच्छा-रहित, गुण रहित और विकार रतिह है। आप परब्रह्म परमात्मा में यह बात असंगत नहीं है। क्योंकि आपके आश्रय होने के कारण गुणों का आप में ही आरोप किया जाता है ॥

## विंशः श्लोकः

**स त्वं त्रिलोकस्थितये स्वमायया बिभर्षि शुक्लं खलु वर्णमात्मनः ।**
**सर्गाय रक्तं रजसोपबृंहितं कृष्णं च वर्णं तमसा जनात्यये ॥२०॥**

पदच्छेद— सः त्वम् त्रिलोक स्थितये स्वमायया बिभर्षि शुल्कम् खलु वर्णम् आत्मनः ।
सर्गाय रक्तम् रजसः उपबृंहितम् कृष्णम् च वर्णम् तमसा जनात्यये ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः त्वम् | २. | जैसे आप | सर्गाय | १०. | उत्पत्ति के लिये |
| त्रिलोक | ४. | तीन लोकों की | रक्तम् | १२. | रक्त वर्ण |
| स्थितये | ५. | रक्षा करने के लिये | रजसः | ११. | रजः प्रधान |
| स्वमायया | ६. | अपनी माया से | उपबृंहितम् | १८. | स्वीकार करते हैं |
| बिभर्षि | ९. | धारण करते हैं | कृष्णम् | १६. | कृष्ण |
| शुक्लम् | ७. | सत्त्वमय शुक्ल | च | १३. | और |
| खलु | १. | निश्चय ही | वर्णम् | १७. | वर्ण |
| वर्णम् | ८. | वर्ण | तमसा | १५. | तमोगुण प्रधान |
| आत्मनः । | ३. | स्वयम् | जनात्यये ॥ | १४. | प्रलय के समय |

श्लोकार्थ—निश्चय ही जैसे आप स्वयम् तीनों लोकों की रक्ष करने के लिये अपनी माया से सत्त्वमय शुक्ल वर्ण धारण करते हैं। उत्पत्ति के लिये रजः प्रधान रक्त वर्ण और प्रलय के समय तमोगुण प्रधान कृष्ण वर्ण स्वीकार करते हैं ॥

## एकविंशः श्लोकः

**त्वमस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषुर्गृहेऽवतीर्णोऽसि ममाखिलेश्वर ।**
**राजन्यसंज्ञासुरकोटियूथपैर्निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसे चमूः ॥२१॥**

पदच्छेद— त्वम् अस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषुः गृहे अवतीर्णः असि मम अखिलेश्वरः ।
राजन्य संज्ञा असुर कोटि यूथपैः निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसे चमूः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वम् | ३. | आपने | अखिलेश्वरः । | १. | सबके स्वामी |
| अस्य | ४. | इस | राजन्य | १२. | राजा |
| लोकस्य | ५. | संसार की | संज्ञा | १३. | नाम देने वाले |
| विभो | २. | हे प्रभो ! | असुर | १५. | असुर |
| रिरक्षिषुः | ६. | रक्षा के लिये | कोटि | १४. | करोड़ों |
| गृहे | ८. | घर में | यूथपैः | १६. | सेनापतियों की |
| अवतीर्णः | ९. | अवतार लिया | निर्व्यूह्यमाना | ११. | बड़ी सेना वाले |
| असि | १०. | है | निहनिष्यसे | १८. | संहार करेंगे |
| मम | ७. | मेरे | चमूः ॥ | १७. | सेना का आप |

श्लोकार्थ—सबके स्वामी हे प्रभो ! आपने इस संसार की रक्षा के लिये मेरे घर में अवतार लिया है। बड़ी सेनाओं वाले अपने को राजा नाम देने वाले करोड़ों असुर सेनापतियों की सेना का आप संहार करेंगे ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**अयं त्वसभ्यस्तव जन्म नौ गृहे श्रुत्वाग्रजांस्ते न्यवधीत् सुरेश्वर ।**
**स तेऽवतारं पुरुषैः समर्पितं श्रुत्वाधुनैवाभिसरत्युदायुधः ॥२२॥**

पदच्छेद— अयम् तु असभ्यः तव जन्म नौ गृहे श्रुत्वा अग्रजान् ते न्यवधीत् सुरेश्वर ।
सः ते अवतारम् पुरुषैः समर्पितम् श्रुत्वा अधुना एव अभिसरति उद् आयुधः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अयम् तु | २. | यह कंस तो | सः | १४. | वह |
| असभ्यः | ३. | बड़ा दुष्ट है | ते अवतारम् | १२. | आपका अवतार |
| तव जन्म | ४. | आपका अवतार | पुरुषैः | १०. | दूतों के द्वारा |
| नौ गृहे | ५. | हमारे घर में | समर्पितम् | ११. | कथित |
| श्रुत्वा | ६. | सुनकर इसने | श्रुत्वा | १३. | सुनकर |
| अग्रजान् | ८. | बड़े भाइयों को | अधुना एव | १५. | अभी-अभी ही |
| ते | ७. | आपके | अभिसरति | १८. | दौड़ा आयेगा |
| न्यवधीत् | ९. | मार डाला है | उद् | १७. | लेकर |
| सुरेश्वर । | १. | हे देवों के आराध्य देव ! | आयुधः ॥ | १६. | हाथ में शस्त्र |

श्लोकार्थ—हे देवों के आराध्य देव ! यह कंस तो बड़ा दुष्ट है। हमारे घर में आपका अवतार सुनकर इसने आपके बड़े भाइयों को मार डाला है। दूतों के द्वारा कथित आपका अवतार सुनकर वह अभी-अभी हाथ में शस्त्र लेकर दौड़ा आयेगा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

श्री शुक उवाच—अथैनमात्मजं वीक्ष्य महापुरुषलक्षणम् ।
देवकी तमुपाधावत् कंसाद् भीता शुचिस्मिता ॥२३॥

पदच्छेद— अथ एनम् आत्मजम् वीक्ष्य महापुरुष लक्षणम् ।
देवकी तम् उपाधावत् कंसात् भीता शुचिस्मिता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | तदनन्तर | देवकी | १०. | देवकी |
| एनम् | ४. | अपने इस | तम् | ११. | उनकी |
| आत्मजम् | ५. | पुत्र को | उपाधावत् | १२. | स्तुति करने लगीं |
| वीक्ष्य | ६. | देखकर | कंसात् | ७. | कंस से |
| महापुरुष | २. | महापुरुषों के | भीता | ८. | भयभीत होकर |
| लक्षणम् । | ३. | लक्षणों से युक्त | शुचिस्मिता ॥ | ९. | पवित्र भाव से मुसकराते हुये |

श्लोकार्थ—तदनन्तर महापुरुषों के लक्षणों से युक्त अपने इस पुत्र को देखकर कंस से भयभीत होकर पवित्र भाव से मुसकारती हुई देवकी उनकी स्तुति करने लगीं ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

देवक्युवाच—रूपं यत् तत् प्राहुरव्यक्तमाद्यं ब्रह्म ज्योतिर्निर्गुणं निर्विकारम् ।
सत्तामात्रं निर्विशेषं निरीहं स त्वं साक्षात् विष्णुरध्यात्मदीपः॥२४॥

पदच्छेद— रूपम् यत् तत् प्राहुः अव्यक्तम् आद्यम् ब्रह्म ज्योतिः निर्गुणम् निर्विकारम् ।
सत्तामात्रम् निर्विशेषम् निरीहम् सः त्वम् साक्षात् विष्णुः अध्यात्म दीपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रूपम् | ३. | रूप को | सत्तामात्रम् | १२. | विशुद्ध सत्ता के रूप में कहा गया है |
| यत् | २. | जिस | निर्विशेषम् | १०. | विशेषण रहित |
| तत् | १. | वेदों ने आपके | निरीहम् | ११. | इच्छा रहित |
| प्राहुः | ९. | बताया है (जिसे) | सः | १३. | ऐसे |
| अव्यक्तम् | ४. | अव्यक्त | त्वम् | १६. | आप |
| आद्यम् | ५. | सब का कारण | साक्षात् | १७. | साक्षात् |
| ब्रह्मज्योतिः | ६. | ब्रह्म ज्योति स्वरूप | विष्णुः | १८. | विष्णु भगवान् हैं |
| निर्गुणम् | ७. | गुणों से रहित और | अध्यात्म | १४. | बुद्धि आदि के |
| निर्विकारम् । | ८. | विकारहीन | दीपः ॥ | १५. | प्रकाशक |

श्लोकार्थ—वेदों ने आपके जिस रूप को अव्यक्त, सबका कारण, ब्रह्म ज्योति स्वरूप, गुणों से रहित और विकारहीन बताया है । जिसे विशेषण रहित, इच्छा रहित, विशुद्ध सत्ता के रूप में कहा गया है । ऐसे बुद्धि आदि के प्रकाशक आप साक्षात् विष्णु भगवान् हैं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**नष्टे लोके द्विपरार्धावसाने महाभूतेष्वादिभूतं गतेषु ।**
**व्यक्तेऽव्यक्तं कालवेगेन याते भवानेकः शिष्यते शेषसंज्ञः ॥२५॥**

पदच्छेद— नष्टे लोके द्विपरार्ध अवसाने महाभूतेषु आदि भूतम् गतेषु ।
व्यक्ते अव्यक्तम् कालवेगेन याते भवान् एकः शिष्यते शेष संज्ञः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नष्टे | ४. | नष्ट हो जाने पर | व्यक्ते | १०. | व्यक्त जगत् के |
| लोके | ५. | लोकों के | अव्यक्तम् | ११. | अव्यक्त में |
| द्विपरार्ध | २. | दो परार्ध | कालवेगेन | १. | काल शक्ति के प्रभाव से |
| अवसाने | ३. | समाप्त हो जाने और | याते | १२. | लीन हो जाने पर |
| महाभूतेषु | ७. | महाभूत | भवान् | १५. | आप ही |
| आदि | ८. | आदि में | एकः | १४. | एक मात्र |
| भूतम् | ६. | भूतों के | शिष्यते | १६. | शेष रह जाते हैं |
| गतेषु । | ९. | लीन हो जाने पर | शेष संज्ञः ॥ | १३. | शेष नाम वाले |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! कालशक्ति के प्रभाव से दो परार्ध समाप्त हो जाने पर लोकों के नष्ट हो जाने पर भूतों के महाभूत आदि में लीन हो जाने पर व्यक्त जगत् के अव्यक्त में लीन हो जाने पर शेष नाम वाले एक मात्र आप ही शेष रह जाते हैं ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**योऽयं कालस्तस्य तेऽव्यक्तबन्धो चेष्टामाहुश्चेष्टते येन विश्वम् ।**
**निमेषादिर्वत्सरान्तो महीयांस्तं त्वेशानं क्षेमधाम प्रपद्ये ॥२६॥**

पदच्छेद— यः अयम् कालः तस्य ते अव्यक्तबन्धो चेष्टाम् आहुः चेष्टते येन विश्वम् ।
निमेष आदिः वत्सरान्तः महीयान् तम् त्वा ईशानम् क्षेम धाम प्रपद्ये ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यः अयम् | २. | जो यह | निमेष आदि | ४. | निमेष से लेकर |
| कालः | ७. | काल है | वत्सरान्तः | ५. | वर्ष पर्यन्त का |
| ते तस्य | ३. | उसकी | महीयान् | ६. | सीमातीत |
| अव्यक्तबन्धों | १. | प्रकृति के प्रवर्तक प्रभो | तम् त्वा | १७. | उन |
| चेष्टाम् | ११. | उसे आपकी लीला मात्र | ईशानम् | १३. | सर्वशक्तिमान् और |
| आहुः | १२. | कहते हैं | क्षेम | १४. | परम कल्याण के |
| चेष्टते | १०. | चेष्टा कर रहा है | धाम | १५. | आश्रय |
| येन | ८. | जिससे | प्रपद्ये ॥ | १६. | आपकी मैं शरण लेती हूँ |
| विश्वम् । | ९. | यह सारा विश्व | | | |

श्लोकार्थ—हे प्रकृति के प्रवर्तक प्रभो ! जो यह आपका निमेष से लेकर वर्ष पर्यन्त का सीमातीत काल है, जिससे यह सारा विश्व चेष्टा कर रहा है, उसे आपकी लीलामात्र कहते हैं । सर्वशक्तिमान् और परम कल्याण के आश्रय आपको मैं शरण लेती हूँ ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायन् लोकान् सर्वान्निर्भयं नाध्यगच्छत् ।**
**त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्य स्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥२७॥**

पदच्छेद— मर्त्यः मृत्यु व्यालभीतः पलायन् लोकान् सर्वान् निर्भयम् न अध्यगच्छत् ।
त्वत् पाद अब्जम् प्राप्य यदृच्छया अद्य स्वस्थः शेते मृत्युः अस्मात् अपैति ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मर्त्यः | १. | मरणधर्मा मानव | त्वत् पाद | १२. | आपके चरण |
| मृत्यु | २. | मृत्युरूप | अब्जम् प्राप्य | १३. | कमलों को प्राप्त करके |
| व्यालभीतः | ३. | सर्प से भयभीत होकर | यदृच्छया | ११. | सहज ही |
| पलायन् | ६. | भागते हुये कहीं भी | अद्य | १०. | वही आज |
| लोकान् | ५. | लोकों में | स्वस्थः | १४. | सुख पूर्वक |
| सर्वान् | ४. | समस्त | शेते | १५. | सो रहा है |
| निर्भयम् | ७. | अभय स्थान | मृत्युः | १७. | मृत्यु भी |
| न | ८. | नहीं | अस्मात् | १६. | इससे |
| अध्यगच्छत् । | ९. | प्राप्त कर पाता है | अपैति ॥ | १८. | दूर भाग गयी है |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मरणधर्मा मानव मृत्युरूप सर्प से भयभीत होकर समस्त लोकों में भागते हुये कहीं भी अभयस्थान नहीं प्राप्त कर पाता है । वही आज सहज ही आपके चरण कमलों को प्राप्त करके सुखपूर्वक सो रहा है । इससे मृत्यु भी दूर भाग गयी है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**स त्वं घोरादुग्रसेनात्मजान्नस्त्राहि त्रस्तान् भृत्यवित्रासहासि ।**
**रूपं चेदं पौरुषं ध्यानधिष्ण्यं मा प्रत्यक्षं मांसदृशां कृषीष्ठाः ॥२८॥**

पदच्छेद—सः त्वम् घोरात् उग्रसेन आत्मजात् नः त्राहि त्रस्तान् भृत्य वित्रासहा असि ।
रूपम् च इदम् पौरुषम् ध्यान धिष्ण्यम् मा प्रत्यक्षम् मांसदृशाम् कृषीष्ठाः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः त्वम् | ४. | ऐसे आप | रूपम् | १३. | चतुर्भुजरूप |
| घोरात् | ७. | भयंकर कंस से | च | १०. | और |
| उग्रसेन | ५. | उग्रसेन के | इदम् | ११. | आपका यह |
| आत्मजात् | ६. | पुत्र | पौरुषम् | १२. | ऐश्वर्यमय |
| नः त्राहि | ९. | हमलोगों की रक्षा करिये | ध्यान | १४. | ध्यान का |
| त्रस्तान् | ८. | भयभीत | धिष्ण्यम् | १५. | विषय है इसे |
| भृत्य | १. | आप भक्त | मा प्रत्यक्षम् | १७. | मत प्रकट |
| वित्रासहा | २. | भयहारी | मांसदृशाम् | १६. | चर्मचक्षु वालों के सामने |
| असि । | ३. | हो अतः | कृषीष्ठाः ॥ | १८. | कीजिये |

श्लोकार्थ—आप भक्तभयहारी हो । अतः ऐसे आप उग्रसेन के पुत्र भयंकर कंस से भयभीत हम लोगों की रक्षा करिये । और आपका यह ऐश्वर्यमय चतुर्भुजरूप ध्यान का विषय है । इसे चर्म चक्षुवालों के सामने मत प्रकट कीजिये ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**जन्म ते मय्यसौ पापो मा विद्यान्मधुसूदन ।**
**समुद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः ॥२९॥**

पदच्छेद— जन्म ते मयि असौ पापः मा विद्यात् मधुसूदनः ।
समुद्विजे भवत् हेतोः कंसात् अहम् अधीर धीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जन्म | ५. जन्म की बात | समुद्विजे | १२. | बहुत डर रही हूँ |
| ते | ४. आपके | भवत् | ९. | आपके |
| मयि | ३. मुझसे | हेतोः | १०. | लिये |
| असौ पापः | २. इस पापी कंस को | कंसात् | ११. | कंस से |
| मा | ७. न हो | अहम् | ८. | मैं |
| विद्यात् | ६. मालूम | अधीर | १३. | मैं अधीर |
| मधुसूदनः । | १. हे मधुसूदन ! | धीः ॥ | १४. | बुद्धि हो रही हूँ |

श्लोकार्थ—हे मधुसूदन ! इस पापी कंस को मुझसे आपके जन्म की बात मालूम न हो । मैं आपके लिये कंस से बहुत डर रही हूँ । मैं अधीर बुद्धि हो रही हूँ ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**उपसंहर विश्वात्मन्नदो रूपमलौकिकम् ।**
**शङ्खचक्रगदापद्मश्रिया जुष्टं चतुर्भुजम् ॥३०॥**

पदच्छेद— उपसंहर विश्व आत्मन् अदः रूपम् अलौकिकम् ।
शङ्ख चक्रगदा पद्म श्रिया जुष्टम् चतुर्भुजम् ॥ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उपसंहर | १२. छिपा लीजिये | शङ्ख | ४. | शङ्ख |
| विश्व | १. हे विश्व- | चक्र-गदा | ५. | चक्र-गदा और |
| आत्मन् | २. रूप परमात्मा | पद्म | ६. | कमल की |
| अदः | ३. अपने इस | श्रिया | ७. | शोभा से |
| रूपम् | ११. रूप को | जुष्टम् | ८. | युक्त |
| अलौकिकम् । | ९. अलौकिक | चतुर्भुजम् ॥ | १०. | चतुर्भुज |

श्लोकार्थ—हे विश्वरूप परमात्मा ! अपने इस शङ्ख, चक्र, गदा और कमल की शोभा से युक्त अलौकिक चतुर्भुज रूप को छिपा लीजिये ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**विश्वं यदेतत् स्वतनौ निशान्ते यथावकाशं पुरुषः परो भवान् ।**
**बिभर्ति सोऽयं मम गर्भगोऽभूदहो नृलोकस्य विडम्बनं हि तत् ॥३१॥**

पदच्छेद – विश्वम् यदेतत् स्वतनौ निशान्ते यथा अवकाशम् पुरुषः परः भवान् ।
बिभर्ति सः अयम् मम गर्भगः अभूत् अहो नृलोकस्य विडम्बनम् हि तत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **विश्वम्** | ४. | विश्व को | बिभर्ति | ८. | धारण करते हैं |
| **यदेतत्** | ३. | इस | सः | ९. | वही |
| **स्वतनौ** | ५. | अपने शरीर में | अयम् | १२. | आप |
| **निशान्ते** | १. | प्रलय के समय | मम गर्भगः | १३. | मेरे गर्भवासी |
| **यथा** | ७. | समान | अभूत् | १४. | हुये |
| **अवकाशम्** | ६. | आकाश के | अहो | १५. | आश्चर्य है |
| **पुरुषः** | ११. | पुरुष | नृलोकस्य | १८. | अद्भुत |
| **परः** | १०. | परम | विडम्बनम् | १७. | मनुष्य लीला है |
| **भवान् ।** | २. | आप जो | हि तत् ॥ | १६. | यह आपकी |

श्लोकार्थ—प्रलय के समय आप जो इस विश्व को अपने शरीर में आकाश के समान धारण करते हैं, वही परम पुरुष आप मेरे गर्भवासी हुये, आश्चर्य है। यह आपकी अद्भुत मनुष्य लीला है ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**श्री भगवानुवाच—त्वमेव पूर्वसर्गेऽभूः पृश्निः स्वायम्भुवे सति ।**
**तदायं सुतपा नाम प्रजापतिरकल्मषः ॥३२॥**

पदच्छेद— त्वम् एव पूर्व सर्गे अभूः पृश्निः स्वायम्भुवे सति ।
तदा अयम् सुतपाः नाम प्रजापतिः अकल्मषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **त्वम् एव** | ४. | आप ही | तदा | ७. | उस समय |
| **पूर्व सर्गे** | १. | पूर्व सृष्टि में | अयम् | ८. | ये वसुदेव |
| **अभूः** | ६. | थी | सुतपाः | ९. | सुतपा |
| **पृश्निः** | ५. | पृश्नि | नाम | १०. | नाम के |
| **स्वायम्भुवे** | २. | स्वायम्भुवमन्वन्तर में | प्रजापतिः | १२. | प्रजापति थे |
| **सति ।** | ३. | होने पर | अकल्मषः ॥ | ११. | निष्पाप |

श्लोकार्थ—पूर्व सृष्टि में स्वायम्भुवमन्वन्तर होने पर आप ही पृश्नि थीं। उस समय ये वसुदेव सुतपा नाम के निष्पाप प्रजापति थे। ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**युवां वै ब्रह्मणाऽऽदिष्टौ प्रजासर्गे यदा ततः ।**
**सन्नियम्येन्द्रियग्रामं तेपाथे परमं तपः ॥३३॥**

पदच्छेद— युवाम् वै ब्रह्मणा आदिष्टौ प्रजासर्गे यदा ततः ।
सन्नियम्य इन्द्रिय ग्रामम् तेपाथे परमम् तपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| युवाम् वै | ३. तुम दोनों को | सन्नियम्य | ९. दमन करके |
| ब्रह्मणा | २. ब्रह्मा जी ने | इन्द्रिय | ७. इन्द्रियों के |
| आदिष्टौ | ५. आज्ञा दी | ग्रामम् | ८. समूह का |
| प्रजासर्गे | ४. सन्तान उत्पन्न करने को | तेपाथे | १२. की |
| यदा | १. जब | परमम् | १०. आपने परम |
| ततः । | ६. तब | तपः ॥ | ११. तपस्या |

श्लोकार्थ—जब ब्रह्मा जी ने तुम दोनों को सन्तान उत्पन्न करने की आज्ञा दी । तब इन्द्रियों के समूह का दमन करके आपने परम तपस्या की ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**वर्षवातातपहिमघर्मकालगुणाननु ।**
**सहमानौ श्वासरोधविनिर्धूतमनोमलौ ॥३४॥**

पदच्छेद— वर्ष वात-आतप हिम-धर्म काल गुणान् अनु ।
सहमानौ श्वासरोध विनिर्धूत मनः मलौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वर्ष | १. तुम दोनों ने वर्ष | सहमानौ | ७. सहन किया (और) |
| वात-आतप | २. वायु-घाम | श्वासरोध | ८. प्राणायाम के द्वारा |
| हिम-धर्म | ३. शीत-गर्मी आदि | विनिर्धूत | ११. धो डाला |
| काल | ४. काल के | मनः | ९. मन के |
| गुणान् | ६. गुणों का | मलौ ॥ | १०. मल |
| अनु । | ५. विभिन्न | | |

श्लोकार्थ—तुम दोनों ने वायु-घाम-शीत-गर्मी आदि काल के विभिन्न गुणों को सहन किया और प्राणायाम के द्वारा मन के मल को धो डाला ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**शीर्णपर्णानिलाहारावुपशान्तेन चेतसा ।**
**मत्तः कामानभीप्सन्तौ मदाराधनमीहतुः ॥३५॥**

पदच्छेद— शीर्ण पर्ण अनिल आहारौ उपशान्तेन चेतसा ।
मत्तः कामान् अभीप्सन्तौ मत् आराधनम् ईहतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शीर्ण | १. सूखे | मत्तः | ७. मुझसे |
| पर्ण | २. पत्ते और | कामान् | ८. अभीष्ट वस्तु |
| अनिल | ३. वायु | अभीप्सन्तौ | ९. पाने की इच्छा से |
| आहारौ | ४. भक्षण करके | मत् | १०. मेरी |
| उपशान्तेन | ५. शान्त | आराधनम् | ११. आराधना (तथा) |
| चेतसा । | ६. चित्त तुमने | ईहतुः ॥ | १२. चेष्टा की |

श्लोकार्थ—सूखे-पत्ते और वायु भक्षण करके शान्त चित्त से मुझसे अभीष्ट वस्तु पाने की इच्छा करते हुए मेरी आराधना की ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**एवं वां तप्यतोस्तीव्रं तपः परमदुष्करम् ।**
**दिव्यवर्षसहस्राणि द्वादशेयुर्मदात्मनोः ॥३६॥**

पदच्छेद— एवम् वाम् तप्यतोः तीव्रम् तपः परम दुष्करम् ।
दिव्य वर्ष सहस्राणि द्वादश ईयुः मत् आत्मनोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | २. ऐसा | दिव्य | ४. अलौकिक तथा |
| वाम् | ८. तुम लोगों के | वर्ष | ११. वर्ष |
| तप्यतोः | ७. करते करते | सहस्राणि | १०. हजार |
| तीव्रम् | ५. घोर | द्वादश | ९. बारह |
| तपः | ६. तप | ईयुः | १२. बीत गये |
| परम दुष्करम् । | ३. परम दुष्कर और | मत् आत्मनः ॥ | १. मुझमें चित्त लगाकर |

श्लोकार्थ—मुझमें चित्त लगाकर ऐसा परम दुष्कर और अलौकिक घोर तप करते करते तुम लोगों के बारह हजार वर्ष बीत गये ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**तदा वां परितुष्टोऽहममुना वपुषानघे ।**
**तपसा श्रद्धया नित्यं भक्त्या च हृदि भावितः ॥३७॥**

पदच्छेद— तदा वाम् परितुष्टः अहम् अमुना वपुषा अनघे ।
तपसा श्रद्धया नित्यम् भक्त्या च हृदि भावितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तदा | ९. | उस समय | तपसा | २. | तपस्या |
| वाम् | १०. | तुम दोनों पर | श्रद्धया | ३. | श्रद्धा |
| परितुष्टः | ११. | प्रसन्न होकर | नित्यम् | ५. | प्रेममयी |
| अहम् | १२. | मैं | भक्त्या | ६. | भक्ति से |
| अमुना | १३. | इसी | च | ४. | और |
| वपुषा | १४. | शरीर से (प्रकट हुआ था) | हृदि | ७. | हृदय में |
| अनघे । | १. | हे निष्पाप देवि ! | भावितः ॥ | ८. | भावना करने पर |

श्लोकार्थ—हे निष्पाप देवि ! तपस्या, श्रद्धा और प्रेममयी भक्ति से हृदय में भावना करने पर उस समय तुम दोनों पर प्रसन्न होकर मैं इसी शरीर से प्रकट हुआ था ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**प्रादुरासं वरदराड् युवयोः कामदित्सया ।**
**व्रियतां वर इत्युक्ते मादृशो वां वृतः सुतः ॥३८॥**

पदच्छेद— प्रादुरासम् वरदराड् युवयोः काम दित्सया ।
व्रियताम् वरः इति उक्ते मादृशः वाम् वृतः सुतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रादुरासम् | ७. | मैं प्रकट हुआ | वरः | ५. | वर |
| वरदराड् | ४. | वर देने वालों का राजा | इति उक्ते | ८. | मेरे ऐसा कहने पर |
| युवयोः | १. | तुम दोनों की | मादृशो | १०. | मेरे समान |
| काम | २. | अभिलाषा | वाम् | ९. | तुम दोनों ने |
| दित्सया । | ३. | पूर्ण करने के लिये | वृतः | १२. | माँगा |
| व्रियताम् | ७. | माँग लो | सुतः ॥ | ११. | पुत्र |

श्लोकार्थ—तुम दोनों की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये वर देने वालों का राजा मैं प्रकट हुआ । वर माँग लो, मेरे ऐसा कहने पर तुम दोनों ने मेरे समान पुत्र माँगा ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**अजुष्टग्राम्यविषयावनपत्यौ च दम्पती ।**
**न वव्राथेऽपवर्गं मे मोहितौ मम मायया ॥३६॥**

पदच्छेद— अजुष्ट ग्राम्य विषयौ अनपत्यौ च दम्पती ।
न वव्राथे अपवर्गम् मे मोहितौ मम मायया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अजुष्ट | २. | तुम्हारा संबन्ध नहीं हुआ था | वव्राथे | १२. | माँगा |
| ग्राम्य विषयौ | १. | विषय भोगों से | अपवर्गम् | १०. | मोक्ष |
| अनपत्यौ | ४. | निःसन्तान थे | मे | ९. | मुझसे |
| च | ५. | और | मोहितौ | ८. | मोहित होकर तुमने |
| दम्पती । | ३. | तुम दोनों तब-तक | मम | ६. | मेरी |
| न | ११. | नहीं | मायया ॥ | ७. | माया से |

श्लोकार्थ—विषय भोगों से तुम्हारा सम्बन्ध नहीं हुआ था। तुम दोनों तब तक निः सन्तान थे और मेरी माया से मोहित होकर तुमने मुझसे मोक्ष नहीं माँगा ॥

# चत्वारिंशः श्लोकः

**गते मयि युवां लब्ध्वा वरं मत्सदृशं सुतम् ।**
**ग्राम्यान् भोगानभुञ्जाथां युवां प्राप्तमनोरथौ ॥४०॥**

पदच्छेद— गते मयि युवाम् लब्ध्वा वरम् मत् सदृशम् सुतम् ।
ग्राम्यान् भोगान् अभुञ्जाथाम् युवाम् प्राप्त मनोरथौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गते | ८. | जाने के बाद | सुतम् । | ४. | पुत्र प्राप्ति का |
| मयि | ७. | मेरे | ग्राम्यान | १२. | विषयों का |
| युवाम् | १. | तुम दोनों मुझसे | भोगान् | १३. | भोग |
| लब्ध्वा | ६. | पाकर तथा | अभुञ्जाथाम् | १४. | करने लगे |
| वरम् | ५. | वर | युवाम् | ९. | तुम दोनों |
| मत् | २. | मेरे | प्राप्त | १०. | सफल |
| सदृशम् | ३. | समान | मनोरथौ ॥ | ११. | मनोरथ होकर |

श्लोकार्थ—तुम दोनों मुझसे मेरे समान पुत्र प्राप्ति का वर पाकर तथा मेरे जाने के बाद तुम दोनों सफल मनोरथ होकर विषयों का भोग करने लगे ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**अदृष्ट्वान्यतमं लोके शीलौदार्यगुणैः समम् ।**
**अहं सुतो वामभवं पृश्निगर्भ इति श्रुतः ॥४१॥**

**पदच्छेद—** अदृष्ट्वा अन्यतमम् लोके शील औदार्य गुणैः समम् ।
अहम् सुतः वाम् अभवम् पृश्नि गर्भ इति श्रुतः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **अदृष्ट्वा** | ७. | न देखकर | अहम् | ८. | मैं ही |
| **अन्यतमम्** | ६. | दूसरा कोई | सुतः | १०. | पुत्र |
| **लोके** | १. | संसार में | वाम् | ९. | तुम दोनों का |
| **शील** | २. | शीलस्वभाव | अभवम् | ११. | हुआ तब मैं |
| **औदार्य** | ३. | उदारता और | पृश्नि गर्भ | १२. | पृश्निगर्भ |
| **गुणैः** | ४. | अन्यगुणों में | इति | १३. | इस नाम से |
| **समम् ।** | ५. | अपने समान | श्रुतः ॥ | १४. | विख्यात हुआ |

**श्लोकार्थ**—संसार में शील स्वभाव उदारता और अन्य गुणों में अपने समान दूसरा कोई न देखकर मैं ही तुम दोनों का पुत्र और तब मैं पृश्नि गर्भ इस नाम से विख्यात हुआ ।

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तयोर्वा पुनरेवाहमदित्यामास कश्यपात् ।**
**उपेन्द्र इति विख्यातो वामनत्वाच्च वामनः ॥४२॥**

**पदच्छेद—** तयोः वाम् पुनः एव अहम् अदित्याम् आस कश्यपात् ।
उपेन्द्रः इति विख्यातः वामनत्वात् च वामनः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तयोः** | १. | उन्हीं | **कश्यपात्** | ३. | कश्यप और |
| **वाम्** | २. | तुम दोनों के | **उपेन्द्रः** | ९. | उपेन्द्र |
| **पुनः** | ६. | फिर | **इति** | १०. | इस नाम से |
| **एव** | ५. | ही | **विख्यातः** | ११. | विख्यात हुआ |
| **अहम्** | ७. | मैं | **वामनत्वात्** | १३. | शरीर छोटा होने के कारण |
| **अदित्याम्** | ४. | अदिति से | **च** | १२. | और |
| **आस** | ८. | उत्पन्न हुआ | **वामनः ॥** | १४. | वामन कहलाया |

**श्लोकार्थ**—उन्हीं तुम दोनों के कश्यप और अदिति से ही फिर मैं उत्पन्न हुआ और उपेन्द्र इस नाम से विख्यात हुआ तथा शरीर छोटा होने के कारण वामन कहलाया ।

## त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

**तृतीयेऽस्मिन् भवेऽहं वै तेनैव वपुषाथ वाम् ।**
**जातो भूयस्तयोरेव सत्यं मे व्याहृतं सति ॥४३॥**

पदच्छेद— तृतीये अस्मिन् भवे अहम् वै तेन एव वपुषा अथवाम् ।
जातः भूयः तयोः एव सत्यम् मे व्याहृतम् सति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तृतीये | ४. | तीसरे | वाम् जातः | ९. | तुम दोनों का पुत्र हुआ |
| अस्मिन् | ३. | इस | भूयः | १०. | फिर से |
| भवे | ५. | जन्म में | तयोः | ११. | उन्हीं तुम दोनों का |
| अहम | ६. | मैं | एव | १२. | ही मैं पुत्र हूँ |
| वै | २. | निश्चय ही | सत्यम् | १५. | सूक्ष्म |
| तेन एव | ७. | उसी | मे | १४. | यह मेरी |
| वपुषा | ८. | रूप से | व्याहृतम् | १६. | वाणी |
| अथ | १. | तदनन्तर | सति ॥ | १३. | हे सतो |

श्लोकार्थ—तदनन्तर निश्चय ही इस तीसरे जन्म में मैं उसी रूप से तुम दोनों का पुत्र हुआ। फिर से उन्हीं तुम दोनों का मैं पुत्र हूँ। हे सती ! यह मेरी सूक्ष्म वाणी है ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**एतद् वां दर्शितं रूपं प्राग्जन्मस्मरणाय मे ।**
**नान्यथा मद्भवं ज्ञानं मर्त्यलिङ्गेन जायते ॥४४॥**

पदच्छेद— एतत् वाम् दर्शितम् रूपम् प्राक् जन्म स्मरणाय मे ।
न अन्यथा मत् भवम् ज्ञानम् मर्त्य लिङ्गेन जायते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतत् | ३. | अपना यह | न | १५. | नहीं |
| वाम् | २. | तुम्हें | अन्यथा | ९. | अन्यथा |
| दर्शितम् | ८. | दिखाया है | मत् | १०. | मेरे |
| रूपम् | ४. | रूप | भवम् | ११. | अवतार विषयक |
| प्राक | ५. | पूर्व | ज्ञानम् | १२. | ज्ञान |
| जन्म | ६. | जन्म के | मर्त्य | १३. | मनुष्य |
| स्मरणाय | ७. | स्मरण के लिये | लिङ्गेन | १४. | शरीर से |
| मे । | १. | मैंने | जायते ॥ | १६. | हो सकता है |

श्लोकार्थ—मैंने तुम्हें अपना यह रूप पूर्व जन्म के स्मरण के लिये दिखाया है। अन्यथा मेरे अवतार विषयक ज्ञान मनुष्य शरीर से नहीं हो सकता है ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**युवां मां पुत्रभावेन ब्रह्मभावेन चासकृत्।**
**चिन्तयन्तौ कृतस्नेहौ यास्येथे मद्गतिं पराम् ॥४५॥**

पदच्छेद— युवाम् माम् पुत्र भावेन ब्रह्म भावेन च असकृत्।
चिन्तयन्तौ कृतस्नेहौ यास्येथे मत् गतिम् पराम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| युवाम् | १. | तुम दोनों | चिन्तयन्तौ | ८. | चिन्तन के द्वारा |
| माम् | २. | मेरे प्रति | कृतस्नेहौ | ७. | स्नेह और |
| पुत्र भावेन | ३. | पुत्र-भाव | यास्येथे | १२. | प्राप्ति होगी |
| ब्रह्म भावेन | ४. | ब्रह्मभाव रखना | मत् | ९. | तुम्हें मेरे |
| च | ५. | और इस प्रकार | गतिम् | ११. | पद की |
| असकृत् | ६. | बार-बार | पराम् ॥ | १०. | परम |

श्लोकार्थ—तुम दोनों मेरे प्रति बार-बार पुत्र भाव और ब्रह्मभाव रखना। इस प्रकार बार बार स्नेह और चिन्तन के द्वारा तुम्हें मेरे परम पद की प्राप्ति होगी ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—इत्युक्त्वाऽऽसीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया।**
**पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः ॥४६॥**

पदच्छेद— इति उक्त्वा आसीत् हरिः तूष्णीम् भगवान् आत्ममायया।
पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यः बभूव प्राकृतः शिशुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | इतना | पित्रोः | ८. | पिता-माता के |
| उक्तम् | ३. | कहकर | सम्पश्यतोः | ९. | देखते-देखते |
| आसीत् | ५. | हो गये (तब) | सद्यः | १०. | तत्काल |
| हरिः | १. | भगवान् | बभूव | १३. | बना लिया |
| तूष्णीम् | ४. | चुप | प्राकृत | ११. | साधारण |
| भगवान् | ६. | भगवान् ने | शिशुः ॥ | १२. | बालक का रूप |
| आत्ममायया। | ७. | अपनी योग माया से | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् इतना कहकर चुप हो गये। तब भगवान् ने अपनी योग माया से पिता-माता के देखते देखते तत्काल साधारण बालक का रूप बना लिया ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**ततश्च शौरिर्भगवत्प्रचोदितः सुतं समादाय स सूतिकागृहात् ।**
**यदा बहिर्गन्तुमियेष तर्ह्यजा या योगमायाजनि नन्दजायया ॥४७॥**

पदच्छेद— ततः च शौरिः भगवत् प्रचोदितः सुतं समादाय सुति का गृहात् ।
यदा बहिः गन्तुम् इ येष तर्हि अजाया योगयाया अजनि नन्द जायया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | २. | तब | यदा | ९. | जब |
| च | १. | और | बहिः गन्तुम् | १०. | बाहर निकलने की |
| शौरिः | ४. | वसुदेव जी ने | इयेष | ११. | इच्छा की |
| भगवत् | ५. | भगवान् की | तर्हि | १२. | तब |
| प्रचोदितः | ६. | प्रेरणा से | अजा | १५. | अजा (जन्म रहित) |
| सुतम् समादाय | ७. | बालक को लेकर | या योग | १६. | जो योग |
| सः | ३. | उन | माया अजनि | १७. | माया है उसने जन्म लिया |
| सूतिकागृहात् । | ८. | सूतिकागृह से | नन्द | १३. | नन्द की |
| | | | जायया | १४. | पत्नी यशोदा के गर्भ से |

श्लोकार्थ—और उन वसुदेव जी ने भगवान् को प्रेरणा से बालक को लेकर सूतिकागृह से बाहर निकलने की इच्छा की । तब नन्द पत्नी यशोदा के गर्भ से अजा (जन्म रहित) जो योग माया है उसने जन्म लिया ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**तया हृतप्रत्ययसर्ववृत्तिषु द्वाःस्थेषु पौरेष्वपि शायितेष्वथ ।**
**द्वारस्तु सर्वाः पिहिता दुरत्यया बृहत्कपाटायसकीलशृङ्खलैः ॥४८॥**

पदच्छेद— तया हृत प्रत्यय सर्ववृत्तिषुद्वाः स्थेषु पौरेषु अपि शायितेषु अथ ।
द्वारस्तु सर्वाः पिहिताः दुरत्ययाः बृहत् कपाट आयस कीलशृंखलैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तया | २. | उसी योग माया ने | द्वारस्तु | ११. | दरवाजे |
| हृत | ७. | हर ली (और) | सर्वाः | १०. | सभी |
| प्रत्यय | ६. | चेतना | पिहिताः | १२. | बन्द थे |
| सर्ववृत्तिषु | ५. | समस्त इन्द्रियों की | दुरत्ययाः | ९. | अति मजबूत |
| द्वाः स्थेषु | ३. | द्वार पाल और | बृहत् | १३. | उनके बड़े-बड़े |
| पौरेषु अपि | ४. | पुरवासियों की भी | कपाट | १४. | किवाड़ |
| शायितेषु | ८. | वे सो गये | आयस | १५. | लोहे की |
| अथ । | १. | तदनन्तर | कीलशृंखलैः ॥ | १६. | कीलों से जड़े हुये थे ॥ |

श्लोकार्थ—तदनन्तर उसी योग माया ने द्वारपाल और पुरवासियों की समस्त इन्द्रियों की चेतना हर ली । और वे सो गये । अति मजबूत सभी दरवाजे बन्द थे । उनके बड़े-बड़े किवाड़ लोहे की कीलो से जड़े हुए थे ।

## एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**ताः कृष्णवाहे वसुदेव आगते स्वयं व्यवर्यन्त यथा तमो रवेः।**
**ववर्ष पर्जन्य उपांशुगर्जितः शेषोऽन्वगाद् वारि निवारयन् फणैः ॥४९॥**

पदच्छेद— ताः कृष्ण वाहे वसुदेवे आगते स्वयम् व्यवर्यन्त यथा तमः रवेः।
ववर्ष पर्जन्य उपांशु गर्जितः शेषः अन्वगात् वारि निवारयन् फणैः ॥

| शब्दार्थ—ताः | ४. | वे ही दरवाजे | ववर्ष | १३. | फुहारें छोड़ने लगे और |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण वाहे | १. | श्रीकृष्ण को लेकर जाने वाले | पर्जन्यः | १०. | उस समय बादल |
| वसुदेवे | २. | वसुदेव जी के | उपांशु | ११. | धीरे-धीरे |
| आगते | ३. | सामने आने पर | गर्जितः | १२. | गरजकर |
| स्वयम् | ५. | उसी प्रकार स्वयम् | शेषः | १४. | शेषनाग |
| व्यवर्यन्त | ६. | खुल गये | अन्वगात् | १८. | पीछे-पीछे चलने लगे |
| यथा | ७. | जैसे | वारि | १६. | जल को |
| तमः | ९. | अन्धकार दूर हो जाता है | निवारयन् | १७. | रोकते हुये |
| रवेः। | ८. | सूर्योदय होने पर | फणैः ॥ | १५. | अपने फनों से |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को लेकर जाने वाले वसुदेव जी के सामने आने पर वे ही दरवाजे उसी प्रकार स्वयम् खुल गये जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार दूर हो जाता है। उस समय बादल धीरे-धीरे गरज कर फुहारे छोड़ने लगे और शेष नाग अपने फनों से जल को रोकते हुये पीछे पीछे चलने लगे ॥

## पञ्चाशत्तमः श्लोकः

**मघोनि वर्षत्यसकृद् यमानुजा गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला।**
**भयानकावर्तशताकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः ॥५०॥**

पदच्छेद— मघोनि वर्षति असकृत् यमअनुजा गम्भीर तोय ओघजव ऊर्मिफेनिला।
भयानक आवर्त शत आकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुः इव श्रियः पतेः ॥

| शब्दार्थ—मघोनि | २. | बादलों के | आवर्त | १०. | भँवरों से |
|---|---|---|---|---|---|
| वर्षति | ४. | बरसने से | शत | ८. | सैकड़ों |
| असकृत् | ३. | बार-बार | आकुला | ११. | व्याप्त |
| यमअनुजा | १. | उस समय यमुना | नदी मार्गं | १२. | उस नदी ने श्रीकृष्ण को मार्ग |
| गम्भीरतोय | ५. | गहरे जल वाली | ददौ | १६. | दे दिया |
| ओघजवः | ६. | तेज प्रवाह वाली और | सिन्धुः | १३. | समुद्र द्वारा |
| ऊर्मिफेमिना। | ७. | तरंगों से फेनिल थी | इव | १५. | भाँति |
| भयानक | ९. | भयानक | श्रियः पतेः ॥ | १४. | सीता पति राम की |

श्लोकार्थ—उस समय यमुना बादलों के बार-बार बरसने से गहरे जल वाली, तेज प्रवाह वाली और तरंगों से फेनिल थी। सैकड़ों भयानक भँवरों से व्याप्त उस नदी ने श्रीकृष्ण को समुद्र द्वारा सीता पति राम की भाँति मार्ग दे दिया ॥

## एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**नन्दव्रजं शौरिरुपेत्य तत्र तान् गोपान् प्रसुप्तानुपलभ्य निद्रया ।**
**सुतं यशोदाशयने निधाय तत्सुतामुपादाय पुनर्गृहादगात् ॥५१॥**

पदच्छेद— नन्द व्रजम् शौरिः उपेत्य तत्र तान् गोपान् प्रसुप्तान् उपलभ्य निद्रया ।
सुतम् यशोदा शयने निधाय तत् सुताम् उपादाय पुनः गृहान् अगात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्द व्रजम् | २. | नन्द बाबा के व्रज में | सुतम् | ६. | अपने पुत्र को |
| शौरिः | १. | वसुदेव जी ने | यशोदा | १०. | यशोदा जी की |
| उपेत्य | ३. | पहुँचकर | शयने | ११. | शय्या पर |
| तत्र | ४. | वहाँ | निधाय | १२. | रखकर |
| तान् गोपान् | ५. | उन गोपों को | तत् सुताम् | १३. | उनकी कन्या को |
| प्रसुप्तान् | ७. | सोया हुआ | उपादाय | १४. | लेकर |
| उपलभ्य | ८. | पाया | पुनः गृहान् | १५. | वे पुनः बन्दी गृह |
| निद्रया । | ६. | नींद में | अगात् ॥ | १६. | लौट आये |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने नन्द बाबा के व्रज में पहुँचकर वहाँ उन गायों को नींद में सोया हुआ पाया । अपने पुत्र को यशोदा जी की शय्या पर रखकर उनकी कन्या को लेकर वे पुनः बन्दी गृह लौट आये ॥

## द्वापञ्चाशत्तमःश्लोकः

**देवक्याः शयने न्यस्य वसुदेवोऽथ दारिकाम् ।**
**प्रतिमुच्य पदोर्लोहमास्ते पूर्ववदावृतः ॥५२॥**

पदच्छेद— देवक्याः शयने न्यस्य वसुदेवः अथ दारिकाम् ।
प्रतिमुच्य पदोः लोहम् आस्ते पूर्ववत् आवृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देवक्याः | ४. | देवकी की | प्रतिमुच्य | ६. | डालकर |
| शयने | ५. | शय्या पर | पदोः | ७. | अपने पैरों में |
| न्यस्य | ६. | सुला दिया | लोहम् | ८. | बेड़ियाँ |
| वसुदेवः | २. | वसुदेव जी ने | आस्ते | १२. | हो गये |
| अथ | १. | तदनन्तर | पूर्ववत् | १०. | पहले के समान |
| दारिकाम् । | ३. | उस कन्या को | आवृतः ॥ | ११. | बन्दीगृह में बन्द |

श्लोकार्थ—तदनन्तर वसुदेव जी ने उस कन्या को देवकी की शय्या पर सुला दिया । अपने पैरों में बेड़ियाँ डालकर पहले के समान बन्दीगृह में बन्द हो गये ॥

## त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**यशोदा नन्दपत्नी च जातं परमबुध्यत ।**
**न तल्लिङ्गं परिश्रान्ता निद्रयापगतस्मृतिः ॥५३॥**

पदच्छेद— यशोदा नन्द पत्नी च जातम् परम् अबुध्यत ।
न तत् लिङ्गम् परिश्रान्ता निद्रया अपगत स्मृतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यशोदा | ४. | यशोदा को | न | १४. | नहीं हुआ |
| नन्द | २. | नन्द | तत् | १२. | उस सन्तान के |
| पत्नी | ३. | पत्नी | लिङ्गम् | १३. | पुत्र या पुत्री होने का ज्ञान |
| च | १. | और | परिश्रान्ता | ८. | अत्यधिक थकान और |
| जातम् | ५. | सन्तान उत्पत्ति का तो | निद्रया | ९. | योगमाया द्वारा |
| परम् | ६. | भलीभाँति | अपगत | ११. | हरण हो जाने के कारण |
| अबुध्यत । | ७. | ज्ञान हुआ पर | स्मृतिः ॥ | १०. | स्मृति के |

श्लोकार्थ—और नन्द पत्नी यशोदा को सन्तान उत्पत्ति का तो भलीभाँति ज्ञान हुआ पर अत्यधिक थकान और योगमाया द्वारा स्मृति के हरण हो जाने के कारण उस सन्तान के पुत्र या पुत्री होने का ज्ञान नहीं हुआ ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे**
**पूर्वार्धे कृष्णजन्मनि तृतीयः अध्यायः ॥३॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### चतुर्थः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—बहिरन्तःपुरद्वारः सर्वाः पूर्ववदावृताः ।
ततो बालध्वनिं श्रुत्वा गृहपालाः समुत्थिताः ॥१॥

पदच्छेद— बहिः अन्तः पुर द्वारः सर्वाः पूर्ववत् आवृताः ।
ततः बाल ध्वनिम् श्रुत्वा गृहपालाः समुत्थिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बहिः | २. | बाहरी और | ततः | ८. | इसके बाद |
| अन्तः | ३. | भीतरी | बाल | ९. | नवजात शिशु के |
| पुर | १. | नगर के | ध्वनिम् | १०. | रोने की ध्वनि |
| द्वारः | ५. | दरवाजे | श्रुत्वा | ११. | सुनकर |
| सर्वाः | ४. | सब | गृहपालाः | १२. | द्वारपाल |
| पूर्ववत् | ६. | पहले के समान | समुत्थिताः॥ | १३. | उठ खड़े हुये |
| आवृताः । | ७. | बन्द हो गये | | | |

श्लोकार्थ—नगर के बाहरी और भीतरी सब दरवाजे पहले के समान बन्द हो गये । इसके बाद नवजात शिशु के रोने की ध्वनि सुनकर द्वारपाल उठ खड़े हुये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

ते तु तूर्णमुपव्रज्य देवक्या गर्भजन्म तत् ।
आचख्युर्भोजराजाय यदुद्विग्नः प्रतीक्षते ॥२॥

पदच्छेद— ते तु तूर्णम् उपव्रज्य देवक्याः गर्भ जन्म तत् ।
आचख्युः भोजराजाय यत् उद्विग्नः प्रतीक्षते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते तु | १. | वे | तत् । | ७. | उस |
| तूर्णम् | २. | शीघ्रता पूर्वक | आचख्युः | ९. | वर्णन किया |
| उपव्रज्य | ४. | गये और | भोजराजाय | ३. | कंस के पास |
| देवक्याः | ५. | देवकी के | यत् | १०. | जिसकी कंस |
| गर्भ | ६. | गर्भ से | उद्विग्नः | ११. | बेचैनी से |
| जन्म | ८. | सन्तान की उत्पत्ति का | प्रतीक्षते ॥ | १२. | प्रतिक्षा कर रहा था |

श्लोकार्थ—वे शीघ्रता पूर्वक कंस के पास गये और देवकी के गर्भ से सन्तान की उत्पत्ति का वर्णन किया । जिसकी कंस बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा था ॥

## तृतीयः श्लोकः

**स तल्पात् तूर्णमुत्थाय कालोऽयमिति विह्वलः ।**
**सूतीगृहमगात् तूर्णं प्रस्खलन् मुक्तमूर्धजः ॥३॥**

पदच्छेद— सः तल्पात् तूर्णम् उत्थाय कालः अयम् इति विह्वलः ।
सूतीगृहम् अगात् तूर्णम् प्रस्खलन् मुक्त मूर्धजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | ५. | वह (कंस) | विह्वलः । | ४. | व्याकुल होता हुआ |
| तल्पात् | ६. | पलंग से | सूतीगृहम् | १३. | बन्दी गृह |
| तूर्णम् | ७. | शीघ्रता पूर्वक | अगात् | १४. | जा पहुँचा |
| उत्थाय | ८. | उठ खड़ा हुआ | तूर्णम् | १२. | शीघ्रता से |
| कालः | २. | मेरा काल है | प्रस्खलन् | ११. | गिरता-पड़ता |
| अयम् | १. | यह तो | मुक्त | ६. | खुले हुये |
| इति | ३. | ऐसा सोचकर | मूर्धजः ॥ | १०. | बालों वाला वह |

श्लोकार्थ—यह तो मेरा काल है। ऐसा सोचकर व्याकुल होता हुआ वह कंस पलंग से शीघ्रता पूर्वक उठ खड़ा हुआ। खुले हुये बालों वाला वह गिरता-पड़ता शीघ्रता से बन्दी गृह जा पहुँचा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तमाह भ्रातरं देवी कृपणा करुणं सती ।**
**स्नुषेयं तव कल्याण स्त्रियं मा हन्तुमर्हसि ॥४॥**

पदच्छेद— तम् आह भ्रातरम् देवी कृपणा करुणम् सती ।
स्नुषा इयम् तव कल्याण स्त्रियम् मा हन्तुम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ५. | अपने उस | स्नुषा | ११. | पुत्र वधू के समान है |
| आह | ७. | कहा | इयम् | ६. | यह कन्या तो |
| भ्रातरम् | ६. | भाई कंस से | तव | १०. | तुम्हारी |
| देवी | २. | देवकी ने | कल्याण | ८. | हे मेरे हितैषी भाई ! |
| कृपणा | ३. | दुःख और | स्त्रियम् | १२. | स्त्री जाति की है |
| करुणम् | ४. | करुणा के साथ | मा | १५. | नहीं है |
| सती । | १. | सती | हन्तुम् | १३. | यह मारने के |
| | | | अर्हसि ॥ | १४. | योग्य |

श्लोकार्थ—सती देवकी ने दुःख और करुणा के साथ अपने उस भाई कंस से कहा—हे मेरे हितैषी भाई ! यह कन्या तो तुम्हारी पुत्र वधू के समान है। स्त्री जाति की है। यह मारने के योग्य नहीं है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**बहवो हिंसिता भ्रातः शिशवः पावकोपमाः ।**
**त्वया दैवनिसृष्टेन पुत्रिकैका प्रदीयताम् ॥५॥**

पदच्छेद— बहवः हिंसिताः भ्रातः शिशवः पावक उपमाः ।
त्वया दैव निसृष्टेन पुत्रिका एका प्रदीयताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बहवः | ७. | बहुत से | त्वया | २. | तुमने |
| हिंसिताः | ९. | मार डाले | दैव | ३. | दैव |
| भ्रातः | १. | हे भैया ! | निसृटेन | ४. | वश |
| शिशवः | ८. | बालक | पुत्रिका | ११. | कन्या |
| पावक | ५. | अग्नि के | एका | १०. | यही एक |
| उपमाः । | ६. | समान तेजस्वी | प्रदीयताम् ॥ | १२. | मुझे दे दो |

श्लोकार्थ—हे भैया ! तुमने दैववश अग्नि के समान तेजस्वी बहुत से बालक मार डाले । यही एक कन्या मुझे दे दो ॥

## षष्ठः श्लोकः

**नन्वहं ते ह्यवरजा दीना हतसुता प्रभो ।**
**दातुमर्हसि मन्दाया अङ्गेमां चरमां प्रजाम् ॥६॥**

पदच्छेद— ननु अहम् ते हि अवरजा दीना हत सुता प्रभो ।
दातुम् अर्हसि मन्दायाः अङ्ग इमाम् चरमाम् प्रजाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ननु | ३. | अवश्य | दातुम् | १३. | देने में |
| अहम् ते | ४. | मैं तुम्हारी | अर्हसि | १४. | समर्थ हो |
| हि अवरजा | ५. | छोटी बहन हूँ | मन्दायाः | ९. | मुझ मन्दभागिनी को तुम |
| दीना | ८. | अत्यन्त दीन हूँ | अङ्ग | २. | भाई |
| हत | ७. | मरने से | इमाम् | १०. | इस |
| सुता | ६. | पुत्रों के | चरमाम् | ११. | अन्तिम |
| प्रभो । | १. | मेरे समर्थ भाई | प्रजाम् ॥ | १२. | सन्तान को |

श्लोकार्थ—मेरे समर्थ भाई ! अवश्य ही मैं तुम्हारी छोटी बहिन हूँ । पुत्रों के मरने से अत्यन्त दीन हूँ । मुझ मन्दभागिनी को तुम इस अन्तिम सन्तान को देने में समर्थ हो ।

## सप्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— उपगृह्यात्मजामेवं रुदत्या दीनदीनवत् ।
याचितस्तां विनिर्भर्त्स्य हस्तादाचिच्छिदे खलः ॥७॥

पदच्छेद— उपगृह्य आत्मजाम् एवम् रुदत्याः दीन दीनवत् ।
याचितः ताम् विनिर्भर्त्स्य हस्तात् आचिच्छिदे खलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उपगृह्य | ३. गोद में छिपाकर | याचितः | ७. देवकी ने याचना की |
| आत्मजाम् | २. कन्या को | ताम् | ९. उसको |
| एवम् | १. इस प्रकार | विनिर्भर्त्स्य | १०. झिड़ककर कन्या को |
| रुदत्याः | ६. रोते हुये | हस्तात् | ११. हाथ से |
| दीन | ५. दीन होकर | आचिच्छिदे | १२. छीन लिया |
| दीनवत् । | ४. दुःख पूर्वक | खलः ॥ | ८. दुष्ट कंस ने |

श्लोकार्थ—इस प्रकार कन्या को गोद में छिपाकर दुःख पूर्वक दीन होकर रोते हुये देवकी ने याचना की । दुष्ट कंस ने उसको झिड़ककर कन्या को हाथ से छीन लिया ॥

## अष्टमः श्लोकः

तां गृहीत्वा चरणयोर्जातमात्रां स्वसुः सुताम् ।
अपोथयच्छिलापृष्ठे स्वार्थोन्मूलितसौहृदः ॥८॥

पदच्छेद— ताम् गृहीत्वा चरणयोः जातमात्राम् स्वसुः सुताम् ।
अपोथयत् शिला पृष्ठे स्वार्थ उन्मूलित सौहृदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताम् | २. उस कंस ने | अपोथयत् | ९. दे मारा |
| गृहीत्वा | ६. पकड़कर | शिला | ७. शिला |
| चरणयोः | ५. पैरों को | पृष्ठे | ८. तल पर |
| जातमात्राम् | ३. नवजात | स्वार्थ | १०. स्वार्थ ने |
| स्वसुः | १. बहिन की | उन्मूलित | १२. उखाड़ फेंका था |
| सुताम् । | ४. पुत्री के | सौहृदः ॥ | ११. उसके सौहर्द को |

श्लोकार्थ—उस कंस ने बहिन को उस नवजात पुत्री के पैरों को पकड़ कर शिला तल पर दे मारा । स्वार्थ ने उसके सौहार्द को उखाड़ फेका था ॥

## नवमः श्लोकः

सा तद्धस्तात् समुत्पत्य सद्यो देव्यम्बरं गता ।
अदृश्यतानुजा विष्णोः सायुधाष्टमहाभुजा ॥९॥

पदच्छेद— सा तत् हस्तात् समुत्पत्य सद्यः देवी अम्बरम् गता ।
अदृश्यत अनुजा विष्णोः स आयुधा अष्ट महा भुजा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | ४. | वह | अदृश्यत | ११. | अदृश्य हो गई (और) |
| तत् | १. | उसके | अनुजा | १०. | बहिन |
| हस्तात् | २. | हाथ से | विष्णोः | ९. | भगवान् विष्णु की |
| समुत्पत्य | ३. | छूट कर | सआयुधा | १५ | आयुध लिये दिखाई दी |
| सद्यः | ६. | तत्काल | अष्ट | १२. | अपनी आठ |
| देवी | ५. | देवी | महा | १३. | विशाल |
| अम्बरम् | ७. | आकाश में | भुजा ॥ | १४. | भुजाओं में |
| गता । | ८. | चली गई | | | |

श्लोकार्थ—उसके हाथ से छूटकर वह देवी तत्काल आकाश में चली गई । भगवान् विष्णु की बहिन अदृश्य हो गई और अपनी आठ विशाल भुजाओं में आयुध लिये दिखाई दी ॥

## दशमः श्लोकः

दिव्यस्रगम्बरालेपरत्नाभरणभूषिता ।
धनुःशूलेषुचर्मासिशङ्खचक्रगदाधरा ॥१०॥

पदच्छेद— दिव्य स्रक् अम्बर आलेप रत्न आभरण भूषिता ।
धनुः शूलेषु चर्म असि शङ्ख चक्र गदाधरा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिव्य | १. | वह दिव्य | धनुः | ८. | उसके हाथों में धनुष |
| स्रक् | २. | माला | शूलेषु | ९. | त्रिशूल |
| अम्बर | ३. | वस्त्र | चर्म | १०. | ढाल |
| आलेप | ४. | चन्दन (और) | असि | ११. | तलवार |
| रत्न | ५. | मणिमय | शङ्ख | १२. | शङ्ख |
| आभरण | ६. | आभूषणों से | चक्र | १३. | चक्र |
| भूषिता । | ७. | विभूषित थीं | गदाधरा ॥ | १४. | गदा आदि से सुशोभित थे |

श्लोकार्थ—वह देवी दिव्य माला, वस्त्र, चन्दन और मणिमय आभूषणों से विभूषित थी । उसके हाथों में धनुष त्रिशूल, ढाल, तलवार, शङ्ख, चक्र, गदा आदि सुशोभित थे ॥

## एकादशः श्लोकः

**सिद्धचारणगन्धर्वैरप्सरःकिन्नरोरगैः ।**
**उपाहृतोरुबलिभिः स्तूयमानेदमब्रवीत् ॥११॥**

पदच्छेद— सिद्ध चारण गन्धर्वैः अप्सरः किन्नर उरगैः ।
उपाहृत उरु बलिभिः स्तूयमाना इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सिद्ध | १. सिद्ध | उपाहृत | ९. समर्पित करके |
| चारण | २. चारण | उरु | ७. बहुत सी |
| गन्धर्व | ३. गन्धर्व | बलिभिः | ८. भेंट सामग्री |
| अप्सरः | ४. अप्सरा | स्तूयमाना | १०. स्तुति कर रहे थे, देवी ने |
| किन्नर | ५. किन्नर (और) | इदम् | ११. यह |
| उरगैः । | ६. नाग गण | अब्रवीत् ॥ | १२. कहा |

श्लोकार्थ—सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरा, किन्नर और नागगण बहुत सी भेंट सामग्री समर्पित करके स्तुति कर रहे थे, देवी ने यह कहा ॥

## द्वादशः श्लोकः

**किं मया हतया मन्द जातः खलु तवान्तकृत् ।**
**यत्र क्व वा पूर्वशत्रुर्मा हिंसीः कृपणान् वृथा ॥१२॥**

पदच्छेद— किम् मया हतया मन्द जातः खलु तव अन्तकृत् ।
यत्र क्व वा पूर्व शत्रुः मा हिंसीः कृपणान् वृथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किम् | ३. तुझे क्या मिलेगा | यत्र क्वा | ६. जिस किसी स्थान पर |
| मया हतया | २. मुझे मारने से | पूर्वशत्रुः | ५. पूर्व जन्म का शत्रु |
| मन्द | १. रे मूर्ख ! | मा | ११. मत |
| जातः | ८. पैदा हो चुका है | हिंसीः | १२. मार |
| खलु तव | ४. निश्चय ही तेरे | कृपणान् | १०. निर्दोष बालकों को |
| अन्तकृत् । | ७. तुझे मारने के लिये | वृथा ॥ | ९. व्यर्थ ही |

श्लोकार्थ—रे मूर्ख ! मुझे मारने से तुझे क्या मिलेगा । निश्चय ही तेरे पूर्व जन्म का शत्रु जिस किसी स्थान पर तुझे मारने के लिये पैदा हो चुका है । व्यर्थ ही निर्दोष बालकों को मत मार ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**इति प्रभाष्य तं देवी माया भगवती भुवि ।**
**बहुनामनिकेतेषु बहुनामा बभूव ह ॥१३॥**

पदच्छेद — इति प्रभाष्य तम् देवी माया भगवती भुवि ।
बहुनाम निकेतेषु बहु नामा बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ३. | इस प्रकार | भुवि । | ७. | पृथ्वी के |
| प्रभाष्य | ४. | कहकर | बहुनाम | ८. | विभिन्न नाम वाले |
| तम् | २. | उस कंस से | निकेतेषु | ९. | अनेक स्थानों पर |
| देवी | १. | वह देवी | बहु | १०. | अनेक |
| माया | ६. | योगमाया अन्तर्ध्यान हो गई | नामा | ११. | नामों से |
| भगवती | ५. | भगवती | बभूव ह ॥ | १२. | प्रसिद्ध हुई |

श्लोकार्थ—वह देवी उस कंस से इस प्रकार कहकर भगवती योगमाया अन्तर्ध्यान हो गईं । पृथ्वी के विभिन्न नाम वाले अनेक स्थानों पर अनेक नामों से प्रसिद्ध हुई ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**तयाभिहितमाकर्ण्य कंसः परमविस्मितः ।**
**देवकीं वसुदेवं च विमुच्य प्रश्रितोऽब्रवीत् ॥१४॥**

पदच्छेद— तया अभिहितम् आकर्ण्य कंसः परम विस्मितः ।
देवकीं वसुदेवम् च विमुच्य प्रश्रितः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तया | १. | उसके | देवकी | ७. | देवकी |
| अभिहितम् | २. | इस कथन को | वसुदेवम् | ९. | वसुदेव को |
| आकर्ण्य | ३. | सुनकर | च | ८. | और |
| कंसः | ४. | कंस ने | विमुच्य | १०. | छोड़ दिया और |
| परम | ५. | अत्यधिक | प्रश्रितः | ११. | नम्रता पूर्वक |
| विस्मितः । | ६. | आश्चर्य चकित होकर | अब्रवीत् ॥ | १२. | इस प्रकार बोला |

श्लोकार्थ—उसके इस कथन को सुनकर कंस ने अत्यधिक आश्चर्य चकित होकर देवकी और वसुदेव को छोड़ दिया और नम्रता पूर्वक इस प्रकार बोला ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**अहो भगिन्यहो भाम मया वां बत पाप्मना ।**
**पुरुषाद इवापत्यं बहवो हिंसिताः सुताः ॥१५॥**

**पदच्छेद—**　अहो भगिनि अहो भाम मया वाम् बत पाप्मना ।
पुरुषाद इव अपत्यम् बहवः हिंसिताः सुताः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **अहो भगिनि** | १. | हे मेरी प्यारी बहिन ! | पुरुषाद | ७. | राक्षस |
| **अहो भाम** | २. | हे बहनोई जी | इव | ८. | जैसे |
| **मया** | ४. | मैंने | अपत्यम् | ९. | बच्चों को मारता है वैसे ही |
| **वाम्** | ५. | तुम्हारे साथ | बहवः | १०. | मैंने बहुत से |
| **बत** | ३. | खेद है | हिंसिताः | १२. | मार डाले |
| **पाप्मना ।** | ६. | बड़ा पाप किया | सुताः ॥ | ११. | बालक |

**श्लोकार्थ**—हे मेरी प्यारी बहिन ! हे बहनोई जी ! खेद है कि मैंने तुम्हारे साथ बड़ा पाप किया । राक्षस जैसे बच्चों को मारता है वैसे ही मैंने आपके बहुत से बालक मार डाले ॥

## षोडशः श्लोकः

**स त्वहं त्यक्तकारुण्यस्त्यक्तज्ञातिसुहृत् खलः ।**
**काँल्लोकान् वै गमिष्यामि ब्रह्महेव मृतः श्वसन् ॥१६॥**

**पदच्छेद—**　सः तु अहम् त्यक्त कारुण्यः त्यक्त ज्ञाति सुहृत् खलः ।
कान् लोकान् वै गमिष्यामि ब्रह्महा इव मृतः श्वसन् ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सः** | ५. | इस प्रकार का | कान् | १२. | किन अधम |
| **तु अहम्** | ७. | मैं | लोकान् वै | १३. | लोकों में |
| **त्यक्त** | २. | रहित | गमिष्यामि | १४. | जाऊँगा |
| **कारुण्यः** | १. | करुणा से | ब्रह्महा | ८. | ब्रह्मघाती के |
| **त्यक्त** | ४ | त्याग करने वाला | इव | ९. | समान |
| **ज्ञातिसुहृत्** | ३. | भाई-बन्धु-हितैषियों का | मृतः | ११. | मरे हुये जैसा |
| **खलः ।** | ६ | दुष्ट | श्वसन् ॥ | १०. | जीवित होने पर भी |

**श्लोकार्थ**—करुणा से रहित, भाई-बन्धु-हितैषियों का त्याग करने वाला इस प्रकार का दुष्ट मैं ब्रह्मघाती के समान जीवित होने पर भी मरे हुये के समान किन अधम लोकों में जाऊँगा ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**दैवमप्यनृतं वक्ति न मर्त्या एव केवलम् ।**
**यद्विश्रम्भादहं पापः स्वसुर्निहतवाञ्छिशून् ॥१७॥**

पदच्छेद— दैवम् अपि अनृतम् वक्ति न मर्त्याः एव केवलम् ।
यत् विश्रम्भात् अहम् पापः स्वसुः निहतवान् शिशून् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दैवम् | ४. | देवता | यत् | ७. | उसी पर |
| अपि | ५. | भी | विश्रम्भात् | ८. | विश्वास करके |
| अनृतम् वक्ति | ६. | झूठ बोलते हैं | अहम् पापः | ९. | मुझ पापी ने |
| न | ३. | नहीं | स्वसुः | १०. | अपनी बहिन के |
| मर्त्याः एव | २. | मनुष्य ही | निहतवान् | १२. | मास |
| केवलम् । | १. | केवल | शिशून् ॥ | ११. | बालकों को |

श्लोकार्थ—केवल मनुष्य ही नहीं देवता भी झूठ बोलते हैं। उसी पर विश्वास करके मुझ पापी ने अपने बहिन के बच्चों को मारा ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**मा शोचतं महाभागावात्मजान् स्वकृतम्भुजः ।**
**जन्तवो न सदैकत्र दैवाधीनास्तदासते ॥१८॥**

पदच्छेद— मा शोचतम् महाभागौ आत्मजान् स्वकृतम् भुजः ।
जन्तवः न सदा एकत्र दैव अधीनाः तत् आसते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मा | ६. | मत करो (क्योंकि) | न | ९. | नहीं |
| शोचतम् | ५. | तुम शोक | सदा | १०. | सदा रह सकते |
| महाभागौ | १. | हे महाभागे ! | एकत्र | ८. | एक साथ |
| आत्मजान् | ४. | पुत्रों के लिये | दैव | १२. | भाग्य के |
| स्वकृतम् | २. | अपने किये हुये का | अधीनाः | १३. | अधीन |
| भुजः । | ३. | भोग करने वाले | तत् | ११. | वे |
| जन्तवः | ७. | प्राणी | आसते ॥ | १४. | हैं |

श्लोकार्थ—हे महाभागे ! अपने किये हुये का भोग करने वाले पुत्रों के लिये तुम शोक मत करो। क्योंकि प्राणी एक साथ नहीं रह सकते। वे भाग्य के अधीन हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**भुवि भौमानि भूतानि यथा यान्त्यपयान्ति च।**
**नायमात्मा तथैतेषु विपर्येति यथैव भूः ॥१९॥**

पदच्छेद— भुवि भौमानि भूतानि यथा यान्ति अपयान्ति च।
न अयम् आत्मा तथा एतेषु विपर्येति यथा एव भूः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| भुवि | १. पृथ्वी पर | न | १०. | नहीं है |
| भौमानि | ४. पदार्थ | अयम् आत्मा | ८. | यह आत्म तत्त्व |
| भूतानि | ३. भौतिक | तथा | ९. | वैसा |
| यथा | २. जैसे | एतेषु | १३. | इन सबसे |
| यान्ति | ५. बनते | विपर्येति | १४. | भिन्न है |
| अपयान्ति | ७. बिगड़ते रहते हैं | यथा एव | १२. | समान ही |
| च। | ६. और | भूः ॥ | ११. | वह पृथ्वी के |

श्लोकार्थ—पृथ्वी पर जैसे भौतिक पदार्थ बनते और बिगड़ते रहते हैं, यह आत्मतत्त्व वैसा नहीं है। वह पृथ्वी के समान ही इन सबसे भिन्न है ॥

## विंशः श्लोकः

**यथा नैवंविदो भेदो यत आत्मविपर्ययः।**
**देहयोगवियोगौ च संसृतिर्न निवर्तते ॥२०॥**

पदच्छेद— यथा न एवम् विदः भेदः यतः आत्म विपर्ययः।
देहयोग वियोगौ च संसृतिः न निवर्तते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यथा | ५. होती | देह | ९. | शरीर के |
| न | ४. नहीं | योग | १०. | संयोग तथा |
| एवम् | १. इस प्रकार | वियोगौ | ११. | वियोग होने पर भी |
| विदः | २. जानने वालों में | च | ८. | और जिससे |
| भेदः | ३. भेद बुद्धि | संसृतिः | १२. | आवागमन से |
| यतः आत्म | ६. जिससे कि आत्मा के | न | १४. | नहीं मिलता है |
| विपर्ययः। | ७. विपरीत ज्ञान होता है | निवर्तते ॥ | १३. | छुटकारा |

श्लोकार्थ—इस प्रकार जानने वालों में भेद बुद्धि नहीं होती। जिससे की आत्मा के विपरीत ज्ञान होता है। और जिससे शरीर के संयोग तथा वियोग होने पर भी आवागमन से छुटकारा नहीं मिलता है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**तस्माद् भद्रे स्वतनयान् मया व्यापादितानपि ।**
**मानुशोच यतः सर्वः स्वकृतं विन्दतेऽवशः ॥२१॥**

**पदच्छेद—** तस्मात् भद्रे स्वतनयान् मया व्यापादितान् अपि ।
मा अनुशोच यतः सर्वः स्वकृतम् विन्दते अवशः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. | इसलिये | मा | ८. | मत |
| भद्रे | २. | हे बहिन ! | अनुशोच | ९. | शोक करो |
| स्व | ६. | अपने | यतः | १०. | क्योंकि |
| तनयान् | ७. | पुत्रों के लिये | सर्वः | ११. | सभी प्राणियों को |
| मया | ३. | मेरे द्वारा | स्वकृतम् | १२. | अपने कर्मों का फल |
| व्यापादितान् | ४. | मारे जाने पर | विन्दते | १४. | भोगना पड़ता है |
| अपि । | ५. | भी | अवशः ॥ | १३. | विवश होकर |

**श्लोकार्थ—**इसलिये हे बहिन ! मेरे द्वारा मारे जाने पर भी अपने पुत्रों के लिये मत शोक करो । क्योंकि सभी प्राणियों को विवश होकर अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**यावद्धतोऽस्मि हन्तास्मीत्यात्मानं मन्यतेऽस्वदृक् ।**
**तावत्तदभिमान्यज्ञो बाध्यबाधकतामियात् ॥२२॥**

**पदच्छेद—** यावत् हतः अस्मि हन्ता अस्मीति आत्मानम् मन्यते अस्वदृक् ।
तावत् तत् अभिमानी अज्ञः बाध्य बाधकताम् इयात् ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यावत् | ३. | जब तक | दृक् । | २. | न जानने के कारण |
| हतः | ६. | मैं मारा | तावत् | १०. | तब तक |
| अस्मि | ७. | जाता हूँ ऐसा | तत् | ११. | वैसा |
| हन्ता | ४. | मैं मारने | अभिमानी | १२. | अभिमान करने वाला |
| अस्मीति | ५. | वाला हूँ ऐसा (तथा) | अज्ञः | १३. | वह अज्ञानी |
| आत्मानम् | ८. | अपने बारे में | बाध्य | १४. | बाध्य |
| मन्यते | ९. | मानता है | बाधकताम् | १५. | बाधक भाव को |
| अस्व | १. | अपने स्वरूप को | इयात् ॥ | १६. | प्राप्त होता है |

**श्लोकार्थ—**अपने स्वरूप को न जानने के कारण जब तक मैं मारने वाला हूँ ऐसा तथा मैं मारा जाता हूँ ऐसा अपने बारे में मानता है । तब तक वैसा अभिमान करने वाला वह अज्ञानी बाध्य, बाधक भाव को प्राप्त होता है ।

# त्रयोविंशः श्लोकः

**क्षमध्वं मम दौरात्म्यं साधवो दीनवत्सलाः ।**
**इत्युक्त्वाश्रुमुखः पादौ श्यालः स्वस्रोरथाग्रहीत् ॥२३॥**

पदच्छेद— क्षमध्वम् मम दौरात्म्यम् साधवः दीन वत्सलाः ।
इति उक्त्वा अश्रुमुखः पादौ श्यालः स्वस्रोः अथ अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्षमध्वम् | ६. क्षमा करो | उक्त्वा | ८. कह कर |
| मम | ४. मेरी | अश्रुमुखः | १०. अश्रु पूर्ण मुख वाले |
| दौरात्म्यम् | ५. यह दुष्टता | पादौ | १३. चरणों को |
| साधवः | १. साधु स्वभाव वाले | श्यालः | ११. कंस ने |
| दीन | २. दीनों के | स्वस्रोः | १२. वहिन देवकी और वसुदेव के |
| वत्सलाः । | ३. रक्षक तुम दोनों | अथ | ९. तब |
| इति | ७. ऐसा | अग्रहीत् ॥ | १४. पकड़ लिया |

श्लोकार्थ—साधु स्वभाव वाले दीनों के रक्षक तुम दोनों मेरी यह दुष्टता क्षमा करो । ऐसा कहकर तब अश्रु पूर्ण मुख वाले कंस ने वहिन देवकी और वसुदेव के चरणों को पकड़ लिया ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**मोचयामास निगडाद् विश्रब्धः कन्यकागिरा ।**
**देवकीं वसुदेवं च दर्शयन्नात्मसौहृदम् ॥२४॥**

पदच्छेद— मोचयामास निगडात् विश्रब्धः कन्यका गिरा ।
देवकीम् वसुदेवम् च दर्शयन् आत्म सौहृदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मोचयामास | ८. छोड़ दिया (और) | वसुदेवम् | ६. वसुदेव को |
| निगडात् | ७. बन्धन से | च | ५. और |
| विश्रब्धः | ३. विश्वास करके | दर्शयन् | ११. प्रदर्शित करने लगा |
| कन्यका | १. कन्या योगमाया के | आत्म | ९. अपना |
| गिरा । | २. वचनों पर | सौहृदम् ॥ | १०. प्रेम |
| देवकीम् | ४. देवकी | | |

श्लोकार्थ—उस कन्या योग माया के वचनों पर विश्वास करके देवकी-वसुदेव को बन्धन से छोड़ दिया और अपना प्रेम प्रदर्शित करने लगा ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**भ्रातुः समनुतप्तस्य क्षान्त्वा रोषं च देवकी ।**
**व्यसृजद् वसुदेवश्च प्रहस्य तमुवाच ह ॥२५॥**

पदच्छेद— भ्रातुः समनुतप्तस्य क्षान्त्वा रोषम् च देवकी ।
व्यसृजत् वसुदेवश्च च प्रहस्य तम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ्रातुः | २. भाई को | व्यसृजत् | ७. उसके अपराध को भुला दिया |
| समनुतप्तस्य | ३. पश्चात्ताप करते देखकर | वसुदेवम् | ९. वसुदेव जी |
| क्षान्त्वा | ५. शान्त करके उसे क्षमा कर दिया | च | ८. और |
| रोषम् | ४. अपना क्रोध | प्रहस्य | १२. हंसते हुये |
| च | ६. और | तम् | ११. उससे |
| देवकी । | १. देवकी ने | उवाच | १३. बोले |
| | | ह ॥ | १०. तब निश्चय ही |

श्लोकार्थ—देवकी ने भाई को पश्चात्ताप करते देखकर अपना क्रोध शान्त करके उसे क्षमा कर दिया । और उसके अपराध को भुला दिया । तब निश्चय ही वसुदेव जी उससे हंसते हुये बोले ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**एवमेतन्महाभाग यथा वदसि देहिनाम् ।**
**अज्ञानप्रभवाहंधीः स्वपरेति भिदा यतः ॥२६॥**

पदच्छेद— एवम् एतत् महाभाग यथा वदसि देहिनाम् ।
अज्ञान प्रभव अहम् धीः स्वपरेति भिदा यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | ५. ऐसा ही है | अज्ञान | ८. अज्ञान |
| एतत् | ४. यह | प्रभव अहम् | ९. जनित अहं मैं |
| महाभाग | १. हे मनस्वी कंस ! | धीः | १०. बुद्धि के कारण ही |
| यथा | २. तुम जैसा | स्व-परेति | ११. अपने, पराये का |
| वदसि | ३. कहते हो | भिदा | १२. भेद मान बैठता है |
| देहिनाम् । | ७. जीव | यतः ॥ | ६. क्योंकि |

श्लोकार्थ—हे मनस्वी कंस ! तुम जैसा कहते हो यह ऐसा ही है । क्योंकि जीव अज्ञान जनित अहं मैं बुद्धि के कारण ही अपने-पराये का भेद मान बैठता है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**शोकहर्षभयद्वेषलोभमोहमदान्विताः ।**
**मिथो घ्नन्तं न पश्यन्ति भावैर्भावं पृथग्दृशः ॥२७॥**

पदच्छेद— शोक हर्ष भय द्वेष लोभ मोह मद अन्विताः ।
मिथः घ्नन्तम् न पश्यन्ति भावैः भावम् पृथक् दृशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शोक | ३. | शोक | मिथः | ११. | फिर वे परस्पर |
| हर्ष | ४. | हर्ष | घ्नन्तम् | १४. | नाश करने वाले भगवान् को भी |
| भय | ५. | भय | न | १५. | नहीं |
| द्वेष | ६. | द्वेष | पश्यन्ति | १६. | देखते हैं |
| लोभ | ७. | लोभ | भावैः | १२. | एक वस्तु से |
| मोह | ८. | मोह (और) | भावम् | १३. | दूसरी वस्तु का |
| मद | ९. | मद से | पृथक् | १. | भेद |
| अन्विताः । | १०. | युक्त हो जाते हैं | दृशः ॥ | २. | दृष्टि हो जाने पर तो वे |

श्लोकार्थ—भेद दृष्टि हो जाने पर तो वे शोक, हर्ष, भय, द्वेष, लोभ, मोह और मद से युक्त हो जाते हैं। फिर वे परस्पर एक वस्तु से दूसरी वस्तु का नाश करने वाले भगवान् को भी नहीं देखते हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—कंस एवं प्रसन्नाभ्यां विशुद्धं प्रतिभाषितः ।**
**देवकीवसुदेवाभ्यामनुज्ञातोऽविशद् गृहम् ॥२८॥**

पदच्छेद— कंसः एवम् प्रसन्नाभ्याम् विशुद्धम् प्रतिभाषितः ।
देवकी वसुदेवाभ्याम् अनुज्ञातः अविशत् गृहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कंसः | ४. | कंस से | देवकी | ६. | देवकी और |
| एवम् | २. | इस प्रकार | वसुदेवाभ्याम् | ७. | वसुदेव |
| प्रसन्नाभ्याम् | १. | प्रसन्न वसुदेव देवकी | अनुज्ञातः | ८. | अनुमति लेकर वह |
| विशुद्धम् | ३. | निष्कपट भाव से | अविशत् | १०. | चला गया |
| प्रतिभाषितः । | ५. | बातचीत की | गृहम् ॥ | ९. | अपने महल में |

श्लोकार्थ—प्रसन्न वसुदेव-देवकी ने इस प्रकार निष्कपट भाव से कंस से बातचीत की। तब वह देवकी और वसुदेव से अनुमति लेकर अपने महल में चला गया ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

**तस्यां रात्र्यां व्यतीतायां कंस आहूय मन्त्रिणः ।**
**तेभ्य आचष्ट तत् सर्वं यदुक्तं योगनिद्रया ॥२६॥**

पदच्छेद— तस्याम् रात्र्याम् व्यतीतायाम् कंसः आहूय मन्त्रिणः ।
तेभ्यः आचष्ट तत् सर्वम् यत् उक्तम् योग निद्रया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्याम् | १. | उस | आचष्ट | १०. | कह सुनाया |
| रात्र्याम् | २. | रात के | तत् | ८. | वह |
| व्यतीतायाम् | ३. | बीत जाने पर | सर्वम् | ९. | सब |
| कंसः | ४. | कंस ने | यत् | ११. | जो कुछ |
| आहूय | ६. | बुलाया (और) | उक्तम् | १४. | कहा था |
| मन्त्रिणः । | ५. | मन्त्रियों को | योग | १२. | योग |
| तेभ्यः | ७. | उनसे | निद्रया ॥ | १३. | निद्रा ने |

श्लोकार्थ—उस रात के बीत जाने पर कंस ने मन्त्रियों को बुलाया, और उनसे वह सब कुछ कह सुनाया, जो कुछ योगनिद्रा ने कहा ॥

# त्रिंशः श्लोकः

**आकर्ण्य भर्तुर्गदितं तमूचुर्देवशत्रवः ।**
**देवान् प्रति कृतामर्षा दैतेया नीतिकोविदाः ॥३०॥**

पदच्छेद — आकर्ण्य भर्तुः गदितम् तम् ऊचुः देव शत्रवः ।
देवान् प्रति कृत अमर्षाः दैतेयाः न अति कोविदाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आकर्ण्य | ३. | सुनकर | देवान् | ५. | देवताओं के |
| भर्तुः | १. | कंस के | प्रति | ६. | प्रति |
| गदितम् | २. | इस कथन को | कृत | ८. | भाव रखने वाले |
| तम् | १३. | कंस से | अमर्षाः | ७. | शत्रुता का |
| ऊचुः | १४. | बोले | दैतेयाः | ४. | दैत्य होने के कारण |
| देव | ११. | देवों के | न अति | १०. | रहित |
| शत्रवः । | १२. | शत्रु वे | कोविदाः ॥ | ९. | विद्वत्ता से |

श्लोकार्थ—कंस के इस कथन को सुनकर दैत्य होने के कारण देवताओं के प्रति शत्रुता का भाव रखने वाले, विद्वत्ता से रहित, देवों के शत्रु वे कंस से बोले ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**एवं चेत्तर्हि भोजेन्द्र पुरग्रामव्रजादिषु ।**
**अनिर्दशान् निर्दशांश्च हनिष्यामोऽद्य वै शिशून् ॥३१॥**

पदच्छेद— एवम् चेत् तर्हि भोजेन्द्र पुरग्राम व्रज आदिषु ।
अनिर्दशान् निर्दशान् च हनिष्यामः अद्य वै शिशून् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ३. | ऐसी बात है | अनिर्दशान् | ११. | उससे अधिक के |
| चेत् | २. | यदि | निर्दशान् | ६. | दस दिन के |
| तर्हि | ४. | तो हम | च | १०. | और |
| भोजेन्द्र | १. | हे भोजराज ! | हनिष्यामः | १५. | मार डालेंगे |
| पुर | ५. | बड़े बड़े नगरों में | अद्य | १४. | आज ही |
| ग्राम | ६. | छोटे छोटे गाँवों में | वै | १३. | निश्चय ही |
| व्रज | ७. | अहीरों की बस्तियों | शिशून् ॥ | १२. | बच्चों को |
| आदिषु । | ८. | आदि में | | | |

श्लोकार्थ—हे भोजराज ! यदि ऐसी बात है तो हम बड़े बड़े नगरों में, छोटे छोटे गाँवों में, अहीरों की बस्तियों आदि में दस दिन के और उससे अधिकके बच्चों को निश्चय ही आज ही मार डालेंगे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**किमुद्यमैः करिष्यन्ति देवाः समरभीरवः ।**
**नित्यमुद्विग्नमनसो ज्याघोषैर्धनुषस्तव ॥३२॥**

पदच्छेद— किम् उद्यमैः करिष्यन्ति देवाः समर भीरवः ।
नित्यम् उद्विग्न मनसः ज्या घोषैः धनुषः तव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | ५. | क्या | नित्यम् | १०. | सदा |
| उद्यमैः | ४. | उद्योग करके ही | उद्विग्न | ११. | घबराये हुये |
| करिष्यन्ति | ६. | करेंगे | मनसः | १२. | मनवाले रहते हैं |
| देवाः | ३. | देवगण | ज्या | ८. | डोरी |
| समर | १. | समर | घोषैः | ६. | टङ्कार सुनकर |
| भीरवः । | २. | भीरु | धनुषः तव ॥ | ७. | वे तो आपके धनुष की |

श्लोकार्थ—समर भीरु देवगण उद्योग करके ही क्या करेंगे । वे तो आपके धनुष की डोरी की टङ्कार सुनकर सदा घबराये हुये मन वाले रहते हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**अस्यतस्ते शरव्रातैर्हन्यमानाः समन्ततः ।**
**जिजीविषव उत्सृज्य पलायनपरा ययुः ॥३३॥**

पदच्छेद— अस्यतः ते शरव्रातैः हन्यमानाः समन्ततः ।
जिजीविषवः उत्सृज्य पलायनपराः ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अस्यतः | १. युद्ध भूमि में | जिजीविषवः | ५. जीने की इच्छा वाले देवता |
| ते | २. आपको | उत्सृज्य | ६. युद्ध भूमि छोड़कर |
| शरव्रातैः | ३. बाण वर्षा से | पलायनपराः | ८. भागने में तत्पर |
| हन्यमानाः | ४. मारे जाते हुये | ययुः ॥ | ९. हो जाते हैं |
| समन्ततः । | ७. चारों ओर | | |

श्लोकार्थ—युद्ध भूमि में आपकी बाण वर्षा से मारे जाते हुये, जीने की इच्छा वाले, देवता लोग युद्ध भूमि छोड़कर चारों ओर भागने में तत्पर हो जाते हैं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**केचित् प्राञ्जलयो दीना न्यस्तशस्त्रा दिवौकसः ।**
**मुक्तकच्छशिखाः केचिद् भीताः स्म इति वादिनः ॥३४॥**

पदच्छेद— केचित् प्राञ्जलयः दीनाः न्यस्त शस्त्राः दिवौकसः ।
मुक्त कच्छ शिखाः केचित् भीताः स्म इति वादिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| केचित् | १. कुछ | कच्छ | ९. कच्छ |
| प्राञ्जलयः | ५. हाथ जोड़कर | शिखाः | ८. चोटी के बाल (तथा) |
| दीनाः | ६. दीनता प्रकट करने लगते हैं | केचित् | ७. कुछ |
| न्यस्त | ४. त्याग कर | भीताः | ११. भयभीत |
| शस्त्राः | ३. अपने अस्त्र-शस्त्र | स्म | १२. हैं |
| दिवौकसः । | २. देवता | इति | १३. ऐसा |
| मुक्त | १०. खोलकर (हम) | वादिनः ॥ | १४. कहते हैं |

श्लोकार्थ—कुछ देवता अपने अस्त्र-शस्त्र त्यागकर हाथ जोड़कर दीनता प्रकट करने लगते हैं । कुछ चोटी के बाल तथा कच्छ खोलकर हम भयभीत हैं, ऐसा कहते हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**न त्वं विस्मृतशस्त्रास्त्रान् विरथान् भयसंवृतान् ।**
**हंस्यन्यासक्तविमुखान् भग्नचापानयुध्यतः ॥३५॥**

पदच्छेद— न त्वम् विस्मृत शस्त्र अस्त्रान् विरथान् भय संवृतान् ।
हंसि अन्यासक्त विमुखान् भग्न चापान् अयुध्यतः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १३. | नहीं | संवृतान् । | ७. | डरे हुये |
| त्वम् | १. | आप | हंसि | १४. | मारते हैं |
| विस्मृत | ४. | भूले हुये | अन्यासक्त | ८. | युद्ध छोड़कर |
| शस्त्र | ३. | शस्त्र | विमुखान् | ९. | भागने वाले |
| अस्त्रान् | २. | अस्त्र | भग्न | १०. | टूटे हुये |
| विरथान् | ५. | रथ रहित | चापान् | ११. | धनुष वाले तथा |
| भय | ६. | भय से | अयुध्यतः ॥ | १२. | युद्ध न करने वाले वीरों को |

श्लोकार्थ—आप अस्त्र-शस्त्र भूले हुये, रथ रहित, भय से डरे हुये, युद्ध छोड़कर भागने वाले, टूटे हुए धनुष वाले तथा युद्ध न करने वाले वीरों को नहीं मारते हैं ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**किं क्षेमशूरैर्विबुधैरसंयुगविकत्थनैः ।**
**रहोजुषा किं हरिणा शम्भुना वा वनौकसा ।**
**किमिन्द्रेणाल्पवीर्येण ब्रह्मणा व तपस्यता ॥३६॥**

पदच्छेद— किं क्षेम शूरैः विबुधैः असंयुग विकत्थनैः ।
रहः जुषा किम् हरिणा शम्भुना वा वनौकसा ।
किम् इन्द्रेण अल्पवीर्येण ब्रह्मणा वा तपस्यता ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | ५. | क्या भय | शम्भुना वा | १३. | शङ्कर अथवा |
| क्षेम शूरैः | १. | शान्ति स्थल में ही वीर बनने वाले | वनौकसा | १२. | वनवासी |
| विबुधैः | ४. | देवताओं से | किम् | ८. | क्या डर |
| असंयुग | २. | रणभूमि के बाहर | इन्द्रेण | ७. | इन्द्र से भी |
| विकत्थनैः | ३. | डींग हांकने वाले | अल्पवीर्येण | ६. | अल्पवीर्य |
| रहः जुषाम् | ९. | एकान्त में रहने वाले | ब्रह्मणा | १५. | ब्रह्मा से भी हमें |
| किम् | १६. | क्या डर हो सकता है | वा | ११. | और |
| हरिणा | १०. | विष्णु | तपस्यता ॥ | १४. | तपस्वी |

श्लोकार्थ—शान्ति स्थल में ही वीर बनने वाले तथा रणभूमि के बाहर डींग हांकने वाले देवताओं से क्या भय, अल्पवीर्य इन्द्र से भी क्या डर, एकान्त में रहने वाले विष्णु और वनवासी शङ्कर अथवा तपस्वी ब्रह्मा से भी हमें क्या डर हो सकता है ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

तथापि देवाः सापत्न्यान्नोपेक्ष्या इति मन्महे ।
ततस्तन्मूलखनने नियुङ्क्ष्वास्माननुव्रतान् ॥३७॥

पदच्छेद— तथापि देवाः सापत्न्यात् न उपेक्ष्याः इति मन्महे ।
ततः तत् मूलखनने नियुङ्क्ष्व अस्मान् अनुव्रतान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथापि | १. फिर भी | ततः | ७. | इसलिये |
| देवाः | ३. देवताओं की | तत् | ८. | उनकी |
| सापत्न्यात् | २. शत्रु होने के कारण | मूलखनने | ९. | जड़ उखाड़ फेंकने के लिये |
| न उपेक्ष्याः | ४. उपेक्षा नहीं करनी चाहिये | नियुङ्क्ष्व | १२. | नियुक्त कर दीजिये |
| इति | ५. ऐसी | अस्मान् | १०. | हम जैसे |
| मन्महे । | ६. हमारी राय है | अनुव्रतान् ॥ | ११. | सेवकों को |

श्लोकार्थ—फिर भी शत्रु होने के कारण देवताओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये । ऐसी हमारी राय है । इसलिये उनकी जड़ उखाड़ फेंकने के लिये हम जैसे सेवकों को नियुक्त कर दीजिये ।

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

यथाऽऽमयोऽङ्गे समुपेक्षितो नृभिर्न शक्यते रूढपदश्चिकित्सितुम् ।
यथेन्द्रियग्राम उपेक्षितस्तथा रिपुर्महान् बद्धबलो न चाल्यते ॥३८॥

पदच्छेद— यथा आमयः अङ्गे समुपेक्षितः नृभिः न शक्यते रूढपदः चिकित्सितुम् ।
यथा इन्द्रिय ग्राम उपेक्षितः तथा रिपुः महान् बद्ध बलः न चाल्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यथा | २. जैसे | यथा इन्द्रिय | ९. | जैसे इन्द्रिय |
| आमयः | ४. रोग की | ग्राम | १०. | समुदाय की |
| अङ्गे | ३. शरीर में | उपेक्षितः | ११. | उपेक्षा करने पर उसका दमन असम्भव होता है |
| समुपेक्षितः | ५. उपेक्षा करने पर तथा उसके | तथा | १२. | उसी प्रकार |
| नृभिः | १. मनुष्यों के द्वारा | रिपुः | १४. | शत्रु की उपेक्षा करने पर तथा |
| न शक्यते | ८. सम्भव नहीं होती | महान् | १३. | श्रेष्ठ |
| रूढपदः | ६. बद्ध मूल हो जाने पर | बद्ध बलः | १५. | उसके पैर जमा लेने पर |
| चिकित्सितुम् । | ७. उसकी चिकित्सा | न चाल्यते ॥ | १६. | उसे नहीं हटाया जा सकता है |

श्लोकार्थ—मनुष्यों के द्वारा जैसे शरीर में रोग की उपेक्षा करने पर तथा उसके बद्धमूल हो जाने पर उसकी चिकित्सा सम्भव नहीं होती है । जैसे इन्द्रिय के समुदाय की उपेक्षा करने पर उसका दमन असम्भव होना है । उसी प्रकार श्रेष्ठ शत्रु की उपेक्षा करने पर तथा उसके पैर जमा लेने पर उसे नहीं हटाया जा सकता है ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**मूलं हि विष्णुर्देवानां यत्र धर्मः सनातनः ।**
**तस्य च ब्रह्म गोविप्रास्तपो यज्ञाः सदक्षिणाः ॥३९॥**

पदच्छेद — मूलम् हि विष्णुः देवानाम् यत्र धर्मः सनातनः ।
तस्य च ब्रह्म गो विप्राः तपः यज्ञाः सदक्षिणाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मूलम् हि | २. | जड़ है | तस्य | ७. | धर्म की जड़ है |
| विष्णु | ३. | विष्णु (और) | च | ११. | और |
| देवानाम् | १. | देवताओं की | ब्रह्म | ८. | वेद |
| यत्र | ४. | जहाँ | गो विप्राः | ९. | गौ- ब्राह्मण |
| धर्मः | ६. | धर्म है (वे नहीं हैं) | तपः यज्ञाः | १०. | तपस्या यज्ञ (जिनमें) |
| सनातनः । | ५. | सनातन | सदक्षिणाः॥ | १२. | दक्षिणा दी जाती है |

श्लोकार्थ—देवताओं की जड़ है विष्णु, और जहाँ सनातन धर्म है वे वहीं हैं । धर्म की जड़ है, वेद, गौ, ब्राह्मण, तपस्या और यज्ञ जिनमें दक्षिणा दी जाती है ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**तस्मात् सर्वात्मना राजन् ब्राह्मणान् ब्रह्मवादिनः ।**
**तपस्विनो यज्ञशीलान् गाश्च हन्मो हविर्दुघाः ॥४०॥**

पदच्छेद— तस्मात् सर्व आत्मना राजन् ब्राह्मणान् ब्रह्म वादिनः ।
तपस्विनः यज्ञ शीलान् गाः च हन्मः हविः दुघाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. | इसलिये | तपस्विनः | ६. | तपस्वी |
| सर्व | १२. | सब | यज्ञशीलान् | ७. | याज्ञिक और यज्ञ के लिये |
| आत्मना | १३. | प्रकार से | गाः | ११. | गायों का |
| राजन् | २. | हे भोजराज ! | च | ९. | और |
| ब्राह्मणान् | ५. | ब्राह्मण | हन्मः | १४. | विनाश कर डालेंगे |
| ब्रह्म | ३. | हम वेद | हविः | ८. | हविष्य पदार्थ |
| वादिनः । | ४. | वादी | दुघाः ॥ | १०. | दूध आदि देने वाली |

श्लोकार्थ—इसलिये हे भोजराज ! हम ब्रह्मवादी ब्राह्मण, तपस्वी, याज्ञिक और यज्ञ के लिये हविष्य पदार्थ और दूध आदि देने वाली गायों का सब प्रकार से विनाश कर डालेंगे ॥

# एकचत्वारिंशः श्लोकः

**विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमः शमः ।**
**श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवश्च हरेस्तनूः ॥४१॥**

पदच्छेद— विप्राः गावः च वेदाः च तपः सत्यम् दमः शमः ।
श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवः च हरेः तनूः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विप्राः | १. | ब्राह्मण | श्रद्धा | ८. | श्रद्धा |
| गावः च | २. | गौ और | दया | ९. | दया |
| वेदाः च | ३. | वेद तथा | तितिक्षा | १०. | तितिक्षा |
| तपः | ४. | तपस्या | च | ११. | और |
| सत्यम् | ५. | सत्य | क्रतवः च | १२. | यज्ञ |
| दमः | ६. | इन्द्रिय दमन | हरेः | १३. | विष्णु के ही |
| शमः । | ७. | मनोनिग्रह | तनूः ॥ | १४. | शरीर हैं |

श्लोकार्थ—ब्राह्मण, गौ और वेद तथा तपस्या, सत्य, इन्द्रिय-दमन, मनोनिग्रह, श्रद्धा, दया, तितिक्षा और यज्ञ विष्णु के ही शरीर हैं ॥

# द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**स हि सर्वसुराध्यक्षो ह्यसुरद्विड् गुहाशयः ।**
**तन्मूला देवताः सर्वाः सेश्वराः सचतुर्मुखाः ।**
**अयं वै तद्वधोपायो यदृषीणां विहिंसनम् ॥४२॥**

पदच्छेद— स हि सर्व सुराध्यक्षः हि असुर द्विड् गुहाशयः ।
तत् मूलाः देवताः सर्वाः सेश्वराः स चतुर्मुखाः ।
अयम् वै तत् वध उपायः यत् ऋषीणाम् विहिंसनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स हि | १. | वह विष्णु ही | सेश्वराः | ५. | महादेव और |
| सर्वसुराध्यक्षः | २. | सब देवताओं का स्वामी | स चतुर्मुखाः | ६. | ब्रह्मा सहित |
| हि असुरद्वेषी | ३. | असुरों का द्वेषी है (वह) | अयम् वै | १३. | यही है |
| गुहाशयः । | ४. | गुफा में छिपा रहता है | तत् | ११. | उसे |
| तत् | १०. | वही है | वधउपायः | १२. | मारने का उपाय |
| मूलाः | ९. | जड़ | यत् | १४. | कि |
| देवता | ८. | देवताओं की | ऋषीणाम् | १५. | ऋषियों को |
| सर्वाः | ७. | सारे | विहिंसनम् ॥ | १६. | मार डाला जाय |

श्लोकार्थ—वह विष्णु ही सब देवताओं का स्वामी, असुरों का द्वेषी है । वह गुफा में छिपा रहता है । महादेव और ब्रह्मा सहित सारे देवताओं की जड़ वही है । उसे मारने का उपाय यही है कि ऋषियों मार डाला जाय ॥

# त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एवं दुर्मन्त्रिभिः कंसः सह सम्मन्त्र्य दुर्मतिः ।**
**ब्रह्महिंसां हितं मेने कालपाशावृतोऽसुरः ॥४३॥**

पदच्छेद— एवम् दुर्मन्त्रिभिः कंसः सह सम्मन्त्र्य दुर्मतिः ।
ब्रह्म हिंसाम् हितम् मेने कालपाश आवृतः असुरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | ब्रह्म | १०. | ब्राह्मणों की |
| दुर्मन्त्रिभिः | ७. | दुष्ट मन्त्रियों के | हिंसाम् | ११. | हिंसा करने में ही |
| कंसः | ६. | कंस ने | हितम् मेने | १२. | अपना हित समझा |
| सह | ८. | साथ | कालपाश | २. | काल के फन्दे में |
| सम्मन्त्र्य | ९. | सलाह करके | आवृतः | ३. | फंसे हुये |
| दुर्मतिः । | ४. | दुर्बुद्धि | असुरः ॥ | ५. | असुर |

श्लोकार्थ—इस प्रकार काल के फन्दे में फंसे हुये दुर्बुद्धि असुर कंस ने दुष्ट मन्त्रियों के साथ सलाह करके ब्राह्मणों की हिंसा करने में ही अपना हित समझा ॥

# चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**सन्दिश्य साधुलोकस्य कदने कदनप्रियान् ।**
**कामरूपधरान् दिक्षु दानवान् गृहमाविशत् ॥४४॥**

पदच्छेद— सन्दिश्य साधु लोकस्य कदने कदन प्रियाम् ।
कामरूप धरान् दिक्षु दानवान् गृहम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सन्दिश्य | ९. | आदेश देकर | कामरूप | १. | इच्छानुसार रूप |
| साधु | ६. | सन्त | धरान् | २. | धारण करने वाले |
| लोकस्य | ७. | पुरुषों की | दिक्षु | १०. | उनके इधर-उधर जाने पर |
| कदने | ८. | हिंसा करने का | दानवान् | ५. | राक्षसों को |
| कदन | ३. | हिंसा | गृहम् | ११. | कंस अपने महल में |
| प्रियान् । | ४. | प्रेमी | आविशत् ॥ | १२. | प्रवेश कर गया |

श्लोकार्थ—इच्छानुसार रूप धारण करने वाले, हिंसा प्रेमी राक्षसों को सन्त पुरुषों की हिंसा करने का आदेश देकर उनके इधर-उधर चले जाने पर कंस अपने महल में प्रवेश कर गया ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**ते वै रजःप्रकृतयस्तमसा मूढचेतसः ।**
**सतां विद्वेषमाचेरुरारादागतमृत्यवः ॥४५॥**

पदच्छेद— ते वै रजः प्रकृतयः तमसा मूढ चेतसः ।
सताम् विद्वेषम् आचेरुः आरात् आगतमृत्यवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते वै | १. | निश्चय ही वे असुर | सताम् | १०. | सन्तों से |
| रजः | २. | रजोगुण | विद्वेषम् | ११. | द्वेष |
| प्रकृतयः | ३. | प्रकृति के थे | आचेरुः | १२. | किया |
| तमसा | ४. | तमोगुण के कारण | आरात् | ८. | समीप |
| मूढ | ६. | विवेकहीन हो गया था | आगत | ९. | आने पर उन्होंने |
| चेतसः । | ५. | उनका चित्त | मृत्यवः ॥ | ७. | मृत्यु से |

श्लोकार्थ— निश्चय ही वे असुर रजोगुण प्रकृति के थे । तमोगुण के कारण उनका चित्त विवेकहीन हो गया था । मृत्यु के समीप आने पर उन्होंने सन्तों से द्वेष किया ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**आयुः श्रियं यशो धर्मं लोकानाशिष एव च ।**
**हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥४६॥**

पदच्छेद— आयुः श्रियः यशः धर्मम् लोकान् आशिषः एव च ।
हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसः महत् अतिक्रमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आयुः श्रियः | ४. | आयु-लक्ष्मी | हन्ति | १२. | नष्ट हो जाते हैं |
| यशः धर्मम् | ५. | यश-धर्म | श्रेयांसि | ९. | कल्याण के |
| लोकान् | ६. | लोक-परलोक | सर्वाणि | १०. | सब साधन |
| आशिषः | ८. | विषय भोग (तथा) | पुंसः | १. | जो लोग |
| एव | ११. | ही | महत् | २. | महान् सन्तों का |
| च । | ७. | और | अतिक्रमः ॥ | ३. | अनादर करते हैं (उनकी) |

श्लोकार्थ—जो लोग महान् सन्तों का अनादर करते हैं, उनकी आयु, लक्ष्मी, यश, धर्म, लोक, परलोक और विषय भोग कल्याण के सब साधन नष्ट हो जाते हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
चतुर्थः अध्यायः ॥४॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## पञ्चमः अध्यायः

## प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नन्दस्त्वात्मज उत्पन्ने जाताह्लादो महामनाः ।
आहूय विप्रान् वेदज्ञान् स्नातः शुचिरलङ्कृतः ॥१॥

पदच्छेद— नन्दः तु आत्मजे उत्पन्ने जात आह्लादः महामनाः ।
आहूय विप्रान् वेदज्ञान् स्नातः शुचिः अलङ्कृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्दः | ३. | नन्द बाबा | आहूय | १३. | बुलाया |
| तु | १. | तब | विप्रान् | १२. | ब्राह्मणों को |
| आत्मजे | ४. | पुत्र का | वेदज्ञान् | ११. | वेदों के जानकार |
| उत्पन्ने | ५. | जन्म होने पर | स्नातः | ८. | स्नान करके |
| जात | ७. | युक्त हो गये (उन्होंने) | शुचिः | ९. | पवित्र होकर |
| आह्लादः | ६. | आनन्द से | अलङ्कृतः ॥ | १०. | वस्त्राभूषण धारण किये |
| महामनाः । | २. | मनस्वी एवं उदार | | | |

श्लोकार्थ—तब मनस्वी एवं उदार नन्द बाबा पुत्र का जन्म होने पर आनन्द से युक्त हो गये। उन्होंने स्नान करके वस्त्राभूषण धारण किये। वेदों के जानकार ब्राह्मणों को बुलाया ॥

## द्वितीयः श्लोकः

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं जातकर्मात्मजस्य वै ।
कारयामास विधिवत् पितृदेवार्चनं तथा ॥२॥

पदच्छेद— वाचयित्वा स्वस्त्ययनम् जातकर्म आत्मजस्य वै ।
कारयामास विधिवत् पितृदेव अर्चनम् तथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वाचयित्वा | ४. | वाचन कराकर | कारयामास | ६. | करवाया |
| स्वस्त्ययनम् | ३. | स्वस्ति | विधिवत् | ८. | विधिपूर्वक |
| जातकर्म | ५. | जात कर्म संस्कार | पितृदेव | ९. | देवता और पितरों का |
| आत्मजस्य | २. | अपने पुत्र का | अर्चनम् | १०. | पूजन किया |
| वै । | १. | तब नन्द बाबा ने | तथा ॥ | ७. | तथा |

श्लोकार्थ—तब नन्द बाबा ने अपने पुत्र का स्वस्ति वाचन कराकर जातकर्म संस्कार करवाया। तथा विधिपूर्वक देवता और पितरों का पूजन किया ॥

## तृतीयः श्लोकः

धेनूनां नियुते प्रादाद् विप्रेभ्यः समलङ्कृते ।
तिलाद्रीन् सप्त रत्नौघशातकौम्भाम्बरावृतान् ॥३॥

पदच्छेद— धेनूनाम् नियुते प्रादात् विप्रेभ्यः सम् अलङ्कृते ।
तिल अद्रीन् सप्तरत्नौघ शातकौम्भ अम्बर आवृतान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धेनूनाम् | ५. | गौएँ | तिल | ११. | तिल के |
| नियुते | ४. | दो लाख | अद्रीन् | १२. | पहाड़ दान किये |
| प्रादात् | ६. | दान दीं | सप्तरत्नौघ | ७. | सात रत्नों के समूह और |
| विप्रेभ्यः | १. | उन्होंने ब्राह्मणों को | शातकौम्भ | ८. | सुनहले |
| सम् | २. | भलीभाँति | अम्बर | ९. | वस्त्रों से |
| अलङ्कृते । | ३. | अलङ्कृत करके | आवृतान् ॥ | १०. | ढके हुये |

श्लोकार्थ—उन्होंने ब्राह्मणों को भलीभाँति अलङ्कृत करके दो लाख गौएँ दान दीं । और रत्नों के समूह तथा सात सुनहले वस्त्रों से ढके हुये तिल के पहाड़ दान किये ।

## चतुर्थः श्लोकः

कालेन स्नानशौचाभ्यां संस्कारैस्तपसेज्यया ।
शुध्यन्ति दानैः सन्तुष्ट्या द्रव्याण्यात्माऽऽत्मविद्यया ॥४॥

पदच्छेद— कालेन स्नान शौचाभ्याम् संस्कारैः तपसा इज्यया ।
तुष्यन्ति दानैः सन्तुष्ट्या द्रव्याणि आत्मा आत्म विद्यया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कालेन | १. | समय से | शुध्यन्ति | १०. | शुद्ध होता है |
| स्नान | २. | स्नान | दानैः | ७. | दान से और |
| शौचाभ्याम् | ३. | प्रक्षालन | सन्तुष्ट्या | ८. | संतोष से |
| संस्कारैः | ४. | संस्कार | द्रव्याणि | ९. | द्रव्य |
| तपसा | ५. | तपस्या | आत्मा | ११. | आत्मा की शुद्धि तो |
| इज्यया । | ६. | यज्ञ | आत्म विद्यया ॥ | १२. | आत्मज्ञान से होती है |

श्लोकार्थ—समय से स्नान, प्रक्षालन, संस्कार, तपस्या, यज्ञ, दान से और संस्कार से द्रव्य शुद्ध होता है । आत्मा की शुद्धि तो आत्म-ज्ञान से ही होती है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**सौमङ्गल्यगिरो विप्राः सूतमागधवन्दिनः ।**
**गायकाश्च जगुर्नेदुर्भेर्यो दुन्दुभयो मुहुः ॥५॥**

पदच्छेद— सौमङ्गल्य गिरः विप्राः सूत मागध वन्दिनः ।
गायकाः च जगुः नेदुः भेर्यः दुन्दुभयः मुहुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सौमङ्गल्य | ५. मङ्गलमय | गायकाः | ८. गायक |
| गिरः | ६. आशीर्वाद देने लगे | च | ७. और |
| विप्राः | १. उस समय ब्राह्मण | जगुः | ९. गाने लगे |
| सूत | २. सूत | नेदुः | १३. बजने लगीं |
| मागध | ३. मागध और | भेर्यः | १०. भेरी और |
| वन्दिनः । | ४. बन्दीजन | दुन्दुभयः | ११. दुन्दुभियाँ |
| | | मुहुः ॥ | १२. बार-बार |

श्लोकार्थ—उस समय ब्राह्मण, सूत, मागध और वन्दीजन मङ्गलमय आशीर्वाद देने लगे । और गायक गाने लगे । भेरी और दुन्दुभियाँ बार-बार बजने लगीं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**व्रजः सम्मृष्टसंसिक्तद्वाराजिरगृहान्तरः ।**
**चित्रध्वजपताकास्रक्चैलपल्लवतोरणैः ॥६॥**

पदच्छेद— व्रजः सम्मृष्ट संसिक्त द्वार अजिर गृह अन्तरः ।
चित्र ध्वज पताका स्रक् चैल पल्लव तोरणैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्रजः | १. व्रज मण्डल को | चित्र | ८. उन्हें चित्र-विचित्र |
| सम्मृष्ट | ६. झाड़-बुहार कर | ध्वज | ९. ध्वजा |
| संसिक्त | ७. जल का छिड़काव किया गया था | पताका | १०. पताका |
| द्वार | ३. द्वार | स्रक् | ११. पुष्पों की मालाओं |
| अजिर | ४. आँगन और | चैल | १२. रंग बिरंगे वस्त्रों और |
| गृह | २. सभी घरों के | पल्लव | १३. पल्लवों के |
| अन्तरः । | ५. भीतरी भाग | तोरणैः ॥ | १४. बन्दन वारों से सजाया गया |

श्लोकार्थ—व्रजमण्डल के सभी घरों के द्वार, आँगन और भीतरी भाग झाड़ बुहार कर जल का छिड़काव किया गया था । उन्हें चित्र-विचित्र, ध्वजा, पताका, पुष्पों की मालाओं, रंग-बिरंगे वस्त्रों और पल्लवों के बन्दन वारों से सजाया गया था ॥

## सप्तमः श्लोकः

**गावो वृषा वत्सतरा हरिद्रातैलरूषिताः ।**
**विचित्रधातुबर्हस्रग्वस्त्रकाञ्चनमालिनः ॥७॥**

पदच्छेद— गावः वृषाः वत्सतराः हरिद्रा तैल रूषिताः ।
विचित्र धातु बर्ह स्रक् वस्त्र काञ्चन मालिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गावः | १. | गाय | विचित्र | ७. | उन्हें गेरू आदि रंगीन |
| वृषाः | २. | बैल और | धातु बर्ह | ८. | धातुयें, मोर पंख |
| वत्सतराः | ३. | बछड़ों के अङ्गों में | स्रक् | ९. | पुष्पों के हार |
| हरिद्रा | ४. | हल्दी | वस्त्र | १०. | सुन्दर वस्त्र और |
| तैल | ५. | तेल का | काञ्चन | ११. | सोने की |
| रूषिताः । | ६. | लेप किया गया | मालिनः ॥ | १२. | जंजीरों से सजाया गया |

श्लोकार्थ—गाय, बैल और बछड़ों के अङ्गों में हल्दी, तेल का लेप किया गया । उन्हें गेरू आदि रंगीन धातुयें, मोर पंख, पुष्पों के हार, सुन्दर वस्त्र और सोने की जंजीरों से सजाया गया था ॥

## अष्टमः श्लोकः

**महार्हवस्त्राभरणकञ्चुकोष्णीषभूषिताः ।**
**गोपाः समाययू राजन् नानोपायनपाणयः ॥८॥**

पदच्छेद— महार्ह वस्त्र आभरण कञ्चुक उष्णीष भूषिताः ।
गोपाः समाययुः राजन् नाना उपायन पाणयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महार्ह | ३. | बहुमूल्य | गोपाः | २. | सभी ग्वाल |
| वस्त्र | ४. | वस्त्र | समाययुः | १२. | नन्द बाबा के घर आये |
| आभरण | ५. | गहने | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| कञ्चुक | ६. | अंगरखे और | नाना | ११. | बहुत सी सामग्रियों को लेकर |
| उष्णीष | ७. | पगड़ियों से | उपायन | १०. | भेंट की |
| भूषिताः । | ८. | सुसज्जित होकर | पाणयः ॥ | ९. | अपने हाथों में |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सभी ग्वाल बहुमूल्य वस्त्र, गहने अंगरखे और पगड़ियों से सुसज्जित होकर अपने हाथों में भेंट की बहुत सी सामग्रियों को लेकर नन्द बाबा के घर आये ॥

## नवमः श्लोकः

**गोप्यश्चाकर्ण्य मुदिता यशोदायाः सुतोद्भवम् ।**
**आत्मानं भूषयाञ्चक्रुर्वस्त्राकल्पाञ्जनादिभिः ॥९॥**

पदच्छेद— गोप्यः च आकर्ण्य मुदिताः यशोदायाः सुत उद्भवम् ।
आत्मानम् भूषयाञ्चक्रुः वस्त्र आकल्प अञ्जन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | ४. | गोपियों को | आत्मानम् | १२. | अपना |
| च | ७. | और | भूषयाम् | १३. | शृंगार |
| आकर्ण्य | ५. | यह सुनकर | चक्रुः | १४. | किया |
| मुदिताः | ६. | बड़ा आनन्द हुआ | वस्त्र | ८. | उन्होंने वस्त्रों |
| यशोदायाः | १. | यशोदा जी के | आकल्प | ९. | आभूषण |
| सुत | २. | पुत्र | अञ्जन | १०. | अञ्जन |
| उद्भवम् । | ३. | हुआ है | आदिभिः ॥ | ११. | आदि से |

श्लोकार्थ—यशोदा जी के पुत्र हुआ है। गोपियों को यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। और उन्होंने वस्त्रों, आभूषण, अञ्जन आदि से अपना शृंगार किया ॥

## दशमः श्लोकः

**नवकुङ्कुमकिञ्जल्कमुखपङ्कजभूतयः ।**
**बलिभिस्त्वरितं जग्मुः पृथुश्रोण्यश्चलत्कुचाः ॥१०॥**

पदच्छेद— नव कुङ्कुम किञ्जल्क मुख पङ्कज भूतयः ।
बलिभिः त्वरितम् जग्मुः पृथुश्रोण्यः चलत् कुचाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नव | १. | नवीन | बलिभिः | १०. | भेंट सामग्री लेकर |
| कुङ्कुम | २. | कुङ्कुम और | त्वरितम् | ११. | जल्दी-जल्दी |
| किञ्जल्क | ३. | कमल की केसर से युक्त उनके | जग्मुः | १२. | चल पड़ीं |
| मुख | ४. | मुख | पृथुश्रोण्यः | ७. | बड़े बड़े नितम्बों तथा |
| पङ्कज | ५. | कमल | चलत् | ८. | हिलते हुये |
| भूतयः । | ६. | बड़े ही सुन्दर थे | कुचाः ॥ | ९. | पयोधर वाली वे गोपियाँ |

श्लोकार्थ—नवीन कुङ्कुम और कमल की केसर से युक्त उनके मुख कमल बड़े ही सुन्दर थे। बड़े बड़े नितम्बों तथा हिलते हुये पयोधर वाली वे गोपियाँ भेंट सामग्री लेकर जल्दी जल्दी चल पड़ीं ॥

## एकादशः श्लोकः

**गोप्यः सुमृष्टमणिकुण्डलनिष्ककण्ठ्यश्चित्राम्बराः पथि शिखाच्युतमाल्यवर्षाः।**
**नन्दालयं सवलया व्रजतीर्विरेजुर्व्यालोलकुण्डलपयोधरहारशोभाः ॥११॥**

पदच्छेद—गोप्यः सुमृष्ट मणिकुण्डल निष्ककण्ठ्यः चित्र अम्बराः पथि शिखा च्युत माल्यवर्षाः ।
नन्द आलयम् सवलयाः व्रजतीः विरेजुः व्यालोल कुण्डल पयोधर हार शोभाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | १. | गोपियों के कानों में | नन्द आलयम् | ९. | नन्द बाबा के घर |
| सुमृष्ट | २. | चमकती हुई | सवलयाः | ११. | हाथों में कंगन |
| मणिकुण्डल | ३. | मणियों के कुण्डल थे | व्रजतीः | १०. | जाती हुई उनके |
| निष्ककण्ठ्यः | ४. | गले में सोने का हार था | विरेजुः | १६. | बड़ी अनूठी जान पड़ती थीं |
| चित्र अम्बराः | ५. | वे रंग बिरंगे वस्त्र पहने थीं | व्यालोल | १२. | कानों में हिलते हुये |
| पथि शिखा | ६. | मार्ग में उनकी चोटियों से | कुण्डल | १३. | कुण्डल तथा |
| च्युत | ७. | गिरते हुये | पयोधर | १४. | पयोधर और गले में |
| माल्य वर्षाः । | ८. | फूल बरसते जा रहे थे | हार शोभाः ॥ | १५. | हार की शोभा |

श्लोकार्थ - गोपियों के कानों में चमकती हुई मणियों के कुण्डल थे । गले में सोने का हार था । वे रंग बिरंगे वस्त्र पहने थीं । मार्ग में उनकी चोटियों से गिरते हुदे फूल बरसते जा रहे थे । नन्द बाबा के घर जाती हुई उनके हाथों में कंगन, कानों में हिलते हुये कुण्डल तथा पयोधर और गले में हार की शोभा बड़ी अनूठी जान पड़ती थी ॥

## द्वादशः श्लोकः

**तां आशिषः प्रयुञ्जानाश्चिरं पाहीति बालके ।**
**हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिञ्चन्त्यो जनमुज्जगुः ॥१२॥**

पदच्छेद— ताः आशिषः प्रयुञ्जानाः चिरम् पाहि इति बालके ।
हरिद्राः चूर्ण तैल अद्भिः सिञ्चन्त्यः जनम् उत् जगुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | १. | वे गोपियाँ | हरिद्रा | ९. | हल्दी के |
| आशिषः | ६. | आशीर्वाद | चूर्ण | १०. | चूर्ण और |
| प्रयुञ्जानाः | ७. | देती हुई | तैल | ११. | तैल से युक्त |
| चिरम् | ३. | चिर | अद्भिः | १२. | जल |
| पाहि | ४. | जीवी हो वे | सिञ्चन्त्यः | १३. | छिड़क देती और |
| इति | ५. | इस प्रकार | जनम् | ८. | लोगों पर |
| बालके । | २. | नवजात शिशु को | उत् जगुः ॥ | १४. | उच्च स्वर से मङ्गलगान करती थीं |

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ नवजात शिशु को चिरजीवी हो, इस प्रकार आशीर्वाद देती हुई लोगों पर हल्दी के चूर्ण और तैल से युक्त जल छिड़क देतीं और उच्च स्वर से मङ्गल गान करती थीं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सव ।**
**कृष्णे विश्वेश्वरेऽनन्ते नन्दस्य व्रजमागते ॥१३॥**

पदच्छेद— अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे ।
कृष्णे विश्वेश्वरे अनन्ते नन्दस्य व्रजम् आगते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **अवाद्यन्त** | १०. बजाये जाने लगे | विश्वेश्वरे | १. समस्त जगत् के स्वामी |
| **विचित्राणि** | ८. विचित्र प्रकार के | अनन्ते | २. अनन्त |
| **वादित्राणि** | ९. मङ्गलमय बाजे | नन्दस्य | ४. नन्द बाबा के |
| **महोत्सवे ।** | ७. उनके महोत्सव में | व्रजम् | ५. व्रज में |
| **कृष्णे** | ३. श्रीकृष्ण के | आगते ॥ | ६. प्रकट होने पर |

श्लोकार्थ—समस्त जगत् के स्वामी अनन्त श्रीकृष्ण के नन्द बाबा के व्रज में प्रकट होने पर उनके महोत्सव में विचित्र प्रकार के मङ्गलमय बाजे बजाये जाने लगे ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**गोपाः परस्परं हृष्टा दधिक्षीरघृताम्बुभिः ।**
**आसिञ्चन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः ॥१४॥**

पदच्छेद— गोपाः परस्परम् हृष्टाः दधिक्षीरघृत अम्बुभिः ।
आसिञ्चन्तः विलिम्पन्तः नवनीतैः च चिक्षिपुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **गोपाः** | २. गोपगण | **अम्बुभिः ।** | ७. जल |
| **परस्परम्** | ३. एक दूसरे पर | **आसिञ्चन्तः** | ८. उडेलने लगे |
| **हृष्टाः** | १. आनन्द से मतवाले | **विलिम्पन्तः** | १०. मलते हुये ऊपर |
| **दधि** | ४. दधि | **नवनीतैः** | ११. मक्खन |
| **क्षीर** | ५. दूध | **च** | ९. और |
| **घृत** | ६. घी और | **चिक्षिपुः ॥** | १२. फेंकने लगे |

श्लोकार्थ—आनन्द से मत वाले गोपगण एक दूसरे पर दधि, दूध, घी और जल उडेलने और मलते हुये ऊपर मक्खन फेंकने लगे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**नन्दो महामनास्तेभ्यो वासोऽलङ्कारगोधनम् ।**
**सूतमागधवन्दिभ्यो येऽन्ये विद्योपजीविनः ॥१५॥**

पदच्छेद— नन्दः महामनाः तेभ्यः वासः अलङ्कार गोधनम् ।
सूतमागध वन्दिभ्यः ये अन्ये विद्याउपजीविनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नन्दः | २. नन्द बाबा ने | सूतमागध | ७. सूत-मागध |
| महामनाः | १. परम उदार | वन्दिभ्यः | ८. बन्दिजन तथा |
| तेभ्यः | ३. उन गोपों को | ये | ६. जो |
| वासः | ४. वस्त्र | अन्ये | १०. और भी |
| अलङ्कार | ५. आभूषण और | विद्या | ११. नृत्यवाद्य आदि विद्याओं से |
| गोधनम् । | ६. गौएँ प्रदान कीं | उपजीविनः ॥ | १२. जीवन निर्वाह करने वाले थे उन्हें भी वस्तुयें दीं |

श्लोकार्थ—परम उदार नन्द बाबा ने उन गोपों को वस्त्र, आभूषण और गौएँ प्रदान कीं । सूत, मागध, बन्दिजन तथा जो और भी नृत्यवाद्य आदि विद्याओं से जीवन निर्वाह करने वाले थे उन्हें भी वस्तुयें दीं ॥

## षोडशः श्लोकः

**तैस्तैः कामैरदीनात्मा यथोचितमपूजयत् ।**
**विष्णोराराधनार्थाय स्वपुत्रस्योदयाय च ॥१६॥**

पदच्छेद— तैः तैः कामैः अदीन आत्मा यथा उचितम् अपूजयत् ।
विष्णोः आराधन अर्थाय स्व पुत्रस्य उदयाय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तैः तैः | ७. उन-उनकी | विष्णोः | १. भगवान् विष्णु की |
| कामैः | ८. कामना के अनुसार | आराधन | २. आराधना के |
| अदीनात्मा | ९. प्रसन्नतापूर्वक दान देकर | अर्थाय | ३. लिये |
| यथा | १०. यथा | स्वपुत्रस्य | ५. अपने पुत्र के |
| उचितम् | ११. विधि | उदयाय | ६. अभ्युदय के लिये |
| अपूजयत् । | १२. सत्कार किया | च ॥ | ४. और |

श्लोकार्थ—भगवान् विष्णु की आराधना के लिये और अपने पुत्र के अभ्युदय के लिये उन उनकी कामना के अनुसार प्रसन्नतापूर्वक दान देकर यथा विधि सत्कार किया ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**रोहिणी च महाभागा नन्दगोपाभिनन्दिता ।**
**व्यचरद् दिव्यवासःस्रक्कण्ठाभरणभूषिता ॥१७॥**

पदच्छेद — रोहिणी च महाभागा नन्द गोप अभिनन्दिता ।
व्यचरत् दिव्य वासः स्रक् कण्ठ आभरण भूषिता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **रोहिणी** | ५. | रोहिणी जी | व्यचरत् | १०. | विचर रही थी |
| **च** | १. | और | दिव्यवासः | ६. | दिव्यवस्त्र |
| **महाभागा** | ४. | परम सौभाग्यवती | स्रक्कण्ठ | ७. | माला और गले में |
| **नन्दगोप** | २. | नन्द बाबा के | आभरण | ८. | नाना प्रकार के आभूषणों से |
| **अभिनन्दिता ।** | ३. | अभिनन्दन करने पर | भूषिता ॥ | ९. | सुसज्जित होकर |

श्लोकार्थ—और नन्द बाबा के अभिनन्दन करने पर परम सौभाग्यवती रोहिणी जी दिव्य वस्त्र, माला और गले में नाना प्रकार के आभूषण से सुसज्जित होकर विचर रही थीं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**तत आरभ्य नन्दस्य व्रजः सर्वसमृद्धिमान् ।**
**हरेर्निवासात्मगुणै रमाक्रीडमभून्नृप ॥१८॥**

पदच्छेद — ततः आरभ्य नन्दस्य व्रजः सर्व समृद्धिमान् ।
हरेः निवास आत्मगुणैः रमा।क्रीडम् अभूत् नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **ततः** | २. | तभी से | हरेः निवास | ८. | भगवान् श्रीकृष्ण के निवास |
| **आरभ्य** | ३. | लेकर | आत्मगुणैः | ९. | अपने स्वाभाविक गुणों के कारण |
| **नन्दस्य** | ४. | नन्द बाबा का | रमा | १०. | वह लक्ष्मी जी का |
| **व्रजः** | ५. | व्रज | क्रीडम् | ११. | क्रीडा-स्थल |
| **सर्व** | ६. | सब प्रकार की | अभूत् | १२. | बन गया |
| **समृद्धिमान् ।** | ७. | ऋद्धि-सिद्धियों से युक्त हो गया | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तभी से लेकर नन्द बाबा का व्रज सब प्रकार की ऋद्धि-सिद्धियों से युक्त हो गया । भगवान् श्रीकृष्ण के निवास, अपने स्वाभाविक गुणों के कारण वह लक्ष्मी जी का क्रीडा-स्थल बन गया ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**गोपान् गोकुलरक्षायां निरूप्य मथुरां गतः ।**
**नन्दः कंसस्य वार्षिक्यं करं दातुं कुरूद्वह ॥१६॥**

पदच्छेद— गोपान् गोकुल रक्षायाम् निरूप्य मथुराम् गतः ।
नन्दः कंसस्य वार्षिक्यम् करम् दातुम् कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोपान् | ५. | गोपों को | नन्दः | २. | नन्द बाबा |
| गोकुल | ३. | गोकुल को | कंसस्य | ७. | स्वयं कंस का |
| रक्षायाम् | ४. | रक्षा का भार | वार्षिक्यम् | ८. | वार्षिक |
| निरूप्य | ६. | सौंप कर | करम् | ६. | कर |
| मथुराम् | ११. | मथुरा | दातुम् | १०. | देने के लिये |
| गतः । | १२. | चले गये | कुरूद्वह ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! नन्द बाबा गोकुल की रक्षा का भार गोपों को सौंपकर स्वयं कंस का वार्षिक कर देने के लिये मथुरा चले गये ॥

## विंशः श्लोकः

**वसुदेव उपश्रुत्य भ्रातरं नन्दमागतम् ।**
**ज्ञात्वा दत्तकरं राज्ञे ययौ तदवमोचनम् ॥२०॥**

पदच्छेद— वसुदेवः उपश्रुत्य भ्रातरम् नन्दम् आगतम् ।
ज्ञात्वा दत्तकरम् राज्ञे ययौ तद् अवमोचनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वसुदेवः | १. | वसुदेवजी | ज्ञात्वा | ८. | जानकर |
| उपश्रुत्य | ५. | सुनकर (तथा) | दत्तकरम् | ७. | कर दिया हुआ |
| भ्रातरम् | २. | अपने भाई | राज्ञे | ६. | राजा को |
| नन्दम् | ३. | नन्द जी को | ययौ | १०. | गये |
| आगतम् । | ४. | आया हुआ | तद्अवमोचनम् ॥ | ६. | उनके निवास स्थान पर |

श्लोकार्थ—वसुदेव जो अपने भाई नन्द जी को आया हुआ सुनकर तथा राजा को कर दिया हुआ जानकर उनके निवास स्थान पर गये ॥

## एकविंशः श्लोकः

**तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय देहः प्राणमिवागतम् ।**
**प्रीतः प्रियतमं दोर्भ्यां सस्वजे प्रेमविह्वलः ॥२१॥**

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा सहसा उत्थाय देहः प्राणम् इव आगतम् ।
प्रीतः प्रियतमम् दोर्भ्याम् सस्वजे प्रेम विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | वसुदेव जी को | आगतम् । | ८. | आ गये हों |
| दृष्ट्वा | २. | देखते ही | प्रीतः | ११. | बड़े प्रेम से |
| सहसा | ३. | नन्द जी सहसा | प्रियतमम् | १२. | अतिशय प्रिय वसुदेव जी को |
| उत्थाय | ४. | उठ खड़े हो गये | दोर्भ्याम् | १३. | दोनों हाथों से पकड़कर |
| देहः | ६. | मृतक शरीर में | सस्वजे | १४. | हृदय से लगा लिया |
| प्राणम् | ७. | प्राण | प्रेम | ९. | उन्होंने प्रेम से |
| इव । | ५. | मानों उनके | विह्वलः ॥ | १०. | विह्वल होकर |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी को देखते ही नन्द जी सहसा उठकर खड़े हो गये, मानों उनके मृतक शरीर में प्राण आ गये हों । उन्होंने प्रेम विह्वल होकर बड़े प्रेम से अतिशय प्रिय वसुदेव जी को दोनों हाथों से पकड़कर हृदय से लगा लिया

## द्वाविंशः श्लोकः

**पूजितः सुखमासीनः पृष्ट्वानामयमादृतः ।**
**प्रसक्तधीः स्वात्मजयोरिदमाह विशाम्पते ॥२२॥**

पदच्छेद— पूजितः सुखम् आसीनः पृष्ट्वा अनामयम् आदृतः ।
प्रसक्त धीः स्व आत्मजयोः इदम् आह विशाम्पते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पूजितः | ५. | पूजित होने पर वे | प्रसक्त | १०. | लगा हुआ था |
| सुखम् | ६. | सुखपूर्वक | धीः स्व | ८. | उनका चित्त अपने |
| आसीन | ७. | बैठ गये | आत्मजयोः | ९. | पुत्रों में |
| पृष्ट्वा | ४. | पूछकर | इदम् | ११. | उन्होंने इस प्रकार |
| अनामयम् | ३. | कुशल | आह | १२. | कहना प्रारम्भ किया |
| आदृतः । | २. | आदर पूर्वक | विशाम्पते ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ–हे परीक्षित् ! आदर पूर्वक कुशल पूछकर पूजित होने पर वे सुख पूर्वक बैठ गये । उनका चित्त अपने पुत्रों में लगा हुआ था । उन्होंने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**दिष्ट्याभ्रातः प्रवयस इदानीमप्रजस्य ते ।**
**प्रजशाया निवृत्तस्य प्रजा यत् समपद्यत ॥२३॥**

पदच्छेद— दिष्ट्या भ्रातः प्रवयसः इदानीम् अप्रजस्य ते ।
प्रजाशायाः निवृत्तस्य प्रजा यत् समपद्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दिष्ट्या | २. सौभाग्य की बात है | प्रजाशाया | ८. सन्तान प्राप्ति की आशा |
| भ्रातः | १. हे भाई ! | निवृत्तस्य | ९. समाप्त हो जाने पर |
| प्रवयस | ७. अवस्था ढल चुकी थी पर | प्रजा | १०. तुम्हें सन्तान |
| इदानीम् | ४. इस समय | यत् | ३. क्योंकि |
| अप्रजस्य | ५. सन्तान रहित | समपद्यत ॥ | ११. प्राप्त हो गयी |
| ते । | ६. तुम्हारी तो | | |

श्लोकार्थ—हे भाई ! सौभाग्य की बात है । क्योंकि इस समय सन्तान रहित तुम्हारी तो अवस्था ढल चुकी थी । पर सन्तान प्राप्ति की आशा समाप्त हो जाने पर भी तुम्हें सन्तान प्राप्त हो गयी ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**दिष्ट्या संचारचक्रेऽस्मिन् वर्तमानः पुनर्भवः ।**
**उपलब्धो भवानद्य दुर्लभं प्रियदर्शनम् ॥२४॥**

पदच्छेद— दिष्ट्या संसार चक्रे अस्मिन् वर्तमानः पुनः भवः ।
उपलब्धः भवान् अद्य दुर्लभम् प्रिय दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दिष्टया | ३. भाग्य से ही | उपलब्धः | ६. प्राप्त हुये हैं (क्योंकि) |
| संसार चक्रे | २. संसार चक्र में | भवान् | ४. आप |
| अस्मिन् | १. इस | अद्य | ५. आज हमें |
| वर्तमानः | १०. यह तो | दुर्लभम् | ९. बड़ा दुर्लभ होता है |
| पुनः | ११. पुन | प्रिय | ७. प्रियजनों का |
| भवः । | १२. जन्म के समान है | दर्शनम् ॥ | ८. मिलना |

श्लोकार्थ—इस संसार चक्र में भाग्य से ही आप आज हमें प्राप्त हुये हैं । क्योंकि प्रियजनों का मिलना बड़ा दुर्लभ होता है । यह तो पुनर्जन्म के समान है ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**नैकत्र प्रियसंवासः सुहृदां चित्रकर्मणाम् ।**
**ओघेन व्यूह्यमानानां प्लवानां स्रोतसो यथा ॥२५॥**

पदच्छेद— न एकत्र प्रिय संवासः सुहृदाम् चित्र कर्मणाम् ।
ओघेन व्यूह्यमानानाम् प्लवानाम् स्रोतसः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १२. | नहीं हो पाता है | कर्मणाम् । | ११. | कर्मों के कारण |
| एकत्र | ८. | एक स्थान पर | ओघेन | २. | प्रवाह में |
| प्रिय | ६. | प्रियजनों और | व्यूह्यमानानाम् | ३. | बहते हुये |
| संवासः | ९. | रहना | प्लवानाम् | ४. | बेड़े और तिनकों के |
| सुहृदाम् | ७. | मित्र जनों का | स्रोतसः | १. | नदी के प्रबल |
| चित्र | १०. | भिन्न-भिन्न | यथा ॥ | ५. | समान |

श्लोकार्थ—नदी के प्रबल प्रवाह में बहते हुये बेड़े और तिनकों के समान प्रियजनों और मित्रजनों का एक स्थान पर रहना भिन्न भिन्न कर्मों के कारण नहीं होता है ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**कच्चित् पशव्यं निरुजं भूर्यम्बुतृणवीरुधम् ।**
**बृहद्वनं तदधुना यत्रास्से त्वं सुहृद्वृतः ॥२६॥**

पदच्छेद— कच्चित् पशव्यम् निरुजम् भूरि अम्बु-तृण वीरुधम् ।
बृहत् वनम् तत् अधुना यत्र आस्से त्वम् सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कच्चित् | ११. | क्या यह | बृहत् वनम् | ६. | बड़े वन में |
| पशव्यम् | ७. | पशुओं के लिये | तत् | ५. | उस |
| निरुजम् | १२. | रोगों से बचा है | अधुना | ४. | इस समय |
| भूरि | १०. | पर्याप्त मात्रा में हैं | यत्र आस्से | ३. | जहाँ निवास करते हो |
| अम्बु-तृण | ८. | जल-घास और | त्वम् | १. | तुम |
| वीरुधम् । | ९. | लता पत्रादि तो | सुहृद्वृतः ॥ | २. | भाई-बन्धुओं के साथ |

श्लोकार्थ—तुम भाई बन्धुओं के साथ जहाँ निवास करते हो । इस समय उस बड़े वन में पशुओं के लिये जल-घास और लता पत्रादि तो पर्याप्त मात्रा में हैं । क्या यह रोगों से तो बचा है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**भ्रातर्मम सुतः कच्चिन्मात्रा सह भवद्व्रजे ।**
**तातं भवन्तं मन्वानो भवद्भ्यामुपलालितः ॥२७॥**

पदच्छेद— प्रातः मम सुतः कच्चित् मात्रा सह भवत् व्रजे ।
तातम् भवन्तम् मन्वानः भवद्भ्याम् उपलालितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भ्रातः | १. | हे भाई ! | व्रजे । | ८. | व्रज में रहता है और |
| मम | ५. | मेरा जो | तातम् | १२. | माता पिता |
| सुतः | ६. | लड़का | भवन्तम् | ११. | आपको ही अपना |
| कच्चित् | २. | क्या | मन्वानः | १३. | मानता है वही ठीक तो है |
| मात्रा | ३. | माँ के | भवद्भ्याम् | ९. | आपके द्वारा |
| सह | ४. | साथ | उपलालितः ॥ | १०. | पालन पोषण किये जाने के कारण |
| भवत् | ७. | आपके | | | |

श्लोकार्थ—हे भाई ! क्या माँ के साथ मेरा जो पुत्र आपके व्रज में रहता है । और आपके द्वारा पालन-पोषण किये जाने के कारण आपको ही अपना माता पिता मानता है । वह ठीक तो है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**पुंसस्त्रिवर्गो विहितः सुहृदो ह्यनुभावितः ।**
**न तेषु क्लिश्यमानेषु त्रिवर्गोऽर्थाय कल्पते ॥२८॥**

पदच्छेद— पुंसः त्रिवर्गः विहितः सुहृदः हि अनुभावितः ।
न तेषु क्लिश्य मानेषु त्रिवर्गः अर्थाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुंसः | ४. | मनुष्य के लिए | तेषु | ६. | उन (स्वजनों को) |
| त्रिवर्गः | ३. | धर्म, अर्थ, काम, ही | क्लिश्य | ७. | कष्ट |
| विहितः | ४. | शास्त्र विहित हैं | मानेषु | ८. | देने वाले |
| सुहृदः हि | १. | स्वजनों को | त्रिवर्गः | ९. | धर्म, अर्थ, काम |
| अनुभावितः । | २. | सुख देने वाले | अर्थाय | १०. | हितकारी |
| न | ११. | नहीं | कल्पते ॥ | १२. | माने गये हैं |

श्लोकार्थ—स्वजनों को सुख देने वाले धर्म, अर्थ, काम ही शास्त्र विहित हैं ।उन स्वजनों को कष्ट देने वाले धर्म, अर्थ और काम हितकारी नहीं माने गये हैं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

नन्द उवाच— अहो ते देवकीपुत्राः कंसेन बहवो हताः ।
एकावशिष्टावरजा कन्या सापि दिवं गता ॥२९॥

पदच्छेद— अहो ते देवकी पुत्राः कंसेन बहवः हताः ।
एका अवशिष्टा अवरजा कन्या सा अपि दिवं गता ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो | १. हे भाई | एका | ९. एक |
| ते | ४. आपके | अवशिष्टा | ११. बची थी |
| देवकी | ३. देवकी के गर्भ से उत्पन्न | अवरजा | ८. सबसे छोटी |
| पुत्राः | ६. पुत्रों को | कन्या | १०. कन्या |
| कंसेन | २. कंस ने | सः | १२. वह |
| बहवः | ५. बहुत से | अपि | १३. भी |
| हताः । | ७. मार डाला | दिवंगता ॥ | १४. स्वर्ग सिधार गई |

श्लोकार्थ—हे भाई ! कंस ने देवकी के गर्भ से उत्पन्न आपके बहुत से पुत्रों को मार डाला । सबसे छोटी एक कन्या बची थी । वह भी स्वर्ग सिधार गई ॥

## त्रिंशः श्लोकः

नूनं ह्यदृष्टनिष्ठोऽयमदृष्टपरमो जनः ।
अदृष्टमात्मनस्तत्त्वं यो वेद न स मुह्यति ॥३०॥

पदच्छेद— नूनम् हि अदृष्ट निष्ठः अयम् अदृष्टपरमः जनः ।
अदृष्टम् आत्मनः तत्त्वम् यः वेद सः मुह्यति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नूनम् हि | १. निश्चय ही | अदृष्टम् | ९. भाग्य को ही |
| अदृष्ट | ३. भाग्य पर | आत्मनः | १०. जीवन का |
| निष्ठः | ४. अवलम्बित है | तत्त्वम् | ११. कारण |
| अयम् | २. यह प्राणी | यः | ८. जो प्राणी |
| अदृष्ट | ५. भाग्य ही | वेद | १२. समझता है |
| परमः | ७. एकमात्र आश्रय है | न | १५. नहीं होता है |
| जनः । | ६. प्राणी का | सः | १३. वह |
| | | मुह्यति ॥ | १४. मोहित |

श्लोकार्थ—निश्चय ही यह प्राणी भाग्य पर अवलम्बित है । भाग्य ही प्राणी का एक मात्र आश्रय है । जो प्राणी भाग्य को ही जीवन का कारण समझता है ,वह मोहित नहीं होता है ॥

## त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

वसुदेव उवाच— करो वै वार्षिको दत्तो राज्ञे दृष्टा वयं च वः।
नेह स्थेयं बहुतिथं सन्त्युत्पाताश्च गोकुले ॥३१॥

पदच्छेद— करः वै वार्षिकः दत्तः राज्ञे दृष्टा वयम् च वः।
न इह स्थेयम् बहुतिथम् सन्ति उत्पाताः च गोकुले ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| करः | ४. कर | न | १३. नहीं |
| वै | १. आपने निश्चय ही | इह | ११. अब यहाँ आपको |
| वार्षिकः | ३. वार्षिक | स्थेयम् | १४. ठहरना चाहिये (क्योंकि) |
| दत्तः | ५. चुका दिया | बहुतिथम् | १२. बहुत समय तक |
| राज्ञे | २. राजा का | सन्ति | १७. हो रहे हैं |
| दृष्टाः | ९. दर्शन भी कर लिये | उत्पाताः | १६. बड़े-बड़े उपद्रव |
| वयम् | ७. हम लोगों ने | च | १०. और |
| च | ६. और | गोकुले ॥ | १५. गोकुल में |
| वः। | ८. आपके | | |

श्लोकार्थ—आपने निश्चय ही राजा का वार्षिक कर चुका दिया। और हम लोगों ने आपके दर्शन भी कर लिये। और अब आपको बहुत समय तक नहीं ठहरना चाहिये। क्योंकि गोकुल में बड़े-बड़े उपद्रव हो रहे हैं ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति नन्दादयो गोपाः प्रोक्तास्ते शौरिणा ययुः।
अनोभिरनडुद्युक्तैस्तमनुज्ञाप्य गोकुलम् ॥३२॥

पदच्छेद— इति नन्द आदयः गोपाः प्रोक्ताः ते शौरिणा ययुः।
अनोभिः अनडुत् युक्तैः तम् अनुज्ञाप्य गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | २. इस प्रकार | अनोभिः | ८. बैलों से जुते हुये |
| नन्द आदयः | ४. नन्द आदि | अनडुत् | ९. छकड़ों पर |
| गोपाः | ५. ग्वालवाल | युक्तैः | १०. सवार होकर |
| प्रोक्ताः ते | ३. कहने पर वे | तम् | ६. उनसे |
| शौरिणा | १. वसुदेव जी के | अनुज्ञाप्य | ७. आज्ञा लेकर |
| ययुः। | १२. चल पड़े | गोकुलम् ॥ | ११. गोकुल की ओर |

श्लोकार्थ—वसुदेव जी के इस प्रकार कहने पर वे नन्द आदि ग्वाल-बाल उनसे आज्ञा लेकर बैलों से जुते हुये छकड़ों पर सवार होकर गोकुल की ओर चल पड़े ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे
पूर्वार्धे नन्दवसुदेवसङ्गमो नाम पञ्चमः अध्यायः ॥५॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### षष्ठः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—नन्दः पथि वचः शौरेर्न मृषेति विचिन्तयन् ।**
**हरिं जगाम शरणमुत्पातागमशङ्कितः ॥१॥**

पदच्छेद— नन्दः पथि वचः शौरेर्न मृषेति विचिन्तयन् ।
हरिम् जगाम शरणम् उत्पात आगम शङ्कितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **नन्दः** | १. | नन्द बाबा | हरिम् | १०. | भगवान् श्रीहरि की |
| **पथि** | २. | रास्ते में ही | जगाम | १२. | चले गये |
| **वचः** | ४. | वचन | शरणम् | ११. | शरण में |
| **शौरेर्न** | ३. | वसुदेव जी के नहीं हो सकते | उत्पात | ७. | उत्पात |
| **मृषेति** | ५. | मिथ्या | आगम | ८. | होने की |
| **विचिन्तयन् ।** | ६. | ऐसा सोचते हुये | शङ्कितः ॥ | ९. | शङ्का करते हुये |

श्लोकार्थ—नन्द बाबा रास्ते में ही वसुदेव जी के वचन मिथ्या नहीं हो सकते ऐसा सोचते हुये उत्पात होने की शङ्का करते हुये भगवान् श्री हरि की शरण में चले गये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बालघातिनी ।**
**शिशूंश्चचार निघ्नन्ती पुरग्रामव्रजादिषु ॥२॥**

पदच्छेद - कंसेन प्रहिता घोरा पूतना बाल घातिनी ।
शिशून् चचार निघ्नन्ती पुर ग्राम व्रज आदिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कंसेन** | १. | कंस के द्वारा | शिशून् | ७. | बच्चों को |
| **प्रहिता** | २. | भेजी गई | चचार | १२. | घूमा करती थी |
| **घोरा** | ५. | अति भयंकर | निघ्नन्ती | ८. | मारती हुई |
| **पूतना** | ६. | पूतना नाम की राक्षसी | पुर ग्राम | ९. | नगर-ग्राम |
| **बाल** | ३. | बच्चों को | व्रज | १०. | अहीरों की बस्तियों |
| **घातिनी ।** | ४. | मारने वाली | आदिषु ॥ | ११. | आदि में |

श्लोकार्थ—कंस के द्वारा भेजी गई बच्चों को मारने वाली पूतना नाम की राक्षसी बच्चों को मारती हुई नगर, ग्राम, अहीरों की बस्तियों आदि में घूमा करती थी ॥

## तृतीयः श्लोकः

न यत्र श्रवणादीनि रक्षोघ्नानि स्वकर्मसु ।
कुर्वन्ति सात्वतां भर्तुर्यातुधान्यश्च तत्र हि ॥३॥

पदच्छेद— न यत्र श्रवण आदीनि रक्षोघ्नानि स्व कर्मसु ।
कुर्वन्ति सात्वताम् भर्तुः यातुधान्यः च तत्र हि ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १०. | नहीं करते | कुर्वन्ति | १४. | विघ्न करती हैं |
| यत्र | २. | जहाँ के लोग | सात्वताम् | ६. | भक्त वत्सल |
| श्रवण | ८. | श्रवण | भर्तुः | ७. | भगवान् के गुणों का |
| आदीनि | ९. | कीर्तन आदि | यातुधान्यः | १३. | राक्षसियाँ |
| रक्षोघ्नानि | ५. | राक्षसों के भय को दूर भगाने वाले | च | १. | और |
| स्व | ३. | अपने प्रतिदिन के | तत्र | १२. | वहाँ पर |
| कर्मसु । | ४. | कार्यों में | हि ।। | ११. | निश्चय ही |

श्लोकार्थ—और जहाँ के लोग अपने प्रतिदिन के कार्यों में राक्षसों के भय को भगाने वाले भक्तवत्सल भगवान् के गुणों का श्रवण, कीर्तन आदि नहीं करते । निश्चय ही वहाँ राक्षसियाँ विघ्न करती हैं ।।

## चतुर्थः श्लोकः

सा खेचर्येकदोपेत्य पूतना नन्दगोकुलम् ।
योषित्वा माययाऽऽत्मानं प्राविशत् कामचारिणी ॥४॥

पदच्छेद— सा खेचरी एकदा उपेत्य पूतना नन्द गोकुलम् ।
योषित्वा मायया आत्मानम् प्राविशत् काम चारिणी ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | ५. | वह राक्षसी | योषित्वा | ९. | स्त्री का रूप बनाकर |
| खेचरी | १. | आकाश मार्ग से चलने वाली | मायया | ८. | माया से सुन्दर |
| एकदा | ६. | एक बार | आत्मानम् | ७. | स्वयं |
| उपेत्य | ११. | आकर उसमें | प्राविशत् | १२. | प्रवेश किया |
| पूतना | ४. | पूतना नाम की | काम | २. | इच्छानुसार |
| नन्द गोकुलम् । | १०. | गोकुल के पास | चारिणी ।। | ३. | रूप धारण करने वाली |

श्लोकार्थ—आकाश मार्ग से चलने वाली, इच्छानुसार रूप धारण करने वाली पूतना नाम की वह राक्षसी एक बार स्वयं माया से सुन्दर स्त्री का रूप बनाकर नन्द बाबा के गोकुल के पास आकर उसमें प्रवेश किया ।।

## पञ्चमः श्लोकः

**तां केशबन्धव्यतिषक्तमल्लिकां बृहन्नितम्बस्तनकृच्छ्रमध्यमाम् ।**
**सुवाससं कम्पितकर्णभूषणत्विषोल्लसत्कुन्तलमण्डिताननाम् ॥५॥**

पदच्छेद — ताम् केशबन्ध व्यत्तिषक्त मल्लिकाम् बृहत् नितम्ब स्तनकृच्छ्र मध्यमाम् ।
सुवाससम् कम्पित कर्णभूषण त्विषा उल्लसत् कुन्तल मण्डित आननाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम् | १. | उसकी | सुवाससम् | ९. | सुन्दर वस्त्र पहने थीं |
| केशबन्ध | २. | चोटी में | कम्पित | ११. | हिल रहे थे |
| व्यत्तिषक्त | ४. | गुँथे हुये थे | कर्णभूषण | १०. | उसके कर्णफूल |
| मल्लिकाम् | ३. | बेले के फूल | त्विषा | १२. | उसकी चमक से |
| बृहत् | ७. | बड़े-बड़े थे | उल्लसत् | १३. | सुशोभित तथा |
| नितम्ब | ५. | नितम्ब और | कुन्तल | १४. | अलकों से |
| स्तनकृच्छ्र | ६. | कुचकलश पतली थी | मण्डित | १५. | शोभायमान |
| मध्यमाम् । | ८. | कमर | आननाम् ॥ | १६. | मुख सुन्दर लग रहा था |

श्लोकार्थ—उसकी चोटी में बेले के फूल गुंथे थे । नितम्ब और कुचकलश बड़े-बड़े थे । कमर पतली थी । सुन्दर वस्त्र पहने थी । उसके कर्ण फूल हिल रहे थे । उसकी चमक से सुशोभित तथा अलकों से शोभायमान मुख सुन्दर लग रहा था ॥

## षष्ठः श्लोकः

**वल्गुस्मितापाङ्गविसर्गवीक्षितैर्मनो हरन्तीं वनितां व्रजौकसाम् ।**
**अमंसताम्भोजकरेण रूपिणीं गोप्यः श्रियं द्रष्टुमिवागतां पतिम् ॥६॥**

पदच्छेद—वल्गुस्मिता अपाङ्गविसर्ग वीक्षितैः मनः हरन्तीम् वनिताम् व्रज ओकसाम् ।
अमंसत अम्भोज करेण रूपिणीम् गोप्यः श्रियम् द्रष्टुम् इव आगताम् पतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वल्गुस्मिता | १. | वह अपनी मधुर मुसकान | करेण | ८. | हाथ में |
| अपाङ्गविसर्ग | २. | कटाक्ष विक्षेपपूर्ण | रूपिणीम् | ६. | उस रूपवती |
| वीक्षितैः | ३. | चितवन से | गोप्यः | १०. | गोपियाँ ऐसा |
| मनः हरन्तीम् | ५. | चित्त को चुरा रही थी | श्रियम् | १२. | साक्षात् लक्ष्मी जो |
| वनिताम् | ७. | रमणी को | द्रष्टुम् | १४. | दर्शन करने के लिये |
| व्रजओकसाम् । | ४. | व्रजवासियों को | इव | १५. | ही |
| अमंसत | ११. | सोचने लगीं मानों | आगताम् | १६. | आ रही हों |
| अम्भोज | ९. | कमल लेकर आते देखकर | पतिम् ॥ | १३. | पति के |

श्लोकार्थ— वह अपनी मधुर मुसकान और कटाक्ष विक्षेप पूर्ण चितवन से व्रज वासियों के चित्त को चुरा रही थी । उस रूपवती रमणी को हाथ में कमल लेकर आते देखकर गोपियाँ ऐसा सोचने लगीं मानों साक्षात् लक्ष्मी जी पति के दर्शन करने के लिये ही आ रही हों ।

## सप्तमः श्लोकः

**बालग्रहस्तत्र विचिन्वती शिशून् यदृच्छया नन्दगृहेऽसदन्तकम् ।**
**बालं प्रतिच्छन्ननिजोरुतेजसं ददर्श तल्पेऽग्निमिवाहितं भसि ॥७॥**

पदच्छेद— बाल ग्रहः तत्र विचिन्वती शिशून् यदृच्छया नन्द गृहे असत् अन्तकम् ।
बालम् प्रतिच्छन्न निजउरु तेजसम् ददर्श तल्पे अग्निम् इव आहितम् भसि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बाल | १. | बालकों के लिये | बालम् | १५. | एक बालक को |
| ग्रहःतत्र | २. | ग्रह के समान उसे वहाँ | प्रतिच्छन्न | १४. | छिपाये हुये |
| विचिन्वती | ४. | खोजते हुये | निजउरु | १२. | अपने अत्यन्त |
| शिशून् | ३. | बच्चों को | तेजसम् | १३. | तेजस्वी रूप को |
| यदृच्छया | ५. | अनायास ही | ददर्श तल्पे | १६. | शय्या पर सोये हुये |
| नन्द गृहे | ६. | नन्द बाबा के घर में | अग्निम् इव | ११. | अग्नि के समान |
| असत् | ७. | दुष्टों के | आहितम् | १०. | ढकी हुई |
| अन्तकम् । | ८. | काल | भसि ॥ | ९. | राख से |

श्लोकार्थ—बालकों के लिये ग्रह के समान उसे वहाँ बच्चों को खोजते हुये अनायास ही नन्द बाबा के घर में दुष्टों के काल, राख से ढकी हुई अग्नि के समान अपने अत्यन्त तेजस्वी रूप को छिपाये हुये एक बालक को देखा ॥

## अष्टमः श्लोकः

**विबुध्य तां बालकमारिकाग्रहं चराचरात्माऽऽस निमीलितेक्षणः ।**
**अनन्तमारोपयदङ्कमन्तकं यथोरगं सुप्तमबुद्धिरज्जुधीः ॥८॥**

पदच्छेद— विबुध्य ताम् बालक मारिका ग्रहम् चराचर आत्मा आस निमीलित ईक्षणः ।
अनन्तम् आरोपयत् अङ्कम् अन्तकम् यथा उरगम् सुप्तम् अबुद्धि रज्जु धीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विबुध्य | ५. | जान गये | आरोपयत् | १६. | उठा लिया |
| ताम् | ३. | उस | अङ्कम् | १५. | पूतना ने अपनी गोद में |
| बालकमारिका | २. | बालकों को मारने वाली | अन्तकम् | १३. | कालरूप |
| ग्रहम् | ४. | पूतना नामक ग्रह को | यथा | ८. | जैसे कोई |
| चराचर आत्मा | १. | चर अचर सबके आत्मा श्री कृष्ण | उरगम् | ११. | सर्प को |
| आस निमीलित | ७. | बन्द कर लिये | सुप्तम् | १०. | सोये हुये |
| ईक्षणः । | ६. | उन्होंने नेत्र | अबुद्धि | ९. | मूर्ख व्यक्ति |
| अनन्तम् | १४. | भगवान् को | रज्जु धीः ॥ | १२. | रस्सी समझकर उठा ले वैसे ही |

श्लोकार्थ—चर-अचर सबके आत्मा श्री कृष्ण बालकों को मारने वाली उस पूतना ग्रह को जान गये ! उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये । जैसे कोई मूर्ख व्यक्ति सोये हुये सर्प को रस्सी समझकर उठाले वैसे ही काल रूप भगवान् को पूतना ने अपनी गोद में उठा लिया ॥

## नवमः श्लोकः

**तां तीक्ष्णचित्तामतिवामचेष्टितां वीक्ष्यान्तराकोशपरिच्छदासिवत् ।**
**वरस्त्रियं तत्प्रभया च धर्षिते निरीक्षमाणे जननी ह्यतिष्ठताम् ॥९॥**

पदच्छेद—ताम् तीक्ष्ण चित्ताम् अतिवाम चेष्टिताम् वीक्ष्य अन्तराकोश परिच्छदा असिवत् ।
वर स्त्रियम् तत् प्रभया च धर्षिते निरीक्षमाणे जननी हि अतिष्ठताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम् | ७. | उस | वरस्त्रियम् | ८. | अति सुन्दर स्त्री को |
| तीक्ष्णचित्ताम् | ४. | कुटिल हृदय और | तत् | ११. | उसको |
| अतिवाम | ५. | अत्यन्त मधुर | प्रभया | १२. | कान्ति से |
| चेष्टिताम् | ६. | व्यवहार वाली | च | १०. | और |
| वीक्ष्य | ९. | देखकर | धर्षिते | १३. | हत प्रभसी होकर |
| अन्तराकोश | १. | अन्दर से कोश से | निरीक्षमाणे | १५. | उसे देखते हुये भी |
| परिच्छद | २. | ढकी हुई | जननी हि | १४. | रोहिणी और यशोदा जी |
| असिवत् । | ३. | तलवार के समान | अतिष्ठताम् ॥ | १६. | चुपचाप खड़ी रहीं |

श्लोकार्थ—अन्दर से कोश से ढकी हुई तलवार के समान कुटिल हृदय और अत्यन्त मधुर व्यवहार वाली उस अति सुन्दर स्त्री को देखकर और उसकी कान्ति से हतप्रभसी होकर रोहिणी और यशोदा जी उसे देखते हुये भी चुपचाप खड़ी रहीं ॥

## दशमः श्लोकः

**तस्मिन् स्तनं दुर्जरवीर्यमुल्वणं घोराङ्कमादाय शिशोर्ददावथ ।**
**गाढं कराभ्यां भगवान् प्रपीड्य तत् प्राणैः समं रोषसमन्वितोऽपिबत् ॥१०॥**

पदच्छेद—तस्मिन् स्तनम् दुर्जर वीर्यम् उल्बणम् घोर अङ्कम् आदाय शिशोः ददौ अथ ।
गाढम् कराभ्याम् भगवान् प्रपीड्य तत् प्राणैः समम् रोष समन्वितः अपिबत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मिन् | ७. | उसके मुख से | गाढम् | ११. | बलपूर्वक |
| स्तनम् | ६. | स्तन को | कराभ्याम् | १२. | अपने दोनों हाथों से |
| दुर्जर | ३. | भीषण | भगवान् | ९. | भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| वीर्यम् | ५. | विष से युक्त | प्रपीड्य | १३. | दबाया और |
| उल्बणम् घोर | ४. | तीव्र और घोर | तत् | १०. | उसके स्तनों को |
| अङ्कम् आदाय | २. | गोद में लेकर | प्राणैः समम् | १५. | प्राणों के साथ ही |
| शिशोः | १. | उस बालक को | रोष समन्वितः | १४. | क्रोध से युक्त होकर |
| ददौ अथ । | ८. | दे दिया तब | अपिबत् ॥ | १६. | पी डाला |

श्लोकार्थ—उस बालक को गोद में लेकर भीषण तीव्र और घोर विष से युक्त स्तन को उसके मुख में दे दिया । तब भगवान् श्रीकृष्ण ने उसके स्तनों को अपने दोनों हाथों से दबाया और क्रोध से युक्त होकर प्राणों के साथ ही पी डाला ॥

# एकादशः श्लोक

**सा मुञ्च मुञ्चालमिति प्रभाषिणी निष्पीड्यमानाखिलजीवमर्मणि ।**
**विवृत्य नेत्रे चरणौ भुजौ मुहुः प्रस्विन्नगात्रा क्षिपती रुरोद ह ॥११॥**

पदच्छेद— सा मुञ्च मुञ्च अलम् इति प्रभाषिणी निष्पीड्यमाना अखिल जीव मर्मणि ।
विवृत्य नेत्रे चरणौ भुजौ मुहुः प्रस्विन्न गात्रा क्षिपती रुरोद ह ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | ४. | उसके | विवृत्य | १६. | उलट गये |
| मुञ्च मुञ्च | १. | अरे छोड़ दे छोड़ दे | नेत्रे | १५. | उसके नेत्र |
| अलम् इति | २. | बस कर इस प्रकार | चरणौ | १३. | पैंर |
| प्रभाषिणी | ३. | पुकारने वाली | भुजौ | १२. | अपने हाथ और |
| निष्पीड्यमाना | ८. | फटने लगे | मुहुः | ११. | बार बार |
| अखिल | ६. | सभी | प्रस्विन्न | ९. | पसीने से |
| जीव | ५. | प्राणों के आश्रयभूत | गात्रा | १०. | लथपथ शरीर वाली वह |
| मर्मणि । | ७. | मर्म स्थान | क्षिपती रुरोद ह ।। | १४. | पटकती हुई रोने लगी |

श्लोकार्थ—अरे छोड़दे छोड़दे, बस कर इस प्रकार पुकारने वाली उसके प्राणों के आश्रय भूत सभी मर्म स्थान फटने लगे । पसीने से लथपथ शरीर वाली वह बार-बार अपने हाथ और पैर पटकती हुई रोने लगी और उसके नेत्र उलट गये ।।

# द्वादशः श्लोकः

**तस्याः स्वनेनातिगभीररंहसा साद्रिर्मही द्यौश्च चचाल सग्रहा ।**
**रसा दिशश्च प्रतिनेदिरे जनाः पेतुः क्षितौ वज्रनिपातशङ्कया ॥१२॥**

पदच्छेद— तस्याः स्वनेन अति गभीर रंहसा स अद्रिः मही द्यौः च चचाल सग्रहा ।
रसा दिशः च प्रतिनेदिरे जनाः पेतुः क्षितौ वज्र निपात शङ्कया ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्याः स्वनेन | १. | उसके चिल्लाने का | रसा | ९. | सातों पाताल |
| अतिगभीर | ३. | बड़ा भयंकर था | दिशः च | १०. | दिशायें और |
| रंहसा | २. | वेग | प्रतिनेदिरे | ११. | गूंज उठीं |
| सा | ४. | उसके प्रभाव से | जनाः | १२. | बहुत से लोग |
| अद्रिः मही | ५. | पहाड़ों के साथ पृथ्वी | पेतुः | १६. | गिर पड़े |
| द्यौः च | ६. | और अन्तरिक्ष | क्षितौ | १५. | पृथ्वी पर |
| चचाल | ८. | डगमगा उठा | वज्र निपात | ३१. | वज्रपात की |
| सग्रहा । | ७. | ग्रहों के साथ | सग्रहा ।। | १४. | आशङ्का से |

श्लोकार्थ—उसके चिल्लाने का वेग बड़ा भयंकर था । उसके प्रभाव से पहाड़ों के साथ पृथ्वी और अन्तरिक्ष ग्रहों के साथ डगमगा उठा । सातों पाताल, और दिशायें गूंज उठीं । बहुत से लोग वज्रपात की अशंका से पृथ्वी पर गिर पड़े ।।

## त्रयोदशः श्लोकः

**निशाचरीत्थं व्यथितस्तना व्यसुर्व्यादाय केशांश्चरणौ भुजावपि ।**
**प्रसार्य गोष्ठे निजरूपमास्थिता वज्राहतो वृत्र इवापतन्नृप ॥१३॥**

पदच्छेद—निशाचरी इत्थम् व्यथित स्तना व्यसुः व्यादाय केशान चरणौ भुजौ अपि ।
प्रसार्य गोष्ठे निजरूपम् आस्थिता वज्र आहता वृत्र इव अपतन् नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **निशाचरी** | १३. | निशाचरी पूतना के | प्रसार्य | ११. | फैल गई |
| **इत्थम्** | २. | इस प्रकार | गोष्ठे | १७. | गोष्ठ में आकर |
| **व्यथित** | ५. | इतनी पीड़ा हुई कि | निजरूपम् | १५. | अपना रूप |
| **स्तना** | ४. | स्तनों में | आस्थितः | १६. | प्रकट करके |
| **व्यसुः** | ६. | उसके प्राण ही | वज्र | १२. | वह वज्र के द्वारा |
| **व्यादाय** | ७. | निकल गये | आहतः | १३. | घायल होकर |
| **केशान्** | ८. | बाल | वृत्र इव | १४. | वृत्रासुर के समान |
| **चरणौ** | ९. | पैर और | अपतन् | १८. | गिर पड़ी |
| **भुजौ अपि ।** | १०. | भुजायें भी | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार निशाचरी पूतना के स्तनों में इतनी पीड़ा हुई कि उसके प्राण ही निकल गये । बाल, पैर और भुजायें भी फैल गई । वह वज्र के द्वारा घायल होकर वृत्रासुर के समान अपना रूप प्रकट करके गोष्ठ में आकर गिर पड़ी ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**पतमानोऽपि तद्देहस्त्रिगव्यूत्यन्तरद्रुमान् ।**
**चूर्णयामास राजेन्द्र महदासीत्तदद्भुतम् ॥१४॥**

पदच्छेद— वर्तमानः अपि तत् देहः त्रिगव्यूति अन्तर द्रुमान् ।
चूर्णयामास राजेन्द्र महत् आसीत् तत् अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **पतमानः अपि** | ४. | गिरते हुये भी | चूर्णयामास | ८. | कुचल डाला |
| **तत्** | २. | उस पूतना के | राजेन्द्र | १. | हे राजेन्द्र |
| **देहः** | ३. | शरीर से | महत् | १०. | बड़ी ही |
| **त्रिगव्यूति** | ५. | छः कोश के | आसीत् | १२. | थी |
| **अन्तर** | ६. | भीतर के | तत् | ९. | वह |
| **द्रुमान् ।** | ७. | वृक्षों को | अद्भुतम् ॥ | ११. | अद्भुत घटना |

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! उस पूतना के शरीर ने गिरते हुये भी छः कोश के भीतर के वृक्षों को कुचल डाला । वह बड़ी ही अद्भुत घटना थी ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

ईषामात्रोग्रदंष्ट्रास्यं गिरिकन्दरनासिकम् ।
गण्डशैलस्तनं रौद्रं प्रकीर्णारुणमूर्धजम् ॥१५॥

पदच्छेद— ईषा मात्र उग्र दंष्ट्रास्यम् गिरि कन्दर नासिकम् ।
गण्ड शैल स्तनम् रौद्रम् प्रकीर्ण अरुण मूर्धजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईषा | १. | उसका हल के | गण्ड | १०. | चट्टानों की तरह |
| मात्रा | २. | समान | शैल | ९. | पहाड़ की |
| उग्र | ३. | तीखी और | स्तनम् | ११. | स्तन और |
| दंष्ट्रास्यम् | ५. | डाढ़ों वाला मुख | रौद्रम् | ४. | भयंकर |
| गिरि | ६. | पहाड़ की | प्रकीर्ण | १४. | चारों ओर बिखरे थे |
| कन्दर | ७. | गुफा के समान गहरे | अरुण | १२. | लाल-लाल |
| नासिकम् । | ८. | नथुने | मूर्धजम् ॥ | १३. | बाल |

श्लोकार्थ—उसका हल के समान तीखी और भयंकर डाढ़ों वाला मुख, पहाड़ को गुफा के समान गहरे नथुने, पहाड़ की चट्टानों की तरह स्तन और लाल-लाल बाल चारों ओर बिखरे थे ॥

## षोडशः श्लोकः

अन्धकूपगभीराक्षं पुलिनारोहभीषणम् ।
बद्धसेतुभुजोर्वङ्घ्रि शून्यतोयह्रदोदरम् ॥१६॥

पदच्छेद— अन्ध कूप गभीर अक्षम् पुलिन आरोह भीषणम् ।
बद्ध सेतु भुज ऊरु अङ्घ्रि शून्यतोय ह्रद उदरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्ध | २. | अन्धे | बद्धसेतु | ११. | नदी के पुल के समान |
| कूप | ३. | कुयें के समान | भुज | ८ | भुजाएँ |
| गभीर | ४. | गहरी और | ऊरु | ९. | जाँघें और |
| अक्षम् | १. | आँखे | अङ्घ्रि | १०. | पैर |
| पुलिन | ६. | नदी की धार की तरह | शून्यतोय | १३. | सूखे |
| आरोह | ५. | नितम्ब | ह्रद | १४. | सरोवर की तरह था |
| भीषणम् । | ७. | भयङ्कर थे | उदरम् ॥ | १२. | पेट |

श्लोकार्थ—आँखें अन्धे कुएँ के समान गहरी और नितम्ब नदी की धार के समान भयङ्कर थे । भुजाएँ, जाँघें और पैर नदी के पुल के समान, पेट सूखे सरोवर की तरह था ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**सन्तत्रसुः स्म तद् वीक्ष्य गोपा गोप्यः कलेवरम् ।**
**पूर्वं तु तन्निःस्वनितभिन्नहृत्कर्णमस्तकाः ॥१७॥**

पदच्छेद— सन्तत्रसुः स्म तत् वीक्ष्य गोपाः गोप्यः कलेवरम् ।
पूर्वम् तु तत् निःस्वनित भिन्न हृत् कर्ण मस्तकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सन्तत्रसुः | ६. | डर | पूर्वम् | १३. | पहले ही |
| स्म | ७. | गये | तु तत् | ८. | उसकी |
| तत् | १. | पूतना के उस | निःस्वनित | ९. | भयंकर चिल्लाना सुनकर |
| वीक्ष्य | ३. | देखकर | भिन्न | १४. | फट से रहे थे |
| गोपाः | ४. | ग्वाल और | हृत् | १०. | उनके हृदय |
| गोप्यः | ५. | गोपी | कर्ण | ११. | कान और |
| कलेवरम् । | २. | शरीर को | मस्तकाः ॥ | १२. | सिर |

श्लोकार्थ—पूतना के उस शरीर को देखकर ग्वाल और गोपी डर गये । उसकी भयंकर चिल्लाहट सुनकर उनके हृदय, कान और सिर पहले ही फट रहे थे ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**बालं च तस्या उरसि क्रीडन्तमकुतोभयम् ।**
**गोप्यस्तूर्णं समभ्येत्य जगृहुर्जातसम्भ्रमाः ॥१८॥**

पदच्छेद— बालम् च तस्याः उरसि क्रीडन्तम् अकुतो भयम् ।
गोप्यः तूर्णम् समभ्येत्य जगृहुः जात सम्भ्रमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बालम् | १. | बालक श्रीकृष्ण को | गोप्यः | ६. | गोपियों को |
| च | ९. | और | तूर्णम् | १०. | शीघ्रता से |
| तस्याः उरसि | २ | उस पूतना की छाती पर | समभ्येत्य | ११. | उन्होंने वहाँ जाकर |
| क्रीडन्तम् | ५. | खेलते देखकर | जगृहुः | १२. | श्रीकृष्ण को उठा लिया |
| अकुतो | ४. | रहित होकर | जात | ८. | हुई |
| भयम् । | ३. | भय से | सम्भ्रमाः ॥ | ७. | घबराहट |

श्लोकार्थ—बालक श्रीकृष्ण को उस पूतना की छाती पर भय से रहित होकर खेलते देखकर गोपियों को घबराहट हुई और उन्होंने वहाँ जाकर श्रीकृष्ण को उठा लिया ॥

# एकोनविंशः श्लोकः

**यशोदारोहिणीभ्यां ताः समं बालस्य सर्वतः ।**
**रक्षां विदधिरे सम्यग्गोपुच्छभ्रमणादिभिः ॥१९॥**

पदच्छेद— यशोदा रोहिणीभ्याम् ताः समम् बालस्य सर्वतः ।
रक्षाम् विदधिरे सम्यक् गोपुच्छ भ्रमण आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यशोदा | १. | यशोदा और | रक्षाम् | ११. | रक्षा |
| रोहिणीभ्याम् | २. | रोहिणी ने | विदधिरे | १२. | की |
| ताः | ३. | उन गोपियों के | सम्यक् | ९. | भली-भाँति |
| समम् | ४. | साथ | गो पुच्छ | ६. | गाय की पूंछ |
| बालस्य | ५. | बालक श्रीकृष्ण की | भ्रमण | ७. | घुमाने |
| सर्वतः । | १०. | सब प्रकार से | आदिभिः ॥ | ८. | आदि के द्वारा |

श्लोकार्थ—यशोदा और रोहिणी ने उन गोपियों के साथ बालक श्रीकृष्ण की गाय की पूंछ घुमाने आदि के द्वारा सब प्रकार से भली-भाँति रक्षा की ॥

# विंशः श्लोकः

**गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम् ।**
**रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभिः ॥२०॥**

पदच्छेद— गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनः गो रजसा अर्भकम् ।
रक्षाम् चक्रुः च शकृता द्वादश अङ्गेषु नामभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गो मूत्रेण | २. | पहले गोमूत्र से | रक्षाम् चक्रुः | १२. | रक्षा की |
| स्नापयित्वा | ३. | स्नान कराकर | च | ७. | और तब |
| पुनः | ४. | फिर | शकृता | ८. | गोबर |
| गो | ५. | गौ | द्वादश | ९. | बारहों |
| रजसा | ६. | रज लगायी | अङ्गेषु | १०. | अङ्गों में |
| अर्भकम् । | १. | बालक श्रीकृष्ण को | नामभिः ॥ | ११. | भगवान् के नामों से |

श्लोकार्थ—बालक श्रीकृष्ण को पहले गोमूत्र से स्नान कराकर फिर गौ रज लगाई । और तब गोबर लगाकर बारहों अङ्गों में भगवान् के नामों से रक्षा की ॥

## एकविंशः श्लोकः

गोप्यः संस्पृष्टसलिला अङ्गेषु करयोः पृथक्।
न्यस्यात्मन्यथ बालस्य बीजन्यासमकुर्वत ॥२१॥

पदच्छेद— गोप्यः संस्पृष्ट सलिलाः अङ्गेषु करयोः पृथक्।
न्यस्य आत्मनि अथ बालस्य बीजन्यासम् अकुर्वत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **गोप्यः** | १. | गोपियों ने | न्यस्य | ७. | न्यास करके |
| **संस्पृष्ट** | ३. | आचमन करके | आत्मनि | ८. | शरीरों में |
| **सलिला** | २. | जल से | अथ | ६. | तब |
| **अङ्गेषु** | ५. | अङ्गन्यास और | बालस्य | १०. | बालक के अङ्गों में |
| **करयोः** | ६. | कर | बीजन्यासम् | ११. | बीजन्यास |
| **पृथक्।** | ४. | अलग-अलग | अकुर्वत ॥ | १२. | किया |

श्लोकार्थ—गोपियों ने जल आचमन करके अलग-अलग अङ्गन्यास और कर न्यास करके शरीरों में तब बालक के अङ्गों में बीजन्यास किया ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

अव्यादजोऽङ्घ्रिमणिमांस्तव जान्वथोरू यज्ञोऽच्युतः कटितटं जठरं हयास्यः।
हृत् केशवस्त्वदुर ईश इनस्तु कण्ठं विष्णुर्भुजं मुखमुरुक्रम ईश्वरः कम् ॥२२॥

पदच्छेद—अव्यात्अजः अङ्घ्रि मणिमान् तव जानु अथ ऊरूयज्ञः अच्युतः कटितटम् जठरम् हयआस्यः।
हृत् केशवः त्वत् उरः ईश इनः तु कण्ठम् विष्णुः भुजम् मुखम् उरुक्रमः ईश्वरः कम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **अव्यात्अजः** | १. | अजन्मा भगवान् | हृत् केशवः | १२. | केशव हृदय की |
| **अङ्घ्रि** | २. | पैरों की रक्षा करें | त्वत् उरः | १३. | आपके वक्षः स्थल की |
| **मणिमान्** | ३. | मणिमान् | ईश इनः तु | १४. | ईश, सूर्य |
| **तव जानु** | ४. | आपके घुटनों की | कण्ठम् | १५. | कण्ठ की |
| **अथ ऊरू** | ५. | तथा जांघों की | विष्णुः भुजम् | १६. | विष्णु बाहों की |
| **यज्ञः अच्युत** | ६. | यज्ञ पुरुष अच्युत | मुखम् | १८. | मुख की और |
| **कटितटम्** | ७. | कमर की | उरुक्रम | १७. | उरु क्रम |
| **जठरम्** | ६. | पेट की | ईश्वरः | १६. | ईश्वर |
| **हय आस्यः।** | ८. | हयग्रीव | कम् ॥ | २०. | सिर की रक्षा करें |

श्लोकार्थ—अजन्मा भगवान् पैरों की रक्षा करें। मणिमान् आपके घुटनों की, तथा जाँघों की यज्ञ पुरुष, अच्युत कमर की, हयग्रीव पेट की, केशव हृदय को, आपके वक्षः स्थल की ईश, सूर्य कण्ठ की, विष्णु बाहों की, उरुक्रम मुख की और ईश्वर सिर की रक्षा करें ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**चक्र्यग्रतः सहगदो हरिरस्तु पश्चात् त्वत्पार्श्वयोर्धनुरसी मधुहाजनश्च ।**
**कोणेषु शङ्ख उरुगाय उपर्युपेन्द्रस्तार्क्ष्यः क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात् ॥२३॥**

पदच्छेद—चक्री अग्रतः सहगदः हरिः अस्तु पश्चात् त्वत् पार्श्वयोः धनुः असी मधुहा अजनः च ।
कोणेषु शङ्खः उरुगायः उपरि उपेन्द्रः तार्क्ष्यः क्षितौ हलधरः पुरुषः समन्तात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **चक्री** | १. | चक्रधारी भगवान् | **कोणेषु** | १२. | चारों कोनों में |
| **अग्रतः** | २. | रक्षा के लिये आगे रहें | **शङ्खः** | १०. | शंखधारी |
| **सहगदः** | ३. | गदाधारी | **उरुगायः** | ११. | उरुक्रम |
| **हरिः** | ४. | श्रीहरि | **उपरि** | १४. | ऊपर |
| **अस्तु पश्चात्** | ५. | पीछे रहें | **उपेन्द्रः** | १३. | उपेन्द्र |
| **त्वत् पार्श्वयोः** | ९. | आपके दोनों बगल में रहें | **तार्क्ष्य** | १६. | गरुड़ वाहन |
| **धनुः असी** | ६. | धनुष और खड्ग धारी | **क्षितौ हलधरः** | १५. | पृथ्वी पर हलधर और |
| **मधुहा** | ७. | मधुसूदन | **पुरुषः** | १७. | परम पुरुष भगवान् |
| **अजनः च ।** | ८. | अजन और | **समन्तात् ॥** | १८. | सब ओर से रक्षा करें |

श्लोकार्थ—चक्रधारी भगवान् रक्षा के लिये आगे रहें गदाधारी श्रीहरि पीछे रहें, धनुष और खड्गधारी मधुसूदन और अजन आपके दोनों बगल में रहें। शंखधारी उरुक्रम चारों कोनों में, उपेन्द्र ऊपर, पृथ्वी पर हलधर और गरुड़ वाहन परम पुरुष भगवान् सब ओर से रक्षा करें ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्रणान् नारायणोऽवतु ।**
**श्वेतद्वीपपतिश्चित्तं मनो योगेश्वरोऽवतु ॥२४॥**

पदच्छेद— इन्द्रियाणि हृषीकेशः प्राणान् नारायणः अवतु ।
श्वेतद्वीपः पतिः चित्तम् मनः योगेश्वरः अवतु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **इन्द्रियाणि** | २. | इन्द्रियों की | **श्वेत द्वीप** | ६. | श्वेतद्वीप के |
| **हृषीकेशः** | १. | हृषीकेश भगवान् | **पतिः** | ७. | अधिपति |
| **प्राणान्** | ४. | प्राणों की | **चित्तम्** | ८. | चित्त की |
| **नारायणः** | ३. | नारायण | **मनः** | १०. | मन की |
| **अवतु।** | ५. | रक्षा करें | **योगेश्वरः** | ९. | योगेश्वर |
| | | | **अवतु ॥** | ११. | रक्षा करें |

श्लोकार्थ—हृषीकेश भगवान् इन्द्रियों की, नारायण प्राणों की रक्षा करें। श्वेत द्वीप के अधिपति चित्त की, और योगेश्वर मन की रक्षा करें ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**पृश्निगर्भस्तु ते बुद्धिमात्मानं भगवान् परः।**
**क्रीडन्तं पातु गोविन्दः शयानं पातु माधवः॥२५॥**

**पदच्छेद—** पृश्निगर्भः तु ते बुद्धिम् आत्मानम् भगवान् परः।
क्रीडन्तम् पातु गोविन्दः शयानम् पातु माधवः॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **पृश्निगर्भः** | १. पृश्निगर्भ | **क्रीडन्तम्** | ७. | खेलते समय |
| **ते** | २. तेरी | **पातु** | ९. | रक्षा करें |
| **बुद्धिम्** | ३. बुद्धि की और | **गोविन्दः** | ८. | गोविन्द |
| **आत्मानम्** | ६. तेरे अहंकार की रक्षा करें | **शयानम्** | १०. | सोते समय |
| **भगवान्** | ५. भगवान् | **पातु** | १२. | रक्षा करें |
| **परः।** | ४. परमात्मा | **माधवः॥** | ११. | माधव |

**श्लोकार्थ—**पृश्निगर्भ तेरी बुद्धि की और परमात्मा भगवान् तेरे अहंकार की रक्षा करें। खेलते समय गोविन्द रक्षा करें और सोते समय माधव रक्षा करें।

## षड्विंशः श्लोकः

**व्रजन्तमव्याद् वैकुण्ठ आसीनं त्वां श्रियः पतिः।**
**भुञ्जानं यज्ञभुक् पातु सर्वग्रहभयङ्करः॥२६॥**

**पदच्छेद—** व्रजन्तम् अव्यात् वैकुण्ठः आसीनम् त्वाम् श्रियः पतिः।
भुञ्जानम् यज्ञ भुक् पातु सर्व ग्रह भयङ्करः॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **व्रजन्तम्** | १. चलते समय | **भुञ्जानम** | ८. | भोजन के समय |
| **अव्यात्** | २. भगवान् | **यज्ञभुक्** | १२. | यज्ञभोक्ता भगवान् |
| **वैकुण्ठ** | ३. वैकुण्ठ और | **पातु** | १३. | तेरी रक्षा करें |
| **आसीनम्** | ४. बैठते समय | **सर्व** | ९. | सभी |
| **त्वाम्** | ७. तेरी रक्षा करें | **ग्रह** | १०. | ग्रहों को |
| **श्रियः** | ५. भगवान् श्री | **भयङ्करः॥** | ११. | भयभीत करने वाले |
| **पतिः।** | ६. पति | | | |

**श्लोकार्थ—**चलते समय भगवान् वैकुण्ठ और बैठते समय भगवान् श्रीपति तेरी रक्षा करें। भोजन के समय सभी ग्रहों को भयभीत करने वाले यज्ञभोक्ता भगवान् तेरी रक्षा करें॥

## सप्तविंशः श्लोकः

डाकिन्यो यातुधान्यश्च कूष्माण्डा येऽर्भकग्रहाः ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च यक्षरक्षोविनायकाः ॥२७॥

पदच्छेद— डाकिन्यः यातुधान्यः च कूष्माण्डाः ये अर्भकः ग्रहाः ।
भूत प्रेत पिशाचाः च यक्ष रक्षः विनायकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| डाकिन्यः | १. | डाकिनी | भूत | ८. | भूत |
| यातुधान्यः | २. | राक्षसी | प्रेत | ९. | प्रेत |
| च | ३. | और | पिशाचाः | १०. | पिशाच |
| कूष्माण्डाः | ४. | कूष्माण्ड | च | ११. | और |
| ये | ५. | आदि जो | यक्ष | १२. | यक्ष |
| अर्भक | ६. | बाल | रक्षः | १३. | राक्षस |
| ग्रहाः । | ७. | ग्रह हैं | विनायकाः ॥ | १४. | विनायक आदि सभी (अरिष्ट नष्ट हो जायें) |

श्लोकार्थ—डाकिनी, राक्षसी और कूष्माण्डा आदि जो बालग्रह हैं तथा भूत, प्रेत, पिशाच और यक्ष, राक्षस, विनायक आदि सभी अरिष्ट नष्ट हो जायें ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृकादयः ।
उन्मादा ये ह्यपस्मारा देहप्राणेन्द्रियद्रुहः ॥२८॥

पदच्छेद— कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृका आदयः ।
उन्मादाः ये हि अपस्माराः देह प्राण इन्द्रिय द्रुहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कोटरा | १. | कोटरा | उन्मादाः | १०. | पागलपन |
| रेवती | २. | रेवती | ये हि | १२. | जो होते हैं वे नष्ट हो जायँ |
| ज्येष्ठा | ३. | ज्येष्ठा | अपस्माराः | ११. | मृगी आदि |
| पूतना | ४. | पूतना | देह प्राण | ७. | शरीर प्राण और |
| मातृका | ५. | मातृका | इन्द्रिय | ८. | इन्द्रियों का |
| आदयः । | ६. | आदि | द्रुहः ॥ | ९. | नाश करने वाले |

श्लोकार्थ—कोटरा, रेवती ज्येष्ठा पूतना, मातृका आदि शरीर, प्राण और इन्द्रियों का नाश करने वाले पागलपन, मृगी आदि जो रोग होते हैं वे नष्ट हो जायँ ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

स्वप्नदृष्टा महोत्पाता वृद्धबालग्रहाश्च ये।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्नामग्रहणभीरवः ॥२९॥

पदच्छेद— स्वप्न दृष्टाः महोत्पाताः वृद्ध बाल ग्रहाः च ये।
सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोः नाम ग्रहण भीरवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वप्न | १. | स्वप्न में | सर्वे | ६. | सब |
| दृष्टाः | २. | देखे हुये | नश्यन्तु | १४. | नष्ट हो जायें |
| महोत्पाताः | ३. | महान् उत्पात | ते | ८. | वे |
| वृद्ध | ४. | वृद्ध ग्रह | विष्णोः | १०. | भगवान् विष्णु के |
| बाल ग्रहाः | ५. | बाल ग्रह | नाम | ११. | नाम |
| च | ६. | और | ग्रहण | १२. | उच्चारण करने से |
| ये। | ७. | जो | भीरवः ॥ | १३. | भयभीत होकर |

श्लोकार्थ—स्वप्न में देखे हुये महान् उत्पात, वृद्ध ग्रह, बालग्रह और जो हैं वे सब भगवान् विष्णु के नाम उच्चारण करने से भयभीत होकर नष्ट हो जायें ॥

# त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति प्रणयबद्धाभिर्गोपीभिः कृतरक्षणम्।
पाययित्वा स्तनं माता संन्यवेशयदात्मजम् ॥३०॥

पदच्छेद— इति प्रणय बद्धाभिः गोपीभिः कृत रक्षणम्।
पाययित्वा स्तनम् माता संन्यवेशयत् आत्मजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | पाययित्वा | ९. | पान कराकर |
| प्रणय | ३. | प्रेम पाश में | स्तनम् | ८. | स्तन |
| बद्धाभिः | ४. | बँधकर | माता | ७. | माँ यशोदा ने |
| गोपीभिः | २. | गोपियों ने | संन्यवेशयत् | ११. | पालने पर सुला दिया |
| कृत | ६. | की (और) | आत्मजम् ॥ | १०. | अपने पुत्र को |
| रक्षणम्। | ५. | श्रीकृष्ण की रक्षा | | | |

श्लोकार्थ—इस प्रकार गोपियों ने प्रेम-पाश में बँधकर श्रीकृष्ण की रक्षा की। माँ यशोदा ने स्तन पान कराकर अपने पुत्र को पालने में सुला दिया ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**तावन्नन्दादयो गोपा मथुराया व्रजं गताः ।**
**विलोक्य पूतनादेहं बभूवुरतिविस्मिताः ॥३१॥**

पदच्छेद— तावत् नन्द आदयः गोपाः मथुराया व्रजम् गताः ।
विलोक्य पूतना देहम् बभूवुः अति विस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तावत् | १. तब-तक | विलोक्य | ९. देखकर वे |
| नन्द आदयः | २. नन्दबाबा आदि | पूतना | ७. पूतना का |
| गोपाः | ३. गोपगण | देहम् | ८. शरीर को |
| मथुरायाः | ४. मथुरा से | बभूवुः | १२. हो गये |
| व्रजम् | ५. गोकुल में | अति | १०. अत्यधिक |
| गताः । | ६. पहुँचे | विस्मिताः ॥ | ११. आश्चर्यचकित |

श्लोकार्थ—तब-तक नन्दबाबा आदि गोपगण मथुरा से गोकुल पहुँचे । पूतना के शरीर को देखकर अत्यधिक आश्चर्य चकित हो गये ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**नूनं बतर्षिः संजातो योगेशो वा समास सः ।**
**स एव दृष्टो ह्युत्पातो यदाहानकदुन्दुभिः ॥३२॥**

पदच्छेद— नूनम् बतऋषिः संजातः योगेशः वा समास सः ।
सः एव दृष्टः हि उत्पातः यत् आह आनकदुन्दुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नूनम् | १. निश्चय ही | सः | ११. वैसा ही |
| बतऋषिः | ३. अहो किसी ऋषि ने | एव | १२. ही |
| संजातः | ४. जन्म लिया है | दृष्टः | १४. यहाँ दिखाई दे रहा है |
| योगेशः | ६. योगेश्वर | हि उत्पातः | १३. उत्पात |
| वा | ५. अथवा वे पूर्व जन्म में | यत् | ९. जैसा |
| समास | ७. रहे हों (क्योंकि) | आह | १०. कहा |
| सः । | २. उन वसुदेव जी के रूप में | आनकदुन्दुभिः ॥ | ८. उन वसुदेव जी ने |

श्लोकार्थ—निश्चय ही उन वसुदेव जी के रूप में अहो किसी ऋषि ने जन्म लिया है । अथवा वे पूर्व जन्म में योगेश्वर रहे हों । क्योंकि उन वसुदेव जी ने जैसा कहा था वैसा ही उत्पात यहाँ दिखाई दे रहा है ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**कलेवरं परशुभिश्छित्त्वा तत्ते व्रजौकसः ।**
**दूरे क्षिप्त्वावयवशो न्यदहन् काष्ठधिष्ठितम् ॥३३॥**

पदच्छेद— कलेवरम् परशुभिः छित्त्वा तत् ते व्रज ओकसः ।
दूरे क्षिप्त्वाम् अवयवशः न्यदहन् काष्ठ धिष्ठितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **कलेवरम्** | ५. शरीर को | **दूरे** | ८. गोकुल से दूर |
| **परशुभिः** | ३. कुल्हाडियों से | **क्षिप्त्वा** | ९. ले जाकर |
| **छित्त्वा** | ६. काटकर | **अवयवशः** | ७. टुकड़े-टुकड़े कर डाला और |
| **तत् ते** | ४. पूतना के उस | **न्यदहन्** | १२. जला दिया |
| **व्रज** | १. व्रज | **काष्ठ** | १०. लकड़ियों पर |
| **ओकसः ।** | २. वासियों ने | **धिष्ठितम् ॥** | ११. रखकर |

श्लोकार्थ—व्रज वासियों ने कुल्हाडियों से पूतना के उस शरीर को काटकर टुकड़े टुकड़े कर डाला और गोकुल से दूर ले जाकर लकड़ियों पर रखकर जला दिया ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**दह्यमानस्य देहस्य धूमश्चागुरुसौरभः ।**
**उत्थितः कृष्णनिर्भुक्तसपद्याहतपाप्मनः ॥३४॥**

पदच्छेद— दह्यमानस्य देहस्य धूमः च अगुरु सौरभः ।
उत्थितः कृष्ण निर्भुक्तः सपदि आहत पाप्मनः ॥

शब्दार्थ —

| | | | |
|---|---|---|---|
| **दह्यमानस्य** | ३. जलते समय | **उत्थितः** | ७. आ रही थी (क्योंकि) |
| **देहस्य** | २. शरीर के | **कृष्ण** | ८. श्रीकृष्ण के द्वारा |
| **धूमः** | ४. उसके धुयें से | **निर्भुक्तः** | ९. दुग्ध पान किये जाने पर |
| **च** | १. और | **सपदि** | १०. तत्काल |
| **अगुरु** | ५. अगर की सी | **आहत** | १२. नष्ट हो गये थे |
| **सौरभः ।** | ६. सुगन्ध | **पाप्मनः ॥** | ११. उसके पाप |

श्लोकार्थ—और शरीर के जलते समय उसके धुयें से अगर की सी सुगन्ध आ रही थी, क्योंकि श्रीकृष्ण के द्वारा दुग्ध पान किये जाने पर तत्काल उसके पाप नष्ट हो गये थे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना ।**
**जिघांसयापि हरये स्तनं दत्त्वाऽऽप सद्गतिम् ॥३५॥**

पदच्छेद— पूतना लोक बालघ्नी राक्षसी रुधिर अशना ।
जिघांसया अपि हरये स्तनम् दत्त्वा आप सद्गतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पूतना | २. पूतना | जिघांसया | ९. मारने की इच्छा से |
| लोक | ३. लोगों के | अपि | ८. भी |
| बालघ्नी | ४. बच्चों को मारने वाली | हरये | ७. भगवान् श्रीकृष्ण को |
| राक्षसी | १. राक्षसी | स्तनम् | १०. स्तन |
| रुधिर | ५. उसका खून | दत्त्वा | ११. पान कराया था (किन्तु) |
| अशना । | ६. पीने वाली थी उसने | आप सद्गतिम् ॥ | १२. उसे परमगति प्राप्त हुई |

श्लोकार्थ—राक्षसी पूतना लोगों के बच्चों को मारने वाली और उनका खून पीने वाली थी । उसने भगवान् श्रीकृष्ण को भी मारने की इच्छा से स्तन पान कराया था । किन्तु उसे परमगति प्राप्त हुई ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**किं पुनः श्रद्धया भक्त्या कृष्णाय परमात्मने ।**
**यच्छन् प्रियतमं किं नु रक्तास्तन्मातरो यथा ॥३६॥**

पदच्छेद— किम् पुनः श्रद्धया भक्त्या कृष्णाय परमात्मने ।
यच्छन् प्रियतमम् किम् नु रक्ताः तत् मातरः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किम् | १. क्यों न हो | यच्छन् | ११. समर्पित करने वालों के बारे में |
| पुनः | २. फिर | प्रियतमम् | १०. अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु |
| श्रद्धया | ३. श्रद्धा और | किम् नु | १२. क्या कहा जाय |
| भक्त्या | ४. भक्ति से | रक्ताः तत् | ७. अनुराग पूर्वक उनकी |
| कृष्णाय | ६. श्रीकृष्ण को | मातरः | ८. माता के |
| परमात्मने । | ५. परमात्मा | यथा ॥ | ९. समान |

श्लोकार्थ—क्यों न हो फिर श्रद्धा और भक्ति से परमात्मा श्रीकृष्ण को अनुराग पूर्वक उनकी माता के समान अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु समर्पित करने वालों के बारे में तो कहना ही क्या है ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**पद्भ्यां भक्तहृदिस्थाभ्यां वन्द्याभ्यां लोकवन्दितैः ।**
**अङ्गं यस्याः समाक्रम्य भगवानपिबत् स्तनम् ॥३७॥**

पदच्छेद— पद्भ्याम् भक्त हृदिस्थाभ्याम् वन्द्याभ्याम् लोक वन्दितैः ।
अङ्गम् यस्याः समाक्रम्य भगवान् अपिबत् स्तनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पद्भ्याम् | ६. | चरण कमलों के द्वारा | अङ्गम् | ८. | शरीर को |
| भक्त | ४. | भक्तों के | यस्याः | ७. | पूतना के |
| हृदिस्थाभ्याम् | ५. | हृदय में स्थित | समाक्रम्य | ९. | दबाकर |
| वन्द्याभ्याम् | ३. | वन्दित | भगवान् | १०. | भगवान् ने |
| लोक | १. | सबके | अपिबत् | १२. | पान जो किया था |
| वन्दितैः । | २. | वन्दनीय ब्रह्मादि से | स्तनम् ॥ | ११. | उसका स्तन |

श्लोकार्थ—सबके वन्दनीय ब्रह्मादि से वन्दित भक्तों के हृदय में स्थित उन चरण कमलों के द्वारा पूतना के शरीर को दबाकर भगवान् ने उसका स्तन पान जो किया था ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**यातुधान्यपि सा स्वर्गमवाप जननीगतिम् ।**
**कृष्णभुक्तस्तनक्षीराः किमु गावो नु मातरः ॥३८॥**

पदच्छेद— यातुधानो अपि सा स्वर्गम् अवाप जननी गतिम् ।
कृष्ण भुक्त स्तन क्षीराः किम् गावः नु मातरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यातुधानी | २. | राक्षसी पूतना | कृष्ण | ८. | श्रीकृष्ण |
| अपि | ३. | भी | भुक्त | ११. | पान किया है उन |
| सा | १. | वह | स्तन | ९. | जिनके स्तनों का |
| स्वर्गम् | ६. | स्वर्ग की गति को | क्षीराः | १०. | दुग्ध |
| अवाप | ७. | प्राप्त हुई (फिर) | किम् | १४. | कहना ही क्या है |
| जननी | ४. | माता की | गावः नु | १२. | गायों और |
| गतिम् । | ५. | स्थिति के समान | मातरः ॥ | १३. | माताओं का तो |

श्लोकार्थ—वह राक्षसी पूतना भी माता की स्थिति के समान स्वर्ग की गति को प्राप्त हुई । फिर श्रीकृष्ण ने जिन के स्तनों का दुग्ध पान किया है, उन गायों और माताओं का तो कहना ही क्या है ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**पयांसि यासामपिबत् पुत्रस्नेहस्नुतान्यलम् ।**
**भगवान् देवकीपुत्रः कैवल्याद्यखिलप्रदः ॥३६॥**

पदच्छेद— पयांसि यासाम् अपिबत् पुत्र स्नेह स्नुतानि अलम् ।
भगवान् देवकी पुत्रः कैवल्यआदि अखिल प्रदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पयांसि | ११. | दुग्ध का | भगवान् | ६. | भगवान् ने |
| यासाम् | ७. | जिनके | देवकी | ४. | देवकी |
| अपिबत् | १३. | पान किया है उसका तो कहना ही क्या है | पुत्रः | ५. | नन्दन |
| पुत्र | ८. | पुत्र | कैवल्यआदि | १. | कैवल्य आदि |
| स्नेह | ९. | स्नेह से | अखिल | २. | सब प्रकार की मुक्ति |
| स्नुतानि | १०. | झरते हुये | प्रदः ॥ | ३. | देने वाले |
| अलम् । | १२. | भर पेट | | | |

श्लोकार्थ—कैवल्य आदि सब प्रकार की मुक्ति देने वाले देवकी नन्दन भगवान् ने जिनके पुत्र स्नेह से झरते हुये दुग्ध का भर पेट पान किया है, उनका तो कहना ही क्या है ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**तासामविरतं कृष्णे कुर्वतीनां सुतेक्षणम् ।**
**न पुनः कल्पते राजन् संसारोऽज्ञानसम्भवः ॥४०॥**

पदच्छेद— तासाम् अविरतम् कृष्णे कुर्वतीनाम् सुत ईक्षणम् ।
न पुनः कल्पते राजन् संसारः अज्ञान सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तासाम् | ७. | उन्हें | न पुनः | ११. | फिर कभी जन्म मृत्यु रूप नहीं |
| अविरतम् | २. | जो नित्य-निरन्तर | कल्पते | १२. | हो सकता |
| कृष्णे | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण का | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| कुर्वतीनाम् | ६. | करती थीं | संसारः | १०. | यह संसार |
| सुत | ४. | पुत्र रूप में ही | अज्ञान | ८. | अज्ञान के कारण |
| ईक्षणम् । | ५. | दर्शन | सम्भवः ॥ | ९. | होने वाला |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जो नित्य-निरन्तर भगवान् श्रीकृष्ण का पुत्र रूप में ही दर्शन करती थीं उन्हे अज्ञान के कारण होने वाला यह संसार फिर कभी जन्म-मृत्यु रूप नहीं हो सकता

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**कटधूमस्य सौरभ्यमवघ्राय व्रजौकसः ।**
**किमिदं कुत एवेति वदन्तो व्रजमाययुः ॥४१॥**

पदच्छेद— कट धूमस्य सौरभ्यम् अवघ्राय व्रज ओकसः ।
किम् इदम् कुतः एव इति वदन्तः व्रजम् आययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कटधूमस्य | १. | शव से उत्पन्न धुयें की | किम् | ७. | क्या है |
| सौरभ्यम् | २. | सुगन्ध को | इदम् | ६. | यह |
| अवघ्राय | ३. | सूंघकर | कुत एवेति | ८. | कहाँ से आ रही है इस प्रकार |
| व्रज | ४. | नन्द बाबा आदि व्रज | वदन्तः | ९. | कहते हुये |
| ओकसः । | ५. | वासी | व्रजम् | १०. | व्रज में |
| | | | आययुः ॥ | ११. | आ पहुँचे |

श्लोकार्थ—शव से उत्पन्न धुयें की सुगन्ध को सूंघकर नन्द बाबा आदि व्रज वासी यह क्या है, कहाँ से आ रही है इस प्रकार कहते हुये व्रज में आ पहुँचे ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**ते तत्र वर्णितं गोपैः पूतनागमनादिकम् ।**
**श्रुत्वा तन्निधनं स्वस्ति शिशोश्चासन् सुविस्मिताः ॥४२॥**

पदच्छेद— ते तत्र वर्णितम् गोपैः पूतना आगमन आदिकम् ।
श्रुत्वा तत् निधनम् स्वस्ति शिशोः च आसन् सुविस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते | ३. | उन्हें | श्रुत्वा | १२. | सुनकर वे |
| तत्र | १. | वहाँ | तत् | ८. | उसके |
| वर्णितम् | ७. | कह सुनाया | निधनम् | ९. | मरने |
| गोपैः | २. | गोपों ने | स्वस्ति | ११. | कल्याण का समाचार |
| पूतना | ४. | पूतना के | शिशोः च | १०. | पुत्र श्रीकृष्ण के और |
| आगमन | ५. | आने से लेकर | आसन् | १४. | हो गये |
| आदिकम् । | ६. | मरने तक का समाचार | सुविस्मिताः ॥ | १३. | आश्चर्यचकित |

श्लोकार्थ—वहाँ गोपों ने उन्हें पूतना के आने से लेकर मरने तक का समाचार कह सुनाया । उसके मरने और पुत्र श्रीकृष्ण के कल्याण का समाचार सुनकर वे आश्चर्यचकित हो गये ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

नन्दः स्वपुत्रमादाय प्रेत्यागतमुदारधीः ।
मूर्ध्न्युपाघ्राय परमां मुदं लेभे कुरूद्वह ॥४३॥

पदच्छेद— नन्दः स्वपुत्रम् आदाय प्रेत्य आगतम् उदारधीः ।
मूर्ध्नि उपाघ्राय परमाम् मुदम् लेभे कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नन्दः | ३. नन्द बाबा ने | मूर्ध्नि | ८. फिर मस्तक |
| स्वपुत्रम् | ६. अपने पुत्र को | उपाघ्राय | ९. सूंघकर |
| आदाय | ७. गोद में उठा लिया | परमाम् | १०. अत्यधिक |
| प्रेत्य | ४. मृत्यु के मुख से | मुदम् | ११. आनन्दित |
| आगतम् | ५. आये हुये | लेभे | १२. हुये |
| उदारधीः । | २. उदार शिरोमणि | कुरूद्वह ॥ | १. हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उदार शिरोमणि नन्द बाबा ने मृत्यु के मुख से आये हुये अपने पुत्र को गो[द] में उठा लिया । फिर मस्तक सूंघकर अत्यधिक आनन्दित हुये ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

य एतत् पूतनामोक्षं कृष्णस्यार्भकमद्भुतम् ।
शृणुयाच्छ्रद्धया मर्त्यो गोविन्दे लभते रतिम् ॥४४॥

पदच्छेद— यः एतत् पूतना मोक्षम् कृष्णस्य अर्भकम् अद्भुतम् ।
शृणुयात् श्रद्धया मर्त्यः गोविन्दे लभते रतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः | ६. जो | शृणुयात् | ९. इसका श्रवण करता है इ[से] |
| एतत् पूतना | १. यह पूतना | श्रद्धया | ८. श्रद्धापूर्वक |
| मोक्षम् | २. मोक्ष | मर्त्यः | ७. मनुष्य |
| कृष्णस्य | ३. भगवान् श्रीकृष्ण की | गोविन्दे | १०. श्रीकृष्ण के प्रति |
| अर्भकम् | ५. बाललीला है | लभते | १२. प्राप्त होता है |
| अद्भुतम् । | ४. अद्भुत | रतिम् ॥ | ११. प्रेम |

श्लोकार्थ—यह पूतना-मोक्ष भगवान् श्रीकृष्ण की अद्भुत बाललीला है । जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक इसक[ा] श्रवण करता है, उसे श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम प्राप्त होता है ।

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## सप्तमः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— येन येनावतारेण भगवान् हरिरीश्वरः ।
करोति कर्णरम्याणि मनोज्ञानि च नः प्रभो ॥१॥

पदच्छेद— येन येन अवतारेण भगवान् हरिः ईश्वरः ।
करोति कर्ण रम्याणि मनोज्ञानि च नः प्रभो ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| येन-येन | ५. | जिस-जिस | कर्ण | ७. | सुनने में |
| अवतारेण | ६. | अवतार में | रम्याणि | ८. | मधुर |
| भगवान् | ३. | भगवान् | मनोज्ञानि | १०. | सुन्दर लीलायें |
| हरिः | ४. | श्री हरि | च | ९. | और |
| ईश्वरः । | २. | सर्वशक्तिमान् | नः | १२. | मुझे अच्छी लगती हैं |
| करोति | ११. | करते हैं वे सब | प्रभो ॥ | १. | हे प्रभो ! |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीहरि जिस जिस अवतार में सुनने में मधुर और सुन्दर लीलायें करते हैं, वे सब मुझे अच्छी लगती हैं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

यच्छृण्वतोऽपैत्यरतिर्वितृष्णा सत्त्वं च शुद्ध्यत्यचिरेण पुंसः ।
भक्तिर्हरौ तत्पुरुषे च सख्यं तदेव हारं वद मन्यसे चेत् ॥२॥

पदच्छेद— यत् शृण्वतः अपैति अरतिः वितृष्णा सत्त्वम् च शुद्धयति अचिरेण पुंसः ।
भक्तिः हरौ तत् पुरुषे च सख्यम् तत् एव हारम् वद मन्यसे चेत् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत् शृण्वतः | १. | जिनके सुनने मात्र से | भक्ति हरौ | ९. | भगवान् की भक्ति |
| अपैति | ४. | भाग जाती है (तथा) | तत् पुरुषे | ११. | उनके भक्तजनों से |
| अरतिः | २. | कथा से अरुचि और | च | १०. | और |
| वितृष्णा | ३. | विषयों की तृष्णा | सख्यम् | १२. | प्रेम हो जाता है |
| सत्त्वम् च | ६. | अन्तः करण और | तत् एव | १५. | भगवान् की उन्हीं |
| शुद्ध्यति | ८. | शुद्ध हो जाता है | हारम् वद | १६. | मनोहर लीलाओं का वर्णन कीजिये |
| अचिरेण | ७. | तत्काल | मन्यसे | १४. | समझते हों तो |
| पुंसः । | ५. | मनुष्य का | चेत् ॥ | १३. | यदि आप मुझे अधिकारी |

श्लोकार्थ—जिनके सुनने मात्र से कथा में अरुचि और विषयों की तृष्णा भाग जाती है । तथा मनुष्य का अन्तः करण तत्काल शुद्ध हो जाता है । भगवान् की भक्ति और उनके भक्तजनों से प्रेम हो जाता है । यदि आप मुझे अधिकारी समझते हों तो भगवान् की उन्हीं मनोहर लीलाओं का वर्णन कीजिये ॥

## तृतीयः श्लोकः

अथान्यदपि कृष्णस्य तोकाचरितमद्भुतम् ।
मानुषं लोकमासाद्य तज्जातिमनुरुन्धतः ॥३॥

पदच्छेद— अथ अन्यत् अपि कृष्णस्य तोक आचरितम् अद्भुतम् ।
मानुषम् लोकम् आसाद्य तत् जातिम् अनुरुन्धतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | तदनन्तर | मानुषम् | ७. | उन्होंने मनुष्य |
| अन्यत् अपि | ३. | अन्य दूसरी भी | लोकम् | ८. | लोक में |
| कृष्णस्य | २. | श्रीकृष्ण की | आसाद्य | ६. | प्रकट होकर |
| तोक | ५. | बाल | तत् | १०. | उसी |
| आचरितम् | ६. | लीलाओं का वर्णन कीजिये | जातिम् | ११. | जाति का |
| अद्भुतम् । | ४. | अद्भुत | अनुरुन्धतः ॥ | १२. | अनुसरण किया है |

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण की अन्य दूसरी भी अद्भुत बाल लीलाओं का वर्णन कीजिये । उन्होंने मनुष्य लोक में प्रकट होकर उसी जाति का अनुसरण किया है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—कदाचिदौत्थानिककौतुकाप्लवे जन्मर्क्षयोगे समवेतयोषिताम् ।
वादित्रगीतद्विजमन्त्रवाचकैश्चकार सूनोरभिषेचनं सती ॥४॥

पदच्छेद— कदाचित् औत्थानिक कौतुक आप्लवे जन्मऋक्ष योगे समवेत योषिताम् ।
वादित्र गीत द्विज मन्त्र वाचकैः चकार सूनोः अभिषेचनम् सती ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कदाचित् | १. | एक बार श्रीकृष्ण के | वादित्र | १०. | बजाने और |
| औत्थनिक | २. | करवट बदलने के | गीत | ६. | गाने |
| कौतुकः | ४. | उत्सव के समय | द्विज मन्त्र | ११. | ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र |
| आप्लवे | ३. | अभिषेक | वाचकैः | १२. | उच्चारण के बीच |
| जन्म ऋक्ष | ५. | जन्म नक्षत्र और शुभ | चकार | १६. | किया |
| योगे | ६. | योग था | सूनोः | १४. | अपने पुत्र का |
| समवेत | ८. | भीड़ लगी थी | अभिषेचनम् | १५. | अभिषेक |
| योषिताम् । | ७. | स्त्रियों की | सती ॥ | १३. | सती यशोदा ने |

श्लोकार्थ—एक बार श्रीकृष्ण के करवट बदलने का अभिषेक-उत्सव के समय जन्म-नक्षत्र और शुभ योग था । स्त्रियों की भीड़ लगी थी । गाने, बजाने और ब्राह्मणों द्वारा मन्त्र उच्चारण के बीच सती यशोदा ने अपने पुत्र का अभिषेक किया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**नन्दस्य पत्नी कृतमज्जनादिकं विप्रैः कृतस्वस्त्ययनं सुपूजितैः ।**
**अन्नाद्यवासः स्रगभीष्टधेनुभिः संजातनिद्राक्षमशीशयच्छनैः ॥५॥**

पदच्छेद— नन्दस्य पत्नी कृत मज्जन आदिकम् विप्रैः कृत स्वस्त्ययनम् सु पूजितैः ।
अन्नाद्य वासः स्रक् अभीष्ट धेनुभिः संजात निद्रा अक्षम् अशीशयत् शनैः ॥

शब्दार्थ -

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **नन्दस्य पत्नी** | १. | नन्द जी की पत्नी यशोदा ने | अन्नाद्य | २. | (ब्राह्मणों का) अन्न |
| **कृत** | १२. | कराया तब | वासः स्रक् | ३. | वस्त्र माला |
| **मज्जन** | १०. | बालक को स्नान | अभीष्ट | ५. | मुँहमांगी वस्तुओं से |
| **आदिकम्** | ११. | आदि | धेनुभिः | ४. | गाय आदि से |
| **विप्रैः** | ७. | ब्राह्मणों के द्वारा | संजातनिद्रा | १४. | निद्रा आई देखकर |
| **कृत** | ९. | करने के बाद | अक्षम् | १३. | उनकी आँखों में |
| **स्वस्त्ययनम्** | ८. | स्वस्त्ययन | अशीशयत | १६. | सुला दिया |
| **सुपूजितैः ।** | ६. | सम्मानित | शनैः ॥ | १५. | धीरे से |

श्लोकार्थ—नन्द जी की पत्नी यशोदा जी ने अन्न, वस्त्र माला गाय आदि मुँह माँगी वस्तुओं से सम्मानित ब्राह्मणों के द्वारा स्वस्त्ययन करने के बाद बालक को स्नान आदि कराया । तब उनकी आँखों में निद्रा आई देखकर धीरे से सुला दिया ॥

## षष्ठः श्लोकः

**औत्थानिकौत्सुक्यमना मनस्विनी समागतान् पूजयती व्रजौकसः ।**
**नैवाश्रृणोद् वै रुदितं सुतस्य रुदन् स्तनार्थी चरणावुदक्षिपत् ॥६॥**

पदच्छेद— औत्थानिक औत्सुक्यमना मनस्विनी समागतान् पूजयती व्रज ओकसः ।
न एव अश्रृणोद् वै रुदितम् सुतस्य सा रुदन् स्तनार्थी चरणौ उत् अक्षिपत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **औत्थानिक** | १. | करवट बदलने के उत्सव में | वै | ७. | निश्चय ही |
| **औत्सुक्यमना** | २. | उत्सुकता से भरी | रुदितम् | १०. | रोना |
| **मनस्विनी** | ३. | मनस्विनी यशोदा | सुतस्य | ९. | पुत्र का |
| **समागतान्** | ४. | आये हुये | सा | ८. | उन्होंने |
| **पूजयती** | ६. | स्वागत-सत्कार कर रही थीं | रुदन | १४. | रोते हुये |
| **व्रज ओकसः ।** | ५. | व्रजवासियों का | स्तनार्थी | १३. | स्तन पान के इच्छुक वे |
| **न एव** | ११. | नहीं | चरणौ | १५. | अपने पैर ऊपर की ओर |
| **अश्रृणोत्** | १२. | सुना तब | उदक्षिपत् ॥ | १६. | उछालने लगे |

श्लोकार्थ करवट बदलने के उत्सव में उत्सुकता से भरी मनस्विनी यशोदा आये हुये व्रज वासियों का स्वागत सत्कार कर रही थीं । निश्चय ही उन्होंने पुत्र का रोना नहीं सुना । तब स्तन पान के इच्छुक वे रोते हुये अपने पैर ऊपर की ओर उछालने लगे ॥

## सप्तमः श्लोकः

**अ ः शयानस्य शिशोरनोऽल्पकप्रवालमृद्वङ्घ्रिहतं व्यवर्तत ।**
**विध्वस्तनानारसकुप्यभाजनं व्यत्यस्तचक्राक्षविभिन्नकूबरम् ॥७॥**

पदच्छेद— अधः शयानस्य शिशोः अनः अल्पक प्रवाल मृदु अङ्घ्रि हतम् व्यवर्तत ।
विध्वस्तनाना रस कुप्य भाजनम् व्यत्यस्त चक्र अक्ष विभिन्न कूबरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अधः | १. छकड़े के नीचे | विध्वस्त | १३. टूट गये |
| शयानस्य | २. सोये हुये | नाना | १०. उस पर अनेक प्रकार के |
| शिशोः | ३. शिशु श्रीकृष्ण का | रसकुप्य | ११. रसों से भरी मटकियाँ |
| अनःअल्पकः | ८. वह विशाल छकड़ा | भाजनम् | १२. और दूसरे पात्र |
| प्रवाल | ४. कोपलों के समान | व्यत्यस्त | १६. अस्त-व्यस्त हो गये |
| मृदु | ५. कोमल | चक्र | १४. छकड़े के पहिये |
| अङ्घ्रि | ६. पैर | अक्ष | १५. धुरे आदि |
| हतम् | ७. लगते ही | विभिन्न | १८. फट गया |
| व्यवर्तत । | ९. उलट गया | कूबरम् ॥ | १७. जुआ |

श्लोकार्थ—छकड़े के नीचे सोये हुये शिशु श्रीकृष्ण का कोंपलों के समान कोमल पैर लगते ही वह विशाल छकड़ा उलट गया । उस पर अनेक प्रकार के रसों से भरी मटकियाँ और दूसरे पात्र टूट गये । छकड़े के पहिये धुरे आदि अस्तव्यस्त हो गये । जुआ फट गया ॥

## अष्टमः श्लोकः

**दृष्ट्वा यशोदाप्रमुखा व्रजस्त्रिय औत्थानिके कर्मणि याः समागताः ।**
**नन्दादयश्चाद्भुतदर्शनाकुलाः कथं स्वयं वै शकटं विपर्यगात् ॥८॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा यशोदा प्रमुखाः व्रजस्त्रियः औत्थानिके कर्मणि याः समागताः ।
नन्दादयः च अद्भुत दर्शन आकुलाः कथम् स्वयम् वै शकटम् विपर्यगात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | १०. जब यह देखा तो | नन्दादयः च | २. नन्दादि गोप गणों ने तथा |
| यशोदा प्रमुखा | १. यशोदा आदि नन्द पत्नियों ने | अद्भुत | ३. इस विचित्र |
| व्रज स्त्रियः | ९. व्रज की स्त्रियाँ थीं उन्होंने भी | दर्शन | ४. घटनाको देखकर |
| औत्थानिके | ५. करवट बदलने के | आकुलाः | ११. घटनाको देखकर |
| कर्मणि | ६. उत्सव में | कथम् स्वयम् | १२. कैसे अपने आप |
| याः | ७. जो | वै शकटम् | १३. यह छकड़ा |
| समागताः । | ८. आयी हुई | विपर्यगात् ॥ | १४. उलट गया |

श्लोकार्थ—यशोदा आदि नन्द पत्नियों तथा नन्दादि गोप गणों ने इस विचित्र घटना को देखकर करवट बदलने के उत्सव में जो आयी हुई व्रज की स्त्रियाँ थीं उन्होंने भी जब यह देखा तो व्याकुल हो गये । कैसे अपने आप यह छड़का उलट गया ॥

## नवमः श्लोकः

**ऊचुरव्यवसितमतीन् गोपान् गोपीश्च बालकाः ।**
**रुदतानेन पादेन क्षिप्तमेतन्न संशयः ॥९॥**

पदच्छेद— ऊचुः अव्यवसित मतीन् गोपान् गोपीः च बालकाः ।
रुदता अनेन पादेन क्षिप्तम् एतत् न संशयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ऊचुः | ७. कहा कि | रुदता | ११. | रोते हुये |
| अव्यवसित | १. अनिश्चित | अनेन | १२. | इस बालक ने ही |
| मतीन् | २. बुद्धि से न जान सके तब | पादेन | १३. | अपने पैर से |
| गोपान् | ४. गोपों | क्षिप्तम् | १४. | इसे उलट दिया है |
| गोपीः | ६. गोपियों से | एतत् | ८. | इसमें |
| च | ५. और | न | १०. | नहीं है |
| बालकाः । | ३. बालकों ने | संशयः ॥ | ९. | कोई सन्देह |

श्लोकार्थ—अपनी अनिश्चित बुद्धि से न जान सके तब गोपों और गोपियों से बालकों ने कहा कि इसमें कोई सन्देह नहीं है । रोते हुये इस बालक ने ही अपने पैर से इसे उलट दिया है ॥

## दशमः श्लोकः

**न ते श्रद्दधिरे गोपा बालभाषितमित्युत ।**
**अप्रमेयं बलं तस्य बालकस्य न ते विदुः ॥१०॥**

पदच्छेद— न ते श्रद्दधिरे गोपाः बाल भाषितम् इति उत ।
अप्रमेयम् बलम् तस्य बालकस्य न ते विदुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| न | ७. नहीं किया | उत । | ८. | ठीक ही है (क्योंकि) |
| ते | १. उन | अप्रमेयम् | १२. | अनन्त |
| श्रद्दधिरे | ६. विश्वास | बलम् | १३. | बल को नहीं |
| गोपाः | २. गोपों ने | तस्य | १०. | उस |
| बाल | ३. बालकों को | बालकस्य | ११. | बालक के |
| भाषितम् | ४. बात | ते | ९. | वे गोप |
| इति | ५. मान कर उस पर | विदुः ॥ | १४. | जानते थे |

श्लोकार्थ—उन गोपों ने बालकों की बात मान कर उस पर विश्वास नहीं किया । ठीक ही है । क्योंकि वे गोप उस बालक के अनन्त बल को नहीं जानते थे ॥

## एकादशः श्लोकः

रुदन्तं सुतमादाय यशोदा ग्रहशङ्किता ।
कृतस्वस्त्ययनं विप्रैः सूक्तैः स्तनमपाययत् ॥११॥

पदच्छेद— रुदन्तम् सुतम् आदाय यशोदा ग्रहशङ्किता ।
कृत स्वस्त्ययनम् विप्रैः सूक्तैः स्तनम् अपाययत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रुदन्तम् | ४. | उन्होंने रोते हुये | कृत | १०. | कराया और |
| सुतम् | ५. | पुत्र को | स्वस्त्ययनम् | ६ | शान्तिपाठ |
| आदाय | ६. | गोद में लेकर | विप्रैः | ७. | ब्राह्मणों से |
| यशोदा | १. | यशोदा जी को किसी | सूक्तैः | ८. | वेद मन्त्रों के द्वारा |
| ग्रह | २. | ग्रह के उत्पात की | स्तनम् | ११. | स्तन |
| शङ्किता । | ३. | आशङ्का हुई | अपाययत् ॥ | १२. | पान कराने लगीं |

श्लोकार्थ—यशोदा जी को किसी ग्रह के उत्पात की आशङ्का हुई । उन्होंने रोते हुये पुत्र को गोद में लेकर ब्राह्मणों से वेद मन्त्रों से शान्ति पाठ कराया और स्तन पान कराने लगीं ॥

## द्वादशः श्लोकः

पूर्ववत् स्थापितं गोपैर्बलिभिः सपरिच्छदम् ।
विप्रा हुत्वार्चयाञ्चक्रुर्दध्यक्षतकुशाम्बुभिः ॥१२॥

पदच्छेद— पूर्ववत् स्थापितम् गोपैः बलिभिः सपरिच्छदम् ।
विप्राः हुत्वा अर्चयाम् चक्रुः दधि अक्षतकुश अम्बुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पूर्ववत् | ४. | पहले के समान | हुत्वा | ७. | हवन करके |
| स्थापितम् | ५. | स्थापित कर दिया | अर्चयाम् | ११. | भगवान् और छकड़े की पूजा |
| गोपैः | २. | गोपों ने | चक्रुः | १२. | की |
| बलिभिः | १. | बलवान् | दधि अक्षत | ८. | दही, अक्षत |
| सपरिच्छदम् । | ३. | सामग्री सहित उस छकड़े को | कुश | ९. | कुश जल के |
| विप्राः | ६. | ब्राह्मणों ने | अम्बुभिः ॥ | १०. | द्वारा |

श्लोकार्थ—बलवान् गोपों ने सामग्री सहित उस छकड़े को पहले के समान स्थापित कर दिया । ब्राह्मणों ने हवन करके दही, अक्षत, कुश और जल के द्वारा भगवान् और उस छकड़े की पूजा की ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**येऽसूयानृतदम्भेर्ष्याहिंसामानविवर्जिताः ।**
**न तेषां सत्यशीलानामाशिषो विफलाः कृताः ॥१३॥**

पदच्छेद— ये असूया अनृत दम्भ ईर्ष्या हिंसामान विवर्जिताः ।
न तेषाम् सत्य शीलानाम् आशिषः विफलाः कृताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ये | १. | जो किसी के | न | १३. | नहीं |
| असूया | २. | गुणों में दोष नहीं निकालते हैं तथा | तेषाम् | ८. | उन |
| अनृत | ३. | झूठ | सत्य | ९. | सत्य |
| दम्भ ईर्ष्या | ४. | दम्भ, इर्ष्या | शीलिनाम् | १०. | शील ब्राह्मणों का |
| हिंसा | ५. | हिंसा और | आशिषः | ११. | आशीर्वाद |
| मान | ६. | अभिमान आदि | विफलाः | १२. | कभी विफल |
| विवर्जिताः । | ७. | दोषों से रहित है | कृताः ॥ | १४. | होता है |

श्लोकार्थ—जो किसी के गुणों में दोष नहीं निकालते हैं तथा झूठ, दम्भ, ईर्ष्या और अभिमान आदि दोषों से रहित हैं, उन सत्यशील ब्राह्मणों को आशीर्वाद कभी विफल नहीं होता है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**इति बालकमादाय सामर्ग्यजुरुपाकृतैः ।**
**जलैः पवित्रौषधिभिरभिषिच्य द्विजोत्तमैः ॥१४॥**

पदच्छेद— इति बालकम् आदाय साम ऋक् यजुः उपाकृतैः ।
जलैः पवित्र ओषधिभिः अभिषिच्य द्विज उत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | जलैः | ११. | जल से |
| बालकम् | २. | बालक को | पवित्र | ९. | पवित्र |
| आदाय | ३. | लेकर | ओषधिभिः | १०. | ओषधियों से युक्त |
| साम ऋक् | ६. | साम ऋक् और | अभिषिच्य | १२. | अभिषेक कराया |
| यजुः | ७. | यजुर्वेद के | द्विज | ५. | ब्राह्मणों से |
| उपाकृतैः । | ८. | मंत्रों द्वारा संस्कृत | उत्तमैः ॥ | ४. | श्रेष्ठ |

श्लोकार्थ—इस प्रकार बालक को लेकर श्रेष्ठ ब्राह्मणों से साम, ऋक् और यजुर्वेद के मंत्रों द्वारा संस्कृत पवित्र ओषधियों से युक्त जल से अभिषेक कराया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

वाचयित्वा स्वस्त्ययनं नन्दगोपः समाहितः ।
हुत्वा चाग्निं द्विजातिभ्यः प्रादादन्नं महागुणम् ॥१५॥

पदच्छेद— वाचयित्वा स्वस्त्ययनम् नन्द गोपः समाहितः ।
हुत्वा च अग्निम् द्विजातिभ्यः प्रादात् अन्नम् महागुणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वाचयित्वा | ५. पाठ | च | ६. और |
| स्वस्त्ययनम् | ४. स्वस्त्ययन | अग्निम् | ७. अग्नि में |
| नन्द | १. नन्द | द्विजातभ्यः | ६. ब्राह्मणों को |
| गोपः | २. गोप | प्रादात् | १२. अन्न का |
| समाहितः । | ३. बड़ी एकाग्रता से | अन्नम् | ११. अन्न का |
| हुत्वा | ८. हवन करा कर | महागुणम् ॥ | १०. अति उत्तम |

श्लोकार्थ—नन्द गोप ने बड़ी एकाग्रता से स्वस्त्ययन पाठ और अग्नि में हवन कराकर ब्राह्मणों को अति उत्तम अन्न का भोजन कराया ॥

## षोडशः श्लोकः

गावः सर्वगुणोपेता वासःस्रग्रुक्ममालिनीः ।
आत्मजाभ्युदयार्थाय प्रादात्ते चान्वयुञ्जत ॥१६॥

पदच्छेद— गावः सर्वगुण उपेताः वासः स्रक् रुक्म मालिनीः ।
आत्मज अभ्युदय अर्थाय प्रादात् ते च अनु अयुञ्जत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गावः | ६. गायें | आत्मज | १. अपने पुत्र की |
| सर्वगुण | ४. समस्त गुणों | अभ्युदय | २. उन्नति और अभिवृद्धि |
| उपेताः | ५. से युक्त | अर्थाय | ३. के लिये नन्द बाबा ने |
| वासः | ८. वे वस्त्र | प्रादात् | ७. प्रदान कीं |
| स्रक् | ६. माला और | ते च | १३. उन ब्राह्मणों ने |
| रुक्म | १०. सोने के | अनु | १२. बाद |
| मालिनीः । | ११. हारों स सजी थी | अयुञ्जत ॥ | १४. आशीर्वाद दिया |

श्लोकार्थ—अपने प्रिय पुत्र की उन्नति और अभिवृद्धि के लिये नन्द बाबा ने समस्त शुभ गुणों से युक्त गायें प्रदान कीं । वे वस्त्र, माला और सोने के हारों से सजी थीं। उसके बाद उन ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया ।।

## सप्तदशः श्लोकः

**विप्रा मन्त्रविदो युक्तास्तैर्याः प्रोक्तास्तथाऽऽशिषः ।**
**ता निष्फला भविष्यन्ति न कदाचिदपि स्फुटम् ॥१७॥**

पदच्छेद— विप्राः मन्त्र विदः युक्ताः तैः याः प्रोक्ताः तथा आशिषः ।
ताः निष्फलाः भविष्यन्ति न कदाचित् अपि स्फुटम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विप्राः | ४. | ब्राह्मणों के द्वारा | ताः | ८. | वह |
| मन्त्र विदः | २. | वेदवेत्ता और | निष्फलाः | ११. | निष्फल |
| युक्ताः | ३. | सदाचारी | भविष्यन्ति | १३. | होता है |
| तैः याः | ५. | जो | न | १२. | नहीं |
| प्रोक्ताः | ७. | कहा जाता है | कदाचित् | ९. | कभी |
| तथा | १. | इस प्रकार | अपि | १०. | भी |
| आशिषः । | ६. | आशीर्वाद | स्फुटम् ॥ | १४. | यह स्पष्ट ही है |

श्लोकार्थ—इस प्रकार वेद वेत्ता और सदाचारी ब्राह्मणों के द्वारा जो आशीर्वाद कहा जाता है वह कभी भी निष्फल नहीं होता है । यह स्पष्ट ही है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**एकदाऽऽरोहमारूढं लालयन्ती सुतं सती ।**
**गरिमाणं शिशोर्वोढुं न सेहे गिरिकूटवत् ॥१८॥**

पदच्छेद— एकदा आरोहम् आरूढम् लालयन्ती सुतम् सती ।
गरिमाणम् शिशोः वोढुम् न सेहे गिरिकूट वत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकदा | १. | एक बार | गरिमाणम् | ९. | भारी |
| आरोहम् | ४. | गोद में | शिशोः | १०. | अपने पुत्र का |
| आरूढम् | ५. | लेकर | वोढुम् | ११. | भार वे |
| लालयन्ती | ६. | दुलार रही थीं (कि) | न सेहे | १२. | नहीं सह सकीं |
| सुतम् | ३. | अपने लाला को | गिरिकूट | ७. | चट्टान के |
| सती । | २. | सती यशोदा जी | वत् ॥ | ८. | समान |

श्लोकार्थ—एक बार सती यशोदा जी अपने लाला को गोद में लेकर दुलार रही थीं कि चट्टान के समान भारी अपने पुत्र का भार वे नहीं सह सकीं ।

## एकोनविंशः श्लोकः

**भूमौ निधाय तं गोपी विस्मिता भारपीडिता ।**
**महापुरुषमादध्यौ जगतामास कर्मसु ॥१९॥**

पदच्छेद— भूमौ निधाय तं गोपी विस्मिता भार पीडिता ।
महापुरुषम् आदध्यौ जगताम् आस कर्मसु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| भूमौ | ४. पृथ्वी पर | | महापुरुषम् | ७. उन्होंने भगवान् का |
| निधाय | ५. बैठा दिया और | | आदध्यौ | ८. स्मरण किया (और) |
| तम् | ३. उन्हें | | जगताम् | ९. घर के सांसारिक |
| गोपी | १. यशोदा जी ने | | आस | ११. लग गईं |
| विस्मिता | ६. आश्चर्यचकित थीं | | कर्मसु ॥ | १०. कार्यों में |
| भारपीडिता । | २. भार से पीड़ित होकर | | | |

श्लोकार्थ—यशोदा जी ने भार से पीड़ित होकर उन्हें पृथ्वी पर बैठा दिया और आश्चर्य चकित थीं । उन्होंने भगवान् का स्मरण किया और घर के सांसारिक कार्यों में लग गईं ॥

## विंशः श्लोकः

**दैत्यो नाम्ना तृणावर्तः कंसभृत्यः प्रणोदितः ।**
**चक्रवातस्वरूपेण जहारासीनमर्भकम् ॥२०॥**

पदच्छेद— दैत्यः नाम्ना तृणावर्तः कंस भृत्यः प्रणोदितः ।
चक्रवात स्वरूपेण जहार आसीनम् अर्भकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दैत्यः | ३. एक दैत्य था | चक्रवात | ७. वह बवन्डर के |
| नाम्ना | २. नाम का | स्वरूपेण | ८. रूप में |
| तृणावर्तः | १. तृणावर्त | जहार | ११. उठाकर ले गया |
| कंस | ४. वह कंस का | आसीनम् | ९. बैठे हुये |
| भृत्यः | ५. सेवक था | अर्भकम् ॥ | १०. बालक श्रीकृष्ण को |
| प्रणोदितः । | ६. उसी के कहने से | | |

श्लोकार्थ—तृणावर्त नाम का एक दैत्य था । वह कंस का सेवक था । उसी के कहने से वह बवन्डर के रूप में बैठे हुये बालक श्री कृष्ण को उठा कर ले गया ॥

## एकविंशः श्लोकः

**गोकुलं सर्वमावृण्वन् मुष्णंश्चक्षूंषि रेणुभिः ।**
**ईरयन् सुमहाघोरशब्देन प्रदिशो दिशः ॥२१॥**

पदच्छेद— गोकुलम् सर्वम् आवृण्वन् मुष्णन् चक्षूंषि रेणुभिः ।
ईरयन् सुमहाघोर शब्देन प्रदिशो दिशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोकुलम् | ३. | गोकुल को | ईरयन् | ११. | काँप उठीं |
| सर्वम् | २. | सारे | सुमहाघोर | ७. | उसके अत्यन्त भयंकर |
| आवृण्वन् | ४. | ढक लिया और | शब्देन | ८. | शब्द से |
| मुष्णन् | ६. | हर ली | प्रदिशः | १०. | दिशायें |
| चक्षूंषि | ५. | लोगों को देखने की शक्ति | दिशः ॥ | ९. | दसों |
| रेणुभिः । | १. | उसने व्रज रज से | | | |

श्लोकार्थ—उसने व्रज रज से सारे गोकुल को ढक लिया और लोगों के देखने की शक्ति हर ली । उसके अत्यन्त भयंकर शब्द से दशों दिशायें काप उठीं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**मुहूर्तमभवद् गोष्ठं रजसा तमसाऽऽवृतम् ।**
**सुतं यशोदा नापश्यत्तस्मिन् न्यस्तवती यतः ॥२२॥**

पदच्छेद— मुहूर्तम् अभवद् गोष्ठम् रजसा तमसा आवृतम् ।
सुतम् यशोदा न अपश्यत् तस्मिन् न्यस्तवती यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुहूर्तम् | २. | दो घड़ी तक | सुतम् | ८. | पुत्र श्रीकृष्ण को |
| अभवत् | ६. | रहा | यशोदा | ७. | यशोदा जी ने अपने |
| गोष्ठम् | १. | सारा व्रज | न अपश्यत् | १२. | नहीं पाया |
| रजसा | ३. | रज और | तस्मिन् | ११. | उस स्थल पर |
| तमसा | ४. | तम से | न्यस्तवती | १०. | छोड़ा था |
| आवृतम् । | ५. | ढका | यतः ॥ | ९. | जहाँ |

श्लोकार्थ—सारा व्रज दो घड़ी तक रज और तम से ढका रहा । यशोदा जी ने अपने पुत्र श्रीकृष्ण को जहाँ छोड़ा था उस स्थल पर नहीं पाया ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**नापश्यत् कश्चनात्मानं परं चापि विमोहितः ।**
**तृणावर्तनिसृष्टाभिः शर्कराभिरुपद्रुतः ॥२३॥**

पदच्छेद— न अपश्यत् कश्चन आत्मानम् परम् च अपि विमोहितः ।
तृणावर्त निसृष्टाभिः शर्कराभिः उपद्रुतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ११. नहीं | अपि | ८. भी |
| अपश्यत् | १२. देखा | विमोहितः । | ६. बेसुध हुये |
| कश्चन | ७. किसी व्यक्ति ने | तृणावर्त | १. तृणावर्त के द्वारा |
| आत्मानम् | ९. स्वयं को अथवा | निसृष्टाभिः | २. उड़ाई गई |
| परम् | १०. दूसरे को | शर्कराभिः | ३. बालू से |
| च | ५. और | उपद्रुतः ॥ | ४. उद्विग्न |

श्लोकार्थ—तृणावर्त के द्वारा उड़ाई गई बालू से उद्विग्न और बेसुध हुये किसी व्यक्ति ने भी स्वयं को अथवा दूसरे को नहीं देखा ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**इति खरपवनचक्रपांसुवर्षे सुतपदवीमबलाविलक्ष्य माता ।**
**अतिकरुणमनुस्मरन्त्यशोचद् भुवि पतिता मृतवत्सका यथा गौः ॥२४॥**

पदच्छेद— इति खर पवन चक्र पांसु वर्षे सुतपदवीम् अबला अविलक्ष्य माता ।
अतिकरुणम् अनुस्मरन्ति अशोचत् भुवि पतिता मृतवत्सका यथा गौः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति खर | १. इस प्रकार ज़ोर की | अतिकरुणम् | ८. अत्यन्त करुण भाव से |
| पवन चक्र | २. आँधी बवन्डर तथा | अनुस्मरन्ति | ९. पुत्र का स्मरण करते हुये वे |
| पांसु वर्षे | ३. धूल की वर्षा से | अशोचत् | १०. शोकमग्न हो गईं और |
| सुतपदवीम् | ४. पुत्र का पता | भुवि पतिता | १४. पृथ्वी पर गिर पड़ी |
| अबला | ७. दीन-हीन हो गईं | मृतवत्सका | ११. मरे हुये बछड़े वाली |
| अविलक्ष्य | ५. न पाकर | यथा | १३. समान |
| माता । | ६. माँ यशोदा | गौः ॥ | १२. गौ के |

श्लोकार्थ—इस प्रकार ज़ोर की आँधी, बवन्डर तथा धूल की वर्षा से पुत्र का पता न पाकर माँ यशोदा दीन-हीन हो गईं । अत्यन्त करुण भाव से पुत्र का स्मरण करती हुयी वे शोक मग्न हो गयीं । और मरे हुये बछड़े वाली गौ के समान पृथ्वी पर गिर पड़ीं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**रुदितमनुनिशम्य तत्र गोप्यो भृशमनुतप्तधियोऽश्रुपूर्णमुख्यः ।
रुरुदुरनुपलभ्य नन्दसूनुं पवन उपारतपांसुवर्षवेगे ॥२५॥**

पदच्छेद— रुदितम् अनुनिशम्य तत्र गोप्यः भृशम् अनुतप्त धियः अश्रुपूर्णमुख्यः ।
रुरुदुः अनुपलभ्य नन्द सूनुम् पवन उपारत पांसु वर्ष वेगे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **रुदितम्** | ७. | यशोदा जी के | रुरुदुः | १६. | रोने लगीं |
| **अनुनिशम्य** | ८. | रोने का शब्द सुनकर | अनुपलभ्य | ११. | नहीं पाया तो वे |
| **तत्र** | ६. | वहाँ | नन्द सूनुम् | १०. | जब नन्द पुत्र को |
| **गोप्यः** | ९. | गोपियों ने | पवन | १. | बवन्डर के |
| **भृशम्** | १३. | अत्यधिक | उपारत | २. | शान्त होने और |
| **अनुतप्त** | १४. | सन्तप्त होते हुये | पांसु | ३. | धूल की |
| **धियः** | १२. | हृदय में | वर्ष | ४. | वर्षा का |
| **अश्रुपूर्णमुख्यः।** | १५. | आँसुओं से भरे मुख से | वेगे ॥ | ५. | वेग कम होने पर |

श्लोकार्थ— बवन्डर के शान्त होने और धूल की वर्षा का वेग कम होने पर वहाँ यशोदा जी के रोने का शब्द सुनकर गोपियों ने जब नन्द पुत्र को नहीं पाया तो वे हृदय में अत्यधिक सन्तप्त होते हुये आँसुओं से भरे मुख से रोने लगीं ।

## षड्विंशः श्लोकः

**तृणावर्तः शान्तरयो वात्यारूपधरो हरन् ।
कृष्णं नभोगतो गन्तुं नाशक्नोद् भूरिभारभृत् ॥२६॥**

पदच्छेद— तृणावर्तः शान्तरयः वात्या रूपधरः हरन् ।
कृष्णम् नभो गतो गन्तुम् न अशक्नोत् भूरिभारभृत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तृणावर्तः** | १. | इधर तृणावर्त | **नभो** | ६. | आकाश में |
| **शान्तरयः** | ८. | उसका वेग शान्त हो गया | **गतः** | ७. | ले गया तो |
| **वात्या** | २. | बवन्डर का रूप | **गन्तुम्** | १०. | वह चलने में |
| **रूपधरः** | ३. | धारण करके | **न** | १२. | नहीं |
| **हरन् ।** | ५. | हरण करके | **अशक्नोत्** | ११. | समर्थ हो सका |
| **कृष्णम्** | ४. | जब भगवान् श्रीकृष्ण का | **भूरिभारभृत् ॥** | ९. | अत्यधिक भार धारण करने से |

श्लोकार्थ—इधर तृणावर्त बवन्डर का रूप धारण करके जब भगवान् श्रीकृष्ण को हरण करके आकाश में ले गया तो उसका वेग शान्त हो गया । अत्यधिक भार धारण करने से वह चलने में समर्थ नहीं हो सका ।

## सप्तविंशः श्लोकः

**तमश्मानं मन्यमान आत्मनो गुरुमत्तया ।**
**गले गृहीत उत्स्रष्टुं नाशक्नोदद्भुतार्भकम् ॥२७॥**

पदच्छेद— तम् अश्मानम् मन्यमानः आत्मनः गुरु मत्तया ।
गले गृहीतः उत्स्रष्टुम् न अशक्नोत् अद्भुत अर्भकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ४. | उन्हें | गले गृहीतः | ६. | गला पकड़ लेने के कारण |
| अश्मानम् | ५. | चट्टान | उत्स्रष्टुम् | १०. | उसे अपने से अलग करने में |
| मन्यमानः | ६. | समझता हुआ | न | १२. | नहीं |
| आत्मनः | १. | स्वयं अपने | अशक्नोत् | ११. | समर्थ हो सका |
| गुरु | २. | भारी | अद्भुत | ७. | उस अद्भुत |
| मत्तया । | ३. | होने के कारण | अर्भकम् ॥ | ८. | बालक के द्वारा |

श्लोकार्थ—स्वयं अपने भारी होने के कारण उन्हें चट्टान समझता हुआ, उस अद्भुत बालक के द्वारा गला पकड़ लेने के कारण उसे अपने से अलग करने में समर्थ नहीं हो सका ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**गलग्रहणनिश्चेष्टो दैत्यो निर्गतलोचनः ।**
**अव्यक्तरावो न्यपतत् सहबालो व्यसुर्व्रजे ॥२८॥**

पदच्छेद— गल ग्रहण निश्चेष्टः दैत्यः निर्गत लोचनः ।
अव्यक्त रावः न्यपतत् सहबालः व्यसुः व्रजे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गल ग्रहण | १. | गला पकड़ने से | अव्यक्त | ७. | बन्द हो गयी |
| निश्चेष्टः | २. | निष्चेश्ट हुए | रावः | ६. | उसकी बालती |
| दैत्यः | ३. | उस दैत्य की | न्यपतत् | ११. | गिर पड़ा |
| निर्गत | ५. | बाहर निकल आईं | सहबालः | ६. | बालक श्रीकृष्ण के साथ |
| लोचनः । | ४. | आँखें | व्यसुः | ८. | प्राण पखेरू उड़ गये |
| | | | व्रजे ॥ | १०. | वह व्रज में |

श्लोकार्थ—गला पकड़ने से निश्चेष्ट हुये उस दैत्य की आँखे बाहर निकल आईं । उसकी बोलती बन्द हो गयी । प्राण पखेरू उड़ गये । बालक श्रीकृष्ण के साथ वह व्रज में गिर पड़ा ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**तमन्तरिक्षात् पतितं शिलायां विशीर्णसर्वावयवं करालम् ।**
**पुरं यथा रुद्रशरेण विद्धं स्त्रियो रुदत्यो ददृशुः समेताः ॥२६॥**

पदच्छेद — तम् अन्तरिक्षात् पतितम् शिलायाम् विशीर्ण सर्व अवयवम् करालम् ।
पुरम् यथा रुद्रशरेण विद्धम् स्त्रियः रुदत्यः ददृशुः समेताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ४. | वह | पुरम् | १४. | त्रिपुरासुर चूर-चूर हो गया था |
| अन्तरिक्षात् | ५. | आकाश से | यथा | ११. | ठीक वैसे ही जैसे |
| पतितम् | ८. | गिर पड़ा और | रुद्रशरेण | १२. | भगवान् शंकर के बाणों से |
| शिलायाम् | ७. | एक चट्टान पर | विद्धम् | १३. | आहत होकर |
| विशीर्ण | १०. | चकनाचूर हो गये | स्त्रियः | १. | वहाँ जो स्त्रियां |
| सर्व अवयवम् | ६. | उसके सभी अङ्ग | रुदत्यः ददृशुः | ३. | रो रही थीं उन्होंने देखा कि |
| करालम् । | ६. | विकराल दैत्य | समेताः ॥ | २. | इकट्ठी होकर |

श्लोकार्थ—वहाँ जो स्त्रियाँ इकट्ठी होकर रो रही थीं। उन्होंने देखा कि वह विकराल दैत्य एक चट्टान पर गिर पड़ा और उसके सभी अङ्ग चकनाचूर हो गये। ठीक वैसे ही जैसे भगवान् शंकर के बाणों से आहत होकर त्रिपुरासुर चूर-चूर हो गया था ॥

## विंशः श्लोकः

**प्रादाय मात्रे प्रतिहृत्य विस्मिताः कृष्णं च तस्योरसि लम्बमानम् ।**
**तं स्वस्तिमन्तं पुरुषादनीतं विहायसा मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् ।**
**गोप्यश्च गोपाः किल नन्दमुख्या लब्ध्वा पुनः प्रापुरतीव मोदम् ॥३०॥**

प्रादाय मात्रे प्रतिहृत्य विस्मिताः कृष्णम् च तस्य उरसि लम्बमानम् ।
तम् स्वस्तिमन्तम् पुरुषाद नीतम् विहाय सा मृत्यु मुखात् प्रमुक्तम् ।
गोप्यः च गोपाः किल नन्द मुख्याः लब्ध्वा पुनः प्रापुः अतीव मोदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रादाय मात्रे | ७. | गोद में लेकर माता को | विहायसा | १२. | आकाश मार्ग से |
| प्रतिहृत्य | ८. | दे दिया और | मृत्युमुखात् | १०. | मृत्यु के मुख से |
| विस्मिताः | ५. | विस्मित हो गयो | प्रमुक्तम् | ११. | लौटे हुये बालक को |
| कृष्णम् | १. | भगवान् श्रीकृष्ण | गोप्यः च | ४. | यह देखकर गोपियाँ |
| तस्याः उरसि | २. | उसके वक्षः स्थल पर | गोपाः किल | १५. | गोपगणों ने निश्चय ही |
| लम्बमानम् | ३. | लटक रहे थे | नन्दमुख्याः | १४. | नन्द आदि |
| तम् | ६. | उस बालक को | लब्ध्वा पुनः | १६. | फिर से पाकर |
| स्वतिमन्तम् | ६. | सकुशलपूर्वक | प्रापुः | १८. | प्राप्त किया |
| पुरुषाद नीतम् | १३. | राक्षस द्वारा लाये हुये | अतीवमोदम् ॥ | १७. | अत्यधिक आनन्द |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण उसके वक्षः स्थल पर लटक रहे थे। यह देखकर गोपियाँ विस्मित हो गयीं। उस बालक को गोद में लेकर माता को दे दिया। और मृत्यु के मुख से कुशलपूर्वक लौटे हुये बालक को आकाश मार्ग से राक्षस द्वारा लाये हुये नन्द आदि गोप गणों ने निश्चय ही फिर से पाकर अत्यधिक आनन्द प्राप्त किया ॥

# एकत्रिंशः श्लोकः

**अहो बतात्यद्भुतमेष रक्षसा बालो निवृत्तिं गमितोऽभ्यगात् पुनः ।**
**हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते ॥३१॥**

पदच्छेद— अहो बत अति अद्भुतम् एषः रक्षसा बालः निवृत्तम् गमितः अभ्यगात् पुनः ।
हिंस्रःस्वपापेन विहिंसितः खलः साधु समत्वेन भयात् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो बत | १. अहो यह | हिंस्रः | ९. उस हिंसक |
| अति अद्भुतम् | २. बड़े आश्चर्य की बात है कि | स्वपापेन | ११. उसके पाप ही |
| एषः | ३. यह | विहिंसितः | १२. खा गये और |
| रक्षसा | ५. राक्षस के द्वारा | खलः | १०. दुष्ट को |
| बालः | ४. बालक | साधुः | १३. साधु पुरुष |
| निवृत्तिम् | ६. मृत्यु के मुख में | समत्वेन | १४. अपनी समता से ही |
| गमितः | ७. डालने पर भी | भयात् | १५. सम्पूर्ण भयों से |
| अभ्यगात् पुनः । | ८. फिर से जीवित लौट आया | विमुच्यते ॥ | १६. मुक्त हो जाता है |

श्लोकार्थ—अहो यह बड़े आश्चर्य की बात है कि यह बालक राक्षस के द्वारा मृत्यु के मुख में डालने पर भी फिर से जीवित लौट आया । उस हिंसक दुष्ट को उसके पाप ही खा गये । साधु पुरुष अपनी समता से ही सम्पूर्ण भयों से मुक्त हो जाते हैं ।

# द्वात्रिंशः श्लोकः

**किं नस्तपश्चीर्णमधोक्षजार्चनं पूर्तेष्टदत्तमुत भूतसौहृदम् ।**
**यत्संपरेतः पुनरेव बालको दिष्ट्या स्वबन्धून् प्रणयन्नुपस्थितः ॥३२॥**

पदच्छेद— किम् नः तपः चीर्णम् अधोक्षज अर्चनम् पूर्तं इष्ट दत्तम् उत भूत सौहृदम् ।
यत् सम्परेतः पुनः एव बालकः दिष्ट्या स्वबन्धून् प्रणयन् उपस्थितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किम् नः | १. हमने ऐसा कौन सा | यत् | ९. जिससे कि |
| तपः | २. तप | सम्परेतः | ११. मरकर |
| चीर्णम् | ८. की थी | पुनः एव | १२. पुनः ही |
| अधोक्षज | ३. भगवान् श्रीकृष्ण की | बालकः | १०. यह बालक |
| अर्चनम् पूर्तं | ४. पूजा वापी कुआँ आदि | दिष्ट्या | १३. भाग्यवश |
| इष्ट दत्तम् | ५. यज्ञ इत्यादि | स्वबन्धून् | १४. अपने बन्धुजनों को |
| उत भूत | ६. अथवा प्राणियों की | प्रणयन् | १५. प्रसन्न करने के लिये |
| सौहृदम् । | ७. भलाई | उपस्थितः ॥ | १६. लौट आया |

श्लोकार्थ—हमने ऐसा कौन सा तप, भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा, वापी, कुआँ आदि यज्ञ इत्यादि अथवा प्राणियों की भलाई की थी । जिससे कि यह बालक मर कर पुनः ही भाग्यवश अपने बन्धुजनों को प्रसन्न करने के लिये लौट आया ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**दृष्ट्वाद्भुतानि बहुशो नन्दगोपो बृहद्वने ।**
**वसुदेववचो भूयो मानयामास विस्मितः ॥३३॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा अद्भुतानि बहुशः नन्द गोपः बृहत् वने ।
वसुदेव वचः भूयः मानयामास विस्मितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ७. घटनायें देखकर | वने । | ४. वन में |
| अद्भुतानि | ६. अद्भुत | वसुदेव | ९. वसुदेव जी की |
| बहुशः | ५. बहुत सी | वचः | १०. बात का ही |
| नन्द | १. नन्द बाबा तथा | भूयः | ११. बार-बार |
| गोपः | २. गोपगणों ने | मानयामास | १२. समर्थन किया |
| बृहत् | ३. उस विशाल | विस्मितः ॥ | ८. आश्चर्य चकित होते हुये |

श्लोकार्थ—नन्द बाबा तथा गोपगणों ने उस विशाल वन में बहुत सी अद्भुत घटनायें देखकर आश्चर्य चकित होते हुए वसुदेव जी की बात का ही बार-बार समर्थन किया ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**एकदार्भकमादाय स्वाङ्कमारोप्य भामिनि ।**
**प्रस्नुतं पाययामास स्तनं स्नेहपरिप्लुता ॥३४॥**

पदच्छेद— एकदा अर्भकम् आदाय स्व अङ्कम् आरोप्य भामिनी ।
प्रस्नुतम् पाययामास स्तनम् स्नेह परिप्लुता ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एकदा | १. एक बार | भामिनी । | ४. यशोदा जी |
| अर्भकम् | ५. बालक श्रीकृष्ण को | प्रस्नुतम् | १०. दुग्ध बहते हुये |
| आदाय | ६. लेकर | पाययामास | १२. पान करा रही थी |
| स्व | ७. अपनी | स्तनम् | ११. स्तनों का |
| अङ्कम् | ८. गोद में | स्नेह | २. स्नेह से |
| आरोप्य | ९. लिटाकर | परिप्लुता ॥ | ३. परिपूर्ण |

श्लोकार्थ—एक बार स्नेह से परिपूर्ण यशोदा जी बालक श्रीकृष्ण को लेकर अपनी गोद में लिटाकर दुग्ध बहते हुये स्तनों का पान करा रही थी ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**प्रीतप्रायस्य जननी सा तस्य रुचिरस्मितम् ।**
**मुखं लालयती राजञ्जृम्भतो ददृशे इदम् ॥३५॥**

पदच्छेद— पीत प्रायस्य जननी सा तस्य रुचिर स्मितम् ।
मुखम् लालयती राजन् जृम्भतः ददृशे इदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पीत | २. | दूध पी चुकने के | मुखम् | ९. | मुख को |
| प्रायस्य | ३. | बाद | लालयती | १०. | चूम रही थीं कि उन्होंने |
| जननी | ५. | माँ यशोदा | राजन् | १. | हे राजन् |
| सा | ४. | वह | जृम्भतः | ११. | जम्भाई लेते हुये |
| तस्य | ६. | उन श्रीकृष्ण के | ददृशे | १३. | देखा |
| रुचिर | ७. | सुन्दर | इदम् ॥ | १२. | श्रीकृष्ण के मुख में यह दृश्य |
| स्मितम् । | ८. | मुसकान से युक्त | | | |

श्लोकार्थ—दूध पी चुकने के बाद वह माँ यशोदा श्रीकृष्ण के सुन्दर मुसकान से युक्त मुख को चूम रही थीं, कि उन्होंने जम्भाई लेते हुये श्रीकृष्ण के मुख में यह दृश्य देखा ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**खं रोदसी ज्योतिरनीकमाशाः सूर्येन्दुवह्निश्वसनाम्बुधींश्च ।**
**द्वीपान् नगांस्तद्दुहितॄर्वनानि भूतानि यानि स्थिरजङ्गमानि ॥३६॥**

पदच्छेद— खम् रोदसी ज्योतिः अनीकम् आशाः सूर्येन्दु वह्निश्वसन अम्बुधीन् च ।
द्वीपान् नगान् तत् दुहितॄः वनानि भूतानि यानि स्थिर जङ्गमानि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खम् | १. | उसमें आकाश | द्वीपान् | ९. | द्वीप |
| रोदसी | २. | अन्तरिक्ष | नगान् | १०. | पर्वत |
| ज्योतिः | ३. | ज्योति | तत् | ११. | पर्वतों की |
| अनीकम् | ४. | मण्डल | दुहितॄः | १२. | पुत्रियाँ (नदियाँ) |
| आशाः | ५. | दिशायें | वनानि | १३. | वन |
| सूर्येन्दु | ६ | सूर्य-चन्द्रमा | भूतानि | १८. | प्राणी हैं (वे देखे) |
| वह्निश्वसन | ७. | अग्नि-वायु | यानि | १५. | जो भी |
| अम्बुधीन् | ८. | समुद्र | स्थिर | १७. | अचर |
| च । | १४. | और | जङ्गमानि ॥ | १६. | चर |

श्लोकार्थ—उसमें आकाश, अन्तरिक्ष, ज्योति मण्डल, दिशायें, सूर्य-चन्द्रमा, अग्नि वायु, समुद्र, द्वीप, पर्वत, पर्वतों की पुत्रियाँ नदियाँ, वन और जो भी चर, अचर प्राणी हैं वे देखे ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**सा वीक्ष्य विश्वं सहसा राजन् सञ्जातवेपथुः ।**
**सम्मील्य मृगशावाक्षी नेत्रे आसीत् सुविस्मिता ॥३७॥**

**पदच्छेद—** सा वीक्ष्य विश्वम् सहसा सञ्जात वेपथुः ।
सम्मील्य मृग शावाक्षी नेत्रे आसीत् सुविस्मिता ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | २. | यशोदा जी | सम्मील्य | ११. | बन्द कर लिये |
| वीक्ष्य | ५. | देखकर | मृग | ८. | मृग |
| विश्वम् | ४. | समस्त विश्व को | शावाक्षी | ९. | शावक नयनी यशोदा जी ने |
| सहसा | ३. | इस प्रकार सहसा | नेत्रे | १०. | नेत्र |
| राजन् | १. | हे परीक्षित् ! | आसीत् | १३. | हो गईं |
| सञ्जात | ७. | हो उठीं | सुविस्मिता ॥ | १२. | वे आश्चर्य चकित |
| वेपथुः । | ६. | रोमाञ्चित | | | |

**श्लोकार्थ—**हे परीक्षित् ! यशोदा जी इस प्रकार सहसा समस्त विश्व को देखकर, रोमाञ्चित हो उठीं । मृग शावक नयनी यशोदा जी ने नेत्र बन्द कर लिये । वे आश्चर्य चकित हो गईं ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे**
**तृणावर्तमोक्षो नाम सप्तमः अध्यायः ॥७॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### अष्टमः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— गर्गः पुरोहितो राजन् यदूनां सुमहातपाः ।
व्रजं जगाम नन्दस्य वसुदेवप्रचोदितः ॥१॥

पदच्छेद— गर्गः पुरोहितः राजन् यदूनाम् सुमहातपाः ।
व्रजम् जगाम नन्दस्य वसुदेव प्रचोदितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गर्गः | ३. गर्गाचार्य जी | व्रजम् | ९. गोकुल में |
| पुरोहितः | ५. कुल पुरोहित थे | जगाम | १०. आये |
| राजन् | १. हे परीक्षित् ! | नन्दस्य | ८. नन्द बाबा के |
| यदूनाम् | ४. यदुवंशियों के | वसुदेव | ६. वसुदेव जी की |
| सुमहातपाः । | २. अत्यन्त तपस्वी | प्रचोदितः । | ७. प्रेरणा से वे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अत्यन्त तपस्वी गर्गाचार्य जी यदुवंशियों के कुल पुरोहित थे । वसुदेव जी की प्रेरणा से वे नन्द बाबा के गोकुल में आये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

तं दृष्ट्वा परमप्रीतः प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः ।
आनर्चाधोक्षजधिया प्रणिपातपुरःसरम् ॥२॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा परम प्रीतः प्रत्युत्थाय कृतअञ्जलिः ।
आनर्च अधोक्षज धिया प्रणिपात पुरः सरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | १. उन्हें | आनर्च | १२. पूजा की |
| दृष्ट्वा | २. देखकर नन्द बाबा | अधोक्षज | ९. भगवत् |
| परम | ३. बड़ी | धिया | १०. बुद्धि से |
| प्रीतः | ४. प्रसन्नता हुई | प्रणिपात | ११. प्रणाम करके उनकी |
| प्रत्युत्थाय | ६. उठ खड़े हुये और | पुरः | ७. सामने |
| कृतअञ्जलिः । | ५. वे हाथ जोड़कर | सरम् ॥ | ८. आकर |

श्लोकार्थ—उन्हें देखकर नन्द बाबा को बड़ी प्रसन्नता हुई । वे हाथ जोड़कर उठ खड़े हुये । और सामने आकर भगवत् बुद्धि से प्रणाम करके उनकी पूजा की ॥

## तृतीयः श्लोकः

**सूपविष्टं कृतातिथ्यं गिरा सूनृतया मुनिम् ।**
**नन्दयित्वाब्रवीद् ब्रह्मन् पूर्णस्य करवाम किम् ॥३॥**

पदच्छेद— सूपविष्टम् कृत आतिथ्यम् गिरा सूनृतया मुनिम् ।
नन्दयित्वा अब्रवीत् ब्रह्मन् पूर्णस्य करवाम किम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सूपविष्टम् | ३. | आराम से बैठ जाने पर | नन्दयित्वा | ७. | अभिनन्दन करके |
| कृत | २. | बाद | अब्रवीत् | ८. | नन्द बाबा बोले |
| आतिथ्यम् | १. | अतिथि सत्कार के | ब्रह्मन् | ९. | हे भगवन् ! आप तो |
| गिरा | ५. | वाणी से | पूर्णस्य | १०. | पूर्णकाम |
| सूनृतया | ४. | सत्य और मधुर | करवाम | १२. | सेवा करूँ |
| मुनिम् । | ६. | मुनि गर्गाचार्य का | किम् ॥ | ११. | मैं आपकी क्या |

श्लोकार्थ—अतिथि सत्कार के बाद आराम से बैठ जाने पर सत्य और मधुर वाणी से अभिनन्दन करके नन्द बाबा बोले । हे भगवन् ! आप तो पूर्णकाम हैं । मैं आपकी क्या सेवा करूँ ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**महद्विचलनं नृणां गृहिणां दीनचेतसाम् ।**
**निःश्रेयसाय भगवन् कल्पते नान्यथा क्वचित् ॥४॥**

पदच्छेद— महत् विचलनम् नृणाम् गृहिणाम् दीन चेतसाम् ।
निःश्रेयसाय भगवन् कल्पते न अन्यथा क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महत् | ६. | महापुरुषों का | निःश्रेयसाय | ८. | उनके कल्याण के लिये ही |
| विचलनम् | ७. | आगमन | भगवन् | १. | हे भगवन् ! |
| नृणाम् | ५. | जनों के यहाँ | कल्पते | ९. | होता है |
| गृहिणाम् | ४. | गृहस्थ | न | १२. | नहीं है |
| दीन | २. | दीन | अन्यथा | १०. | इसका अन्य |
| चेतसाम् । | ३. | चित्त वाले | क्वचित् ॥ | ११. | कोई और हेतु |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! दीन चित्त वाले गृहस्थ जनों के यहाँ महापुरुषों का आगमन उनके कल्याण के लिये ही होता है । इसका अन्य कोई और हेतु नहीं है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तज्ज्ञानमतीन्द्रियम् ।**
**प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम् ॥५॥**

**पदच्छेद—** ज्योतिषाम् अयनम् साक्षात् यत् तत् ज्ञानम् अतीन्द्रियम् ।
प्रणीतम् भवता येन पुमान् वेद परावरम् ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **ज्योतिषाम्** | ५. | ज्योतिष शास्त्र द्वारा | प्रणीतम् | ९. | बनाया हुआ |
| **अयनम्** | ७. | जान लिया जाता है | भवता | ८. | वह भी आपके द्वारा |
| **साक्षात्** | ६. | प्रत्यक्ष रूप से | येन | १०. | जिससे |
| **यत्** | १. | जो | पुमान् | ११. | मनुष्य का |
| **तत्** | ४. | वह भी | वेद | १३. | जाना जाता है |
| **ज्ञानम्** | ३. | ज्ञान है | परावरम् । | १२. | भूत और भविष्य |
| **अतीन्द्रियम् ।** | २. | इन्द्रियों से परे | | | |

**श्लोकार्थ—**जो इन्द्रियों से परे ज्ञान है वह भी ज्योतिष शास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष रूप से जान लिया जाता है। वह भी आपके द्वारा बनाया हुआ है। जिससे मनुष्य का भूत और भविष्य जाना जाता है ॥

## षष्ठः श्लोकः

**त्वं हि ब्रह्मविदां श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुमर्हसि ।**
**बालयोरनयोर्नृणां जन्मना ब्राह्मणो गुरुः ॥६॥**

**पदच्छेद—** त्वम् हि ब्रह्मविदाम् श्रेष्ठः संस्कारान् कर्तुम् अर्हसि ।
बालयोः अनयोः नृणाम् जन्मना ब्राह्मणो गुरुः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **त्वम् हि** | १. | निश्चय ही आप | बालयोः | ५. | बालकों के |
| **ब्रह्मविदाम्** | २. | ब्रह्म वेत्ताओं में | अनयोः | ४. | इन दोनों |
| **श्रेष्ठः** | ३. | श्रेष्ठ हैं (अतः) | नृणाम् | ११. | मनुष्य मात्र का |
| **संस्कारान्** | ६. | नामकरणादि संस्कार | जन्मना | १०. | जन्म से ही |
| **कर्तुम्** | ७. | करने में आप | ब्राह्मणो | ९. | ब्राह्मण |
| **अर्हसि ।** | ८. | समर्थ हैं (क्योंकि) | गुरुः ॥ | १२. | गुरु होता है |

**श्लोकार्थ—**निश्चय ही आप ब्रह्म-वेत्ताओं में श्रेष्ठ हैं। अतः इन दोनों बालकों के नामकरणादि संस्कार करने में आप समर्थ हैं। क्योंकि ब्राह्मण जन्म से ही मनुष्य मात्र का गुरु होता है ॥

## सप्तमः श्लोकः

गर्ग उवाच— यदूनामहमाचार्यः ख्यातश्च भुवि सर्वतः ।
सुतं मया संस्कृतं ते मन्यते देवकीसुतम् ॥७॥

पदच्छेद— यदूनाम् अहम् आचार्यः ख्यातः च भुवि सर्वतः ।
सुतम् मया संस्कृतम् ते मन्यते देवकी सुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदूनाम् | ४. | यदुवंशियों के | सुतम् | १०. | पुत्रों का |
| अहम् | १. | मैं | मया | ८. | मेरे द्वारा |
| आचार्यः | ५. | आचार्य के रूप में | संस्कृतम् | ११. | संस्कार होने पर |
| ख्यातः | ६. | प्रसिद्ध हूँ | ते | ९. | तुम्हारे |
| च | ६. | और | मन्यते | १४. | समझेंगे |
| भुवि | २. | पृथ्वी में | देवकी | १२. | लोग उन्हें देवकी का |
| सर्वतः । | ३. | सब जगह | सुतम् ॥ | १३. | पुत्र ही |

श्लोकार्थ—मैं पृथ्वी में सब जगह यदुवंशियों के आचार्य के रूप में प्रसिद्ध हूँ । और मेरे द्वारा तुम्हारे पुत्रों का संस्कार होने पर लोग उन्हें देवकी का पुत्र ही समझेंगे ॥

## अष्टमः श्लोकः

कंसः पापमतिः सख्यं तव चानकदुन्दुभेः ।
देवक्या अष्टमो गर्भो न स्त्री भवितुमर्हति ॥८॥

पदच्छेद— कंसः पाप मतिः सख्यम् तव च आनकदुन्दुभेः ।
देवक्याम् अष्टमः गर्भः न स्त्री भवितुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कंसः | १. | कंस की | देवक्याम् | ७. | उसके अनुसार देवकी का |
| पाप | ३. | पापमय है | अष्टमः | ८. | आठवाँ |
| मतिः | २. | बुद्धि | गर्भः | ९. | गर्भ |
| सख्यम् | ६. | घनिष्ठ मैत्री है | न | १३. | नहीं है |
| तव च | ४. | आपको | स्त्री | १०. | स्त्री |
| आनकदुन्दुभेः । | ५. | वसुदेव जी के साथ | भवितुम् | ११. | होना |
| | | | अर्हति । | १२. | सम्भव |

श्लोकार्थ—कंस की बुद्धि पापमय है । आपकी वसुदेव जी से घनिष्ठ मैत्री है । उसके अनुसार देवकी का आठवाँ गर्भ स्त्री होना सम्भव नहीं है ॥

## नवमः श्लोकः

इति सञ्चिन्तयञ्छ्रुत्वा देवक्या दारिकावचः।
अपि हन्ताऽऽगताशङ्कस्तर्हि तन्नोऽनयो भवेत् ॥६॥

पदच्छेद— इति सञ्चिन्तयन् श्रुत्वा देवक्या दारिका वचः।
अपि हन्ता ऽऽगतः आशङ्कः तर्हि तत् नः अनयः भवेत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ३. | इस प्रकार की | आगत | ७. | पैदा हो गया है |
| सञ्चिन्तयन् | ६. | वह सोचा करता है | आशङ्कः | ८. | इसी आशङ्का से |
| श्रुत्वा | ५. | सुनकर | तर्हि | १०. | कहीं |
| देवक्याः | १. | देवकी की | तत् | ११. | उस बालक का |
| दारिका | २. | कान्या की | नः | १३. | नहीं |
| वचः। | ४. | वाणी को | अनयः | १२. | अनिष्ट |
| अपि हन्ता | ६. | कि कहीं तुझे मारने वाला | भवेत् ॥ | १४. | हो जाये |

श्लोकार्थ—देवकी को कन्या की इस प्रकार की वाणी को सुनकर कि कहीं तुझे मारने वाला पैदा हो गया है। इसी आशङ्का से वह सोचा करता है। कहीं उस बालक का अनिष्ट न हो जाये ॥

## दशमः श्लोकः

नन्द उवाच— अलक्षितोऽस्मिन् रहसि मामकैरपि गोव्रजे।
कुरु द्विजातिसंस्कारं स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥१०॥

पदच्छेद— अलक्षितः अस्मिन् रहसि मामकैः अपि गोव्रजे।
कुरु द्विजाति संस्कारम् स्वस्ति वाचन पूर्वकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलक्षितः | ३. | अदृश्य रहकर | कुरु | १२. | कर दीजिये |
| अस्मिन् | ४. | इस | द्विजाति | १०. | द्विजाति समुचित |
| रहसि | ५. | एकान्त | संस्कारम् | ११. | संस्कार |
| मामकैः | १. | मेरे लोगों से | स्वस्ति | ७. | स्वस्ति |
| अपि | २. | भी | वाचन | ८. | वाचन |
| गोव्रजे। | ६. | गोशाला में | पूर्वकम् ॥ | ९. | करके |

श्लोकार्थ—मेरे लोगों से भी अदृश्य रहकर इस एकान्त गोशाला में स्वस्ति वाचन करके द्विजाति समुचित संस्कार कर दीजिये ॥

## एकादशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एवं सम्प्रार्थितो विप्रः स्वचिकीर्षितमेव तत् ।**
**चकार नामकरणं गूढो रहसि बालयोः ॥११॥**

पदच्छेद— एवम् सम्प्रार्थितः विप्रः स्वचिकीर्षितम् एव तत् ।
चकार नामकरणम् गूढः रहसि बालयोः ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ३. | नन्द बाबा के इस प्रकार | चकार | ११. | कर दिया |
| सम्प्रार्थितः | ४. | प्रार्थना करने पर | नामकरणम् | १०. | नामकरण संस्कार |
| विप्रः | ५. | गर्गाचार्य जी ने | गूढः | ७. | छिपकर |
| स्वचिकीर्षितम् | १. | वे तो संस्कार करना ही | रहसि | ६. | एकान्त में |
| एव | २. | चाहते थे | बालयोः ।। | ६. | दोनों बालकों का |
| तत् । | ८. | उन | | | |

श्लोकार्थ—वे तो संस्कार करना ही चाहते थे । नन्द बाबा के इस प्रकार प्रार्थना करने पर गर्गाचार्य जी ने एकान्त में छिपकर उन दोनों बालकों का नामकरण संस्कार कर दिया ।।

## द्वादशः श्लोकः

**गर्ग उवाच— अयं हि रोहिणीपुत्रो रमयन् सुहृदो गुणैः ।**
**आख्यास्यते राम इति बलाधिक्याद् बलं विदुः ।**
**यदूनामपृथग्भावात् सङ्कर्षणमुशन्त्युत ॥१२॥**

पदच्छेद— अयम् हि रोहिणी पुत्रः रमयन् सुहृदः गुणैः ।
आख्यास्यते राम इति बल आधिक्यात् बलम् विदुः ।
यदूनाम् अपृथक् भावात् सङ्कर्षणम् उशन्ति उत ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अयम् हि | १. | यह | बलआधिक्यात् | ६. | बल की अधिकता के कारण |
| रोहिणी | २. | रोहिणी का | बलम् विदुः | १०. | बलराम भी कहलायेगा |
| पुत्रः | ३. | पुत्र अपने | यदूनाम् | १२. | यदुवंशियों में |
| रमयन् | ६. | आनन्दित करेगा | अपृथक् | १३. | अभिन्न |
| सुहृदः | ५. | मित्रों को | भावात् | १४. | सम्बन्ध के कारण |
| गुणैः। | ४. | गुणों से | सङ्कर्षणम् | १५. | संकर्षण |
| आख्यास्यते | ८. | कहा जायेगा | उशन्ति | १६. | कहलायेगा |
| राम इति | ७. | यह राम इस नाम से कहा जायेगा | उत ।। | ११. | तथा |

श्लोकार्थ—यह रोहिणी का पुत्र अपने गुणों से मित्रों को आनन्दित करेगा । यह राम इस नाम से कहा जायेगा । बल की अधिकता के कारण बलराम भी कहलायेगा । यदुवंशियों में अभिन्न सम्बन्ध के कारण संकर्षण कहलायेगा ।।

## त्रयोदशः श्लोकः

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥१३॥

पदच्छेद— आसन् वर्णाः त्रयः हि अस्य गृह्णतः अनुयुगम् तनूः ।
शुक्लः रक्तः तथा पीतः इदानीम् कृष्णताम् गतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आसन् | ११. | स्वीकार किया था | शुक्लः | ५. | श्वेत |
| वर्णाः | १०. | वर्णों को | रक्तः | ६. | रक्त |
| त्रयः | ९. | इन तीन | तथा | ७. | तथा |
| हि अस्य | ४. | इसके पहले युगों में | पीतः | ८. | पीत |
| गृह्णतः | ३. | धारण करने वाले | इदानीम् | १२. | वही अब |
| अनुयुगम् | १. | प्रत्येक युग में | कृष्णताम् | १३. | कृष्ण वर्ण को प्राप्त |
| तनूः । | २. | शरीर | गतः ॥ | १४. | हुआ है |

श्लोकार्थ—प्रत्येक युग में शरीर धारण करने वाले इसने पहले युगों में श्वेत, रक्त तथा पीत इन तीन वर्णों को स्वीकार किया था। अब कृष्ण वर्ण को प्राप्त हुआ है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

प्रागयं वसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः ।
वासुदेव इति श्रीमानभिज्ञाः सम्प्रचक्षते ॥१४॥

पदच्छेद— प्राक् अयम् वसुदेवस्य क्वचित् जातः तव आत्मजः ।
वासुदेवः इति श्रीमान् अभिज्ञाः सम्प्रचक्षते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्राक् | ४. | पहले | आत्मजः । | ३. | पुत्र |
| अयम् | २. | यह | वासुदेवः | १०. | वासुदेव |
| वसुदेवस्य | ६. | वसुदेव जी के यहाँ | इति | ११. | ऐसा भी |
| क्वचित् | ५. | कभी | श्रीमान् | ९. | श्रीमान् |
| जातः | ७. | पैदा हुआ था अतः | अभिज्ञाः | ८. | जानने वाले इसे |
| तव | १. | आपका | सम्प्रचक्षते । | १२. | कहते है |

श्लोकार्थ—आपका यह पुत्र पहले कभी वसुदेव जी के यहाँ पैदा हुआ था। अतः जानने वाले इसे श्रीमान् वासुदेव ऐसा भी कहते हैं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।**
**गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेद नो जनाः ॥१५॥**

पदच्छेद— बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।
गुणकर्म अनुरूपाणि तानि अहम् वेद न जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बहूनि | ५. | बहुत से | गुणकर्म | १. | गुणों और कर्मों के |
| सन्ति | ११. | हैं | अनुरूपाणि | २. | अनुसार |
| नामानि | ८. | नाम | तानि | १३. | उन नामों को |
| रूपाणि | १०. | रूप | अहम् | १२. | मैं तो उनको |
| च | ९. | और | वेद | १४. | जानता हूँ पर |
| सुतस्य | ४. | पुत्र के | न | १६. | नहीं जानते हैं |
| ते । | ३. | आपके | जनाः ॥ | १५. | साधारण मनुष्य |

श्लोकार्थ—गुणों और कर्मों के अनुसार आपके पुत्र के वहुत से नाम और रूप हैं । मैं तो उनको जानता हूँ । पर साधारण मनुष्य नहीं जानते हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

**एष वः श्रेय आधास्यद् गोपगोकुलनन्दनः ।**
**अनेन सर्वदुर्गाणि यूयमञ्जस्तरिष्यथ ॥१६॥**

पदच्छेद— एषः वः श्रेयः आधास्यत् गोप गोकुल नन्दनः ।
अनेन सर्व दुर्गाणि यूयम् अञ्जः तरिष्यथ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एषः | १. | यह | अनेन | ८. | इसके साथ |
| वः | २. | तुम लोगों का | सर्व | ९. | समस्त |
| श्रेयः | ३. | परम कल्याण | दुर्गाणि | १०. | विपत्तियों को |
| आधास्यत् | ४. | करेगा | यूयम् | ७. | तुम लोग |
| गोप गोकुल | ५ | समस्त गोप, गौओं को | अञ्जः | ११. | बड़ी सुगमता से |
| नन्दनः । | ६. | आनन्दित करेगा | तरिष्यथ ॥ | १२. | पार कर लोगे |

श्लोकार्थ—यह तुम लोगों का परम कल्याण करेगा । समस्त गोप और गौओं को आनन्दित करेगा । तुम लोग इसके साथ समस्त विपत्तियों को बड़ी सुगमता से पार कर लोगे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**पुरानेन व्रजपते साधवो दस्युपीडिताः।**
**अराजके रक्ष्यमाणा जिग्युर्दस्यून् समेधिताः ॥१७॥**

पदच्छेद— पुरा अनेन व्रजपते साधवः दस्यु पीडिताः।
अराजके रक्ष्यमाणाः जिग्युः दस्यून् समेधिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरा | २. | पहले युग में | अराजके | ५. | राजा के रहित पृथ्वी को |
| अनेन | ६. | इसी पुत्र ने | रक्ष्यमाणाः | ८. | रक्षा की (और) |
| व्रजपते | १. | हे व्रजराज ! | जिग्युः | ११. | विजय प्राप्त की |
| साधवः | ७. | सज्जनों की | दस्यून् | १०. | लुटेरों पर भी |
| दस्यु | ३. | डाकुओं से | समेधिताः ॥ | ९. | इसी के साथ उन्होंने |
| पीडिताः। | ४. | पीडित और | | | |

श्लोकार्थ—हे व्रजराज ! पहले युग में डाकुओं से पीडित और राजा से रहित पृथ्वी पर इसी पुत्र ने सज्जनों को रक्षा की। और इसी के साथ उन्होंने लुटेरों पर भी विजय प्राप्त की थी ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**य एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिं कुर्वन्ति मानवाः।**
**नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः ॥१८॥**

पदच्छेद— ये एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिम् कुर्वन्ति मानवाः।
न अरयः अभिभवन्ति एतान् विष्णु पक्षान् इव असुराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ये | १. | जो | अरयः | १२. | शत्रु भी नहीं |
| एतस्मिन् | ४. | तुम्हारे इस पुत्र से | अभिभवन्ति | १४. | जीत सकते हैं |
| महाभागाः | २. | भाग्यशाली | एतान् | ११. | इन्हें |
| प्रीतिम् | ५. | प्रीति | विष्णु | ८. | विष्णु भगवान् की |
| कुर्वन्ति | ६. | करते हैं | पक्षान् | ९. | छत्र छाया में रहने वालों को |
| मानवाः। | ३. | मनुष्य | इव | ७. | जैसे |
| न | १३. | नहीं | असुराः ॥ | १०. | असुर नहीं जीत सकते वैसे ही |

श्लोकार्थ—जो भाग्यशाली मनुष्य तुम्हारे इस पुत्र से प्रीति करते हैं। जैसे विष्णु भगवान् की छत्र छाया में रहने वालों को असुर नहीं जीत सकते वैसे ही इन्हें शत्रु भी नहीं जीत सकते हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**तस्मान्नन्दात्मजोऽयं ते नारायणसमो गुणैः ।**
**श्रिया कीर्त्यानुभावेन गोपायस्व समाहितः ॥१९॥**

पदच्छेद— तस्मात् नन्द आत्मजः अयम् ते नारायण समः गुणैः ।
श्रिया कीर्त्या अनुभावेन गोपायस्व समाहितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. इसलिये | गुणैः । | ६. | गुणों |
| नन्द | २. नन्द जी का | श्रिया | ७. | सम्पत्ति |
| आत्मजः | ४. बालक | कीर्त्या | ८. | कीर्ति |
| अयम् | ३. यह | अनुभावेन | ९. | प्रभाव आदि में |
| ते | ५. उन दिव्य | गोपायस्व | १२. | इसकी रक्षा करो |
| नारायणसमः | १०. नारायण के समान हैं (तुम) | समाहितः ॥ | ११ | सावधानी पूर्वक |

श्लोकार्थ— इसलिये नन्द जी का यह बालक उन दिव्य गुणों, सम्पत्ति, कीर्ति प्रभाव आदि में नारायण के समान है । सावधानी पूर्वक इसकी रक्षा करो ॥

## विंशः श्लोकः

**इत्यात्मानं समादिश्य गर्गे च स्वगृहं गते ।**
**नन्दः प्रमुदितो मेने आत्मानं पूर्णमाशिषाम् ॥२०॥**

पदच्छेद— इति आत्मानम् समादिश्य गर्गे च स्व गृहम् गते ।
नन्दः प्रमुदितः मेने आत्मानम् पूर्णम् आशिषाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | गते । | ७. | चले गये |
| आत्मानम् | २. नन्द बाबा को भलीभाँति | नन्दः | ९. | नन्द बाबा ने भी |
| समादिश्य | ३. समझाकर | प्रमुदितः | १०. | प्रसन्न होकर |
| गर्गे | ४. गर्गाचार्य जी | मेने | ११. | ऐसा मान लिया |
| च | ८. और | आत्मानम् | १२. | मेरी सब |
| स्व | ५. अपने | पूर्णम् | १४. | पूर्ण हो गईं |
| गृहम् | ६. आश्रम को | आशिषाम् ॥ | १३. | आशा लालसायें |

श्लोकार्थ—इस प्रकार नन्द बाबा को भलीभाँति समझाकर गर्गाचार्य जी अपने आश्रम को चले गये । और नन्द बाबा ने भी प्रसन्न होकर ऐसा मान लिया कि मेरी सब लालसायें पूर्ण हो गईं ॥

# एकविंशः श्लोकः

**कालेन व्रजताल्पेन गोकुले रामकेशवौ ।**
**जानुभ्यां सह पाणिभ्यां रिङ्गमाणौ विजह्रतुः ॥२१॥**

पदच्छेद— कालेन व्रजता अल्पेन गोकुले राम केशवौ ।
जानुभ्याम् सह पाणिभ्याम् रिङ्गमाणौ विजह्रतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कालेन | १. | कुछ दिनों बाद | जानुभ्याम् | ५. | घुटनों के |
| व्रजता | ८. | चल-चलकर | सह | ६. | बल |
| अल्पेन | ६. | धीरे-धीरे | पाणिभ्याम् | ४. | हाथों और |
| गोकुले | २. | गोकुल में | रिङ्गमाणौ | ७. | बकैयाँ |
| राम केशवौ । | ३. | राम और श्याम | विजह्रतुः ॥ | १०. | खेलने लगे |

श्लोकार्थ—कुछ दिनों बाद गोकुल में राम और श्याम हाथों और घुटनों के बल बकैयाँ चल-चलकर धीरे-धीरे खेलने लगे।

# द्वाविंशः श्लोकः

**तावङ्घ्रियुग्ममनुकृष्य सरीसृपन्तौ घोषप्रघोषरुचिरं व्रजकर्दमेषु ।**
**तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्य लोकं मुग्धप्रभीतवदुपेयतुरन्ति मात्रोः ॥२२॥**

पदच्छेद— तौ अङ्घ्रियुग्मम् अनुकृष्य सरीसृपन्तौ घोष-प्रघोष रुचिरम् व्रज कर्दमेषु ।
तत्नाद हृष्ट मनसौ अनुसृत्य लोकम् मुग्ध प्रभीत वत् उपेयतुः अन्ति मात्रोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तौ | १. | दोनों भाई | तत् नाद | ६. | उसकी ध्वनि से |
| अङ्घ्रियुग्मम् | २. | नन्हें नन्हें दोनों पैरों को | हृष्ट मनसौ | १०. | प्रसन्न चित्त से |
| अनुकृष्य | ३. | घसीटते हुये | अनुसृत्य | ११. | अनुसरण करते |
| सरीसृपन्तौ | ६. | चलते तो | लोकम् | १२. | दूसरे लोगों को देखते तो |
| घोष-प्रघोष | ७. | घुंघुरू की ध्वनि प्रति ध्वनि | मुग्ध | १३. | ठगे से रह जाते और |
| रुचिरम् | ८. | बड़ी मधुर लगती | प्रभीत | १४. | भयभीत |
| व्रज | ४. | गोकुल की | वत् | १५. | की तरह |
| कर्दमेषु । | ५. | कीचड़ में | उपेयतुः | १७. | लौट आते |
| | | | अन्तिमात्रोः ॥ | १६. | माताओं के पास |

श्लोकार्थ—दोनों भाई नन्हें-नन्हें पैरों को घसीटते हुये गोकुल की कीचड़ में चलते तो घुंघुरू की ध्वनि प्रतिध्वनि बड़ी मधुर लगती। उसकी ध्वनि से प्रसन्नचित्त से अनुसरण करते। दूसरे लोगों को देखते तो ठगे से रह जाते और भयभीत की तरह माताओं के पास लौट आते ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**तन्मातरौ निजसुतौ घृणया स्नुवन्त्यौ पङ्काङ्गरागरुचिरावुपगुह्य दोर्भ्याम् ।**
**दत्त्वा स्तनं प्रपिबतोः स्म मुखं निरीक्ष्य मुग्धस्मिताल्पदशनं ययतुः प्रमोदम् ॥२३॥**

पदच्छेद- तत् मातरौ निजसुतौ घृणया स्नुवन्त्यौ पङ्कअङ्गराग रुचिरौ उपगुह्य दोर्भ्याम् ।
दत्त्वा स्तनम् प्रपिबतोः स्म मुखम् निरीक्ष्य मुग्ध स्मित अल्पदशनम् ययतुः प्रमोदम् ॥

| शब्दार्थ—तत् मातरौ | १. | वे मातायें | दत्त्वा स्तनम् | ९. | उनके मुख में स्तन डालकर |
|---|---|---|---|---|---|
| निजसुतौ | २. | अपने पुत्रों को | प्रपिबतोः स्म | १०. | उन्हें दूध पिलाती थीं |
| घृणया | ३. | देखकर स्नेह से भर जातीं | मुखम् निरीक्ष्य | १४. | मुख देखकर वे |
| स्नुवन्त्यौ | ४. | उनके स्तनों से दूध झरने लगता | मुग्ध | १३. | भोला-भाला |
| पङ्क अङ्गराग | ५. | वे कीचड़ के अङ्गराग से | स्मित | ११. | उनका मुस्कराता हुआ |
| रुचिरौ | ६. | सुशोभित बालकों को | अल्पदशनम् | १२. | छोटी-छोटी दंतुलियों वाला |
| उपगुह्य | ८. | पकड़कर | ययतुः | १६. | प्राप्त करती थीं |
| दोर्भ्याम् । | ७. | दोनों हाथों से | प्रमोदम् ॥ | १५. | अत्यन्त प्रसन्नता को |

श्लोकार्थ—वे मातायें अपने पुत्रों को देखकर स्नेह से भर जातीं । उनके स्तनों से दूध झरने लगता । वे कीचड़ के अङ्ग राग से सुशोभित बालकों को दोनों हाथों से पकड़कर उनके मुख में स्तन डालकर उन्हें दूध पिलाती थीं । उनका मुस्कराता हुआ छोटी छोटी दंतुलियों वाला, भोला-भाला मुख देखकर वे अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त करती थीं ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**यर्ह्यङ्गनादर्शनीयकुमारलीलावन्तर्व्रजे तदबलाः प्रगृहीतपुच्छैः ।**
**वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्य उज्झितगृहा जहृषुर्हसन्त्यः ॥२४॥**

पदच्छेद—यर्हि अङ्गना दर्शनीय कुमार लीलौ अन्तः व्रजे तत् अबलाः प्रगृहीत पुच्छैः ।
वत्सैः इतः ततः उभौ अनुकृष्यमाणौ प्रेक्षन्त्यः उज्झितगृहाः जहृषुः हसन्त्यः ॥

| शब्दार्थ—यर्हि | १. | जब वे | वत्सैः | ७ | बछड़ों की |
|---|---|---|---|---|---|
| अङ्गना | ३. | स्त्रियों के | इतः ततः | १०. | इधर-उधर |
| दर्शनीय | ४. | देखने योग्य | उभौ | ६. | वे दोनों |
| कुमार | २. | दोनों कुमार | अनुकृष्यमाणौ | ११. | घिसटते |
| लीलौ | ५. | लीलायें करते तो | प्रेक्षन्त्यः | १४. | उन्हें देखतीं और |
| अन्तः व्रजे | ९. | व्रज के अन्दर | उज्झितगृहाः | १३. | घर से निकल कर |
| तत् अबलाः | १२. | व्रज गोपियाँ | जहृषुः | १६. | प्रसन्न हो जाती थीं |
| प्रगृहीत पुच्छैः । | ८. | पूंछ पकड़कर | हसन्त्यः ॥ | १५. | हँसती हुई |

श्लोकार्थ—जब वे दोनों कुमार स्त्रियों के देखने योग्य लीलायें करते तो वे दोनों बछड़ों की पूंछ पकड़कर व्रज के अन्दर इधर-उधर घिसटते घर से निकलर व्रज गोपियाँ उन्हें देखतीं और हँसती हुई प्रसन्न हो जाती थीं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**श्रृङ्ग्यग्निदंष्ट्र्यसिजलद्विजकण्टकेभ्यः क्रीडापरावतिचलौ स्वसुतौ निषेद्धुम् ।**
**गृह्याणि कर्तुमपि यत्र न तज्जनन्यौ शेकात आपतुरलं मनसोऽनवस्थाम् ॥२५॥**

पदच्छेद—श्रृङ्गि अग्नि दंष्ट्रि असि जल द्विज कण्टकेभ्यः क्रीडापरौ अतिचलौ स्वसुतौ निषेद्धुम् ।
गृह्याणि कर्तुम् अपि यत्र न तत् जनन्यौ शेकाते आपतुः अलम् मनसः अनवस्थाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रृङ्गि अग्नि | १. | वे सींगवाले हिरन आदि, अग्नि | गृह्याणि | १२. | गृह |
| दंष्ट्रि | २. | दाँत से काटने वाले कुत्ते आदि | कर्तुम् अपि | १३. | कार्यों को भी |
| असि जल | ३. | तलवार-जल | यत्र | ७. | तब |
| द्विज | ४. | मयूरादि पक्षी | न | १४. | नहीं |
| कण्टकेभ्यः | ५. | काँटों आदि से | तत् जनन्यौ | ८. | उनकी मातायें |
| क्रीडापरौ | ६. | खेलते | शेकाते | १५. | कर पातीं |
| अतिचलौ | ९. | अत्यन्त चञ्चल | आपतुः | १९. | हो जाता था |
| स्वसुतौ | १०. | अपने बालकों को | अलम् मनसः | १७. | भय की चिन्ता से |
| निषेद्धुम् । | ११. | रोकती (तथा) | अनवस्थाम् ॥ | १८. | उनका मन असन्तुलित |

श्लोकार्थ—वे सींग वाले हिरन आदि, अग्नि और दाँत से काटने वाले कुत्ते आदि, तलवार-जल-मयूरादि पक्षी, काँटों आदि से खेलते तब उनकी मातायें अत्यन्त चञ्चल अपने बालकों को रोकतीं तथा गृह कार्यों को भी न कर पातीं । भय की चिन्ता से उनका मन असन्तुलित हो जाता था ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**कालेनाल्पेन राजर्षे रामः कृष्णश्च गोकुले ।**
**अघृष्टजानुभिः पद्भिर्विचक्रमतुरञ्जसा ॥२६॥**

पदच्छेद— कालेन अल्पेन राजर्षे रामः कृष्णः च गोकुले ।
अघृष्ट जानुभिः पद्भिः विचक्रमतुः अञ्जसा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कालेन | ३. | समय में | गोकुले । | १०. | गोकुल में |
| अल्पेन | २. | कुछ ही | अघृष्ट | ८. | सहारा लिये बिना ही |
| राजर्षे | १. | हे राजर्षे | जानुभिः | ७. | घुटनों का |
| रामः | ४. | बलराम | पद्भिः | ११. | पैरों से |
| कृष्णः | ६. | श्रीकृष्ण | विचक्रमतुः | १२. | चलने-फिरने लगे |
| च | ५. | और | अञ्जसा ॥ | ९. | अनायास ही खड़े होकर |

श्लोकार्थ—हे राजर्षे ! कुछ ही समय में बलराम और श्रीकृष्ण घुटनों का सहारा लिये बिना ही अनायास ही खड़े होकर गोकुल में पैरों से चलने-फिरने लगे ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

ततस्तु भगवान् कृष्णो वयस्यैर्व्रजबालकैः ।
सहरामो व्रजस्त्रीणां चिक्रीडे जनयन् मुदम् ॥२७॥

पदच्छेद— ततः तु भगवान् कृष्णः वयस्यैः व्रज बालकैः ।
सह रामः व्रज स्त्रीणाम् चिक्रीडे जनयन् मुदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब | सह | ९. | साथ |
| तु | २. | तो | रामः | ५. | बलराम |
| भगवान् | ३. | भगवान् | व्रज | ११. | व्रज की |
| कृष्णः | ४. | श्रीकृष्ण | स्त्रीणाम् | १२. | स्त्रियों को |
| वयस्यैः | ६. | अपनी उम्र के | चिक्रीडे | १०. | खेलने लगे और |
| व्रज | ७. | व्रज के | जनयन् | १४. | देने लगे |
| बालकैः । | ८. | बालकों के | मुदम् ॥ | १३. | आनन्द |

श्लोकार्थ—तब तो भगवान् श्रीकृष्ण, बलराम और अपनी उम्र के व्रज के बालकों के साथ खेलने लगे । और व्रज की स्त्रियों को आनन्द देने लगे ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

कृष्णस्य गोप्यो रुचिरं वीक्ष्य कौमारचापलम् ।
शृण्वत्याः किल तन्मातुरिति होचुः समागताः ॥२८॥

पदच्छेद— कृष्णस्य गोप्यः रुचिरम् वीक्ष्य कौमार चापलम् ।
शृण्वत्याः किल तत् मातुः इति ह ऊचुः समागताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णस्य | २. | श्रीकृष्ण की | शृण्वत्याः | ११. | सुना-सुनाकर |
| गोप्यः | ५. | गोपियों को | किल | १. | निश्चय ही |
| रुचिरम् | ६. | बड़ी अच्छी लगतीं | तत् | ८. | फिर तो वे |
| वीक्ष्य | ७. | उन्हें देखकर | मातुः | १०. | यशोदा माता को |
| कौमार | ३. | बचपन की | इति ह ऊचुः | १२. | इस प्रकार कहने लगतीं |
| चापलम् । | ४. | चञ्चलतायें | समागताः ॥ | ९. | इकट्ठी होकर |

श्लोकार्थ—निश्चय ही श्रीकृष्ण की बचपन की चञ्चलतायें गोपियों को बड़ी अच्छी लगतीं । उन्हें देखकर फिर तो वे इकट्ठी होकर यशोदा माता को सुना-सुनाकर इस प्रकार कहने लगतीं ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

**वत्सान् मुञ्चन् क्वचिदसमये क्रोशसंजातहासः**
**स्तेयं स्वाद्वत्त्यथ दधि पयः कल्पितैः स्तेययोगैः ।**
**मर्कान् भोक्ष्यन् विभजति स चेन्नात्ति भाण्डं भिनत्ति ।**
**द्रव्यालाभे स गृहकुपितो यात्युपक्रोश्य तोकान् ॥२६॥**

पदच्छेद— वत्सान् मुञ्चन् क्वचित् असमये क्रोश संजात हासः ।
स्तेयम् स्वादु अत्ति अथ दधि पयः कल्पितैः स्तेय योगैः ।
मर्कान् भोक्ष्यन् विभजति सः चेत् नात्ति भाण्डम् भिनत्ति ।
द्रव्य अलाभे सः गृह कुपितः याति उपक्रोश्य तोकान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वत्सान् | ३. | बछड़ों को | मर्कान् | १६. | बन्दरों को |
| मुञ्चन् | ४. | खोल देता है | भोक्ष्यन् | २०. | खिलाकर |
| क्वचित् | १. | कभी कभी यह | विभजति | २१. | सब बाँट देता है |
| असमये | २. | असमय में ही | सः | १६. | वह |
| क्रोश संजात | ५. | हमारे क्रोध करने पर | चेत् | १७. | यदि खाता तो ठीक था पर |
| हासः | ६. | हँसने लगता है | नात्ति | १८. | खाता नहीं है अपितु |
| स्तेयम् | १४. | चुरा चुराकर | भाण्डम् | २२. | पात्रों को भी |
| स्वादु | ११. | स्वादिष्ठ | भिनत्ति | २३. | तोड़ डालता है |
| अत्ति | १५. | खाया करता है | द्रव्य | २४. | घर में कोई वस्तु |
| अथ | ७. | और कभी यह | अलाभे | २५. | न मिलने पर |
| दधि | १३. | दही | सः | २६. | यह |
| पयः | १२. | दूध | गृह कुपितः | २७. | घर वालों पर खीझता है |
| कल्पितैः | १०. | करके | याति | ३०. | भाग जाता है |
| स्तेय | ८. | चोरी के | उपक्रोश्य | २६. | रुलाकर |
| योगैः । | ६. | बड़े उपाय | तोकान् ॥ | २८. | और बच्चों को |

श्लोकार्थ—अरी यशोदा जी ! कभी कभी यह असमय में ही बछड़ों को खोल देता है । हमारे क्रोध करने पर हँसने लगता है । और कभी यह चोरी के बड़े उपाय करके स्वादिष्ठ दूध और दही खाया करता है । यह यदि खाता तो ठीक था । पर खाता नहीं है अपितु बन्दरों को खिलाकर सब बाँट देता है । पात्रों को भी फोड़ डालता है । घर में कोई वस्तु न मिलने पर यह घर वालों पर खीझता है और बच्चों को रुलाकर भाग जाता है ॥

## त्रिंशः श्लोकः

हस्ताग्राह्ये रचयति विधिं पीठकोलूखलाद्यै-
छिद्रं ह्यन्तर्निहितवयुनः शिक्यभाण्डेषु तद्वित् ।
ध्वान्तागारे धृतमणिगणं स्वाङ्गमर्थप्रदीपं
काले गोप्यो यर्हि गृहकृत्येषु सुव्यग्रचित्ताः ॥३०॥

पदच्छेद— हस्त अग्राह्ये रचयति विधिम् पीठक उलूखल आद्यैः
छिद्रम् हि अन्तः निहित वयुनः शिक्यभाण्डेषु तत् वित् ।
ध्वान्त आगारे धृतमणि गणम् स्व अङ्गम् अर्थ प्रदीम्
काले गोप्याः यर्हि गृहकृत्येषु सुव्यग्र चित्ताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हस्त | १. | हाथ की | ध्वान्त | १६. | अन्धकार युक्त |
| अग्राह्ये | २. | पहुँच से दूर रखने पर | आगारे | १७. | घर में |
| रचयति | ७. | कर लेता है | धृत | २०. | धारण किये हुये |
| विधिम् | ६. | अनेक उपाय | मणि | २१. | मणियों के |
| पीठक | ३. | पीढ़ा और | गणम् | २२. | आभूषण और |
| उलूखलः | ४. | ऊखल | स्व | २३. | अपने |
| आद्यैः | ५. | आदि रख कर | अङ्गम् | २४. | अङ्ग की कान्ति से पा लेता है । |
| छिद्रम् | १५. | उनमें छेद कर देता है | अर्थ | १८. | वस्तुओं को |
| हि अन्तः | १२ | अन्दर | प्रदीपम् | १९. | प्रकाशित करने वाले |
| निहित | १३. | रखी हुई वस्तुओ को | काले | ३०. | समय पाकर अपना काम बना लेता है |
| वयुनः | १४. | जानने वाला यह | गोप्याः | २६. | गोपियों का |
| शिक्य | ८. | छींके पर रखे | यर्हि | २५. | और जब |
| भाण्डेषु | ९. | पात्रों को और | गृहकृत्येषु | २८. | गृह कार्यों में |
| तत् | १०. | उनको | सुव्यग्र | २९. | व्यस्त रहता तब |
| वित् । | ११. | जानकर | चित्ताः ॥ | २७. | मन |

श्लोकार्थ— अरी यशोदा जी ! हाथ की पहुँच से दूर रखने पर पीढा और ऊखल आदि रख कर अनेक उपाय कर लेता है । छीके पर रखे पात्रों को और उनको जानकर अन्दर रखी हुई वस्तुओं को जानने वाला यह उन पात्रों में छेद कर देता है । अन्धकार युक्त घर में वस्तुओं को प्रकाशित करने वाले धारण किये हुये मणियों के आभूषण और अपने अङ्ग की कान्ति से पा लेता है । और जब गोपियों का मन गृह कार्यों में व्यस्त रहता है तब समय पाकर अपना काम बना लेता है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**एवं धाष्टर्यान्युशति कुरुते मेहनादीनि वास्तौ**
**स्तेयोपायैर्विरचितकृतिः सुप्रतीको यथाऽऽस्ते ।**
**इत्थं स्त्रीभिः सभयनयनश्रीमुखालोकिनीभि-**
**र्व्याख्यातार्था प्रहसितमुखी न ह्युपालब्धुमैच्छत् ॥३१॥**

पदच्छेद— एवम् धाष्टर्यानि उशति कुरुते मेहन आदीनि वास्तौ
स्तेय उपायैः विरचित कृतिः सुप्रतीकः यथा आस्ते ।
इत्थम् स्त्रीभिः सभयनयन श्रीमुख आलोकिनीभिः
व्याख्यात अर्था प्रहसित मुखी न हि उपालब्धुम् ऐच्छत् ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | इत्थम् | १५. | इस प्रकार |
| धाष्टर्यानि | २. | ढिठाई की | स्त्रीभिः | १४. | गोपियों के |
| उशति | ३. | बातें करता है | सभयनयन | ११. | भयभीत नेत्रों से युक्त |
| कुरुते | ६. | कर देता है | श्रीमुख | १२. | कान्तिमय मुख को |
| मेहन आदीनि | ५. | मूत्रादि | आलोकिनीभिः | १३. | देखने लगीं |
| वास्तौ | ४. | स्वच्छ घरों में | व्याख्यातअर्था | १६. | बातें कहने पर |
| स्तेय उपायैः | ७. | चोरी का उपाय करके | प्रहसितमुखी | १७. | हँसती हुई माँ यशोदा |
| विरचितकृतिः | ८. | अपना काम बनाता है और यहाँ | न हि | २०. | न कर सकीं |
| सुप्रतीकः यथा | ९. | साधु के समान | उपालब्धुम् | १८. | उलाहना तक देने को |
| आस्ते । | १०. | खड़ा है (श्रीकृष्ण के) | ऐच्छत् ।। | १०. | इच्छा |

श्लोकार्थ—इस प्रकार ढिठाई की बातें करता है। स्वच्छ घरों में मूत्रादि कर देता है। चोरी के उपाय करके अपना काम बनाता है। और यहाँ साधु के समान खड़ा है। श्रीकृष्ण के भयभीत नेत्रों से युक्त कान्तिमय मुख को देखने लगीं। गोपियों के इस प्रकार बातें कहने पर हंसती हुई माँ यशोदा उलाहना तक देने की इच्छा न कर सकीं ।।

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**एकदा क्रीडमानास्ते रामाद्या गोपदारकाः ।**
**कृष्णो मृदं भक्षितवानिति मात्रे न्यवेदयन् ॥३२॥**

पदच्छेद— एकदा क्रीडमानास्ते राम आद्या गोप दारकाः
कृष्णो मृदम् भक्षितवान् इति मात्रे न्यवेदयन् ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकदा | १. | एक बार | कृष्णो | ८. | श्रीकृष्ण ने |
| क्रीडमानाः | ५. | खेल रहे थे कि बालकों ने | मृदम् | ९. | मिट्टी |
| ते राम | २. | वे श्रीकृष्ण बलराम | भक्षितवान् | १०. | खाई है |
| आद्याः | ३. | आदि | इति मात्रे | ६. | ऐसा माँ यशोदा से |
| गोपदारकाः | ४. | गोप बालकों के साथ | न्यवेदयन् ।। | ७. | बताया कि |

श्लोकार्थ—एक बार वे श्रीकृष्ण बलराम आदि गोपबालकों के साथ खेल रहे थे कि बालकों ने ऐसा माँ यशोदा से बताया कि श्रीकृष्ण ने मिट्टी खाई ।।

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**सा गृहीत्वा करे कृष्णमुपालभ्य हितैषिणी ।**
**यशोदा भयसम्भ्रान्तप्रेक्षणाक्षमभाषत ॥३३॥**

पदच्छेद— सा गृहीत्वा करे कृष्णम् उपालभ्य हितैषिणी ।
यशोदा भय सम्भ्रान्त प्रेक्षण अक्षम् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | २. | माँ | यशोदा | ३. | यशोदा ने |
| गृहीत्वा | १०. | पकड़कर | भय | ४. | भय के कारण |
| करे | ९. | हाथ | सम्भ्रान्त | ५. | चञ्चल |
| कृष्णम् | ८. | श्रीकृष्ण का | प्रेक्षण | ६. | दृष्टि युक्त |
| उपालभ्य | ११. | डाँट कर | अक्षम् | ७. | नेत्रों वाले |
| हितैषिणी । | १. | हितचिन्तक | अभाषत ॥ | १२. | कहा |

श्लोकार्थ—हितचिन्तक माँ यशोदा ने भय के कारण चञ्चल दृष्टि युक्त नेत्रों वाले श्रीकृष्ण का हाथ पकड़ कर डाँटकर कहा ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**कस्मान्मृदमदान्तात्मन् भवान् भक्षितवान् रहः ।**
**वदन्ति तावका ह्येते कुमारास्तेऽग्रजोऽप्ययम् ॥३४॥**

पदच्छेद— कस्मान्मृदम्अदान्तात्मन् भवान् भक्षितवान् रहः ।
वदन्ति तावकाः हि एते कुमाराः ते अग्रजः अपि अयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कस्मात् | ५. | क्यों | वदन्ति | १२. | ऐसा ही कह रहे हैं |
| मृदम् | ४. | मिट्टी | तावकाः | ७. | तुम्हारे |
| अदान्तात्मन् | १. | हे नटखट ! | हि एते | ८. | ये |
| भवान् | ३. | तूने | कुमाराः | ९. | सखा और |
| भक्षितवान् | ६. | खायी है | ते अग्रजः अपि | ११. | तुम्हारे बड़े भाई बलदाऊ भी तो |
| रहः । | २. | अकेले में छिपकर | अयम् ॥ | १०. | ये |

श्लोकार्थ—हे नटखट ! अकेले में छिप कर तूने मिट्टी क्यों खायी है । तुम्हारे ये सखा और तुम्हारे बड़े भाई बलदाऊ भी तो ऐसा ही कह रहे हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— नाहं भक्षितवानम्ब सर्वे मिथ्याभिशंसिनः ।
यदि सत्यगिरस्तर्हि समक्षं पश्य मे मुखम् ॥३५॥

पदच्छेद— न अहम् भक्षितवान् अम्ब सर्वे मिथ्याऽभिशंसिनः ।
यदि सत्य गिरः तर्हि समक्षम् पश्य मे मुखम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| न | ३. मिट्टी नहीं | यदि | ८. | यदि इनकी |
| अहम् | २. मैंने | सत्य | १०. | सत्य हैं |
| भक्षितवान् | ४. खायी है | गिरः | ९. | बातें |
| अम्ब | १. हे माँ ! | तर्हि | ११. | तो |
| सर्वे | ५. ये सब | समक्षम् | १२. | प्रत्यक्ष रूप से |
| मिथ्या | ६. झूठ | पश्य | १४. | देख लो |
| अभिशंसिनः । | ७. बोल रहे हैं | मे मुखम् ॥ | १३. | मेरा मुख |

श्लोकार्थ—हे माँ ! मैंने मिट्टी नहीं खायी है । ये सब झूठ बोल रहे हैं । यदि इनकी बात सत्य हैं तो प्रत्यक्ष रूप से मेरा मुख देख लो ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

यद्येवं तर्हि व्यादेहीत्युक्तः स भगवान् हरिः ।
व्यादत्ताव्याहतैश्वर्यः क्रीडामनुजबालकः ॥३६॥

पदच्छेद— यदि एवम् तर्हि व्यादेहि इति उक्तः स भगवान् हरिः ।
व्यादत्त अव्याहत ऐश्वर्यः क्रीडा मनुज बालकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यदि | १. यदि | व्यादत्त | ७. | मुँह खोल दिया |
| एवम् तर्हि | २. ऐसी बात है तो | अव्याहत | ८. | हे परीक्षित् ! अत्यन्त |
| व्यादेहि | ३. मुँह खोल | ऐश्वर्यः | ९. | ऐश्वर्यशाली भगवान् तो |
| इति उक्तः | ४. माँ के ऐसा कहने पर | क्रीडा | १०. | लीला के लिये ही |
| सः भगवान् | ५. उन भगवान् | मनुज | ११. | मनुष्य के |
| हरिः । | ६. श्रीकृष्ण ने | बालकः ॥ | १२. | बालक बने हैं |

श्लोकार्थ—यदि ऐसी बात है तो मुँह खोल, माँ के ऐसा कहने पर उन भगवान् श्रीकृष्ण ने मुँह खोल दिया । हे परीक्षित् ! अत्यन्त ऐश्वर्यशाली भगवान् तो लीला के लिये ही मनुष्य के बालक बने हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

सा तत्र ददृशे विश्वं जगत् स्थास्नु च खं दिशः ।
साद्रिद्वीपाब्धिभूगोलं सवाय्वग्नीन्दुतारकम् ॥३७॥

पदच्छेद— सा तत्र ददृशे विश्वम् जगत् स्थास्नु च खम् दिशः ।
स अद्रि द्वीप अब्धि भूगोलम् सवायु अग्नि इन्दु तारकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | १. | उन यशोदा माँ ने | स | ६. | सहित |
| तत्र | २. | उनके मुँह में | अद्रिद्वीप | ७. | पहाड़ों द्वीप और |
| ददृशे | १४. | देखा | अब्धि | ८. | समुद्रों के |
| विश्वम् | ५. | सम्पूर्ण विश्व | भूगोलम् | १०. | सारी पृथ्वी |
| जगत् | ३. | चर | सवायु अग्नि | ११. | वायु सहित अग्नि |
| स्थास्नु च | ४. | और अचर | इन्दु | १२. | चन्द्रमा और |
| खम् दिशः । | ६. | आकाश और दिशायें | तारकम् ॥ | १३. | तारों के समुदाय के |

श्लोकार्थ—उन यशोदा माँ ने उनके मुँह में चर और अचर सम्पूर्ण विश्व, आकाश और दिशायें, पहाड़ों, द्वीप और समुद्रों के सहित सारी पृथ्वी, वायु के सहित अग्नि, चन्द्रमा और तारों के समुदाय को देखा ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

ज्योतिश्चक्रं जलं तेजो नभस्वान् वियदेव च ।
वैकारिकाणीन्द्रियाणि मनो मात्रा गुणास्त्रयः ॥३८॥

पदच्छेद— ज्योतिः चक्रम् जलम् तेजः नभस्वान् वियद् एव च ।
वैकारिकाणि इन्द्रयाणि मनः मात्रा गुणाः त्रयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्योतिः | १. | ज्योति | वैकारिकाणि | ७. | वैकारिक अहंकार के कार्य |
| चक्रम् | २. | मण्डल | इन्द्रियाणि | ८. | इन्द्रिय |
| जलम् तेजः | ३. | जल, तेज | मनः | ९. | मन |
| नभस्वान् | ४. | पवन | मात्रा | १०. | पञ्चतन्मात्रायें और |
| वियद् | ५. | वियत् | गुणाः | १२. | गुणों को देखा |
| एव च । | ६. | और | त्रयः ॥ | ११. | तीनों |

श्लोकार्थ—माँ यशोदा ने ज्योति मण्डल, जल तेज, पवन, वियत् और वैकारिक अहंकार के कार्य, इन्द्रिय, मन, पञ्चतन्मात्रायें और तीनों गुणों को देखा ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**एतद् विचित्रं सह जीवकालस्वभावकर्माशयलिङ्गभेदम् ।**
**सूनोस्तनौ वीक्ष्य विदारितास्ये व्रजं सहात्मानमवाप शङ्काम् ॥३९॥**

पदच्छेद— एतत् विचित्रम् सह जीवकाल स्वभाव कर्म आशय लिङ्ग भेदम् ।
सूनोः तनौ वीक्ष्य विदारित आस्ये व्रजम् सह आत्मानम् अवाप शङ्काम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एतत् | ७. यह | सूनोः तनौ | ११. | अपने पुत्र के थोड़े से |
| विचित्रम् | ८. विचित्र संसार के | वीक्ष्य | १४. | देखकर वे |
| सह | ४. साथ | विदारित | १२. | खुले हुये |
| जीवकाल | १. जीव, काल | आस्ये | १३. | मुँह में |
| स्वभावकर्म | २. स्वभाव, कर्म और | व्रजम् सह | ९. | सम्पूर्ण व्रज के साथ |
| आशय | ३. उनकी वासना के | आत्मानम् | १०. | अपने आप को भी |
| लिङ्ग | ५. शरीर आदि के द्वारा | अवाप | १६. | पड़ गयीं |
| भेदम् । | ६. विभिन्न रूपों में दीखने वाला | शङ्काम् ॥ | १५. | शङ्का में |

श्लोकार्थ—जीवकाल, स्वभाव, कर्म और उनकी वासना के साथ शरीरादि के द्वारा विभिन्न रूपों में दीखने वाला यह विचित्र संसार के और सम्पूर्ण व्रज के साथ अपने आप को भी अपने पुत्र के थोड़े से खुले हुये मुख में देखकर वे शङ्का में पड़ गईं ।।

## चत्वारिंशः श्लोकः

**किं स्वप्न एतदुत देवमाया किं वा मदीयो बत बुद्धिमोहः ।**
**अथो अमुष्यैव ममार्भकस्य यः कश्चनौत्पत्तिक आत्मयोगः ॥४०॥**

पदच्छेद— किम् स्वप्नः एतत् उत देवमाया किम् वा मदीयः बत बुद्धि मोहः ।
अथो अमुष्य एव मम अर्भकस्य यः कश्चन औत्पत्तिकः आत्मयोगः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| किम | १. क्या | अथो | ९. | अथवा |
| स्वप्नः एतत् | २. यह कोई स्वप्न है | अमुष्य एव | ११. | इस ही |
| उतदेवमाया | ३. अथवा भगवान् की माया है | मम् | १०. | मेरे |
| किम् वा | ५. कहीं | अर्भकस्य | १२. | बालक के पास |
| मदीयः | ६. मेरी | यः कश्चन | १३. | कोई |
| बत | ४. सम्भव है | औत्पत्तिकः | १४. | जन्म जात |
| बुद्धि | ७. बुद्धि में ही तो | आत्म | १५. | सिद्ध |
| मोहः । | ८. भ्रम नहीं है | योगः ॥ | १६. | योग |

श्लोकार्थ—क्या यह कोई स्वप्न है अथवा भगवान् की माया है। सम्भव है कहीं मेरी बुद्धि में ही तो भ्रम नहीं है। अथवा मेरे इस बालक के पास ही कोई जन्म जात सिद्ध योग है ।।

## एकविंशः श्लोकः

**अथो यथावन्न वितर्कगोचरं चेतोमनःकर्मवचोभिरञ्जसा ।**
**यदाश्रयं येन यतः प्रतीयते सुदुर्विभाव्यं प्रणतास्मि तत्पदम् ॥४१॥**

पदच्छेद— अथो यथावत् न वितर्क गोचरम् चेतः मनः कर्म वचोभिः अञ्जसा ।
यत् आश्रयम् येन यतः प्रतीयते सुदुर्विभाव्यम् प्रणता अस्मि तत् पदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथो | ४. तथा | | यत् | ९. | यह विश्व जिसके |
| यथावत् | ३. ठीक-ठीक | | आश्रयम् | १०. | आश्रित है |
| न | ८. नहीं होते | | येन यतः | ११. | जिसकी सत्ता से |
| वितर्क | ६. अनुमान के | | प्रतीयते | १२. | इसकी प्रतीति होती है |
| गोचरम् | ७. विषय | | सुदुर्विभाव्यम् | १३. | जो अचिन्त्य है |
| चेतः मनः कर्म | १. जो चित्त, मन, कर्म और | | प्रणत | १५. | प्रणाम |
| वचोभिः | २. वाणी के द्वारा | | अस्मि | १६. | करती हूँ |
| अञ्जसा । | ५. सुगमता से | | तत् पदम् ॥ | १४. | उनके चरणों में मैं |

श्लोकार्थ—जो चित्त, मन, कर्म और वाणी के द्वारा ठीक-ठीक तथा सुगमता से अनुमान के विषय नहीं होते, यह विश्व जिसके आश्रित है, जिनकी सत्ता से इसकी प्रतीति होती है और जो अचिन्त्य हैं उनके चरणों में मैं प्रणाम करती हूँ ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**अहं ममासौ पतिरेषु मे सुतो व्रजेश्वरस्याखिलवित्तपा सती ।**
**गोप्यश्च गोपाः सहगोधनाश्च मे यन्माययेत्थं कुमतिः स मे गतिः ॥४२॥**

पदच्छेद— अहम् मम असौ पतिः एष मे सुतः व्रजेश्वरस्य अखिल वित्तपा सती ।
गोप्यः च गोपाः सह गोधनाः च मे यत् मायया इत्थम् कुमति सः मे गतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहम् | १. यह मैं हूँ | | गोप्यः | ९. | ये गोपियाँ |
| मम | ३. मेरे | | च गोपाः | १०. | और गोप |
| असौ | २. यह | | सहगोधनः | ११. | गोधन सहित |
| पतिः | ४. पति तथा | | च मे | १२. | मेरे अधीन है |
| एष सुतः | ५. यह मेरा पुत्र है मैं | | यत् मायया | १३. | जिनकी माया से |
| व्रजेश्वरस्य | ६. व्रज के स्वामी की | | इत्थम् | १४. | इस प्रकार की |
| अखिलवित्तपा | ७. समन्त सम्पत्तियों को | | कुमतिः | १५. | कुमति ने मुझे घेरा है |
| सती । | ८. स्वामिनी हूँ | | सः मे गति ॥ | १६. | वही मेरे एक मात्र आश्रय |

श्लोकार्थ—यह मैं हूँ, यह मेरा पति तथा यह मेरा पुत्र है । मैं व्रज के स्वामी की समस्त सम्पत्तियों की स्वामिनी हूँ । ये गोपियाँ और गोप गोधन सहित मेरे अधीन हैं । जिनकी माया से इस प्रकार की कुमति ने मुझे घेरा है । वही मेरे एक मात्र आश्रय हैं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्थं विदिततत्त्वायां गोपिकायां स ईश्वरः ।
वैष्णवीं व्यतनोन्मायां पुत्रस्नेहमयीं विभुः ॥४३॥

पदच्छेद— इत्थम् विदित तत्त्वायाम् गोपिकायाम् सः ईश्वरः ।
वैष्णवीम् व्यतनोत् मायाम् पुत्र स्नेह मयीम् विभुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | १. | जब इस प्रकार वे | वैष्णवीम् | १०. | वैष्णवी |
| विदित | ४. | जान गईं तो | व्यतनोत् | १२. | हृदय में संचार कर दिया |
| तत्त्वायाम् | ३. | उनके तत्त्व को | मायाम् | ११. | माया का उनके |
| गोपिकायाम् | २. | यशोदा माता | पुत्र स्नेह | ८. | पुत्र स्नेह |
| सः | ५. | उन | मयीम् | ९. | मयी |
| ईश्वरः । | ७. | सर्वेश्वर ने | विभुः ॥ | ६. | सर्व व्यापक |

श्लोकार्थ—जब इस प्रकार वे यशोदा जी उनके तत्त्व को जान गईं तो उन सर्व व्यापक सर्वेश्वर ने पुत्र स्नेहमयी वैष्णवी माया का उनके हृदय में संचार कर दिया ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सद्यो नष्टस्मृतिर्गोपी साऽऽरोप्यारोहमात्मजम् ।
प्रवृद्धस्नेहकलिलहृदयाऽऽसीद् यथा पुरा ॥४४॥

पदच्छेद— सद्यो नष्ट स्मृतिः गोपी सा आरोप्य आत्मजम् ।
प्रवृद्ध स्नेह कलिल हृदया आसीत् यथा पुरा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सद्यो | ४. | तुरन्त | प्रवृद्ध | ९. | बढ़े हुये |
| नष्ट | ५. | नष्ट हो गयी | स्नेह | १०. | स्नेह के |
| स्मृतिः | ३. | स्मृति | कलिल | ११. | समुद्र से युक्त |
| गोपी | १. | यशोदा जी को | हृदय | १४. | हृदय वाली |
| सा | २. | उस घटना की | आसीत् | १५. | हो गयीं |
| आरोप्य | ८. | उठाकर वे | यथा | १३. | समान |
| आरोहम् । | ७. | गोद में | पुरा ॥ | १२. | पहले के |
| आत्मजम् । | ६. | अपने पुत्र को | | | |

श्लोकार्थ—यशोदा जी को उस घटना की स्मृति तुरन्त नष्ट हो गयी । अपने पुत्र को गोद में उठाकर वे बढ़े हुये स्नेह के समुद्र से युक्त पहले के समान हृदय वाली हो गईं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**त्रय्या चोपनिषद्भिश्च सांख्ययोगैश्च सात्वतैः ।**
**उपगीयमानमाहात्म्यं हरिं सामन्यतात्मजम् ॥४५॥**

पदच्छेद— त्रय्या च उपनिषद्भिः च सांख्ययोगैः च सात्वतैः ।
उपगीयमानमाहात्म्यम् हरिम् सा अमन्यत आत्मजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्रय्या च | १. | सारे वेद और | उपगीयमान | ८. | गाते हैं। |
| उपनिषद्भिः | २. | उपनिषद् | माहात्म्यम् | ७. | जिनके माहात्म्य को |
| च | ३. | और | हरिम् | ९. | उन्हीं भगवान् को |
| सांख्ययोगैः | ४. | सांख्य-योग | सा | १०. | वे |
| च | ५. | और | अमन्यत | १२. | मानती थीं |
| सात्वतैः । | ६. | भक्तजन | आत्मजम् ॥ | ११. | अपना पुत्र |

श्लोकार्थ—सारे वेद और उपनिषद् और सांख्ययोग और भक्तजन जिनके माहात्म्य को गाते हैं, उन्हीं भगवान् को वे अपना पुत्र मानती थीं ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**नन्दः किमकरोद् ब्रह्मन् श्रेय एवं महोदयम् ।**
**यशोदा च महाभागा पपौ यस्याः स्तनं हरिः ॥४६॥**

पदच्छेद— नन्दः किम् अकरोत् ब्रह्मन् श्रेयः एवम् महोदयम् ।
यशोदा च महाभागा पपौ यस्याः स्तनम् हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्दः | २. | नन्द बाबा ने | यशोदा | १०. | यशोदा जी ने कौन सी तपस्या की थी |
| किम् | ४. | कौन सा | च | ८. | और |
| अकरोत् | ७. | किया था | महाभागा | ९. | सौभाग्यमयी |
| ब्रह्मन् | १. | हे भगवन् ! | पपौ | १४. | पान किया |
| श्रेयः | ५. | मङ्गलमय | यस्याः | १२. | उनके |
| एवम् | ३. | ऐसा | स्तनम् | १३. | स्तनों का |
| महोदयम् । | ६. | बड़ा साधन | हरिः ॥ | ११. | स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! नन्द बाबा ने ऐसा कौन सा मङ्गलमय बड़ा साधन किया था। और सौभाग्यमयी यशोदा जी ने कौन सी तपस्या की थी जो स्वयं भगवान् श्री कृष्ण ने उनके स्तनों का पान किया था ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**पितरौ नान्वविन्देतां कृष्णोदारार्भकेहितम् ।**
**गायन्त्यद्यापि कवयो यल्लोकशमलापहम् ॥४७॥**

पदच्छेद— पितरौ न अन्व विन्देताम् कृष्ण उदार अर्भक ईहितम् ।
गायन्ति अद्य अपि कवयः यत् लोक शमल अपहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **पितरौ** | ५. | जो लीलायें माता पिता को | गायन्ति | १३. | गायन करते हैं |
| **न** | ८. | नहीं मिली | अद्य | ११. | आज |
| **अन्व** | ६. | देखने तक | अपि | १२. | भी |
| **विन्देताम्** | ७. | को भी | कवयः | १०. | कविजन |
| **कृष्ण** | ३. | श्री कृष्ण द्वारा | यत् | ९. | जिनका |
| **उदार** | १. | उदार | लोक | १४. | जिनसे लोगों के |
| **अर्भक** | २. | बालक | शमल | १५. | कलुष |
| **ईहितम् ।** | ४. | की गयी | अपहम् ॥ | १६. | धुल जाते हैं |

श्लोकार्थ—उदार बालक श्री कृष्ण द्वारा की गयी जो लीलायें माता-पिता को देखने तक को भी नहीं मिलीं। जिनका कविजन आज भी गायन करते हैं। जिनसे लोगों के कलुष धुल जाते हैं ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**द्रोणो वसूनां प्रवरो धरया सह भार्यया ।**
**करिष्यमाण आदेशान् ब्रह्मणस्तमुवाच ह ॥४८॥**

पदच्छेद— द्रोणः वसूनाम् प्रवरः धरया सह भार्यया ।
करिष्यमाणः आदेशान् ब्रह्मणः तम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **द्रोणः** | ४. | द्रोण ने | करिष्यमाणः | १०. | पालन करते हुए |
| **वसूनाम्** | २. | वसुओं में | आदेशान् | ९. | आदेशों का |
| **प्रवरः** | ३. | श्रेष्ठ | ब्रह्मणः | ८. | ब्रह्मा जी के |
| **धरया** | ६. | धरा के | तम् | ११. | उनसे |
| **सह** | ७. | साथ | उवाच | १२. | कहा |
| **भार्यया ।** | ५. | अपनी पत्नी | ह ॥ | १. | निश्चय ही |

श्लोकार्थ—निश्चय ही वसुओं में श्रेष्ठ द्रोण ने अपनी पत्नी धरा के साथ ब्रह्मा जी के आदेशों का पालन करते हुए उनसे कहा ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**जातयोर्नौ महादेवे भुवि विश्वेश्वरे हरौ ।**
**भक्तिः स्यात् परमा लोके ययाञ्जो दुर्गतिं तरेत् ॥४९॥**

पदच्छेद— जातयोर्नौ महादेवे भुवि विश्वेश्वरे हरौ ।
भक्तिः स्यात् परमा लोके यया अञ्जः दुर्गतिम् तरेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जातयोर्नौ | २. जन्म लेवें | स्यात् | ८. होवे |
| महादेवे | ४. भगवान् | परमा | ६. हमारी अनन्य |
| भुवि | १. जब हम पृथ्वी पर | लोके | ९. संसार में लोग |
| विश्वेश्वरे | ३. तब जगदीश्वर | यया अञ्जः | १०. जिससे सरलता से |
| हरौ । | ५. श्रीकृष्ण में | दुर्गतिम् | ११. दुर्गतियों को |
| भक्तिः | ७. भक्ति | तरेत् ॥ | १२. पार कर जाते हैं |

श्लोकार्थ—जब हम पृथ्वी पर जन्म लेवें तब जगदीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण में हमारी अनन्य भक्ति होवे । जिससे संसार में लोग सरलता से दुर्गतियों को पार कर जाते हैं ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**अस्त्वित्युक्तः स भगवान् व्रजे द्रोणो महायशाः ।**
**जज्ञे नन्द इति ख्यातो यशोदा सा धराभवत् ॥५०॥**

पदच्छेद— अस्तु इति उक्तः सः भगवान् व्रजे द्रोणः महायशाः ।
जज्ञे नन्दः इति ख्यातः यशोदा सा धरा अभवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अस्तु | १. ऐसा ही होवे | जज्ञे | ८. पैदा किया |
| इति उक्तः | २. इस प्रकार कहकर | नन्दः | ९. वे नन्द |
| सः | ३. उन | इति | १०. इस नाम से |
| भगवान् | ४. भगवान् ने | ख्यातः | ११. प्रसिद्ध हुये |
| व्रजे | ७. व्रज में | यशोदा | १३. यशोदा |
| द्रोणः | ६. द्रोण को | सा धरा | १२. उनकी पत्नी धरा |
| महायशाः । | ५. परमयशस्वी | अभवत् ॥ | १४. हुई |

श्लोकार्थ—ऐसा ही होवे इस प्रकार कहकर उन भगवान् ने परम यशस्वी द्रोण को व्रज में पैदा किया । वे नन्द इस नाम से प्रसिद्ध हुये । उनकी पत्नी धरा यशोदा हुई ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**ततो भक्तिर्भगवति पुत्रीभूते जनार्दने ।**
**दम्पत्योर्नितरामासीद् गोपगोपीषु भारत ॥५१॥**

पदच्छेद— ततः भक्तिः भगवति पुत्री भूते जनार्दने ।
दम्पत्योः नितराम् आसीत् गोप गोपीषु भारत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | २. | तब | दम्पत्योः | ६. | पति-पत्नी |
| भक्तिः | १०. | प्रीति | नितराम् | ६. | अत्यधिक |
| भगवति | ८. | भगवान् में | आसीत् | ११. | हुई |
| पुत्री | ४. | पुत्र | गोप | ७. | नन्द और |
| भूते | ५. | होने पर उनमें | गोपीषु | ८. | यशोदा की |
| जनार्दने । | ३. | भगवान् | भारत ॥ | १. | हे परीक्षित् |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तब भगवान् पुत्र होने पर उनमें पति पत्नी नन्द और यशोदा की अत्यधिक प्रीति हुई ॥

## द्वापञ्चाशः श्लोकः

**कृष्णो ब्रह्मण आदेशं सत्यं कर्तुं व्रजे विभुः ।**
**सहरामो वसंश्चक्रे तेषां प्रीतिं स्वलीलया ॥५२॥**

पदच्छेद— कृष्णः ब्रह्मणः आदेशम् सत्यम् कर्तुम् व्रजे विभुः ।
सहरामः वसन् चक्रे तेषाम् प्रीतिम् स्व लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णः | ६. | श्रीकृष्ण | सहरामः | ७. | बलराम जी के साथ |
| ब्रह्मणः | १. | ब्रह्मा जी की | वसन् | ६. | रहकर |
| आदेशम | २. | बात को | चक्रे | १४. | करने लगे |
| सत्यम् | ३. | सत्य | तेषाम् | १०. | उन्हें |
| कर्तुम् | ४. | करने के लिए | प्रीतिम् | १३. | आनन्दित |
| व्रजे | ८. | व्रज में | स्व | ११. | अपनी |
| विभुः । | ५. | भगवान् | लीलया ॥ | १२. | लीला से |

श्लोकार्थ— ब्रह्मा जी की बात सत्य करने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण बलराम जी के साथ व्रज में रहकर उन्हें अपनी लीला से आनन्दित करने लगे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
विश्वरूपदर्शने अष्टमः अध्यायः ॥८॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### नवमः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एकदा गृहदासीषु यशोदा नन्दगेहिनी।**
**कर्मान्तरनियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयं दधि ॥१॥**

**पदच्छेद—** एकदा गृह दासीषु यशोदा नन्द गेहिनी।
कर्म अन्तर नियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयम् दधि ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकदा | १. | एक बार | कर्म | ८. | कामों में |
| गृह | ५. | घर की | अन्तर | ७. | दूसरे |
| दासीषु | ६. | दासियों को तो | नियुक्तासु | ९. | लगा दिया और |
| यशोदा | ४. | यशोदा जी ने | निर्ममन्थ | १२. | मथने लगीं |
| नन्द | २. | नन्द की | स्वयम् | १०. | स्वयं |
| गेहिनी। | ३. | पत्नी | दधि ॥ | ११. | दधि |

**श्लोकार्थ—**एक बार नन्द की पत्नी यशोदा जी ने घर की दासियों को तो दूसरे कामों में लगा दिया। और स्वयं दधि मथने लगीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**यानि यानीह गीतानि तद्बालचरितानि च।**
**दधिनिर्मन्थने काले स्मरन्ती तान्यगायत ॥२॥**

**पदच्छेद—** यानि यानि इह गीतानि तत् बाल चरितानि च।
दधि निर्मन्थने काले स्मरन्ती तानि अगायत ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यानि | ४. | जो | दधि | ८. | दधि |
| यानि | ५. | जो | निर्मन्थने | ९. | मथते |
| इह | २. | यहाँ मैंने | काले | १०. | समय |
| गीतानि | ७. | गाये हैं | स्मरन्ती | १२. | स्मरण करती हुई |
| तत् | ३. | उन श्रीकृष्ण के | तानि | ११. | उनका |
| बालचरितानि | ६. | बाल चरित्र | अगायत ॥ | १३. | उन्हें गाने लगीं |
| च। | १. | और | | | |

**श्लोकार्थ—**और यहाँ मैंने उन श्रीकृष्ण के जो जो बाल चरित्र गाये हैं। दधि मथते समय उनका स्मरण करती हुई उन्हें गाने लगीं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**क्षौमं वासः पृथुकटितटे बिभ्रती सूत्रनद्धं**
**पुत्रस्नेहस्नुतकुचयुगं जातकम्पं च सुभ्रूः ।**
**रज्ज्वाकर्षश्रमभुजचलत्कङ्कणौ कुण्डले च**
**स्विन्नं वक्त्रं कबरविगलन्मालती निर्ममन्थ ॥३॥**

पदच्छेद—क्षौमम् पृथु कटितटे बिभ्रती सूत्रनद्धम् पुत्र स्नेह स्नुत कुचयुगम् जात कम्पम् च सुभ्रूः ।
रज्जु आकर्ष श्रमभुज चलत् कङ्कणौ कुण्डले च स्विन्नम् वक्त्रम् कबरविगलत् मालती निर्ममन्थ ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्षौमम्वासः | ४. | रेशमी वस्त्र | रज्जुआकर्ष | १०. | नेती खींचने के कारण |
| पृथु | १. | वे स्थूल | श्रमभुज | ११. | बाँहें थक गयीं थीं |
| कटितटे | २. | कटि भाग में | चलत् | १४. | हिल रहे थे |
| बिभ्रती | ५. | धारण किये थीं | कङ्कणौ | १२. | हाथों में कङ्कण |
| सूत्रनद्धम् | ३. | सूत से बँधा हुआ | कुण्डले च | १३. | और कानों में कुण्डल |
| पुत्र स्नेह | ६. | पुत्र स्नेह की अधिकता से | स्विन्नम् | १६. | पसीने की बूँदें झलक रही थीं |
| स्नुत | ८. | दूध टपक रहा था | वक्त्रम् | १५. | मुँह पर |
| कुचयुगम् | ७. | दोनों स्तनों से | कबर विगलत् | १८. | उनकी चोटी से बिखर रहे थे ऐसी |
| जातकम्पम् च | ९. | और वे कांप रहे थे | मालती | १७. | मालती के पुष्प |
| सुभ्रूः । | १९. | सुन्दर भौंहों वाली | निर्ममन्थ ॥ | २०. | यशोदा जी दही मथ रही थीं |

श्लोकार्थ—वे स्थूल कटि भाग में सूत से बँधा हुआ रेशमी वस्त्र धारण किये थीं । पुत्र स्नेह की अधिकता से दोनों स्तनों से दूध टपक रहा था । और वे कांप रहे थे । नेती खींचने के कारण बांहें थक गई थीं । हाथों में कङ्कण और कानों में कुण्डल हिल रहे थे । मुँह पर पसीने की बूँदें झलक रही थीं । मालती के पुष्प उनकी चोटी से बिखर रहे थे । ऐसी सुन्दर भौंहों वाली यशोदा जी दही मथ रही थीं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तां स्तन्यकाम आसाद्य मथ्नन्तीं जननीं हरिः ।**
**गृहीत्वा दधिमन्थानं न्यषेधत् प्रीतिमावहन् ॥४॥**

पदच्छेद— ताम् स्तन्यकामः आसाद्य मथ्नन्तीम् जननीम् हरिः ।
गृहीत्वा दधि मन्थानम् न्यषेधत् प्रीतिम् आवहन् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम् | ३. | उन | गृहीत्वा | ११. | पकड़कर उन्हें |
| स्तन्यकामः | २. | स्तन पीने के लिये | दधि | ९. | दही की |
| आसाद्य | ६. | पास जाकर | मन्थानम् | १०. | मथानी |
| मथ्नन्तीम् | ४. | दही मथती हुई | न्यषेधत् | १२. | मथने से रोक दिया |
| जननीम् | ५. | अपनी माँ यशोदा के | प्रीतिम् | ७. | हृदय में प्रेम को |
| हरिः । | १. | श्रीकृष्ण ने | आवहन् ॥ | ८. | बढ़ाते हुये |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने स्तन पीने के लिये उन दही मथती हुई अपनी माँ यशोदा के पास जाकर हृदय में प्रेम को बढ़ाते हुये दही की मथानी पकड़कर उन्हें मथने से रोक दिया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**तमङ्कमारूढमपाययत् स्तनं स्नेहस्नुतं सस्मितमीक्षती मुखम् ।**
**अतृप्तमुत्सृज्य जवेन सा ययावुत्सिच्यमाने पयसि त्वधिश्रिते ॥५॥**

पदच्छेद— तम् अङ्कम् आरूढम् अपाययत् स्तनम् स्नेहस्नुतम् सस्मितम् ईक्षती मुखम् ।
अतृप्तम् उत्सृज्य जवेन सा ययौ उत्सिच्यमाने पयसि तु अधिश्रिते ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | वे श्री कृष्ण माँ यशोदा की | अतृप्तम् | १३. | श्री कृष्ण को अतृप्त ही |
| अङ्कम् आरूढम् | २. | गोद में चढ़ गये | उत्सृज्य | १४. | छोड़कर |
| अपाययत् | ५. | पिलाने लगी (और) | जवेन | १५. | वेग पूर्वक |
| स्तनम् | ४. | स्तनों के दूध को माँ | सा | १२. | वे माँ यशोदा |
| स्नेहस्नुतम् | ३. | वात्सल्य स्नेह से झरते हुये | ययौ | १६. | अंगीठी की ओर दौड़ीं |
| सस्मितम् | ६. | मन्द मुस्कान के साथ | उत्सिच्यमाने | ११. | उफान आया और |
| ईक्षती | ८. | देखने लगीं और | पयसि तु | १०. | दूध में |
| मुखम् । | ७. | उनके मुख को | अधिश्रिते ।। | ९. | अंगीठी पर रखे हुये |

श्लोकार्थ—वे श्री कृष्ण माँ यशोदा की गोद में चढ़ गये । वात्सल्य स्नेह से झरते हुये स्तनों के दूध को माँ पिलाने लगीं । और मन्द मुसकान के साथ उनके मुख को देखने लगीं । तभी अंगीठी पर रखे हुये दूध में उफान आया और वे माँ यशोदा श्री कृष्ण को अतृप्त ही छोड़कर वेगपूर्वक अंगीठी की ओर दौड़ीं ।।

## षष्ठः श्लोकः

**सञ्जातकोपः स्फुरितारुणाधरं संदश्य दद्भिर्दधिमन्थभाजनम् ।**
**भित्त्वा मृषाश्रुर्दृषदश्मना रहो जघास हैयङ्गवमन्तरं गतः ॥६॥**

पदच्छेद— सञ्जातकोपः स्फुरित अरुण अधरम् संदश्य दद्भिः दधिमन्थ भाजनम् ।
भित्त्वा मृषा अश्रुः दृषद् अश्मना रहः जघास हैयङ्गवम् अन्तरं गतः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सञ्जातकोपः | १. | श्रीकृष्ण को कुछ क्रोध आ गया | भित्त्वा | १०. | फोड़ दिया (और) |
| स्फुरित | ४. | फड़कने लगे | मृषा | ११. | बनावटी |
| अरुण | २. | उनके लाल-लाल | अश्रुः | १२. | आँसू भरकर |
| अधरम् | ३. | होंठ | दृषद्अश्मना | ७. | पत्थर के टुकड़े से |
| संदश्य | ६. | दबाकर | रहः जघास | १६. | अकेले में खाने लगे |
| दद्भिः | ५. | उन्हें दाँतों से | हैयङ्गवम् | १५. | बासी मक्खन |
| दधिमन्थ | ८. | दही को मथने का | अन्तर | १३. | घर के अन्दर |
| भाजनम् । | ९. | मटका | गतः ।। | १४. | जाकर |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को कुछ क्रोध आ गया उनके लाल-लाल होठ फड़कने लगे । उन्हें दाँतों से दबाकर पत्थर के टुकड़े से दही मथने का मटका फोड़ दिया । और बनावटी आँसू भरकर घर के अन्दर जाकर बासी माखन खाने लगे ।।

## सप्तमः श्लोकः

**उत्तार्य गोपी सुश्रृतं पयः पुनः प्रविश्य संदृश्य च दध्यमत्रकम् ।**
**भग्नं विलोक्य स्वसुतस्य कर्म तज्जहास तं चापि न तत्र पश्यती ॥७॥**

पदच्छेद— उत्तार्य गोपी सुश्रृतम् पयः पुनः प्रविश्य संदृश्य च दधि अमत्रकम् ।
भग्नम् विलोक्य स्व सुतस्य कर्म तत् जहास तम् च अपि न तत्र पश्यती ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उत्तार्य | ३. | उतार कर | भग्नम् | ८. | फूटा हुआ |
| गोपी | १. | यशोदा जी | विलोक्य | १२. | जानकर |
| सुश्रृतम् पयः | २. | औंटे हुये दूध को | स्वसुतस्य | १०. | और अपने पुत्र के |
| पुनः | ४. | फिर दही | कर्म तत् | ११. | उस कर्म को |
| प्रविश्य | ५. | मथने के घर में आयी | जहास | १६. | हँसने लगीं |
| संदृश्य | ९. | देखकर | तम् च | १३. | और उन श्री कृष्ण को |
| च दधि | ६. | और वहाँ दही का | अपि | १४. | भी |
| अमत्रकम् । | ७. | पात्र | न तत्र पश्यती ॥ | १५. | वहाँ न देखकर |

श्लोकार्थ—यशोदा जी औंटे हुये दूध को उतार कर फिर दही मथने के घर में आयीं । और वहाँ दही कापात्र फूटा हुआ देखकर और अपने पुत्र के उस कर्म को जानकर और उन श्री कृष्ण कोभी वहाँ न देखकर हँसने लगीं ॥

## अष्टमः श्लोकः

**उलूखलाङ्घ्रे रुपरि व्यवस्थितं मर्काय कामं ददतं शिचि स्थितम् ।**
**हैयङ्गवं चौर्यविशङ्कितेक्षणं निरीक्ष्य पश्चात् सुतमागमच्छनैः ॥८॥**

पदच्छेद— उलूखल अङ्घ्रेः उपरि व्यवस्थितम् मर्काय कामम् ददतम् शिचि स्थितम् ।
हैयङ्गवम् चौर्य विशङ्कित ईक्षणम् निरीक्ष्य पश्चात् सुतम् आगमत् शनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उलूखल | २. | ऊखल के | हैयङ्गवम् | ७. | माखन |
| अङ्घ्रेः | १. | वे उलटे हुये | चौर्यविशङ्कित | १०. | वे चोरी से भयभीत |
| उपरि | ३. | ऊपर | ईक्षणम् | ११. | नेत्रों से |
| व्यवस्थितम् | ४. | खड़े हुये | निरीक्ष्य | १२. | इधर-उधर देख रहे थे |
| मर्काय कामम् | ८. | बन्दरों को खूब | पश्चात् | १३. | तभी पीछे से |
| ददतम् | ९. | लुटा रहे हैं | सुतम् | १५. | अपने पुत्र के पास |
| शिचि | ५. | छींके | आगमत् | १६. | जा पहुँची |
| स्थितम् । | ६. | पर का | शनैः ॥ | १४. | यशोदा जी धीरे-धीरे |

श्लोकार्थ—वे उलटे हुये ऊखल के ऊपर खड़े हुये छीके पर का माखन बन्दरों को खूब लुटा रहे थे। वे चोरी से भयभीत नेत्रों से इधर-उधर देख रहे थे । तभी पीछे से यशोदा जी धीरे-धीरे अपने पुत्र के पास जा पहुँचीं ॥

## नवमः श्लोकः

**तामात्तयष्टिं प्रसमीक्ष्य सत्वरस्ततोऽवरुह्यापससार भीतवत् ।**
**गोप्यन्वधावन्न यमाप योगिनां क्षमं प्रवेष्टुं तपसेरितं मनः ॥९॥**

पदच्छेद— ताम् आत्त यष्टिम् प्रसमीक्ष्य सत्वरः ततः अवरुह्य अपससार भीतवत् ।
गोपी अन्वधावत् न यम् आप योगिनाम् क्षमम् प्रवेष्टुम् तपसाईरितम् मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम् | ३. | उन यशोदा जी को | गोपी अन्वधावत् | १६. | यशोदा जी उन्हीं के पीछे दौड़ीं |
| आत्त | २. | हाथ में लिये हुये | न | १४. | नहीं |
| यष्टिम् | १. | छड़ी को | यम् | १२. | जिनमें |
| प्रसमीक्ष्य | ४. | देखकर | आप | १५. | बना पाते है |
| सत्वरः ततः | ५. | तत्काल ऊखल पर से | योगिनाम् | ९. | योगिजन |
| अवरुह्य | ६. | उतरकर वे श्रीकृष्ण | क्षमम् प्रवेष्टुम् | १३. | प्रवेश करने योग्य |
| अपससार | ८. | भाग खड़े हुये | तपसाईरितम् | १०. | तपस्या के द्वारा |
| भीतवत् । | ७. | भयभीत के समान | मनः ॥ | ११. | सूक्ष्म मन को |

श्लोकार्थ—छड़ी को हाथ में लिये हुये देखकर तत्काल ऊखल पर से उतरकर वे श्रीकृष्ण भयभीत के समान भाग खड़े हुये। योगिजन तपस्या के द्वारा सूक्ष्ममन को जिनमें प्रवेश करने योग्य नहीं बना पाते हैं। यशोदा जी उन्हीं श्रीकृष्ण के पीछे दौड़ीं ॥

## दशमः श्लोकः

**अन्वञ्चमाना जननी बृहच्चलच्छ्रोणीभराक्रान्तगतिः सुमध्यमा ।**
**जवेन विस्रंसितकेशबन्धनच्युतप्रसूनानुगतिः परामृशत् ॥१०॥**

पदच्छेद — अन्वञ्चमाना जननी बृहत् चलत् श्रोणी भर आक्रान्त गतिः सुमध्यमा ।
जवेन विस्रंसित केश बन्धन च्युत प्रसून अनुगतिः परामृशत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्वञ्चमाना | २. | पीछे दौड़ने लगीं | जवेन | ८. | वेग से दौड़ने के कारण |
| जननी | १. | माता यशोदा श्रीकृष्ण के | विस्रंसित | ११. | ढोली पड़ गई |
| बृहत् चलत् | ३. | बड़े बड़े एवं हिलते हुये | केश | ९. | चोटी की |
| श्रोणी | ४. | नितम्बों के कारण | बन्धन | १०. | गाँठ |
| भर | ५. | भार के कारण | च्युत | १२. | गिरते हुये |
| आक्रान्त | ७. | धीमी पड़ गई | प्रसून | १३. | पुष्पों से |
| गतिः | ६. | उनकी चाल | अनुगतिः | १४. | पीछा करती हुई |
| सुमध्यमा । | १५. | सुन्दरी यशोदा जी ने | परामृशत् ॥ | १६. | श्रीकृष्ण को पकड़ लिया |

श्लोकार्थ—माता यशोदा श्रीकृष्ण के पीछे दौड़ने लगीं। बड़े बड़े एवं हिलते हुये नितम्बों के भार के कारण उनकी चाल धीमी पड़ गयी। वेग से दौड़ने के कारण चोटी की गाँठ ढोली पड़ गई। गिरते हुये पुष्पों से पीछा करती हुई सुन्दरी यशोदा जी ने श्रीकृष्ण को पकड़ लिया ॥

## एकादशः श्लोकः

**कृतागसं तं प्ररुदन्तमक्षिणी कषन्तमञ्जन्मषिणी स्वपाणिना ।**
**उद्वीक्षमाणं भयविह्वलेक्षणं हस्ते गृहीत्वा भिषयन्त्यवागुरत् ॥११॥**

**पदच्छेद—** कृत आगसम् तम् प्ररुदन्तम् अक्षिणी कषन्तम् अञ्जन मषिणी स्वपाणिना ।
उद्वीक्षमाणम् भय विह्वल ईक्षणम् हस्ते गृहीत्वा भिषयन्ती अवागुरत् ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कृत** | २. | करने के कारण | **उद्वीक्षमाणम्** | १३. | ऊपर की ओर उठी हुई थीं |
| **आगसम्** | १. | अपराध | **भय** | १०. | पिटने के भय से |
| **तम्** | ४. | वे | **विह्वल** | ११. | व्याकुल |
| **प्ररुदन्तम्** | ३. | रोते हुये से | **ईक्षणम्** | १२. | आँखें |
| **अक्षिणी** | ६. | आँखें | **हस्ते** | १४. | श्रीकृष्ण का हाथ |
| **कषन्तम्** | ७. | मल रहे थे (तथा) | **गृहीत्वा** | १५. | पकड़कर |
| **अञ्जन** | ८. | मुँह पर काजल की | **भिषयन्ती** | १६. | डराते हुये माँ ने |
| **मषिणी** | ९. | स्याही फैल गयी थी | **अवागुरत् ॥** | १७. | उन्हें डांटा |
| **स्वपाणिना ।** | ५. | अपने हाथ से | | | |

**श्लोकार्थ—**अपराध करने के कारण रोते हुये से वे अपने हाथ से आँखें मल रहे थे । तथा मुँह पर काजल की स्याही फैल गयी थी । पिटने के भय से व्याकुल आँखें ऊपर की ओर उठी हुईं थीं । श्रीकृष्ण का हाथ पकड़कर डराते हुये माँ ने उन्हें डाँटा ॥

## द्वादशः श्लोकः

**त्यक्त्वा यष्टिं सुतं भीतं विज्ञायार्भकवत्सला ।**
**इयेष किल तं बद्धुं दाम्नातद्वीर्यकोविदा ॥१२॥**

**पदच्छेद—** त्यक्त्वा यष्टिम् सुतम् भीतम् विज्ञाय अर्भक वत्सला ।
इयेष किल तम् बद्धुम् दाम्ना अतत् वीर्य कोविदा ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **त्यक्त्वा** | ७. | फेंक दी | **इयेष** | १२. | इच्छा की |
| **यष्टिम्** | ६. | उन्होंने छड़ी | **किल** | ८. | निश्चय ही तब |
| **सुतम्** | १. | अपने पुत्र को | **तम्** | १०. | उस बालक को |
| **भीतम्** | २. | भयभीत | **बद्धुम्** | ११. | बाँधने की |
| **विज्ञाय** | ३. | जानकर | **दाम्ना** | ९. | उन्होंने रस्सी से |
| **अर्भक** | ४. | बालक के प्रति | **अतत्वीर्य** | १३. | वे उसके ऐश्वर्य को नहीं |
| **वत्सला ।** | ५. | वात्सल्य भाव के कारण | **कोविदा ॥** | १४. | जानती थीं |

**श्लोकार्थ—**अपने पुत्र को भयभीत जानकर बालक के प्रति वात्सल्य भाव के कारण उन्होंने छड़ी फेंक दी । निश्चय ही तब, उन्होंने रस्सी से उस बालक को बाँधने की इच्छा की । वे उसके ऐश्वर्य को नहीं जानती थीं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**न चान्तर्न बहिर्यस्य न पूर्वं नापि चापरम् ।**
**पूर्वापरं बहिश्चान्तर्जगतो यो जगच्च यः ॥१३॥**

पदच्छेद— न च अन्तः न बहिः यस्य न पूर्वम् न अपि च अपरम् ।
पूर्व अपरम् बहिः च अन्तः जगतः यः जगत् च यः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न च | ३. | और न | पूर्वं | १०. | पहले भी थे |
| अन्तः | ४. | भीतर है | अपरम् | ११. | बाद में भी रहेंगे |
| न | १. | जिसमें न | बहिः | १४. | बाहर भी है |
| बहिः | २. | बाहर है | च | १२. | और |
| यस्य | ५. | जिसमें | अन्तः | १३. | वे भीतर तो हैं ही |
| न पूर्वम् | ६. | न आदि है | जगतः यः | ९. | जगत् के जो |
| न अपि | ७. | न | जगत् | १५. | जगत् के रूप में भी |
| न अपरम् । | ८. | अन्त है | च यः ॥ | १६. | स्वयं वही है |

श्लोकार्थ—जिसमें न बाहर है, और न भीतर है जिसमें न आदि है न अन्त है । जो जगत् के पहले भी थे । बाद में भी रहेंगे और वे भीतर तो हैं ही, बाहर भी है । जगत् के रूप में भी स्वयं वही हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**तं मत्वाऽऽत्मजमव्यक्तं मर्त्यलिङ्गमधोक्षजम् ।**
**गोपिकोलूखले दाम्ना बबन्ध प्राकृतं यथा ॥१४॥**

पदच्छेद— तम् मत्वा आत्मजम् अव्यक्तम् मर्त्यलिङ्गम् अधोक्षजम् ।
गोपिका उलूखले दाम्ना बबन्ध प्राकृतम् यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ३. | उन्हीं भगवान् को | गोपिका | ६. | यशोदा रानी ने |
| मत्वा | ८. | समझकर | उलूखले | ११. | ऊखल में |
| आत्मजम् | ७. | अपना पुत्र | दाम्ना | १२. | रस्सी से |
| अव्यक्तम् | २. | अव्यक्त रूप | बबन्ध | १३. | बाँध दिया |
| मर्त्य | ४. | मनुष्य का सा | प्राकृतम् | ९. | साधारण मनुष्य के |
| लिङ्गम् | ५. | रूप धारण करने के कारण | यथा ॥ | १०. | समान |
| अधोक्षजम् । | १. | इन्द्रियों से परे | | | |

श्लोकार्थ—इन्द्रियों से परे अव्यक्तरूप उन्हीं भगवान् को मनुष्य का सा रूप धारण करने के कारण यशोदा रानी ने अपना पुत्र समझकर साधारण मनुष्य के समान ऊखल से बाँध दिया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

तद् दाम बध्यमानस्य स्वार्भकस्य कृतागसः।
द्व्यङ्गुलोनमभूत्तेन सन्दधेऽन्यच्च गोपिका ॥१५॥

पदच्छेद— तत् दाम बध्यमानस्य स्व अर्भकस्य कृत आगसः।
द्वि अङ्गुल ऊनम् अभूत् तेन सन्दधे अन्यत् च गोपिका ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ६. | उस | द्विअङ्गुल | ९. | वह दो अङ्गुल |
| दाम | ७. | रस्सी से | ऊनम् | १०. | छोटी |
| बध्यमानस्य | ८. | बाँधने लगीं तब | अभूत् तेन | ११. | पड़ गयी जिससे |
| स्व | ३. | अपने | सन्दधे | १४. | लाकर उसमें जोड़ी |
| अर्भकस्य | ४. | बालक को जब | अन्यत् | १३. | दूसरी रस्सी |
| कृत | २. | करने वाले | च | १२. | उन्होंने और |
| आगसः। | १. | अपराध | गोपिका ॥ | ५. | यशोदा जी |

श्लोकार्थ—अपराध करने वाले अपने बालक को जब यशोदा जी उस रस्सी से बाँधने लगीं तब वह दो अङ्गुल छोटी पड़ गयी। जिससे उन्होंने और दूसरी रस्सी लाकर उसमें जोड़ी ॥

## षोडशः श्लोकः

यदाऽऽसीत्तदपि न्यूनं तेनान्यदपि सन्दधे।
तदपि द्व्यङ्गुलं न्यूनं यद् यदादत्त बन्धनम् ॥१६॥

पदच्छेद— यदा आसीत् तत् अपि न्यूनम् तेन अन्यत् अपि सन्दधे।
तत् अपि द्वि अङ्गुलम् न्यूनम् यत् यदा आदत्त बन्धनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदा | १. | जब | तत् अपि | ८. | वह भी |
| आसीत् | ४. | पड़ गयी | द्विअङ्गुलम् | ९. | दो अङ्गुल |
| तत् अपि | २. | वह भी रस्सी | न्यूनम् | १०. | छोटी पड़ गयी इस प्रकार |
| न्यूनम् | ३. | छोटी | यत् | ११. | जो रस्सी |
| तेन | ५. | तब उसके साथ | यदा | १२. | जब |
| अन्यत् अपि | ६. | और भी | आदत्त | १४. | पड़ गयी |
| सन्दधे। | ७. | जोड़ी | बन्धनम् ॥ | १३. | जोड़ी गयी वह छोटी |

श्लोकार्थ—जब वह भी रस्सी छोटी पड़ गयी तब उसके साथ और भी जोड़ी। वह भी दो अङ्गुल छोटी पड़ गई, इस प्रकार जो रस्सी जब जोड़ी गई वह छोटी पड़ गयी ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**एवं स्वगेहदामानि यशोदा सन्दधत्यपि ।**
**गोपीनां सुस्मयन्तीनां स्मयन्ती विस्मिताभवत् ॥१७॥**

पदच्छेद— एवम् स्व गेहम् दामानि यशोदा सन्दधती अपि ।
गोपीनाम् सुस्मयन्तीनाम् स्मयन्ती विस्मिता अभवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस प्रकार | अपि । | ७. | भी जब वे श्रीकृष्ण को न बाँध सकीं |
| स्व | ३. | अपने | गोपीनाम् | ८. | तब गोपियाँ |
| गेहम् | ४. | घर की | सुस्मयन्तीनाम् | ६. | मुस्कराने लगीं और |
| दामानि | ५. | सारी रस्सियाँ | स्मयन्ती | १०. | वे स्वयं भी मुस्कराते हुये |
| यशोदा | १. | यशोदा जी द्वारा | विस्मिता | ११. | आश्चर्यचकित |
| सन्दधती | ६. | जोड़ देने पर | अभवत् ॥ | १२. | हो गयीं |

श्लोकार्थ—यशोदा जी द्वारा इस प्रकार अपने घर की सारी रस्सियाँ जोड़ देने पर भी जब वे श्रीकृष्ण को न बाँध सकीं। तब गोपियाँ मुस्कराने लगीं और वे स्वयं भी मुस्कराते हुये आश्चर्यचकित हो गयीं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**स्वमातुः स्विन्नगात्राया विस्रस्तकबरस्रजः ।**
**दृष्ट्वा परिश्रमं कृष्णः कृपयाऽऽसीत् स्वबन्धने ॥१८॥**

पदच्छेद— स्व मातुः स्विन्न गात्रायाः विस्रस्त कबर स्रजः ।
दृष्ट्वा परिश्रमम् कृष्णः कृपया आसीत् स्व बन्धने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्व | १. | अपनी | दृष्ट्वा | ६. | देखकर |
| मातुः | २. | माता का | परिश्रमम् | ८. | थकित अवस्था में |
| स्विन्न | ४. | पसीने से लथ-पथ और | कृष्णः | १०. | श्रीकृष्ण |
| गात्राया | ३. | शरीर | कृपया | ११. | अपनी कृपा से ही |
| विस्रस्त | ७. | गिरती हुई तथा | आसीत् | १४. | बँध गये |
| कबर | ५. | चोटी की | स्व | १२. | स्वयम् |
| स्रजः । | ६. | मालायें | बन्धने ॥ | १३. | बन्धन में |

श्लोकार्थ—अपनी माता के शरीर को पसीने से लथ-पथ और चोटी की मालायें गिरती हुई तथा थकित अवस्था में देखकर भगवान् श्रीकृष्ण अपनी कृपा से ही स्वयम् बन्धन में बँध गये ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

एवं संदर्शिता ह्यङ्ग हरिणा भृत्यवश्यता ।
स्ववशेनापि कृष्णेन यस्येदं सेश्वरं वशे ॥१९॥

पदच्छेद— एवम् संदर्शिता हि अङ्ग हरिणा भृत्य वश्यता ।
स्ववशेन अपि कृष्णेन यस्य इदम् स ईश्वरम् वशे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १०. | इस प्रकार | स्ववशेन | ७. | परम स्वतन्त्र होने पर |
| संदर्शिता | ११. | यह दिखा दिया कि | अपि | ८. | भी उन |
| हि अङ्ग | १. | हे परीक्षित् ! | कृष्णेन | ५. | श्रीकृष्ण |
| हरिणा | ९. | भगवान् ने | यस्य | ४. | जिन |
| भृत्य | १२. | मैं भक्तों के | इदम् | ३. | यह सम्पूर्ण जगत् |
| वश्यता । | १३. | अधीन हूँ | स ईश्वरम् | २. | ब्रह्मा और इन्द्र सहित |
| | | | वशे ॥ | ६. | वश में है |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! ब्रह्मा और इन्द्र सहित यह सम्पूर्ण जगत् जिन श्रीकृष्ण के वश में है । परम स्वतन्त्र होने पर भी उन भगवान् ने इस प्रकार यह दिखा दिया कि मैं भक्तों के अधीन हूँ ॥

## विंशः श्लोकः

नेमं विरिञ्चो न भवो न श्रीरप्यङ्गसंश्रया ।
प्रसादं लेभिरे गोपी यत्तत् प्राप विमुक्तिदात् ॥२०॥

पदच्छेद— न इमम् विरिञ्चः न भवः न श्रीः अपि अङ्ग संश्रया ।
प्रसादम् लेभिरे गोपी यत् तत् प्राप विमुक्तिदात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न इमम् | ८. | उसे नहीं पाया | प्रसादम् | ५. | कृपा प्रसाद |
| विरिञ्चः | ७. | ब्रह्मा ने | लेभिरे | १४. | प्राप्त किया |
| न भवः | ९. | न शंकर ने (और) | गोपी | १. | ग्वालिनी यशोदा ने |
| न श्रीः | १२. | लक्ष्मी ने | यत् | ३. | जो |
| अपि | १३. | भी नहीं | तत् | ४. | कुछ अनिर्वचनीय |
| अङ्ग | १०. | शरीर का | प्राप | ६. | प्राप्त किया |
| संश्रया । | ११. | आश्रय लेने वाली | विमुक्तिदात् ॥ | २. | मुक्तिदाता मुकुन्द से |

श्लोकार्थ—ग्वालिनी यशोदा ने मुक्तिदाता मुकुन्द से जो कुछ अनिर्वचनीय कृपा प्रसाद प्राप्त किया, उसे ब्रह्मा ने नहीं पाया, न शंकर ने और लक्ष्मी ने भी नहीं प्राप्त किया ॥

## एकविंशः श्लोकः

**नायं सुखापो भगवान् देहिनां गोपिकासुतः ।**
**ज्ञानिनां चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह ॥२१॥**

पदच्छेद— न अयम् सुखापः भगवान् देहिनाम् गोपिका सुतः ।
ज्ञानिनाम् च आत्मभूतानाम् यथा भक्ति मताम् इह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १४. | नहीं है | ज्ञानिनाम् | १३. | ज्ञानियों के लिए भी सुलभ |
| अयम् | १. | यह | च आत्म | ११. | आत्म |
| सुखापः | १०. | सुलभ है वैसे तो | भूतानाम् | १२. | स्वरूप |
| भगवान् | ४. | भगवान् श्रीकृष्ण | यथा | ५. | जिस प्रकार |
| देहिनाम् | ६. | शरीरधारियों के लिये | भक्ति | ७. | भक्ति युक्त |
| गोपिका | २. | गोपिका | मताम् | ८. | हृदय वाले |
| सुतः । | ३. | नन्दन | इह ॥ | ६. | इस लोक में |

श्लोकार्थ—यह गोपिका नन्दन भगवान् श्रीकृष्ण जिस प्रकार इस लोक में भक्ति युक्त हृदय वाले शरीर धारियों के लिए सुलभ हैं, वैसे तो आत्मस्वरूप ज्ञानियों के लिए भी सुलभ नही है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**कृष्णस्तु गृहकृत्येषु व्यग्रायां मातरि प्रभुः ।**
**अद्राक्षीदर्जुनौ पूर्वं गुह्यकौ धनदात्मजौ ॥२२॥**

पदच्छेद— कृष्णः तु गृह कृत्येषु व्यग्रायाम् मातरि प्रभुः ।
अद्राक्षीत् अर्जुनौ पूर्वम् गुह्यकौ धनद् आत्मजौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णः तु | २. | श्रीकृष्ण ने | अद्राक्षीत् | १२. | देखा |
| गृह | ४. | गृह | अर्जुनौ | ११. | दोनों अर्जुन वृक्षों को |
| कृत्येषु | ५. | कार्यों में | पूर्वम् | ७. | पहले जन्म में |
| व्यग्रायाम् | ६. | व्यस्त हो जाने पर | गुह्यकौ | ८. | यक्षराज |
| मातरि | ३. | माता यशोदा के | धनद | ९. | कुबेर के |
| प्रभुः । | १. | भगवान् | आत्मजौ ॥ | १०. | पुत्र |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने माता यशोदा के गृह-कार्यों में व्यस्त हो जाने पर पहले जन्म में यक्षराज कुबेर के पुत्र दोनों अर्जुन वृक्षों को देखा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

पुरा नारदशापेन वृक्षतां प्रापितौ मदात्।
नलकूबरमणिग्रीवाविति ख्यातौ श्रियान्वितौ ॥२३॥

पदच्छेद— पुरा नारद शापेन वृक्षताम् प्रापितौ मदात् ।
नलकूबर मणिग्रीवौ इति ख्यातौ श्रियान्वितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरा | ९. | पहले ही | नलकूबर | २. | नलकूबर |
| नारद | ७. | देवर्षि नारद ने | मणिग्रीवौ | ३. | मणिग्रीव |
| शापेन | ८. | शाप देकर | इति | ४. | इस नाम से |
| वृक्षताम् | १०. | वृक्ष | ख्यातौ | ५. | प्रसिद्ध |
| प्रापितौ | ११. | बना दिया था | श्रियान्वितौ ॥ | १. | धन ऐश्वर्य से युक्त |
| मदात् । | ६. | इनका घमंड देखकर | | | |

श्लोकार्थ—धन-ऐश्वर्य से युक्त नलकूबर और मणिग्रीव इस नाम से प्रसिद्ध इनका घमंड देखकर देवर्षि नारद ने शाप देकर पहले ही वृक्ष बना दिया था ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे गोपीप्रसादो नाम
नवमः अध्यायः ॥ ९ ॥

## श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

### दशमः स्कन्धः

### दशमः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— कथ्यतां भगवन्नेतत्तयोः शापस्य कारणम् ।
यत्तद् विगर्हितं कर्म येन वा देवर्षेस्तमः ॥१॥

पदच्छेद— कथ्यताम् भगवन् एतत् तयोः शापस्य कारणम् ।
यत्-तत् विगर्हितम् कर्म येन वा देवर्षेः तमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कथ्यताम् | ६. | बताइये | यत् तत् | ७. | उन्होंने ऐसा कौन सा |
| भगवन् | १. | हे भगवन् ! | विगर्हितम् | ८. | निन्दित |
| एतत् | ३. | इस | कर्म | ९. | कर्म किया था |
| तयोः | २. | नलकूबर और मणिग्रीव के | येन वा | १०. | अथवा जिससे |
| शापस्य | ४. | शाप का | देवर्षेः | ११. | देवर्षि नारद को |
| कारणम् । | ५. | कारण | तमः ॥ | १२. | मोह जनित अज्ञान हुआ |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! नलकूबर और मणिग्रीव के इस शाप का कारण बताइये । उन्होंने ऐसा कौन सा निन्दित कर्म किया था । अथवा जिससे देवर्षि नारद को मोह जनित अज्ञान हुआ ॥

### द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—रुद्रस्यानुचरौ भूत्वा सुदृप्तौ धनदात्मजौ ।
कैलाशोपवने रम्ये मन्दाकिन्यां मदोत्कटौ ॥२॥

पदच्छेद— रुद्रस्य अनुचरौ भूत्वा सुदृप्तौ धनद आत्मजौ ।
कैलाश उपवने रम्ये मन्दाकिन्याम् मद उत्कटौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रुद्रस्य | १. | रुद्र भगवान् के | कैलाश | १०. | कैलाश के |
| अनुचरौ | २. | अनुचर | उपवने | १२. | उपवन में पहुँचे |
| भूत्वा | ३. | होने पर | रम्ये | ११. | रमणीय |
| सुदृप्तौ | ६. | घमण्ड बढ़ गया था | मन्दाकिन्याम् | ९. | मन्दाकिनी के तट पर |
| धनद | ४. | कुबेर के | मद | ७. | वे मद |
| आत्मजौ । | ५. | पुत्रों का | उत्कटौ ॥ | ८. | मत्त होकर |

श्लोकार्थ—रुद्र भगवान् के अनुचर होने पर कुबेर के पुत्रों का घमण्ड बढ़ गया था । वे मद-मत्त होकर मन्दाकिनी के तट पर कैलाश के रमणीय उपवन में पहुँचे ॥

## तृतीयः श्लोकः

**वारुणीं मदिरां पीत्वा मदाघूर्णितलोचनौ ।**
**स्त्रीजनैरनुगायद्भिश्चेरतुः पुष्पिते वने ॥३॥**

पदच्छेद— वारुणीम् मदिराम् पीत्वा मद आघूर्णित लोचनौ ।
स्त्रीजनैः अनुगायद्भिः चेरतुः पुष्पिते वने ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वारुणीम् | १. जहाँ वारुणी | स्त्रीजनैः | ९. बहुत सी स्त्रियों के साथ |
| मदिराम् | २. मदिरा | अनुगायद्भिः | ८. गीतादि से युक्त |
| पीत्वा | ३. पीकर | चेरतुः | १०. विहार कर रहे थे |
| मद आघूर्णितौ | ४. मदमत्त तथा घूमते हुये | पुष्पितै | ६. पुष्पों के |
| लोचनौ । | ५. नेत्रों वाले वे | वने ॥ | ७. वन में |

श्लोकार्थ—वहाँ वारुणी मदिरा पीकर मदमत्त तथा घूमते हुये नेत्रों वाले वे पुष्पों के वन में गीतादि से युक्त बहुत सी स्त्रियों के साथ विहार कर रहे थे ॥

## चतुर्थ श्लोकः

**अन्तः प्रविश्य गङ्गायामम्भोजवनराजिनि ।**
**चिक्रीडतुर्युवतिभिर्गजाविव करेणुभिः ॥४॥**

पदच्छेद— अन्तः प्रविश्य गङ्गायाम् अम्भोज वन राजिनि ।
चिक्रीडतुः युवतिभिः गजौ इव करेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्तः | ५. अन्दर | चिक्रीडतुः | ११. क्रीडा कर रहे थे |
| प्रविश्य | ६. प्रवेश करके वे | युवतिभिः | १०. स्त्रियों के साथ |
| गङ्गायाम् | ४. गंगा के | गजौ | ८. हाथियों के |
| अम्भोज | १. कमल | इव | ९. समान |
| वन | २. समूह की | करेणुभिः ॥ | ७. हथिनियों के साथ |
| राजिनि । | ३. पंक्तियों से सुशोभित | | |

श्लोकार्थ—कमल समूह की पंक्तियों से सुशोभित गंगा के अन्दर प्रवेश करके हथिनियों के साथ हाथियों के समान स्त्रियों के साथ क्रीडा कर रहे थे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**यदृच्छया च देवर्षिर्भगवांस्तत्र कौरव।**
**अपश्यन्नारदो देवौ क्षीबाणौ समबुध्यत ॥५॥**

पदच्छेद— यदृच्छया च देवर्षिः भगवान तत्र कौरव।
अपश्यत् नारदः देवौ क्षीबाणौ समबुध्यत ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **यदृच्छया** | २. | संयोगवश | अपश्यत् | ७. | उन्होंने देखा |
| **च** | ८. | और | नारदः | ६. | नारद आ निकले |
| **देवर्षिः** | ५. | देवर्षि | देवौ | १०. | ये यक्ष पुरुष |
| **भगवान्** | ४. | भगवान् | क्षीबाणौ | ११. | मतवाले हो रहे हैं |
| **तत्र** | ३. | उधर से | समबुध्यत॥ | ९. | समझ लिया |
| **कौरव।** | १. | हे परीक्षित्! | | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! संयोगवश उधर से भगवान् देवर्षि नारद आ निकले। उन्होंने देखा और समझ लिया कि ये यक्ष पुरुष मतवाले हो रहे हैं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**तं दृष्ट्वा व्रीडिता देव्यो विवस्त्राः शापशङ्किताः।**
**वासांसि पर्यधुः शीघ्रं विवस्त्रौ नैव गुह्यकौ ॥६॥**

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा व्रीडिताः देव्यः विवस्त्राः शापशङ्किताः।
वासांसि पर्यधुः शीघ्रम् विवस्त्रौ न एव गुह्यकौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तम्** | १. | देवर्षि नारद को | वासांसि | ८. | कपड़े |
| **दृष्ट्वा** | २. | देखकर | पर्यधुः | ९. | पहिन लिये लेकिन |
| **व्रीडिताः** | ५. | लजाकर | शीघ्रम् | ७. | झट-पट |
| **देव्यः** | ४. | अप्सराओं ने | विवस्त्रौ | १०. | वस्त्र हीन |
| **विवस्त्राः** | ३. | वस्त्र हीन | न एव | १२. | नहीं पहने |
| **शापशङ्किताः।** | ६. | शाप के भय से | गुह्यकौ॥ | ११. | इन यक्षों ने |

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद को देखकर वस्त्र हीन अप्सराओं ने लजाकर शाप के भय से झट-पट कपड़े पहन लिये। लेकिन इन यक्षों ने नहीं पहने ॥

## सप्तमः श्लोकः

**तौ दृष्ट्वा मदिरामत्तौ श्रीमदान्धौ सुरात्मजौ ।**
**तयोरनुग्रहार्थाय शापं दास्यन्निदं जगौ ॥७॥**

पदच्छेद— तौ दृष्ट्वा मदिरा मत्तौ श्रीमद् अन्धौ सुर आत्मजौ ।
तयोः अनुग्रह अर्थाय शापम् दास्यन् इदम् जगौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तौ | १. | उन दोनों | तयोः | ८. | उन पर |
| दृष्ट्वा | ७. | देखकर | अनुग्रहः | ९. | कृपा |
| मदिरा | ५. | मदिरा पान से | अर्थाय | १०. | करने के प्रयोजन से |
| मत्तौ | ६. | उन्मत्त | शापम् | ११. | शाप |
| श्रीमद् | ३. | धन मद से | दास्यन् | १२. | देते हुये |
| अन्धौ | ४. | अन्धे और | इदम् | १३. | यह |
| सुर आत्मजौ । | २. | देव पुत्रों को | जगौ ॥ | १४. | कहा |

श्लोकार्थ—उन दोनों देव पुत्रों को धन मद से अन्धे और मदिरा पान से उन्मत्त देखकर उन पर कृपा करने के प्रयोजन से शाप देते हुये यह कहा ॥

## अष्टमः श्लोकः

**नारद उवाच—न ह्यन्यो जुषतो जोष्यान् बुद्धिभ्रंशो रजोगुणः ।**
**श्रीमदादाभिजात्यादिर्यत्र स्त्री द्यूतमासवः ॥८॥**

पदच्छेद— न हि अन्यः जुषतः जोष्यान् बुद्धि भ्रंशः रजोगुणः ।
श्रीमदात् आभिजात्य आदिः यत्र स्त्री द्यूतम् आसवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न हि | १०. | नहीं है | श्रीमदात् | ५. | धन सम्पत्ति के नशे से बढ़कर |
| अन्यः | ८. | और कोई | आभिजात्य | ५. | कुलीनता |
| जुषतः | २. | सेवन करने वालों की | आदिः | ७. | आदि |
| जोष्यान् | १. | विषयों का | यत्र | ११. | क्योंकि श्रीमद में |
| बुद्धि | ३. | बुद्धि को | स्त्री | १२. | स्त्री |
| भ्रंशः | ४. | नष्ट करने वाला | द्यूतम् | १३. | जुआ और |
| रजोगुणः | ९. | रजोगुणी उपाय | आसवः ॥ | १४. | मदिरा भी रहती है |

श्लोकार्थ—विषयों का सेवन करने वालों की बुद्धि को नष्ट करने वाला धन-सम्पत्ति के नशे से बढ़कर कुलीनता आदि और कोई रजोगुणो उपाय नहीं है। क्योंकि श्रीमद में स्त्री, जुआ और मदिरा भी रहती है ॥

## नवमः श्लोकः

हन्यन्ते पशवो यत्र निर्दयैरजितात्मभिः ।
मन्यमानैरिमं देहमजरामृत्यु नश्वरम् ॥९॥

पदच्छेद— हन्यन्ते पशवः यत्र निर्दयैः अजित आत्मभिः ।
मन्यमानैः इमम् देहम् अजर अमृत्यु नश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हन्यन्ते | १२. | वध करते हैं | मन्यमानैः | १०. | मानते हुये |
| पशवः | ११ | पशुओं का | इमम् | ५. | अपने इस |
| यत्र | १. | जहाँ | देहम् | ७. | शरीर को |
| निर्दयैः | ४. | क्रूर लोग | अजर | ८. | अजर |
| अजित | ३. | वश में रहने वाले | अमृत्यु | ९. | अमर |
| आत्मभिः । | २. | इन्द्रियों के | नश्वरम् ॥ | ६. | नश्वर |

श्लोकार्थ—जहाँ इन्द्रियों के वश में रहने वाले क्रूर लोग अपने इस नश्वर शरीर को अजर-अमर मानते हुये पशुओं का वध करते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

देवसंज्ञितमप्यन्ते कृमिविड्भस्मसंज्ञितम् ।
भूतध्रुक् तत्कृते स्वार्थं किं वेद निरयो यतः ॥१०॥

पदच्छेद— देव संज्ञितम् अपि अन्ते कृमि विड् भस्म संज्ञितम् ।
भूत ध्रुक् तत् कृते स्वार्थम् किम् वेद निरयः यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देव | १. | देव | भूत | ८. | फिर भूत प्राणियों से |
| संज्ञितम् | २. | कहा जाने वाला | ध्रुक् | ९. | द्रोह करने में |
| अपि | ३. | यह शरीर भी | तत् कृते | १०. | उस मनुष्य के लिये |
| अन्ते कृमि | ४. | अन्त में कीड़ों का | स्वार्थम् किम् | ११. | कौन सा स्वार्थ है |
| विड् | ५. | मल बनेगा या | वेद | १२. | क्या वह जानता है कि |
| भस्म | ६. | जलने पर राख | निरयः | १४. | नरक की ही प्राप्ति होगी |
| संज्ञितम् । | ७. | कहा जायेगा | यतः ॥ | १३. | उससे तो |

श्लोकार्थ—देव कहा जाने वाला यह शरीर भी अन्त में कीड़ों का मल बनेगा । या जलने पर राख कहा जायेगा । फिर भूत प्राणियों से दोह्र करने में उस मनुष्य के लिये कौन सा स्वार्थ है । क्या वह जानता है कि उससे तो नरक की ही प्राप्ति होती है ॥

## एकादशः श्लोकः

देहः किमन्नदातुः स्वं निषेक्तुर्मातुरेव च।
मातुः पितुर्वा बलिनः क्रेतुरग्नेः शुनोऽपि वा ॥११॥

पदच्छेद— देहः किम् अन्न दातुः स्वम् निषेक्तुः मातुः एव च।
मातुः पितुः वा बलिनः क्रेतुः अग्नेः शुनः अपि वा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देहः | २. | यह शरीर | मातुः | ९. | माता को भी पैदा करने वाले |
| किम् | १. | क्या | पितुः | १०. | पिता का अर्थात् नाना का |
| अन्न | ३. | अन्न | वा | ८. | अथवा |
| दातुः | ४. | देकर पालने वाले का है या | बलिनः | ११. | बलपूर्वक काम करने वाले का |
| स्वयं | ५. | स्वयं | क्रेतुः | १२. | या दाम देकर खरीदने वाले का |
| निषेक्तुः | ६. | बीज डालने वाले पिता का या | अग्नेः | १३. | अथवा अग्नि का |
| मातु एव च। | ७. | मां का ही है | शुनः अपि वा ॥ | १४. | अथवा कुत्ते और सियारों का है |

श्लोकार्थ—क्या यह शरीर अन्न देकर पालने वाले का है। या बीज डालने वाले पिता का है या माता का ही है। अथवा माता को भी पैदा करने वाले पिता का अर्थात् नाना का है। अथवा बलपूर्वक काम करने वाले का या दाम देकर खरीदने वाले का अथवा अग्नि का अथवा कुत्ते और सियारों का है ॥

## द्वादशः श्लोकः

एवं साधारणं देहमव्यक्तप्रभवाप्ययम्।
को विद्वानात्मसात् कृत्वा हन्ति जन्तूनृतेऽसतः ॥१२॥

पदच्छेद— एवम् साधारणम् देहम् अव्यक्त प्रभव अप्ययम्।
कः विद्वान् आत्मसात् कृत्वा हन्ति जन्तून् ऋते असतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | कः | ८. | कौन |
| साधारणम् | २. | यह साधारण | विद्वान् | ९. | विद्वान् व्यक्ति |
| देहम् | ३. | शरीर | आत्मसात् | १०. | इसे आत्मा |
| अव्यक्त | ४. | प्रकृति से | कृत्वा | ११. | मानकर |
| प्रभव | ५. | पैदा होकर | हन्ति | १३. | वध करेगा। |
| अप्ययम्। | ६. | उसी में समा जाता है | जन्तून् | १२. | दूसरे प्रणियों का |
| | | | ऋते असतः ॥ | ७. | भूखे पशुओं के अतिरिक्त |

श्लोकार्थ—इस प्रकार यह साधारण शरीर प्रकृति से पैदा होकर उसी में समा जाता है। भूखे पशुओं के अतिरिक्त कौन विद्वान् व्यक्ति इसे आत्मा मानकर दूसरे प्राणियों का वध करेगा ॥

# त्रयोदशः श्लोकः

**असतः श्रीमदान्धस्य दारिद्र्यं परमाञ्जनम् ।**
**आत्मौपम्येन भूतानि दरिद्रः परमीक्षते ॥१३॥**

पदच्छेद— असतः श्रीमद अन्धस्य दारिद्र्यम् परम अञ्जनम् ।
आत्मौपम्येन भूतानि दरिद्रः परम् ईक्षते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| असतः | ३. दुष्ट के लिए | आत्म | ११. | मेरे ही |
| श्रीमद | १. धन-सम्पत्ति के मद से | औपम्येन | १२. | जैसे हैं |
| अन्धस्य | २. अन्धे होने वाले | भूतानि | १०. | समस्त प्राणी |
| दारिद्र्यम् | ४. दरिद्रता ही | दरिद्रः | ७. | क्योंकि दरिद्र ही |
| परम | ५. सबसे बड़ा | परम् | ८. | सबसे अधिक यह |
| अञ्जनम् । | ६. अञ्जन है | ईक्षते ॥ | ९. | देख पाता है कि |

श्लोकार्थ—धन सम्पत्ति के मद से अन्धे होने वाले दुष्टों के लिए दरिद्रता ही सबसे बड़ा अञ्जन है। क्योंकि दरिद्र मनुष्य ही सबसे अधिक यह देख पाता है कि समस्त प्राणी मेरे ही जैसे हैं ॥

# चतुर्दशः श्लोकः

**यथा कण्टकविद्धाङ्गो जन्तोर्नेच्छति तां व्यथाम् ।**
**जीवसाम्यं गतो लिङ्गैर्न तथाविद्धकण्टकः ॥१४॥**

पदच्छेद— यथा कण्टक विद्ध अङ्गः जन्तोः न इच्छति ताम् व्यथाम् ।
जीव साम्यम् गतः लिङ्गैः न तथा अविद्ध कण्टकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यथा | १. जिस प्रकार | जीव | ९. | जीव की |
| कण्टकविद्धः | ३. काँटा लगने पर | साम्यम् | १०. | समानता |
| अङ्गः | २. शरीर में | गतः | ११. | विद्यमान है अतः |
| जन्तोः | ४. प्राणी | लिङ्गैः | ८. | क्योंकि सभी शरीरों में |
| न | ७. नहीं करता है | न | १४. | नहीं जानता है |
| इच्छति | ६. इच्छा | तथा | १३. | वह उस प्रकार के कष्ट को |
| ताम् व्यथाम् । | ५. उस कष्ट की | अविद्धकण्टकः ॥ | १२. | जिसे कभी काँटा नहीं लगा |

श्लोकार्थ—जिस प्रकार शरीर में काँटा लगने पर प्राणी उस कष्ट की इच्छा नहीं करता है। क्योंकि सभी शरीरों में जीव की समानता विद्यमान है। अतः जिसे कभी काँटा नहीं लगा वह उस प्रकार के कष्ट को नहीं जानता है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

दरिद्रो निरहंस्तम्भो मुक्तः सर्वमदैरिह ।
कृच्छ्रं यदृच्छयाऽऽप्नोति तद्धि तस्य परं तपः ॥१५॥

पदच्छेद— दरिद्रः निर् अहंस्तम्भः मुक्तः सर्व मदैः इह ।
कृच्छ्रम् यदृच्छया आप्नोति तत् हि तस्य परम् तपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दरिद्रः | १. | वह दरिद्र | कृच्छ्रम् | ९. | जो कष्ट |
| निर् | ५. | रहित होकर | यदृच्छया | ८. | दैव वश वह |
| अहं स्तम्भः | ४. | अहंकार के स्तम्भ से | आप्नोति | १०. | प्राप्त करता है |
| मुक्तः | ७. | मुक्त होता है | तत् हि | ११. | वही तो |
| सर्व | ३. | सभी प्रकार के | तस्य | १२. | उसका |
| मदैः | ६. | अहंकार से | परम् | १३. | अत्यधिक |
| इह । | २. | इस लोक में | तपः ॥ | १४. | तप है |

श्लोकार्थ—वह दरिद्र इस लोक में सभी प्रकार के अहंकार के स्तम्भ से रहित होकर अहंकार से मुक्त होता है । दैव वश वह जो कष्ट प्राप्त करता है । वही तो उसका अत्यधिक तप है ॥

## षोडशः श्लोकः

नित्यं क्षुत्क्षामदेहस्य दरिद्रस्यान्नकाङ्क्षिणः ।
इन्द्रियाण्यनुशुष्यन्ति हिंसापि विनिवर्तते ॥१६॥

पदच्छेद— नित्यम् क्षुत्क्षाम देहस्य दरिद्रस्य अन्न काङ्क्षिणः ।
इन्द्रियाणि अनुशुष्यन्ति हिंसा अपि विनिवर्तते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नित्यम् | १. | नित्य प्रति | इन्द्रियाणि | ७. | उसकी इन्द्रियाँ भी |
| क्षुत्क्षाम | ६. | भूख से दुबला होता है | अनुशुष्यन्ति | ८. | सूख जाती है और वह |
| देहस्य | ५. | शरीर | हिंसा | ९. | हिंसा से |
| दरिद्रस्य | ४. | दरिद्र का | अपि | १०. | भी |
| अन्न | २. | भोजन के लिये अन्न की | विनिवर्तते॥ | ११. | अलग हो जाता है |
| काङ्क्षिणः । | ३. | आकांक्षा करने वाले | | | |

श्लोकार्थ—नित्य प्रति भोजन के लिये अन्न की आकांक्षा करने वाले दरिद्र का शरीर भूख से दुबला होता है । उसकी इन्द्रियाँ भी सूख जाती हैं । और वह हिंसा से भी अलग हो जाता है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**दरिद्रस्यैव युज्यन्ते साधवः समदर्शिनः ।**
**सद्भिः क्षिणोति तं तर्षं तत आराद् विशुद्ध्यति ॥१७॥**

**पदच्छेद—** दरिद्रस्य एव युज्यन्ते साधवः सम दर्शिनः ।
सद्भिः क्षिणोति तम् तर्षम् ततः आरात् विशुद्ध्यति ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **दरिद्रस्य** | ४. | दरिद्र को | सद्भिः | ७. | सन्तों के सङ्ग से |
| **एव** | ५. | ही | क्षिणोति | ९. | नष्ट हो जाती है |
| **युज्यन्ते** | ६. | मिल पाते हैं | तम् तर्षम् | ८. | उसकी तृष्णा लालसा |
| **साधवः** | ३. | सन्त जन | ततः | १०. | जिससे उसका अन्तःकरण |
| **सम** | १. | सम | आरात् | ११. | शीघ्र ही |
| **दर्शिनः ।** | २. | दर्शी | विशुद्ध्यति ॥ | १२. | शुद्ध हो जाता है |

**श्लोकार्थ**—समदर्शी सन्तजन दरिद्र को ही मिल पाते हैं । सन्तों के सङ्ग से उसकी तृष्णा लालसा नष्ट हो जाती है । जिससे उसका अन्तःकरण शीघ्र ही शुद्ध हो जाता है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**साधूनां समचित्तानां मुकुन्दचरणैषिणाम् ।**
**उपेक्ष्यैः किं धनस्तम्भैरसद्भिरसदाश्रयैः ॥१८॥**

**पदच्छेद—** साधूनाम् सम चित्तानाम् मुकुन्द चरण एषिणाम् ।
उपेक्ष्यैः किम् धन स्तम्भैः असद्भिः असद् आश्रयैः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **साधूनाम्** | ६. | सज्जनों का | उपेक्ष्यैः | १३. | उपेक्षा के ही पात्र हैं |
| **सम** | १. | समता युक्त | किम् | १२. | क्या प्रयोजन है वे तो उनकी |
| **चित्तानाम्** | २. | चित्त वाले और | धन | ९. | धन के |
| **मुकुन्द** | ३. | भगवान् के | स्तम्भैः | १०. | भण्डार |
| **चरण** | ४. | चरणों में | असद्भिः | ११. | दुष्टों से |
| **एषिणाम् ।** | ५. | स्पृहा रखने वाले | असद् | ७. | दुर्गुणों के खजाने और |
| | | | आश्रयैः ॥ | ८. | दुराचारियों को आश्रय देने वाले |

**श्लोकार्थ**—समता युक्त चित्त वाले और भगवान् के चरणों में स्पृहा रखने वाले सज्जनों का दुर्गुणों के खजाने और दुराचारियों को आश्रय देने वाले धन के भण्डार दुष्टों से क्या प्रयोजन है । वे तो उनकी उपेक्षा के ही पात्र हैं ॥

# एकोनविंशः श्लोकः

**तदहं मत्तयोर्माध्व्या वारुण्या श्रीमदान्धयोः ।**
**तमोमदं हरिष्यामि स्त्रैणयोरजितात्मनोः ॥१६॥**

पदच्छेद— तत् अहम् मत्तयोः माध्व्या वारुण्या श्रीमद अन्धयोः ।
तमः मदम् हरिष्यामि स्त्रैणयोः अजित आत्मनोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | इसलिये | तमः | ११. | अज्ञान जनित |
| अहम् | २. | मैं | मदम् | १२. | मद |
| मत्तयोः | ५. | मतवाले और | हरिष्यामि | १३. | नष्ट कर दूंगा |
| माध्व्या | ४. | मदिरा का पान करके | स्त्रैणयोः | १०. | स्त्री लम्पट यक्षों का |
| वारुण्या | ३. | वारुणी | अजित | ९. | अधीन |
| श्रीमद | ६. | श्रीमद से | आत्मनोः ॥ | ८. | इन्द्रियों के |
| अन्धयोः । | ७. | अन्धे हो रहे | | | |

श्लोकार्थ—इसलिये मैं वारुणी मदिरा का पान करके मतवाले और श्रीमद से अन्धे हो रहे इन्द्रियों के अधीन स्त्री लम्पट यक्षों का अज्ञानजनित मद नष्ट कर दूंगा ॥

# विंशः श्लोकः

**यदिमौ लोकपालस्य पुत्रौ भूत्वा तमःप्लुतौ ।**
**न विवाससमात्मानं विजानीतः सुदुर्मदौ ॥२०॥**

पदच्छेद— यत् इमौ लोकपालस्य पुत्रौ भूत्वा तमः प्लुतौ ।
न विवाससम् आत्मानम् विजानीतः सुदुर्मदौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत् | १. | जिससे | न | ११. | नहीं |
| इमौ | २. | ये दोनों | विवाससम् | १०. | वस्त्र हीन |
| लोकपालस्य | ३. | लोकपाल कुबेर के | आत्मानम् | ९. | अपने को |
| पुत्रौ | ४. | पुत्र | विजानीतः | १२. | समझ रहे हैं |
| भूत्वा | ५. | होकर भी | सुदुर्मदौ ॥ | ६. | मदमत्त तथा |
| तमः | ७. | अज्ञान | | | |
| प्लुतौ । | ८. | युक्त होने के कारण | | | |

श्लोकार्थ—जिससे ये दोनों लोकपाल कुबेर के पुत्र होकर भी मदमत्त तथा अज्ञान से युक्त होने के कारण अपने को पूरी तरह वस्त्रहीन नहीं समझ रहे हैं ।

## एकविंशः श्लोकः

**अतोऽर्हतः स्थावरतां स्यातां नैवं यथा पुनः ।**
**स्मृतिः स्यान्मत्प्रसादेन तत्रापि मदनुग्रहात् ॥२१॥**

पदच्छेद— अतः अर्हतः स्थावरताम् स्याताम् न एवम् यथा पुनः ।
स्मृतिः स्यात् मत् प्रसादेन तत्र अपि मत् अनुग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अतः | १. | इसलिये ये | स्मृतिः | १३. | भगवान् की स्मृति |
| अर्हतः | ३. | योग्य हैं | स्यात् | १४. | बनी रहेगी |
| स्थावरताम् | २. | वृक्ष योनियों में जाने | मत् | ९. | मेरी |
| स्याताम् | ७. | होगा | प्रसादेन | १०. | कृपा से और |
| न | ६. | नहीं | तत्र अपि | ८. | वहाँ पर भी |
| एवम् | ५. | इस प्रकार का अभिमान | मत् | ११. | मेरे |
| यथा पुनः । | ४. | जिससे इन्हें फिर | अनुग्रहात् ॥ | १२. | अनुग्रह से इन्हे |

श्लोकार्थ—इसलिये ये वृक्षयोनि में जाने के योग्य हैं जिससे इन्हें इस प्रकार का अभिमान नहीं होगा। यहाँ पर भी मेरी कृपा और मेरे अनुग्रह से इन्हें भगवान् की स्मृति बनी रहेगी तथा उनका सान्निध्य प्राप्त होगा ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**वासुदेवस्य सान्निध्यं लब्ध्वा दिव्यशरच्छते ।**
**वृत्ते स्वर्लोकतां भूयो लब्धभक्ती भविष्यतः ॥२२॥**

पदच्छेद— वासुदेवस्य सान्निध्यम् लब्ध्वा दिव्य शरच्छते ।
वृत्ते स्वर्लोकताम् भूयः लब्ध भक्ती भविष्यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वासुदेवस्य | ४. | भगवान् श्रीकृष्ण का | वृत्ते | ३. | बीत जाने पर |
| सान्निध्यम् | ५. | सान्निध्य | स्वर्लोकताम् | ९. | अपने लोक में (पहुँच कर) |
| लब्ध्वा | ६. | प्राप्त करके तथा | भूयः लब्ध | ८. | प्राप्त करके फिर |
| दिव्य | १. | देवताओं के | भक्ति | ७. | भक्ति को |
| शरच्छते । | २. | सौ वर्ष | भविष्यतः ॥ | १०. | सुख पूर्वक निवास करेंगे |

श्लोकार्थ—देवताओं के सौ वर्ष बीत जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करके तथा भक्ति को प्राप्त करके फिर अपने लोक में पहुँच कर सुखपूर्वक निवास करेंगे ।

## त्रयोविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवमुक्त्वा स देवर्षिर्गतो नारायणाश्रमम् ।
नलकूबरमणिग्रीवावासतुर्यमलार्जुनौ ॥२३॥

पदच्छेद— एवम् उक्त्वा स देवर्षिः गतः नारायण आश्रमम् ।
नलकूबर मणिग्रीवौ आसतुः यमल अर्जुनौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | आश्रमम् | ६. | आश्रम पर |
| उक्त्वा | २. | कहकर | नलकूबर | ८. | नलकूबर और |
| सः | ३. | वे | मणिग्रीव | ९. | मणिग्रीव ये दोनों |
| देवर्षिः | ४. | देवर्षि नारद | आसतुः | १२. | प्रसिद्ध हुए |
| गतः | ७. | चले गये | यमल | १०. | यमल |
| नारायण । | ५. | नारायण के | अर्जुनौ । | ११. | अर्जुन नाम से |

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहकर वे देवर्षि नारद भगवान् नारायण के आश्रम पर चले गये । तथा नलकूबर और मणिग्रीव यमलार्जुन इस नाम से प्रसिद्ध हुये ।

## चतुर्विंशः श्लोकः

ऋषेर्भागवतमुख्यस्य सत्यं कर्तुं वचो हरिः ।
जगाम शनकैस्तत्र यत्रास्तां यमलार्जुनौ ॥२४॥

पदच्छेद— ऋषेः भागवत मुख्यस्य सत्यम् कर्तुम् वचः हरिः ।
जगाम शनकैः तत्र यत्र आस्ताम् यमल अर्जुनौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऋषेः | ३. | देवर्षि नारद के | जगाम | १०. | पहुँच गये |
| भागवत | १. | भक्तों में | शनकैः | ८. | धीरे-धीरे |
| मुख्यस्य | २. | प्रमुख | तत्र | ९. | वहाँ |
| सत्यम् | ५. | सत्य | यत्र | ११. | जहाँ |
| कर्तुम् | ६. | करने के लिए | आस्ताम् | १४. | स्थित थे |
| वचः | ४. | वचन को | यमल | १२. | यमल |
| हरिः । | ७. | भगवान् श्री कृष्ण | अर्जुनौ ॥ | १३. | अर्जुन वृक्ष |

श्लोकार्थ—भक्तों में प्रमुख देवर्षि नारद के वचन को सत्य करने के लिए भगवान् श्री कृष्ण धीरे-धीरे वहाँ पहुँच गये जहाँ यमलार्जुन वृक्ष स्थित थे ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**देवर्षिर्मे प्रियतमो यदिमौ धनदात्मजौ ।**
**तत्तथा साधयिष्यामि यद् गीतं तन्महात्मना ॥२५॥**

पदच्छेद— देवर्षिः मे प्रियतमः यत् इमौ धनद आत्मजौ ।
तत् तथा साधयिष्यामि यत् गीतम् तत् महात्मना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देवर्षिः | ३. | देवर्षि नारद | तत् | ८. | इसलिये |
| मे | २. | मेरे | तथा | १३. | उसे ठीक उसी रूप में |
| प्रियतमः | ४. | अत्यन्त प्यारे हैं और | साधयिष्यामि | १४. | पूरा करूँगा |
| यत् | १. | क्योंकि | यत् | ११. | जैसा |
| इमौ | ५. | ये दोनों भी | गीतम् | १२. | कहा है |
| धनद | ६. | कुबेर के | तत् | ९. | उन देवर्षि |
| आत्मजौ । | ७. | पुत्र हैं | महात्मना ॥ | १०. | नारद जी ने |

श्लोकार्थ—क्योंकि मेरे देवर्षि नारद अत्यन्त प्यारे हैं। और ये दोनों भी कुबेर के पुत्र हैं। इसलिये उन देवर्षि नारद जी ने जैसा कहा है। उसे ठीक उसी रूप में पूरा करूँगा ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**इत्यन्तरेणार्जुनयोः कृष्णस्तु यमयोर्ययौ ।**
**आत्मनिर्वेशमात्रेण तिर्यग्गतमुलूखलम् ॥२६॥**

पदच्छेद— इति अन्तरेण अर्जुनयोः कृष्णः तु यमयोः ययौ ।
आत्म निर्वेश मात्रेण तिर्यक् गतम् उलूखलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | ऐसा विचार करके | आत्म | ८. | श्रीकृष्ण के |
| अन्तरेण | ६. | बीच में | निर्वेश | ९. | उनके बीच में प्रवेश |
| अर्जुनयोः | ५. | अर्जुन वृक्षों के | मात्रेण | १०. | मात्र से |
| कृष्णः | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण | तिर्यक् | १५. | टेढ़ा होकर |
| तु | १. | तब | गतम् | १३. | अटक गया |
| यमयोः | ४. | उन दोनों | उलूखलम् ॥ | ११. | ऊखल |
| ययौ । | ७. | घुस गये | | | |

श्लोकार्थ—तब ऐसा विचार करके भगवान् श्रीकृष्ण उन दोनों अर्जुन वृक्षों के बीच घुस गये। श्रीकृष्ण के उनके बीच में प्रवेश मात्र से ऊखल टेढ़ा होकर अटक गया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**बालेन निष्कर्षयतान्वगुलूखलं तद् दामोदरेण तरसोत्कलिताङ्घ्रिबन्धौ ।**
**निष्पेततुः परमविक्रमितातिवेपस्कन्धप्रवालविटपौ कृतचण्डशब्दौ ॥२७॥**

पदच्छेद—बालेन निष्कर्षयता अन्वक् उलूखलम् तत् दामोदरेण तरसा उत्कलित अङ्घ्रिबन्धौ ।
निष्पेततुः परम विक्रमित अतिवेप स्कन्ध प्रवाल विटपौ कृत चण्डशब्दौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बालेन | २. | बालक | निष्पेततुः | १६. | पृथ्वी पर गिर पड़े |
| निष्कर्षयता | ५. | खींचे जाने पर | परम विक्रमित | १. | अत्यन्त पराक्रम के केन्द्र |
| अन्वक् | ६. | पीछे लुढकते हुये | अतिवेप | १३. | अत्यन्त काँपने लगे और |
| उलूखलम् तत् | ७. | ऊखल से उन | स्कन्ध | ११. | तने और |
| दामोदरेण | ३. | श्रीकृष्ण के द्वारा | प्रवाल | १२. | पत्ते |
| तरसा | ४. | अत्यन्त वेग से | विटपौ | १०. | उन वृक्षों के |
| उत्कलित | ९. | उखड़ गये (और) | कृत | १५. | करते हुये |
| अङ्घ्रिबन्धौ । | ८. | वृक्षों के मूल बन्ध | चण्डशब्दौ ॥ | १४. | भयङ्कर शब्द |

श्लोकार्थ—अत्यन्त पराक्रम के केन्द्र बालक श्रीकृष्ण के द्वारा अत्यन्त वेग से खींचे जाने पर पीछे लुढकते हुये ऊखल से उन वृक्षों के मूल बन्ध ढीले उड़ गये । और उन वृक्षों के तने और पत्ते अत्यन्त काँपने लगे तथा भयङ्कर शब्द करते हुये पृथ्वी पर गिर पड़े ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**तत्र श्रिया परमया ककुभः स्फुरन्तौ सिद्धावुपेत्य कुजयोरिव जातवेदाः ।**
**कृष्णं प्रणम्य शिरसाखिललोकनाथं बद्धाञ्जली विरजसाविदमूचतुः स्म ॥२८॥**

पदच्छेद—तत्र श्रिया परमया ककुभः स्फुरन्तौ सिद्धौ उपेत्य कुजयोः इव जातवेदाः ।
कृष्णम् प्रणम्य शिरसा अखिल लोकनाथम् बद्ध अञ्जली विरजसौ इदम् ऊचतुः स्म ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. | वहाँ पर | कृष्णम् | १०. | श्रीकृष्ण को |
| श्रिया परमया | ६. | अत्यन्त सुन्दर | प्रणम्य | १२. | प्रणाम करके और |
| ककुभः | ४. | दिशाओं को | शिरसा | ११. | सिर से |
| स्फुरन्तौ | ५. | प्रकाशित करने वाले | अखिल लोकनाथम् | ९. | समस्त संसार के स्वामी |
| सिद्धौ | ७. | दो सिद्ध पुरुष निकले | बद्धअञ्जली | १३. | हाथ जोड़कर |
| उपेत्य | ८. | उन्होंने श्रीकृष्ण के पास जाकर | विरजसौ | १४. | अहंकार रहित होकर |
| कुजयोः | २. | दोनों वृक्षों से | इदम् | १५. | इस प्रकार |
| इव जातवेदाः । | ३. | अग्नि के समान तेजस्वी | ऊचतुः स्म ॥ | १६. | कहा |

श्लोकार्थ—वहाँ पर दोनों वृक्षों से अग्नि के समान तेजस्वी दिशाओं को प्रकाशित करने वाले अत्यन्त सुन्दर दो सिद्ध पुरुष निकले । उन्होंने श्रीकृष्ण के पास जाकर समस्त संसार के स्वामी श्रीकृष्ण को सिर से प्रणाम करके और हाथ जोड़कर अहंकार रहित होकर इस प्रकार कहा ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

कृष्ण कृष्ण महायोगिंस्त्वमाद्यः पुरुषः परः ।
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्वं रूपं ते ब्राह्मणा विदुः ॥२९॥

पदच्छेद — कृष्ण-कृष्ण महायोगिन् त्वम् आद्यः पुरुषः परः ।
व्यक्त अव्यक्तम् इदम् विश्वम् रूपं ते ब्राह्मणाः विदुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले | व्यक्त | ११. | व्यक्त और |
| कृष्ण | ३. हे श्री कृष्ण ! | अव्यक्त | १२. | अव्यक्त |
| महायोगिन् | २. परम योगेश्वर | इदम् | १०. | यह |
| त्वम् | ४. आप | विश्वम् | १३. | सम्पूर्ण जगत् |
| आद्यः | ५. प्रकृति से अतीत | रूपम् | १५. | रूप है |
| पुरुषः | ७. पुरुष हैं | ते | १४. | आपका ही |
| परः । | ६. परम | ब्राह्मणाः | ८. | वेदज्ञ ब्राह्मण |
| | | विदुः ॥ | ९. | यह बात जानते हैं |

श्लोकार्थ—सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले परम योगेश्वर हे श्री कृष्ण ! आप प्रकृति से अतीत परम पुरुष हैं । वेदज्ञ ब्राह्मण यह बात जानते हैं । यह व्यक्त और अव्यक्त सम्पूर्ण जगत् आपका ही रूप है ॥

## त्रिंशः श्लोकः

त्वमेकः सर्वभूतानां देहास्वात्मेन्द्रियेश्वरः ।
त्वमेव कालो भगवान् विष्णुरव्यय ईश्वरः ॥३०॥

पदच्छेद— त्वमेकः सर्वभूतानाम् देह असु आत्मा इन्द्रिय ईश्वरः ।
त्वमेव कालः भगवान् विष्णुः अव्यय ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वमेव | १. केवल आप ही | त्वमेव | ७. आप ही |
| सर्वभूतानाम् | २. समस्त प्राणियों के | कालः | ९. काल |
| देह | ३. शरीर | भगवान् | ८. सर्वशक्तिमान् |
| असु आत्मा | ४. प्राण, अन्तःकरण और | विष्णुः | ११. सर्वव्यापक |
| इन्द्रिय | ५. इन्द्रियों के | अव्ययः | १०. अविनाशी एवं |
| ईश्वरः। | ६. स्वामी हैं | ईश्वरः ॥ | १२. ईश्वर हैं |

श्लोकार्थ—केवल आप ही समस्त प्राणियों के शरीर, प्राण, अन्तःकरण और इन्द्रियों के स्वामी हैं । आप ही सर्वशक्तिमान् काल, अविनाशी एवं ईश्वर हैं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**त्वं महान् प्रकृतिः सूक्ष्मा रजः सत्त्वतमोमयी ।**
**त्वमेव पुरुषोऽध्यक्षः सर्वक्षेत्रविकारवित् ॥३१॥**

पदच्छेद— त्वम् महान् प्रकृतिः सूक्ष्मा रजः सत्त्व तमोमयी ।
त्वमेव पुरुषः अध्यक्षः सर्व क्षेत्र विकार वित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| त्वम् | १. आप ही | त्वमेव | ८. | आप ही |
| महान् | २. महत्तत्त्व और | पुरुषः | १४. | परमात्मा हैं |
| प्रकृतिः | ७. प्रकृति हैं | अध्यक्षः | १३. | सबके साक्षी |
| सूक्ष्मा | ६. अत्यन्त सूक्ष्म | सर्व | ९. | समस्त |
| रजः | ४. रजोगुण | क्षेत्र | १०. | शरीरों के |
| सत्त्व | ३. सत्त्वगुण | विकार | ११. | कर्मभाव और सत्ता |
| तमोमयी । | ५. तमोगुणरूपा | वित् ॥ | १२. | जानने वाले |

श्लोकार्थ—आप ही महत्तत्त्व और सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणरूपा अत्यन्त सूक्ष्म प्रकृति हैं । आप ही समस्त शरीरों के कर्म-भाव और सत्ता जानने वाले सबके साक्षी परमात्मा हैं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**गृह्यमाणैस्त्वमग्राह्यो विकारैः प्राकृतैर्गुणैः ।**
**को न्विहार्हति विज्ञातुं प्राक्सिद्धं गुणसंवृतः ॥३२॥**

गृह्यमाणैः त्वम् अग्राह्यः विकारैः प्राकृतैः गुणैः ।
कः नु इह अर्हति विज्ञातुम् प्राक् सिद्धम् गुण संवृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गृह्यमाणैः | १. वृत्तियों से ग्रहण किये जाने वाले | इह | ७. | इस लोक में |
| त्वम् | ५. आप | अर्हति | १२. | योग्य हो (क्योंकि) |
| अग्राह्यः | ६. पकड़ में नहीं आ सकते हैं | विज्ञातुम् | ११. | आपको जानने के |
| विकारैः | ४. विकारों के द्वारा | प्राक् | १३. | आप तो पहले ही |
| प्राकृतैः | २. प्रकृति के | सिद्धम् | १४. | विद्यमान थे |
| गुणैः । | ३. गुणों और | गुण | ८. | स्थूल और सूक्ष्म शरीर के आवरण |
| कः नु | १०. ऐसा कौन सा पुरुष है जो | संवृतः | ९. | से ढका हुआ |

श्लोकार्थ—वृत्तियों से ग्रहण किये जाने वाले प्रकृति के गुणों और विकारों के द्वारा आप पकड़ में नहीं आ सकते हैं । इस लोक में स्थूल और सूक्ष्म शरीर के आवरण से ढका हुआ ऐसा कौन सा पुरुष है जो आपको जानने के योग्य हो । क्योंकि आप तो पहले भी विद्यमान थे ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तस्मै तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे ।**

**आत्मद्योतगुणैश्छन्नमहिम्ने ब्रह्मणे नमः ॥३३॥**

पदच्छेद— तस्मै तुभ्यम् भगवते वासुदेवाय वेधसे ।
आत्मद्योत गुणैः छन्न महिम्ने ब्रह्मणे नमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तस्मै** | १. | इसलिये | आत्मद्योत | ७. | आपके द्वारा प्रकाशित होने वाले |
| **तुभ्यम्** | ५. | आपको नमस्कार है | गुणैः | ८. | गुणोंसे ही (आपने अपनी महिमा) |
| **भगवते** | ३. | भगवान् | छन्नमहिम्ने | ९. | छिपा रखी है |
| **वासुदेवाय** | ४. | वासुदेव | ब्रह्मणे | ६. | हे प्रभो ! |
| **वेधसे ।** | २. | हे समस्त प्रपञ्च के विधाता | नमः ॥ | १०. | हम आपको नमस्कार करते हैं |

श्लोकार्थ—इसलिये हे समस्त प्रपञ्च के विधाता भगवान् वासुदेव ! आपको नमस्कार है । हे प्रभो ! आपके द्वारा प्रकाशित होने वाले गुणों से ही आपने अपनी महिमा छिपा रखी है । हम आपको प्रणाम करते हैं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**यस्यावतारा ज्ञायन्ते शरीरेष्वशरीरिणः ।**

**तैस्तैरतुल्यातिशयैर्वीर्यैर्देहिष्वसंगतैः ॥३४॥**

पदच्छेद— यस्य अवताराः ज्ञायन्ते शरीरेषु अशरीरिणः ।
तैः तैः अतुल्य अतिशयैः वीर्यैः देहिषु असंगतैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **यस्य** | २. | आपके | तैः तैः | ५. | उन-उन |
| **अवताराः** | ९. | अवतारों का | अतुल्य | ६. | अनुपम तथा |
| **ज्ञायन्ते** | १०. | पता भी तो | अतिशयैः | ७. | सर्वाधिक |
| **शरीरेषु** | ११. | उन शरीरों में ही चलता है | वीर्यैः | ८. | पराक्रम प्रकट करने वाले |
| **अशरीरिणः ।** | १. | अशरीरी | देहिषु | ३. | साधारण शरीर धारियों के |
| | | | असंगतैः ॥ | ४. | लिये अवश्य |

श्लोकार्थ— अशरीरी आपके साधारण शरीर धारियों के लिये अवश्य उन-उन अनुपम तथा सर्वाधिक पराक्रम प्रकट करने वाले अवतारों का पता भी तो उन शरीरों में ही चलता है ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**स भवान् सर्वलोकस्य भवाय विभवाय च ।**
**अवतीर्णोऽशभागेन साम्प्रतं पतिराशिषाम् ॥३५॥**

पदच्छेद— सः भवान् सर्व लोकस्य भवाय विभवाय च ।
अवतीर्णः अंश भागेन साम्प्रतम् पतिः आशिषाम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सः | १. ऐसे | | अवतीर्णः | ६. अवतीर्ण हुये हैं आप |
| भवान् | २. आप | | अशंभागेन | ८. अपनी सम्पूर्ण शक्तियों से |
| सर्वलोकस्य | ३. समस्त लोकों के | | साम्प्रतम् | ७. इस समय |
| भवाय | ४. अभ्युदय | | पतिः | १०. पूर्ण करने वाले हैं |
| विभवाय च । | ५. निः श्रेयस के लिये और | | आशिषाम् ।। | ९. समस्त अभिलाषाओं को |

श्लोकार्थ—ऐसे आप समस्त लोकों के अभ्युदय के और निःश्रेयस के लिये अवतीर्ण हुये हैं । आप इस समय समस्त अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले हैं ।।

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**नमः परमकल्याण नमः परममङ्गल ।**
**वासुदेवाय शान्ताय यदूनां पतये नमः ॥३६॥**

पदच्छेद— नमः परम कल्याण नमः परम मङ्गल ।
वासुदेवाय शान्ताय यदूनाम् पतये नमः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नमः | ३. आपको नमस्कार है | | वासुदेवाय | ८. सबके हृदय में विराजमान |
| परम | १. हे परम | | शान्ताय | ७. परम शान्त |
| कल्याण | २. कल्याण स्वरूप प्रभो | | यदूनाम् | ९. यदुवंश |
| नमः | ६. आपको नमस्कार है | | पतये | १०. शिरोमणि |
| परम | ४. हे परम | | नमः ।। | ११. आपको नमस्कार है |
| मङ्गल । | ५. मङ्गल स्वरूप ! | | | |

श्लोकार्थ—हे परम कल्याण स्वरूप प्रभो ! आपको नमस्कार है । हे परम मङ्गल स्वरूप भगवन् ! आपको नमस्कार है । परम शान्त, सबके हृदय में विराजमान, यदुवंशशिरोमणि आपको नमस्कार है ।।

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**अनुजानीहि नौ भूमंस्तवानुचरकिङ्करौ ।**
**दर्शनं नौ भगवत ऋषेरासीदनुग्रहात् ॥३७॥**

पदच्छेद— अनुजानीहि नौ भूमन् तव अनुचर किङ्करौ ।
दर्शनम् नौ भगवतः ऋषेः आसीत् अनुग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनुजानीहि | ६. समझें | दर्शनम् | ११. आपके दर्शन |
| नौ | २. हमें आप | नौ | ७. हम लोगों को |
| भूमन् | १. हे अनन्त ! | भगवतः | ८. भगवान् |
| तव | ३. अपने | ऋषेः | ९. देवर्षि नारद के |
| अनुचर | ४. दासों के भी | आसीत् | १२. प्राप्त हुये हैं |
| किङ्करौ । | ५. दास | अनुग्रहात् ॥ | १०. परम अनुग्रह से ही |

श्लोकार्थ—हे अनन्त ! हमें आप अपने दासों के भी दास समझें । हम लोगों को भगवान् देवर्षि नारद के अनुग्रह से ही आपके दर्शन प्राप्त हुये हैं ।

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्नः ।**
**स्मृत्यां शिरस्तव निवासजगत्प्रणामे दृष्टिः सतां दर्शनेऽस्तु भवत्तनूनाम् ॥३८॥**

पदच्छेद—वाणी गुण अनुकथने श्रवणौ कथायां हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्नः ।
स्मृत्यां शिरस्तव निवास जगत्प्रणामे दृष्टिः सतां दर्शने अस्तु भवत् तनूनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वाणी | १. हे प्रभो ! हमारी वाणी | स्मृत्याम् | १०. स्मृति में रम जाये |
| गुण अनुकथने | २. आपके गुणों का वर्णन करती रहे | शिरः तव | ११. हमारा मस्तक आपके सामने |
| श्रवणौ | ३. हमारे कान | निवास | १४. आपका निवास स्थान है |
| कथायाम् | ४. आपकी कथा में | जगत् | १३. यह सारा जगत् |
| हस्तौ च | ५. और हमारे हाथ | प्रणामे | १२. झुका रहे |
| कर्मसु | ६. आपकी सेवा में तथा | दृष्टिः | १५. हमारी दृष्टि |
| मनः | ८. मन | सताम्दर्शने | १७. संत जनों के दर्शन में |
| तव पादयोः | ९. आपके चरणों की | अस्तु | १८. लगी रहे |
| नः । | ७. हमारा | भवत् तनूनाम् ॥ | १६. आपके प्रत्यक्ष शरीर रूप |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! हमारी वाणी आपके गुणों का वर्णन करती रहे । हमारे कान आपकी कथा में और हमारे हाथ आपकी सेवा में तथा हमारा मन आपके चरणों की स्मृति में रम जाये । हमारा मस्तक आपके सामने झुका रहे । यह सारा जगत् आपका निवास स्थान है । हमारी दृष्टि आपके प्रत्यक्ष शरीर रूप संतजनों के दर्शन में लगी रहे ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं संकीर्तितस्ताभ्यां भगवान् गोकुलेश्वरः।
दाम्ना चोलूखले बद्धः प्रहसन्नाह गुह्यकौ ॥३९॥

पदच्छेद— इत्थम् संकीर्तितः ताभ्याम् भगवान् गोकुल ईश्वरः।
दाम्ना च उलूखले बद्धः प्रहसन् आह गुह्यकौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | २. | इस प्रकार | दाम्ना | ८. | रस्सी से |
| संकीर्तितः | ३. | स्तुति करने पर | च | १०. | और |
| ताभ्याम् | १. | नलकूबर और मणिग्रीव के | उलूखले | ७. | ऊखल में |
| भगवान् | ६. | श्रीकृष्ण ने | बद्धः | ९. | बँधे-बँधे ही |
| गोकुल | ४. | गोकुल के | प्रहसन् | ११. | हँसते हुये |
| ईश्वरः। | ५. | स्वामी | आह | १३. | कहा |
| | | | गुह्यकौ ॥ | १२. | दोनों यक्षों से |

श्लोकार्थ—नलकूबर और मणिग्रीव के इस प्रकार स्तुति करने पर गोकुल के स्वामी श्रीकृष्ण ने ऊखल में बँधे-बँधे ही और हँसते हुये दोनों यक्षों से कहा ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

भगवान् उवाच— ज्ञातं मम पुरैवैतदृषिणा करुणात्मना।
यच्छ्रीमदान्धयोर्वाग्भिर्विभ्रंशोऽनुग्रहः कृतः ॥४०॥

पदच्छेद— ज्ञातम् मम पुरा एव एतत् ऋषिणा करुण आत्मना।
यत् श्रीमद अन्धयोः वाग्भिः विभ्रंशः अनुग्रहः कृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञातम् | ४. | ज्ञात था | यत् | २. | कि |
| मम | १. | मुझे | श्रीमद | १०. | धन-सम्पत्ति के मद से |
| पुरा एव | ३. | पहले से ही | अन्धयोः | ११. | अन्धे हो रहे आपके ऊपर |
| एतत् | २. | यह | वाग्भिः | ९. | शाप देकर |
| ऋषिणा | ८. | देवर्षि नारद ने | विभ्रंशः | १२. | नष्ट करके |
| करुण | ६. | करुणा | अनुग्रहः | १३. | अनुग्रह |
| आत्मना। | ७. | स्वरूप | कृतः ॥ | १४. | किया है |

श्लोकार्थ—मुझे यह पहले से ही ज्ञात था कि करुणास्वरूप देवर्षि नारद ने शाप देकर धनसम्पत्ति के मद को नष्ट करके अन्धे हो रहे आपके ऊपर अनुग्रह किया ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**साधूनां समचित्तानां सुतरां मत्कृतात्मनाम् ।**
**दर्शनान्नो भवेद् बन्धः पुंसोऽक्ष्णोः सवितुर्यथा ॥४१॥**

पदच्छेद— साधूनाम् समचित्तानाम् सुतराम् मत् कृत आत्मनाम् ।
दर्शनात् नो भवेत् बन्धः पुंसः अक्ष्णोः सवितुः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| साधूनाम् | ७. | सज्जनों के | दर्शनात् | ८. | दर्शन से |
| सम | ५. | समदर्शी | न भवेत् | १०. | नहीं होता |
| चित्तानाम् | ६. | बुद्धि वाले | बन्धः | ९. | बन्धन ठीक वैसे ही |
| सुतराम् | ४. | अत्यन्त | पुंसः | १३. | मनुष्य के |
| मत् | १. | मेरे प्रति | अक्ष्णोः | १४. | नेत्रों के सामने अन्धकार नहीं होता |
| कृत | २. | समर्पित | सवितुः | १२. | सूर्योदय होने पर |
| आत्मनाम् । | ३. | हृदय वाले और | यथा ॥ | ११. | जैसे |

श्लोकार्थ— मेरे प्रति समर्पित हृदय वाले और अत्यन्त समदर्शी बुद्धि वाले सज्जनों के दर्शन से बन्धन वैसे ही नहीं होता है जैसे सूर्योदय होने पर मनुष्य के नेत्रों के सामने अन्धकार का नहीं होता है ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तद् गच्छतं मत्परमौ नलकूबर सादनम् ।**
**सञ्जातो मयि भावो वामीप्सितः परमोऽभवः ॥४२॥**

पदच्छेद— तत् गच्छतम् मत् परमौ नलकूबर सादनम् ।
सञ्जातः मयि भावः वाम् ईप्सितः परमः अभवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | इसलिये | सञ्जातः | १३. | प्राप्ति हो गयी है |
| गच्छतम् | ७. | जाओ | मयि | १०. | मेरे प्रति |
| मत् | ४. | मेरे | भावः | १२. | भक्ति भाव की |
| परमौ | ५. | परायण होकर | वाम् | ३. | तुम दोनों |
| नलकूबर | २. | नलकूबर और मणिग्रीव | ईप्सितः | ८. | तुम्हारे द्वारा इच्छित |
| सादनम् । | ६. | अपने अपने घर को | परमः | ११. | परम |
| | | | अभवः ॥ | ९. | संसार चक्र को छुड़ाने वाले |

श्लोकार्थ—इसलिये नलकूबर और मणिग्रीव ! तुम दोनों मेरे परायण होकर अपने अपने घर को जाओ । तुम्हारे द्वारा इच्छित संसार चक्र को छुड़ाने वाले मेरे प्रति परम भक्ति भाव की प्राप्ति तुम्हें हो गयी है ॥

# त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्तौ तौ परिक्रम्य प्रणम्य च पुनः पुनः ।
बद्धोलूखलमामन्त्र्य जग्मतुर्दिशमुत्तराम् ॥४३॥

पदच्छेद— इति उक्तौ तौ परिक्रम्य प्रणम्य च पुनः पुनः ।
बद्ध उलूखलम् आमन्त्र्य जग्मतुः दिशम् उत्तराम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | भगवान् के इस प्रकार | बद्ध | ६. | बँधे हुये |
| उक्तौ | २. | कहने पर | उलूखलम् | ८. | ऊखल में |
| तौ | ३. | उन दोनों ने | आमन्त्र्य | १०. | भगवान् की आज्ञा से |
| परिक्रम्य | ४. | उनकी परिक्रमा करके | जग्मतुः | १३. | प्रस्थान किया |
| प्रणम्य | ७. | प्रणाम करके | दिशम् | १२. | दिशा की ओर |
| च | ५. | और | उत्तराम्॥ | ११. | उत्तर |
| पुनः पुनः । | ६. | बार-बार | | | |

श्लोकार्थ— भगवान् के इस प्रकार कहने पर उन दोनों ने उनकी परिक्रमा करके और बार-बार प्रणाम करके ऊखल में बँधे हुये भगवान् की आज्ञा से उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान किया ॥

श्री मद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
नारदशापो नाम दशमः अध्यायः ।१०॥

## दशमः स्कन्धः

### एकादशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— गोपा नन्दादयः श्रुत्वा द्रुमयोः पततो रवम् ।**
**तत्राजग्मुः कुरुश्रेष्ठ निर्घातभयशङ्किताः ॥१॥**

पदच्छेद— गोपाः नन्द आदयः श्रुत्वा द्रुमयोः पततोः रवम् ।
तत्र आजग्मुः कुरुश्रेष्ठ निर्घात भय शङ्किताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोपाः | ४. | गोपों ने | तत्र | ११. | वहाँ |
| नन्द | २. | नन्द बाबा | आजग्मुः | १२. | आ पहुँचे |
| आदयः | ३. | आदि | कुरुश्रेष्ठ | १. | हे परीक्षित् ! |
| श्रुत्वा | ७. | सुना और वे | निर्घात | ८. | बिजली के गिरने के |
| द्रुमयोः | ५. | वृक्षों के | भय | ९. | भय से |
| पततोः रवम् । | ६. | गिरने के शब्द | शङ्किताः ॥ | १०. | आशङ्कित होकर |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! नन्द बाबा आदि गोपों ने वृक्षों के गिरने का शब्द सुना और बिजली के गिरने के भय से आशंङ्कित होकर वहाँ आ पहुँचे ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**भूम्यां निपतितौ तत्र ददृशुर्यमलार्जुनौ ।**
**बभ्रमुस्तदविज्ञाय लक्ष्यं पतनकारणम् ॥२॥**

पदच्छेद— भूम्याम् निपतितौ तत्र ददृशुः यमल अर्जुनौ ।
बभ्रमुः तत् अविज्ञाय लक्ष्यम् पतन कारणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भूम्याम् | ३. | पृथ्वी पर | बभ्रमुः | १०. | वे चकित ही रह गये |
| निपतितौ | ४. | गिरे हुये | तत् अविज्ञाय | ९. | उसे न जानकर |
| तत्र | १. | वहाँ पर उन्होंने | लक्ष्यम् | ८. | स्पष्ट होने पर भी |
| ददृशुः | ५. | देखा | पतन | ६. | वृक्षों के गिरने का |
| यमला अर्जुनौ । | २. | दोनों अर्जुन वृक्षों को | कारणम् ॥ | ७. | कारण |

श्लोकार्थ—वहाँ पर उन्होंने दोनों अर्जुन वृक्षों को पृथ्वी पर गिरे हुये देखा । वृक्षों के गिरने का कारण स्पष्ट होने पर भी उसे न जानकर वे चकित ही रह गये ॥

## तृतीयः श्लोकः

**उलूखलं विकर्षन्तं दाम्ना बद्धं च बालकम् ।**
**कस्येदं कुत आश्चर्यमुत्पात इति कातराः ॥३॥**

पदच्छेद— उलूखलम् विकर्षन्तम् दाम्ना बद्धम् च बालकम् ।
कस्य इदम् कुतः आश्चर्यम् उत्पा इति कातराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उलूखलम् | ५. | ऊखल | कस्य | ८. | किसका काम है |
| विकर्षन्तम् | ६. | खींचते हुये देखा (फिर भी) | इदम् | ७. | यह |
| दाम्ना | २. | उन्होंने रस्सी में | कुतः | ११. | कैसे हो गयी |
| बद्धम् | ३. | बँधे हुये | आश्चर्यम् | ९. | ऐसी अद्भुत |
| च | १. | और | उत्पातः | १०. | घटना |
| बालकम् । | ४. | बालक श्रीकृष्ण को | इति कातराः॥ | १२. | ऐसा सोचकर वे अधीर हो गये |

श्लोकार्थ—और उन्होंने रस्सी से बँधे हुये बालक श्रीकृष्ण को ऊखल खींचते हुये देखा । फिर भी यह किसका काम है । ऐसी अद्भुत घटना कैसे हो गया । ऐसा सोचकर वे अधीर हो गये ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**बाला ऊचुरनेनेति तिर्यग्गतमुलूखलम् ।**
**विकर्षता मध्यगेन पुरुषावप्यचक्ष्महि ॥४॥**

पदच्छेद— बालाः ऊचुः अनेन इति तिर्यक् गतम् उलूखलम् ।
विकर्षता मध्यगेन पुरुषौ अपि अचक्ष्महि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बालाः | १. | तब कुछ बालकों ने | उलूखलम् । | ७. | ऊखल को |
| ऊचुः | २. | कहा कि यह | विकर्षताम् | ८. | खींचते हुये इसने वृक्ष गिराये हैं |
| अनेन | ३. | इसी कन्हैया का काम है | मध्यगेन | ९. | हमने तो इनके बीच से |
| इति | ४. | अतः | पुरुषौ | १०. | निकलते हुये दो पुरुषों को |
| तिर्यक् | ५. | तिरछे | अपि | ११. | भी |
| गतम् | ६. | हुये | अचक्ष्महि ॥ | १२. | देखा है |

श्लोकार्थ—तब कुछ बालकों ने कहा कि यह इसी कन्हैया का काम है । अतः तिरछे हुये ऊखल को खींचते हुये इसने वृक्ष गिराये हैं । हमने तो इनके बीच से निकलते हुये दो पुरुषों को भी देखा है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**न ते तदुक्तं जगृहुर्न घटेतेति तस्य तत् ।**
**बालस्योत्पाटनं तर्वोः केचित् सन्दिग्धचेतसः ॥५॥**

पदच्छेद— न ते तत् उक्तम् जगृहुः न घटेत इति तस्य तत् ।
बालस्य उत्पाटनम् तर्वोः केचित् सन्दिग्ध चेतसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ४. | नहीं | तस्य | १३. | इस बालक की |
| ते | १. | उन गोपों ने | तत् । | १४. | वे अद्भुत लीलायें स्मरण करके |
| तत् | २. | बालकों की | बालस्य | ६. | एक बालक के द्वारा |
| उक्तम् | ३. | कही हुई बातों को | उत्पाटनम् | ८. | उखाड़ा जाना |
| जगृहुः | ५. | माना क्योंकि | तर्वोः | ७. | वृक्षों का |
| न | १०. | नहीं है | केचित् | १२. | कुछ लोग |
| घटेत | ९. | सम्भव | संदिग्ध | १५. | सन्देह युक्त |
| इति | ११. | अतः | चेतसः ॥ | १६. | मन वाले हो गये |

श्लोकार्थ—उन गोपों ने बालकों की कही हुई बातों को नहीं माना । क्योंकि एक बालक के द्वारा वृक्षों का उखाड़ा जाना सम्भव नहीं है । अतः कुछ लोग इस बालक की वे अद्भुत लीलायें स्मरण करके सन्देह युक्त मन वाले हो गये ।

## षष्ठः श्लोकः

**उलूखलं विकर्षन्तं दाम्ना बद्धं स्वमात्मजम् ।**
**विलोक्य नन्दः प्रहसद्वदनो विमुमोच ह ॥६॥**

पदच्छेद— उलूखलं विकर्षन्तम् दाम्ना बद्धम् स्वम् आत्मजम् ।
विलोक्य नन्दः प्रहसत् वदनः विमुमोच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उलूखलम् | ३. | ऊखल को | विलोक्य | ७. | देखकर |
| विकर्षन्तम् | ४. | खींचते हुये | नन्दः | ८. | नन्दबाबा ने |
| दाम्ना | १. | रस्सी में | प्रहसन् | ९. | हँसते हुये प्रसन्न |
| बद्धम् | २. | बँधे हुये तथा | वदनः | १०. | मुख होकर उसे |
| स्वम् | ५. | अपने | विमुमोच ह ॥ | ११. | खोल दिया |
| आत्मजम् । | ६. | बालक श्रीकृष्ण को | | | |

श्लोकार्थ—रस्सी से बँधे हुये तथा ऊखल को खींचते हुये अपने बालक श्रीकृष्ण को देखकर नन्द बाबा ने हँसते हुये प्रसन्न मुख होकर उसे खोल दिया ॥

## सप्तमः श्लोकः

गोपीभिः स्तोभितोऽनृत्यद् भगवान् बालवत् क्वचित् ।
उद्गायति क्वचिन्मुग्धस्तद्वशो दारुयन्त्रवत् ॥७॥

पदच्छेद— गोपीभिः स्तोभितः अनृत्यत् भगवान् बालवत् क्वचित् ।
उद्गायति क्वचित् मुग्धः तत् वशः दारु यन्त्र वत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गोपीभिः | ५. गोपियों के द्वारा | उद्गायति | १४. | गाने लगते थे |
| स्तोभितः | ६. फुसलाये जाने पर | क्वचित् | ८. | और कभी |
| अनृत्यत् | ७. नाचने लगते थे | मुग्धः | ९. | भोले-भाले बनकर |
| भगवान् | २. भगवान् | तत् | १२. | उनके |
| बाल | ३. बालक के | वशः | १३. | वश में होकर |
| वत् | ४. समान | दारु | १०. | काठ की |
| क्वचित् । | १. कभी-कभी | यन्त्रवत् ॥ | ११. | पुतली के समान |

श्लोकार्थ—कभी-कभी भगवान् बालक के समान गोपियों के द्वारा फुसलाये जा पर नाचने लगते थे। और कभी-कभी भोले-भाले बनकर काठ की पुतली के समान उनके वश में होकर गाने लगते थे ॥

## अष्टमः श्लोकः

बिभर्ति क्वचिदाज्ञप्तः पीठकोन्मानपादुकम् ।
बाहुक्षेपं च कुरुते स्वानां च प्रीतिमावहन् ॥८॥

पदच्छेद— बिभर्ति क्वचित् आज्ञप्तः पीठकः उन्मान पादुकम् ।
बाहुक्षेपम् च कुरुते स्वानाम् च प्रीतिम् आवहन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बिभर्ति | ६. उठा लाते और | बाहुक्षेपम् | ११. | बाहुओं को ठोकना |
| क्वचित् | ७. कभी | च | १. | और कभी |
| आज्ञप्तः | २. उनकी आज्ञा से | कुरुते | १२. | प्रारम्भ कर देते |
| पीठकः | ३. पीठ | स्वानाम् | १०. | अपनी |
| उन्मान | ४. तौलने के बटखरे और | प्रीतिम् | ८. | उन्हें आनन्दित |
| पादुकम् । | ५. खड़ाऊँ | आवहन् ॥ | ९. | करने के लिये |

श्लोकार्थ—और कभी उनकी आज्ञा से पीढा, तौलने के बटखरे और खड़ाऊँ उठा लाते। और कभी उन्हें आनन्दित करने के लिए अपनी बाहुओं को ठोकना प्रारम्भ कर देते ॥

## नवमः श्लोकः

**दर्शयंस्तद्विदां लोक आत्मनो भृत्यवश्यताम् ।**
**व्रजस्योवाह वै हर्षं भगवान् बालचेष्टितैः ॥९॥**

पदच्छेद— दर्शयन् तत् विदाम् लोके आत्मनः भृत्यवश्यताम् ।
व्रजस्य उवाह वै हर्षम् भगवान् बाल चेष्टितैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दर्शयन् | १४. दिखलाते हैं | व्रजस्य | ५. व्रज वासियों को |
| तत् | ९. जो लोग उनके रहस्य को | उवाह | ७. करते और |
| विदाम् | १०. जानने वाले हैं उन्हें | वै | १. निश्चय |
| लोके | ८. संसार में | हर्षम् | ६. आनन्दित |
| आत्मनः | ११. अपना | भगवान् | २. भगवान् |
| भृत्य | १२. भक्तों के | बाल | ३. अपनी बाल |
| वश्यताम् । | १३. अधीन रहना | चेष्टितैः ॥ | ४. लीला के द्वारा |

श्लोकार्थ—निश्चय ही भगवान् अपनी बाल लीलाओं के द्वारा व्रज वासियों को आनन्दित करते और संसार में जो लोग उनके रहस्य को जानने वाले है उन्हें यह दिखलाते कि मैं भक्तों के अधीन हूँ ।

## दशमः श्लोकः

**क्रीणीहि भोः फलानीति श्रुत्वा सत्वरमच्युतः ।**
**फलार्थी धान्यमादाय ययौ सर्वफलप्रदः ॥१०॥**

पदच्छेद— क्रीणीहि भोः फलानि इति श्रुत्वा सत्वरम् अच्युतः ।
फलार्थी धान्यम् आदाय ययौ सर्व फल प्रदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्रीणीहि | ७. खरीद लो | फलार्थी | १३. फल खरीदने के लिये |
| भोः | ५. अरे | धान्यम् | ११. अनाज |
| फलानि | ६. फल | आदाय | १२. लेकर |
| इति | ८. ऐसी आवाज | ययौ | १४. दौड़ पड़े |
| श्रुत्वा | ९. सुनकर | सर्व | १. समस्त कर्मों के और उपासनाओं के |
| सत्वरम् | १०. तत्काल | फल | २. फल |
| अच्युतः । | ४. श्रीकृष्ण एक दिन | प्रदः ॥ | ३. देने वाले |

श्लोकार्थ—समस्त कर्मों और उपासनाओं के फल देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण एक दिन अरे फल ख़रीद लो ऐसी आवाज सुनकर तत्काल अनाज लेकर फल खरीदने के लिए दौड़ पड़े ॥

## एकादशः श्लोकः

**फलविक्रयिणी तस्य च्युतधान्यं करद्वयम् ।**
**फलैरपूरयद् रत्नैः फलभाण्डमपूरि च ॥११॥**

पदच्छेद— फल विक्रयिणी तस्य च्युत धान्यम् करद्वयम् ।
फलैः अपूरयत् रत्नैः फल भाण्डम् अपूरि च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फल | ५. | फल | फलैः | ८. | हाथ फलों से |
| विक्रयिणी | ६. | बेचने वाली ने | अपूरयत् | ९. | भर दिये |
| तस्य | ७. | उन श्रीकृष्ण के | रत्नैः | १३. | रत्नों से |
| च्युत | ४. | नीचे गिर गया पर | फल | ११. | फलों की |
| धान्यम् | १. | अनाज तो | भाण्डम् | १२. | टोकरी |
| कर | ३. | हाथों से | अपूरि | १४. | भर दी |
| द्वयम् । | २. | दोनों | च ॥ | १०. | और तब श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—अनाज तो दोनों हाथों से नीचे गिर गया पर फल बेचने वाली ने उन श्रीकृष्ण के हाथ फलों से भर दिये । और तब श्रीकृष्ण ने फलों की टोकरी रत्नों से भर दी ॥

## द्वादशः श्लोकः

**सरित्तीरगतं कृष्णं भग्नार्जुनमथाह्वयत् ।**
**रामं च रोहिणी देवी क्रीडन्तं बालकैर्भृशम् ॥१२॥**

पदच्छेद— सरित् तीरगतम् कृष्णम् भग्न अर्जुनम् अथ आह्वयत् ।
रामम् च रोहिणी देवी क्रीडन्तम् बालकैः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरित् | ९. | यमुना नदी के | रामम् | ५. | बलराम |
| तीरगतम् | १०. | तट पर पहुँच गये | च | ४. | और |
| कृष्णम् | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण | रोहिणी | १२. | रोहिणी |
| भग्न | २. | तोड़ने वाले | देवी | १३ | देवी ने |
| अर्जुनम् | १. | एक दिन यमलार्जुन वृक्षों को | क्रीडन्तम् | ८. | खेलते-खेलते |
| अथ | ११. | तब | बालकैः | ७. | बालकों के साथ |
| आह्वयत् । | १४. | उन्हें पुकारा | भृशम् ॥ | ६. | बहुत से |

श्लोकार्थ—एक दिन यमलार्जुन वृक्षों के तोड़ने वाले भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम बहुत से बालकों के साथ खेलते-खेलते यमुना नदी के तट पर पहुँच गये । तब रोहिणी देवी ने उन्हें पुकारा ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**नोपेयातां यदाऽऽहूतौ क्रीडासङ्गेन पुत्रकौ ।**
**यशोदां प्रेषयामास रोहिणी पुत्रवत्सलाम् ।।१३।।**

पदच्छेद— न उपेयाताम् यदा आहूतौ क्रीडा सङ्गेन पुत्रकौ ।
यशोदाम् प्रेषयामास रोहिणी पुत्र वत्सला ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | पुत्रकौ । | १. | वे दोनों बालक |
| उपेयाताम् | ७. | आये तब | यशोदादाम् | ११. | यशोदा मैया को |
| यदा | ४. | जब | प्रेषयामास | १२. | भेजा |
| आहूतौ | ५. | बुलाने पर भी | रोहिणी | ८. | रोहिणी जी ने |
| क्रीड | २. | खेल में | पुत्र | ९. | पुत्रों के प्रति |
| सङ्गेन | ३. | रम जाने के कारण | वत्सला ।। | १०. | स्नेहमयी |

श्लोकार्थ—वे दोनों बालक खेल में रम जाने के कारण जब बुलाने पर भी नहीं आये तब रोहिणी जी ने पुत्रों के प्रति स्नेहमयी यशोदा मैया को भेजा ।।

## चतुर्दशः श्लोकः

**क्रीडन्तं सा सुतं बालैरतिवेलं सहाग्रजम् ।**
**यशोदाजोहवीत् कृष्णं पुत्रस्नेहस्नुतस्तनी ।।१४।।**

पदच्छेद— क्रीडन्तम् सा सुतम् बालैः अतिवेलम् सह अग्रजम् ।
यशोदा अजोहवीत् कृष्णम् पुत्र स्नेह स्नुत स्तनी ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रीडन्तम् | ६. | खेल रहे थे | यशोदा | ८. | यशोदा जी ने |
| सा | ७. | उन मैया | अजोहवीत् | १०. | पुकारा |
| सुतम् | ९. | दोनों बालकों को | कृष्णम् | १. | श्रीकृष्ण अपने |
| बालैः | ३. | ग्वाल बालों के | पुत्र | ११. | पुत्र के प्रति वात्सल्य |
| अतिवेलम् | ५. | बहुत देर से | स्नेह | १२. | स्नेह के कारण |
| सह | ४. | साथ | स्नुत | १४. | बह रहा था |
| अग्रजम् । | २. | बड़े भाई बलराम और | स्तनी ।। | १३. | उनके स्तनों से दूध |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई बलराम और ग्वाल बालों के साथ बहुत देर से खेल रहे थे । उन मैया यशोदा जी ने दोनों बालकों को पुकारा । पुत्र के प्रति वात्सल्य स्नेह के कारण उनके स्तनों से दूध बह रहा था ।।

## पञ्चदशः श्लोकः

**कृष्ण कृष्णारविन्दाक्ष तात एहि स्तनं पिब ।**
**अलं विहारैः क्षुत्क्षान्तः क्रीडाश्रान्तोऽसि पुत्रक ॥१५॥**

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण अरविन्दाक्ष तात एहि स्तनम् पिब ।
अलम् विहारैः क्षुत् क्षान्तः क्रीडा श्रान्तः असि पुत्रक ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | हे कृष्ण ! | अलम् | ६. | बन्द करो |
| कृष्ण | ३. | कृष्ण | विहारैः | ८. | खेलना |
| अरविन्दाक्ष | २. | कमल नयन | क्षुत् | ११. | तुम भूख से |
| तात | ४. | बेटे | क्षान्तः | १२. | दुबले हो रहे हो |
| एहि | ५. | आओ | क्रीडा | १३. | खेल से भी |
| स्तनम् | ६. | अपनी माँ का दूध | श्रान्तः असि | १४. | थक गये हो |
| पिब | ७. | पी लो | पुत्रक ॥ | १०. | हे बेटा |

श्लोकार्थ—हे कृष्ण ! कमलनयन, कृष्ण, बेटे, आओ, अपनी माँ का दूध पी लो, खेलना बन्द करो, । हे बेटे ! तुम भूख से दुबले हो रहे हो । खेल से थक भी गये हो ॥

## षोडशः श्लोकः

**हे रामागच्छ ताताशु सानुजः कुलनन्दन ।**
**प्रातरेव कृताहारस्तद् भवान् भोक्तुमर्हति ॥१६॥**

पदच्छेद— हे राम आगच्छ तात आशु स अनुजः कुल नन्दन ।
प्रातः एव कृत आहारः तत् भवान् भोक्तुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हे राम | ४. | हे राम ! | प्रातः | ६. | तुमने तो प्रातः |
| आगच्छ | ८. | आओ | एव | १०. | ही |
| तात | ३. | बेटे | कृत | १२. | किया था |
| आशु | ७. | शीघ्र | आहारः | ११. | कलेऊ |
| स | ६. | साथ | तत् | १३. | इसलिये अब तो |
| अनुजः | ५. | अपने छोटे भाई के | भवान् | १४. | तुम्हें कुछ |
| कुल | १. | समस्त कुल को | भोक्तुम् | १५. | खाना |
| नन्दनः । | २. | आनन्द देने वाले | अर्हति ॥ | १६. | चाहिये |

श्लोकार्थ—समस्त कुल को आनन्द देने वाले बेटे हे राम ! अपने छोटे भाई के साथ शीघ्र आओ । तुमने तो प्रातः ही कलेऊ किया था । इसलिये अब तो तुम्हें कुछ खाना चाहिये ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**प्रतीक्षते त्वां दाशार्ह भोक्ष्यमाणो व्रजाधिपः ।**
**एह्यावयोः प्रियं धेहि स्वगृहान् यात बालकाः ॥१७॥**

पदच्छेद— प्रतीक्षते त्वाम् दाशार्ह भोक्ष्यमाणः व्रजाधिपः ।
एहि आवयोः प्रियम् धेहि स्वगृहान् यात बालकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रतीक्षते | ५. | प्रतीक्षा कर रहे हैं | आवयोः | ७. | हम लोगों का |
| त्वाम् | ४. | तुम्हारी | प्रियम् | ८. | आनन्दित |
| दाशार्ह | १. | दशार्ह के वंशज | धेहि | ९. | करो |
| भोक्ष्यमाणः | ३. | भोजन करने के लिये | स्वगृहान् | ११. | अपने-अपने घरों को |
| व्रजाधिपः । | २. | व्रजराज | यात | १२. | जाओ |
| एहि | ६. | आओ और | बालकाः ॥ | १०. | बालकों तुम लोग भी |

श्लोकार्थ—दशार्ह के वंशज व्रजराज भोजन करने के लिये तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं । आओ और हम लोगों को आनन्दित करो । बालकों ! तुम लोग भी अपने-अपने घरों को जाओ ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**धूलिधूसरिताङ्गस्त्वं पुत्र मज्जनमावह ।**
**जन्मर्क्षमद्य भवतो विप्रेभ्यो देहि गाः शुचिः ॥१८॥**

पदच्छेद— धूलि धूसरित अङ्गः त्वम् पुत्र मज्जनम् आवह ।
जन्म ऋक्षम् अद्य भवतः विप्रेभ्यः देहि गाः शुचिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धूलि | ४. | धूल से | जन्मऋक्षम् | १०. | जन्म नक्षत्र है अतः |
| धूसरित | ५. | लथ-पथ हो रहा है | अद्य | ८. | आज |
| अङ्गः | ३. | शरीर | भवतः | ९. | तुम्हारा |
| त्वम् | २. | तुम्हारा | विप्रेभ्यः | १२. | ब्राह्मणों को |
| पुत्र | १. | हे बेटे | देहि | १४. | दान करो |
| मज्जन | ६. | अतः स्नान | गाः | १३. | गायों का |
| आवह । | ७. | कर लो | शुचिः ॥ | ११. | पवित्र होकर |

श्लोकार्थ—हे बेटे ! तुम्हारा शरीर धूल से लथ-पथ हो रहा है । अतः स्नान कर लो । आज तुम्हारा जन्म नक्षत्र है । पवित्र होकर ब्राह्मणों को गायों का दान करो ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**पश्य पश्य वयस्यांस्ते मातृमृष्टान् स्वलङ्कृतान् ।**
**त्वं च स्नातः कृताहारो विहरस्व स्वलङ्कृतः ॥१६॥**

पदच्छेद— पश्य पश्य वयस्यान् ते मातृ मृष्टान् सु अलङ्कृतान् ।
त्वम् च स्नातः कृत आहारः विहरस्व सु अलङ्कृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पश्य पश्य | १. | देखो देखो | त्वम् | ७. | तुम भी |
| वयस्यान् | ३. | मित्रों को | च स्नातः | ८. | स्नान करके और |
| ते | २. | तुम्हारे | कृत आहारः | ६. | भोजन करके |
| मातृ | ४. | उनकी माताओं ने | विहरस्व | १२. | खेलना |
| मृष्टान् | ५. | नहलाकर भली भाँति | सु | १०. | भली भाँति |
| सुअलङ्कृतान्। | ६. | गहने पहना दिये हैं | अलङ्कृतः ॥ | ११. | आभूषण धारण करके |

श्लोकार्थ—देखो देखो तुम्हारे मित्रों को उनकी माताओं ने नहलाकर भली भाँति गहने पहना दिये हैं। तुम भी स्नान करके और भोजन करके भली भाँति आभूषण धारण करके खेलना ।

## विंशः श्लोकः

**इत्थं यशोदा तमशेषशेखरं मत्वा सुतं स्नेहनिबद्धधीर्नृप ।**
**हस्ते गृहीत्वा सहराममच्युतं नीत्वा स्ववाटं कृतवत्यथोदयम् ॥२०॥**

पदच्छेद— इत्थम् यशोदा तम् अशेषशेखरम् मत्वा सुतम् स्नेह निबद्ध धीः नृप ।
हस्ते गृहीत्वा सह रामम् अच्युतम् नीत्वा स्ववाटम् कृतवती अथ उदयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् यशोदा | २. | इस प्रकार यशोदा का | हस्ते गृहीत्वा | १३. | हाथ पकड़कर |
| तम् | ७. | उन भगवान् को | सह | १२. | सहित |
| अशेषशेखरम् | ६. | सम्पूर्ण जगत् के शिरोमणि | रामम् | ११. | बलराम |
| मत्वा | ६. | मानती थीं (अतः) | अच्युतम् | १०. | श्रीकृष्ण |
| सुतम् | ८. | अपना पुत्र | नीत्वा | १५. | ले गयीं |
| स्नेह | ४. | प्रेम बन्धन | स्ववाटम् | १४. | अपने घर |
| निबद्ध | ५. | बँधा हुआ था (वे) | कृतवती | १८. | प्रेम से किये |
| धीः | ३. | मन प्राण प्रायः | अथ | १६. | तत्पश्चात् उनके |
| नृप । | १. | हे परीक्षित् ! | उदयम् ॥ | १७. | मङ्गल के लिये यथेष्ट कार्य |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार यशोदा जी का मन-प्राण प्रायः प्रेमबन्धन से बँधा हुआ था। वे सम्पूर्ण जगत् के शिरोमणि उन भगवान् श्रीकृष्ण को अपना पुत्र मानती थीं। अतः श्रीकृष्ण को बलराम जी के सहित हाथ पकड़कर अपने घर ले गईं। तत्पश्चात् उनके मङ्गल के लिये यथेष्ट कार्य प्रेम से किये ॥

## एकविंशः श्लोकः

**गोपवृद्धाः महोत्पातानतुभूय बृहद्वने ।**
**नन्दादयः समागम्य व्रजकार्यममन्त्रयन् ॥२१॥**

पदच्छेद— गोपवृद्धाः महोत्पातान् अनुभूय बृहद् वने ।
नन्द आदयः समागम्य व्रज कार्यम् अमन्त्रयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **गोपवृद्धाः** | २. | बड़े बूढ़े गोपों ने | नन्द आदयः | १. | जब नन्द बाबा आदि |
| **महोत्पातान्** | ५. | बड़े उत्पात होने लगे हैं वे | समागम्य | ६. | इकट्ठे होकर |
| **अनुभूय** | ३. | यह अनुभव किया कि | व्रजकार्यम् | ८. | व्रज वासियों को क्या करना चाहिये |
| **बृहत् वने ।** | ४. | महावन में | अमन्त्रयन् ॥ | ७. | यह विचार करने लगे कि |

श्लोकार्थ—जब नन्द बाबा आदि बड़े-बूड़े गोपों ने यह अनुभव किया कि महावन में बड़े उत्पात होने लगे हैं । वे इकट्ठे होकर यह विचार करने लगे कि व्रजवासियों को क्या करना चाहिये ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**तत्रोपनन्दनामाऽऽह गोपो ज्ञानवयोऽधिकः ।**
**देशकालार्थतत्त्वज्ञः प्रियकृद् रामकृष्णयोः ॥२२॥**

पदच्छेद— तत्र उपनन्दनामा आह गोपः ज्ञान वयः अधिकः ।
देशकाल अर्थ तत्त्वज्ञः प्रिय कृत् राम कृष्णयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तत्र** | १. | उनमें से | देशकाल | ५. | स्थान समय और |
| **उपनन्दनामा** | १२. | उपनन्द नामक | अर्थ | ६. | वस्तु के |
| **आह** | १४. | कहा | तत्त्वज्ञः | ७. | तत्त्व को जानने वाले |
| **गोपः** | १३. | गोप ने | प्रिय | १०. | प्रिय |
| **ज्ञान** | २. | ज्ञान और | कृत् | ११. | करने वाले |
| **वयः** | ३. | अवस्था में | राम | ८. | बलराम और |
| **अधिकः ।** | ४. | श्रेष्ठ तथा | कृष्णयोः ॥ | ९. | श्रीकृष्ण का |

श्लोकार्थ—उनमें से ज्ञान और अवस्था में श्रेष्ठ तथा स्थान, समय और वस्तु के तत्त्व को जानने वाले बलराम और श्रीकृष्ण का प्रिय करने वाले उपनन्द नामक गोप ने कहा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**उत्थातव्यमितोऽस्माभिर्गोकुलस्य हितैषिभिः ।**
**आयान्त्यत्र महोत्पाता बालानां नाशहेतवः ॥२३॥**

पदच्छेद— उत्थातव्यम् इतः अस्माभिः गोकुलस्य हितैषिभिः ।
आयान्ति अत्र महोत्पाताः बालानाम् नाश हेतवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उत्थातव्यम् | १०. | चला जाना चाहिये | आयान्ति | ५. | होने लगे हैं अतः |
| इतः | ९. | यहाँ से | अत्र | १. | अब यहाँ |
| अस्माभिः | ८. | हम लोगों को | महोत्पाताः | ४. | बड़े-बड़े उत्पात |
| गोकुलस्य | ६. | गोकुल वासियों का | बालानाम् | २. | बच्चों का |
| हितैषिभिः । | ७. | भला चाहने वाले | नाश हेतवः ॥ | ३. | अनिष्ट करने वाले |

श्लोकार्थ—अब यहाँ बच्चों का अनिष्ट करने वाले बड़े-बड़े उत्पात होने लगे हैं । अतः गोकुल वासियों का भला चाहने वाले हम लोगों को यहाँ से चला जाना चाहिये ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**मुक्तः कथञ्चिद् राक्षस्या बालघ्न्या बालको ह्यसौ ।**
**हरेरनुग्रहान्नूनमनश्चोपरि नापतत् ॥२४॥**

पदच्छेद— मुक्तः कथञ्चित् राक्षस्या बालघ्न्या बालकः हि असौ ।
हरेः अनुग्रहात् नूनम् अनः च उपरि न अपतत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुक्तः | ६. | बचा | हरेः | ८. | भगवान् की |
| कथञ्चित् | ३. | जिस किसी प्रकार | अनुग्रहात् | ९. | कृपा से |
| राक्षस्या | ५. | राक्षसी पूतना से | नूनम् | ७. | निश्चय ही |
| बालघ्न्या | ४. | बच्चों को मारने वाली | अनः च | १०. | बड़ा छकड़ा |
| बालकः हि | २. | बालक | उपरि | ११. | इसके ऊपर |
| असौ । | १. | यह | न अपतत् । | १२. | नहीं गिरा |

श्लोकार्थ—यह बालक जिस किसी प्रकार बच्चों को मारने वाली राक्षसी पूतना से बचा । निश्चय ही भगवान् की कृपा से बड़ा छकड़ा इसके ऊपर नहीं गिरा ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**चक्रवातेन नीतोऽयं दैत्येन विपदं वियत् ।**
**शिलायां पतितस्तत्र परित्रातः सुरेश्वरैः ॥२५॥**

पदच्छेद— चक्रवातेन नीतः अयम् दैत्येन विपदम् वियत् ।
शिलायाम् पतितः तत्र परित्रातः सुरेश्वरैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| चक्रवातेन | १. बवन्डर रूपधारी | शिलायाम् | ८. चट्टान पर |
| नीतः | ५. ले जाकर | पतितः | ९. गिरा, तब |
| अयम् | ३. इसे | तत्र | ७. वहाँ से जब यह |
| दैत्येन | २. दैत्य ने | परित्रातः | ११. इसकी रक्षा की |
| विपदम् | ६. विपत्ति में डाल दिया था | सुरेश्वरैः ॥ | १०. कुल देवेश्वरों ने ही |
| वियत् । | ४. आकाश में | | |

श्लोकार्थ—बवन्डर रूपधारी दैत्य ने इसे आकाश में ले जाकर विपत्ति में डाल दिया था । वहाँ से यह जब चट्टान पर गिरा तब कुल देवेश्वरों ने ही इसकी रक्षा की थी ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**यन्न म्रियेत द्रुमयोरन्तरं प्राप्य बालकः ।**
**असावन्यतमो वापि तदप्यच्युतरक्षणम् ॥२६॥**

पदच्छेद— यत् न म्रियेत द्रुमयोः अन्तरम् प्राप्य बालकः ।
असौ अन्यतमः वा अपि तत् अपि अच्युत रक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् | १. जो | असौ | २. यह |
| न | ९. नहीं | अन्यतमः | ४. अन्य कोई |
| म्रियेत | १०. मरा | वा अपि | ३. अथवा |
| द्रुमयोः | ६. यमलार्जुन वृक्षों के | तत् | ११. यह |
| अन्तरम् | ७. बीच में | अपि | १२. भी |
| प्राप्य | ८. पड़कर भी | अच्युत | १२ भगवान् की |
| बालकः । | ५. बालक | रक्षणम् ॥ | १४. रक्षा का ही फल है |

श्लोकार्थ—जो यह अथवा अन्य कोई बालक यमलार्जुन वृक्षों के बीच में पड़कर भी नहीं मरा । यह भी भगवान् की रक्षा का ही फल है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**यावदौत्पातिकोऽरिष्टो व्रजं नाभिभवेदितः ।**
**तावद् बालानुपादाय यास्यामोऽन्यत्र सानुगाः ।।२७।।**

पदच्छेद— यावत् औत्पातिकः अरिष्टः व्रजम् न अभि भवेत् इतः ।
तावत् बालान् उपादाय यास्यामः अन्यत्र सानुगाः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यावत् | १. | जब तक कोई | तावत् | ७. | तब तक |
| औत्पातिकः | २. | अनिष्टकारी | बालान् | ८. | अपने बच्चों को |
| अरिष्टः | ३. | अरिष्ट | उपादाय | ९. | लेकर |
| व्रजम् | ४. | व्रज को | यास्यामः | १३. | चले चलें |
| न | ६. | न कर दे | अन्यत्र | १२. | अन्यत्र |
| अभि भवेत् | ५. | नष्ट | सानुगाः ।। | ११. | अनुचरों के साथ |
| इतः । | १०. | यहाँ से | | | |

श्लोकार्थ—जब तक अनिष्टकारी अरिष्ट व्रज को नष्ट न कर दे । तब तक अपने बच्चों को लेकर यहाँ से अनुचरों के साथ अन्यत्र चले चलें ।।

## अष्टविंशः श्लोकः

**वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नवकाननम् ।**
**गोपगोपीगवां सेव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम् ।।२८।।**

पदच्छेद— वनम् वृन्दावनम् नाम पशव्यम् नव काननम् ।
गोप गोपी गवाम् सेव्यम् पुण्य अद्रि तृण वीरुधम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वनम् | ३. | एक वन है | गोपी | ८. | गोपी और |
| वृन्दावनम् | १. | वृन्दावन | गवाम् | ९. | गायों के |
| नाम | २. | नाम का | सेव्यम् | १०. | सेवन करने योग्य है |
| पशव्यम | ६. | पशुओं के लिये भी हितकर है | पुण्य | ११. | वहाँ पवित्र |
| नव | ४ | वह नये-नये | अद्रि | १२ | पर्वत |
| काननम् । | ५. | वनों से युक्त है (तथा) | तृण | १३ | घास और |
| गोप | ७. | गोप | वीरुधम्।। | १४. | हरी-भरी वनस्पतियाँ हैं |

श्लोकार्थ—वृन्दावन नाम का एक वन है । वह नये-नये वनों से युक्त है । पशुओं के लिये भी हितकर है । तथा गोप, गोपी और गायों के सेवन करने योग्य है । वहाँ पवित्र पर्वत, घास और हरी-भरी वनस्पतियाँ हैं ।।

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**तत्तत्राद्यैव यास्यामः शकटान् युङ्क्त मा चिरम् ।**
**गोधनान्यग्रतो यान्तु भवतां यदि रोचते ॥२६॥**

पदच्छेद— तत् तत्र अद्य एव यास्यामः शकटान् युङ्क्त मा चिरम् ।
गोधनानि अग्रतः यान्तु भवताम् यदि रोचते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ४. | हम लोग | गोधनानि | १०. | और गायों का |
| तत्र | ५. | वहाँ के लिये | अग्रतः | ११. | पहले ही |
| अद्य एव | ६. | आज ही | यान्तु | १२. | वहाँ भेज दें |
| यास्यामः | ७. | प्रस्थान कर दें | भवताम् | २. | आप लोगों को |
| शकटान् युङ्क्त | ६. | गाड़ी-छकड़े जोतें | यदि | १. | यदि |
| मा चिरम् । | ८. | देर न करें | रोचते ॥ | ३. | यह बात जंचे तो |

श्लोकार्थ—यदि आप लोगों को जंचे तो हम लोग वहाँ के लिये आज ही प्रस्थान कर दें । देर न करें, गाड़ी-छकड़े जोतें और गायों को पहले ही वहाँ भेज दें ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**तच्छ्रुत्वैकधियो गोपाः साधु साध्विति वादिनः ।**
**व्रजान् स्वान् स्वान् समायुज्य ययू रूढपरिच्छदाः ॥३०॥**

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा एकधियः गोपाः साधु साधु इति वादिनः ।
व्रजान् स्वान्-स्वान् समायुज्य ययुः रूढ परिच्छदाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | इस बात को | व्रजान् | १०. | गाड़ियों पर |
| श्रुत्वा | २. | सुनकर | स्वान्-स्वान् | ६. | अपनी अपनी |
| एकधियः | ३. | एकमत होकर | समायुज्य | ८. | एकत्रित होकर और |
| गोपाः | ४. | गोपों ने | ययुः | १३. | वृन्दावन को यात्रा की |
| साधु | ५. | बहुत ठीक | रूढ | १२. | लादकर |
| साधु इति | ६. | बहुत ठीक ऐसा | परिच्छदाः ॥ | ११. | सामान |
| वादिनः । | ७. | कहा | | | |

श्लोकार्थ—इस बात को सुनकर एकमत होकर गोपों ने बहुत ठीक बहुत ठीक ऐसा कहा । एकत्रित होकर और अपनी अपनी गाड़ियों पर सामान लादकर वृन्दावन की यात्रा की ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**वृद्धान् बालान् स्त्रियो राजन् सर्वोपकरणानि च ।**
**अनस्स्वारोप्य गोपाला यत्ता आत्तशरासनाः ॥३१॥**

पदच्छेद— वृद्धान् बालान् स्त्रियः राजन् सर्व उपकरणानि च ।
अनस्सु आरोप्य गोपालाः यत्ताः आत्त शरासनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वृद्धान् | ३. बूढ़ों | अनस्सु | ९. छकड़ों पर |
| बालान् | ४. बच्चों | आरोप्य | १०. चढ़ा दिया और |
| स्त्रियः | ५. स्त्रियों | गोपालाः | २. ग्वालों ने |
| राजन् | १. हे परीक्षित् ! | यत्ताः | १३. सावधान होकर चलने लगे |
| सर्व | ७. सब | आत्त | १२. लेकर |
| उपकरणानि | ८. सामग्रियों को | शरासनाः ॥ | ११. धनुष बाण |
| च । | ६. और | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! ग्वालों ने बूढ़ो, बच्चों, स्त्रियों और सामग्रियों को छकड़ों पर चढ़ा दिया । और धनुष बाण लेकर सावधान होकर चलने लगे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**गोधनानि पुरस्कृत्य शृङ्गाण्यापूर्य सर्वतः ।**
**तूर्यघोषेण महता ययुः सहपुरोहिताः ॥३२॥**

पदच्छेद— गोधनानि पुरस्कृत्य शृङ्गाणि आपूर्य सर्वतः ।
तूर्य घोषेण महता ययुः सह पुरोहिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोधनानि | १. गायों और बछड़ों को | तूर्य | ६. तुरही |
| पुरस्कृत्य | २. आगे करके उन्हें | घोषेण | ८. बजाते हुये वे |
| शृङ्गाणि | ५. सींग और | महता | ७. जोर-जोर से |
| आपूर्य | ४. घेर कर | ययुः | १०. चल रहे थे |
| सर्वतः । | ३. सब ओर से | सह पुरोहिताः ॥ | ९. पुरोहितों के साथ |

श्लोकार्थ—गायों और बछड़ों को आगे करके उन्हें सब ओर से घेर कर सींग और तुरही जोर-जोर से बजाते हुये वे पुरोहितों के साथ चल रहे थे ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**गोप्यो रूढरथा नूत्नकुचकुङ्कुमकान्तयः ।**
**कृष्णलीला जगुः प्रीता निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ॥३३॥**

पदच्छेद— गोप्यः रूढ रथाः नूत्न कुच कुङ्कुम कान्तयः ।
कृष्ण लीलाः जगुः प्रीताः निष्ककण्ठ्यः सु वाससः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | १. | गोपियाँ | कृष्ण | १२. | भगवान् श्रीकृष्ण की |
| रूढ | १०. | सवार होकर | लीलाः | १३. | लीलाओं का |
| रथाः | ९. | रथों पर | जगुः | १४. | गीत गाती जाती थीं |
| नूत्न | ३. | नई | प्रीताः | ११. | बड़े आनन्द से |
| कुच | २. | वक्षः स्थल पर | निष्क कण्ठ्यः | ८. | गले में सोने का हार पहने हुये |
| कुङ्कुम | ४. | केसर की | सु | ६. | सुन्दर-सुन्दर |
| कान्तयः । | ५. | कांति से युक्त होकर | वाससः ॥ | ७. | वस्त्र धारण करके |

श्लोकार्थ—गोपियाँ वक्षः स्थल पर नई केसर की कांति से युक्त होकर सुन्दर-सुन्दर वस्त्र धारण करके गले में सोने के हार पहने हुये, रथों पर सवार होकर बड़े आनन्द से भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का गीत गाती जाती थीं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**तथा यशोदारोहिण्यावेकं शकटमास्थिते ।**
**रेजतुः कृष्णरामाभ्यां तत्कथाश्रवणोत्सुके ॥३४॥**

पदच्छेद— तथा यशोदा रोहिण्यौ एकम् शकटम् आस्थिते ।
रेजतुः कृष्ण रामाभ्याम् तत् कथा श्रवण उत्सुके ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथा | ५. | वैसे ही सजकर | रेजतुः | ९. | शोभायमान हो रही थीं |
| यशोदा | १. | यशोदा रानी जी | कृष्ण | ३. | श्रीकृष्ण |
| रोहिण्यौ | २. | और रोहिणी जी भी | रामाभ्याम् | ४. | बलराम जी के सहित |
| एकम् | ६. | एक | तत् | १०. | उनमें श्रीकृष्ण की |
| शकटम् | ७. | छकड़े पर | कथाश्रवण | ११. | तोतली बातें सुनने की |
| आस्थिते । | ८. | स्थित होकर | उत्सुके ॥ | १२. | उत्कण्ठा जो थी |

श्लोकार्थ –यशोदा रानी जी और रोहिणी जी भी श्रीकृष्ण और बलराम जी के सहित वैसे ही सजकर एक छकड़े पर स्थित होकर शोभायमान हो रही थीं । उनमें श्रीकृष्ण की तोतली बोली सुनने की उत्कण्ठा जो थी ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

वृन्दावनं संप्रविश्य सर्वकालसुखावहम् ।
तत्र चक्रुर्व्रजावासं शकटैरर्धचन्द्रवत् ॥३५॥

पदच्छेद— वृन्दावनम् संप्रविश्य सर्व काल सुख आवहम् ।
तत्र चक्रुः व्रज आवासम् शकटैः अर्ध चन्द्रवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वृन्दावनम् | ५. | वृन्दावन में | तत्र | १०. | वहाँ |
| संप्रविश्य | ६. | प्रवेश करके | चक्रुः | १२. | बना लिया |
| सर्व | १. | सभी | व्रज | ७. | ग्वाल वालों ने |
| काल | २. | समय | आवासम् | ११. | रहने योग्य स्थान |
| सुख | ३. | सुख | शकटैः | ८. | छकड़ों को |
| आवहम् । | ४. | देने वाले | अर्धचन्द्रवत् ॥ | ९. | अर्ध चन्द्राकार खड़ा करके |

श्लोकार्थ—सभी समय सुख देने वाले वृन्दावन में प्रवेश करके ग्वाल-वालों ने छकड़ों को अर्ध चन्द्राकार खड़ा करके वहाँ रहने योग्य स्थान बना लिया ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

वृन्दावनं गोवर्धनं यमुनापुलिनानि च ।
वीक्ष्यासीदुत्तमा प्रीती राममाधवयोर्नृप ॥३६॥

पदच्छेद— वृन्दावनम् गोवर्धनम् यमुना पुलिनानि च ।
वीक्ष्य आसीत् उत्तमा प्रीतिः राम माधवयोः नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वृन्दावनम् | २. | वृन्दावन का हरा-भरा वन | आसीत् | १२. | उदय हुआ |
| गोवर्धनम् | ३. | गोवर्धन पर्वत | उत्तमा | १०. | उत्तम |
| यमुना | ५. | यमुना नदी के | प्रीतिः | ११. | प्रीति का |
| पुलिनानि | ६. | सुन्दर किनारों को | राम | ९. | बलराम के हृदय में |
| च । | ४. | और | माधवयोः | ८. | भगवान् श्रीकृष्ण और |
| वीक्ष्य | ७. | देखकर | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—वृन्दावन का हरा-भरा वन, गोवर्धन पर्वत और यमुना नदी के सुन्दर किनारों को देखकर भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम के हृदय में उत्तम प्रीति का उदय हुआ ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**एवं व्रजौकसां प्रीतिं यच्छन्तौ बालचेष्टितैः ।**
**कलवाक्यैः स्वकालेन वत्सपालौ बभूवतुः ॥३७॥**

पदच्छेद— एवम् व्रज ओकसाम् प्रीतिम् यच्छन्तौ बालचेष्टितैः ।
कलवाक्यैः स्वकालेन वत्स पालौ बभूवतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | कल | २. | तोतली |
| व्रज | ६. व्रज | वाक्यैः | ३. | बोली और |
| ओकसाम् | ७. वासियों को | स्व | १०. | अपना |
| प्रीतिम् | ८. आनन्द | कालेन | ११. | समय आने पर |
| यच्छन्तौ | ९. प्रदान करते हुये वे | वत्स | १२. | बछड़ों को |
| बाल | ४. अपनी बालोचित | पालौ | १३. | चराने योग्य |
| चेष्टितैः । | ५. लीलाओं से | बभूवतुः ॥ | १४. | हो गये |

श्लोकार्थ—इस प्रकार तोतली बोली और अपनी बालोचित लीलाओं से व्रजवासियों को आनन्द प्रदान करते हुये वे अपना समय आने पर बछड़ों को चराने योग्य हो गये ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**अविदूरे व्रजभुवः सह गोपालदारकैः ।**
**चारयामासतुर्वत्सान् नानाक्रीडापरिच्छदौ ॥३८॥**

पदच्छेद— अविदूरे व्रजभुवः सह गोपाल दारकैः ।
चारयामासतुः वत्सान् नाना क्रीडा परिच्छदैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अविदूरे | ९. निकट ही | चारयामासतुः | ११. | चराने लगे |
| व्रज | ७. गोष्ठ | वत्सान् | १०. | बछड़ों को |
| भुवः | ८. स्थल के | नाना | १. | वे अनेक प्रकार की |
| सह | ६. साथ | क्रीडा | २. | खेल की |
| गोपाल | ४. गोप | परिच्छदैः ॥ | ३. | सामग्री लेकर |
| दारकैः । | ५. बालकों के | | | |

श्लोकार्थ—वे अनेक प्रकार की खेल की सामग्री लेकर गोप बालकों के साथ गोष्ठ स्थल के निकट ही बछड़ों को चराने लगे ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**क्वचिद् वादयतो वेणुं क्षेपणैः क्षिपतः क्वचित्।**
**क्वचित् पादैः किङ्किणीभिः क्वचित् कृत्रिमगोवृषैः ॥३६॥**

पदच्छेद— क्वचित् वादयतः वेणुम् क्षेपणैः क्षिपतः क्वचित् ।
क्वचित् पादैः किङ्किणीभिः क्वचित् कृत्रिम गोवृषैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. वे कहीं | क्वचित् | ७. कहीं |
| वादयतः | ३. बजा रहें हैं | पादैः | ८. पैरों के |
| वेणुम् | २. बाँसुरी | किङ्किणीभिः | ९. घुंघरू या ताल छेड़ रहे हैं |
| क्षेपणैः | ५. गोलियाँ | क्वचित् | १०. कहीं |
| क्षिपतः | ६. फेंक रहे हैं | कृत्रिम | ११. बनावटी |
| क्वचित् । | ४. कहीं पर | वृषैः ॥ | १२. गाय और बैल बन रहे हैं |

श्लोकार्थ—वे कहीं बाँसुरी बजा रहे हैं । कहीं पर गोलियाँ फेंक रहे हैं । कहीं पैरों के घुंघरू पर ताल दे रहे हैं । कहीं बनावटी गाय और बैल बन रहे हैं ॥

# चत्वारिंशः श्लोकः

**वृषायमाणौ नर्दन्तौ युयुधाते परस्परम् ।**
**अनुकृत्य रुतैर्जन्तूंश्चेरतुः प्राकृतौ यथा ॥४०॥**

पदच्छेद— वृषायमाणौ नर्दन्तौ युयुधाते परस्परम् ।
अनुकृत्य रुतैः जन्तून् चेरतुः प्राकृतौ यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वृषायमाणौ | १. वे कहीं साँड बनकर | रुतैः | ६. बोली का |
| नर्दन्तौ | २. हँकड़ते हुये | जन्तुः | ५. कहीं मोर, बन्दर आदि पशु पक्षियों की |
| ययुधाते | ४. लड़ रहे हैं | चेरतुः | १०. खेलते रहते हैं |
| परस्परम् । | ३. आपस में | प्राकृतौ | ८. साधारण |
| अनुकृत्य | ७. अनुकरण करके | यथा ॥ | ९. बालकों के समान |

श्लोकार्थ—वे कहीं साँड़ बनकर हँड़कते हुये आपस में लड़ रहे हैं । कहीं मोर, बन्दर आदि पशु-पक्षियों की बोली का अनुकरण करके साधारण बालकों के समान खेलते रहते हैं ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**कदाचिद् यमुनातीरे वत्सांश्चारयतोः स्वकैः ।**
**वयस्यैः कृष्णबलयोर्जिघांसुर्दैत्य आगमत् ॥४१॥**

पदच्छेद— कदाचित् यमुना तीरे वत्सान् चारयतोः स्वकैः ।
वयस्यैः कृष्ण बलयोः जिघांसुः दैत्यः आगमत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कदाचित् | १. | एक दिन | वयस्यैः | ५. | सखा ग्वालों के साथ |
| यमुना | ६. | यमुना के | कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण और |
| तीरे | ७. | तट पर | बलयोः | ३. | बलराम |
| वत्सान् | ८. | बछड़े | जिघांसुः | १०. | उन्हें मारने की इच्छा से |
| चारयतोः | ९. | चरा रहे थे कि | दैत्यः | ११. | एक दैत्य |
| स्वकैः । | ४. | अपने प्रेमी | आगमत् ॥ | १२. | आया |

श्लोकार्थ—एक दिन श्रीकृष्ण और बलराम अपने प्रेमी सखा ग्वाल वालों के साथ यमुना के तट पर बछड़े चरा रहे थे कि उन्हें मारने की इच्छा से एक दैत्य आया ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तं वत्सरूपिणं वीक्ष्य वत्सयूथगतं हरिः ।**
**दर्शयन् बलदेवाय शनैर्मुग्ध इवासदत् ॥४२॥**

पदच्छेद— तम् वत्स रूपिणम् वीक्ष्य वत्स यूथगतम् हरिः ।
दर्शयन् बलदेवाय शनैः मुग्धः इव आसदत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ६. | उस दैत्य को | दर्शयन् | ९. | उसे दिखाते हुये |
| वत्स | ४. | बनावटी बछड़े का | बलदेवाय | ८. | बलराम जी को भी |
| रूपिणम् | ५. | रूप धारण करने वाले | शनैः | १०. | धीरे-धीरे उस पर |
| वीक्ष्य | ७. | देखकर | मुग्धः | ११. | मुग्ध |
| वत्स | २. | बछड़ों के | इव | १२. | जैसे |
| यूथगतम् | ३. | झुण्ड में प्रविष्ट | आसदत् ॥ | १३. | हो गये |
| हरिः । | १. | श्रीकृष्ण ने | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने बछड़ों के झुण्ड में प्रविष्ट उस बनावटी बछड़े का रूप धारण करने वाले उस दैत्य को देखकर तथा बलराम जी को भी दिखाते हुये धीरे-धीरे उस पर मुग्ध जैसे हो गये ॥

# त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**गृहीत्वापरपादाभ्यां सहलाङ्गूलमच्युतः ।**
**भ्रामयित्वा कपित्थाग्रे प्राहिणोद् गतजीवितम् ।**
**स कपित्थैर्महाकायः पात्यमानैः पपात ह ॥४३॥**

पदच्छेद— गृहीत्वा अपर पादाभ्याम् सह लाङ्गूलम् अच्युतः ।
भ्रामयित्वा कपित्थ अग्रे प्राहिणोत् गत जीवितम् ।
सः कपित्थैः महाकायः पात्यमानैः पपात ह ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गृहीत्वा | ६. पकड़ कर | प्राहिणोत् | ११. पटक दिया |
| अपर | ४. दोनों पिछले | गत | ६. रहित हो जाने पर |
| पादाभ्याम् | ५. पैर | जीवितम् | ८. प्राण |
| सह | ३. साथ उसके | सः | १२. वह |
| लाङ्गूलम् | २. पूंछ के | कपित्थैः | १४. कैथ के वृक्षों को |
| अच्युतः | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | महाकायः | १३. विशाल काय दैत्य |
| भ्रामयित्वा | ७. आकाश में घुमाया और | पात्यमानैः | १५. गिराकर स्वयं भी |
| कपित्थ अग्रे । | १०. कैथ के वृक्ष के ऊपर | पपात ह ।। | १६. गिर पड़ा |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने पूंछ के साथ उनके दोनों पिछले पैर पकड़कर आकाश में घुमाया और प्राण रहित हो जाने पर कैथ के वृक्ष के ऊपर पटक दिया । वह विशाल काय दैत्य कैथ के वृक्षों को गिराकर स्वयं भी गिर पड़ा ।।

# चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तं वीक्ष्य विस्मिता बालाः शशंसुः साधु साध्विति ।**
**देवाश्च परिसन्तुष्टा बभूवुः पुष्पवर्षिणः ॥४४॥**

पदच्छेद— तम् वीक्ष्य विस्मिताः बालाः शशंसुः साधु साधु इति ।
देवाः च परिसन्तुष्टाः बभूवुः पुष्प वर्षिणः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् वीक्ष्य | १. यह देखकर | देवाः | ८. देवगण भी |
| विस्मिताः | ३. आश्चर्य चकित हो गये | च | ७. और |
| बालाः | २. ग्वाल बाल | परिसन्तुष्टाः | ६. अत्यन्त प्रसन्न होकर |
| शशंसुः | ६. प्रशंसा करने लगे | बभूवुः | १२. करने लगे |
| साधु | ४. वे वाह | पुष्प | १०. पुष्पों की |
| साधुइति । | ५. वाह करके | वर्षिणः ।। | ११. वर्षा |

श्लोकार्थ—यह देखकर ग्वाल-बाल आश्चर्य चकित हो गये । वे वाह वाह करके प्रशंसा करने लगे । और देवगण भी अत्यन्त प्रसन्न होकर पुष्पों की वर्षा करने लगे ।।

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**तौ वत्सपालकौ भूत्वा सर्वलोकैकपालकौ ।**
**सप्रातराशौ गोवत्सांश्चारयन्तौ विचेरतुः ॥४५॥**

पदच्छेद— तौ वत्स पालकौ भूत्वा सर्वलोकैक पालकौ ।
सप्रातराशौ गोवत्सान् चारयन्तौ विचेरतुः ॥

शब्दार्थ -

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तौ | ४. | श्याम और बलराम | स | ८. | सहित |
| वत्सपालकौ | ५. | बछड़ों के चरवाहे | प्रातराशौ | ७. | प्रातःकालीन भोजन के |
| भूत्वा | ६. | बनकर | गो | ९. | गायों और |
| सर्व | १. | समस्त | वत्सान् | १०. | बछड़ों को |
| लोकैक | २. | लोकों के एक मात्र | चारयन्तौ | ११. | चराते हुये |
| पालकौ । | ३. | रक्षक | विचेरतुः ॥ | १२. | घूमते हैं |

श्लोकार्थ—समस्त लोकों के एकमात्र रक्षक श्याम और बलराम बछड़ों के चरवाहे बनकर प्रातः-कालीन भोजन के सहित गायों और बछड़ों को चराते हुये घूमते हैं ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**स्वं स्वं वत्सकुलं सर्वे पाययिष्यन्त एकदा ।**
**गत्वा जलाशयाभ्याशं पाययित्वा पपुर्जलम् ॥४६॥**

पदच्छेद— स्वम्-स्वम् वत्सकुलम् सर्वे पाययिष्यन्तः एकदा ।
गत्वा जलाशय अभ्याशम् पाययित्वा पपुः जलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वम्-स्वम् | ३. | अपने-अपने | गत्वा | ९. | गये उन्होंने पहले |
| वत्स | ४. | बछड़ों के | जलाशय | ६. | जलाशय के |
| कुलम् | ५. | झुण्ड को लेकर | अभ्याशम् | ७. | तट पर |
| सर्वे | २. | सभी ग्वालबाल | पाययित्वा | १०. | बछड़ों को पानी पिलाया |
| पाययिष्यन्तः | ८. | पानी पिलाने के लिए | पपुः | १२. | पिया |
| एकदा । | १. | एक बार | जलम् ॥ | ११. | फिर स्वयं भी जल |

श्लोकार्थ—एक बार सभी ग्वालबाल अपने-अपने बछड़ों के झुण्डों को लेकर जलाशय के तट पर पानी पिलाने के लिए गये । उन्होंने पहले बछड़ों को पानी पिलाया । फिर स्वयं भी पिया ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**ते तत्र ददृशुर्बाला महासत्त्वमवस्थितम् ।**
**तत्रसुर्वज्रनिर्भिन्नं गिरेः शृङ्गमिव च्युतम् ॥४७॥**

पदच्छेद— ते तत्र ददृशुः बालाः महासत्त्वम् अवस्थितम् ।
तत्रसुः वज्र निर्भिन्नम् गिरेः शृङ्गम् इव च्युतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते | १. | उन | तत्रसुः | १४. | वे भयभीत हो गये |
| तत्र | ३. | वहाँ | वज्र | ८. | जो (इन्द्र के) वज्र से |
| ददृशुः | ७. | देखा | निर्भिन्नम् | ९. | कट कर |
| बालाः | २. | ग्वालबालों ने | गिरेः | ११. | पहाड़ के |
| महा | ४. | एक बहुत बड़े | शृङ्गम् | १२. | टुकड़े के |
| सत्त्वम् | ५. | जीव को | इव | १३. | समान था |
| अवस्थितम् । | ६. | बैठा हुआ | च्युतम् । | १०. | गिरे हुए |

श्लोकार्थ—उन ग्वालबालों ने वहाँ एक बहुत बड़े जीव को बैठा हुआ देखा जो इन्द्र के वज्र से कटकर गिरे हुए पहाड़ के टुकड़े के समान था, उससे वे भयभीत हो गये ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**स वै बको नाम महानसुरो बकरूपधृक् ।**
**आगत्य सहसा कृष्णं तीक्ष्णतुण्डोऽग्रसद् बली ॥४८॥**

पदच्छेद— सः वै बकःनाम महान् असुरः बकरूप धृक् ।
आगत्य सहसा कृष्णम् तीक्ष्ण तुण्डः अग्रसत् बली ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | २. | वह | आगत्य | १२. | आकर |
| वै | १. | निश्चय ही | सहसा | ११. | अकस्मात् |
| बकनाम | ३. | एक बक नाम | कृष्णम् | १३. | श्रीकृष्ण को |
| महान् | ४. | एक महान् | तीक्ष्ण | ८. | तीखी |
| असुरः | ५. | राक्षस था | तुण्डः | ९. | चोंच वाले |
| बक | ६. | जो बगुले का | अग्रसत् | १४. | निगल लिया |
| रूपधृक् । | ७. | रूप धारण किये हुये था | बली ॥ | १०. | उस महाबली राक्षस ने |

श्लोकार्थ निश्चय ही बक नाम का एक राक्षस था। जो बगुले का रूप धारण किये हुये था। तीखी चोंच वाले उस महाबली राक्षस ने अकस्मात् आकर श्रीकृष्ण को निगल लिया।

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**कृष्णं महाबकग्रस्तं दृष्ट्वा रामादयोऽर्भकाः ।**
**बभूवुरिन्द्रियाणीव विना प्राणं विचेतसः ॥४६॥**

पदच्छेद— कृष्णम् महा बक ग्रस्तम् दृष्ट्वा राम आदयः अर्भकाः ।
बभूवुः इन्द्रियाणि इव विना प्राणम् विचेतसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कृष्णम् | ३. श्रीकृष्ण को | अर्भकाः । | २. | बालकों ने |
| महा | ४. उस विशाल | बभूवुः | १२. | हो गये |
| बक | ५. बगुले के द्वारा | इन्द्रियाणि इव | १०. | इन्द्रियों के समान |
| ग्रस्तम् | ६. निगला हुआ | विना | ६. | विना |
| दृष्ट्वा | ७. देखा तो वे | प्राणम् | ८. | प्राणों के |
| राम आदयः | १. जब बलराम आदि | विचेतसः ॥ | ११. | अचेत से |

श्लोकार्थ—जब बलराम आदि बालकों ने श्रीकृष्ण को उस विशाल बगुले के द्वारा निगला हुआ देखा तो वे प्राणों के विना इन्द्रियों के समान अचेत से हो गये ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**तं तालुमूलं प्रदहन्तमग्निवद् गोपालसूनुं पितरं जगद्गुरोः ।**
**चच्छर्द सद्योऽतिरुषाक्षतं बकस्तुण्डेन हन्तुं पुनरभ्यपद्यत ॥५०॥**

पदच्छेद— तम् तालु मूलम् प्रदहन्तम् अग्निवत् गोपाल सूनुम् पितरम् जगद् गुरोः ।
चच्छर्द सद्यः अतिरुषा अक्षतम् बकः तुण्डेन हन्तुम् पुनः अभ्यपद्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तम् | ६. उसे | चच्छर्द सद्यः | १२. | उन्हें तत्काल उगल दिया |
| तालु | ४. उसके तालु के | अतिरुषा | १०. | अत्यन्त क्रोधित होकर |
| मूलम् | ५. नीचे पहुँचकर | अक्षतम् | ११. | विना घाव किये ही |
| प्रदहन्तम् | ८. जलाने लगे | बकः | ६. | तब उस बगुले ने |
| अग्निवत् | ७. अग्नि के समान | तुण्डेन | १४. | अपनी चोंच से ही |
| गोपाल सूनूम् | ३. नन्द बाबा के पुत्र श्रीकृष्ण | हन्तुम् | १५. | प्रहार करना |
| पितरम् | २. पिता | पुनः | १३. | और फिर उसने |
| जगद् गुरोः । | १. लोक पितामह ब्रह्मा के | अभ्यपद्यत ॥ | १६. | आरम्भ कर दिया |

श्लोकार्थ—लोक पितामह ब्रह्मा के पिता, नन्द बाबा के पुत्र श्रीकृष्ण उसके तालु के नीचे पहुँचकर उसे अग्नि के समान जलाने लगे । तब उस बगुले ने अत्यन्त क्रोधित होकर विना घाव किये ही तत्काल उगल दिया । और फिर उसने अपनी चोंच से ही प्रहार करना आरम्भ किया ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**तमापतन्तं स निगृह्य तुण्डयोर्दोर्भ्यां बकं कंससखं सतां पतिः ।**
**पश्यत्सु बालेषु ददार लीलया मुदावहो वीरणवद् दिवौकसाम् ॥५१॥**

पदच्छेद—तम् आपतन्तम् सः निगृह्य तुण्डयोः दोर्भ्याम् बकम् कंस सखम् सताम् पतिः ।
पश्यत्सु बालेषु ददार लीलया मुदावहो वीरणवत् दिव ओकसाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् आपतन्तम् | ३ | वह झपट ही रहा था कि | पश्यत्सु | १०. | देखते-देखते |
| सः | २. | उन श्रीकृष्ण पर | बालेषु | ९. | ग्वाल बालों से |
| निगृह्य | ८. | पकड़कर | ददार | १३. | उसे चीर डाला जिससे |
| तुण्डयोः | ७. | दोनों होठ | लीलया | ११. | खेल ही खेल में |
| दोर्भ्याम् | ४. | अपनी भुजाओं से | मुदावहः | १६. | प्रसन्न हो गये |
| बकम् | ६. | वकासुर के | वीरणवत् | १२. | गांडर के समान |
| कंस सखम् | ५. | कंस के मित्र | दिव | १४. | आकाश |
| सताम् पतिः । | १. | सन्तजनों के स्वामी | ओकसाम् ॥ | १५. | वासी देवगण |

श्लोकार्थ—सन्तजनों के स्वामी उन श्रीकृष्ण पर वह झपट ही रहा था कि अपनी भुजाओं से कंस के मित्र बकासुर के दोनों होठ पकड़कर ग्वाल बालों के देखते-देखते खेल हो खेल में गांडर के के समान उसे चीर डाला । जिससे अकाश वासी देवगण प्रसन्न हो गये ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

**तदा बकारिं सुरलोकवासिनः समाकिरन् नन्दनमल्लिकादिभिः ।**
**समीडिरे चानकशङ्खसंस्तवैस्तद् वीक्ष्य गोपालसुता विसिस्मिरे ॥५२॥**

पदच्छेद—तदा बक अरिम् सुरलोक वासिनः समाकिरन् नन्दन मल्लिका आदिभिः ।
समीडिरे च आनक शङ्ख संस्तवैः तत् वीक्ष्य गोपाल सुताः विसिस्मिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तदा बक | १. | उस समय वकासुर के | समीडिरे | ११. | स्तुति करने लगे |
| अरिम् | २. | शत्रु श्रीकृष्ण पर | च आनक | ८. | और नगाड़े |
| सुरलोकवासिनः | ३. | देव लोकवासी देवगण | शङ्ख | ९. | शङ्ख आदि बजाकर |
| समाकिरन् | ७. | बरसाने लगे | संस्तवैः | १०. | स्तोत्रों के द्वारा उनकी |
| नन्दन | ४. | नन्दन वन के | तत् वीक्ष्य | १२. | यह देखकर |
| मल्लिका | ५. | बेला, चमेली | गोपाल सुताः | १३. | गोपालों के पुत्र |
| आदिभिः । | ६. | आदि के फूल | विसिस्मिरे ॥ | १४. | अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गये |

श्लोकार्थ—उस समय बकासुर के शत्रु श्रीकृष्ण पर देव लोकवासी देवगण नन्दन वन के बेला, चमेली आदि के फूल बरसाने लगे । और नगाड़े, शङ्ख आदि बजाकर स्तोत्रों के द्वारा उनकी स्तुति करने लगे । यह देखकर गोपालों के पुत्र अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गये ॥

## त्रिपञ्चाशः श्लोकः

**मुक्तं बकास्यादुपलभ्य बालका रामादयः प्राणमिवैन्द्रियो गणः ।**
**स्थानागतं तं परिरभ्य निर्वृताः प्रणीय वत्सान् व्रजमेत्य तज्जगुः ॥५३॥**

पदच्छेद —मुक्तम् बक आस्यात् उपलभ्य बालकाः राम आदयः प्राणम् इव ऐन्द्रियः गणः ।
स्थान आगतम् तम् परिरभ्य निर्वृताः प्रणीय वत्सान् व्रजम् एत्य तत् जगुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुक्तम् | ४. | छूटा हुआ | स्थान | १०. | पास |
| बकआस्यात् | ३. | बकासुर के मुख से | आगतम् | ११. | आये हुये |
| उपलभ्य | ५. | पाया तो इतने प्रसन्न हुये | तम् | १२. | उनसे |
| बालकाः | २. | गोप बालकों ने श्रीकृष्ण को | परिरभ्य | १३. | गले लगकर वे |
| रामआदयः | १. | बलराम आदि | निर्वृताः | १४. | अत्यन्त प्रसन्न हुये |
| प्राणम् | ९. | प्राणों का संचार हो गया हो | प्रणीय | १६. | हाँक कर |
| इव | ६. | मानों | वत्सान् | १५. | और बछड़ों को |
| ऐन्द्रियः | ७. | इन्द्रियों के | व्रजम् एत्य | १७. | व्रज में आये और वहाँ |
| गणः । | ८. | समुदाय में | तत् जगुः ॥ | १८. | अपने घरों में सारी घटना सुनाई |

श्लोकार्थ —बलराम आदि गोपबालकों ने श्रीकृष्ण को बकासुर के मुख से छूटा हुआ पाया तो वे इतने प्रसन्न हुये मानों इन्द्रियों के समुदाय में प्राणों का संचार हो गया हो । पास आये उनसे गले लगकर अत्यन्त प्रसन्न हुए । और बछड़ों को हाँक कर व्रज में आये । ओर वहाँ घरों में सारी घटना सुनाई ॥

## चतुःपञ्चाशः श्लोकः

**श्रुत्वा तद् विस्मिता गोपा गोप्यश्चातिप्रियादृताः ।**
**प्रेत्यागतमिवौत्सुक्यादैक्षन्त तृषितेक्षणाः ॥५४॥**

पदच्छेद— श्रुत्वा तद् विस्मिताः गोपाः गोप्यः च अति प्रिय आदृताः ।
प्रेत्य आगतम् इव औत्सुक्यात् ऐक्षन्त तृषित ईक्षणाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रुत्वा | ४. | सुनकर | प्रेत्य | ११. | मृत्यु के मुख से ही |
| तत् | ३. | उसे | आगतम् | १४. | लौट आये हो |
| विस्मिताः | ५. | आश्चर्य चकित हो गये | इव | १२. | जैसे वे |
| गोपाः | २. | गोप आदि सब | औत्सुक्यात् | ८. | उत्सुकता से उसी प्रकार |
| गोप्यः | १. | गोपी और | ऐक्षन्त | ११. | देखने लगीं |
| च अति | ६. | और वे श्रीकृष्ण को | तृषित | ९. | प्यासे |
| प्रिय आदृताः । | ७. | प्रेम आदर और | ईक्षणः ॥ | १०. | नेत्रों से |

श्लोकार्थ—गोपी और गोप आदि सब उसे सुनकर आश्चर्यचकित हो गये । और वे श्री कृष्ण को प्रेम, आदर और उत्सुकता से उसी प्रकार प्यासे नेत्रों से देखने लगीं जैसे वे मृत्यु के मुख से ही लौट आये हों ॥

## पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

अहो बतास्य बालस्य बह्वो मृत्यवोऽभवन् ।
अप्यासीद् विप्रियं तेषां कृतं पूर्वं यतो भयम् ॥५५॥

पदच्छेद— अहो बत अस्य बालस्य बहवः मृत्यवः अभवन् ।
अपि आसीत् विप्रियम् तेषाम् कृतम् पूर्वम् यतो भयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो | १. आश्चर्य की | अपि | १२. ही |
| बत | २. बात है कि | आसीत् | १३. हुआ |
| अस्य | ३. इस | विप्रियम् | १४. अनिष्ट |
| बालस्य | ४. बालक को | तेषाम् | ११. उनका |
| बहवः | ५. अनेक बार | कृतम् | १०. किया था |
| मृत्यवः | ६. मृत्यु के मुँह में | पूर्वम्यतो | ८. जिन्होंने पहले इसके |
| अभवन् । | ७. जाना पड़ा पर | भयम् ॥ | ६. अनिष्ट का विचार |

श्लोकार्थ—आश्चर्य की बात है कि इस बालक को अनेक बार मृत्यु के मुख में जाना पड़ा । पर जिन्होंने पहले इसके अनिष्ट का विचार किया था उनका ही अनिष्ट हुआ ॥

## षट्पञ्चाशः श्लोकः

अथाप्यभिभवन्त्येनं नैव ते घोरदर्शनाः ।
जिघांसयैनमासाद्य नश्यन्त्यग्नौ पतङ्गवत् ॥५६॥

पदच्छेद— अथ अपि अभिभवन्ति एनम् न एव ते घोर दर्शनाः ।
जिघांसया एनम् आसाद्य नश्यन्ति अग्नौ पतङ्गवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथ अपि | ७. फिर भी | जिघांसया | ५. मारने के लिये |
| अभिभवन्ति | ६. कोई अनिष्ट | एनम् | ४. इसे |
| एनम् | ८. इसका | आसाद्य | ६. आते हैं पर |
| न एव | १०. नहीं कर पाते अर्थात् | नश्यन्ति | १४. नष्ट हो जाते हैं |
| ते | १. वे | अग्नौ | ११. वे अग्नि में पड़े हुये |
| घोर | २. भयङ्कर | पतङ्ग | १२. पतिङ्गे के |
| दर्शनाः । | ३. रूपधारी असुर | वत् ॥ | १३. समान |

श्लोकार्थ—वे भयङ्कररूपधारी असुर इसे मारने के लिए आते हैं । पर फिर भी इसका कोई अनिष्ट नहीं कर पाते हैं । अर्थात् वे अग्नि में पड़े हुये पतिङ्गे के समान नष्ट हो जाते हैं ।

## सप्तपञ्चाशः श्लोकः

**अहो ब्रह्मविदां वाचो नासत्याः सन्ति कर्हिचित् ।**
**गर्गो यदाह भगवानन्वभावि तथैव तत् ॥५७॥**

पदच्छेद— अहो ब्रह्म विदाम् वाचः न असत्याः सन्ति कर्हिचित् ।
गर्गो यत आह भगवान् अन्वभावि तथा एव तत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो | १. | अहो | गर्गो | ६. | गर्गाचार्य जी ने |
| ब्रह्म विदाम् | २. | ब्रह्मवेत्ता महात्माओं के | यत् | १०. | जो कुछ |
| वाचः | ३. | वचन | आह | ११. | कहा था |
| न | ६. | नहीं | भगवान् | ८. | भगवान् |
| असत्याः | ५. | मिथ्या | अन्वभावि | १४. | घट रही है |
| सन्ति | ७. | होते हैं | तथा एव | १३. | ठीक वैसी |
| कर्हिचित् । | ४. | कभी भी | तत् ॥ | १२. | वे सब बातें |

श्लोकार्थ—अहो ब्रह्मवेत्ता महात्माओं के वचन कभी भी मिथ्या नहीं होते हैं । भगवान् गर्गाचार्य जी ने जो कुछ कहा था वे सब बातें ठीक वैसी घट रही हैं ॥

## अष्टपञ्चाशः श्लोकः

**इति नन्दादयो गोपाः कृष्णरामकथां मुदा ।**
**कुर्वन्तो रममाणाश्च नाविन्दन् भववेदनाम् ॥५८॥**

पदच्छेद— इति नन्द आदयः गोपाः कृष्ण राम कथाम् मुदा ।
कुर्वन्तः रममाणाः च न अविन्दन् भव वेदनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ४. | इसी प्रकार | कुर्वन्तः | ८. | करते हुये उन्हीं में |
| नन्द | १. | नन्द बाबा | रममणाः | ६. | तन्मय रहते |
| आदयः | २. | आदि | च | १०. | और उन्हें |
| गोपाः | ३. | गोपगण | न | १४. | नहीं होता |
| कृष्ण | ६. | श्रीकृष्ण और | अविन्दन् | १३. | अनुभव ही |
| राम कथाम् | ७. | बलराम की बातें | भव | ११. | भवसागर के |
| मुदा । | ५. | बड़े आनन्द से | वेदनाम् ॥ | १२. | कष्टों का |

श्लोकार्थ—नन्द बाबा आदि गोपगण, इसी प्रकार बड़े आनन्द से श्रीकृष्ण और बलराम की बातें करते हुये उन्हीं में तन्मय रहते । और उन्हें भवसागर के कष्टों का अनुभव ही नहीं होता ॥

## एकोनषष्टितमः श्लोकः

एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे ।
निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभिः ॥५९॥

पदच्छेद—

एवम् विहारैः कौमारैः कौमारम् जहतुः व्रजे ।
निलायनैः सेतुबन्धैः मर्कट उत्प्लवन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार से उन्होंने | निलायनैः | २. | घरों में छिपना |
| विहारैः | ९. | खेल-खेलकर | सेतु | ३. | पुल |
| कौमारैः | ८. | बालोचित | बन्धैः | ४. | बाँधना |
| कौमारम् | ११. | बाल्यावस्था | मर्कट | ५. | बन्दरों की भाँति |
| जहतुः | १२. | व्यतीत की | उत्प्लवन | ६. | उछलना |
| व्रजे । | १०. | व्रज में अपनी | आदिभिः ॥ | ७. | आदि |

श्लोकार्थ—इस प्रकार से उन्होंने घरों में छिपना, पुल बाँधना, बन्दरों की भाँति उछलना आदि बालोचित खेल-खेलकर व्रज में अपनी बाल्यावस्था व्यतीत की ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे वत्सबकवधो नाम
एकादशः अध्यायः ॥ ११ ॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## द्वादशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—क्वचिद्वनाशायमनोदधद्व्रजात्प्रातःसमुत्थायवयस्यवत्सपान् ।**
**प्रबोधयञ्छृङ्गरवेण चारुणा विनिर्गतो वत्सपुरःसरो हरिः ॥१॥**

पदच्छेद— क्वचित् वनाशाय मनः दधत् व्रजात् प्रातः समुत्थाय वयस्य वत्सपान् ।
प्रबोधयन् श्रृङ्ग रवेण चारुणा विनिर्गतः वत्सपुरः सरः हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | एक दिन | प्रबोधयन् | ११. | जगाया (तथा) |
| वनाशाय | ३. | वन में ही कलेवा करने का | श्रृङ्ग | ६. | सींग की |
| मनः दधत् | ४. | विचार मन में धारण करके | रवेण | ८. | ध्वनि से |
| व्रजात् | १३. | व्रज मण्डल से | चारुणा | ७. | मनोहर |
| प्रातः समुत्थाय | ५. | बड़े सवेरे ही उठ गये और | विनिर्गतः | १४. | निकल पड़े |
| वयस्य | ९. | अपने साथी | वत्सपुरः सरः | १२. | बछड़ों को आगे करके |
| वत्सपान् । | १०. | ग्वाल बालों को | हरिः ॥ | २. | नन्दनन्दन श्याम सुन्दर |

श्लोकार्थ—एक दिन नन्दनन्दन श्याम सुन्दर वन में ही कलेवा करने का विचार मन में धारण करके बड़े सवेरे ही उठ गये और सींग की मनोहर ध्वनि से अपने साथी ग्वाल बालों को जगाया तथा बछड़ों को आगे करके वे व्रज मण्डल से निकल पड़े ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**तेनैव साकं पृथुकाः सहस्रशः स्निग्धाः सुशिग्वेत्रविषाणवेणवः ।**
**स्वान् स्वान् सहस्रोपरिसंख्ययान्वितान् वत्सान् पुरस्कृत्य विनिर्ययुर्मुदा ॥२॥**

पदच्छेद—तेन एव साकम् पृथुकाः सहस्रशः स्निग्धाः सशिक् वेत्र विषाण वेणवः ।
स्वान्-स्वान् सहस्र उपरि संख्यया अन्वितान् वत्सान् पुरः कृत्य विनिर्ययुः मुदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेन एव | १. | श्रीकृष्ण के ही | स्वान्-स्वान् | ८. | अपने अपने घरों से |
| साकम् | २. | साथ | सहस्र उपरि | ९. | हजार से भी अधिक |
| पृथुकाः | ५. | ग्वाल बाल | संख्यया | १०. | संख्या |
| सहस्रशः | ४. | हजारों | अन्वितान् | ११. | वाले |
| स्निग्धाः | ३. | उनके प्रेमी | वत्सान् पुरः कृत्य | १२. | बछड़ों को आगे करके |
| सशिक् वेत्र | ६. | सुन्दर छींके बेंत | विनिर्ययुः | १४. | निकल पड़े |
| विषाण वेणवः । | ७. | सींग और बाँसुरी लेकर | मुदा ॥ | १३. | प्रसन्नता पूर्वक |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के ही साथ उनके प्रेमी हजारों ग्वाल बाल सुन्दर छींके, बेंत, सींग और बाँसुरी लेकर अपने अपने घरों से हजार से भी अधिक संख्या वाले बछड़ों को आगे करके प्रसन्नता पूर्वक निकल पड़े ॥

## तृतीयः श्लोकः

**कृष्णवत्सैरसंख्यातैर्यूथीकृत्य स्ववत्सकान् ।**
**चारयन्तोऽर्भलीलाभिर्विजह्रुस्तत्र तत्र ह ॥३॥**

पदच्छेद— कृष्ण वत्सैः असंख्यातैः यूथीकृत्य स्व वत्सकान् ।
चारयन्तः अर्भ लीलाभिः विजह्रुः तत्र तत्र ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | उन्होंने श्रीकृष्ण के | चारयन्तः | ११. | घूम-घूमकर |
| वत्सैः | ३. | बछड़ों में | अर्भ | ६. | बालोचित |
| असंख्यातैः | २. | अगणित | लीलाभिः | १०. | खेल-खेलते हुये |
| यूथीकृत्य | ६. | मिला दिया | विजह्रुः | १२. | विचरने लगे |
| स्व | ४. | अपने-अपने | तत्र | ७. | और स्थान |
| वत्सकान् । | ५. | बछड़ों को | तत्र ह ॥ | ८. | स्थान पर |

श्लोकार्थ—उन्होंने श्रीकृष्ण के अगणित बछड़ों में अपने-अपने बछड़ों को मिला दिया । स्थान-स्थान पर बालोचित खेल खेलते हुये घूम घूमकर विचरने लगे ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**फलप्रवालस्तबकसुमनःपिच्छधातुभिः ।**
**काचगुञ्जामणिस्वर्णभूषिता अप्यभूषयन् ॥४॥**

पदच्छेद— फल प्रवाल स्तबक सुमनः पिच्छ धातुभिः ।
काच गुञ्जामणि स्वर्ण भूषिताः अपि अभूषयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फल | ६. | बहुरंगे फलों | काच | १. | यद्यपि वे कांच |
| प्रवाल | ७. | कोंपलों | गुञ्जामणि | २. | घुंघची, मणि और |
| स्तबक | ८. | गुच्छों | स्वर्ण | ३. | सुवर्ण के गहने |
| सुमनः | ६. | पुष्पों और | भूषिताः | ४. | पहने हुये थे, फिर |
| पिच्छ | १०. | मोर के पंखों तथा | अपि | ५. | भी उन्होने |
| धातुभिः । | ११. | रंगीन धातुओं से | अभूषयन् ॥ | १२. | अपने को सजा लिया |

श्लोकार्थ—यद्यपि वे कांच, घुंघची, मणि और सुवर्ण के गहने पहने हुये थे । फिर भी उन्होने बहुरंगे फलों, कोंपलों, गुच्छों पुष्पों और मोर के पंखो तथा रंगीन धातुओं से अपने को सजा लिया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

मुष्णन्तोऽन्योन्यशिक्यादीन् ज्ञातानाराच्च चिक्षिपुः ।
तत्रत्याश्च पुनर्दूराद्धसन्तश्च पुनर्ददुः ॥५॥

पदच्छेद— मुष्णन्तः अन्योन्य शिक्यादीन् ज्ञातान् अरात् च चिक्षिपुः ।
तत्रत्याः च पुनः दूरात् हसन्तः च पुनः ददुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुष्णन्तः | ३. | चुराकर | तत्रत्याः | १०. | वे लोग भी |
| अन्योन्य | १. | वे परस्पर एक दूसरे के | च | ८. | तब |
| शिक्यादीन् | २. | छींके आदि | पुनः | ९. | फिर |
| ज्ञातान् | ४. | मित्र के | दूरात् | ११. | दूर फंक देते |
| आरात् | ५. | पास | हसन्तः | १३. | हँसते हुए |
| च | ७. | और | च | १२. | और |
| चिक्षिपुः । | ६. | फेंक देते | पुनः ददुः ॥ | १४. | वे पुनः वापस दे देते थे |

श्लोकार्थ—वे परस्पर एक दूसरे के छींके चुराकर मित्र के पास फेंक देते । और तब फिर वे लोग भी दूर फेंक देते । और हँसते हुये वे पुनः वापिस दे देते थे ।

## षष्ठः श्लोकः

यदि दूरं गतः कृष्णो वनशोभेक्षणाय तम् ।
अहं पूर्वमहं पूर्वमिति संस्पृश्य रेमिरे ॥६॥

पदच्छेद— यदि दूरम् गतः कृष्णः वन शोभा ईक्षणाय तम् ।
अहम् पूर्वम् अहम् पूर्वम् इति संस्पृश्य रेमिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदि | १. | यदि | अहम् | ९. | मैं छुऊँगा |
| दूरम् | ६. | दूर | पूर्वम् | ८. | पहले |
| गतः | ७. | निकल जाते तो | अहम् | ११. | मैं छुऊँगा |
| कृष्णः | ५. | श्यामसुन्दर कृष्ण | पूर्वम् | १०. | पहले |
| वनशोभा | २. | वन की शोभा | इति | १२. | ऐसी होड़ लगाकर और |
| ईक्षणाय | ३. | देखने के लिये | संस्पृश्य | १३. | उन्हे छूकर वे |
| तम् । | ४. | वे | रेमिरे ॥ | १४. | आनन्दित होते |

श्लोकार्थ—यदि वन की शोभा देखने के लिये वे श्याम सुन्दर कृष्ण दूर निकल जाते तो पहले मैं छुऊँगा, पहले मैं छुऊँगा ऐसी होड़ लगाकर और उन्हें छूकर वे आनन्दित होते ॥

## सप्तमः श्लोकः

केचिद् वेणून् वादयन्तो ध्मान्तः शृङ्गाणि केचन ।
केचिद् भृङ्गैः प्रगायन्तः कूजन्तः कोकिलैः परे ॥७॥

पदच्छेद— केचिद् वेणून् वादयन्तः ध्मान्तः शृङ्गाणि केचन ।
केचिद् भृङ्गैः प्रगायन्तः कूजन्तः कोकिलैः परे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| केचिद् | १. | कोई | केचिद् | ७. | कोई-कोई |
| वेणून् | २. | बाँसुरी | भृङ्गैः | ८. | भौंरों के साथ |
| वादयन्तः | ३. | बजा रहा है तो | प्रगायन्तः | ९. | गुनगुना रहा है |
| ध्मान्तः | ६. | फूंक रहा है | कूजन्तः | १२. | कूक रहे हैं |
| शृङ्गाणि | ५. | सींग | कोकिलैः | ११. | कोयलों के साथ |
| केचन । | ४. | कोई | परे ॥ | १०. | तो बहुत से अन्य |

श्लोकार्थ—कोई बाँसुरी बजा रहा है। तो कोई सींग फूंक रहा है। कोई-कोई भौंरों के साथ गुनगुना रहा है तो बहुत से अन्य कोयलों के साथ कूक रहे हैं॥

## अष्टमः श्लोकः

विच्छायाभिः प्रधावन्तो गच्छन्तः साधु हंसकैः ।
बकैरुपविशन्तश्च नृत्यन्तश्च कलापिभिः ॥८॥

पदच्छेद— विच्छायाभिः प्रधावन्तः गच्छन्तः साधु हंसकैः ।
बकैः उपविशन्तः च नृत्यन्तः च कलापिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विच्छायाभिः | १. | कोई पक्षियों की छाया के | बकैः | ७. | बगुले के |
| प्रधावन्तः | २. | साथ दौड़ रहे हैं (और) | उपविशन्तः | ८. | पास बैठे हैं |
| गच्छन्तः | ५. | चल रहे हैं | च | ६. | और कोई |
| साधु | ४. | सुन्दर गति से | नृत्यन्तः | १०. | नाच रहे हैं |
| हंसकैः । | ३. | कोई हंसों के साथ | च कलापिभिः ॥ | ९. | और कोई मोरों के साथ |

श्लोकार्थ—कोई पक्षियों की छाया के साथ दौड़ रहे हैं। और कोई हंसो के साथ सुन्दर गति से चल रहे हैं। और कोई बगुले के पास बैठे हैं। और कोई मोरों क साथ नाच रहे हैं॥

## नवमः श्लोकः

विकर्षन्तः कीशबालानारोहन्तश्च तैर्द्रुमान् ।
विकुर्वन्तश्च तैः साकं प्लवन्तश्च पलाशिषु ॥६॥

पदच्छेद— विकर्षन्तः कीश बालान् आरोहन्तः च तैः द्रुमान् ।
विकुर्वन्तः च तैः साकम् प्लवन्तः च पलाशिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| विकर्षन्तः | ३. खींच रहे हैं | विकुर्वन्तः | ६. मुँह बना रहे हैं |
| कीश | १. कोई बन्दरों की | च तैः | ७. और कुछ उनके |
| बालान् | २. पूँछ पकड़ कर | साकम् | ८. साथ |
| आरोहन्तः | ६. चढ़ रहे हैं | प्लवन्तः | १२. छलाँग मार रहे हैं |
| च तैः | ४. और कोई उनके साथ | च | १०. और कोई |
| द्रुमान् । | ५. वृक्षों पर | पलाशिषु ॥ | ११. वृक्षों की शाखाओं पर |

श्लोकार्थ—कोई बन्दरों की पूँछ पकड़ कर खींच रहे हैं । और कोई उनके साथ वृक्षों पर चढ़ रहे हैं । और कोई उनके साथ मुँह बना रहे हैं । और कोई वृक्षों की शाखाओं पर छलाँग लगा रहे हैं ।

## दशमः श्लोकः

साकं भेकैर्विलङ्घन्तः सरित्प्रस्रवसम्प्लुताः ।
विहसन्तः प्रतिच्छायाः शपन्तश्च प्रतिस्वनान् ॥१०॥

पदच्छेद— साकम् भेकैः विलङ्घन्तः सरित् प्रस्रव सम्प्लुताः ।
विहसन्तः प्रतिच्छायाः शपन्तः च प्रति स्वनान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| साकम् | ५. साथ | विहसन्तः | ८. हँस रहे |
| भेकैः | ४. मेढकों के | प्रतिच्छायाः | ७. कोई अपनी छाया देखकर |
| विलङ्घन्तः | ६. उछल रहे हैं | शपन्तः | ११. बुरा-भला कह रहे हैं |
| सरित् | १. कोई नदी के | च | ६. और कोई अपनी |
| प्रस्रव | २. प्रवाह में | प्रतिस्वनान् ॥ | १०. प्रतिध्वनि को ही |
| सम्प्लुताः । | ३. पड़े हुये | | |

श्लोकार्थ—कोई नदी के प्रवाह में पड़े हुए मेढकों के साथ उछल रहे हैं । और कोई अपनी छाया देखकर हँस रहे हैं । और कोई अपनी प्रतिध्वनि को हो बुरा-भला कह रहे हैं ।

## एकादशः श्लोकः

इत्थं सतां ब्रह्मसुखानुभूत्या दास्यं गतानां परदैवतेन ।
मायाश्रितानां नरदारकेण साकं विजह्रुः कृतपुण्यपुञ्जाः ॥११॥

पदच्छेद— इत्थम् सताम् ब्रह्मसुख अनुभूत्या दास्यम् गतानाम् परदैवतेन ।
माया आश्रितानाम् नरदारकेण साकम् विजह्रुः कृत पुण्यपुञ्जाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | १. | इस प्रकार वे श्रीकृष्ण | माया | ८. | माया मोहित |
| सताम् | २. | सन्तों के लिये | आश्रितानाम् | ९. | विषयाश्रित जनों के लिये |
| ब्रह्म सुख | ३. | ब्रह्मानन्द के | नरदारकेण | १०. | मनुष्य के बालक हैं । वही |
| अनुभूत्या | ४. | मूर्तिमान् अनुभव हैं | साकम् | १३. | साथ |
| दास्यम् | ५. | दास्यभाव से | विजह्रुः | १४. | खेल रहे हैं |
| गतानाम् | ६. | युक्त भक्तों के लिये | कृत | १२. | करने वाले ग्वाल बालों |
| परदैवतेन । | ७. | आराध्य देव हैं | पुण्यपुञ्जाः॥ | ११. | पुण्य समूह एकत्रित |

श्लोकार्थ—इस प्रकार वे श्रीकृष्ण सन्तों के लिये ब्रह्मानन्द के मूर्तिमान् अनुभव हैं । दास्य भाव से युक्त भक्तों के लिये आराध्य देव हैं । माया-मोहित विषयाश्रित जनों के लिये मनुष्य के बालक हैं । वही पुण्य समूह एकत्रित करने वालों के लिए ग्वाल-बालों के साथ खेल रहे हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

यत्पादपांसुर्बहुजन्मकृच्छ्रतो धृतात्मभिर्योगिभिरप्यलभ्यः ।
स एव यद्दृग्विषयः स्वयं स्थितः किं वर्ण्यते दिष्टमतो व्रजौकसाम् ॥१२॥

पदच्छेद— यत् पादपांसुः बहुजन्म कृच्छ्रतः धृत आत्मभिः योगिभिः अपि अलभ्यः ।
सः एव यत् दृक्विषयः स्वयम् स्थितः किम् वर्ण्यते दिष्टम्अतः व्रजौकसाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत् | ५. | जिन भगवान् के | सः एव | ८. | वही श्रीकृष्ण |
| पादपांसुः | ६. | चरण कमलों की रज | यत् दृक् विषयः | ९. | जिन बालकों के नेत्रों के सामने |
| बहुजन्म | १ | बहुत जन्मों तक | स्वयम् | १०. | स्वयम् |
| कृच्छ्रतः | २. | कष्ट उठाकर | स्थितः | ११. | स्थित रहकर खेलते हैं |
| धृत आत्मभिः | ३. | इन्द्रियों को वश में रखने वाले | किम् वर्ण्यते | १४. | और क्या हो सकता है |
| योगिभिः अपि | ४. | योगियों के लिये भी | दिष्टम्अतः | १३. | इससे बढ़कर भाग्य |
| अलभ्यः । | ७. | अप्राप्य है | व्रजौकसाम् ॥ | १२. | उन व्रजवासियों का |

श्लोकार्थ—बहुत जन्मों तक कष्ट उठाकर इन्द्रियों को वश में करने वाले योगियों के लिये भी जिन भगवान् के चरण कमलों की रज अप्राप्य है । वही श्रीकृष्ण जिन ग्वाल बालकों के सामने स्वयम् स्थित रहकर खेलते हैं । उन व्रजवासियों का इससे बढ़कर भाग्य और क्या हो सकता है ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**आथघनामाभ्यपतन्महासुरस्तेषां सुखक्रीडनवीक्षणाक्षमः ।**
**नित्यं यदन्तर्निजजीवितेप्सुभिः पीतामृतैरप्यमरैः प्रतीक्ष्यते ॥१३॥**

**पदच्छेद—** अथ अघनामा अभ्यपतत् महासुरः तेषाम् सुख क्रीडन वीक्षण अक्षमः ।
नित्यम् यदन्तः निज जीवित ईप्सुभिः पीत अमृतैः अपि अमरैः प्रतीक्ष्यते ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १ | इसी समय | नित्यम् | ८. | नित्य जिससे |
| अघनामा | ५. | अघासुर नाम का | यदन्तः | ११. | अन्दर ही अन्दर |
| अभ्यपतत् | ७. | आ पहुँचा | निजजीवित | १२. | अपने प्राणों की |
| महासुरः | ६. | विशाल दैत्य वहाँ पर | ईप्सुभिः | १३. | रक्षा के लिये |
| तेषाम् | २. | उन ग्वाल बालों की | पीत अमृतैः | ९. | अमृत पान करके |
| सुखक्रीडन | ३. | सुखमयी क्रीडा | अपि अमरैः | १०. | अमर हुये देवगण भी |
| वीक्षण अक्षमः । | ४. | देखने में असमर्थ | प्रतीक्ष्यते ॥ | १४. | उसके मरने की प्रतीक्षा करते थे |

**श्लोकार्थ**—इसी समय उन ग्वाल बालों की सुखमयी क्रीडा देखने में असमर्थ अघासुर नाम का विशाल दैत्य वहाँ पर आ पहुँचा । जिससे अमृत पान करके अमर हुये देवगण भी अन्दर ही अन्दर अपने प्राणों की रक्षा के लिये उसके मरने की प्रतीक्षा करते थे ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**दृष्ट्वार्भकान् कृष्णमुखानघासुरः कंसानुशिष्टः स बकीबकानुजः ।**
**अयं तु मे सोदरनाशकृत्तयोर्द्वयोर्ममैनं सबलं हनिष्ये ॥१४॥**

**पदच्छेद—** दृष्ट्वा अर्भकान् कृष्ण मुखान् अघासुरः कंस अनुशिष्टः सः बकी बक अनुजः ।
अयम् तु मे सोदर नाशकृत् तयोः द्वयोः मम एनम् सबलम् हनिष्ये ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ७. | देखकर विचारा कि | अयम् तु मे | ८. | यही मेरे |
| अर्भकम् | ६. | ग्वाल बालों को | सोदर | १०. | सहोदरों का |
| कृष्ण मुखान् | ५. | श्रीकृष्ण की ओर उन्मुख | नाशकृत् | ११. | विनाश करने वाला है |
| अघासुरः | ४. | अघासुर ने | तयोः द्वयोः | ९. | उन दोनों पूतना बकासुर नामक |
| कंस अनुशिष्टः | १. | कंस के द्वारा भेजे गये | मम एनम् | १२. | मैं इसे |
| सः बकी | २. | उस पूतना और | सबलम् | १३. | ग्वाल बालों के साथ |
| बक अनुजः । | ३. | बकासुर के छोटे भाई | हनिष्ये ॥ | १४. | मार डालूँगा |

**श्लोकार्थ**—कंस के द्वारा भेजे गये उस पूतना और बकासुर के छोटे भाई अघासुर ने श्रीकृष्ण की ओर उन्मुख ग्वाल बालों को देखकर विचारा कि यही मेरे उन दोनों पूतना और बकासुर नामक सहोदरों का विनाश करने वाला है । मैं इसे ग्वाल बालों सहित मार डालूँगा ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**एते यदा मत्सुहृदोस्तिलापः कृतास्तदा नष्टसमा व्रजौकसः ।**
**प्राणे गते वर्ष्मसु का नु चिन्ता प्रजासवः प्राणभृतो हि ये ते ॥१५॥**

पदच्छेद— एते यदा मत् सुहृदोः तिल आपः कृताः तदा नष्टसमाः व्रजौकसः ।
प्राणे गते वर्ष्मसु का नु चिन्ता प्रजासवः प्राणभृतः हि ये ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एते | १. | ये सब | प्राणे | ८. | प्राणों के |
| यदा मत् | २. | जब मेरे | गते | ९. | निकल जाने पर |
| सुहृदोः | ३. | भाई बहिनों को | वर्ष्मसु | १०. | शरीर की |
| तिल आपः | ४. | तिलाञ्जलि | का नु चिन्ता | ११. | क्या चिन्ता |
| कृताः तदा | ५. | बन जायेंगे तब | प्रजासवः | १४. | प्राण तो सन्तान ही हैं |
| नष्टसमाः | ७. | मरे जैसे ही हो जायंगे | प्राण भृतः | १३. | प्राणधारियों के |
| व्रजौकसः । | ६. | व्रजवासी तो (अपने आप) | हि ये ते ॥ | १२. | क्योंकि उन |

श्लोकार्थ—ये सब जब मेरे भाई बहिनों की तिलाञ्जलि बन जायंगे तब व्रजवासी तो मरे जैसे ही हो जायंगे। प्राणों के निकल जाने पर शरीर की क्या चिन्ता। क्योंकि उन प्राणधारियोंके प्राण तो सन्तान ही है ॥

## षोडशः श्लोकः

**इति व्यवस्याजगरं बृहद् वपुः स योजनायाममहाद्रिपीवरम् ।**
**धृत्वाद्भुतं व्यात्तगुहाननं तदा पथि व्यशेत ग्रसनाशया खलः ॥१६॥**

पदच्छेद— इति व्यवस्य आजगरम् बृहद् वपुः सः योजन आयाम महाद्रि पीवरम् ।
धृत्वा अद्भुतम् व्यात्त गुहआननम् तदा पथि व्यशेत ग्रसन आशया खलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति व्यवस्य | १. | ऐसा निश्चय करके | धृत्वा अद्भुतम् | ८. | अद्भुत धारण करके |
| आजगरम् | ६. | अजगर का | व्यात्त | १४. | फाड़ रखा था |
| बृहद् | ५ | विशाल | गुहआननम् | १३. | गुफा के समान अपना मुँह |
| वपुः | ७ | शरीर | तदा | ११. | उस समय उस |
| सः योजन | २. | वह एक योजन | पथि व्यशेत | १०. | मार्ग में लेट गया |
| आयाम | ३. | लम्बा | ग्रसन आशया | ९. | उन्हें निगल जाने की इच्छासे |
| महाद्रि पीवरम् । | ४. | बड़े पर्वत के समान चौड़ा | खलः ॥ | १२. | दुष्ट ने |

श्लोकार्थ—ऐसा निश्चय करके वह एक योजन लम्बा बड़े पर्वत के समान चौड़ा विशाल अजगर का अद्भुत शरीर धारण करके उन्हें निगल जाने की इच्छा से मार्ग में लेट गया। उस समय उस दुष्ट ने गुफा के समान अपना मुँह फाड़ रखा था ॥

## सप्तदशः श्लोकः

धराधरोष्ठो जलदोत्तरोष्ठो दर्याननान्तो गिरिशृङ्गदंष्ट्रः ।
ध्वान्तान्तरास्यो विततध्वजिह्वः परुषानिलश्वासदवेक्षणोष्णः ॥१७॥

पदच्छेद—धरा अधर ओष्ठः जलद उत्तर ओष्ठः दरी आननान्तः गिरि शृङ्ग दंष्ट्रः ।
ध्वान्त अन्तर आस्यः वितत अध्वजिह्वः परुष अनिल श्वास दव ईक्षण उष्णः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धरा | २. | पृथ्वी से और | ध्वान्त | ११. | घोर अन्धकार था |
| अधर ओष्ठः | १. | उसका नीचे का होठ | अन्तर | १०. | भीतर |
| जलद | ४. | बादलों से लग रहा था | आस्यः | ९. | मुँह के |
| उत्तर ओष्ठः | ३. | ऊपर का होठ | वितत अध्वजिह्वः | १२. | जीभ चौड़े मार्ग जैसी थी |
| दरी | ६. | कन्दराओं के समान | परुष अनिल | १४. | तीक्ष्ण आँधी जैसी थी |
| आननान्तः | ५. | जबड़े | श्वास | १३. | साँस |
| गिरि शृङ्ग | ८. | पर्वत शिखर जैसी थीं | दवईक्षणः | १५. | और नेत्र दावानल की भाँति |
| दंष्ट्रः । | ७ | और डाढ़ें | उष्णः ॥ | १६. | दहक रहे थे |

श्लोकार्थ—उसका नीचे का होठ पृथ्वी से और ऊपर का होठ बादलों से लग रहा था । जबड़े कन्दराओं के समान और डाढ़ें पर्वत शिखर जैसी थीं । मुँह के भीतर घोर अन्धकार था । जीभ चौड़े मार्ग जैसी थी । साँस तीक्ष्ण आँधी जैसी थी । और नेत्र दावानल की भाँति दहक रहे थे ॥

## अष्टादशः श्लोकः

दृष्ट्वा तं तादृशं सर्वे मत्वा वृन्दावनश्रियम् ।
व्यात्ताजगरतुण्डेन ह्युत्प्रेक्षन्ते स्म लीलया ॥१८॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा तम् तादृशम् सर्वे मत्वा वृन्दावन श्रियम् ।
व्यात्त अजगर तुण्डेन हि उत्प्रेक्षन्ते स्म लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ३. | देखकर | व्यात्त | १३. | खुला हुआ |
| तम् | १. | उसके | अजगर | १२. | अजगर का |
| तादृशम् | २. | ऐसे रूप को | तुण्डेन | १४. | मुँह है |
| सर्वे | ४. | समस्त बालकों ने | हि | ११. | यह |
| मत्वा | ७ | माना और वे | उत्प्रेक्षन्ते | ९. | सोचते हुये कहने लगे |
| वृन्दावन | ५. | उसे वृन्दावन की | स्म | १०. | कि |
| श्रियम् । | ६. | कोई शोभा | लीलया ॥ | ८. | खेल ही खेल में |

श्लोकार्थ—उसके ऐसे रूप को देखकर समस्त बालकों ने उसे वृन्दावन की कोई शोभा माना । और वे खेल ही खेल में सोचने लगे कि यह अजगर का खुला हुआ मुँह है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**अहो मित्राणि गदत सत्त्वकूटं पुरः स्थितम् ।**
**अस्मत्संग्रसनव्यात्तव्यालतुण्डायते न वा ॥१९॥**

पदच्छेद— अहो मित्राणि गदत सत्त्वकूटम् पुरः स्थितम् ।
अस्मत् संग्रसन व्यात्त व्याल तुण्डायते न वा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **अहो** | २. | भला | **अस्मत्** | ७. | हमें |
| **मित्राणि** | १. | कोई कहता मित्रों ! | **संग्रसन** | ८. | निगलने के लिये |
| **गदत** | ३. | बतलाओ तो | **व्यात्त** | ९. | खुले हुये |
| **सत्त्वकूटम्** | ६. | यह विशाल जीव | **व्याल** | १०. | अजगर के |
| **पुरः** | ४. | हमारे लिये | **तुण्डायते** | ११. | मुँह जैसा है |
| **स्थितम् ।** | ५. | स्थित | **न वा ॥** | १२. | या नहीं |

श्लोकार्थ—कोइ कहता मित्रो ! भला बतलाओ तो हमारे सामने स्थित यह विशाल जीव हमें निगलने के लिये खुले हुये अजगर के मुँह जैसा है या नहीं ॥

## विंशः श्लोकः

**सत्यमर्ककरारक्तमुत्तराहनुवद् घनम् ।**
**अधराहनुवद् रोधस्तत्प्रतिच्छाययारुणम् ॥२०॥**

पदच्छेद— सत्यम् अर्ककर आरक्तम् उत्तर आहनुवत् घनम् ।
अधर आहनुवत् रोधः तत् प्रतिच्छायया अरुणम् ।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सत्यम्** | १. | सचमुच | **अधर** | ११. | नीचे का |
| **अर्ककर** | २. | सूर्य की किरणें पड़ने से | **आहनुवत्** | १२. | होठ जान पड़ता है |
| **आरक्तम्** | ३. | लाल-लल | **रोधः** | १०. | नीचे की भूमि भी |
| **उत्तर** | ५. | ऊपरी | **तत्** | ७. | और उन्हीं बादलों की |
| **आहनुवत्** | ६. | होठ के समान लगते हैं | **प्रतिच्छायया** | ८. | परछाँई से |
| **घनम् ।** | ४. | बादल | **अरुणम् ॥** | ९. | लाल लाल |

श्लोकार्थ—सचमुच सूर्य की किरणें पड़ने से लाल-लाल बादल ऊपरी होठ के समान लगते हैं। और उन्हीं बादलों की परछाँई से लाल लाल नीचे की भूमि भी नीचे का होठ जान पड़ता है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**प्रतिस्पर्धेते सृक्किभ्यां सव्यासव्ये नगोदरे।**
**तुङ्गशृंगालयोऽप्येतास्तद्दंष्ट्राभिश्च पश्यत ॥२१॥**

पदच्छेद— प्रतिस्पर्धेते सृक्किभ्याम् सव्यासव्ये नग उदरे।
तुङ्ग शृङ्ग आलयः अपि एताः तत् दंष्ट्राभिः च पश्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रतिस्पर्धेते | ५. | होड़ कर रही हैं | आलयः | ८. | पंक्तियाँ |
| सृक्किभ्याम् | ४. | जबड़ों की | अपि | ९. | भी |
| सव्यासव्ये | १. | वे दायीं और बायीं ओर की | एताः | ६. | ये |
| नग | २. | गिरि | तत् | १०. | उसकी |
| उदरे। | ३. | कन्दरायें अजगर के | दंष्ट्राभिः | ११. | डाढ़ें |
| तुङ्ग शृङ्ग | ७. | ऊँचो-ऊँचो शिखर | च पश्यत ॥ | १२. | मालूम पड़ती हैं |

श्लोकार्थ—वे दायीं और बायीं ओर की गिरि कन्दरायें अजगर के जबड़ों की होड़ कर रही हैं। ये ऊँची-ऊंची शिखर पंक्तियाँ भी उसकी डाढ़ें मालूम पड़ती हैं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**आस्तृतायाममार्गोऽयं रसनां प्रतिगर्जति।**
**एषामन्तर्गतं ध्वान्तमेतदप्यन्तराननम् ॥२२॥**

पदच्छेद— आस्तृतआयाम मार्गो अयम् रसनाम् प्रति गर्जति।
एषाम् अन्तर्गतम् ध्वान्तम् एतत् अपि अन्तर आननम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आस्तृतआयाम | २. | लम्बी-चौड़ी | अन्तर्गतम् | ७. | बीच का |
| मार्गो | ३. | सड़क उसकी | ध्वान्तम् | ८. | अन्धकार |
| अयम् | १. | यह | एतत् | ९. | उस अजगर के |
| रसनाम् | ४. | जीभ के समान | अपि | १२. | भी मात करता है |
| प्रतिगर्जति। | ५. | मालूम पड़ती है (और) | अन्तर | ११. | भीतर के अन्धेरे को |
| एषाम् | ६. | इन गिरि शृङ्गों के | आननम् ॥ | १०. | मुंह के |

श्लोकार्थ—यह लम्बी-चौड़ी सड़क उसकी जीभ के समान मालूम पड़ती है। और इन गिरि शृंगों के बीच का अन्धकार उस अजगर के मुंह के भीतर के अन्धेरे को भी मात करता है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**दावोष्णखरवातोऽयं श्वासवद् भाति पश्यत ।**
**तद्दग्धसत्त्वदुर्गन्धोऽप्यन्तरामिषगन्धवत् ॥२३॥**

पदच्छेद— दाव उष्ण खरवातः अयम् श्वासवत् भाति पश्यत ।
तत् दग्ध सत्त्व दुर्गन्धः अपि अन्तर आमिष गन्धवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दाव | ३. | दावाग्नि के कारण | तत् | ८. | उस दावाग्नि में |
| उष्ण | ४. | गर्म और | दग्ध | ९. | जले हुये |
| खरवातः | ५. | प्रचण्ड वायु | सत्त्व | १०. | प्राणियों की |
| अयम् | २. | यह | दुर्गन्धः अपि | ११. | दुर्गन्ध भी |
| श्वासवत् | ६. | उसकी श्वास के समान | अन्तर | १२. | अजगर के पेट में मरे जीवों के |
| भाति | ७. | प्रतीत होती है | आमिष | १३. | मांस की |
| पश्यत । | १. | देखो तो | गन्धवत् ॥ | १४. | गन्ध के समान है |

श्लोकार्थ— देखो तो यह दावाग्नि के कारण गर्म और प्रचण्ड वायु उसकी श्वास के समान प्रतीत होती है। उस दावाग्नि में जले हुये प्राणियों की दुर्गन्ध भी अजगर के पेट में मरे जीवों के मांस की गन्ध के समान है ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**अस्मान् किमत्र ग्रसिता निविष्टानयं तथा चेद् बकवद् विनङ्क्ष्यति ।**
**क्षणादनेनेति बकार्युशन्मुखं वीक्ष्योद्धसन्तः करताडनैर्ययुः ॥२४॥**

पदच्छेद— अस्मान् किम् अत्र ग्रसिता निविष्टान् अयम् तथा चेत् बकवत् विनङ्क्ष्यति ।
क्षणात् अनेन इति बकारि उशन् मुखम् वीक्ष्य उद्धसन्तः करताडनैः ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अस्मान् | २. | हम लोग | क्षणात् अनेन | ८. | एक क्षण में यह |
| किम् | ४. | क्या यह हमें | इति | १०. | इस प्रकार |
| अत्र | १. | यहाँ | बकारिः | ११. | अघासुर के शत्रु श्रीकृष्ण |
| ग्रसिता | ५. | निगल जायेगा | उशन् मुखम् | १२. | के सुन्दर मुख को |
| निविष्टान्अयम् | ३. | प्रविष्ट हों तो इसके मुँह में | वीक्ष्य | १३. | देखते और |
| तथा चेत् | ६. | यदि ऐसा करेगा तो | उद्धसन्तः | १५. | हंसते हुये |
| बकवत् | ७. | बकासुर के समान | करताड़नैः | १४. | ताली पीट पीटकर |
| विनङ्क्ष्यति। | ९. | नष्ट हो जायेगा | ययुः ॥ | १६. | उसके मुख में घुस गये |

श्लोकार्थ—यहाँ हम लोग इसके मुँह में प्रविष्ट हों तो क्या यह हमें निगल जायेगा। यदि ऐसा करेगा तो बकासुर के समान एक क्षण में नष्ट हो जायेगा। इस प्रकार अघासुर के शत्रु श्रीकृष्ण के सुन्दर मुख को देखते और ताली पीट पीटकर हंसते हुये उसके मुँह में घुस गये ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**इत्थं मिथोऽतथ्यमतज्ज्ञभाषितं श्रुत्वा विचिन्त्येत्यमृषा मृषायते ।**
**रक्षो विदित्वाखिलभूतहृत्स्थितः स्वानां निरोद्धुं भगवान् मनो दधे ।।२५।।**

पदच्छेद—इत्थम् मिथः अतथ्यम् अतज्ज्ञ भाषितम् श्रुत्वा विचिन्त्य इति अमृषा मृषायते ।
रक्षः विदित्वा अखिल भूतहृत् स्थितः स्वानाम् निरोद्धुम् भगवान् मनः दधे ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् मिथः | २. | ऐसी आपस में की हुई | रक्षः विदित्वा | ११. | उसे राक्षस जानकर |
| अतथ्यम् | ३. | भ्रमपूर्ण | अखिल | ८. | अतः समस्त |
| अतज्ज्ञ | १ | उन अनजान बालकों की | भूतहृत् स्थितः | ९. | प्राणियों के हृदय में स्थित |
| भाषितम् श्रुत्वा | ४. | बातें सुनकर | स्वानाम् | १२. | अपने सखा बालकों को |
| विचिन्त्य इति | ५. | श्रीकृष्ण ने सोचा कि ये तो | निरोद्धुम् | १३. | बचाने का |
| अमृषा | ६. | सच्चे सर्प को भी | भगवान् | १०. | श्रीकृष्ण ने |
| मृषायते । | ७. | झूठा मान रहे हैं | मनः दधे ।। | १४. | मन में विचार किया |

श्लोकार्थ—उन अनजान बालकों की ऐसी आपस में की हुई भ्रमपूर्ण बातें सुनकर श्रीकृष्ण ने सोचा कि ये तो सच्चे सर्प को भी झूठा मान रहे हैं। अतः समस्त प्राणियों के हृदय में स्थित भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे राक्षस जानकर उससे अपने सखा बालकों को बचाने का मन में विचार किया ।।

## षड्विंशः श्लोकः

**तावत् प्रविष्टास्त्वसुरोदरान्तरं परं न गीर्णाः शिशवः सवत्साः ।**
**प्रतीक्षमाणेन बकारिवेशनं हतस्वकान्तस्मरणेन रक्षसा ।।२६।।**

पदच्छेद— तावत् प्रविष्टाः तु असुर उदर अन्तरम् परम् न गीर्णाः शिशवः सवत्साः ।
प्रतीक्षमाणेन बक अरि वेशनम् हत स्वकअन्त स्मरणेन रक्षसा ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तावत् | १. | तब-तक | प्रतीक्षमाणेन | १४. | प्रतीक्षा कर रहा था |
| प्रविष्टाः तु | ५. | घुस गये | बक अरि | ११. | श्रीकृष्ण का |
| असुरउदरअन्तरम् | ४ | अघासुर के पेट के अन्दर | वेशनम् | १३. | प्रवेश करने की |
| परम् | ६. | किन्तु अघासुर ने | हत | १०. | मारने वाले |
| न गीर्णाः | ७. | उन्हें नहीं निगला | स्वकान्त | ९. | अपने प्रियजनों को |
| शिशवः | २. | वे ग्वाल-बाल | स्मरणेन | १२. | स्मरण करके उनके |
| सवत्साः । | ३. | बछड़ों सहित | रक्षसा ।। | ८. | क्योंकि वह राक्षस |

श्लोकार्थ—तब-तक वे ग्वाल-बाल बछड़ों सहित अघासुर के पेट के अन्दर घुस गये। किन्तु अघासुर ने उन्हें नहीं निगला। क्योंकि वह राक्षस अपने प्रियजनों को मारने वाले श्रीकृष्ण का स्मरण करके उनके प्रवेश करने की प्रतीक्षा कर रहा था ।।

## सप्तविंशः श्लोकः

**तान् वीक्ष्य कृष्णः सकलाभयप्रदो ह्यनन्यनाथान् स्वकरादवच्युतान् ।**
**दीनांश्च मृत्योर्जठराग्निघासान् घृणार्दितो दिष्टकृतेन विस्मितः ॥२७॥**

पदच्छेद—तान् वीक्ष्य कृष्णः सकल अभयप्रदः हि अनन्य नाथान् स्वकरात् अवच्युतान् ।
दीनान् च मृत्योः जठराग्निघासान् घृणा अर्दितः दिष्टकृतेन विस्मितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तान् | ८. | जब | दीनाम् | ६. | दीन ग्वाल-बालों को |
| वीक्ष्य | १०. | देखा | च | ११. | वे |
| कृष्णः | ३. | श्रीकृष्ण ने | मृत्योः | ६. | मृत्युरूप अघासुर की |
| सकल अभयप्रदः | १. | सबको अभय देने वाले | जठराग्निघासान् | ७. | जठराग्नि के ग्रास बने हुये |
| हि अनन्यनाथान् | २. | सबके एक मात्र रक्षक | घृणा अर्दितः | १४. | दया के वशीभूत हो गये |
| स्वकरात् | ४. | अपने हाथ से | दिष्टकृतेन | १२. | दैवकृत विचित्र लीला पर |
| अवच्युतान् । | ५. | निकलकर | विस्मितः ॥ | १३. | आश्चर्यचकित होकर |

श्लोकार्थ—सबको अभय देने वाले, सबके एकमात्र रक्षक, श्रीकृष्ण ने अपने हाथ से निकलकर मृत्यु रूप अघासुर की जठराग्नि के ग्रास बने हुये जब दीन ग्वाल बालों को देखा । और वे दैवकृत विचित्र लीला पर आश्चर्य चकित होकर दया के वशीभूत हो गये ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**कृत्यं किमत्रास्य खलस्य जीवनं न वा अमीषां च सतां विहिंसनम् ।**
**द्वयं कथं स्यादिति संविचिन्त्य तज्ज्ञात्वाविशत्तुण्डमशेषदृग्घरिः ॥२८॥**

पदच्छेद—कृत्यम् किम् अत्र अस्य खलस्य जीवनम् न वा अमीषाम् च सताम् विहिंसनम् ।
द्वयम् कथम् स्यात् इति संविचिन्त्य तत् ज्ञात्वा अविशत् तुण्डम् अशेष दृक् हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृत्यम् | ४. | उपाय करें | द्वयम् | १०. | ये दोनों ही कार्य |
| किम् अत्र | ३. | अबऐसाकौनसा | कथम्स्यात् | ११. | कैसे हो |
| अस्य खलस्य | ५. | जिससे इस दुष्ट की | इतिसंविचिन्त्य | १२. | ऐसा सोचकर और |
| जीवनम् | ६. | मृत्यु हो जाय | तत् ज्ञात्वा | १३. | उसका उपाय जानकर वे |
| न वा | ६. | न हो | अविशत्तुण्डम् | १४. | उसके मुँह में घुस गये |
| अमीषाम् च | ७. | और इन | अशेषदृक् | १. | भूत भविष्य और वर्तमान के द्रष्टा |
| सताम्विहिंसनम् । | ८. | संतजनों की हत्या भी | हरिः ॥ | २. | भगवान् श्रीकृष्ण ने सोचा कि |

श्लोकार्थ—भूत, भविष्य और वर्तमान के द्रष्टा भगवान् श्रीकृष्ण ने सोचा कि अब ऐसा कौन सा उपाय करें, जिससे इस दुष्ट की मृत्यु हो जाय । और इन संतजनों की हत्या भी न हो । ये दोनों ही कार्य कैसे हों । ऐसा सोचकर और उसका उपाय जानकर वे उसके मुँह में घुस गये ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**तदा घनच्छदा देवा भयाद्धाहेति चुक्रुशुः ।**
**जहृषुर्ये च कंसाद्याः कौणपास्त्वघबान्धवाः ॥२९॥**

पदच्छेद— तदा घनच्छदाः देवाः भयात् हाहा इति चुक्रुशुः ।
जहृषुः ये च कंस आद्याः कौणपाः तु अघ बान्धवाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तदा | १. | उस समय | जहृषुः | १२. | हर्ष प्रकट करने लगे |
| घनच्छदाः | २. | बादलों में छिपे हुये | ये च | ७. | और जो |
| देवाः | ३. | देवता | कंस आद्याः | १०. | कंस आदि |
| भयात् | ४. | भयवश | कौणपाः तु | ११. | राक्षस थे वे |
| हाहा इति | ५. | हाय हाय करके | अघ | ८. | अघासुर के |
| चुक्रुशुः । | ६. | पुकार उठे | बान्धवाः ॥ | ९. | हितैषी |

श्लोकार्थ—जो उस समय बादलों में छिपे हुये देवता भयवश हाय हाय करके पुकार उठे और जो अघासुर के हितैषी कंस आदि राक्षस थे वे हर्ष प्रकट करने लगे ।

## त्रिंशः श्लोकः

**तच्छ्रुत्वा भगवान् कृष्णस्त्वव्ययः सार्भवत्सकम् ।**
**चूर्णीचिकीर्षोरात्मानं तरसा ववृधे गले ॥३०॥**

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा भगवान् कृष्णः तु अव्ययः सार्भवत्सकम् ।
चूर्णीचिकीर्षोः आत्मानम् तरसा ववृधे गले ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ७. | देवताओं की हाय-हाय | चूर्णी | ३. | चूर-चूर |
| श्रुत्वा | ८. | सुन कर | चिकीर्षोः | ४. | करना ही चाहता था कि |
| भगवान् कृष्णः तु | ६. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | आत्मानम् | १०. | अपने शरीर को |
| अव्ययः | ५. | अविनाशी | तरसा | ११. | बड़ी फुर्ती से |
| सार्भ | १. | अघासुर ग्वाल बालों और | ववृधे | १२. | बढ़ा दिया |
| वत्सकम् । | २. | बछड़ों सहित सब को | गले ॥ | ९. | उसके गले में |

श्लोकार्थ—अघासुर ग्वाल बालों ओर बछड़ों सहित सबको चूर-चूर करना ही चाहता था कि अविनाशी भगवान् श्रीकृष्ण ने देवताओं को हाय-हाय सुनकर उसके गले में अपने शरीर को बड़ी फुर्ती से बढ़ा दिया ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**ततोऽतिकायस्य निरुद्धमार्गिणो ह्युद्गीर्णदृष्टेर्भ्रमतस्त्वितस्ततः ।**
**पूर्णोऽन्तरङ्गे पवनो निरुद्धो मूर्धन् विनिष्पाट्य विनिर्गतो बहिः ॥३१॥**

पदच्छेद— ततः अतिकायस्य निरुद्ध मार्गिणः हि उद्गीर्णदृष्टेः भ्रमतः तु इतः ततः ।
पूर्णः अन्तर् अङ्गे पवनः निरुद्धः मूर्धन् विनिष्पाट्य विनिर्गतः बहिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | इसके बाद | पूर्णः | १०. | भर गयीं उसके प्राण |
| अतिकायस्य | २. | शरीर बढ़ाने पर तो | अन्तः अङ्गे | ९. | शरीर के अन्दर |
| निरुद्ध | ४. | रुँध गया (और) | पवनः निरुद्धः | ८. | साँस रुक कर |
| मार्गिणः | ३. | उसका गला ही | मूर्धन् | ११. | ब्रह्मरन्ध्र |
| हि उद्गीर्ण दृष्टेः | ५. | आँखें उलट गयीं | विनिष्पाट्य | १२. | फोड़कर |
| भ्रमतः | ७. | लोटने लगा | विनिर्गतः | १४. | निकल गये |
| इतः ततः । | ६. | वह इधर-उधर | बहिः ॥ | १३. | बाहर |

श्लोकार्थ—इसके बाद शरीर बढ़ाने पर तो उसका गला ही रुंध गया । और उसकी आँखें उलट गयीं । वह इधर-उधर लोटने लगा । उसकी सांस रुक कर शरीर के अन्दर भर गयी, उसके प्राण ब्रह्मरन्ध्र फोड़कर बाहर निकल गये ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**तेनैव सर्वेषु बहिर्गतेषु प्राणेषु वत्सान् सुहृदः परेतान् ।**
**दृष्ट्या स्वयोत्थाप्य तदन्वितः पुनर्वक्त्रान्मुकुन्दो भगवान् विनिर्ययौ ॥३२॥**

पदच्छेद—तेन एव सर्वेषु बहिः गतेषु प्राणेषु वत्सान् सुहृदः परेतान् ।
दृष्ट्या स्वया उत्थाप्य तत् अन्वितः पुनः वक्त्रात् मुकुन्दः भगवान् विनिर्ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेन एव | १. | उसी मार्ग से | दृष्ट्या | ७. | दृष्टि से |
| सर्वेषु | २. | उसकी सारी | स्वया | ६. | अपनी अमृतवर्षिणी |
| बहिर्गतेषु | ४. | शरीर से बाहर निकल गयीं तब | उत्थाप्य | ११. | जिलाकर तथा |
| प्राणेषु | ३. | इन्द्रियाँ भी | तत अन्वितः | १२. | उन्हें साथ लेकर |
| वत्सान् | १०. | बछड़ों को | पुनः वक्त्रात् | १३. | तब अघासुर के मुँह से |
| सुहृदः | ९. | ग्वाल बालों और | मुकुन्दः भगवान् | ५. | भगवान् श्रीकृष्ण |
| परेतान् । | ८. | मृत | विनिर्ययौ । | १४. | बाहर निकले |

श्लोकार्थ—उसी मार्ग से उसकी सारी इन्द्रियाँ भी शरीर से बाहर निकल गयीं । तब भगवान् श्रीकृष्ण अपनी अमृतवर्षिणी दृष्टि से मृत ग्वाल बालों और बछड़ों को जिलाकर तथा उन्हें साथ लेकर तब अघासुर के मुँह से बाहर निकले ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**पीनाहिभोगोत्थितमद्भुतं महज्ज्योतिः स्वधाम्ना ज्वलयद् दिशो दश ।**
**प्रतीक्ष्य खेऽवस्थितमीशनिर्गमं विवेश तस्मिन् मिषतां दिवौकसाम् ॥३३॥**

पदच्छेद—पीन अहिभोग उत्थितम् अद्भुतम् महत् ज्योतिः स्वधाम्ना ज्वलयद् दिशः दश ।
प्रतीक्ष्य खे अवस्थितम् ईश निर्गमम् विवेश तस्मिन् मिषताम् दिवौकसाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पीन अहिभोगः | १. | उस अजगर के स्थूल शरीर से | प्रतीक्ष्य | ११. | प्रतीक्षा करती रही |
| उत्थितम् | ४. | निकली | खे | ८. | वह थोड़ी देर आकाश में |
| अद्भुतम् | २. | एक अद्भुत और | अवस्थितम् | ९. | स्थित रह कर |
| महत् ज्योतिः | ३. | महान् ज्योति | ईशनिर्गमम् | १०. | भगवान् के निकलने की |
| स्वधाम्ना | ५. | उसके प्रकाश से | विवेश तस्मिन् | १४. | उनमें प्रवेश कर गयी |
| ज्वलयत् | ७. | प्रज्वलित हो उठी | मिषताम् | १३. | देखते-देखते |
| दिशः दश । | ६. | दशों दिशायें | दिवौकसाम् ॥ | १२. | उनके निकलने पर देवताओं के |

श्लोकार्थ—उस अजगर के स्थूल शरीर से एक अद्भुत और महान् ज्योति निकली। उसके प्रकाश से दशों दिशाएँ प्रज्वलित हो उठीं। वह थोड़ी देर आकाश में स्थित रह कर भगवान् के निकलने की प्रतीक्षा करती रही। उनके निकलने पर देवताओं के देखते-देखते उनमें प्रवेश कर गई ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**ततोऽतिहृष्टाः स्वकृतोऽकृतार्हणं पुष्पैः सुरा अप्सरसश्च नर्तनैः ।**
**गीतैः सुगा वाद्यधराश्च वाद्यकैः स्तवैश्च विप्रा जयनिःस्वनैर्गणाः ॥३४॥**

पदच्छेद— ततः अति हृष्टाः स्वकृतः अकृत अर्हणम् पुष्पैः सुराः अप्सरसः च नर्तनैः ।
गीतैः सुगाः वाद्यधराः च वाद्यकैः स्तवैः च विप्राः जय निःस्वनैः गणाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब | गीतैः सुगाः | ५. | गन्धर्वों ने गाकर |
| अतिहृष्टाः | १२. | अत्यन्त प्रसन्न होकर | वाद्यधराः च | ६. | और विद्याधरों ने |
| स्वकृत | १३. | सबका कार्य सिद्ध करने वाले भगवान् | वाद्यकैः | ७. | बजा कर |
| अकृत अर्हणम् | १४. | अभिनन्दन किया | स्तवैः | ९. | स्तुति पाठ कर तथा |
| पुष्पैः सुरा | २. | देवताओं ने फूल बरसाकर | च विप्राः | ८. | और ब्राह्मणों ने |
| अप्सरसः च | ३. | और अप्सराओं ने | जयनिःस्वनैः | ११. | जय जयकार करके |
| नर्तनैः । | ४. | नाच कर | गणाः ॥ | १०. | पार्षदों ने |

श्लोकार्थ—तब देवताओं ने फूल बरसाकर और अप्सराओं ने नाचकर गन्धर्वों ने गाकर और विद्याधरों ने बजाकर और ब्राह्मणों ने स्तुति पाठ करके तथा पार्षदों ने जय जयकार करके अत्यन्त प्रसन्न होकर सबका कार्य सिद्ध करने वाले भगवान् का अभिनन्दन किया ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तदद्भुतस्तोत्रसुवाद्यगीतिका-
जयादिनैकोत्सवमङ्गलस्वनान् ।
श्रुत्वा स्वधाम्नोऽन्त्यज आगतोऽचिराद्
दृष्ट्वा महीशस्य जगाम विस्मयम् ॥३५॥

पदच्छेद—तत् अद्भुत स्तोत्रसुवाद्यगीतिका जय आदिनैक उत्सव मङ्गल स्वनान् ।
श्रुत्वा स्वधाम्नः अन्ति अज आगतः अचिरात् दृष्ट्वा महीशस्य जगाम विस्मयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् अद्भुत | १. | उस अद्भुत | श्रुत्वा | ११. | उसे सुनकर |
| स्तोत्र | २. | स्तुतियों | स्वधाम्नः | ९. | लोक के |
| सुवाद्य गीतिका | ३. | सुन्दर वाद्यों मङ्गलमयगीतों | अन्ति | १०. | पास तक पहुँच गई |
| जय आदि | ४. | जय आदि | अज | ८. | ब्रह्माजी के |
| नैक | ५. | अनेक | आगतः अचिरात् | १२. | वे तत्काल वहाँ आये और |
| उत्सवमङ्गल | ६. | उत्सवों की माङ्गलिक | दृष्ट्वा महीशस्य | १३. | श्रीकृष्ण की महिमा देखकर |
| स्वनान् । | ७. | ध्वनि | जगाम विस्मयम् ॥ | १४. | आश्चर्यचकित हो गये |

श्लोकार्थ—उस अद्भुत स्तुतियों सुन्दर वाद्यों, मङ्गलमयगीतों, जय आदि अनेक उत्सवों की मङ्गलमयी ध्वनि ब्रह्माजी के लोक के पास तक पहुँच गई । उसे सुनकर वे तत्काल ही वहाँ आये और श्रीकृष्ण की महिमा को देख कर आश्चर्यचकित हो गये ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

राजन्नाजगरं चर्म शुष्कं वृन्दावनेऽद्भुतम् ।
व्रजौकसां बहुतिथं बभूवाक्रीडगह्वरम् ॥३६॥

पदच्छेद— राजन् आजगरम् चर्म शुष्कम् वृन्दावने अद्भुतम् ।
व्रजौकसाम् बहुतिथम् बभूव आक्रीड गह्वरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राजन् | १. | हे परीक्षित् ! | व्रजौकसाम् | ६. | व्रजवासियों के लिये |
| आजगरम् | ३. | अजगर का | बहुतिथम् | ७. | बहुत दिनों तक |
| चर्म | ४. | वह चाम | बभूव | ११. | बना रहा |
| शुष्कम् | ५. | सूख गया तब वह | आक्रीड | ८. | खेलने की एक |
| वृन्दावने | २. | जब वृन्दावन में | गह्वरम् ॥ | १०. | गुफा सी |
| अद्भुतम् । | ९. | अद्भुत | | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जब वृन्दावन में अजगर का वह चाम सूख गया तब वह व्रजवासियों के लिये बहुत दिनों तक खेलने की एक अद्भुत गुफा सी बना रहा ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**एतत् कौमारजं कर्म हरेरात्माहिमोक्षणम् ।**
**मृत्योः पौगण्डके बाला दृष्ट्वोचुर्विस्मिता व्रजे ॥३७॥**

पदच्छेद— एतत् कौमारजम् कर्म हरेः आत्म अहि मोक्षणम् ।
मृत्योः पौगण्डके बालाः दृष्ट्वा ऊचुः विस्मिताः व्रजे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतत् | ५. | यह | मृत्योः | ३. | मृत्युपाश से |
| कौमारजम् | ७. | कुमारावस्था में किया गया था | पौगण्डके | १०. | छठे वर्ष में |
| कर्म | ६. | कार्य | बालाः | ६. | बालकों ने |
| हरेः आत्म | १. | श्रीकृष्ण द्वारा ग्वाल बालों को | दृष्ट्वा | ८. | जिसे देखकर |
| अहि | २. | अघासुररूपी | ऊचुः | १२. | उसका वर्णन किया |
| मोक्षणम् । | ४. | मुक्त करने का | विस्मिताः व्रजे ॥ | ११. | व्रज में आश्चर्य चकित होकर |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण द्वारा ग्वाल बालों को अघासुररूपी मृत्युपाश से मुक्त करने का यह कार्य कुमारावस्था में किया गया था। जिसे देखकर बालकों ने छठे वर्ष में व्रज में आश्चर्यचकित होकर उसका वर्णन किया ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**नैतद् विचित्रं मनुजार्भमायिनः परावराणां परमस्य वेधसः ।**
**अघोऽपि यत्स्पर्शनधौतपातकः प्रापात्मसाम्यं त्वसतां सुदुर्लभम् ॥३८॥**

पदच्छेद— न एतत् विचित्रम् मनुज अर्भ मायिनः परावराणाम् परमस्य वेधसः ।
अघः अपि यत् स्पर्शन धौत पातकः प्राप आत्मसाम्यम् तु असताम् सुदुर्लभम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न एतत् | १४. | नहीं है | अघः अपि | ३. | अघासुर ने भी |
| विचित्रम् | १३. | यह कोई आश्चर्य | यत् स्पर्शन | १. | जिन श्रीकृष्ण के स्पर्श से |
| मनुज अर्भ | ८. | मनुष्य बालक की सी | धौतपातकः | २. | पाप मुक्त होकर |
| मायिनः | ९. | लीला करने वाले | प्राप | ७. | प्राप्त की उन |
| परा वराणाम् | १०. | कार्य कारणरूप | आत्म साम्यम् | ६. | सारूप्य मुक्ति |
| परमस्य | ११. | समस्त जगत् के | तु असताम् | ४. | पापियों के लिये |
| वेधसः । | १२. | विधाता श्रीकृष्ण के लिये | सुदुर्लभम् ॥ | ५. | अत्यन्त दुर्लभ |

श्लोकार्थ—जिन श्रीकृष्ण के स्पर्श से पाप मुक्त होकर अघासुर ने भी पापियों के लिये अत्यन्त दुर्लभ सारूप्य मुक्ति प्राप्त की। उन मनुष्य बालक की सी लीला करने वाले कार्य कारण रूप समस्त जगत् के विधाता श्रीकृष्ण के लिये यह कोई आश्चर्य नहीं है ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**सकृद् यदङ्गप्रतिमान्तराहिता मनोमयी भागवतीं ददौ गतिम् ।**
**स एव नित्यात्मसुखानुभूत्यभिव्युदस्तमायोऽन्तर्गतो हि किं पुनः ॥३९॥**

पदच्छेद— सकृत् यत् अङ्ग प्रतिमा अन्तः आहिता मनोमयी भागवतीम् ददौ गतिम् ।
स: एव नित्य आत्म सुख अनुभूतिअभिव्युदस्त मायः अन्तः गतः हि किम् पुनः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सकृत् | ३. | एक बार | सः एव | १२. | वे ही श्रीकृष्ण |
| यत् अङ्ग | १. | जिन श्रीकृष्ण के एक अङ्ग की | नित्य | ९. | नित्य |
| प्रतिमा | २. | भावमूर्ति | आत्मसुख | ८. | आत्म आनन्द के |
| अन्तः आहिता | ४. | हृदय में आने पर | अनुभूति | १०. | साक्षात्कार स्वरूप |
| मनोमयी | ६. | मनोवांछित | अभिव्युदस्तमायः | ११. | माया रहित |
| भागवतीम् | ५. | भक्तों को मिलने वाली | अन्तः गतः | १३. | जिसके अन्दर प्रवेशकर गये |
| ददौ गतिम् । | ७. | गति का दान करती हैं | हि किम् पुनः ।। | १४. | उसके विषय में क्या कहा जाय |

श्लोकार्थ—जिन श्रीकृष्ण के एक अङ्ग की भावमयी मूर्ति एकबार हृदय में आने पर भक्तों को मिलने वाली मनोवांछित गति का दान करती है, आत्मानन्द के नित्य साक्षात्कार स्वरूप माया रहित वे ही श्रीकृष्ण जिसके अन्दर प्रवेशकर गये, उसके विषय में क्या कहा जाय ।।

## चत्वारिंशः श्लोकः

**सूत उवाच—इत्थं द्विजा यादवदेवदत्तः श्रुत्वा स्वरातुश्चरितं विचित्रम् ।**
**पप्रच्छ भूयोऽपि तदेव पुण्यं वैयासकिं यन्निगृहीतचेताः ॥४०॥**

पदच्छेद— इत्थम् द्विजाः यादव देवदत्तः श्रुत्वा स्वरातुः चरितम् विचित्रम् ।
पप्रच्छ भूयः अपि तद् एव पुण्यम् वैयासकिम् यत् निगृहीत चेताः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | ४. | ऐसे | पप्रच्छ | ११. | पूछा |
| द्विजाः | १. | हे शौनकादि ऋषियो ! | भूयः अपि | १०. | पुनः पुनः |
| यादव देवदत्तः | ३. | यदुवंश शिरोमणि श्रीकृष्ण के | तत् एव पुण्यम् | ९. | उसी पुण्य चरित्र के बारे में |
| श्रुत्वा | ७. | सुनकर परीक्षित् ने | वैयासकिम् | ८. | शुकदेव जी से |
| स्वरातुः | २. | अपने रक्षक | यत् | १२. | क्योंकि |
| चरितम् | ६. | चरित्र को | निगृहीत | १४. | भगवत्लीला में लग गया था |
| विचित्रम् । | ५. | विचित्र | चेताः ।। | १३. | उनका चित्त |

श्लोकार्थ—हे शौनकादि ऋषियो ! अपने रक्षक यदुवंशशिरोमणि श्रीकृष्ण के ऐसे विचित्र चरित्र को सुनकर परीक्षित् ने शुकदेव जी से उसी पुण्य चरित्र के बारे में पुनः पुनः पूछा । क्योंकि उनका चित्त भगवान् श्रीकृष्ण की लीला में लग गया था ।।

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

राजोवाच— ब्रह्मन् कालान्तरकृतं तत्कालीनं कथं भवेत् ।
यत् कौमारे हरिकृतं जगुः पौगण्डकेऽर्भकाः ॥४१॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् काल अन्तर कृतम् तत् कालीनम् कथम् भवेत् ।
यत् कौमारे हरि कृतम् जगुः पौगण्डके अर्भकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्रह्मन् | १. | हे भगवन् ! | यत् | ४. | जो लीला |
| काल | १०. | समय में | कौमारे | ३. | कुमारावस्था में |
| अन्तर | ९. | दूसरे | हरि | २. | श्रीकृष्ण ने |
| कृतम् | ११. | की गई लीला | कृतम् | ५. | की थी उसे |
| तत् | १२. | तत् | जगुः | ८. | कहा तो यह बताइये कि |
| कालीनम् | १३. | कालीन | पौगण्डके | ७. | छठे वर्ष में |
| कथम् भवेत् । | १४. | कैसे हो सकती है | अर्भकः ॥ | ६. | बालकों ने |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! श्रीकृष्ण ने कुमारावस्था में जो लीला की थी उसे बालकों ने छठे वर्ष में कहा तो यह बताइये कि दूसरे समय में की गई लीला तत्कालीन कैसे हो सकती है ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तद् ब्रूहि मे महायोगिन् परं कौतूहलं गुरो ।
नूनमेतद्धरेरेव माया भवति नान्यथा ॥४२॥

पदच्छेद— तत् ब्रूहि मे महायोगिन् परम् कौतूहलम् गुरो ।
नूनम् एतत् हरेः एव माया भवति न अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ३. | यह सब | नूनम् | ९. | निश्चय ही |
| ब्रूहि | ५. | बताइये क्योंकि | एतत् | ८. | यह |
| मे | ४. | मुझे | हरेः | १०. | भगवान् की |
| महायोगिन् | १. | महायोगी | एव | ११. | ही |
| परम् | ६. | मुझे अत्यन्त | माया | १२. | माया |
| कौतुहलम् | ७. | उत्कण्ठा है | भवति | १३. | हो सकती है |
| गुरो । | २. | हे गुरुदेव ! शुकदेव जी | न अन्यथा ॥ | १४. | अन्य कुछ नहीं |

श्लोकार्थ—महायोगी हे गुरुदेव ! शुक देव जी, यह सब मुझे बताइये । क्योंकि मुझे अत्यन्त उत्कण्ठा है । यह निश्चय ही भगवान् की माया हो सकती है । अन्य कुछ नहीं ॥

# त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**वयं धन्यतमा लोके गुरोऽपि क्षत्रबन्धवः ।**
**यत् पिबामो मुहुस्त्वत्तः पुण्यं कृष्णकथामृतम् ॥४३॥**

पदच्छेद— वयम् धन्यतमाः लोके गुरो अपि क्षत्र बन्धवः ।
यत् पिबामः मुहुः त्वत्तः पुण्यम् कृष्ण कथा अमृतम् ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वयम् | ८. | हम | यत् | ७. | क्योंकि |
| धन्यतमाः | ६. | धन्य हूँ | पिबामः | १४. | पान करते हैं |
| लोके | ५. | संसार में | मुहुः | १३. | बार-बार |
| गुरो | १. | हे गुरुदेव ! मैं | त्वत् | ९. | आपके मुख से झरते हुये |
| अपि | ४. | होने पर भी | पुण्यम् | १०. | पवित्र |
| क्षत्र | ३. | क्षत्रिय | कृष्ण कथा | ११ | श्रीकृष्ण की कथारूपी |
| बन्धवः । | २. | नाम मात्र का | अमृतम् ॥ | १२. | अमृत का |

श्लोकार्थ—हे गुरुदेव ! मैं नाममात्र का क्षत्रिय होने पर भी संसार में धन्य हूँ ; क्योंकि हम आप के मुख से झरते हुये पवित्र श्रीकृष्ण की कथारूपी अमृत का बार-बार पान करते हैं ।

# चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**शुक उवाच—इत्थंस्मपृष्टःसतुबादरायणिस्तत्स्मारितानन्तहृताखिलेन्द्रियः ।**
**कृच्छ्रात् पुनर्लब्धबहिर्दृशिःशनैःप्रत्याहतंभागवतोत्तमोत्तम ॥४४॥**

पदच्छेद—इत्थम् स्म पृष्टः सः तु बादरायणिः तत् स्मारित अनन्तहृत अखिल इन्द्रियः ।
कृच्छ्रात् पुनः लब्ध बहिः दृशिः शनैः प्रति आह तम् भागवत उत्तमउत्तम ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | १. | इस प्रकार | कृच्छ्रात् पुनः | १०. | फिर बलपूर्वक |
| स्म पृष्टः | २. | प्रश्न करने पर | लब्धबहिः दृशिः | ११. | बहिर्मुख करके अपनी दृष्टि से |
| सः तु बादरायणिः | ३. | श्रीशुक देव जी | शनैः प्रति | १३. | धीरे-धीरे |
| तत् स्मारित | ४. | उन श्रीकृष्ण के स्मरण से ही | आह | १४. | कहना प्रारम्भ किया |
| अनन्तहृत | ७. | भगवान् की ओर खिच गईं | तम् | १२. | उन परीक्षित् के प्रति |
| अखिल | ५. | समस्त | भागवत | ८. | भगवत् भक्तों में |
| इन्द्रियः । | ६. | इन्द्रियाँ | उत्तमोत्तम ॥ | ९. | सर्व श्रेष्ठ शुकदेव जी ने |

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रश्न करने पर श्रीशुक देव जी की उन श्रीकृष्ण के स्मरण से ही समस्त इन्द्रियाँ भगवान् की ओर खिच गईं । तब भगवत् भक्तों में सर्व श्रेष्ठ शुकदेव जी ने फिर बलपूर्वक अपनी दृष्टि बहिर्मुख करके उन परीक्षित् के प्रति कहना प्रारम्भ किया ।

श्री मद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां सहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
द्वादशः अध्यायः ॥१२॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमःस्कन्धः

## त्रयोदशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— साधु पृष्टं महाभाग त्वया भागवतोत्तम।
यन्नूतनयसीशस्य शृण्वन्नपि कथां मुहुः ॥१॥

पदच्छेद— साधु पृष्टम् महाभाग त्वया भागवत उत्तम।
यत् नूतनयसि ईशस्य शृण्वन् अपि कथाम् मुहुः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| साधु | ५. | बहुत अच्छा | यत् | ७. | क्योंकि |
| पृष्टम् | ६. | प्रश्न किया है | नूतनयसि | १३. | नया बना रहे थे |
| महाभाग | ३. | हे भाग्यवान ! परीक्षित् | ईशस्य | ८. | भगवान् की |
| त्वया | ४. | तुमने | शृण्वन् | ११. | सुनने पर |
| भागवत | १. | भगवान् के भक्तों में | अपि | १२. | भी तुम उसे |
| उत्तम। | २. | श्रेष्ठ | कथाम् | ९. | कथा को |
| | | | मुहुः ॥ | १०. | बार-बार |

श्लोकार्थ—भगवान् के भक्तों में श्रेष्ठ हे भाग्यवान् ! परीक्षित्, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। क्योंकि भगवान् की कथा को बार-बार सुनने पर भी तुम उसे नया नया बना रहे हो ॥

### द्वितीयः श्लोकः

सतामयं सारभृतां निसर्गो यदर्थवाणीश्रुतिचेतसामपि।
प्रतिक्षणं नव्यवदच्युतस्य यत् स्त्रिया विटानामिव साधुवार्ता ॥२॥

पदच्छेद— सतामयम् सारभृताम् विसर्गः यत् अर्थ वाणी श्रुति चेतसाम् अपि।
प्रतिक्षणम् नव्यवद् अच्युतस्य यत् स्त्रिया विटानाम् इव साधुवार्ता ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सतामयम् | २. | सन्तजनों का तो यही | प्रतिक्षणम् | १०. | प्रतिक्षण वैसी ही |
| सारभृताम् | १. | रसिक वर | नव्यवद् | ११. | नवीनता का अनुभव करते हैं |
| विसर्गः यत् | ३. | स्वभाव होता है कि उनकी | अच्युतस्य | ७. | भगवान् के |
| अर्थ | ८. | निमित्त होकर | यत् स्त्रिया | १४. | स्त्रियों की चर्चा में आनन्दित होते हैं |
| वाणी श्रुति | ४. | वाणी कान और | विटानाम् | १३. | लम्पट पुरुष |
| चेतसाम् | ५. | हृदय | इव | १२. | जैसे |
| अपि। | ६. | भी | साधुवार्ता ॥ | ९. | साधु पुरुष भगवत्कथा में |

श्लोकार्थ—रसिकवर सन्तजनों का तो यही स्वभाव होता है, कि उनकी वाणी, कान और हृदय भी भगवान् के निमित्त होकर साधु पुरुष भगवत्कथा में प्रतिक्षण वैसी ही नवीनता का अनुभव करते हैं, जैसे लम्पट पुरुष स्त्रियों की चर्चा में आनन्दित होते हैं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**शृणुष्वावहितो राजन्नपि गुह्यं वदामि ते।**
**ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत ॥३॥**

पदच्छेद— शृणुष्व अवहितः राजन् अपि गुह्यम् वदामि ते।
ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवः गुह्यम् अपि उत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शृणुष्व | ३. सुनो | ब्रूयुः | १४. बता दिया करते हैं |
| अवहितः | २. तुम ध्यान देकर | स्निग्धस्य | १०. स्नेही |
| राजन् | १. हे परीक्षित् ! | शिष्यस्य | ११. शिष्य को |
| अपि | ६. भी | गुरवः | ९. गुरुजन |
| गुह्यम् | ५. गुप्त बात | गुह्यम् | १२. गुप्त बात |
| वदामि | ७. बता रहा हूँ | अपि | १३. भी |
| ते। | ४. तुम से | उत ॥ | ८. क्योंकि |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तुम ध्यान देकर सुनो। तुम से गुप्त बात भी बता रहा हूँ। क्योंकि गुरुजन स्नेही शिष्य को गुप्त बात भी बता दिया करते हैं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तथाघवदनान्मृत्यो रक्षित्वा वत्सपालकान्।**
**सरित्पुलिनमानीय भगवानिदमब्रवीत् ॥४॥**

पदच्छेद— तथा अघ वदनात् मृत्योः रक्षित्वा वत्स पालकान्।
सरित् पुलिनम् आनीय भगवान् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तथा | १. इसके बाद | सरित् | ८. यमुना के |
| अघ वदनात् | ६. अघासुर के मुख से | पुलिनम् | ९. किनारे पर |
| मृत्योः | ५. मृत्यु रूप | आनीय | १०. ले आये और |
| रक्षित्वा | ७. निकाल कर | भगवान् | २. भगवान् श्रीकृष्ण |
| वत्स | ३. ग्वाल | इदम् | ११. इस प्रकार |
| पालकान्। | ४. बालों को | अब्रवीत् ॥ | १२. कहने लगे |

श्लोकार्थ—इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण ग्वाल बालों को मृत्यु रूप अघासुर के मुख से निकाल कर यमुना के किनारे पर ले आये। और इस प्रकार कहने लगे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**अहोऽतिरम्यं पुलिनं वयस्याः स्वकेलिसम्पन्मृदुलाच्छबालुकम् ।**
**स्फुटत्सरोगन्धहृतालिपत्रिकध्वनिप्रतिध्वानलसद्द्रुमाकुलम् ॥५॥**

पदच्छेद— अहो अतिरम्यम् पुलिनम् वयस्याः स्वकेलि सम्पत् मृदुलअच्छ बालुकम् ।
स्फुटत् सरोगन्धहृत अलि पत्रिकध्वनि प्रतिध्वान लसत् द्रुम आकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो | १. | अहो ! | स्फुटत् | ९. | विकसित होते हुये |
| अतिरम्यम् | ४. | अत्यन्त रमणीय है | सरोगन्ध | १०. | सरोवर की गन्ध से |
| पुलिनम् | ३. | यमुना का किनारा | हृतअलि | ११. | खिंचे हुये भौंरों और |
| वयस्याः | २. | मेरे प्यारे मित्रो ! | पत्रिकध्वनि | १२. | पक्षियों की ध्वनि और |
| स्वकेलि | ७. | अपने खेल की | प्रतिध्वान | १३. | प्रतिध्वनि से |
| सम्पत् | ८. | सामग्री है | लसत् | १४. | सुशोभित |
| मृदुलाच्छ | ५. | कोमल और स्वच्छ | द्रुम | १५. | वृक्ष पक्षियां से |
| बालुकम् । | ६. | बालू | आकुलम् ॥ | १६. | युक्त हैं |

श्लोकार्थ—अहो ! मेरे प्यारे मित्रो ! यमुना का किनारा अत्यन्त रमणीय है। कोमल और स्वच्छ बालू अपने खेल की सामग्री है। विकसित होते हुये सरोवर की गन्ध से खिंचे हुये भौंरों और पक्षियों की ध्वनि और प्रतिध्वनि से सुशोभित वृक्ष पक्षियों से युक्त हैं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**अत्र भोक्तव्यमस्माभिर्दिवा रूढं क्षुधार्दिताः ।**
**वत्साः समीपेऽपः पीत्वा चरन्तु शनकैस्तृणम् ॥६॥**

पदच्छेद— अत्र भोक्तव्यम् अस्माभिः दिवा रूढम् क्षुधा अर्दिताः ।
वत्साः समीपे अपः पीत्वा चरन्तु शनकैः तृणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्र | १. | अब यहाँ पर | वत्साः | ८. | बछड़े |
| भोक्तव्यम् | ३. | भोजन कर लेना चाहिये | समीप | ११. | समीप में ही |
| अस्माभिः | २. | हम लोगों को | अपः | ९. | पानी |
| दिवा | ४. | दिन भी | पीत्वा | १०. | पीकर |
| रूढम् | ५. | चढ़ आया है और | चरन्तु | १४. | चरते रहे |
| क्षुधा | ६. | हम भूख से | शनकैः | १२. | धीरे-धीरे |
| अर्दिताः । | ७. | व्याकुल हैं | तृणम् ॥ | १३. | हरी घास को |

श्लोकार्थ—अब यहाँ पर हम लोगों को भोजन कर लेना चाहिये। दिन भी चढ़ आया है और हम भूख से व्याकुल हैं। बछड़े पानी पीकर समीप में ही हरी-हरी घास को चरते रहें ॥

## सप्तमः श्लोकः

तथेति पाययित्वार्भा वत्सानारुध्य शाद्वले ।
मुक्त्वा शिक्यानि बुभुजुः समं भगवता मुदा ॥७॥

पदच्छेद— तथेति पाययित्वा अर्भाः वत्सान् आरुध्य शाद्वले ।
मुक्त्वा शिक्यानि बुभुजुः समम् भगवता मुदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथेति | २. | ठीक है ठीक है कहकर | मुक्त्वा | ८. | खोलकर |
| पाययित्वा | ४. | पानी पिलाकर | शिक्यानि | ७. | अपने-अपने छींके |
| अर्भाः | १. | गोप बालकों ने | बुभुजुः | १२. | खाने लगे |
| वत्सान् | ३. | बछड़ों को | समम् | ११. | साथ |
| आरुध्य | ६. | छोड़ दिया और | भगवता | १० | भगवान् के |
| शाद्वले । | ५. | हरी-हरी घास में | मुदा ॥ | ९. | बड़े प्रेम से |

श्लोकार्थ— गोप बालकों ने ठीक है, ठीक है, कहकर बछड़ों को पानी पिलाकर हरी-हरी घास में छोड़ दिया । और अपने-अपने छींके खोलकर बड़े प्रेम से भगवान् के साथ खाने लगे ॥

## अष्टमः श्लोकः

कृष्णस्य विष्वक् पुरुराजिमण्डलैरभ्याननाः फुल्लदृशो व्रजार्भकाः ।
सहोपविष्टा विपिने विरेजुश्छदा यथाम्भोरुहकर्णिकायाः ॥८॥

पदच्छेद— कृष्णस्य विष्वक् पुरुराजि मण्डलैः अभ्याननाः फुल्लदृशः व्रजार्भकाः ।
सह उपविष्टाः विपिने विरेजुः छदा यथा अम्भोरुह कर्णिकायाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णस्य | १. | श्रीकृष्ण के | सह | ९. | श्रीकृष्ण के साथ |
| विष्वक् | २. | चारों ओर | उपविष्टाः | १०. | बैठे हुये वे इस प्रकार |
| पुरुराजि | ५. | अनेक पंक्तियाँ थीं | विपिने | ८. | उस वन में |
| मण्डलैः | ४. | मण्डलाकार | विरेजुः | ११. | सुशोभित हो रहे थे |
| अभ्याननाः | ६. | उनके मुँह श्रीकृष्ण की ओर थे | छदा | १४. | पंखुड़ियाँ हैं |
| फुल्लदृशः | ७. | आँखें प्रसन्नता से खिली हुई थीं | यथा अम्भोरुह | १२. | जैसे कमल की |
| व्रजार्भकाः । | ३. | व्रज के बालकों की | कर्णिकायाः ॥ | १३. | कर्णिका के चारों ओर |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के चारों ओर व्रज बालकों की मण्डलाकार अनेक पंक्तियाँ थी । उनके मुँह श्रीकृष्ण की ओर थे । आँखें प्रसन्नता से खिली हुईं थीं । उस वन में श्रीकृष्ण के साथ बैठे हुये वे इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे, जैसे कमल की कर्णिका के चारों ओर पंखुड़ियाँ हों ॥

## नवमः श्लोकः

**केचित् पुष्पैर्दलैः केचित् पल्लवैरङ्कुरैः फलैः ।**
**शिग्भिस्त्वग्भिर्दृषद्भिश्च बुभुजुः कृतभाजनाः ॥९॥**

पदच्छेद— केचित् पुष्पैः दलैः केचित् पल्लवैः अङ्कुरैः फलैः ।
शिग्भिः त्वग्भिः दृषद्भिः च बुभुजुः कृत भाजनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| केचित् | १. कोई | | शिग्भिः | ८. छींके |
| पुष्पैः | २. फूल | | त्वग्भिः | ९. छाल |
| दलैः | ३. पत्ते | | दृषद्भिः | ११. पत्थरों के |
| केचित् | ४. कोई-कोई | | च | १०. और |
| पल्लवैः | ५. पल्लवों | | बुभुजुः | १४. भोजन करने लगे |
| अङ्कुरैः | ६. अङ्कुर | | कृत | १३. बनाकर |
| फलैः । | ७. फल | | भाजनाः ॥ | १२. पात्र |

श्लोकार्थ—कोई फूल, पत्ते कोई कोई पल्लवों, अङ्कुर, फल, छींके, छाल और पत्थरों के पात्र बना कर भोजन करने लगे ॥

## दशमः श्लोकः

**सर्वे मिथो दर्शयन्तः स्वस्वभोज्यरुचिं पृथक् ।**
**हसन्तो हासयन्तश्चाभ्यवजह्रुः सहेश्वराः ॥१०॥**

पदच्छेद— सर्वे मिथः दर्शयन्तः स्व-स्व भोज्य रुचिम् पृथक् ।
हसन्तः हासयन्तः च अभ्यवजह्रुः सह ईश्वराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सर्वे | ३. वे सब ग्वाल-बाल | | हसन्तः | ११. स्वयं हँसते तथा |
| मिथः | ४. परस्पर मिलकर | | हासयन्तः | १२. औरों को भी हँसाते हुये |
| दर्शयन्तः | ९. बखान करने लगे | | च | १०. और |
| स्व-स्व | ५. अपनी-अपनी | | अभ्यवजह्रुः | १३. भोजन करने लगे |
| भोज्य | ६. भोजन विषयक | | सह | २. साथ |
| रुचिम् | ७. इच्छा का | | ईश्वराः ॥ | १. श्रीकृष्ण के |
| पृथक् । | ८. अलग अलग | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण के साथ वे सब ग्वाल बाल परस्पर मिलकर अपनी अपनी भोजन विषयक इच्छा का अलग अलग बखान करने लगे और स्वयं हँसते तथा औरों को भी हँसाते हुये भोजन करने लगे ॥

## एकादशः श्लोकः

**बिभ्रद् वेणुं जठरपटयोः शृङ्गवेत्रे च कक्षे**
**वामे पाणौ मसृणकवलं तत्फलान्यङ्गुलीषु ।**
**तिष्ठन् मध्ये स्वपरिसुहृदो हासयन् नर्मभिः स्वैः**
**स्वर्गे लोके मिषति बुभुजे यज्ञभुग् बालकेलिः ॥११॥**

पदच्छेद— बिभ्रद्वेणुम् जठर पटयोः शृङ्ग वेत्रे च कक्षे,
वामे पाणौ मसृण कवलम् तत् फलानि अङ्गुलीषु ।
तिष्ठन् मध्ये स्व परिसुहृदः हासयन् नर्मभिः स्वैः,
स्वर्गे लोके मिषति बुभुजे यज्ञ भुक् बालकेलिः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बिभ्रद् | ४. | खोंस लिया था | तिष्ठन् | १८. | बैठे हुये |
| वेणुम् | १. | उन्होंने मुरली को | मध्ये | १७. | बीच में |
| जठर | २. | कमर के | स्व | १५. | वे अपने |
| पटयोः | ३. | वस्त्र में | परिसुहृदः | १६. | स्वजन ग्वाल बालों के |
| शृङ्ग | ५. | सींग | हासयन् | २१. | सबको हंसाते थे |
| वेत्रे | ७. | बेंत | नर्मभिः | २०. | विनोद भरी बातों से |
| च | ६. | और | स्वैः | १९. | अपनी |
| कक्षे | ८. | बगल में दबा लिये थे । | स्वर्गे | २६. | स्वर्ग |
| वामे | ९. | बायें | लोके | २७. | लोक के देवगण |
| पाणौ | १०. | हाथ में | मिषति | २८. | आश्चर्यचकित हो रहे थे |
| मसृण | ११. | दही-भात का | बुभुजे | २४. | भोजन कर रहे हैं (ऐसी) |
| कवलम् | १२. | ग्रास था । और | यज्ञ | २२. | समस्त यज्ञों के |
| तत् फलानि | १४. | अचार आदि लगा था | भुक् | २३. | भोक्ता भगवान् श्रीकृष्ण |
| अङ्गुलीषु । | १३. | उनकी अंगुलियों में | बालकेलिः ।। | | बाल लीला को देख कर |

श्लोकार्थ—उन्होंने मुरली को कमर के बीच में वस्त्र में खोंस लिया था । सींग और बेंत बगल में दबा लिये थे । बांये हाथ में दही-भात का ग्रास था । और उनकी अंगुलियों में अचार आदि लगा था । वे अपने स्वजन ग्वाल बालों के बीच में बैठे थे । अपनी विनोद भरी बातों से सबको हंसाते थे । समस्त यज्ञों के भोक्ता भगवान् श्रीकृष्ण भोजन कर रहे हैं । ऐसी लीला को देखकर स्वर्गलोक के देवगण आश्चर्यचकित हो रहे थे ।।

## द्वादशः श्लोकः

**भारतैवं वत्सपेषु भुञ्जानेष्वच्युतात्मसु ।**
**वत्सास्त्वन्तर्वने दूरं विविशुस्तृणलोभिताः ॥१२॥**

पदच्छेद— भारत एवम् वत्सपेषु भुञ्जानेषु अच्युत आत्मसु ।
वत्साः तु अन्तः वने दूरम् विविशुः तृण लोभिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भारत | १. | हे भरत वंशशिरोमणि ! | वत्साः | ८. | उनके बछड़े |
| एवम् | २. | इस प्रकार | तु | ७. | तब तक |
| वत्सपेषु | ३. | ग्वाल बाल | अन्तः वने | १०. | घोर जङ्गल में |
| भुञ्जानेषु | ४. | भोजन करते-करते | दूरम् | ११. | बड़ी दूर |
| अच्युत | ५. | भगवान् की लीला में | विविशुः | १२. | निकल गये |
| आत्मसु । | ६. | तन्मय हो गये | तृणलोभिताः ॥ | ९. | हरी घास के लालच में |

श्लोकार्थ—हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ ! इस प्रकार ग्वाल-बाल भोजन करते-करते भगवान् श्रीकृष्ण में तन्मय हो गये । तब तक उनके बछड़े हरी घास के लालच में घोर जङ्गल में बड़ी दूर निकल गये ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**तान् दृष्ट्वा भयसंत्रस्तानूचे कृष्णोऽस्य भीभयम् ।**
**मित्राण्याशान्मा विरमतेहानेष्ये वत्सकानहम् ॥१३॥**

पदच्छेद— तान् दृष्ट्वा भयसंत्रस्तान् ऊचे कृष्णः अस्य भीभयम् ।
मित्राणि आशान्मा विरमत इह आनेष्ये वत्सकान् अहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तान् | ३. | उन ग्वाल-बालों को | मित्राणि | ७. | हे मित्रो ! |
| दृष्ट्वा | ५. | देखकर | आशान्मा | ८. | भोजन करना मत |
| भयसंत्रस्तान् | ४. | भयसे उद्विग्न | विरमत् | ९. | बन्द करो |
| ऊचुः | ६ | कहा कि | इह आनेष्यै | १२. | यहाँ ले आऊँगा |
| कृष्णः अस्य | २. | श्रीकृष्ण ने | वत्सकान् | ११. | बछड़ों को |
| भीभयम् । | १. | भय का नाश करने वाले | अहम् ॥ | १०. | मैं |

श्लोकार्थ—भय का नाश करने वाले श्रीकृष्ण ने उन ग्वाल-बालों को भय से उद्विग्न देखकर कहा कि हे मित्रो ! भोजन करना बन्द मत करो । मैं बछड़ों को यहाँ ले आऊँगा ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

इत्युक्त्वाद्रिदरीकुञ्जगह्वरेष्वात्मवत्सकान् ।
विचिन्वन् भगवान् कृष्णः सपाणिकवलो ययौ ॥१४॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा अद्रि दरीकुञ्ज गह्वरेषु आत्मवत्सकान् ।
विचिन्वन् भगवान् कृष्णः सपाणि कवलः ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इति उक्त्वा | ३. ऐसा कह कर | विचिन्वन् | ९. खोजने के लिये |
| अद्रि | ५. पहाड़ों | भगवान् | १. भगवान् |
| दरीकुञ्ज | ६. गुफाओं, कुञ्जों | कृष्णः | २. श्रीकृष्ण |
| गह्वरेषु | ७. भङ्कर स्थानों में | सपाणिकवलः | ४. हाथ में कौर लिये ही |
| आत्मवत्सकान् । | ८. अपने साथियों के बछड़ों को ययौ ॥ | | १०. प्रस्थान कर दिया |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने ऐसा कह कर हाथ में कौर लिये पहाड़ों, गुफाओं, कुञ्जों और भयंकर स्थानों में अपने साथियों के बछड़ों को खोजने के लिये प्रस्थान किया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

अम्भोजन्मजनिस्तदन्तरगतो मायार्भकस्येशितु-
र्द्रष्टुं मञ्जु महित्वमन्यदपि तद्वत्सानितो वत्सपान् ।
नीत्वान्यत्र कुरूद्वहान्तरदधात् खेऽवस्थितो यः पुरा
दृष्ट्वाघासुरमोक्षणं प्रभवतः प्राप्तः परं विस्मयम् ॥१५॥

पदच्छेद— अम्भः जन्मजनिः तत् अन्तर गतः माया अर्भकस्य ईशितुः द्रष्टुम्
मञ्जु महित्वम् अन्यत् अपि तत् वत्सान् इतः वत्सपान् ।
नीत्वा अन्यत्र कुरूद्वह अन्तर्अदधात् खे अवस्थितः यः पुरा
दृष्ट्वा अघासुर मोक्षणम् प्रभवतः प्राप्तः परम् विस्मयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अम्भः जन्मजनिः | २०. जड़कमल की ही सन्तान हैं | नीत्वा अन्यत्र | १७. अन्यत्र ले जाकर रख दिया और |
| तत् अन्तर गतः | १९. अन्ततः वे | कुरूद्वह | १. हे परीक्षित् |
| माया | ९. उन्होंने माया से | अन्तर्अदधात् | १८. स्वयं अन्तर्ध्यान हो गये |
| अर्भकस्य ईशितुः | १०. मनुष्य बालक बने भगवान् को | खे अवस्थितः | ३. आकाश में उपस्थित थे |
| द्रष्टुम् | १३. देखने की इच्छा से | यः पुरा | २. ब्रह्माजी पहले से ही |
| मञ्जुमहित्वम् | ११. मनोहर महिमामयी | दृष्ट्वा | ६. देखकर |
| अन्यत् | १२. कोई अन्य लीला | अघासुरमोक्षणम् | ५. अघासुर का मोक्ष |
| अपि | १६. भी | प्रभवतः | ४. प्रभु के प्रभाव से |
| तत् वत्सान् | १४. पहले बछड़ों को | प्राप्तः | ८. हुआ |
| इतः वत्सपान् । | १५. फिर ग्वाल-वालों को | परमविस्मयम् ॥ | ७. उन्हें अत्यधिक आश्चर्य |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! ब्रह्माजी पहले से ही आकाश में स्थित थे। प्रभु के प्रभाव से अघासुर का मोक्ष देखकर उन्हें अत्यधिक आश्चर्य हुआ। उन्होंने माया से मनुष्य बालक बने भगवान् श्रीकृष्ण की मनोहरमयी कोई अन्य लीला देखने की इच्छा से पहले बछड़ों को फिर ग्वाल बालों को अन्यत्र ले जाकर रख दिया। और स्वयं अन्तर्ध्यान हो गये। अन्ततः वे जड़ कमल की ही तो सन्तान हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

**ततो वत्सानदृष्ट्वैत्य पुलिनेऽपि च वत्सपान् ।**
**उभावपि वने कृष्णो विचिकाय समन्ततः ॥१६॥**

पदच्छेद— ततः वत्सान् अदृष्ट्वा एत्य पुलिने अपि च वत्सपान् ।
उभौ अपि वने कृष्णः विचिकाय समन्ततः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | इसके बाद | उभौ | ७. | उन दोनों को |
| वत्सान् | २. | बछड़ों को और | अपि | ८. | भी |
| अदृष्ट्वा एत्य | ६. | न पाकर | वने | १०. | वन में |
| पुलिने | ३. | यमुना के किनारे | कृष्णः | ९. | श्रीकृष्ण |
| अपि | ५. | भी | विचिकाय | १२. | खोजने लगे |
| च वत्सपान् । | ४. | ग्वालबालों को | समन्ततः ।। | ११. | चारों ओर |

श्लोकार्थ—इसके बाद बछड़ों को और यमुना के किनारे ग्वाल बालों को भी न पाकर उन दोनों को ही श्रीकृष्ण वन में चारों ओर खोजने लगे ।।

## त्रयोदशः श्लोकः

**क्वाप्यदृष्ट्वान्तर्विपिने वत्सान् पालांश्च विश्ववित् ।**
**सर्वं विधिकृतं कृष्णः सहसावजगाम ह ॥१७॥**

पदच्छेद— क्व अपि अदृष्ट्वा अन्तः विपिने वत्सान् पालान् च विश्वजित् ।
सर्वम् विधि कृतम् कृष्णः सहसा अवजगाम ह ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्व अपि | ६. | कहीं भी | सर्वम् | १०. | यह सब |
| अदृष्ट्वा | ७. | न देखा तब | विधि | ११. | ब्रह्माजी की ही |
| अन्तः विपिने | ५. | वन के अन्दर | कृतम् | १२. | करतूत है |
| वत्सान् | ३. | बछड़ों | कृष्णः | २. | भगवान् श्रीकृष्ण ने जब |
| पालान् च | ४. | और ग्वाल-बालों को | सहसा | ८. | अकस्मात् |
| विश्वजित् । | १. | समस्त विश्व के ज्ञाता | अवजगाम ह ।। | ९. | वे जान गये कि |

श्लोकार्थ—समस्त विश्व के ज्ञाता भगवान् श्रीकृष्ण ने जब बछड़ों और ग्वालबालों को वन के अन्दर न देखा तब अकस्मात् वे जान गये कि यह सब ब्रह्माजी की ही करतूत है ।।

## अष्टादशः श्लोकः

**ततः कृष्णो मुदं कर्तुं तन्मातृणां च कस्य च ।**
**उभयायितमात्मानं चक्रे विश्वकृदीश्वरः ॥१८॥**

पदच्छेद— ततः कृष्णः मुदम् कर्तुम् तत् मा तृणाम् च कस्य च ।
उभय अयितम् आत्मानम् चक्रे विश्वकृत ईश्वरः ।।

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | इसके बाद | उभय | १३. | (ग्वालों और बछड़ों) दोनों ही |
| कृष्णः | ५. | श्रीकृष्ण ने | अर्पितम् | १४. | रूपों में |
| मुदम् | १०. | प्रसन्न | आत्मानम् | १२. | अपने को |
| कर्तुम् | ११. | करने के लिये | चक्रे | १५. | बना लिया |
| तत् | ६. | उन बछड़ों और ग्वालों की | विश्व | २. | समस्त संसार के |
| मातृणाम् च | ७. | माताओं और | कृत | ३. | रचने वाले |
| कस्य च । | ८. | ब्रह्माजी को भी | ईश्वरः ।। | ४. | भगवान् |

श्लोकार्थ—इसके बाद समस्त संसार के रचने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने उन बछड़ों और ग्वालों की माताओं और ब्रह्माजी को भी प्रसन्न करने के लिये अपने को ग्वालों और बछड़ों दोनो ही रूपो में बना लिया ।।

## एकोनविंशः श्लोकः

**यावद् वत्सपवत्सकाल्पकवपुर्यावत् कराङ्घ्र्यादिकं**
**यावद् यष्टिविषाणवेणुदलशिग् यावद् विभूषाम्बरम् ।**
**यावच्छीलगुणाभिधाकृतिवयो यावद् विहारादिकं**
**सर्वं विष्णुमयं गिरोऽङ्गवदजः सर्वस्वरूपो बभौ ॥१९॥**

पदच्छेद— यावत् वत्सपवत्सक अल्पक वपुः यावत् करअङ्घ्रि आदिकम्
यावत् यष्टिविषाणवेणु दलशिक्यावत् विभूषा अम्बरम् ।
यावत् शीलगुण अभिधा आकृति वयः यावत् विहारादिकम्
सर्वम् विष्णुमयम् गिरः अङ्गवद् अजः सर्वस्वरूपः बभौ ।।

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यावत् | २. | जितने थे (और) | यावत् | ८. | जैसे |
| वत्सपवत्सक | १. | वे बालक और बछड़े | शीलगुण | १०. | शील, गुण |
| अल्पकवपुःयावत् | ३. | जितने छोटे-छोटे शरीर थे | अभिधाकृति | ११. | नामरूप आकृति |
| करअङ्घ्रि आदिकम् | ४. | उनके हाथ पैर आदि | वयः यावत् | १२. | तथा अवस्थायें और |
| यावत् | ५. | जैसे-जैसे थे | विहारादिकम् | १३. | खाना-पीना था |
| यष्टि विषाण | ६. | छड़ियाँ सींग | सर्वम्विष्णुमयम् | १६. | यह सम्पूर्ण जगत् विष्णुरूप है |
| वेणुदलशिक्यावत् | ७. | बाँसुरी, पत्ते तथा छींके थे उनके पास | गिरः अङ्गबद | १७. | यह वेदवाणी मूर्तिमती हो गई |
| विभूषाअम्बरम् । | ९. | वस्त्र, आभूषण थे | अजः सर्व स्वरूपःबभौ ।। | १४. १५. | सर्व श्रेष्ठ श्रीकृष्ण उतने ही रूपो में प्रकट हो गये |

श्लोकार्थ—वे बालक और बछड़े जितने थे, और जितने छोटे-छोटे शरीर थे, उनके हाथ पैर आदि जैसे-जैसे थे, छड़ियाँ, सींग, बाँसुरी, पत्ते तथा छींके थे, जैसे वस्त्र और आभूषण थे। शीलगुण, नामरूप, आकृति तथा अवस्थायें और खाना-पीना था, सर्वश्रेष्ठ श्रीकृष्ण उतने ही रूपो में प्रकट हो गये। यह सम्पूर्ण जगत् विष्णुरूप है, यह वेद वाणी मूर्तिमती हो गई।

## विंशः श्लोकः

**स्वयमात्माऽऽत्मगोवत्सान् प्रतिवार्यात्मवत्सपैः ।**
**क्रीडन्नात्मविहारैश्च सर्वात्मा प्राविशद् व्रजम् ॥२०॥**

पदच्छेद— स्वयम् आत्मा आत्मगोवत्सान् प्रतिवार्य आत्मवत्सपैः ।
क्रीडन् आत्मविहारैः च सर्व आत्मा प्राविशत् व्रजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **स्वयम्** | २. | स्वयं ही | क्रीडन् | ११. | अनेक प्रकार के खेल |
| **आत्मा** | ३. | आत्म | आत्म | १०. | अपने साथ ही |
| **आत्म** | ४. | स्वरूप | विहारैः | १२. | खेलते हुये |
| **गोवत्सान्** | ५. | गाय और बछड़े बन कर | च | ९. | और |
| **प्रतिवार्य** | ८. | घेर कर | सर्व आत्मा | १. | सबकी आत्मारूप भगवान् |
| **आत्म** | ६. | आत्मस्वरूप | प्राविशत् | १४. | प्रविष्ट हुये |
| **वत्सपैः ।** | ७. | ग्वालबालों द्वारा उन्हें | व्रजम् ॥ | १३. | व्रज में |

श्लोकार्थ—सबकी आत्मारूप भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं ही आत्मस्वरूप गाय और बछड़े बनकर आत्म स्वरूप ग्वालबालों द्वारा उन्हें घेर कर और अपने साथ ही अनेक प्रकार के खेल खेलते हुये व्रज में प्रविष्ट हुये ॥

## एकविंशः श्लोकः

**तत्तद्वत्सान् पृथङ् नीत्वा तत्तद् गोष्ठे निवेश्य सः ।**
**तत्तदात्माभवद् राजंस्तत्तत्सद्म प्रविष्टवान् ॥२१॥**

पदच्छेद— तत्-तत् वत्सान् पृथक् नीत्वा तत्-तत् गोष्ठे निवेश्य सः ।
तत्-तत् आत्मा अभवत् राजन् तत्-तत् सद्म प्रविष्टवान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तत्-तत्** | २. | उन-उन | तत्-तत् | ९. | उन-उन निर्मित |
| **वत्सान्** | ३. | बछड़ों को | आत्मा | १०. | रूपों को |
| **पृथक्नीत्वा** | ४. | अलग-अलग ले जाकर | अभवत् | ११. | धारण करके |
| **तत् तत्** | ६. | उन्हीं उन्हीं | राजन् | १. | हे परीक्षित्!, जिसके जो बछड़े थे |
| **गोष्ठे** | ७. | गोशालाओं में | तत्-तत् | १२. | उन-उन बालकों के |
| **निवेश्य** | ८. | बाँध दिया | सद्म | १३. | घरों में |
| **सः ।** | ५. | उन्होने | प्रविष्वान् ॥ | १४. | प्रवेश कर गये |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जिसके जो बछड़े थे, उन-उन बछड़ों को अलग-अलग ले जाकर उन्होने उन्हीं-उन्हीं गोशालाओं में बाँध दिया । उन-उन निर्मित रूपों को धारण करके उन-उन बालकों के घरो में प्रवेश कर गये ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**तन्मातरो वेणुरवत्वरोत्थिता उत्थाप्य दोर्भिः परिरभ्य निर्भरम् ।**
**स्नेहस्नुतस्तन्यपयः सुधासवं मत्वा परं ब्रह्म सुतानपाययन् ॥२२॥**

पदच्छेद— तत् मातरः वेणुरवत्वरः उत्थिता उत्थाप्य दोर्भिः परिरभ्य निर्भरम् ।
स्नेहस्नुत स्तन्य पयः सुधा आसवम् मत्वा परम् ब्रह्मसुतान् अपाययन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् मातरः | १. | ग्वालबालों की मातायें | स्नेह | १२. | वात्सल्य स्नेह के कारण |
| वेणुरव | २. | बाँसुरी की तान | स्नुतस्तन्यपयः | १५. | झरता हुआ स्तनों का दूध |
| त्वरा | ३. | सुनते ही जल्दी से | सुधा | १३. | सुधा से भी मधुर |
| उत्थिताः | ४. | दौड़ आयीं | आसवम् | १४. | आसव से भी मादक |
| उत्थाप्य | ६. | बालकरूप कृष्ण को उठाकर | मत्वा | ११. | मानकर |
| दोर्भिः | ५. | हाथों से | परम् ब्रह्म | ९. | परब्रह्म श्रीकृष्ण को |
| परिरभ्य | ८. | हृदय से लगा लिया | सुतान् | १०. | अपना बालक |
| निर्भरम् । | ७. | जोर से | अपाययन् ॥ | १६. | पान कराने लगीं |

श्लोकार्थ--उन ग्वालबालों की मातायें बाँसुरी की तान सुनते ही जल्दी से दौड़ आयीं । हाथों से उठाकर बालकरूप श्रीकृष्ण को जोर से हृदय से लगा लिया । परब्रह्म श्रीकृष्ण को अपना बालक मानकर वात्सल्य स्नेह के कारण सुधा से भी मधुर आसव से भी मादक झरता हुआ स्तनों का दूध पान कराने लगीं ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**ततो नृपोन्मर्दनमज्जलेपनालङ्काररक्षातिलकाशनादिभिः ।**
**संलालितः स्वाचरितैः प्रहर्षयन् सायं गतो यामयमेन माधवः ॥२३॥**

पदच्छेद— ततः नृप उन्मर्दन मज्जलेपन अलङ्कार रक्षातिलक अशन आदिभिः ।
संलालितः स्व आचरितैः प्रहर्षयन् सायम् गतः यामयम् एव माधवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | २. | इस प्रकार श्रीकृष्ण का | संलालितः | ८. | लालन-पालन होता |
| नृप | १. | हे परीक्षित् ! | स्व आचररितैः | १०. | अपने आचरण से |
| उन्मर्दन | ३. | उबटन | प्रहर्षयन् | ११. | माताओं को आनन्दित करते |
| मज्जलेपन | ४. | स्नान चन्दन का लेप | सायम् | १३. | सांयकाल |
| अलङ्कार | ५. | वस्त्र, आभूषण | गतः | १४. | घर वापस लौट आते |
| रक्षातिलक | ६. | काजल के डिठौने | यामयमेन | १२. | प्रतिदिन |
| अशन आदिभिः । | ७. | भोजन आदि से | माधवः ॥ | ९. | और श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार श्रीकृष्ण का उबटन, स्नान, चन्दन का लेप, वस्त्र, आभूषण काजल के डिठौने, भोजन आदि से लालन-पालन होता । और श्रीकृष्ण अपने आचरण से माताओं को आनन्दित करते । तथा प्रतिदिन सांयकाल घर वापस लौट आते ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**गावस्ततो गोष्ठमुपेत्य सत्वरं हुङ्कारघोषैः परिहूतसङ्गतान् ।**
**स्वकान् स्वकान् वत्सतरानपाययन् मुहुर्लिहन्त्यः स्रवदौधसं पयः ॥२४॥**

पदच्छेद— गावः ततः गोष्ठम् उपेत्य सत्वरम् हिङ्कार घोषैः परिहूत सङ्गतान् ।
स्वकान्-स्वकान् वत्सरान् अपाययन् मुहुः लिहन्त्यः स्तवत् औधसम् पयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गावः ततः | १. | तब गौएँ भी | स्वकान् स्वकान् | ८. | अपने-अपने |
| गोष्ठम् | ६. | गौशाला में | वत्सतरान् | ९. | बछड़ों को |
| उपेत्य | ७. | पहुँच जातीं और | अपाययन् | १०. | दूध पिलातीं तथा |
| सत्वरम् | ४. | शीघ्रता पूर्वक | मुहुः लिहन्त्यः | ११. | उन्हें बार-बार चाटतीं |
| हुङ्कारघोषैः | २. | अपनी हुँकार की ध्वनि से | स्रवत् | १४. | बहने लगता |
| परिहूत | ५. | बुलाकर | औधसम् | १२. | अधिकता के कारण थनों से |
| सङ्गतान् । | ३. | अपने बछड़ों को | पयः ॥ | १३. | दूध की धारा |

श्लोकार्थ— तब गौएँ भी अपनी हुँकार की ध्वनि से अपने बछड़ों को शीघ्रता पूर्वक बुलाकर गौशाला में पहुँच जातीं । और अपने-अपने बछड़ों को दूध पिलातीं । तथा अधिकता के कारण थनों से दूध की धारा बहने लगती ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**गोगोपीनां मातृतास्मिन् सर्वा स्नेहर्द्धिकां विना ।**
**पुरोवदास्वपि हरेस्तोकता मायया विना ॥२५॥**

पदच्छेद— गो गोपीनाम् मातृता अस्मिन् सर्वा स्नेह ऋद्धिकां विना ।
पुरः वत् आस्वपि हरेः तोकता मायया विना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गो | २. | गायों और | पुरः | ५. | पहले |
| गोपीनाम् | ३. | ग्वालियों का | वत् | ६. | जैसा ही |
| मातृता | ४. | मातृ भाव | आस्वपि | १०. | इन गायों और ग्वालियों पर भी |
| अस्मिन् | १. | इन | हरेः | ११. | भगवान् का |
| सर्वास्नेह | ७. | सम्पूर्ण स्नेह से युक्त | तोकता | १२. | पुत्रभाव पहले के समान ही था पर |
| ऋद्धिकाम् | ८. | ऐश्वर्य ज्ञान से | मायया | १३. | माया-मोह से |
| विना । | ९. | रहित था | विना ॥ | १४. | रहित था |

श्लोकार्थ—इन गायों और ग्वालियों का मातृ-भाव पहले जैसा ही सम्पूर्ण ऐश्वर्य से रहित था । इन गायों और ग्वालियों पर भी भगवान् का पुत्रभाव पहले के समान ही था । पर माया-मोह से रहित था ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**व्रजौकसां स्वतोकेषु स्नेहवल्ल्याब्दमन्वहम् ।**
**शनैर्निःसीम ववृधे यथा कृष्णे त्वपूर्ववत् ॥२६॥**

पदच्छेद— व्रज ओकसाम् स्वतोकेषु स्नेह वल्ली आ अब्दम् अन्वहम् ।
शनैः निसीम ववृधे यथा कृष्णे तु पूर्ववत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्रज ओकसाम् | ३. | व्रज वासियों की | शनैः | ६. | धीरे-धीरे |
| स्व | १. | अपने-अपने | निःसीम | ८. | निरन्तर |
| तोकेषु | २. | बालकों के प्रति | ववृधे | १०. | बढ़ती ही गई |
| स्नेह | ४. | स्नेह | यथा | १२. | जैसा |
| वल्ली | ५. | लता | कृष्णे | ११. | श्रीकृष्ण में उनका |
| आ अब्दम् | ७. | एक वर्ष तक | तु अपूर्व | १३. | अपूर्व |
| अन्वहम् । | ६. | प्रतिदिन | वत् ॥ | १४. | प्रेम था वैसा बालकों में हो गया |

श्लोकार्थ—अपने-अपने बालकों के प्रति व्रज वासियों की स्नेह लता प्रतिदिन एक वर्ष तक निरन्तर धीरे-धीरे बढ़ती ही गई । श्रीकृष्ण में उनका जैसा अपूर्व प्रेम था वैसा बालकों में हो गया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**इत्थमात्माऽऽत्मनाऽऽत्मानं वत्सपालमिषेण सः ।**
**पालयन् वत्सपो वर्षं चिक्रीडे वनगोष्ठयोः ॥२७॥**

पदच्छेद— इत्थम् आत्मा आत्मना आत्मानम् वत्सपालमिषेण सः ।
पालयन् वत्सपः वर्षम् चिक्रीडे वन गोष्ठयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | १. | इस प्रकार | पालयन् | ६. | पालन करते हुये |
| आत्मा | २. | सर्वात्मा | वत्सपः | ८. | अपने वत्सरूप का |
| आत्मना | ४. | स्वयं ही | वर्षम् | १०. | एक वर्ष तक |
| आत्मानम् | ५. | अपने को | चिक्रीडे | १३. | क्रीडा करते रहे |
| वत्सपाल | ६. | ग्वाल बाल | वन | ११. | वन और |
| मिषेण | ७. | बनाकर | गोष्ठयोः | १२. | गोष्ठ में |
| सः । | ३. | वे श्रीकृष्ण | | | |

श्लोकार्थ—इस प्रकार सर्वात्मा वे श्रीकृष्ण स्वयं ही अपने को ग्वाल-बाल बनाकर अपने वत्सरूप का पालन करते हुये एक वर्ष तक वन और गोष्ठ में क्रीडा करते रहे ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**एकदा चारयन् वत्सान् सरामो वनमाविशत् ।**
**पञ्चषासु त्रियामासु हायनापूरणीष्वजः ॥२८॥**

पदच्छेद— एकदा चारयन् वत्सान् सरामः वनम् आविशत् ।
पञ्चषासु त्रियामासु हायन आपूरणीष्वजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकदा | ५. | एक बार | पञ्चषासु | ३. | पाँच छः |
| चारयन् | ८. | चराते हुये | त्रियामासु | ४. | रातें शेष थीं तब |
| वत्सान् | ७. | बछड़ों को | हायन | १. | एक वर्ष |
| सरामः | ६. | बलराम सहित | आपूरणीषु | २. | पूरा होने में जब |
| वनम् | १०. | वन में | अजः ॥ | ६. | श्रीकृष्ण |
| आविशत् । | ११. | गये | | | |

श्लोकार्थ—एक वर्ष पूर्ण होने में जब पाँच छः रातें शेष थीं, तब एक बार श्रीकृष्ण बलराम जी के सहित बछड़े चराते हुये वन में गये ।

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**ततो विदूराच्चरतो गावो वत्सानुपव्रजम् ।**
**गोवर्धनाद्रिशिरसि चरन्त्यो ददृशुस्तृणम् ॥२९॥**

पदच्छेद— ततः विदुरात् चरतः गावः वत्सान् उपव्रजम् ।
गोवर्धन अद्रि शिरसि चरन्त्यः ददृशुः तृणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | उस समय | गोवर्धन | ३. | गोवर्धन |
| विदूरात् | ६. | बहुत दूर | अद्रि | ४. | पर्वत की |
| चरतः | ११. | घास चरते हुये | शिरसि | ५. | चोटी पर |
| गावः | २. | गौएँ | चरन्त्यः | ७. | चर रही थीं |
| वत्सान् | १०. | अपने बछड़ों को | ददृशुः | १२. | देखा |
| उपव्रजम् । | ८. | उन्होंने व्रज के पास ही | तृणम् ॥ | ६. | घास |

श्लोकार्थ—उस समय गौएँ गोवर्धन पर्वत की चोटी पर घास चर रही थीं । उन्होंने व्रज के पास ही बहुत दूर अपने बछड़ों को घास चरते हुये देखा ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**दृष्ट्वाथ तत्स्नेहवशोऽस्मृतात्मा स गोव्रजोऽत्यात्मपदुर्गमार्गः ।**
**द्विपात् ककुद्ग्रीव उदास्यपुच्छोऽगाद्धुङ्कृतैरास्रुपया जवेन ॥३०॥**

पदच्छेद—दृष्ट्वा अथ तत् स्नेह वशः अस्मृतात्मा सः गोव्रजः अत्यात्मपदुर्गमार्गः ।
द्विपात् ककुद् ग्रीव उदास्यपुच्छः अगात् हुंकृतैः आस्रुपया जवेन ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा अथ | १. तथा बछड़ों को देखते ही | द्विपात् | ११. | दो पैर जैसी लग रही थीं |
| तत् | २. उन गौओं को | ककुद्ग्रीवः | ८. | गर्दन मोड़े हुये |
| स्नेहवशः | ३. वात्सल्य स्नेह हो आया | उदास्यपुच्छः | ६. | ऊपर पूँछ उठाये |
| अस्मृतात्मा | ४. वे सुधबुध खो बैठीं | अगात् | १४. | दौड़ रही थीं |
| सः गोव्रजः | ५. वे गायें | हुंकृतैः | १०. | हूँकार भरती हुई |
| अत्यात्मप | ६. रोकने की परवाह न करके | आस्रुपया | १३. | दूध बहाती हुई |
| दुर्ग मार्गः । | ७. दुर्गममार्ग पार कर गईं | जवेन ॥ | १२. | प्रेम के कारण वेग से |

श्लोकार्थ—तथा बछड़ों को देखते ही उन गौओं का वात्सल्य स्नेह उमड़ आया । वे सुध-बुध खो बैठीं । वे गायें रोकने की परवाह न करके दुर्गममार्ग पार कर गईं । गर्दन मोड़े हुये ऊपर पूँछ उठाये हुंकार भरती हुई दो पैर जैसी लग रही थीं । प्रेम के कारण वेग से दूध बहाती हुई दौड़ रही थीं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**समेत्य गावोऽधो वत्सान्वत्सवत्योऽप्यपाययन् ।**
**गिलन्त्य इव चाङ्गानि लिहन्त्यः स्वौधसं पयः ॥३१॥**

पदच्छेद— समेत्य गावः अधः वत्सान् वत्सवत्यः अपि अपाययन् ।
गिलन्त्य इव च अङ्गानि लिहन्त्यः स्व औधसम् पयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| समेत्य | ५. पहुँच कर उन | गिलन्त्यः | १२. | अपने पेट में रख लेंगी |
| गावः | २. गायें | इव | ११. | मानों वे उन्हें |
| अधः | ४. पर्वत के नीचे | च | ८. | और वे |
| वत्सान् | ६. बछड़ों को | अङ्गानि | ९. | उनके अङ्गों को |
| वत्सवत्यः | १. वे बछड़ों वाली | लिहन्त्यः | १०. | चाटने लगीं |
| अपि | ३. भी | स्व | १३. | उस समय |
| अपाययन् । | ७. दूध पिलाने लगीं | औधसम्पयः ॥ | १४. | उनका दूध बह रहा था |

श्लोकार्थ—वे बछड़ों वाली गायें भी पर्वत के नीचे पहुँच कर उन बछड़ों को दूध पिलाने लगीं । और वे उनके अङ्गों को चाटने लगीं । मानों वे उन्हें अपने पेट में रख लेंगी । उस समय उनका दूध बह रहा था ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**गोपास्तद्रोधनायासमौघ्यलज्जोरुमन्युना ।**
**दुर्गाध्वकृच्छ्रतोऽभ्येत्य गोवत्सैर्ददृशुः सुतान् ॥३२॥**

पदच्छेद— गोपाः तद्रोधन आयास मौघ्यलज्जा उरुमन्युना ।
दुर्ग अध्वकृच्छ्रतः अभ्येत्य गोवत्सैः ददृशुः सुतान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोपाः | १. | गोपों द्वारा | दुर्ग | ७. | किसी प्रकार दुर्गम |
| तद्रोधन | २. | उन्हें रोकने का | अध्व | ८. | मार्ग पार कर सके |
| आयास | ३. | प्रयास व्यर्थ रहा | कृच्छ्रतः | ९. | बड़ी कठिनाई से जब |
| मौघ्य | ४. | तब वे असफलता से | अभ्येत्य | १०. | वे वहाँ पहुँचे तब |
| लज्जया | ५. | लज्जित और | गोवत्सैः | ११ | गायों और बछड़ों के साथ |
| उरुमन्युना । | ६. | अत्यधिक क्रुद्ध हुये | ददृशुः सुतान् ॥ | १२. | अपने पुत्रों को भी देखा |

श्लोकार्थ—गोपों द्वारा उन्हें रोकने का प्रयास व्यर्थ रहा। तब वे असफलता से लज्जित और अत्यधिक क्रुद्ध हुये। किसी प्रकार दुर्गम मार्ग पार कर सके। बड़ी कठिनाई से जब वे वहाँ पहुँचे तब गायों और बछड़ों के साथ अपने पुत्रों को भी देखा ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तदीक्षणोत्प्रेमरसाप्लुताशया जातानुरागा गतमन्यवोऽर्भकान् ।**
**उदुह्य दोर्भिः परिरभ्य मूर्धनि घ्राणैरवापुः परमां मुदं ते ॥३३॥**

पदच्छेद— तत् ईक्षण उत्प्रेमरस आप्लुत आशया जात अनुरागा गतमन्यवः अर्भकान् ।
उदुह्य दोर्भिः परिरभ्य मूर्धनि घ्राणैः अवापुः परमाम् मुदम् ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् ईक्षण | १. | उन बच्चों को देखते ही | उदुह्य | ९. | उठाकर |
| उत्प्रेमरस | ३. | प्रेमरस से | दोर्भिः | ८. | बालको को दोनों हाथों से |
| आप्लुत | ४. | सरा बोर हो गया | परिरभ्य | १०. | हृदय से लगाया और |
| आशया | २. | उनका हृदय | मूर्धनिघ्राणैः | ११. | उनका मस्तक सूंघकर |
| जातअनुरागाः | ६. | अनुराग की बाढ़ आ गई | अवापुः | १४. | प्राप्त किया |
| गतमन्यवः | ७. | उनका क्रोध गायब हो गया | परमाम् मुदम् | १३. | अत्यधिक आनन्द |
| अर्भकान् । | ५. | बालकों के प्रति | ते ॥ | १२. | उन्होंने |

श्लोकार्थ—उन बालकों को देखते ही उनका हृदय प्रेमरस से सराबोर हो गया। बालकों के प्रति अनुराग की बाढ़ आ गई। उनका क्रोध गायब हो गया। बालकों को दोनों हाथों से उठाकर हृदय से लगाया और उनका मस्तक सूंघकर उन्होंने अत्यधिक आनन्द प्राप्त किया ।

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

ततः प्रवयसो गोपास्तोकाश्लेषसुनिर्वृताः ।
कृच्छ्राच्छनैरपगतास्तदनुस्मृत्युदश्रवः ॥३४॥

पदच्छेद— ततः प्रवयसः गोपाः तोक आश्लेष सुनिर्वृताः ।
कृच्छ्रात् शनैः अपगताः तत् अनुस्मृति उदश्रवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ततः | १. तदनन्तर | कृच्छ्रात् | ७. बड़े कष्ट से उन्हें छोड़कर |
| प्रवयसः | २. बूढ़े | शनैः | ८. वे धीरे से |
| गोपाः | ३. गोपों को | अपगताः | ९. हट गये |
| तोक | ४. अपने बालकों के | तत् | १०. उनकी |
| आश्लेषु | ५. आलिंगन से | अनुस्मृति | ११. स्मृति मात्र से |
| सुनिर्वृताः । | ६. अत्यधिक आनन्द हुआ | उदश्रवः ॥ | १२. उनके आँसू बहने लगते थे |

श्लोकार्थ—तदनन्तर बूढ़े गोपों को अपने बालकों के आलिंगन से अत्यधिक आनन्द हुआ । बड़े कष्ट से उन्हें छोड़कर वे धीरे से हट गये । उनकी स्मृति मात्र से उनके आँसू बहने लगते थे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

व्रजस्य रामः प्रेमर्धेर्वीक्ष्यौत्कण्ठ्यमनुक्षणम् ।
मुक्तस्तनेष्वपत्येष्वप्यहेतुविदचिन्तयत् ॥३५॥

पदच्छेद— व्रजस्य रामः प्रेमर्धेः वीक्ष्य औत्कण्ठ्यम् अनुक्षणम् ।
मुक्तः स्तनेषु अपत्येषु अपि हेतुवित् अचिन्तयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्रजस्य | ३. व्रजवासी गोप और गौओं का | मुक्तः | ५. छोड़ देने वाले |
| रामः | १. बलराम जी ने | स्तनेषु | ४. दूध |
| प्रेमर्धेः | ९. प्रेम और | अपत्येषु | ६. बच्चों पर |
| वीक्ष्य | २. देखा कि | अपि | ७. भी |
| औत्कण्ठ्यम् | १०. उत्कण्ठा बढ़ रही है | हेतुवित् | १२. क्योंकि उन्हें इसका कारण नहीं मालूम था |
| अनुक्षणम् । | ८. क्षण प्रतिक्षण | अचिन्तयत् ॥ | ११. तब वे विचार में पड़ गये |

श्लोकार्थ—बलराम जी ने देखा कि व्रजवासी गोप और गौओं का दूध छोड़ देने वाले बालकों पर भी क्षण-प्रतिक्षण प्रेम और उत्कण्ठा बढ़ रही है । तब वे विचार में पड़ गये । क्योंकि उन्हें इसका कारण मालूम नहीं था ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

किमेतदद्भुतमिव वासुदेवेऽखिलात्मनि ।
व्रजस्य सात्मनस्तोकेष्वपूर्वं प्रेम वर्धते ॥३६॥

पदच्छेद— किम् एतद् अद्भुतम् इव वासुदेवे अखिल आत्मनि ।
व्रजस्य स आत्मनः तोकेषु अपूर्वम् प्रेम वर्धते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् एतद् | १. | यह कैसी | व्रजस्य | ७. | व्रजवासियों का और मेरा |
| अद्भुतम् | २. | विचित्र बात है | स आत्मनः | ६. | मेरे सहित |
| इव | ८. | जैसा | तोकेषु | ११. | इन बालकों के प्रति |
| वासुदेवे | ५. | श्रीकृष्ण में | अपूर्वम् | ९. | अपूर्व |
| अखिल | ३. | सम्पूर्ण विश्व के | प्रेम | १०. | प्रेम है वैसा ही |
| आत्मनि । | ४. | आत्मा | वर्धते ॥ | १२. | बढ़ता जा रहा है |

श्लोकार्थ—यह कैसी विचित्र बात है। सम्पूर्ण विश्व की आत्मा श्रीकृष्ण में मेरे सहित व्रजवासियों का और मेरा जैसा अपूर्व प्रेम है, वैसा ही इन बालकों के प्रति बढ़ता जा रहा है।

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

केयं वा कुत आयाता दैवी वा नार्युतासुरी ।
प्रायो मायास्तु मे भर्तुर्नान्या मेऽपि विमोहिनी ॥३७॥

पदच्छेद— केयम् वा कुतः आयाता दैवी वा नारी उत आसुरी ।
प्रायः माया अस्तु मे भर्तुः न अन्या मे अपि विमोहिनी ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| केयम् | १. | यह माया कौन है | प्रायः | १०. | निश्चय ही |
| वा कुतः | २. | अथवा कहाँ से | माया | ९. | यह माया |
| आयाता | ३. | आयी है किसी | अस्तु मे भर्तुः | ११. | मेरे प्रभु की है |
| देवी वा | ४. | देवता की है अथवा | न अन्या | १२. | किसी और की नहीं है |
| नारीउत | ५. | मनुष्य की है या | मे अपि | ७. | अथवा मुझे भी |
| आसुरी । | ६. | असुरों की है | विमोहिनी | ८. | मोहित करने वाली |

श्लोकार्थ—यह माया कौन है। अथवा कहाँ से आयी है। किसी देवता की है अथवा मनुष्य की है या असुरों की है। अथवा मुझे भी मोहित करने वाली यह माया निश्चय ही मेरे प्रभु की है। किसी और की नहीं है।

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**इति सञ्चिन्त्य दाशार्हो वत्सान् सवयसानपि ।**
**सर्वानाचष्ट वैकुण्ठं चक्षुषा वयुनेन सः ॥३८॥**

पदच्छेद— इति सञ्चिन्त्य दाशार्हः वत्सान् सवयसान् अपि ।
सर्वान् आचष्ट वैकुण्ठम् चक्षुषा वयुनेन सः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | ऐसा | सर्वान् | ११. | सबको |
| सञ्चिन्त्य | ३. | विचार करके | आचष्ट | १०. | देखा तब |
| दाशार्हः | १. | बलराम जी ने | वैकुण्ठम् | १२. | श्रीकृष्ण रूप में पाया |
| वत्सान् | ७. | बछड़ों और | चक्षुषा | ५. | दृष्टि से |
| सवयसान् | ८. | ग्वालबालों को | वयुनेन | ४. | ज्ञानमय |
| अपि । | ९. | भी | सः ॥ | ६. | उन |

श्लोकार्थ—बलराम जी ने ऐसा विचार करके ज्ञानमय दृष्टि से उन बछड़ों और ग्वालबालों को भी देखा । तब सबको श्रीकृष्ण रूप में पाया ।

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**नैते सुरेशा ऋषयो न चैते त्वमेव भासीश भिदाश्रयेऽपि ।**
**सर्वं पृथक्त्वं निगमात् कथं वदेत्युक्तेन वृत्तं प्रभुणा बलोऽवैत् ॥३९॥**

पदच्छेद—न एते सुरेशाः ऋषयः न च एते त्वमेव भासि ईश भिदाश्रयेऽपि ।
सर्वम् पृथक् त्वम् निगमात् कथम् वद इति उक्तेन वृत्तम् प्रभुणा बलः अवैत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न एते | २. | ये न तो | सर्वम् | ११. | आप इन सब में |
| सुरेशाः | ३. | देवता हैं | पृथक्त्वम् | १२. | अलग-अलग |
| ऋषयः | ५. | ऋषि ही हैं | निगमात् | ९. | कृपया संक्षेप में |
| न च एते | ४. | और न कोई | कथम् | १३. | क्यों प्रकाशित हो रहे हैं |
| त्वमेवभासि | ८. | आप ही प्रकाशित हैं | वद | १०. | बताइये कि |
| ईश | १. | हे भगवान् ! | इति उक्तेन वृत्तम् | १५. | यह समाचार बताये जाने पर |
| भिदाश्रये | ६. | भिन्न भिन्न रूपों का आश्रय | प्रभुणा | १४. | भगवान् के द्वारा |
| अपि । | ७. | लेने पर भी | बलः अवैत् ॥ | १६. | बलराम जी सब समझ गये |

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! ये तो न देवता हैं । और न कोई ऋषि ही हैं । भिन्न-भिन्न रूपों का आश्रय लेने पर भी आप ही प्रकाशित हैं । कृपया संक्षेप में बताइये कि आप इन सब में अलग-अलग क्यों प्रकाशित हो रहे हैं । भगवान् के द्वारा यह समाचार बताये जाने पर बलराम जी सब समझ गये ।

## चत्वारिंशः श्लोकः

**तावदेत्यात्मभूरात्ममानेन त्रुट्यनेहसा ।**
**पुरोवदब्दं क्रीडन्तं ददृशे सकलं हरिम् ॥४०॥**

पदच्छेद— तावत् एत्य आत्मभूः आत्ममानेन त्रुटि अनेहसा ।
पुरोवत् अब्दम् क्रीडन्तं ददृशे सकलम् हरिम् ॥

शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| तावत् | १. तब-तक | पुरोवत् | ११. पहले की भाँति ही |
| एत्य | २. आकर | अब्दम् | १०. एक साल से |
| आत्मभूः | ३. ब्रह्मा जी के | क्रीडन्तम् | १२. क्रीडा कर रहे हैं |
| आत्ममानेन | ४. अपने कालमान से | ददृशे | ७. उन्होंने देखा कि |
| त्रुटि | ५. एक त्रुटि का | सकलम् | ९. समस्त ग्वाल-बालों के साथ |
| अनेहसा । | ६. समय व्यतीत हुआ था | हरिम् ॥ | ८. भगवान् श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ— तब-तक आकर ब्रह्मा जी के अपने कालमान से एक त्रुटि का समय व्यतीत हुआ था । उन्होंने देखा कि भगवान् श्रीकृष्ण समस्त ग्वाल-बालों के साथ एक साल से पहले की भाँति ही क्रीड़ा कर रहे हैं ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**यावन्तो गोकुले बालाः सवत्साः सर्व एव हि ।**
**मायाशये शयाना मे नाद्यापि पुनरुत्थिताः ॥४१॥**

पदच्छेद— यावन्तः गोकुले बालाः सवत्साः सर्वे एव हि ।
माया शये शयानाः मे न अद्य अपि पुनः उत्थिता ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यावन्तः | २. जितने | माया शये | ८. मायामयी शय्या पर |
| गोकुले | १. गोकुल में | शयानाः | ९. सोते हुये |
| बालाः | ३. ग्वाल बाल और | मे | ७. मेरी |
| सवत्साः | ४. बछड़े थे वे | न अद्य अपि | ११. अभी तक नहीं |
| सर्वे | ५. सब | पुनः | १०. पुनः |
| एव हि । | ६. ही तो | उत्थिताः ॥ | १२. उठे हैं |

श्लोकार्थ— ब्रह्मा जी सोचने लगे कि गोकुल में जितने ग्वाल-बाल और बछड़े थे, वे सब ही तो मेरी मायामयी शय्या पर सोते हुये पुनः अभी तक नहीं उठे हैं ॥

# द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

इत एतेऽत्र कुत्रत्या मन्मायामोहितेतरे ।
तावन्त एव तत्राब्दं क्रीडन्तो विष्णुना समम् ॥४२॥

पदच्छेद— इतः एते अत्र कुत्रत्याः मत् मायामोहित इतरे ।
तावन्तः एव तत्र अब्दम् क्रीडन्तः विष्णुना समम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इतःएते | ४. | ये सब | तावन्तः | ५. | उतने |
| अत्र | ७. | यहाँ पर | एव | ६. | ही |
| कुत्रत्याः | ८. | कहाँ से आ गया | तत्र | ९. | जो यहाँ |
| मन्माया | १. | मेरी माया से | अब्दम् | १०. | एक साल से |
| मोहित | २. | मोहित ग्वालों और बछड़ों के | क्रीडन्तः | १२. | खेल रहे हैं |
| इतरे । | ३. | अतिरिक्त | विष्णुना समम् ॥ | ११. | विष्णु भगवान् के साथ |

श्लोकार्थ—मेरी माया से मोहित ग्वालों और बछड़ों के अतिरिक्त ये सब उतने ही यहाँ पर कहाँ से आ गये । जो यहाँ एक साल से विष्णु भगवान् के साथ खेल रहे हैं ।

# त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

एवमेतेषु भेदेषु चिरं ध्यात्वा स आत्मभूः ।
सत्याः के कतरे नेति ज्ञातुं नेष्टे कथञ्चन ॥४३॥

पदच्छेद— एवम् एतेषु भेदेषु चिरम् ध्यात्वा सः आत्मभूः ।
सत्याः के कतरे नेति ज्ञातुम् नेष्टे कथञ्चन ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस प्रकार | सत्याः | ७. | परन्तु सत्य |
| एतेषु | ३. | इन दोनों के | के कतरे | ८. | कौन हैं और कौन |
| भेदेषु | ४. | भेद को | नेति | ९. | नहीं हैं इस बात को |
| चिरम् | ५. | बहुत देर तक | ज्ञातुम् | ११. | जानने में |
| ध्यात्वा | ६. | विचार किया | नेष्टे | १२. | सफल नहीं हुये |
| सः आत्मभूः । | १. | उन ब्रह्मा जी ने | कथञ्चन ॥ | १०. | किसी प्रकार भी |

श्लोकार्थ—उन ब्रह्मा जी ने इस प्रकार इन दोनों के भेद को बहुत देर तक विचार किया परन्तु सत्य कौन हैं । और कौन नहीं हैं । इस बात को किसी प्रकार भी जानने में सफल नहीं हुये ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**एवं सम्मोहयन् विष्णुं विमोहं विश्वमोहनम् ।**
**स्वयैव माययाजोऽपि स्वयमेव विमोहितः ॥४४॥**

पदच्छेद— एवं सम्मोहयन् विष्णुन् विमोहम् विश्व मोहनम् ।
स्वयैव मायया अजः अपि स्वयम् एव विमोहितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **एवम्** | १. | इस प्रकार | स्वयैव | ९. | अपनो ही |
| **सम्मोहयन्** | ६. | मोहित करने वाले | मायया | १०. | माया ने |
| **विष्णुम्** | ५. | भगवान् को | अजः | ७. | ब्रह्मा जी |
| **विमोहम्** | २. | माया मोह से रहित | अपि | ८. | भी |
| **विश्व** | ३. | विश्व | स्वयम् एव | ११. | स्वयम् ही |
| **मोहनम् ।** | ४. | मोहन | विमोहितः ॥ | १२. | मोहित हो गये - |

श्लोकार्थ—इस प्रकार माया मोह से रहित विश्वमोहन भगवान् को मोहित करने वाले ब्रह्मा जी भी अपनी ही माया से स्वयम् ही मोहित हो गये ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**तम्यां तमोवन्नैहारं खद्योतार्चिरिवाहनि ।**
**महतीतरमायैश्यं निहन्त्यात्मनि युञ्जतः ॥४५॥**

पदच्छेद— तम्याम् तमः वत् नैहारम् खद्योत अर्चिः इव अहनि ।
महती इतर माया ऐश्यम् निहन्ति आत्मनि युञ्जतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तम्याम् तमः** | २. | रात के अन्धकार में | महति | ८. | महापुरुषों पर |
| **वत्** | १. | जैसे | इतर | ७. | जब क्षुद्र पुरुष |
| **नैहारम्** | ३. | कुहरे का और | माया | ९. | माया का |
| **खद्योत** | ५. | जुगनू के | ऐश्यम् निहन्ति | १२. | प्रभाव खो बैठती है |
| **अर्चिः** | ६. | प्रकाश का पता नहीं चलता | आत्मनि | ११. | वह अपना |
| **इव अहनि ।** | ४. | जैसे दिन में | युञ्जतः ॥ | १०. | प्रयोग करते हैं तो |

श्लोकार्थ—जैसे रात के अन्धकार में कुहरे का और जैसे दिन में जुगनू के प्रकाश का पता नहीं चलता है वैसे ही जब क्षुद्र पुरुष महापुरुषों पर माया का प्रयोग करते हैं तो वह माया अपना प्रभाव खो बैठती है ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**तावत् सर्वे वत्सपालाः पश्यतोऽजस्य तत्क्षणात् ।**
**व्यदृश्यन्त घनश्यामाः पीतकौशेयवाससः ॥४६॥**

पदच्छेद— तावत् सर्वे वत्सपालाः पश्यतः अजस्य तत् क्षणात् ।
व्यदृश्यन्त घनश्यामाः पीतकौशेय वाससः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तावत् | १. | तब-तक | व्यदृश्यन्त | १२. | दिखाई पड़ने लगे |
| सर्वे | ५. | सभी | घन | ७. | जलधर के समान |
| वत्सपालाः | ६. | ग्वाल-बाल | श्यामाः | ८. | श्यामवर्ण श्रीकृष्ण के रूप में |
| पश्यतः | ३. | देखते-देखते | पीत | ९. | पीला |
| अजस्य | २. | ब्रह्मा जी के | कौशेय | १०. | रेशमी |
| तत्क्षणात् । | ४. | उसी क्षण | वाससः ॥ | ११. | वस्त्र धारण किये हुये |

श्लोकार्थ—तब-तक ब्रह्मा जी के देखते-देखते उसी क्षण सभी ग्वाल-बाल जलधर के समान श्याम-वर्ण श्रीकृष्ण के रूप में पीला रेशमी वस्त्र धारण किये हुये दिखाई पड़ने लगे ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**चतुर्भुजाः शङ्खचक्रगदाराजीवपाणयः ।**
**किरीटिनः कुण्डलिनो हारिणो वनमालिनः ॥४७॥**

पदच्छेद— चतुर्भुजाः शङ्खचक्रगदा राजीव पाणयः ।
किरीटिनः कुण्डलिनः हारिणः वनमालिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुर्भुजाः | ५. | चतुर्भुज रूप धारी | किरीटिनः | ६. | एवं मुकुट |
| शङ्ख | १. | सब के सब शङ्ख | कुण्डलिनः | ७. | कुण्डल और |
| चक्र गदा | २. | चक्र गदा और | हारिणः | ८. | मनोहर |
| राजीव | ३. | पद्म | वनमालिनः ॥ | ९. | वनमाला से युक्त थे |
| पाणयः । | ४. | हाथों में लिये हुये | | | |

श्लोकार्थ—सब के सब शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म हाथों में लिये हुए चतुर्भुज रूप धारी एवं मुकुट, कुण्डल और मनोहर वनमाला से युक्त थे ।

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**श्रीवत्साङ्गददोरत्नकम्बुकङ्कणपाणयः ।**
**नूपुरैः कटकैर्भाताः कटिसूत्राङ्गुलीयकैः ॥४८॥**

पदच्छेद— श्रीवत्स अङ्गद दोरत्न कम्बु कङ्कण पाणयः ।
नूपुरैः कटकैः भाताः कटिसूत्र अङ्गुलीयकैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रीवत्स | १. | वक्षःस्थल पर श्रीवत्स | नूपुरैः | ७. | पैरों में नूपुर और |
| अङ्गद | २. | बाहों में बाजू बन्द | कटकैः | ८. | कड़े |
| दोरत्न | ४. | रत्नों से जड़े | भाताः | १२. | सुशोभित हो रही थीं |
| कम्बु | ५. | शङ्खाकार | कटि | ९. | कमर में |
| कङ्कण | ६. | कङ्कण | सूत्र | १०. | करधनी |
| पाणयः । | ३. | कलाइयों में | अङ्गुलीयकैः ॥ | ११. | अंगुलियों में अंगूठियाँ |

श्लोकार्थ—उनके वक्षःस्थल पर श्रीवत्स, बाँहों में बाजूबन्द, कलाइयों में रत्नों से जड़े शङ्खाकार कङ्कण पैरों में नूपुर और कड़े, कमर में करधनी, अंगुलियों में अंगूठियाँ सुशोभित हो रही थीं ॥

## एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**आङ्घ्रिमस्तकमापूर्णास्तुलसीनवदामभिः ।**
**कोमलैः सर्वगात्रेषु भूरिपुण्यवदर्पितैः ॥४९॥**

पदच्छेद— आङ्घ्रि मस्तकम् आपूर्णाः तुलसी नवदामभिः ।
कोमलैः सर्व गात्रेषु भूरि पुण्यवत् अर्पितैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आङ्घ्रि | १. | वे नख से | कोमलैः | ५. | कोमल और |
| मस्तकम् | २. | सिख तक | सर्व | ३. | समस्त |
| आपूर्णाः | ९. | धारण किये हुये थे | गात्रेषु | ४. | अङ्गों में |
| तुलसी | ७. | तुलसी की | भूरि | १०. | जो अत्यधिक |
| नव | ६. | नूतन | पुण्यवद् | ११. | पुण्यशाली जनों द्वारा |
| दामभिः । | ८. | मालायें | अर्पितैः ॥ | १२. | अर्पित की गईं थीं |

श्लोकार्थ—वे नख से सिख तक समस्त अङ्गों में कोमल और नूतन तुलसी की मालायें धारण किये हुये थे । जो अत्यधिक पुण्यशाली जनों के द्वारा अर्पित की गईं थीं ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**चन्द्रिकाविशदस्मेरैः सारुणापाङ्गवीक्षितैः ।**
**स्वकार्थानामिव रजः सत्त्वाभ्यां स्रष्टृपालकाः ॥५०॥**

पदच्छेद— चन्द्रिका विशद स्मेरैः सारुण अपाङ्ग वीक्षितैः ।
स्वकार्थानाम् इव रजः सत्त्वाभ्याम् स्रष्टृ पालकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चन्द्रिका | १. वे चाँदनी के समान | | स्वकार्थानाम् | ८. अपने भक्तों के मन में |
| विशद | २. उज्ज्वल | | इव | ७. मानो |
| स्मेरैः | ३. मुसकान और | | रजः | ९. रजोगुण |
| सारुण | ४. रतनारे नेत्रों की | | सत्त्वाभ्याम् | १०. सतोगुण |
| अपाङ्ग | ५. कटाक्षपूर्ण | | स्रष्टृ | ११. उत्पन्न करके उन्हें |
| वीक्षितैः । | ६. चितवन से | | पालकाः ॥ | १२. पूर्णकर रहे हैं |

श्लोकार्थ—वे चाँदनी के समान उज्ज्वल मुसकान और रतनारे नेत्रों की कटाक्षपूर्ण चितवन से मानो अपने भक्तों के मन में रजोगुण और सतोगुण उत्पन्न करके उन्हें पूर्ण कर रहे हैं ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**आत्मादिस्तम्बपर्यन्तैर्मूर्तिमद्भिश्चराचरैः ।**
**नृत्यगीताद्यनेकार्हैः पृथक् पृथगुपासिताः ॥५१॥**

पदच्छेद— आत्मा आदि स्तम्ब पर्यन्तैः मूर्ति मद्भिः चराचरैः ।
नृत्य गीत आदि अनेक अर्हैः पृथक् पृथक् उपासिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आत्मा | १. ब्रह्मा से | | नृत्य | ७. नृत्य |
| आदि | २. लेकर | | गीत | ८. गान |
| स्तम्ब | ३. तृण | | आदि | ९. आदि |
| पर्यन्तैः | ४. पर्यन्त सभी | | अनेक अर्हैः | १०. अनेक प्रकार से |
| मूर्तिमद्भिः | ६. मूर्तिमान् होकर | | पृथक् पृथक् | ११. अलग-अलग |
| चराचरैः । | ५. चराचर जीव | | उपासिताः ॥ | १२. भगवान् की पूजा कर रहे हैं |

श्लोकार्थ—ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त सभी चराचर जीव मूर्तिमान्होकर नृत्य गान आदि अनेक प्रकार से अलग-अगल भगवान् की पूजा कर रहे हैं ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

अणिमाद्यैर्महिमभिरजाद्याभिर्विभूतिभिः ।
चतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः परीता महदादिभिः ॥५२॥

पदच्छेद— अणिमा आद्यैः महिमभिः अजा आद्याभिः विभूतिभिः ।
चतुः विंशतिभिः तत्त्वैः परीताः महद् आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अणिमा | १. | उन्हें अणिमा | चतुः विंशतिभिः | ९. | चौबीस |
| आद्यैः | ३. | आदि सिद्धियाँ | तत्त्वैः | १०. | तत्त्व |
| महिमभिः | २. | महिमा | परीताः | ११. | चारों ओर से घेरे हुये हैं |
| अजा | ४. | माया विद्या | महद् | ७. | महत्तत्त्व |
| आदिभिः | ५. | आदि | आदिभिः ॥ | ८. | आदि |
| विभूतिभिः । | ६. | विभूतियाँ और | | | |

श्लोकार्थ—उन्हें अणिमा महिमा आदि सिद्धियाँ, माया, विद्या आदि विभूतियाँ और महत्तत्त्व आदि चौबीसों तत्त्व चारों ओर से घेरे हुये हैं ॥

## त्रिपञ्चाशः श्लोकः

कालस्वभावसंस्कारकामकर्मगुणादिभिः ।
स्वमहिध्वस्तमहिभिर्मूर्तिमद्भिरुपासिताः ॥५३॥

पदच्छेद— काल स्वभाव संस्कार काम कर्मगुण आदिभिः ।
स्वमहि ध्वस्त महिभिः मूर्तिमद्भिः उपासिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काल | १. | काल | स्वमहि | ९. | अपनी महत्ता |
| स्वभाव | २. | स्वभाव | ध्वस्त | १०. | खो बैठे थे |
| संस्कार | ३. | संस्कार | महिभिः | ८. | उनकी महत्ता के सामने |
| काम कर्म गुण | ४. | कामना, कर्म, गुण | मूर्तिमद्भिः | ६. | मूर्तिमान् होकर |
| आदिभिः । | ५. | आदि सभी | उपासिता ॥ | ७. | भगवान् की उपासना करते हुये |

श्लोकार्थ- काल, स्वभाव, संस्कार, कामना, कर्म और गुण आदि सभी मूर्तिमान् होकर भगवान् की उपासना करते हुये उनकी महत्ता के सामने अपनी महत्ता खो बैठे थे ॥

## चतुःपञ्चाशः श्लोकः

**सत्यज्ञानानन्तानन्दमात्रैकरसमूर्तयः ।**
**अस्पृष्टभूरिमाहात्म्या अपि ह्युपनिषद्दृशाम् ॥५४॥**

पदच्छेद— सत्य ज्ञान अनन्त आनन्द-मात्र एकरस मूर्तयः ।
अस्पृष्ट भूरि माहात्म्याः अपि हि उपनिषद् दृशाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्य | १. | वे सभी सत्य | अस्पृष्ट | १२. | स्पर्श नहीं कर सकती |
| ज्ञान | २. | ज्ञान | भूरि | १०. | उनकी अनन्त |
| अनन्त | ३. | अनन्त | माहात्म्या | ११. | महिमा का |
| आनन्द मात्र | ४. | आनन्द स्वरूप | अपि हि | ९. | भी |
| एकरस | ५. | एक रस | उपनिषद् | ७. | उपनिषद् |
| मूर्तयः । | ६. | रूप हैं | दृशाम् ॥ | ८. | दर्शी ज्ञानियों की दृष्टि |

श्लोकार्थ—वे सभी सत्य, ज्ञान, अनन्त, आनन्द स्वरूप हैं । उपनिषद् दर्शी ज्ञानियों की दृष्टि भी उनकी अनन्त महिमा का स्पर्श नहीं कर सकती ॥

## पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

**एवं सकृद् ददर्शाजः परब्रह्मात्मनोऽखिलान् ।**
**यस्य भासा सर्वमिदं विभाति सचराचरम् ॥५५॥**

पदच्छेद— एवम् सकृत् ददर्श अजः परब्रह्म आत्मनः अखिलान् ।
यस्य भासा सर्वम् इदम् विभाति सचराचरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | यस्य | ७. | जिनके |
| सकृत् | ३. | एक साथ ही | भासा | ८. | प्रकाश से |
| ददर्श | ४. | देखा कि वे | सर्वम् | १०. | सारा |
| अजः | २. | ब्रह्मा जी ने | इदम् | ९. | यह |
| परब्रह्म आत्मनः | ६. | उन परब्रह्म के स्वरूप हैं | विभाति | १२. | प्रकाशित हो रहा है |
| अखिलान् । | ५. | सबके-सब | सचराचरम् ॥ | ११. | चराचर जगत् |

श्लोकार्थ—इस प्रकार ब्रह्मा जी ने एक साथ ही देखा कि वे सबके सब उन परब्रह्म के स्वरूप हैं । जिनके प्रकाश से यह चराचर जगत् प्रकाशित हो रहा है ॥

## षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

ततोऽतिकुतुकोद्वृत्तस्तिमितैकादशेन्द्रियः ।
तद्धाम्नाभूदजस्तूष्णीं पूर्देव्यन्तीव पुत्रिका ॥५६॥

पदच्छेद— ततः अति कुतुक उद्वृत्त स्तिमित एकादश इन्द्रियः ।
तत् धाम्ना अभूत् अजः तूष्णीम् पूर्देवी अन्ति इव पुत्रिका ॥

| शब्दार्थ—ततः | १. | तब | तत्धाम्ना | ७. | भगवान् के तेज से |
|---|---|---|---|---|---|
| अतिकुतुक | २. | अत्यन्त आश्चर्य से | अभूत् | ९. | हुये |
| उद्वृत्त | ३. | दृष्टि लौटाकर (ब्रह्माजी की) | अजः तूष्णीम् | ८. | ब्रह्माजी ऐसे चुप |
| स्तिमित | ६. | स्तब्ध रह गयीं | पूर्देवी अन्ति | ११. | व्रज की अधिष्ठात्री देवी के पास |
| एकादश | ४. | ग्यारहों | इव | १०. | मानों |
| इन्द्रियः । | ५. | इन्द्रियां | पुत्रिका ॥ | १२. | एक पुतली खड़ी हो |

श्लोकार्थ—तब अत्यन्त आश्चर्य से दृष्टि लौटाकर ब्रह्माजी की ग्यारहों इन्द्रियाँ स्तब्ध रह गयीं। भगवान् के तेज से ब्रह्माजी ऐसे चुप हुये मानों व्रज की अधिष्ठात्री देवी के पास एक पुतली खड़ी हो ॥

## सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

इतीरेशेऽतर्क्ये निजमहिमनि स्वप्रमितिके
परत्राजातोऽतन्निरसनमुखब्रह्मकमितौ ।
अनीशेऽपि द्रष्टुं किमिदमिति वा मुह्यति सति
चच्छादाजो ज्ञात्वा सपदि परमोऽजाजवनिकाम् ॥५७॥

पदच्छेद-- इतिइरेशे अतर्क्ये निजमहिमनि स्वप्रमितिके
परत्र अजातः अतत् निरसन् मुखी ब्रह्मकमितौ ।
अनीशे अपि द्रष्टुम् किम् इदम् इति वा मुह्यति सति
चच्छाद् अजः ज्ञात्वा सपदि परम अजा जवनिकाम् ॥

| शब्दार्थ—इतिइरेशे | ८. | अतः ब्रह्माजी के | अनीशे अपि | १३. | असमर्थ होने पर भी |
|---|---|---|---|---|---|
| अतर्क्ये | १. | तर्क से भी परे | द्रष्टुम् | १२. | उनके दर्शन में |
| निजमहिमनि | २. | अपनी महिमा में स्थित | किम् इदम् | ९. | यह क्या है |
| स्वप्रमितिके | ३. | स्वयं प्रकाश | इति वा | १०. | इस प्रकार |
| परत्र अजातः | ४. | माया से परे | मुह्यति सति | ११. | मोहित हो जाने तथा |
| अतत् निरसन | ६. | उससे भिन्न के | चच्छाद अजः ज्ञात्वा | १४. | ब्रह्माजी को चञ्चल जानकर |
| मुखी | ७. | निषेध रूप में वर्णन करते हैं | सपदि परमः अजः | १५ | तत्काल श्रीकृष्ण ने |
| ब्रह्मकमितौ । | ५. | आनन्द रूप ब्रह्म का वेद भी | जवनिकाम्। | १६. | माया का पर्दा हटा दिया |

श्लोकार्थ—तर्क से भी परे अपनी महिमा में स्थित स्वयं प्रकाश, माया से परे आनन्द रूप ब्रह्मका वेद भी उससे भिन्न के निषेध रूप में वर्णन करते हैं। अतः ब्रह्माजी के यह क्या है। इस प्रकार मोहित हो जाने पर तथा उनके दर्शन में असमर्थ होने पर भी ब्रह्माजी को चञ्चल जानकर तत्काल श्रीकृष्ण ने माया का पर्दा हटा दिया।

# अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**ततोऽर्वाक् प्रतिलब्धाक्षः कः परेतवदुत्थितः ।**
**कृच्छ्रादुन्मील्य वै दृष्टीराचष्टेदं सहात्मना ॥५८॥**

पदच्छेद— ततः अर्वाक् प्रतिलब्ध अक्षः कः परेत वत् उत्थितः ।
कृच्छ्रात् उन्मील्य वै दृष्टीः आचष्ट इदम् सह आत्मना ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ततः | १. तब | कृच्छ्रात् | ८. बड़े कष्ट से |
| अर्वाक् | ३. बाह्य | उन्मील्य | १०. खोलीं तब उन्हें |
| प्रतिलब्ध | ५. प्राप्त हुआ कि | वै दृष्टीः | ९. जब उन्होंने अपनी आँखें |
| अक्षः | ४. ज्ञान | आचष्ट | १४. बोध हुआ |
| कः | २. ब्रह्माजी को | इदम् | ११. इस संसार के |
| परेतवत् | ६. वे मानों मर कर | सह | १२. सहित |
| उत्थितः । | ७. फिर जी उठे | आत्मनः ॥ | १३. अपना |

श्लोकार्थ—तब ब्रह्मा जी को बाह्य ज्ञान प्राप्त हुआ कि वे मानों मरकर फिर जी उठे हों । बड़े कष्ट से जब उन्होंने अपनी आँखें खोलीं तब उन्हें इस संसार के सहित अपना बोध हुआ ॥

# एकोनषष्टितमः श्लोकः

**सपद्येवाभितः पश्यन् दिशोऽपश्यत् पुरः स्थितम् ।**
**वृन्दावनं जनाजीव्यद्रुमाकीर्णं समाप्रियम् ॥५९॥**

पदच्छेद— सपदि एव अभितः पश्यन् दिशः अपश्यत् पुरः स्थितम् ।
वृन्दावनम् जन आजीव्य द्रुम आकीर्णम् समा प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सपदि एव | ४. शीघ्र ही | वृन्दावनम् | ६. वृन्दावन |
| अभितः | १. चारों ओर | जन | ८. वह जीवों को |
| पश्यन् | २. देखने पर | आजीव्य | ९. जीवन देने वाला और |
| दिशः | ३. दिशायें और | द्रुम आकीर्णम् | १०. वृक्षों से घिरा हुआ है |
| अपश्यत् | ७. दिखाई पड़ा | समा | ११. जो सबको समान रूप से |
| पुरः स्थितम् । | ५. फिर सामने स्थित | प्रियम् ॥ | १२. प्रिय है |

श्लोकार्थ—चारों ओर देखने पर दिशायें और फिर शीघ्र ही सामने स्थित वृन्दावन दिखाई पड़ा । जो जीवों को जीवन देने वाला और वृक्षों से घिरा हुआ है । जो सबको समान रूप से प्रिय है ॥

## षष्टितमः श्लोकः

**यत्र नैसर्गदुर्वैराः सहासन् नृमृगादयः ।**
**मित्राणीवाजितावासद्रुतरुट्तर्षकादिकम् ॥६०॥**

पदच्छेद— यत्र नैसर्ग दुर्वैराः सह आसन् नृमृग आदयः ।
मित्राणि इव अजित आवास द्रुतरुट्तर्षक आदिकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत्र | १. | जहाँ | मित्राणि इव | ५. | मित्रों के समान |
| नैसर्ग | २. | स्वभाव से ही | अजित | ८. | वृन्दावन |
| दुर्वैराः | ३. | दुस्त्यज वैर रखने वाले | आवास | ९. | धाम में |
| सह | ६. | साथ-साथ | द्रुतरुट् | १०. | क्रोध एवम् |
| आसन् | ७. | रहते हैं । ऐसे | तर्षक | ११. | तृष्णा |
| नृमृग आदयः । | ४. | मनुष्य, पशु, पक्षी आदि | आदिकम् ॥ | १२. | आदि दोष प्रवेश नहीं कर सकते हैं |

श्लोकार्थ—जहाँ पर स्वभाव से ही दुस्त्यज वैर रखने वाले मनुष्य, पशु, पक्षी आदि मित्रों के समान साथ-साथ रहते हैं । ऐसे वृन्दावन धाम में क्रोध एवम् तृष्णा आदि दोष प्रवेश नहीं कर सकते हैं ॥

## एकषष्टितमः श्लोकः

**तत्रोद्वहत् पशुपवंशशिशुत्वनाट्यं ब्रह्माद्वयं परमनन्तमगाधबोधम् ।**
**वत्सान् सखीनिव पुरा परितो विचिन्वदेकं सपाणिकवलं परमेष्ठ्यचष्ट ॥६१॥**

पदच्छेद—तत्र उद्वहत् पशुपवंश शिशुत्वनाट्यम् ब्रह्म अद्वयम् परम् अनन्तम् अगाध बोधम् ।
वत्सान् सखीन् इव पुरा परितः विचिन्वत् एकम् सपाणि कवलम् परमेष्ठी अचष्ट ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | २. | वहाँ | वत्सान् | १३. | बछड़ों को (खोज रहा है) |
| उद्वहत् | १५. | लिये हुये | सखीन् | ८. | उनके सखा हैं |
| पशुपवंश | ४. | गोपवंश के | इवपुरा | १६. | वे पहले के समान (ब्रह्मा जी को खोज रहा है) |
| शिशुत्व | ५. | बालक का सा | परितः | १०. | इधर-उधर |
| नाट्यम् | ६. | नाटक कर रहा है | विचिन्वत् | ११. | घूम रहा है |
| ब्रह्म अद्वयम् परम् | ३. | अद्वितीय परब्रह्म | एकम् | ७. | एक होने पर भी |
| अनन्तम् | ९. | अनन्त होने पर भी वह | सपाणि कवलम् | १४. | हाथ में कौर |
| अगाधबोधम् । | १२. | उनका ज्ञान अगाध होने पर भी | परमेष्ठी अचष्ट ॥ | १. | ब्रह्मा जी ने देखा कि |

श्लोकार्थ—ब्रह्मा जी ने देखा कि वहाँ अद्वितीय परब्रह्म गोपवंश के बालकों का सा नाटक कर रहा है । एक होने पर भी उनके सखा हैं । अनन्त होने पर भी वह इधर-उधर घूम रहा है । उनका ज्ञान अगाध होने पर भी वह बछड़ों को खोज रहा है । हाथ में कौर लिये हुये वह पहले के समान ब्रह्मा जी को खोज रहा है ।

## द्विषष्टितमः श्लोकः

**दृष्ट्वा त्वरेण निजधोरणतोऽवतीर्य पृथ्व्यां वपुः कनकदण्डमिवाभिपात्य ।**
**स्पृष्ट्वा चतुर्मुकुटकोटिभिरङ्घ्रियुग्मं नत्वा मुदश्रुसुजलैरकृताभिषेकम् ॥६२॥**

पदच्छेद—दृष्ट्वा त्वरेण निजधोरणतः अवतीर्य पृथ्व्याम् वपुःकनक दण्डम् इव अभिपात्य ।
स्पृष्ट्वा चतुः मुकुट कोटिभिः अङ्घ्रियुग्मम् नत्वा मुद् अश्रु सुजलैः अकृत अभिषेकम् ॥

शब्दार्थ –

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | १. भगवान् को देखते ही | स्पृष्ट्वा | १२. स्पर्श करके उन्हें |
| त्वरेण | ३. शीघ्रता पूर्वक | चतुः मुकुट | ९. अपने चारों मुकुटों के |
| निजधोरणतः | २. ब्रह्मा जी अपने वाहन हंस पर से | कोटिभिः | १०. अग्रभाग से |
| अवतीर्य | ४. कूद पड़े | अङ्घ्रियुग्मम् | ११. भगवान् के दोनों चरण कमलों का |
| पृथ्व्याम् | ६. पृथ्वी पर | नत्वा | १३. नमस्कार किया और |
| वपुः कनक | ५. सोने के समान चमकते हुये अपने शरीर से | मुद् अश्रु | १४. आनन्द के आँसुओं के |
| दण्डम् इव | ७. दण्ड के समान | सुजलैः | १५. जल से (उनका) |
| अभिपात्य । | ८. गिर पड़े उन्होंने | अकृत अभिषेकम् ॥ | १६. अभिषेक कर दिया |

श्लोकार्थ—भगवान् को देखते ही ब्रह्मा जी अपने वाहन हंस पर से कूद पड़े । सोने के समान चमकते हुये अपने शरीर से पृथ्वी पर दण्ड के समान गिर पड़े । उन्होंने अपने चारों मुकुटों के अग्रभाग से भगवान् के दोनों चरण कमलों का स्पर्श करके उन्हें नमस्कार किया । और आनन्द के आँसुओं के जल से उनका अभिषेक कर दिया ॥

## त्रिषष्टितमः श्लोकः

**उत्थायोत्थाय कृष्णस्य चिरस्य पादयोः पतन् ।**
**आस्ते महित्वं प्राग्दृष्टं स्मृत्वा स्मृत्वा पुनः पुनः ॥६३॥**

पदच्छेद— उत्थाय उत्थाय कृष्णस्य चिरस्य पादयोः पतन् ।
आस्ते महित्वम् प्राक् दृष्टम् स्मृत्वा स्मृत्वा पुनः पुनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्थाय | ७. उठ | आस्ते | १२. वहीं पड़े रहते थे |
| उत्थाय | ८. उठकर | महित्वम् | ४. महिमा का |
| कृष्णस्य | १. वे श्रीकृष्ण की | प्राक् | २. पहले |
| चिरस्य | ९. बहुत देर तक | दृष्टम् | ३. देखी हुई |
| पादयोः | १०. उनके चरणों पर | स्मृत्वा स्मृत्वा | ६. स्मरण करके |
| पतन् । | ११. गिरकर | पुनःपुनः ॥ | ५. बार बार |

श्लोकार्थ—वे श्रीकृष्ण की पहले देखी हुई महिमा का बार-बार स्मरण करके उठ-उठकर बहुत देर तक उनके चरणों पर गिर कर वहीं पड़े रहते थे ॥

# चतुःषष्टितमः श्लोकः

**शनैरथोत्थाय विमृज्य लोचने मुकुन्दमुद्वीक्ष्य विनम्रकन्धरः ।**
**कृताञ्जलिः प्रश्रयवान् समाहितः सवेपथुर्गद्गदयैलतेलया ॥६४॥**

पदच्छेद —

शनैः अथ उत्थाय विमृज्य लोचने मुकुन्दम् उद्वीक्ष्य विनम्र कन्धरः ।
कृत अञ्जलिः प्रश्रयवान् समाहितः सवेपथुः गद्गदया ऐलत इलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शनैः | २. धीरे से | कृत | १२. | बाँधकर और |
| अथ | १. फिर | अञ्जलिः | ११. | अञ्जलि |
| उत्थाय | ३. उठकर | प्रश्रयवान् | १०. | बड़ी नम्रता से |
| विमृज्य लोचने | ४. आँसू पोंछे (तथा) | समाहितः | १३. | एकाग्रता के साथ |
| मुकुन्दम् | ५. भगवान् को | सवेपथुः | ६. | वे काँपने लगे (और) |
| उद्वीक्ष्य | ६. देखकर | गद्गदया | १४. | गद्गद |
| विनम्र | ८. झुक गया | ऐलत | १६. | स्तुति करने लगे । |
| कन्धरः । | ७. उनका मस्तक | इलया ॥ | १५. | वाणी से |

श्लोकार्थ—फिर धीरे से उठकर आँसू पोंछे । तथा भगवान् को देखकर उनका मस्तक झुक गया । वे काँपने लगे । और बड़ी नम्रता से अञ्जलि बाँधकर और गद्-गद् वाणी से स्तुति करने लगे ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे**
**त्रयोदशः अध्यायः ॥ १३ ॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### चतुर्दशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

ब्रह्मोवाच—नौमीड्य तेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय।
वन्यस्रजे कवलवेत्रविषाणवेणुलक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ॥१॥

पदच्छेद—
नौमि ईड्य ते अभ्रवपुषे तडित् अम्बराय,
गुञ्जा अवतंस परिपिच्छ लसत् मुखाय।
वन्य स्रजे कवल वेत्र विषाण वेणु,
लक्ष्मश्रिये मृदु पदे पशुप अङ्गजाय ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नौमि | ३. | नमस्कार है | वन्य | १४. | (वक्षःस्थल पर) वन |
| ईड्य | १. | हे स्तुत्य प्रभो ! | स्रजे | १५. | माला |
| ते | २. | आपको | कवल | १६. | हथेली में दही भात का कौर |
| अभ्र | ७. | मेघ के समान है | वेत्र | १७. | बगल में बेंत |
| वपुषे | ६. | आपका शरीर | विषाण | १८. | सींग और |
| तडित् | ९. | बिजली के समान है | वेणु | २०. | बाँसुरी कमर में है |
| अम्बराय | ८. | आपके पीताम्बर | लक्ष्मश्रिये | १९. | आपकी पहचान बताने वाली |
| गुञ्जा अवतंस | १०. | घुंघची की माला (तथा) | मृदु | २२. | बड़े ही कोमल हैं |
| परिपिच्छ | ११. | मोर पंख से | पदे | २१. | आपके चरण |
| लसत् | १२. | सुशोभित (आपकी) | पशुप | ४. | हे नन्दबाबा के |
| मुखाय। | १३. | मुख आकृति है (और) | अङ्गजाय ॥ | ५. | पुत्र श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे स्तुत्य प्रभो ! आपको नमस्कार है। हे नन्द बाबा के पुत्र श्रीकृष्ण ! आपका शरीर मेघ के समान है। आपका पीताम्बर बिजली के समान हैं। घुंघची की माला तथा मोर पंख से सुशोभित आपकी मुखआकृति है। और वक्षः स्थल पर वन माला, हथेली में दही भात का कौर, बगल में बेंत, सींग और आपकी पहचान बताने वाली बाँसुरी कमर में है। आपके चरण बड़े ही कोमल हैं ॥

## द्वितीयः श्लोकः

**अस्यापि देव वपुषो मदनुग्रहस्य स्वेच्छामयस्य न तु भूतमयस्य कोऽपि ।**
**नेशे महि त्ववसितुं मनसाऽन्तरेण साक्षात्तवैव किमुतात्मसुखानुभूतेः ॥२॥**

पदच्छेद—अस्य अपि देव वपुषः मत् अनुग्रहस्य स्वेच्छामयस्य न तु भूतमयस्य कः अपि ।
नेशे महि तु अवसितुम् मनसा अन्तरेण साक्षात् तव एव किम् उत आत्मसुख अनुभूतेः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अस्य अपि | २. | आपका यह | नेशे | १२. | समर्थ नहीं है |
| देव | १. | हे स्वयं प्रकाश परमात्मन् ! | महि तु | १०. | आपकी महिमा को |
| वपुषः | ३. | शरीर धारण करना | अवसितुम् | ११. | जानने में |
| मत् अनुग्रहस्य | ४. | मुझ पर आपकी कृपा है | मनसा अन्तरेण | ९. | अन्तर् मन के द्वारा |
| स्वेच्छामयस्य | ५. | यह आपका कामरूप शरीर | साक्षात् | १५ | हे स्वयं प्रकाश ! प्रभो |
| न तु | ७. | नहीं है | तवएवकिम्उत | १६. | आपके बारे में क्या कहा जाय |
| भूतमयस्य | ६. | पाञ्चभौतिक | आत्मसुख | १३. | आमानन्द की |
| कः अपि । | ८. | कोई भी | अनुभूतेः ॥ | १४. | अनुभूतस्वरूप |

श्लोकार्थ—हे स्वयं प्रकाश परमात्मन् ! आपका यह शरीर धारण करना मुझ पर आपकी कृपा है । यह आपका कामरूप शरीर पाञ्चभौतिक नहीं है । कोई भी अन्तर् मन के द्वारा आपकी महिमा को जानने में समर्थ नहीं है । आत्मानन्द की अनुभूतस्वरूप हे स्वयं प्रकाश प्रभो ! आपके बारे में क्या कहा जाय ॥

## तृतीयः श्लोकः

**ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव**
**जीवन्ति सन्मुखरितां भवदीयवार्ताम् ।**
**स्थाने स्थिताः श्रुतिगतां तनुवाङ्मनोभि-**
**र्ये प्रायशोऽजित जितोऽप्यसि तैस्त्रिलोक्याम् ॥३॥**

पदच्छेद—ज्ञाने प्रयासम् उदपास्य नमन्तः एव जीवन्ति सन्मुखरिताम् भवदीय वार्ताम् ।
स्थाने स्थिताः श्रुतिगताम् तनुवाङ्नोभिर्ये प्रायशः अजितजितः अपि असितैः त्रिलोक्याम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञाने | १. | जो ज्ञान के लिये | स्थानेस्थिताः | ७. | उनके पास रह कर |
| प्रयासम् | ३. | प्रयत्न | श्रुतिगताम् | ८. | सुनने को मिलती है |
| उदपास्य | २. | न करके | तनुवाङ्नोभिर्ये | १०. | शरीर वाणी और मन से |
| नमन्तः | ११. | विनयावनत होकर | प्रायशः | ९. | प्रायः |
| एव जीवन्ति | १२. | जीवन धारण करते हैं | अजितजितः | १५. | हे अजेय आप जीत लिये |
| सन्मुखरिताम् | ४. | सन्तों के मुख से कही हुई | अपि असि | १६. | जाते हैं |
| भवदीय | ५. | आपकी | तैः | १३. | उनके द्वारा |
| वार्ताम् । | ६. | कथा का जो | त्रिलोक्याम् ॥ | १४. | तीनों लोकों में |

श्लोकार्थ—जो ज्ञान के लिये प्रयत्न न करके सन्तों के मुख से कही हुई आपकी कथा को जो उनके पास रह कर सुनने को मिलती है, प्रायः शरीर, वाणी और मन से विनयावत होकर जीवन धारण करते हैं । उनके द्वारा तीनों लोकों में हे अजेय ! आप जीत लिये जाते है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**श्रेयः स्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये ।**
**तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनाम् ॥४॥**

पदच्छेद— श्रेयः स्रुतिम् भक्तिम् उदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवल बोधलब्धये ।
तेषाम् असौ क्लेशलः एव शिष्यते न अन्यत् यथा स्थूल तुष अवघातिनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| श्रेयः | ३. सब प्रकार के कल्याण का | तेषाम् असौ | ९. | उन्हें उसी प्रकार यह |
| स्रुतिम् | ४. मूलस्रोत है | क्लेशल एव | १०. | कष्ट ही |
| भक्तिम् | २. भक्ति | शिष्यते | ११. | प्राप्त होता है |
| उदस्य | ५. उसे छोड़कर | न अन्यत् | १२. | और कुछ नहीं |
| ते विभो | १. हे भगवन् ! आपकी | यथा | १३. | जैसे |
| क्लिश्यन्ति | ८. दुःख भोगते हैं | स्थूल | १४. | थोथी |
| ये केवल | ६. जो केवल | तुष | १५. | भूसी |
| बोधलब्धये । | ७. ज्ञान प्राप्ति के लिये | अवघातिनाम् ॥ | १६. | कूटने वाले को श्रम ही होता है |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपकी भक्ति सब प्रकार के कल्याण का मूल स्रोत है । उसे छोड़कर जो लोग केवल ज्ञान प्राप्ति के लिये सुख भोगते हैं । उन्हे उसी प्रकार यह कष्ट ही प्राप्त होता है और कुछ नहीं । जैसे थोथी भूसी कूटने वाले को केवल श्रम ही होता है, चावल नहीं मिलता है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**पुरेह भूमन् बहवोऽपि योगिनस्त्वदर्पितेहा निजकर्मलब्धया ।**
**विबुध्य भक्त्यैव कथोपनीतया प्रपेदिरेऽञ्जोऽच्युत ते गतिं पराम् ॥५॥**

पदच्छेद— पुरा इह भूमन् बहवः अपि योगिनः त्वत् अर्पित ईहा निजकर्म लब्धया ।
विबुध्य भक्त्या एव कथा उपनीतया प्रपेदिरे अञ्जः अच्युत ते गतिम् पराम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पुरा | ३. पहले | विबुध्य | १३. | पाकर तथा जानकर |
| इह | ६. इस लोक में | भक्ति एव | १२. | आपकी भक्ति को |
| भूमन् | २. हे अनन्त प्रभु ! | कथा | १०. | आपकी लीला कथा से |
| बहवः अपि | ४. भी बहुत से | उपनीतया | ११. | प्राप्त हुई |
| योगिनः | ५. योगियों ने | प्रपेदिरे | १६. | प्राप्त किया है |
| त्वत् अर्पित | ९. आपको अर्पित किया है फिर | अञ्जः | १४. | बड़ी आसानी से |
| इह निजकर्म | ७. अपने लौकिक, वैदिक कर्मों को | अच्युत | १. | हे भगवन् ! |
| लब्धया । | ८. प्राप्त करके | ते गतिम् पराम् ॥ | १५. | आपकी परम गति को |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! हे अनन्त प्रभु ! पहले भी बहुत से योगियों ने इस लोक में अपने लौकिक, वैदिक कर्मों को प्राप्त करके आपको अर्पित किया है । फिर आपकी लीला कथा से प्राप्त हुई आपकी भक्ति को पाकर तथा जानकर बड़ी आसानी से आपकी परम गति को प्राप्त किया है ॥

## षष्ठः श्लोकः

**तथापि भूमन् महिमागुणस्य ते विबोद्धुमर्हत्यमलान्तरात्मभिः ।**
**अविक्रियात् स्वानुभवादरूपतो ह्यनन्यबोध्यात्मतया न चान्यथा ॥६॥**

पदच्छेद—तथापि भूमन् महिमा अगुणस्य ते विबोद्धुम् अर्हति अमल अन्तर आत्मभिः ।
अविक्रियात् स्वानुभवात् अरूपतः हि अनन्यबोध्य आत्मतया न च अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथापि | २. | फिर भी | अविक्रियात् | ८. | विशेष आकार रहित |
| भूमन् | १. | हे अनन्त प्रभु ! | स्वानुभवात् | ९. | अन्तःकरण के साक्षात्कार से |
| महिमा | ४. | महिमा | अरूपतः | ५. | अविषम होने के कारण |
| अगुणस्य ते | ३. | आपके निर्गुण स्वरूप की | हि | १२. | ही |
| विबोद्धुम् | १३. | जानी | अनन्यबोध्य | १०. | अनन्त ज्ञान रूप |
| अर्हति | १४. | जा सकती है | आत्मतया | ११. | आत्म साक्षात्कार के द्वारा |
| अमल अन्तर | ६. | निर्मल अन्तः | न च | १६. | नहीं जानी जा सकती । |
| आत्मभिः । | ७. | करण के द्वारा | अन्यथा ॥ | १५. | अन्य किसी प्रकार भी |

श्लोकार्थ—हे अनन्त प्रभु ! फिर भी आपके निर्गुण स्वरूप की महिमा अविषम होने के कारण निर्मल अन्तःकरण के द्वारा विशेष आकार रहित अन्तःकरण के साक्षात्कार से अनन्त ज्ञानरूप आत्मसाक्षात्कार के द्वारा ही जानी जा सकती है । अन्यथा किसी प्रकार भी नहीं जानी जा सकती है ॥

## सप्तमः श्लोकः

**गुणात्मनस्तेऽपि गुणान् विमातुं हितावतीर्णस्य क ईशिरेऽस्य ।**
**कालेन यैर्वा विमिताः सुकल्पैर्भूपांसवः खे मिहिका द्युभासः ॥७॥**

पदच्छेद— गुण आत्मनः ते अपि गुणान् विमातुं हित अवतीर्णस्य कःईशिरे अस्य ।
कालेन यैः वा विमिताः सुकल्पैः भूपांसवः खे मिहिका द्युभासः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुण आत्मनः | ११. | सगुण स्वरूप परमात्मा | कालेन | ३. | अनेक जन्मों तक परिश्रम करके |
| ते | १२. | आपके अनन्त | यैः वा | १. | हे भगवन् ! जिन पुरुषों ने |
| अपि | १५. | भला | विमिताः | ८. | गिन डाला है |
| गुणान् | १३. | गुणों को | सुकल्पैः | २. | अत्यन्त समर्थ होकर |
| विमातुम् | १४. | गिनने में | भूपांसवः | ४. | पृथ्वी के परमाणु |
| हित | ९. | उनमें भी लोग कल्याण के लिये | खे | ५. | आकाश के |
| अवतीर्णस्य | १०. | अवतीर्ण हुये | मिहिका | ६. | हिमकण तथा उसमें |
| कःईशिरे अस्य । | १६. | कौन समर्थ हो सकता है | द्युभासः ॥ | ७. | चमकने वाले तारों को भी |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! जिन पुरुषों ने अत्यन्त समर्थ होकर अनेक जन्मों तक परिश्रम करके पृथ्वी के परमाणु, आकाश के हिमकण तथा उसमें चमकने वाले तारों को भी गिन डाला है । उनमें भी लोक कल्याण के लिये अवतीर्ण हुये सगुण स्वरूप परमात्मा आपके अनन्त गुणों को गिनने में भला कौन समर्थ हो सकता है ॥

## अष्टमः श्लोकः

**तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणो भुञ्जान एवात्मकृतं विपाकम्।**
**हृद्वाग्वपुर्भिर्विदधन्नमस्ते जीवेत यो मुक्तिपदे स दायभाक् ॥८॥**

पदच्छेद— तत् ते अनुकम्पाम् सुसमीक्षमाणः भुञ्जानः एव आत्म कृतम् विपाकम् ।
हृद्वाक्वपुर्भिः विदधत् नमः ते जीवेत यः मुक्तिपदे स दायभाक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् ते | १. | इसलिये जो पुरुष आपकी | हृद्वाक् | ७ | जो हृदय वाणी और |
| अनुकम्पाम् | २. | कृपा का | वपुर्भिः | ८. | शरीर से |
| सुसमीक्षमाणः | ३. | अनुभव करते हुये | विदधत् | १०. | करते हुये |
| भुञ्जान एव | ६. | भोगते ही हैं | नमः ते | ९. | आपको प्रणाम |
| आत्मकृतम् | ४. | अपने कर्म के | जीवेत यः | ११. | जो जीवन बिताता है |
| विपाकम् । | ५. | फल को | मुक्तिपदे स | १३. | वह परमपद को पा लेता है |
| | | | दायभाक् ॥ | १२. | पिता की सम्पत्ति के समान |

श्लोकार्थ—इसलिये जो पुरुष आपकी कृपा का अनुभव करते हुये अपने कर्म के फल को भोगते हैं। जो हृदय वाणी और शरीर से आपको प्रणाम करते हुये जीवन बिताता है। पिता की सम्पत्ति के समान वह परम पद को पा लेता है ॥

## नवमः श्लोकः

**पश्येश मेऽनार्यमनन्त आद्ये परात्मनि त्वय्यपि मायिमायिनि ।**
**मायां वितत्येक्षितुमात्मवैभवं ह्यहं कियानैच्छमिवार्चिरग्नौ ॥९॥**

पदच्छेद—पश्य ईश मे अनार्यम् अनन्त आद्ये पर आत्मनि त्वयि अपि मायिमायिनि ।
मायाम् वितत्य ईक्षितुम् आत्मवैभवम् हि अहम् कियान् ऐच्छम् इव अर्चिःअग्नौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पश्य | ३. | देखिये | मायाम् वितत्य | ८. | अपनी माया फैलाकर |
| ईश मे | १. | हे प्रभो ! आप मेरी | ईक्षितुम् | १०. | देखना |
| अनार्यम् | २. | कुटिलता को तो | आत्मवैभवम् हि | ९. | अपने प्रभाव को |
| अनन्त आद्ये | ४. | आप अनन्त आदि पुरुष | अहम् कियान् | १४. | मैं हूँ ही क्या |
| परमात्मनि | ५. | परमात्मा हैं | ऐच्छम् | ११. | चाहा |
| त्वयि अपि | ७. | मैंने आप पर भी | इव अर्चिः | १४. | चिनगारी की क्या गिनती है |
| मायिमायिनि । | ६. | हे मायावियों के मायावी ! | अग्नौ ॥ | १२. | आग के सामने |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप मेरी कुटिलता तो देखिये, आप अनन्त आदि पुरुष परमात्मा हैं। हे मायावियों के मायावी ! मैंने आप पर भी अपनी माया फैलाकर अपने प्रभाव को देखना चाहा। आग के सामने चिनगारी की क्या गिनती है ?

## दशमः श्लोकः

**अतः क्षमस्वाच्युत मे रजोभुवो ह्यजानतस्त्वत्पृथगीशमानिनः ।**
**अजावलेपान्धतमोऽन्धचक्षुष एषोऽनुकम्प्यो मयि नाथवानिति ।।१०।।**

पदच्छेद—अतः क्षमस्व अच्युत मे रजः भुवः हि अजानतः त्वत् पृथक् ईश मानिनः ।
अजः अवलेप अन्धतमः अन्धचक्षुषः एषः अनुकम्प्यः मयि नाथवान् इति ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अतः | १. | इसलिए | अजः | ६. | स्वयं को अजन्मा मानकर |
| क्षमस्व | १६. | क्षमा कीजिये | अवलेप | ७. | प्रगाढ़ |
| अच्युत | २. | हे भगवान् ! | अन्धतमः | ८. | अन्धकार से |
| मे | १०. | मुझ | अन्धचक्षुष | ९. | अन्धे नेत्रों वाले |
| रजः भुवः | ३. | रजो गुण से उत्पन्न हुये | एष | १२. | यह |
| हि अजानतः | ११. | अज्ञानी को | अनुकम्प्यः | १४. | कृपापात्र सेवक है |
| त्वत् पृथक् ईश | ४. | आप से अलग संसार को स्वामी | मयि नाथवान् | १३. | मेरे जैसे स्वामी का |
| मानिनः । | ५. | मानने वाले | इति ।। | १५. | ऐसा सोचकर |

श्लोकार्थ—इसलिये हे भगवन् ! रजोगुण से उत्पन्न हुये आपसे अलग संसार को स्वामी मानने वाले स्वयं को अजन्मा मानकर प्रगाढ़ अन्धकार से अन्धे नेत्रों वाले मुझ अज्ञानी को यह मेरे जैसे स्वामी का कृपापात्र सेवक है—ऐसा सोचकर क्षमा कीजिये ।।

## एकादशः श्लोकः

**क्वाहं तमोमहदहंखचराग्निवार्भूसंवेष्टिताण्डघटसप्तवितस्तिकायः ।**
**क्वेदृग्विधाविगणिताण्डपराणुचर्यावाताध्वरोमविवरस्य च ते महित्वम् ।।११।।**

पदच्छेद—क्व अहम् तमो महत् अहम् खचर अग्निः वाः भू संवेष्टित अण्ड घट सप्तवितस्तिकायः ।
क्व ईदृक् विधौ अगणित अण्ड पराणुचर्या वाताध्व रोमविवरस्य च ते महित्वम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्व अहम् | ५. | कहाँ तो मेरा | क्व ईदृक् | ९. | और कहाँ इस |
| तमो महत् | १. | प्रकृति के महत्तत्त्व | विधौ | १०. | प्रकार के |
| अहम् खचर | २. | अहंकार आकाश-वायु | अविगणित अण्ड | ११. | अगणित ब्रह्माण्ड |
| अग्नि वाः भूः | ३. | अग्नि जल और पृथ्वी रूप | पराणुचर्या | १३. | परमाणुओं के समान |
| संवेष्टित | ४. | आवरणों से घिरा हुआ | वाताध्व | १२. | झरोखों में उड़ते |
| अण्ड घट | ६. | ब्रह्मरूप | रोमविवरस्य | १५. | रोम छिद्र में उड़ रहे हैं |
| सप्तवितस्ति | ७. | साढ़े तीन हाथ का | च ते | १४. | आपके |
| कायः । | ८. | शरीर | महित्वम् ।। | १६. | ऐसी आपकी महिमा है |

श्लोकार्थ—प्रकृति के महत्तत्त्व, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी रूप आवरणों से घिरा हुआ कहाँ तो मेरा ब्रह्मरूप साढ़े तीन हाथ का शरीर और कहाँ इस प्रकार के अगणित ब्रह्माण्ड झरोखों में उड़ते परमाणुओं के समान आपके रोमछिद्र में उड़ रहे हैं, ऐसी आपकी महिमा है ।।

## द्वादशः श्लोकः

**उत्क्षेपणं गर्भगतस्य पादयोः किं कल्पते मातुरधोक्षजागसे।**
**किमस्तिनास्तिव्यपदेशभूषितं तवास्ति कुक्षेः कियदप्यनन्त ॥१२॥**

पदच्छेद—उत्क्षेपणम् गर्भ गतस्य पादयोः किम् कल्पते मातुः अधोक्षज आगसे।
किम् अस्ति न अस्ति व्यपदेश भूषितम् तव अस्ति कुक्षेः कियत् अपि अनन्त ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उत्क्षेपणम् | ६. | उछालने के | किम् अस्ति | १०. | क्या है और क्या |
| गर्भ | ३. | गर्भ में | न अस्ति | ११. | नहीं है |
| गतस्य | ४. | स्थित बालक के | व्यपदेश | १२. | इन शब्दों से |
| पादयोः | ५. | पैरों को | भूषितम् | १३. | विभूषित |
| किम् | २. | क्या | तव | १५. | आपकी |
| कल्पते मातुः | ८. | माँ कभी विचार करती है | अस्तिकुक्षे | १६. | कोख से बाहर हो |
| अधोक्षज | १. | हे अधोक्षज ! | कियत् अपि | १४. | कोई भी वस्तु ऐसी है जो |
| आगसे। | ७. | अपराध पर | अनन्त॥ | ९. | हे अनन्त |

श्लोकार्थ—हे अधोक्षज ! क्या गर्भ में स्थित बालक के पैरों को उछालने के अपराध पर माँ कभी विचार करती है। फिर हे अनन्त ! क्या है और क्या नहीं है। इन शब्दों से विभूषित क्या कोई भी वस्तु ऐसी है जो आपकी कोख से बाहर हो॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**जगत्त्रयान्तोदधिसम्प्लवोदे नारायणस्योदरनाभिनालात्।**
**विनिर्गतोऽजस्त्विति वाङ् न वै मृषा किं त्वीश्वर त्वन्न विनिर्गतोऽस्मि ॥१३॥**

पदच्छेद—जगत् त्रय अन्तः उदधि सम्प्लव उदे नारायणस्य उदरनाभि नालात्।
विनिर्गतः अजः तु इति वाङ् न वै मृषा किम् तु ईश्वर त्वत् न विनिर्गतः अस्मि॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जगत् त्रय | १. | तीनों लोकों के | विनिर्गतः | ९. | जन्म हुआ |
| अन्तः उदधि | २. | अन्त के समय समुद्रों के | अजः तु | ८. | ब्रह्मा जी का |
| सम्प्लव | ३. | प्रलय कालीन | इति वाङ् | १०. | यह वाणी |
| उदे | ४. | जल में | न वै मृषा | ११. | मिथ्या नहीं है |
| नारायणस्य | ५. | श्री विष्णु के | किम् तु ईश्वर | १२. | हे भगवन् ! क्या |
| उदर | ६ | उदरस्थ | त्वत् न | १३. | मैं आपसे |
| नाभिनालात्। | ७. | नाभि कमल से | विनिर्गतःअस्मि॥ | १४. | उत्पन्न नहीं हुआ हूँ |

श्लोकार्थ—तीनों लोकों के अन्त के समय समुद्रों के प्रलय कालीन जल में श्री विष्णु के उदरस्थ नाभि कमल से ब्रह्मा जी का जन्म हुआ। यह वाणी मिथ्या नहीं है। हे भगवन् ! क्या मैं आपसे उत्पन्न नहीं हुआ हूँ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**नारायणस्त्वं न हि सर्वदेहिनामात्मास्यधीशाखिललोकसाक्षी ।**
**नारायणोऽङ्गं नरभूजलायनात्तच्चापि सत्यं न तवैव माया ॥१४॥**

पदच्छेद--नारायणः त्वम् नहि सर्वदेहिनाम् आत्मा असि अधीश अखिल लोकसाक्षी ।
नारायणः अङ्गम् नरभूजल अयनात् तत् च अपि सत्यम् न तव एव माया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नारायणः | ५. जीवों के आश्रय हैं | नारायणः | ११. | जिन्हें नारायण कहा जाता है |
| त्वम् | १. हे प्रभो आप | अङ्गम् | १३. | आपके ही अङ्ग हैं |
| न हि | ४. नहीं अपितु | नरभूजल | ९. | नर से उत्पन्न होने वाले जल में |
| सर्वदेहिनाम् | २. समस्त जीवों के | अयनात् | १०. | निवास करने के कारण |
| आत्माअसि | ३. आत्मा ही | तत् च अपि | १२. | वह भी |
| अधीश | ६. आप अधीश्वर और | सत्यम् | १४. | सत्य |
| अखिल | ७. समस्त | न तव एव | १५. | नहीं है वह आपकी ही |
| लोकसाक्षी । | ८. लोकों के साक्षी हैं | माया ॥ | १६. | माया |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप समस्त जीवों के आत्मा ही नहीं हैं, अपितु जीवों के आश्रय भी हैं। आप अधीश्वर और समस्त लोकों के साक्षी हैं। नर से उत्पन्न होने वाले जल में निवास करने के कारण जिन्हें नारायण कहा जाता है वह भी आपके ही अङ्ग हैं। यह भी सत्य नहीं है, आपकी ही माया है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**तच्चेज्जलस्थं तव सज्जगद्वपुः किं मे न दृष्टं भगवंस्तदैव ।**
**किं वा सुदृष्टं हृदि मे तदैव किं नो सपद्येव पुनर्व्यदर्शि ॥१५॥**

पदच्छेद—तत् चेत् जलस्थम् तव सत् जगत् वपुः किम् मे न दृष्टम् भगवन् तदा एव ।
किम् वा सुदृष्टम् हृदि मे तदा एव किम् नः सपद्येव पुनः व्यदर्शि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तत् | ४. वह | किम् | १२. | क्यों हो गया |
| चेत् | २. यदि | वा | १३. | अथवा |
| जलस्थम् | ६. जल में ही था तो | सुदृष्टम् | ११. | उसका साक्षात्कार |
| तव सत् | ३. सचमुच आपका | हृदि मे | १०. | मेरे हृदय में |
| जगत् वपुः | ५. विराट् रूप | तदा एव | ९. | फिर उसी समय |
| किम् मे न दृष्टम् | ८. मुझे क्यों नहीं दिखाई दिया | किम् नः | १५. | क्यों मुझे |
| भगवन् | १. हे भगवन् ! | सपद्येव पुनः | १४. | शीघ्र ही फिर नहीं |
| तदा एव । | ७ उसी समय | व्यदर्शि ॥ | १६. | दिखाई दिया |

श्लोकार्थ--हे भगवन् ! यदि सचमुच आपका वह विराट् रूप जल में ही था तो उसी समय मुझे क्यों नहीं दिखाइ दिया ? फिर उसी समय मेरे हृदय में उसका साक्षात्कार क्यों हो गया ? अथवा शीघ्र ही फिर क्यों मुझे नहीं दिखाई दिया ? ॥

## षोडशः श्लोकः

**अत्रैव मायाधमनावतारे ह्यस्य प्रपञ्चस्य बहिः स्फुटस्य ।**
**कृत्स्नस्य चान्तर्जठरे जनन्या मायात्वमेव प्रकटीकृतं ते ॥१६॥**

पदच्छेद— अत्र एव माया धमन अवतारे हि अस्य प्रपञ्चस्य बहिः स्फुटस्य ।
कृत्स्नस्य च अन्तः जठरे जनन्याः मायात्वम् एव प्रकटीकृतम् ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्र एव | ३. | आपने इसी | कृत्स्नस्य | ७. | सम्पूर्ण |
| माया | १. | हे माया का | च | १२. | और |
| धमन | २. | नाश करने वाले प्रभो | अन्तः जठरे | १०. | अपने पेट के अन्दर |
| अवतारे | ४. | अवतार में | जनन्याः | ९. | माता यशोदा को |
| हि अस्य | ६. | इस | माया त्वम् | १४. | माया ही है |
| प्रपञ्चस्य | ८. | जगत् को | एव प्रकटी कृतम् | ११. | ही दिखा दिया था |
| बहिः स्फुटस्य । | ५. | बाहर दीखने वाले | ते ॥ | १३. | यह भी तो आपकी |

श्लोकार्थ—हे माया का नाश करने वाले प्रभो ! आपने इसी अवतार में बाहर दीखने वाले इस सम्पूर्ण जगत् को माता यशोदा को अपने पेट के अन्दर ही दिखा दिया था । यह भी तो आपकी माया ही है ।

## सप्तदशः श्लोकः

**यस्य कुक्षाविदं सर्वं सात्मं भाति यथा तथा ।**
**तत्त्वय्यपीह तत् सर्वं किमिदं मायया विना ॥१७॥**

पदच्छेद— यस्य कुक्षौ इदम् सर्वम् सात्मम् भाति यथा तथा ।
तत्त्वयि अपि इह तत् सर्वम् किम् इदम् मायया विना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यस्य | ४. | आपके | तत्त्वयि | १०. | आप में |
| कुक्षौ | ५. | पेट में | अपि इह | ११. | भी है |
| इदम् सर्वम् | २. | यह सम्पूर्ण विश्व | तत् | ८. | वह |
| सात्मम् | १. | आपके सहित | सर्वम् | ९. | सब |
| भाति | ६. | दिखाई दिया | किम् | १२. | क्या |
| यथा | ३. | जैसा | इदम् | १३. | यह सब आपकी |
| तथा । | ७. | वैसा ही | मायया विना ॥ | १४. | माया के बिना सम्भव है |

श्लोकार्थ—आपके सहित यह सम्पूर्ण विश्व जैसा आपके पेट में दिखाई दिया वैसा ही वह सब आपमें भी है । क्या यह सब आपकी माया के बिना सम्भव है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**अद्यैव त्वदृतेऽस्य किं मम न ते मायात्वमादर्शित-**
**मेकोऽसि प्रथमं ततो व्रजसुहृद् वत्साः समस्ता अपि ।**
**तावन्तोऽसि चतुर्भुजास्तदखिलैः साकं मयोपासिता-**
**स्तावन्त्येव जगन्त्यभूस्तदमितं ब्रह्माद्वयं शिष्यते ॥१८॥**

पदच्छेद — अद्य एव त्वत् ऋते अस्य किम् मम न ते मायात्वम् आर्दशितम्
एकः असि प्रथमम् ततो व्रज सुहृद् वत्साः समस्ताः अपि ।
तावन्तः असि चतुर्भुजाः तत् अखिलैः साकम् मया उपासिताः
तावन्ति एव जगन्ति अभूः तत् अमितम् ब्रह्म अद्वयम् शिष्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अद्य एव | १. आज ही | तावन्तः | १७. आपके वे सब रूप |
| त्वत् | २. अपने | असि | १९. हैं |
| ऋते | ३. बिना | चतुर्भुजाः | १८. चतुर्भुज |
| अस्य | ४. इस संसार को | तत् | २३. उनकी |
| किम् | ७. क्या | अखिलैः | २२. समस्त तत्त्व |
| मम न ते | ५. और मुझे अपनी | साकम् | २१. सहित |
| मायात्वम् | ६. माया का खेल | मया | २०. मेरे |
| आर्दशितम् | ८. नहीं दिखाया है | उपासिताः | २४. उपासना कर रहे हैं |
| एकः | १०. अकेले | तावन्ति एव | २५. आपने उतने ही |
| असि | ११. थे | जगन्ति | २६. ब्रह्माण्डों का रूप |
| प्रथमम् | ९. पहले आप | अभूः | २७. धारण कर लिया है |
| ततः | १२. इसके बाद | तत् | १८. वे आप |
| व्रज सुहृद् | १३. ग्वाल-बाले | अमितम् | २९. अपरिमित |
| वत्साः | १४. बछड़े आदि | ब्रह्म | ३०. ब्रह्मरूप से |
| समस्ताः | १५. सब कुछ | अद्वयम् | ३१. अद्वितीय |
| अपि । | १६. आप ही हो गये | शिष्यते ॥ | ३२. शेष रह गये हैं |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आज ही अपने बिना इस संसार को ओर मुझे अपनी माया का खेल नहीं दिखाया है । पहले आप अकेले थे । इसके बाद ग्वाल-बाले बछड़े आदि सब कुछ आप ही हो गये । आप के ये सब रूप चतुर्भुज हैं । मेरे सहित समस्त तत्त्व उनकी उपासना कर रहे हैं । आपने उतने ही ब्रह्माण्डों का रूप धारण कर लिया है । वे आप अपरमित ब्रह्मरूप अद्वितीय शेष रह गये हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**अजानतां त्वत्पदवीमनात्मन्यात्माऽऽत्मना भासि वितत्य मायाम् ।**
**सृष्टाविवाहं जगतो विधान इव त्वमेषोऽन्त इव त्रिनेत्रः ॥१९॥**

पदच्छेद—अजानताम् त्वत् पदवीम् अनात्मनि आत्मा आत्मना भासि वितत्य मायाम् ।
सृष्टौ इव अहम् जगतः विधाने इव त्वम् एषः अन्ते इव त्रिनेत्रः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अजानताम् | २. | नहीं जानते | सृष्टौ इव | १०. | सृष्टि के समय |
| त्वत् पदवीम् | १. | जो आपकी स्थिति को | अहम् | ११. | मेरे (ब्रह्मारूप से) |
| अनात्मनि | ५. | प्रकृति में स्थित | जगतः | ९. | जगत् की |
| आत्मा | ७. | रूप से | विधाने इव | १२. | पालन के समय |
| आत्मना | ६. | जीव के | त्वम् एषः | १३. | अपने विष्णुरूप से और |
| भासि | ८. | प्रतीत होते हैं | अन्ते | १४. | संहार के समय |
| वितत्य | ४. | पर्दा डालकर | इव | १६. | ही प्रतीत होते हैं |
| मायाम् । | ३. | उन पर माया का | त्रिनेत्रः ॥ | १५. | रुद्र रूप में आप |

श्लोकार्थ—जो आपको स्थिति को नहीं जानते । उन पर माया का पर्दा डालकर प्रकृति में स्थित जीव के रूप में प्रतीत होते हैं । जगत् की सृष्टि के समय मेरे (ब्रह्मारूप से) पालन के समय अपने विष्णुरूप से और संहार के समय रुद्र रूप में आपही प्रतीत होते हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**सुरेष्वृषिष्वीश तथैव नृष्वपि तिर्यक्षु यादस्स्वपि तेऽजनस्य ।**
**जन्मासतां दुर्मदनिग्रहाय प्रभो विधातः सदनुग्रहाय च ॥२०॥**

पदच्छेद— सुरेषु ऋषिषु ईश तथैव नृषु अपि तिर्यक्षु यादस्स्वपि ते अजनस्य ।
जन्म असताम् दुर्मदनिग्रहाय प्रभो विधातः सत् अनुग्रहाय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुरेषु | ४. | देवता | जन्म | १०. | अवतार धारण करते हैं वह अवतार |
| ऋषिषु ईश | ५. | ऋषि, ईश्वर तथा | असताम् | ११. | दुष्ट पुरुषों के |
| तथैव | ८. | उसी प्रकार | दुर्मद | १२. | घमंड |
| नृषु अपि | ९. | मनुष्यों में भी | निग्रहाय | १३. | चूर करने और |
| तिर्यक्षु | ६. | पशु-पक्षी | प्रभो | १ | हे प्रभो ! |
| यादः स्वपि | ७. | जलचर आदि योनयों में और | विधातः | १६. | विधाता ! |
| ते | ३. | आप | सत् | १४. | सज्जनों पर |
| अजनस्य । | २. | अजन्मा होने पर भी | अनुग्रहाय च ॥ | १५. | कृपा करने के लिये है |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! अजन्मा होने पर भी आप देवता, ऋषि, ईश्वर तथा पशु-पक्षी, जलचर आदि योनियों में और उसी प्रकार मनुष्यों में भी अवतार धारण करते हैं। वह अवतार दुष्ट पुरुषों घमंड चूर करने और सज्जनों पर कृपा करने के लिए है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**को वेत्ति भूमन् भगवन् परात्मन् योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोक्याम् ।**
**क्व वा कथं वा कति वा कदेति विस्तारयन् क्रीडसि योगमायाम् ॥२१॥**

पदच्छेद— कः वेत्ति भूमन् भगवन् परात्मन् योगेश्वर ऊतीः भवतः त्रिलोक्याम् ।
क्व वा कथम् वा कति वा कदेति विस्तारयन् क्रीडसि योग मायाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कः** | ९. | कौन | क्व | १२ | कि वह कहाँ |
| **वेत्ति** | ११. | जान सकता है | वा | १३. | अथवा |
| **भूमन्** | ७. | तब हे विश्वरूप | कथम् वा | १४. | किसलिये या |
| **भगवन्** | १. | हे भगवन् ! आप | कति वा | १५. | कितनी और |
| **परात्मन्** | २. | अनन्त परमात्मा | कदेति | १६. | कब है |
| **योगेश्वर** | ३. | और योगेश्वर हैं | विस्तारयन् | ५. | विस्तार करके |
| **ऊतीर्भवतः** | १०. | आपकी लीला को | क्रीडसि | ६. | क्रीड़ा करते हैं । |
| **त्रिलोक्याम् ।** | ८. | इस त्रिलोकी में | योगमायाम् ॥ | ४. | जब आप योगमाया का |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आप अनन्त परमात्मा और योगेश्वर हैं । जब आप योगमाया का विस्तार करके क्रीड़ा करते हैं । तब हे विश्वरूप ! इस त्रिलोकी में कौन आपकी लीला को जान सकता है कि वह कहाँ और किसलिये या कितनी और कब है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**तस्मादिदं जगदशेषमसत्स्वरूपं स्वप्नाभमस्तधिषणं पुरुदुःखदुःखम् ।**
**त्वय्येव नित्यसुखबोधतनावनन्ते मायात उद्यदपि यत् सदिवावभाति ॥२२॥**

पदच्छेद—तस्मात् इदम् जगत् अशेषम् असत् स्वरूपम् स्वप्नाभम् अस्तधिषणम् पुरुदुःख दुखम् ।
त्वयि एव नित्य सुखबोधतनौ अनन्ते मायातः उद्यत् अपि यत् सत् इव अवभाति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तस्मात् इदम्** | १. | इसलिये यह | **त्वयि एव नित्य** | ८. | आप ही नित्य |
| **जगत् अशेषम्** | २. | सम्पूर्ण जगत् | **सुखबोधतनौ** | ९. | सुख और ज्ञान स्वरूप |
| **असत् स्वरूपम्** | ४. | असत् स्वरूप | **अनन्ते** | १०. | अनन्त है अतः |
| **स्वप्नाभम्** | ३. | स्वप्न के समान | **मायातः उद्यत्** | ११. | माया से उत्पन्न होने पर |
| **अस्तधिषणम्** | ५. | अज्ञान रूप तथा | **अपि** | १२. | भी यह संसार |
| **पुरुदुःख** | ६. | अत्यन्त दुःख और | **यत् सत्** | १३. | आपकी सत्ता से सत्य के |
| **दुःखम् ।** | ७. | दुख से भरा है | **इव अवभाति ॥** | १४. | समान प्रतीत होता है |

श्लोकार्थ—इसलिये यह सम्पूर्ण जगत् स्वप्न के समान असत् स्वरूप अज्ञान रूप तथा अत्यन्त दुःख से भरा है । आप ही नित्य-सुख और ज्ञान स्वरूप अनन्त हैं । अतः माया से उत्पन्न होने पर भी यह संसार आपकी सत्ता से सत्य के समान प्रतीत होता है ।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**एकस्त्वमात्मा पुरुषः पुराणः सत्यः स्वयंज्योतिरनन्त आद्यः।**
**नित्योऽक्षरोऽजस्रसुखो निरञ्जनः पूर्णोऽद्वयो मुक्त उपाधितोऽमृतः ॥२३॥**

पदच्छेद—एकः त्वम् आत्मा पुरुषः पुराणः सत्यः स्वयम् ज्योतिः अनन्तः आद्यः।
नित्यः अक्षरः अजस्र सुखः निरञ्जनः पूर्णः अद्वयः मुक्तः उपाधितः अमृतः॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकः त्वम् | १. | एक आप ही | नित्यः अक्षरः | ९. | नित्य अविनाशी |
| आत्मा | २. | सबके आत्मा | अजस्र | १०. | अनन्त |
| पुरुषः | ४. | पुरुष हैं | सुखः | ११. | सुखरूप |
| पुराणः | ३. | पुरातन | निरञ्जनः | १२. | निर्मल |
| सत्यः स्वयम् | ५. | सत्य स्वयम् | पूर्णः अद्वयः | १३. | परिपूर्ण अद्वितीय |
| ज्योतिः | ६. | ज्ञान स्वरूप | मुक्त | १५. | रहित |
| अनन्तः | ७. | अनन्त और | उपाधितः | १४. | उपाधियों से |
| आद्यः। | ८. | आदि हैं (आप) | अमृतः॥ | १६. | अमृत स्वरूप हैं |

श्लोकार्थ—एक आप ही सबके आत्मा पुरातन पुरुष हैं। सत्य, स्वयम् ज्ञान स्वरूप, अनन्त और आदि हैं। आप नित्य, अविनाशी, अनन्त स्वरूप, निर्मल, परिपूर्ण, अद्वितीय, उपाधि से रहित, अमृत स्वरूप हैं॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**एवंविधं त्वां सकलात्मनामपि स्वात्मानमात्मात्मतया विचक्षते।**
**गुर्वर्कलब्धोपनिषत्सुचक्षुषा ये ते तरन्तीव भवानृताम्बुधिम् ॥२४॥**

पदच्छेद—एवम् विधम् त्वाम् सकल आत्मनाम् अपि स्व आत्मानम् आत्मा आत्मतया विचक्षते।
गुर्वर्क लब्ध उपनिषद् सुचक्षुषा ये ते तरन्तीव भव अनृत अम्बुधिम्॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् विधम् | १. | इस प्रकार का | गुर्वर्कलब्धः | ६. | जो गुरु रूप सूर्य से |
| त्वाम् सकल | २. | आपका यह रूप समस्त | उपनिषद् | ७. | तत्त्वज्ञान रूप |
| आत्मनाम् | ३. | जीवों का | सुचक्षुषा | ८. | दिव्य दृष्टि द्वारा |
| अपि | ४. | भी | ये ते | ११. | वे |
| स्व आत्मानम् | ५. | अपना ही रूप है | तरन्तीव | १४. | अनायास पार कर लेते हैं |
| आत्मा आत्मतया | ९. | अपने स्वरूप के रूप में | भवअनृत | १२ | भवसागररूपी मिथ्या |
| विचक्षते। | १०. | साक्षात्कार कर लेते हैं | अम्बुधिम्॥ | १३. | समुद्र को |

श्लोकार्थ—इस प्रकार आपका यह रूप समस्त जीवों का भी अपना ही रूप है। जो गुरु रूप सूर्य से तत्त्व ज्ञान रूप दिव्य दृष्टि द्वारा अपने स्वरूप के रूप में साक्षात्कार कर लेते हैं। वे भव-सागर रूपी मिथ्या समुद्र को अनायास ही पार कर लेते हैं॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**आत्मानमेवात्मतयाविजानतां तेनैव जातं निखिलं प्रपञ्चितम् ।**
**ज्ञानेन भूयोऽपि च तत् प्रलीयते रज्ज्वामहेर्भोगभवाभवौ यथा ॥२५॥**

पदच्छेद—आत्मानम् एव आत्मतया अविजानताम् तेन एव जातम् निखिलम् प्रपञ्चितम् ।
ज्ञानेन भूयः अपि च तत् प्रलीयते रज्ज्वाम् अहेः भोग भव अभवौ यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्मानम् | १. | जो पुरुष परमात्मा को | ज्ञानेन भूयः | ९. | ज्ञान होने पर फिर |
| एव | २. | ही | अपि च तत् | १०. | भी वह वैसे ही |
| आत्मतया | ३. | आत्मा के रूप में | प्रलीयते | ११. | लीन हो जाता है |
| अविजानताम् | ४. | नहीं जानते | रज्ज्वाम् अहेः | १३. | रस्सी में सर्प की |
| तेन एव | ५. | उन्हें ही | भोग | १४. | प्रतीति |
| जातम् | ८. | उत्पत्ति का भ्रम होता है | भव | १५. | होती है और |
| निखिलम् | ६. | समस्त | अभवौ | १६. | नष्ट हो जाती है |
| प्रपञ्चितम् । | ७. | प्रपञ्च की | यथा ॥ | १२. | जैसे |

श्लोकार्थ—जो पुरुष परमात्मा को ही आत्मा के रूप में नहीं जानते उन्हें ही समस्त प्रपञ्च की उत्पत्ति का भ्रम होता है। ज्ञान होने पर फिर वह भी वैसे ही लीन हो जाता है, जैसे रस्सी में साँप की प्रतीति होती है और नष्ट हो जाती है ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**अज्ञानसंज्ञौ भवबन्धमोक्षौ द्वौ नाम नान्यौ स्त ऋतज्ञभावात् ।**
**अजस्रचित्यात्मनि केवले परे विचार्यमाणे तरणाविवाहनी ॥२६॥**

पदच्छेद— अज्ञान संज्ञौ भवबन्ध मोक्षौ द्वौ नाम न अन्यौ स्तः ऋतज्ञ भावात् ।
अजस्र चिति आत्मनि केवले परे विचार्यमाणे तरणौ इव अहनी ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अज्ञान संज्ञौ | ५. | अज्ञान से कल्पित हैं | अजस्र | १०. | अखण्ड |
| भव | १. | संसार सम्बन्धित | चिति | ११. | चित्स्वरूप |
| बन्धमोक्षौ | २. | बन्धन और मोक्ष | आत्मनि | १२. | आत्मतत्त्व में |
| द्वौ | ३. | ये दोनों ही | केवले परे | ९. | केवल शुद्ध |
| नाम | ४. | नाम | विचार्यमाणे | १३. | विचार करने पर |
| न अन्यौ स्तः | ८. | भिन्न नहीं हैं | तरणौ | १४. | सूर्य में |
| ऋतज्ञ | ६. | ये सत्य और ज्ञानस्वरूप | इव | १६. | समान कोई भेद नहीं है। |
| भावात् । | ७. | परमात्मा से | अहनी ॥ | १५. | दिन और रात के |

श्लोकार्थ—संसार सम्बन्धी बन्धन और मोक्ष ये दोनों ही नाम अज्ञान से कल्पित हैं। ये सत्य और ज्ञान स्वरूप परमात्मा से भिन्न नहीं हैं। केवल शुद्ध, अखण्ड, चित्स्वरूप, आत्मतत्त्व में विचार करने पर सूर्य में दिन और रात के समान कोई भेद नहीं है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

त्वामात्मानं परं मत्वा परमात्मानमेव च।
आत्मा पुनर्बहिर्मृग्य अहोऽज्ञजनताज्ञता ॥२७॥

पदच्छेद— त्वाम् आत्मानम् परम् मत्वा परमात्मानम् एव च।
आत्मा पुनः बहिः मृग्यः अहो अज्ञजनता अज्ञता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वाम् | १. | हे प्रभो ! आप | आत्मा | ९. | आत्मा को |
| आत्मानम् | २. | हैं तो आत्मा पर | पुनः | ८. | फिर |
| परम् | ३. | लोग देहादि को ही | बहिः | १०. | बाहर |
| मत्वा | ४. | आत्मा मानते हैं | मृग्यः | ११. | खोज करते हैं |
| परमात्मानम् | ६. | पराये शरीरादि को | अहो | १२. | आश्चर्य है कि |
| एव | ७. | ही अपना मानकर | अज्ञजनता | १३. | अज्ञानी जीवों की कैसी |
| च। | ५. | और | अज्ञता ॥ | १४. | अज्ञानता है |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप हैं तो आत्मा पर लोग देहादि को ही आत्मा मानते हैं और पराये शरीरादि को ही आत्मा मानकर फिर आत्मा की बाहर खोज करते हैं। आश्चर्य है कि अज्ञानी जीवों की कैसी अज्ञानता है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

अन्तर्भवेऽनन्त भवन्तमेव ह्यतत्त्यजन्तो मृगयन्ति सन्तः।
असन्तमप्यन्त्यहिमन्तरेण सन्तं गुणं तं किमु यन्ति सन्तः ॥२८॥

पदच्छेद— अन्तः भवे अनन्त भवन्तम् एव हि अतत् त्यजन्तः मृगयन्ति सन्तः।
असन्तम् अपि अन्ति अहिमन्तरेण सन्तम् गुणम् तम् किमु यन्ति सन्तः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्तः | २. | आप सब के अन्दर | असन्तम् | ११. | न होने पर |
| भवे | ३. | विराजमान हैं (अतः) | अपि | १२. | भी |
| अनन्त | १. | हे अनन्त ! | अन्ति | १०. | रस्सी के समीप साँप |
| भवन्तम् | ७. | आपको | अहिमन्तरेण | १४ | साँप से अलग |
| एव हि | ६. | ही | सन्तम् | १५. | किये बिना |
| तत् त्यजन्तः | ५. | परित्याग किये बिना | गुणम् तम् | १३. | उस रस्सी को |
| मृगयन्ति | ८. | खोजते हैं (क्योंकि) | किमुयन्ति | १६. | कैसे जान सकते हैं |
| सन्तः। | ४. | सन्त जन | सन्तः ॥ | ९. | कोई भी सन्त पुरुष |

श्लोकार्थ—हे अनन्त ! आप सबके अन्दर विराजमान हैं। अतः सन्त जन परित्याग किये बिना ही आपको खोजते हैं। क्योंकि कोई भी सन्त पुरुष रस्सी के समीप साँप न होने पर भी उस रस्सी को साँप से अलग किये बिना कैसे जान सकते हैं।

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**अथापि ते देव पदाम्बुजद्वयप्रसादलेशानुगृहीत एव हि।**
**जानाति तत्त्वं भगवन् महिम्नो न चान्य एकोऽपि चिरं विचिन्वन् ॥२९॥**

पदच्छेद— अथ अपि ते देव पदाम्बुज द्वय प्रसादलेश अनुगृहीत एव हि।
जानाति तत्त्वम् भगवन् महिम्नो न च अन्यः एकः अपि चिरम् विचिन्वन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अथ अपि | १. फिर भी | जानाति | १०. | जान जाते हैं |
| ते देव | २. हे देव ! आपके | तत्त्वम् भगवन् | ८. | लोग आपके भगवत् तत्त्व की |
| पदाम्बुज | ४. चरण कमलों की | महिम्नः | ९. | महिमा को |
| द्वय | ३. दोनों | न च | १४. | नहीं जान पाता है |
| प्रसादलेशः | ५. तनिक | अन्यः | ११. | अन्य कोई |
| अनुगृहीतः | ६. प्राप्त करके | एकः अपि | १२. | एक व्यक्ति भी |
| एव हि। | ७. ही | चिरम् चिचिन्वन् ॥ | १३. | वर्षों तक खोजने पर भी |

श्लोकार्थ—फिर हे देव ! आपके दोनों चरण कमलों की तनिक सी कृपा प्राप्त करके ही लोग आपके भगवत् तत्त्व की महिमा को जान जाते हैं। अन्य कोई एक व्यक्ति भी वर्षों तक खोजने पर भी नहीं जान पाता है ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**तदस्तु मे नाथ स भूरिभागो भवेऽत्र वान्यत्र तु वा तिरश्चाम्।**
**येनाहमेकोऽपि भवज्जनानां भूत्वा निषेवे तव पादपल्लवम् ॥३०॥**

पदच्छेद— तदस्तु मे नाथ सः भूरिभागः भवे अत्र वा अन्यत्र तु वा तिरश्चाम्।
येन अहम् एकः अपि भवत् जनानाम् भूत्वा निषेवे तव पादपल्लवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तदस्तु | १. इसलिये | येन अहम् | ८. | जिससे मैं |
| मे नाथ | २. मेरे नाथ जिस | एकः अपि | ११. | कोई एक भी |
| सः भूरिभागः | ६. ऐसा सौभाग्य | भवत् | ९. | आपके |
| भव | ७. प्राप्त होवे | जनानाम् | १०. | दासों में |
| अत्र वा | ३. इस जन्म में अथवा | भूत्वा | १२. | होकर |
| अन्यत्र तु वा | ४. अगले जन्म में या | निषेवे | १४. | सेवा करूँ |
| तिरश्चाम्। | ५. पशु-पक्षी आदि किसी योनि में | तव पादपल्लवम् ॥ | १३. | आपके चरण कमलों की |

श्लोकार्थ - इसलिये मेरे नाथ ! मुझे इस जन्म में अथवा अगले जन्म में या पशु-पक्षी आदि किसी योनि में ऐसा सौभाग्य प्राप्त हो। जिससे मैं आपके दासों में कोई एक भी होकर आपके चरण कमलों की सेवा करूँ।

## एकत्रिंशः श्लोकः

**अहोऽतिधन्या व्रजगोरमण्यः स्तन्यामृतं पीतमतीव ते मुदा ।**
**यासां विभो वत्सतरात्मजात्मना यत्तृप्तयेऽद्यापि न चालमध्वराः ॥३१॥**

पदच्छेद—अहो अति धन्याः व्रज गो रमण्यः स्तन्य अमृतम् पीतम् अतीव ते मुदा ।
यासाम् विभो वत्सतर आत्मज आत्मना यत् तृप्तये अद्यापि न च अलम् अध्वराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो अति | १९. | अहो वे सब अत्यन्त | यासाम् | १३. | उनके |
| धन्याः | २०. | धन्य हैं | विभो | १. | हे स्वामी |
| व्रज गो | ८. | व्रज की गौवों और | वत्सतर | १०. | बछड़े एवम् |
| रमण्यः | ९. | ग्वालिनों के | आत्मज | ११. | बालक |
| स्तन्य | १४. | स्तनों का | आत्मना | १२. | बनकर |
| अमृतम् | १५. | अमृत सा दूध | यत् | ३. | जिन आपको |
| पीतम् | १८. | पिया है | तृप्तये | ४. | तृप्त करने में |
| अतीव | १६. | अत्यन्त | अद्यापि | ५. | आज तक |
| ते | ७. | आपने | न च अलम् | ६. | समर्थ नहीं हुये परन्तु |
| मुदा । | १७ | प्रसन्नता पूर्वक | अध्वराः ॥ | २. | बड़े-बड़े यज्ञ भी |

श्लोकार्थ—हे स्वामी ! बड़े-बड़े यज्ञ भी जिन आपको तृप्त करने में आज तक समर्थ नहीं हुये । परन्तु आपने व्रज की गायों और ग्वालिनियों के बछड़े एवम् बालक बनकर उनके स्तनों का अमृत सा दूध अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक पिया है । अहो वे सब धन्य हैं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ।**
**यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥३२॥**

पदच्छेद— अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्द गोप व्रजौकसाम् ।
यत् मित्रम् परमानन्दम् पूर्णम् ब्रह्म सनातनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो | १. | अहो | यत् | ६. | जो कि |
| भाग्यमहो | ४. | धन्य भाग हैं | मित्रम् | १०. | उनके मित्र हैं |
| भाग्यम् | ५. | अहो वे धन्य हैं | परमानन्दम् | ७. | परमानन्द स्वरूप |
| नन्द गोप | २. | नन्द अदि | पूर्णम् ब्रह्म | ९. | पूर्ण ब्रह्म |
| व्रज ओकसाम् । | ३. | व्रजवासी गोपों के | सनातनम् ॥ | ८. | सनातन |

श्लोकार्थ—अहो नन्द आदि गोपों के धन्य भाग हैं । अहो वे धन्य हैं ।जो कि परमानन्द स्वरूप सनातन पूर्ण ब्रह्म उनके मित्र हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**एषा तु भाग्यमहिमाच्युत तावदास्तामेकादशैव हि वयं वत भूरिभागाः ।**
**एतद्धृषीकचषकैरसकृत् पिबामः शर्वादयोऽङ्घ्र्युदजमध्वमृतासवं ते ॥३३॥**

पदच्छेद—एषाम् तु भाग्य महिमा अच्युत तावत् आस्ताम् एकादश एव हि वयम् वत भूरिभागाः ।
एतद् हृषीकचषकैः असकृत् पिबामः शर्वादयः अङ्घ्रि उदज मधु अमृत आसवम् ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एषाम् तु | २. | इन व्रज वासियों के | एतद् | १०. | इन व्रज वासियों की |
| भाग्यमहिमा | ३. | सौभाग्य की महिमा | हृषीकचषकैः | ११. | इन्द्रिय रूपी प्यालों से |
| अच्युत | १. | हे अच्युत ! | असकृत् पिबामः | १७. | वारम्बार पीते हैं |
| तावत्आस्ताम् | ४. | तो अलग रही | शर्वादयः | ६. | महादेव आदि |
| एकादश | ५. | ग्यारह इन्द्रियों के अधिष्ठाता | अङ्घ्रि उदज | १३. | चरण कमलों का |
| एव हि | ९. | ही हैं जो कि | मधु | १५. | एवं मदिरा से भी मादक |
| वयंवत | ७. | हम लोग | अमृत | १४. | अमृत से भी मीठा |
| भूरिभागाः । | ८. | अत्यन्त भाग्यवान् | आसवम् | १६. | रस |
| | | | ते ॥ | १२. | आपके |

श्लोकार्थ—हे अच्युत ! इन व्रजवासियों के सौभाग्य की महिमा तो अलग रही । ग्यारह इन्द्रियों के अधिष्ठाता महादेवादि हम लोग अत्यन्त भाग्यवान् ही हैं । जो कि इन व्रज वासियों की इन्द्रिय रूपी प्यालों से आपके चरण कमलों का अमृत से भी मीठा एवं मदिरा से भी मादक रस वारम्बार पीते हैं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**तद् भूरिभाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यां यद् गोकुलेऽपि कतमाङ्घ्रिरजोऽभिषेकम् ।**
**यज्जीवितं तु निखिलं भगवान् मुकुन्दस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुतिमृग्यमेव ॥३४॥**

पदच्छेद—तत् भूरिभाग्यम् इह जन्म किमपि अटव्याम् यत् गोकुले अपि कतम अङ्घ्रिरजः अभिषेकम् ।
शब्दार्थ—यत् जीवितम् तु निखिलम् भगवान् मुकुन्दः तु अद्यापि यत् पदरजः श्रुति मृग्यम् एव ॥

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् भूरिभाग्यम् | ६. | यही हमारा सौभाग्य है कि | यत् | ११. | जिनका |
| इह | १. | हे प्रभो ! इस व्रज के | जीवितम् तु | १३. | जीवन |
| जन्म | ५. | जन्म हो तो | निखिलम् | १२. | सम्पूर्ण |
| किमपिअटव्याम् | २. | किसी वन में | भगवान् | १०. | हे प्रभो ! |
| यत् गोकुले | ३. | या गोकुल में (अथवा) | मुकुन्दः तु | १४. | आपका ही है फिर भी |
| अपि | ४. | किसी भी योनि में | अद्यापि | १५. | आज तक |
| कतम | ७. | यहाँ किसी भक्त के | यत् पदरजः | १६. | आपकी पदरज को |
| अङ्घ्रिरजः | ८. | चरणों की धूली | श्रुति | १७. | वेद भी |
| अभिषेकम् । | ९. | हम पर पड़ेगी | मृग्यम् एव ॥ | १८. | खोज ही रहे हैं |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! इस व्रज के किसी वन में या गोकुल में अथवा किसी भी योनि में,जन्म हो तो यही हमारा सौभाग्य है कि यहाँ किसी भक्त के चरणों की धूली हम पर पड़ेगी । हे प्रभो !जिनका सम्पूर्ण जीवन आपका ही है । फिर भी आज तक आपकी पदरज को वेद भी खोज ही रहे हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एषां घोषनिवासिनामुत भवान् किं देव रातेति न-
श्चेतो विश्वफलात् फलं त्वदपरं कुत्राप्ययन् मुह्यति ।
सद्वेषादिव पूतनापि सकुला त्वामेव देवापिता
यद्धामार्थसुहृत्प्रियात्मतनयप्राणाशयास्त्वत्कृते ॥३५॥

पदच्छेद— एषाम् घोष निवासिनाम् उत भवान् किम् देव राता इति नः
चेतः विश्वफलात् फलम् त्वत् अपरम् कुत्र अपि अयन् मुह्यति ।
सत्वेषात् इव पूतना अपि सकुला त्वाम् एव देव आपिता,
यत्धाम अर्थ सुहृद् प्रिय आत्म तनय प्राण आशयाः त्वत् कृते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एषाम् | ९. | इन | सत् | २०. | सन्त |
| घोष | १०. | व्रज | वेषात् | २१. | वेष |
| निवासिनाम् | ११. | वासियों को | इव | २२. | होने के कारण ही तो |
| उत | १२. | भी | पूतनाअपि | २३. | पूतना ने भी |
| भवान् | ८. | आप | सकुला | २४. | परिवार सहित |
| किम् | १३. | क्या | त्वाम् एव | २५. | आपको ही |
| देव | १. | हे प्रभो ! | देव | १९ | हे देव ! केवल |
| राता | १४. | देंगे | आपिता | २६. | प्राप्त किया था फिर |
| इति | १५. | ऐसा सोचकर | यत् धाम | २७. | जिनके घर |
| नः | १६. | मेरा | अर्थ | २८. | धन |
| चेतः | १७. | मन | सुहृत् | २९. | स्वजन |
| विश्वफलात् | २. | सम्पूर्ण फलों के | प्रिय | ३०. | प्रिय |
| फलम् | ३. | फल | आत्म | ३१. | शरीर |
| त्वत् | ४. | आपके | तनय | ३२. | पुत्र |
| अपरम् | ५. | अतिरिक्त | प्राण | ३३. | प्राण और |
| कुत्र | ६. | अन्य कुछ | आशयाः | ३४. | मन |
| अपि अयन् | ७. | भी नहीं | त्वत् | ३५. | आपके |
| मुह्यति । | १८. | मोहित हो रहा है क्योंकि | कृते ॥ | ३६. | प्रति अर्पित हैं (उनका तो कहना ही क्या है) |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! सम्पूर्ण फलों के फल आपके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है । आप इन व्रज वासियों को भी क्या देंगे । ऐसा सोचकर मेरा मन मोहित हो रहा है । क्योंकि हे देव ! केवल सन्त वेष होने के कारण ही तो पूतना ने परिवार सहित आपको ही प्राप्त किया था । फिर जिनके घर धन स्वजन प्रिय, शरीर, पुत्र, प्राण और मन आपके प्रति अर्पित हैं, उनका तो कहना ही क्या है ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**तावद् रागादयः स्तेनास्तावत् कारागृहं गृहम् ।**
**तावन्मोहोऽङ्घ्रिनिगडो यावत् कृष्ण न ते जनाः ॥३६॥**

पदच्छेद— तावत् राग आदयः स्तेनाः तावत् कारागृहम् गृहम् ।
तावत् मोहः अङ्घ्रि निगडः यावत् कृष्ण न ते जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तावत् | २. | तभी तक | तावत् | ९. | तभी तक |
| राग | ३. | राग-द्वेष | मोहः | १०. | मोह |
| आदयः | ४. | आदि दोष | अङ्घ्रि | ११. | पैरों में |
| स्तेनाः | ५. | चोरों की भाँति रहते हैं | निगडः | १२. | बेड़ियों के समान रहता है |
| तावत् | ६. | तभी-तक | यावत् | १३. | जब-तक |
| कारागृहम् | ८. | कारागार बना रहता है | कृष्ण | १. | हे श्याम सुन्दर |
| गृहम् । | ७. | घर | न ते जनाः ॥ | १४. | जीव आपका नहीं हो जाता |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! तभी-तक राग-द्वेष आदि दोष चोरों की भाँति रहते हैं । तभी-तक घर कारागार बना रहता है । तभी तक मोह पैरों में बेड़ियों के समान रहता है । जब तक जीव आपका नहीं हो जाता है ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**प्रपञ्चं निष्प्रपञ्चोऽपि विडम्बयसि भूतले ।**
**प्रपन्नजनतानन्दसन्दोहं प्रथितुं प्रभो ॥३७॥**

पदच्छेद— प्रपञ्चम् निष्प्रपञ्चः अपि विडम्बयसि भूतले ।
प्रपन्न जगता आनन्द सन्दोहम् प्रथितुम् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रपञ्चम् | ५. | प्रपञ्च का | प्रपन्न जनता | ७. | दुःखी जीवों को |
| निष्प्रपञ्चः | २. | निष्प्रपञ्च होकर | आनन्द | ८. | अनन्त आनन्द |
| अपि | ३. | भी | सन्दोहम् | ९. | राशि |
| विडम्बयसि | ६. | विस्तार करते हैं और | प्रथितुम् | १०. | वितरित करते रहते हैं |
| भूतले । | ४. | पृथ्वी पर | प्रभो ॥ | १. | हे प्रभो ! आप |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप निष्प्रपञ्च होकर भी पृथ्वी पर विस्तार करते हैं और दुःखी जीवों को अनन्त आनन्द राशि वितरित करते रहते हैं ।

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**जानन्त एव जानन्तु किं बहूक्त्या न मे प्रभो ।**
**मनसो वपुषो वाचो वैभवं तव गोचरः ॥३८॥**

पदच्छेद— जानन्तः एव जानन्तु किम् बहूक्त्या न मे प्रभो ।
मनसः वपुषः वाचः वैभवम् तव गोचरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जानन्तः | ४. | जानने वाले आपकी महिमा को | मनसः | ८. | मेरे लिये तो मन |
| एव जानन्तु | ५. | ही जानें | वपुषा | १०. | शरीर की |
| किम् | ३. | क्या लाभ है | वाचः | ९. | वाणी और |
| बहूक्त्या | २. | अधिक कहने से | वैभवम् | ७. | महिमा |
| न | १२. | परे हैं | तव | ६. | आपकी |
| मे प्रभो! | १. | मेरे प्रभो ! | गोचरम् ॥ | ११. | समझ से |

श्लोकार्थ—मेरे प्रभो ! अधिक कहने से क्या लाभ है । जानने वाले आपकी महिमा को ही जाने । आपकी महिमा मेरे लिये तो मन, वाणी और शरीर की समझ से परे है ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**अनुजानीहि मां कृष्ण सर्वं त्वं वेत्सि सर्वदृक् ।**
**त्वमेव जगतां नाथो जगदेतत्तवार्पितम् ॥३९॥**

पदच्छेद— अनुजानीहि माम् कृष्ण सर्वम् त्वम् वेत्सि सर्वदृक् ।
त्वम् एव जगताम् नाथः जगत् एतत् तव अर्पितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनुजानीहि | १४. | लोक जाने की आज्ञा दीजिये | त्वम् एव | ६. | आप ही |
| माम् | १३. | अब मुझे अपने | जगताम् | ७. | समस्त जगत् के |
| कृष्ण | १. | हे श्रीकृष्ण ! | नाथः | ८. | स्वामी हैं |
| सर्वम् | ४. | सब कुछ | जगत् | १०. | जगत् |
| त्वम् | २. | आप | एतत् | ९. | यह सम्पूर्ण |
| वेत्सि | ५. | जानने वाले हैं | तव | ११. | आपमें |
| सर्वदृक् । | ३. | सबके साक्षी और | अर्पितम् ॥ | १२. | स्थित है |

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! आप सबके साक्षी और सब कुछ जानने वाले हैं । आपही समस्त जगत् के स्वामी हैं । यह सम्पूर्ण जगत् आपमें स्थित हैं । अब मुझे अपने लोक जाने की आज्ञा दीजिये ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**श्रीकृष्ण वृष्णिकुलपुष्करजोषदायिन् क्ष्मानिर्जरद्विजपशूदधिवृद्धिकारिन् ।**
**उद्धर्मशार्वरहर क्षितिराक्षसध्रुगाकल्पमार्कमर्हन् भगवन् नमस्ते ॥४०॥**

पदच्छेद—श्रीकृष्ण वृष्णिकुल पुष्कर जोषदायिन्क्ष्मा निर्जर द्विजपशु उदधि वृद्धिकारिन् ।
उद्धर्म शार्वर हरक्षिति राक्षस ध्रुक् आकल्पम् आर्कम् अर्हन् भगवन् नमस्ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| श्रीकृष्ण | १०. श्रीकृष्ण | उद्धर्म | ११. | पाखंडियों के धर्म रूप |
| वृष्णिकुल | १. हेय दुर्वंशरूपी | शार्वर | १२. | रात्रिका अन्धकार |
| पुष्कर | २. कमल को | हर | १३. | नष्ट करने वाले |
| जोषदायिन् | ३. आनन्द देने वाले | क्षिति | १४. | पृथ्वी पर रहने वाले |
| क्ष्मा निर्जर | ५. पृथ्वी देवता | राक्षसध्रुक् | १५. | राक्षसों से द्रोह करने वाले |
| द्विज पशु | ६. ब्राह्मण और पशुरूप | आकल्पम् | १७. | महाकल्पपर्यन्त |
| उदधि | ७. समुद्र की | आर्कम् | ४. | सूर्य |
| वृद्धि | ८. वृद्धि | अर्हन् भगवन् | १६. | पूज्य प्रभो मैं आपको |
| कारिन् । | ९. करने वाले चन्द्रमा | नमस्ते ॥ | १८. | नमस्कार करता हूँ |

श्लोकार्थ—हे यदुवंशरूपी कमल को आनन्द देने वाले, सूर्य, पृथ्वी, देवता, ब्राह्मण और पशुरूप समुद्र की वृद्धि करने वाले चन्द्रमा रूप श्रीकृष्ण, पाखंडियों के धर्मरूप रात्रि का अन्धकार नष्ट करने वाले, पृथ्वो पर रहने वाले राक्षसों से द्रोह करने वाले पूज्यप्रभो, मैं आपको महाकल्पपर्यन्त नमस्कार करता हूँ ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इत्यभिष्टूय भूमानं त्रिः परिक्रम्य पादयोः ।**
**नत्वाभीष्टं जगद्धाता स्वधाम प्रत्यपद्यत ॥४१॥**

पदच्छेद— इति अभिष्टूय भूमानम् त्रिः परिक्रम्य पादयोः ।
नत्वा अभीष्टं जगद्धाता स्वधाम प्रति अपद्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इति | २. इस प्रकार | नत्वा | ८. | प्रणाम किया और |
| अभिष्टूय | ४. स्तुति करके और | अभीष्टम् | ९. | अपने गन्तव्य स्थान |
| भूमानम् | ३. भगवान् श्रीकृष्ण की | जगद्धाता | १. | संसार के रचयिता ब्रह्मा ने |
| त्रिः | ५. तीन बार | स्वधाम | १०. | सत्यलोक |
| परिक्रम्य | ६. परिक्रमा करके | प्रति | ११. | में |
| पादयोः । | ७. उनके चरणों में | अपद्यत ॥ | १२. | चले गये |

श्लोकार्थ—संसार के रचयिता ब्रह्मा ने इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करके और तीन बार परिक्रमा करके उनके चरणों में प्रणाम किया । तथा अपने गन्तव्य स्थान सत्यलोक में चले गये ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**ततोऽनुज्ञाप्य भगवान् स्वभुवं प्रागवस्थितान् ।**
**वत्सान् पुलिनमानिन्ये यथापूर्वसखं स्वकम् ॥४२॥**

पदच्छेद— ततः अनुज्ञाप्य भगवान् स्वभुवम् प्राक् अवस्थितम् ।
वत्सान् पुलिनम् आनिन्ये यथापूर्व सखम् स्वकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तदनन्तर | वत्सान् | ८. | बछड़ों और |
| अनुज्ञाप्य | ४. | जाने की आज्ञा देकर | पुलिनम् | ६. | यमुना के किनारे पर |
| भगवान् | २. | श्रीकृष्ण | आनिन्ये | १२. | ले आये |
| स्वभुवम् | ३. | ब्रह्माजी को | यथापूर्व | ११. | पहले के समान |
| प्राक् | ५. | पहले से | सखम् | १०. | सखाओं को |
| अवस्थितम् । | ७. | स्थित | स्वकम् ॥ | ९. | अपने |

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण ब्रह्मा जी को जाने की आज्ञा देकर पहले से यमुना के किनारे पर स्थित बछड़ों और अपने सखाओं को पहले के समान ले आये ॥

## त्रयश्चत्वारिंश श्लोकः

**एकस्मिन्नपि यातेऽब्दे प्राणेशं चान्तरात्मनः ।**
**कृष्णमायाहता राजन् क्षणार्धं मेनिरेऽर्भकाः ॥४३॥**

पदच्छेद— एकस्मिन् अपि याते अब्दे प्राणेशम् च अन्तरा आत्मनः ।
कृष्ण माया हता राजन् क्षणार्धम् मेनिरे अर्भकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकस्मिन् | ५. | यद्यपि एक | कृष्ण | ९. | श्रीकृष्ण की |
| अपि | ६. | ही | माया | १०. | माया से |
| याते | ८. | बीता था पर | हता | ११. | मोहित |
| अब्दे | ७. | वर्ष | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| प्राणेशम् | ३. | जीवन सर्वस्व कृष्ण | क्षणार्धम् | १३. | आधे क्षण के समान |
| च अन्तरा | ४. | के बिना | मेनिरे | १४. | माना |
| आत्मनः । | २. | अपने | अर्भकाः ॥ | १२. | ग्वाल बालों ने उसे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अपने जीवनसर्वस्व कृष्ण के बिना यद्यपि एक ही वर्ष बीता था । पर श्रीकृष्ण की माया से मोहित ग्वाल बालों ने उसे आधे क्षण के समान माना ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**किं किं न विस्मरन्तीह मायामोहितचेतसः ।**
**यन्मोहितं जगत् सर्वमभीक्ष्णं विस्मृतात्मकम् ॥४४॥**

पदच्छेद— किम् किम न विस्मरन्तीह माया मोहित चेतसः ।
यत् मोहितम् जगत् सर्वम् अभीक्ष्णम् विस्मृत आत्मकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् किम् | ११. | क्या क्या | यत् | १. | जिस माया से |
| न | १२. | नहीं | मोहितम् | २. | मोहित होकर जीव |
| विस्मरन्तोह | १३. | भूल जाते हैं | जगत् | ४. | संसार की |
| माया | ८. | उसी माया से | सर्वम् | ३. | समस्त |
| मोहित | ९. | मोहित होकर | अभीक्ष्णम् | ५. | वार-वार स्मृति दिलाने पर भी |
| चेतसः । | १०. | जीव यहाँ | विस्मृत | ७. | भूला हुआ है |
| | | | आत्मकम् ॥ | ६. | अपने आपको |

श्लोकार्थ—जिस माया से मोहित होकर जीव समस्त संसार की बार-बार स्मृति दिलाने पर भी अपने आपको भूला हुआ है, उसी माया से मोहित होकर जीव यहाँ क्या-क्या नहीं भूल जाते हैं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**ऊचुश्च सुहृदः कृष्णं स्वागतं तेऽतिरंहसा ।**
**नैकोऽप्यभोजि कवल एहीतः साधु भुज्यताम् ॥४५॥**

पदच्छेद— ऊचुः च सुहृदः कृष्णम् स्वागतम् ते अतिरंहसा ।
न एकः अपि अभोजि कवलः एहिइतः साधु भुज्यताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऊचुः | ५. | कहा कि | न | १०. | नहीं |
| च | १. | और तब | एकः अपि | ८. | एक भी अभी तो हमने |
| सुहृदः | २. | ग्वाल-बालों ने | अभोजि | ११. | खाया है |
| कृष्णम् | ४. | श्रीकृष्ण से | कवलः | ९. | ग्रास |
| स्वागतम् | ७. | स्वागत है | एहिइतः | १२. | इधर आओ |
| ते | ६. | आपका | साधु | १३. | आनन्द से |
| अतिरंहसा । | ३. | बड़ी उतावली से | भुज्यताम् ॥ | १४. | भोजन करें |

श्लोकार्थ—और तब ग्वाल बालों ने बड़ी उतावली से श्रीकृष्ण से कहा कि आपका स्वागत है अभी तो हमने एक भी ग्रास नहीं खाया है । आओ इधर आनन्द से भोजन करें ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

ततो हसन् हृषीकेशोऽभ्यवहृत्य सहार्भकैः ।
दर्शयंश्चर्माजगरं न्यवर्तत वनाद् व्रजम् ॥४६॥

पदच्छेद— ततः हसन् हृषीकेशः अभ्यवहृत्य सह अर्भकैः ।
दर्शयन् चर्म आजगरम् न्यवर्तत वनात् व्रजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तदनन्तर | दर्शयन् | ९. | दिखाते हुये |
| हसन् | ३. | हंसते हुये | चर्म | ८. | चर्म |
| हृषीकेशः | २. | श्रीकृष्ण ने | आजगरम् | ७. | उन्हें अघासुर का |
| अभ्यवहृत्य | ६. | भोजन किया और | न्यवर्तत | १२. | लौट आये |
| सह | ५. | साथ | वनात् | १०. | वन से |
| अर्भकैः । | ४. | बालकों के | व्रजम् ॥ | ११. | व्रज में |

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण ने हंसते हुये बालकों के साथ भोजन किया और उन्हें अघासुर का चर्म दिखाते हुये वन से व्रज में लौट आये ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

बर्हप्रसूननवधातुविचित्रिताङ्गः प्रोद्दामवेणुदलशृङ्गरवोत्सवाढ्यः ।
वत्सान् गृणन्ननुगगीतपवित्रकीर्तिर्गोपीदृगुत्सवदृशिः प्रविवेश गोष्ठम् ॥४७॥

पदच्छेद— बर्ह प्रसून नवधातु विचित्रित अङ्गः प्रोद्दाम वेणु दल शृङ्गरव उत्सव आढ्यः ।
वत्सान् गृणन् अनुग गीत पवित्र कीर्तिः गोपी दृक् उत्सवदृशिः प्रविवेश गोष्ठम् ॥

शब्दार्थ -

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बर्ह प्रसून | १. | मोर पंख सुन्दर पुष्प | वत्सान् | १४. | वे बछड़ों और |
| नवधातु | २. | नयी-नयी रंगीन धातुओं से | गृणन् | १२. | प्रेम से |
| विचित्रित | ४. | सुशोभित था वे | अनुग | १०. | पीछे-पीछे ग्वाल-बाल |
| अङ्गः | ३. | उनका शरीर | गीत | १३. | गान करते |
| प्रोद्दाम | ५. | उच्चस्वर से | पवित्रकीर्ति | ११. | उनकी लोक पावन कीर्ति का |
| वेणुदल | ६. | कभी बाँसुरी कभी पत्ते | गोपीदृक् | १५. | गोपियों के नेत्रों को |
| शृङ्गरव | ७. | और सींग बजाकर | उत्सवदृशिः | १६. | आनन्द देते हुये |
| उत्सव | ८. | वाद्योत्सव में | प्रविवेश | १८. | प्रविष्ट हुये |
| आढ्यः । | ९. | मग्न होते | गोष्ठम् ॥ | १७. | गोष्ठ में |

श्लोकार्थ—मोर पंख, सुन्दर पुष्प, नयी नयी रंगीन धातुओं से उनका शरीर सुशोभित था । वे उच्च स्वर से कभी बाँसुरी कभी पत्ते और सींग बजाकर वाद्योत्सव में मग्न होते । पीछे-पीछे ग्वाल बाल उनकी लोक पवित्र कीर्ति का प्रेम गान करते । वे बछड़ों और गोपियों के नेत्रों को आनन्द देते हुये गोष्ठ में प्रविष्ट हुये ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**अद्यानेन महाव्यालो यशोदानन्दसूनुना ।**
**हतोऽविता वयं चास्मादिति बाला व्रजे जगुः ॥४८॥**

पदच्छेद— अद्य अनेन महाव्यालः यशोदा नन्द सुनुना ।
हतः अविता वयम् च अस्मात् इति बालाः व्रजे जगुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अद्य | ४. आज | | हतः | ११. मार डाला |
| अनेन | ५. इस | | अविता | १४. रक्षा की |
| महा | ९. बड़ा भारी | | वयम् | १३. हम लोगों की |
| व्यालः | १०. अजगर | | च अस्मात् | १२. और उससे |
| यशोदा | ६. यशोदा मइया और | | इति | २. इस प्रकार |
| नन्द | ७. नन्द बाबा के | | बालाःव्रजे | १. ग्वाल बालों ने व्रज में |
| सूनुना । | ८. लाड़ले ने | | जगुः ॥ | ३. कहा कि |

श्लोकार्थ—ग्वाल बालों ने व्रज में इस प्रकार कहा कि आज इस यशोदा मइया के और नन्द बाबा के लाड़ले ने बड़ा भारी अजगर मार डाला और उससे हम लोगों की रक्षा की ॥

## एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**राजोवाच—ब्रह्मन् परोद्भवे कृष्णे इयान् प्रेमा कथं भवेत् ।**
**योऽभूतपूर्वस्तोकेषु स्वोद्भवेष्वपि कथ्यताम् ॥४९॥**

पदच्छेद— ब्रह्मन् पर उद्भवे कृष्णे इयान् प्रेमा कथम् भवेत् ।
यः अभूत पूर्वः स्तोकेषु स्वउद्भवेषु अपि कथ्यताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ब्रह्मन् | १. हे भगवन् ! | | यः | ५. जिन व्रज वासियों का |
| पर | ३. दूसरे के | | अभूत | १०. नहीं हुआ उनका |
| उद्भवे | ४. पुत्र थे फिर | | पूर्व | ९. पहले कभी इतना प्रेम |
| कृष्णे | २. श्रीकृष्ण तो | | स्तोकेषु | ७. अपने बच्चों पर |
| इयान् | ११. उन पर इतना | | स्वउद्भवेषु | ६. स्वयं उत्पन्न किये हुये |
| प्रेमा कथम् | १२. प्रेम कैसे | | अपि | ८. भी |
| भवेत् । | १३. हो गया | | कथ्यताम् ॥ | १४. यह कथा समझाइये |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! श्रीकृष्ण तो दूसरे के पुत्र थे । फिर जिन व्रज वासियों का स्वयं उत्पन्न किये हुये अपने बच्चों पर भी पहले कभी इतना प्रेम नहीं हुआ । उनका उन पर इतना प्रेम कैसे हो गया । यह समझाइये ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**सर्वेषामपि भूतानां नृप स्वात्मैव वल्लभः ।**
**इतरेऽपत्यवित्ताद्यास्तद्वल्लभतयैव हि ॥५०॥**

पदच्छेद— सर्वेषाम् अपि भूतानाम् नृप स्वआत्मा एव वल्लभः ।
इतरे अपत्य वित्त आद्याः तत् वल्लभतयैव हि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सर्वेषाम्** | २. | समस्त | इतरे | ८. | अन्य |
| **अपि** | ४. | भी | अपत्य | ९. | पुत्र |
| **भूतानाम्** | ३. | भूतप्राणियों को | वित्त | १०. | धन |
| **नृप** | १. | हे राजन् ! | आद्याः | ११. | आदि सब |
| **स्वआत्मा** | ५. | अपने आत्मा से | तत् | १२. | उसी आत्मा को |
| **एव** | ६. | ही | वल्लभ | १३. | प्रिय होने के कारण |
| **वल्लभः ।** | ७. | सर्वाधिक प्रेम होता है | तयैव हि ॥ | १४. | प्रिय है |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! समस्त भूत प्राणियों को भी अपने आत्मा से ही सर्वाधिक प्रेम होता है । अन्य पुत्र, धन आदि सब उसी आत्मा के प्रिय होने के कारण प्रिय है ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**तद् राजेन्द्र यथा स्नेहः स्वस्वकात्मनि देहिनाम् ।**
**न तथा ममतालम्बिपुत्रवित्तगृहादिषु ॥५१॥**

पदच्छेद— तत् राजेन्द्र यथा स्नेहः स्वस्वक आत्मनि देहिनाम् ।
न तथा ममतालम्बि पुत्र वित्त गृह आदिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तत्** | २. | यही कारण है कि | न | १४. | नहीं होता है |
| **राजेन्द्र** | १. | हे राजेन्द्र ! | तथा | ८. | वैसा प्रेम |
| **यथा** | ६. | जैसा | ममतालम्बि | ९. | ममता के कारण |
| **स्नेह** | ७. | प्रेम होता है | पुत्र | १०. | पुत्र |
| **स्वस्वक** | ४. | अपनी-अपनी | वित्त | ११. | धन और |
| **आत्मनि** | ५. | आत्मा के प्रति | गृह | १२. | घर |
| **देहिनाम् ।** | ३. | सभी प्राणियों का | आदिषु ॥ | १३. | आदि में |

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! यही कारण है कि सभी प्राणियों में अपनी-अपनी आत्मा के प्रति जैसा प्रेम होता है वैसा प्रेम ममता के कारण पुत्र, धन और घर आदि में नहीं होता है ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

देहात्मवादिनां पुंसामपि राजन्यसत्तम ।
यथा देहः प्रियतमस्तथा न ह्यनु ये च तम् ॥५२॥

पदच्छेद— देह आत्म वादिनाम् पुंसाम् अपि राजन्य सत्तम ।
यथा देहः प्रियतमः तथा नहि अनु ये च तम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देह | ४. | देह को ही | यथा | ६. | जितना |
| आत्म | ५. | आत्मा | देहः | १०. | देह से |
| वादिनाम् | ६. | मानते हैं | प्रियतमः | ११. | प्रेम करते हैं |
| पुंसाम् | ७. | वे लोग | तथा नहि | १३. | उतना प्रेम नहीं करते हैं |
| अपि | ८. | भी | अनु | १४. | शरीर के सम्बन्धी पुत्रादि से |
| राजन्य | १. | हे राज ! | ये च | ३. | जो लोग |
| सत्तम । | २. | श्रेष्ठ | तम् ।। | १२. | वे |

श्लोकार्थ—हे राजश्रेष्ठ ! वे लोग देह को ही आत्मा मानते हैं । वे लोग भी जितना देह से प्रेम करते हैं, । उतना प्रेम शरीर सम्बन्धी पुत्रादि से नहीं करते हैं ।।

## त्रिपञ्चाशः श्लोकः

देहोऽपि ममताभाक् चेत्तर्ह्यसौ नात्मवत् प्रियः ।
यज्जीर्यत्यपि देहेस्मिन् जीविताशा बलीयसी ॥५३॥

पदच्छेद— देहः अपि ममताभाक् चेत् तर्हि असौ न आत्मवत् प्रियः ।
यत् जीर्यति अपि देहे अस्मिन् जीविताशा बलीयसी ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देहः | २. | शरीर से | यत् | ८. | क्योंकि |
| अपि | ३. | भी | जीर्यति | १०. | पुराने होने पर |
| ममताभाक् | ४. | ममता न रहे | अपि | ११. | भी |
| चेत् | १. | यदि | देहे | ६. | शरीर के |
| तर्हि असौ | ५. | तो यह शरीर भी | अस्मिन् | १२. | इसमें |
| न | ७. | नहीं रहता है | जीविताशा | १३. | जीवन की आशा |
| आत्मवत् प्रियः । | ६. | आत्मा के समान प्रिय | बलीयसी ।। | १४. | अधिक बलवती बनी रहती है |

श्लोकार्थ—यदि शरीर से भी ममता न रहे तो यह शरीर भी आत्मा के समान प्रिय नहीं रहता है । क्योंकि शरीर के पुराने होने पर भी इसमें जीवन की आशा अधिक बलवती बनी रहती है ।।

## चतुःपञ्चाशः श्लोकः

**तस्मात् प्रियतमः स्वात्मा सर्वेषामपि देहिनाम् ।**
**तदर्थमेव सकलं जगदेतच्चराचरम् ॥५४॥**

पदच्छेद— तस्मात् प्रियतमः स्वात्मा सर्वेषाम् अपि देहिनाम् ।
तत् अर्थम् एव सकलम् जगत् एतत् चराचरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. | इसलिये | तत् | ८. | उसी के |
| प्रियतमः | ७. | सर्वाधिक प्रेम करते हैं | अर्थम् | ९. | लिये |
| स्व | ५. | अपने | एव | १०. | ही |
| आत्मा | ६. | आत्मा से ही | सकलम् | १२. | समस्त |
| सर्वेषाम् | २. | सब | जगत् | १४. | जगत से प्रेम करते हैं |
| अपि | ३. | ही | एतत् | ११. | इस |
| देहिनाम् । | ४. | प्राणी | चराचरम् ॥ | १३. | चराचर |

श्लोकार्थ—इसलिये सब ही प्राणी अपने आत्मा से ही सर्वाधिक प्रेम करते हैं। उसके लिये ही इस समस्त चराचर जगत् से प्रेम करते हैं ॥

## पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

**कृष्णमेनमवेहि त्वमात्मानमखिलात्मनाम् ।**
**जगद्धिताय सोऽप्यत्र देहीवाभाति मायया ॥५५॥**

पदच्छेद— कृष्णम् एनम् अवेहि त्वम् आत्मानम् अखिल आत्मनाम् ।
जगद्धिताय सः अपि अत्र देही इव आभाति मायया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णम् | २. | श्रीकृष्ण को ही | जगत् | ८. | संसार के |
| एनम् | १. | इन | हिताय | ९. | कल्याण के लिये |
| अवेहि | ७. | समझो | सः अपि | १०. | वे भी |
| त्वम् | ३. | तुम | अत्र देही | १२. | यहाँ देहधारी के |
| आत्मानम् | ६. | आत्मा | इव | १३. | समान |
| अखिल | ४. | सब | आभाति | १४. | जान पड़ते हैं |
| आत्मनाम् । | ५. | आत्माओं का | मायया ॥ | ११. | योग माया का आश्रय लेकर |

श्लोकार्थ— इन श्रीकृष्ण को ही तुम सब आत्माओं का आत्मा समझो संसार के कल्याण के लिये वे भी योग माया का आश्रय लेकर यहाँ देहधारी के समान जान पड़ते हैं ॥

## षट्पञ्चाशः श्लोकः

**वस्तुतो जानतामत्र कृष्णं स्थास्नु चरिष्णु च ।**
**भगवद्रूपमखिलं नान्यद् वस्त्विह किञ्चन ॥५६॥**

पदच्छेद— वस्तुतः जानताम् अत्र कृष्णम् स्थास्नु चरिष्णु च ।
भगवत् रूपम् अखिलम् न अन्यत् वस्तु इह किञ्चन ॥

शब्दार्थ -

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वस्तुतः | २. | वस्तुतः | भगवान् | ८. | भगवत् |
| जानताम् | ३. | ज्ञानी हैं उनके लिये | रूपम् | ९. | रूप हैं |
| अत्र | १. | यहाँ जो लोग | अखिलम् | ७. | समस्त वस्तुयें |
| कृष्णम् | १०. | श्रीकृष्ण के | न अन्यत् | ११. | नहीं हैं अतिरिक्त |
| स्थास्नु | ४. | स्थावर | वस्तु | १४. | वस्तु |
| चरिष्णु | ६. | जङ्गम | इह | १२. | यहाँ |
| च । | ५. | और | किञ्चन ॥ | १३. | कोई |

श्लोकार्थ—यहाँ जो लोग वस्तुतः ज्ञानी हैं, उनके लिये स्थावर और जङ्गम समस्त वस्तुयें भगवत् रूप हैं । श्रीकृष्ण के अतिरिक्त यहाँ कोई वस्तु नहीं है ॥

## सप्तपञ्चाशः श्लोकः

**सर्वेषामपि वस्तूनां भावार्थो भवति स्थितः ।**
**तस्यापि भगवान् कृष्णः किमतद्वस्तु रूप्यताम् ॥५७॥**

पदच्छेद— सर्वेषाम् अपि वस्तूनाम् भाव अर्थः भवति स्थितः ।
तस्य अपि भगवान् कृष्णः किम् अतद् वस्तु रूप्यताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वेषाम् | १. | सभी | तस्य | ८. | उस कारण के |
| अपि | ४. | भी | अपि | ९. | भी कारण |
| वस्तूनाम् | २. | वस्तुओं का | भगवान् | १०. | भगवान् |
| भाव | ३. | अन्तिमरूप | कृष्णः | ११. | श्रीकृष्ण हैं फिर हम |
| अर्थः | ५. | अपने कारण में | किम् | १२. | किस वस्तु को |
| भवति | ७. | होता है | अतद्वस्तु | १३. | श्रीकृष्ण से भिन्न |
| स्थितः । | ६. | स्थित | रूप्यताम् ॥ | १४. | बतलायें |

श्लोकार्थ—सभी वस्तुओं का अन्तिमरूप भी अपने कारण में स्थित होता है । उस कारण के भी कारण भगवान् श्रीकृष्ण हैं । फिर हम किस वस्तु को श्रीकृष्ण से भिन्न बतलायें ॥

## अष्टपञ्चाशः श्लोकः

**समाश्रिता ये पदपल्लवप्लवं महत्पदं पुण्ययशोमुरारेः ।**
**भवाम्बुधिर्वत्सपदं परं पदं पदं पदं यद् विपदां न तेषाम् ॥५८॥**

पदच्छेद — सम् आश्रिता ये पदपल्लव प्लवम् महत् पदम् पुण्य यशः मुरारेः ।
भवाम्बुधिः वत्सपदम् परम् पदम् पदम् पदम् यत् विपदाम् न तेषाम् ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सम् | ७. | भली भाँति | भव | ११. | यह भव |
| आश्रिता | ८. | आश्रय लिया है | अम्बुधिः | १२. | सागर |
| ये | १. | जिन्होंने | वत्सपदम् | १३. | बछड़े के खुर के समान हो जाता है |
| पादपल्लव | ५. | पाद पल्लव की | परम् पदम् पदम् | १४. | तथा परमपद प्राप्त हो जाता है |
| प्लवम् | ६. | नौका का | पदम | १७. | स्थान |
| महत् पदम् | ९. | जो महापुरुषों का सर्वस्व है | यत् | १५. | उनके जीवन में |
| पुण्य | २. | पुण्य | विपदाम् | १६. | विपत्तियों का कोई भी |
| यशः | ३. | कीर्ति | न | १८. | नहीं रहता है |
| मुरारेः । | ४. | मुकुन्द मुरारि के | तेषाम् ।। | १०. | उनके लिये |

श्लोकार्थ—जिन्होंने पुण्य कीर्ति मुकुन्द मुरारि के पाद पल्लव की नौका का भलीभाँति आश्रय लिया है जो महापुरुषों का सर्वस्व है। उनके लिए यह भव सागर बछड़े के खुर के समान हो जाता है। और परम पद को प्राप्त हो जाता है। तथा उनके जीवन में विपत्तियों का कोई स्थान नहीं रहता है ।।

## एकोनषष्टितमः श्लोकः

**एतत्ते सर्वमाख्यातं यत् पृष्टोऽहमिह त्वया ।**
**यत् कौमारे हरिकृतं पौगण्डे परिकीर्तितम् ॥५९॥**

पदच्छेद— एतत् ते सर्वम् आख्यातम् यत् पृष्टः अहम् इह त्वया ।
यत् कौमारे हरि कृतम् पौगण्डे परिकीर्तितम् ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतत् ते | ४. | वह तुम्हें | यत् | ७. | जो कि |
| सर्वम् | ५. | सब कुछ | कौमारे | ८. | पाँच वर्ष की अवस्था में |
| आख्यातम् | ६. | सुना दिया | हरि | ९. | भगवान् के द्वारा |
| यत् | १. | जो कुछ | कृतम् | १०. | की गई लीला |
| पृष्टः अहम् | ३. | पूछा था मुझसे | पौगण्डे इह | ११. | छठे वर्ष में |
| त्वया । | २. | तुमने इस विषय में | परिकीर्तितम् | १२ | कैसे कही यह भी बता दिया |

श्लोकार्थ—जो कुछ तुमने इस विषय में मुझसे पूछा था वह तुम्हें सब कुछ सुना दिया। जो कि पाँच वर्ष की अवस्था में भगवान् के द्वारा की गई लीला छठे वर्ष में कैसे कही ? यह भी बता दिया ।।

## षष्टितमः श्लोकः

**एतत् सुहृद्भिश्चरितं मुरारेरघार्दनं शाद्वलजेमनं च।**
**व्यक्तेतरद् रूपमजोर्वभिष्टवं शृण्वन् गृणन्नेति नरोऽखिलार्थान् ॥६०॥**

पदच्छेद—एतत् सुहृद्भिः चरितम् मुरारेः अघ अर्दनम् शाद्वल जेमनम् च।
व्यक्त इतरत् रूपम् अज उरु अभिष्टवम् शृण्वन् गृणन् इति नरः अखिल अर्थान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतत् | २. | की हुई इस | व्यक्त इतरत् | १०. | प्रकृति से परे |
| सुहृद्भिः | ३. | ग्वाल-वालों के साथ | रूपम् | ११. | रूपधारी बछड़ों का प्रकट होना |
| चरितम् | ४. | वन क्रीडा | अज उरु | १२. | ब्रह्माजी द्वारा की हुई महान् |
| मुरारेः | १. | भगवान् श्रीकृष्ण की | अभिष्टवम् | १३. | स्तुति को जो मनुष्य |
| अघ | ५. | अघासुर को | शृण्वन् गृणन् | १४. | सुनता और कहता है |
| अर्दनम् | ६. | मारना | इति | १८. | प्राप्त कर लेना है |
| शाद्वल | ८. | हरी हरी भूमि पर | नरः | १५ | वह मनुष्य |
| जेमनम् | ९. | भोजन करना | अखिल | १६. | सभी |
| च। | ७. | और | अर्थान् ॥ | १७. | पुरुषार्थों को |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की हुई इस ग्वाल बालों के साथ वन क्रीडा, अघासुर को मारना और हरी हरी भूमि पर भोजन करना प्रकृति से परे रूपधारी बछड़ों का प्रकट होना ब्रह्माजी द्वारा की हुई महान् स्तुति को जो मनुष्य सुनता और कहता है। वह मनुष्य सभी पुरुषार्थों को प्राप्त कर लेता है॥

## एकषष्टितमः श्लोकः

**एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे।**
**निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोत्प्लवनादिभिः ॥६१॥**

पदच्छेद— एवम् विहारैः कौमारैः कौमारम् जहतुःव्रजे।
निलायनैः सेतुबन्धैः मर्कट उत्प्लवन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | निलायनैः | ३. | आँख मिचौनी |
| विहारैः | ८. | लीलायें करके | सेतुबन्धैः | ४. | सेतुबन्धन |
| कौमारैः | २. | श्रीकृष्ण और बलराम ने | मर्कट | ५. | बन्दरों की भाँति |
| कौमारम् | ९. | कुमारावस्था | उत्प्लवन | ६. | उछलना कूदना |
| जहतुःव्रजे। | १०. | व्रज में ही त्याग दी | आदिभिः ॥ | ७. | आदि |

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण और बलराम ने आँख मिचौनी, सेतुबन्धन, बन्दरों की भाँति उछलना कूदना आदि लीलायें करके कुमारावस्था व्रज में ही त्याग दी॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे पूर्वार्धे ब्रह्मस्तुतिर्नाम चतुर्दशः अध्यायः ॥१४॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
## दशमः स्कन्धः
## पञ्चदशः अध्यायः
### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—ततश्च पौगण्डवयः श्रितौ व्रजे बभूवतुस्तौ पशुपालसम्मतौ ।**
**गाश्चारयन्तौ सखिभिः समं पदैर्वृन्दावनं पुण्यमतीव चक्रतुः ॥१॥**

पदच्छेद— ततः च पौगण्डवयः श्रितौ व्रजे बभूवतुः तौ पशुपाल सम्मतौ ।
गाः चारयन्तौ सखिभिः समम् पदैः वृन्दावनम् पुण्यम् अतीव चक्रतुः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः च | १. | और तदनन्तर | गाः चारयन्तौ | ९. | गायें चराते और |
| पौगण्डवयः | ३. | छठें वर्ष में | सखिभिः समम् | ८. | वे सखाओं के साथ |
| श्रितौव्रजे | ४. | प्रवेश किया | पदैः | १०. | अपने चरणों से |
| बभूवतुः | ७. | मिल गई | वृन्दावनम् | ११. | वृन्दावन को |
| तौ | २. | बलराम और श्रीकृष्ण ने | पुण्यम् | १३ | पावन |
| पशुपाल | ५. | उन्हें गाय चराने की | अतीव | १२. | अत्यन्त |
| सम्मतौ । | ६. | आज्ञा | चक्रतुः ॥ | १४. | करते |

श्लोकार्थ—और तदनन्तर बलराम और श्रीकृष्ण ने छठे वर्ष में प्रवेश किया । उन्हें गाय चराने की आज्ञा मिल गई । वे सखाओं के साथ गायें चराते और अपने चरणों से वृन्दावन को अत्यन्त पवित्र करते ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**तन्माधवो वेणुमुदीरयन् वृतो गोपैर्गृणद्भिः स्वयशो बलान्वितः ।**
**पशून् पुरस्कृत्य पशव्यमाविशद् विहर्तुकामः कुसुमाकरं वनम् ॥२॥**

पदच्छेद—तत् माधवः वेणुम् उदीरयन् वृतः गोपैः गृणद्भिः स्वयशः बल अन्वितः ।
पशून् पुरस्कृत्य पशव्यम् आविशत् विहर्तु कामः कुसुमाकरम् वनम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | तदनन्तर | पशून् | ८. | गायों को |
| माधवः | २. | श्रीकृष्ण | पुरस्कृत्य | ९. | आगे करके |
| वेणुम्उदीरयन् | ७. | बंशी बजाते हुये | पशव्यम् | ११. | पशुओं के साथ |
| वृतः गोपैः | ६. | ग्वाल-बालों से घिरे | आविशत् | १४. | प्रविष्ट हुये |
| गृणद्भिः | ५. | गान करने वाले | विहर्तुकामः | १०. | बिहार करने की इच्छा से |
| स्वयशः | ४. | अपने यश का | कुसुम आकरम् | १२. | पुष्पों की खान |
| बल अन्वितः । | ३. | बलराम जी के साथ | वनम् ॥ | १३. | उस वन में |

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण बलराम जी के साथ अपने यश का गान करने वाले ग्वाल-बालों से घिरे बंशी बजाते हुये गायों को आगे करके विहार करने की इच्छा से पशुओं के साथ पुष्पों की खान उस वन में प्रविष्ट हुये ॥

## तृतीयः श्लोकः

**तन्मञ्जुघोषालिमृगद्विजाकुलं महन्मनःप्रख्यपयःसरस्वता।**
**वातेन जुष्टं शतपत्रगन्धिना निरीक्ष्य रन्तुं भगवान् मनो दधे ॥३॥**

पदच्छेद— तत् मञ्जुघोष अलि मृग द्विज आकुलम् महत्मनः प्रख्यपयः सरस्वता।
वातेन जुष्टम् शतपत्र गन्धिना निरीक्ष्य रन्तुम् भगवान् मनः दधे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | उस वन में | वातेन | ११. | वायु से |
| मञ्जुघोष | ३. | मधुर गुञ्जार कर रहे थे वह वन | जुष्टम् | १२. | युक्त |
| अलि | २. | कहीं भौंरे | शतपत्र | ९. | कमल की |
| मृग द्विज | ४. | हरिणों और पक्षियों से | गन्धिनः | १०. | गन्धवाली |
| आकुलम् | ५. | व्याप्त था (वहाँ) | निरीक्ष्य | १३. | वनको देख कर |
| महत्मनः | ६. | महात्माओं के हृदय के | रन्तुम् | १५. | उसमें विहार करने का |
| प्रख्यपयः | ७. | समान स्वच्छ जल वाले | भगवान् | १४. | भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| सरस्वता। | ८. | सरोवर थे। | मनःदधे ॥ | १६. | मन ही मन विचार किया |

श्लोकार्थ—उस वन में कहीं भौंरे मधु गुञ्जार कर रहे थे। वह वन हरिणों और पक्षियों से व्याप्त था। वहाँ महात्माओं के हृदय के समान स्वच्छ जल वाले सरोवर थे। कमल की गन्ध वाली वायु से युक्त वन की देख कर उसमें विहार करने का भगवान् श्रीकृष्ण ने मन ही मन विचार किया।

## चतुर्थः श्लोकः

**स तत्र तत्रारुणपल्लवश्रिया फलप्रसूनोरुभरेण पादयोः।**
**स्पृशच्छिखान् वीक्ष्य वनस्पतीन् मुदा स्मयन्निवाहाग्रजमादिपूरुषः ॥४॥**

पदच्छेद — सः तत्र-तत्र अरुण पल्लवश्रिया फल प्रसून उरुभरेण पादयोः।
स्पृशत् शिखान् वीक्ष्य वनस्पतीन् मुदा स्मयन् इव आह अग्रजम् आदि पुरुषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | २. उन भगवान् ने | स्पृशत् | ११. स्पर्श कर रहे हैं |
| तत्र-तत्र | ४. वहाँ पर बड़े-बड़े वृक्ष | शिखान् | ९. अग्रभाग से |
| अरुण | ७. लाल-लाल और | वीक्ष्य | ३. देखा कि |
| पल्लवश्रिया | ८. सुन्दर कोंपलों के | वनस्पतीन् | १२. ऐसे वृक्षों को देख कर |
| फल प्रसून | ५. फल-फूलों के | मुदास्मयन् इव | १४. प्रसन्न होकर मुसकराते हुये |
| उरुभरेण | ६. अत्यधिक भार से | आहअग्रजम् | १३. वे बोले बलराम जी से |
| पादयोः। | १०. चरणों का | आदि पुरुषः ॥ | १. पुरुषोत्तम |

श्लोकार्थ—पुरुषोत्तम उन भगवान् ने देखा कि वहाँ पर बड़े-बड़े वृक्ष फलफूलों के अत्यधिक भार से लाल-लाल सुन्दर कोंपलों के अग्रभाग से चरणों का स्पर्श कर रहे हैं। ऐसे वृक्षों को देख कर वे बलराम जी से प्रसन्न होकर मुसुकराते हुये बोले ॥

## पञ्चमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—अहो अमी देववरामरार्चितं पादाम्बुजं ते सुमनः फलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मनस्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥५॥

पदच्छेद— अहो अमी देववर अमर अर्चितम् पाद अम्बुजम् ते सुमनः फल अर्हणम् ।
नमन्ति उपादाय शिखाभिः आत्मनः तमः अपहत्यै तरु जन्म यत् कृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो | १. अहो | नमन्ति | १०. आपको प्रणाम कर रहे हैं |
| अमी देववर | २. देवशिरोमणि ! इन | उपादाय | ८. लेकर ये वृक्ष |
| अमर अर्चितम् | ३. देवताओं द्वारा वन्दित | शिखाभिः आत्मनः | ९. शिखाओं के द्वारा अपने |
| पाद अम्बुजम् | ५. चरण कमलों में | तमः अपहत्यै | १२. अज्ञान का नाश करने के लिये ही तो |
| ते | ४. आपके | तरु जन्म | १३. वृक्षयोनि में जन्म |
| सुमनः फल | ६. पुष्प और फलादि | यत् | ११. क्योंकि इन्होंने |
| अर्हणम् । | ७. सामग्री | कृतम् ॥ | १४. धारण किया है |

श्लोकार्थ—अहो देव शिरोमणि ! इन देवताओं द्वारा वन्दित आपके चरण कमलों में पुष्प और फल आदि सामग्री लेकर ये वृक्ष अपनी शिखाओं के द्वारा आपको प्रणाम कर रहे हैं । क्योंकि इन्होंने अज्ञान का नाश करने के लिये ही तो वृक्षयोनि में जन्म धारण किया है ।

## षष्ठः श्लोकः

एतेऽलिनस्तव यशोऽखिललोकतीर्थं गायन्त आदिपुरुषानुपदं भजन्ते ।
प्रायो अमी मुनिगणा भवदीयमुख्या गूढं वनेऽपि न जहत्यनघात्मदैवम् ॥६॥

पदच्छेद— एते अलिनः तव यशः अखिललोकतीर्थम् गायन्तः आदि पुरुष अनुपदम् भजन्ते ।
प्रायः अमी मुनिगणाः भवदीय मुख्याः गूढम् वने अपि न जहति अनघ आत्मदैवम् ।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एते अलिनः | २. ये भौंरे | प्रायः | ९. इस प्रकार प्रायः |
| तव यशः | ४. आप के यश का | अमी मुनिगणाः | ११. ये मुनि जन |
| अखिललोकतीर्थम् | ३. समस्त लोकों को पवित्र करने वाले | भवदीयमुख्याः | १०. आप के प्रमुख भक्त और |
| गायन्ति | ५. गान करते हुये | गूढम्वने अपि | १२. इस एकान्तवन में भी |
| आदि पुरुष | ७. आदि पुरुष रूप | न जहति | १४. नहीं छोड़ते हैं |
| अनुपदम् | ६. निरन्तर | अनघ | १. हे निष्पाप प्रभो ! |
| भवन्ति । | ८ आपका भजन करते हैं | आत्मदैवम् ॥ | १३. अपने परमात्मा को |

श्लोकार्थ—हे निष्पाप प्रभो ! ये भौंरे समस्त लोकों को पवित्र करने वाले आपके यश का गान करते हुये निरन्तर आदि पुरुष रूप आपका भजन करते हैं । इस प्रकार प्रायः आपके प्रमुख भक्त और ये मुनिजन इस एकान्त वन में अपने परमात्मा को नहीं छोड़ते हैं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**नृत्यन्त्यमी शिखिन ईड्य मुदा हरिण्यः कुर्वन्ति गोप्य इव ते प्रियमीक्षणेन ।**
**सूक्तैश्च कोकिलगणा गृहमागताय धन्या वनौकस इयान् हि सतां निसर्गः ॥७॥**

पदच्छेद- नृत्यन्ति अमी शिखिनः ईड्य मुदा हरिण्यः कुर्वन्ति गोप्य इव ते प्रियम् ईक्षणेन ।
सूक्तैः च कोकिलगणाः गृहम् आगताय धन्याः वनौकसः इयान् हि सताम् निसर्गः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| नृत्यन्ति | ३. नाच रहे हैं और | सूक्तैः च | ११. अपनी मधुर वाणी से |
| अमीशिखिनः | २. ये मोर | कोकिलगणाः | १०. और कोयलें |
| ईड्य | १. पूज्य | गृहम् | १२. घर आये हुये |
| मुदा | ५. प्रसन्न होकर | आगताय | १३. अतिथि का स्वागत कर रही हैं |
| हरिण्यः | ४. हरिणियाँ | धन्या वनौकसः | १४. ये वनवासी धन्य हैं |
| कुर्वन्ति | ८. कर रही हैं | इयान् | १५. यह तो |
| गोप्य इव ते | ६. गोपियों के सामान आपको | हि सताम् | १६. सत्पुरुषों का |
| प्रियम् ईक्षणेन । | ७. प्रेम से देखकर प्रेम प्रकट कर रही है | निसर्गः ॥ | १७. स्वभाव ही है |

श्लोकार्थ—हे पूज्य ! ये मोर नाच रहे हैं और हरिणियाँ प्रसन्न होकर गोपियों के समान आपको देखकर प्रेम प्रकट कर रही हैं । और कोयलें अपनी मधुर वाणी से घर आये हुये अतिथि का स्वागत कर रही हैं । ये वनवासी धन्य हैं । यह तो साधु पुरुषों का स्वभाव ही है ॥

## अष्टमः श्लोकः

**धन्येयमद्य धरणी तृणवीरुधस्त्वत्पादस्पृशो द्रुमलताः करजाभिमृष्टाः ।**
**नद्योऽद्रयः खगमृगाः सदयावलोकैर्गोप्योऽन्तरेण भुजयोरपि यत्स्पृहा श्रीः ॥८॥**

पदच्छेद—धन्या इयम् अद्य धरणी तृणवीरुधः त्वत् पादस्पृशः द्रुमलताकरज अभिमृष्टाः ।
नद्यः अद्रयः खगमृगाः सदय अवलोकैः गोप्यः अन्तरेण भुजयोः अपि यत् स्पृहा श्रीः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| धन्या | ८. धन्य हो रही हैं | नद्यः अद्रयः | ९. नदी-पर्वत |
| इयम् | २. यह | खग मृगाः | १०. पशु-पक्षी आपकी |
| अद्य | १. आज | सदय अवलोकैः | ११. दया भरी चितवन से धन्य हो रहे हैं |
| धरणी तृण | ३. पृथ्वी तिनके और | गोप्यः | १६. गोपियाँ धन्य हो रही हैं |
| वीरुधः त्वत् | ४. झाड़ियाँ आपके | अन्तरेण भुजयोः | १३. भुजाओं के मध्य भाग की |
| पादस्पृशः | ५. चरणों का स्पर्श पाकर और | अपि | १५. भी करती हैं उसे पाकर |
| द्रुमलताः | ६. वृक्ष तथा लतायें आपकी | यत् | १२. आपकी जिन |
| करज अभिमृष्टाः । | ७. अंगुलियों का स्पर्श पाकर | स्पृहा श्रीः ॥ | १४. आकांक्षा स्वयं लक्ष्मी जी |

श्लोकार्थ—आज यह पृथ्वी तिनके और झाड़ियाँ आपके चरणों का स्पर्श पाकर और वृक्ष तथा लतायें आपकी अंगुलियों का स्पर्श पाकर धन्य हो रही हैं । नदी, पर्वत, पशु, पक्षी आपकी दया भरी चितवन से धन्य हो रहे हैं । आपकी जिन भुजाओं के मध्य भाग की आकांक्षा स्वयं लक्ष्मी जी भी करती हैं, उसे पाकर गोपियाँ धन्य हो रही हैं ॥

## नवमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं वृन्दावनं श्रीमत् कृष्णः प्रीतमनाः पशून् ।
रेमे सञ्चारयन्नद्रेः सरिद्रोधस्सु सानुगः ॥९॥

पदच्छेद— एवम् वृन्दावनम् श्रीमत् कृष्णः प्रीतमनाः पशून् ।
रेमे सञ्चारयन् अद्रेः सरित् रोधस्सु सानुगः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | रेमे | १२. | की लीलायें करने लगे |
| वृन्दावनम् | ३. | वृन्दावन को देखकर | सञ्चारयन् | ११. | चराते हुये अनेक प्रकार |
| श्रीमत् | २. | परम सुन्दर | अद्रेः | ७. | गोवर्धन की तराई और |
| कृष्णः | ४. | श्रीकृष्ण | सरित् | ८. | यमुना के |
| प्रीतमनाः | ५. | अत्यन्त आनन्दित हुये | रोधस्सु | ९. | तट पर |
| पशून् । | १०. | गौओं को | सानुगः ॥ | ६. | वे ग्वाल बालों के साथ |

श्लोकार्थ—इस प्रकार परम सुन्दर वृन्दावन को देखकर श्रीकृष्ण अत्यन्त आनन्दित हुये । वे ग्वाल-बालों के साथ गोवर्धन की तराई यमुना के तट पर गौओं को चराते हुये अनेक प्रकार की लीलायें करने लगे ॥

## दशमः श्लोकः

क्वचिद् गायति गायत्सु मदान्धालिष्वनुव्रतैः ।
उपगीयमानचरितः स्रग्वी सङ्कर्षणान्वितः ॥१०॥

पदच्छेद— क्वचित् गायति गायत्सु मदान्ध अलिषु अनुव्रतैः ।
उपगीयमान चरितः स्रग्वी सङ्कर्षण अन्वितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | एक ओर ग्वाले | उपगीयमान | ३. | गान करते रहते हैं तो |
| गायति | ११. | गुनगुना रहे हैं | चरितः | २. | श्रीकृष्ण के चरित का |
| गायत्सु | ९. | गान का | स्रग्वी | ६. | वन माला धारण करके |
| मदान्ध | ७. | मदमत्त | सङ्कर्षण | ४. | कहीं बलराम जी |
| अलिषु | ८. | भौंरों के | अन्वितः ॥ | ५. | के साथ श्रीकृष्ण |
| अनुव्रतैः । | १०. | अनुकरण करते हुये | | | |

श्लोकार्थ—एक ओर ग्वाले श्रीकृष्ण के चरित का गान करते रहते हैं तो कहीं बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण वन माला धारण करके मदमत्त भौंरों के गान का अनुकरण करते हुये गुनगुना रहे हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**क्वचिच्च कलहंसानामनुकूजति कूजितम् ।**
**अभिनृत्यति नृत्यन्तं बर्हिणं हासयन् क्वचित् ॥११॥**

पदच्छेद— क्वचित् च कलहंसानाम् अनुकूजति कूजितम् ।
अभिनृत्यति नृत्यन्तम् बर्हिणम् हासयन् क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **क्वचित्** | २. कभी-कभी श्रीकृष्ण | अभिनृत्यति | ८. स्वयं नाचने लगते हैं और |
| **च** | १. और | नृत्यन्तम् | ६. कभी नाचते हुये |
| **कलहंसानाम्** | ४. राजहंसों का | बर्हिणम् | ७. मोरों के साथ |
| **अनुकूजति** | ५. अनुसरण करते हैं | हासयन् | १०. हास्यास्पद बना देते हैं |
| **कूजितम् ।** | ३. कूजते हुये | क्वचित् ॥ | ९. कभी अपने नृत्य से मोरों को |

श्लोकार्थ—और कभी-कभी श्रीकृष्ण कूजते हुये राजहंसों का अनुसरण करते हैं। कभी नाचते हुये मोरों के साथ नाचने लगते हैं। और कभी अपने नृत्य से मोरों को हास्यास्पद बना देते हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**मेघगम्भीरया वाचा नामभिर्दूरगान् पशून् ।**
**क्वचिदाह्वयति प्रीत्या गोगोपालमनोज्ञया ॥१२॥**

पदच्छेद— मेघ गम्भीरया वाचा नामभिः दूरगान् पशून् ।
क्वचित् आह्वयति प्रीत्या गो गोपाल मनोज्ञया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **मेघ** | २. मेघ के समान | **क्वचित्** | १. कभी |
| **गम्भीरया** | ३. गम्भीर | **आह्वयति** | ९. पुकारते हैं तब |
| **वाचा** | ४. वाणी से | **प्रीत्या** | ८. बड़े प्रेम से |
| **नामभिः** | ७. नाम ले लेकर | **गो** | १०. गायों और |
| **दूरगान्** | ५. दूर गये हुये | **गोपाल** | ११. ग्वालों के |
| **पशून् ।** | ६. पशुओं को | **मनोज्ञया ॥** | १२. चित्त उनके वश में नहीं रहते हैं |

श्लोकार्थ—कभी मेघ के समान गम्भीर वाणी से दूर गये हुये पशुओं को नाम ले-लेकर बड़े प्रेम से पुकारते हैं। तब गायों और ग्वालों का चित्त उनके वश में नहीं रहता है।

## त्रयोदशः श्लोकः

चकोरक्रौञ्चचक्राह्वभारद्वाजांश्च बर्हिणः ।
अनुरौति स्म सत्त्वानां भीतवद् व्याघ्रसिंहयोः ॥१३॥

पदच्छेद— चकोर क्रौञ्च चक्राह्व भारद्वाजान् च बर्हिणः ।
अनुरौति स्म सत्त्वानाम् भीतवत् व्याघ्रसिंहयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चकोर | १. | कभी चकोर | अनुरौति स्म | ७. | अनुकरण करते कभी |
| क्रौञ्च | २. | क्रौञ्च | सत्त्वानाम् | ८. | जीवों के समान |
| चक्राह्व | ३. | चकवा | भीतवत् | ११. | भयभीत की सी लीला करते |
| भारद्वाजान् | ४. | भरदूल | व्याघ्र | ९. | बाघ |
| च | ५. | और | सिंहयोः ॥ | १०. | सिंह आदि की गर्जना से |
| बर्हिणः । | ६. | मयूरों की बोली का | | | |

श्लोकार्थ—कभी चकोर, क्रौञ्च, चकवा, भरदूल और मयूरों की बोली का अनुकरण करते । कभी जीवों के समान बाघ, सिंह आदि की गर्जना से भयभीत की सी लीला करते ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

क्वचित् क्रीडापरिश्रान्तं गोपोत्सङ्गोपबर्हणम् ।
स्वयं विश्रमयत्यार्यं पादसंवाहनादिभिः ॥१४॥

पदच्छेद— क्वचित् क्रीडा परिश्रान्तम् गोप उत्सङ्ग उपबर्हणम् ।
स्वयम् विश्रमयति आर्यम् पाद संवाहन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | कभी | स्वयम् | ८ | स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण |
| क्रीडा | २. | खेल के कारण | विश्रमयति | १२. | थकावट दूर करते |
| परिश्रान्तम् | ३. | थके हुये | आर्यम् | ४. | बलराम जी के किसी |
| गोप | ५. | ग्वालों की | पाद | ९. | उनके पैर |
| उत्सङ्ग | ६. | गोद में | संवाहन | १०. | दबाते और |
| उपबर्हणम् । | ७. | सिर रख कर लेट जाने पर | आदिभिः ॥ | ११. | अन्य परिचर्या करके उनकी |

श्लोकार्थ—कभी खेल के कारण थके हुये बलराम जी के किसी ग्वाले की गोद में सिर रख कर लेट जाने पर स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण उनके पैर दबाते और अन्य परिचर्या करके उनकी थकावट दूर करते थे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**नृत्यतो गायतः क्वापि वल्गतो युध्यतो मिथः ।**
**गृहीतहस्तौ गोपालान् हसन्तौ प्रशशंसतुः ॥१५॥**

पदच्छेद— नृत्यतः गायतः क्वापि वल्गतः युध्यतः मिथः ।
गृहीत हस्तौ गोपालान् हसन्तौ प्रशशंसतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नृत्यतः | २. नाचने | गृहीत | ८. पकड़ कर |
| गायतः | ३. गाने और | हस्तौ | ७. श्रीकृष्ण और बलराम हाथ |
| क्वापि | १. कभी ग्वाल बालों के | गोपालान् | ९. ग्वाल-बालों पर |
| वल्गतः | ६. उछलकूद करने पर | हसन्तौ | १०. हंसते हुये उनकी |
| युध्यतः | ५. कुश्ती लड़ने या | प्रशशंसतुः ॥ | ११. प्रशंसा करते थे |
| मिथः ॥ | ४. परस्पर | | |

श्लोकार्थ—कभी ग्वाल-बालों के नाचने, गाने और परस्पर कुश्ती लड़ने या उछल कूद करने पर श्रीकृष्ण और बलराम हाथ पकड़ कर ग्वाल-बालों पर हँसते हुये उनकी प्रशंसा करते थे ॥

## षोडशः श्लोकः

**क्वचित् पल्लवतल्पेषु नियुद्धश्रमकर्शितः ।**
**वृक्षमूलाश्रयः शेते गोपोत्सङ्गोपबर्हणः ॥१६॥**

पदच्छेद— क्वचित् पल्लव तल्पेषु नियुद्ध श्रमकर्शितः ।
वृक्ष मूल आश्रयः शेते गोप उत्सङ्ग उपबर्हणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. कभी-कभी स्वयं श्रीकृष्ण | वृक्षमूल | ५. किसी वृक्ष की जड़ के |
| पल्लव | ७. कोमल पल्लवों की | आश्रयः | ६. आश्रय में |
| तल्पेषु | ८. सेज पर | शेते | १२. लेट जाते |
| नियुद्ध | २. ग्वालों के साथ लड़ने की | गोप | ९. किसी ग्वाले की |
| श्रम | ३. थकावट से | उत्संग | १०. गोद में |
| कर्शितः । | ४. चूर होकर | उपबर्हणः ॥ | ११. सिर रख कर |

श्लोकार्थ—कभी-कभी स्वयं श्रीकृष्ण ग्वालों के साथ लड़ने की थकावट से चूर होकर किसी वृक्ष की जड़ के आश्रय में कोमल पल्लवों की सेज पर किसी ग्वाले की गोद में सिर रख कर लेट जाते ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**पादसंवाहनं चक्रुः केचित्तस्य महात्मनः ।**
**अपरे हतपाप्मानो व्यजनैः समवीजयन् ॥१७॥**

पदच्छेद— पाद संवाहनम् चक्रुः केचित् तस्य महात्मनः ।
अपरे हत पाप्मानः व्यजनैः समवीजयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पाद | ४. पैर | अपरे | ७. अन्य कोई |
| संवाहनम् | ५. दबाने | हत | ९. रहित गोप उन पर |
| चक्रुः | ६. लगते और | पाप्मानः | ८. पाप |
| केचित् | १. कोई | व्यजनैः | १०. पंखे से |
| तस्य | ३. उनके | समवीजयन् ॥ | ११. हवा करन लगते थे |
| महात्मनः । | २. पुण्यात्मा गोप | | |

श्लोकार्थ—कोई पुण्यात्मा गोप उनके पैर दबाने लगते । और अन्य कोई पाप रहित गोप उन पर पंखे से हवा करने लगते थे ।

## अष्टादशः श्लोकः

**अन्ये तदनुरूपाणि मनोज्ञानि महात्मनः ।**
**गायन्ति स्म महाराज स्नेहक्लिन्नधियः शनैः ॥१८॥**

पदच्छेद— अन्ये तत् अनुरूपाणि मनोज्ञानि महात्मनः ।
गायन्ति स्म महाराज स्नेह क्लिन्नधियः शनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्ये | २. अन्य कोई | गायन्ति स्म | १०. गाने लगते |
| तत् | ६. श्रीकृष्ण को | महाराज | १. हे परीक्षित् ! |
| अनुरूपाणि | ७. प्रिय लगने वाले | स्नेहक्लिन्न | ३. स्नेहसिक्त |
| मनोज्ञानि | ८. मनोहर गीत | धियः | ४. मन वाले |
| महात्मनः । | ५. पुण्यात्मा गोप | शनैः ॥ | ९. धीरे-धीरे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अन्य कोई स्नेहसिक्त मन वाले पुण्यात्मा गोप श्रीकृष्ण को प्रिय लगने वाले मनोहर गीत धीरे-धीरे गाने लगते ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**एवं निगूढात्मगतिः स्वमायया गोपात्मजत्वं चरितैर्विडम्बयन् ।**
**रेमे रमालालितपादपल्लवो ग्राम्यैः समं ग्राम्यवदीशचेष्टितः ॥१९॥**

पदच्छेद— एवम् निगूढ आत्मगतिः स्वमायया गोप आत्मजत्वम् चरितैः विडम्बयन् ।
रेमे रमा लालित पादपल्लवः ग्राम्यैः समम् ग्राम्यवत् ईश चेष्टितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | रेमे | १६. | आनन्दित होते थे |
| निगूढ | ४. | छिपा कर | रमा | ९. | भगवती लक्ष्मी |
| आत्मगतिः | ३. | अपने ऐश्वर्य को | लालित | ११. | सेवा में संलग्न रहती हैं |
| स्वमायया | २. | अपनी माया से | पादपल्लवः | १०. | जिनके चरण कमलों की वे |
| गोप | ५. | गोप | ग्राम्यैः समम् | १३. | ग्रामीण बालकों के साथ |
| आत्मजत्वम् | ६. | बालकों की सी | ग्राम्यवत् | १४. | ग्रामीण खेल |
| चरितैः | ७. | लीलायें | ईश | १२. | हो भगवान् श्रीकृष्ण |
| विडम्बयन् । | ८. | करते और | चेष्टितः ॥ | १५. | खेल कर |

श्लोकार्थ—इस प्रकार अपनी माया से अपने ऐश्वर्य को छिपा कर गोप बालकों की सी लीलायें करते और भगवती लक्ष्मी जिनके चरण कमलों की सेवा में रहती है, वे ही भगवान् श्रीकृष्ण ग्रामीण बालकों के साथ ग्रामीण खेल-खेलकर आनन्दित होते ॥

## विंशः श्लोकः

**श्रीदामा नाम गोपालो रामकेशवयोः सखा ।**
**सुबलस्तोककृष्णाद्या गोपाः प्रेम्णेदमब्रुवन् ॥२०॥**

पदच्छेद— श्रीदामा नाम गोपालः राम केशवयोः सखा ।
सुबल स्तोककृष्ण आद्याः गोपाः प्रेम्णेदम् अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रीदामा | ४. | श्रीदामा | सुबल | ७. | उन्होंने और सुबल तथा |
| नाम | ५. | नाम के | स्तोककृष्ण | ८. | स्तोक कृष्ण (छोटे कृष्ण) |
| गोपालः | ६. | एक गोप बालक थे | आद्याः | ९. | आदि |
| राम | १. | बलराम जी और | गोपाः | १०. | ग्वाल बालों ने |
| केशवयोः | २. | श्रीकृष्ण के | प्रेम्णेदम् | ११. | श्याम और राम से प्रेम से ऐसा |
| सखा । | ३. | सखाओं में | अब्रुवन् ॥ | १२. | कहा |

श्लोकार्थ—बलराम जी और श्रीकृष्ण के सखाओं में श्री दामा नाम के एक गोप बालक थे । उन्होंने और सुबल तथा स्तोक कृष्ण (छोटे कृष्ण) आदि ग्वाल-बालों ने श्याम और बलराम से प्रेम से ऐसा कहा ॥

## एकविंशः श्लोकः

**राम राम महाबाहो कृष्ण दुष्टनिबर्हण ।**
**इतोऽविदूरे सुमहद् वनं तालालिसङ्कुलम् ॥२१॥**

पदच्छेद— राम-राम महाबाहो कृष्ण दुष्ट निबर्हण ।
इतः अविदूरे सुमहत् वनम् तालालि सङ्कुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **राम-राम** | १. | हमें सुख देने वाले बलराम जी | इतः | ६. | यहाँ से |
| **महाबाहो** | २. | आप तो बहुत बलवान् हैं | अविदूरे | ७. | थोड़ी ही दूर पर |
| **कृष्ण** | ५. | श्रीकृष्ण जी | सुमहत् | १०. | एक बहुत बड़ा |
| **दुष्ट** | ३. | दुष्टों को | वनम् | ११. | वन है |
| **निबर्हण ।** | ४. | नष्ट करने वाले | तालालि | ८. | ताड़ की पंक्तियों से |
| | | | सङ्कुलम् ॥ | ९. | भरा हुआ |

श्लोकार्थ—हमें सुख देने वाले बलराम जी आप तो बहुत बलवान् हैं। दुष्टों को नष्ट करने वाले यहाँ से थोड़ी ही दूर पर ताड़ की पंक्तियों से भरा हुआ एक बहुत बड़ा वन है।

## द्वाविंशः श्लोकः

**फलानि तत्र भूरीणि पतन्ति पतितानि च ।**
**सन्ति किंत्ववरुद्धानि धेनुकेन दुरात्मना ॥२२॥**

पदच्छेद— फलानि तत्र भूरीणि पतन्ति पतितानि च ।
सन्ति किन्तु अवरुद्धानि धेनुकेन दुरात्मना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **फलानि** | ३. | फल | सन्ति | ६. | है |
| **तत्र** | १. | वहाँ पर | किन्तु | ७. | परन्तु |
| **भूरीणि** | २. | बहुत से | अवरुद्धानि | १०. | रोक लगा दी है |
| **पतन्ति** | ४. | गिरते रहते हैं | धेनुकेन | ८. | धेनुकासुर नामक |
| **पतितानि च ।** | ५. | और बहुत से पहले के गिरे हुये हैं | दुरात्मना ॥ | ९. | दुष्ट ने उन पर |

श्लोकार्थ—वहाँ पर बहुत से फल गिरते रहते हैं। और बहुत से पहले के गिरे हुये हैं। परन्तु धेनुकासुर दुष्ट ने उन पर रोक लगा दी है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**सोऽतिवीर्योऽसुरो राम हे कृष्ण खररूपधृक् ।**
**आत्मतुल्यबलैरन्यैर्ज्ञातिभिर्बहुभिर्वृतः ॥२३॥**

पदच्छेद— सः अतिवीर्यः असुरः राम हे कृष्ण खरूपधृक् ।
आत्मतुल्य बलैः अन्यैः ज्ञातिभिः बहुभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सः | ५. वह | आत्म तुल्य | ८. | फिर अपने समान |
| अतिवीर्यः | ७. बड़ा बलवान् है | बलैः | ९. | बल वाले |
| असुरः | ६. राक्षस | अन्यैः | १०. | अन्य |
| राम | १. हे बलराम जो ! | ज्ञातिभिः | १२. | सम्बन्धियों से सदा |
| हे कृष्ण | २. हे श्रीकृष्ण जो ! | बहुभिः | ११. | अनेक |
| खररूप | ३. गधे का रूप | वृतः ॥ | १३. | घिरा रहता है |
| धृक् । | ४. धारण करने वाला | | | |

श्लोकार्थ—हे बलराम जी ! हे श्रीकृष्ण जो ! गधे का रूप धारण करने वाला वह राक्षस बड़ा बलवान् है । फिर अपने समान बल वाले अन्य अनेक सम्बन्धियों से सदा घिरा रहता है ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**तस्मात् कृतनराहाराद् भीतैर्नृभिरमित्रहन् ।**
**न सेव्यते पशुगणैः पक्षिसङ्घैर्विवर्जितम् ॥२४॥**

पदच्छेद— तस्मात् कृत नर आहारात् भीतैः नृभिः अमित्रहन् ।
न सेव्यते पशुगणैः पक्षि सङ्घैः विवर्जितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. इसलिये | न सेव्यते | ८. | उस वन में जाना बन्द कर दिया है |
| कृत नर | ४. करने के कारण | पशुगणैः | ७. | पशुओं ने |
| आहारात् | ३. मनुष्यों का भोजन | पक्षि | ९. | पक्षियों के |
| भीतैः | ५. भयभीत होकर | सङ्घैः | १०. | समुदाय ने भी उसे |
| नृभिः | ६. मनुष्यों और | विवर्जितम् ॥ | ११. | छोड़ दिया है |
| अमित्रहन् । | २. हे शत्रुघाती भैया ! | | | |

श्लोकार्थ—इसलिये हे शत्रुघाती भैया ! मनुष्यों का भोजन करने के कारण भयभीत होकर मनुष्यों और पशुओं ने उस वन में जाना छोड़ दिया है। पक्षियों के समुदाय ने भी उसे छोड़ दिया है ।।

## पञ्चविंशः श्लोकः

**विद्यन्तेऽभुक्तपूर्वाणि फलानि सुरभीणि च।**
**एष वै सुरभिर्गन्धो विषूचीनोऽवगृह्यते ॥२५॥**

पदच्छेद— विद्यन्ते अभुक्त पूर्वाणि फलानि सुरभीणि च।
एषः वै सुरभिः गन्धः विषूचीनः अवगृह्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **विद्यन्ते** | ३. हैं | **एषः** | ८. यह |
| **अभुक्त** | ६. कभी नहीं खाये | **वै** | ७. निश्चय ही |
| **पूर्वाणि** | ५. हमने वे पहले | **सुरभिः** | ९. उन्हीं की मन्द-मन्द |
| **फलानि** | १. वे फल | **गन्धः** | १०. सुगन्ध |
| **सुरभीणि** | २. अत्यन्त सुगन्धित | **विषूचीनः** | ११. सब ओर |
| **च।** | ४. और | **अवगृह्यते ॥** | १२. फैल रही है |

श्लोकार्थ—वे फल अत्यन्त सुगन्धित हैं। और हमने वे पहले कभी नहीं खाये। निश्चय ही यह उन्हीं की मन्द-मन्द सुगन्ध सब ओर फैल रही है ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**प्रयच्छ तानि नः कृष्ण गन्धलोभितचेतसाम्।**
**वाञ्छास्ति महती राम गम्यतां यदि रोचते ॥२६॥**

पदच्छेद— प्रयच्छ तानि नः कृष्ण गन्ध लोभित चेतसाम्।
वाञ्छाअस्ति महती राम गम्यताम् यदि रोचते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **प्रयच्छ** | ९. प्राप्त कराइये | **वाञ्छाअस्ति** | ६. इच्छा है अतः |
| **तानि** | ७. वे फल | **महती** | ५. उन्हें पाने की अत्यधिक |
| **नः** | ८. हमें | **राम** | १०. हे बलराम जी ! |
| **कृष्ण** | १. हे श्रीकृष्ण ! | **गम्यताम्** | १३. अवश्य चलिये |
| **गन्ध** | २. उनकी गन्ध से | **यदि** | ११. यदि |
| **लोभित** | ४. मोहित हो गया है | **रोचते ॥** | १२. आपको रुचे तो वहाँ |
| **चेतसाम्।** | ३. हमारा मन | | |

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! उनकी गन्ध से हमारा मन मोहित हो गया है। उन्हें पाने की अत्यधिक इच्छा है। अतः वे फल हमें प्राप्त कराइये। हे बलराम जी। यदि आपको रुचे तो वहाँ अवश्य चलिये।

## सप्तविंशः श्लोकः

**एवं सुहृद्वचः श्रुत्वा सुहृत्प्रियचिकीर्षया ।**
**प्रहस्य जग्मतुर्गोपैर्वृतौ तालवनं प्रभू ॥२७॥**

पदच्छेद— एवम् सुहृत् वचः श्रुत्वा सुहृत् प्रिय चिकीर्षया ।
प्रहस्य जग्मतुः गोपैः वृतौ तालवनम् प्रभू ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | प्रहस्य | ९. | हंस कर |
| सुहृत् | २. | अपने सखाओं की | जग्मतुः | १३. | चल पड़े |
| वचः | ३. | बात को | गोपैः | १०. | ग्वाल वालों से |
| श्रुत्वा | ४. | सुन कर | वृतौ | ११. | घिरे हुये |
| सुहृत् | ६. | अपने सखाओं को | तालवनम् | १२. | तालवन के लिये |
| प्रिय | ७. | प्रसन्न करने की | प्रभू ॥ | ५ | श्रीकृष्ण और बलराम |
| चिकीर्षया । | ८. | इच्छा से | | | |

श्लोकार्थ—इस प्रकार अपने सखाओं की बात को सुनकर श्रीकृष्ण और बलराम अपने सखाओं को प्रसन्न करने की इच्छा से हंसकर ग्वालवालों से घिरे हुये तालवन के लिये चल पड़े ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**बलः प्रविश्य बाहुभ्यां तालान् सम्परिकम्पयन् ।**
**फलानि पातयामास मतङ्गज इवौजसा ॥२८॥**

पदच्छेद— बलः प्रविश्य बाहुभ्याम् तालान् सम्परिकम्पयन् ।
फलानि पातयामास मतङ्गजः इव ओजसा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बलः | १. | बलराम जी ने उस | फलानि | ९. | फलों को |
| प्रविश्य | २. | वन में प्रवेश करके | पातयामास | १०. | नीचे गिराया |
| बाहुभ्याम् | ६. | अपनी भुजाओं से | मतङ्गजः | ३. | हाथी के बच्चे के |
| तालान् | ७. | ताड़-वृक्षों को | इव | ४. | समान |
| सम्परिकम्पयन् । | ८. | हिलाकर | ओजसा ॥ | ५. | बल पूर्वक |

श्लोकार्थ—बलराम जी ने वन में प्रवेश करके हाथी के बच्चे के समान बल पूर्वक अपनी भुजाओं से ताड़ वृक्षों को हिलाकर फलों को नीचे गिराया ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**फलानां पततां शब्दं निशम्यासुररासभः ।**
**अभ्यधावत् क्षितितलं सनगं परिकम्पयन् ॥२९॥**

पदच्छेद— फलानाम् पतताम् शब्दम् निशम्य असुर रासभः ।
अभ्यधावत् क्षितितलम् सनगम् परिकम्पयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| फलानाम् | ३. फलों के | रासभः । | १. | गधे के रूप में रहने वाले |
| पतताम् | ४. गिरने का | अभ्यधावत् | १०. | उनकी ओर दौड़ा |
| शब्दम् | ५. शब्द | क्षितितलम् | ८. | समस्त पृथ्वी तल को |
| निशम्य | ६. सुना तो | सनगम् | ७. | पर्वतों के साथ |
| असुर | २. दैत्य ने जब | परिकम्पयन् ॥ | ९. | कंपाता हुआ |

श्लोकार्थ—गधे के रूप में रहने वाले दैत्य ने जब फलों के गिरने का शब्द सुना तो पर्वतों के साथ समस्त पृथ्वीतल को कंपाता हुआ उनकी ओर दौड़ा ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**समेत्य तरसा प्रत्यग् द्वाभ्यां पद्भ्यां बलं बली ।**
**निहत्योरसि काशब्दं मुञ्चन् पर्यसरत् खलः ॥३०॥**

पदच्छेद— समेत्य तरसा प्रत्यक् द्वाभ्याम् पद्भ्याम् बलम् बली ।
निहत्य उरसि काशब्दम् मुञ्चन् पर्यसरत् खलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| समेत्य | ५. आकर | निहत्य | ९. | प्रहार करके |
| तरसा | २. उसने बड़े जोर से | उरसि | ८. | उनकी छाती में |
| प्रत्यक् | ४. सामने | काशब्दम् | १०. | जोर से रेंकता |
| द्वाभ्याम् | ६. पिछले दोनों | मुञ्चन् | ११. | हुआ |
| पद्भ्याम् | ७. पैरों से | पर्यसरत् | १३. | वहाँ से हट गया |
| बलम् | ३. बलराम जी के | खलः ॥ | १२. | वह दुष्ट |
| बली । | १. वह बड़ा बली था | | | |

श्लोकार्थ—वह बड़ा बली था । उसने बड़े वेग से बलराम जी के सामने आकर पिछले दोनों पैरों से उनकी छाती पर प्रहार करके जोर से रेंकता हुआ वह दुष्ट वहाँ से हट गया ॥

# एकत्रिंशः श्लोकः

**पुनरासाद्य संरब्ध उपक्रोष्टा पराक् स्थितः ।**
**चरणावपरौ राजन् बलाय प्राक्षिपद् रुषा ॥३१॥**

पदच्छेद— पुनः आसाद्य संरब्धः उपक्रोष्टा पराक् स्थितः ।
चरणौ अपरौ राजन् बलाय प्राक्षिपद् रुषा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुनः | ४. | फिर | चरणौ | १०. | पैरों को |
| आसाद्य | ५. | बलरामजी के पास पहुँचकर | अपरौ | ९. | पिछले दोनों |
| संरब्धः | ८. | बड़े क्रोध से | राजन् | १. | हे राजन् |
| उपक्रोष्टा | २. | वह गधा | बलाय | ११. | बलराम जी पर |
| पराक् | ६ | उनके पीठ पीछे | प्राक्षिपद् | १२. | चलाया |
| स्थितः । | ७. | स्थित होकर | रुषा ॥ | ३. | क्रोध में भर कर |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उस गधे ने क्रोध में भर कर फिर बलरामजी के सामने पहुँच कर उनके पीठ पीछे स्थित होकर बड़े क्रोध से पिछले दोनों पैरों को बलरामजी पर चलाया ॥

# द्वात्रिंशः श्लोकः

**स तं गृहीत्वा प्रपदोर्भ्रामयित्वैकपाणिना ।**
**चिक्षेप तृणराजाग्रे भ्रामणत्यक्तजीवितम् ॥३२॥**

पदच्छेद— सः तम् गृहीत्वा प्रपदोः भ्रामयित्वा एक पाणिना ।
चिक्षेप तृणराज अग्रे भ्रामण त्यक्त जीवितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | बलरामजी ने | चिक्षेप | १०. | दे मारा |
| तम् | ४. | उस गधे के | तृणराज | ८. | ताड़ के पेड़ |
| गृहीत्वा | ६. | पकड़ कर | अग्रे | ९. | पर |
| प्रपदोः | ५. | दोनों पैर | भ्रामण | ११. | घुमाते समय ही |
| भ्रामयित्वा | ७. | उसे घुमाकर | त्यक्त | १३. | उड़ गये थे |
| एक | २. | अपने एक ही | जीवितम् ॥ | १२. | उसके प्राण पखेरू |
| पाणिना । | ३. | हाथ से | | | |

श्लोकार्थ—बलरामजी ने अपने एक ही हाथ से उस गधे के दोनों पैर पकड कर ताड़ के पेड़ पर दे मारा । घुमाते समय ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये थे ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तेनाहतो महातालो वेपमानो बृहच्छिराः ।**
**पार्श्वस्थं कम्पयन् भग्नः स चान्यं सोऽपि चापरम् ॥३३॥**

पदच्छेद— तेन आहतः महातालः वेपमानः बृहत् शिराः ।
पार्श्वस्थम् कम्पयन् भग्नः सः च अन्यम् सः अपि च अपरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तेन | १. उसके गिरने की | पार्श्वस्थम् | ९. समीपवर्ती |
| आहतः | २. चोट से | कम्पयन् | १०. वृक्षों को गिराया और |
| महा | ३. महान् | भग्नः | ८. स्वयं टूट कर |
| तालः | ४. ताड़ का वृक्ष | सः च | ७. और उसने |
| वेपमानः | ७. वह टूट कर गिर पड़ा | अन्यम् | १२. अन्य वृक्षों को और उसने |
| बृहत् | ६. बहुत विशाल था | सः अपि | ११. उसने भी |
| शिरः । | ५. जिसका ऊपरी भाग | अपरम् ॥ | १३. दूसरे अन्य वृक्षों को गिरा दिया |

श्लोकार्थ—उसके गिरने की चोट से महान् ताड़ का वृक्ष जिसका ऊपरी भाग बहुत ही विशाल था वह टूटकर गिर पड़ा और उसने स्वयं टूटकर समीपवर्ती वृक्षों को गिराया और उसने भी अन्य वृक्षों को और उसने दूसरे अन्य वृक्षों को गिरा दिया ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**बलस्य लीलयोत्सृष्टखरदेहहताहताः ।**
**तालाश्चकम्पिरे सर्वे महावातेरिता इव ॥३४॥**

पदच्छेद— बलस्य लीलया उत्सृष्ट खरदेह हत आहताः ।
तालाः चकम्पिरे सर्वे महावात ईरिताः इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बलस्य | १. बलरामजी द्वारा | तालाः | ६ वे सभी ताड़ के वृक्ष |
| लीलया | २. लीला पूर्वक | चकम्पिरे | १२. काँपने लगे |
| उत्सृष्ट | ३. फेंके हुये | सर्वे | ८. सभी वृक्ष |
| खरदेह | ४. गधे के शरीर से | महावात | ९. झंझावात से |
| हत | ५. चोट खा-खाकर | ईरिताः | १०. प्रेरित हुये के |
| आहताः । | ७. हिल गये | इव ॥ | ११. समान |

श्लोकार्थ—बलराम जी द्वारा लीलापूर्वक फेंके हुये गधे के शरीर से चोट खा-खा कर वे सभी ताड़ के वृक्ष हिल गये । सभी वृक्ष झंझावात से प्रेरित हुये के समान काँपने लगे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**नैतच्चित्रं भगवति ह्यनन्ते जगदीश्वरे ।**

**ओतप्रोतमिदं यस्मिंस्तन्तुष्वङ्ग यथा पटः ॥३५॥**

पदच्छेद— न एतत् चित्रम् भगवति हि अनन्ते जगत् ईश्वरे ।
ओत प्रोतम् इदम् यस्मिन् तन्तुषु अङ्ग यथा पटः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १४. | नहीं है | ओत प्रोतम् | ८. | ओत-प्रोत है |
| एतत् | १२. | उनके लिये यह | इदम् | ७. | यह सारा संसार वैसे ही |
| चित्रम् | १३. | कोई आश्चर्य | यस्मिन् | ६. | उनमें |
| भगवति | २. | भगवान् बलराम | तन्तुषु | १०. | तागों में |
| हि अनन्ते | ३. | अनन्त | अङ्ग | १. | परीक्षित् |
| जगत् | ४. | जगत् के | यथा | ६. | जैसे |
| ईश्वरे । | ५. | ईश्वर है | पटः ॥ | ११. | वस्त्र होता है |

श्लोकार्थ—परीक्षित् ! भगवान् बलराम अनन्त जगत् के ईश्वर हैं । उनमें यह सारा संसार वैसे ही ओत-प्रोत है, जैसे वस्त्र तागों में होता हैं । उनके लिये यह कोई आश्चर्य नहीं है ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**ततः कृष्णं च रामं च ज्ञातयो धेनुकस्य ये ।**

**क्रोष्टारोऽभ्यद्रवन् सर्वे संरब्धा हतबान्धवाः ॥३६॥**

पदच्छेद— ततः कृष्णम् च रामम् च ज्ञातयः धेनुकस्य ये ।
क्रोष्टारः अभ्यद्रवन् सर्वे संरब्धाः हत बान्धवाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | उस समय | क्रोष्टारः | ८. | आग बबूला हो गये वे |
| कृष्णम् | ६. | श्रीकृष्ण पर | अभ्यद्रवन् | १२. | बड़े वेग से टूट पड़े |
| च | १०. | और | सर्वे | ६. | सबके सब |
| रामम् च | १. | बलराम पर | संरब्ध | ७. | क्रोध के कारण |
| ज्ञातयः | ३. | भाई-बन्धु | हत | ५. | मारे जाने से |
| धेनुकस्य ये । | २. | जो धेनुकासुर के | बान्धवाः ॥ | ४. | अपने भाई के |

श्लोकार्थ—उस समय जो धेनुकासुर के भाई बन्धु अपने भाई के मारे जाने से सबके सब क्रोध के कारण आग बबूला हो गये, वे श्रीकृष्ण पर और बलराम पर बड़े वेग से टूट पड़े ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**तांस्तानापततः कृष्णो रामश्च नृप लीलया ।**
**गृहीतपश्चाच्चरणान् प्राहिणोत्तृणराजसु ॥३७॥**

पदच्छेद— तान् तान् आपततः कृष्णः रामः च नृप लीलया ।
गृहीत पश्चात् चरणान् प्राहिणोत् तृणराजसु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तान्-तान् | ५. | उन पास | लीलया । | ७. | खेल ही खेल में |
| आपततः | ६. | आये हुये राक्षसों को | गृहीत | १०. | पकड़ कर |
| कृष्णः | ४. | श्रीकृष्ण ने | पश्चात् | ८. | पीछे के |
| रामः | २. | बलराम | चरणान् | ९. | पैरों को |
| च | ३. | और | प्राहिणात् | १२. | दे मारा |
| नृप | १. | हे राजन् ! | तृणराजसु ॥ | ११. | ताल वृक्षों पर |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! बलराम और श्रीकृष्ण ने उन पास आये हुये राक्षसों को खेल ही खेल में पीछे के पैरों को पकड़ कर ताल वृक्षों पर दे मारा ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**फलप्रकरसङ्कीर्णं दैत्यदेहैर्गतासुभिः ।**
**रराज भूः सतालाग्रैर्घनैरिव नभस्तलम् ॥३८॥**

पदच्छेद— फल प्रकर सङ्कीर्णम् दैत्य देहैः गत असुभिः ।
रराज भूः सतालाग्रैः घनैः इव नभः तलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फल | ७. | फलों के | रराज | १०. | सुशोभित हुई |
| प्रकर | ८. | समूह से | भूः | १. | उस समय वह पृथ्वी |
| सङ्कीर्णम् | ९. | इस प्रकार भर कर | सतालाग्रैः | २. | ताड़ के वृक्षों से |
| दैत्य | ३. | असुरों के | घनैः | १२. | ब दलों से आच्छादित होकर |
| देहैः | ६. | शरीरों से और | इव | ११. | जैसे |
| गत | ५. | हीन | नभः | १३. | आकाश |
| असुभिः । | ४. | प्राण | तलम् ॥ | १४. | तल सुशोभित होता है |

श्लोकार्थ—उस समय वह पृथ्वी ताल के वृक्षों से, असुरों के प्राण हीन शरीरों से और फलों के समूह से भर कर इस प्रकार सुशोभित हुई जैसे बादलों से आच्छादित होकर आकाशतल सुशोभित होता है ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**तयोस्तत् सुमहत् कर्म निशम्य विबुधादयः ।**
**मुमुचुः पुष्पवर्षाणि चक्रुर्वाद्यानि तुष्टुवुः ॥३९॥**

पदच्छेद— तयोः तत् सुमहत् कर्म निशम्य विबुधादयः ।
मुमुचुः पुष्प वर्षाणि चक्रुः वाद्यानि तुष्टुवुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | १. | बलराम और कृष्ण के | मुमुचुः | ९. | की और वे |
| तत् | २. | इस | पुष्प | ७. | पुष्पों को |
| सुमहत् | ३. | महान् | वर्षाणि | ८. | वर्षा |
| कर्म | ४. | कार्य को | चक्रुः | १२. | करने लगे |
| निशम्य | ५. | सुन कर | वाद्यानि | १०. | वाजे बजा-बजाकर उनकी |
| विबुधादयः । | ६. | देवों आदि ने (उन पर) | तुष्टुवुः ॥ | ११. | स्तुति |

श्लोकार्थ—बलराम और श्रीकृष्ण के इस महान् कार्य को सुनकर देवों आदि ने उन पर पुष्पों की वर्षा की और वे बाजे बजा-बजाकर उनकी स्तुति करने लगे ।

# चत्वारिंशः श्लोकः

**अथ तालफलान्यादन् मनुष्याः गतसाध्वसाः ।**
**तृणं च पशवश्चेरुर्हतधेनुककानने ॥४०॥**

पदच्छेद— अथ ताल फलानि आदन् मनुष्याः गत साध्वसाः ।
तृणम् च पशवः चेरुः हत धेनुक कानने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | ११. | तब | तृणम् | १३. | घास |
| ताल | ७. | ताल के | च | १०. | और |
| फलानि | ८. | फल | पशवः | १२. | पशु भी |
| आदन् | ९. | खाने लगे | चेरुः | १४. | चरने लगे |
| मनुष्याः | ४. | मनुष्य | हत | ३. | मारा गया तो |
| गत | ६. | रहित होकर | धेनुक | २. | धेनुकासुर |
| साध्वसाः । | ५. | भय | कानने ॥ | १. | उस वन में जब |

श्लोकार्थ—उस वन में जब धेनुकासुर मारा गया तो मनुष्य भयरहित होकर ताल के फल खाने लगे और तब पशु भी घास चरने लगे ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

कृष्णः कमलपत्राक्षः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
स्तूयमानोऽनुगैर्गोपैः साग्रजो व्रजमाव्रजत् ॥४१॥

पदच्छेद— कृष्णः कमल पत्राक्षः पुण्य श्रवण कीर्तनः ।
स्तूयमानः अनुगैः गोपैः स अग्रजः व्रजम् आव्रजत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णः | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण | स्तूयमान | १०. | उनकी स्तुति कर रहे थे |
| कमल | १. | कमल दल | अनुगैः | ९. | उनके पीछे चलते हुये |
| पत्राक्षः | २. | लोचन | गोपैः | ८. | उनके साथी ग्वाल बाल |
| पुण्य | १३. | सबसे बढ़कर पवित्र हैं | स | ५. | साथ |
| श्रवण | ११. | भगवान् की लीलाओं का श्रवण | अग्रजः | ४. | बड़े भाई बलराम जी के |
| कीर्तनः । | १२. | कीर्तन ही | व्रजम् | ६. | व्रज में |
| | | | आव्रजत् ॥ | ७. | आये |

श्लोकार्थ—कमल दल लोचन भगवान् श्रीकृष्ण बड़े भाई बलराम जी के साथ व्रज में आये । उनके साथी ग्वाल बाल उनके पीछे चलते हुये उनको स्तुति कर रहे थे । भगवान् की लीलाओं का श्रवण कीर्तन ही सबसे बढ़कर पवित्र है ॥

## द्विचत्वारिंशः श्लोकः

तं गोरजश्छुरितकुन्तलबद्धबर्हवन्यप्रसूनरुचिरेक्षणचारुहासम् ।
वेणुं क्वणन्तमनुगैरनुगीतकीर्तिं गोप्यो दिदृक्षितदृशोऽभ्यगमन् समेताः॥४२॥

पदच्छेद—तम् गोरजः छुरित कुन्तलबद्ध बर्हवन्य प्रसून रुचिर ईक्षण चारु हासम् ।
वेणुम् क्वणन्तम् अनुगैः अनुगीत कीर्तिम् गोप्यः दिदृक्षित दृशः अभ्यगमन् समेताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | उनकी | वेणुम् | १०. | वे बंशी |
| गोरजः | ३. | गऊओं के खुरों की धूली | क्वणन्तम् | ११. | बजा रहे थे |
| छुरित | ४. | पड़ी थी | अनुगैः | १२. | ग्वाल बाल उनकी |
| कुन्तल | २. | घुंघराले अलकों पर | अनुगीत कीर्तिम् | १३. | कीर्तिका गान कर रहे थे |
| बद्धबर्ह | ५. | सिर पर मोर पंख | गोप्यः | १५. | गोपियों की |
| वन्य प्रसून | ६. | बालों में जंगली फूल | दिदृक्षित | १४. | उनके दर्शन हेतु |
| रुचिर | ७. | नेत्रों में मधुर | दृशः | १६. | आँखें तरस रही थीं |
| ईक्षण | ८. | चितवन और | अभ्यगमन् | १८. | व्रज से बाहर निकल आईं |
| चारु हासम् । | ९. | मुख पर मनोहर मुस्कान थी | समेताः ॥ | १७. | वे एक साथ |

श्लोकार्थ—उनकी घुंघराले अलकों पर गऊओं के खुरों की धूली पड़ी थी । सिर पर मोर पंख, बालों में जंगली फूल, नेत्रों में मधुर चितवन और मुख पर मनोहर मुसकान थी । वे बंशी बजा रहे थे । ग्वाल-बाल उनकी कीर्ति का गान कर रहे थे । उनके दर्शन हेतु गोपियों की आँखें तरस रही थीं । वे एक साथ व्रज के बाहर निकल आईं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**पीत्वा मुकुन्दमुखसारघमक्षिभृङ्गैस्तापं जहुर्विरहजं व्रजयोषितोऽह्नि ।**
**तत्सत्कृतिं समधिगम्य विवेश गोष्ठं सव्रीडहाससविनयं यदपाङ्गमोक्षम् ॥४३॥**

पदच्छेद—पीत्वा मुकुन्द मुख सारघम् अक्षिभृङ्गैः तापम् जहुः विरहजम्व्रजयोषितः अह्नि ।
तत् सत् कृतिम् समधिगम्य विवेश गोष्ठम् सव्रीडहास विनयम् यद् अपाङ्गमोक्षम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पीत्वा | ५. | पान करके | तत् | ६. | भगवान् ने उनकी |
| मुकुन्द मुख | ३. | भगवान् के मुखारविन्द के | सत् कृतिम् | १४. | सत्कार |
| सारघम् | ४. | मकरन्द रस का | समधिगम्य | १५. | प्राप्त करके |
| अक्षिभृङ्गैः | २. | अपने नेत्र रूप भ्रमरों ने | विवेश गोष्ठम् | १६. | व्रज में प्रवेश किया |
| तापमजहुः | ८. | व्यथा शान्त की | सव्रीडहास | १०. | लाजभरी हंसी और |
| विरहजम् | ७. | विरह से उत्पन्न | विनयम् | ११. | विनय से युक्त |
| व्रजयोषितः | १. | व्रज की गोपियां ने | यत् अपाङ्ग | १२. | उनकी जो प्रेम भरी तिरछी |
| अह्नि । | ६ | दिन भर की | मोक्षम् ॥ | १३. | चितवन है उसका |

श्लोकार्थ—व्रज की गोपियों ने अपने नेत्र रूप भ्रमरों से भगवान् के मुखारविन्द के मकरन्द रस का पान करके दिन भर की विरह से उत्पन्न व्यथा को शान्त किया । भगवान् ने उनकी लाज भरी हंसी और विनय से युक्त उनकी जो प्रेम भरी तिरछी चितवन है उसका सत्कार प्राप्त करके व्रज में प्रवेश किया ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तयोर्यशोदारोहिण्यौ पुत्रयोः पुत्रवत्सले ।**
**यथाकामं यथाकालं व्यधत्तां परमाशिषः ॥४४॥**

पदच्छेद – तयोः यशोदा रोहिण्यौ पुत्रयोः पुत्र वत्सले ।
यथा कामम् यथा कालम् व्यधत्ताम् परम आशिषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | ५. | अपने दोनों | यथा | ८. | अनुसार तथा |
| यशोदा | १. | उधर यशोदा और | कामम् | ७. | उनकी इच्छा के |
| रोहिण्यौ | २. | रोहिणी ने | यथा | १०. | अनुसार |
| पुत्रयोः | ६. | पुत्रों को | कालम् | ९. | समय के |
| पुत्र | ३. | वात्सल्य | व्यधत्ताम् | १३. | प्रदान की |
| वत्सले । | ४. | स्नेह में भर कर | परम | ११. | पहले से रखी |
| | | | आशिषः ॥ | १२. | वस्तुयें |

श्लोकार्थ—उधर यशोदा और रोहिणी ने वात्सल्य स्नेह में भर कर अपने दोनों पुत्रों को उनकी इच्छा के अनुसार तथा समय के अनुसार पहले से रखी वस्तुयें प्रदान कीं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**गताध्वानश्रमौ तत्र मज्जनोन्मर्दनादिभिः ।**
**नीवीं वसित्वा रुचिरां दिव्यस्रग्गन्धमण्डितौ ॥४५॥**

पदच्छेद— गत अध्वान श्रमौ तत्र मज्जन उन्मर्दन आदिभिः ।
नीवीम् वसित्वा रुचिराम् दिव्य स्रग् गन्ध मण्डितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गत | ७. | दूर हो गई | नीवीम् | ९. | वस्त्र |
| अध्वान | ५. | दिन भर की मार्ग की | वसित्वा | १०. | पहना कर |
| श्रमौ | ६. | थकान | रुचिराम् | ८. | उन्हें सुन्दर |
| तत्र | ४. | उनकी | दिव्य | ११. | दिव्य |
| मज्जन | ३. | स्नान कराया जिससे | स्रग् | १२. | मालाओं और |
| उन्मर्दन | १. | माताओं ने तेल उवटन | गन्ध | १३. | चन्दनादि से |
| आदिभिः । | २. | आदि लगा कर | मण्डितौ ॥ | १४. | सजाया |

श्लोकार्थ—माताओं ने तेल, उबटनादि लगा कर स्नान कराया । जिससे उनकी दिन भर की मार्ग की थकान दूर हो गई । उन्हें सुन्दर वस्त्रादि पहना कर दिव्य मालाओं, चन्दनादि से सजाया ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**जनन्युपहृतं प्राश्य स्वाद्वन्नमुपलालितौ ।**
**संविश्य वरशय्यायां सुखं सुषुपतुर्व्रजे ॥४६॥**

पदच्छेद— जननी उपहृतम् प्राश्य स्वादु अन्नम् उपलालितौ ।
संविश्य वर शय्यायाम् सुखम् सुषुपतुः व्रजे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जननी | १. | माताओं के द्वारा | संविश्य | ९. | लिटा देने पर |
| उपहृतम् | २. | परोसा हुआ | वर | ७. | उत्तम |
| प्राश्य | ५. | खाकर तथा | शय्यायाम् | ८. | शय्या पर |
| स्वादु | ३. | स्वादिष्ठ | सुखम् | ११. | बड़े सुख पूर्वक |
| अन्नम् | ४. | अन्न | सुषुपतुः | १२. | सो गये |
| उपलालितौ । | ६. | बड़े लाड़ प्यार से | व्रजे ॥ | १०. | वे व्रज में |

श्लोकार्थ—माताओं के द्वारा परोसा हुआ स्वादिष्ठ अन्न खा कर तथा बड़े लाड़ प्यार से उत्तम शय्या पर लिटा देने पर वे व्रज में बड़े सुख पूर्वक सो गये ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**एवं स भगवान् कृष्णो वृन्दावनचरः क्वचित् ।**
**ययौ राममृते राजन् कालिन्दीं सखिभिर्वृतः ॥४७॥**

पदच्छेद— एवम् सः भगवान् कृष्णः वृन्दावन चरः क्वचित् ।
ययौ रामम् ऋते राजन् कालिन्दीम् सखिभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एवम् | ४. इस प्रकार | | ययौ | १४. तट पर गये |
| सः | १. वे | | रामम् | ९. बलराम जी के |
| भगवान् | २. भगवान् | | ऋते | १०. बिना ही |
| कृष्णः | ३. श्रीकृष्ण | | राजन् | ७. हे परीक्षित् ! |
| वृन्दावन | ५. वृन्दावन में | | कालिन्दीम् | १३. यमुना के |
| चरः | ६. अनेकों लीलायें करते थे | | सखिभिः | ११. वे अपने सखाओंसे |
| क्वचित् । | ८. एक दिन | | वृतः ॥ | १२. घिरे हुये |

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण इस प्रकार वृन्दावन में अनेकों लीलायें करते थे । हे परीक्षित् ! एक दिन बलराम जी के बिना ही अपने सखाओं से घिरे हुये यमुना जी के तट पर गये ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**अथ गावश्च गोपाश्च निदाघातपपीडिताः ।**
**दुष्टं जलं पपुस्तस्यास्तृषार्ता विषदूषितम् ॥४८॥**

पदच्छेद— अथ गावः च गोपाः च निदाघ आतप पीडिताः ।
दुष्टम् जलम् पपुः तस्याः तृषार्ताः विषदूषितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. उस समय | दुष्टम् | ९. अत्यन्त भीषण |
| गावः च | ५. गायों और | जलम् | ११. जल |
| गोपाः च | ६. ग्वालबालों ने | पपुः | १२. पी लिया |
| निदाघ | २. जेठ अषाढ़ के | तस्याः | ८. उस नदी का |
| आतप | ३. घाम से | तृषार्ताः | ७. प्यास से व्याकुल होकर |
| पीडितः । | ४. पीडित होकर | विषदूषितम् ॥ | १०. विषैला |

श्लोकार्थ—उस समय जेठ अषाढ़ के घाम से पीडित होकर गायों और ग्वालबालों ने प्यास से व्याकुल होकर उस नदी का अत्यन्त भीषण विषैला जल पी लिया ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**विषाम्भस्तदुपस्पृश्य दैवोपहतचेतसः ।**
**निपेतुर्व्यसवः सर्वे सलिलान्ते कुरूद्वह ॥४९॥**

पदच्छेद— विषाम्भः तत् उपस्पृश्य दैव उपहत चेतसः ।
निपेतुः व्यसवः सर्वे सलिलान्ते कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **विषाम्भः** | ३. विषैले जल का | **निपेतुः** | ११. गिर पड़े |
| **तत्** | २. उस | **व्यसवः** | १०. प्राण हीन होकर |
| **उपस्पृश्य** | ४. स्पर्श पाकर | **सर्वे** | ८. सब |
| **दैव** | ५. दैव योग से | **सलिलान्ते** | ९. यमुना के तट पर |
| **उपहत** | ७. हीन होकर वे | **कुरूद्वह ॥** | १. हे परीक्षित् ! |
| **चेतसः ।** | ६. चेतना | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस विषैले जल का स्पर्श पाकर और चेतना हीन होकर वे सब यमुना के तट पर प्राणहीन होकर गिर पड़े ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**वीक्ष्य तान् वै तथाभूतान् कृष्णो योगेश्वरेश्वरः ।**
**ईक्षयामृतवर्षिण्या स्वनाथान् समजीवयत् ॥५०॥**

पदच्छेद— वीक्ष्य तान् वै तथा भूतान् कृष्णः योगेश्वर ईश्वरः ।
ईक्षया अमृत वर्षिण्या स्वनाथान् समजीवयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वीक्ष्य** | ४. देखकर | **ईक्षया** | १०. दृष्टि से |
| **तान्** | १. उन्हें | **अमृत** | ८. अपनी अमृत |
| **वै तथा** | २. ऐसी | **वर्षिण्या** | ९. बरसाने वाली |
| **भूतान्** | ३. अवस्था में | **स्व** | १३. स्वयम् ही हैं |
| **कृष्णः** | ७. भगवान् श्रीकृष्ण ने | **नाथान्** | १२. उनके स्वामी तो वे |
| **योगेश्वर** | ५. योगेश्वरों के भी | **समजीवयत् ॥** | ११. उन्हें जीवित कर दिया |
| **ईश्वरः ।** | ६. ईश्वर | | |

श्लोकार्थ—उन्हें ऐसी अवस्था में देखकर योगेश्वरों के भी ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी अमृत बरसाने वाली दृष्टि से उन्हें जीवित कर दिया । उनके स्वामी तो वे स्वयम् ही हैं ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**ते सम्पनीतस्मृतयः समुत्थाय जलान्तिकात् ।**
**आसन् सुविस्मिताः सर्वे वीक्षमाणाः परस्परम् ॥५१॥**

पदच्छेद— ते सम्प्रनीत स्मृतयः समुत्थाय जल अन्तिकात् ।
आसन् सुविस्मिताः सर्वे वीक्षमाणाः परस्परम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ते | १. वे | | आसन् | ८. हुये और |
| सम्प्रतीत | ३. प्राप्त करके तथा | | सुविस्मिताः | ७. अत्यन्त आश्चर्य चकित |
| स्मृतयः | २. चेतना | | सर्वे | ६. वे सब |
| समुत्थाय | ६. उठ कर | | वीक्षमाणाः | ११. देखने लगे |
| जल | ४. यमुना के | | परस्परम् ॥ | १०. एक दूसरे को |
| अन्तिकात् । | ५. तट पर से | | | |

श्लोकार्थ—वे चेतना प्राप्त करके तथा यमुना के तट से उठ कर अत्यन्त आश्चर्य-चकित हुये । और वे सब एक दूसरे को देखने लगे ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

**अन्वमंसत तद् राजन् गोविन्दानुग्रहेक्षितम् ।**
**पीत्वा विषं परेतस्य पुनरुत्थानमात्मनः ॥५२॥**

पदच्छेद— अन्वमंसत तत् राजन् गोविन्द अनुग्रह ईक्षितम् ।
पीत्वा विषम् परेतस्य पुनः उत्थानम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अन्वमंसत | ३. यही माना कि | | पीत्वा | ५. जल पीकर |
| तत् | २. उन्होंने | | विषम् | ४. हम तो विषैला |
| राजन् | १. हे राजन् | | परेतस्य | ६. मर चुके थे परन्तु |
| गोविन्द | ७. श्रीकृष्ण की | | पुनः | ११. फिर से |
| अनुग्रह | ८. प्रेम भरी | | उत्थानम् | १२. जीवन प्राप्त हुआ है |
| ईक्षितम् । | ६. दृष्टि पड़ने के कारण | | आत्मनः ॥ | १०. हमें |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन्होंने यही माना कि हम तो विषैला जल पीकर मर चुके थे । परन्तु श्रीकृष्ण की प्रेम भरी दृष्टि पड़ने के कारण हमें फिर से जीवन प्राप्त हुआ है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
धेनुकवधो नाम पञ्चदशः अध्यायः ॥१५॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### षोडशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—विलोक्य दूषितां कृष्णां कृष्णः कृष्णाहिना विभुः ।**
**तस्या विशुद्धिमन्विच्छन् सर्पं तमुदवासयत् ॥१॥**

पदच्छेद— विलोक्य दूषिताम् कृष्णाम् कृष्णः कृष्ण अहिना विभुः ।
तस्याः विशुद्धिम् अन्विछन् सर्पम् तम् उदवासयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **विलोक्य** | ३. | देखा कि | तस्याः | ८. | अतः यमुना को |
| **दूषिताम्** | ७. | विषैला कर दिया है | विशुद्धिम् | ९. | शुद्ध करने के |
| **कृष्णम्** | ६. | यमुना का जल | अन्विच्छन् | १०. | विचार से |
| **कृष्णः** | २. | श्रीकृष्ण ने | सर्पम् | १२. | उसे |
| **कृष्ण** | ४ | महा विषधर कालिय | तम् | ११. | उन्होंने वहाँ से |
| **अहिना** | ५. | नाग ने | उदवासयत् ॥ | १३. | निकाल दिया |
| **विभुः ।** | १. | भगवान् | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने देखा कि महाविषधर कालिय नाग ने यमुना का जल विषैला कर दिया है । अतः यमुना के जल को शुद्ध करने के विचार से उन्होंने वहाँ से उसे निकाल दिया ॥

### द्वितीयः श्लोकः

राजोवाच— **कथमन्तर्जलेऽगाधे न्यगृह्णाद् भगवानहिम् ।**
**स वै बहुयुगावासं यथाऽऽसीद् विप्र कथ्यताम् ॥२॥**

पदच्छेद— कथम् अन्तः जले अगाधे न्यगृह्लात् भगवान् अहिम् ।
सः वै बहुयुग आवासम् यथा आसीत् विप्र कथ्यताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कथम्** | ६. | किस प्रकार | सः वै | ९. | वह |
| **अन्तजले** | ४. | जल के भीतर | बहुयुग | १०. | अनेक युगों तक |
| **अगाध** | ३. | यमुना जी के अगाध | आवासम् | ११. | उस जल में |
| **न्यगृह्लात्** | ७. | दमन किया | यथा आसीत् | १२. | कैसे बना रहा |
| **भगवान्** | २. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | विप्र | १. | हे ब्रह्मन् ! |
| **अहिम् ।** | ५. | उस सर्प का | कथ्यताम् ॥ | ८. | आप यह भी बताइये कि |

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! भगवान् श्रीकृष्ण ने यमुना जी के अगाध जल के भीतर उस सर्प का किस प्रकार दमन किया । और आप यह भी बताइये कि वह अनेक युगों तक उस जल में कैसे बना रहा ॥

## तृतीयः श्लोकः

**ब्रह्मन् भगवतस्तस्य भूम्नः स्वच्छन्दवर्तिनः।**
**गोपालोदारचरितं कस्तृप्येतामृतं जुषन् ॥३॥**

पदच्छेद— ब्रह्मन् भगवतः तस्य भूम्नः स्वच्छन्दवर्तिनः।
गोपाल उदारचरितम् कः तृप्येत अमृतम् जुषन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्रह्मन् | १. | ब्रह्मस्वरूप ! | गोपाल | ७. | गोपालरूप से |
| भगवतः | २. | भगवान् ! | उदार | ८. | उन्होंने जो उदार |
| तस्य | ४. | वे अपनी लीला से | चरितम् | ९. | लीलायें की हैं |
| भूम्नः | ३. | अनन्त हैं | कः तृप्येत् | १२. | भला कौन तृप्त हो सकता है |
| स्वच्छन्द | ५. | स्वच्छन्द | अमृतम् | १०. | उस अमृत का |
| वर्तिनः। | ६. | विहार करते हैं | जुषन् ॥ | ११. | पान करते हुये |

श्लोकार्थ—ब्रह्मस्वरूप ! भगवान् अनन्त हैं। वे अपनी लीला से स्वच्छन्द विहार करते हैं। उन्होंने जो लीलायें की हैं, उस अमृत का पान करते हुये भला कौन तृप्त हो सकता है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—कालिन्द्यां कालियस्यासीद्ध्रदः कश्चिद् विषाग्निना।**
**श्रप्यमाणपया यस्मिन् पतन्त्युपरिगाः खगाः ॥४॥**

पदच्छेद— कालिन्द्याम् कालियस्य आसीत् ह्लदः कश्चित् विष अग्निना।
श्रप्यमाणपया यस्मिन् पतन्ति उपरिगाः खगाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कालिन्द्याम् | १. | यमुना जी में | श्रप्यमाण | ९. | खौलता रहता था |
| कालियस्य | २. | कालिय नाग का | पयाः | ६. | उसका जल |
| आसीत् | ५. | था | यस्मिन् | १२. | उसमें |
| ह्लदः | ४. | एक कुण्ड | पतन्ति | १३. | गिर जाया करते थे |
| कश्चित | ३. | कोई | उपरिगाः | १०. | उसके ऊपर उड़ने वाले |
| विष | ७. | विष की | खगाः ॥ | ११. | पक्षी भी |
| अग्निना। | ८. | गर्मी से | | | |

श्लोकार्थ—यमुना जी में कालिय नाग का कोई एक कुण्ड था। उसका जल विष की गर्मी से खौलता रहता था। उसके ऊपर उड़ने वाले पक्षी भी उसमें गिर जाया करते थे।

## पञ्चमः श्लोकः

**विप्रुष्मता विषोदोर्मिमारुतेनाभिमर्शिताः ।**
**म्रियन्ते तीरगा यस्य प्राणिनः स्थिरजङ्गमाः ॥५॥**

पदच्छेद— विप्रुष्मता विषोद ऊर्मि मारुतेन अभिमर्शिताः ।
म्रियन्ते तीरगाः यस्य प्राणिनः स्थिर जङ्गमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **विप्रुष्मता** | २. | बूदों से युक्त | म्रियन्ते | ११. | मर जाते |
| **विषोद** | १. | विषैले जल की | तीरगाः | ७. | तट पर स्थित |
| **ऊर्मि** | ३. | उत्ताल तरंगों वाले | यस्य | ६. | उससे |
| **मारुतेन** | ४. | वायु का | प्राणिनः | १०. | जीवधारी तत्काल |
| **अभिमर्शिताः ।** | ५. | स्पर्श करके बाहर आता तो | स्थिर | ८. | घास-पात |
| | | | जङ्गमाः ॥ | ९. | पशु-पक्षी आदि |

श्लोकार्थ—विषैले जल की बूदों से युक्त उत्ताल तरंगों वाले वायु का स्पर्श करके बाहर आता तो उससे तट पर स्थित घास-पात, पशु-पक्षी आदि जीवधारी तत्काल मर जाते ॥

## षष्ठः श्लोकः

**तं चण्डवेगविषवीर्यमवेक्ष्य तेन दुष्टां नदीं च खलसंयमनावतारः ।**
**कृष्णः कदम्बमधिरुह्य ततोऽतितुङ्गमास्फोट्य गाढरशनो न्यपतद् विषोदे ॥६॥**

पदच्छेद—तम् चण्डवेग विषवीर्यम् अवेक्ष्य तेन दुष्टाम् नदीम् च खल संयमन अवतारः ।
कृष्णः कदम्बम् अधिरुह्य ततः अतितुङ्गम् आस्फोट्य गाढ रशनः न्यपतत् विषोदे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तम्** | ३. | उन्होंने उस सांप के विष का | कृष्णः | ११. | भगवान् श्रीकृष्ण कमर का |
| **चण्डवेग** | ४. | प्रचण्ड वेग | कदम्बम् | १४. | कदम्ब के वृक्ष पर |
| **विषवीर्यम्** | ६. | वही विष उसका बल था | अधिरुह्य | १५. | चढ़ गये और |
| **अवेक्ष्य** | ५. | देखा | ततः | १०. | तब |
| **तेन** | ८. | उसी से उसने | आतितुङ्गम् | १३. | एक बहुत ऊँचे |
| **दुष्टाम् नदीम्** | ९. | दूषित कर दिया था यमुना का जल | अस्फोट्य | १६. | ताल ठोंक कर |
| **च** | ७. | और | गाढरसनः | १२. | फेंटा कस कर |
| **खलसंयमन** | २. | दुष्टों का दमन करने के लिये ही होता है | न्यपतत् | १८. | कूद पड़े |
| **अवतारः ।** | १. | भगवान् का अवतार | विषोदे ॥ | १७. | उस विषैले जल में |

श्लोकार्थ—भगवान् का अवतार दुष्टों का दमन करने के लिये होता है । उन्होंने उस सांप के विष का प्रचण्डवेग देखा । वही विष उसका बल था । और उसी से उसने यमुना नदी का जल दूषित कर दिया था । तब भगवान् श्रीकृष्ण कमर का फेंटा कस कर एक बहुत बड़े कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ गये और ताल ठोंक कर उस विषैले जल में कूद पड़े ॥

## सप्तमः श्लोकः

**सर्पह्रदः पुरुषसारनिपातवेगसंक्षोभितोरगविषोच्छ्वसिताम्बुराशिः ।**
**पर्यक्प्लुतो विषकषायविभीषणोर्मिर्धावन् धनुः शतमनन्तबलस्य किं तत् ॥७॥**

पदच्छेद—सर्पह्रदः पुरुषसार निपात वेग संक्षोभित उरग विष उच्छ्वसित अम्बुराशिः ।
पर्यक्प्लुतः विषकषाय विभीषण ऊर्मिः धावन् धनुः शतम् अनन्त बलस्य किम् तत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्पह्रदः | ७. | वह सर्पह्रद | पर्यक्प्लुतः | ११. | चारों ओर उछल उछल कर |
| पुरुषसार | ५. | पुरुषों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के | विषकषाय | ९. | विषैले और कसैले जल की |
| निपात वेग | ६. | वेग से कूदने पर | विभीषणऊर्मि | १०. | भयङ्कर लहरें |
| संक्षोभित | ८. | उछलने लगा | धावन् | १२. | दौड़ती हुई |
| उरग | २. | सांप के | धनुः शतम् | १३. | चार सौ हाथतक पहुँच गई |
| विष | ३. | विष के कारण | अनन्त बलस्य | १४. | अनन्त, बलशाली उन |
| उच्छ्वसित | ४. | खौल रहा था | किम् | १६. | क्या आश्चर्य है |
| अम्बुराशिः । | १. | यमुना जी का जल | तत् ॥ | १५. | श्रीकृष्ण के लिये इसमें |

श्लोकार्थ—यमुना जी का जल सांप के विष के कारण खौल रहा था । पुरुषों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण के वेग से कूदने पर वह सर्प ह्रद उछलने लगा । विषैले और कसैले जल की भयङ्कर लहरें चारों ओर उछल-उछल कर दौड़ती हुई चार सौ हाथ तक पहुँच गईं । अनन्त बलशाली उन श्रीकृष्ण के लिये इसमें क्या आश्चर्य है ॥

## अष्टमः श्लोकः

**तस्य ह्रदे विहरतो भुजदण्डघूर्णवार्घोषमङ्गवरवारणविक्रमस्य ।**
**आश्रुत्य तत् स्वसदनाभिभवं निरीक्ष्य चक्षुःश्रवाः समसरत्तदमृष्यमाणः ॥८॥**

पदच्छेद—तस्य ह्रदे विहरतो भुजदण्ड घूर्ण वाः घोषम् अङ्गवरवारण विक्रमस्य ।
आश्रुत्य तत् स्वसदन अभिभवम् निरीक्ष्य चक्षुः श्रवाः समसरत् तद् अमृष्यमाणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्य ह्रदे | १. | श्रीकृष्ण उसकालिय दह में | आश्रुत्य तत् | ८. | उसे सुन कर और |
| विहरतः | २. | कूद कर | स्वसदन | ९. | अपने निवास स्थान पर |
| भुजदण्ड | ५. | उनकी भुजाओं की टक्करसे | अभिभवम् | १०. | अपना तिरस्कार |
| घूर्णवाः | ६. | जल में बड़े जोर का | निरीक्ष्य | ११. | सुन कर |
| घोषम् | ७. | शब्द होने लगा | चक्षुः श्रवाः | १३. | आँख से सुनने वाला कालिय नाग |
| अङ्गवरवारण | ३. | अतुल बलशाली गजराज के | समसरत् | १४. | श्रीकृष्ण के सामने आ गया |
| विक्रमस्य । | ४. | समान पराक्रम करने लगे | तद्अमृष्यमाणः ॥ | १२. | उसे न सहता हुआ |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण उस कालिय दह में कूदकर अतुल बलशाली गजराज के समान पराक्रम करने लगे । उनकी भुजाओं की टक्कर से जल में बड़े जोर का शब्द होने लगा । उसे सुनकर और अपने निवास स्थान पर अपना तिरस्कार सुनकर उसे न सहता हुआ आँख से सुनने वाला कालिय नाग भगवान् श्रीकृष्ण के सामने आ गया ॥

## नवमः श्लोकः

**तं प्रेक्षणीयसुकुमारघनावदातं श्रीवत्सपीतवसनं स्मितसुन्दरास्यम् ।**
**क्रीडन्तमप्रतिभयं कमलोदराङ्घ्रिं सन्दश्य मर्मसु रुषा भुजया चछाद ॥९॥**

पदच्छेद--तम् प्रेक्षणीय सुकुमार घन अवदातम् श्रीवत्स पीतवसनम् स्मित सुन्दर आस्यम् ।
क्रीडन्तम् अप्रतिभयम् कमल उदर अङ्घ्रिम् सन्दश्य मर्मसु रुषा भुजया चछाद ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् प्रेक्षणीय | २. | दर्शन योग्य उस बालक के | क्रीडन्तम् | ११. | क्रीडा कर रहा है |
| सुकुमारघन | १. | वर्षाकालीन मेघ के समान सुकुमार | अप्रतिभयम् | १०. | वह भयहीन होकर |
| अवदातम् | ३. | उज्ज्वल | कमल उदर | ९. | कमल के मध्यभाग के समान हैं |
| श्रीवत्स | ४. | वक्षःस्थल पर श्रीवत्स | अङ्घ्रिम् | ८. | उसके चरण |
| पीतवसनम् | ५. | शरीर पर पीले वस्त्र | सन्दश्य मर्मसु | १२. | डंसकर उनके मर्म स्थानों में |
| स्मित | ७. | मन्द मुसकान है | रुषा भुजया | १३. | क्रोधपूर्वक अपने शरीर बन्धनसे |
| सुन्दर आस्यम् । | ६. | मुख पर मनोहर | चछाद ।। | १४. | उन्हें जकड़ लिया |

श्लोकार्थ—वर्षाकालीन मेघ के समान सुकुमार और दर्शन योग्य उस बालक के उज्ज्वल वक्षःस्थल पर श्रीवत्स, मुख पर मनोहर मन्द मुसकान है। उसके चरण कमल के मध्यभाग के समान हैं। वह भय हीन होकर क्रीडा कर रहा है। श्रीकृष्ण के मर्म स्थानों को डंसकर क्रोध पूर्वक अपने शरीर बन्धन से उन्हें जकड़ लिया ।।

## दशमः श्लोकः

**तं नागभोगपरिवीतमदृष्टचेष्टमालोक्य तत्प्रियसखाः पशुपा भृशार्ताः ।**
**कृष्णेऽर्पितात्मसुहृदर्थकलत्रकामा दुःखानुशोकभयमूढधियो निपेतुः ॥१०॥**

पदच्छेद—तम् नाग भोग परिवीतम् अदृष्ट चेष्टम् आलोक्य तत् प्रिय सखाः पशुपाः भृशार्ताः ।
कृष्णे अर्पित आत्म सुहृद् अर्थ कलत्र कामाः दुःख अनुशोकभय मूढधियः निपेतुः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् नागभोग | १. | भगवान् श्रीकृष्ण नाग पाश में | कृष्णे अर्पित | १४. | श्रीकृष्ण को अर्पित कर दिये थे |
| परिवीतम् | २. | बँध कर | आत्म सुहृद् | ११. | उन्होने अपने शरीर |
| अदृष्ट चेष्टम् | ३. | चेष्टाहीन हो गये यह | अर्थकलत्र | १२ | धन सम्पत्ति-स्त्री पुत्र |
| आलोक्य | ४. | देखकर | कामाः | १३. | भोगादि कामनाओं कों |
| तत् प्रियसखाः | ५. | उनके प्यारे सखा | दुःखानुशोकभय | ८. | वे दुःख पश्चात्ताप और भय से |
| पशुपाः | ६. | ग्वाल-बाल | मूढधियः | ९. | मूर्च्छित होकर |
| भृशार्ताः । | ७. | बहुत ही दुःखी हुये | निपेतुः ।। | १०. | पृथ्वी पर गिर पड़े |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण नाग पाश में बँधकर चेष्टाहीन हो गये हैं, यह देखकर उनके प्यारे सखा ग्वाल-बाल बहुत ही दुःखी हुये। वे दुःख, पश्चात्ताप और भय से मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े उन्होंने अपने शरीर, धन, सम्पत्ति, स्त्री, भोगादि कामनाओं को श्रीकृष्ण को अर्पित कर दिया था ।।

## एकादशः श्लोकः

**गावो वृषा वत्सतर्यः क्रन्दमानाः सुदुःखिताः ।**
**कृष्णे न्यस्तेक्षणा भीता रुदत्य इव तस्थिरे ॥११॥**

पदच्छेद— गावः वृषा वत्सतर्यः क्रन्दमानाः सुदुःखिताः ।
कृष्णे न्यस्त ईक्षणाः भीताः रुदत्यः इव तस्थिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गावः | १. | गाय | कृष्णे | ७. | वे श्रीकृष्ण की ओर ही |
| वृषाः | २. | बैल | न्यस्त | ९. | लगाये हुये थे |
| वत्स | ३. | बछिया और | ईक्षणाः | ८. | अपनी दृष्टि |
| तर्यः | ४. | बछड़े | भीताः | १०. | वे डर कर |
| क्रन्दमानाः | ६. | डकराने लगे | रुदत्यः | ११. | रोते हुये के |
| सुदुःखिताः । | ५. | बड़े दुःख से | इव तस्थिरे ॥ | १२. | समान खड़े थे |

श्लोकार्थ– गाय, बैल, बछिया और बछड़े बड़े दुःख से डकराने लगे । वे श्रीकृष्ण की ओर ही दृष्टि लगाये हुये थे । वे डर कर रोते हुये के समान खड़े थे ॥

## द्वादशः श्लोकः

**अथ व्रजे महोत्पातास्त्रिविधा ह्यतिदारुणाः ।**
**उत्पेतुर्भुवि दिव्यात्मन्यासन्नभयशंसिनः ॥१२॥**

पदच्छेद— अथ व्रजे महोत्पाताः त्रिविधाः हि अति दारुणाः ।
उत्पेतुः भुवि दिवि आत्मनि आसन्नभय शंसिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | इधर | उत्पेतुः | १०. | उठ खड़े हुये जो |
| व्रजे | २. | व्रज में | भुवि | ३. | पृथ्वी |
| महोत्पाताः | ९. | उत्पात | दिवि | ४. | आकाश और |
| त्रिविधाः | ८. | तीनों प्रकार के | आत्मनि | ५. | शरीरों में |
| हि अति | ६. | बड़े | आसन्नभय | ११. | निकट भय की |
| दारुणाः । | ७. | भयङ्कर | शंसिनः ॥ | १२. | सूचना दे रहे थे |

श्लोकार्थ—इधर व्रज में, पृथ्वी, आकाश और शरीरों में बड़े भयंकर तीनों प्रकार के उत्पात उठ खड़े हुये, जो निकट भय की सूचना दे रहे थे ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**तानालक्ष्य भयोद्विग्ना गोपा नन्दपुरोगमाः ।**
**विना रामेण गाः कृष्णं ज्ञात्वा चारयितुं गतम् ॥१३॥**

पदच्छेद— तान् आलक्ष्य भय उद्विग्नाः गोपाः नन्द पुरोगमाः ।
विना रामेण गाः कृष्णम् ज्ञात्वा चारयितुम् गतम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तान् | ४. | उन अपशकुनों को | विना | ८. | बिना |
| आलक्ष्य | ५. | देखा और | रामेण | ९. | बलराम के ही |
| भय | १३. | भय से | गाः | १०. | गाय |
| उद्विग्न | १४. | व्याकुल हो गये | कृष्णम् | ७. | आज श्रीकृष्ण |
| गोपाः | २. | गोपों ने | ज्ञात्वा | ६. | तब यह जाना कि |
| नन्द | १. | नन्दबाबा आदि | चारयितुम् | ११. | चराने |
| पुरोगमाः । | ३. | पहले तो | गतम् ।। | १२. | चले गये । वे |

श्लोकार्थ—नन्दबाबा आदि गोपों ने पहले तो अपशकुनों को देखा । और तब यह जाना कि आज श्रीकृष्ण बिना बलराम जी के ही गाय चराने चले गये । वे भय से व्याकुल हो गये ।।

## चतुर्दशः श्लोकः

**तैर्दुर्निमित्तैर्निधनं मत्वा प्राप्तमतद्विदः ।**
**तत्प्राणास्तन्मनस्कास्ते दुःखशोकभयातुराः ॥१४॥**

पदच्छेद— तैः दुर्निमित्तैः निधनम् मत्वा प्राप्तम् अतद् विदः ।
तत् प्राणाः तत्मनस्काः ते दुःख शोक भय आतुराः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तैः | ३. | उन | तत् | १२. | उनके |
| दुर्निमित्तैः | ४. | अपशकुनों से | प्राणाः | १३. | प्राण और |
| निधनम् | ५. | श्रीकृष्ण की मृत्यु | तत्मनस्काः | १४. | मन तो श्रीकृष्ण में लगे हुये थे |
| मत्वा | ६. | निश्चित मानी | ते | ८. | वे |
| प्राप्तम् | ७. | ऐसा जान कर | दुःख-शोक | ९. | दुख-शोक और |
| अतद् | १. | श्रीकृष्ण के प्रभाव को न | भय | १०. | भय से |
| विदः । | २ | जानने वालों ने | आतुराः ।। | ११. | आतुर हो गये क्योंकि |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के प्रभाव को न जानने वालों ने उन अपशकुनों से श्रीकृष्ण की मृत्यु निश्चित ही मानी । ऐसा जान कर वे दुःख, शोक और भय से आतुर हो गये । क्योंकि उनके प्राण और मन तो श्रीकृष्ण में ही लगे हुये थे ।।

## पञ्चदशः श्लोकः

**आबालवृद्धवनिताः सर्वेऽङ्ग पशुवृत्तयः ।**
**निर्जग्मुर्गोकुलाद् दीनाः कृष्णदर्शनलालसाः ॥१५॥**

पदच्छेद— आबाल वृद्ध वनिताः सर्वे अङ्ग पशुवृत्तयः ।
निर्जग्मुः गोकुलाद् दीनाः कृष्ण दर्शन लालसाः ॥

शब्दार्थ —

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आबाल | २. ब्रज के बालक | | निर्जग्मुः | १२. बाहर निकल आये |
| वृद्ध | ३. वृद्ध और | | गोकुलम् | ११. गोकुल से |
| वनिताः | ४. स्त्रियाँ आदि | | दीनाः | ७. वे अत्यन्त दीन होकर |
| सर्वे | ५. सब का स्वभाव | | कृष्ण | ८. श्रीकृष्ण के |
| अङ्ग | १. प्रिय परीक्षित् ! | | दर्शन | ९. दर्शनों की |
| पशु | ६. गायों जैसा ही | | लालसाः ॥ | १०. इच्छा से |
| वृत्तयः । | ७. वात्सल्य पूर्ण था | | | |

श्लोकार्थ—प्रिय परीक्षित् ! ब्रज के बालक, वृद्ध और स्त्रियाँ आदि सब का स्वभाव गायों जैसा ही वात्सल्य पूर्ण था । वे अत्यन्त दीन होकर श्रीकृष्ण के दर्शनों की इच्छा से गोकुल से बाहर निकल आये ॥

## षोडशः श्लोकः

**तांस्तथा कातरान् वीक्ष्य भगवान् माधवो बलः ।**
**प्रहस्य किञ्चिन्नोवाच प्रभावज्ञोऽनुजस्य सः ॥१६॥**

पदच्छेद— तान् तथा कातरान् वीक्ष्य भगवान् माधवः बलः ।
प्रहस्य किञ्चित् न उवाच प्रभावज्ञः अनुजस्य सः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तान् | ८. उन्होंने ब्रजवासियों को | प्रहस्य | १४. हंसी आ गई |
| तथा | ९. इतना अधिक | किञ्चित् | १२. कुछ भी |
| कातरान् | १०. दुःखी | न उवाच | १३. नहीं कहा । उन्हें |
| वीक्ष्य | ११. देख कर | प्रभाव | ६. प्रभाव को |
| भगवान् | ५. भगवान् श्रीकृष्ण के | ज्ञः | ७. जानते थे |
| माधवः | ४ माया पति | अनुजस्य | ३. अपने छोटे भाई |
| बलः । | २. बलराम जी | सः ॥ | १. वे |

श्लोकार्थ—वे बलराम जी अपने छोटे भाई मायापति भगवान् श्रीकृष्ण के प्रभाव को जानते थे । उन्होंने ब्रजवासियों को इतना अधिक दुःखी देख कर कुछ भी नहीं कहा । उन्हें हंसी आ गई ॥

# सप्तदशः श्लोकः

तेऽन्वेषमाणा दयितं कृष्णं सूचितया पदैः ।
भगवल्लक्षणैर्जग्मुः पदव्या यमुनातटम् ॥१७॥

पदच्छेद— ते अन्वेषमाणाः दयितम् कृष्णम् सूचितया पदैः ।
भगवत् लक्षणैः जग्मुः पदव्या यमुना तटम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते | १. | वे व्रजवासी | भगवत् | ५. | भगवत् |
| अन्वेषमाणाः | ४. | खोजते हुये | लक्षणैः | ६. | लक्षणों से युक्त (शङ्खादि) |
| दयितम् | २. | अपने प्यारे | जग्मुः | १२. | चल पड़े |
| कृष्णम् | ३. | श्रीकृष्ण को | पदव्या | ६. | उसी मार्ग से |
| सूचितया | ७. | श्रीकृष्ण की सूचना देने वाले | यमुना | १०. | यमुना के |
| पदैः । | ८. | पद चिह्नों से वे | तटम् ॥ | ११. | किनारे की ओर |

श्लोकार्थ—वे व्रजवासी अपने प्यारे श्रीकृष्ण को खोजते हुये भगवत् लक्षणों से युक्त, शङ्खादि से युक्त श्रीकृष्ण की सूचना देने वाले पदचिह्नों से वे उसी मार्ग से यमुना के किनारे की ओर चल पड़े ॥

# अष्टादशः श्लोकः

ते तत्र तत्राब्जयवाङ्कुशाशनिध्वजोपपन्नानि पदानि विश्पतेः ।
मार्गे गवामन्यपदान्तरान्तरे निरीक्षमाणा ययुरङ्ग सत्वराः ॥१८॥

पदच्छेद— ते तत्र तत्र अब्ज यव अङ्कुश अशनि ध्वज उपपन्नानि पदानि विश्पतेः ।
मार्गे गवाम् अन्य पदान्तरा अन्तरे निरीक्षमाणाः ययुः अङ्ग सत्वराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते | ८. | वे व्रजवासी | मार्गे | २. | मार्ग में |
| तत्र तत्र | १३. | उन चरणों को | गवामन्य | ३. | गौओं और दूसरों के |
| अब्जयव | ६. | कमल, जौ | पदान्तर | ४. | चरणचिह्नों के |
| अङ्कुश अशनि | १०. | अङ्कुश वज्र | अन्तरे | ५. | बीच बीच में |
| ध्वज | ११. | ध्वजा के | निरीक्षमाणाः | १४. | देखते हुये |
| उपपन्नानि | १२. | चिह्नों से युक्त | ययुः | १६. | आगे बढ़ रहे थे |
| पदानि | ७. | चरण चिह्न भी दीख जाते थे | अङ्ग | १. | हे परीक्षित् ! |
| विश्पतेः । | ६. | भगवान् के | सत्वराः ॥ | १५. | शीघ्रतापूर्वक |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! मार्ग में गौओं और दूसरों के बीच-बीच भगवान् के चरण चिह्न भी दीख जाते थे । वे व्रजवासी कमल, जौ, अङ्कुश, वज्र ध्वजा के चिह्न से युक्त उन चरणों को देखते हुये शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ रहे थे ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**अन्तर्हृदे भुजगभोगपरीतमारात् कृष्णं निरीहमुपलभ्य जलाशयान्ते ।**
**गोपांश्च मूढधिषणान् परितः पशूंश्च संक्रन्दतः परमकश्मलमापुरार्ताः ॥१९॥**

पदच्छेद— अन्तःह्रदे भुजगभोग परीतम् आरात् कृष्णम् निरीहम् उपलभ्य जलाशयअन्ते ।
गोपान् च मूढधिषणान् परितः पशून् च संक्रन्दतः परमकश्मलम् आपुः आर्ताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्तःह्रदे | २. कालीदह में | गोपान् च | १०. ग्वाल बालों को देखा |
| भुजगभोग | ३. कालियनाग के शरीर से | मूढधिषणान् | ९. मोहित बुद्धि |
| परीतम् | ४. बंधे हुये | परितः | ८. कुण्ड के चारों ओर |
| आरात् | १. उन्होंने दूर से ही | पशून् च | १२. गायों बैलों बछड़ों को |
| कृष्णम् | ५. श्रीकृष्ण को | संक्रन्दतः | १३. डकारते हुये देखा तो वे |
| निरीहम् | ६. चेष्टाहीन | परमकश्मलम् | १५. अत्यन्त कष्ट को |
| उपलभ्य | ७. देखा | आपुः | १६. प्राप्त हुये |
| जलाशयअन्ते । | ११. यमुना के किनारे पर | आर्ताः ॥ | १४. दुःखी होकर |

श्लोकार्थ—उन्होंने दूर से ही कालीदह में कालिय नाग के शरीर से बंधे हुये श्रीकृष्ण को चेष्टाहीन देखा । और कुण्ड के चारों ओर मोहित बुद्धि ग्वाल-बालों को देखा । यमुना के किनारे पर गायों, बैलों, बछड़ों आदि को डकारते हुये देखा तो वे दुःखी होकर अत्यन्त कष्ट को प्राप्त हुये ॥

## विंशः श्लोकः

**गोप्योऽनुरक्तमनसो भगवत्यनन्ते तत्सौहृदस्मितविलोकगिरः स्मरन्त्यः ।**
**ग्रस्तेऽहिना प्रियतमे भृशदुःखतप्ताः शून्यं प्रियव्यतिहृतं ददृशुस्त्रिलोकम् ॥२०॥**

पदच्छेद— गोप्यः अनुरक्त मनसः भगवति अनन्ते तत् सौहृदस्मितविलोक गिरः स्मरन्त्यः ।
ग्रस्ते अहिना प्रियतमे भृशदुःखतप्ताः शून्यम् प्रियव्यति हृतम् ददृशुः त्रिलोकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोप्यः | १. गोपियों का | ग्रस्ते | ११. जकड़ा हुआ देख कर वे |
| अनुरक्त | ४. रङ्गा हुआ था | अहिना | ९. कालिय नाग द्वारा |
| मनसः | २. मन | प्रियतमे | १०. अपने प्रियतम को |
| भगवति अनन्ते | ३. अनन्त भगवान् के प्रेम में | भृशदुःखतप्ताः | १२. अति दुःखी और संतप्त हुये |
| तत् सौहृद | ५. वे श्रीकृष्ण के सौहार्द | शून्यम् | १५. सूने |
| स्मित विलोक | ६. उनकी मधुर मुसकान प्रेम भरी चितवन | प्रियव्यतिहृतम् | १४. अपने प्रिय श्रीकृष्ण के बिना |
| गिरः | ७. मीठी वाणी का | ददृशुः | १६. दीखने लगे |
| स्मरन्त्यः । | ८. स्मरण करती रहती थीं | त्रिलोकम् ॥ | १३. उन्हें तीनों लोक |

श्लोकार्थ—गोपियों का मन अनन्त भगवान् के प्रेम में रङ्गा हुआ था । वे श्रीकृष्ण के सौहार्द, उनकी मधुर मुसकान, प्रेम भरी चितवन, मीठी वाणी का स्मरण करती रहती थी । कालिय नाग द्वारा अपने प्रियतम को जकड़ा हुआ देख कर वे अति दुःखी और संतप्त हुये । उन्हें तीनों लोक अपने प्रियतम कृष्ण के बिना सूने दीखने लगे ॥

## एकविंशः श्लोकः

**ताः कृष्णमातरमपत्यमनुप्रविष्टां तुल्यव्यथाः समनुगृह्य शुचः स्रवन्त्यः ।**
**तास्ता व्रजप्रियकथाः कथयन्त्य आसन् कृष्णाननेऽर्पितदृशो मृतकप्रतीकाः ॥२१॥**

पदच्छेद— ताः कृष्ण मातरम् अपत्यम् अनुप्रविष्टाम् तुल्यव्यथाः समनुगृह्य शुचः स्रवन्त्यः ।
ताः ताः व्रजप्रिय कथाः कथयन्त्यः आसन् कृष्णानने अर्पितदृशः मृतकप्रतीकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः | ७. उनकी आँखों से | ताः ताः | ११. जो चेतनावस्था में थे वे |
| कृष्ण | १. श्रीकृष्ण की माँ | व्रजप्रिय | १२. कृष्ण की प्यारी |
| मातरम् | २. यशोदा तो | कथाः | १३. कथायें |
| अपत्यम् | ३. अपने बालक के पीछे | कथयन्त्यः | १४. कह रहे |
| अनुप्रविष्टाम् | ४. कालियदह में कूद रही थीं | आसन् | १५. थे सभी |
| तुल्यव्यथाः | ६. उन्हें वैसी ही पीड़ा थी | कृष्णानने | ९. सभी कृष्ण के मुख की ओर |
| समनुगृह्य | ५. गोपियों ने उन्हें रोक लिया | अर्पितदृशः | १०. अपनी दृष्टि लगाये थे । |
| शुचः स्रवन्त्यः । | ८. अश्रुजल बह रहा था | मृतकप्रतीकाः ॥ | १६. मृतक के जैसे दिख रही थीं |

श्लोकार्थ— श्रीकृष्ण की माँ यशोदा तो अपने बालक के पीछे कालियदह में कूद रही थीं । गोपियों ने उन्हें रोक लिया । उन्हें भी वैसी ही पीड़ा थी । उनकी आँखों से अश्रुजल बह रहा था । सभी श्रीकृष्ण के मुख की ओर अपनी दृष्टि लगाये थीं । जो चेतनावस्था में थीं, वे कृष्ण की प्यारी कथायें कह रहे थीं । सभी मृतक के समान दिख रही थीं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**कृष्णप्राणान्निर्विशतो नन्दादीन् वीक्ष्य तं ह्रदम् ।**
**प्रत्यषेधत् स भगवान् रामः कृष्णानुभाववित् ॥२२॥**

पदच्छेद— कृष्ण प्राणान् निर्विशतः नन्दआदीन् वीक्ष्य तम् ह्रदम् ।
प्रतिअषेधत् सः भगवान् रामः कृष्ण अनु-भाववित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. श्रीकृष्ण ही | प्रतिअषेधत् | १४. रोक दिया |
| प्राणान् | २. जिनके प्राण थे | सः | ११. उन |
| निर्विशतः | ६. प्रवेश करते | भगवान् | १२. भगवान् |
| नन्द | ३. ऐसे नन्द | रामः | १३. बलराम जी ने |
| आदीन् | ४. आदि को | कृष्ण | ८. श्रीकृष्ण का |
| वीक्ष्य | ७. देख कर | अनु- | ९. प्रभाव |
| तम् ह्रदम् । | ५. उस कालिय दह में | भाववित् ॥ | १०. जानने वाले |

श्लोकार्थ श्रीकृष्ण ही जिनके प्राण थे, ऐसे नन्द आदि को उस कालिय दह में प्रवेश करते देख कर श्रीकृष्ण का प्रभाव जानने वाले उन भगवान् बलराम जी ने रोक दिया ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**इत्थं स्वगोकुलमनन्यगतिं निरीक्ष्य सस्त्रीकुमारमतिदुःखितमात्महेतोः ।**
**आज्ञाय मर्त्यपदवीमनुवर्तमानः स्थित्वा मुहूर्तमुदतिष्ठदुरङ्गबन्धात् ॥२३॥**

पदच्छेद— इत्थम् स्वगोकुलम् अनन्यगतिम् निरीक्ष्य सस्त्रीकुमारम् अतिदुःखितम् आत्म हेतोः ।
आज्ञाय मर्त्य पदवीम् अनुवर्तमानः स्थित्वा मुहूर्तम् उदतिष्ठद् उरंग बन्धात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इत्थम् | ५. इस प्रकार | आज्ञाय | १२. उसे भी लीला मान कर |
| स्वगोकुलम् | १. अपने व्रज के | मर्त्य | ६. मनुष्यों जैसी |
| अनन्यगतिम् | ७. एकमात्र अपने सहारे | पदवीम् | १०. लीला |
| निरीक्ष्य | ८. देख कर | अनुवर्तमानः | ११. करने वाले श्री कृष्ण |
| सस्त्रीकुमारम् | २. स्त्री पुत्र आदि को | स्थित्वा | १४. कालिय दह में रह कर |
| अतिदुःखितम् | ६. अत्यन्त दुःखी और | मुहूर्तम् | १३. एक मुहूर्त तक |
| आत्म | ३. अपने | उदतिष्ठत् | १६. बाहर निकल आये |
| हेतोः । | ४. लिये | उरंग बन्धात् ॥ | १५. साँप के बन्धन से |

श्लोकार्थ—अपने व्रज के स्त्री पुत्र आदि को अपने लिये इस प्रकार अत्यन्त दुःखी और एकमात्र अपने सहारे देख कर मनुष्यों जैसी लीला करने वाले श्रीकृष्ण उसे भी लीला मान कर एक मुहूर्त तक कालिय दह में रह कर साँप के बन्धन से बाहर निकल आये ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**तत्प्रथ्यमानवपुषा व्यथितात्मभोगस्त्यक्त्वोन्नमय्य कुपितः स्वफणान् भुजङ्गः ।**
**तस्थौ श्वसञ्छ्वसनरन्ध्रविषाम्बरीषस्तब्धेक्षणोल्मुकमुखो हरिमीक्षमाणः ॥२४॥**

पदच्छेद— तत् प्रथ्यमानवपुषा व्यथित आत्मभोगः त्यक्त्वा उन्नमय्य कुपितः स्वफणान् भुजङ्गः ।
तस्थौ श्वसन् स्वसन रन्ध्र विषाम्बरीषः स्तब्ध ईक्षण उल्मुक मुखः हरिम् ईक्षमाणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | १. श्रीकृष्ण ने | तस्थौ | १२. लगा वह |
| प्रथ्यमानवपुषा | २. अपना शरीर मोटा किया जिससे | श्वसन् | ६. वह साँस ले |
| व्यथितआत्मभोगः | ३. साँप का शरीर टूटने लगा | स्वसन रन्ध्र | १०. लेकर नथुनों से |
| त्यक्त्वा | ५. उन्हें छोड़ कर और | विषाम्बरीषः | ११. विष की फुहारें निकालने |
| उन्नमय्य | ८. ऊँचा कर लिया | स्तब्धईक्षण | १६. उसकी आँखें स्थिर हो गईं |
| कुपितः | ६. क्रोधित होकर | उल्मुक मुखः | १३. ऊपर की ओर मुख करके |
| स्वफणान् | ७. अपने फणों को | हरिम् | १४. श्रीकृष्ण को |
| भुजङ्गः । | ४. कालिय नाग ने | ईक्षमाणः ॥ | १५. देखने लगा |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने अपना शरीर मोटा किया। जिससे साँप का शरीर टूटने लगा। कालिय नाग ने उन्हें छोड़ कर और क्रोधित होकर अपने फणों को ऊँचा कर लिया। और वह साँस ले लेकर नथुनों से विष की फुहारें निकालने लगा। वह ऊपर की ओर मुख करके श्रीकृष्ण को देखने लगा। उसकी आँखें स्थिर हो गयीं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**तं जिह्वया द्विशिखया परिलेलिहानं द्वे सृक्विणी ह्यतिकरालविषाग्निदृष्टिम् ।**
**क्रीडन्नमुं परिससार यथा खगेन्द्रो बभ्राम सोऽप्यवसरं प्रसमीक्षमाणः ॥२५॥**

पदच्छेद—तम् जिह्वया द्विशिखया परिलेलिहानम् द्वे सृक्विणी हि अतिकराल विष अग्नि दृष्टिम् ।
क्रीडन् अमुम् परिससार यथा खगेन्द्रः बभ्राम सः अपि अवसरम् प्रसम्ईक्षमाणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | १. वह कालिय नाग अपनी | क्रीडन् अमुम् | ११. उस पर खेलते हुये |
| जिह्वया | ३. जीभ | परिससार | १२. पैंतरा बदलने लगे |
| द्विशिखया | २. दोहरी | यथा | १०. समान श्रीकृष्ण |
| परिलेजिहानम् | ४. लपलपाता | खगेन्द्रः | ९. अपने वाहन गरुड़ के |
| द्वे सृक्विणी | ५. होठों के दानों कोने चाटता | बभ्राम | १६. पैंतरा बदलने लगे |
| हि अतिकराल | ६. अपनी कराल | सः अपि | १३. वह साँप भी |
| विष अग्नि | ८. विष की ज्वाला उगल रहा था | अवसरम् | १४. अवसर की |
| दृष्टिम् । | ७. आँखों से | प्रसम्ईक्षमाणः ॥ | १५. प्रतीक्षा करता हुआ |

श्लोकार्थ—वह कालिय नाग अपनी दोहरी जीभ लपलपाता, होठों के दोनों कोने चाटता, अपनी कराल आँखों से विष की ज्वाला उगल रहा था । अपने वाहन गरुड़ के समान श्रीकृष्ण उस पर खेलते हुये पैंतरा बदलने लगे । वह साँप भी अवसर की प्रतीक्षा करता हुआ पैंतरा बदलने लगा ।

## षड्विंशः श्लोकः

**एवं परिभ्रमहतौजसमुन्नतांसमानम्य तत्पृथुशिरःस्वधिरूढ आद्यः ।**
**तन्मूर्धरत्ननिकरस्पर्शातिताम्रपादाम्बुजोऽखिलकलादिगुरुर्ननर्त ॥२६॥**

पदच्छेद— एवम् परिभ्रम हत ओजसम् उन्नतांसम् आनम्य तत् पृथुशिरः स्वधिरूढः आद्यः ।
तत्मूर्ध रत्ननिकर स्पर्श अतिताम्र पादअम्बुजः अखिलकलादि गुरुः ननर्त ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | तत्मूर्ध | ९. तब नाग के मस्तकों पर |
| परिभ्रम | २. पैंतरा बदलते हुये | रत्ननिकर | १०. मणियों के समूह के स्थित |
| हत ओजसम् | ३. उसका बल क्षीण हो गया तब | स्पर्श | ११. स्पर्श से |
| उन्नतांसम् | ४. बड़े-बड़े सिरों को | अतिताम्र | १३. अत्यन्त लाल-लाल लगने लगे |
| आनम्य तत् | ५. उसको दबा कर | पदअम्बुजः | १२. उसके चरण कमल |
| पृथुशिरः | ७. मोटे सिर पर | अखिलकलादि | १४. फिर समस्त कलाओं के |
| स्वधिरूढः | ८. सवार हो गये | गुरुः | १५. आदि गुरु भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| आद्यः । | ६. पहले तो | ननर्त ॥ | १६. उन पर नृत्य आरम्भ किया |

श्लोकार्थ—इस प्रकार पैंतरा बदलते हुये उसका बल क्षीण हो गया । उसके बड़े-बड़े शिरों को दबा कर पहले तो मोटे सिर पर सवार हो गये । तब नाग के मस्तकों पर स्थित मणियों के स्पर्श से उनके चरण कमल अत्यन्त लाल-लाल लगने लगे । फिर समस्त कलाओं के आदि गुरु भगवान् श्रीकृष्ण ने उन पर नृत्य करना आरम्भ किया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**तं नर्तुमुद्यतमवेक्ष्य तदा तदीयगन्धर्वसिद्धसुरचारणदेववध्वः ।**
**प्रीत्या मृदङ्गपणवानकवाद्यगीतपुष्पोपहारनुतिभिः सहसोपसेदुः ॥२७॥**

पदच्छेद— तम्नर्तुम् उद्यतम् अवेक्ष्य तदा तदीय गन्धर्व सिद्ध सुरचारण देववध्वः ।
प्रीत्या मृदङ्ग पणव आनक वाद्य गीत पुष्प उपहार नुतिभिः सहसा उपसेदुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम नर्तुम् | ६. भगवान् के नृत्य के लिये | प्रीत्या मृदङ्ग | ९. बड़े प्रेम से मृदङ्ग |
| उद्यतम् | ७. तैयार | पणव आनक | १०. ढोल-नगारे आदि |
| अपेक्ष्य | ८. देखा तो वे | वाद्य गीत | ११. बजाते सुन्दर गीत गाते |
| तदा | १. उस समय भगवान् | पुष्प | १२. पुष्प बरसाने |
| तदीय | २. श्रीकृष्ण के प्यारे भक्त | उपहार | १३. अपने को निछावर करते तथा |
| गन्धर्वसिद्ध | ३. गन्धर्व, सिद्ध | नुतिभिः | १४. स्तुति करते हुये |
| सुरचारण | ४. देवता, चारण और | सहसा | १५. उसी समय |
| देववध्वः । | ५. देवाङ्गनाओं ने | उपसेदुः ॥ | १६. भगवान् कृष्ण के पास आ पहुँचे |

श्लोकार्थ—उस समय भगवान् श्रीकृष्ण के प्यारे भक्त गन्धर्व, सिद्ध, देवता, चारण और देवाङ्गनाओं ने भगवान् को नृत्य के लिये तैयार देखा तो वे बड़े प्रेम से मृदङ्ग, ढोल-नगारे आदि बजाते, सुन्दर गीत गाते, पुष्प बरसाते, अपने को निछावर करते तथा स्तुति करते हुये उसी समय भगवान् के पास आ पहुँचे ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**यद् यच्छिरो न नमतेऽङ्ग शतैकशीर्ष्णस्तत्तन् ममर्द खरदण्डधरोऽङ्घ्रिपातैः ।**
**क्षीणायुषो भ्रमत उल्बणमास्यतोऽसृङ् नस्तो वमन् परमकश्मलमाप नागः ॥२८॥**

पदच्छेद— यद्यत्शिरः न नमते अङ्ग शतएक शीर्ष्णः तत्-तत् ममर्द खरदण्डधरः अङ्घ्रिपातैः ।
क्षीण आयुषः भ्रमत उल्बणम् आस्यतः असृक् नस्तः वमन् परमकश्मलम् आप नागः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यद्यत्शिरः | ४. वह जिस-जिस शिर को | क्षीणआयुषः | १०. उस नाग की आयु क्षीण हो चली |
| न नमते | ५. नहीं झुकाता था | भ्रमतः | १४. चक्कर काटते-काटते |
| अङ्ग | १. हे परीक्षित् | उल्बणम् | १६. पूर्ण रूप से |
| शतैक | ३. एक सौ एक सिर थे | आस्यतः | ११. वह मुंह और |
| शीर्ष्णः | २. कालिय नाग के | असृक्नस्तः | १२. नथना से खून |
| तत्-तत् | ८. उस-उस को | वमन् | १३. उगलने लगा |
| ममर्द | ९. कुचल डालते थे इससे | परमकश्मलम् | १७. बेहोश |
| खरदण्डधरः | ६. प्रचण्डदण्डधारी भगवान् | आप | १८. हो गया |
| अङ्घ्रिपातैः । | ७. अपने पैरों की चोट से | नागः ॥ | १५. कालिय नाग |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! कालिय नाग के एक सौ एक सिर थे । वह जिस-जिस सिर को नहीं झुकाता था, प्रचण्डदण्डधारी भगवान् उस उसको अपने पैरों की चोट से कुचल डालते थे । इससे उसकी आयु क्षीण हो चली । वह मुँह और नथुनों से खून उगलने लगा । चक्कर काटते-काटते कालिय नाग बेहोश हो गया ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**तस्याक्षिभिर्गरलमुद्वमतः शिरस्सु यत् यद् समुन्नमति निःश्वसतो रुषोच्चैः ।**
**नृत्यन् पदानुनमयन् दमयाम्बभूव पुष्पैः प्रपूजित इवेह पुमान् पुराणः ॥२९॥**

पदच्छेद— तस्य अक्षिभिः गरलम् उद्वमतः शिरस्सु यद् यत् समुन्नमति निःश्वसतः रुषा उच्चैः ।
नृत्यन् पदा अनुनमयन् दमयाम्बभूव पुष्पैः प्रपूजित इव इह पुमान् पुराणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तस्य अक्षिभिः | १. वह अपनी आँखों से | नृत्यम् | १०. नाचते हुये भगवान् कृष्ण |
| गरलम् | २. विष | पदा | ११. अपने चरणों की |
| उद्वमतः | ३. उगलने लगता (और) | अनुनमयन् | १२. दबाकर |
| शिरस्सु | ७ अपने शिरों में | दमयाम्बभूव | १३. रौंद देते थे |
| यद यत् | ८. जिस-जिस को वह | पुष्पैः प्रपूजितः | १६. पुष्पों द्वारा पूजित |
| समुन्नमति | ९. ऊपर उठाता था उसी को | इव | १७. जैसे प्रतीत हो रहे थे |
| निःश्वसतः | ६. फुंफकारें मारने लगता वह | इह पुमान् | १४. उस समय पुराण |
| रुषा | ४. क्रोध से | पुराणः ॥ | १५. पुरुष भगवान् कृष्ण |
| उच्चैः । | ५. ज़ोर ज़ोर से | | |

श्लोकार्थ—वह अपनी आँखों से विष उगलने लगता। और क्रोध से ज़ोर-ज़ोर से फुंफकारें मारने लगता। वह अपने शिरों में से जिस-जिस को ऊपर उठाता था। उसी को नाचते हुये श्रीकृष्ण अपने चरणों से दबा कर रौंद डालते थे। उस समय पुराण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण पुष्पों द्वारा पूजित जैसे प्रतीत हो रहे थे ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**तच्चित्रताण्डवविरुग्णफणातपत्रो रक्तं मुखैरुरु वमन् नृप भग्नगात्रः ।**
**स्मृत्वा चराचरगुरुं पुरुषं पुराणं नारायणं तमरणं मनसा जगाम ॥३०॥**

पदच्छेद— तत्चित्र ताण्डव विरुग्ण फण आत-पत्रः रक्तम् मुखैः उरु वमन् नृप भग्नगात्रः ।
स्मृत्वा चराचर गुरुम् पुरुषम् पुराणम् तम् अरणम् मनसा जगाम ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्चित्र | २. भगवान् के इस अद्भुत | स्मृत्वा | १५. स्मृति हुई वह |
| ताण्डव | ३. ताण्डव नृत्य से | चराचर | १०. तब सारे जगत् के |
| विरुग्ण | ५ छिन्न-भिन्न हो गये | गुरुम् | ११. आदि शिक्षक |
| फण आत-पत्रः | ४. कालिय के फणरूप छत्ते | पुरुषम् | १३. पुरुष |
| रक्तम् | ८. रक्त | पुराणम् | १२. पुराण |
| मुखैः उरु | ७. वह मुख से अत्यधिक | नारायणम् तम् | १४. उन भगवान् नारायण की |
| वमन् | ९. उगलने लगा | अरणम् | १७. उनकी शरण में |
| नृप | १. हे परीक्षित् | मनसा | १६. मन ही मन |
| भग्नगात्रः । | ६. उसके अंग चूर-चूर हो गये | जगाम ॥ | १८. में गया। |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! भगवान् के इस अद्भुत ताण्डव नृत्य से कालिय के फण रूप छत्ते छिन्न-भिन्न हो गये। उसके अंग चूर-चूर हो गये। वह मुख से अत्यधिक रक्त उगलने लगा। तब सारे जगत् के आदि शिक्षक पुराण पुरुष उन भगवान् नारायण की स्मृति हुई। वह मन ही मन उनकी शरण में गया।

## एकत्रिंशः श्लोकः

**कृष्णस्य गर्भजगतोऽतिभरावसन्नं पार्ष्णिप्रहारपरिरुग्णफणातपत्रम् ।**
**दृष्ट्वाहिमाद्यमुपसेदुरमुष्य पत्न्य आर्ताः श्लथद्वसनभूषणकेशबन्धाः ॥३१॥**

**पदच्छेद—** कृष्णस्य गर्भ जगतः अतिभर अवसन्नम् पार्ष्णि प्रहार परिरुग्ण फण आत-पत्रम् ।
दृष्ट्वा अहिम् आद्यम् उपसेदुः अमुष्य पत्न्यः आर्ताः श्लथद् वसन भूषण केशबन्धाः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **कृष्ण स्यगर्भ** | १. भगवान् श्रीकृष्ण के उदर में | दृष्ट्वा अहिम् | १०. पति की यह दशा देख कर |
| **जगतः** | २. सम्पूर्ण विश्व है | आद्यम् | १२. भगवान् की |
| **अतिभर** | ३. उनके भारी बोझ से | उपसेदुः | ९. शरण में गईं वे |
| **अवसन्नम्** | ४. कालिय व्याकुल हो गया | अमुष्य | ८. अपने |
| **पार्ष्णि प्रहार** | ५. उनकी एड़ियों की चोट से | पत्न्यः | ११. उसकी पत्नियाँ |
| **परिरुग्ण** | ८. छिन्न-भिन्न हो गये | आर्ताः | १३. अत्यन्त आतुर थीं |
| **फण** | ७. फण | श्लथद् | १६. बिखर रही थीं |
| **आत-पत्रम् ।** | ६. उसके छत्र के समान | वसन भूषण | १४. उनके वस्त्र और आभूषण |
| | | केशबन्धाः ॥ | १५. तथा केश की चोटियाँ |

**श्लोकार्थ—**भगवान् श्रीकृष्ण के उदर में सम्पूर्ण विश्व है। उनके भारी बोझ से कालिय नाग व्याकुल हो गया। उनकी एड़ियों की चोट से उसके छत्र के समान फण छिन्न भिन्न हो गये। अपने पति की यह दशा देख कर उसकी पत्नियाँ भगवान् की शरण में गईं। वे अत्यन्त आतुर थीं। उनके वस्त्र आभूषण और केश की चोटियाँ बिखर रही थीं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**तास्तं सुविग्नमनसोऽथ पुरस्कृतार्भाः कायं निधाय भुवि भूतपतिं प्रणेमुः ।**
**साध्व्यः कृताञ्जलिपुटाः शमलस्य भर्तुर्मोक्षेप्सवः शरणदं शरणं प्रपन्नाः ॥३२॥**

**पदच्छेद—** ताः तम् सुविग्नमनसः अथ पुरस्कृत अर्भाः कायम् निधाय भुवि भूतपतिम् प्रणेमुः ।
साध्व्यः कृत अञ्जलिपुटाः शमलस्य भर्तुः मोक्ष ईप्सवः शरणदम् शरणम् प्रपन्नाः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **ताः तम्** | १. उस समय उन | साध्व्यः | २. साध्वी नाग पत्नियों के |
| **सुविग्नमनसः** | ३. चित्त में बड़ी घबराहट हुई | कृत | १०. करके |
| **अथ** | ४. तब वे | अञ्जलिपुटाः | ९. दोनों हाथ जोड़ |
| **पुरस्कृत** | ६. आगे करके | शमलस्य | १३. अपने अपराधी |
| **अर्भाः** | ५. अपने बालकों को | भर्तुः मोक्ष | १४. पति को छुड़ाने की |
| **कायम्** | ७. अपने शरीर से | ईप्सवः | १५. इच्छा से |
| **निधाय भुवि** | ८. पृथ्वी पर लेट गईं | शरणदम् | १६. शरण देने वाले भगवान् की |
| **भूतपतिम्** | ११. समस्त प्राणियों के स्वामी भगवान् | शरणम् | १७. शरण में |
| **प्रणेमुः ।** | १२. को प्रणाम किया | प्रपन्नाः ॥ | १८. गयीं |

**श्लोकार्थ—**उस समय उन साध्वी नाग पत्नियों के चित्त में बड़ी घबराहट हुई। तब वे अपने बालकों को आगे करके अपने शरीर से पृथ्वी पर लेट गईं। दोनों हाथ जोड़ करके समस्त प्राणियों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम किया। अपने अपराधी पति को छुड़ाने की इच्छा से शरण देने वाले भगवान् की शरण में गयीं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

नागपत्न्य ऊचुः—न्याय्यो हि दण्डः कृतकिल्बिषेऽस्मिंस्तवावतारः खलनिग्रहाय ।
रिपोः सुतानामपि तुल्यदृष्टेर्धत्से दमं फलमेवानुशंसन् ॥३३॥

पदच्छेद— न्याय्यः हि दण्डः कृत किल्बिषे अस्मिन् तव अवतारः खल निग्रहाय ।
रिपोः सुतानाम् अपि तुल्य दृष्टेः धत्से दमम् फलम् एव अनुशंसन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न्याय्यः हि | ८. सर्वथा उचित है | रिपोः | ९. शत्रु और |
| दण्डः | ६. दण्ड | सुतानाम् अपि | १०. पुत्र से भी |
| कृत | ७. देना | तुल्य दृष्टेः | ११. आपकी समान दृष्टि रहती है |
| किल्बिषे | ५. अपराधी को | धत्से | १६. व्यवस्था करते हैं |
| अस्मिन् | ४. इसलिये इस | दमम् | १५. दण्ड की |
| तव अवतारः | १. आपका यह अवतार ही | फलम् | १२. आप फल के |
| खल | २. दुष्टों को | एव | १३. ही |
| निग्रहाय । | ३. दण्ड देने के लिये हुआ है । | अनुशंसन् ॥ | १४. अनुसार |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपका यह अवतार ही दुष्टों को दण्ड देने के लिये हुआ है । इसलिये इस अपराधी को दण्ड देना सर्वथा उचित ही है । शत्रु और पुत्र में भी आपकी समान दृष्टि रहती है । आप फल के ही अनुसार दण्ड की व्यवस्था करते हैं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अनुग्रहोऽयं भवतः कृतो हि नो दण्डोऽसतां ते खलु कल्मषापहः ।
यद् दन्दशूकत्वममुष्य देहिनः क्रोधोऽपि तेऽनुग्रह एव सम्मतः ॥३४॥

पदच्छेद— अनुग्रहः अयम् भवतः कृतः हि नः दण्डः असताम् ते खलु कल्मष अपहः ।
यत् दन्दशूकत्वम् अमुष्य देहिनः क्रोधः अपि ते अनुग्रहः एव सम्मतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनुग्रहः अयम् | ३. यह बड़ी कृपा | यत् | ९. जो कि |
| भवतः | १. हे प्रभो ! आपने | दन्दशूकत्वम् | १०. सर्पयोनिधारी |
| कृतः | ४. की है | अमुष्य | ११. इस |
| हि नः | २. हमारे ऊपर | देहिनः | १२. जीव पर |
| दण्डः असताम् | ६. दुष्टों को दण्ड देते हैं | क्रोधः अपि | १४. क्रोध भी हम तो |
| ते खल | ५. क्योंकि आप जो | ते | १३. आप का |
| कल्मष | ७. उससे उनके पाप | अनुग्रह | १५. आपकी कृपा |
| अपहः । | ८. नष्ट हो जाते हैं | एव सम्मतः ॥ | १६. ही समझती हैं ॥ |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपने हमारे ऊपर यह बड़ी कृपा की है । क्योंकि आप तो दुष्टों को दण्ड देते हैं । उससे उनके पाप नष्ट हो जाते हैं । क्योंकि सर्पयोनिधारी इस जीव पर आपका क्रोध भी हम तो आपकी कृपा ही समझती हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**तपः सुतप्तं किमनेन पूर्वं निरस्तमानेन च मानदेन।**
**धर्मोऽथ वा सर्वजनानुकम्पया यतो भवांस्तुष्यति सर्वजीवः ॥३५॥**

पदच्छेद— तपः सुतप्तम् किमनेन पूर्वम् निरस्त मानेन च मानदेन।
धर्मः अथ वा सर्वजन अनुकम्पया यतः भवान् तुष्यति सर्वजीवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तपः** | ७. | तप | धर्मः | १२. | इसने कोई बड़ा पुण्य किया |
| **सुतप्तम्** | ८. | किया है | अथवा | ९. | अथवा |
| **किमनेन** | २. | इनने अवश्य ही कोई | सर्वजन | १०. | सब जीवों पर |
| **पूर्वम्** | १. | पूर्वजन्म में | अनुकम्पया | ११. | कृपा करते हुये |
| **निरस्त** | ४. | रहित होकर | यतः | १३. | जिससे |
| **मानेन** | ३. | मान | भवान् | १५. | आप |
| **च** | ५. | और | तुष्यति | १६. | प्रसन्न होते हैं |
| **मानदेन।** | ६. | दूसरों का सम्मान करते हुये | सर्वजीवः ॥ | १४. | सर्वजीव स्वरूप |

श्लोकार्थ—हे प्रभो! इसने पूर्वजन्म में अवश्य ही कोई मान रहित होकर और दूसरों का सम्मान करते हुये तप किया है। अथवा सब जीवों पर कृपा करते हुये इसने कोई बड़ा पुण्य किया है। जिससे सर्व जीव स्वरूप आप प्रसन्न होते हैं ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**कस्यानुभावोऽस्य न देव विद्महे तवाङ्घ्रिरेणुस्पर्शाधिकारः।**
**यद्वाञ्छया श्रीर्ललनाऽऽचरत्तपो विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥३६॥**

पदच्छेद— कस्य अनुभावः अस्य न देव विद्महे तव अङ्घ्रिरेणु स्पर्श अधिकारः।
यत् वाञ्छया श्रीः ललना आचरत् तपः विहाय कामान् सुचिरम् धृत व्रता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **कस्य** | २. | किस साधना का | **यत् वाञ्छया** | ९. | जिस रज की इच्छा से |
| **अनुभावः** | ३. | फल है | **श्रीः ललना** | १०. | आपकी अर्द्धांगिनी लक्ष्मीजी ने |
| **अस्य** | १. | यह इसको | **आचरत्** | १६. | की थी |
| **न देव** | ४. | हे प्रभो! हम नहीं | **तपः** | १५. | तपस्या |
| **विद्महे** | ५. | जानती हैं कि इसने | **विहाय** | १२. | त्याग कर |
| **तवअंघ्रि** | ६. | आपके चरण कमलों की | **कामान्** | ११. | समस्त भोगों को |
| **रेणुस्पर्श** | ७. | धूली का स्पर्श पाने का | **सुचिरम्** | १३. | बहुत दिनों तक |
| **अधिकारः।** | ८. | अधिकार कहाँ से पाया | **धृतव्रता ॥** | १४. | नियमों का पालन करते हुये |

श्लोकार्थ—यह इसकी किस साधना का फल है। हे प्रभो! हम नहीं जानती हैं कि इसने आपके चरण कमलों की धूली का स्पर्श पाने का अधिकार कहाँ से पाया। जिस रज की इच्छा से आपकी अर्द्धांगिनी लक्ष्मी जी ने समस्त भोगों को त्याग कर बहुत दिनों तक नियमों का पालन करती हुई तपस्या की थी ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**न नाकपृष्ठं न च सार्वभौमं न पारमेष्ठयं न रसाधिपत्यम् ।**
**न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा वाञ्छन्ति यत्पादरजः प्रपन्नाः ॥३७॥**

पदच्छेद— न नाकपृष्ठम् न च सार्वभौमम् न पारमेष्ठ्यम् न रसाधिपत्यम् ।
न योग सिद्धीः अपुनर्भवम् वा वाञ्छन्ति यत्पाद रजः प्रपन्नाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ५. | नहीं चाहते हैं | न | १२. | उन्हें न |
| नाकपृष्ठम् | ४. | स्वर्ग का राज्य | योगसिद्धीः | १३. | योगसिद्धियों की इच्छा है |
| न च | ६. | और न | अपुनर्भवम् | १५. | और नहीं वे मोक्ष |
| सार्वभौमम् | ७. | पृथ्वी की बादशाही | वा | १४. | अथवा |
| न | ८. | न ही | वाञ्छन्ति | १६. | चाहते हैं |
| पारमेष्ठ्यम् | ११. | ब्रह्मा का पद ही चाहते हैं | यत्पाद | १. | हे प्रभो ! जो आपके चरणों की |
| न | १०. | और न | रजः | २. | धूलि की |
| रसाधिपत्यम् । | ९. | रसातल का राज्य | प्रपन्नाः ॥ | ३. | शरण ले लेते हैं वे |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जो आपके चरणों की धूलि की शरण ले लेते हैं । वे स्वर्ग का राज्य नहीं चाहते हैं । और न पृथ्वी की बादशाही, न हीं रसातल का राज्य और न ब्रह्मा का पद ही चाहते हैं । उन्हें न योगसिद्धियों को इच्छा है । अथवा और नहीं वे मोक्ष चाहते हैं ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**तदेष नाथाप दुरापमन्यैस्तमोजनिः क्रोधवशोऽप्यहीशः ।**
**संसारचक्रे भ्रमतः शरीरिणो यदिच्छतः स्याद् विभवः समक्षः ॥३८॥**

पदच्छेद— तत् एष नाथ आप दुरापम् अन्यैः तमः अजनि क्रोधवशः अपि अहीशः ।
संसार चक्रे भ्रमतः शरीरिणः यत् इच्छतः स्यात् विभवः समक्षः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ५. | फिर भी इसे यह | संसारचक्रे | ११. | संसार चक्र में |
| एष नाथ | १. | हे स्वामी ! यह | भ्रमतः | १२. | पड़े हुये |
| आप | ८. | प्राप्त हुई है | शरीरिणः | १३. | जीव को |
| दुरापम् | ७. | दुर्लभ चरणरज | यत् | ९. | जिस चरणरज की |
| अन्यैः | ६. | दूसरों को | इच्छतः | १०. | इच्छा मात्र से |
| तमः अजनिः | ३. | तमोगुणी योनि में उत्पन्न हुआ है | स्यात् | १६. | हो जाती है |
| क्रोधवशः अपि | ४. | और अत्यन्त क्रोधी भी हैं | विभवः | १४. | इच्छानुसार सम्पत्ति |
| अहीशः । | २. | नागराज | समक्षः ॥ | १५. | प्राप्त |

श्लोकार्थ—हे स्वामो ! यह नाग राज तमोगुणी योनि में उत्पन्न हुआ है और अत्यन्त क्रोधी है । फिर भी इसे यह दूसरों को दुर्लभ चरणरज प्राप्त हुई है । जिस चरणरज को इच्छा मात्र से संसार चक्र में पड़े हुये जीव को इच्छानुसार सम्पत्ति प्राप्त हो जाती है ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने ।**
**भूतावासाय भूताय पराय परमात्मने ॥३९॥**

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते पुरुषाय महात्मने ।
भूत आवासाय भूताय पराय परम आत्मने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ३. | नमस्कार है | भूत | ६. | समस्त भूत प्राणियों में |
| तुभ्यम् | १. | आप | आवासाय | ७. | विराजमान और |
| भगवते | २. | भगवान् को | भूताय | ८. | सब पदार्थों के रूप में हैं |
| पुरुषाय | ५. | पुरुष रूप हैं | पराय | ९. | आप प्रकृति से परे |
| महात्मने । | ४. | आप अपरिमित | परमात्मने ॥ | १०. | स्वयं परमात्मा हैं |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप भगवान् को नमस्कार है। आप अपरिमित पुरुषरूप हैं। समस्त भूत प्राणियों में विराजमान और सब पदार्थों के रूप में हैं। आप प्रकृति से परे स्वयं परमात्मा है।

# चत्वारिंशः श्लोकः

**ज्ञानविज्ञाननिधये ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।**
**अगुणायाविकाराय नमस्तेऽप्राकृताय च ॥४०॥**

पदच्छेद— ज्ञान विज्ञान निधये ब्रह्मणे अनन्त शक्तये ।
अगुणाय अविकाराय नमः ते अप्राकृताय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञान | १. | आप ज्ञान और | अगुणाय | १०. | प्राकृतिक गुणों से परे हैं |
| विज्ञान | २. | अनुभवों के | अविकाराय | ७. | अप विकार रहित |
| निधये | ३. | खजाने हैं | नमः | १२. | नमस्कार है |
| ब्रह्मणे | ४. | आप ही ब्रह्म हैं | ते | ११. | आप को |
| अनन्त | ६. | अनन्त है | अप्राकृताय | ९. | अप्राकृत स्वरूप वाले |
| शक्तये । | ५. | आप की शक्ति | च ॥ | ८. | और |

श्लोकार्थ—आप ज्ञान और अनुभवों के खजाने हैं। आप ही ब्रह्म हैं। आप की शक्ति अनन्त है। आप विकार रहित अप्राकृत स्वरूप वाले और प्राकृतिक गुणों से परे हैं। आप को नमस्कार है ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**कालाय कालनाभाय कालावयवसाक्षिणे ।**
**विश्वाय तदुपद्रष्ट्रे तत्कर्त्रे विश्वहेतवे ॥४१॥**

पदच्छेद— कालाय कालनाभाय काल अवयव साक्षिणे ।
विश्वाय तत् उपद्रष्ट्रे तत् कर्त्रे विश्व हेतवे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कालाय | १. आप काल रूप हैं | विश्वाय | ७. आप विश्वरूप होते हुये भी |
| काल | २. काल शक्ति के | तत् | ८. उससे |
| नाभाय | ३. आश्रय हैं और | उपद्रष्ट्रे | ९. अलग रह कर उसके द्रष्टा हैं |
| काल | ४. काल के | तत् कर्त्रे | १०. आप उसके निमित्त और |
| अवयव | ५. अवयवों के | विश्व | ११. उपादान |
| साक्षिणे । | ६. साक्षी हैं । | हेतवे ॥ | १२. कारण हैं |

श्लोकार्थ—आप काल रूप हैं। और काल शक्ति के आश्रय हैं। तथा काल के अवयवों के साक्षी हैं। आप विश्वरूप होते हुये भी उससे अलग रह कर उसके द्रष्टा हैं। आप उसके निमित्त और उपादान कारण हैं॥

## द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**भूतमात्रेन्द्रियप्राणमनोबुद्ध्याशयात्मने ।**
**त्रिगुणेनाभिमानेन गूढस्वात्मानुभूतये ॥४२॥**

पदच्छेद— भूतमात्र इन्द्रिय प्राणमनः बुद्धि आशय आत्मने ।
त्रिगुणेन अभिमानेन गूढ स्व आत्म अनुभूतये ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भूतमात्र | १. पञ्चभूत-तन्मात्रायें | त्रिगुणेन | ७. तीनों गुण और |
| इन्द्रिय | २. इन्द्रियाँ | अभिमानेन | ८. उनके फल रूप अभिमान के द्वारा |
| प्राणमनः | ३. प्राण-मन | गूढ | १२. छिपा लिया है |
| बुद्धि | ४. बुद्धि और | स्व | ९. आप ने |
| आशय | ५. चित्त | आत्मा | १०. अपने |
| आत्मने । | ६. स्वरूप भी आप ही हैं | अनुभूतये ॥ | ११. आप को |

श्लोकार्थ—पञ्चभूत-तन्मात्रायें, इन्द्रियाँ, प्राण-मन, बुद्धि और चित्त स्वरूप भी आप ही हैं। तीनों गुण और उनके फलरूप अभिमान के द्वारा आपने अपने आप को छिपा लिया है॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**नमोऽनन्ताय सूक्ष्माय कूटस्थाय विपश्चिते ।**
**नानावादानुरोधाय वाच्यवाचकशक्तये ॥४३॥**

पदच्छेद— नमः अनन्ताय सूक्ष्माय कूटस्थाय विपश्चिते ।
नाना वाद अनुरोधाय वाच्य वाचक शक्तये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | १२. | आप को नमस्कार है | नाना | ६. | अनेक |
| अनन्ताय | १. | आप अनन्त | वाद | ७. | मतावलम्बियों को उन्हीं |
| सूक्ष्माय | २. | सूक्ष्म | अनुरोधाय | ८. | उन्हीं रूपों में दर्शन देते हैं |
| कूट | ३. | विकार | वाच्य | ९. | आप अर्थ और |
| स्थाय | ४. | रहित और | वाचक | १०. | शब्द की |
| विपश्चिते । | ५. | सर्वज्ञ हैं | शक्तये । | ११. | शक्ति भी हैं |

श्लोकार्थ—आप अनन्त, सूक्ष्म, विकार रहित और सर्वज्ञ हैं । अनेक मतावलम्बियों को उन्हीं-उन्हीं रूपों में दर्शन देते हैं । आप अर्थ और शब्द की शक्ति भी हैं ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**नमः प्रमाणमूलाय कवये शास्त्रयोनये ।**
**प्रवृत्ताय निवृत्ताय निगमाय नमो नमः ॥४४॥**

पदच्छेद— नमः प्रमाण मूलाय कवये शास्त्र योनये ।
प्रवृत्ताय निवृत्ताय निगमाय नमो नमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ५. | आप को नमस्कार है | प्रवृत्ताय | ७. | प्रवृत्ति मार्ग |
| प्रमाण | १. | हे प्रमाणों को | निवृत्ताय | ८. | निवृत्ति मार्ग दोनों के मूल |
| मूलाय | २. | प्रमाणित करने वाले | निगमाय | ९. | वेद स्वरूप आप ही हैं |
| कवये | ३. | आपका ज्ञान स्वतः सिद्ध है | नमो | १०. | आपको नमस्कार है |
| शास्त्र | ४. | समस्त शास्त्र आप से ही | नमः ॥ | ११. | नमस्कार है |
| योनये । | ५. | निकले हैं । | | | |

श्लोकार्थ—हे प्रमाणों को प्रमाणित करने वाले ! आप का ज्ञान स्वयं सिद्ध है । समस्त शास्त्र आप से ही निकले हैं । आपको नमस्कार है । प्रवृत्ति मार्ग, निवृत्ति मार्ग दोनों के मूल वेद स्वरूप आप ही हैं । आपको नमस्कार है, नमस्कार है ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**नमः कृष्णाय रामाय वसुदेवसुताय च।**
**प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः ॥४५॥**

पदच्छेद— नमः कृष्णाय रामाय वसुदेव सुताय च।
प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सात्वताम् पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | १०. | हम आपको नमस्कार करती हैं | प्रद्युम्नाय | ४. | प्रद्युम्न |
| कृष्णाय | ६. | श्रीकृष्ण | अनिरुद्धाय | ६. | अनिरुद्ध भी हैं |
| रामाय | ३. | सङ्कर्षण | सात्वताम् | ७. | आप भक्तों और यादवों के |
| वसुदेव | १. | आप वसुदेव जी के | पतये | ८. | स्वामी हैं |
| सुताय | २. | पुत्र वासुदेव | नमः ॥ | ११. | आपको नमस्कार है |
| च। | ५. | और | | | |

श्लोकार्थ—आप वसुदेव जो के पुत्र वासुदेव, सङ्कर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध भी हैं। आप भक्तों और यादवों के स्वामी हैं। हम आपको नमस्कार करती हैं। आपको नमस्कार है।

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**नमो गुणप्रदीपाय गुणात्मच्छादनाय च।**
**गुणवृत्त्युपलक्ष्याय गुणद्रष्ट्रे स्वसंविदे ॥४६॥**

पदच्छेद— नमः गुण प्रदीपाय गुण आत्म छादनाय च।
गुण वृत्ति उपलक्ष्याय गुण द्रष्ट्रे स्व संविदे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | १४. | आपको नमस्कार है | गुण | ७. | आप गुणों की |
| गुण | १. | आप अन्तः करण के | वृत्ति | ८. | वृत्तियों के |
| प्रदीपाय | २. | प्रकाशक हैं | उपलक्ष्याय | ६. | साक्षी |
| गुण | ४. | उन्हीं गुणों के द्वारा | गुण | १२. | वृत्तियों द्वारा ही |
| आत्म | ५. | अपने आपको | द्रष्ट्रे | १३. | जाने जाते हैं |
| छादनाय | ६. | ढके रहते हैं | स्व | १०. | स्वयम् |
| च। | ३. | और | संविदे ॥ | ११. | प्रकाश और |

श्लोकार्थ—आप अन्तः करण के प्रकाशक हैं। और उन्हीं गुणों के द्वारा अपने आपको ढके रहते हैं। आप गुणों की वृत्तियों के साक्षी, स्वयम् प्रकाश और वृत्तियों द्वारा ही जाने जाते हैं। आपको नमस्कार है ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

अव्याकृतविहाराय सर्वव्याकृतसिद्धये ।
हृषीकेश नमस्तेऽस्तु मुनये मौनशीलिने ॥४७॥

पदच्छेद— अव्याकृत विहाराय सर्वव्याकृत सिद्धये ।
हृषीकेश नमस्ते अस्तु मुनये मौनशीलिने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अव्याकृत | १. आप मूल प्रकृति में | हृषीकेश | ६. | हे हृषीकेश ! |
| विहाराय | २. नित्यविहार करते हैं | नमस्ते | ९. | आपको नमस्कार |
| सर्व | ३. समस्त | अस्तु | १०. | है |
| व्याकृत | ४. जगत् की | मुनये | ७. | आप मननशील है |
| सिद्धये । | ५. सिद्धि आपसे होती है | मौनशीलिने ॥ | ८. | मौन भी आपका ही स्वरूप है |

श्लोकार्थ - हे प्रभो ! आप मूल प्रकृति में नित्य विहार करते हैं । समस्त जगत् की सिद्धि आपसे ही होती है । हे हृषीकेश ! आप मननशील है । मौन भी आपका ही स्वरूप है । आपको नमस्कार है ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

परावरगतिज्ञाय सर्वाध्यक्षाय ते नमः ।
अविश्वाय च विश्वाय तद्द्रष्ट्रेऽस्य च हेतवे ॥४८॥

पदच्छेद— पर अवर गतिज्ञाय सर्व अध्यक्षाय ते नमः ।
अविश्वाय च विश्वाय तत् द्रष्ट्रे अस्य च हेतवे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पर अवर | १. आप सूक्ष्म-स्थूल | अविश्वाय | ७. | आप विश्व से परे भी हैं |
| गति | २. गतियों के | च विश्वाय | ६. | आप विश्वरूप भी हैं और |
| ज्ञाय | ३. जानने वाले हैं | तत् | ८. | आप उस विश्व के |
| सर्व | ४. सबके | द्रष्ट्रे | ९. | जानने वाले |
| अध्यक्षाय | ५. स्वामी हैं (तथा) | अस्य | ११. | इस संसार के |
| ते | १३. आपको | च | १०. | और |
| नमः । | १४. नमस्कार है | हेतवे ॥ | १२. | मूल कारण भी हैं |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप सूक्ष्म, स्थूल गतियों के जानने वाले हैं । सबके स्वामी हैं । आप विश्वरूप भी हैं । और आप विश्व से परे भी हैं । आप उस विश्व के जानने वाले और इस संसार के मूल कारण भी हैं । आपको नमस्कार है ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**त्वं ह्यस्य जन्मस्थितिसंयमान् प्रभो गुणैरनीहोऽकृत कालशक्तिधृक् ।**
**तत्तत्स्वभावान् प्रतिबोधयन् सतः समीक्षयामोघविहार ईहसे ॥४९॥**

पदच्छेद— त्वम् हि अस्य जन्म स्थिति संयमान् प्रभो गुणैः अनीहः अकृत कालशक्तिधृक् ।
तत् तत् स्वभावान् प्रतिबोधयन् सतः समीक्षया अमोघ विहार ईहसे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **त्वम् हि अस्य** | ६. | आप इस विश्व की | तत् तत् | १३. | जीवों के |
| **जन्मस्थिति** | ७. | उत्पत्ति-स्थिति और | स्वभावान् | १४. | स्वभावों को |
| **संयमान्** | ८. | प्रलय की लीला करते हैं | प्रतिबोधयन् | १५. | जाग्रत् |
| **प्रभो** | १. | हे प्रभो ! आप | सतः | ११. | आप सत्य |
| **गुणैः** | २. | गुणों के प्रति | समीक्षया | १२. | सङ्कल्प हैं अतः |
| **अनीहः** | ३. | इच्छा न होने के कारण | अमोघ | १०. | व्यर्थ नहीं होती हैं |
| **अकृत** | ४. | आप कोई कर्म नहीं करते | विहार | ९. | आपकी लीलायें |
| **कालशक्तिधृक् ।** | ५. | तथापि कालशक्ति को स्वीकार करके | ईहसे ॥ | १६. | कर देते हैं |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! गुणों के प्रति इच्छा न होने से कारण आप कोई कर्म नहीं करते । तथापि कालशक्ति को स्वीकार करके आप इस विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की लीला करते हैं आपकी लीलायें व्यर्थ नहीं होती हैं । आप सत्य सङ्कल्प हैं । अतः जीवों के स्वभावों को जाग्रत् कर देते हैं ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**तस्यैव तेऽमूस्तनवस्त्रिलोक्यां शान्ता अशान्ता उत मूढयोनयः ।**
**शान्ताः प्रियास्ते ह्यधुनावितुं सतां स्थातुश्च ते धर्मपरीप्सयेहतः ॥५०॥**

पदच्छेद—तस्य एव ते अमूः तनवः त्रिलोक्याम् शान्ताः अशान्ताः उत मूढ योनयः ।
शान्ताः प्रियाः ते हि अधुना अवितुम् सताम् स्थातुः च ते धर्मपरीप्सया ईहतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तस्य एव** | १. | उसी प्रकार | शान्ताः | १०. | सत्त्वगुण प्रधान शान्तजन |
| **ते अमूः** | ३. | आपकी ये तीन | प्रियाः | ११. | विशेष प्रिय हैं |
| **तनवः** | ४. | लीला मूर्तियाँ हैं | तेहि अधुना | ९. | आपको इस अवतार में |
| **त्रिलोक्याम्** | २. | त्रिलोकी में | अवितुम् | १४. | रक्षा तथा |
| **शान्ताः** | ५. | सत्त्वगुण प्रधान शान्त | सताम् | १३. | साधु जनों की |
| **अशान्ताः** | ६. | रजोगुण प्रधान अशान्त | स्थातुः | १६. | विस्तार की |
| **उत मूढ** | ७. | और तमोगुण प्रधान मूढ | च ते | १२. | क्योंकि आपका ये अवतार |
| **योनयः ।** | ८. | योनियाँ हैं । | धर्मपरि | १५. | धर्म की रक्षा |
| | | | ईप्सयाईहतः ॥ | १७. | एवं इच्छा से ही हुआ है ॥ |

श्लोकार्थ—उसी प्रकार त्रिलोकी में आपकी ये तीन लीला मूर्तियाँ हैं । सत्त्वगुण प्रधान शान्त, रजोगुण प्रधान अशान्त और तमोगुण प्रधान मूढ योनियाँ हैं । आपको इस अवतार में सत्त्वगुण, प्रधान शान्त जन विशेष प्रिय हैं । क्योंकि आपका यह अवतार साधुजनों की रक्षा तथा धर्म की रक्षा एवं विस्तार की इच्छा से ही हुआ है ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**अपराधः सकृद्भर्त्रा सोढव्यः स्वप्रजाकृतः ।**
**क्षन्तुमर्हसि शान्तात्मन् मूढस्य त्वामजानतः ॥५१॥**

पदच्छेद— अपराधः सकृत् भर्त्रा सोढव्यः स्वप्रजा कृतः ।
क्षन्तुम् अर्हसि शान्त आत्मन् मूढस्य त्वाम् अजानतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपराधः | ८. | अपराध को | क्षन्तुम् | १३. | आप इसे क्षमा |
| सकृत् | ४. | एक बार | अर्हसि | १४. | कर दीजिये |
| भर्त्रा | ३. | स्वामी को | शान्त | १. | हे शान्त |
| सोढव्यः | ६. | सह लेना चाहिये | आत्मन् | २. | आत्मन् |
| स्व | ५. | अपनी | मूढस्य | १०. | यह मूढ है |
| प्रजा | ६. | प्रजा द्वारा | त्वाम् | ११. | आपको |
| कृतः । | ७. | किये गये | अजानतः ॥ | १२. | पहचानता नहीं है |

श्लोकार्थ—हे शान्त आत्मन् ! स्वामी को एकबार अपनी प्रजा द्वारा किये गये अपराध को सह लेना चाहिये । यह मूढ है आपको पहचानता नहीं है । आप इसे क्षमा कर दीजिये ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

**अनुगृह्णीष्व भगवन् प्राणांस्त्यजति पन्नगः ।**
**स्त्रीणां नः साधुशोच्यानां पतिः प्राणः प्रदीयताम् ॥५२॥**

पदच्छेद— अनुगृह्णीष्व भगवन् प्राणान् त्यजति पन्नगः ।
स्त्रीणाम् नः साधु शोच्यानाम् पतिः प्राणः प्रदीयताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनुगृह्णीष्व | २. | कृपा कीजिये | स्त्रीणाम् नः | ७. | हम अबलाओं पर |
| भगवन् | १. | हे भगवन् ! | साधु | ६. | साधु पुरुष सदा |
| प्राणान् | ४. | प्राण | शोच्यानाम् | ८. | दया करते आये हैं |
| त्यजति | ५. | छोड़ने ही वाला है | पतिः प्राणः | ६. | आप हमें प्राण स्वरूप पति को |
| पन्नगः । | ३. | अब यह सर्प | प्रदीयताम् ॥ | १०. | दे दीजिये |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! कृपा कीजिये । अब यह सर्प प्राण छोड़ने ही वाला है । साधु पुरुष सदा हम अबलाओं पर दया करते आये हैं । आप हमें प्राण स्वरूप पति को दे दीजिये ॥

## त्रिपञ्चाशः श्लोकः

**विधेहि ते किङ्करीणामनुष्ठेयं तवाज्ञया ।**
**यच्छ्रद्धयानुतिष्ठन् वै मुच्यते सर्वतोभयात् ॥५३॥**

पदच्छेद— विधेहि ते किङ्करीणाम् अनुष्ठेयम् तव आज्ञया ।
यत् श्रद्धया अनुतिष्ठन् वै मुच्यते सर्वतोभयात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विधेहि | ३. | आज्ञा कीजिये हम | यत् | ७. | क्योंकि जो |
| ते | १. | हम आपकी | श्रद्धया | ८. | श्रद्धा के साथ आपकी |
| किङ्करीणाम् | २. | दासी है | अनुतिष्ठन् | ९. | आज्ञा का पालन करता है |
| अनुष्ठेयम् | ६. | करें | वै | १०. | वह निश्चय ही |
| तव | ४. | आपको | मुच्यते | १२. | छूट जाता है |
| आज्ञया । | ५. | क्या सेवा | सर्वतोभयात् ॥ | ११. | सब प्रकार के भयों से |

श्लोकार्थ—हम आपकी दासी हैं । आज्ञा कीजिये हम आपकी क्या सेवा करें । क्योंकि जो श्रद्धा के साथ आपकी आज्ञा का पालन करता है, वह निश्चय ही सब भयों से छूट जाता है ॥

## चतुःपञ्चाशः श्लोकः

**इत्थं स नागपत्नीभिर्भगवान् समभिष्टुतः ।**
**मूर्च्छितं भग्नशिरसं विससर्जाङ्घ्रिकुट्टनैः ॥५४॥**

पदच्छेद— इत्थम् सः नागपत्नीभिः भगवान् समभिष्टुतः ।
मूर्च्छितम् भग्न शिरसम् विससर्ज अङ्घ्रि कुट्टनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | ९. | इस प्रकार | मूर्च्छितम् | ५. | वह बेसुध हो रहा था |
| सः | ६. | जब उन | भग्न | ४. | छिन्न-भिन्न हो गये थे |
| नाग | ७. | नाग | शिरसम् | ३. | कालिय नाग के फण |
| पत्नीभिः | ८. | पत्नियों ने | विससर्ज | १२. | उन्होंने उस नाग को छोड़ दिया |
| भगवान् | १०. | भगवान् की | अङ्घ्रि | १. | भगवान् के चरणों की |
| समभिष्टुतः । | ११. | स्तुति की तो | कुट्टनैः ॥ | २. | ठोकरों से उस |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों की ठोकरों से उस कालियनाग के फण छिन्न-भिन्न हो गये थे । वह बेसुध हो रहा था । जब उन नाग-पत्नियों ने इस प्रकार भगवान् की स्तुति की तो उन्होंने उसे छोड़ दिया ॥

# पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

**प्रतिलब्धेन्द्रियप्राणः कालियः शनकैर्हरिम् ।**
**कृच्छ्रात् समुच्छ्वसन् दीनः कृष्णं प्राह कृताञ्जलिः ॥५५॥**

पदच्छेद— प्रतिलब्ध इन्द्रिय प्राणः कालियः शनकैः हरिम् ॥
कृच्छ्रात् समुच्छ्वसन् दीनः कृष्णम् प्राह कृतअञ्जलिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रतिलब्ध | ५. | कुछ चेतना जग गई | कृच्छ्रात् | ६. | वह बड़ी कठिनाई से |
| इन्द्रिय | ३. | इन्द्रियों और | समुच्छ्वसन् | ७. | श्वास लेने लगा फिर |
| प्राणः | ४. | प्राणों में | दीनः | ८. | बड़ी दीनता के साथ |
| कालियः | २. | कालिय नाग की | कृष्णम् | ११. | श्रीकृष्ण से |
| शनकैः | १. | धीरे-धीरे | प्राह | १२. | इस प्रकार बोला |
| हरिम् । | १०. | भगवान् | कृतअञ्जलिः ॥ | ९. | हाथ जोड़ कर |

श्लोकार्थ—धीरे-धीरे कालिय नाग की इन्द्रियों और प्राणों में कुछ चेतना जग गई । वह बड़ी कठिनाई से श्वास लेने लगा । फिर बड़ी दीनता के साथ हाथ जोड़ कर भगवान् श्रीकृष्ण से इस प्रकार बोला ॥

# षट्पञ्चाशः श्लोकः

कालिय उवाच— **वयं खलाः सहोत्पत्त्या तामसा दीर्घमन्यवः ।**
**स्वभावो दुस्त्यजो नाथ लोकानां यदसद्ग्रहः ॥५६॥**

पदच्छेद— वयम् खलाः सह उत्पत्त्या तामसाः दीर्घ मन्यवः ।
स्वभावः दुस्त्यजः नाथ लोकानाम् यत् असत् ग्रहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वयम् | २. | हम | स्वभावः | ९. | अतः अपना स्वभाव |
| खलाः | ५. | दुष्ट | दुस्त्यजः | १०. | छोड़ना बहुत कठिन है |
| सह | ४. | से ही | नाथ | १. | हे नाथ ! |
| उत्पत्त्या | ३. | जन्म | लोकानाम् | १२. | संसार के लोग |
| तामसा | ६. | तमो गुणी और | यत् | ११. | इसी स्वभाव के कारण |
| दीर्घ | ७. | बहुत अधिक | असत् | १३. | अनेक दुराग्रहों में |
| मन्यवः । | ८. | क्रोधी है | ग्रहः ॥ | १४. | फंस जाते हैं |

श्लोकार्थ—हे नाथ ! हम जन्म से ही दुष्ट, तमो गुणी और बहुत अधिक क्रोधी हैं । अतः अपना स्वभाव छोड़ना बहुत कठिन है । इसी स्वभाव के कारण संसार के लोग अनेक दुराग्रहों में फंस जाते हैं ॥

## सप्तपञ्चाशः श्लोकः

**त्वया सृष्टमिदं विश्वं धातर्गुणविसर्जनम् ।**
**नानास्वभाववीर्यौजोयोनिबीजाशयाकृति ॥५७॥**

पदच्छेद—  त्वया सृष्टम् इदम् विश्वम् धातः गुण विसर्जनम् ।
नाना स्वभाव वीर्य ओजो योनिबीज आशय आकृति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वया | २. | आपने ही | नाना | ७. | अनेक प्रकार के |
| सृष्टम् | १४. | निमाण किया है | स्वभाव | ८. | स्वभाव |
| इदम् | ५. | इस | वीर्य | ९. | वीर्य |
| विश्वम् | ६. | जगत् में | ओजो | १०. | बल |
| धातः | १. | हे विश्व विधाता ! | योनिबीज | ११. | योनि बीज |
| गुण | ३. | गुणों के | आशय | १२. | चित्त और |
| विसर्जनम् । | ४. | भेद से | आकृति ॥ | १३. | आकृतियों का |

श्लोकार्थ—हे विश्वविधाता ! आपने ही गुणों के भेद से इस जगत् में अनेक प्रकार के स्वभाव, वीर्य, बल, योनि, बीज, चित्त और आकृतियों का निर्माण किया है ॥

## अष्टपञ्चाशः श्लोकः

**वयं च तत्र भगवन् सर्पा जात्युरुमन्यवः ।**
**कथं त्यजामस्त्वन्मायां दुस्त्यजां मोहिताः स्वयम् ॥५८॥**

पदच्छेद—  वयम् च तत्र भगवन् सर्पाः जाति उरुमन्यवः ।
कथम् त्यजामः त्वत् मायाम् दुस्त्यजाम् मोहिताः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वयम् | ३. | हम | कथम् | १४. | कैसे करें |
| च | ५. | और | त्यजामः | १३. | त्याग |
| तत्र | २. | आप की सृष्टि में | त्वत् | ११. | आपकी |
| भगवन् | १. | हे भगवान् | मायाम् | ८. | हम इस माया में |
| सर्पाः | ४. | सर्प भी हैं | दुस्त्यजाम् | १२. | इस दुस्त्यज माया का |
| जाति | ६. | हम जन्म से ही | मोहिताः | १०. | मोहित हो रहे हैं फिर |
| उरुमन्यवः । | ७. | बड़े क्रोधी होते हैं | स्वयम् ॥ | ९. | स्वयम् |

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! आपकी ही सृष्टि में हम सर्प भी हैं । और हम जन्म से ही क्रोधी होते हैं । हम इस माया में स्वयम् मोहित हो रहे हैं । फिर आपकी इस दुस्त्यज माया का त्याग कैसे करें ॥

## एकोनषष्टितमः श्लोकः

**भवान् हि कारणं तत्र सर्वज्ञो जगदीश्वरः ।**
**अनुग्रहं निग्रहं वा मन्यसे तद् विधेहि नः ॥५६॥**

पदच्छेद— भवान् हि कारणम् तत्र सर्वज्ञः जगत् ईश्वरः ।
अनुग्रहम् निग्रहम् वा मन्यसे तत् विधेहि नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भवान् | १. आप | अनुग्रहम् | ७. अब आप कृपा |
| हि कारणम् | ६. भी कारण हैं | निग्रहम् | ९. दण्ड |
| तत्र | ५. आप स्वभाव और माया के | वा | ८. अथवा |
| सर्वज्ञः | २. सर्वज्ञ और | मन्यसे | १०. जो उचित समझें |
| जगत् | ३. सम्पूर्ण जगत् के | तत् | ११. वह |
| ईश्वरः । | ४. स्वामी हैं | विधेहि नः ॥ | १२. हमें प्रदान करें |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप सर्वज्ञ और सम्पूर्ण जगत् के स्वामी हैं । आप स्वभाव और माया के भी कारण हैं । अब आप कृपा अथवा दण्ड जो उचित समझें वह हमें प्रदान करें ॥

## षष्टितमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इत्याकर्ण्य वचः प्राह भगवान् कार्यमानुषः ।**
**नात्र स्थेयं त्वया सर्प समुद्रं याहि मा चिरम् ।**
**स्वज्ञात्यपत्यदाराढ्यो गोनृभिर्भुज्यतां नदी ॥६०॥**

पदच्छेद— इति आकर्ण्य वचः प्राह भगवान् कार्यं मानुषः ।
न अत्र स्थेयम् त्वया सर्प समुद्रम् याहि मा चिरम् ॥
स्वज्ञाति अपत्य दाराढ्यः गो नृभिः भुज्यताम् नदी ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. नाग की यह | समुद्रम् | १४. समुद्र में |
| अकर्ण्य वचः | २. बात सुनकर | याहि | १५. चला जा |
| प्राह | ५. कहा कि | मा चिरम् | १३. शीघ्र ही यहाँ से |
| भगवान् | ४. भगवान् श्रीकृष्ण ने | स्वज्ञाति | १०. तू अपने जाति-भाई |
| कार्यं मानुषः । | ३. लीला मनुष्य | अपत्य | ११. पुत्र और |
| न अत्र | ८. यहाँ नहीं | दाराढ्यः | १२. स्त्रियों के साथ |
| स्थेयम् | ९. रहना चाहिये | गो | १६. गौएँ और |
| त्वया | ७. अब तुम्हें | नृभिः | १७. मनुष्य |
| सर्प | ६. हे सर्प ! | भुज्यताम् नदी ॥ | १८. यमुना जल का उपभोग करें |

श्लोकार्थ—नाग की यह बात सुनकर लीला मनुष्य भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि हे सर्प ! अब तुझे यहाँ नहीं रहना चाहिये । तू अपने जाति-भाई, पुत्र और स्त्रियों के साथ शीघ्र ही यहाँ से समुद्र में चला जा । गौएँ और मनुष्य यमुना जल का उपभोग करें ॥

## एकषष्टितमः श्लोकः

**य एतत् संस्मरेन्मर्त्यस्तुभ्यं मदनुशासनम् ।**
**कीर्तयन्नुभयोः सन्ध्योर्न युष्मद् भयमाप्नुयात् ॥६१॥**

पदच्छेद— यः एतत् संस्मरेत् मर्त्यः तुभ्यम् मत् अनुशासनम् ।
कीर्तयन् उभयोः सन्ध्योः न युष्मत् भयम् आप्नुयात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः | १. जो | कीर्तयन् | १०. कीर्तन करेगा |
| एतत् | ७. इस | उभयोः | ३. दोनों |
| संस्मरेत् | ६. स्मरण और | सन्ध्योः | ४. समय |
| मर्त्यः | २. मनुष्य | न | १३. नहीं |
| तुभ्यम् | ५. तुझको दी हुई | युष्मत् | ११. उसे साँपों से |
| मत् | ६. मेरी | भयम् | १२. कभी भय |
| अनुशासनम् । | ८. आज्ञा का | आप्नुयात् ॥ | १४. होगा |

श्लोकार्थ—जो मनुष्य दोनों समय तुझे दी हुई मेरी इस आज्ञा का स्मरण और कीर्तन करेगा उसे साँपों से कभी भय नहीं होगा ।

## द्विषष्टितमः श्लोकः

**योऽस्मिन् स्नात्वा मदाक्रीडे देवादींस्तर्पयेज्जलैः ।**
**उपोष्य मां स्मरन्नर्चेत् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥६२॥**

पदच्छेद— यः अस्मिन् स्नात्वा मत् आक्रीडे देवादीन् तर्पयेत् जलैः ।
उपोष्य माम् स्मरन् अर्चेत् सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः | ३. इसलिये जो पुरुष | जलैः । | ६. जल से |
| अस्मिन् | ४. इसमें | उपोष्य | ९. एवं उपवास करके |
| स्नात्वा | ५. स्नान करके | माम् स्मरेत् | १०. मेरा स्मरण करता हुआ |
| मत् | १. मैंने इस कालिय दह में | अर्चेत् | ११. मेरी पूजा करेगा |
| आक्रीडे | २. क्रीडा की है | सर्वं | १२. वह सब |
| देवादीन् | ७. देवता और पितरों का | पापैः | १३. पापों से |
| तर्पयेत् | ८. तर्पण करेगा | प्रमुच्यते ॥ | १४. मुक्त हो जायेगा |

श्लोकार्थ—मैंने इस कालिय दह में क्रीडा की है। इसलिये जो पुरुष इसमें स्नान करके जल से देवता और पितरों का तर्पण करेगा। एवम् उपवास करके मेरा स्मरण करता हुआ मेरी पूजा करेगा वह सब पापों से मुक्त हो जायेगा ॥

## त्रिषष्टितमः श्लोकः

**द्वीपं रमणकं हित्वा ह्रदमेतमुपाश्रिताः ।**
**यद्भयात् स सुपर्णस्त्वां नाद्यान्मत्पादलाञ्छितम् ॥६३॥**

पदच्छेद— द्वीपम् रमणकम् हित्वा ह्रदम् एतम् उपाश्रिताः ।
यद्भयात् सः सुपर्णः त्वां न अद्यात् मत्पाद लाञ्छितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वीपम् | ३. द्वीप को | यत्भयात् | १. जिस गरुड़ के भय से तूने |
| रमणकम् | २. रमणक | सः सुपर्णः | ८. वही गरुड़ |
| हित्वा | ४. छोड़कर | त्वाम् | ११. तुझे |
| ह्रदम् | ६. कुण्ड को | न अद्यात् | १२. नहीं खायेंगे |
| एतम् | ५. इस | मत्पाद | ९. मेरे चरण चिह्नों से |
| उपाश्रितम् । | ७. अपना स्थान बनाया है | लाञ्छितम् ॥ | १०. अङ्कित |

श्लोकार्थ—जिस गरुड़ के भय से तूने रमणक द्वीप को छोड़कर इस कुण्ड को अपना स्थान बनाया है, वही गरुड मेरे चरण चिह्नों से अङ्कित तुझे नहीं खायेंगे ॥

## चतुःषष्टितमः श्लोकः

**एवमुक्तो भगवता कृष्णेनाद्भुतकर्मणा ।**
**तं पूजयामास मुदा नागपत्न्यश्च सादरम् ॥६४॥**

पदच्छेद— एवम् उक्तः भगवता कृष्णेन अद्भुत कर्मणा ।
तम् पूजयामास मुदा नागपत्न्यः च सादरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | ५. उनके ऐसा | तम् | ११. उन श्रीकृष्ण की |
| उक्तः | ६. कहने पर | पूजयामास | १२. पूजा की |
| भगवता | १. भगवान् | मुदा | ७. आनन्दित होकर |
| कृष्णेन | २. श्रीकृष्ण की | नागपत्न्यः | १०. नागपत्नियों ने |
| अद्भुत | ४. अद्भुत है | च | ८. और |
| कर्मणा । | ३. सभी लीलायें | सादरम् ॥ | ९. आदरपूर्वक |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की सभी लीलायें अद्भुत हैं । उनके ऐसा कहने पर आनन्दित होकर और आदरपूर्वक नागपत्नियों ने उन श्रीकृष्ण की पूजा की ॥

## पञ्चषष्टितमः श्लोकः

दिव्याम्बरस्रङ्मणिभिः परार्ध्यैरपि भूषणैः ।
दिव्यगन्धानुलेपैश्च महत्योत्पलमालया ॥६५॥

पदच्छेद— दिव्य अम्बर स्रक् मणिभिः परार्ध्यैः अपि भूषणैः ।
दिव्य गन्ध अनुलेपैः च महत्या उत्पल मालया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिव्य | १. उन्होंने भगवान् को दिव्य | दिव्य | ८. | दिव्य |
| अम्बर | २. वस्त्र | गन्ध | ९. | गन्ध |
| स्रक् | ३. पुष्पमाला | अनुलेपैः | १०. | चन्दन |
| मणिभिः | ४. मणि | च | ११. | और |
| परार्ध्यैः | ५. बहुमूल्य | महत्या | १२. | अति उत्तम |
| अपि | ७. भी अर्पित किये (और) | उत्पल | १३. | कमलों की |
| भूषणैः । | ६. आभूषण | मालया ॥ | १४. | माला से भगवान् की पूजा की |

श्लोकार्थ—उन्होंने भगवान् को दिव्य वस्त्र, पुष्प माला, मणि, बहुमूल्य आभूषण भी अर्पित किये और दिव्य, गन्ध, चन्दन और अति उत्तम कमलों की माला से भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा की ॥

## चतुःषष्टितमः श्लोकः

पूजयित्वा जगन्नाथं प्रसाद्य गरुडध्वजम् ।
ततः प्रीतोऽभ्यनुज्ञातः परिक्रम्याभिनन्द्य तम् ॥६६॥

पदच्छेद— पूजयित्वा जगन्नाथम् प्रसाद्य गरुडध्वजम् ।
ततः प्रीतः अभ्यनुज्ञातः परिक्रम्य अभिवन्द्य तम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पूजयित्वा | ३. पूजन करके | प्रीतः | ६. | बड़े प्रेम से उनकी |
| जगन्नाथम् | १. जगत् के स्वामी | अभ्यनुज्ञातः | १०. | अनुमति माँगी |
| प्रसाद्य | ४. उन्हें प्रसन्न किया | परिक्रम्य | ७. | परिक्रमा की |
| गरुडध्वजम् । | २. गरुडध्वज भगवान् का | अभिवन्द्य | ८. | वन्दना की और |
| ततः | ५. इसके बाद | तम् ॥ | ९. | उनसे |

श्लोकार्थ—जगत् के स्वामी गरुडध्वज भगवान् का पूजन करके उन्हें प्रसन्न किया । इसके बाद बड़े प्रेम से उनकी परिक्रमा करके वन्दना की और उनसे अनुमति माँगी ॥

## सप्तषष्टितमः श्लोकः

**सकलत्रसुहृत्पुत्रो द्वीपमब्धेर्जगाम ह ।**
**तदैव सामृतजला यमुना निर्विषाभवत् ।**
**अनुग्रहाद् भगवतः क्रीडामानुषरूपिणः ॥६७॥**

पदच्छेद— सकलत्र सुहृत् पुत्रः द्वीपम् अब्धेः जगाम ह ।
तदा एव सा अमृत जला यमुना निर्विषा अभवत् ।
अनुग्रहात् भगवतः क्रीडा मानुष रूपिणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सकलत्र | ३. | पत्नियों सहित वह | जला | १२. | जल वाली |
| सुहृत् | १ | बन्धु-बान्धवों | यमुना | ९. | जमुना जी |
| पुत्रः | २. | पुत्रों और | निर्विषा | १०. | विषहीन होकर |
| द्वीपम् | ५. | रमणक द्वीप में | अभवत् | १३. | हो गयीं |
| अब्धेः | ४. | समुद्र के | अनुग्रहात् | १८. | कृपा ही है |
| जगाम ह | ६. | चला गया | भगवतः | १७. | भगवान् की यह |
| तदा एव | ७. | तभी से | क्रीडा | १४. | लीला के लिये |
| सा | ८. | वह | मानुष | १५. | मनुष्य रूप |
| अमृत | ११. | अमृत के समान | रूपिणः ॥ | १६. | धारण करने वाले |

श्लोकार्थ—बन्धु-बान्धवों, पुत्रों और पत्नियों सहित, वह समुद्र के रमणक द्वीप में चला गया । तभी से वह यमुना जी विषहीन होकर अमृत के समान जल वाला हो गयीं । लीला के लिये मनुष्य रूप धारण करने वाले भगवान् की यह कृपा ही है ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे**
**कालियमोक्षणम् नाम षोडशः अध्यायः ॥१६॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## एकादशः स्कन्धः

## सप्तदशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— नागालयं रमणकं कस्मात्तत्याज कालियः ।
कृतं किं वा सुपर्णस्य तेनैकेनासमञ्जसम् ॥१॥

पदच्छेद— नाग आलयम् रमणकम् कस्मात् तत्याज कालियः ।
कृतम् किम् वा सुपर्णस्य तेन एकेन असमञ्जसम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नाग | २. | नागों के | कृतम् | १२. | किया था |
| आलयम् | ३. | निवास स्थान | किम् | १०. | कौन सा |
| रमणकम् | ४. | रमणक द्वीप को | वा | ७. | अथवा |
| कस्मात् | ५. | क्यों | सुपर्णस्य | ९. | गरुड जी का |
| तत्याज | ६. | छोड़ा था | तेन एकेन | ८. | उस अकेलेने |
| कालियः । | १. | कालिय नाग ने | असमञ्जसम् ॥ | ११. | अपराध |

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! कालिय नाग ने नागों के निवास स्थान रमणक द्वीप को क्यों छोड़ा था अथवा उस अकेले ने गरुड जी का कौन सा अपराध किया था ॥

### द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— उपहार्यैः सर्पजनैर्मासि मासीह यो बलिः ।
वानस्पत्यो महाबाहो नागानां प्राङ् निरूपितः ॥२॥

पदच्छेद— उपहार्यैः सर्प जनैः मासि-मासि इह यः बलिः ।
वानस्पत्यः महाबाहो नागानाम् प्राक् निरूपिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उपहार्यैः | ३. | गरुड जी को उपहार रूप | वानस्पत्यः | ७. | वृक्ष के नीचे |
| सर्प जनैः | ४. | सर्पों ने | महाबाहो | १. | हे परीक्षित् ! |
| मासि-मासि | ६. | प्रत्येक मास के निर्दिष्ट | नागानाम् | ९. | एक सर्प की |
| इह यः | ८. | यहाँ पर | प्राक् | २. | पूर्व काल में |
| बलिः । | १०. | भेंट दी जाय | निरूपिताः ॥ | ५. | यह निश्चय कर लिया था कि |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पूर्व काल में गरुड जी को उपहार रूप सर्पों ने यह नियम कर लिया था कि प्रत्येक मास में निर्दिष्ट वृक्ष के नीचे यहाँ पर एक सर्प की भेंट दी जाय ॥

## तृतीयः श्लोकः

**स्वं स्वं भागं प्रयच्छन्ति नागाः पर्वणि पर्वणि ।**
**गोपीथायात्मनः सर्वे सुपर्णाय महात्मने ॥३॥**

पदच्छेद— स्वम्-स्वम् भागम् प्रयच्छन्ति नागाः पर्वणि पर्वणि ।
गोपीथाय आत्मनः सर्वे सुपर्णाय महात्मने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **स्वम्-स्वम्** | ९. | अपना-अपना | गोपीथाय | ६. | रक्षा के लिये |
| **भागम्** | १०. | भाग | आत्मनः | ५. | अपनी |
| **प्रयच्छन्ति** | ११. | देते रहते थे | सर्वे | ३. | सारे |
| **नागाः** | ४. | सर्प | सुपर्णाय | ८. | गरुड जी को |
| **पर्वणि** | १. | प्रत्येक | महात्मने ॥ | ७. | महात्मा |
| **पर्वणि ।** | २. | अमावस्या को | | | |

श्लोकार्थ—प्रत्येक अमावस्या को सारे सर्प अपनी रक्षा के लिये महात्मा गरुड जी को अपना-अपना भाग देते रहते थे ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**विषवीर्यमदाविष्टः काद्रवेयस्तु कालियः ।**
**कदर्थीकृत्य गरुडं स्वयं तं बुभुजे बलिम् ॥४॥**

पदच्छेद— विष वीर्य मद आविष्टः काद्रवेयः तु कालियः ।
कदर्थी कृत्य गरुडम् स्वयम् तम् बुभुजे बलिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **विष** | ३. | अपने विष और | कदर्थी | ८. | तिरस्कार |
| **वीर्य** | ४. | बल के | कृत्य | ९. | करके |
| **मद** | ५. | मद से | गरुडम् | ७. | उसने गरुड का |
| **आविष्टः** | ६. | युक्त था | स्वयम् तम् | १०. | स्वयम् ही उनकी |
| **काद्रवेयः** | १. | कद्रू का पुत्र | बुभुजे | १२. | खाना प्रारम्भ कर दिया |
| **तु कालियः ।** | २. | कालिय नाग | बलिम् ॥ | ११. | बलि सर्पों को |

श्लोकार्थ—कद्रू का पुत्र कालिय नाग अपने विष और बल के मद से युक्त था। उसने गरुड का तिरस्कार करके स्वयम् ही उनकी बलि सर्पों को खाना प्रारम्भ कर दिया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा कुपितो राजन् भगवान् भगवत्प्रियः ।
विजिघांसुर्महावेगः कालियं समुपाद्रवत् ॥५॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा कुपितः राजन् भगवान् भगवत्प्रियः ।
विजिघांसुः महावेगः कालियम् समुपाद्रवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् श्रुत्वा | २. यह सुनकर | विजिघांसुः | ७. मार डालने के विचार से |
| कुपितः | ५. बड़ा क्रोध आया | महावेगः | ८. बड़े वेग से |
| राजन् | १. हे परीक्षित् | कालियम् | ६. उन्होंने कालिय नाग को |
| भगवान् | ३. भगवान् के | समुपाद्रवत् ॥ | ९. उस पर आक्रमण किया |
| भगवत् प्रियः । | ४. प्यारे पार्षद गरुड को | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! यह सुनकर भगवान् के प्यारे पार्षद गरुड को बड़ा क्रोध आया । उन्होंने कालिय नाग को मार डालने के विचार से बड़े वेग से उस पर आक्रमण किया ॥

## षष्ठः श्लोकः

तमापतन्तं तरसा विषायुधः प्रत्यभ्ययादुच्छ्रितनैकमस्तकः ।
दद्भिः सुपर्णं व्यदशद् ददायुधः करालजिह्वोच्छ्वसितोग्रलोचनः ॥६॥

पदच्छेद— तम् आपतन्तम् तरसा विष आयुधः प्रत्यभ्ययात् उच्छ्रित नैक मस्तकः ।
दद्भिः सुपर्णम् व्यदशत् ददायुधः कराल जिह्वः उच्छ्वसित उग्र-लोचनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | ३. जब गरुड को | दद्भिः | ११. उसने अपने दाँतों से |
| आपतन्तम् | ५. आक्रमण करते देखा तो | सुपर्णम् | १२. गरुड जी को |
| तरसा | ४. बड़े वेग से | व्यदशत् | १३. डस लिया उस समय वह |
| विष | १. विष रूप | ददायुधः | १०. दाँत ही उसके शस्त्र थे |
| आयुधः | २. शस्त्र वाले कालिय ने | कराल | १४. भयङ्कर |
| प्रत्यभ्ययात् | ९. उन पर टूट पड़ा | जिह्वः | १५. जीभ लपलपा रहा था और |
| उच्छ्रित | ८. उठाकर | उच्छ्वसितः | १६. लम्बी साँस ले रहा था |
| नैक | ६. वह अनेक | उग्र- | १८. डरावनी थीं |
| मस्तकः । | ७. फणों को | लोचनः ॥ | १७. उसकी आँखें बड़ी |

श्लोकार्थ—विषरूप शस्त्र वाले कालिय ने जब गरुड को बड़े वेग से आक्रमण करते देखा तो वह अपने अनेक फणों को उठा कर उन पर टूट पड़ा । दाँत ही उसके शस्त्र थे । उसने अपने दाँतों से गरुड जी को डस लिया । उस समय वह भयङ्कर जीभ लपलपा रहा था । और लम्बी साँसें ले रहा था । उसकी आँखें बड़ी भयावनी थीं ।

## सप्तमः श्लोकः

**तं तार्क्ष्यपुत्रः स निरस्य मन्युमान् प्रचण्डवेगो मधुसूदनासनः ।**
**पक्षेण सव्येन हिरण्यरोचिषा जघान कद्रूसुतमुग्रविक्रमः ॥७॥**

पदच्छेद— तम् तार्क्ष्य पुत्रः सः निरस्य मन्युमान् प्रचण्डवेगः मधुसूदन आसनः ।
पक्षेण सव्येन हिरण्य रोचिषा जघान कद्रू सुतम् उग्र विक्रमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ५. | कालिय नाग को देखकर | पक्षेण | १४. | पंख से |
| तार्क्ष्य पुत्रः | १. | तार्क्ष्यनन्दन गरुड जी | सव्येन | १३. | बायें |
| सः | ६. | उनका | हिरण्य | ११. | फिर अपने सूर्य के समान |
| निरस्य | १०. | उन्होंने नाग को झटक दिया | रोचिषा | १२. | सुनहले |
| मन्युमान् | ७. | क्रोध बढ़ गया | जघान | १६ | जोर से प्रहार किया |
| प्रचण्डवेगः | ४. | उनका वेग बड़ा ही प्रचण्ड है | कद्रू सुतम् | १५. | कालिय नाग पर |
| मधुसुदन | २. | विष्णु भगवान् के | उग्र | ९. | प्रचण्ड है |
| आसनः । | ३. | वाहन हैं | विक्रमः ॥ | ८. | उनका पराक्रम बड़ा ही |

श्लोकार्थ—तार्क्ष्यनन्दन गरुड जी विष्णु भगवान् के वाहन हैं। उनका वेग बड़ा ही प्रचण्ड है। कालिय नाग को देखकर उनका क्रोध बढ़ गया। उनका पराक्रम बड़ा ही प्रचण्ड है। उन्होंने नाग को झटक दिया। फिर अपने सर्प के समान सुनहले पंख से कालिय नाग पर जोर से प्रहार किया ॥

## अष्टमः श्लोकः

**सुपर्णपक्षाभिहतः कालियोऽतीव विह्वलः ।**
**ह्रदं विवेश कालिन्द्यास्तदगम्यं दुरासदम् ॥८॥**

पदच्छेद— सुपर्ण पक्ष अभिहतः कालियः अतीव विह्वलः ।
ह्रदम् विवेश कालिन्द्याः तत् अगम्यम् दुरासदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुपर्ण | १. | गरुड जी के | ह्रदम् | ८. | कुण्ड में |
| पक्ष | २. | पंख को | विवेश | ९. | चला गया |
| अभिहतः | ३. | चोट से | कालिन्द्याः | ७. | वह यमुना जी के |
| कालियः | ४. | कालिय नाग | तत् | १०. | वह कुण्ड |
| अतीव | ५. | अत्यन्त | अगम्यम् | ११. | गरुड के लिये अगम्य था |
| विह्वलः । | ६. | व्याकुन हो गया | दुरासदम् ॥ | १२. | वहाँ दूसरे लोग भी नहीं आ सकते थे |

श्लोकार्थ—गरुड जी के पंख की चोट से कालिय नाग अत्यन्त व्याकुल हो गया। वह यमुना जी के कुण्ड में चला गया। वह कुण्ड गरुड जी के लिये अगम्य था। वहाँ दूसरे लोग भी नहीं जा सकते थे ॥

## नवमः श्लोकः

**तत्रैकदा जलचरं गरुडो भक्ष्यमीप्सितम् ।**
**निवारितः सौभरिणा प्रसह्य क्षुधितोऽहरत् ॥९॥**

पदच्छेद— तत्र एकदा जलचरम् गरुडः भक्ष्यम् ईप्सितम् ।
निवारितः सौभरिणा प्रसह्य क्षुधितः अहरत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र | १. इसी स्थान पर | निवारितः | ६. मना करने पर भी |
| एकदा | २. एक दिन | सौभरिणा | ५. तपस्वी सौभरि के |
| जलचरम् | ९. मत्स्य को | प्रसह्य | १०. बल पूर्वक पकड़ कर |
| गरुडः | ४. गरुड ने | क्षुधितः | ३. क्षुधातुर |
| भक्ष्यम् | ८. भक्ष्य | अहरत् ॥ | ११. खा लिया था |
| ईप्सितम् । | ७. अपने अभीष्ट | | |

श्लोकार्थ—इसी स्थान पर एक दिन क्षुधातुर गरुड ने तपस्वी सौभरि के मना करने पर भी अपने अभीष्ट भक्ष्य मत्स्य को बल पूर्वक पकड़ कर खा लिया था ॥

## दशमः श्लोकः

**मीनान् सुदुःखितान् दृष्ट्वा दीनान् मीनपतौ हते ।**
**कृपया सौभरिः प्राह तत्रत्यक्षेममाचरन् ॥१०॥**

पदच्छेद— मीनान् सुदुःखितान् दृष्ट्वा दीनान् मीनपतौ हते ।
कृपया सौभरिः प्राह तत्रत्य क्षेमम् आचरन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मीनान् | ४. मछलियों को | कृपया | ८. बड़ी दया आई |
| सुदुःखितान् | ५. अत्यन्त दुःखी | सौभरिः | ७. सौभरि को |
| दृष्ट्वा | ६. देखकर | प्राह | १२. गरुड जी से कहा |
| दीनान् | ३. उन दीन | तत्रत्य | ९. उन्होने वहाँ के जीवों की |
| मीनपतौ | १. मत्स्यराजाके | क्षेमम् | १०. भलाई |
| हते । | २. मारे जाने पर | आचरन् ॥ | ११. करते हुए |

श्लोकार्थ—मत्स्यराज के मारे जाने पर उन दिन मछलियों को अत्यन्त दुःखी देख कर सौभरि को बड़ी दया आई । उन्होंने वहाँ के जीवों की भलाई करते हुए, गरुड जी से कहा ॥

# एकादशः श्लोकः

**अत्र प्रविश्य गरुडो यदि मत्स्यान् स खादति ।**
**सद्यः प्राणैर्वियुज्येत सत्यमेतद् ब्रवीम्यहम् ॥११॥**

पदच्छेद-- अत्र प्रविश्य गरुडः यदि मत्स्यान् सः खादति ।
सद्यः प्राणैः वियुज्येत सत्यम् एतत् ब्रवीमि अहम् ॥

शब्दार्थ--

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्र | ८. | इस कुण्ड में | सद्यः | १२. | तत्काल वह |
| प्रविश्य | ९. | प्रवेश करके | प्राणैः | १३. | प्राण |
| गरुडः | ७. | गरुड़ | वियुज्येत | १४. | रहित हो जायेगा |
| यदि | ५. | यदि | सत्यम् | ३. | सत्य |
| मत्स्यान् | १०. | मछलियों को | एतत् | २. | यह |
| सः | ६. | वह | ब्रवीमि | ४. | कहता हूँ कि |
| खादति । | ११. | खायेगा तो | अहम् ॥ | १. | मैं |

श्लोकार्थ--मैं यह सत्य कहता हूँ कि यदि वह गरुड इस कुण्ड में प्रवेश करके मछलियों को खायेगा तो तत्काल वह प्राण हीन हो जायेगा ॥

# द्वादशः श्लोकः

**तं कालियः परं वेद नान्यः कश्चन लेलिहः ।**
**अवात्सीद् गरुडाद् भीतः कृष्णेन च विवासितः ॥१२॥**

पदच्छेद-- तम् कालियः परम् वेद न अन्यः कश्चन लेलिहः ।
अवात्सीत् गरुडात् भीतः कृष्णेन च विवासितः ॥

शब्दार्थ--

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | इस बात को | अवात्सीत् | १०. | वहाँ रहता था |
| कालियः | ६. | कालिय नाग जानता था | गरुडात् | ८. | इसलिये वह गरुड़ से |
| परम् | ७. | भली भाँति | भीतः | ९. | डर कर |
| वेद न | ५. | नहीं जानता था पर | कृष्णेन | १२. | श्रीकृष्ण ने उसे |
| अन्यः | ३. | अन्य | च | ११. | और |
| कश्चन | २. | कोई | विवासितः ॥ | १३. | रमणक द्वीप भेज दिया |
| लेलिहः । | ४. | सर्प | | | |

श्लोकार्थ--इस बात को कोई अन्य सर्प नहीं जानता था । पर कालिय नाग जानता था । इसलिये वह गरुड से डर कर वहाँ रहता था । और श्रीकृष्ण ने उसे रमणक द्वीप भेज दिया ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

कृष्णं ह्रदाद् विनिष्क्रान्तं दिव्यस्रग्गन्धवाससम् ।
महामणिगणाकीर्णं जाम्बूनदपरिष्कृतम् ॥१३॥

पदच्छेद— कृष्णम् ह्रदाद् विनिष्क्रान्तम् दिव्य स्रक् गन्ध वाससम् ।
महामणि गण आकीर्णम् जाम्बूनद परिष्कृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णम् | १. | इधर श्रीकृष्ण | महामणि | ५. | महामूल्य मणियों के |
| ह्रदाद् | १०. | कुण्ड से | गण | ६. | समूह से |
| विनिष्क्रान्तम् | ११. | बाहर निकले | आकीर्णम् | ७. | जटित |
| दिव्यस्रक् | २. | दिव्य-माला | जाम्बूनद | ८. | सुवर्ण के |
| गन्ध | ३. | गन्ध | परिष्कृतम् ॥ | ९. | आभूषणों से विभूषित होकर |
| वाससम् । | ४. | वस्त्र | | | |

श्लोकार्थ—इधर श्रीकृष्ण दिव्य, माला, गन्ध, वस्त्र महामूल्य मणियों के समूह से जटित आभूषणों से विभूषित होकर कुण्ड से बाहर निकले ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

उपलभ्योत्थिताः सर्वे लब्धप्राणा इवासवः ।
प्रमोदनिभृतात्मानो गोपाः प्रीत्याभिरेभिरे ॥१४॥

पदच्छेद— उपलभ्य उत्थिताः सर्वे लब्धप्राणाः इव असवः ।
प्रमोद निभृत आत्मानः गोपाः प्रीत्या अभिरेभिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उपलभ्य | १. | श्रीकृष्ण को पाकर | प्रमोद | ८. | आनन्द से |
| उत्थिताः | ३. | वैसे ही उठ खड़े हुये | निभृत | ९. | भर गये |
| सर्वे | २. | सब ब्रजवासी | आत्मानः | ७. | उनके हृदय |
| लब्ध | ५. | पाकर | गोपाः | १०. | वे गोप |
| प्राणा इव | ४. | जैसे प्राणों को | प्रीत्या | ११. | बड़े प्रेम से कन्हैया को |
| असवः । | ६. | इन्द्रियाँ सचेत हो जाती हैं | अभिरेभिरे ॥ | १२. | हृदय से लगाने लगे |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को पाकर सब ब्रजवासी वैसे ही उठ खड़े हुये जैसे प्राणों को पाकर इन्द्रियाँ सचेत हो जाती हैं । उनके हृदय आनन्द से भर गये । वे गोप बड़े प्रेम से कन्हैया को गले लगाने लगे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**यशोदा रोहिणी नन्दो गोप्यो गोपाश्च कौरव ।**
**कृष्णं समेत्य लब्धेहा आसँल्लब्धमनोरथाः ॥१५॥**

पदच्छेद— यशोदा रोहिणी नन्दः गोप्यः गोपाः च कौरव ।
कृष्णम् समेत्य लब्धेहा आसन् लब्ध मनोरथाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यशोदा | २. यशोदारानी | कृष्णम् | ७. | श्रीकृष्ण को |
| रोहिणी | ३. रोहिणी जी | समेत्य | ८. | पाकर |
| नन्दः | ४. नन्दबाबा | लब्धेहा | ९. | सचेत हो गये (और) |
| गोप्यः | ५. गोपी | आसन् | १२. | हो गये |
| गोपाः च | ६. और गोप | लब्ध | ११. | सफल |
| कौरव । | १. हे परीक्षित् ! | मनोरथाः ॥ | १०. | उनके मनोरथ |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! यशोदा रानी, रोहिणी जी, नन्दबाबा, गोपी और गोप श्रीकृष्ण को पाकर सचेत हो गये । और उनके मनोरथ सफल हो गये ॥

## षोडशः श्लोकः

**रामश्चाच्युतमालिङ्ग्य जहासास्यानुभाववित् ।**
**नगा गावो वृषा वत्सा लेभिरे परमां मुदम् ॥१६॥**

पदच्छेद— रामः च अच्युतम् आलिङ्ग्य जहास अस्य अनुभाववित् ।
नगाः गावः वृषाः वत्साः लेभिरे परमाम् मुदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रामः | १. बलराम जी को | नगाः | ८. | पर्वत-वृक्ष |
| च | ७. और | गावः | ९. | गाय |
| अच्युतम् | ४. वे श्रीकृष्ण को | वृषाः | १०. | बैल |
| आलिङ्ग्य | ५. हृदय से लगा कर | वत्साः | ११. | बछड़े आदि सबने |
| जहास | ६. हँसने लगे | लेभिरे | १४. | प्राप्त किया |
| अस्य | २. इन भगवान् का | परमाम् | १२. | अत्यन्त |
| अनुभाववित् । | ३. प्रभाव जानते थे | मुदम् ॥ | १३. | आनन्द |

श्लोकार्थ—बलराम जी तो इन भगवान् का प्रभाव जानते थे । वे श्रीकृष्ण को हृदय से लगाकर हँसने लगे । और पर्वत, वृक्ष, गाय, बैल, बछड़े आदि सबने अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**नन्दं विप्राः समागत्य गुरवः सकलत्रकाः ।**
**ऊचुस्ते कालियग्रस्तो दिष्ट्या मुक्तस्तवात्मजः ॥१७॥**

पदच्छेद— नन्दम् विप्राः समागत्य गुरवः सकलत्रकाः ।
ऊचुः ते कालिय ग्रस्तः दिष्ट्या मुक्तः तव आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **नन्दम्** | ५. नन्दबाबा के | | **ऊचुः** | ७. कहा कि |
| **विप्राः** | २. ब्राह्मणों ने | | **ते** | ८. तुम्हारे बालक को |
| **समागत्य** | ६. पास आकर | | **कालियः** | ९. कालिय नाग ने |
| **गुरवः** | १. गोपों के कुल गुरु | | **ग्रस्तः** | १०. पकड़ लिया था |
| **स** | ४. साथ | | **दिष्ट्या** | १२. भाग्य से ही |
| **कलत्रकाः ।** | ३. अपनी पत्नियों के | | **मुक्तः** | १३. मुक्त हुआ है |
| | | | **तव आत्मजः ॥** | ११. आपका यह बालक |

श्लोकार्थ—गोपों के कुल गुरु ब्राह्मणों ने अपनी पत्नियों के साथ नन्द बाबा के पास आकर कहा कि तुम्हारे बालक को कालियनाग ने पकड़ लिया था । आपका यह बालक भाग्य से ही मुक्त हुआ है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**देहि दानं द्विजातीनां कृष्णनिर्मुक्तिहेतवे ।**
**नन्दः प्रीतमना राजन् गाः सुवर्णं तदादिशत् ॥१८॥**

पदच्छेद— देहि दानम् द्विजातीनाम् कृष्ण विर्मुक्ति हेतवे ।
नन्दः प्रीतमनाः राजन् गाः सुवर्णं तदादिशत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **देहि** | ६. दो | **नन्दः** | ८. नन्द बाबा ने |
| **दानम्** | ५. दान | **प्रीतमनाः** | ९. प्रसन्न होकर |
| **द्विजातीनाम्** | ४. तुम ब्राह्मणों को | **राजन्** | ७. हे परीक्षित् ! तब |
| **कृष्ण** | १. श्रीकृष्ण के | **गाः** | १०. गौएँ और |
| **विमुक्ति** | २. मुक्त होने के | **सुवर्णं** | ११. सोना |
| **हेतवे ।** | ३. उपलक्ष्य में | **तदादिशत् ॥** | १२. ब्राह्मणों को दान में दिया |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के मुक्त होने के उपलक्ष्य में तुम ब्राह्मणों को दान दो । हे परीक्षित् ! तब नन्द बाबा ने प्रसन्न होकर गौएँ और सोना ब्राह्मणों को दान में दिया ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**यशोदापि महाभागा नष्टलब्धप्रजा सती ।**
**परिष्वज्याङ्कमारोप्य मुमोचाश्रुकलां मुहुः ॥१९॥**

पदच्छेद— यशोदा अपि महाभागा नष्ट लब्ध प्रजा सती ।
परिष्वज्य अङ्कम् आरोप्य मुमोच अश्रुकलाम् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **यशोदा** | ३. | यशोदा ने | परिष्वज्य | ९. | हृदय से लगा लिया |
| **अपि** | ४. | भी | अङ्कम् | ७. | गोद में |
| **महाभागा** | १. | परम सौभाग्यवती | आरोप्य | ८. | लेकर |
| **नष्ट** | ५. | नष्ट प्राय | मुमोच | १२. | टपकाने लगीं |
| **लब्ध प्रजा** | ६. | अपने बालक को पाकर | अश्रुकलाम् | ११. | आँसुओं की बूँदें |
| **सती ।** | २. | पतिव्रता | मुहुः ॥ | १०. | और बार-बार |

श्लोकार्थ—परम सौभाग्यवती पतिव्रता यशोदा ने भी नष्ट प्राय अपने बालक को पाकर गोद में लेकर हृदय से लगा लिया । और बार-बार आँसुओं की बूँदें टपकाने लगीं ॥

## विंशः श्लोकः

**तां रात्रिं तत्र राजेन्द्र क्षुत्तृड्भ्यां श्रमकर्शिताः ।**
**ऊषुर्व्रजौकसो गावः कालिन्द्या उपकूलतः ॥२०॥**

पदच्छेद— ताम् रात्रिम् तत्र राजेन्द्र क्षुत्तृड्भ्याम् श्रमकर्शिताः ।
ऊषुः व्रज ओकसः गावः कालिन्द्याः उपकूलतः ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **ताम्** | ७. | उस | ऊषुः | १२. | सो रहे थे |
| **रात्रिम्** | ८. | रात वे | व्रज | २. | व्रज |
| **तत्र** | ९. | वहीं | ओकसः | ३. | वासी और |
| **राजेन्द्र** | १. | हे परीक्षित् | गावः | ४. | गौयें |
| **क्षुत्तृड्भ्याम्** | ६. | वे भूखे प्यासे थे | कालिन्द्याः | १०. | यमुना जी के |
| **श्रमकर्शिताः ।** | ५. | थक गये थे | उपकूलतः ॥ | ११. | तट पर |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! व्रजवासी और गौयें थक गये थे । वे भूखे प्यासे थे । उस रात वे वहीं पर यमुना के तट पर सो रहे थे ।

## एकविंशः श्लोकः

**तदा शुचिवनोद्भूतो दावाग्निः सर्वतो व्रजम् ।**
**सुप्तं निशीथ आवृत्य प्रदग्धुमुपचक्रमे ॥२१॥**

पदच्छेद— तदा शुचिवन उद्भूतः दावाग्नि सर्वतः व्रजम् ।
सुप्तम् निशीथे आवृत्य प्रदग्धुम् उपचक्रमे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तदा** | १. उस समय | **सुप्तम्** | ६. सोये हुये |
| **शुचिवन** | ३. सूखे वन में | **निशीथे** | २. रात में |
| **उद्भूतः** | ५. लग गयी । उसने | **आवृत्य** | ९. घेर लिया और |
| **दावाग्नि** | ४. दावाग्नि | **प्रदग्धुम्** | १०. जलाना |
| **सर्वतः** | ८. सब ओर से | **उपचक्रमे ॥** | ११. प्रारम्भ कर दिया |
| **व्रजम् ।** | ७. व्रजवासियों को | | |

श्लोकार्थ—उस समय रात में सूखे वन में दावाग्नि लग गई । उसने सोये हुये व्रजवासियों को सब ओर से घेर लिया और जलाना प्रारम्भ कर दिया ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**तत उत्थाय सम्भ्रान्ता दह्यमाना व्रजौकसः ।**
**कृष्णं ययुस्ते शरणं मायामनुजमीश्वरम् ॥२२॥**

पदच्छेद— ततः उत्थाय सम्भ्रान्ताः दह्यमानाः व्रजौकसः ।
कृष्णम् ययुः ते शरणम् माया मनुजम् ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **ततः** | १. तब | **ययुः** | १२. गये |
| **उत्थाय** | ५. उठ खड़े हुये और | **ते** | ६. वे |
| **सम्भ्रान्ताः** | ४. व्याकुल होकर | **शरणम्** | ११. शरण में |
| **दह्यमानाः** | २. आँच लगने पर | **माया** | ७. माया |
| **व्रजौकसः ।** | ३. व्रजवासी | **मनुजम्** | ८. मनुष्य |
| **कृष्णम्** | १०. श्रीकृष्ण की | **ईश्वरम् ॥** | ९. भगवान् |

श्लोकार्थ—तब आँच लगने पर व्रजवासी व्याकुल होकर उठ खड़े हुये । और वे माया मनुष्य भगवान् श्रीकृष्ण की शरण में गये ।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**कृष्ण कृष्ण महाभाग हे रामामितविक्रम ।**
**एष घोरतमो वह्निस्तावकान् ग्रसते हि नः ॥२३॥**

पदच्छेद— कृष्ण-कृष्ण महाभाग हे राम अमित विक्रम ।
एष घोरतमः वह्निः तावकान् ग्रसते हि नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. प्यारे श्रीकृष्ण | | एषः | ७. देखो यह |
| कृष्ण | २. श्याम सुन्दर | | घोरतमः | ८. भयङ्कर |
| महाभाग | ३. महा भाग्यवान् | | वह्निः | ९. अग्नि |
| हे राम | ४. हे बलराम जी ! | | तावकान् | १०. तुम्हारे सगे सम्बन्धियों |
| अमित | ६. अनन्त है | | ग्रसते | १२. जलाना चाहती है |
| विक्रम । | ५. आपका पराक्रम | | हि नः ॥ | ११. हम स्वजनों को ही |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण श्याम सुन्दर महाभाग्यवान् हे बलराम जी ! आपका पराक्रम अनन्त है । देखो, यह भयङ्कर अग्नि तुम्हारे सगे सम्बन्धियों हम स्वजनों को ही जलाना चाहती है ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**सुदुस्तरान्नः स्वान् पाहि कालाग्नेः सुहृदः प्रभो ।**
**न शक्नुमस्त्वच्चरणं संत्यक्तुमकुतोभयम् ॥२४॥**

पदच्छेद— सुदुस्तरात् नः स्वान् पाहि कालाग्नेः सुहृदः प्रभो ।
न शक्नुमः त्वत् चरणम् संत्यक्तुम् अकुतः भयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुदुस्तरात् | ४. इस अपार | न शक्नुमः | १२. समर्थ नहीं हैं |
| नः स्वान् | २. हम तुम्हारे अपने | त्वत् | ७. हम तुम्हारे |
| पाहि | ६. हमें बचाओ । | चरणम् | १०. चरण कमल |
| कालाग्नेः | ५. प्रलय की अग्नि से | संत्यक्तुम् | ११. छोड़ने में |
| सुहृदः | ३. सुहृद हैं | अकुतः | ८. भक्त |
| प्रभो । | १. हे प्रभो ! | भयम् ॥ | ९. भयहारी |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! हम तुम्हारे अपने सुहृद हैं । इस अपार प्रलय की अग्नि से हमें बचाओ । हम तुम्हारे भक्त भयहारी चरण कमल छोड़ने में समर्थ नहीं हैं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**इत्थं स्वजनवैक्लव्यं निरीक्ष्य जगदीश्वरः ।**
**तमग्निमपिबत्तीव्रमनन्तोऽनन्तशक्तिधृक् ॥२५॥**

पदच्छेद— इत्थम् स्वजन वैक्लव्यम् निरीक्ष्य जगत् ईश्वरः ।
तम् अग्निम् अपिबत् तीव्रम् अनन्तः अनन्त शक्ति धृक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | ८. इस प्रकार | तम् | १०. | उस |
| स्वजन | ७. मेरे स्वजन | अग्निम् | १२. | आग को |
| वैक्लव्यम् | ९. व्याकुल हो रहे हैं तो वे | अपिबत् | १३. | पी गये |
| निरीक्ष्य | ६. देखा कि | तीव्रम् | ११. | भयङ्कर |
| जगत् | ४. जगत् के | अनन्तः | १. | भगवान् अनन्त हैं वे |
| ईश्वरः । | ५. ईश्वर श्रीकृष्ण ने जब | अनन्त शक्ति | २. | अनन्त शक्तियों को |
| | | धृक् ॥ | ३. | धारण करते हैं |

श्लोकार्थ—भगवान् अनन्त हैं । वे अनन्त शक्तियों को धारण करते हैं । जगत् के ईश्वर श्रीकृष्ण ने जब देखा कि मेरे स्वजन इस प्रकार व्याकुल हो रहे हैं तो वे उस भयङ्कर आग को पी गये ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे**
**दावाग्निमोचनं नाम सप्तदशः अध्यायः ॥ १७ ॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
## दशमः स्कन्धः
### अष्टादशः अध्यायः
### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथ कृष्णः परिवृतो ज्ञातिभिर्मुदितात्मभिः ।
अनुगीयमानो न्यविशद् व्रजं गोकुलमण्डितम् ॥१॥

पदच्छेद — अथ कृष्णः परिवृतः ज्ञातिभिः मुदित आत्मभिः ।
अनुगीयमानः न्यविशत् व्रजम् गोकुल मण्डितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | तदनन्तर | अनुगीयमानः | ६. | अपनी कीर्ति का गान सुनते हुये |
| कृष्णम् | ७. | श्रीकृष्ण | न्यविशत् | ११. | प्रविष्ट हुये |
| परिवृतः | ५. | घिरे हुये | व्रजम् | १०. | गोष्ठ में |
| ज्ञातिभिः | ४. | स्वजनों से | गोकुल | ८. | गोकुल |
| मुदित | २. | आनन्दित | मण्डितम् ॥ | ९. | मण्डित |
| आत्मभिः । | ३. | मन वाले | | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर आनन्दित मन वाले स्वजनों से घिरे हुये अपनी कीर्ति का गान सुनते हुये भगवान् श्रीकृष्ण गोकुल मण्डित गोष्ठ में प्रविष्ट हुये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

व्रजे विक्रीडतोरेवं गोपालच्छद्ममायया ।
ग्रीष्मो नामर्तुरभवन्नातिप्रेयाञ्छरीरिणाम् ॥२॥

पदच्छेद— व्रजे विक्रीडतः एवम् गोपालच्छद्म मायया ।
ग्रीष्मः नाम ऋतुः अभवत् न अतिप्रेयान् शरीरिणाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्रजे | ५. | व्रज में | ग्रीष्मः | ७. | तब ग्रीष्म |
| विक्रीडतः | ६. | क्रीडा करने लगे | नामऋतुः | ८. | नामक ऋतु थी |
| एवम् | १. | इस प्रकार | अभवत् | १२. | होती है |
| गोपाल | ३. | ग्वाल-का-सा | न | ११. | नहीं |
| च्छद्म | ४. | वेष बनाकर वे | अतिप्रेयान् | १०. | बहुत प्रिय |
| मायया । | २. | योगमाया से | शरीरिणाम् ॥ | ९. | यह शरीरधारियों को |

श्लोकार्थ—इस प्रकार योगमाया से ग्वाल-का-सा वेष बनाकर वे व्रज में क्रीडा करने लगे । तब ग्रीष्म नामक ऋतु थी । यह शरीरधारियों को बहुत प्रिय नहीं होती है ॥

## तृतीयः श्लोकः

**स च वृन्दावनगुणैर्वसन्त इव लक्षितः।**
**यत्रास्ते भगवान् साक्षात् रामेण सह केशवः ॥३॥**

पदच्छेद— स: च वृन्दावन गुणैः वसन्तः इव लक्षितः।
यत्र आस्ते भगवान् साक्षात् रामेण सह केशवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः च | ३. वह ग्रीष्म ऋतु | | यत्र | ७. क्योंकि उस वृन्दावन में | |
| वृन्दावन | १. वृन्दावन के | | आस्ते | १२ निवास करते थे | |
| गुणैः | २. स्वाभाविक गुणों से | | भगवान् | ९. भगवान् | |
| वसन्तः | ४. वसन्त के | | साक्षात् | ८. साक्षात् | |
| इव | ५. समान | | रामेण सह | ११. बलरामजी के साथ | |
| लक्षितः। | ६. बनी हुई थी | | केशवः ॥ | १०. श्याम सुन्दर | |

श्लोकार्थ—वृन्दावन में स्वाभाविक गुणों से वह ग्रीष्म ऋतु वसन्त के समान बनी हुई थी। क्योंकि उस वृन्दावन में साक्षात् भगवान् श्याम सुन्दर बलराम जी के साथ निवास करते थे ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**यत्र निर्झरनिर्ह्रादनिवृत्तस्वनझिल्लिकम्।**
**शश्वत्तच्छीकरर्जीषद्रुममण्डलमण्डितम् ॥४॥**

पदच्छेद— यत्र निर्झर निर्ह्राद निवृत्त स्वन झिल्लिकम्।
शश्वत् तत् शीकर ऋजीष द्रुममण्डल मण्डितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत्र | १. वहाँ पर | शश्वत् | ८. निरन्तर उड़ते |
| निर्झर | ४. झरनों की | तत् | ७. उन झरनों से |
| निर्ह्राद | ५. मधुर झर-झर में | शीकर | ९. जल कणों से |
| निवृत्त | ६. छिप गई थी | ऋजीष | १०. हरे-भरे |
| स्वन | ३. झन्कार | द्रुम | ११. वृक्षों के |
| झिल्लिकम्। | २. झींगुरों की | मण्डल | १३. समूह की शोभा |
| | | मण्डितम्॥ | १२. देखते ही बनती थी। |

श्लोकार्थ—वहाँ पर झींगुरों की झन्कार झरनों की मधुर झर-झर में छिप गई थी। उन झरनों के निरन्तर उड़ते जल कणों से हरे-भरे वृक्षों की शोभा देखते ही बनती थी ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**सरित्सरःप्रस्रवणोर्मिवायुना कह्लारकञ्जोत्पलरेणुहारिणा ।**
**न विद्यते यत्र वनौकसां दवो निदाघवह्न्यर्कभवोऽतिशाद्वले ॥५॥**

पदच्छेद— सरित् सरः प्रस्रवण ऊर्मि वायुना कह्लार कञ्ज उत्पल रेणु हारिणा ।
न विद्यते यत्र व्रजौकसाम् दवः निदाघवह्नि अर्क भवः अतिशाद्वले ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरित् सरः | ३. | नदी सरोवर एवम् | न विद्यते | १६. | अनुभव नहीं होता था |
| प्रस्रवण | ४. | झरनों की | यत्र | १. | उस |
| ऊर्मि | ५. | लहरों से मिलकर | व्रजौकसाम् | ११. | वहाँ वनवासियों को |
| वायुना | ६. | जो वायु चलती थी | दवः | १५. | ताप का |
| कह्लार | ७. | वह कह्लार | निदाघवह्नि | १२. | दावाग्नि अथवा |
| कञ्ज उत्पल | ८. | उत्पलादि अनेक कमलों के | अर्क | १३ | सूर्य से |
| रेणु | ९. | पराग से | भवः | १४. | उत्पन्न |
| हारिणा । | १०. | युक्त होती थी | अतिशाद्वले ॥ | २. | अत्यन्त हरे-भरे वन में |

श्लोकार्थ—उस अत्यन्त हरे-भरे वन में नदी, सरोवर एवम् झरनों की लहरों से मिलकर जो वायु चलती थी। वह कह्लार, उत्पल आदि अनेक कमलों के पराग से युक्त होती थी। वहाँ वनवासियों को दावाग्नि अथवा सूर्य से उत्पन्न ताप का अनुभव नहीं होता था ॥

## षष्ठः श्लोकः

**अगाधतोयह्रदिनीतटोर्मिभिर्द्रवत्पुरीष्याः पुलिनैः समन्ततः ।**
**न यत्र चण्डांशुकरा विषोल्बणा भुवो रसं शाद्वलितं च गृह्णते ॥६॥**

पदच्छेद— अगाध तोय ह्रदिनी तट ऊर्मिभिः द्रवत् पुरीष्याः पुलिनैः समन्ततः ।
न यत्र चण्डांशुकराः विष उल्बणाः भुवः रसम् शाद्वलितम् च गृह्णते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अगाध | २. | अगाध | न | १५. | नहीं |
| तोय | ३. | जल भरा हुआ था | यत्र | ९. | जहाँ |
| ह्रदिनी | १. | नदियों में | चण्डांशुकराः | १२. | प्रचण्ड सूर्य की किरणें |
| तट ऊर्मिभिः | ४. | उनकी लहरें तटों तक | विष उल्बणाः | १०. | विष के समान भयङ्कर |
| द्रवत् | ५. | पहुँचती थीं और | भुवः रसम् | १४. | पृथ्वी की घास को |
| पुरीष्याः | ८. | स्वच्छ कर देती थीं | शाद्वलितम् | १३. | हरी-भरी |
| पुलिनैः | ६. | किनारों को | च | ११. | और |
| समन्ततः । | ७. | सब ओर से | गृह्णते ॥ | १६. | सुख पाती थीं । |

श्लोकार्थ—नदियों में अगाध जल भरा हुआ था। उनकी लहरें तटों तक पहुँचती थीं। और किनारों को सब ओर से स्वच्छ कर देती थीं। वहाँ विष के समान भयङ्कर और प्रचण्ड सूर्य की किरणें हरी-भरी पृथ्वी की घास को नहीं सुखा पाती थीं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**वनं कुसुमितं श्रीमन्नदच्चित्रमृगद्विजम् ।**
**गायन्मयूरभ्रमरं कूजत्कोकिलसारसम् ॥७॥**

पदच्छेद— वनम् कुसुमितम् श्रीमत् नदत् चित्रमृग द्विजम् ।
गायन् मयूर भ्रमरम् कूजत् कोकिल सारसम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वनम् | ३. | वह वन | गायन् | ९. | गुञ्जार कर रहे थे |
| कुसुमितम् | १. | पुष्पों की | मयूर | ७. | वहाँ मोर कूक रहे थे |
| श्रीमत् | २. | शोभा से युक्त | भ्रमरम् | ८. | और भौंरे |
| नदत् | ६. | चहचहाहट से युक्त था | कूजत् | ११. | कूक रही थीं और |
| चित्रमृग | ४. | नाना प्रकार के हिरणों | कोकिल | १०. | कोयलें |
| द्विजम् । | ५. | और पक्षियों की | सारसम् ॥ | १२. | सारस भी अलाप छेड़े हुये थे |

श्लोकार्थ—पुष्पों की शोभा से युक्त वह वन नाना प्रकार के हरिणों और पक्षियों की चहचहाहट से युक्त था। वहाँ मोर कूक रहे थे। और भौंरे गुञ्जार कर रहे थे। कोयलें कूक रही थीं। और सारस भी अलाप छेड़े हुये ॥

## अष्टमः श्लोकः

**क्रीडिष्यमाणस्तत् कृष्णो भगवान् बलसंयुतः ।**
**वेणुं विरणयन् गोपैर्गोधनैः संवृतोऽविशत् ॥८॥**

पदच्छेद— क्रीडिष्यमाणः तत् कृष्णः भगवान् बल संयुतः ।
वेणुम् विरणयन् गोपैः गोधनैः संवृतः अविशत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रीडिष्यमाणः | २. | खेलते हुये | वेणुम् | ८. | बंशी |
| तत् | १. | वहाँ पर | विरणयन् | ९. | बजाते हुये |
| कृष्णः | ४. | श्रीकृष्ण ने | गोपैः | ५. | ग्वाल बालों और |
| भगवान् | ३. | भगवान् | गोधनैः | ६. | गायों से |
| बल | १०. | बलराम जी के | संवृतः | ७. | घिरे हुये |
| संयुतः । | ११. | साथ | अविशत् ॥ | १२. | उस वन में प्रवेश किया |

श्लोकार्थ—वहाँ पर खेलते हुये भगवान् श्रीकृष्ण ने, ग्वालबालों और गायों से घिरे हुये. बंशी बजाते हुये बलराम जी के साथ उस वन में प्रवेश किया ॥

## नवमः श्लोकः

**प्रवालबर्हस्तबकस्रग्धातुकृतभूषणाः ।**
**रामकृष्णादयो गोपा ननृतुर्युयुधुर्जगुः ॥९॥**

पदच्छेद— प्रवाल बर्ह स्तबक स्रक् धातु कृत भूषणाः ।
राम कृष्ण आदयः गोपाः ननृतुः युयुधुः जगुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रवाल | ५. | नव पल्लवों | राम | १. | राम |
| बर्ह | ६. | मोर पंख के | कृष्ण | ३. | कृष्ण तथा |
| स्तबक | ७. | गुच्छों | आदयः | २. | और |
| स्रक् | ८. | पुष्पों के हारों व | गोपाः | ४. | ग्वाल बालों ने |
| धातु | ९. | रंगीन धातुओं से | ननृतुः | १२. | फिर वे नाचने लगे और |
| कृत | ११. | बना कर अपने को सजाया | युयुधुः | १३. | कुश्ती लड़ने लगे तथा |
| भूषणाः । | १०. | आभूषण | जगुः ॥ | १४. | कोई गाने लगे |

श्लोकार्थ—राम और कृष्ण तथा ग्वाल बालों ने नव पल्लवों मोर पंख के गुच्छों, पुष्पों के हारों से व रंगीन धातुओं से आभूषण बना कर अपने को सजाया । फिर वे नाचने लगे और कुश्ती लड़ने लगे तथा कोई गाने लगे ॥

## दशमः श्लोकः

**कृष्णस्य नृत्यतः केचिज्जगुः केचिदवादयन् ।**
**वेणुपाणितलैः शृङ्गैः प्रशशंसुरथापरे ॥१०॥**

पदच्छेद— कृष्णस्य नृत्यतः केचित् जगुः केचित् अवादयन् ।
वेणु पाणि तलैः शृङ्गैः प्रशशंसुः अथ अपरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णस्य | २. | श्रीकृष्ण के | वेणु | ७. | बाँसुरी और |
| नृत्यतः | ३. | नाचने पर | पाणि | १०. | कुछ हथेली से |
| केचित् | ४. | कुछ ग्वाले | तलैः | ११. | ताल देने लगे |
| जगुः | ५. | गाने लगे | शृङ्गैः | ८. | सींग |
| केचित् | ६. | कुछ | प्रशशंसुः | १३. | वाह-वाह करने लगे |
| अवादयन् । | ९. | बजाने लगे | अथ | १. | तब |
| | | | अपरे ॥ | १२. | और कुछ |

श्लोकार्थ तब श्रीकृष्ण के नाचने पर कुछ ग्वाले गाने लगे, कुछ बाँसुरी और सींग बजाने लगे । कुछ हथेली से ताल देने लगे । और कुछ वाह-वाह करने लगे ॥

## एकादशः श्लोकः

**गोपजातिप्रतिच्छन्नौ देवा गोपालरूपिणः ।**
**ईडिरे कृष्णरामौ च नटा इव नटं नृप ॥११॥**

पदच्छेद— गोप जाति प्रतिच्छन्नौ देवाः गोपाल रूपिणः ।
ईडिरे कृष्ण रामौ च नटाः इव नटम् नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप | ७. | गोप | ईडिरे | १२. | स्तुति करने लगते |
| जाति | ८. | जाति में | कृष्ण | १०. | श्रीकृष्ण |
| प्रतिच्छन्नौ | ९. | जन्म लेकर छिपे हुये | रामौ च | ११. | और बलराम जी को |
| देवाः | ४. | वैसे ही देवता लोग | नटाः इव | २. | उस समय नट जैसे |
| गोपाल | ५. | ग्वाल बालों का | नटम् | ३. | अपने नायक की प्रशंसा करता है |
| रूपिणः । | ६. | रूप धारण करके वहाँ आते और | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस समय नट जैसे अपने नायक की प्रशंसा करता है वैसे ही देवता लोग ग्वाल-बालों का रूप धारण करके वहाँ पर आते और गोप जाति में जन्म ले कर छिपे हुये श्रीकृष्ण और बलराम जी की स्तुति करने लगे ॥

## द्वादशः श्लोकः

**भ्रामणैर्लङ्घनैः क्षेपैरास्फोटनविकर्षणैः ।**
**चिक्रीडतुर्नियुद्धेन काकपक्षधरौ क्वचित् ॥१२॥**

पदच्छेद— भ्रामणैः लङ्घनैः क्षेपैः आस्फोटन विकर्षणैः ।
चिक्रीडतुः नियुद्धेन काक पक्ष धरौ क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भ्रामणैः | ३. | कभी चक्कर काटते | चिक्रीडतुः | १०. | अनेक खेल खेलते थे |
| लङ्घनैः | ४. | कभी कूदते | नियुद्धेन | ९. | कुश्ती लड़ते इस प्रकार |
| क्षेपैः | ५. | कभी ढेले फेंकते | काक पक्ष | १. | घुंघराली अलकों |
| आस्फोटन | ६. | कभी ताल ठोंक कर | धरौ | २. | वाले श्रीकृष्ण और बलराम |
| विकर्षणैः । | ७. | रस्साकसी करते | क्वचित् ॥ | ८. | और कभी |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! घुंघराली अलकों वाले श्रीकृष्ण और बलराम कभी चक्कर काटते, कभी कूदते, कभी ढेले फेंकते, कभी ताल ठोंक कर रस्सा कसी करते, और कभी कुश्ती लड़ते । इस प्रकार अनेक खेल खेलते थे ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**क्वचिन्नृत्यत्सु चान्येषु गायकौ वादकौ स्वयम् ।**
**शशंसतुर्महाराज साधु साध्विति वादिनौ ॥१३॥**

पदच्छेद— क्वचित् नृत्यत्सु च अन्येषु गायकौ वादकौ स्वयम् ।
शशंसतुः महाराज साधु साधु इति वादिनौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | कभी | स्वयम् । | ४. | श्रीकृष्ण और बलराम |
| नृत्यत्सु | ३. | नाचने लगते तो | शशंसतुः | १२. | उनकी प्रशंसा करने लगते |
| च | ७. | और | महाराज | ८. | महाराज |
| अन्येषु | २. | अन्य दूसरे ग्वाल-बाल | साधु | ९. | कभी तो वाह |
| गायकौ | ५. | गाते या | साधुइति | १०. | वाह ऐसा |
| वादकौ | ६. | बाँसुरी आदि बजाते | वादिनौ ॥ | ११ | कह कर |

श्लोकार्थ—कभी जब दूसरे ग्वालबाल नाचने लगते तो श्रीकृष्ण और बलराम गाते या बाँसुरी आदि बजाते और महाराज कभी तो वह वाह-वाह ऐसा कह कर उनकी प्रशंसा करते थे ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**क्वचिद् बिल्वैः क्वचित् कुम्भैः क्व चामलकमुष्टिभिः ।**
**अस्पृश्यनेत्रबन्धाद्यैः क्वचिन्मृगखगेहया ॥१४॥**

पदच्छेद— क्वचित् बिल्वैः क्वचित् कुम्भैः क्व च आमलक मुष्टिभिः ।
अस्पृश्य नेत्र बन्ध आद्यैः क्वचित् मृग खग ईहया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | कभी एक दूसरे पर | अस्पृश्य | ११. | आँख मिचौनी खेलते थे |
| बिल्वैः | २. | बेल | नेत्र | ८. | कभी आँख |
| क्वचित् | ३. | कभी | बन्ध | ९. | बन्द |
| कुम्भैः | ४. | जायफल | आद्यैः | १०. | करके |
| क्व च | ५. | और कभी | क्वचित् | १२. | और कभी |
| आमलक | ६. | आँवले का फल | मृग खग | १३. | पशु-पक्षिओं की |
| मुष्टिभिः । | ७. | हाथ में लेकर फेंकते थे | ईहया ॥ | १४. | चेष्टाओं का अनुसरण करते थे |

श्लोकार्थ—कभी एक दूसरे पर बेल, कभी जायफल, और कभी आँवले का फल हाथ में लेकर फेंकते थे । कभी आंख बन्द करके आँख मिचौनी खेलते थे । और कभी पशु पक्षियों की चेष्टाओं का अनुसरण करते थे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**क्वचिच्च दर्दुरप्लावैर्विविधैरुपहासकैः ।**
**कदाचित् स्पन्दोलिकया कर्हिचिन्नृपचेष्टया ॥१५॥**

पदच्छेद— क्वचित् च दर्दुर प्लावैः विविधैः उपहासकैः ।
कदाचित् स्पन्दोलिकया कर्हिचित् नृपचेष्टया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | कभी | कदाचित् | ६. | कभी |
| च दर्दुर | २. | मेढकों की तरह | स्पन्दोलिकया | ७. | झूला झूलते तो |
| प्लावैः | ३. | फुदक कर चलते और | कर्हिचित् | ८. | कभी |
| विविधैः | ४. | अनेक प्रकार से | नृप | ९. | किसी राजा की |
| उपहासकैः | ५. | हँसी उड़ाते | चेष्टया ॥ | १०. | नकल करने लगते थे |

श्लोकार्थ—कभी मेढकों की तरह फुदक कर चलते और अनेक प्रकार से हँसी उड़ाते, कभी झूले पर झूलते तो कभी किसी राजा की नकल करते थे ॥

## षोडशः श्लोकः

**एवं तौ लोकसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चेरतुर्वने ।**
**नद्यद्रिद्रोणिकुञ्जेषु काननेषु सरस्सु च ॥१६॥**

पदच्छेद— एवम् तौ लोक सिद्धाभिः क्रीडाभिः चेरतुःवने ।
नदी अद्रि द्रोणिकुञ्जेषु काननेषु सरस्सु च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | नदी | ४. | नदी |
| तौ | २. | राम और श्याम | अद्रि | ५. | पर्वत |
| लोक | ११. | संसार के | द्रोणि | ६. | घाटी |
| सिद्धाभिः | १२. | सामान्य बालकों | कुञ्जेषु | ७. | कुञ्ज |
| क्रीडाभिः | १३. | जैसी क्रीडायें | काननेषु | ८. | वन |
| चेरतुः | १४. | करते थे | सरस्सु | १०. | सरोवरों में |
| वने । | ३. | वृन्दावन की | च ॥ | ९. | और |

श्लोकार्थ—इस प्रकार राम और श्याम वृन्दावन की नदी, पर्वत, घाटी, कुञ्ज, वन और सरोवरों में संसार के बालकों जैसी क्रीडायें करते थे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**पशूंश्चारयतोर्गोपैस्तद्वने रामकृष्णयोः ।**
**गोपरूपी प्रलम्बोऽगादसुरस्तज्जिहीर्षया ॥१७॥**

पदच्छेद— पशुन् चारयतोः गोपैः तत् वने राम कृष्णयोः ।
गोप रूपी प्रलम्बः अगात् असुरः तत् जिहीर्षया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पशुन् | ६. | गौयें | गोप | ८. | तब ग्वाल के |
| चारयतोः | ७. | चरा रहे थे | रूपी | ६. | वेष में |
| गोपैः | ३. | ग्वाल बालों के साथ | प्रलम्बः | १०. | प्रलम्ब नाम का |
| तत् | ४. | उस | अगात् | १२. | आया |
| वने | ५. | वन में | असुरः | ११. | एक असुर |
| राम | १. | बलराम और | तत् | १३. | वह श्रीकृष्ण और बलराम |
| कृष्णयोः । | २. | कृष्ण | जिहीर्षया ॥ | १४. | का हरण करना चाहता था । |

श्लोकार्थ—बलराम और कृष्ण ग्वाल बालों के साथ उस वन में गौयें चरा रहे थे । तब ग्वाल के वेष में प्रलम्ब नाम का एक असुर आया । वह श्रीकृष्ण और बलराम का हरण करना चाहता था ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**तं विद्वानपि दाशार्हो भगवान् सर्वदर्शनः ।**
**अन्वमोदत तत्सख्यं वधं तस्य विचिन्तयन् ॥१८॥**

पदच्छेद— तम् विद्वान् अपि दाशार्हः भगवान् सर्व दर्शनः ।
अन्वमोदत तत् सख्यम् वधम् तस्य विचिन्तयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ५. | उस राक्षस को | अन्वमोदत | १०. | स्वीकार कर लिया |
| विद्वान् | ७. | पहचान गये | तत् | ८. | उन्होंने उसका |
| अपि | ६. | भी | सख्यम् | ६. | मित्रता का प्रस्ताव |
| दाशार्हः | ४. | श्रीकृष्ण | वधम् | १२. | मारने के बारे में |
| भगवान् | १. | भगवान् तो | तस्य | ११. | फिर उसे |
| सर्व | २. | सब कुछ | विचिन्तयन् ॥ | १३. | विचार करने लगे |
| दर्शनः । | ३. | जानते हैं (अतः) | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् तो सब कुछ जानते हैं । अतः श्रीकृष्ण उस राक्षस को भी पहचान गये । अतः उन्होंने उसका मित्रता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । फिर उसे मारने का विचार करने लगे ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

तत्रोपाहूय गोपालान् कृष्णः प्राह विहारवित् ।
हे गोपा विहरिष्यामो द्वन्द्वीभूय यथायथम् ॥१९॥

पदच्छेद— तत्र उपाहूय गोपालान् कृष्णः प्राह विहारवित् ।
हे गोपाः विहरिष्यामः द्वन्द्वीभूय यथा यथम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र | १. तब | हे गोपाः | ७. हे ग्वाल बालों ! हम |
| उपाहूय | ५. बुला कर | विहरिष्यामः | ११. आनन्द से खेलें |
| गोपालान् | ४. ग्वाल बालों को | द्वन्द्वीभूय | १०. दो दलों में बँट कर |
| कृष्णः | ३. श्रीकृष्ण ने | यथा | ८. उचित |
| प्राह | ६. कहा कि | यथम् ॥ | ९. रीति से |
| विहारवित् । | २. खेलों के जानकार | | |

श्लोकार्थ—तब खेलों के जानकार श्रीकृष्ण ने ग्वाल बालों को बुलाकर कहा कि हे ग्वाल बालों ! हम उचित रीति से दो दलों में बँट कर आनन्द से खेलें ॥

## विंशः श्लोकः

तत्र चक्रुः परिवृढौ गोपा रामजनार्दनौ ।
कृष्णसंघट्टिनः केचिदासन् रामस्य चापरे ॥२०॥

पदच्छेद— तत्र चक्रुः परिवृढौ गोपाः राम जनार्दनौ ।
कृष्ण संघट्टिनः केचित् आसन् रामस्य च अपरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र | १. उस खेल में | कृष्ण | ८. श्रीकृष्ण के |
| चक्रुः | ६. बनाया फिर | संघट्टिनः | ९. साथी बन गये |
| परिवृढौ | ५. नायक | केचित् | ७. कुछ तो |
| गोपाः | २. ग्वाल बालों ने | आसन् | १२. हो गये |
| राम | ३. बलराम और | रामस्य | ११. बलराम जी के साथ |
| जनार्दनौ । | ४. श्रीकृष्ण को | च अपरे ॥ | १०. और अन्य लोग |

श्लोकार्थ—उस खेल में ग्वाल बालों ने बलराम और श्रीकृष्ण को नायक बनाया । फिर कुछ तो श्रीकृष्ण के साथी बन गये और अन्य लोग बलराम जी के साथ हो गये ॥

## एकविंशः श्लोकः

**आचेरुर्विविधाः क्रीडा वाह्यवाहकलक्षणाः ।**
**यत्रारोहन्ति जेतारो वहन्ति च पराजिताः ॥२१॥**

पदच्छेद— आचेरुः विविधाः क्रीडाः वाह्य वाहक लक्षणाः ।
यत्र आरोहन्ति जेतारः वहन्ति च पराजिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आचेरुः | ६. खेले | यत्र | ७. जिनमें |
| विविधाः | ४. अनेक प्रकार के | आरोहन्ति | ९. पीठ पर चढ़ता है |
| क्रीडाः | ५. खेल | जेतारः | ८. विजयी दल |
| वाह्य | १. फिर ढोने और | वहन्ति | १२. उन्हें ढोकर ले जाता है |
| वाहक | २. ले जाने | च | १०. और |
| लक्षणाः । | ३. वाले | पराजिताः । | ११. पराजित दल |

श्लोकार्थ—फिर ढोने और ले जाने वाले अनेक प्रकार के खेल खेले । जिनमें विजयी दल पीठ पर चढ़ता है । और पराजित दल ढोकर ले जाता है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**वहन्तो वाह्यमानाश्च चारयन्तश्च गोधनम् ।**
**भाण्डीरकं नाम वटं जग्मुः कृष्णपुरोगमाः ॥२२॥**

पदच्छेद— वहन्तः वाह्यमानाः च चारयन्तः च गोधनम् ।
भाण्डीरकम् नाम वटम् जग्मुः कृष्ण पुरोगमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वहन्तः | ३. इस प्रकार चढ़ते | भाण्डीरकम् | ८. भाण्डीर |
| वाह्यमानाः | ४. चढ़ाते | नाम वटम् | ९. नामक वट के पास |
| च | ५. और | जग्मुः | १०. पहुँच गये |
| चारयन्तः | ७. चराते | कृष्ण | १. श्रीकृष्ण |
| गोधनम् । | ६. गौयें | पुरोगमाः ॥ | २. आदि ग्वाल-बाल |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण आदि ग्वाल बाल इस प्रकार चढ़ते चढ़ाते और गौयें चराते भाण्डीर नामक वट के पास पहुँच गये ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**रामसङ्घट्टिनो यर्हि श्रीदामवृषभादयः ।**
**क्रीडायां जयिनस्तांस्तानूहुः कृष्णादयो नृप ॥२३॥**

पदच्छेद— राम संघट्टिनः यर्हि श्रीदाम वृषभ आदयः ।
क्रीडायाम् जयिनः तान्-तान् ऊहुः कृष्ण आदयः नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राम | ३. | बलराम जी के | क्रीडायाम् | ८. | खेल में |
| संघट्टिनः | ४. | साथी | जयिनः | ९. | विजयी हुये तो |
| यर्हि | २. | एक बार | तान्-तान् | १०. | उन ग्वाल बालों को |
| श्रीदाम | ५. | श्रीदामा | ऊहुः | १२. | ढोया |
| वृषभ | ६. | वृषभ | कृष्णआदयः | ११. | श्रीकृष्ण इत्यादि ने |
| आदयः | ७. | आदि | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! एक बार बलराम जी के साथी श्रीदामा, वृषभ आदि खेल में विजयी हुये । तो उन ग्वाल बालों को श्रीकृष्ण आदि ने ढोया ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**उवाह कृष्णो भगवान् श्रीदामानं पराजितः ।**
**वृषभं भद्रसेनस्तु प्रलम्बो रोहिणीसुतम् ॥२४॥**

पदच्छेद— उवाह कृष्णः भगवान् श्रीदामानम् पराजितः ।
वृषभम् भद्रसेनः तु प्रलम्बः रोहिणी सुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उवाह | ५. | पीठ पर चढ़ाया | वृषभम् | ७. | वृषभ का |
| कृष्णः | ३. | श्रीकृष्ण ने | भद्रसेनः तु | ६. | भद्रसेन ने |
| भगवान् | २. | भगवान् | प्रलम्बः | ८. | प्रलम्ब ने |
| श्रीदामानम् | ४. | श्रीदामा को | रोहिणी | ९. | रोहिणी के |
| पराजितः । | १. | हारे हुये | सुतम् ॥ | १०. | पुत्र बलराम को पीठ पर ढोया |

श्लोकार्थ—हारे हुये भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीदामा को पीठ पर चढ़ाया । भद्रसेन ने वृषभ को, प्रलम्ब ने रोहिणी सुत बलराम जी को पीठ पर ढोया ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**अविषह्यं मन्यमानः कृष्णं दानवपुङ्गवः ।**

**वहन् द्रुततरं प्रागादवरोहणतः परम् ॥२५॥**

पदच्छेद— अविषह्यम् मन्यमानः कृष्णम् दानव पुङ्गवः ।
वहन् द्रुततरम् प्रागात् अवरोहणतः परम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **अविषह्यम्** | २. हराना असम्भव | वहन् | ७. बलराम जी को लेकर |
| **मन्यमानः** | ३. मान कर | द्रुततरम् | ६. बड़ी शीघ्रता से |
| **कृष्णम्** | १. श्रीकृष्ण को | प्रागात् | १०. ले गया |
| **दानव** | ४. वह दानव | अवरोहणतः | ८. उतारने के स्थान से |
| **पुङ्गवः ।** | ५. राज प्रलम्ब | परम् ॥ | ९. भी आगे |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को हराना असम्भव मान कर वह दानव राज प्रलम्ब बड़ी शीघ्रता से बलराम जी को लेकर उतारने के स्थान से भी आगे ले गया ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**तमुद्वहन् धरणिधरेन्द्रगौरवं महासुरो विगतरयो निजं वपुः ।**

**स आस्थितः पुरटपरिच्छदो बभौ तडिद्द्युमानुडुपतिवाडिवाम्बुदः ॥२६॥**

पदच्छेद— तम् उद्वहन् धरणिधरेन्द्र गौरवम् महाअसुरः विगत रयः निजम् वपुः ।
सः आस्थितः पुरट परिच्छदः बभौ तडित्द्युमान् उडुपतिवाट् इव अम्बुदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तम्** | ३. उन्हें | सः आस्थितः | ११. वह वैसे ही |
| **उद्वहन्** | ४. लेकर वह | पुरट | ९. सोने के |
| **धरणिधरेन्द्र** | १. बलराम जी श्रेष्ठपर्वत के | परिच्छदः | १०. गहनों से युक्त |
| **गौरवम्** | २. समान बोझ वाले थे | बभौ | १२. सुशोभित हो रहा था |
| **महाअसुरः** | ५. महान् असुर | तडित्द्युमान् | १४. बिजली से युक्त |
| **विगत रयः** | ६. वेगहीन हो गया | उडुपतिराट् | १६. चन्द्रमा को धारण किये हो |
| **निजम्** | ७. उसने अपना | इव | १३. जैसे |
| **वपुः ।** | ८. शरीर धारण किया | अम्बुदः ॥ | १५. काला बादल |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! बलराम जी श्रेष्ठ पर्वत के समान बोझ वाले थे । उन्हें लेकर वह महान् असुर वेगहीन हो गया । उसने अपना शरीर धारण किया । सोने के गहनों से युक्त वह वैसे ही सुशोभित हो रहा था जैसे बिजली से युक्त काला बादल चन्द्रमा को धारण किये हुये हो ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**निरीक्ष्य तद्वपुरलमम्बरे चरत् प्रदीप्तदृग् भ्रुकुटितटोग्रदंष्ट्रकम् ।**
**ज्वलच्छिखं कटककिरीटकुण्डलत्विषाद्भुतं हलधर ईषदत्रसत् ॥२७॥**

पदच्छेद-- निरीक्ष्य तत् वपुः अलम् अम्बरे चरत् प्रदीप्त दृक् भ्रुकुटि तट उग्र दंष्ट्रकम् ।
ज्वलत् शिखम् कटक किरीट कुण्डलत्विषा अद्भुतम् हलधरः ईषद् अत्रसत् ॥

| शब्दार्थ-- | | | |
|---|---|---|---|
| निरीक्ष्य | १४. देखकर | ज्वलत् | ६. जलती हुई आग जैसे थे |
| तत् वपुः | ११. उस भयानक दैत्य को | शिखम् | ५. उसके लाल बाल |
| अलम् | १२. बड़े वेग से | कटक | ७. हाथ और पैरों में कड़े |
| अम्बरे चरत् | १३. आकाश में जाते | किरीट | ८. सिर पर मुकुट कानों में |
| प्रदीप्त दृक् | १. उसकी आँखें जल रही थीं | कुण्डलत्विषा | ९. कुण्डल थे उसकी कान्ति से |
| भ्रकुटि तट | ३. भ्रकुटि के किनारे तक लम्बी व | अद्भुतम् | १०. वह बड़ा अद्भुत लग रहा था |
| उग्र | ४. बड़ी भयानक थीं | हलधरः ईषद् | १५. बलराम जी कुछ |
| दंष्ट्रकम् । | २. दाढ़ें | अत्रसत् ॥ | १६. घबरा से गये |

श्लोकार्थ--उसकी आँखें जल रही थीं। दाढ़े भ्रकुटि के किनारे तक लम्बी व बड़ी भयानक थी। उसके लाल बाल जलती हुई आग के जैसे थे। हाथ और पैरों में कड़े, सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल थे। उसकी कान्ति से वह बड़ा ही ,अद्भुत लग रहा था। उस भयानक दैत्य को बड़े वेग से आकाश में जाते देखकर बलराम जी कुछ घबरा से गये ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**अथागतस्मृतिरभयो रिपुं बलो विहायसार्थमिव हरन्तमात्मनः ।**
**रुषाहनच्छिरसि दृढेन मुष्टिना सुराधिपो गिरिमिव वज्ररंहसा ॥२८॥**

पदच्छेद— अथ आगतस्मृतिः अभयः रिपुम् बलः विहाय सार्थम् इव हरन्तम् आत्मनः ।
रुषा अहनत् शिरसि दृढेन मुष्टिना सुराधिपः गिरिम् इव वज्र रंहसा ॥

| शब्दार्थ-- | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. तदनन्तर | रुषा | ९. तब उन्होंने क्रोध पूर्वक |
| आगतस्मृतिः | २. अपने स्वरूप की याद आते ही | अहनत् | १३. प्रहार किया |
| अभयः | ३. वे अभय हो गये | शिरसि | ११. उसके सिर पर |
| रिपुम् | ७. वह शत्रु | दृढेन मुष्टिना | १०. मुक्का बाँध कर |
| बलः | ४. बलराम जी ने देखा | सुराधिपः | १५. देवराज इन्द्र ने |
| विहायसार्थम् | ६. गोप समूह से अलग करके | गिरिम् | १७. पर्वतों पर |
| इव | १२. उसी प्रकार | इव | १४. जैसे |
| हरन्तम् | ८. मेरा हरण कर रहा है | वज्र | १६. अपने वज्र का |
| आत्मनः | ५. कि मुझे | रंहसा ॥ | १८. तीव्र प्रहार किया था |

श्लोकार्थ--तदनन्तर अपने स्वरूप की याद आते ही वे अभय हो गये। बलराम जी ने देखा कि मुझे गोप समूह से अलग करके यह शत्रु मेरा हरण कर रहा है। तब उन्होंने क्रोध पूर्वक मुक्का बाँध कर उसके सिर पर उसी प्रकार प्रहार किया जैसे देवराज इन्द्र ने अपने वज्र का पर्वतों पर तीव्र प्रहार किया था ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोक

**स आहतः सपदि विशीर्णमस्तको मुखाद् वमन् रुधिरमपस्मृतोऽसुरः।**
**महारवं व्यसुरपतत् समीरयन् गिरिर्यथा मघवत आयुधाहतः ॥२९॥**

पदच्छेद— सः आहतः सपदि विशीर्ण मस्तकः मुखाद् वमन् रुधिरम् अपस्मृतः असुरः।
महारवम् व्यसुः अपतत् समीरयन् गिरिः यथा मघवतः आयुध आहतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः आहतः | १. प्रहार करने पर उस | महारवम् | १०. बड़ा भयङ्कर शब्द |
| सपदि | ४. तत्काल | व्यसुः | १७. प्राणहीन होकर वह |
| विशीर्ण | ५. चूर-चूर हो गया वह | अपतत् | १८. पृथ्वी पर गिर पड़ा |
| मस्तकः | ३. मस्तक | समीरयन् | ११. करता हुआ |
| मुखात् | ६. मुँह से | गिरिः | १५. पर्वत के |
| वमन् | ८. उगलने लगा | यथा | १६. समान |
| रुधिरम् | ७. खून | मघवतः | १२. इन्द्र के द्वारा |
| अपस्मृतः | ९. उसकी चेतना जाती रही | आयुध | १३. वज्र से |
| असुरः। | २. राक्षस का | आहतः ॥ | १४. मारे हुये |

श्लोकार्थ—हे राजन्! प्रहार करने पर उस राक्षस का मस्तक तत्काल चूर-चूर हो गया। वह मुँह से खून उगलने लगा। उसकी चेतना जाती रही। बड़ा भयङ्कर शब्द करता हुआ इन्द्र के द्वारा वज्र से मारे हुये पर्वत के समान प्राण हीन होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**दृष्ट्वा प्रलम्बं निहतं बलेन बलशालिना।**
**गोपाः सुविस्मिता आसन् साधु साध्विति वादिनः ॥३०॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा प्रलम्बम् निहतम् बलेन बल शालिना।
गोपाः सुविस्मिताः आसन् साधु साधु इति वादिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ६. यह देखकर | गोपाः | ७. ग्वाल बाल |
| प्रलम्बम | ४. प्रलम्बासुर को | सुविस्मिताः | ८. बड़े आश्चर्य चकित |
| निहतम् | ५. मार डाला है | आसन् | ९. हो गये |
| बलेन | ३. बलराम जी ने | साधु | १०. फिर वे वाह |
| बल | १. परम बल | साध्विति | ११. वाह ऐसा |
| शालिना। | २. शाली | वादिनः ॥ | १२. कहने लगे |

श्लोकार्थ—परम् बल शाली बलराम जी ने प्रलम्बासुर को मार डाला है। यह देख कर ग्वाल बाल बड़े आश्चर्य चकित हो गये। फिर वे वाह-वाह ऐसा कहने लगे ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**आशिषोऽभिगृणन्तस्तं प्रशशंसुस्तदर्हणम् ।**
**प्रेत्यागतमिवालिङ्ग्य प्रेमविह्वलचेतसः ॥३१॥**

पदच्छेद— आशिषः अभिगृणन्तः तम् प्रशशंसुः तत् अर्हणम् ।
प्रेत्य आगतम् इव आलिङ्गय प्रेमविह्वल चेतसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **आशिषः** | ४. शुभ कामनायें | **प्रेत्य** | ७. मर कर |
| **अभिगृणन्तः** | ५. करने लगे | **आगतम्** | ८. लौट आये हों इस भावना से |
| **तम्** | ३. वे उनके लिये | **इव** | ६. मानों |
| **प्रशशंसुः** | १०. उनकी प्रशंसा करने लगे | **आलिङ्गय** | ९. आलिङ्गन करके |
| **तत्** | ११. वे बलराम जी | **प्रेमविह्वल** | २. प्रेम से विह्वल हो गया |
| **अर्हणम् ।** | १२. वस्तुतः इस योग्य ही थे | **चेतसः ॥** | १. ग्वाल बालों का चित्त |

श्लोकार्थ—ग्वाल बालों का चित्त प्रेम से विह्वल हो गया। वे उनके लिये शुभ कामनायें करने लगे। मानों मर कर लौट आये हों। इसी भावना से आलिङ्गन करके उनकी प्रशंसा करने लगे। वे बलराम जी वस्तुतः इस योग्य ही थे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**पापे प्रलम्बे निहते देवाः परमनिर्वृताः ।**
**अभ्यवर्षन् बलं माल्यैः शशंसुः साधु साधु इति ॥३२॥**

पदच्छेद— पापे प्रलम्बे निहते देवाः परम निर्वृताः ।
अभ्यवर्षन् बलम् माल्यैः शशंसुः साधु साधु इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पापे** | २. मूर्तिमान् पाप था | **अभ्यवर्षन्** | ९. बरसाने लगे और |
| **प्रलम्बे** | १. प्रलम्बासुर | **बलम्** | ७. वे बलराम जी पर |
| **निहते** | ३. उसकी मृत्यु से | **माल्यैः** | ८. मालायें |
| **देवाः** | ४. देवताओं को | **शशंसुः** | १२. उनकी प्रशंसा करने लगे |
| **परम** | ५. बड़ा | **साधु** | १०. बहुत अच्छा |
| **निर्वृताः ।** | ६. सुख मिला | **साधु इति ॥** | ११. बहुत अच्छा ऐसा कह कर |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! प्रलम्बासुर मूर्तिमान् पाप था। उसकी मृत्यु से देवताओं को बड़ा सुख मिला। वे बलराम जी पर मालायें बरसाने लगे। और बहुत अच्छा-बहुत अच्छा ऐसा कह कर उनकी प्रशंसा करने लगे।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
प्रलम्बवधो नाम अष्टादशः अध्यायः ॥१८॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## एकोनविंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— क्रीडासक्तेषु गोपेषु तद्गावो दूरचारिणीः ।
स्वैरं चरन्त्यो विविशुस्तृणलोभेन गह्वरम् ॥१॥

पदच्छेद— क्रीडा आसक्तेषु गोपेषु तत् गावः दूर चारिणीः ।
स्वैरम् चरन्त्यः विविशुः तृण लोभेन गह्वरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रीडा | २. | खेल में | स्वैरम् | ७. | बिना रोक-टोक |
| आसक्तेषु | ३. | लग जाने पर | चरन्त्यः | ८. | चरती हुई |
| गोपेषु | १. | ग्वाल बालों के | विविशुः | १२. | घुस गयीं |
| तत् गावः | ४. | उनकी गौयें | तृण | ९. | हरी घास के |
| दूर | ५. | दूर तक | लोभेन | १०. | लोभ से |
| चारिणीः । | ६. | चरती हुई निकल गयीं | गह्वरम् ॥ | ११. | एक गहन वन में |

श्लोकार्थ—ग्वाल बालों के खेल में लग जाने पर उनकी गौयें दूर तक चरती हुई निकल गयीं । बिना रोक टोक चरती हुई हरी घास के लोभ से एक गहन वन में घुस गयीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

अजा गावो महिष्यश्च निर्विशन्त्यो वनाद् वनम् ।
इषीकाटवीं निर्विविशुः क्रन्दन्त्यो दावतर्षिताः ॥२॥

पदच्छेद— अजा गावः महिष्यःच निर्विशन्त्यः वनाद् वनम् ।
इषीका अटवीम् निर्विविशुः क्रन्दन्त्यः दाव तर्षिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अजा | १. | उनकी बकरियाँ | इषीका | १०. | सरकन्डों के |
| गावः | २. | गायें | अटवीम् | ११. | वन में |
| महिष्यःच | ३. | और भैंसें | निर्विविशुः | १२. | घुस गयीं |
| निर्विशन्त्यः | ६. | होती हुयीं | क्रन्दन्त्यः | ९. | डकराती हुई |
| वनाद् | ४. | एक वन से | दाव | ७. | गर्मी के ताप से |
| वनम् । | ५. | दूसरे वन में | तर्षिताः ॥ | ८. | व्याकुल होकर |

श्लोकार्थ—उनकी बकरियाँ, गाय और भैंसें एक वन से दूसरे वन में होती हुई गर्मी के ताप से व्याकुल होकर डकराती हुई सरकन्डों के वन में घुस गयीं ॥

# तृतीयः श्लोकः

**तेऽपश्यन्तः पशून् गोपा कृष्णरामादयस्तदा ।**
**जातानुलापा न विदुर्विचिन्वन्तो गवां गतिम् ॥३॥**

पदच्छेद— ते अपश्यन्तः पशून् गोपाः कृष्णराम आदयः तदा ।
जात अनुलापा न विदुः विचिन्वन्तः गवाम् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते | २. | उन | जात | ९. | हुआ और वे |
| अपश्यन्तः | ७. | कहीं पता नहीं है | अनुतापः | ८. | तब उन्हें बड़ा पश्चात्ताप |
| पशून् | ६. | हमारे पशुओं का | न | १३. | नहीं |
| गोपाः | ४. | ग्वाल बाल | विदुः | १४. | जान सके |
| कृष्णराम | ३. | श्रीकृष्ण बलराम और | विचिन्वन्तः | १०. | खोज-बीन करने पर भी |
| आदयः | ५. | आदि ने देखा कि | गवाम् | ११. | गायों की |
| तदा । | १. | तब | गतिम् ॥ | १२. | स्थिति को |

श्लोकार्थ—तब उन श्रीकृष्ण और बलराम तथा ग्वाल बाल आदि ने देखा कि हमारे पशुओं का कहीं पता नहीं है। तब उन्हें बड़ा पश्चात्ताप हुआ। और वे खोज-बीन करने पर भी गायों की स्थिति को नहीं जान सके ॥

# चतुर्थः श्लोकः

**तृणैस्तत्खुरदच्छिन्नैर्गोष्पदैरङ्कितैर्गवाम् ।**
**मार्गमन्वगमन् सर्वे नष्टाजीव्या विचेतसः ॥४॥**

पदच्छेद— तृणैः तत् खुरदच्छिन्नैः गोष्पदैः अङ्कितैः गवाम् ।
मार्गम् अन्वगमन् सर्वे नष्ट आजीव्याः विचेतसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तृणैः | ७. | घास और | मार्गम् | ११. | उस मार्ग पर |
| तत् | ५. | वे गौओं के | अन्वगमन् | १२. | आगे बढ़े |
| खुरदच्छिन्नैः | ६. | खुर और दाँतों से कटी हुई | सर्वे | १. | वे सब |
| गोष्पदैः | १०. | खुरों के चिह्नों के आधार पर | नष्ट | ३. | नष्ट हो जाने पर |
| अङ्कितैः | ८. | और पृथ्वी पर बने | आजीव्याः | २. | गाय रूपी जीविका के |
| गवाम् । | ९. | गायों के | विचेतसः ॥ | ४. | अचेत से हो गये |

श्लोकार्थ—वे सब गाय रूपी जीविका के नष्ट हो जाने पर अचेत से हो गये। वे गायों के खुर और दाँतों से कटी हुई घास और पृथ्वी पर बने गायों के खुरों के चिह्नों के आधार पर आगे बढ़े ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**मुञ्जाटव्यां भ्रष्टमार्गं क्रन्दमानं स्वगोधनम् ।**
**सम्प्राप्य तृषिताः श्रान्तास्ततस्ते संन्यवर्तयन् ॥५॥**

पदच्छेद— मुञ्ज अटव्याम् भ्रष्टमार्गम् क्रन्दमानम् स्वगोधनम् ।
सम्प्राप्य तृषिताः श्रान्ताः ततः ते संन्यवर्तयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मुञ्ज | ३. | मूँज के | सम्प्राप्य | ७. | पाया |
| अटव्याम् | ४. | वन में | तृषिताः | १२. | बहुत प्यासे थे |
| भ्रष्टमार्गम् | ५. | रास्ता भूलकर | श्रान्ताः | ११. | वे थक गये थे और |
| क्रन्दमानम् | ६. | डकराते हुये | ततः | ८. | तब |
| स्व | १. | उन्होंने अपनी | ते | ९. | वे उन्हे |
| गोधनम् । | २. | गायों को | संन्यवर्तयन् ॥ | १०. | लौटाने लगे उस समय |

श्लोकार्थ—उन्होंने अपनी गायों को मूँज के वन में रास्ता भूलकर डकराते हुये पाया । तब वे उन्हें लौटाने लगे । उस समय वे थक गये थे, और बहुत प्यासे थे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**ता आहूता भगवता मेघगम्भीरया गिरा ।**
**स्वनाम्नां निनदं श्रुत्वा प्रतिनेदुः प्रहर्षिताः ॥६॥**

पदच्छेद— ताः आहूताः भगवता मेघगम्भीरया गिरा ।
स्वनाम्नाम् निनदम् श्रुत्वा प्रतिनेदुः प्रहर्षिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | ५. | उन गायों को | स्वनाम्नाम् | ७. | अपने नाम |
| आहूताः | ६. | बुलाया | निनदम् | ८. | ध्वनि |
| भगवता | १. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | श्रुत्वा | ९. | सुनकर |
| मेघ | २. | अपनी मेघ के समान | प्रतिनेदुः | ११. | उन्होंने उत्तर में हुँकार किया |
| गम्भीरया | ३. | गम्भीर | प्रहर्षिताः ॥ | १०. | हर्षित होते हुये |
| गिरा । | ४. | वाणी से | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी मेघ के समान गम्भीर वाणी से उन गायों को बुलाया । अपने नाम की ध्वनि सुनकर हर्षित होती हुई उन्होंने उत्तर में हुँकार किया ॥

## सप्तमः श्लोकः

**ततः समन्ताद् वनधूमकेतुर्यदृच्छयाभूत् क्षयकृद् वनौकसाम् ।**
**समीरितः सारथिनोल्बणोल्मुकैर्विलेलिहानः स्थिरजङ्गमान् महान् ॥७॥**

पदच्छेद— ततः समन्तात् वन धूमकेतुः यदृच्छया अभूत् क्षयकृत् वन ओकसाम् ।
समीरितः सारथिना उल्बण उल्मुकैः विलेलिहानः स्थिर जङ्गमान् महान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब तक | समीरितः | ११. | प्रेरित वह |
| समन्तात् | ३. | सब ओर | सारथिना | १०. | वायु के द्वारा |
| वन | २. | उस वन में | उल्बण | ९. | प्रचण्ड |
| धूमकेतुः | ५. | दावाग्नि लग गई | उल्मुकैः | १२. | अग्नि |
| यदृच्छया | ४. | अकस्मात् | विलेलिहानः | १६. | भस्मसात् करने लगी |
| अभूत् | ८. | होती है | स्थिर | १५. | अचर जीवों को |
| क्षयकृत् | ७. | काल | जङ्गमान् | १४. | चर |
| वन ओकसाम् । | ६. | जो वनवासी जीवों का | महान् ॥ | १३. | समस्त |

श्लोकार्थ—तब तक उस वन में सब ओर अकस्मात् दावाग्नि लग गई । जो वनवासी जीवों का काल होती है । प्रचण्ड वायु के द्वारा प्रेरित वह अग्नि समस्त चर-अचर जीवों को भस्मसात् करने लगी ॥

## अष्टमः श्लोकः

**तमापतन्तं परितो दवाग्निं गोपाश्च गावः प्रसमीक्ष्य भीताः ।**
**ऊचुश्च कृष्णं सबलं प्रपन्ना यथा हरिं मृत्युभयार्दिता जनाः ॥८॥**

पदच्छेद— तमापतन्तम् परितः दवाग्निम् गोपाः च गावः प्रसमीक्ष्य भीताः ।
ऊचुः च कृष्णम् सबलम् प्रपन्नाः यथा हरिम् मृत्यु भयार्दिताः जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तमापतन्तम् | ४. | आते हुये उस | ऊचुः च | १५. | उन्हें पुकारते हुये बोले |
| परितः | ३. | चारों ओर से | कृष्णम् | १२. | श्रीकृष्ण और |
| दवाग्निम् | ५. | दावानल को | सबलम् | १३. | बलराम की |
| गोपाः च | १. | ग्वाल-बाल और | प्रपन्नाः | १४. | शरण में होकर |
| गावः | २. | गायें | यथा | ८. | जिस प्रकार |
| प्रसमीक्ष्य | ६. | देखकर | हरिम् | ११. | भगवान् की शरण में जाते है वैसे ही |
| भीताः । | ७. | भयभीत हो गये | मृत्युभयार्दिताः | ९. | मृत्यु के भय से डरे हुये |
| | | | जनाः ॥ | १०. | जीव |

श्लोकार्थ—ग्वाल-बाल और गायें चारों ओर से दावानल को आते हुये देखकर भयभीत हो गये । जिस प्रकार मृत्यु के भय से डरे हुये जीव भगवान् की शरण में जाते हैं वैसे ही वे श्रीकृष्ण और बलराम की शरण में होकर उन्हें पुकारते हुये बोले ॥

## नवमः श्लोकः

**कृष्ण कृष्ण महावीर हे रामामितविक्रम ।**
**दावाग्निना दह्यमानान् प्रपन्नांस्त्रातुमर्हथः ॥९॥**

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण महावीर हे राम अमित विक्रम ।
दावाग्निना दह्यमानान् प्रपन्नान् त्रातुम् अर्हथः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | २. | हे श्रीकृष्ण ! | दावाग्निना | ७. | दावाग्नि से |
| कृष्ण | ३. | प्यारे श्रीकृष्ण | दह्यमानान् | ८. | जलते हुये |
| महावीर | १. | परमबलशाली | प्रपन्नान् | ९. | हम शरणागतों की |
| हे राम | ६. | हे बलराम जी | त्रातुम् | १०. | आप ही रक्षा |
| अमित | ४. | अत्यधिक | अर्हथः | ११. | कर सकते हैं |
| विक्रम | ५. | पराक्रमशाली | | | |

श्लोकार्थ—परमबलशाली हे श्रीकृष्ण, प्यारे श्रीकृष्ण ! अत्यधिक पराक्रमशाली, हे बलरामजी ! दावाग्नि से जलते हुये हम शरणागतों की आप ही रक्षा कर सकते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**नूनं त्वद्बान्धवाः कृष्ण न चार्हन्त्यवसीदितुम् ।**
**वयं हि सर्वधर्मज्ञ त्वन्नाथास्त्वत्परायणाः ॥१०॥**

पदच्छेद— नूनम् त्वत्बान्धवाः कृष्ण न च अर्हन्ति अवसीदितुम् ।
वयम् हि सर्वधर्मज्ञ त्वत्नाथाः त्वत् परायणाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नूनम् | २. | निश्चय ही | वयम् हि | ११. | हमारे |
| त्वत् | ३. | आपके | सर्व | ८. | सभी |
| बान्धवाः | ४. | बन्धु बान्धवों को | धर्मज्ञ | ९. | धर्मों के ज्ञाता |
| कृष्ण | १. | हे श्रीकृष्ण ! | त्वत् | १०. | तुम्हीं |
| न च | ६. | नहीं | नाथाः | १२. | स्वामी हो |
| अर्हन्ति | ७. | होन. चाहिये | त्वत् | १३. | हमें अब आपका ही |
| अवसीदितुम् | ५. | किसी भी प्रकार का कष्ट | परायणाः | १४. | भरोसा है ॥ |

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! निश्चय ही आपके बन्धु-बान्धवों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होना चाहिये । सभी धर्मों के ज्ञाता तुम्हीं हमारे स्वामी हो । हमें अब आपका ही भरोसा है ॥

## एकादशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—वचो निशम्य कृपणं बन्धूनां भगवान् हरिः ।**
**निमीलयत मा भैष्ट लोचनानीत्यभाषत ॥११॥**

पदच्छेद— वचः निशम्य कृपणम् बन्धूनाम् भगवान् हरिः ।
निमीलयत मा भैष्ट लोचनानि इति अभाषत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वचः | ५. वचन | निमीलयत | १२. बन्द कर लो |
| निशम्य | ६. सुनकर | मा | १०. मत |
| कृपणम् | ४. दीनता भरे | भैष्ट | ९. डरो |
| बन्धूनाम् | ३. अपने बान्धवों के | लोचनानि | ११. तुम अपनी आँखें |
| भगवान् | १०. भगवान् | इति | ७. ऐसा |
| हरिः | २. श्रीकृष्ण ने | अभाषत | ८. कहा कि |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने बान्धवों के दीनता भरे वचन सुनकर ऐसा कहा कि डरो मत। तुम अपनी आँखें बन्द कर लो ॥

## द्वादशः श्लोकः

**तथेति मीलिताक्षेषु भगवानग्निमुल्बणम् ।**
**पीत्वा मुखेन तान् कृच्छ्राद् योगाधीशो व्यमोचयत् ॥१२॥**

पदच्छेद— तथा इति मीलित अक्षेषु भगवान् अग्निम् उल्बणम् ।
पीत्वा मुखेन तान् कृच्छ्राद् योग अधीशः व्यमोचयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तथा | १. उन्होंने बहुत अच्छा | पीत्वा | ११. पी लिया और |
| इति | २. ऐसा कहकर | मुखेन | १०. मुँह से |
| मीलित | ४. बन्द कर ली | तान् | १२. उन्हें |
| अक्षेषु | ३. आँखें | कृच्छ्राद् | १३. घोर संकट से |
| भगवान् | ७. भगवान् श्रीकृष्ण ने | योग | ५. तब योग के |
| अग्निम् | ९. आग को | अधीशः | ६. ईश्वर |
| उल्बणम् | ८. उस भयङ्कर | व्यमोचयत् ॥ | १४. छुड़ा लिया |

श्लोकार्थ—उन्होंने बहुत अच्छा ऐसा कह कर आँखें बन्द कर लीं। तब योग के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने उस भयङ्कर आग को पी लिया और उन्हें संकट से छुड़ा लिया।

# त्रयोदशः श्लोकः

**ततश्च तेऽक्षीण्युन्मील्य पुनर्भाण्डीरमापिताः ।**
**निशाम्य विस्मिता आसन्नात्मानं गाश्च मोचिताः ॥१३॥**

पदच्छेद— ततः च ते अक्षीणि उन्मील्य पुनः भाण्डीरम् आपिताः ।
निशाम्य विस्मताः आसन् आत्मानम् गाः च मोचिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. इसके बाद जब | निशाम्य | ११. देख | | |
| च ते | २. उन ग्वाल वालों ने | विस्मताः | १२. वे बड़े विस्मत | | |
| अक्षीणि | ३. आँखें | आसन् | १३. हुये | | |
| उन्मील्य | ४. खोल कर देखा तो | आत्मानम् | ८. तब अपने आप को | | |
| पुनः | ५. फिर अपने को | गाः च | ९. और गायों को | | |
| भाण्डीरम् | ६. भाण्डीरवट के पास | मोचिताः ॥ | १०. दावानल से | | |
| आपिताः । | ७. पाया । | | | | |

श्लोकार्थ—इसके बाद जब उन ग्वाल वालों ने आँखें खोल कर देखा तो फिर अपने को भाण्डीरवट के पास पाया । तब अपने आपको और गायों को दावानल से बचा देख वे बड़े विस्मित हुये ॥

# चतुर्दशः श्लोकः

**कृष्णस्य योगवीर्यं तद् योगमायानुभावितम् ।**
**दावाग्नेरात्मनः क्षेमं वीक्ष्य ते मेनिरेऽमरम् ॥१४॥**

पदच्छेद— कृष्णस्य योग वीर्यम् तत् योग-माया अनुभावितम् ।
दावाग्नेः आत्मनः क्षेमम् वीक्ष्य ते मेनिरे अमरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्णस्य | १. श्रीकृष्ण की इस | दावाग्नेः | ८. और दावाग्नि से |
| योग | २. योग | आत्मनः | ९. अपनी |
| वीर्यम् | ३. सिद्धि और | क्षेमम् | १०. रक्षा को |
| तत् | ४. उनकी | वीक्ष्य | ११. देख कर |
| योग | ५. योग | ते | १२. उन्होंने श्रीकृष्ण को |
| माया | ६. माया के | मेनिरे | १४. समझा |
| अनुभावितम् । | ७. प्रभाव को | अमरम् ॥ | १३. कोई देवता |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण की इस योग सिद्धि और उनकी योग माया के प्रभाव को और दावाग्नि से अपनी रक्षा को देख कर उन्होंने श्रीकृष्ण को कोई देवता समझा ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**गाः सन्निवर्त्य सायाह्ने सहरामो जनार्दनः ।**
**वेणुं विरणयन् गोष्ठमगाद् गोपैरभिष्टुतः ॥१५॥**

पदच्छेद— गाः सन्निवर्त्य सायाह्ने सह रामः जनार्दनः ।
वेणुम् विरणयन् गोष्ठम् अगात् गोपैः अभिष्टुतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गाः | ५. | गायें | वेणुम् | ७. | वंशी |
| सन्निवर्त्यं | ६. | लौटायीं (और) | विरणयन् | ८. | बजाते हुये |
| सायाह्ने | १. | सायंकाल | गोष्ठम् | ९. | व्रज की ओर |
| सह | ३. | के साथ | अगात् | १०. | चले (तब) |
| रामः | २. | बलराम जी | गोपैः | ११. | ग्वाल-बाल |
| जनार्दनः । | ४. | श्रीकृष्ण ने | अभिष्टुतः ॥ | १२. | उनकी स्तुति कर रहे थे |

श्लोकार्थ—सायंकाल बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण ने गायें लौटायीं और वंशी बजाते हुये व्रज की ओर चले । तब ग्वाल-बाल उनकी स्तुति कर रहे थे ॥

## षोडशः श्लोकः

**गोपीनां परमानन्द आसीद् गोविन्ददर्शने ।**
**क्षणं युगशतमिव यासां येन विनाभवत् ॥१६॥**

पदच्छेद— गोपीनाम् परमानन्दः आसीत् गोविन्द दर्शने ॥
क्षणम् युगशतम् इव यासाम् येन विना अभवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोपीनाम् | १०. | गोपियों को | युगशतम् | ५. | सौ युगों के |
| परमानन्दः | ११. | अत्यधिक आनन्द | इव | ६. | समान |
| आसीत् | १२. | प्राप्त हुआ | यासाम् | ३. | उन गोपियों का |
| गोविन्द | ८. | उन श्रीकृष्ण के | येन | १. | जिन श्रीकृष्ण के |
| दर्शने । | ९. | दर्शन करके | विना | २. | बिना |
| क्षणम् | ४. | एक क्षण | अभवत् ॥ | ७. | बीत रहा था |

श्लोकार्थ—जिन श्रीकृष्ण के बिना उन गोपियों का एक क्षण सौ युगों के समान बीत रहा था । उन श्रीकृष्ण के दर्शन करके गोपियों को अत्यधिक आनन्द प्राप्त हुआ ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
दावाग्निपानं नाम एकोनविंशः अध्यायः ॥१९॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## विंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—तयोस्तदद्भुतं कर्म दावाग्नेर्मोक्षमात्मनः ।**
**गोपाः स्त्रीभ्यः समाचख्युः प्रलम्बवधमेव च ॥१॥**

पदच्छेद— तयोः तत् अद्भुतम् कर्म दावाग्नेः मोक्षम् आत्मनः ।
गोपाः स्त्रीभ्यः सम् आचख्युः प्रलम्ब वधम् एव च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | १. | श्रीकृष्ण और बलराम जी के | गोपाः | १२. | ग्वाल बालों ने |
| तत् | २. | वे | स्त्रीभ्यः | १३. | माँ बहिनादि स्त्रियों से |
| अद्भुतम् | ३. | आश्चर्यजनक | सम् आचख्युः | १४. | भलीभाँति बताया |
| कर्म | ४. | कार्य | प्रलम्ब | ९. | प्रलम्बासुर को |
| दावाग्नेः | ५. | दावानल से | वधम् | १०. | मारना आदि |
| मोक्षम् | ७. | छुड़ाना | एव | ११. | सब ही कर्म |
| आत्मनः । | ६. | अपने को | च ॥ | ८. | और |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण और बलराम जी के वे आश्चर्य जनक कार्य दावानल से अपने को छुड़ाना और प्रलम्बासुर को मारना आदि सब ही कर्म ग्वालबालों ने माँ बहिनादि स्त्रियों से भलीभाँति बताया ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**गोपवृद्धाश्च गोप्यश्च तदुपाकर्ण्य विस्मिताः ।**
**मेनिरे देवप्रवरौ कृष्णरामौ व्रजं गतौ ॥२॥**

पदच्छेद— गोप वृद्धाः च गोप्यः च तत् उपाकर्ण्य विस्मिताः ।
मेनिरे देवप्रवरौ कृष्ण रामौ व्रजम् गतौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप | २. | गोप | मेनिरे | ७. | वे ऐसा मानने लगे कि |
| वृद्धाः च | १. | और बड़े बूढ़े | देवप्रवरौ | १०. | कोई बहुत बड़े देवता ही |
| गोप्यः च | ३. | और गोपियाँ | कृष्ण | ८. | श्रीकृष्ण और |
| तत् | ४. | राम और श्याम की | रामौ | ९. | बलराम के वेष में |
| उपाकर्ण्य | ५. | अलौकिक लीलायें सुनकर | व्रजम् | ११. | व्रज में |
| बिस्मिताः । | ६. | आश्चर्य चकित हो गये | गतौ ॥ | १२. | पधारे |

श्लोकार्थ—और बड़े बूढ़े गोप और गोपियाँ राम और श्याम की अलौकिक लीलायें सुन कर आश्चर्य चकित हो गये । वे ऐसा सोचने लगे कि श्रीकृष्ण और बलराम के वेष में कोई बहुत बड़े देवता ही व्रज में पधारे हैं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**ततः प्रावर्तत प्रावृट् सर्वसत्त्वसमुद्भवा ।**
**विद्योतमानपरिधिर्विस्फूर्जितनभस्तला ॥३॥**

पदच्छेद— ततः प्रावर्तत प्रावृट् सर्व सत्त्व समुद्भवा ।
विद्योतमान परिधिः विस्फूर्जित नभः तलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | इसके बाद | विद्योतमान | ७. | प्रकाश |
| प्रावर्तत | ३. | शुभागमन हुआ | परिधिः | ८. | मण्डल बैठने और |
| प्रावृट् | २. | वर्षा ऋतु का | विस्फूर्जित | ११. | क्षुब्ध सा दीखने लगा |
| सर्व | ४. | इसमें सभी प्रकार के | नभः | ६. | आकाश |
| सत्त्व | ५. | प्राणियों की | तलाः ॥ | १०. | तल |
| समुद्भवा । | ६. | बढ़ती हो जाती है तब | | | |

श्लोकार्थ—इसके बाद वर्षा ऋतु का शुभागमन हुआ । इसमें सभी प्रकार के प्राणियों की बढ़ती हो जाती है । तब प्रकाश मण्डल बैठने और आकाश तल क्षुब्ध सा दीखने लगा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**सान्द्रनीलाम्बुदैर्व्योम सविद्युत्स्तनयित्नुभिः ।**
**अस्पष्टज्योतिराच्छन्नं ब्रह्मेव सगुणं बभौ ॥४॥**

पदच्छेद— सान्द्र लील अम्बुदैः व्योम सविद्युत् स्तनयित्नुभिः ।
अस्पष्ट ज्योतिः आच्छन्नम् ब्रह्म एव सगुणम् बभौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सान्द्र | ३. | घने | अस्पष्ट | ९. | स्पष्ट प्रतीत नहीं होते थे |
| लील | २. | नाना प्रकार के | ज्योतिः | ७. | सूर्य चन्द्र और तारे |
| अम्बुदैः | ४. | बादलों से भर गया | आच्छन्नम् | ८. | ढके होने के कारण |
| व्योम | १. | आकाश | ब्रह्म एव | ११. | ब्रह्म के समान |
| सविद्युत् | ५. | बिजली | सगुणम् | १०. | आकाश सगुण |
| स्तनयित्नुभिः । | ६. | कौंधने लगी | बभौ ॥ | १२. | सुन्दर प्रतीत होने लगा |

श्लोकार्थ—आकाश नाना प्रकार के घने बादलों से भर गया । बिजली कौंधने लगी । सूर्य, चन्द्र और तारे ढके होने के कारण स्पष्ट प्रतीत नहीं होते थे । आकाश सगुण ब्रह्म के समान सुन्दर प्रतीत होने लगा ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**अष्टौ मासान् निपीतं यद् भूम्याश्चोदमयं वसु ।**
**स्वगोभिर्मोक्तुमारेभे पर्जन्यः काल आगते ॥५॥**

पदच्छेद— अष्टौ मासान् निपीतम् यत् भूम्याः च उदमयम् वसु ।
स्वगोभिः मोक्तुम् आरेभे पर्जन्यः काले आगते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अष्टौ | ३. | आठ | स्व | ११. | अपनी |
| मासान् | ४. | माह तक | गोभिः | १२. | रश्मियों से |
| निपीतम् | ८. | ग्रहण किया था | मोक्तुम् | १३. | उसे बरसाने |
| यत् | ५. | जो | आरेभे | १४. | लगे |
| भूम्याः च | २. | पृथ्वी रूप प्रजा से | पर्जन्यः | १. | सूर्य ने राजा की तरह |
| उदमयम् | ६. | जल रूप | काले | ९. | समय |
| वसु । | ७. | धन | आगते ॥ | १०. | आने पर |

श्लोकार्थ—सूर्य ने राजा की तरह पृथ्वी रूप प्रजा से आठ माह तक जो जल रूप धन ग्रहण किया था । समय आने पर अपनी रश्मियों से उसे बरसाने लगे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**तडित्वन्तो महामेघाश्चण्डश्वसनवेपिताः ।**
**प्रीणनं जीवनं ह्यस्य मुमुचुः करुणा इव ॥६॥**

पदच्छेद— तडित्वन्तः महामेघाः चण्डश्वसनवेपिताः ।
प्रीणनम् जीवनम् हि अस्य मुमुचुः करुणा इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तडित्वन्तः | १. | वे विद्युत् से युक्त | प्रीणनम् | ६. | प्राणियों के कल्याण के लिये |
| महामेघाः | २. | घनघोर बादल | जीवनम् | ८. | जीवन रूप जल को |
| चण्ड | ३. | तेज | हि अस्य | ७. | अपने |
| श्वसन | ४. | हवा की | मुमुचुः | ११. | बरसाने लगे |
| वेपिताः । | ५. | प्रेरणा से | करुणा | ९. | महापुरुषों की करुणा के |
| | | | इव ॥ | १०. | समान |

श्लोकार्थ—वे विद्युत् से युक्त घनघोर बादल तेज हवा की प्रेरणा से प्राणियों के कल्याण के लिये अपने जीवन रूप जल को महापुरुषों की करुणा के समान बरसाने लगे ॥

## सप्तमः श्लोकः

**तपःकृशा देवमीढा आसीद् वर्षीयसी मही ।**
**यथैव काम्यतपसस्तनुः सम्प्राप्य तत्फलम् ॥७॥**

पदच्छेद— तपः कृशा देवमीढा आसीत् वर्षीयसी मही ।
यथा एव काम्य तपसः तनुः सम्प्राप्य तत् फलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तपः | १. | गर्मी से | यथा एव | ५. | उसी प्रकार |
| कृशा | २. | सूखी | काम्य | ८. | सकाम भाव से |
| देवमीढा | ४. | वर्षा के जल से सिंचकर | तपसः | ९. | तपस्या करने पर पहले तो |
| आसीत् | ७. | हो गयी थी जैसे | तनुः | १०. | शरीर दुबला होता है |
| वर्षीयसी | ६. | हरी भरी | सम्प्राप्य | १२. | मिलने पर स्वस्थ हो जाता है |
| मही । | ३ | पृथ्वी | तत् फलम् ॥ | ११. | पर बाद में उसका फल |

श्लोकार्थ—गर्मी से सूखी पृथ्वी वर्षा के जल से सिंचकर उसी प्रकार हरी-भरी हो गई थी जैसे सकाम भाव से तपस्या करन पर पहले तो शरीर दुबला होता है। पर बाद में उसका फल मिलने पर स्वस्थ हो जाता है।

## अष्टमः श्लोकः

**निशामुखेषु खद्योतास्तमसा भान्ति न ग्रहाः ।**
**यथा पापेन पाखण्डा न हि वेदाः कलौ युगे ॥८॥**

पदच्छेद— निशामुखेषु खद्योताः तमसा भान्ति न ग्रहाः ।
यथा पापेन पाखण्डाः न हि वेदाः कलौ युगे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशा | १. | रात्रि के | यथा | ८. | जैसे |
| मुखेषु | २. | प्रारम्भ में ही | पापेन | ११. | पाप की प्रबलता हो जाने पर |
| खद्योताः | ७. | जुगनू चमकते हैं | पाखण्डाः | १२. | पाखण्ड का प्रचार हो जाता है |
| तमसा | ३. | अन्धेरा होने पर | न हि | १४. | नहीं दिखाई देते हैं |
| भान्ति | ६. | दिखलाई पड़ता, पर | वेदाः | १३. | वैदिक सम्प्रदाय |
| न | ५. | नहीं | कलौ | ९. | कलि- |
| ग्रहाः । | ४. | ग्रह और तारों का प्रकाश तो | युगे ॥ | १०. | युग में |

श्लोकार्थ—रात्रि के प्रारम्भ में ही अन्धेरा होने पर ग्रह और तारों का प्रकाश तो नहीं दिखलाई पड़ता पर जुगनू चमकते हैं। जैसे कलियुग में पाप की प्रबलता हो जाने पर पाखण्ड का प्रचार हो जाता है और वैदिक सम्प्रदाय नहीं दिखाई देते हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**श्रुत्वा पर्जन्यनिनदं मण्डूका व्यसृजन् गिरः ।**
**तूष्णीं शयानाः प्राग् यद्वद् ब्राह्मणा नियमात्यये ॥९॥**

पदच्छेद— श्रुत्वा पर्जन्य निनदम् मण्डूकाः व्यसृजन् गिरः ।
तूष्णीम् शयानाः प्राक् यद्वत् ब्राह्मणाः नियम अत्यये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रुत्वा | ७. | सुनकर | तूष्णीम् | ३. | चुपचाप |
| पर्जन्य | ५. | बादल की | शयानाः | ४. | सो रहे थे (अब) |
| निनदम् | ६. | गरज | प्राक् | २. | पहले |
| मण्डूकाः | १. | जो मेढक | यद्वत् | १०. | जैसे |
| व्यसृजन् | ९. | करने लगे | ब्राह्मण | ११. | ब्रह्मचारी लोग |
| गिरः । | ८. | टर्र-टर्र | नियम | १२. | नित्य-नियम से |
| | | | अत्यये ॥ | १३. | निवृत्त होकर वेदपाठ करते हैं |

श्लोकार्थ—जो मेढक पहले चुपचाप सो रहे थे अब बादलों की गरज सुनकर टर्र-टर्र करने लगे। जैसे ब्रह्मचारी लोग नित्य-नियम से निवृत्त होकर वेदपाठ करते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**आसन्नुत्पथवाहिन्यः क्षुद्रनद्योऽनुशुष्यतीः ।**
**पुंसो यथास्वतन्त्रस्य देहद्रविणसम्पदः ॥१०॥**

पदच्छेद— आसन् उत्पथ वाहिन्यः क्षुद्रनद्यः अनुशुष्यतीः ।
पुंसः यथा अस्वतन्त्रस्य देहद्रविण सम्पदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आसन् | ६. | लगीं | पुंसः | ९. | पुरुष के |
| उत्पथ | ४ | उमड़-घुमड़कर | यथा | ७. | जैसे कि |
| वाहिन्यः | ५. | बहने | अस्वतन्त्रस्य | ८. | अजितेन्द्रिय |
| क्षुद्र | २. | छोटी-छोटी | देह | १०. | शरीर और |
| नद्यः | ३. | नदियाँ | द्रविण | ११. | धन |
| अनुशुष्यतीः । | १. | सूखती | सम्पदः ॥ | १२. | सम्पत्तियों का कुमार्ग में उपभोग होने लगता है |

श्लोकार्थ—सूखती हुई छोटी-छोटी नदियाँ उमड़-घुमड़ कर बहनें लगीं। जैसे कि अजितेन्द्रिय पुरुष के शरीर और धन-सम्पत्तियों का कुमार्ग में उपभोग होने लगता है ॥

## एकादशः श्लोकः

**हरिता हरिभिः शष्पैरिन्द्रगोपैश्च लोहिता ।**
**उच्छिलीन्ध्रकृतच्छाया नृणां श्रीरिव भूरभूत् ॥११॥**

पदच्छेद-- हरिता हरिभिः शष्पैः इन्द्र गोपैः च लोहिता ।
उच्छिलीन्ध्र कृत छाया नृणाम् श्रीः इव भूः अभूत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हरिता | ४. | हरी | उच्छिलीन्ध्र | ८. | बरसाती छत्तों से |
| हरिभिः | २. | हरी-हरी | कृत | १०. | मालूम होती थी वह |
| शष्पैः | ३. | घास की हरियालो से | छाया | ६. | श्वेत |
| इन्द्रगोपैः | ६. | बीर बहूटियों से | नृणाम् | ११. | राजा की |
| च | ५. | और | श्रीः इव | १२. | रंग-विरंगी सेना के समान |
| लोहिता । | ७. | लाल तथा | भूः | १. | पृथ्वी |
| | | | अभूत् ॥ | १३. | हो गई थी |

श्लोकार्थ—पृथ्वी हरी हरी घास की हरियाली से हरी और बीर बहूटियों से लाल तथा बरसातो छत्तों से श्वेत मालूम होती थो । वह राजा की रंग-बिरंगी सेना के समान हो गई थी ॥

## द्वादशः श्लोकः

**क्षेत्राणि सस्यसम्पद्भिः कर्षकाणां मुदं ददुः ।**
**धनिनामुपतापं च दैवाधीनमजानताम् ॥१२॥**

पदच्छेद— क्षेत्राणि सस्य सम्पद्भिः कर्षकाणाम् मुदम् ददुः ।
धनिनाम् उपतापम् च दैव अधीनम् अजानताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्षेत्राणि | १. | सब खेत | धनिनाम् | ११. | धनियों के चित्त में |
| सस्य | २. | अनाज से | उपतापम् | १२. | इससे जलन हो रही थी |
| सम्पद्भिः | ३. | भरे पूरे होकर | च | ७. | और |
| कर्षकाणाम् | ४. | किसानों को | दैव | ८. | सब-कुछ प्रारब्ध के |
| मुदम् | ५. | आनन्दित | आधीनम् | ६. | अधीन है इसे |
| ददुः । | ६. | कर रहे थे | अजानताम् ॥ | १०. | न जानने वाले |

श्लोकार्थ—सब खेत अनाज से भरे-पूरे होकर किसानों को आनन्दित कर रहे थे । और सब कुछ प्रारब्ध के अधीन है, इसे न जानने वाले धनियों के चित्त में इससे जलन हो रही थी ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**जलस्थलौकसः सर्वे नववारिनिषेवया ।**
**अबिभ्रद् रुचिरं रूपं यथा हरिनिषेवया ॥१३॥**

पदच्छेद— जल-स्थल ओकसः सर्वे नववारि निषेवया ।
अबिभ्रद् रुचिरम् रूपम् यथा हरि निषेवया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जल | ४. | जल और | अबिभ्रद् | ९. | हो गया |
| स्थल | ५. | थल पर | रुचिरम् | ८. | सुन्दर |
| ओकसः | ६. | रहने वाले प्राणियों का | रूपम् | ७. | रूप |
| सर्वे | ३. | सभी | यथा | १०. | जैसे |
| नववारि | १. | नये बरसाती जल के | हरि | ११. | भगवान् की |
| निषेवया । | २. | सेवन से | निषेवया ॥ | १२. | सेवा करने से व्यक्ति अच्छा लगता है |

श्लोकार्थ—नये बरसाती जल के सेवन से सभी जल और थल पर रहने वाले प्राणियों का रूप सुन्दर हो गया । जैसे भगवान् की सेवा करने से व्यक्ति अच्छा लगता है ।

## चतुर्दशः श्लोकः

**सरिद्भिः सङ्गतः सिन्धुश्चुक्षुभे श्वसनोर्मिमान् ।**
**अपक्वयोगिनश्चित्तं कामाक्तं गुणयुग् यथा ॥१४॥**

पदच्छेद— सरिद्भिः सङ्गतः सिन्धुः चुक्षुभे श्वसन ऊर्मिमान् ।
अपक्व योगिनः चित्तम् कामाक्तम् गुणयुग् यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरिद्भिः | ४. | नदियों के | अपक्व | ९. | अधकचरे |
| सङ्गतः | ५. | संयोग से और भी | योगिनः | १०. | योगी का |
| सिन्धुः | ३. | समुद्र | चित्तम् | ११. | चित्त |
| चुक्षुभे | ६. | क्षुब्ध हो गया | कामाक्तम् | ८. | वासना युक्त |
| श्वसन | १. | हवा के झोंकों और | गुणयुग् | १२. | विषयों का संपर्क पाकर क्षुब्ध हो जाता है |
| ऊर्मिमान् । | २. | उत्ताल तरंगों से युक्त | यथा ॥ | ७. | जैसे कि |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! हवा के झोंकों और उत्ताल तरंगों से युक्त समुद्र नदियों के संयोग से और भी क्षुब्ध हो गया । जैसे कि वासना युक्त अधकचरे योगी का चित्त विषयों का सम्पर्क पाकर क्षुब्ध हो जाता है ।

## पञ्चदशः श्लोकः

**गिरयो वर्षधाराभिर्हन्यमाना न विव्यथुः ।**
**अभिभूयमाना व्यसनैर्यथाधोक्षजचेतसः ॥१५॥**

पदच्छेद— गिरयः वर्षधाराभिः हन्यमानाः न विव्यथुः ।
अभिभूयमानाः व्यसनैः यथा अधोक्षज चेतसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **गिरयः** | ४. पर्वतों को वैसे ही | **अभिभूयमानाः** | ८. पीडित व्यक्ति का |
| **वर्ष** | २. वर्षा की | **व्यसनैः** | ७. दुःखों से |
| **धाराभिः** | १. मूसलाधार | **यथा** | ६. जैसे कि |
| **हन्यमानाः** | ३. चोट खाने पर भी | **अधोक्षज** | ६. भगवान् में लगा हुआ |
| **न विव्यथुः ।** | ५. व्यथा नहीं होती | **चेतसः ॥** | १०. चित्त व्याकुल नहीं होता है |

श्लोकार्थ—मूसलाधार वर्षा की चोट खाने पर भी पर्वतों को वैसे ही व्यथा नहीं होती जैसे कि दुःखों से पीड़ित व्यक्ति का भगवान् में लगा हुआ चित्त व्याकुल नहीं होता है ।

## षोडशः श्लोकः

**मार्गा बभूवुः सन्दिग्धास्तृणैश्छन्ना ह्यसंस्कृताः ।**
**नाभ्यस्यमानाः श्रुतयो द्विजैः कालहता इव ॥१६॥**

पदच्छेद— मार्गाबभूवुः सन्दिग्धाः तृणैः छन्नाः हि असंस्कृताः ।
न अभ्यस्यमानाः श्रुतयः द्विजैः कालहताः इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **मार्गाः** | ४. रास्तों को | **न अभ्यस्यमानाः** | १०. अभ्यास न करने पर |
| **बभूवुः** | ६. हो गया | **श्रुतयः** | ६. वेदों का |
| **सन्दिग्धाः** | ५. पहिचानना कठिन | **द्विजैः** | ८. द्विजाति द्वारा |
| **तृणैः** | १. घास से | **काल** | ११. कालक्रम से वे उन्हें |
| **छन्नाःहि** | २. ढके हुये और | **हता** | १२. भूल जाते हैं |
| **असंस्कृताः ।** | ३. कभी साफ न किये गये | **इव ॥** | ७. जैसे |

श्लोकार्थ—घास से ढके हुये और कभी साफ न किये गये रास्तों को पहिचानना कठिन हो गया । जैसे द्विजाति द्वारा वेदों का अभ्यास न करन पर कालक्रम से वे उन्हें भूल जाते हैं ।

## सप्तदशः श्लोकः

**लोकबन्धुषु मेघेषु विद्युतश्चलसौहृदाः ।**
**स्थैर्यं न चक्रुः कामिन्यः पुरुषेषु गुणिष्विव ॥१७॥**

पदच्छेद— लोक बन्धुषु मेघेषु विद्युतः चल सौहृदाः ।
स्थैर्यम् न चक्रुः कामिन्यः पुरुषेषु गुणिषु इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लोक | २. | संसार का | स्थैर्यम् | ७. | स्थिर |
| बन्धुषु | ३. | कल्याण करने वाले हैं | न चक्रुः | ८. | नहीं रहतीं |
| मेघेषु | १. | यद्यपि बादल | कामिन्यः | १०. | कामिनी स्त्रियाँ |
| विद्युतः | ६. | बिजलियाँ (उनमें) वैसे ही | पुरुषेषु | १२. | पुरुष के पास स्थिर नहीं रहती |
| चल | ४. | पर चञ्चल और | गुणिषु | ११. | गुणी |
| सौहृदाः । | ५. | प्रिय | इव ॥ | ९. | जैसे |

श्लोकार्थ—यद्यपि बादल संसार का कल्याण करने वाले हैं। पर चञ्चल और प्रिय बिजलियाँ उनमें वैसे ही स्थिर नहीं रहतीं जैसे कामिनी स्त्रियाँ गुणी पुरुष के पास स्थिर नहीं रहती हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**धनुर्वियति माहेन्द्रं निर्गुणं च गुणिन्यभात् ।**
**व्यक्ते गुणव्यतिकरेऽगुणवान् पुरुषो यथा ॥१८॥**

पदच्छेद— धनुः वियति माहेन्द्रम् निर्गुणम् च गुणिनि अभात् ।
व्यक्ते गुणव्यतिकरे अगुणवान् पुरुषः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धनुः | ५. | धनुष की | व्यक्ते | ९. | इस विश्व में |
| वियति | २. | आकाश में | गुणव्यतिकरे | ८. | गुणों के क्षोभ से होने वाले |
| माहेन्द्रम् | ४. | इन्द्र- | अगुणवान् | १०. | निर्गुण |
| निर्गुणम् च | ३. | निर्गुण (डोरी रहित) | पुरुषः | ११. | ब्रह्म सुशोभित है |
| गुणिनि | १. | मेघ गर्जन युक्त | यथा ॥ | ७. | जैसे कि |
| अभात् । | ६. | वैसी ही शोभा हुई | | | |

श्लोकार्थ—मेघ गर्जन युक्त आकाश में निर्गुण डोरी रहित इन्द्र धनुष को वैसी ही शोभा हुई। जैसे कि गुणों के क्षोभ से होने वाले इस संसार में निर्गुण ब्रह्म सुशोभित है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**न रराजोडुपश्छन्नः स्वज्योत्स्नाराजितैर्घनैः ।**
**अहंमत्या भासितया स्वभासा पुरुषो यथा ॥१९॥**

पदच्छेद— न रराज उडुपः छन्नः स्वज्योत्स्नाराजितैः घनैः ।
अहंमत्वा भासितया स्वभासा पुरुषः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न रराज | ६. स्वयं सुशोभित नहीं हो रहा था | अहम् | ११. | अहंकार ही उसे ढककर |
| उडुप | १. चन्द्रमा बादलों से | मत्वा | १२. | प्रकाशित नहीं होने देता है |
| छन्नः | २. ढका होने के कारण | भासितया | १०. | आभासित होने वाला |
| स्वज्योत्स्ना | ३. अपनी चाँदनी से | स्वभासा | ९. | आभास से |
| राजितैः | ५. सुशोभित करते हुये | पुरुषः | ८. | पुरुष के |
| घनैः । | ४. बादलों को | यथा ॥ | ७. | जैसे कि |

श्लोकार्थ—चन्द्रमा बादलों से ढका होने के कारण अपनी चाँदनी से बादलों को सुशोभित करते हुये स्वयं सुशोभित नहीं हो रहा था जैसे कि पुरुष के आभास से आभासित होने वाला अहंकार ही उसे ढक कर प्रकाशित नहीं होने देता है ॥

## विंशः श्लोकः

**मेघागमोत्सवा हृष्टाः प्रत्यनन्दञ्छिखण्डिनः ।**
**गृहेषु तप्ता निर्विण्णा यथाच्युतजनागमे ॥२०॥**

पदच्छेद— मेघ आगम उत्सवाः हृष्टाः प्रत्यनन्दन् शिखण्डिनः ।
गृहेषु तप्ताः निर्विण्णाः यथा अच्युतजन आगमे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मेघ | १. बादलों के | गृहेषु | १०. | गृहस्थ जन |
| आगम | २. शुभागमन से | तप्ताः | ८. | तीनों तापों से |
| उत्सवाः | ६. उत्सव मना रहे थे | निर्विण्णाः | ९. | दुःखी होते हुये |
| हृष्टाः | ३. प्रसन्न और | यथा | ७. | जैसे कि |
| प्रत्यनन्दन् | ४. आनन्दित होकर | अच्युतजन | ११. | भगवान् के भक्तों के |
| शिखण्डिनः । | ५. मोर | आगमे ॥ | १२. | शुभागमन से प्रसन्न होते हैं |

श्लोकार्थ—बादलों के शुभागमन से प्रसन्न और आनन्दित होकर मोर उत्सव मना रहे थे । जैसे कि तीनों तापों से दुःखी होते हुये लोग भगवान् के भक्तों के शुभागमन से प्रसन्न होते हैं ॥

# एकविंशः श्लोकः

पीत्वापः पादपाः पद्भिरासन्नानात्ममूर्तयः।
प्राक्क्षामास्तपसा श्रान्ता यथा कामानुसेवया ॥२१॥

पदच्छेद— पीत्वा अपः पादपाः पद्भिः आसन् नानाआत्म मूर्तयः।
प्राक् क्षामाः तपसा श्रान्ताः यथा काम अनुसेवया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पीत्वा अपः | २. | जल पीकर | प्राक् | ८. | पहले तो |
| पादपाः | १. | वृक्ष | क्षामाः | ११. | दुबले हो जाते हैं, बाद में |
| पद्भिः | ३. | पत्तों-फूलों आदि से | तपसा | ९. | तपस्या करने से |
| आसन् | ६. | हो गये | श्रान्ताः | १०. | थकान के कारण |
| नानाआत्म | ४. | वैसे ही अनेक | यथा | ७. | जैसे कि लोग |
| मूर्तयः। | ५. | रूपों वाले | काम | १२. | विषयों के |
| | | | अनुसेवया ॥ | १३. | सेवन से स्वस्थ हो जाते हैं |

श्लोकार्थ—वृक्ष जल पीकर पत्तों, फलों आदि से वैसे ही अनेक रूपों वाले हो गये। जैसे कि लोग पहले तो तपस्या करने से थकान के कारण दुबले हो जाते हैं। बाद में विषयों के सेवन से स्वस्थ हो जाते हैं।

# द्वाविंशः श्लोकः

सरस्स्वशान्तरोधस्सु न्यूषुरङ्गापि सारसाः।
गृहेष्वशान्तकृत्येषु ग्राम्या इव दुराशयाः ॥२२॥

पदच्छेद— सरस्सु अशान्त-रोधस्सु न्यूषुः अङ्ग अपि सारसाः।
गृहेषु अशान्त कृत्येषु ग्राम्याः इव दुराशयाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अङ्ग | १. | परीक्षित्! | गृहेषु | १३. | घरों में पड़े रहते हैं |
| अपि | ५. | भी | अशान्त | ११. | अशान्त |
| सरस्सु | २. | तालाबों के | कृत्येषु | १२. | करने वाले कर्मों को करके |
| अशान्त | ४. | अशान्त होने पर | ग्राम्याः | १०. | विषयी पुरुष |
| रोधस्सु | ३. | तटों के | इव | ८. | जैसे कि |
| न्यूषुः | ७. | नहीं छोड़ते थे | दुराशयाः ॥ | ९. | अशुद्ध हृदय वाले |
| सारसाः। | ६. | सारस उन्हें | | | |

श्लोकार्थ—परीक्षित्! तालाबों के तटों के अशान्त होने पर भी सारस उन्हें नहीं छोड़ते थे। जैसे कि अशुद्ध हृदय वाले विषयी पुरुष अशान्त करने वाले कर्मों को करके घरों में ही पड़े रहते है।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**जलौघैर्निरभिद्यन्त सेतवो वर्षतीश्वरे ।**
**पाखण्डिनामसद्वादैर्वेदमार्गाः कलौ यथा ॥२३॥**

पदच्छेद— जलओघैः निरभिद्यन्त सेतवः वर्षति ईश्वरे ।
पाखण्डिनाम् असद्वादैः वेदमार्गाः कलौ यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जल | ४. जल बरसता है | पाखण्डिनाम् | ९. पाखण्डियों के |
| ओघैः | ३. मूसलाधार | असद्वादैः | १० मिथ्या मतवादों से |
| निरभिद्यन्त | ६. टूट जाते हैं | वेद | ११. वैदिक मार्ग की |
| सेतवः | ५. और बाँध | मार्गाः | १२. मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाती है |
| वर्षति | १. वर्षा ऋतु में | कलौ | ८. कलियुग में |
| ईश्वरे । | २. इन्द्र की प्रेरणा से | यथा ॥ | ७. जैसे कि |

श्लोकार्थ—वर्षा ऋतु में इन्द्र की प्रेरणा से मूसलाधार जल बरसता है। और बाँध टूट जाते हैं। जैसे कि कलियुग में पाखण्डियों के मिथ्यामत वादों से वैदिक मार्ग की मर्यादा छिन्न-भिन्न हो जाती है।

## चतुर्विंशः श्लोकः

**व्यमुञ्चन् वायुभिर्नुन्ना भूतेभ्योऽथामृतं घनाः ।**
**यथाऽऽशिषो विश्पतयः काले काले द्विजेरिताः ॥२४॥**

पदच्छेद— व्यमुञ्चन् वायुभिः नुन्नाः भूतेभ्यः अथ अमृतम् घनाः ।
यथा आशिषः विश्पतयः काले-काले द्विजईरिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्यमुञ्चन् | ७. वर्षा करते हैं | यथा | ८. जैसे कि |
| वायुभिः | ३. वायु की | आशिषः | १४. प्रजा की अभिलाषायें पूर्ण करते हैं |
| नुन्नाः | ४. प्रेरणा से | विश्पतयः | ९. धनी लोग धन के द्वारा |
| भूतेभ्यः | ५. प्राणियों के लिये | काले | १२. समय |
| अथ | १. और | काले | १३. समय पर |
| अमृतम् | ६. अमृतमय जल की | द्विज | १०. ब्राह्मणों की |
| घनाः । | २. घने बादल | ईरिताः ॥ | ११. प्रेरणा से |

श्लोकार्थ—और घने बादल वायु की प्रेरणा से प्राणियों के लिये अमृतमय जल की वर्षा करते हैं। जैसे कि धनी लोग धन के द्वारा ब्राह्मणों की प्रेरणा से समय-समय पर प्रजा की अभिलाषायें पूर्ण करते हैं।

## पञ्चविंशः श्लोकः

एवं वनं तद् वर्षिष्ठं पक्वखर्जूरजम्बुमत् ।
गोगोपालैर्वृतो रन्तुं सबलः प्राविशद्धरिः ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् वनम् तत् वर्षिष्ठम् पक्वखर्जूर जम्बुमत् ।
गो गोपालैः वृतः रन्तुम् सबलः प्राविशत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | | गो | ८. गायों और | |
| वनम् | ७. वन में | | गोपालैः | ९. ग्वाल बालों से | |
| तत् | ५. उस | | वृतः | १०. घिरे हुये | |
| वर्षिष्ठम् | ६. समृद्ध | | रन्तुम् | १३. विहार करने के लिये | |
| पक्व | २. पके हुये | | सबलः | १२. बलराम जी के साथ | |
| खर्जूर | ३. खजूर और | | प्राविशत् | १४. प्रवेश किया | |
| जम्बुमत् । | ४. जामुनों से युक्त | | हरिः ॥ | ११. श्रीकृष्ण ने | |

श्लोकार्थ—इस प्रकार पके हुये खर्जूर और जामुनों से युक्त उस समृद्ध वन में गायों और ग्वाल बालों से घिरे हुये श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ बिहार करने के लिये प्रवेश किया ।

## षट्विंशः श्लोकः

धेनवो मन्दगामिन्य ऊधोभारेण भूयसा ।
ययुर्भगवताऽऽहूता द्रुतं प्रीत्या स्नुतस्तनीः ॥२६॥

पदच्छेद— धेनवः मन्दगामिन्यः ऊधो भारेण भूयसा ।
ययुः भगवता आहूताः द्रुतम् प्रीत्या स्नुतस्तनीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| धेनवः | १. गौएँ | भगवता | ६. जब भगवान् ने |
| मन्दगामिन्यः | ५. धीरे-धीरे चल पड़ी थीं | आहूताः | ७. उन्हें बुलाया तो वे |
| ऊधो | २. अपने थनों के | द्रुतम् | ११. वेग पूर्वक |
| भारेण | ४. भार के कारण | प्रीत्या | ८. प्रेम के कारण |
| भूयसा | ३. भारी | स्नुत | १०. दूध बहाती हुई |
| ययुः । | १२. दौड़ने लगीं | स्तनीः ॥ | ९. थनों से |

श्लोकार्थ—गौएँ अपने थनों के भारी भार के कारण धीरे-धीरे चल पड़ी थीं । जब भगवान् ने उन्हें बुलाया तो वे प्रेम के कारण थनों से दूध बहाती हुई वेगपूर्वक दौड़ने लगीं ।

## सप्तविंशः श्लोकः

**वनौकसः प्रमुदिता वनराजीर्मधुच्युतः ।**
**जलधारा गिरेर्नादानासन्ना ददृशे गुहाः ॥२७॥**

पदच्छेद— वन ओकसः प्रमुदिताः वनराजीः मधुच्युतः ।
जलधाराः गिरेर्नादान्आसन्ना ददृशे गुहाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वन | १. | वन | जल | ८. | जल |
| ओकसः | २. | वासी | धारा | ६. | धारायें बह रही हैं |
| प्रमुदिताः | ३. | आनन्द मग्न हैं | गिरेर्नादान् | ७. | पर्वतों पर ध्वनि करती हुई |
| वनराजीः | ४. | वृक्षों की पंक्तियाँ | आसन्नाः | १२. | दे रही हैं |
| मधु | ५. | मधुधारा | ददृशे | ११. | दिखाई |
| च्युतः । | ६. | उँडेल रही हैं | गुहाः ॥ | १०. | अनेक गुफायें भी |

श्लोकार्थ—वनवासी आनन्द मग्न हैं। वृक्षों की पंक्तियाँ मधुधारा उँडेल रही हैं। पर्वतों पर ध्वनि करती हुई जल धारायें बह रही हैं। अनेक गुफायें भी दिखाई दे रही हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**क्वचिद् वनस्पतिक्रोडे गुहायां चाभिवर्षति ।**
**निर्विश्य भगवान् रेमे कन्दमूलफलाशनः ॥२८॥**

पदच्छेद— क्वचित् वनस्पति क्रोडे गुहायाम् च अभिवर्षति ।
निर्विश्य भगवान् रेमे कन्दमूल फल अशनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | २. | कभी किसी | निर्विश्य | ८. | जा छिपते |
| वनस्पति | ३. | वृक्ष की | भगवान् | १. | भगवान् श्रीकृष्ण |
| क्रोडे | ४. | गोद में | रेमे | १२. | खेलते रहते |
| गुहायाम् | ७. | गुफा में | कन्दमूल | ६. | इस प्रकार कन्दमूल |
| च | ५. | और | फल | १० | फल |
| अभिवर्षति । | ६. | वर्षा होने पर | अशनः ॥ | ११. | खाकर वे |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण कभी किसी वृक्ष की गोद में और वर्षा होने पर गुफा में जा छिपते। इस प्रकार कन्दमूल फल खाकर वे खेलते रहते थे ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**दध्योदनं समानीतं शिलायां सलिलान्तिके ।**
**सम्भोजनीयैर्बुभुजे गोपैः सङ्कर्षणान्वितः ॥२६॥**

पदच्छेद-- दधि ओदनम् समानीतम् शिलायाम् सलिल अन्तिके ।
सम्भोजनीयैः बुभुजे गोपैः सङ्कर्षण अन्वितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दधि | ८. | दही | सम्भोजनीयैः | १०. | दाल-शाक आदि |
| ओदनम् | ६. | भात | बुभुजे | ११. | खाते थे |
| समानीतम् | ७. | घर से लाया हुआ | गोपैः | ५. | ग्वाल वालों के |
| शिलायाम् | ३. | शिला पर बैठ जाते थे | सङ्कर्षण | ४. | बलराम जी और |
| सलिल | १. | कभी जल के | अन्तिके ॥ | ६. | साथ |
| अन्तिके । | २. | पास ही | | | |

श्लोकार्थ—कभी जल के पास ही शिला पर बैठ जाते थे । बलराम जी और ग्वाल वालों के साथ घर से लाया हुआ दही-भात, दाल-शाक आदि खाते थे ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**शाद्वलोपरि संविश्य चर्वतो मीलितेक्षणान् ।**
**तृप्तान् वृषान् वत्सतरान् गाश्च स्वोधोभरश्रमाः ॥३०॥**

पदच्छेद— शाद्वल उपरि संविश्य चर्वतः मीलित ईक्षणान् ।
तृप्तान् वृषान् वत्सतरान् गाः च स्व ओधोभर श्रमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शाद्वल | ७. | हरी-हरी घास के | तृप्तान् | ६. | घास चर लेती और |
| उपरि | ८. | ऊपर | वृषान् | १. | बैल |
| संविश्य | ६. | बैठ कर | वत्सतरान् | २. | बछड़े और |
| चर्वतः | १२. | जुगाली करती रहती थीं | गाः च | ५. | गोएँ |
| मीलित | ११. | मूंद कर | स्वोधोभर | ३. | अपने थनों के भारी भार से |
| ईक्षणान् । | १०. | आँख | श्रमाः ॥ | ४. | थकी हुई |

श्लोकार्थ—बैल-बछड़े और अपने थनों के भारी भार से थकी हुई गौएँ घास चर लेतीं और हरी-हरी घास के ऊपर बैठ कर आँख मूंद कर जुगाली करती रहती थीं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

प्रावृट्श्रियं च तां वीक्ष्य सर्वभूतमुदावहाम्।
भगवान् पूजयाञ्चक्रे आत्मशक्त्युपबृंहिताम्।।३१।।

पदच्छेद— प्रावृट श्रियम् च ताम् वीक्ष्य सर्वभूतम् मुदावहाम्।
भगवान् पूजयाञ्चक्रे चक्रे आत्मशक्ति उपबृंहितम्।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रावृट | ३. | वर्षा ऋतु की | मुदावहाम्। | २. | सुख देने वाली |
| श्रियम् | ५. | सुन्दरता को | भगवान् | ७. | भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| च | ९. | और | पूजयायाञ्चक्रे | ८. | उसकी प्रशंसा |
| ताम् | ४. | उस विलक्षण | आत्म | १०. | उसे अपनी ही की |
| वीक्ष्य | ६. | देखकर | शक्ति | ११. | लीला का |
| सर्वभूत | १. | समस्त प्राणियों को | उपबृंहितम्।। | १२. | विस्तार माना |

श्लोकार्थ—समस्त प्राणियों को सुख देने वाली वर्षा ऋतु की उस विलक्षण सुन्दरता को देखकर भगवान् श्रीकृष्ण ने उसकी प्रशंसा की और उसे अपनी ही लीला का विस्तार माना।।

## द्वात्रिंशः श्लोकः

एवं निवसतोस्तस्मिन् रामकेशवयोर्व्रजे।
शरत् समभवद् व्यभ्रा स्वच्छाम्ब्वपरुषानिला।।३२।।

पदच्छेद— एवम् निवसतः तस्मिन् राम केशवयोः व्रजे।
शरत् समभवत् व्यभ्रा स्वच्छ अम्बु अपरुषा अनिला।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | शरत् | ७. | शरद् ऋतु |
| निवसतोः | ६. | निवास कर रहे थे कि | समभवत् | ८. | आ गयी |
| तस्मिन् | ४. | उस | व्यभ्रा | ९. | आकाश मेघरहित हो गया |
| राम | ३. | बलराम | स्वच्छ | ११. | निर्मल हो गया और |
| केशवयोः | २. | श्याम और | अम्बु | १०. | जल |
| व्रजे। | ५ | व्रज में | अपरुषा | १३. | धीमी गति से बहने लगी |
| | | | अनिला।। | १२. | वायु |

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्याम और बलराम उस व्रज में निवास कर रहे थे कि शरद ऋतु आ गयी। आकाश मेघरहित हो गया। जल निर्मल हो गया। और वायु धीमी गति से बहने लगी।।

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

शरदा नीरजोत्पत्त्या नीराणि प्रकृतिं ययुः ।
भ्रष्टानामिव चेतांसि पुनर्योगनिषेवया ॥३३॥

पदच्छेद— शरदा नीरज उत्पत्त्या नीराणि प्रकृतिम् ययुः ।
भ्रष्टानाम् इव चेतांसि पुनः योग निषेवया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शरदा | १. | शरद् ऋतु में | भ्रष्टानाम् | ८. | योग भ्रष्ट पुरुषों का |
| नीरज | २. | कमलों की | इव | ७. | ठीक वैसे ही, जैसे |
| उत्पत्त्या | ३. | उत्पत्ति से | चेतांसि | ६. | चित्त |
| नीराणि | ४. | जलाशयों के जल में | पुनः | १०. | फिर से |
| प्रकृतिम् | ५. | सहज स्वच्छता | योग | ११. | योग के |
| ययुः । | ६. | प्राप्त कर ली | निषेवया ॥ | १२. | सेवन से निर्मल हो जाता है |

श्लोकार्थ—शरद-ऋतु में कमलों की उत्पत्ति से जलाशयों के जल ने सहज स्वच्छता प्राप्त कर ली ठीक वैसे ही जैसे योग भ्रष्ट पुरुषों का चित्त फिर से योग के सेवन से निर्मल हो जाता है ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

व्योम्नोऽब्दं भूतशाबल्यं भुवः पङ्कमपां मलम् ।
शरज्जहाराश्रमिणां कृष्णे भक्तिर्यथाशुभम् ॥३४॥

पदच्छेद— व्योम्नः अब्दम् भूत शाबल्यम् भुवःपङ्कम् अपाम् मलम् ।
शरद् जहार आश्रमिणाम् कृष्णे भक्तिः यथा अशुभम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्योम्नः | २. | आकाश के | शरद् | १. | शरद् ऋतु ने |
| अब्दम् | ३. | बादल | जहार | ६. | नष्ट कर दिया |
| भूत | ५. | जीव | आश्रमिणाम् | १३. | आश्रमवासियों के |
| शाबल्यम् | ४. | बढ़े हुये | कृष्णे | ११. | भगवान् की |
| भुवः | ६. | पृथ्वी का | भक्तिः | १२. | भक्ति |
| पङ्कम् अपाम् | ७. | कीचड़ और जल के | यथा | १०. | ठीक वैसे हो, जैसे |
| मलम् । | ८. | मटमैलेपन को | अशुभम् ॥ | १४. | अशुभों का नाश कर देती है |

श्लोकार्थ—शरद् ऋतु ने आकाश के बादल, बढ़े हुये जीव, पृथ्वी का, कीचड़ और जल के मटमैलेपने को नष्ट कर दिया । ठीक वैसे ही, जैसे भगवान् की भक्ति आश्रमवासियों के अशुभों का नाश कर देती है ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोक

**सर्वस्वं जलदा हित्वा विरेजुः शुभ्रवर्चसः ।**
**यथा त्यक्तैषणः शान्ता मुनयो मुक्तकिल्बिषाः ॥३५॥**

पदच्छेद— सर्वस्वम् जलदाःहित्वा विरेजुः शुभ्रवर्चसः ।
यथा त्यक्तैषिणः शान्ताः मुनयः मुक्तकिल्विषाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वस्वम् | २. | अपने सर्वस्व | यथा | ७. | ठीक वैसे ही जैसे |
| जलदाः | १. | बादल | त्यक्तैषिणः | ८. | कामनाओं का त्याग कर देने पर |
| हित्वा | ३. | जल का दान करके | शान्ताः | ११. | परमशान्त |
| विरेजुः | ६. | सुशोभित होने लगे | मुनयः | १२. | संन्यासी शोभायमान होते है |
| शुभ्र | ४. | उज्ज्वल | मुक्त | १०. | मुक्त हुये |
| वर्चसः । | ५. | कान्ति से | किल्विषाः ॥ | ९. | पापों से |

श्लोकार्थ—बादल अपने सर्वस्व जल का दान करके उज्ज्वल कान्ति से सुशोभित होने लगे, ठीक वैसे ही, जैसे कामनाओं का त्याग कर देने पर पापों से मुक्त हुये संन्यासी सोभायमान होते हैं ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**गिरयो मुमुचुस्तोयं क्वचिन्न मुमुचुः शिवम् ।**
**यथा ज्ञानामृतं काले ज्ञानिनो ददते न वा ॥३६॥**

पदच्छेद— गिरयः मुमुचुः तोयम् क्वचित् न मुमुचुः शिवम् ।
यथा ज्ञानअमृतम् काले ज्ञानिनः ददते न वा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गिरयः | १. | पर्वतों से | यथा | ७. | ठीक वैसे ही, जैसे |
| मुमुचुः | ३. | झरता था और | ज्ञान | ११. | ज्ञान का |
| तोयम् | २. | कहीं तो जल | अमृतम् | १०. | अपने अमृतमय |
| क्वचित् न | ५. | कहीं नहीं | काले | ९. | समय पर |
| मुमुचुः | ६. | झरता था | ज्ञानिनः | ८. | ज्ञानी पुरुष |
| शिवम् । | ४. | कल्याणकारी जल | ददते | १२. | दान देते हैं और |
| | | | न वा ॥ | १३. | कहीं नहीं भी देते हैं |

श्लोकार्थ—पर्वतों से कहीं तो जल झरता था । और कल्याणकारी जल कहीं नहीं झरता था, ठीक वैसे ही जैसे ज्ञानी पुरुष समय पर अपने अमृतमय ज्ञान का दान देते हैं; और कहीं नहीं भी देते हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**नैवाविदन् क्षीयमाणं जलं गाधजलेचराः ।**
**यथाऽऽयुरन्वहं क्षय्यं नरा मूढाः कुटुम्बिनः ॥३७॥**

पदच्छेद— न एव अविदन् क्षीयमाणम् जलम् गाध जले चराः ।
यथा आयुः अन्वहम् क्षय्यम् नराः मूढाः कुटुम्बिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **न एव** | ५. | नहीं | यथा | ७. | जैसे कि |
| **अविदन्** | ६. | जानते हैं | आयुः | १२. | आयु को नहीं जानते हैं |
| **क्षीयमाणम्** | ३. | क्षीण होते हुये | अन्वहम् | १०. | प्रतिदिन |
| **जलम्** | ४. | जल को | क्षय्यम् | ११. | क्षीण हो रही |
| **गाध** | १. | क्षुद्र गड्ढों के | नराः मूढाः | ९. | मूर्ख व्यक्ति |
| **जलेचराः ।** | २. | जलचर | कुटुम्बिनः ॥ | ८. | कुटुम्ब के भरण-पोषण में लगे हुये |

श्लोकार्थ—क्षुद्र गड्ढों के जलचर क्षीण होते हुये जल को नहीं जानते हैं । जैसे कि कुटुम्ब के भरण-पोषण में लगे हुये मूर्ख व्यक्ति प्रतिदिन क्षीण हो रहा आयु को नहीं जानते हैं ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**गाधवारिचरास्तापमविन्दञ्छरदर्कजम् ।**
**यथा दरिद्रः कृपणः कुटुम्ब्यविजितेन्द्रियः ॥३८॥**

पदच्छेद— गाधवारि चराः तापम् अविन्दन् शरद् अर्कजम् ।
यथा दरिद्रः कृपणः कुटम्बीअविजितेन्द्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **गाध** | १. | क्षुद्र | अर्कजम् । | ५. | सूर्य की किरणों से |
| **वारि** | २. | जल में रहने वाले | यथा | ८. | जैसे कि |
| **चराः** | ३. | प्राणियों को | दरिद्रः | ११. | दरिद्र |
| **तापम्** | ६. | पीड़ा | कृपणः | १०. | कृपण एवम् |
| **अविन्दन्** | ७. | होने लगी | कुटुम्बी | १२. | कुटुम्बी पीड़ित होते हैं |
| **शरद्** | ४. | शरद्कालीन | अविजितेन्द्रियः ॥ | ९. | इन्द्रियों के वश में रहने वाले |

श्लोकार्थ—क्षुद्र जल में रहने वाले प्राणियों को शरद्कालीन सूर्य की किरणों से पीड़ा होने लगी । जैसे कि इन्द्रियों को वश में न रखने वाले कृपण एवम् दरिद्र कुटुम्बी पीड़ित रहते हैं ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**शनै शनैर्जहुः पङ्कं स्थलान्यामं च वीरुधः ।**
**यथाहंममतां धीराः शरीरादिष्वनात्मसु ॥३९॥**

पदच्छेद— शनैः शनैः जहुः पङ्कम् स्थलानि आमम् च वीरुधः ।
यथा अहम् ममताम् धीराः शरीर आदिषु अनात्मसु ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शनैः | २. धीरे | यथा | ८. ठीक वैसे ही जैसे |
| शनैः | ३. धीरे | अहम् | १३. अहंता और |
| जहुः | ५. छोड़ने लगी | ममताम् | १४. ममता छोड़ देते हैं |
| पङ्कम् | ४. अपना कीचड़ | धीराः | ९. साधक पुरुष |
| स्थलानि | १. पृथ्वी | शरीर | १०. शरीर |
| आमम् | ७. कचाई छोड़ने लगे | आदिषु | ११. आदि |
| च वीरुधः । | ६. घास-पात | अनात्मसु । | १२. अनात्मपदार्थों में से |

श्लोकार्थ—पृथ्वी धीरे-धीरे अपनी कीचड़ छोड़ने लगी । और घास-पात भी कचाई छोड़ने लगे । ठीक वैसे ही जैसे साधक पुरुष शरीर आदि अनात्मक पदार्थों में से अहंता और ममता छोड़ देते हैं ॥

# चत्वारिंशः श्लोकः

**निश्चलाम्बुरभूत्तूष्णीं समुद्रः शरदागमे ।**
**आत्मन्युपरते सम्यङ्मुनिर्व्युपरतागमः ॥४०॥**

पदच्छेद— निश्चल अम्बुः अभूत् तूष्णीम् समुद्रः शरद् आगमे ।
आत्मनि उपरते सम्यक् मुनिः व्युपरत आगमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निश्चल | ४. स्थिर और | आत्मनि | ७. जैसे मन के |
| अम्बुः | ३. जल | उपरते | ९. निःसङ्कल्प होने पर |
| अभूत् | ६. हो गया | सम्युक् | ८. भली-भाँति |
| तूष्णीम् | ५. शान्त | मुनिः | १०. आत्माराम पुरुष |
| समुद्रः | २. समुद्र का | व्युपरत | १२. छोड़ कर शान्त हो जाते हैं |
| शरद् आगमेः । | १. शरद् ऋतु आने पर | आगमः ॥ | ११. कर्म काण्ड को |

श्लोकार्थ—शरद् ऋतु आने पर समुद्र का जल स्थिर और शान्त हो गया । जैसे कि भली-भाँति निःसङ्कल्प होने पर आत्माराम पुरुष कर्मकाण्ड को छोड़ कर शान्त हो जाता है ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**केदारेभ्यस्त्वपोऽगृह्णन् कर्षका दृढसेतुभिः।**
**यथा प्राणैःस्रवज्ज्ञानं तन्निरोधेन योगिनः ॥४१॥**

पदच्छेद— केदारेभ्यः तु अपः अगृह्णन् कर्षकाः दृढसेतुभिः।
यथा प्राणैः स्रवत् ज्ञानम्-तत् निरोधेन योगिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| केदारेभ्यः | २. खेतों की | | यथा | ७. जैसे कि |
| तु अपः | ५. जल का बहना | | प्राणैः | ६. अपनी इन्द्रियों को |
| अगृह्णन् | ६. रोकने लगे | | स्रवत् | १२. क्षीण होते हुये |
| कर्षकाः | १. किसान | | ज्ञानम् | १३. ज्ञान को रोकते हैं |
| दृढं | ४. मजबूत करके | | तत् | १०. उनके विषयों से |
| सेतुभिः । | ३. मेड़ | | निरोधेन | ११. रोककर |
| | | | योगिनः ॥ | ८. योगीजन |

श्लोकार्थ—किसान खेतों की मेंड़ मजबूत करके जल का बहना रोकने लगे। जैसे कि योगीजन अपनी इन्द्रियों को उनके विषयों से रोककर क्षीण होते हुये ज्ञान को रोकते हैं ॥

## द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**शरदर्कांशुजांस्तापान् भूतानामुडुपोऽहरत्।**
**देहाभिमानजं बोधो मुकुन्दो व्रजयोषिताम् ॥४२॥**

पदच्छेद— शरद् अर्क अंशुजान् तापान् भूतानाम् उडुपः अहरत्।
देहाभिमानजम् बोधः मुकुन्दः व्रज योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शरद् | १. शरद् ऋतु में | | अहरत् | ७. हर लेता है जैसे |
| अर्क | २. सूर्य की | | देहाभिमानजम् | ८. हेहाभिमान से होने वाले |
| अंशुजाम् | ३. किरणों से उत्पन्न | | बोधः | ६. दुःख को ज्ञान और |
| तापान् | ५. पीड़ा को | | मुकुन्दः | १२. श्रीकृष्ण हर लेते हैं |
| भूतानाम् | ४. प्राणियों की | | व्रज | १०. व्रज की |
| उडुपः । | ६. चन्द्रमा वैसे ही | | योषिताम् ॥ | ११. गोपियों के दुःख को |

श्लोकार्थ—शरद् ऋतु में सूर्य की किरणों से उत्पन्न प्राणियों को पीड़ा को चन्द्रमा वैसे ही हर लेता है, जैसे देहाभिमान से होने वाले दुःख को ज्ञान और व्रज की गोपियों के दुःख को श्रीकृष्ण हर लेते हैं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

खमशोभत निर्मेघं शरद्विमलतारकम् ।
सत्त्वयुक्तं यथा चित्तं शब्दब्रह्मार्थदर्शनम् ॥४३॥

पदच्छेद— खम् अशोभत निर्मेघम् शरत् विमलतारकम् ।
सत्त्वयुक्तम् यथा चित्तम् शब्द ब्रह्म अर्थ दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खम् | ९. | आकाश | सत्त्वयुक्तम् | ५. | सत्त्वगुणी मनुष्यों का |
| अशोभत | १२. | सुशोभित होता है | यथा | १. | जिस प्रकार |
| निर्मेघम् | ८. | मेघों से रहित | चित्तम् | ६. | चित्त शोभायमान होता है |
| शरत् | ७. | वैसे ही शरद् ऋतु में | शब्दब्रह्म | २. | वेदों के |
| विमल | १०. | निर्मल | अर्थ | ३. | अर्थ को |
| तारकम् । | ११. | तारों की ज्योति से | दर्शनम् ॥ | ४. | स्पष्टतया जानने वाले |

श्लोकार्थ—जिस प्रकार वेदों के अर्थ को स्पष्टतया जानने वाले सत्त्वगुणी मनुष्य शोभायमान होता है वैसे ही शरद् ऋतु में मेघों से रहित आकाश निर्मल तारों की ज्योति से सुशोभित होता है ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

अखण्डमण्डलो व्योम्नि रराजोडुगणैः शशी ।
यथा यदुपतिः कृष्णो वृष्णिचक्रावृतो भुवि ॥४४॥

पदच्छेद— अखण्ड मण्डलः व्योम्नि रराज उडुगणैः शशी ।
यथा यदुपतिः कृष्णः वृष्णि चक्र आवृतः भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अखण्ड | १. | अखण्ड और | यथा | ७. | जिस प्रकार |
| मण्डलः | २. | विस्तृत | यदुपतिः | ११. | यदुपति |
| व्योम्नि | ३. | आकाश में | कृष्णः | १२. | श्रीकृष्ण सुशोभित होते हैं |
| रराज | ६. | सुशोभित होने लगा | वृष्णि चक्र | ९. | यदुवंशियों के |
| उडुगणैः | ४. | तारों के बीच | आवृत | १०. | बीच |
| शशी । | ५. | पूर्ण चन्द्रमा | भुवि ॥ | ८. | पृथ्वीतल पर |

श्लोकार्थ—अखण्ड और विस्तृत आकाश में तारों के बीच पूर्ण चन्द्रमा सुशोभित होने लगा । जिस प्रकार पृथ्वीतल पर यदुवंशियों के यदुपति श्रीकृष्ण सुशोभित होते हैं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**आश्लिष्य समशीतोष्णं प्रसूनवनमारुतम् ।**
**जनास्तापं जहुर्गोप्यो न कृष्णहृतचेतसः ॥४५॥**

पदच्छेद— आश्लिष्य सम शीत उष्णम् प्रसूनवन मारुतम् ।
जनाः तापम् जहुः गोप्यः न कृष्ण हृत चेतसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **आश्लिष्य** | २. सम्पर्क से | जनाः | ८. उस लोगों का |
| **सम** | ५. समान रूप से | तापम् | ९. ताप तो |
| **शीत** | ६. शीत और | जहुः | १०. समाप्त हो जाता, पर |
| **उष्णम्** | ७. उष्ण होती है | गोप्यः | ११. गोपियों का ताप |
| **प्रसून** | १. पुष्पों के | न कृष्ण | १२. नहीं शान्त होता, श्रीकृष्ण ने |
| **वन** | ३. वन की | हृत | १४. चुरा लिया है |
| **मारुतम् ।** | ४. वायु | चेतसः ॥ | १३. उनका मन जो |

श्लोकार्थ—पुष्पों के सम्पर्क से वन की वायु समान रूप से शीत और उष्ण होती है। उससे लोगों का ताप तो समाप्त हो जाता है। पर गोपियों का ताप नहीं शान्त होता। क्योंकि श्रीकृष्ण ने उनका मन जो चुरा लिया है॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**गावो मृगा खगा नार्यः पुष्पिण्यः शरदाभवन् ।**
**अन्वीयमानाः स्ववृषैः फलैरीशक्रिया इव ॥४६॥**

पदच्छेद— गावः मृगाः खगाः नार्यः पुष्पिण्यः शरदाअभवन् ।
अन्वीयमानाः स्ववृषैः फलैः ईश क्रियाः इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **गावः** | २. गोएँ | **अन्वीयमानाः** | १०. अनुगमन किये जाने लगी |
| **मृगाः** | ३. हरिनियाँ | **स्व** | ८. वे अपने-अपने |
| **खगाः** | ४. चिड़ियाँ और | **वृषैः** | ९. पतियों के द्वारा |
| **नार्यः** | ५. नारियाँ | **फलैः** | १४. उसके फल करते हैं |
| **पुष्पिण्यः** | ६. सन्तानोत्पत्ति की | **ईश** | १२. समर्थ व्यक्ति को |
| **शरदा** | १ शरद् ऋतु में | **क्रिया :** | १३. क्रिया का अनुसरण |
| **अभवन् ।** | ७. कामना से युक्त हो गयीं | **इव ॥** | ११. जैसे |

श्लोकार्थ—शरद ऋतु में गौएँ हरिनियाँ, चिड़ियाँ और नारियाँ सन्तानोत्पत्ति की कामना से युक्त हो गईं। वे अपने-अपने पतियों के द्वारा अनुगमन किये जाने लगीं। जैसे समर्थ व्यक्ति की क्रिया का अनुसरण उसके फल करते हैं॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**उदहृष्यन् वारिजानि सूर्योत्थाने कुमुद् विना ।**
**राज्ञा तु निर्भया लोका यथा दस्यून् विना नृप ॥४७॥**

पदच्छेद— उदहृष्यन् वारिजानि सूर्यं उत्थाने कुमुद् विना ।
राज्ञा तु निर्भयाःलोकाः यथा दस्यून् विना नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उदहृष्यन् | १२. | खिल जाते हैं | राज्ञा तु | ३. | राजा के शुभागमन से |
| वारिजानि | ११. | सभी कमल | निर्भयाः | ६. | निर्भय हो जाते हैं |
| सूर्य | ७. | वैसे ही सूर्य | लोकाः | ५. | और सब लोग |
| उत्थाने | ८. | उदय होने पर | यथा | २. | जिस प्रकार |
| कुमुद् | ९. | कुमुदिनी के | दस्यून् विना | ४. | डाकू और चोरों के सिवा |
| विना । | १०. | अतिरिक्त | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जिस प्रकार राजा के शुभागमन से डाकू और चोरों के सिवा और सब लोग निर्भय हो जाते हैं। उसी प्रकार सूर्य के उदय होने पर कुमुदिनी के अतिरिक्त सभी कमल खिल जाते हैं ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**पुरग्रामेष्वाग्रयणैरैन्द्रियैश्च महोत्सवैः ।**
**बभौ भूः पक्वसस्याढ्या कलाभ्यां नितरां हरेः ॥४८॥**

पदच्छेद— पुरग्रामेषु आग्रयणैः इन्द्रियैः च महोत्सवैः ।
बभौ भूः पक्व सस्याढ्या कलाभ्याम् नितराम् हरेः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुर | १. | बड़े-बड़े शहरों और | बभौ | १२. | सुशोभित हो गयी |
| ग्रामेषु | २. | गाँवों में | भूः पक्व | ८. | पक गये पृथ्वी |
| आग्रयणैः | ३ | नवान्न प्राशन | सस्याढ्या | ७. | खेतों में अनाज |
| इन्द्रियैः | ५. | इन्द्र सम्बन्धी | कलाभ्याम् | १०. | उपस्थिति से |
| च | ४. | और | नितराम् | ११. | अत्यधिक |
| महोत्सवैः । | ६. | उत्सव होने लगे | हरेः ॥ | ९. | श्रीकृष्ण और बलराम को |

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े शहरों और गाँवों में नवान्नप्राशन और इन्द्र सम्बन्धी उत्सव होने लगे। खेतों में अनाज पक गये। पृथ्वी श्रीकृष्ण और बलराम जी की उपस्थिति से अत्यधिक सुशोभित हो गई ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**वणिङ्मुनिनृपस्नाता निर्गम्यार्थान् प्रपेदिरे ।**
**वर्षरुद्धा यथा सिद्धाः स्वपिण्डान् काल आगते ॥४९॥**

पदच्छेद— वणिक् मुनि नृप स्नाताः निर्गम्य अर्थान् प्रपेदिरे ।
वर्षरुद्धाः यथा सिद्धाः स्वपिण्डान् काले आगते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वणिक् | ६. | उसी प्रकार वैश्य | वर्ष | १०. | जो वर्षा के कारण |
| मुनि | ७. | संन्यासी | रुद्धाः | ११. | एक स्थान पर रुके हुये थे |
| नृप | ८. | राजा और | यथा | २. | जिस प्रकार |
| स्नाताः | ९. | स्नातक | सिद्धाः | १. | सिद्ध पुरुष |
| निर्गम्य | १२. | वे वहाँ से चलकर | स्वपिण्डान् | ५. | अपने देवादि शरीरों को प्राप्त होते हैं |
| अर्थान् | १३. | अपने-अपने कामों में | काले | ३. | समय |
| प्रपेदिरे । | १४. | लग गये | आगते ॥ | ४. | आने पर |

श्लोकार्थ—सिद्ध पुरुष जिस प्रकार समय आने पर देवादि शरीरों को प्राप्त होते हैं। उसी प्रकार वैश्य, संन्यासी, राजा और स्नातक जो वर्षा के कारण एक स्थान पर रुके हुये थे। वे वहाँ से चलकर अपने-अपने कामों में लग गये।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
पूर्वार्धे प्रावृट्शरद्वर्णनं नाम विंशः अध्यायः ॥ २० ॥

## श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
## दशमः स्कन्धः
### एकविंशः अध्यायः
### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं शरत्स्वच्छजलं पद्माकरसुगन्धिना ।
न्यविशद् वायुना वातं सगोगोपालकोऽच्युतः ॥१॥

पदच्छेद— इत्थम् शरत् स्वच्छ जलम् पद्माकर सुगन्धिना ।
न्यविशद् वायुना वातम् स गो गोपालकः अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | १. | इस प्रकार | न्यविशद् | १०. | वन में प्रविष्ट हुये |
| शरत् | २. | शरद् ऋतु में | वायुना | ६. | वायु वाले |
| स्वच्छ | ४. | निर्मल | वातम् | ८. | मन्द-मन्द |
| जलम् | ५. | जल और | स गो | ११. | साथ गायों और |
| पद्माकर | ६. | कमलों की | गोपालकः | १२. | ग्वाल-बालों के |
| सुगन्धिना । | ७. | सुगन्ध से युक्त | अच्युतः ॥ | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—इस प्रकार शरद् ऋतु में भगवान् श्रीकृष्ण निर्मल जल और कमलों की सुगन्ध से युक्त मन्द-मन्द वायु वाले वन में गायों और ग्वाल बालों के साथ प्रविष्ट हुये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

कुसुमितवनराजिशुष्मिभृङ्गद्विजकुलघुष्टसरः सरिन्महीध्रम् ।
मधुपतिरवगाह्य चारयन् गाः सहपशुपालबलश्चुकूज वेणुम् ॥२॥

पदच्छेद— कुसुमित वनराजि शुष्मिभृङ्ग द्विजकुल घुष्ट सरः सरित् महीध्रम् ।
मधुपतिः अवगाह्य चारयन् गाः सह पशुपाल बलः चुकूज वेणुम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कुसुमित | १. | पुष्पित | मधुपतिः | ६. | मधुपति श्रीकृष्ण ने |
| वनराजि | २. | वृक्ष पंक्तियों में | अवगाह्य | १३. | उनके भीतर घुस करके |
| शुष्मिभृङ्ग | ३. | मतवाले भौंरों और | चारयन् | १४. | गायों को चराते हुये |
| द्विजकुल | ४. | पक्षियों के झुण्ड से | सह | १२. | साथ |
| घुष्ट | ८. | गूँजते रहते थे | पशुपाल | ११. | ग्वाल-बालों के |
| सरः | ५. | वन के सरोवर | बलः | १०. | बलराम जी और |
| सरित् | ६. | नदियाँ ओर | चुकूज | १६. | मधुर तान छेड़ी |
| महीध्रम् । | ७. | पर्वत | वेणुम् ॥ | १५. | बाँसुरी पर |

श्लोकार्थ—पुष्पित वृक्ष पंक्तियों में मतवाले भौंरों और पक्षियों के झुंड से वन के सरोवर, नदियाँ और पर्वत गूँजते रहते थे। मधुपति श्रीकृष्ण ने बलराम जी और ग्वाल-बालों के साथ उसके भीतर घुस करके गायों को चराते हुये बाँसुरी पर मधुर तान छेड़ी ॥

## तृतीयः श्लोकः

**तद् व्रजस्त्रिय आश्रुत्य वेणुगीतं स्मरोदयम् ।**
**काश्चित् परोक्षं कृष्णस्य स्वसखीभ्योऽन्ववर्णयन् ॥३॥**

पदच्छेद— तत् व्रजस्त्रियः आश्रुत्य वेणु गीतम् स्मर उदयम् ।
काश्चित् परोक्षम् कृष्णस्य स्वसखीभ्यः अन्ववर्णयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | तब | काश्चित् | ८. | कुछ गोपियाँ |
| व्रजस्त्रियः | २. | व्रज की स्त्रियों ने | परोक्षम् | ९. | एकान्त में |
| आश्रुत्य | ७. | सुना तो | कृष्णस्य | १२. | श्रीकृष्ण का |
| वेणु | ५. | वंशी को | स्व | १०. | अपनी |
| गीतम् | ६. | ध्वनि को | सखीभ्यः | ११. | सखियों से |
| स्मर | ३. | प्रेम भाव | अन्व | १३. | गुणों का |
| उदयम् । | ४. | पैदा करने वाली | वर्णयन् ॥ | १४. | वर्णन करने लगीं |

श्लोकार्थ—तब व्रज की स्त्रियों ने प्रेम भाव पैदा करने वाली वंशी की ध्वनि को सुना तो कुछ गोपियाँ एकान्त में अपनी सखियों से श्रीकृष्ण का वर्णन करने लगीं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तद् वर्णयितुमारब्धाः स्मरन्त्यः कृष्णचेष्टितम् ।**
**नाशकन् स्मरवेगेन विक्षिप्तमनसो नृप ॥४॥**

पदच्छेद— तत् वर्णयितुम् आरब्धाः स्मरन्त्यः कृष्ण चेष्टितम् ।
नअशकन् स्मरवेगेन विक्षिप्त मनसः नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | २. | उन गोपियों ने | नअशकन् | ८. | वे असमर्थ हो गयीं |
| वर्णयितुम् | ३. | उनका वर्णन | स्मर | ९. | प्रेम के |
| आरब्धः | ४. | आरम्भ किया तो | वेगेन | १०. | वेग के कारण |
| स्मरन्त्यः | ७. | स्मरण मात्र से | विक्षिप्त | १२. | हाथ से निकल गया |
| कृष्ण | ५. | श्रीकृष्ण की | मनसः | ११. | उनका मन |
| चेष्टितम् । | ६. | लीलाओं के | नृप ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उन गोपियों ने उनका वर्णन आरम्भ किया तो श्रीकृष्ण की लीलाओं के स्मरण मात्र से वे असमर्थ हो गयीं । प्रेम के वेग के कारण उनका मन हाथ से निकल गया ।

## पञ्चमः श्लोकः

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं,
बिभ्रद् वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै-
र्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्तिः ॥५॥

पदच्छेद— बर्ह आपीडम् नटवर वपुः कर्णयोः कर्णिकारम्,
बिभ्रद्वासः कनक कपिशम् वैजयन्तीम् च मालाम् ।
रन्ध्रान् वेणोः अधर सुधया पूरयन् गोपवृन्दैः-
वृन्दारण्यम् स्वपद रमणम् प्राविशद् गीत कीर्तिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बर्ह | १. | श्रीकृष्ण के सिर पर मोर पंख का | रन्ध्रान् | १५. | छिद्रों को |
| आपीडम् | २. | आभूषण है | वेणोः | १४. | बाँसुरी के |
| नटवर | ३. | श्रेष्ठनट के समान | अधर | १६. | अपने अधरों के |
| वपुः | ४. | सुन्दर वेष धारी उनके | सुधया | १७. | अमृत से |
| कर्णयोः | ५. | कानों पर | पूरयन् | १८. | भर रहे हैं |
| कर्णिकारम् | ६. | कनेर के पुष्प | गोपवृन्दैः | १९. | गोपवृन्द |
| बिभ्रद् | १३. | सुशोभित हैं | वृन्दा | २४. | वृन्दावन |
| वासः | ९. | पीताम्बर | अरण्यम् | २५. | धाम में |
| कनक | ७. | शरीर पर सुनहला | स्वपद | २२. | वे वैकुण्ठ से भी |
| कपिशम् | ८. | पीले रंग का | रमणम् | २३. | श्रेष्ठ |
| वैजयन्तीम् | ११. | गले में वैजयन्ती | प्राविशत् | २६. | प्रवेश कर रहे हैं |
| च | १०. | और | गीत | २१. | गान कर रहे हैं |
| मालाम् । | १२. | माला | कीर्तिः ॥ | २०. | उनकी कीर्ति का |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के सिर पर मोर पंख का आभूषण है । श्रेष्ठ नट के समान सुन्दर वेषधारी उनके कानों पर कनेर के पुष्प, शरीर पर सुनहला पीले रंग का पीताम्बर और गले में वैजयन्ती माला सुशोभित है । बाँसुरी के छिद्रों को अपने अधरों के अमृत से भर रहे हैं । गोपवृन्द उनकी कीर्ति का गान कर रहे हैं । वे वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ वृन्दावन धाम में प्रवेश कर रहे है ॥

## षष्ठः श्लोकः

इति वेणुरवं राजन् सर्वभूतमनोहरम् ।
श्रुत्वा व्रजस्त्रियः सर्वा वर्णयन्त्योऽभिरेभिरे ॥६॥

पदच्छेद— इति वेणुरवम् राजन् सर्वभूत मनोहरम् ।
श्रुत्वा व्रजस्त्रियः सर्वाः वर्णयन्त्यः अभिरेभिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति वेणु | २. यह वंशी | श्रुत्वा | ७. उसे सुनकर |
| रवम् | ३. ध्वनि | व्रज | ८. व्रज की |
| राजन् | १. हे परीक्षित् ! | स्त्रियः | १०. स्त्रियाँ उसका |
| सर्व | ४. सभी | सर्वा | ६. समस्त |
| भूत | ५. प्राणियों का | वर्णयन्त्यः | ११. वर्णन करने में तन्मय होकर |
| मनोहरम् । | ६. मन चुरा लेती है | अभिरेभिरे ॥ | १२. आलिङ्गन करने लगी |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! यह वंशी ध्वनि सभी प्राणियों का मन चुरा लेती है । उसे सुनकर व्रज की समस्त स्त्रियाँ उसका वर्णन करने में तन्मय होकर आलिङ्गन करने लगीं ॥

## सप्तमः श्लोकः

गोप्य ऊचुः— अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदामः
सख्यः पशूननु विवेशयतोर्वयस्यैः ।
वक्त्रं व्रजेशसुतयोरनुवेणु जुष्टं
यैर्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ॥७॥

पदच्छेद— अक्षण्वताम् फलम् इदम् न परम् विदामः सख्यः पशून् अनुविवेशयतोः वयस्यैः ।
वक्त्रम् व्रजेश सुतयोः अनुवेणु जुष्टम् यैः वा निपीतम् अनुरक्त कटाक्षमोक्षम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अक्षण्वताम् | १. हे सखी ! नेत्र वालों के लिये | वयस्यैः | ८. मित्रों के साथ और |
| फलम् | ४. कोई फल | वक्त्रम् | १२. मुख का दर्शन होवे |
| इदम् | २. इससे | व्रजेश सुतयोः | ११. नन्दनन्दन श्रीकृष्ण बलराम के |
| न | ५. हम नहीं | अनुवेणु जुष्टम् | १३. जो वंशी से सेवित हैं |
| परम् | ३. बढ़कर | यैः वा | १४. अथवा उनकी |
| विदामः | ६. जानती हैं | निपीतम् | १८. पान कर रही हैं |
| सख्यः | ७. अपने सखाओं और | अनुरक्त | १५. प्रेम पूर्ण |
| पशून् | ६. पशुओं के | कटाक्ष | १६. तिरछी चितवन की |
| अनुविवेशयतः । | १०. पीछे व्रज में प्रविष्ट होकर | मोक्षम् ॥ | १७. माधुरी का हम |

श्लोकार्थ—हे सखी ! नेत्र वालों के लिए इससे बढ़कर कोई फल हम नहीं जानती हैं कि अपने सखाओं और मित्रों के साथ और पशुओं के पीछे व्रज में प्रविष्ट होकर नन्दनन्दन श्रीकृष्ण, बलराम के मुख का दर्शन हो । जो वंशी से सेवित हैं । अथवा उनकी प्रेमपूर्ण तिरछी चितवन की माधुरी का हम पान कर रही हैं ।

## अष्टमः श्लोकः

**चूतप्रवालबर्हस्तवकोत्पलाब्जमालानुपृक्तपरिधानविचित्रवेषौ ।**
**मध्ये विरेजतुरलं पशुपालगोष्ठ्यां रङ्गे यथा नटवरौ क्व च गायमानौ ॥८॥**

पदच्छेद- चूतप्रवाल बर्हस्तवक उत्पल अब्जमाला अनुपृक्त परिधान विचित्र वेषौ ।
मध्ये विरेजतुः अलम् पशुपाल गोष्ठ्याम् रङ्गे यथा नटवरौ क्व च गायमानौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| चूतप्रवाल | १. वे आम की नयी कोपलें | मध्ये | ११. बीच में बैठे हुये |
| बर्ह स्तबक | २. मोरों के पंख फूलों के गुच्छे | विरेजतुः अलम् | १४. इतने सुशोभित होते हैं |
| उत्पल | ३. रंग-बिरंगे कमल और | पशुपाल | ९. ग्वाल बालों की |
| अब्जमाला | ४. कुमुद की मालायें | गोष्ठ्याम् | १०. गोष्ठी के |
| अनुपृक्त | ५. धारण करते हैं तब | रङ्गे यथा | १५. जैसे रङ्गमञ्च पर |
| परिधान | ६. वस्त्र धारण करने पर | नटवरौ | १६. दो चतुर नट हों |
| विचित्र | ८. अति विचित्र होता है | क्व च | १२. और कभी |
| वेषौ । | ७. उनका वेष | गायमानौ ॥ | १३. संगीत की तान छेड़ते |

श्लोकार्थ—वे आम की नयी कोपलें, मोरों के पंख, फूलों के गुच्छे, रङ्ग-बिरङ्गे कमल और कुमुद की मालायें धारण करते हैं। तब वस्त्र धारण करने पर उनका वेष अति विचित्र होता है। ग्वाल-बालों की गोष्ठी के बीच में बैठे हुये और कभी संगीत की तान छेड़ते वे इतने सुशोभित होते हैं जैसे रङ्गमञ्च पर दो चतुर नट हों॥

## नवमः श्लोकः

**गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणुर्दामोदराधरसुधामपि गोपिकानाम् ।**
**भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्टरसं ह्रदिन्यो हृष्यत्त्वचोऽश्रु मुमुचुस्तरवो यथाऽऽर्याः ॥९॥**

पदच्छेद—गोप्यः किम् आचरत् अयम् कुशलम् स्म वेणुः दामोदर अधर सुधाम् अपि गोपिकानाम् ।
भुङ्क्ते स्वयम् यत् अवशिष्टरसम् ह्रदिन्यः हृष्यत् त्वचः अश्रु मुमुचुः तरवः यथाआर्याः ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| शब्दार्थ—गोप्यः | १. अरी गोपियों ! | भुङ्क्ते | ११. पान कर रहा है |
| किम् | ३. पूर्व जन्म में कौन-सा | स्वयम् | १०. स्वयम् ही |
| आचरत्अयम् | ५. किया है | यत् | ६. जो कि |
| कुशलम्स्म | ४ पुण्य कार्य | अवशिष्ट | १३. उसे सींचने के कारण |
| वेणुः | २. इस वेणु ने | रसम्ह्रदिन्यः | १२. आज नदियाँ अपने रस से |
| दामोदर अधर | ८ दामोदर के अधरों की | हृष्यत् | १६. वैसे ही हर्षित हैं |
| सुधाम् अपि | ९. सुधा का भी | त्वचः अश्रु | १४. कमलों के लिये आनन्दाश्रु |
| गोपिकानाम् । | ७. गोपियों की सम्पत्ति | मुमुचुः तरवः | १५. बहा रहे हैं वृक्ष भी |
| | | यथा आर्याः ॥ | १७. जैसे कि भगवद्भक्त पुरुष |

श्लोकार्थ—अरी गोपियो ! इस वेणु ने पूर्व जन्म में कौन-सा पुण्य कार्य किया है। जो कि गोपियों की सम्पत्ति दामोदर के अधरों की सुधा का भी स्वयम् ही पान कर रहा है। आज नदियाँ अपने रस से उसे सींचने के कारण कमलों के लिये आनन्दाश्रु बहा रहे हैं। वृक्ष भी वैसे ही हर्षित हैं जैसे कि भगवद्भक्त पुरुष (अपनी भक्त सन्तान को देखकर प्रसन्न होते हैं।)

## दशमः श्लोकः

**वृन्दावनं सखि भुवो वितनोति कीर्तिं यद् देवकीसुतपदाम्बुजलब्धलक्ष्मि ।**
**गोविन्दवेणुमनु मत्तमयूरनृत्यं प्रेक्ष्याद्रिसान्वपरतान्यसमस्तसत्त्वम् ॥१०॥**

पदच्छेद— वृन्दावनम् सखि भुवः वितनोति कीर्तिम् यत् देवकी सुतपदअम्बुज लब्धलक्ष्मि ।
गोविन्द वेणुम् अनु मत्त मयूर नृत्यम् प्रेक्ष्य अद्रिसानुअपरता अन्य समस्तसत्त्वम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वृन्दावनम् | २. | यह वृन्दावन तो | गोविन्द | १०. | श्रीकृष्ण की |
| सखि | १. | अरी सखी ! | वेणुम् अनु | ११. | वंशी बजते ही |
| भुवः | ३. | पृथ्वी की | मत्तमयूर | १२. | मतवाले होकर मयूर |
| वितनोति | ५. | विस्तार कर रहा है | नृत्यम् प्रेक्ष्य | १३. | नाचने लगते हैं जिसे देखकर |
| कीर्तिम् | ४. | कीर्ति का | अद्रिसानु | १४. | पर्वत की चोटियों पर |
| यत् | ६. | क्योंकि | अपरत | १५. | विचरण करने वाले |
| देवकीसुत | ७. | देवकी पुत्र श्रीकृष्ण के | अन्य | १६. | अन्य |
| पदअम्बुज | ८. | चरण कमलों के | समस्त | १७. | सभी पशु-पक्षी ठगे से |
| लब्धलक्ष्मि । | ९. | चिह्नों को प्राप्त कर लिया है | सत्त्वम् ।। | १८. | रह जाते हैं |

श्लोकार्थ—अरी सखी ! यह वृन्दावन तो पृथ्वी की कीर्ति का विस्तार कर रहा है । क्योंकि इसने देवकी पुत्र श्रीकृष्ण के चरण कमलों के चिह्नों को प्राप्त कर लिया है । श्रीकृष्ण की वंशी बजते ही मतवाले होकर मयूर नाचने लगते हैं । जिसे देखकर पर्वत की चोटियों पर विचरण करने वाले सभी पशु-पक्षी ठगे से रह जाते हैं ।।

## एकादशः श्लोकः

**धन्याः स्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता या नन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेषम् ।**
**आकर्ण्य वेणुरणितं सहकृष्णसाराः पूजां दधुर्विरचितां प्रणयावलोकैः ॥११॥**

पदच्छेद—धन्याः स्म मूढमतयः अपि हरिण्यः एताः याः नन्दनन्दनम् उपात्त विचित्रवेषम् ।
आकर्ण्य वेणु रणितम् सह कृष्ण साराः पूजाम् दधुः विरचिताम् प्रणय अवलोकैः ।।

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धन्याः स्म | ४. | धन्य है | आकर्ण्य | १०. | सुनकर |
| मूढमतयः अपि | २. | मूढ बुद्धि वाली होने पर भी | वेणु रणितम् | ९. | उनकी वंशी ध्वनि |
| हरिण्यः | ३. | हरिणियाँ | सह | १२. | साथ |
| एताः | १. | ये | कृष्ण साराः | ११. | अपने पति कृष्ण सार मृगों के |
| या नन्दनन्दनम् | ५. | जो नन्दनन्दन श्रीकृष्ण को | पूजाम् दधुः | १६. | उनका सत्कार करती है |
| उपात्त | ८. | पाकर और | विरचिताम् | १५. | युक्त होकर |
| विचित्र | ६. | विचित्र | प्रणय | १३. | प्रेम भरी |
| वेषम् । | ७. | वेष में | अवलोकैः ।। | १४ | चितवन से |

श्लोकार्थ—ये मूढ बुद्धि वाली होने पर भी हरिणियाँ धन्य हैं । जो नन्दनन्दन श्रीकृष्ण को विचित्र वेष में पाकर और उनकी वंशी ध्वनि सुनकर अपने पति कृष्णसार मृगों के साथ प्रेम भरी चितवन से युक्त होकर उनका सत्कार करती हैं ।।

## द्वादशः श्लोकः

**कृष्णं निरीक्ष्य वनितोत्सवरूपशीलं श्रुत्वा च तत्क्वणितवेणुविचित्रगीतम् ।**
**देव्यो विमानगतयः स्मरनुन्नसारा भ्रश्यत्प्रसूनकबरा मुमुहुर्विनीव्यः ॥१२॥**

पदच्छेद—कृष्णम् निरीक्ष्य वनिता उत्सव रूपशीलम् श्रुत्वा च तत् क्वणित वेणुविचित्रगीतम् ।
देव्यः विमान गतयः स्मरनुन्नसाराः भ्रश्यत् प्रसून कबराः मुमुहुः विनीव्यः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णम् निरीक्ष्य | ४. | श्रीकृष्ण को देखती हैं | देव्यः | १. | स्वर्ग की देवियाँ जब |
| वनिता उत्सव | ३. | युवतियों को आनन्द देनेवाले | विमान गतयः | १०. | विमान पर ही |
| रूप शीलम् | २. | सौंदर्य और शील के खजाने | स्मर | ११. | कृष्ण प्रेम के कारण |
| श्रुत्वा | ६. | सुनती हैं तो वे | नुन्नसाराः | १२. | सुध बुध खो बैठती हैं |
| च | ५. | और | भ्रश्यत् | १४. | पृथ्वी पर गिर जाते हैं |
| तत् क्वणित | ७. | उनके द्वारा गाया गया | प्रसून कबराः | १३. | उनकी चोटियों के फूल |
| वेणु | ६. | बाँसुरी पर | मुमुहुः | १५. | वे मोहित हो जाती हैं |
| विचित्र गीतम् । | ८. | विचित्र संगीत | विनीव्यः ॥ | १६. | उनकी साड़ी खिसक जाती है |

श्लोकार्थ—स्वर्ग की देवियाँ जब युवतियों को आनन्दित करने वाले सौन्दर्य और शील के खजाने श्रीकृष्ण को देखती हैं और बाँसुरी पर उन द्वारा गाया गया विचित्र संगीत सुनती हैं, तो वे विमान पर ही श्रीकृष्ण प्रेम के कारण सुध-बुध खो बैठती है । उनकी चोटियों के फूल पृथ्वी पर गिर जाते हैं । वे मोहित हो जाती हैं । उनकी साड़ी खिसक जाती है ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**गावश्च कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीतपीयूषमुत्तभितकर्णपुटैः पिबन्त्यः ।**
**शावाः स्नुतस्तनपयः कवलाः स्म तस्थुर्गोविन्दमात्मनि दृशाश्रुकलाः स्पृशन्त्यः॥१३॥**

पदच्छेद—गावः च कृष्ण मुख निर्गत वेणु गीत पीयूषम् उत्तभितत कर्ण पुटैः पिबन्त्यः ।
शावाः स्नुत स्तन पयः कवलाः स्म तस्थुः गोविन्दम् आत्मनि दृशा अश्रुकलाः स्पृशन्त्यः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गावः च | १. | और गायें | शावाः | ६. | बछड़े |
| कृष्णमुख | २. | श्रीकृष्ण के मुख से | स्नुतस्तन | १०. | स्तनों से बहते हुये |
| निर्गतवेणु | ३. | वंशो के निकले हुये | पयः कवलाः | ११. | दुग्ध का कवल लेकर |
| गीत | ४. | संगीत रूपी | स्म तस्थुः | १२. | खड़े रह जाते हैं |
| पीयूष | ५. | अमृत का | गोविन्दम् | १३. | श्रीकृष्ण को हृदय में ले जाने पर |
| उत्तभित | ७. | ऊपर करके | आत्मनि दृशा | १४. | वे अपने नेत्रों के |
| कर्णपुटैः | ६. | दोनों कान रूपी दोने | अश्रुकलाः | १५. | अश्रुजल से उनका |
| पिबन्त्यः । | ८. | पान करती हैं (और) | स्पृशन्त्यः ॥ | १६ | अभिषेक करते हैं |

श्लोकार्थ—और गायें श्रीकृष्ण के मुख से वंशो के निकले हुये अमृत का दोनों कान रूपी दोने ऊपर करके पान करती हैं और बछड़े स्तनों के बहते हुये दुग्ध का कवल लेकर खड़े रह जाते हैं । श्रीकृष्ण को हृदय में ले जाने पर वे अपने नेत्रों के अश्रुजल से उनका अभिषेक करते हैं ।

## चतुर्दशः श्लोकः

**प्रायो बताम्ब विहगा मुनयो वनेऽस्मिन् कृष्णेक्षितं तदुदितं कलवेणुगीतम् ।**
**आरुह्य ये द्रुमभुजान् रुचिरप्रवालान् शृण्वन्त्यमीलितदृशो विगतान्यवाचः ॥१४॥**

पदच्छेद— प्रायः बत अम्ब विहगाः मुनयः वने अस्मिन् कृष्णईक्षितम् तत् उदितम् कलवेणुगीतम् ।
आरुह्य ये द्रुमभुजान् रुचिर प्रवालान् शृण्वन्त्यः मीलितदृशः विगत अन्यवाचः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रायः | ४. | प्रायः | आरुह्य | ९. | बैठकर |
| बत अम्ब | १. | अरी सखी ! | ये द्रुम | ६. | जो कि |
| विहगाः | ३. | पक्षी भी | भुजान्रुचिर | ८. | वृक्षों की डालियों पर |
| मुनयः | ५. | मुनियों जैसे हैं | प्रवालान् | ७. | सुन्दर नयी कोपलों वाली |
| वने अस्मिन् | २. | इस वन के | शृण्वन्त्यः | १३. | सुनते हैं तथा |
| कृष्ण ईक्षितम् | १०. | श्रीकृष्ण के दर्शन करते हैं (और) | अमीलितदृशः | १४. | नेत्र खोलकर |
| तत् उदितम् | ११. | उनके द्वारा गाये गये | विगत | १६. | दूर ही रहते हैं |
| कलवेणुगीतम् । | १२. | सुन्दर वंशी के संगीत को | अन्यवाचः ॥ | १५. | तब वे अन्य बातों से |

श्लोकार्थ— अरी सखि ! इस वन के पक्षी भी प्रायः मुनियों जैसे हैं जो कि सुन्दर नयी कोपलों वाली वृक्षों की डालियों पर बैठकर श्रीकृष्ण के दर्शन करते हैं और उनके द्वारा गाये गये सुन्दर वंशी के संगीत को सुनते हैं तथा नेत्र खोलकर तब वे अन्य बातों से दूर ही रहते हैं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**नद्यस्तदा तदुपधार्य मुकुन्दगीतमावर्तलक्षितमनोभवभग्नवेगाः ।**
**आलिङ्गनस्थगितमूर्मिभुजैर्मुरारेर्गृह्णन्ति पादयुगलं कमलोपहाराः ॥१५॥**

पदच्छेद— नद्यः तदा तत् उपधार्य मुकुन्द गीतम् आवर्त लक्षित मनः भवभग्नवेगाः ।
आलिङ्गन स्थगितम् ऊर्मिभुजैः मुरारेः गृह्णन्ति पादयुगलम् कमल उपहाराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नद्यः | ४. | नदियों के | आलिङ्गन | १५. | मानो उनका आलिङ्गन |
| तदा तत् | १. | उस समय उन | स्थगितम् | १६. | कर रही हैं |
| उपधार्य | ३. | सुनकर | ऊर्मि | ९. | अपने तरंग रूपी |
| मुकुन्दगीतम् | २. | श्रीकृष्ण की वंशी के गीत को | भुजैः मुरारेः | १०. | हाथों से श्रीकृष्ण के |
| आवर्त | ५. | भँवरों से | गृह्णन्ति | १४. | चढ़ा रही है |
| लक्षित | ७. | दिखाई देता है | पादयुगलम् | ११. | दोनों चरण |
| मनः भव | ६. | उनके हृदय में उत्पन्न कृष्णप्रेम | कमल | १२. | कमलों को पकड़ कर |
| भग्नवेगः । | ८. | उसके वेग से इनका प्रवाह रुक गया है | उपहाराः ॥ | १३. | उपहार |

श्लोकार्थ—उस समय उन श्रीकृष्ण की वंशी के गीत को सुनकर नदियों के भँवरों से उनके हृदय में उत्पन्न कृष्ण प्रेम दिखाई देता है । उसके वेग से इनका प्रवाह रुक गया है । अपने तरंग रूपी हाथों से श्रीकृष्ण के दोनों चरण कमलों को पकड़कर उपहार चढा रही हैं । मानों उनका आलिङ्गन कर रही हैं ।

## षोडशः श्लोकः

**दृष्ट्वाऽऽतपे व्रजपशून् सह रामगोपैः सञ्चारयन्तमनु वेणुमुदीरयन्तम् ।**
**प्रेमप्रवृद्ध उदितः कुसुमावलीभिः सख्युर्व्यधात् स्ववपुषाम्बुद आतपत्रम् ॥१६॥**

पदच्छेद—दृष्ट्वा आतपे व्रज पशून् सह राम गोपैः सञ्चारयन्तम् अनुवेणुम् उदीरयन्तम् ।
प्रेम प्रवृद्ध उदितः कुसुम अवलीभिः सख्युः व्यधात् स्ववपुषा अम्बुद आतपत्रम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ५. | श्रीकृष्ण को देखकर | उदितः | १६. | कर रहा है |
| आतपे व्रज | १. | व्रज की धूप में | कुसुम | १४. | मानों वह फुहारों की |
| पशून् | ३. | गाय | अवलीभिः | १५. | वर्षा |
| सह राम गोपैः | २. | बलरामजी और ग्वालों के साथ | सख्युः | १२. | अरी सखि ! |
| सञ्चारयन्तम् | ४. | चराते | व्यधात् | ११. | बना लेता है |
| अनुवेणम् | ६. | तथा पीछे-पीछे वंशी | स्ववपुषा | ९. | अपने शरीर को |
| उदीरयन्तम् | ७. | बजाते सुनकर | अम्बुद | ८. | यह बादल |
| प्रेम प्रवृद्ध । | १३. | प्रेम के कारण बढ़े हुये | आतपत्रम् ॥ | १०. | छाता |

श्लोकार्थ—व्रज की धूप में बलराम जी और ग्वालों के साथ गाय चराते श्रीकृष्ण को देखकर तथा पीछे-पीछे वंशी बजाते सुनकर यह बादल अपने शरीर को छाता बना लेता है। अरी सखि ! बढ़े हुये प्रेम के कारण मानो यह फुहारों की वर्षा कर रहा है ।

## सप्तदशः श्लोकः

**पूर्णाः पुलिन्द्य उरुगायपदाब्जरागश्रीकुङ्कुमेन दयितास्तनमण्डितेन ।**
**तद्दर्शनस्मररुजस्तृणरूषितेन लिम्पन्त्य आननकुचेषु जहुस्तदाधिम् ॥१७॥**

पदच्छेद—पूर्णाः पुलिन्द्यः उरुगायपदाब्जराग श्रीकुङ्कुमेन दयितास्तन मण्डितेन ।
तत् दर्शनस्मररुजस्तृणरूषितेन लिम्पन्त्यः आनन कुचेषु जहुः तत् आधिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पूर्णाः | १. | ये कृत-कृत्य | तत् दर्शनस्मर | ९. | केसर के दर्शन से अपने |
| पुलिन्द्यः | २. | भीलिनियाँ | रुजः | १०. | हृदय की पीड़ा शांत करती है तथा |
| उरुगाय | ६. | श्रीकृष्ण के | तृणरूषितेन | ११. | तिनकों की केसर छुड़ाकर अपने |
| पदाब्जराग | ७. | चरण कमलों की | लिम्पन्त्यः | १३. | लगाकर |
| श्रीकुङ्कुमेन | ८. | कान्ति युक्त केसर और | आननकुचेषु | १२. | मुख और स्तनों पर |
| दयिता | ३. | गोपियों के | जहुः | १६ | दूर करती हैं |
| स्तन | ४. | स्तनों पर | तत् | १४. | उनकी |
| मण्डितेन । | ५. | सुशोभित | आधिम् ॥ | १५. | पीड़ा को |

श्लोकार्थ—ये कृत-कृत्य भीलिनियाँ गोपियों के स्तनों पर सुशोभित श्रीकृष्ण के चरण कमलों की कान्ति युक्त केसर और केसर के दर्शन से अपने हृदय की पीड़ा शान्त करती हैं तथा तिनकों की केसर छुड़ाकर अपने मुख और स्तनों पर लगाकर उनकी पीड़ा को दूर करती हैं ।

## अष्टादशः श्लोकः

**हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ।**
**मानं तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत् पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥१८॥**

पदच्छेद— हन्तअयम् अद्रिः अबलाः हरिदासवर्यः यत् राम कृष्णचरण स्पर्श प्रमोदः ।
मानम् तनोति सहगोगणयोः तयोः यत् पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हन्तअयम् | २. | हाय ! यह | मानम् तनोति | १३. | बड़ा सत्कार करता है |
| अद्रिः | ३. | गोवर्धन तो | सह | १२. | एक साथ |
| अबलाः | १. | अरी गोपियो | गोगणयोः | १०. | गायों और ग्वालों |
| हरिदास | ४. | भगवान् के भक्तों में | तयोः | ११. | दोनों का |
| वर्यः यत् | ५. | श्रेष्ठ हैं, जो कि | यत् पानीय | १४. | क्योंकि उन्हें जल |
| रामकृष्ण | ६. | श्रीकृष्ण और बलराम जी के | सूयवस | १५. | हरी-हरी घास |
| चरण | ७. | चरणों का | कन्दर | १६. | विश्राम हेतु कन्दरायें और |
| स्पर्श | ८. | स्पर्श पाकर | कन्दमूलैः ॥ | १७. | कन्दमूल प्रदान करता है |
| प्रमोदः । | ९. | आनन्दित होता रहता है यह | | | |

श्लोकार्थ—अरी गोपियो हाय ! यह बेचारा गिरिराज गोवर्धन तो भगवान् के भक्तों में श्रेष्ठ हैं। जो कि श्रीकृष्ण और बलराम जी के चरणों का स्पर्श पाकर आनन्दित होता रहता है। यह गायों और ग्वालों दोनों का एक साथ बड़ा ही सत्कार करता है। क्योंकि उन्हें जल, हरी-हरी घास, विश्राम हेतु कन्दरायें और कन्दमूल प्रदान करता है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**गा गोपकैरनुवनं नयतोरुदारवेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सु सख्यः ।**
**अस्पन्दनं गतिमतां पुलकस्तरूणां निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् ॥१९॥**

पदच्छेद— गाः गोपकैः अनुवनं नयतः उदार वेणुस्वनैः कलपदैः तनुभृत्सु सख्यः ।
अस्पन्दनं गतिमतां पुलकः तरुणां निर्योगपाशकृतलक्षणयोः विचित्रम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गाः गोपकैः | ३. | गायों और ग्वाल बालों को | अस्पन्दनम् | १०. | स्थिरता और |
| अनुवनम् | ४. | एक वन से दूसरे में | गतिमताम् | ९. | गतिमानों को |
| नयतः | ५. | ले जाते हुये | पुलकः | १२. | पुलकावलि प्रदान करते हैं |
| उदार | २. | ये दोनों उदार | तरूणाम् | ११. | वृक्षों को |
| वेणुस्वनैः | ६. | वंशी की ध्वनि के | निर्योग | १३. | नोवना और |
| कलपदैः | ७. | सुन्दर संगीत से | पाशकृत | १४. | फन्दा रखकर |
| तनुभृत्सु | ८. | शरीरधारियों और | लक्षणयोः | १६. | लक्षण वाले प्रतीत होते हैं |
| सख्यः । | १. | अरी सखियो ! | विचित्रम् ॥ | १५. | विचित्र |

श्लोकार्थ—अरी सखि ! ये दोनों उदार गायों और ग्वाल बालों को एक वन से दूसरे में ले जाते हुये वंशी की ध्वनि के सुन्दर संगीत से शरीरधारियों और गतिमानों को स्थिरता और वृक्षों को पुलकावली प्रदान करते हैं। नोवना और फन्दा रखकर विचित्र लक्षण वाले प्रतीत होते हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**एवंविधा भगवतो या वृन्दावनचारिणः ।**
**वर्णयन्त्यो मिथो गोप्यः क्रीडास्तन्मयतां ययुः ॥२०॥**

पदच्छेद — एवम् विधा भगवतः याः वृन्दावन चारिणः ।
वर्णयन्त्यः मिथः गोप्यः क्रीडाः तन्मयताम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ४. | इस | वर्णयन्त्यः | १०. | वर्णन करती वे |
| विधा | ५. | प्रकार | मिथः | ९. | परस्पर |
| भगवतः | ३ | भगवान् की | गोप्यः | २. | गोपियाँ |
| या | १. | जो | क्रीडाः | ८. | लीलाओं का |
| वृन्दावन | ६. | वृन्दावन में | तन्मयताम् | ११. | तन्मयता को |
| चारिणः । | ७. | की गई | ययुः ॥ | १२. | प्राप्त हो जाती थीं ॥ |

श्लोकार्थ—जो गोपियाँ भगवान् की इस प्रकार वृन्दावन में की गई लीलाओं का परस्पर वर्णन करती वे तन्यमता को प्राप्त हो जाती थीं ।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे पूर्वार्धे
वेणुगीतं नाम एकविंशः अध्यायः ॥२१॥

दशमः स्कन्धः

द्वाविंशः अध्यायः

## प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—हेमन्ते प्रथमे मासि नन्दव्रजकुमारिकाः ।**
**चेरुर्हविष्यं भुञ्जानाः कात्यायन्यर्चनव्रतम् ॥१॥**

पदच्छेद— हेमन्ते प्रथमे मासि नन्द व्रज कुमारिकाः ।
चेरुः हविष्यम् भुञ्जानाः कात्यायनी अर्चन व्रतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हेमन्ते | १. | हेमन्त ऋतु में | चेरुः | १०. | करने लगीं |
| प्रथमे | २. | पहले | हविष्यम् | ११. | वे केवल हविष्यान्न ही |
| मासि | ३. | महीने में ही | भुञ्जानाः | १२. | खाती थीं |
| नन्द | ४. | नन्द बाबा के | कात्यायनी | ७. | कात्यायनी देवी की |
| व्रज | ५. | व्रज की | अर्चन | ८. | पूजा और |
| कुमारिकाः । | ६. | कुमारियाँ | व्रतम् ॥ | ९. | व्रत |

श्लोकार्थ—हेमन्त ऋतु में पहले महीने में ही नन्द बाबा के व्रज की कुमारियाँ कात्यायनी देवी की पूजा और व्रत करने लगीं । वे केवल हविष्यान्न ही खाती थीं ।

## द्वितीयः श्लोकः

**आप्लुत्याम्भसि कालिन्द्या जलान्ते चोदितेऽरुणे ।**
**कृत्वा प्रतिकृतिं देवीमानर्चुर्नृप सैकतीम् ॥२॥**

पदच्छेद— आप्लुत्य अम्भसि कालिन्द्याः जलान्ते च उदिते अरुणे ।
कृत्वा प्रतिकृतिम् देवीम् आनर्चुः नृप सैकतीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आप्लुत्य | ७. | स्नान करके | कृत्वा | ११. | बनाकर |
| अम्भसि | ६. | जल में | प्रतिकृतिम् | १०. | मूर्ति |
| कालिन्द्याः | ५. | यमुना के | देवीम् | ८. | वहीं देवी की |
| जलान्ते | २. | वे पूर्व दिशा में | आनर्चुः | १२. | उनकी पूजा करती थीं |
| चउदिते | ४. | उदित होने पर | नृप | १. | हे राजन् ! |
| अरुणे । | ३. | सूर्य के | सैकतीम् ॥ | ९. | बालुकामयी |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वे पूर्व दिशा में सूर्य के उदित होने पर यमुना के जल में स्नान करके वहीं देवी की बालुकामयी मूर्ति बनाकर उनकी पूजा करती थीं ॥

# तृतीयः श्लोकः

**गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिर्बलिभिर्धूपदीपकैः ।**
**उच्चावचैश्चोपहारैः प्रवालफलतण्डुलैः ॥३॥**

पदच्छेद— गन्धैः माल्यैः सुरभिभिः बलिभिः धूपदीपकैः ।
उच्चावचैः उपहारैः प्रवाल फल तण्डुलैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गन्धैः | १. | सुगन्धित चन्दन | उच्चावचैः | ७. | छोटी-बड़ी |
| माल्यैः | २. | फूलों के हार | च | ११. | और |
| सुरभिभिः | ३. | सुगन्ध | उपहारैः | ८. | भेंट की सामग्री |
| बलिभिः | ६. | नैवेद्य | प्रवाल | ९. | पल्लव |
| धूप | ४. | धूप | फल | १०. | फल |
| दीपकैः । | ५. | दीप | तण्डुलैः ॥ | १२. | चावलों से पूजा करती थीं |

श्लोकार्थ—सुगन्धित चन्दन, फूलों के हार, सुगन्ध, धूप, दीप, नैवेद्य, छोटी-बड़ी भेंट की सामग्री, पल्लव फल और चावलों से पूजा करती थीं ॥

# चतुर्थः श्लोकः

**कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि ।**
**नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः ।**
**इति मन्त्रं जपन्त्यस्ताः पूजां चक्रुः कुमारिकाः ॥४॥**

पदच्छेद— कात्यायनि महामाये महायोगिनि अधीश्वरि ।
नन्दगोप सुतम् देवि पतिम् मे कुरु ते नमः ।
इति मन्त्रम् जपन्त्यः ताः पूजाम् चक्रुः कुमारिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कात्यायनि | १. | हे कात्यायनि ! | कुरु | ८. | बना दीजिये |
| महामाये | २. | हे महामाये ! | ते नमः | १०. | हम आपको नमस्कार करती हैं |
| महायोगिनि | ३. | हे योगिनी ! | इति | ११. | इस |
| अधीश्वरि | ४. | हे स्वामिनी ! | मन्त्रम् | १२. | मन्त्र का |
| नन्दगोप | ५. | नन्द बाबा के | जपन्त्यः ताः | १३. | जप करती हुईं वे |
| सुतम् | ६. | पुत्र श्रीकृष्ण को | पूजाम् | १५. | देवी की पूजा |
| देवि | ९. | हे देवि ! | चक्रुः | १६. | करने लगीं |
| पतिम् मे । | ७. | हमारा पति | कुमारिकाः ॥ | १४. | कुमारियाँ |

श्लोकार्थ—हे कात्यायनि ! हे महामाये ! हे योगिनी ! हे स्वामिनी ! नन्दबाबा के पुत्र श्रीकृष्ण को हमारा पति बना दीजिये । हे देवि ! हम आपको नमस्कार करती हैं । इस मन्त्र का जप करती हुईं वे कुमारियाँ देवी की पूजा करने लगीं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**एवं मासं व्रतं चेरुः कुमार्यः कृष्णचेतसः ।**
**भद्रकालीं समानर्चुर्भूयान्नन्दसुतः पतिः ॥५॥**

पदच्छेद— एवम् मासम् व्रतम् चेरुः कुमार्यः कृष्णचेतसः ।
भद्रकालीम् समानर्चुः भूयात् नन्दसुतः पतिः ।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | भद्रकालीम् | ८. | भद्रकाली की |
| मासम् | ५. | एक मास तक | समानर्चुः | ९. | पूजा की कि |
| व्रतम् | ६. | व्रत | भूयात् | १३. | होवे |
| चेरुः | ७. | किया और | नन्द | १०. | नन्द |
| कुमार्यः | २. | उन कुमारियों ने | सुतः | ११. | नन्दन श्याम सुन्दर |
| कृष्ण | ४. | श्रीकृष्ण पर निछावर था | पतिः ॥ | १२. | हमारे पति |
| चेतसः । | ३. | जिनका मन | | | |

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन कुमारियों ने जिनका मन श्रीकृष्ण पर निछावर था एक मास तक व्रत किया और भद्रकाली की पूजा की कि नन्दनन्दन श्याम सुन्दर हमारे पति होवें ।

## षष्ठः श्लोकः

**उषस्युत्थाय गोत्रैः स्वैरन्योन्याबद्धबाहवः ।**
**कृष्णमुच्चैर्जगुर्यान्त्यः कालिन्द्यां स्नातुमन्वहम् ॥६॥**

पदच्छेद— उषसि उत्थाय गोत्रैः स्वैः अन्योन्य आबद्ध बाहवः ।
कृष्णम् उच्चैः जगुः यान्त्यः कालिन्द्याम् स्नातुम् अन्वहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उषसि | १. | वे उषाकाल में | कृष्णम् | ९. | श्रीकृष्ण की लीलाओं का |
| उत्थाय | २. | उठकर | उच्चैः | ८. | ऊँचे स्वर से |
| गोत्रैः | ४. | नाम ले-लेकर | जगुः | १०. | गान करती हुई |
| स्वैः | ३. | अपने-अपने | यान्त्यः | १४. | जाती थीं |
| अन्योन्य | ५. | परस्पर | कालिन्द्याम् | १२. | यमुना के जल में |
| आबद्ध | ७. | डालकर | स्नातुम् | १३. | स्नान करने के लिये |
| बाहवः । | ६. | बाँह में बाँह | अन्वहम् ॥ | ११. | प्रतिदिन |

श्लोकार्थ—वे उषाकाल में उठकर अपने-अपने नाम ले लेकर परस्पर बाँह में बाँह डालकर ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करती हुई प्रतिदिन यमुना के जल में स्नान करने जाती थीं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**नद्यां कदाचिदागत्य तीरे निक्षिप्य पूर्ववत् ।**
**वासांसि कृष्णं गायन्त्यो विजह्रुः सलिले मुदा ॥७॥**

पदच्छेद— नद्याम् कदाचित् आगत्य तीरे निक्षिप्य पूर्ववत् ।
वासांसि कृष्णम् गायन्त्यः विजह्रुः सलिले मुदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नद्याम् | ३ | यमुना जी के | वासांसि | ८. | अपने-अपने वस्त्र |
| कदाचित् | १. | एक दिन | कृष्णम् | ६. | श्रीकृष्ण की लीलाओं का |
| आगत्य | ५. | जाकर | गायन्त्यः | ७. | गान करती हुई |
| तीरे | ४. | तट पर | विजह्रुः | १२. | क्रीडा करने लगीं |
| निक्षिप्य | ९. | उतार दिये और | सलिले | १०. | जल में |
| पूर्ववत् । | २. | कुमारियों ने पूर्ववत् | मुदा ॥ | ११. | बड़े आनन्द से |

श्लोकार्थ—एक दिन कुमारियों ने पूर्ववत् यमुना जी के तट पर जाकर श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करती हुई अपने-अपने वस्त्र उतार दिये और जल में बड़े आनन्द से क्रीडा करने लगीं ॥

## अष्टमः श्लोकः

**भगवांस्तदभिप्रेत्य कृष्णो योगेश्वरेश्वरः ।**
**वयस्यैरावृतस्तत्र गतस्तत्कर्मसिद्धये ॥८॥**

पदच्छेद— भगवान् तत् अभिप्रेत्य कृष्णः योगेश्वर ईश्वरः ।
वयस्यैः आवृतः तत्र गतः तत् कर्म सिद्धये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | १. | भगवान् | वयस्यैः | ९. | ग्वाल बालों के |
| तत् | ५. | उन गोपियों का भाव | आवृतः | १०. | साथ |
| अभिप्रेत्य | ६. | समझ कर | तत्र | ११. | यमुना के तट पर |
| कृष्णः | २. | श्रीकृष्ण तो | गतः | १२. | गये |
| योगेश्वर | ३. | योगेश्वरों के भी | तत्कर्म | ७. | उनकी साधना |
| ईश्वरः । | ४. | ईश्वर हैं | सिद्धये ॥ | ८. | सिद्ध करने के लिये वे |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण तो योगेश्वरों के भी ईश्वर हैं। उन गोपियों का भाव समझ कर उनकी साधना सिद्ध करने के लिये वे ग्वाल-बालों के साथ यमुना के तट पर गये ॥

## नवमः श्लोकः

**तासां वासांस्युपादाय नीपमारुह्य सत्वरः ।**
**हसद्भिः प्रहसन् बालैः परिहासमुवाच ह ॥९॥**

पदच्छेद— तासाम् वासांसि उपादाय नीपम् आरुह्य सत्वरः ।
हसद्भिः प्रहसन् बालैः परिहासम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तासाम् | १. | उन गोपियों के | हसद्भिः | ९. | हँसने लगे और |
| वासांसि | २ | वस्त्रों को | प्रहसन् | ८. | ठठाकर |
| उपादाय | ३. | लेकर वे | बालैः | ७. | ग्वाल-बाल |
| नीपम् | ५. | कदम्ब के वृक्ष पर | परिहासम् | १०. | श्रीकृष्ण ने भी हंसते हुये |
| आरुह्य | ६. | चढ़ गये तब | उवाच ह॥ | ११. | कहा |
| सत्वरः । | ४ | बड़ी फुर्ती से | | | |

श्लोकार्थ—उन गोपियों के वस्त्रों को लेकर वे बड़ी फुर्ती से कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ गये । तब ग्वाल-बाल ठठाकर हंसने लगे और श्रीकृष्ण भी हंसते हुये कहा ॥

## दशमः श्लोकः

**अत्रागत्याबलाः कामं स्वं स्वं वासः प्रगृह्यताम् ।**
**सत्यं ब्रवाणि नो नर्म यद् यूयं व्रतकर्शिताः ॥१०॥**

पदच्छेद— अत्र आगत्य अबलाः कामम् स्वम्-स्वम् वासः प्रगृह्यताम् ।
सत्यम् ब्रवाणि नो नर्म यद् यूयम् व्रत कर्शिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्र | २. | यहाँ | सत्यम् | ८. | मैं सत्य |
| आगत्य | ३. | आकर | ब्रवाणि | ९ | कह रहा हूँ |
| अबलाः | १. | अरी कुमारियां ! | नो नर्म | १०. | हंसो नहीं कर रहा हूँ |
| कामम् | ४. | यदि इच्छा हो तो | यद् | ११. | क्योंकि |
| स्वम्-स्वम् | ५. | अपने-अपने | यूयम् | १२. | आप लोग तो |
| वासः | ६. | वस्त्र | व्रत | १३. | व्रत करते-करते यूँ ही |
| प्रगृह्यताम् । | ७. | ले जाओ | कर्शिताः ॥ | १४. | दुबली हो गई हो |

श्लोकार्थ—अरी कुमारियो ! यहाँ आकर यदि इच्छा हो तो अपने-अपने वस्त्र ले जाओ । मैं सत्य कह रहा हूँ । हंसी नहीं कर रहा हूँ । क्योंकि आप लोग तो व्रत करते-करते यूँ ही दुबली हो गई हो ॥

# एकादशः श्लोकः

न मयोदितपूर्वं वा अनृतं तदिमे विदुः।
एकैकशः प्रतीच्छध्वं सहैवोत सुमध्यमाः ॥११॥

पदच्छेद— न मया उदित पूर्वम् वै अनृतम् तत् इमे विदुः।
एक एकशः प्रतीच्छध्वम् सह एव उत सुमध्यमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | एक | ६. | तुम एक |
| मया | ३. | मैंने | एकशः | १०. | एक करके अपने |
| उदित | ७. | बोला है | प्रतीच्छध्वम् | ११. | वस्त्र ले जाओ |
| पूर्वम् वै | ४. | इसके पहले भी | सह | १३. | एक साथ |
| अनृतम् | ५. | कभी झूठ | एव | १४. | ही ले जाओ |
| तत् इमे | १. | इस बात को ये ग्वाल-बाल | उत | १२. | अथवा |
| विदुः। | २. | जानते हैं कि | सुमध्यमाः ॥ | ८. | हे सुन्दरियो ! |

श्लोकार्थ—इस बात को ये ग्वाल-बाल जानते हैं कि मैं इसके पहले भी कभी झूठ नहीं बोला हूँ। हे सुन्दरियो ! तुम एक-एक करके अपने वस्त्र ले जाओ, अथवा एक साथ ही ले जाओ ॥

# द्वादशः श्लोकः

तस्य तत् क्ष्वेलितं दृष्ट्वा गोप्यः प्रेमपरिप्लुताः।
व्रीडिताः प्रेक्ष्य चान्योन्यं जातहासा न निर्ययुः ॥१२॥

पदच्छेद— तस्य तत् क्ष्वेलितम् दृष्ट्वा गोप्यः प्रेम परिप्लुताः।
व्रीडिताः प्रेक्ष्य च अन्योन्यम् जात हासाः न निर्ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्य | १. | उन भगवान् की | व्रीडिताः | ८. | वे तनिक सकुचाकर |
| तत् | २. | यह | प्रेक्ष्य च | १०. | देखने और |
| क्ष्वेलितम् | ३. | हंसी-मसखरी | अन्योन्यम् | ६. | एक दूसरे की ओर |
| दृष्ट्वा | ४. | देखकर | जात | १२. | लगी पर जल से बाहर |
| गोप्यः | ५. | गोपियों का हृदय | हासाः | ११. | मुस्कराने |
| प्रेम | ६. | प्रेम से | न | १३. | नहीं |
| परिप्लुताः। | ७. | सराबोर हो गया | निर्ययुः ॥ | १४. | निकलीं |

श्लोकार्थ—उन भगवान् की यह हंसी-मसखरी देखकर गोपियों का हृदय प्रेम से सराबोर हो गया। वे तनिक सकुचाकर एक दूसरे की ओर देखने और मुस्कराने लगीं, पर जल से बाहर नहीं निकलीं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**एवं ब्रुवति गोविन्दे नर्मणाऽऽक्षिप्तचेतसः ।**

**आकण्ठमग्नाः शीतोदे वेपमानास्तमब्रुवन् ॥१३॥**

पदच्छेद— एवम् ब्रुवति गोविन्दे नर्मणा आक्षिप्त चेतसः ।
आकण्ठ मग्नाः शीतोदे वेपमानाः तम् अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **एवम्** | २. | इस प्रकार | आकण्ठ | ७. | वे गले तक |
| **ब्रुवति** | ३. | कहा तो | मग्नाः | ६. | डूबी हुई थी |
| **गोविन्दे** | १. | जब भगवान् ने | शीतोदे | ८. | ठंडे जल में |
| **नर्मणा** | ४. | उनके विनोद से | वेपमानाः | १०. | अतः काँपते हुये |
| **आक्षिप्त** | ६. | और भी खिच गया | तम् | ११. | श्रीकृष्ण से इस प्रकार |
| **चेतसः ।** | ५. | कुमारियों का चित्त | अब्रुवन् ॥ | १२. | बोलीं |

श्लोकार्थ—जब भगवान् ने इस प्रकार कहा तो उनके विनोद से कुमारियों का चित्त और भी खिच गया । वे गले तक ठंडे जल डूबी हुई थीं । अतः काँपते हुये श्रीकृष्ण से इस प्रकार बोलीं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**मानयं भोः कृथास्त्वां तु नन्दगोपसुतं प्रियम् ।**

**जानीमोऽङ्ग व्रजश्लाघ्यं देहि वासांसि वेपिताः ॥१४॥**

पदच्छेद— माअनयम् भोः कृथाः त्वाम् तु नन्द गोप सुतम् प्रियम् ।
जानीमः अङ्ग व्रजश्लाघ्यम् देहि वासांसि वेपिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **माअनयम्** | २. | ऐसा अनर्थ | **जानीमः** | ११. | उसे हम जानती हैं |
| **भोः** | १. | हे प्यारे श्रीकृष्ण ! | **अङ्ग** | ८. | हे श्रीकृष्ण ! |
| **कृथाः** | ३. | मत करो | **व्रज** | ६. | सारे व्रजवासी |
| **त्वाम् तु** | ४. | तुम तो | **श्लाघ्यम्** | १०. | तुम्हारी सराहना करते हैं |
| **नन्दगोप** | ५. | नन्दबाबा के | **देहि** | १४. | हमें दे दो |
| **सुतम्** | ७. | बेटे हो | **वासांसि** | १३. | हमारे वस्त्र |
| **प्रियम् ।** | ६. | लाडले | **वेपिताः ॥** | १२. | हमारा शरीर काँप रहा है |

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्रीकृष्ण ! ऐसा अनर्थ मत करो । तुम तो नन्दबाबा के लाडले बेटे हो । हे श्रीकृष्ण ! सारे व्रजवासी तुम्हारी सराहना करते हैं । उसे हम जानती हैं । हमारा शरीर काँप रहा है । हमारे वस्त्र हमें दे दो ।

## पञ्चदशः श्लोकः

**श्यामसुन्दर ते दास्यः करवाम तवोदितम् ।**
**देहि वासांसि धर्मज्ञ नो चेद् राज्ञे ब्रुवामहे ॥१५॥**

पदच्छेद— श्यामसुन्दर ते दास्यः करवाम तव उदितम् ।
देहि वासांसि धर्मज्ञ नो चेत् राज्ञे ब्रुवामहे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **श्यामसुन्दर** | १. | प्यारे श्याम सुन्दर | देहि | ९. | दे दो |
| **ते** | २. | हम तुम्हारी | वासांसि | ८. | हमारे वस्त्र |
| **दास्यः** | ३. | दासी हैं | धर्मज्ञ | ७. | हे धर्म के जानकार |
| **करवाम** | ६. | करने को तैयार हैं | नो चेत् | १०. | यदि नहीं दोगे तो हम |
| **तव** | ४. | हम तुम्हारा | राज्ञे | ११. | नन्दबाबा से |
| **उदितम् ।** | ५. | कहना | ब्रुवामहे ॥ | १२. | कह देंगी । |

श्लोकार्थ—प्यारे श्याम सुन्दर ! हम तुम्हारी दासी हैं । हम तुम्हारा कहना मानने को तैयार हैं । हे धर्म के जानकार ! हमारे वस्त्र दे दो । यदि नहीं दोगे तो हम नन्दबाबा से कह देंगी ।

## षोडशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— **भवत्यो यदि मे दास्यो मयोक्तं वा करिष्यथ ।**
**अत्रागत्य स्ववासांसि प्रतीच्छन्तु शुचिस्मिताः ॥१६॥**

पदच्छेद— भवत्यः यदि मे दास्यः मया उक्तम् वा करिष्यथ ।
अत्र आगत्य स्व वासांसि प्रतीच्छन्तु शुचिस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **भवत्यः** | ४. | तुम लोग | अत्र | ११. | यहाँ पर |
| **यदि** | ३. | यदि | आगत्य | १२. | आकर |
| **मे** | ५. | मेरी | स्व | १३. | अपने-अपने |
| **दास्यः** | ६. | दासी हो | वासांसि | १४ | वस्त्र |
| **मया** | ८. | मेरी | प्रतीच्छन्तु | १५. | ले जाओ |
| **उक्तम्** | ९. | आज्ञा का | शुचि | २. | बड़ी पवित्र है |
| **वा** | ७. | अथवा | स्मिताः ॥ | १. | तुम्हारी मुसकान |
| **करिष्यथ ।** | १०. | पालन करना चाहती हो तो | | | |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! तुम्हारी मुसकान बड़ी पवित्र है । यदि तुम लोग मेरी दासी हो, अथवा मेरी आज्ञा का पालन करना चाहती हो तो यहाँ पर आकर अपने-अपने वस्त्र ले जाओ ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**ततो जलाशयात् सर्वा दारिकाः शीतवेपिताः ।**
**पाणिभ्यां योनिमाच्छाद्य प्रोत्तेरुः शीतकर्शिताः ॥१७॥**

पदच्छेद— ततः जलाशयात् सर्वाः दारिकाः शीतवेपिताः ।
पाणिभ्याम् योनिम् आच्छाद्य प्रोत्तेरुः शीतकर्शिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | ५. | यह बात सुनकर | पाणिभ्याम् | ६. | वे दोनों हाथों से अपने |
| जलाशयात् | ९. | यमुना जी से | योनिम् | ७. | गुप्त अङ्ग को |
| सर्वाः | १. | वे सब | आच्छाद्य | ८. | छिपाकर |
| दारिकाः | २. | कुमारियाँ | प्रोत्तेरुः | १०. | बाहर निकलीं |
| शीत | ३. | ठंड से | शीत | ११. | उन्हें ठंड बहुत ही |
| वेपिताः । | ४. | काँप रही थीं | कर्शिताः ॥ | १२. | सता रही थी |

श्लोकार्थ—वे सब कुमारियाँ ठंड से काँप रही थीं । यह बात सुनकर वे दोनों हाथों से अपने गुप्त अङ्ग को छिपाकर यमुना जी से बाहर निकलीं । उन्हें ठंड बहुत ही सता रही थी ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**भगवानाहृता वीक्ष्य शुद्धभावप्रसादितः ।**
**स्कन्धे निधाय वासांसि प्रीतः प्रोवाच सस्मितम् ॥१८॥**

पदच्छेद— भगवान् आहृताः वीक्ष्य शुद्ध भाव प्रसादितः ।
स्कन्धे निधाय वासांसि प्रीतः प्रोवाच सस्मितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | ४. | भगवान् ने | स्कन्धे | ८. | अपने कन्धे पर |
| आहृता | ५. | उन्हें पास आया | निधाय | ९. | रखकर |
| वीक्ष्य | ६. | देखकर | वासांसि | ७. | गोपियों के वस्त्र |
| शुद्ध | १. | उनके इस शुद्ध | प्रीतः | १०. | प्रसन्नता से |
| भाव | २. | भाव से | प्रोवाच | १२. | इस प्रकार बोले |
| प्रसादितः । | ३. | प्रसन्न हुये | सस्मितम् ॥ | ११. | मुस्कराते हुये |

श्लोकार्थ—उनके इस शुद्ध भाव से प्रसन्न हुये भगवान् ने उन्हें पास आया देखकर गोपियों के वस्त्र अपने कन्धे पर रखकर प्रसन्नता से मुस्कराते हुये इस प्रकार बोले ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**यूयं विवस्त्रा यदपो धृतव्रता व्यगाहतैतत्तदु देवहेलनम् ।**
**बद्ध्वाञ्जलिं मूर्ध्न्यपनुत्तयेंऽहसः कृत्वा नमोऽधो वसनं प्रगृह्यताम् ॥१९॥**

पदच्छेद— यूयम् विवस्त्राः यत् अपः धृत व्रताः व्यगाहत एतत् तत् उ देव हेलनम् ।
बद्ध्वा अञ्जलिम् मूर्ध्नि अपनुत्तये अंहसः कृत्वा नमः अधः वसनम् प्रगृह्यता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यूयम् | २. | तुमने | बद्ध्वा अञ्जलिम् | १०. | हाथों को जोड़कर |
| विवस्त्राःयत् | ३. | वस्त्रहीन होकर जो | मूर्ध्नि | ११. | सिर से लगाओ |
| अपः | ४. | जल में | अपनुत्तये | ९. | निवारण के लिये |
| धृतव्रताः | १. | हे व्रत धारण करने वाली गोपियों | अंहसः | ८. | अतः इस दोष के |
| व्यगाहत | ५. | स्नान किया है | कृत्वानमः अधः | १२. | झुककर |
| एतत् तद् उदेव | ६. | इससे वरुण और जमुना जी का | वसनम् | १३. | अपने-अपने वस्त्र |
| हेलनम् । | ७. | अपमान हुआ है | प्रगृह्यताम् ॥ | १४. | ले जाओ |

श्लोकार्थ—हे व्रत धारण करने वाली गोपियो ! तुमने वस्त्रहीन होकर जो जल में स्नान किया है। इससे वरुण और यमुना जी का अपमान हुआ है। अतः इस दोष के निवारण के लिये हाथों को जोड़कर सिर से लगाओ और झुककर नमस्कार करो। तब अपने-अपने वस्त्र ले जाओ ॥

## विंशः श्लोकः

**इत्यच्युतेनाभिहिता व्रजाबला मत्वा विवस्त्राप्लवनं व्रतच्युतिम् ।**
**तत्पूर्तिकामास्तदशेषकर्मणां साक्षात्कृतं नेमुरवद्यमृग् यतः ॥२०॥**

पदच्छेद— इति अच्युतेन अभिहिता व्रज अबलाः मत्वाविवस्त्र आप्लवनम् व्रत च्युतिम् ।
तत् पूर्ति कामाः तत् अशेष कर्मणाम् साक्षात् कृतम् नेमुः अवद्यमृग् यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति अच्युतेन | १. | इस प्रकार भगवान् की | तत् पूर्ति | ८. | अतः उस व्रत की निर्विघ्न |
| अभिहिता | २. | बात सुनकर | कामाः तत् | ९. | कामना से उन्होंने |
| व्रज अबलाः | ३. | व्रज कुमारियों ने | अशेषकर्मणाम् | १०. | समस्त कर्मों के |
| मत्वा | ४. | ऐसा समझा कि | साक्षात् | ११. | साक्षी श्रीकृष्ण को |
| विवस्त्र | ५ | वस्त्रहीन होकर | कृतम् नेमुः | १२. | नमस्कार किया |
| आप्लवनम् | ६. | स्नान करने से हमारे | अवद्यमृग् | १३. | जिससे सभी अपराधों का |
| व्रतच्युतिम् । | ७. | व्रत में त्रुटि आ गई है | यतः ॥ | १४. | मार्जन हो जाता है |

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् की बात सुनकर व्रजकुमारियों ने ऐसा समझा कि वस्त्रहीन होकर स्नान करने से हमारे व्रत में त्रुटि आ गई है। अतः उस व्रत की निर्विघ्न पूर्ति की कामना के लिये समस्त कर्मों के साक्षी श्रीकृष्ण को नमस्कार किया। जिससे सभी अपराधों का मार्जन हो जाता है।

## एकविंशः श्लोकः

**तास्तथावनता दृष्ट्वा भगवान् देवकीसुतः ।**
**वासांसि ताभ्यः प्रायच्छत् करुणस्तेन तोषितः ॥२१॥**

पदच्छेद— ताः तथा अवनताः दृष्ट्वा भगवान् देवकी सुतः ।
वासांसि ताभ्यः प्रायच्छत् करुणः तेन तोषितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | ३. | गोपियों को | वासांसि | ११. | वस्त्र |
| तथा | ४. | इस प्रकार | ताभ्यः | १०. | उन्हें |
| अवनताः | ५. | प्रणाम करते | प्रायच्छत् | १२. | प्रदान कर दिये |
| दृष्ट्वा | ६. | देखा तो | करुणः | ९. | करुणा करके |
| भगवान् | २. | श्री कृष्ण ने | तेन | ७. | वे उनसे |
| देवकी सुतः । | १. | जब देवकी पुत्र | तोषितः ॥ | ८. | बहुत ही प्रसन्न हुये और |

श्लोकार्थ—जब देवकी पुत्र श्री कृष्णने गोपियों को इस प्रकार प्रणाम करते देखा तो वे उनसे बहुत ही प्रसन्न हुये । और करुणा करके उन्हें वस्त्र प्रदान कर दिये ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**दृढं प्रलब्धास्त्रपया च हापिताः प्रस्तोभिताः क्रीडनवच्च कारिताः ।**
**वस्त्राणि चैवापहृतान्यथाप्यमुं ता नाभ्यसूयन् प्रियसङ्गनिर्वृताः ॥२२॥**

पदच्छेद— दृढम् प्रलब्धाः त्रपया च हापिताः प्रस्तोभिताः क्रीडनवत् च कारिताः ।
वस्त्राणि च एव अपहृतानि अथ अपि अमुम् तानः अभ्यसूयन् प्रियसङ्गनिर्वृताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृढम् | १. | श्रीकृष्ण ने उनसे अत्यन्त | वस्त्राणि | १०. | वस्त्र भी |
| प्रलब्धाः | २. | छल भरी बातें की | च एव | ९. | और |
| त्रपया च | ३. | और लज्जा संकोच | अपहृतानि | ११. | हरण कर लिये |
| हापिताः | ४. | छोड़कर | अथ अपि | १२. | फिर भी |
| प्रस्तोभिताः | ५. | हंसी की | अमुम् तानः | १३. | वे उन पर |
| क्रीडनवत् | ७. | कठपुतलियों के समान | अभ्यसूयन् | १४. | रुष्ट नहीं हुई परन्तु |
| च | ६. | और उन्हें | प्रियसङ्ग | १५. | अपने प्रियतम के सङ्ग से |
| कारिताः । | ८. | नचाया | निर्वृताः ॥ | १६. | वे अत्यन्त प्रसन्न हुईं |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने उनसे अत्यन्त छल भरी बातें कीं और लज्जा संकोच छोड़कर हँसी की । और उन्हें कठपुतली के समान नचाया । और वस्त्र भी हरण कर लिया फिर भी वे उन पर रुष्ट नहीं हुईं । परन्तु अपने प्रियतम के सङ्ग से वे अत्यन्त प्रसन्न हुईं ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**परिधाय स्ववासांसि प्रेष्ठसङ्गमसज्जिताः ।**
**गृहीतचित्ता नो चेलुस्तस्मिँल्लज्जायितेक्षणाः ॥२३॥**

पदच्छेद—
परिधाय स्ववासांसि प्रेष्ठ सङ्गम सज्जिताः ।
गृहीत चित्ताः नो चेलुः तस्मिन् लज्जायित ईक्षणाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| परिधाय | ३. पहन लिये | गृहीत | ५. | वश में कर रखा था |
| स्व | १. गोपियों ने अपने | चित्ताः | ४. | श्रीकृष्ण ने उनके मन को |
| वासांसि | २. अपने वस्त्र | नो | ६. | अतः वे वहाँ से एक पग भी नहीं |
| प्रेष्ठ | ८. अपने प्रियतम के | चेलुः | ७. | चल सकीं |
| सङ्गम् | ९. समागम के लिये | तस्मिन् | ११. | उन्हीं की ओर |
| सज्जिताः । | १०. सजकर | लज्जायित | १२. | लजीली चितवन से |
| | | ईक्षणाः ॥ | १३. | देखती रहीं |

श्लोकार्थ—गोपियों ने अपने-अपने वस्त्र पहन लिये । श्रीकृष्ण ने उनके मन को वश में कर रखा था । अतः वे वहाँ से एक पग भी नहीं चल सकीं । अपने प्रियतम के समागम के लिये सजकर उन्हीं की ओर लजीली चितवन से देखती रहीं ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**तासां विज्ञाय भगवान् स्वपादस्पर्शकाम्यया ।**
**धृतव्रतानां संकल्पमाह दामोदरोऽबलाः ॥२४॥**

पदच्छेद—
तासाम् विज्ञाय भगवान् स्वपाद स्पर्श काम्यया ।
धृतव्रतानाम् संकल्पम् आह दामोदरः अबलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तासाम् | २. उन कुमारियों ने | धृत | ७. | धारण किया है |
| विज्ञाय | ९. यह जान कर | व्रतानाम् | ६. | व्रत |
| भगवान् | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने देखा कि | संकल्पम् | ८. | यही उनका संकल्प है |
| स्वपाद | ३. उनके चरण कमलों के | आह | १२. | कहा |
| स्पर्श | ४. स्पर्श की | दामोदरः | १०. | भगवान् ने |
| काम्यया । | ५. कामना से ही | अबलाः ॥ | ११. | उन गोपिकाओं से |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने देखा कि उन कुमारियों ने उनके चरण कमलों के स्पर्श की कामना से ही व्रत धारण किया है । यही उनका संकल्प है । यह जानकर भगवान् ने उन गोपिकाओं से कहा ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**संकल्पो विदितः साध्व्यो भवतीनां मदर्चनम् ।**
**मयानुमोदितः सोऽसौ सत्यो भवितुमर्हति ॥२५॥**

पदच्छेद— संकल्पः विदितः साध्व्यः भवतीनाम् मत्अर्चनम् ।
मया अनुमोदितः सः असौ सत्यः भवितुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| संकल्पः | २. | मैं तुम्हारा संकल्प | मया | ७. | मैं तुम्हारी |
| विदितः | ३. | जानता हूँ | अनुमोदितः | ९. | अनुमोदन करता हूँ |
| साध्व्यः | १. | परम प्रेयसी कुमारियो ! | सः असौ | ८. | इस अभिलाषा का |
| भवतीनाम् | ४. | तुम | सत्यः | १०. | तुम्हारा संकल्प सत्य |
| मत् | ५. | मेरी | भवितुम् | ११. | होना |
| अर्चनम् । | ६. | पूजा करना चाहती हो | अर्हति ॥ | १२. | निश्चित है |

श्लोकार्थ—परम प्रेयसी कुमारियो ! मैं तुम्हारा संकल्प जानता हूँ । तुम मेरी पूजा करना चाहती हो । मैं तुम्हारी इस अभिलाषा का अनुमोदन करता हूँ । तुम्हारा संकल्प सत्य होना निश्चित है ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**न मय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते ।**
**भर्जिता क्वथिता धाना प्रायो बीजाय नेष्यते ॥२६॥**

पदच्छेद— न मयि आवेशित धियाम् कामः कामाय कल्पते ।
भर्जिता क्वथिता धाना प्रायः बीजाय न इष्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | भर्जिता | ८. | जैसे कि भुने या |
| मयि | १. | मुझ में | क्वथिता | ९. | उबाले हुये |
| आवेशित | ३. | समर्पित करने वालों की | धाना | १०. | बीज |
| धियाम् | २. | मन और प्राण | प्रायः | ११. | प्रायः |
| कामः | ४. | कामनायें | बीजाय | १२. | उगने योग्य |
| कामाय | ५. | सांसारिक भोगों की ओर | न | १३. | नहीं |
| कल्पते । | ७. | ले जाती हैं | इष्यते ॥ | १४. | रह जाते हैं |

श्लोकार्थ—मुझ में मन और प्राण समर्पित करने वालों की कामनायें सांसारिक भोगों की ओर नहीं ले जाती है । जैसे कि भुने या उबाले हुये बीज प्रायः उगने योग्य नहीं रह जाते हैं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**याताबला व्रजं सिद्धा मयेमा रंस्यथ क्षपाः ।**
**यदुद्दिश्य व्रतमिदं चेरुरार्यार्चनं सतीः ॥२७॥**

पदच्छेद— यात अबलाः व्रजम् सिद्धाः मया इमाः रंस्यथ क्षपाः ।
यत् उद्दिश्य व्रतम् इदम् चेरुः आर्यार्चनम् सतीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यात | ३. | अपने घर जाओ | यत् | ९. | इसी |
| अबलाः | १. | हे कुमारियो | उद्दिश्य | १०. | उद्देश्य से |
| व्रजम् | २. | व्रज में अपने- | व्रतम् | १२. | व्रत और |
| सिद्धा | ४. | तुम्हारी साधना पूर्ण हुई | इदम् | ११. | तुम लोगों ने यह |
| मया इमाः | ५. | मेरे साथ शरद् ऋतु की | चेरुः | १४. | की है |
| रंस्यथ | ७. | विहार करोगी | आर्यार्चनम् | १३. | कात्यायनी देवी की पूजा |
| क्षपाः । | ६. | रात्रियों में | सतीः ॥ | ८. | हे सतियो ! |

श्लोकार्थ—हे कुमारियो ! व्रज में अपने-अपने घर जाओ । तुम्हारी साधना पूर्ण हुई । मेरे साथ शरद् ऋतु की रात्रियों में विहार करोगी । हे सतियो ! इसी उद्देश्य से तुम लोगों ने यह व्रत और कात्यायनी देवी की पूजा की है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—इत्यादिष्टा भगवता लब्धकामाः कुमारिकाः ।**
**ध्यायन्त्यस्तत्पदाम्भोजं कृच्छ्रान्निर्विविशुर्व्रजम् ॥२८॥**

पदच्छेद— इति आदिष्टाः भगवता लब्ध कामाः कुमारिकाः ।
ध्यायन्त्यः तत् पद अम्भोजम् कृच्छ्रात् निर्विविशुः व्रजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | यह | ध्यायन्त्यः | ८. | ध्यान करती हुई |
| आदिष्टा | ३. | आज्ञा पाकर | तत् | ५. | उन भगवान् के |
| भगवता | १. | भगवान् की | पद, | ६. | चरण- |
| लब्ध | १३. | पूर्ण हो चुकी थीं | अम्भोजम् | ७. | कमलों का |
| कामाः | १२. | उनकी समस्त कामनायें | कृच्छ्रात् | ९ | बड़े कष्ट से |
| कुमारिकाः । | ४. | वे कुमारियाँ | निर्विविशुः | ११. | जा सकीं ! तब |
| | | | व्रजम् ॥ | १०. | व्रज की ओर |

श्लोकार्थ—भगवान् की यह आज्ञा पाकर वे कुमारियाँ उन भगवान् के चरण-कमलों का ध्यान करती हुई बड़े कष्ट से व्रज की ओर जा सकीं । तब उनकी समस्त कामनायें पूर्ण हो चुकी थीं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**अथ गोपैः परिवृतो भगवान् देवकीसुतः ।**
**वृन्दावनाद् गतो दूरं चारयन् गाः सहाग्रजः ॥२९॥**

पदच्छेद— अथ गोपैः परिवृतः भगवान् देवकी सुतः ।
वृन्दावनात् गतः दूरम् चारयन् गाः सह अग्रजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | एक दिन | वृन्दावनात् | १०. | वृन्दावन से |
| गोपैः | ६. | ग्वालबालों से | गतः | १२. | निकल गये |
| परिवृतः | ७. | घिरे हुये | दूरम् | ११. | बहुत दूर |
| भगवान् | ४. | भगवान् श्रीकृष्ण | चारयन् | ९. | चराते हुये |
| देवकी | २. | देवकी | गाः | ८. | गायों को |
| सुतः । | ३. | नन्दन | सह अग्रजः ॥ | ५. | बलराम जी के साथ |

श्लोकार्थ—एक दिन देवकी नन्दन भगवान् श्रीकृष्ण बलराम जी के साथ ग्वालबालों से घिरे हुये गायों को चराते हुये बहुत दूर निकल गये ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**निदाघार्कातपे तिग्मे छायाभिः स्वाभिरात्मनः ।**
**आतपत्रायितान् वीक्ष्य द्रुमानाह व्रजौकसः ॥३०॥**

पदच्छेद— निदाघ अर्क आतपे तिग्मे छायाभिः स्वाभिः आत्मनः ।
आतपत्रायितान् वीक्ष्य द्रुमान् आह व्रज ओकसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निदाघ | १. | ग्रीष्म ऋतु में | आतपत्रा | ९. | छाते के |
| अर्क | २. | सूर्य की | यितान् | १०. | समान |
| आतपे | ४. | किरणों से | वीक्ष्य | ११. | देखकर |
| तिग्मे | ३. | तीव्र | द्रुमान् | ५. | वृक्षों को |
| छायाभिः | ८. | छाया से | आह | १४. | कहा |
| स्वाभिः | ६. | अपनी | व्रज | १२. | व्रज के |
| आत्मनः । | ७. | स्वयम् की | ओकसः ॥ | १३. | वासियों ने |

श्लोकार्थ—ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की तीव्र किरणों से वृक्षों को अपनी स्वयम् की छाया से छाते के समान देखकर व्रज के वासियों ने कहा ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

हे स्तोककृष्ण हे अंशो श्रीदामन् सुबलार्जुन।
विशालर्षभ तेजस्विन् देवप्रस्थ वरूथप ॥३१॥

पदच्छेद— हे स्तोक कृष्ण हे अंशो श्रीदामन् सुबल अर्जुन।
विशाल ऋषभ तेजस्विन् देवप्रस्थ वरूथप ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| हे स्तोककृष्ण | १. हे स्तोक कृष्ण | विशाल | ६. विशाल |
| हे अंशो | २. हे अंशु | ऋषभ | ७. ऋषभ |
| श्रीदामन् | ३. श्रीदामा | तेजस्विन् | ८. तेजस्वी |
| सुबल | ४. सुबल | देवप्रस्थ | ९. देवप्रस्थ और |
| अर्जुन। | ५. अर्जुन | वरूथप ॥ | १०. वरूथप (सुनो) |

श्लोकार्थ—हे स्तोककृष्ण ! हे अंशो ! श्रीदामा, सुबल, अर्जुन, विशाल, ऋषभ, तेजस्वी, देवप्रस्थ और वरूथप, सुनो ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

पश्यतैतान् महाभागान् परार्थैकान्तजीवितान्।
वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः ॥३२॥

पदच्छेद— पश्यत एतान् महाभागान् परार्थ एकान्त जीवितान्।
वात वर्षा आतपहिमान् सहन्तः वारयन्ति नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पश्यत | ३. देखो ये | वात | ७. हवा के झोंके |
| एतान् | १. इन | वर्षा | ८. वर्षा |
| महाभागान् | २. भाग्यशाली वृक्षों को | आतप | ९. धूप और |
| परार्थ | ५. दूसरों के लिये ही | हिमान् | १०. पाला |
| एकान्त | ४. पूर्णरूप से | सहन्तः | ११. सहकर भी |
| जीवितान्। | ६. जीवन धारण करके | वारयन्ति नः॥ | १२. हमारी रक्षा करते हैं |

श्लोकार्थ—इन भाग्यशाली वृक्षों को देखो ! ये पूर्णरूप से दूसरों के लिये ही जीवन धारण करके हवा के झोंके, वर्षा, धूप और पाला सहकर भी हमारी रक्षा करते हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम् ।**
**सुजनस्येव येषां वै विमुखा यान्ति नार्थिनः ॥३३॥**

पदच्छेद— अहो एषाम् वरम् जन्म सर्व प्राणि उपजीविनम् ।
सुजनस्य इव येषाम् वै विमुखाः यान्ति न अर्थिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो | १. | अहो | सुजनस्य | ८. | सज्जन पुरुष के घर के |
| एषाम् | २. | इन्हीं का | इव | ९. | समान |
| वरम् | ४. | श्रेष्ठ है क्योंकि | येषाम् वै | १०. | इनके यहाँ से |
| जन्म | ३. | जीवन | विमुखाः | १२. | वापस |
| सर्व | ५. | इनसे सभी | यान्ति | १४. | लौटते हैं |
| प्राणी | ६. | प्राणियों को | न | १३. | नहीं |
| उपजीवनम् । | ७. | जीवन मिलता है | अर्थिनः ॥ | ११. | साधक खाली हाथ |

श्लोकार्थ—अहो, इन्हीं का जीवन श्रेष्ठ है। क्योंकि इनसे सभी प्राणियों को जीवन मिलता है। सज्जन पुरुष के घर के समान इनके यहाँ से साधक खाली हाथ वापस नहीं लौटते हैं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः ।**
**गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते ॥३४॥**

पदच्छेद— पत्र पुष्प फल छाया मूल वल्कल दारुभिः ।
गन्ध निर्यास भस्म अस्थि तोक्मैः कामान् वितन्वते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पत्र | १. | ये अपने पत्ते | गन्ध | ८. | गन्ध |
| पुष्प | २. | फूल | निर्यास | ९. | गोंद |
| फल | ३. | फल | भस्म | १०. | राख |
| छाया | ४. | छाया | अस्थि | ११. | कोयला |
| मूल | ५. | जड़ | तोक्मैः | १२. | अंकुर और कोंपलों से |
| वल्कल | ६. | छाल | कामान् | १३. | लोगों की कामनायें |
| दारुभिः । | ७. | लकड़ी | वितन्वते ॥ | १४. | पूर्ण करते हैं |

श्लोकार्थ—ये अपने पत्ते, फूल, फल, छाया, जड़, छाल, लकड़ी, गन्ध, गोंद, राख, कोयला, अंकुर और कोंपलों से लोगों की कामनायें पूर्ण करते हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**एतावज्जन्मसाफल्यं देहिनामिह देहिषु ।**
**प्राणैरर्थैर्धिया वाचा श्रेय एवाचरेत् सदा ॥३५॥**

पदच्छेद— एतावत् जन्म साफल्यम् देहिनाम् इह देहिषु ।
प्राणैः अर्थैः धिया वाचा श्रेयः एव आचरेत् सदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतावत् | ३. | उन्हीं | प्राणैः अर्थैः | ७. | जो अपने प्राण, धन |
| जन्म | ५. | जन्म | धिया वाचा | ८. | बुद्धि और वाणी से |
| साफल्यम् | ६. | सफल है | श्रेयः | १०. | दूसरों के कल्याण का |
| देहिनाम् | ४. | देहधारियों का | एव | ११. | ही |
| इह | १. | इस संसार में | आचरेत् | १२. | आचरण करते हैं |
| देहिषु । | २. | देहधारियों में | सदा ॥ | ९. | सदा |

श्लोकार्थ—इस संसार में देहधारियों में उन्हीं देहधारियों का जन्म सफल है, जो अपने प्राण, धन, बुद्धि और वाणी से सदा दूसरों के कल्याण का ही आचरण करे ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**इति प्रवालस्तबकफलपुष्पदलोत्करैः ।**
**तरूणां नम्रशाखानां मध्येन यमुनां गतः ॥३६॥**

पदच्छेद— इति प्रवाल स्तवक फल पुष्प दल उत्करैः ।
तरूणाम् नम्र शाखानाम् मध्येन यमुनां गतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार वृक्ष | तरूणाम् | ८. | वृक्षों की |
| प्रवाल | २. | नयी-नयी कोपलों | नम्र | १०. | झुक रही थी वे |
| स्तवक | ३. | गुच्छों | शाखानाम् | ९. | डालियाँ |
| फल | ४. | फल | मध्येन | १२. | बीच तक |
| पुष्प | ५. | फूलों और | यमुनाम् | ११. | यमुना के |
| दल | ६. | पत्तों से | गतः ॥ | १३. | पहुँची हुई थी |
| उत्करैः । | ७. | लद रहे थे | | | |

श्लोकार्थ—इस प्रकार वृक्ष नयी-नयी कोंपलों, गुच्छों, फल, फूलों और पत्तों से लद रहे थे । वृक्षों की डालियाँ झुक रही थीं । वे यमुना के बीच तक फैली हुई थीं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**तत्र गाः पाययित्वापः सुमृष्टाः शीतलाः शिवाः ।**
**ततो नृप स्वयं गोपाः कामं स्वादु पपुर्जलम् ॥३७॥**

पदच्छेद— तत्र गाः पाययित्वा अपः सुमृष्टाः शीतलाः शिवाः ।
ततः नृप स्वयम् गोपाः कामम् स्वादु पपुः जलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | २. | यमुना जी का जल | नृप | १. | हे राजन् ! |
| गाः | ६. | उन लोगों ने पहले गौओं को | स्वयम् | ९. | स्वयं |
| पाययित्वा अपः | ७. | जल पिलाया | गोपाः | १०. | ग्वाल-बालों ने भी |
| सुमृष्टाः | ३. | बडा ही मधुर | कामम् | ११. | जी भर कर |
| शीतलाः | ४. | शीतल और | स्वादु | १२. | स्वादिष्ठ |
| शिवाः | ५. | स्वच्छ था | पपुः | १४. | पिया |
| ततः । | ८. | इसके बाद | जलम् ॥ | १३. | जल |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यमुना जी का जल बड़ा ही मधुर, शीतल और स्वच्छ था । उन लोगों ने पहले गौओं को जल पिलाया । इसके बाद स्वयं ग्वाल-बालों ने भी जी भर कर स्वादिष्ठ जल पिया ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**तस्या उपवने कामं चारयन्तः पशून् नृप ।**
**कृष्णरामावुपागम्य क्षुधार्ता इदमब्रुवन् ॥३८॥**

पदच्छेद— तस्याः उपवने कामम् चारयन्तः पशून् नृप ।
कृष्ण रामौ उपागम्य क्षुधार्ताः इदम् अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्याः | २. | जब वे इस | कृष्ण | ८. | श्रीकृष्ण और |
| उपवने | ३. | उपवन में | रामौ | ९. | बलराम जी के |
| कामम् | ४. | स्वतन्त्रता पूर्वक | उपागम्य | १०. | पास जाकर |
| चारयन्तः | ६. | चरा रहे थे । तब | क्षुधार्ताः | ७. | भूखे ग्वालों ने |
| पशून् | ५. | गौयें | इदम् | ११. | यह बात |
| नृप । | १. | हे परीक्षित् ! | अब्रुवन् ॥ | १२. | कही |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जब वे इस उपवन में स्वतन्त्रता पूर्वक गौयें चरा रहे थे । तब भूखे ग्वालों ने श्रीकृष्ण और बलराम जी के पास जाकर यह बात कही ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
गोपिकावस्त्रापहारः नाम द्वाविंशः अध्यायः ॥२२॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## त्रयोविंशः अध्यायः

## प्रथमः श्लोकः

गोप्य ऊचुः— राम राम महावीर्य कृष्ण दुष्टनिबर्हण ।
एषा वै बाधते क्षुन्नस्तच्छान्तिं कर्तुमर्हथः ॥१॥

पदच्छेद— राम राम महावीर्य कृष्ण दुष्ट निबर्हण ।
एषा वै बाधते क्षुत्ः नः तत् शान्तिम् कर्तुम् अर्हथः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राम | १. | नयनाभिराम | एषा वै | ७. | निश्चय ही यह दुष्ट |
| राम | २. | बलराम | बाधते | ६. | सता रही है |
| महावीर्य | ३. | तुम बड़े पराक्रमी हो | क्षुत् नः | ८. | भूख हमें |
| कृष्ण | ४. | हे श्रीकृष्ण ! | तत् शान्तिम् | १०. | तुम इसे शान्त |
| दुष्ट | ५. | तुमने दुष्टों का | कर्तुम् | ११. | करने के लिए कोई उपाय |
| निबर्हण । | ६. | संहार किया है | अर्हथः ॥ | १२. | करो |

श्लोकार्थ—नयनाभिराम बलराम तुम बड़े ही पराक्रमी हो । हे श्रीकृष्ण ! तुमने दुष्टों का संहार किया है । निश्चय ही यह दुष्ट भूख हमें सता रही है । तुम इसे शान्त करने के लिए कोई उपाय करो ॥

## द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति विज्ञापितो गोपैर्भगवान् देवकीसुतः ।
भक्ताया विप्रभार्यायाः प्रसीदन्निदमब्रवीत् ॥२॥

पदच्छेद— इति विज्ञापितः गोपैः भगवान् देवकी सुतः ।
भक्तायाः विप्र भार्यायाः प्रसीदन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | भक्तायाः | ७. | अपनी भक्त |
| विज्ञापितः | ६. | प्रार्थना की तब | विप्र | ८. | ब्राह्मण |
| गोपैः | २. | जब ग्वालों ने | भार्यायाः | ९. | पत्नियों पर |
| भगवान् | ५. | भगवान् श्रीकृष्ण से | प्रसीदन् | १०. | अनुग्रह करने के लिये |
| देवकी | ३. | देवकी | इदम् | ११. | उन्होंने यह बात |
| सुतः । | ४. | नन्दन | अब्रवीत् ॥ | १२. | कही |

श्लोकार्थ—इस प्रकार जब ग्वालों ने देवकी नन्दन भगवान् श्रीकृष्ण से प्रार्थना की । तब अपनी भक्त ब्राह्मण पत्नियों पर अनुग्रह करने के लिये उन्होंने यह बात कही ॥

## तृतीयः श्लोकः

**प्रयात देवयजनं ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ।**
**सत्रमाङ्गिरसं नाम ह्यासते स्वर्गकाम्यया ॥३॥**

पदच्छेद— प्रयात देव यजनम् ब्राह्मणाः ब्रह्म वादिनः ।
सत्रम् आङ्गिरसम् नाम हि आसते स्वर्गकाम्यया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रयात | १२. | वहीं पर जाओ | सत्रम् | ८. | यज्ञ |
| देव | ६. | देवताओं का | आङ्गिरसम् | ६. | आङ्गिरस |
| यजनम् | १०. | पूजन | नाम हि | ७. | नाम के |
| ब्राह्मणाः | ३. | ब्राह्मण थोड़ी दूरी पर | आसते | ११. | कर रहे हैं। तुम |
| ब्रह्म | १. | वेद | स्वर्ग | ४. | स्वर्ग की |
| वादिनः । | २. | वादी | काम्यया ॥ | ५. | कामना से |

श्लोकार्थ—वेदवादी ब्राह्मण थोड़ी दूरी पर स्वर्ग की कामना से आङ्गिरस नाम के यज्ञ से देवताओं का पूजन कर रहे हैं। तुम लोग वहाँ पर जाओ ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तत्र गत्वौदनं गोपा याचतास्मद्विसर्जिताः ।**
**कीर्तयन्तो भगवत आर्यस्य मम चाभिधाम् ॥४॥**

पदच्छेद— तत्र गत्वा ओदनम् गोपाः याचत अस्मत् विसर्जिताः ।
कीर्तयन्तः भगवतः आर्यस्य मम च अभिधाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र गत्वा | ४. | वहाँ जाकर | कीर्तयन्तः | १०. | जोर से लेकर |
| ओदनम् | ११. | थोड़ा सा भात | भगवतः | ७. | बड़े भाई |
| गोपाः | १. | हे ग्वाल बालो ! | आर्यस्य | ८. | बलराम जी का |
| याचत | १२. | माँग लाओ | मम | ५. | मेरा |
| अस्मत् | २. | मेरे | च | ६. | और |
| विसर्जिताः । | ३. | भेजने से तुम लोग | अभिधाम् ॥ | ६. | नाम |

श्लोकार्थ—हे ग्वालबालो ! मेरे भेजने से तुम लोग वहाँ जाकर मेरा और बड़े भाई बलराम जी का नाम लेकर थोड़ा सा भात माँग लाओ ॥

## पञ्चमः श्लोकः

इत्यादिष्टा भगवता गत्वायाचन्त ते तथा ।
कृताञ्जलिपुटा विप्रान् दण्डवत् पतिता भुवि ॥५॥

पदच्छेद— इति आदिष्टाः भगवता गत्वा अयाचन्त ते तथा ।
कृत अञ्जलि पुटाः विप्रान् दण्डवत् पतिताः भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | ऐसी | कृत | १०. | जोड़कर |
| आदिष्टाः | ३. | आज्ञा दी तब | अञ्जलि पुटाः | ९. | दोनों हाथ |
| भगवता | १. | जब भगवान् श्रीकृष्ण ने | विप्रान् | ११. | ब्राह्मणों को |
| गत्वा | ४. | ग्वालों ने वहाँ पर जाकर | दण्डवत् | १२. | दण्डवत् प्रणाम किया |
| अयाचन्त ते | ६. | उनसे अन्न माँगा | पतिताः | ८. | गिर कर |
| तथा । | ५. | भगवान् की आज्ञानुसार ही | भुवि ॥ | ७. | पहले पृथ्वी पर |

श्लोकार्थ—जब भगवान् श्रीकृष्ण ने ऐसी आज्ञा दी तब ग्वालों ने वहाँ पर जाकर भगवान् की आज्ञानुसार ही उनसे अन्न माँगा। पहले पृथ्वी पर गिर कर दोनों हाथ जोड़कर ब्राह्मणों को दण्डवत् प्रणाम किया ॥

## षष्ठः श्लोकः

हे भूमिदेवाः शृणुत कृष्णस्यादेशकारिणः ।
प्राप्ताञ्जानीत भद्रं वो गोपान् नो रामचोदितान् ॥६॥

पदच्छेद— हे भूमि देवाः शृणुत कृष्णस्य अदेशकारिणः ।
प्राप्तान् जानीत भद्रं वः गोपान् नः रामचोदितान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हे भूमि | १. | हे पृथ्वी के | प्राप्तान् | ११. | यहाँ आया हुआ |
| देवाः | २. | देवता ब्राह्मणो ! | जानीत | १०. | जानिये |
| शृणुत | १३. | आप हमारी बात सुनें | भद्रम् वः | ३. | आपका कल्याण हो |
| कृष्णस्य | ५. | श्रीकृष्ण और | गोपान् | ४. | हम व्रज के ग्वाले हैं |
| आदेश | ८. | उन्हीं की आज्ञा | नः | १०. | हमें |
| कारिणः । | ९. | पाकर | राम | ६. | बलराम जी के |
| | | | चोदितान् ॥ | ७. | कहने के अनुसार |

श्लोकार्थ—हे पृथ्वी के देवता ब्राह्मणो ! आपका कल्याण हो। हम व्रज के ग्वाले हैं। श्रीकृष्ण और बलराम जी के कहने के अनुसार उन्हीं की आज्ञा पाकर हमें यहाँ आया हुआ जानिये। आप हमारी बात सुनें ॥

## सप्तमः श्लोकः

**गाश्चारयन्तावविदूर ओदनं रामाच्युतौ वो लषतो बुभुक्षितौ ।**
**तयोर्द्विजा ओदनमर्थिनोर्यदि श्रद्धा च वो यच्छत धर्मवित्तमाः ॥७॥**

पदच्छेद— गाः चारयन्तौ अविदूरे ओदनम् राम अच्युतौ वः लषतः बुभुक्षितौ ।
तयोः द्विजाः ओदनम् अर्थिनोः यदि श्रद्धा च वः यच्छत धर्म वित्तमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गाः | ३. | गौएँ | तयोः | १६. | उन |
| चारयन्तौ | ४. | चराते हुये | द्विजाः | १०. | हे ब्राह्मणो |
| अविदूरे | ५. | यहाँ से थोड़ी दूर पर आये हुये हैं | ओदनम् | १७. | भात को |
| ओदनम् | ६. | थोड़ा सा भात | अर्थिनः | १८. | इच्छा वालों को थोड़ा भात दे दें |
| राम | १. | बलराम और | यदि श्रद्धा | १५. | यदि श्रद्धा हो तो |
| अच्युतौ | २. | श्रीकृष्ण | च | १४. | और |
| वः | ७. | आप से | वः | ११. | आप तो |
| लषतः | ८. | चाहते हैं | यच्छत | १३. | दे दें |
| बुभुक्षितौ । | ६. | वे भूखे हैं और | धर्मवित्तमाः ॥ | १२. | धर्म के मार्ग को जानते हैं |

श्लोकार्थ—बलराम और श्रीकृष्ण गौयें चराते हुये यहाँ से थोड़ी दूरी पर आये हुये हैं। वे भूखे हैं, और थोड़ा-सा भात चाहते हैं। हे ब्राह्मणो ! आप तो धर्म के मार्ग को जानते हैं और श्रद्धा हो तो उन भात की इच्छा वालों को थोड़ा-सा भात दे दें ॥

## अष्टमः श्लोकः

**दीक्षायाः पशुसंस्थायाः सौत्रामण्याश्च सत्तमाः ।**
**अन्यत्र दीक्षितस्यापि नान्नमश्नन् हि दुष्यति ॥८॥**

पदच्छेद— दीक्षायाः पशु संस्थायाः सौत्रामण्याः च सत्तमाः ।
अन्यत्र दीक्षितस्य अपि न अन्नम् अश्नन् हि दुष्यति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दीक्षायाः | २. | जिस यज्ञ दीक्षा में | अन्यत्र | ७. | इसके अतिरिक्त |
| पशु | ३. | पशु की | दीक्षितस्य | ८. | अन्य किसी यज्ञ में दीक्षित पुरुष का |
| संस्थायाः | ४. | बलि होती है उसमें | अपि | ६. | भी |
| सौत्रामण्याः | ६. | सौत्रामणी में अन्न नहीं खाना चाहिये | न | १२. | नहीं |
| च | ५. | और | अन्नम् | १०. | अन्न |
| सत्तमाः । | १. | हे सज्जनो ! | अश्नन् हि | ११. | खाने में |
| | | | दुष्यति ॥ | १३. | दोष होता है |

श्लोकार्थ—हे सज्जनो ! जिस यज्ञ दीक्षा में पशु की बलि होती है। उसमें और सौत्रामणी में अन्न न नहीं खाना चाहिये। इसके अतिरिक्त अन्य किसी यज्ञ में दीक्षित पुरुष का भी अन्न खाने में से दोष नहीं होता है।

## नवमः श्लोकः

**इति ते भगवद्याच्ञां शृण्वन्तोऽपि न शुश्रुवुः ।**
**क्षुद्राशा भूरिकर्माणो बालिशा वृद्धमानिनः ॥९॥**

पदच्छेद— इति ते भगवत् याच्ञाम् शृण्वन्तः अपि न शुश्रुवुः ।
क्षुद्राशाः भूरिकर्माणः बालिशाः वृद्ध मानिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | क्षुद्र | ९. | तुच्छ फलों के लिये |
| ते | २. | उन्होंने | आशा | ८. | वे स्वर्ग स्वरूप |
| भगवत् | ३. | भगवान् की | भूरि | १०. | अत्यन्त |
| याच्ञाम् | ४. | याचना को | कर्माणः | ११. | श्रम करने वाले |
| शृण्वन्तः | ५. | सुनकर | बालिशाः | १२. | बालक होने पर भी |
| अपि न | ६. | भी नहीं | वृद्ध | १३. | अपने को ज्ञानी |
| शुश्रुवुः । | ७. | सुना | मानिनः ॥ | १४. | समझ रहे थे |

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन्होंने भगवान् की याचना को सुनकर भी नहीं सुना । वे स्वर्ग स्वरूप तुच्छ फलों के लिये अत्यन्त श्रम करने वाले बालक होने पर भी अपने को ज्ञानी समझ रहे थे ॥

## दशमः श्लोकः

**देशः कालः पृथग् द्रव्यं मन्त्रतन्त्रर्त्विजोऽग्नयः ।**
**देवता यजमानश्च क्रतुर्धर्मश्च यन्मयः ॥१०॥**

पदच्छेद— देशः कालः पृथग् द्रव्यम् मन्त्र-तन्त्र ऋत्विजः अग्नयः ।
देवताः यजमानः च क्रतुः धर्मः च यत् मयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देशः | १. | देश | देवता | ८. | देवता |
| कालः | २. | काल | यजमानः | १०. | यजमान |
| पृथग् | ३. | अनेक प्रकार की | च क्रतुः | ९. | और यज्ञ |
| द्रव्यम् | ४. | सामग्रियाँ | धर्मः | ११. | धर्म |
| मन्त्र-तन्त्र | ५. | मन्त्र-तन्त्र | च | १२. | और अन्य सब |
| ऋत्विजः | ६. | ऋत्विज | यत् | १३. | भगवत् |
| अग्नयः । | ७. | अग्नि | मयः ॥ | १४. | मय ही तो हैं |

श्लोकार्थ—देश, काल, अनेक प्रकार की सामग्रियाँ, मन्त्र-तन्त्र, ऋत्विज्, अग्नि, देवता, यजमान और यज्ञ, धर्म और अन्य सब भगवत्मय ही तो हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**तं ब्रह्म परमं साक्षाद् भगवन्तमधोक्षजम् ।**
**मनुष्यदृष्ट्या दुष्प्रज्ञा मर्त्यात्मानो न मेनिरे ॥११॥**

पदच्छेद— तम् ब्रह्म परमम् साक्षात् भगवन्तम् अधोक्षजम् ।
मनुष्य दृष्ट्या दुष्प्रज्ञाः मर्त्य आत्मानः न मेनिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | वे ही | मनुष्य | ८. | मनुष्य |
| ब्रह्म | ४. | ब्रह्म | दृष्ट्या | ९. | दृष्टि के कारण |
| परमम् | ३. | पर | दुष्प्रज्ञाः | ७. | मूर्ख बुद्धि ब्राह्मणों ने |
| साक्षात् | २. | साक्षात् | मर्त्य | १०. | साधारण मनुष्य |
| भगवन्तम् | ६. | भगवान् ग्वाल रूप में | आत्मानः | ११. | मानते हुये उनका |
| अधोक्षजम् । | ५. | इन्द्रियातीत | न मेनिरे ॥ | १२. | सम्मान नहीं किया |

श्लोकार्थ—वे ही साक्षत् परब्रह्म इन्द्रियातीत भगवान् ग्वाल रूप में थे । मूर्ख बुद्धि ब्राह्मणों ने मनुष्य दृष्टि के कारण साधारण मनुष्य मानते हुये उनका सम्मान नहीं किया ॥

## द्वादशः श्लोकः

**न ते यदोमिति प्रोचुर्न नेति च परंतप ।**
**गोपा निराशाः प्रत्येत्य तथोचुः कृष्णरामयोः ॥१२॥**

पदच्छेद— न ते यत् ओमिति प्रोचुः न नेति च परंतप ।
गोपाः निराशाः प्रतिएत्य तथा ऊचुः कृष्ण रामयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न ते | ३. | उन ब्राह्मणों ने न तो | गोपाः | ८. | ग्वाल-बालों ने |
| यत् | २. | क्योंकि | निराशाः | ९. | निराश होकर |
| ओमिति | ४. | हाँ कहा | प्रति | १०. | वापस |
| प्रोचुः | ७. | कहा (अतः) | एत्य | ११. | लौटकर |
| न नेति | ६. | न ही न | तथा ऊचुः | १४. | सब बात कह दी |
| च | ५. | और | कृष्ण | १२. | श्रीकृष्ण और |
| परंतप । | १. | हे परीक्षित् ! | रामयोः ॥ | १३. | बलराम जी से |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! क्योंकि उन ब्राह्मणों ने न तो हाँ कहा और न ही न कहा । अतः ग्वाल-बालों ने निराश होकर वापस लौटकर श्रीकृष्ण और बलराम जी से सब बात कह दी ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

तदुपाकर्ण्य भगवान् प्रहस्य जगदीश्वरः ।
व्याजहार पुनर्गोपान् दर्शयँल्लौकिकीं गतिम् ॥१३॥

पदच्छेद— तत् उपाकर्ण्य भगवान् प्रहस्य जगद् ईश्वरः ।
व्याजहार पुनः गोपान् दर्शयन् लौकिकीम् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ४. | उनकी बात | व्याजहार | १२. | इस प्रकार बोले |
| उपाकर्ण्य | ५. | सुनकर | पुनः | ७. | फिर |
| भगवान् | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण | गोपान् | ८. | ग्वाल-बालों को |
| प्रहस्य | ६. | हंसने लगे | दर्शयन् | ११. | आभास कराते हुये |
| जगद् | १. | समस्त जगत् के | लौकिकीम् | ६. | संसार की |
| ईश्वरः । | २. | स्वामी | गतिम् ॥ | १०. | स्थिति का |

श्लोकार्थ—समस्त जतव् के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण उनकी बात सुनकर हँसने लगे । फिर ग्वाल-बालों को संसार की स्थिति का आभास कराते हुये इस प्रकार बोले ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

मां ज्ञापयत पत्नीभ्यः ससंकर्षणमागतम् ।
दास्यन्ति काममन्नं वः स्निग्धा मय्युषिता धिया ॥१४॥

पदच्छेद— माम् ज्ञापयत पत्नीभ्यः ससंकर्षणम् आगतम् ।
दास्यन्ति कामम् अन्नम् वः स्निग्धाः मयि उषिताःधिया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| माम् | ५. | मेरे बारे में | दास्यन्ति | १०. | देंगी |
| ज्ञापयत | ६. | बताओ | कामम् | ८. | इच्छानुसार |
| पत्नीभ्यः | १. | उन विप्र पत्नियों को | अन्नम् | ६. | अन्न |
| स | ३. | सहित | वः | ७. | वे तुम लोगों को |
| संकर्षणम् | २. | बलराम जी | स्निग्धाः मयि | ११. | वे मुझसे प्रेम करती हैं |
| आगतम् । | ४. | आये हुये | उषिताःधिया ॥ | १२. | उनकी बुद्धि मुझमें लगी रहती है |

श्लोकार्थ—उन विप्र-पत्नियों को बलराम जी सहित आये हुये मेरे बारे में बताओ । वे तुम लोगों को इच्छानुसार अन्न देंगी । वे मुझसे प्रेम करती हैं । उनकी बुद्धि मुझ में लगी रहती है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**गत्वाथ पत्नीशालायां दृष्ट्वाऽऽसीनाः स्वलङ्कृताः ।**
**नत्वा द्विजसतीर्गोपाः प्रश्रिता इदमब्रुवन् ॥१५॥**

पदच्छेद— गत्वा अथ पत्नीशालायाम् दृष्ट्वा आसीनाः सु अलङ्कृताः ।
नत्वा द्विज सतीः गोपाः प्रश्रिताः इदम् अब्रुवन् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गत्वा | ३. गये | | नत्वा | १२. प्रणाम करके |
| अथ | १. अबकी बार | | द्विज | १०. द्विज |
| पत्नी | ५. विप्रपत्नियों | | सतीः | ११. पत्नियों को |
| शालायाम् | २. ग्वालबाल यज्ञ शाला में | | गोपाः | ६. ग्वालबालों ने |
| दृष्ट्वा | ४. उन्होंने देखा कि | | प्रश्रिताः | १३. विनम्रतापूर्वक |
| आसीनाः | ८. बैठी हैं | | इदम् | १४. इस प्रकार |
| सु | ६. सुन्दर सुन्दर | | अब्रुवन् ।। | १५. कहा |
| अलङ्कृताः । | ७. वस्त्राभूषण पहने | | | |

श्लोकार्थ—अबकी बार ग्वालबाल यज्ञशाला में गये । उन्होंने देखा कि विप्र पत्नियाँ सुन्दर सुन्दर वस्त्राभूषण पहने बैठी हैं । ग्वालबालों ने द्विज-पत्नियों को प्रणाम करके इस प्रकार कहा ।

## षोडशः श्लोकः

**नमो वो विप्रपत्नीभ्यो निबोधत वचांसि नः ।**
**इतोऽविदूरे चरता कृष्णेनेहेषिता वयम् ॥१६॥**

पदच्छेद— नमः वः विप्र पत्नीभ्यः निबोधत वचांसि नः ।
इतः अविदूरे चरता कृष्णेन इह ईषिताः वयम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नमः | ४. नमस्कार करते हैं | | इतः | ८. यहाँ से |
| वः | १. आप | | अविदूरे | ६. थोड़ी ही दूर पर |
| विप्र | २. विप्र | | चरता | १०. गौएँ चराते हुये |
| पत्नीभ्यः | ३. पत्नियों को हम | | कृष्णेन | ११. श्रीकृष्ण ने |
| निबोधत | ७. सुनें | | इह | १३. यहाँ |
| वचांसि | ६. बात | | ईषिताः | १४. भेजा है |
| नः । | ५. आप हमारी | | वयम् ।। | १२. हम लोगों को |

श्लोकार्थ—आप विप्र-पत्नियों को हम नमस्कार करते हैं । आप हमारी बात सुनें । यहाँ से थोड़ी ही दूर पर गौएँ चराते हुये श्रीकृष्ण ने हम लोगों को यहाँ भेजा है ।।

## सप्तदशः श्लोकः

**गाश्चारयन् स गोपालैः सरामो दूरमागतः।**
**बुभुक्षितस्य तस्यान्नं सानुगस्य प्रदीयताम् ॥१७॥**

पदच्छेद— गाः चारयन् स गोपालैः सरामः दूरम् आगतः।
बुभुक्षितस्य तस्य अन्नम् स अनुगस्य प्रदीयताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गाः | ४. गौएँ | | बुभुक्षितस्य | ११. भूख लगी है अतः | |
| चारयन् | ५. चराते हुये | | तस्य | ८. इस समय उन्हें | |
| सः | १. वे | | अन्नम् | १२. आप उन्हें भोजन | |
| गोपालैः | २. ग्वालबाल और | | सः | ९. और उनके भोजन | |
| सरामः | ३. बलराम जी के साथ | | अनुगस्य | १०. साथियों को | |
| दूरम् | ६. इधर बहुत दूर तक | | प्रदीयताम् ॥ | १३. देने की कृपा करें | |
| आगतः। | ७. आ गये हैं | | | | |

श्लोकार्थ—वे ग्वालबाल और बलराम जी के साथ गौएँ चराते हुये इधर बहुत दूर तक आ गये हैं। इस समय उन्हें भूख लगी है। अतः आप उन्हें और उनके साथियों को भोजन देने की कृपा करें॥

## अष्टादशः श्लोकः

**श्रुत्वाच्युतमुपायातं नित्यं तद्दर्शनोत्सुकाः।**
**तत्कथाक्षिप्तमनसो बभूवुर्जातसम्भ्रमाः ॥१८॥**

श्रुत्वा अच्युतम् उपायातम् नित्यम् तत् दर्शन उत्सुकाः।
तत् कथा आक्षिप्त मनसः बभूवुः जात सम्भ्रमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रुत्वा | ९. सुन कर | | तत् कथा | १. भगवान् की कथाओं में | |
| अच्युतम् | ७. श्रीकृष्ण को | | आक्षिप्त | ३. लगा होने के कारण | |
| उपायातम् | ८. आया हुआ | | मनसः | २. मन | |
| नित्यम् | ६. नित्य ही करती थीं | | बभूवुः | १२. हो गयीं | |
| तत् दर्शन | ४. उन्हें देखने की | | जात | ११. सी | |
| उत्सुकाः। | ५. इच्छा तो | | सम्भ्रमाः ॥ | १०. वे अत्यन्त उतावली | |

श्लोकार्थ—भगवान् की कथाओं में मन लगा होने के कारण उन्हें देखने की इच्छा तो नित्य ही करती थीं। श्री कृष्ण को आया हुआ सुन कर वे अत्यन्त उतावली सी हो गयीं॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**चतुर्विधं बहुगुणमन्नमादाय भाजनैः ।**
**अभिसस्रुः प्रियं सर्वाः समुद्रमिव निम्नगाः ॥१९॥**

पदच्छेद— चतुर्विधम् बहुगुणम् अन्नम् आदाय भाजनैः ।
अभिसस्रुः प्रियम् सर्वाः समुद्रम् इव निम्नगाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **चतुर्विधम्** | ४. | चार प्रकार का | अभिसस्रुः | ९. | चल दी |
| **बहु** | २. | अत्यन्त | प्रियम् | ८. | प्रिय श्रीकृष्ण के पास वैसे ही |
| **गुणम्** | ३. | स्वादिष्ठ और गुणकारी | सर्वाः | ७. | वे सब अपने |
| **अन्नम्** | ५. | भोजन | समुद्रम् | १२. | समुद्र की ओर बहती हैं |
| **आदाय** | ६. | लेकर | इव | १०. | जैसे |
| **भाजनैः ।** | १. | सुन्दर बर्तनों में | निम्नगाः ॥ | ११. | नदियाँ स्वभावतः |

श्लोकार्थ—सुन्दर बर्तनों में अत्यन्त स्वादिष्ठ और गुणकारी चार प्रकार का भोजन लेकर वे सब अपने प्रिय श्रीकृष्ण के पास वैसे ही चल पड़ीं। जैसे नदियाँ स्वभावतः समुद्र की ओर बहती हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**निषिध्यमानाः पतिभिर्भ्रातृभिर्बन्धुभिः सुतैः ।**
**भगवत्युत्तमश्लोके दीर्घश्रुतधृताशयाः ॥२०॥**

पदच्छेद— निषिध्यमानाः पतिभिः भ्रातृभिः बन्धुभिः सुतैः ।
भगवति उत्तम श्लोके दीर्घश्रुतधृताशयाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **निषिध्यमानाः** | १२. | रोकने पर भी वे न रुकीं | उत्तम | २. | पवित्र |
| **पतिभिः** | ८. | पतियों के | श्लोके | ३. | कीर्ति |
| **भ्रातृभिः** | ९. | भाइयों | दीर्घ | १. | वे बहुत समय से |
| **बन्धुभिः** | १०. | बन्धुओं और | श्रुत | ५. | सुन-सुनकर |
| **सुतैः** | ११. | पुत्रों के द्वारा | धृत | ७. | निश्चय कर चुकी थीं अतः |
| **भगवति ।** | ४. | भगवान् के गुणों को | आशयाः॥ | ६. | उनके दर्शन का |

श्लोकार्थ—वे बहुत समय से पवित्र कीर्ति भगवान् के गुणों को सुन-सुनकर उनके दर्शन का निश्चय कर चुकी थीं। अतः पतियों, भाइयों, बन्धुओं और पुत्रों के द्वारा रोकने पर भी वे नहीं रुकीं।

## एकविंशः श्लोकः

**यमुनोपवनेऽशोकनवपल्लवमण्डिते ।**
**विचरन्तं वृतं गोपैः साग्रजं ददृशुः स्त्रियः ॥२१॥**

पदच्छेद— यमुना उपवने अशोक नवपल्लव मण्डिते ।
विचरन्तम् वृतम् गोपैः स अग्रजम् ददृशुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **यमुना** | ६. | यमुना तट पर | वृतम् | ८. | घिरे हुये |
| **उपवने** | ५. | वन में | गोपैः | ७. | ग्वाल-बालों से |
| **अशोक** | ४. | अशोक | सः | १०. | साथ |
| **नवपल्लव** | २. | नये-नये कोपलों से | अग्रजम् | ९. | बलराम जी के |
| **मण्डिते** | ३. | शोभायमान | ददृशुः | १२. | देखा |
| **विचरन्तम् ।** | ११. | घूमते हुये श्रीकृष्ण को | स्त्रियः ॥ | १. | द्विज पत्नियों ने |

श्लोकार्थ—द्विज-पत्नियों ने नये-नये कोपलों से शोभायमान अशोक वन में यमुना तट पर ग्वाल-बालों से घिरे हुये बलराम जी के साथ घूमते हुये श्रीकृष्ण को देखा ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**श्यामं हिरण्यपरिधिं वनमाल्यबर्हधातुप्रवालनटवेषमनुव्रतांसे ।**
**विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमब्जं कर्णोत्पलालककपोलमुखाब्जहासम् ॥२२॥**

पदच्छेद—श्यामम् हिरण्यपरिधिम् वनमाल्यबर्ह धातुप्रवाल नटवेषम् अनुव्रतांसे ।
विन्यस्तहस्तम् इतरेण धुनानम् अब्जम् कर्ण उत्पल अलक कपोल मुखअब्जहासम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **श्यामम्** | १. | साँवले शरीर पर | विन्यस्त | १०. | रखे हुये और |
| **हिरण्य** | २. | सुनहला | हस्तम् | १२. | हाथ से |
| **परिधिम्** | ३. | पीताम्बर है | इतरेण | ११. | दूसरे |
| **वनमाल्य** | ४. | गले में वनमाला | धुनानम् | १४. | नचा रहे हैं |
| **बर्ह** | ५. | मस्तक पर मोर पंख | अब्जम् | १३. | कमल का फूल |
| **धातु** | ६. | अङ्गों में धातु की चित्रकारी | कर्ण उत्पल | १५. | कानों में कमल के कुण्डल |
| **प्रवाल** | ७. | कोपलों से सजा | अलक कपोल | १६. | कपोलों पर घुंघराली अलकें |
| **नटवेषम्** | ८. | नट जैसा वेष है | मुखअब्जम् | १७. | और मुख कमल में |
| **अनुव्रतांसे ।** | ९. | एक हाथ सखा के कन्धे पर | हासम् ॥ | १८. | मन्द मुस्कान है |

श्लोकार्थ—साँवले शरीर पर सुनहला पीताम्बर है, गले में वनमाला, मस्तक पर मोर पंख, अङ्गों में धातु की चित्रकारी, कोपलों से सजा नट जैसा वेष है । एक हाथ सखा के कन्धे पर रखे हुये और दूसरे हाथ से कमल का फूल नचा रहे हैं । कानों में कमल के कुण्डल और कपोलों पर घूंघराली अलकें और मुख कमल में मधुर मुस्कान है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**प्रायः श्रुतप्रियतमोदयकर्णपूरैर्यस्मिन् निमग्नमनसस्तमथाक्षिरन्ध्रैः ।**
**अन्तः प्रवेश्य सुचिरं परिरभ्य तापं प्राज्ञं यथाभिमतयो विजहुर्नरेन्द्र ॥२३॥**

पदच्छेद— प्रायः श्रुत प्रियतम उदय कर्ण पूरैः यस्मिन् निमग्न मनसः तम् अथ अक्षिरन्ध्रैः ।
अन्तः प्रवेश्य सुचिरं परिरभ्य तापम् प्राज्ञम् यथा अभिमतयः विजहुः नरेन्द्र ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **प्रायः** | २. | अब तक | अन्तः प्रवेश्य | १०. | अन्दर ले जाकर |
| **श्रुत** | ४. | सुन-सुनकर उन्हें | सुचिरम् | ११. | बहुत देर तक |
| **प्रियतम उदय** | ३. | अपने प्रियतम के गुणों को | परिरभ्य | १२. | आलिङ्गन करके |
| **कर्ण पूरैः** | ५. | कानों में भरा था | तापम् | १३. | हृदय की पीड़ा को शान्त किया |
| **यस्मिन्** | ६. | उसी में उनका | प्राज्ञम् | १५. | सुषुप्ति के अभिमानी को |
| **निमग्नमनसः** | ७. | मन डूबा हुआ था | यथा अभिमतयः | १४. | जैसे जाग्रत स्वप्न की वृत्तियाँ |
| **तम् अथ** | ८. | उन्हें अब | विजहुः | १६. | पाकर शान्त हो जाती हैं |
| **अक्षिरन्ध्रैः ।** | ९. | नेत्रों के द्वारा | नरेन्द्र ।। | १. | हे परीक्षित् ! उन्होंने |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उन्होंने अब तक अपने प्रियतम के गुणों को सुन-सुन कर उन्हें कानों में भरा था । उसी में उनका मन डूबा हुआ था उन्हें अब नेत्रों के द्वारा अन्दर ले जाकर बहुत देर तक आलिङ्गन करके हृदय की पीड़ा को शान्त किया । जैसे जाग्रत स्वप्न की वृत्तियाँ सुषुप्ति के अभिमानी को पाकर शान्त हो जाती हैं ।।

## चतुर्विंशः श्लोकः

**तास्तथा त्यक्तसर्वाशाः प्राप्ता आत्मदिदृक्षया ।**
**विज्ञायाखिलदृग्द्रष्टा प्राह प्रहसिताननः ॥२४॥**

पदच्छेद— ताः तथा त्यक्त सर्वा आशाः प्राप्ताः आत्मदिदृक्षया ।
विज्ञाय अखिल दृग्द्रष्टा प्राह प्रहसित आननः ।।

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **ताः** | ५. | उन विप्रपत्नियों को | विज्ञाय | ३. | वे सबके हृदय को जानते हैं |
| **तथा** | ४. | उन्होंने | अखिल | १. | भगवान् सबकी |
| **त्यक्त** | ८. | छोड़ कर | दृग्द्रष्टा | २. | बुद्धियों के साक्षी हैं |
| **सर्वा** | ६. | सबकी | प्राह | १३. | इस प्रकार कहा |
| **आशाः** | ७. | आशा | प्रहसित | ११. | हंसते हुये |
| **प्राप्ताः** | १०. | आई हुई जानकर | आननः ।। | १२. | मुखारविन्द से |
| **आत्मदिदृक्षया ।** | ९. | अपने दर्शन के लिये | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् सबकी बुद्धियों के साक्षी हैं । उन्होंने उन विप्र-पत्नियों को सबकी आशा छोड़कर अपने दर्शन के लिये आई हुई जानकर हंसते हुये मुखारविन्द से इस प्रकार कहा ।।

## पञ्चविंशः श्लोकः

**स्वागतं वो महाभागा आस्यतां करवाम किम् ।**
**यन्नो दिदृक्षया प्राप्ता उपपन्नमिदं हि वः ॥२५॥**

पदच्छेद— स्वागतम् वः महाभागा आस्यताम् करवाम किम् ।
यत् नः दिदृक्षया प्राप्ताः उपपन्नम् इदम् हि वः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वागतम् | ३. | स्वागत है | यत् नः | ७. | क्योंकि तुम लोग हमारे |
| वः | २. | आपका | दिदृक्षया | ८. | दर्शन की इच्छा से |
| महाभागाः | १. | महाभाग्यवती देवियो | प्राप्ताः | ९. | यहाँ पर आयी हो |
| आस्यताम् | ४. | आओ बैठो | उपपन्नम् | १२. | उचित ही है |
| करवाम | ६. | सेवा करें | इदम् | ११. | यह |
| किम् । | ५. | हम क्या | हि वः ॥ | १०. | तुम लोगों के लिये |

श्लोकार्थ—महाभाग्यवती देवियो ! आपका स्वागत है । आओ, बैठो, हम क्या सेवा करें । क्योंकि तुम लोग हमारे दर्शन की इच्छा से यहाँ आई हो । तुम लोगों के लिये यह उचित ही है ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**नन्वद्धा मयि कुर्वन्ति कुशलाः स्वार्थदर्शनाः ।**
**अहैतुक्यव्यवहितां भक्तिमात्मप्रिये यथा ॥२६॥**

पदच्छेद— ननु अद्धा मयि कुर्वन्ति कुशलाः स्वार्थ दर्शनाः ।
अहैतुकी अव्यवहिताम् भक्तिम् आत्म प्रिये यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ननु | १. | इसमें सन्देह नहीं | अहैतुकी | १०. | अहैतुकी और |
| अद्धा | २. | कि | अव्यवहिताम् | ११. | सच्ची |
| मयि | ६. | मुझसे | भक्तिम् | १२. | भक्ति |
| कुर्वन्ति | १३. | करते हैं | आत्म | ७. | अपने |
| कुशलाः | ३. | संसार के कुशल और | प्रिये | ८. | प्रियतम के |
| स्वार्थ | ४. | अपना सच्चा स्वार्थ | यथा ॥ | ९. | समान |
| दर्शनः । | ५. | जानने वाले लोग | | | |

श्लोकार्थ—इसमें सन्देह नहीं कि संसार के कुशल और अपना सच्चा स्वार्थ जानने वाले लोग मुझसे अपने प्रियतम के समान अहैतुकी और सच्ची भक्ति करते हैं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**प्राणबुद्धिमनःस्वात्मदारापत्यधनादयः ।**
**यत्सम्पर्कात् प्रिया आसंस्ततः को न्वपरः प्रियः ॥२७॥**

पदच्छेद-- प्राण बुद्धि मनःस्व आत्मदाराः अपत्य धनआदयः ।
यत् सम्पर्कात् प्रियाः आसन् ततः कः नु अपरः प्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्राण-बुद्धि | १. | प्राण-बुद्धि | यत् | ८. | जिसके |
| मनः | २. | मन | सम्पर्कात् | ९. | सम्पर्क से |
| स्व | ३. | स्वजन | प्रियाः आसन् | १०. | प्रिय लगते हैं |
| आत्मदारा | ४. | शरीर-स्त्री | ततः | ११. | उस आत्म स्वरूप मेरे |
| अपत्य | ५. | पुत्र और | कः नु | १३. | निश्चय ही और कौन |
| धन | ६. | धन | अपरः | १२. | अतिरिक्त |
| आदयः । | ७. | आदि | प्रियः ॥ | १४. | प्रिय हो सकता है |

श्लोकार्थ—प्राण-बुद्धि, स्वजन, शरीर-स्त्री, पुत्र और धन आदि जिसके सम्पर्क से प्रिय लगते हैं। उन आत्म स्वरूप मेरे अतिरिक्त निश्चय ही और कौन प्रिय हो सकता है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**तद् यात देवयजनं पतयो वो द्विजातयः ।**
**स्वसत्रं पारयिष्यन्ति युष्माभिर्गृहमेधिनः ॥२८॥**

पदच्छेद— तत् यात देवयजनम् पतयः वः द्विजातयः ।
स्वसत्रम् पारयिष्यन्ति युष्माभिः गृहमेधिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | इसलिये | स्व | १०. | अपना |
| यात | ३. | लौट जाओ | सत्रम् | ११. | यज्ञ |
| देवयजनम् | २. | यज्ञशाला में | पारयिष्यन्ति | १२. | पूर्ण करेंगे |
| पतयः | ५. | पति | युष्माभिः | ९. | वे तुम्हारे साथ मिलकर |
| वः | ४. | तुम्हारे | गृह | ७. | घर |
| द्विजातयः | ६. | ब्राह्मण | मेधिनः ॥ | ८. | गृहस्थी वाले हैं |

श्लोकार्थ—इसलिये यज्ञशाला में लौट जाओ। तुम्हारे पति ब्राह्मण घर गृहस्थी वाले हैं। वे तुम्हारे साथ मिलकर अपना यज्ञ पूर्ण करेंगे ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

**मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं सत्यं कुरुष्व निगमं तव पादमूलम् ।**
**प्राप्ता वयं तुलसिदाम पदावसृष्टं केशैर्निवोढुमतिलङ्घ्य समस्तबन्धून् ॥२९॥**

पदच्छेद—मा एवम् विभो अर्हति भवान् गदितुम् नृशंसम् सत्यम् कुरुष्व निगमम् तव पाद मूलम् ।
प्राप्ताः वयम् तुलसिदाम पद अवसृष्टम् केशैः निवोढुम् अतिलङ्घ्य समस्तबन्धून् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मा एवम् | ५. | नहीं है, (आप) | प्राप्ताः | १२. | प्राप्त किया है जिससे |
| विभो | १. | हे प्रभो ! | वयम् | ८ | हमने |
| अर्हति | ४. | किसी प्रकार भी उचित | तुलसिदाम | १४. | तुलसी की माला को |
| भवान् | २. | आपके लिये | पद अवसृष्टम् | १३. | आपके चरणों से गिरी हुई |
| गदितुम् नृशंसम् | ३. | ऐसा कठोर बोलना | केशैः | १५. | अपने केशों में |
| सत्यम् कुरुष्व | ७. | सत्य कीजिये | निवोढुम् | १६. | धारण कर सकें |
| निगमम् | ६. | अपनी वेदवाणी को | अतिलङ्घ्य | १०. | छोड़कर |
| तव पाद मूलम् | ११. | आपके चरण कमलों को इसलिये | समस्त बन्धून् | ९. | समस्त बन्धु बान्धवों को |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपके लिये ऐसा कठोर बोलना किसी प्रकार भी उचित नहीं है । आप अपनी वेदवाणी सत्य कीजिये । हमने समस्त बन्धु-बान्धवों को छोड़कर आपके चरण कमलों को इसलिये प्राप्त किया है, जिससे आपके चरणों से गिरी हुई तुलसी की माला को हम अपने केशों में धारण कर सकें ।

# त्रिंशः श्लोकः

**गृह्णन्ति नो न पतयः पितरौ सुता वा न भ्रातृबन्धुसुहृदः कुत एव चान्ये ।**
**तस्माद् भवत्प्रपदयोः पतितात्मनां नो नान्या भवेद् गतिररिन्दम तद् विधेहि ३०**

पदच्छेद—गृह्णन्ति नो न पतयः पितरौ सुता वा न भ्रातृ बन्धुसुहृदः कुत एव च अन्ये ।
तस्मात् भवत् प्रपदयोः पतित आत्मनाम् नः न अन्या भवेत् गतिः अरिन्दम तद् विधेहि ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गृह्णन्ति | ६. | स्वीकार करेंगे फिर | तस्मात् | ९. | इसलिये। |
| नः न | १. | हमें न तो | भवत् प्रपदयोः | १०. | आपके चरणों में |
| पतयः | २. | पति | पतित आत्मनाम् | ११. | पड़ी हुई |
| पितरौ सुताः | ३. | पिता-पुत्र | नः | १२. | हम लोगों को |
| वा न भ्रातृ | ४. | और न भाई | न अन्या | १३. | नहीं दूसरे किसी की |
| बन्धु सुहृदः | ५. | बन्धु वा स्वजन ही | भवेत् गतिः | १४. | शरण में जाना पड़े |
| कुत एव | ८. | बात ही क्या है | अरिन्दम | १५. | हे वीर शिरोमणि । |
| च अन्ये । | ७. | अन्य लोगों की तो | तत् विधेहि ॥ | १६. | आप ऐसी ही व्यवस्था करिये |

श्लोकार्थ—हमें न तो पति-पिता-पुत्र और न भाई-बन्धु-वा स्वजन ही स्वीकार करेंगे । फिर अन्य लोगों की तो बात ही क्या है । इसलिये आपके चरणों में पड़ी हुई हम लोगों को नहीं किसी दूसरे की शरण में जाना पड़े । हे वीरशिरोमणि ! आप ऐसी ही व्यवस्था करिये ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—पतयो नाभ्यसूयेरन् पितृभ्रातृसुतादयः ।
लोकाश्च वो मयोपेता देवा अप्यनुमन्वते ॥३१॥

पदच्छेद— पतयः न अभ्यसूयेरन् पितृ भ्रातृ सुत आदयः ।
लोकाः च वः मया उपेताः देवाः अपि अनुमन्वते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पतयः | १. तुम्हारे पति | लोकः | ११. | संसार में भी कोई तुम्हारा तिरस्कार नहीं करेगा |
| न | ७. नहीं करेंगे | च वः | ८. | और |
| अभ्यसूयेरन् | ६. तुम्हारा तिरस्कार | मया | ९. | मुझसे |
| पितृ | २. माता-पिता | उपेताः | १०. | सम्बद्ध होने के कारण |
| भ्रातृ | ३. भाई-बन्धु | देवाः | १२. | ये देवता |
| सुत | ४. पुत्र | अपि | १३. | भी |
| आदयः । | ५. आदि कोई भी | अनुमन्वते ॥ | १४. | मेरी बात का अनुमोदन कर रहे हैं |

श्लोकार्थ—तुम्हारे पति, माता, पिता, भाई-बन्धु, पुत्र आदि कोई भी तुम्हारा तिरस्कार नहीं करेंगे । और मुझसे सम्बद्ध होने के कारण संसार में भी कोई तुम्हारा तिरस्कार नहीं करेगा । ये देवता भी मेरी बात का अनुमोदन कर रहे हैं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

न प्रीतयेऽनुरागाय ह्यङ्गसङ्गो नृणामिह ।
तन्मनो मयि युञ्जाना अचिरान्मामवाप्स्यथ ॥३२॥

पदच्छेद— न प्रीतये अनुरागाय हि अङ्ग सङ्गः नृणाम् इह ।
तत् मनः मयि युञ्जानाः अचिरात् माम् अवाप्स्यथ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| न | ७. नहीं हैं | तत् | ८. | इस लिये |
| प्रीतये | ५. मेरी प्रीति या | मनः | ९. | अपना मन |
| अनुरागाय | ६. अनुराग का कारण | मयि | १०. | मुझमें |
| हि अङ्ग | २. मेरा अङ्ग | युञ्जानाः | ११. | लगाओ इससे |
| सङ्गः | ३. सङ्ग ही | अचिरात् | १२. | बहुत शीघ्र तुम्हें |
| नृणाम् | ४. मनुष्यों में | माम् | १३. | मेरी |
| इह । | १. इस संसार में | अवाप्स्यथ ॥ | १४ | प्राप्ति होगी |

श्लोकार्थ—इस संसार में मेरा अङ्ग-सङ्ग ही मनुष्यों में मेरी प्रीति या अनुराग का कारण नहीं है । इसलिये अपना मन मुझमें लगाओ । इससे बहुत शीघ्र तुम्हें मेरी प्राप्ति होगी ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**इत्युक्ता द्विजपत्न्यस्ता यज्ञवाटं पुनर्गताः।**
**ते चानसूयवः स्वाभिः स्त्रीभिः सत्रमपारयन् ॥३३॥**

पदच्छेद— इति उक्ताः द्विजपत्न्यः ताः यज्ञवाटम् पुनः गताः।
ते च अनसूयवः स्वाभिः स्त्रीभिः सत्रम् अपारयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. भगवान् के ऐसा | ते | ९. उन ब्राह्मणों ने |
| उक्ताः | २. कहने पर | च | ८. और |
| द्विजपत्न्यः | ४. ब्राह्मण-पत्नियाँ | अनसूयवः | १२. तनिक भी दोष नही देखा |
| ताः | ३. वे | स्वाभिः | १०. अपनी |
| यज्ञवाटम् | ६. यज्ञशाला में | स्त्रीभिः | ११. स्त्रियों में |
| पुनः | ५ फिर से | सत्रम् | १३. उनके साथ यज्ञ |
| गताः। | ७. लौट गयीं | अपारयन् ॥ | १४. पूर्ण किया |

श्लोकार्थ—भगवान् के ऐसा कहने पर वे ब्राह्मण-पत्नियाँ फिर से यज्ञशाला में लौट गयीं। और उन ब्राह्मणों ने अपनी स्त्रियों में तनिक भी दोष नहीं देखा। उनके साथ यज्ञ पूर्ण किया ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**तत्रैका विधृता भर्त्रा भगवन्तं यथाश्रुतम्।**
**हृदोपगुह्य विजहौ देहं कर्मानुबन्धनम् ॥३४॥**

पदच्छेद— तत्र एका विधृता भर्त्रा भगवन्तम् यथा श्रुतम्।
हृदा उपगुह्य विजहौ देहम् कर्म अनुबन्धनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र | १. उन स्त्रियों में | हृदा | ८. अपने हृदय में |
| एका | २. एक स्त्री को | उपगुह्यम् | ९. ध्यान किया और |
| विधृता | ४. रोक लिया था | विजहौ | १३. छोड़ दिया |
| भर्त्रा | ३. उसके पति ने | देहम् | १२. अपने शरीर को |
| भगवन्तम् | ५. उसने भगवान् का | कर्म | १०. कर्म के द्वारा |
| यथा | ६. जैसा रूप | अनुबन्धनम् | ११. बने हुये |
| श्रुतम्। | ७. सुना था वैसा ही | | |

श्लोकार्थ—उन स्त्रियों में एक स्त्री को उसके पति ने रोक लिया था। उसने भगवान् का जैसा रूप सुना था वैसा ही अपने हृदय में ध्यान किया और कर्म के द्वारा बने हुये अपने शरीर को छोड़ दिया ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**भगवानपि गोविन्दस्तेनैवान्नेन गोपकान् ।**
**चतुर्विधेनाशयित्वा स्वयं च बुभुजे प्रभुः ॥३५॥**

पदच्छेद— भगवान् अपि गोविन्दः तेन एव अन्नेन गोपकान् ।
चतुर्विधेन आशयित्वा स्वयम् च बुभुजे प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | १. | भगवान् | चतुर्विधेन | ५. | चार प्रकार के |
| अपि | ३. | भी | आशयित्वा | ८. | भोजन कराया |
| गोविन्दः | २. | श्री कृष्ण ने | स्वयम् | ११. | स्वयम् |
| तेन एव | ४. | उसी | च | ९. | और |
| अन्नेन | ६. | अन्न से पहले | बुभुजे | १२. | भोजन किया |
| गोपकान् । | ७. | ग्वाल बालों को | प्रभुः ॥ | १०. | भगवान् ने फिर |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उसी चार प्रकार के अन्न से पहले ग्वाल बालों को भोजन कराया और भगवान् ने फिर स्वयम् भोजन किया ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**एवं लीलानरवपुर्नृलोकमनुशीलयन् ।**
**रेमे गोगोपगोपीनां रमयन् रूपवाक्कृतैः ॥३६॥**

पदच्छेद— एवम् लीला नर वपुः नृलोकम् अनुशीलयन् ।
रेमे गो गोप गोपीनाम् रमयन् रूप वाक् कृतैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | रेमे | ११. | अनेक क्रीडायें कीं |
| लीला नर | २. | लीला से मनुष्य | गोगोप | ६. | गायों, ग्वाल बालों और |
| वपुः | ३. | शरीरधारी भगवान् ने | गोपीनाम् | ७. | गोपियों को |
| नृलोकम् | ४. | मनुष्य जैसी लीला | रमयन् | ८. | आनन्दित करते हुये |
| अनुशीलयन् । | ५. | करते हुये | रूप वाक् | ९. | अपने सौन्दर्य-माधुर्य वाणी से |
| | | | कृतैः ॥ | १०. | कर्मों के द्वारा |

श्लोकार्थ—इस प्रकार लीला से मनुष्य शरीरधारी भगवान् ने मनुष्य जैसी लीला करते हुये, गायों, ग्वाल बालों और गोपियों को आनन्दित करते हुये अपने सौन्दर्य, माधुर्य वाणी से कर्मों के द्वारा अनेक क्रीडायें कीं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**अथानुस्मृत्य विप्रास्ते अन्वतप्यन् कृतागसः ।**
**यद् विश्वेश्वरयोर्याच्ञामहन्म नृविडम्बयोः ॥३७॥**

पदच्छेद— अथ अनुस्मृत्य विप्राः ते अन्वतप्यन् कृत आगसः ।
यत् विश्वेश्वरयोः याच्ञाम् अहन्म नृविडम्बयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | इधर | यत् | ८. | कि |
| अनुस्मृत्य | ६. | स्मरण किया तो | विश्व | ९. | जगत् के |
| विप्राः | ३. | ब्राह्मणों ने जब | ईश्वरयोः | १०. | ईश्वर भगवान् की |
| ते | २. | उन | याच्ञाम् | ११. | आज्ञा का उल्लंघन करके |
| अन्वतप्यन् | ७. | उन्हें पश्चात्ताप हुआ | अहन्म | १२. | हमने बड़ा अपराध किया है |
| कृत | ४. | अपने किये | नृ | १३. | मनुष्य |
| आगसः । | ५. | अपराध का | विडम्बयोः ॥ | १४. | लीला करने वाले वे भगवान् हैं |

श्लोकार्थ—इधर उन ब्राह्मणों ने जब अपने किये अपराध का स्मरण किया तो उन्हें बड़ा पश्चात्ताप हुआ कि जगत् के ईश्वर भयवान् की आज्ञा का उल्लंघन करके हमने बड़ा अपराध किया है। मनुष्य लीला करने वाले वे भगवान् ही हैं ॥

## अष्टत्रिंशः श्लोकः

**दृष्ट्वा स्त्रीणां भगवति कृष्णे भक्तिमलौकिकीम् ।**
**आत्मानं च तया हीनमनुतप्ता व्यगर्हयन् ॥३८॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा स्त्रीणाम् भगवति कृष्णे भक्तिम् अलौकिकीम् ।
आत्मानम् च तया हीनम् अनुतप्ताः व्यगर्हयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ६. | देखकर | आत्मानम् | ८. | स्वयम् को |
| स्त्रीणाम् | ३. | अपनी स्त्रियों की | च | ७. | ओर |
| भगवति | १. | भगवान् | तया | ९. | उस भक्तिसे |
| कृष्णे | २. | श्रीकृष्ण में | हीनम् | १०. | रहित देखकर वे |
| भक्तिम् | ५. | भक्ति को | अनुतप्ताः | ११. | पछताते हुये |
| अलौकिकीम् । | ४. | अलौकिक | व्यगर्हयन् ॥ | १२. | अपनी निन्दा करने लगे |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण में अपनी स्त्रियों की अलौकिक भक्ति को देखकर और स्वयम् को उस भक्ति से रहित देखकर वे पछताते हुये अपनी निन्दा करने लगे ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**धिग् जन्म नस्त्रिवृद् विद्यां धिग् व्रतं धिग् बहुज्ञताम् ।**
**धिक् कुलं धिक् क्रियादाक्ष्यं विमुखा ये त्वधोक्षजे ॥३९॥**

पदच्छेद— धिक् जन्म नः त्रिवृत् विद्याम् धिक् व्रतम् धिक् बहुज्ञताम् ।
धिक् कुलम् धिक् क्रिया दाक्ष्यम् विमुखाः ये तु अधोक्षजे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| धिक् | ३. धिक्कार है | धिक् | ९. धिक्कार है |
| जन्म | २. जन्म को | कुलम् | ८. कुलको |
| नः | १ हमारे | धिक् | १२. धिक्कार |
| त्रिवृत् | ४. वेदत्रयी का | क्रिया | १०. कर्मकाण्ड की |
| विद्याम् | ५. अध्ययन व्यर्थ है | दाक्ष्यम् | ११. निपुणता को |
| धिक् व्रतम् | ६. हमारे व्रतों को धिक्कार है | विमुखाः | १४. विमुख हो रहे हैं |
| धिक् बहुज्ञताम् । | ७. ज्ञान को धिक्कार है | ये तु अधोक्षजे ॥ | १३. जो कि हम श्रीकृष्ण से |

श्लोकार्थ—हमारे जन्म को धिक्कार है । वेदत्रयी का अध्ययन व्यर्थ है । हमारे व्रतों को धिक्कार है, ज्ञान को धिक्कार है । कुल को धिक्कार है । कर्मकाण्ड की निपुणता को धिक्कार है । जो कि हम श्रीकृष्ण से विमुख रहे हैं ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**नूनं भगवतो माया योगिनामपि मोहिनी ।**
**यद् वयं गुरवो नृणां स्वार्थे मुह्यामहे द्विजाः ॥४०॥**

पदच्छेद— नूनम् भगवतः माया योगिनाम् अपि मोहिनी ।
यत् वयम् गुरवः नृणाम् स्वार्थे मुह्यामहे द्विजाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नूनम् | १. निश्चय ही | यत् वयम् | ७. जो कि हम |
| भगवतः | २. भगवान् की | गुरवः | ९. गुरु |
| माया | ३. माया | नृणाम् | ८. मनुष्यों के |
| योगिनाम् | ४. बड़े-बड़े योगियों को | स्वार्थे | ११. अपने स्वार्थ में |
| अपि | ५. भी | मुह्यामहे | १२. मोहित हो रहे हैं |
| मोहिनी । | ६. मोहित कर लेती है | द्विजाः ॥ | १०. और ब्राह्मण होकर भी |

श्लोकार्थ—निश्चय ही भगवान् की माया बड़े-बड़े योगियों को भी मोहित कर लेती है । जो कि हम मनुष्यों के गुरु और ब्राह्मण होकर भी अपने स्वार्थ में मोहित हो रहे हैं ॥

# एकचत्वारिंशः श्लोकः

**अहो पश्यत नारीणामपि कृष्णे जगद्गुरौ ।**
**दुरन्तभावं योऽविध्यन्मृत्युपाशान् गृहाभिधान् ॥४१॥**

पदच्छेद— अहो पश्यत नारीणाम् अपि कृष्णे जगद्गुरौ ।
दुरन्त भावम् यः अविध्यत् मृत्यु पाशान् गृह अभिधान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो | १. | आचार्य है | दुरन्त | ८. | कैसा विलक्षण |
| पश्यत | २. | देखो तो सही | भावम् | ९. | प्रेम है |
| नारीणाम् | ६. | इन स्त्रियों का | यः | १०. | जिससे इन्होंने |
| अपि | ७. | भी | अविध्यत् | १४. | काट डाला है |
| कृष्णे | ५. | श्रीकृष्ण में | मृत्यु | १२. | मृत्यु की बड़ी |
| जगत् | ३. | जगद् | पाशान् | १३. | फाँसी को भी |
| गुरौ । | ४. | गुरु भगवान् | गृह अभिधान् ॥ | ११. | गृहस्थी नामक |

श्लोकार्थ—आश्चर्य है ! देखो तो सही जगद् गुरु भगवान् श्रीकृष्ण में इन स्त्रियों का भी कितना विलक्षण प्रेम है। जिससे इन्होंने गृहस्थी नामक मृत्यु की बड़ी फाँसी को भी काट डाला है ॥

# द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**नासां द्विजातिसंस्कारो न निवासो गुरावपि ।**
**न तपो नात्ममीमांसा न शौचं न क्रियाः शुभाः ॥४२॥**

पदच्छेद— न आसाम् द्विजाति संस्कारः न निवासः गुरौ अपि ।
न तपः न आत्म मीमांसा न शौचम् न क्रियाः शुभाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न आसाम् | ३. | इनमें नहीं हैं | न तपः | ८. | न तपस्या की है |
| द्विजाति | १. | ब्राह्मणों के | न आत्म | ९. | न आत्मा का |
| संस्कारः | २. | संस्कार | मीमांसा | १०. | अनुसन्धान किया |
| न | ७. | नहीं किया | न | ११. | न |
| निवासः | ६. | निवास | शौचम् | १२. | पवित्रता है और |
| गुरौ | ४. | गुरुकुल में | न क्रियाः | १४. | कर्म भी तो इन्होंने नहीं किये हैं |
| अपि । | ५ | भी इन्होंने | शुभाः ॥ | १३. | शुभ |

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के संस्कार इनमें नहीं हैं। गुरुकुल में भी इन्होंने निवास नहीं किया है। और न तपस्या की है। न आत्मा का अनुसन्धान ही किया है। न पवित्रता है। और शुभ कर्म भी तो इन्होंने नहीं किये हैं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**अथापि ह्युत्तमश्लोके कृष्णे योगेश्वरेश्वरे।**
**भक्तिर्दृढा न चास्माकं संस्कारादिमतामपि ॥४३॥**

पदच्छेद— अथापि हि उत्तम श्लोके कृष्णे योगेश्वर ईश्वरे।
भक्तिः दृढा न च अस्माकम् संस्कार आदि मताम् अपि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथापि हि | १. | फिर भी | भक्तिः | ८. | भक्ति है जो |
| उत्तम | २. | पवित्र | दृढा | ७. | इनकी कैसी अखण्ड |
| श्लोके | ३. | कीर्ति | न च | १२. | और लोगों में नहीं पायी जाती |
| कृष्णे | ६. | श्रीकृष्ण में | अस्माकम् | ११. | हम जैसे |
| योगेश्वर | ४. | योगेश्वर | संस्कार आदि | ९. | संस्कार |
| ईश्वरे। | ५. | भगवान् | मताम् अपि ॥ | १०. | सम्पन्न भी |

श्लोकार्थ—फिर भी पवित्र कीर्ति योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण में इनकी कैसी अखण्ड भक्ति है। जो संस्कार सम्पन्न भी हम जैसे लोगों में नहीं पायी जाती है।

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**ननु स्वार्थविमूढानां प्रमत्तानां गृहेहया।**
**अहो नः स्मारयामास गोपवाक्यैः सतां गतिः ॥४४॥**

पदच्छेद— ननु स्वार्थ विमूढानाम् प्रमत्तानाम् गृह ईहया।
अहो नः स्मारयामास गोप वाक्यैः सताम् गतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ननु | १. | सच तो यह है कि | अहो | १२. | यह बड़ा आश्चर्य है |
| स्वार्थ | ४. | स्वार्थ के कारण | नः | ७. | हम लोगों को भगवान् ने |
| विमूढानाम् | ५. | मूढ बने | स्मारयामास | ११. | स्मरण कराया है |
| प्रमत्तानाम् | ६. | मतवाले | गोप | ८. | ग्वालों के |
| गृह | २. | गृहस्थी में | वाक्यैः | ९. | वचनों के द्वारा |
| ईहया। | ३. | फंसे हुये | सताम् गतिः ॥ | १०. | सन्तों के आचरण का |

श्लोकार्थ—सच तो यह है कि गृहस्थी में फंसे हुये स्वार्थ के कारण मूढ बने मतवाले हम लोगों को भगवान् ने ग्वालों के वचनों के द्वारा सन्तों के आचरण का स्मरण कराया है। यह बड़ा आश्चर्य है ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**अन्यथा पूर्णकामस्य कैवल्याद्याशिषां पतेः ।**
**ईशितव्यैः किमस्माभिरीशस्यैतद् विडम्बनम् ॥४५॥**

पदच्छेद— अन्यथा पूर्णकामस्य कैवल्य आदि आशिषाम् पतेः ।
ईशितव्यैः किम् अस्माभिः ईशस्य एतद् विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्यथा | १. | अन्यथा | ईशितव्यैः | ९. | प्रयोजन है ? |
| पूर्णकामस्य | २. | पूर्णकाम भगवान् तो | किम् | ८. | उन्हें क्या |
| कैवल्य | ३. | कैवल्य | अस्माभिः | ७. | फिर हमसे |
| आदि | ४. | आदि समस्त | ईशस्य | ११. | परमात्मा का |
| आशिषाम् | ५. | कामनाओं को | एतद् | १०. | यह तो |
| पतेः । | ६. | पूर्ण करने वाले हैं | विडम्बनम् ॥ | १२. | एक बहाना ही था । |

श्लोकार्थ—अन्यथा पूर्ण काम भगवान् तो कैवल्य आदि समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले है । फिर हमसे उन्हें क्या प्रयोजन है ? यह तो परमात्मा का एक बहाना ही था ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**हित्वान्यान् भजते यं श्रीः पादस्पर्शाशया सकृत् ।**
**आत्मदोषापवर्गेण तद्याच्ञा जनमोहिनी ॥४६॥**

पदच्छेद— हित्वा अन्यान् भजते यम् श्रीः पादस्पर्श आशया सकृत् ।
आत्मदोष अपवर्गेण तत् याच्ञा जन मोहिनी ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हित्वा | ३. | छोड़ कर तथा | सकृत् । | ६. | केवल एक बार |
| अन्यान् | २. | अन्य देवों को | आत्मदोष | ४. | अपने दोषों को |
| भजते | १०. | सेवा करती रहती हैं | अपवर्गेण | ५. | त्याग कर |
| यम् | ७. | जिन भगवान् के | तत् | ११. | वे ही प्रभु |
| श्रीः | १. | स्वयं लक्ष्मी जी भी | याच्ञा | १२. | भोजन की याचना करें |
| पादस्पर्श | ८. | चरण स्पर्श की | जन | १३. | यह तो लोगों को |
| आशया | ९. | कामना से उनकी | मोहिनी ॥ | १४. | मोहित करने के लिये ही है । |

श्लोकार्थ—स्वयं लक्ष्मी जी भी अन्य देवों को छोड़ कर तथा अपने दोषों को त्याग कर केवल एक बार जिन भगवान् के चरण स्पर्श की कामना से उनकी सेवा करती रहती हैं, वे ही प्रभु भोजन की याचना करें, यह तो लोगों को मोहित करने के लिये ही है ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**देशः कालः पृथग्द्रव्यं मन्त्र-मन्त्रर्त्विजोऽग्नयः ।**
**देवता यजमानश्च क्रतुर्धर्मश्च यन्मयः ॥४७॥**

पदच्छेद— देशः कालः पृथक् द्रव्यम् मन्त्र-तन्त्र ऋत्विजः अग्नयः ।
देवता यजमानः च क्रतुः धर्मः च यन्मयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देशः | १. | देश | देवता | ८. | देवता |
| कालः | २. | काल | यजमानः | ९. | यजमान |
| पृथक् | ३. | पृथक्-पृथक् | च | ११. | और |
| द्रव्यम् | ४. | सामग्रियाँ | क्रतुः | १०. | यज्ञ |
| मन्त्र-तन्त्र | ५. | मन्त्र-तन्त्र | धर्मः | १२. | धर्म |
| ऋत्विजः | ६. | ऋत्विज | च | १३. | ये सभी |
| अग्नयः । | ७. | अग्नि | यन्मयः ॥ | १४. | भगवान् के ही रूप हैं |

श्लोकार्थ—देश, काल, पृथक्-पृथक् सामग्रियाँ, मन्त्र-तन्त्र, ऋत्विज्, अग्नि, देवता, यजमान, यज्ञ और धर्मये सभी भगवान् के ही रूप हैं ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**स एष भगवान् साक्षाद् विष्णुर्योगेश्वरेश्वरः ।**
**जातो यदुष्वित्यश्शृण्म ह्यपि मूढा न विद्महे ॥४८॥**

पदच्छेद— सः एष भगवान् साक्षात् विष्णुः योगेश्वर ईश्वरः ।
जातः यदुषु इति अशृण्म हि अपि मूढाः न विद्महे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | वे ही | जातः | ९. | उत्पन्न हुये हैं |
| एषः | २. | ये | यदुषु | ८. | यदुवंश में |
| भगवान् | ६. | भगवान् | इति | १०. | ऐसा |
| साक्षात् | ५. | साक्षात् | अशृण्म | ११. | सुनकर |
| विष्णुः | ७. | विष्णु | हि अपि | १२. | भी |
| योगेश्वर | ३. | योगेश्वरों के भी | मूढाः | १३. | हम मूर्ख लोग उन्हें |
| ईश्वरः । | ४. | ईश्वरः | न विद्महे ॥ | १४. | नहीं जानते हैं |

श्लोकार्थ—वे ही योगेश्वरों के भी ईश्वर यहाँ साक्षात् भगवान् विष्णु यदुवंश में उत्पन्न हुये हैं । ऐसा सुनकर भी हम मूर्ख लोग उन्हें नहीं जानते हैं ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**अहो वयं धन्यतमा येषां नस्तादृशीः स्त्रियः ।**
**भक्त्या यासां मतिर्जाता अस्माकं निश्चला हरौ ॥४६॥**

पदच्छेद— अहो वयम् धन्यतमाः येषाम् नः तादृशीः स्त्रियः ।
भक्त्या यासाम् मतिः जाता अस्माकम् निश्चला हरौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो | १. अहो | भक्त्या | ६. भक्ति से |
| वयम् | २. हम | यासाम् | ८. जिनको |
| धन्यतमाः | ३. धन्यातिधन्य हैं | मतिः | १३. बुद्धि |
| येषाम् | ४. जो | जाता | १४. हो गई है |
| नः | ५. हमारे पास | अस्माकम् | ११. हमारी |
| तादृशीः | ६. ऐसी | निश्चला | १२. निश्चल |
| स्त्रियः । | ७. स्त्रियाँ हैं | हरौ ॥ | १०. श्री हरि में |

श्लोकार्थ—अहो, हम धन्यातिधन्य हैं । जो हमारे पास ऐसी स्त्रियाँ हैं । जिनकी भक्ति से श्रीहरि में हमारी बुद्धि निश्चल हो गई है ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**नमस्तुभ्यं भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।**
**यन्मायामोहितधियो भ्रमामः कर्मवर्त्मसु ॥५०॥**

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते कृष्णाय अकुण्ठ मेधसे ।
यन्माया मोहित धियः भ्रमामः कर्मवर्त्मसु ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नमः | ६. नमस्कार है | यन्माया | ७. जो आपकी माया से |
| तुभ्यम् | ५. आपको | मोहित | ८. मोहित |
| भगवते | ३. भगवान् | धियः | ६. बुद्धि हम लोग |
| कृष्णाय | ४. श्रीकृष्ण | भ्रमामः | १२. भटक रहे हैं |
| अकुण्ठ | १. अबाध | कर्म | १०. कर्म के |
| मेधसे । | २. ज्ञान युक्त | वर्त्मसु ॥ | ११. मार्ग में |

श्लोकार्थ—अबाध ज्ञान युक्त भगवान् श्रीकृष्ण, आपको नमस्कार है । जो आपकी माया से मोहित बुद्धि हम लोग कर्म के मार्ग में भटक रहे हैं ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**स वै न आद्यः पुरुषः स्वमायामोहितात्मनाम् ।**
**अविज्ञातानुभावानां क्षन्तुमर्हत्यतिक्रमम् ॥५१॥**

पदच्छेद— सः वै न आद्यः पुरुषः स्वमाया मोहित आत्मनाम् ।
अविज्ञात अनुभावानाम् क्षन्तुम् अर्हति अतिक्रमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः वै | १. | वे आप निश्चय ही | आत्मनाम् । | ८. | हम |
| नः | ४. | हमारे | अविज्ञात | १२. | नहीं जान रहे हैं |
| आद्यः | २. | आदि | अनुभावानाम् | ११. | आपके प्रभाव को |
| पुरुषः | ३. | पुरुष भगवान् हैं | क्षन्तुम् | ६. | क्षमा |
| स्वमाया | ९. | आपकी माया से | अर्हति | ७. | करें |
| मोहित | १०. | मोहित होकर | अतिक्रमम् ॥ | ५ | अपराध को |

श्लोकार्थ—वे आप निश्चय ही आदि पुरुष भगवान् हैं, हमारे अपराध को क्षमा करें हम । आपकी माया से मोहित होकर आपके प्रभाव को नहीं जान रहे हैं ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

**इति स्वाघमनुस्मृत्य कृष्णे ते कृतहेलनाः ।**
**दिदृक्षवोऽप्यच्युतयोः कंसाद् भीता न चाचलन् ॥५२॥**

पदच्छेद— इति स्व अघम् अनुस्मृत्य कृष्णे ते कृत हेलनाः ।
दिदृक्षवः अपि अच्युतयोः कंसात् भीताः न च अचलन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ४. | उस | दिदृक्षवः | ८. | देखने की इच्छा होने पर |
| स्वअघम् | ५. | अपने पाप का | अपि | ९. | भी |
| अनुस्मृत्य | ६. | स्मरण करके | अच्युतयोः | ७. | श्रीकृष्ण और बलराम को |
| कृष्णे ते | २. | कृष्ण का जो | कंसात् भीताः | १०. | कंस से भयभीत होने के कारण |
| कृत | ३. | किया था | न च | ११. | वे वहाँ नहीं |
| हेलना । | १. | उन्होंने तिरस्कार | अचलन् ॥ | १२. | जा सके |

श्लोकार्थ—उन्होंने श्रीकृष्ण का जो तिरस्कार किया था, उस अपने पाप का स्मरण करके श्रीकृष्ण और बलराम को देखने की इच्छा होने पर भी कंस से भयभीत होने के कारण वे वहाँ नहीं जा सके ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
यज्ञपत्नीउद्धरणं नाम षोडशः अध्यायः ॥२३॥

## श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

### दशमः स्कन्धः

### चतुर्विंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—भगवानपि तत्रैव बलदेवेन संयुतः।
अपश्यन्निवसन् गोपानिन्द्रयागकृतोद्यमान् ॥१॥

पदच्छेद— भगवान् अपि तत्र एव बलदेवेन संयुतः।
अपश्यत् निवसन् गोपान् इन्द्रयाग कृत उद्यमान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | १. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | अपश्यत् | ८. | देखा कि |
| अपि | २. | भी | निवसन् | ७. | रह कर |
| तत्र | ५. | वृन्दावन में | गोपान् | ९. | गोप लोग |
| एव | ६. | ही | इन्द्रयाग | १०. | इन्द्र यज्ञ |
| बलदेवेन | ३. | बलराम जी के | कृत | ११. | करने की |
| संयुतः। | ४. | साथ | उद्यमान् ॥ | १२. | तैयारी कर रहे हैं |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ वृन्दावन में ही रह कर देखा कि गोप लोग इन्द्र यज्ञ करने की तैयारी कर रहे हैं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

तदभिज्ञोऽपि भगवान् सर्वात्मा सर्वदर्शनः।
प्रश्रयावनतोऽपृच्छद् वृद्धान् नन्दपुरोगमान् ॥२॥

पदच्छेद— तत् अभिज्ञः अपि भगवान् सर्वात्मा सर्व दर्शनः।
प्रश्रय अवनतः अपृच्छत् वृद्धान् नन्द पुरोगमान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | ४. | उसे | प्रश्रयः | ७. | विनम्रतापूर्वक |
| अभिज्ञः | ५. | जानते हुये | अवनतः | ८. | झुक कर |
| अपि | ६. | भी | अपृच्छत् | १२. | पूछा |
| भगवान् | ३. | भगवान् ने | वृद्धान् | ११. | बूढे गोपों से |
| सर्वात्मा | १. | सबके अन्तर्यामी और | नन्द | ९. | नन्द बाबा आदि |
| सर्वदर्शनः। | २. | सब कुछ जानने वाले | पुरोगमान् ॥ | १०. | बड़े |

श्लोकार्थ—सबके अन्तर्यामी और सब कुछ जानने वाले भगवान् ने उसे जानते हुये भी विनम्रतापूर्वक झुक कर नन्द बाबा आदि बड़े बूढे गोपों से पूछा ॥

## तृतीयः श्लोकः

**कथ्यतां मे पितः कोऽयं सम्भ्रमो व उपागतः ।**
**किं फलं कस्य चोद्देशः केन वा साध्यते मखः ॥३॥**

पदच्छेद— कथ्यताम् मे पितः कः अयम् सम्भ्रमः वः उपागतः ।
किम्फलम् कस्य च उद्देशः केन वा साध्यते मखः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कथ्यताम् | १४. | बताइये | किम्फलम् | ६. | इसका क्या फल है |
| मे | १३. | आप मुझे | कस्य च | ७. | और क्या |
| पितः | १. | हे पिता जी ! | उद्देशः | ८. | उद्देश है |
| कः अयम् | २. | यह कौन सा | केन | १०. | किन साधनों के द्वारा |
| सम्भ्रमः | ३. | बड़ा भारी उत्सव | वा | ९. | अथवा |
| वः | ४. | आप लोगों के सामने | साध्यते | १२. | किया करते हैं यह |
| उपागतः । | ५. | आ पहुँचा है | मखः ॥ | ११. | यह यज्ञ |

श्लोकार्थ—हे पिता जी ! यह कौन सा बड़ा भारी उत्सव आप लोगों के सामने आ पहुँचा है। इसका क्या फल है। और क्या उद्देश है। अथवा किन साधनों के द्वारा यह यज्ञ किया करते हैं, यह आप मुझे बताइये ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**एतद् ब्रूहि महान् कामो मह्यं शुश्रूषवे पितः ।**
**न हि गोप्यं हि साधूनां कृत्यं सर्वात्मनामिह ॥४॥**

पदच्छेद— एतद्ब्रूहि महान्कामः मह्यम् शुश्रूषवे पितः ।
नहि गोप्यम् हि साधूनाम् कृत्यम् सर्व आत्मनाम् इह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतद् | २. | यह सब | नहि | १२. | नहीं है |
| ब्रूहि | ६. | आप बताइये | गोप्यम् हि | ११. | छिपाने योग्य |
| महान् कामः | ५. | बड़ी ही इच्छा है सो | साधूनाम् | ९. | सज्जनों के लिये |
| मह्यम् | ४. | मुझे | कृत्यम् | १०. | कोई भी कार्य |
| शुश्रूषवे | ३. | सुनने की | सर्व आत्मनाम् | ८. | सबको आत्म रूप मानने वाले |
| पितः । | १. | हे पिता जी ! | इह ॥ | ७. | इस संसार में |

श्लोकार्थ—हे पिता जी ! यह सब सुनने की मुझे बड़ी ही इच्छा है। सो आप बताइये। इस संसार में सब को आत्म रूप मानने वाले सज्जनों के लिये कोई भी कार्य छिपाने योग्य नहीं है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**अस्त्यस्वपरदृष्टीनाममित्रोदास्तविद्विषाम् ।**
**उदासीनोऽरिवद् वर्ज्य आत्मवत् सुहृदुच्यते ॥५॥**

पदच्छेद— अस्ति अस्वपर दृष्टीनाम् अमित्र उदास्त विद्विषाम् ।
उदासीनः अरिवत् वर्ज्यः आत्मवत् सुहृद् उच्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अस्ति | ६. | है | उदासीनः | ६. | उनके लिए उदासीन व्यक्ति |
| अस्व | १. | जिनकी दृष्टि में अपना और | अरिवत् | ७. | शत्रु की भाँति |
| परदृष्टीनाम् | २. | पराया | वर्ज्यः | ८. | त्याज्य |
| अमित्र | ३. | मित्र | आत्मवत् | ११. | अपने समान ही |
| उदास्त | ४. | उदासीन | सुहृत् | १०. | मित्र तो |
| विद्विषाम् । | ५. | और शत्रु कोई नहीं है | उच्यते ॥ | १२. | माना गया है |

श्लोकार्थ—जिनकी दृष्टि में अपना और पराया, मित्र, उदासीन और शत्रु कोई नहीं है, उनके लिए उदासीन व्यक्ति शत्रु की भाँति त्याज्य है । मित्र तो अपने समान ही माना गया है ॥

## षष्ठः श्लोकः

**ज्ञात्वाज्ञात्वा च कर्माणि जनोऽयमनुतिष्ठति ।**
**विदुषः कर्मसिद्धिः स्यात्तथा नाविदुषो भवेत् ॥६॥**

पदच्छेद— ज्ञात्वा अज्ञात्वा च कर्माणि जनः अयम् अनुतिष्ठति ।
विदुषः कर्मसिद्धिः स्यात् तथा न अविदुषः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञात्वा | ३. | समझे | विदुषः | ८. | जैसे समझदार व्यक्ति के |
| ज्ञात्वा | ५ | न समझे | कर्मसिद्धिः | ९. | कर्म सफल |
| च | ४. | और | स्यात् | १०. | होते है |
| कर्माणि | ६. | अनेक कर्म | तथा | ११. | वैसे |
| जनः | २. | संसारी मनुष्य | न | १३. | नहीं |
| अयम् | १. | यह | अविदुषः | १२. | ना समझ के |
| अनुतिष्ठति । | ७. | करता है | भवेत् | १४. | होते हैं |

श्लोकार्थ—यह संसारी मनुष्य समझे और न समझे अनेक कर्म करता है । जैसे समझदार व्यक्ति के कर्म सफल होते हैं वैसे ना समझ के नहीं होते हैं ।

## सप्तमः श्लोकः

**तत्र तावत् क्रियायोगो भवतां किं विचारितः ।**
**अथवा लौकिकस्तन्मे पृच्छतः साधु भण्यताम् ॥७॥**

पदच्छेद— तत्र तावत् क्रियायोगः भवताम् किम् विचारितः ।
अथवा लौकिकः तत् मे पृच्छतः साधु भण्यताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. | इसलिये | अथवा | ७. | अथवा |
| तावत् | २. | इस समय | लौकिकः | ८. | लौकिक ही है |
| क्रियायोगः | ४. | जो क्रिया योग कर रहे हैं | तत् मे | ९. | यह सब मुझ |
| भवताम् | ३. | आप लोग | पृच्छतः | १०. | पूछने वाले को |
| किम् | ५. | क्या वह | साधु | ११. | भली भाँति |
| विचारितः । | ६. | विचार पूर्वक हैं | भण्यताम् ॥ | १२. | बताइये |

श्लोकार्थ—इसलिये इस समय आप लोग जो क्रियायोग कर रहे हैं, क्या वह विचार पूर्वक है ? अथवा लौकिक ही है । यह सब मुझ पूछने वाले को भली भाँति बताइये ॥

## अष्टमः श्लोकः

नन्द उवाच— **पर्जन्यो भगवानिन्द्रो मेघास्तस्यात्ममूर्तयः ।**
**तेऽभिवर्षन्ति भूतानां प्रीणनं जीवनं पयः ॥८॥**

पदच्छेद— पर्जन्यः भगवान् इन्द्रः मेघाः तस्य आत्ममूर्तयः ।
ते अभिवर्षन्ति भूतानाम् प्रीणनम् जीवनम् पयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पर्जन्यः | ३. | मेघों के स्वामी हैं | ते | ७. | वे |
| भगवान् | १. | भगवान् | अभिवर्षन्ति | १२. | बरसाते हैं |
| इन्द्रः | २. | इन्द्र | भूतानाम् | ८. | समस्त प्राणियों को |
| मेघाः | ४. | मेघ | प्रीणनम् | ९. | तृप्त करने वाला एवं |
| तस्य | ५. | उन्हीं के | जीवनम् | १०. | जीवन दान करने वाला |
| आत्ममूर्तयः । | ६. | अपने रूप हैं | पयः ॥ | ११. | जल |

श्लोकार्थ—भगवान् इन्द्र मेघों के स्वामी हैं । मेघ उन्हीं के अपने रूप हैं । वे समस्त प्राणियों को तृप्त करने वाला एवम् जीवन दान करने वाला जल बरसाते हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**तं तात वयमन्ये च वार्मुचां पतिमीश्वरम् ।**
**द्रव्यैस्तद्रेतसा सिद्धैर्यजन्ते क्रतुभिर्नराः ॥९॥**

पदच्छेद— तम् तात वयम् अन्ये च वार्मुचाम् पतिम् ईश्वरम् ।
द्रव्यैः तत् रेतसा सिद्धैः यजन्ते क्रतुभिः नराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | ४. उन्हीं | द्रव्यैः | ८. द्रव्यों के द्वारा पूजा करते हैं |
| तात | १. बेटा श्रीकृष्ण | तत् | ९. वह द्रव्य |
| वयम् | २. हम | रेतसा | १०. जल वृष्टि से प्राप्त होता है |
| अन्ये च | ३. और दूसरे लोग | सिद्धैः | १३. कार्य की सिद्धि के लिये |
| वार्मुचाम् | ५. मेघ | यजन्ते | १४. उनका पूजन करते हैं |
| पतिम् | ६. पति | क्रतुभिः | १२. यज्ञों के द्वारा |
| ईश्वरम् । | ७. इन्द्र की | नराः ॥ | ११. मनुष्य |

श्लोकार्थ—बेटा श्रीकृष्ण ! हम और दूसरे लोग उन्हीं मेघ पति इन्द्र की द्रव्यों के द्वारा पूजा करते हैं। वह द्रव्य जल वृष्टि से प्राप्त होता है। मनुष्य यज्ञों के द्वारा कार्य की सिद्धि के लिये उनका पूजन करते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**तच्छेषेणोपजीवन्ति त्रिवर्गफलहेतवे ।**
**पुंसां पुरुषकाराणां पर्जन्यः फलभावनः ॥१०॥**

पदच्छेद— तत् शेषेण उपजीवन्ति त्रिवर्ग फल हेतवे ।
पुंसाम् पुरुष काराणाम् पर्जन्यः फल भावनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | १. उस यज्ञ से | पुंसाम् | ९. पुरुषों को |
| शेषेण | २. बचे अन्न से | पुरुष | ७. कठोर |
| उपजीवन्ति | ६. जीवन निर्वाह करते हैं | काराणाम् | ८. श्रम करने वाले |
| त्रिवर्ग | ३. प्राणी धर्म अर्थ काम रूप | पर्जन्यः | १०. इन्द्र ही |
| फल | ४. फल | फल | ११. फल |
| हेतवे । | ५. प्राप्ति के लिये | भावनः ॥ | १२. प्रदान करते हैं |

श्लोकार्थ—उस यज्ञ से बचे अन्न से प्राणी धर्म, अर्थ, काम रूप फल प्राप्ति के लिये जीवन निर्वाह करते हैं। कठोर श्रम करने वाले पुरुषों को इन्द्र ही फल प्रदान करते हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**य एवं विसृजेद् धर्मं पारम्पर्यागतं नरः।**
**कामाल्लोभाद् भयाद् द्वेषात् स वै नाप्नोति शोभनम् ॥११॥**

पदच्छेद— यः एवम् विसृजेत् धर्मम् पारम्पर्य आगतम् नरः।
कामात् लोभात् भयात् द्वेषात् सः वै न आप्नोति शोभनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यः | १. | जो | कामात् | ८. | काम |
| एवम् | ५. | इस | लोभात् | ९. | लोभ |
| विसृजेत् | ७. | छोड़ देता है | भयात् | १०. | भय या |
| धर्मम् | ६. | धर्म को | द्वेषात् | ११. | द्वेष से छोड़ने पर भी |
| पारम्पर्य | ३. | कुल परम्परा से | सः वै | १२. | वह मनुष्य |
| आगतम् | ४. | आये हुये | न आप्नोति | १४. | नहीं प्राप्त करता है |
| नरः। | २. | मनुष्य | शोभनम् ॥ | १३. | कल्याण को |

श्लोकार्थ—जो मनुष्य कुल परम्परा से आये हुये इस धर्म को छोड़ देता है। काम, लोभ, भय या द्वेष से छोड़ने पर भी वह मनुष्य कल्याण को नहीं प्राप्त करता है ॥

## द्वादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **वचो निशम्य नन्दस्य तथान्येषां व्रजौकसाम्।**
**इन्द्राय मन्युं जनयन् पितरं प्राह केशवः ॥१२॥**

पदच्छेद— वचः निशम्य नन्दस्य तथा अन्येषाम् व्रज ओकसाम्।
इन्द्राय मन्युम् जनयन् पितरम् प्राह केशवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वचः | ७. | बात | इन्द्राय | ९. | इन्द्र को |
| निशम्य | ८. | सुन कर | मन्युम् | १०. | क्रोध |
| नन्दस्य | २. | नन्द बाबा | जनयन् | ११. | दिलाने के लिये |
| तथा | ३. | और | पितरम् | १२. | अपने पिता से |
| अन्येषाम् | ४. | दूसरे | प्राह | १३. | कहा |
| व्रज | ५. | व्रज | केशवः ॥ | १. | श्रीकृष्ण भगवान् ने |
| ओकसाम्। | ६. | वासियों की | | | |

श्लोकार्थ—श्री कृष्ण भगवान् ने नन्द बाबा और दूसरे व्रज वासियों की बात सुन कर इन्द्र को क्रोध दिलाने के लिये अपने पिता से कहा ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव विलीयते ।
सुखं दुःखं भयं क्षेमं कर्मणैवाभिपद्यते ॥१४॥

पदच्छेद— कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणा एव विलीयते ।
सुखम् दुःखम् भयम् क्षेमम् कर्मणा एव अभिपद्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कर्मणा | २. | अपने कर्म के अनुसार ही | सुखम् | ७. | सुख |
| जायते | ३. | पैदा होता है | दुःखम् | ८. | दुःख |
| जन्तुः | १. | प्राणी | भयम् | ९. | भय और |
| कर्मणा | ४. | कर्म से | क्षेमम् | १०. | कल्याण आदि सब |
| एव | ५. | ही | कर्मणा | ११. | कर्म से |
| विलीयते । | ६. | मर जाता है | एव | १२. | ही |
| | | | अभिपद्यते ॥ | १३. | प्राप्त होते हैं |

श्लोकार्थ—प्राणी अपने कर्म के अनुसार ही पैदा होता है । कर्म से ही मर जाता है । सुख, दुःख भय और कल्याण आदि सब कर्म से ही प्राप्त होते है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

अस्ति चेदीश्वरः कश्चित् फलरूप्यन्यकर्मणाम् ।
कर्तारं भजते सोऽपि न ह्यकर्तुः प्रभुर्हि सः ॥१४॥

पदच्छेद— अस्ति चेत् ईश्वरः कश्चित् फलरूपी अन्य कर्मणाम् ।
कर्तारम् भजते सः अपि नहि अकर्तुः प्रभुः हि सः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अस्ति | ७. | है तो | कर्तारम् | ९. | कर्ता को ही |
| चेत् | १. | यदि | भजते | १०. | फल देता है |
| ईश्वरः | ६. | ईश्वर | सः अपि | ८. | वह भी |
| कश्चित | ५. | कोई | न हि | १४. | नहीं चलती |
| फलरूपी | ४. | फलरूप | अकर्तुः | ११. | कर्म न करने वाले पर |
| अन्य | ३. | भिन्न | प्रभुः | १३. | प्रभुता |
| कर्मणाम् । | २. | कर्मों से | हि सः ॥ | १२. | उसकी |

श्लोकार्थ—यदि कर्मों से भिन्न फलरूपी कोई ईश्वर है तो वह भी कर्ता को ही फल देता है । कर्म न करने वाले पर उसकी प्रभुता नहीं चलती है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**किमिन्द्रेणेह भूतानां स्वस्वकर्मानुवर्तिनाम् ।**
**अनीशेनान्यथा कर्तुं स्वभावविहितं नृणाम् ॥१५॥**

पदच्छेद— किम् इन्द्रेण इह भूतानाम् स्व स्व कर्म अनुवर्तिनाम् ।
अनीशेन अन्यथा कर्तुम् स्वभाव विहितम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | ६. | क्या आवश्यकता है | अनीशेन | ९. | कर्म फल के द्वारा |
| इन्द्रेण | ५. | इन्द्र की | अन्यथा | १०. | अन्य प्रकार का नहीं |
| इह | १. | जब यहाँ | कर्तुम् | ११. | किया |
| भूतानाम् | २. | समस्त प्राणी | स्वभाव | ८. | स्वभाव |
| स्व-स्वकर्म | ३. | अपने अपने कर्मों का ही | विहितम् | १२. | जा सकता है |
| अनुवर्तिनाम् । | ४. | फल भोग रहे हैं तो | नृणाम् ॥ | ७. | मनुष्यों का |

श्लोकार्थ—जब यहाँ समस्त प्राणी अपने अपने कर्मों का ही फल भोग रहे हैं तो इन्द्र की क्या आवश्यकता है। मनुष्यों का स्वभाव कर्म फल के द्वारा अन्य प्रकार का नहीं किया जा सकता है।

## षोडशः श्लोकः

**स्वभावतन्त्रो हि जनः स्वभावमनुवर्तते ।**
**स्वभावस्थमिदं सर्वं सदेवासुरमानुषम् ॥१६॥**

पदच्छेद— स्वभाव तन्त्रः हि जनः स्वभावम् अनुवर्तते ।
स्वभावस्थम् इदम् सर्वम् सदेव असुर मानुषम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वभाव | २. | अपने स्वभाव के | स्वभावस्थम् | १०. | स्वभाव में ही स्थित है |
| तन्त्रः | ३. | अधीन है | इदम् | ८. | यह |
| हि जनः | १. | मनुष्य | सर्वम् | ९. | सारा संसार |
| स्वभावम् | ४. | वह उसी का | सदेव असुर | ६. | देवता असुर और |
| अनुवर्तते । | ५. | अनुसरण करता है | मानुषम् ॥ | ७. | मनुष्यों सहित |

श्लोकार्थ—मनुष्य अपने स्वभाव के अधीन है। वह उसी का अनुसरण करता है। देवता, असुर और मनुष्यों सहित यह सारा संसार स्वभाव में ही स्थित है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**देहानुच्चावचाञ्जन्तुः प्राप्योत्सृजति कर्मणा ।**
**शत्रुर्मित्रमुदासीनः कर्मैव गुरुरीश्वरः ॥१७॥**

पदच्छेद— देहान् उच्च अवचान् जन्तुः प्राप्य उत्सृजति कर्मणा ।
शत्रुः मित्रम् उदासीनः कर्म एव गुरुः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देहान् | ५. | शरीरों को | शत्रुः | ८. | शत्रु |
| उच्च | ३. | उत्तम और | मित्रम् | ९. | मित्र |
| अवचान् | ४. | अधम | उदासीनः | १०. | उदासीन |
| जन्तुः | १. | जीव | कर्म | १३. | कर्म के |
| प्राप्य | ६. | ग्रहण करता है और | एव | १४. | ही हैं |
| उत्सृजति | ७. | छोड़ता है | गुरुः | ११. | गुरु और |
| कर्मणा । | २. | अपने कर्मानुसार | ईश्वरः ॥ | १२. | ईश्वर सब कुछ |

श्लोकार्थ—जीव अपने कर्मानुसार उत्तम और अधम शरीरों को ग्रहण करता है और छोड़ता है । शत्रु, मित्र, उदासीन, गुरु और ईश्वर सब कुछ कर्म के ही अधीन हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**तस्मात् सम्पूजयेत् कर्म स्वभावस्थः स्वकर्मकृत् ।**
**अञ्जसा येन वर्तेत तदेवास्य हि दैवतम् ॥१८॥**

पदच्छेद— तस्मात् सम्पूजयेत् कर्म स्वभावस्थः स्वकर्म कृत् ।
अञ्जसा येन वर्तेत तत् एव अस्य हि दैवतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. | इसलिये मनुष्य को | अञ्जसा | ८. | सुगमता पूर्वक |
| सम्पूजयेत् | ६. | पूजा करनी चाहिये | येन | ७. | जिससे |
| कर्म | ५. | कर्म की ही | वर्तेत | ९. | जीविका चलती रहे |
| स्वभावस्थः | २. | स्वभाव में स्थित रह कर | तत् एव | १०. | वह कर्म ही |
| स्वकर्म | ३. | अपने धर्म का | अस्य हि | ११. | मनुष्य का |
| कृत् । | ४. | पालन करते हुये | दैवतम् ॥ | १२. | इष्टदेव होता है |

श्लोकार्थ—इसलिये मनुष्य को स्वभाव में स्थित रह कर अपने धर्म का पालन करते हुये कर्म की ही पूजा करनी चाहिये । जिससे सुगमता पूर्वक जीविका चलती रहे । वह कर्म मनुष्य का इष्ट देव होता है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**आजीव्यैकतरं भावं यस्त्वन्यमुपजीवति ।**
**न तस्माद् विन्दते क्षेमं जारं नार्यसती यथा ॥१९॥**

पदच्छेद— आजीव्य एक तरम् भावम् यः तु अन्यम् उपजीवति ।
न तस्मात् विन्दते क्षेमम् जारम् नारी असती यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **आजीव्य** | १. | जीविका चलाने वाले | तस्मात् | ७. | वे उससे |
| **एक तरम्** | २. | एक | विन्दते | १०. | होते |
| **भावम्** | ३. | देवता को छोड़कर | क्षेमम् | ८. | कल्याण को प्राप्त |
| **यः तु** | ४. | जो मनुष्य | जारम् | १२. | जारपति की सेवा करने वाली |
| **अन्यम्** | ५. | अन्य देवता की | नारी | १४. | स्त्री शान्ति नहीं पाती है |
| **उपजीवति** | ६. | उपासना करते हैं | असती | १३. | व्यभिचारिणी |
| **न ।** | ९. | नहीं | यथा ॥ | ११. | जैसे |

श्लोकार्थ—जीविका चलाने वाले एक देवता को छोड़कर जो मनुष्य अन्यदेवता की उपासना करते हैं, वे उससे कल्याण को प्राप्त नहीं होते जैसे जारपति की सेवा करने वाली व्यभिचारिणी स्त्री शान्ति नहीं पाती है ॥

## विंशः श्लोकः

**वर्तेत ब्रह्मणा विप्रो राजन्यो रक्षया भुवः ।**
**वैश्यस्तु वार्तया जीवेच्छूद्रस्तु द्विजसेवया ॥२०॥**

पदच्छेद— वर्तेत ब्रह्मणा विप्रः राजन्यः रक्षया भुवः ।
वैश्यः तु वार्तया जीवेत् शूद्रः तु द्विज सेवया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **वर्तेत** | १२. | अपनी जीविका चलावे | वैश्यः तु | ६. | वैश्य |
| **ब्रह्मणा** | २. | वेदों के अध्ययन से | वार्तया | ७. | व्यापार आदि से |
| **विप्रः** | १. | ब्राह्मण | जीवेत् | ८. | जीविका चलावे |
| **राजन्यः** | ३. | क्षत्रिय | शूद्रः तु | ९. | शूद्र |
| **रक्षया** | ५. | पालन | द्विज | १०. | द्विजातियों की |
| **भुवः ।** | ४. | पृथ्वी के | सेवया ॥ | ११. | सेवा से |

श्लोकार्थ—ब्राह्मण वेदों के अध्ययन से, क्षत्रिय पृथ्वी के पालन से, वैश्य व्यापार आदि से जीविका चलावे और शूद्र द्विजातियों की सेवा से अपनी जीविका चलावे ॥

# एकविंशः श्लोकः

कृषिवाणिज्यगोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते ।
वार्ता चतुर्विधा तत्र वयं गोवृत्तयोऽनिशम् ॥२१॥

पदच्छेद— कृषि वाणिज्य गोरक्षा कुसीदम् तुर्यम् उच्यते ।
वार्ता चतुर्विधा तत्र वयम् गोवृत्तयः अनिशम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृषि | २. | कृषि | वार्ता | १. | वैश्यों की वार्तावृत्ति |
| वाणिज्य | ३. | वाणिज्य | चतुर्विधा | ९. | चार प्रकार में से |
| गोरक्षा | ४. | गोरक्षा और | तत्र | ८. | उन |
| कुसीदम् | ५. | ब्याज लेना | वयम् | १०. | हम लोग |
| तुर्यम् | ६. | चार प्रकार की | गोवृत्तयः | १२. | गोपालन करते आये हैं |
| उच्यते । | ७. | कही गयी है | अनिशम् ॥ | ११. | सदा से |

श्लोकार्थ—वैश्यों की वार्तावृत्ति कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा और ब्याज लेना चार प्रकार की कही गयी है । उन चार प्रकार में से हम लोग सदा से गोपालन करते आये हैं ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

सत्त्वं रजस्तम इति स्थित्युत्पत्त्यन्तहेतवः ।
रजसोत्पद्यते विश्वमन्योन्यं विविधं जगत् ॥२२॥

पदच्छेद— सत्त्वम् रजः तमः इति स्थिति उत्पत्ति अन्त हेतवः ।
रजसा उत्पद्यते विश्वम् अन्योन्यम् विविधम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्त्वम् | ४. | सत्त्व गुण | रजसा | ११. | रजोगुण के द्वारा |
| रजः तमः | ५. | रजोगुण और तमोगुण | उत्पद्यते | १२. | उत्पन्न होता है |
| इति | ६. | ये तीनों ही हैं | विश्वम् | ८. | सम्पूर्ण |
| स्थिति | १. | संसार की स्थिति | अन्योन्यम् | १०. | स्त्री पुरुष के संयोग से |
| उत्पत्ति | २. | उत्पत्ति और | विविधम् | ७. | यह विविध प्रकार का |
| अन्त हेतवः । | ३. | अन्त के कारण क्रमशः | जगत् ॥ | ९. | जगत् |

श्लोकार्थ—संसार की स्थिति, उत्पत्ति और अन्त के कारण क्रमशः सत्त्वगुण रजोगुण और तमोगुण ये तीनों ही हैं । यह विविध प्रकार का सम्पूर्ण जगत् स्त्री पुरुष के संयोग से रजोगुण द्वारा उत्पन्न होता है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**रजसा चोदिता मेघा वर्षन्त्यम्बूनि सर्वतः ।**
**प्रजास्तैरेव सिद्ध्यन्ति महेन्द्रः किं करिष्यति ॥२३॥**

पदच्छेद— रजसा चोदिताः मेघाः वर्षन्ति अम्बूनि सर्वतः ।
प्रजाः तैः एव सिद्धयन्ति महेन्द्रः किम् करिष्यति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रजसा | १. | रजोगुण की | प्रजाः | ९. | प्रजाओं की जीविका |
| चोदिताः | २. | प्रेरणा से | तैः | ७. | उससे |
| मेघाः | ३. | मेघगण | एव | ८. | ही |
| वर्षन्ति | ६. | बरसाते हैं | सिद्धयन्ति | १०. | चलती है |
| अम्बूनि | ५. | जल | महेन्द्रः | ११. | इन्द्र भला |
| सर्वतः । | ४. | सब जगह | किम् | १२. | उसमें क्या |
| | | | करिष्यति ॥ | १३. | कर सकता है |

श्लोकार्थ—रजोगुण की प्रेरणा से मेघगण सब जगह जल बरसाते हैं । उससे ही प्रजाओं की जीविका चलती है । इन्द्र भला उसमें क्या कर सकता है ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**न नः पुरो जनपदा न ग्रामा न गृहा वयम् ।**
**नित्यं वनौकसस्तात वनशैलनिवासिनः ॥२४॥**

पदच्छेद— न नः पुरः जनपदाः न ग्रामाः न गृहाः वयम् ।
नित्यम् वन ओकसः तात वनशैल निवासिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न नः | २. | न तो हमारे पास | नित्यम् | ८. | सदा के |
| पुरः | ३. | नगर और | वन | ९. | वन |
| जनपदाः | ४. | जनपद हैं | ओकसः | १०. | वासी हैं |
| न ग्रामाः | ५. | न गाँव हैं | तात | १. | हे पिता जो ! |
| न गृहाः | ६. | न घर हैं | वनशैल | ११. | वन और पहाड़ ही |
| वयम् । | ७. | हम तो | निवासिनः ॥ | १२. | हमारे निवास स्थान हैं |

श्लोकार्थ—हे पिता जी ! न तो हमारे पास नगर और जनपद हैं । न गाँव हैं, न घर हैं हम तो सदा के वनवासी हैं । वन और पहाड़ ही हमारे निवास स्थान हैं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**तस्माद् गवां ब्राह्मणानामद्रेश्चारभ्यतां मखः ।**
**य इन्द्रयागसम्भारास्तैरयं साध्यतां मखः ॥२५॥**

पदच्छेद— तस्मात् गवाम् ब्राह्मणानाम् अद्रेः च आरभ्यताम् मखः ।
य: इन्द्रयाग सम्भाराः तैः अयम् साध्यताम् मखः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **तस्मात्** | १. | इसलिये | **यः** | ९. | जो |
| **गवाम्** | २. | हम लोग गौओं | **इन्द्रयाग** | ८. | इन्द्र याग के लिये |
| **ब्राह्मणानाम्** | ३. | ब्राह्मणों | **सम्भाराः** | १०. | सामग्री इकट्ठी की गई है |
| **अद्रेः** | ५. | गिरिराज का | **तैः** | ११. | उसी से |
| **च** | ४. | और | **अयम्** | १२. | इस |
| **आरभ्यताम्** | ७. | तैयारी करें | **साध्यताम्** | १४. | अनुष्ठान करें |
| **मखः ।** | ६. | यजन करने की | **मखः ॥** | १३. | यज्ञ का |

श्लोकार्थ—इसलिये हम लोग गौओं और ब्राह्मणों तथा गिरिराज का यजन करने की तैयारी करें। इन्द्र याग के लिये जो सामग्री इकट्ठी की गई है, उसी से इस यज्ञ का अनुष्ठान करें ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**पच्यन्तां विविधाः पाकाः सूपान्ताः पायसादयः ।**
**संयावापूपशष्कुल्यः सर्वदोहश्च गृह्यताम् ॥२६॥**

पदच्छेद— पच्यन्ताम् विविधाः पाकाः सूपान्ताः पायस आदयः ।
संयाव अपूप शष्कुल्यः सर्वदोहः च गृह्यताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **पच्यन्ताम्** | ९. | बनाये जायें | **संयाव** | ४. | हलुआ |
| **विविधाः** | १. | अनेक प्रकार के | **अपूप** | ५. | पुआ |
| **पाकाः** | २. | पकवान | **शष्कुल्यः** | ६. | पूरी |
| **सूपान्ताः** | ८. | मूंग की दाल तक | **सर्वदोहः** | ११. | व्रज का सारा दूध |
| **पायस** | ३. | खीर | **च** | १०. | और |
| **आदयः ।** | ७. | आदि से लेकर | **गृह्यताम् ॥** | १२. | एकत्र कर लिया जाय |

श्लोकार्थ—अनेक प्रकार के पकवान, खीर, हलुआ, पूरी आदि से लेकर मूंग की दाल तक बनायें जायें और व्रज का सारा दूध एकत्र कर लिया जाय ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**हूयन्तामग्नयः सम्यग् ब्राह्मणैर्ब्रह्मवादिभिः ।**
**अन्नं बहुविधं तेभ्यो देयं वो धेनुदक्षिणाः ॥२७॥**

पदच्छेद— हूयन्ताम् अग्नयः सम्यक् ब्राह्मणैः ब्रह्मवादिभिः ।
अन्नम् बहुविधम् तेभ्यः देयम् वः धेनु दक्षिणाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हूयन्ताम् | ६. हवन करवाया जाय | | अन्नम् | ११. अन्न तथा |
| अग्नयः | ५. अग्नि में | | बहुविधम् | १०. अनेक प्रकार का |
| सम्यक् | ४. भाँति-भाँति से | | तेभ्यः | ८. उन्हें |
| ब्राह्मणैः | ३. ब्राह्मणों के द्वारा | | देयम् | १३. प्रदान करें |
| ब्रह्म | १. वेद | | वः | ७. तथा आप लोग |
| वादिभिः । | २. पाठी | | धेनु | १२. गौएँ |
| | | | दक्षिणाः ॥ | ९. दक्षिणा में |

श्लोकार्थ—वेदपाठी ब्राह्मणों के द्वारा भाँति-भाँति से अग्नि में हवन कराया जाय तथा आप लोग उन्हें दक्षिणा में अनेक प्रकार के अन्न तथा गौएँ प्रदान करें ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**अन्येभ्यश्चाश्वचाण्डालपतितेभ्यो यथार्हतः ।**
**यवसं च गवां दत्त्वा गिरये दीयतां बलिः ॥२८॥**

पदच्छेद— अन्येभ्यः च अश्व चाण्डालपतितेभ्यः यथा अर्हतः ।
यवसम् च गवाम् दत्त्वा गिरये दीयताम् बलिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्येभ्यः | १. और भी | यवसम् | १०. चारा |
| च | ४. और | च | ८. और |
| अश्व | ५. घोड़ों को | गवाम् | ९. गायों को |
| चाण्डाल | २. चाण्डाल | दत्त्वा | ११. देकर |
| पतितेभ्यः | ३. पतित | गिरये | १२. गिरिराज को |
| यथा | ६. यथा | दीयताम् | १४. लगाया जाय |
| अर्हतः । | ७. योग्य वस्तुयें | बलिः ॥ | १३. भोग |

श्लोकार्थ—और भी चाण्डाल, पतित और घोड़ों को यथा योग्य वस्तुयें और गायों को चारा देकर गिरिराज को भोग लगाया जाय ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

**स्वलङ्कृता भुक्तवन्तः स्वनुलिप्ताः सुवाससः ।**
**प्रदक्षिणं च कुरुत गोविप्रानलपर्वतान् ॥२६॥**

पदच्छेद— सु अलङ्कृताः भुक्तवन्तः सु अनुलिप्ताः सुवाससः ।
प्रदक्षिणम् च कुरुत गो विप्रान् अनल पर्वतान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सु | ४. | भली भाँति | प्रदक्षिणम् | ११. | प्रदक्षिणा |
| अलङ्कृताः | ५. | अलङ्कृत होकर | च | ६. | और |
| भुक्तवन्तः | १. | खूब खा पीकर | कुरुत | १२. | की जाय |
| सु अनुलिप्ताः | ७. | चन्दन लगाकर | गो विप्रान् | ८. | गो, ब्राह्मण |
| सु | २. | सुन्दर-सुन्दर | अनल | ६. | अग्नि और |
| वाससः । | ३. | वस्त्रों से | पर्वतान् ॥ | १०. | गिरिराज को |

श्लोकार्थ—खूब खा पीकर सुन्दर-सुन्दर वस्त्रों से भली-भाँति अलङ्कृत होकर और चन्दनादि लगाकर गो, ब्राह्मण, अग्नि और गिरिराज की प्रदक्षिणा की जाय ॥

# त्रिंशः श्लोकः

**एतन्मम मतं तात क्रियतां यदि रोचते ।**
**अयं गोब्राह्मणाद्रीणां मह्यं च दयितो मखः ॥३०॥**

पदच्छेद— एतत् मम मतम् तात क्रियताम् यदि रोचते ।
अयम् गो ब्राह्मण अद्रीणाम् मह्यम् च दयितः मखः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतत् | ३. | ऐसी ही | अयम् | ८. | यह |
| मम | २. | मेरी तो | गो | ६. | गो |
| मतम् | ४. | सम्मति है | ब्राह्मण | १०. | ब्राह्मण |
| तात | १. | हे पिता जी | अद्रीणाम् | ११. | और गिरिराज का |
| क्रियताम् | ७. | ऐसा ही कीजिये | मह्यम् च | १३. | मुझे |
| यदि | ५. | यदि | दयितः | १४. | बहुत प्रिय है |
| रोचते । | ६. | आप लोगों की इच्छा हो तो | मखः ॥ | १२. | यज्ञ |

श्लोकार्थ—हे पिता जी, मेरी तो ऐसी ही सम्मति है। यदि आप लोगों की इच्छा हो तो ऐसा ही कीजिये। यह गो, ब्राह्मण और गिरिराज का यज्ञ मुझे बहुत प्रिय है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—कालात्मना भगवता शक्रदर्पं जिघांसता ।**
**प्रोक्तं निशम्य नन्दाद्याः साध्वगृह्णन्त तद्वचः ॥३१॥**

पदच्छेद— कालात्मना भगवता शक्र दर्पम् जिघांसता ।
प्रोक्तम् निशम्य नन्दाद्याः साधु अगृह्णन्त तत् वचः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कालात्मना | १. | काल आत्मा | प्रोक्तम् | ७. | कही हुई |
| भगवता | २. | भगवान् ने | निशम्य | ९. | सुन कर |
| शक्र | ३. | इन्द्र के | नन्दाद्याः | ६. | नन्द बाबा आदि ने |
| दर्पम् | ४. | घमण्ड को | साधु | १०. | बड़ी प्रसन्नता से |
| जिघांसता । | ५. | चूर करना चाहा | अगृह्णन्त | ११. | स्वीकार कर लिया |
| | | | तत् वचः ॥ | ८. | श्रीकृष्ण की बात को |

श्लोकार्थ—काल आत्मा भगवान् ने इन्द्र के घमण्ड को चूर करना चाहा । नन्द बाबा आदि ने श्रीकृष्ण की कही हुई बात को सुनकर बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**तथा च व्यदधुः सर्वं यथाऽऽह मधुसूदनः ।**
**वाचयित्वा स्वस्त्ययनं तद् द्रव्येण गिरिद्विजान् ॥३२॥**

पदच्छेद— तथा च व्यदधुः सर्वम् यथा आह मधुसूदनः ।
वाचयित्वा स्वस्त्ययनम् तत् द्रव्येण गिरिद्विजान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथा | ४. | वैसा ही | वाचयित्वा | ८. | करा कर |
| च | ६. | और | स्वस्त्ययनम् | ७. | ब्राह्मणों से स्वस्ति वाचन |
| व्यदधुः | ५. | किया गया | तत् | ९. | उस |
| सर्वम् | ३. | वह सब | द्रव्येण | १०. | द्रव्य से |
| यथा आह | २. | जैसा कहा था | गिरि | ११. | गिरिराज और |
| मधुसूदनः । | १. | श्रीकृष्ण ने | द्विजान् ॥ | १२. | ब्राह्मणों को भेंटें दी गयीं |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने जैसा कहा था, वह सब वैसा ही किया गया और ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराकर उस द्रव्य से गिरिराज और ब्राह्मणों को भेंटें दी गयीं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**उपहृत्य बलीन् सर्वानादृता यवसं गवाम् ।**
**गोधनानि पुरस्कृत्य गिरिं चक्रुः प्रदक्षिणम् ॥३३॥**

पदच्छेद— उपहृत्य बलीन् सर्वान् आदृता यवसम् गवाम् ।
गोधनानि पुरस्कृत्य गिरिम् चक्रुः प्रदक्षिणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उपहृत्य | ३. देकर | गोधनानि | ७. फिर गायों को |
| बलीन् | २. भेंटें | पुरस्कृत्य | ८. आगे करके |
| सर्वान् | १. सबको | गिरिम् | ९. गिरिराज की |
| आदृता | ६. खिलाई गई | चक्रुः | ११. की |
| यवसम् | ५. हरी-हरी घास | प्रदक्षिणम् ॥ | १०. परिक्रमा |
| गवाम् । | ४. गौओं को | | |

श्लोकार्थ—सबको भेंटें देकर गौओं को हरी-हरी घास खिलाई गई । फिर गायों को आगे करके गिरिराज की परिक्रमा की ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**अनांस्यनडुद्युक्तानि ते चारुह्य स्वलङ्कृताः ।**
**गोप्यश्च कृष्णवीर्याणि गायन्त्यः सद्विजाशिषः ॥३४॥**

पदच्छेद— अनांसि अनुडुद् युक्तानि ते च आरुह्य सुअलङ्कृताः ।
गोप्यः च कृष्ण वीर्याणि गायन्त्यः स द्विज आशिषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनांसि | ९. श्रेष्ठ गाड़ियों पर | गोप्यः च | ११. गोपियाँ |
| अनुडुद् | ७. बैलों से | कृष्ण | १२. श्रीकृष्ण की |
| युक्तानि | ८. युक्त | वीर्याणि | १३. लीलाओं का |
| ते | १. वे | गायन्त्यः | १४. गान करती हुई चलीं |
| च आरुह्य | १०. बैठकर चले और | स | ४. प्राप्त करके |
| सु | ५. भाँति-भाँति का | द्विज | २. ब्राह्मणों का |
| अलङ्कृताः । | ६. शृङ्गार करके | आशिषः ॥ | ३. आशीर्वाद |

श्लोकार्थ—वे ब्राह्मणों का आशीर्वाद प्राप्त करके भाँति-भाँति का शृङ्गार करके बैलों से युक्त श्रेष्ठ गाड़ियों पर बैठ कर चले और गोपियाँ श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करती हुई चलीं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कृष्णस्त्वन्यतमं रूपं गोपविश्रम्भणं गतः ।
शैलोऽस्मीति ब्रुवन् भूरि बलिमादद् बृहद्वपुः ॥३५॥

पदच्छेद— कृष्णः तु अन्यतमम् रूपम् गोप विश्रम्भणं गतः ।
शैलः अस्मीति ब्रुवन् भूरि बलिम् आदत् बृहद् वपुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णः | २. | श्रीकृष्ण | शैलः | १०. | मैं गिरिराज |
| तु | १. | तब | अस्मीति | ११. | हूँ |
| अन्यतमम् | ३. | दूसरा | ब्रुवन् | १२. | ऐसा कहते हुये |
| रूपम् | ४. | रूप धारण करके | भूरि बलिम् | १३. | तमाम सामग्री |
| गोप | ५. | गोपों को | आदत् | १४. | खाने लगे |
| विश्रम्भणम् | ६. | विश्वास दिलाते हुये | बृहद् | ७. | विशाल |
| गतः । | ९. | पर्वत पर गये और | वपुः ॥ | ८. | शरीर धारण करके |

श्लोकार्थ—तब श्रीकृष्ण दूसरा रूप धारण करके गोपों को विश्वास दिलाते हुये विशाल शरीर धारण करके पर्वत पर गये और मैं गिरिराज हूँ ऐसा कहते हुये तमाम सामग्री खाने लगे ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

तस्मै नमो व्रजजनैः सह चक्रेऽऽत्मनाऽऽत्मने ।
अहो पश्यत शैलोऽसौ रूपी नोऽनुग्रहं व्यधात् ॥३६॥

पदच्छेद— तस्मै नमः व्रज जनैः सह चक्रे आत्मना आत्मने ।
अहो पश्यत शैलः असौ रूपी नः अनुग्रहम् व्यधात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मै | ३. | उस रूप को | अहो | ८. | कहने लगे आश्चर्य है |
| नमः | ६. | प्रणाम | पश्यत | ९. | देखो |
| व्रजजनैः | ४. | व्रजवासियों के | शैलः | ११. | गिरिराज ने |
| सह | ५. | साथ | असौ | १०. | इन |
| चक्रे | ७. | किया (फिर) | रूपी | १२. | साक्षात् प्रकट होकर |
| आत्मना | १. | श्रीकृष्ण ने स्वयं | नः अनुग्रहम् | १३. | हम लोगों पर बड़ी कृपा |
| आत्मने । | २. | अपने | व्यधात् ॥ | १४. | की है |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने स्वयं अपने उस रूप को व्रजवासियों के साथ प्रणाम किया । फिर कहने लगे । आश्चर्य है, देखो इन गिरिराज ने साक्षात् प्रकट होकर हम लोगों पर बड़ी कृपा की है ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**एषोऽवजानतो मर्त्यान् कामरूपी वनौकसः।**
**हन्ति ह्यस्मै नमस्यामः शर्मणे आत्मनो गवाम् ॥३७॥**

पदच्छेद— एषः अवजानतः मर्त्यान् कामरूपी वन ओकसः।
हन्ति हि अस्मै नमस्यामः शर्मणे आत्मनः गवाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एषः | २. | ये | हन्ति हि | ७. | ये उन्हें मार डालते हैं |
| अवजानतः | ६. | स्वयं जानते हैं | अस्मै | ११. | आओ इन्हें |
| मर्त्यान् | ५. | मनुष्यों को | नमस्यामः | १२. | प्रणाम करें |
| कामरूपी | १. | इच्छानुसार रूप धारण करने वाले | शर्मणे | १०. | कल्याण के लिये |
| वन | ३. | वन | आत्मनः | ८. | अपने और |
| ओकसः। | ४. | वासी | गवाम् ॥ | ९. | गौओं के |

श्लोकार्थ—इच्छानुसार रूप धारण करने वाले ये वनवासी मनुष्यों को स्वयं जानते हैं। ये उन्हें मार डालते हैं। अपने और गौओं के कल्याण के लिये आओ, इन्हें प्रणाम करें ॥

## अष्टत्रिंशः श्लोकः

**इत्यद्रिगोद्विजमखं वासुदेवप्रणोदिताः।**
**यथा विधाय ते गोपाः सहकृष्णा व्रजं ययुः ॥३८॥**

इति अद्रि गो द्विज मखम् वासुदेव प्रणोदिताः।
यथा विधाय ते गोपाः सह कृष्णाः व्रजम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | यथा | ७. | यथा विधि |
| अद्रि | ५. | गिरिराज | विधाय | ९. | करके |
| गो द्विज | ६. | गाय ब्राह्मणों के लिये | ते गोपाः | ४. | उन नन्द बाबा आदि गोपों ने |
| मखम् | ८. | यज्ञ | सह कृष्णाः | १०. | श्रीकृष्ण के साथ |
| वासुदेव | २. | श्रीकृष्ण की | व्रजम् | ११. | व्रज की ओर |
| प्रणोदिताः। | ३. | प्रेरणा से | ययुः ॥ | १२. | प्रस्थान किया |

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण की प्रेरणा से उन नन्द बाबा आदि गोपों ने गिरिराज, गाय, ब्राह्मणों के लिये यथा विधि यज्ञ करके श्रीकृष्ण के साथ व्रज की ओर प्रस्थान किया ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे**
**पूर्वार्धे चतुर्विंशः अध्यायः ॥२४॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

### पञ्चविंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— इन्द्रस्तदाऽऽत्मनः पूजां विज्ञाय विहतां नृप ।**
**गोपेभ्यः कृष्णनाथेभ्यो नन्दादिभ्यश्चुकोप सः ॥१॥**

पदच्छेद— इन्द्रः तदा आत्मनः पूजाम् विज्ञाय विहताम् नृप ।
गोपेभ्यः कृष्णनाथेभ्यः नन्द आदिभ्यः चुकोप सः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इन्द्रः | ३. | इन्द्र को | गोपेभ्यः | ११. | उन गोपों और |
| तदा | २. | जब | कृष्ण | ६. | श्रीकृष्ण |
| आत्मनः | ५. | मेरी | नाथेभ्यः | १०. | जिनके स्वामी हैं |
| पूजाम् | ६. | पूजा | नन्द | १२. | नन्द बाबा |
| विज्ञाय | ४. | पता लगा कि | आदिभ्यः | १३. | आदि पर |
| विहताम् | ७. | बन्द कर दी गयी है तब | चुकोप | १४. | बहुत क्रोधित हुये |
| नृप । | १. | हे परीक्षित् ! | सः ॥ | ८. | वे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जब इन्द्र को पता लगा कि मेरी पूजा बन्द कर दी गई है तब वे श्रीकृष्ण जिनके स्वामी हैं, उन गोपों और नन्द बाबा आदि पर बहुत क्रोधित हुये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**गणं सांवर्तकं नाम मेघानां चान्तकारिणाम् ।**
**इन्द्रः प्राचोदयत् क्रुद्धो वाक्यं चाहेशमान्युत ॥२॥**

पदच्छेद— गणम् सांवर्तकम् नाम मेघानाम् च अन्त कारिणाम् ।
इन्द्रः प्राचोदयत् क्रुद्धः वाक्यम् चाह ईशमानी उत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गणम् | ८. | गण को | इन्द्रः | २. | इन्द्र ने |
| सांवर्तकम् | ६. | सांवर्त | प्राचोदयत् | ११. | व्रज पर चढ़ाई करने की |
| नाम | ७. | नामक | क्रुद्धः | ६. | क्रोधित होकर |
| मेघानाम् | ५. | मेघों के | वाक्यम् | १२. | आज्ञा दो |
| च अन्त | ३. | प्रलय | चाह | १०. | कहा और |
| कारिणाम् । | ४. | करने वाले | ईशमानी उत् ॥ | १. | अथवा अपने को ईश्वर मानने वाले |

श्लोकार्थ—अथवा अपने को ईश्वर मानने वाले इन्द्र ने प्रलय करने वाले मेघों के सांवर्तक नामक गण को क्राधित होकर कहा और व्रज पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी ।

## तृतीयः श्लोकः

**अहो श्रीमदमाहात्म्यं गोपानां काननौकसाम् ।**
**कृष्णं मर्त्यमुपाश्रित्य ये चक्रुर्देवहेलनम् ॥३॥**

पदच्छेद— अहो श्रीमद माहात्म्यम् गोपानाम् कानन ओकसाम् ।
कृष्णम् मर्त्यम् उपाश्रित्य ये चक्रुः देव हेलनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो | १. ओह | कृष्णम् | ९. श्रीकृष्ण का |
| श्रीमद | ५. धन के मद का | मर्त्यम् | ८. मनुष्य |
| माहात्म्यम् | ६. कितना महत्त्व है | उपाश्रित्य | १०. आश्रय लेकर |
| गोपानाम् | ४. ग्वाल-बालों के | ये | ७. जो उन्होंने |
| कानन | २. वन | चक्रुः | ११. मुझ जैसे |
| ओकसाम् । | ३. वासी | देव हेलनम् ॥ | १२. देवता की अवहेलना की |

श्लोकार्थ—ओह वनवासी ग्वाल-बालों के धन के मद का कितना महत्त्व है जो उन्होंने मनुष्य श्रीकृष्ण का आश्रय लेकर मुझ जैसे देवता की अवहेलना की ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**यथादृढैः कर्ममयैः क्रतुभिर्नामनौनिभैः ।**
**विद्यामान्वीक्षिकीं हित्वा तितीर्षन्ति भवार्णवम् ॥४॥**

पदच्छेद— यथा दृढैः कर्म मयैः क्रतुभिः नाम नौनिभैः ।
विद्याम् अन्वीक्षिकीम् हित्वा तितीर्षन्ति भव अर्णवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यथा | १. जैसे पुरुष | विद्याम् | ४. विद्या को |
| दृढैः | २. सच्चे साधन | आन्वीक्षिकिम् | ३. ब्रह्म |
| कर्म | ६. कर्म | हित्वा | ५. छोड़ कर |
| मयैः | ७. मय | तितीर्षन्ति | १३. पार करना चाहते हैं |
| क्रतुभिः | ८. यज्ञों से अर्थात् | भव | ११. भव |
| नाम | ९. नाम मात्र की | अर्णवम् ॥ | १२. सागर को |
| नौनिभैः । | १०. टूटी नाव से | | |

श्लोकार्थ—जैसे पुरुष सच्चे साधन ब्रह्मविद्या को छोड़कर कर्ममय यज्ञों से अर्थात् नाम मात्र की टूटी नाव से भव सागर को पार करना चाहते हैं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**वाचालं बालिशं स्तब्धमज्ञं पण्डितमानिनम् ।**
**कृष्णं मर्त्यमुपाश्रित्य गोपा मे चक्रुरप्रियम् ॥५॥**

पदच्छेद — वाचालम् बालिशम् स्तब्धम् अज्ञम् पण्डित मानिनम् ।
कृष्णम् मर्त्यम् उपाश्रित्य गोपाः मे चक्रुः अप्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वाचालम् | २. | बकवादी | कृष्णम् | १. | कृष्ण |
| बालिशम् | ३. | नादान | मर्त्यम् | ८. | उस मृत्यु के ग्रास का |
| स्तब्धम् | ४. | अभिमानी और | उपाश्रित्य | ६. | आश्रय लेकर |
| अज्ञम् | ५. | मूर्ख होने पर भी | गोपा मे | १०. | ग्वाल-बालों ने मेरा |
| पण्डित | ६. | अपने को ज्ञानी | चक्रुः | १२. | किया है |
| मानिनम् । | ७. | समझता है | अप्रियम् ॥ | ११. | अनादर |

श्लोकार्थ—कृष्ण बकवादी, नादान, अभिमानी और मूर्ख होने पर भी अपने को ज्ञानी समझता है। उस मृत्यु के ग्रास का आश्रय लेकर ग्वालबालों ने मेरा अनादर किया है ॥

## षष्ठः श्लोकः

**एषां श्रियावलिप्तानां कृष्णेनाध्मायितात्मनाम् ।**
**धुनुत श्रीमदस्तम्भं पशून् नयत संक्षयम् ॥६॥**

पदच्छेद— एषाम् श्रिया अवलिप्तानाम् कृष्णेन आध्मायित आत्मनाम् ।
धुनुत श्रीमद स्तम्भम् पशून् नयत संक्षयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एषाम् | १. | एक तो ये | धुनुत | ९. | चूर-चूर कर दो |
| श्रिया | २. | धन मद में | श्रीमद | ७. | इनके धन |
| अवलिप्तानाम् | ३. | चूर थे फिर | स्तम्भम् | ८. | मद को |
| कृष्णेन | ४. | कृष्ण ने | पशून् | १०. | पशुओं को |
| आध्मायित | ६. | और बढ़ा दिया है | नयत | १२. | कर दो |
| आत्मनाम् । | ५. | इनके मद को | संक्षयम् ॥ | ११. | नष्ट |

श्लोकार्थ—एक तो ये धन मद में चूर थे। फिर कृष्ण ने इनके मद को और बढ़ा दिया है। इनके धन मद को चूर-चूर कर दो तथा पशुओं को नष्ट कर दो ॥

## सप्तमः श्लोकः

**अहं चैरावतं नागमारुह्यानुव्रजे व्रजम् ।**
**मरुद्गणैर्महावीर्यैर्नन्दगोष्ठजिघांसया ॥७॥**

पदच्छेद— अहम् च ऐरावतम् नागम् आरुह्य अनुव्रजे व्रजम् ।
मरुद् गणैः महावीर्यैः नन्द गोष्ठ जिघांसया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहम् | १. | मैं भी | मरुद् | १०. | मरुद् |
| च ऐरावतम् | ३. | ऐरावत | गणैः | ११. | गणों के साथ |
| नागम् | ४. | हाथी पर | महावीर्यैः | ६. | महापराक्रमी |
| आरुह्य | ५. | चढ़ कर | नन्द | ६. | नन्द के |
| अनुव्रजे | २. | तुम्हारे पीछे-पीछे | गोष्ठ | ७. | व्रज का |
| व्रजम् । | १२. | व्रज में आ रहा हूँ | जिघांसया ॥ | ८. | नाश करने के लिये |

श्लोकार्थ—मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे ऐरावत हाथी पर चढ़ कर नन्द के व्रज का नाश करने के लिये । महापराक्रमी मरुद् गणों के साथ व्रज में आ रहा हूँ ॥

## अष्टमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—इत्थं मघवताऽऽज्ञप्ता मेघा निर्मुक्तबन्धनाः ।**
**नन्दगोकुलमासारैः पीडयामासुरोजसा ॥८॥**

पदच्छेद— इत्थम् मघवता आज्ञप्ताः मेघाः बनिर्मुक्त बन्धनाः ।
नन्द गोकुलम् आसारैः पीडयामासुः ओजसा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | २. | इस प्रकार | नन्द | ८. | नन्द बाबा के |
| मघवता | १. | इन्द्र से | गोकुलम् | ९. | व्रज को |
| आज्ञप्ताः | ३. | आज्ञा पाकर | आसारैः | १०. | मूसलधार वर्षा से |
| मेघाः | ४. | मेघ | पीडयामासुः | ११. | पीडित करने लगे |
| निर्मुक्त | ६. | मुक्त होकर | ओजसा ॥ | ७. | बड़े वेग से |
| बन्धनाः । | ५. | बन्धन | | | |

श्लोकार्थ—इन्द्र से इस प्रकार आज्ञा पाकर मेघ बन्धन मुक्त होकर बड़े वेग से नन्द बाबा के व्रज को मूसलधार वर्षा से पीडित करने लगे ॥

## नवमः श्लोकः

**विद्योतमाना विद्युद्भिः स्तनन्तः स्तनयित्नुभिः ।**
**तीव्रैर्मरुद्गणैर्नुन्ना ववृषुर्जलशर्कराः ॥९॥**

पदच्छेद— विद्योतमानाः विद्युद्भिः स्तनन्तः स्तनयित्नुभिः ।
तीव्रैः मरुद्गणैः नुन्नाः ववृषुः जल शर्कराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विद्योतमानाः | २. | चमकने लगीं | मरुद् | ६. | आँधी |
| विद्युद्भिः | १. | बिजलियाँ | गणैः | ७. | की |
| स्तनन्तः | ४. | कड़कने लगे | नुन्नाः | ८. | प्रेरणा से |
| स्तनयित्नुभिः । | ३. | बादल | ववृषुः | १०. | बरसाने लगे |
| तीव्रैः | ५. | प्रचण्ड | जल शर्कराः ॥ | ९. | वे बड़े-बड़े ओले |

श्लोकार्थ—बिजलियाँ चमकने लगीं, बादल कड़कने लगे, प्रचण्ड आँधी की प्रेरणा से वे बड़े-बड़े ओले बरसाने लगे ॥

## दशमः श्लोकः

**स्थूणास्थूला वर्षधारा मुञ्चत्स्वभ्रेष्वभीक्ष्णशः ।**
**जलौघैः प्लाव्यमाना भूर्नादृश्यत नतोन्नतम् ॥१०॥**

पदच्छेद— स्थूणा स्थूलाः वर्षधाराः मुञ्चत् स्वभ्रेषु अभीक्ष्णशः ।
जल ओघैः प्लाव्यमाना भूः न अदृश्यत नत उन्नतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्थूणा | ३. | खम्भे के समान | जल ओघैः | ७. | जल के समूह से |
| स्थूला | ४. | मोटी-मोटी | प्लाव्यमानाः | ८. | भर जाने के कारण |
| वर्षधारा | ५. | वर्षा की धारायें | भूः न | ११. | पृथ्वी नहीं |
| मुञ्चत् | ६. | छोड़ने लगे | अदृश्यत | १२. | दिखलाई पड़ती थी |
| स्वभ्रेषु | १. | बादल आकाश में | नत | १०. | नीची |
| अभीक्ष्णशः । | २. | बार-बार | उन्नतम् ॥ | ९. | ऊँची |

श्लोकार्थ—बादल आकाश में बार-बार खम्भे के समान मोटी-मोटी वर्षा की धारायें छोड़ने लगे । जल के समूह से भर जाने के कारण ऊँची-नीची पृथ्वी नहीं दिखाई पड़ती थी ॥

## एकादशः श्लोकः

अत्यासारातिवातेन पशवो जातवेपनाः ।
गोपा गोप्यश्च शीतार्ता गोविन्दं शरणं ययुः ॥११॥

पदच्छेद— अत्यासार अति वातेन पशवः जात वेपनाः ।
गोपाः गोप्यः च शीत आर्ताः गोविन्दम् शरणम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्यासार | १. | मूसलधार वर्षा (और) | गोपाः | ७. | ग्वाल और |
| अति | २. | अत्यन्त | गोप्यः च | ८. | ग्वालिनियाँ |
| वातेन | ३. | प्रचण्ड झंझावात से | शीत आर्ताः | ९. | ठंड के मारे व्याकुल हो गयीं |
| पशवः | ४. | पशु | गोविन्दम् | १०. | और वे श्रीकृष्ण की |
| जात | ६. | लगे | शरणम् | ११. | शरण में |
| वेपनाः । | ५. | काँपने | ययुः ॥ | १२. | जा पहुँचे |

श्लोकार्थ—मूसलधार वर्षा और अत्यन्त प्रचण्ड झंझावात से पशु काँपने लगे । ग्वाल और ग्वालियाँ ठंड के मारे व्याकुल हो गयीं । और वे श्रीकृष्ण की शरण में जा पहुँचे ॥

## द्वादशः श्लोकः

शिरः सुतांश्च कायेन प्रच्छाद्यासारपीडिताः ।
वेपमाना भगवतः पादमूलमुपाययुः ॥१२॥

पदच्छेद— शिरः सुतान् च कायेन प्रच्छाद्य आसार पीडिताः ।
वेपमानाः भगवतः पाद मूलम् उपाययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शिरः | ३. | अपने सिर | वेपमानाः | ७. | वे काँपते हुये |
| सुतान् च | ४. | और अपने बच्चों को | भगवतः | ८. | भगवान् श्रीकृष्ण के |
| कायेन | ५. | शरीर के नीचे | पाद | ९. | चरण |
| प्रच्छाद्य | ६. | छिपा लिया | मूलम् | १०. | कमलों में |
| आसार | १. | मूसलधार वर्षा से | उपाययुः ॥ | ११. | आ पहुँचे ॥ |
| पीडिताः । | २. | पीडित होकर | | | |

श्लोकार्थ—मूसलधार वर्षा से पीडित होकर अपने सिर और अपने बच्चों को शरीर के नीचे छिपा लिया । वे काँपते हुये भगवान् श्रीकृष्ण के चरण-कमलों में आ पहुँचे ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**कृष्ण कृष्ण महाभाग त्वन्नाथं गोकुलं प्रभो ।**
**त्रातुमर्हसि देवान्नः कुपिताद् भक्तवत्सल ॥१३॥**

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण महाभाग त्वत्नाथम् गोकुलम् प्रभो ।
त्रातुम् अर्हसि देवात् नः कुपिताद् भक्त वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | प्यारे कृष्ण | त्रातुम् | ११. | आप ही बचा |
| कृष्ण | २. | श्याम सुन्दर | अर्हसि | १२. | सकते हैं |
| महाभाग | ३. | तुम बड़े भाग्यवान् हो | देवात् नः | १०. | इन्द्रदेव से हमें |
| त्वत्नाथम् | ६. | आप ही स्वामी हैं | कुपितात् | ९. | क्रोधित इस |
| गोकुलम् | ५. | गोकुल के | भक्त | ७. | हे भक्त |
| प्रभो । | ४. | हे प्रभो ! | वत्सलः ॥ | ८. | वत्सल प्रभो ! |

श्लोकार्थ—प्यारे कृष्ण, श्याम सुन्दर ! तुम बड़े भाग्यवान् हो । हे प्रभो ! गोकुल के आप ही स्वामी हैं । हे भक्तवत्सल प्रभो ! क्रोधित इस इन्द्रदेव से हमें आप ही बचा सकते हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**शिलावर्षनिपातेन हन्यमानमचेतनम् ।**
**निरीक्ष्य भगवान् मेने कुपितेन्द्रकृतं हरिः ॥१४॥**

पदच्छेद— शिलावर्ष निपातेन हन्य मानम् अचेतनम् ।
निरीक्ष्य भगवान् मेने कुपित इन्द्र कृतम् हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शिला | ४. | ओलों की | निरीक्ष्य | २. | देखा कि सब |
| वर्ष | ३. | वर्षा और | भगवान् | १. | भगवान् ने |
| निपातेन | ५. | मार से | मेने | १०. | समझ लिया कि यह |
| हन्य | ६. | चोट | कुपित इन्द्र | ११. | इन्द्र ने ही क्रोधित होकर |
| मानम् | ७. | खाये हुये | कृतम् | १२. | किया है |
| अचेतनम् । | ८. | बेहोश पड़े हैं तब | हरिः ॥ | ९. | भगवान् श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—भगवान् ने देखा कि सब वर्षा और ओलों से चोट खाये हुये बेहोश पड़े हैं । तब भगवान् श्रीकृष्ण ने समझ लिया कि यह इन्द्र ने ही क्रोधित होकर किया है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**अपर्त्वत्युल्बणं वर्षमतिवातं शिलामयम् ।**
**स्वयागे विहतेऽस्माभिरिन्द्रो नाशाय वर्षति ॥१५॥**

**पदच्छेद—** अप ऋतु अति उल्बणम् वर्षम् अतिवातम् शिलामयम् ।
स्वयागे विहते अस्माभिः इन्द्रः नाशाय वर्षति ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अप ऋतु | ५. | बिना ऋतु के ही | स्वयागे | २. | इन्द्र के यज्ञ को |
| अति उल्बणम् | ६. | अत्यन्त प्रचण्ड | विहते | ३. | भङ्ग करने के कारण |
| वर्षम् | ७. | वर्षा और | अस्माभिः | १. | हमारे द्वारा |
| अति | ८. | प्रचण्ड | इन्द्रः | ४. | इन्द्र ने ही |
| वातम् | ९. | झंझावात तथा | नाशाय | ११. | व्रज के विनाश के लिये ही |
| शिलामयम् । | १०. | ओलों के द्वारा | वर्षति ॥ | १२. | वर्षा करायी है |

**श्लोकार्थ—**हमारे द्वारा इन्द्र के यज्ञ को भङ्ग करने के कारण इन्द्र ने ही बिना ऋतु के ही अत्यन्त प्रचण्ड झंझावात तथा ओलों के द्वारा व्रज के विनाश के लिये ही वर्षा करायी है ॥

## षोडशः श्लोकः

**तत्र प्रतिविधिं सम्यगात्मयोगेन साधये ।**
**लोकेशमानिनां मौढ्याद्धरिष्ये श्रीमदं तमः ॥१६॥**

**पदच्छेद—** तत्र प्रतिविधिम् सम्यक् आत्मयोगेन साधये ।
लोकेशमानिनाम् मौढ्यात् हरिष्ये श्रीमदं तमः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. | अब मैं | लोकेश | ८. | अपने को लोकपाल |
| प्रतिविधिम् | ५. | जवाब | मानिनाम् | ९. | मानने वाले |
| सम्यक् | ४. | इसका भलीभाँति | मौढ्यात् | ७. | मूर्खता के कारण |
| आत्म | २. | अपनी | हरिष्ये | १२. | चूर-चूर कर दूँगा |
| योगेन | ३. | योग माया से | श्रीमदं | १०. | इसके ऐश्वर्य का घमण्ड |
| साधये । | ६. | दूँगा | तमः ॥ | ११. | और अज्ञान |

**श्लोकार्थ—**अब मैं अपनी योग माया से इसका भलीभाँति जवाब दूँगा । मूर्खता के कारण अपने को लोकपाल मानने वाले इसके ऐश्वर्य का घमण्ड और अज्ञान चूर-चूर कर दूँगा ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**न हि सद्भावयुक्तानां सुराणामीशविस्मयः ।**
**मत्तोऽसतां मानभङ्गः प्रशमायोपकल्पते ॥१७॥**

पदच्छेद— न हि सत्भाव युक्तानाम् सुराणाम् ईश विस्मयः ।
मत्तः असताम् मानभङ्गः प्रशमाय उपकल्पते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नहि | ७. नहीं | मत्तः | ६. मदोन्मत्त |
| सत्भाव | २. सत्त्व गुण से | असताम् | ८. होना चाहिये |
| युक्तानाम् | ३. युक्त होने वाले | मान | ९. इनका मान |
| सुराणाम् | ५. देवों का | भङ्गः | १०. भङ्ग होने पर ही |
| ईश | ४. ऐश्वर्य युक्त | प्रशमाथ | ११. इन्हें शान्ति |
| विस्मयः । | १. आश्चर्य है कि | उपकल्पते ॥ | १२. प्राप्त होगी |

श्लोकार्थ—आश्चर्य है कि सत्त्वगुण से युक्त होने वाले ऐश्वर्य युक्त देवों को मदोन्मत्त नहीं होना चाहिये । इनका मान भङ्ग होने पर ही इन्हें शान्ति प्राप्त होगी ।

## अष्टादशः श्लोकः

**तस्मान्मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम् ।**
**गोपाये स्वात्मयोगेन सोऽयं मे व्रत आहितः ॥१८॥**

पदच्छेद— तस्मात् मत् शरणम् गोष्ठम् मत् नाथम् मत् परिग्रहम् ।
गोपाये स्व आत्मयोगेन सः अयम् मे व्रते आहितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. इसलिये | गोपाये | १०. इसकी रक्षा करूँगा |
| मत् शरणम् | ३. मेरे आश्रित हैं | स्व | ८. मैं |
| गोष्ठम् | २. यह व्रज | आत्मयोगेन | ९. अपनी योग माया से |
| मत् | ४. मैं इसका | सः | ११. वही |
| नाथम् | ५. स्वामी और | अयम् | १२. यह |
| मत् | ६. मैं ही | मे व्रत | १३. मेरा व्रत पालन का समय |
| परिग्रहणम् । | ७. रक्षक हूँ | आहितः ॥ | १४. आ गया है |

श्लोकार्थ—इसलिये यह व्रज मेरे आश्रित है । मैं इसका स्वामी ओर मैं ही रक्षक हूँ । मैं अपनी योग माया से इसकी रक्षा करूँगा । वही यह मेरा व्रत-पालन का समय आ गया है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**इत्युक्त्वैकेन हस्तेन कृत्वा गोवर्धनाचलम् ।**
**दधार लीलया कृष्णश्छत्राकमिव बालकः ॥१९॥**

पदच्छेद— इति उक्त्वा एकेन हस्तेन कृत्वा गोवर्धन अचलम् ।
दधार लीलया कृष्णः छत्राकम् इव बालकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | दधार | ९. वैसे ही धारण कर लिया |
| उक्त्वा | २. कहकर | लीलया | ४. खेल ही खेल में |
| एकेन हस्तेन | ५. एक ही हाथ से | कृष्णः | ३. भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| कृत्वा | ८. उखाड़कर | छत्राकम् | १२. बरसाती छत्ते को उखाड़ लेते हैं |
| गोवर्धन | ७. गोवर्धन को | इव | १०. जैसे |
| अचलम् । | ६. गिरिराज | बालकः ॥ | ११. बालक |

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहकर भगवान् श्रीकृष्ण ने खेल में एक ही हाथ से गिरिराज गोवर्धन को उखाड़कर वैसे ही धारण कर लिया जैसे बालक बरसाती छत्ते को उखाड़ लेता है ।

## विंशः श्लोकः

**अथाह भगवान् गोपान् हेऽम्ब तात व्रजौकसः ।**
**यथोपजोषं विशत गिरिगर्तं सगोधनाः ॥२०॥**

पदच्छेद— अथ आह भगवान् गोपान् हे अम्ब तात व्रज ओकसः ।
यथा उपजोषम् विशत गिरिगर्तम् स गोधनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. इसके बाद | यथा | १३. आराम से |
| आह | ४. कहा | उप | ८. अपनी |
| भगवान् | २. भगवान् ने | जोषम् | ९. सामग्री और |
| गोपान् | ३. गोपों से | विशत | १४. बैठ जाइये |
| हे अम्ब | ५. हे माता जी ! | गिरि | ११. इस पर्वत के |
| तात | ६. पिताजी और | गर्तम् | १२. गड्ढे में |
| व्रज ओकसः । | ७. व्रज वासियों | सगोधनाः ॥ | १०. गायों के साथ |

श्लोकार्थ—इसके बाद भगवान् ने गोपों से कहा—हे माता जी ! पिता जी, व्रज वासियो, अपनी सामग्री और गायों के साथ इस पर्वत के गड्ढे में आराम से बैठ जाइये ।

## एकविंशः श्लोकः

न त्रास इह वः कार्यो मद्धस्ताद्रिनिपातने।
वातवर्षभयेनालं तत्त्राणं विहितं हि वः ॥२१॥

पदच्छेद— न त्रासः इह वः कार्यः मद्धस्त अद्रि निपातने।
वात वर्ष भयेन अलम् तत् त्राणम् विहितम् हि वः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| न त्रासः | २. भय नहीं | | वात-वर्ष | ७. आंधी-पानी के |
| इव वः | १. तुम लोगों को ऐसा | | भयेन | ८. डर से |
| कार्यः | ३. होना चाहिये कि | | अलम् | ९. मत डरो |
| मद्धस्त | ४. मेरे हाथ से यह | | तत त्राणम् | ११. उससे बचाने के लिये ही |
| अद्रि | ५. पहाड़ | | विहितम् | १२. मैंने ऐसा किया है |
| निपातने। | ६. गिर पड़ेगा | | हि वः॥ | १०. तुम लोगों को |

श्लोकार्थ—तुम लोगों को ऐसा भय नहीं होना चाहिये कि मेरे हाथ से यह पहाड़ गिर पड़ेगा। आंधी-पानी के डर से मत डरो। तुम लोगों को उससे बचाने के लिये ही मैंने ऐसा किया॥

## द्वाविंशः श्लोकः

तथा निर्विविशुर्गर्तं कृष्णाश्वासितमानसाः।
यथावकाशं सधनाः सव्रजाः सोपजीविनः ॥२२॥

पदच्छेद— तथा निर्विविशुः गर्तम् कृष्ण आश्वासित मानसाः।
यथा अवकाशम् सधनाः सव्रजाः स उपजीविनः॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तथा | १. उस समय | | यथा | ५. अनुसार |
| निर्विविशुः | १२. जा घुसे | | अवकाशम् | ६. अपने सुभीते के |
| गर्तम् | ११. गिरिराज के गड्ढे में | | सधनाः | ७. अपने गोधन |
| कृष्ण | २. श्रीकृष्ण के द्वारा | | सव्रजाः | ८. सामग्री और |
| आश्वासित | ३. आश्वस्त | | स | ९. सहित |
| मानसाः। | ४. मन वाले वे | | उपजीविनः॥ | १०. सेवकों आदि |

श्लोकार्थ—उस समय श्रीकृष्ण के द्वारा आश्वस्त मन वाले वे अपने सुभीते के अनुसार अपने गोधन, सामग्री और सेवकों आदि सहित गिरिराज के गड्ढे में जा घुसे॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

क्षुत्तृड्व्यथां सुखापेक्षां हित्वा तैर्व्रजवासिभिः ।
वीक्ष्यमाणो दधावद्रिं सप्ताहं नाचलत् पदात् ॥२३॥

पदच्छेद— क्षुत् तृड् व्यथाम् सुख अपेक्षाम् हित्वा तैः व्रज वासिभिः ।
वीक्ष्यमाणः दधौ अद्रिम् सप्ताहम् न अचलत् पदात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्षुत् तृड् | ४. | भूख-प्यास की | वीक्ष्यमाणः | ३. | देखते-देखते भगवान् ने |
| व्यथाम् | ५. | पीडा | दधौ | ११. | उठाये रखा |
| सुख | ६. | आराम विश्राम की | अद्रिम् | १०. | उस पर्वत को |
| अपेक्षाम् | ७. | आवश्यकता | सप्ताहम् | ९. | सात दिनों तक |
| हित्वा | ८. | छोड़कर | न | १३. | नहीं |
| तैः | १. | उन | अचलत् | १४. | हटे |
| व्रजवासिभिः । | २. | व्रजवासियों के | पदात् ॥ | १२. | वे एक पग भी वहाँ से |

श्लोकार्थ—उन व्रजवासियों के देखते-देखते भगवान् ने भूख-प्यास की पीडा, आराम विश्राम की आवश्यकता छोड़कर सात दिनों तक उस पर्वत को उठाये रखा। वे एक पग भी वहाँ से नहीं हटे ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

कृष्णयोगानुभावं तं निशाम्येन्द्रोऽतिविस्मितः ।
निःस्तम्भो भ्रष्टसङ्कल्पः स्वान् मेघान् संन्यवारयत् ॥२४॥

पदच्छेद— कृष्णयोग अनुभावम् तम् निशाम्य इन्द्रः अतिविस्मितः ।
निः स्तम्भः भ्रष्ट संकल्पः स्वान् मेघान् संन्यवारयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | श्रीकृष्ण की | निः स्तम्भः | १०. | भौचक्के से रह गये उन्होंने |
| योग | २. | योग माया का | भ्रष्ट | ९. | पूरा न होने से वह |
| अनुभावम् | ४. | प्रभाव | संकल्प | ८. | संकल्प |
| तम् | ३. | यह | स्वान् | ११. | अपने |
| निशाम्य | ५. | देखकर | मेघान् | १२. | मेघों को भी |
| इन्द्रः अति | ६. | इन्द्र अत्यन्त | सन्यवारयत् ॥ | १३. | वापस बुला लिया |
| विस्मितः । | ७. | विस्मित हो गये | | | |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण की योग माया का यह प्रभाव सुनकर इन्द्र अत्यन्त विस्मित हो गये। संकल्प पूरा न होने से वे भौचक्के से रह गये। उन्होंने अपने मेघों को भी वापिस बुला लिया ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

खं व्यभ्रमुदितादित्यं वातवर्षं च दारुणम् ।
निशाम्योपरतं गोपान् गोवर्धनधरोऽब्रवीत् ॥२५॥

पदच्छेद— खम् व्यभ्रम् उदित आदित्यम् वात वर्षं च दारुणम् ।
निशाम्य उपरतम् गोपान् गोवर्धन धरः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खम् | ७. | आकाश से | निशाम्य | ३. | देखा कि |
| व्यभ्रम् | ८. | बादल छँट गये हैं | उपरतम् | ६. | बन्द हो गयी है |
| उदित | १०. | निकल आया है तब वे | गोपान् | ११. | ग्वाल बालों से |
| आदित्यम् | ९. | सूर्य | गोवर्धन | १. | गोवर्धन |
| वातवर्षम् च | ५ | आंधी, पानी और वर्षा | धरः | २. | धारी श्रीकृष्ण ने |
| दारुणम् । | ४. | बड़े भयङ्कर | अब्रवीत् ॥ | १२. | बोले |

श्लोकार्थ—गोवर्धनधारी श्रीकृष्ण ने सुना कि आँधी-पानी और वर्षा बन्द हो गयी है । आकाश से बादल छँट गये हैं । सूर्य निकल आया है । तब वे ग्वाल-बालों से बोले ॥

## षड्विंशः श्लोकः

निर्यात त्यजत त्रासं गोपाः सस्त्रीधनार्भकाः ।
उपारतं वातवर्षं व्युदप्रायाश्च निम्नगाः ॥२६॥

पदच्छेद— निर्यात त्यजत त्रासम् गोपाः सस्त्रीधन अर्भकाः ।
उपारतम् वात वर्षम् व्युदप्रायाः च निम्नगाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निर्यात | ६. | बाहर निकलो । | उपारतम् | ९. | बन्द हो गया है |
| त्यजत | ३. | छोड़कर | वात | ७. | आँधी और |
| त्रासम् | २. | भय | वर्षम् | ८. | पानी |
| गोपाः | १. | अरे गोपो | व्युदप्रायाः | १२. | उतर गया है |
| सस्त्रीधन | ४. | स्त्रीधन और | च | १०. | और |
| अर्भकाः | ५. | बच्चों सहित | निम्नगाः ॥ | ११. | नदियों का जल भी |

श्लोकार्थ—अरे गोपो ! भय छोडकर स्त्री, धन और बच्चों सहित बाहर निकलो । आँधी और पानी बन्द हो गया है । और नदियों का जल भी उतर गया है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

ततस्ते निर्ययुर्गोपाः स्वं स्वमादाय गोधनम् ।
शकटोढोपकरणं स्त्रीबालस्थविराः शनैः ॥२७॥

पदच्छेद— ततः ते निर्ययुः गोपाः स्वम्-स्वम् आदाय गोधनम् ।
शकट ऊढ उपकरणम् स्त्री बाल स्थविराः शनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब | शकट | ११. | छकड़ों पर |
| ते | २. | वे | ऊढ | १२. | लादकर |
| निर्ययुः | १४. | बाहर निकले | उपकरणम् | १०. | अपनी सामग्री |
| गोपाः | ३. | ग्वाल-बाल | स्त्री | ६. | स्त्रियों |
| स्वम्-स्वम् | ४. | अपने-अपने | बाल | ७. | बालकों और |
| आदाय | ६. | साथ लेकर | स्थविराः | ८. | बूढ़ों को |
| गोधनम् । | ५. | गोधन | शनैः ॥ | १३. | धीरे-धीरे |

श्लोकार्थ—तब वे ग्वाल-बाल अपने-अपने गोधन, स्त्रियों, बालकों और बूढ़ों को साथ लेकर अपनी-अपनी सामग्री छकड़ों पर लादकर धीरे-धीरे बाहर निकले ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

भगवानपि तं शैलं स्वस्थाने पूर्ववत् प्रभुः ।
पश्यतां सर्वभूतानां स्थापयामास लीलया ॥२८॥

पदच्छेद— भगवान् अपि तम् शैलम् स्वस्थाने पूर्ववत् प्रभुः ।
पश्यताम् सर्व भूतानाम् स्थापयामास लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | २. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | प्रभुः | १. | सर्वशक्तिमान् |
| अपि | ३. | भी | पश्यताम् | ६. | देखते-देखते |
| तम् | ७. | उस | सर्व | ४. | सब |
| शैलम् | ८. | गिरिराज को | भूतानाम् | ५. | प्राणियों के |
| स्वस्थाने | ११. | उसके स्थान पर | स्थापयामास | १२. | रख दिया |
| पूर्ववत् | १०. | पहले के समान | लीलया ॥ | ६. | खेल ही खेल में |

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण ने भी सब प्राणियों के देखते-देखते उस गिरिराज को खेल ही खेल में पहले के समान उसके स्थान पर रख दिया ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**तं प्रेमवेगान्निभृता व्रजौकसो यथा समीयुः परिरम्भणादिभिः ।**
**गोप्यश्च सस्नेहमपूजयन् मुदा दध्यक्षताद्भिर्युयुजुः सदाशिषः ॥२९॥**

पदच्छेद— तम् प्रेम वेगात् निभृताः व्रज ओकसः यथा समीयुः परिरम्भण आदिभिः ।
गोप्यः च सस्नेहम् अपूजयन् मुदा दधिक्षतअद्भिः युयुजुः सत्आशिषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | ६. उनका | गोप्यः च | ९. और गोपियों ने भी |
| प्रेमवेगात् | २. प्रेम के वेग में | सस्नेहम् | १०. स्नेह पूर्वक |
| निभृताः | ३. भरकर | अपूजयन् | १२. उनकी पूजा की |
| व्रज ओकसः | १. व्रज वासियों ने | मुदा | ११. बड़े प्रेम से |
| यथा | ७. भली-भाँति | दधिअक्षतअद्भिः | १५. दही, अक्षत जल आदि से |
| समीयुः | ८. सम्मान किया | युयुजुः | १६. उनका तिलक किया |
| परिरम्भण | ४. आलिङ्गन | सत् | १३. शुभ |
| आदिभिः । | ५. आदि के द्वारा | आशिषः ॥ | १४. आशीर्वाद तथा |

श्लोकार्थ—व्रजवासियों ने प्रेम के वेग में भरकर आलिङ्गन आदि के द्वारा उनका भली भाँति सम्मान किया । और गोपियों ने भी स्नेहपूर्वक बड़े प्रेम से उनकी पूजा की । शुभ आशीर्वाद तथा दही, अक्षत, जल आदि से उनका तिलक किया ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**यशोदा रोहिणी नन्दो रामश्च बलिनां वरः ।**
**कृष्णमालिङ्ग्य युयुजुराशिषः स्नेहकातराः ॥३०॥**

पदच्छेद— यशोदा रोहिणी नन्दः रामः च बलिनाम् वरः ।
कृष्णम् आलिङ्ग्य युयुजुः आशिषः स्नेह कातराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यशोदा | १. यशोदा रानी | कृष्णम् | १०. श्रीकृष्ण को |
| रोहिणी | २. रोहिणी जी | आलिङ्ग्य | ११. हृदय से |
| नन्दः | ३. नन्द बाबा | युयुजुः | १२. लगा लिया |
| रामः | ६. बलराम जी ने | आशिषः | ९. आशीर्वाद देते हुये |
| च बलिनाम् | ४. और बलवानों में | स्नेह | ७. स्नेह से |
| वरः । | ५. श्रेष्ठ | कातराः ॥ | ८. आतुर होकर |

श्लोकार्थ—यशोदा रानी, रोहिणी जी, नन्द बाबा और बलवानों में श्रेष्ठ बलराम जी ने स्नेह से आतुर होकर आशीर्वाद देते हुये श्रीकृष्ण को हृदय से लगा लिया ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**दिवि देवगणाः साध्याः सिद्धगन्धर्वचारणाः ।**
**तुष्टुवुर्मुमुचुस्तुष्टाः पुष्पवर्षाणि पार्थिव ॥३१॥**

पदच्छेद— दिवि देवगणाः साध्याः सिद्धगन्धर्वचारणाः ।
तुष्टुवुः मुमुचुः तुष्टाः पुष्प वर्षाणि पार्थिव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **दिवि** | २. | आकाश में | **तुष्टुवुः** | ९. | स्तुति करते हुये |
| **देवगणाः** | ३. | देवता | **मुमुचः** | १२. | लगे |
| **साध्याः** | ४. | साध्य | **तुष्टाः** | ८. | प्रसन्न होकर |
| **सिद्ध** | ५. | सिद्ध | **पुष्प** | १०. | प्रभु पर पुष्प |
| **गन्धर्व** | ६. | गन्धर्व और | **वर्षाणि** | ११. | बरसाने |
| **चारणाः ।** | ७. | चारण आदि | **पार्थिवः ॥** | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! आकाश में देवता, साध्य, सिद्ध, गन्धर्व और चारण आदि प्रसन्न होकर स्तुति करते हुये प्रभु पर फूल बरसाने लगे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**शङ्खदुन्दुभयो नेदुर्दिवि देवप्रणोदिताः ।**
**जगुर्गन्धर्वपतयस्तुम्वुरुप्रमुखा नृप ॥३२॥**

पदच्छेद— शङ्ख दुन्दुभयः नेदुः दिवि देव प्रणोदिताः ।
जगुः गन्धर्व पतयः तुम्बुरु प्रमुखाः नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **शङ्ख** | ५. | शङ्ख और | **जगः** | १२. | लीलाओं का गान करने लगे |
| **दुन्दुभयः** | ६. | नोबत | **गन्धर्व** | १०. | गन्धर्व |
| **नेदुः** | ७. | बजने लगे | **पतयः** | ११. | राज भगवान् की |
| **दिवि** | २. | स्वर्ग में | **तुम्बुरुः** | ८. | तुम्बुरु |
| **देव** | ३. | देवताओं द्वारा | **प्रमुखाः** | ९. | आदि |
| **प्रणोदिताः ।** | ४. | प्रेरित | **नृप ॥** | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! स्वर्ग में देवताओं द्वारा प्रेरित शङ्ख और नोबत बजने लगे । तुम्बुरु आदि गन्धर्वराज भगवान् की लीलाओं का गान करने लगे ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**ततोऽनुरक्तैः पशुपैः परिश्रितो राजन् स गोष्ठं सबलोऽव्रजद्धरिः ।**
**तथाविधान्यस्य कृतानि गोपिका गायन्त्य ईयुर्मुदिता हृदिस्पृशः ॥३३॥**

पदच्छेद— ततः अनुरक्तैः पशुपैः परिश्रितः राजन् स गोष्ठम् सबलः अव्रजत् हरिः ।
तथा विधानि अस्य कृतानि गोपिकाः गायन्ति ईयुः मुदिताः हृदिस्पृशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः अनुरक्तैः | २. | इसके बाद प्रेमी | तथाविधानि | ११. | ऐसी अनेकों |
| पशुपैः | ३. | ग्वाल-बालों से | अस्य | १२. | भगवान् की |
| परिश्रितः | ४. | घिरे हुये | कृतानि | १३. | लीलाओं की |
| राजन् | १. | हे परीक्षित् ! | गोपिकाः | १४. | गोपियाँ |
| सगोष्ठम् | ५. | वे भगवान् श्रीकृष्ण | गायन्ति | १६. | गान करती हैं |
| सबलः | ७. | बलरामजी के साथ | ईयुः | ६. | गये |
| अव्रजत् | ८. | व्रज में | मुदिताः | १५. | बड़े प्रेम से |
| हरिः । | ६. | भगवान् | हृदिस्पृशः ॥ | १०. | हृदय को छूने वाली |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इसके बाद ग्वाल बालों से घिरे हुये वे भगवान् श्रीकृष्ण भगवान् बलराम जी के साथ व्रज में गये । हृदय को छूने वाली ऐसी अनेकों भगवान् की लीलाओं का गोपियाँ बड़े प्रेम से गान करती हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे पूर्वार्धे पञ्चविंशः अध्यायः ॥२५॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## षड्विंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवंविधानि कर्माणि गोपाः कृष्णस्य वीक्ष्य ते ।
अतद्वीर्यविदः प्रोचुः समभ्येत्य सुविस्मिताः ॥१॥

पदच्छेद— एवम् विधानि कर्माणि गोपाः कृष्णस्य वीक्ष्य ते ।
अतत् वीर्य विदः प्रोचुः समभ्येत्य सु विस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस | अतत् | ९. | वे उनके |
| विधानि | ३. | प्रकार के | वीर्यविदः | १०. | पराक्रम को नहीं जानते थे |
| कृतानि | ४. | कर्मों को | प्रोचुः | १२. | कहने लगे |
| गोपाः | ६. | ग्वाल-बालों ने | समभ्येत्य | ११. | इकट्ठे होकर |
| कृष्णस्य | १. | श्रीकृष्ण के | सु | ७. | बहुत ही |
| वीक्ष्य ते । | ५. | देखकर उन | विस्मिताः ॥ | ८. | आश्चर्य माना |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण के इस प्रकार के कर्मों को देखकर उन ग्वाल-बालों ने बहुत ही आश्चर्य माना । वे उनके पराक्रम को नहीं जानते थे । इकट्ठे होकर कहने लगे ॥

### द्वितीयः श्लोकः

बालकस्य यदेतानि कर्माण्यत्यद्भुतानि वै ।
कथमर्हत्यसौ जन्म ग्राम्येष्वात्मजुगुप्सितम् ॥२॥

पदच्छेद— बालकस्य यत् एतानि कर्माणि अति अद्भुतानि वै ।
कथम् अर्हति असौ जन्म ग्राम्येषु आत्म जुगुप्सितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बालकस्य | ४. | बालक के | कथम् | ११. | क्यों |
| यत् | २. | जो | अर्हति | १२. | हुआ है |
| एतानि | ३. | इस | असौ | ८. | इसका |
| कर्माणि | ७. | कर्म हैं तो | जन्म | ९. | जन्म हम |
| अति | ५. | अत्यन्त | ग्राम्येषु | १०. | ग्रामीणों में |
| अद्भुतानि | ६. | आश्चर्यमय | आत्म | १३. | यह तो इसके लिये |
| वै । | १. | निश्चय ही | जुगुप्सितम् ॥ | १४. | निन्दा को बात है |

श्लोकार्थ—निश्चय ही जो इस बालक के अत्यन्त आश्चर्यमय कर्म हैं । तो इसका जन्म हम ग्रामीणों में क्यों हुआ है । यह तो इसके लिये निन्दा की बात है ।

## तृतीयः श्लोकः

**यः सप्तहायनो बालः करेणैकेन लीलया ।**
**कथं बिभ्रद् गिरिवरं पुष्करं गजराडिव ॥३॥**

पदच्छेद— यः सप्तहायनः बालः करेण एकेन लीलया ।
कथम् बिभ्रद् गिरिवरम् पुष्करम् गजराट् इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यः | ५. | जो | कथम् | ११. | कैसे |
| सप्तहायनः | ६. | सात दिनों तक | बिभ्रद् | १२. | धारण किये रहा |
| बालः | १. | यह बालक | गिरिवरम् | १०. | गिरिराज को |
| करेण | ८. | हाथ से | पुष्करम् | ३. | कमल |
| एकेन | ७. | एक ही | गजराट् | २. | श्रेष्ठ हाथी के द्वारा |
| लीलया । | ९. | लीलापूर्वक | इव ॥ | ४. | के समान |

श्लोकार्थ—यह बालक श्रेष्ठ हाथी के द्वारा कमल के समान जो सात दिनों तक एक ही हाथ से लीलापूर्वक गिरिराज को कैसे धारण किये रहा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तोकेनामीलिताक्षेण पूतनाया महौजसः ।**
**पीतः स्तनः सह प्राणैः कालेनेव वयस्तनोः ॥४॥**

पदच्छेद— तोकेन आमीलित अक्षेण पूतनायाः महौजसः ।
पीतः स्तनः सह प्राणैः कालेन इव वयः तनोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तोकेन | १. | बालक होने पर भी | पीतः | ८. | पी गया |
| अमीलित | ३. | बन्द किये ही | स्तनः | ७. | स्तनों को वैसे ही |
| अक्षेण | २. | नेत्र | सह प्राणैः | ६. | प्राणों के साथ |
| पूतनायाः | ५. | पूतना के | कालेन इव | ९. | जैसे काल |
| महोजसः । | ४. | बड़ी भयंकर | वयः | ११. | आयु को निगल जाता है |
| | | | तनोः ॥ | १०. | शरीर की |

श्लोकार्थ—बालक होने पर भी नेत्र बन्द किये ही बड़ी भयंकर पूतना के स्तनों के साथ प्राणों को भी वैसे ही पी गया जैसे काल शरीर की आयु को निगल जाता है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

हिन्वतोऽधः शयानस्य मास्यस्य चरणावुदक् ।
अनोऽपतद् विपर्यस्तं रुदतः प्रपदाहतम् ॥५॥

पदच्छेद— हिन्वतः अधः शयानस्य मास्यस्य चरणौ उदक् ।
अनः अपतद् विपर्यस्तम् रुदतः प्रपद आहतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हिन्वतः | ६. उछाल रहा था तब | अपतद् | ११. | गिर गया था |
| अधः | २. छकड़े के नीचे | अनःविपर्यस्तम् | १०. | छकड़ा उलट कर |
| शयानस्य | ३. सोया हुआ | रुदतः | ७. | रोते हुये |
| मास्यस्य | १. यह जब महीने भर का था तो | प्रपद | ८. | पैरों के द्वारा |
| चरणौ | ४. पैरों को | आहतम् ॥ | ९. | ठोकर लगने पर |
| उदक् । | ५. ऊपर की ओर | | | |

श्लोकार्थ—यह जब महीने भर का था तो छकड़े के नीचे सोया हुआ पैरों को ऊपर की ओर उछाल रहा था। तब रोते हुये पैरों के द्वारा ठोकर लगने पर वह छकड़ा उलट कर गिर गया था ॥

## षष्ठः श्लोकः

एकहायन आसीनो ह्रियमाणो विहायसा ।
दैत्येन यस्तृणावर्तमहन् कण्ठग्रहातुरम् ॥६॥

पदच्छेद— एकहायनः आसीनः ह्रियमाणः विहायसा ।
दैत्येन यः तृणावर्तम् अहन् कण्ठग्रह आतुरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एकहायनः | १. जब एक वर्ष | यः | ५. | इसे |
| आसीनः | २. का था तो | तृणावर्तम् | ३. | तृणावर्त नाम का |
| ह्रियमाणः | ६. उठाकर | अहन् | १०. | उसे भी मार डाला |
| विहायसा । | ७. आकाश में ले गया था | कण्ठग्रह | ८. | उसका गला पकड़ कर |
| दैत्येन | ४. दैत्य | आतुरम् ॥ | ९. | बड़ी जल्दी से |

श्लोकार्थ—जब एक वर्ष का था तो तृणावर्त नाम का दैत्य इसे उठाकर आकाश में ले गया था। उसका गला पकड़ कर बड़ी जल्दी से उसे भी मार डाला ॥

## सप्तमः श्लोकः

**क्वचिद्धैयङ्गवस्तैन्ये मात्रा बद्ध उलूखले ।**
**गच्छन्नर्जुनयोर्मध्ये बाहुभ्यां तावपातयत् ॥७॥**

पदच्छेद— क्वचित् हैयंगव स्तैन्ये मात्रा बद्धः उलूखले ।
गच्छन् अर्जुनयोः मध्ये बाहुभ्याम् तौ अपातयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वचित् | १. | कभी | गच्छन् | ६. | चलते हुये |
| हैयंगव | २. | माखन | अर्जुनयोः | ७. | अर्जुन वृक्षों के |
| स्तैन्ये | ३. | चोरी करने पर | मध्ये | ८. | बीच से |
| मात्रा | ४. | माँ ने इसे | बाहुभ्याम् | १०. | अपनी भुजाओं से |
| बद्ध | ६. | बाँध दिया था तो | तौ | ११. | उन दोनों वृक्षों को |
| उलूखले । | ५. | ऊखल में | अपातयत् ॥ | १२. | उखाड़ फेंका |

श्लोकार्थ—कभी माखन चोरी करने पर माँ ने इसे ऊखल में बाँध दिया था तो अर्जुन वृक्षों के बीच से चलते हुये इसने अपनी भुजाओं से उन दोनों वृक्षों को उखाड़ फेंका ॥

## अष्टमः श्लोकः

**वने सञ्चारयन् वत्सान् सरामो बालकैर्वृतः ।**
**हन्तुकामं बकं दोर्भ्यां मुखतोऽरिमपाटयत् ॥८॥**

पदच्छेद— वने सञ्चारयन् वत्सान् सरामः बालकैः वृतः ।
हन्तुकामम् बकम् दोर्भ्याम् मुखतः अरिम् अपाटयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वने | ६. | वन में गया था तब | हन्तुकामम् | ७. | इसे मारने की इच्छा वाले |
| संचारयन् | ५. | चराने के लिये | बकम् | ८. | वकासुर को (इसने) |
| वत्सान् | ४. | बछड़ों को | दोर्भ्याम् | ९. | दोनों हाथों से |
| सरामः | १. | जब बलराम जी के साथ | मुखतः | १०. | उसके मुख के |
| बालकः | २. | बालकों से | अरिम् | ११. | दोनों ठोर |
| वृतः । | ३. | घिरा हुआ यह | अपाटयत् ॥ | १२. | चीर कर मार डाला |

श्लोकार्थ—जब बलराम जी के साथ बालकों से घिरा हुआ यह बछड़ों को चराने के लिये वन में गया था तब इसे मारने की इच्छा वाले वकासुर को इसने दोनों हाथों से उसके मुख के दोनों ठोर चीर कर मार डाला ॥

## नवमः श्लोकः

**वत्सेषु वत्सरूपेण प्रविशन्तं जिघांसया।**
**हत्वा न्यपातयत्तेन कपित्थानि च लीलया ॥९॥**

पदच्छेद— वत्सेषु वत्स रूपेण प्रविशन्तम् जिघांसया।
हत्वा न्यपातयत् तेन कपित्थानि च लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वत्सेषु | ४. एक दैत्य बछड़ों में | हत्वा | १०. मार डाला |
| वत्स | २. बछड़े का | न्यपातयत् | ९. गिरा कर |
| रूपेण | ३. रूप धारण करके | तेन | ७. उसे भी |
| प्रविशन्तम् | ५. घुस गया | कपित्थानि | ८. कैथे के पेड़ पर |
| जिघांसया। | १. इसे मारने की इच्छा से | च लीलया ॥ | ६. और लीला पूर्वक |

श्लोकार्थ—इसे मारने की इच्छा से बछड़े का रूप धारण करके एक दैत्य बछड़ों में घुस गया। और लीला पूर्वक उसे भी कैथे के पेड़ पर गिरा कर मार डाला ॥

## दशमः श्लोकः

**हत्वा रासभदैतेयं तद्बन्धूंश्च बलान्वितः।**
**चक्रे तालवनं क्षेमं परिपक्वफलान्वितम् ॥१०॥**

पदच्छेद— हत्वा रासभ दैतेयम् तत् बन्धून् च बलान्वितः।
चक्रे तालवनम् क्षेमम् परिपक्व फल अन्वितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| हत्वा | ७. मार कर | चक्रे | १३. बना दिया |
| रासभ | २. धेनुकासुर नामक | तालवनम् | ११. ताल वन को |
| दैतेयम् | ३. दैत्य को | क्षेमम् | १२. सब के लिये उपयोगी |
| तत् | ५. उसके | परिपक्व | ८. पके हुये |
| बन्धून् | ६. भाई-बन्धुओं को | फल | ९. फलों से |
| च | ४. और | अन्वितम् ॥ | १०. युक्त |
| बलान्वितः। | ९. बलराम जी के साथ | | |

श्लोकार्थ—बलराम जी के साथ धेनुकासुर नामक दैत्य को और उसके भाई बन्धुओं को मार कर पके हुये फलों से युक्त तालवन को सब के लिये उपयोगी बना दिया ॥

## एकादशः श्लोकः

**प्रलम्बं घातयित्वोग्रं बलेन बलशालिना ।**
**अमोचयद् व्रजपशून् गोपांश्चारण्यवह्नितः ॥११॥**

पदच्छेद— प्रलम्बम् घातयित्वा उग्रम् बलेन बलशालिना ।
अमोचयत् व्रज पशून् गोपान् च अरण्य वह्नितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रलम्बम् | ४. | प्रलम्बासुर को | अमोचयत् | १०. | छुड़ाया |
| घातयित्वा | ५. | मार डाला | व्रज पशून् | ६. | व्रज के पशुओं |
| उग्रम् | ३. | क्रूर | गोपान् च | ७. | और ग्वाल बालों को |
| बलेन | २. | बलराम जी के साथ | अरण्य | ८. | वन की |
| बलशालिना । | १. | बलशाली | वह्नितः ॥ | ९. | दावाग्नि से |

श्लोकार्थ—बलशाली बलराम जी के द्वारा क्रूर प्रम्लबासुर को मरवा डाला । व्रज के पशुओं और ग्वाल बालों को वन की दावाग्नि से छुड़ाया ॥

## द्वादशः श्लोकः

**आशीविषतमाहीन्द्रं दमित्वा विमदं ह्रदात् ।**
**प्रसह्योद्वास्य यमुनां चक्रेऽसौ निर्विषोदकाम् ॥१२॥**

पदच्छेद— आशीविषतम अहीन्द्रम् दमित्वा विमदम् ह्रदात् ।
प्रसह्य उद्वास्य यमुनाम् चक्रे असौ निर्विष उदकाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आशीविषतम | १. | अत्यन्त विषैले | उद्वास्य | ८. | निकाल दिया (और) |
| अहीन्द्रम् | २. | कालियनाग का | यमुनाम् | ६. | उसे यमुना के |
| दमित्वा | ३. | दमन करके और | चक्रे | १२. | बना दिया |
| विमदम् | ४. | मान मर्दन करके | असौ | ९. | उसके |
| ह्रदात् । | ७. | कालिय ह्रद से | निर्विष | ११. | विष रहित |
| प्रसह्य | ५. | बल पूर्वक | उदकाम् ॥ | १०. | जल को |

श्लोकार्थ—अत्यन्त विषैले कालिय नाग का दमन करके और मानमर्दन करके बल पूर्वक उसे यमुना के कालिय ह्रद से निकाल दिया और उसके जल को विष रहित बना दिया ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**दुस्त्यजश्चानुरागोऽस्मिन् सर्वेषां नो व्रजौकसाम् ।**
**नन्द ते तनयेऽस्मासु तस्याप्यौत्पत्तिकः कथम् ॥१३॥**

पदच्छेद— दुस्त्यजः च अनुरागः अस्मिन् सर्वेषाम् नः व्रज ओकसाम् ।
नन्द ते तनये अस्मासु तस्य अपि औत्पत्तिकः कथम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुस्त्यज | ५. | बहुत अधिक | नन्द ते | ७. | हे नन्द बाबा ! आपके |
| च अनुरागः | ६. | स्नेह है और | तनये | ८. | पुत्र का भी |
| अस्मिन् | ४. | इस पर | अस्मासु | ९. | हम पर स्नेह है । |
| सर्वेषाम् | २. | सब | तस्य अपि | १०. | इसका भी |
| नः | १. | हम | औत्पत्तिकः | १२. | कारण है |
| व्रज ओकसाम् । | ३. | व्रज वासियों का | कथम् ॥ | ११. | क्या |

श्लोकार्थ—हम सब व्रजवासियों का इस पर बहुत ही अधिक स्नेह है । और हे नन्दबाबा ! आपके पुत्र का भी हम पर स्नेह है । इसका क्या कारण है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**क्व सप्तहायनो बालः क्व महाद्रिविधारणम् ।**
**ततो नो जायते शङ्का व्रजनाथ तवात्मजे ॥१४॥**

पदच्छेद— क्व सप्तहायनः बालः क्व महाद्रि विधारणम् ।
ततः नः जायते शङ्का व्रजनाथ तव आत्मजे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्व | १. | कहाँ | ततः | ७. | इसलिये |
| सप्तहायनः | २. | सात वर्ष का | नः | १०. | हमें |
| बालः | ३. | बालक और | जायते | १२. | उत्पन्न हो रही है |
| क्व | ४. | कहाँ | शङ्का | ११. | शङ्का |
| महाद्रि | ५. | विशाल पर्वत का | व्रजनाथ तव | ८. | हे व्रजनाथ ! आपके |
| विधारणम् । | ६. | धारण करना | आत्मजे ॥ | ९. | बालक के विषय में |

श्लोकार्थ—कहाँ तो सात वर्ष का बालक और कहाँ विशाल पर्वत का धारण करना । इसलिये हे व्रजनाथ ! आपके बालक के विषय में हमें शङ्का उत्पन्न हो रही है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

नन्द उवाच— श्रूयतां मे वचो गोपा व्येतु शङ्का च वोऽर्भके ।
एनं कुमारमुद्दिश्य गर्गो मे यदुवाच ह ॥१५॥

पदच्छेद— श्रूयताम् मे वचः गोपाः व्येतु शङ्का च वः अर्भ के ।
एनम् कुमारम् उद्दिश्य गर्गः मे यत् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रूयताम् | ४. | सुनो (इस) | एनम् | ८. | इस |
| मे वचः | ३. | मेरी वात | कुमारम् | ९. | वालक को |
| गोपाः | १. | हे गोपो ! | उद्दिश्य | १०. | देख कर |
| व्येतु शङ्का | ६. | आप की शङ्का दूर हो जायेगी | गर्गः | ११. | महर्षि गर्ग ने |
| च | ७. | और | मे | १२. | मुझ से |
| वः | २. | आप लोग | यत् | १३. | ऐसा |
| अर्भके । | ५. | वालक के विषय में | उवाच ह ॥ | १४. | कहा था |

श्लोकार्थ—हे गोपो ! आप लोग मेरी बात सुनो ! इस बालक के विपय में आपकी शङ्का दूर हो जायेगी । इस बालक को देख कर महर्षि गर्ग ने मुझसे ऐसा कहा था ॥

## षोडशः श्लोकः

वर्णास्त्रयः किलास्यासन् गृह्णतोऽनुयुगं तनूः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥१६॥

पदच्छेद— वर्णाः त्रयः किल अस्य आसन् गृह्णतः अनुयुगम् तनूः ।
शुक्लः रक्तः तथा पीतः इदानीम् कृष्णताम् गतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वर्णाः त्रयः | ६. | तीन रंग | शुक्लः | ८. | श्वेत |
| किल | ४. | निश्चय ही | रक्तः तथा | ९. | रक्त और |
| अस्य | ५. | इसके | पीतः | १०. | पीत |
| आसन् | ७. | हैं | इदानीम् | ११. | इस समय इसने |
| गृह्णतः | ३. | धारण करता है | कृष्ण | १२. | कृष्ण |
| अनुयुगम् | १. | यह बालक प्रत्येक युग में | ताम् | १३. | वर्ण |
| तनूः । | २. | शरीर | गतः ॥ | १४. | स्वीकार किया है |

श्लोकार्थ—यह बालक प्रत्येक युग में शरीर धारण करता है । निश्चय ही इसके तीन रंग हैं । श्वेत, रक्त और पीत । इस समय इसने कृष्ण वर्ण स्वीकार किया है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**प्रागयं वसुदेवस्य क्वचिज्जातस्तवात्मजः ।**
**वासुदेव इति श्रीमानभिज्ञाः सम्प्रचक्षते ॥१७॥**

पदच्छेद— प्राक् अयम् वसुदेवस्य क्वचित् जातः तव आत्मजः ।
वासुदेव इति श्रीमान् अभिज्ञाः सम्प्रचक्षते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्राक् | ४. पहले | आत्मजः । | ३. पुत्र |
| अयम् | २. यह | वासुदेव | १०. वासुदेव है |
| वसुदेवस्य | ६. वसुदेव के यहाँ | इति | ११. ऐसा भी |
| क्वचित् | ५. कभी | श्रीमान् | ९. यह श्रीमान् |
| जातः | ७. पैदा हुआ था | अभिज्ञाः | ८. इस रहस्य को जानने वाले लोग |
| तव | १. आपका | सम्प्रचक्षते ॥ | १२. कहते हैं |

श्लोकार्थ—आपका यह पुत्र कभी वसुदेव जी के यहाँ पैदा हुआ था । इस रहस्य को जानने वाले लोग यह श्रीमान् वासुदेव है, ऐसा भी कहते हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।**
**गुणकर्मानुरूपाणि तान्यहं वेद नो जनाः ॥१८॥**

पदच्छेद— बहूनि सन्ति नामानि रूपाणि च सुतस्य ते ।
गुण कर्म अनुरूपाणि तानि अहम् वेद नो जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बहूनि | ३. बहुत से | गुण | ८. गुणों और |
| सन्ति | ७. हैं । ये सब | कर्म | ९. कर्मों के |
| नामानि | ४. नाम | अनुरूपाणि | १०. अनुसार ही है |
| रूपाणि | ६. रूप | तानि अहम् | ११. उन्हें मैं |
| च | ५. और | वेद | १२. जानता हूँ |
| सुतस्य | २. पुत्र के | नो | १४. नहीं जानते हैं |
| ते । | १. आपके | जनाः ॥ | १३. आप लोग |

श्लोकार्थ—आप के पुत्र के बहुत से नाम और रूप हैं । ये सब गुणों और कर्मों के अनुसार ही हैं । उन्हें मैं जानता हूँ । आप लोग नहीं जानते हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**एष वः श्रेय आधास्यद् गोपगोकुलनन्दनः ।**
**अनेन सर्वदुर्गाणि यूयमञ्जस्तरिष्यथ ॥१९॥**

पदच्छेद— एष वः श्रेयः आधास्यत् गोप गोकुल नन्दनः ।
अनेन सर्व दुर्गाणि यूयम् अञ्जः तरिष्यथ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एष वः | १. | यह तुम लोगों का | अनेन | ८. | इसकी सहायता से |
| श्रेयः | २. | परम कल्याण तथा | सर्व | ९. | समस्त |
| आधास्यत् | ६. | करेगा | दुर्गाणि | १०. | विपत्तियों को |
| गोप | ३. | गोप और | यूयम् | ७. | तुम लोग |
| गोकुल | ४. | गौओं को | अञ्जः | ११. | बड़ी सावधानी से |
| नन्दनः । | ५. | आनन्दित | तरिष्यथ ॥ | १२. | पार कर लोगे |

श्लोकार्थ—यह तुम लोगों का परम कल्याण तथा गोप और गौओं को आनन्दित करेगा । तुम लोग इसकी सहायता से समस्त विपत्तियों को बड़ी सावधानी से पार कर लोगे ॥

## विंशः श्लोकः

**पुरानेन व्रजपते साधवो दस्युपीडिताः ।**
**अराजके रक्ष्यमाणा जिग्युर्दस्यून् समेधिताः ॥२०॥**

पदच्छेद— पुरा अनेन व्रजपते साधवः दस्यु पीडिताः ।
अराजके रक्ष्यमाणाः जिग्युः दस्यून् समेधिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरा | २. | पूर्व काल में | अराजके | ४. | राजा रहित होकर |
| अनेन | ७. | इसी ने | रक्ष्यमाणाः | ८. | उनकी रक्षा करके |
| व्रजपते | १. | हे व्रजराज ! | जिग्युः | ९. | उन्हें जीता और |
| साधवः | ३. | जब सन्त जन | दस्यून् | १०. | लुटेरों पर |
| दस्यु | ५. | चोरों से | समेधिताः ॥ | ११. | विजय प्राप्त की । |
| पीडिताः । | ६. | पीडित थे तब | | | |

श्लोकार्थ—हे व्रजराज ! पूर्व काल में जब सन्त जन राजा रहित होकर चोरों से पीडित थे । तब इसी ने उनकी रक्षा करके उन्हें जीता और लुटेरों पर विजय प्राप्त की ॥

## एकविंशः श्लोकः

**य एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिं कुर्वन्ति मानवाः ।**
**नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः ॥२१॥**

पदच्छेद— ये एतस्मिन् महाभागाः प्रीतिम् कुर्वन्ति मानवाः ।
न अरयः अभिभवन्ति एतान् विष्णुपक्षान् इव असुराः ॥

शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ये | १. | जो | न | १०. | नहीं कर पाते |
| एतस्मिन् | ४. | इससे | अरयः | ७. | शत्रु |
| महाभागाः | २. | भाग्यशाली | अभिभवन्ति | ९. | पराजित |
| प्रीतिम् | ५. | प्रेम | एतान् | ८. | उन्हें वैसे ही |
| कुर्वन्ति | ६. | करते हैं | विष्णुपक्षान् इव | ११. | जैसे विष्णु के पक्ष वालों को |
| मानवाः । | ३. | मनुष्य | असुराः ॥ | १२. | राक्षस पराजित नहीं कर पाते हैं |

श्लोकार्थ—जो भाग्यशाली मनुष्य इससे प्रेम करते हैं, उन्हें शत्रु वैसे ही पराजित नहीं कर पाते। जैसे विष्णु के पक्ष वालों को राक्षस पराजित नहीं कर पाते हैं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**तस्मान्नन्द कुमारोऽयं नारायणसमो गुणैः ।**
**श्रिया कीर्त्यानुभावेन तत्कर्मसु न विस्मयः ॥२२॥**

पदच्छेद— तस्मात् नन्द कुमारः अयम् नारायण समः गुणैः ।
श्रिया कीर्त्या अनुभावेन तत् कर्मसु न विस्मयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. | इसलिये | श्रिया | ९. | ऐश्वर्य |
| नन्द | २. | नन्दबाबा का | कीर्त्या | १०. | कीर्ति और |
| कुमारः | ४. | पुत्र | अनुभावेन | ११. | प्रभाव से इसके |
| अयम् | ३. | यह | तत् | ८. | इसके |
| नारायण | ६. | भगवान् विष्णु के | कर्मसु | १२. | कार्यों में |
| समः | ७. | समान है (तथा) | न | १४. | नहीं है |
| गुणैः । | ५. | गुणों में | विस्मयः ॥ | १३. | कोई आश्चर्य |

श्लोकार्थ—इसलिये नन्द बाबा का यह पुत्र गुणों में भगवान् विष्णु के समान है। तथा इसके ऐश्वर्य, कीर्ति और प्रभाव से इसके कार्यों में कोई आश्चर्य नहीं है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

इत्यद्धा मां समादिश्य गर्गे च स्वगृहं गते ।
मन्ये नारायणस्यांशं कृष्णमक्लिष्टकारिणम् ॥२३॥

पदच्छेद— इति अद्धा माम् समादिश्य गर्गे च स्वगृहम् गते ।
मन्ये नारायणस्य अंशम् कृष्णम् अक्लिष्ट कारिणम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ४. | ऐसा | मन्ये | १३. | मानता हूँ |
| अद्धा | २. | वस्तुतः जब | नारायणस्य | ११. | भगवान् नारायण का |
| माम् | ३. | मुझे | अंशम् | १२. | ही अंश |
| समादिश्य | ५. | उपदेश देकर | कृष्णम् | १०. | श्रीकृष्ण को मैं |
| गर्गे | ६. | गर्गाचार्य जी | अक्लिष्ट | ८. | तब से अलौकिक |
| च | १. | और | कारिणम् ॥ | ९. | कर्म करने वाले |
| स्वगृहम् गते । | ७. | अपने घर चले गये | | | |

श्लोकार्थ—और वस्तुतः जब मुझे ऐसा उपदेश देकर गर्गाचार्य जी अपने घर चले गये । तब से अलौकिक कर्म करने वाले श्रीकृष्ण को मैं भगवान् नारायण का ही अंश मानता हूँ ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

इति नन्दवचः श्रुत्वा गर्गगीतं व्रजौकसः ।
दृष्टश्रुतानुभावास्ते कृष्णस्यामिततेजसः ।
मुदिता नन्दमानर्चुः कृष्णं च गतविस्मयाः ॥२४॥

पदच्छेद— इति नन्द वचः श्रुत्वा गर्गगीतम् व्रज ओकसः ।
दृष्ट श्रुत अनुभावाः ते कृष्णस्य अमित तेजसः ।
मुदिताः नन्दम् आनर्चुः कृष्णम् च गत विस्मयाः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ३. | इस प्रकार | अमित | ६. | अत्यन्त |
| नन्द वचः | ४. | नन्द जी के वचन | तेजसः । | ७. | तेजस्वी |
| श्रुत्वा | ५. | सुनकर | मुदिताः | १२. | अत्यन्त प्रसन्न हुये तथा |
| गर्गगीतम् | २. | गर्ग जी द्वारा कहे गये | नन्दम् | १३. | उन्होंने नन्द बाबा |
| व्रज ओकसः । | १. | व्रजवासियों ने | आनर्चुः | १६. | प्रशंसा की तथा |
| दृष्ट श्रुत | १०. | देख सुनकर | कृष्णम् | १५. | श्रीकृष्ण की खूब |
| अनुभावाः | ९. | प्रभाव को | च | १४. | और |
| ते | ११. | वे | गत | १८. | हो गये |
| कृष्णस्य | ८. | भगवान् के | विस्मयाः ॥ | १७. | आश्चर्य चकित |

श्लोकार्थ—व्रजवासियों ने गर्ग जी द्वारा कहे गये इस प्रकार नन्द जी के वचन सुनकर अत्यन्त तेजस्वी भगवान् के प्रभाव को देख सुन कर वे अत्यन्त प्रसन्न हुये तथा उन्होंने नन्द बाबा और श्रीकृष्ण की खूब प्रशंसा की । तथा आश्चर्य चकित हो गये ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**देवे वर्षति यज्ञविप्लवरुषा वज्राश्मपर्षानिलैः**
**सीदत्पालपशुस्त्रि आत्मशरणं दृष्ट्वानुकम्प्युत्स्मयन् ।**
**उत्पाट्यैककरेण शैलमबलो लीलोच्छिलीन्ध्रं यथा**
**बिभ्रद् गोष्ठमपान्महेन्द्रमदभित् प्रीयान्न इन्द्रो गवाम् ॥२५॥**

पदच्छेद— देवे वर्षति यज्ञ विप्लव रुषा वज्र अश्मपर्ष अनिलैः,
सीदत् पाल पशु स्त्रि आत्म शरणम् दृष्ट्वा अनुकम्पीउत्स्मयन् ।
उत्पाट्य एक करेण शैलम् अबलः लीला उच्छिलीन्ध्रम् यथा,
बिभ्रद् गोष्ठम् अपात् महेन्द्र मदभित् प्रीयात् नः इन्द्रः गवाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देवे | ३. | इन्द्र द्वारा | उत्पाट्य | २२. | उखाड़ कर |
| वर्षति | ८. | वर्षा करने पर | एक करेण | २०. | वैसे ही एक हाथ से |
| यज्ञ | १. | यज्ञ | शैलम् | २१. | पहाड़ को |
| विप्लव | २. | भङ्ग होने से | अबलः | १६. | बालक |
| रुषा | ४. | क्रोध के कारण | लीलाः | १८. | खेल में |
| वज्र | ५. | व्रज पात | उच्छिलीन्ध्रम् | १९. | बरसाती छत्ता उखाड़ लेता है |
| अश्मपर्ष | ६. | ओलों की बौछार | यथा | १७. | जैसे |
| अनिलैः | ७. | प्रचण्ड आँधी और | बिभ्रद् | २५. | रक्षा |
| सीदत् | ११. | पीड़ित हो रहे थे तब | गोष्ठम् | २३. | व्रज को |
| पाल पशु | ९. | ग्वाले-पशु | अपात् | २४. | करने वाले और |
| स्त्रि | १०. | स्त्रियों | महेन्द्र | २५. | इन्द्र के |
| आत्म शरणम् | १२. | अपनी शरण में रहने वालों को | मद | २६. | मद को |
| दृष्ट्वा | १३. | देखकर | अभित् | २७. | चकना चूर करने वाले |
| अनुकम्पी | १४. | दयावश | प्रीयात् नः | ३०. | हम पर प्रसन्न हों |
| उत् स्मयन् । | १५. | मुस्कराते हुये | इन्द्रः | २९. | स्वामी श्रीकृष्ण |
| | | | गवाम् ॥ | २८. | इन्द्रियों के |

श्लोकार्थ—यज्ञ भङ्ग होने से इन्द्र द्वारा क्रोध के कारण वज्रपात, ओलों की बौछार, प्रचण्ड आँधी और वर्षा से करने पर ग्वाले, पशु, स्त्रियाँ पीडित हो रहे थे। तब अपनी शरण में रहने वालों को देख कर दयावश मुसकराते हुए, बालक जैसे खेल के बरसाती छत्ता उखाड़ लेता है, वैसे ही एक हाथ से पहाड़ को उखाड़ कर व्रज की रक्षा करने वाले और इन्द्र के मद को चकना चूर करने वाले इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्ण हम पर प्रसन्न हों ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
षड्विंशः अध्यायः ॥२६॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## सप्तविंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **गोवर्धने धृते शैल आसाराद् रक्षिते व्रजे ।**
**गोलोकादाव्रजत् कृष्णं सुरभिः शक्र एव च ॥१॥**

पदच्छेद— गोवर्धने धृते शैले आसाराद् रक्षिते व्रजे ।
गोलोकात् आव्रजत् कृष्णम् सुरभिः शक्रः एव च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोवर्धने | २. | जब गोवर्धन | गोलोकात् | ११. | स्वर्ग लोक से |
| धृते | ४. | धारण करके | आव्रजत् | १२. | उनके पास आये |
| शैले | ३. | पर्वत को | कृष्णम् | १. | श्रीकृष्ण ने |
| आसारात् | ५. | मूसलाधार वर्षा से | सुरभिः | ८. | कामधेनु गाय |
| रक्षिते | ७. | रक्षा की तब | शक्रः एव | १०. | इन्द्र दोनों ही |
| व्रजे । | ६. | व्रज की | च ॥ | ९. | और |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने जब गोवर्धन पर्वत को धारण करके मूसलाधार वर्षा से व्रज की रक्षा की तब कामधेनु गाय और इन्द्र दोनों ही स्वर्ग लोक से उनके पास आये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**विविक्त उपसङ्गम्य व्रीडितः कृतहेलनः ।**
**पस्पर्श पादयोरेनं किरीटेनार्कवर्चसा ॥२॥**

पदच्छेद— विविक्ते उपसङ्गम्य व्रीडितः कृत हेलनः ।
पस्पर्श पादयोः एनम् किरीटेन अर्कवर्चसा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विविक्ते | ४. | उन्होंने एकान्त में | पस्पर्श | ११. | स्पर्श किया |
| उपसङ्गम्य | ५. | श्रीकृष्ण के पास जाकर | पादयोः | १०. | उनके चरणों का |
| व्रीडितः | ३. | इन्द्र बहुत लज्जित थे | एनम् | ६. | अपने |
| कृत | २. | करने के कारण | किरीटेन | ९. | मुकुट से |
| हेलनः । | १. | भगवान् का तिरस्कार | अर्क | ७. | सूर्य के समान |
| | | | वर्चसा ॥ | ८. | तेजस्वी |

श्लोकार्थ—भगवान् का तिरस्कार करने के कारण इन्द्र बहुत ही लज्जित थे । उन्होंने एकान्त में श्रीकृष्ण के पास जाकर अपने सूर्य के समान तेजस्वी मुकुट से उनके चरणों का स्पर्श किया ॥

# तृतीयः श्लोकः

**दृष्टश्रुतानुभावोऽस्य कृष्णस्यामिततेजसः ।**

**नष्टत्रिलोकेशमद इन्द्र आह कृताञ्जलिः ॥३॥**

पदच्छेद— दृष्ट श्रुत अनुभावः अस्य कृष्णस्य अमिततेजसः ।
नष्ट त्रिलोकेश मदः इन्द्रः आह कृत अञ्जलिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट | ६. | देख और | नष्ट | ११. | नष्ट हो गया (और) |
| श्रुत | ७. | सुन कर | त्रिलोकेश | ९. | तीनों लोकों के स्वामी होने का |
| अनुभावः | ५. | प्रभाव | मदः | १०. | घमण्ड |
| अस्य | ३. | इन | इन्द्र | ८. | इन्द्र का |
| कृष्णस्य | ४ | श्रीकृष्ण का | आह | १४. | इस प्रकार कहा |
| अमित | १. | परम | कृत | १३. | जोड़कर |
| तेजसः । | २. | तेजस्वी | अञ्जलिः ॥ | १२. | उसने अपने हाथ |

श्लोकार्थ—परम तेजस्वी इन श्रीकृष्ण का प्रभाव देख और सुन कर इन्द्र का तीनों लोकों के स्वामी होने का घमण्ड नष्ट हो गया । और उसने अपने हाथ जोड़ कर इस प्रकार कहा ॥

# चतुर्थः श्लोकः

**विशुद्धसत्त्वं तव धाम शान्तं तपोमयं ध्वस्तरजस्तमस्कम् ।**

**मायामयोऽयं गुणसम्प्रवाहो न विद्यते तेऽग्रहणानुबन्धः ॥४॥**

पदच्छेद— विशुद्ध सत्त्वम् तव धाम शान्तम् तपः मयम् ध्वस्त रजः तमस्कम् ।
माया मयः अयम् गुण सम्प्रवाहः न विद्यते ते अग्रहण अनुबन्धः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विशुद्ध | ६. | विशुद्ध अप्राकृत | मायामयः | १०. | केवल मायामय है |
| सत्त्वम् | ७. | सत्त्वमय है | अयम् गुण | ८. | यह गुणों के |
| तव धाम | १. | आपका स्वरूप | सम्प्रवाहः | ९. | प्रवाह से प्रतीत होने वाला प्रपञ्च |
| शान्तम् | २. | परम शान्त | न विद्यते | १२. | नहीं है |
| तपः मयम् | ३. | ज्ञानमय | ते | ११. | यह संसार आप में |
| ध्वस्त | ५. | रहित | अग्रहण | १३. | अज्ञान के कारण |
| रजः तमस्कम् । | ४. | रजोगुण और तमोगुण से | अनुबन्धः ॥ | १४. | इसकी प्रतीति होती है |

श्लोकार्थ—आपका स्वरूप परम शान्त, ज्ञानमय, रजोगुण और तमोगुण से रहित, विशुद्ध, अप्राकृत, सत्त्वमय है । यह गुणों के प्रवाह से प्रतीत होने वाला प्रपञ्च केवल मायामय है । यह संसार आप में नहीं है । अज्ञान के कारण इसकी प्रतीति होती है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**कुतो नु तद्धेतव ईश तत्कृता लोभादयो येऽबुधलिङ्गभावाः ।**
**तथापि दण्डं भगवान् बिभर्ति धर्मस्य गुप्त्यै खलनिग्रहाय ॥५॥**

पदच्छेद— कुतः नु तद्धेतव ईश तत् कृता लोभ आदयः ये अबुधालिङ्गभावाः ।
तथापि दण्डम् भगवान् बिभर्ति धर्मस्य गुप्त्यै खल निग्रहाय ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुतः | ५. आप में कैसे हो सकते हैं | तथापि | ८. फिर भी |
| नु तद्धेतवः | २. उन देहादि के प्राप्त होने | दण्डम् | १३. दण्ड की |
| ईश | १. हे प्रभो ! | भगवान् | ९. हे प्रभो ! आप |
| तत् कृताः | ३. और उन्हीं से होने वाले | बिभर्ति | १४. व्यवस्था करते हैं |
| लोभ आदयः | ४. लोभादि दोष | धर्मस्य | १०. धर्म की |
| ये | ६. इनका | गुप्त्यै | ११. रक्षा और |
| अबुधलिङ्ग भावाः । | ७. होना तो अज्ञान का लक्षण है | खल निग्रहाय ॥ | १२. दुष्टों का निग्रह करने के लिये |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! उन देहादि के प्राप्त होने और उन्हीं से होने वाले लोभादि दोष आप में कैसे हो सकते हैं। इनका होना तो अज्ञान का लक्षण है। फिर भी हे प्रभो ! आप धर्म की रक्षा और दुष्टों का निग्रह करने के लिये दण्ड की व्यवस्था करते हैं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**पिता गुरुस्त्वं जगतामधीशो दुरत्ययः काल उपात्तदण्डः ।**
**हिताय स्वेच्छातनुभिः समीहसे मानं विधुन्वञ्जगदीशमानिनाम् ॥६॥**

पदच्छेद— पिता गुरुः त्वम् जगताम् अधीशः दुरत्ययः काल उपात्त दण्डः ।
हिताय स्वेच्छा तनुभिः समीहसे मानम् विधुन्वन् जगदीश मानिनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पिता | २. पिता | हिताय | ८. आप भक्तों के हितार्थ |
| गुरुः | ३. गुरु और | स्वेच्छा तनुभिः | ९. स्वेच्छा से शरीर |
| त्वम् जगताम् | १. आप जगत् के | समीहसे | १०. धारण करते हैं और |
| अधीशः | ४. स्वामी हैं | मानम् | १३. अहंकार |
| दुरत्ययः | ६. आप दुस्तर | विधुन्वन् | १४. नष्ट करते हैं |
| काल | ७. काल हैं | जगदीश | ११. स्वयं को संसार का स्वामी |
| उपात्त दण्डः । | ५. दण्ड धारण किये हुये | मानिनाम् ॥ | १२. मानने वालों का |

श्लोकार्थ—आप जगद् के पिता, गुरु और स्वामी हैं। दण्ड धारण किये हुये आप दुस्तर काल हैं। आप भक्तों के हितार्थ स्वेच्छा से शरीर धारण करते हैं। और स्वयं को संसार का स्वामी मानने वालों का अहंकार नष्ट करते हैं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**ये मद्विधाज्ञा जगदीशमानिनस्त्वां वीक्ष्य कालेऽभयमाशु तन्मदम् ।**
**हित्वाऽऽर्यमार्गं प्रभजन्त्यपस्मया ईहा खलनामपि तेऽनुशासनम् ।।७।।**

पदच्छेद— ये मत् विधाज्ञाः जगदीश मानिनः त्वाम् वीक्ष्य काले अभयम आशु तत् मदम् ।
हित्वा आर्य मार्गम् प्रभजन्ति अपस्मयाः ईहा खलानाम् अपि ते अनुशासनम् ।।

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| ये मत् | १. जो मेरे | हित्वा | ९. छोड़ कर तथा |
| विधाज्ञाः | २. जैसे अज्ञानी और अपने को | आर्य | ११. सन्त जनों के |
| जगदीश मानिनः | ३. जगत् का स्वामी माननेवाले हैं | मार्गम् | १२. मार्ग का |
| त्वाम् | ४. वे जब आप को | प्रभजन्ति | १३. अनुसरण करते हैं |
| वीक्ष्य | ६. देखते हैं तब | अपस्मयाः | १०. गर्व रहित होकर |
| काले अभयम् | ५. भय के अवसरों पर भयरहित | ईहा खलानाम् | १५. एक-एक चेष्टा दुष्टों के लिये |
| आशु तत् | ७. वे तत्काल | अपि ते | १४. आप की भी |
| मदम् । | ८. अपना गर्व | अनुशासनम् ।। | १६. दण्ड विधान है |

श्लोकार्थ—जो मेरे जैसे अज्ञानी और अपने को जगत् का स्वामी मानने वाले है, वे जब आप को भय के अवसरों पर भय रहित देखते है तब वे तत्काल अपना गर्व छोड़ कर तथा गर्व रहित होकर सन्तजनों के मार्ग का अनुसरण करते हैं। आप की भी एक-एक चेष्टा दुष्टों के लिये दण्ड विधान है ।।

## अष्टमः श्लोकः

**स त्वं ममैश्वर्यमदप्लुतस्य कृतागसस्तेऽविदुषः प्रभावम् ।**
**क्षन्तुं प्रभोऽथार्हसि मूढचेतसो मैवं पुनर्भून्मतिरीश मेऽसती ।।८।।**

पदच्छेद— सः त्वम् मम ऐश्वर्य मद प्लुतस्य कृत आगसः ते अविदुषः प्रभावम् ।
क्षन्तुम् प्रभो अथ अर्हसि मूढ चेतसः मा एवम् पुनः भूत्मतिः ईश मे असती ।।

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| सः त्वम् | ११. ऐसे आप | क्षन्तुम् | १३ क्षमा करने के |
| मम ऐश्वर्य | २. मैंने ऐश्वर्य के | प्रभो | १. हे प्रभो |
| मद | ३. मद में | अथ | १०. अतः |
| प्लुतस्य | ४. चूर होकर | अर्हसि | १४ योग्य हैं |
| कृत | ६. किया है | मूढ चेतसः | १२. मुझ मूढ बुद्धि को |
| आगसः | ५. आप का अपराध | मा एवम् | १८. इस प्रकार न होवे |
| ते | ७. मैं आपके | पुनः भूत्मतिः | १६ बुद्धि फिर कभी |
| अविदुषः | ९. नहीं जानता था | ईश मे | १५. हे भगवान् ! मेरी |
| प्रभावम् । | ८. प्रभाव को | असती ।। | १७. अज्ञान का शिकार |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैंने ऐश्वर्य के मद में चूर होकर आपका अपराध किया है। मैं आपके प्रभाव को नहीं जानता था। अतः ऐसे आप मुझ मूढ बुद्धि को क्षमा करने के योग्य हैं। हे भगवान् ! मेरी बुद्धि फिर कभी अज्ञान का शिकार इस प्रकार न होवे ।।

## नवमः श्लोकः

**तवावतारोऽयमधोक्षजेह स्वयम्भराणामुरुभारजन्मनाम् ।**
**चमूपतीनामभवाय देव भवाय युष्मच्चरणानुवर्तिनाम् ॥९॥**

पदच्छेद— तव अवतारः अयम् अधोक्षज इह स्वयम्भराणाम् उरुभार जन्मनाम् ।
चमूपतीनाम् अभवाय देव भवाय युष्मत् चरण अनुवर्तिनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तव | २. | आपका | चमू | ९. | सेना |
| अवतारः | ४. | अवतार | पतीनाम् | १०. | पति असुरों के |
| अयम् | ३. | यह | अभवाय | ११. | नाशके लिये है |
| अधोक्षज | १. | हे भगवन् ! | देव | १२. | हे देव ! |
| इह | ५. | पृथ्वी लोक में | भवाय | १६. | रक्षा के लिये है |
| स्वयम्भराणाम् | ६. | अपना ही पेट भरने वाले | युष्मत् | १३. | आपके |
| उरुभार | ७. | अत्यधिक भार वाले | चरण | १४. | चरण कमलों का |
| जन्मनाम् । | ८. | प्राणियों और | अनुवर्तिनाम् ॥ | १५. | अनुसरण करने वाले भक्तों की |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपका यह अवतार पृथ्वी लोक में अपना ही पेट भरने वाले प्राणियों और सेनापति असुरों के नाश के लिये है । हे देव ! आपके चरण कमलों का अनुसरण करने वाले भक्तों की रक्षा के लिये है ॥

## दशमः श्लोकः

**नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महात्मने ।**
**वासुदेवाय कृष्णाय सात्वतां पतये नमः ॥१०॥**

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते पुरुषाय महात्मने ।
वासुदेवाय कृष्णाय सात्वताम् पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ३. | नमस्कार है | वासुदेवाय | ६. | वासुदेव |
| तुभ्यम् | २. | आपको | कृष्णाय | ७. | श्रीकृष्ण |
| भगवते | १. | हे भगवन् ! | सात्वताम् | ८. | यदुवंशियों के |
| पुरुषाय | ५. | पुरुषोत्तम | पतये | ९. | स्वामी |
| महात्मने । | ४. | महात्मन् | नमः ॥ | १०. | आपको नमस्कार है |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपको नमस्कार है । महात्मन्, पुरुषोत्तम, वासुदेव, श्रीकृष्ण, यदुवंशियों के स्वामी, आपको नमस्कार है ॥

# एकादशः श्लोकः

**स्वच्छन्दोपात्तदेहाय विशुद्धज्ञानमूर्तये ।**
**सर्वस्मै सर्वबीजाय सर्वभूतात्मने नमः ॥११॥**

पदच्छेद— स्वच्छन्द उपात्त देहाय विशुद्ध ज्ञानमूर्तये ।
सर्वस्मै सर्वबीजाय सर्वभूत आत्मने नमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वच्छन्द | ४. | आपने स्वेच्छा से | सर्वस्मै | ७. | आप सब कुछ हैं |
| उपात्त | ६. | धारण किया | सर्वबीजाय | ८. | सबके कारण हैं |
| देहाय | ५. | शरीर | सर्वभूत | ९. | हे सर्वभूत |
| विशुद्ध | १. | हे विशुद्ध | आत्मने | १०. | स्वरूप परमात्मा |
| ज्ञान | २. | ज्ञानरूप | नमः ॥ | ११. | आपको नमस्कार है |
| मूर्तये । | ३. | भगवन् ! | | | |

श्लोकार्थ—हे विशुद्ध ज्ञानरूप भगवन् ! आपने स्वेच्छा से शरीर धारण किया है । आप सब कुछ हैं । सबके कारण हैं । हे सर्वभूत स्वरूप परमात्मा । आपको नमस्कार है ॥

# द्वादशः श्लोकः

**मयेदं भगवन् गोष्ठनाशायासारवायुभिः ।**
**चेष्टितं विहते यज्ञे मानिना तीव्रमन्युना ॥१२॥**

पदच्छेद— मया इदम् भगवन् गोष्ठ नाशाय आसार वायुभिः ।
चेष्टितम् विहते यज्ञे मानिना तीव्र मन्युना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मया | ७. | मैंने | चेष्टितम् | १२. | चेष्टा की |
| इदम् | ८. | इस | विहते | ३. | भङ्ग होने पर |
| भगवन् | १. | हे भगवन् ! | यज्ञे | २. | यज्ञ के |
| गोष्ठनाशाय | ९. | सम्पूर्ण व्रज के नाश के | मानिना | ६. | अभिमानी |
| आसार | १०. | मूसलाधारवर्षा और | तीव्र | ४. | अत्यन्त |
| वायुभिः । | ११. | झंझावात के द्वारा नष्ट करने की | मन्युना ॥ | ५. | क्रोधी और |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! यज्ञ के भङ्ग होने पर अत्यन्त क्रोधी और अभिमानी मैंने इस सम्पूर्ण व्रज के नाश के लिये मूसलाधारवर्षा और झंझावात के द्वारा नष्ट करने की चेष्टा की ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**त्वयेशानुगृहीतोऽस्मि ध्वस्तस्तम्भो वृथोद्यमः।**
**ईश्वरं गुरुमात्मानं त्वामहं शरणं गतः ॥१३॥**

पदच्छेद— त्वया ईश अनुगृहीतः अस्मि ध्वस्त स्तम्भः वृथा उद्यमः।
ईश्वरम् गुरुम् आत्मानम् त्वाम् अहम् शरणम् गतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वया | २. आपने मुझ पर | ईश्वरम् | ९. मेरे स्वामी |
| ईश | १. हे प्रभो ! | गुरुम् | १०. गुरु और |
| अनुगृहीतः | ३. बड़ा अनुग्रह | आत्मानम् | ११. आत्मा हैं |
| अस्मि | ४. किया है | त्वाम् | ८. आप ही |
| ध्वस्त | ७. नष्ट हो गया | अहम् | १२. मैं आपकी |
| स्तम्भः | ६. मेरा घमण्ड | शरणम् | १३. शरण में |
| वृथा उद्यमः। | ५. मेरी चेष्टा व्यर्थ होने से | गतः ॥ | १४. आया हूँ। |

श्लोकार्थ—हे प्रभो! आपने मुझ पर बड़ा अनुग्रह किया है। मेरी चेष्टा व्यर्थ होने से मेरा घमण्ड नष्ट हो गया। आपही मेरे स्वामी गुरु और आत्मा हैं। मैं आपकी शरण में आया हूँ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**एवं सङ्कीर्तितः कृष्णो मघोना भगवानमुम्।**
**मेघगम्भीरया वाचा प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥१४॥**

पदच्छेद— एवम् सङ्कीर्तितः कृष्णः मघोना भगवान् अमुम्।
मेघ गम्भीरया वाचा प्रहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | ५. इस प्रकार | मेघ | ७. तब मेघ के समान |
| सङ्कीर्तितः | ६. स्तुति की | गम्भीरया | ८. गम्भीर |
| कृष्णः | ४. श्रीकृष्ण की | वाचा | ९. वाणी से |
| मघोना | १. जब देवराज इन्द्र ने | प्रहसन् | १०. मुसकराते हुये |
| भगवन् | ३. भगवान् | इदम् | ११. उन्होंने ऐसा |
| अमुम्। | २. उन | अब्रवीत् ॥ | १२. कहा |

श्लोकार्थ—जब देवराज इन्द्र ने उन भगवान् श्रीकृष्ण की इस प्रकार स्तुति की। तब मेघ के समान गम्भीर वाणी से मुसकराते हुये उन्होंने ऐसा कहा

## पञ्चदशः श्लोकः

**श्रीभगवानुवाच—मया तेऽकारि मघवन् मखभङ्गोऽनुगृह्णता ।**
**मदनुस्मृतये नित्यं मत्तस्येन्द्र श्रिया भृशम् ॥१५ ॥**

पदच्छेद— मया ते अकारि मघवन् मखभङ्गः अनुगृह्णता ।
मत् अनुस्मृतये नित्यम् मत्तस्य इन्द्र श्रिया भृशम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मया | २. मैंने | | मत् | १३. मेरा |
| ते | ३. तुम्हारे ऊपर | | अनुस्मृतये | १४. स्मरण कर सकोगे |
| अकारि | ७. किया था | | नित्यम् | १२. अब तुम निरन्तर |
| मघवन् | १. हे इन्द्र ! | | मत्तस्य | १०. मतवाले |
| मख | ५. यज्ञ | | इन्द्र | ११. हे इन्द्र |
| भङ्गः | ६. नष्ट | | श्रिया | ८. सम्पत्ति के कारण |
| अनुगृह्णता । | ४. कृपा करके ही | | भृशम् ॥ | ९. अत्यधिक |

श्लोकार्थ—हे इन्द्र ! मैंने तुम्हारे ऊपर कृपा करके ही यज्ञ नष्ट किया था । सम्पत्ति के कारण अत्यधिक मतवाले हे इन्द्र ! अब तुम नित्य मेरा स्मरण कर सकोगे ॥

## षोडशः श्लोकः

**मामैश्वर्यश्रीमदान्धो दण्डपाणिं न पश्यति ।**
**तं भ्रंशयामि सम्पद्भ्यो यस्य चेच्छाम्यनुग्रहम् ॥१६॥**

पदच्छेद— माम् ऐश्वर्य श्रीमद अन्धः दण्डपाणिम् न पश्यति ।
तम् भ्रंशयामि सम्पद्भ्यः यस्य च इच्छामि अनुग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| माम् | ५. मुझ परमात्मा को | | तम् | ११. उसे मैं |
| ऐश्वर्यम् | १. ऐश्वर्य और | | भ्रंशयामि | १३. अलग कर देता हूँ |
| श्रीमद | २. धन के मद में | | सम्पद्भ्यः | १२. धन-सम्पत्ति से |
| अन्धः | ३. अन्धा व्यक्ति | | यस्य च | ८. अतः जिस पर |
| दण्डपाणिम् | ४. दण्ड को हाथ में लिये हुये | | इच्छामि | १०. इच्छा होती है |
| न | ६. नहीं | | अनुग्रहम् ॥ | ९. कृपा करने की |
| पश्यति । | ७. देखता है | | | |

श्लोकार्थ—हे इन्द्र ! ऐश्वर्य और धन के मद में अन्धा व्यक्ति दण्ड को हाथ में लिये हुये मुझ परमात्मा को नहीं देखता है । अतः जिस पर कृपा करने की इच्छा होती है, उसे मैं धन-सम्पत्ति से अलग कर देता हूँ ।

## सप्तदशः श्लोकः

**गम्यतां शक्र भद्रं वः क्रियतां मेऽनुशासनम् ।**
**स्थीयतां स्वाधिकारेषु युक्तैर्वः स्तम्भवर्जितैः ॥१७॥**

पदच्छेद— गम्यताम् शक्र भद्रम् वः क्रियताम् मे अनुशासनम् ।
स्थीयताम् स्वाधिकारेषु युक्तैः वः स्तम्भवर्जितैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गम्यताम् | २. | जाओ | स्थीयताम् | १२. | पालन करो |
| शक्र | १. | हे इन्द्र ! | स्वाधिकारेषु | ११. | अपने अधिकार का |
| भद्रम् | ४. | कल्याण हो | युक्तैः | १०. | उचित रीति से |
| वः | ३. | तुम्हारा | वः | ७. | तुम |
| क्रियताम् | ६. | पालन करो | स्तम्भ | ८. | घमण्ड से |
| मे अनुशासनम् । | ५. | मेरी आज्ञा का | वर्जितैः ॥ | ९. | रहित होकर |

श्लोकार्थ—हे इन्द्र ! जाओ तुम्हारा कल्याण हो । मेरी आज्ञा का पालन करो । तुम घमण्ड से रहित होकर उचित रीति से अपने अधिकार का पालन करो ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**अथाह सुरभिः कृष्णमभिवन्द्य मनस्विनी ।**
**स्वसन्तानैरुपामन्त्र्य गोपरूपिणमीश्वरम् ॥१८॥**

पदच्छेद— अथ आह सुरभिः कृष्णम् अभिवन्द्य मनस्विनी ।
स्वसन्तानैः उपामन्त्र्य गोप रूपिणीम् ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १०. | और | स्व | ३. | अपनी |
| आह | १२. | कहा | सन्तानैः | ४. | सन्तानों के साथ |
| सुरभिः | २. | कामधेनु ने | उपामन्त्र्य | ११. | उनको सम्बोधित करके |
| कृष्णम् | ८. | श्रीकृष्ण की | गोप | ५. | गोप |
| अभिवन्द्य | ९. | वन्दना की | रूपिणीम् | ६. | वेषधारी |
| मनस्विनी । | १. | मनस्विनी | ईश्वरम् ॥ | ७. | परमेश्वर |

श्लोकार्थ—मनस्विनी ! कामधेनु ने अपनी सन्तानों के साथ गोप वेषधारी परमेश्वर श्रीकृष्ण की वन्दना की और उनको सम्बोधित करके कहा ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वसम्भव ।**
**भवता लोकनाथेन सनाथा वयमच्युत ॥१६॥**

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वसम्भव ।
भवता लोक नाथेन सनाथाः वयम् अच्युत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | हे कृष्ण | भवता | १०. | आपके द्वारा |
| कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण ! आप | लोक | ८. | संसार के |
| महायोगिन् | ३ | योगेश्वर हैं | नाथेन | ६. | स्वामी |
| विश्वात्मन् | ४. | विश्व रूप और | सनाथाः | १२. | रक्षित हैं |
| विश्व | ५. | विश्व के | वयम् | ११. | हम |
| सम्भव । | ६. | कारण हैं | अच्युत ॥ | ७. | हे अच्युत ! |

श्लोकार्थ—हे कृष्ण, श्रीकृष्ण ! आप योगेश्वर हैं । विश्वरूप और विश्व के कारण हैं । हे अच्युत ! संसार के स्वामी आपके द्वारा हम रक्षित हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**त्वं नः परमकं दैवं त्वं न इन्द्रो जगत्पते ।**
**भवाय भव गोविप्रदेवानां ये च साधवः ॥२०॥**

पदच्छेद— त्वम् नः परमकम् दैवम् त्वम् न इन्द्रः जगत्पते ।
भवाय भव गो विप्र देवानाम् ये च साधकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वम् | ३. | आप हो | भवाय | १३. | रक्षा के लिये हमारे इन्द्र |
| नः | २. | हमारे तो | भव | १४. | बन जाइये |
| परमकम् | ४. | परम पूजनीय | गो विप्र | ८. | आप गो ब्राह्मण |
| देवम् | ५. | आराध्यदेव हैं | देवानाम् | ६. | देवता |
| त्वम् | ६. | आप ही | ये | ११. | जो |
| नः इन्द्रः | ७. | हमारे इन्द्र हैं | च | १०. | और |
| जगत्पते । | १. | आप जगत् के स्वामी हैं | साधवः ॥ | १२. | साधुजन हैं उनकी |

श्लोकार्थ—आप जगत् के स्वामी हैं । हमारे तो आप ही परम पूजनीय आराध्यदेव हैं । आप ही हमारे इन्द्र है । आप गो, ब्राह्मण और देवता तथा तथा जो साधुजन हैं । उनकी रक्षा के लिये हमारे इन्द्र बन जाइये ।

## एकविंशः श्लोकः

**इन्द्रं नस्त्वाभिषेक्ष्यामो ब्रह्मणा नोदिता वयम् ।**
**अवतीर्णोऽसि विश्वात्मन् भूमेर्भारापनुत्तये ॥२१॥**

पदच्छेद— इन्द्रम् नः त्वा अभिषेक्ष्यामः ब्रह्मणा नोदिताः वयम् ।
अवतीर्णः असि विश्वात्मन् भूमेः भार अपनुत्तये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इन्द्रम् | ५. | इन्द्र मानकर | अवतीर्णः | ११. | अवतार धारण |
| नः त्वा | ४. | आपको अपना | असि | १२. | किया है |
| अभिषेक्ष्यामः | ६. | अभिषेक करेंगी | विश्वात्मन् | ७. | हे विश्वात्मन् ! |
| ब्रह्मणा | २. | ब्रह्माजी की | भूमेः | ८. | आपने पृथ्वी का |
| नोदिताः | ३. | प्रेरणा से | भार | ९. | भार |
| वयम् । | १. | हम गौएँ | अपनुत्तये ॥ | १०. | उतारने के लिये |

श्लोकार्थ—हम गौएँ ब्रह्माजी की प्रेरणा से आपको अपना इन्द्र मानकर अभिषेक करेंगी । हे विश्वात्मन् ! आपने पृथ्वी का भार उतारने लिये अवतार धारण किया है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— एवं कृष्णमुपामन्त्र्य सुरभिः पयसाऽऽत्मनः ।**
**जलैराकाशगङ्गाया ऐरावतकरोद्धृतैः ॥२२॥**

पदच्छेद— एवम् कृष्णम् उपामन्त्र्य सुरभिः पयसा आत्मनः ।
जलैः आकाश गङ्गायाः ऐरावत कर उद्धृतैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | ऐसा कह कर | जलैः | १०. | जल से |
| कृष्णम् | ११. | श्रीकृष्ण का | आकाश | ८. | आकाश |
| उपामन्त्र्य | १२. | अभिषेक किया | गङ्गायाः | ९. | गङ्गा के |
| सुरभिः | २. | कामधेनु ने | ऐरावत | ५. | इन्द्र ने ऐरावत की |
| पयसा | ४. | दूध से और | करात् | ६. | सूंड़ के द्वारा |
| आत्मनः । | ३. | अपने | धृतैः ॥ | ७. | लाये हुये |

श्लोकार्थ—ऐसा कह कर कामधेनु ने अपने दूध से और इन्द्र ने ऐरावत की सूंड़ के द्वारा लाये हुये आकाश गङ्गा के जल से श्रीकृष्ण का अभिषेक किया ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

इन्द्रः सुरर्षिभिः साकं नोदितो देवमातृभिः ।
अभ्यषिञ्चत दाशार्हं गोविन्द इति चाभ्यधात् ॥२३॥

पदच्छेद— इन्द्रः सुरर्षिभिः साकम् नोदितः देव मातृभिः ।
अभ्यषिञ्चत दाशार्हं गोविन्द इति च अभ्यधात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इन्द्रः | ४. | इन्द्र ने | अभ्यषिञ्चत | ८. | अभिषेक किया |
| सुरर्षिभिः | ५. | देवर्षियों के | दाशार्हं | ७. | यदुनाथ श्रीकृष्ण का |
| साकम् | ६. | साथ | गोविन्द | १०. | गोविन्द |
| नोदितः | ३. | प्रेरणा से | इति | ११. | इस नाम से उन्हें |
| देव | १. | देव | च | ९. | और |
| मातृभिः । | २. | माताओं की | अभ्यधात् । | १२. | पुकारा |

श्लोकार्थ—देव-माताओं की प्रेरणा से इन्द्र ने देवर्षियों के साथ यदुनाथ श्रीकृष्ण का अभिषेक किया। और गोविन्द इस नाम से उन्हें पुकारा ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

तत्रागतास्तुम्बुरुनारदादयो गन्धर्वविद्याधरसिद्धचारणाः ।
जगुर्यशो लोकमलापहं हरेः सुराङ्गनाः संननृतुर्मुदान्विताः ॥२४॥

पदच्छेद— तत्र आगताः तुम्बुरु नारद आदयः गन्धर्व विद्याधर सिद्ध चारणाः ।
जगुः यशः लोक मलापहम् हरेः सुराङ्गनाः संननृतुः मुदा अन्विताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र आगताः | १. | वहाँ आये हुये | जगुः यशः | ११. | यश का गान करने लगे |
| तुम्बुरु | २. | तम्बुरु | लोक | ८. | संसार |
| नारद आदयः | ३. | नारद आदि | मलापहम् | ९. | दाषा को नष्ट करने वाले |
| गन्धर्व | ४. | गन्धर्व | हरेः | १०. | भगवान् के |
| विद्याधर | ५. | विद्याधर | सुराङ्गनाः | १२. | और देवाङ्गनाओं ने |
| सिद्ध | ६. | सिद्ध | संननृतुः | १४. | नाचना आरम्भ कर दिया |
| चारणाः । | ७. | चारण | मुदान्विताः ॥ | १३. | प्रसन्न होकर |

श्लोकार्थ—वहाँ आये हुये तुम्बुरु, नारद आदि गन्धर्व, विद्याधर, सिद्ध, चारण संसार के दोषों को नष्ट करने वाले भगवान् के यश का गान करने लगे और देवाङ्गनाओं ने प्रसन्न होकर नाचना आरम्भ कर दिया ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**तं तुष्टुवुर्देवनिकायकेतवो व्यवाकिरंश्चाद्भुतपुष्पवृष्टिभिः ।**
**लोकाः परां निर्वृतिमाप्नुवंस्त्रयो गावस्तदा गामनयन् पयोद्रुताम् ॥२५॥**

पदच्छेद— तम् तुष्टुवुः देव निकाय केतवः व्यवाकिरन् च अद्भुत पुष्पवृष्टिभिः ।
लोकाः पराम् निर्वृतिम् आप्नुवन् त्रयः गावः तदा गाम् अनयन् पयोद्रुताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् तुष्टुवुः | ३. भगवान् की स्तुति करने लगे | लोकाः पराम् | ९. लोकों में अत्यन्त |
| देव निकाय | १. देव समूह में | निर्वृतिम् | १०. आनन्द की |
| केतवः | २. श्रेष्ठ देव | आप्नुवन् | ११. बाढ़ आ गई |
| व्यवाकिरन् | ७. करने लगे | त्रयः | ८. तीनों |
| च | ४. और उन पर | गावः | १३. गायों के |
| अद्भुत | ५. दिव्य | तदा | १२. उस समय |
| पुष्पवृष्टिभिः । | ६. पुष्पों की वर्षा | गाम् अनयन् | १५. पृथ्वी गीली हो गई |
| | | पयोद्रुताम् ॥ | १४. स्तनों के झरते हुये दूध से |

श्लोकार्थ—देव समूह में श्रेष्ठ देव भगवान् की स्तुति करने लगे । और उन पर दिव्य पुष्पों की वर्षा करने लगे । तीनों लोकों में अत्यन्त आनन्द की बाढ़ आ गयी । उस समय स्त्रियों और गायों के स्तनों के झरते हुये दूध से पृथ्वी गीली हो गई ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**नानारसौघाः सरितो वृक्षा आसन् मधुस्रवाः ।**
**अकृष्टपच्यौषधयो गिरयोऽबिभ्रदुन्मणीन् ॥२६॥**

पदच्छेद— नाना रस ओघाः सरितः वृक्षाः आसन् मधुस्रवाः ।
अकृष्ट पच्य ओषधयः गिरयः अबिभ्रद् उन्मणीन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नाना रस | २. अनेक रसों की | अकृष्ट | ८. बिना जोते-बोये |
| ओघाः | ३. बाढ़ आ गयी | पच्य | ९. पैदा हो गये |
| सरितः | १. नदियों में | ओषधयः | ७. औषधियाँ और अन्न |
| वृक्षाः | ४. वृक्षों से | गिरयः | १०. पर्वत |
| आसन् | ६. बहने लगी | अबिभ्रद् | १२. युक्त हो गये |
| मधुस्रवाः । | ५. मधुधारा | उन्मणीन् ॥ | ११. मणियों से |

श्लोकार्थ—नदियों में अनेक रसों की बाढ़ आ गयी । वृक्षों से मधुधारा बहने लगी । ओषधियाँ और अन्न बिना जोते बोये पैदा हो गये । पर्वत मणियों से युक्त हो गये ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**कृष्णेऽभिषिक्त एतानि सत्त्वानि कुरुनन्दन ।**
**निर्वैराण्यभवंस्तात क्रूराण्यपि निसर्गतः ॥२७॥**

पदच्छेद— कृष्णे अभिषिक्ते एतानि सत्त्वानि कुरु नन्दन ।
निर्वैराणि अभवन् तात क्रूराणि अपि निसर्गतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णे | ३. | श्रीकृष्ण का | निर्वैराणि | १०. | वैर हीन होकर |
| अभिषिक्ते | ४. | अभिषेक होने पर | अभवन् | ११. | हो गये |
| एतानि | ५. | ये जो | तात | २२. | हे तात ! |
| सत्त्वानि | ६. | जीव | क्रूराणि | ८. | क्रूर थे वे |
| कुरु नन्दन । | १. | हे परीक्षित् ! | अपि | ९. | भी |
| | | | निसर्गतः ॥ | ७. | स्वभाव से |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! श्रीकृष्ण का अभिषेक होने पर ये जो जीव स्वभाव से क्रूर थे वे भी वैर-हीन हो गये ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**इति गोगोकुलपतिं गोविन्दमभिषिच्य सः ।**
**अनुज्ञातो ययौ शक्रो वृतो देवादिभिर्दिवम् ॥२८॥**

पदच्छेद— इति गो गोकुलपतिम् गोविन्दम् अभिषिच्य सः ।
अनुज्ञातः ययौ शक्रः वृतः देव आदिभिः दिवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | इस प्रकार | अनुज्ञातः | ८. | अनुमति प्राप्त होने पर |
| गो | ३. | गो और | ययौ | १२. | यात्रा की |
| गोकुलपतिम् | ४. | गोकुल के स्वामी | शक्रः | १. | इन्द्र ने |
| गोविन्दम् | ५. | श्री गोविन्द का | वृतः | १०. | के साथ |
| अभिषिच्य | ६. | अभिषेक किया | देव आदिभिः | ९. | देवता गन्धर्व आदि |
| सः । | ७. | और उनसे | दिवम् ॥ | ११. | स्वर्ग की |

श्लोकार्थ—इन्द्र ने इस प्रकार गौ और गोकुल के स्वामी श्री गोविन्द का अभिषेक किया और उनसे अनुमति प्राप्त करके देवता, गन्धर्व आदि के साथ स्वर्ग की यात्रा की ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
पूर्वार्धे इन्द्रस्तुतिर्नाम सप्तविंशः अध्यायः ॥२७॥

## तृतीयः श्लोकः

**चक्रुशुस्तमपश्यन्तः कृष्ण रामेति गोपकाः ।**
**भगवांस्तदुपश्रुत्य पितरं वरुणाहृतम् ।**
**तदन्तिकं गतो राजन् स्वानामभयदो विभुः ॥३॥**

पदच्छेद— चुक्रुशुः तम् अपश्यन्तः कृष्णरामेति गोपकाः ।
भगवान् तत् उपश्रुत्य पितरम् वरुण आहृतम् ।
तत् अन्तिकम् गतः राजन् स्वानाम् अभयदः विभुः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चुक्रुशुः | ६. | कहना शुरू किया | वरुण | १३. | वरुण के द्वारा |
| तम् | ३. | नन्दबाबा को | आहृतम् । | १४. | हरण किया गया जानकर |
| अश्पयन्तः | ४. | न देख कर | तत् अन्तिकम् | १५. | वे उसके पास |
| कृष्णरामेति | ५. | हे कृष्ण हे बलराम ! | गतः | १६. | गये |
| गोपकाः | २. | ग्वाल बालों ने | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| भगवान् तत् | १०. | भगवान् ने उसे | स्वानाम् | ८. | अपने भक्तों को |
| उपश्रुत्य | ११. | सुनकर और | अभयदः | ९. | अभय देने वाले हैं |
| पितरम् । | १२. | नन्द बाबा को | विभुः ।। | ७. | भगवान् तो |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! ग्वाल बालों ने नन्दबाबा को न देखकर हे कृष्ण ! हे बलराम, ऐसा कहना शुरू किया । भगवान् तो अपने भक्तों को अभय देने वाले हैं । भगवान् ने उसे सुनकर और नन्द बाबा को वरुण के द्वारा हरण किया गया जान कर वे उस वरुण के पास गये ।।

## चतुर्थः श्लोकः

**प्राप्तं वीक्ष्य हृषीकेशं लोकपालः सपर्यया ।**
**महत्या पूजयित्वाऽऽह तद्दर्शनमहोत्सवः ॥४॥**

पदच्छेद— प्राप्तम् वीक्ष्य हृषीकेशम् लोकपालः सपर्यया ।
महत्या पूजयित्वा आह तत् दर्शन महोत्सवः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्राप्तम् | ३. | आया हुआ | महत्या | ६. | अत्यधिक |
| वीक्ष्य | ४. | देख कर | पूजयित्वा | ७. | पूजा करके |
| हृषीकेशम् | २. | श्रीकृष्ण को | आह | ८. | बोले (उस समय) |
| लोकपालः | १. | लोक पाल वरुण ने | तत् दर्शन | ९. | उनके दर्शन से वे |
| सपर्यया । | ५. | उनकी सेवा की और | महोत्सवः ।। | १०. | आनन्दित हो रहे थे |

श्लोकार्थ—लोकपाल वरुण ने श्रीकृष्ण को आया हुआ देखकर उनकी सेवा की और अत्यधिक पूजा करके बोले । उस समय उनके दर्शन से वे आनन्दित हो रहे थे ।।

## प्रथमः श्लोकः

**एकादश्यां निराहारः समभ्यर्च्य जनार्दनम् ।**
**स्नातुं नन्दस्तु कालिन्द्या द्वादश्यां जलमाविशत् ॥१॥**

पदच्छेद— एकादश्याम् निराहारः समभ्यर्च्य जनार्दनम् ।
स्नातुम् नन्दः तु कालिन्द्याः द्वादश्याम् जलम् आविशत् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकादश्याम् | २. | कार्तिक शुक्ल एकादशी को | नन्दः तु | १. | नन्द बाबा ने |
| निराहारः | ३. | उपवास किया (तथा) | कालिन्द्याः | ८. | यमुनाजी के |
| समभ्यर्च्य | ५. | पूजा की (और) | द्वादश्याम् | ६. | द्वादशी लगने पर |
| जनार्दनम् । | ४. | भगवान् की | जलम् | ९. | जल में |
| स्नातुम् | ७. | स्नान करने के लिये | आविशत् ।। | १०. | प्रवेश किया |

श्लोकार्थ—नन्द बाबा ने कार्तिक शुक्ल एकादशी को उपवास किया तथा भगवान् की पूजा की और द्वादशी लगने पर स्नान करने के लिये जमुना जी के जल में प्रवेश किया ।।

## द्वितीयः श्लोकः

**तं गृहीत्वानयद् भृत्यो वरुणस्यासुरोऽन्तिकम् ।**
**अविज्ञायासुरीं वेलां प्रविष्टमुदकं निशि ॥२॥**

पदच्छेद— तम् गृहीत्वा अनयत् भृत्यः वरुणस्य असुरः अन्तिकम् ।
अविज्ञाय आसुरीम् वेलाम् प्रविष्टम् उदकम् निशि ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गृहीत्वा तम् | १०. | उन्हे पकड़ लिया (और) | अविज्ञाय | १. | नन्द जी यह नहीं जानते थे |
| अनयत् | १२. | ले गया | आसुरीम् | २. | कि यह असुरों की |
| भृत्यः | ८. | सेवक एक | वेलाम् | ३. | बेला है (अतः) |
| वरुणस्य | ७. | वरुण के | प्रविष्टम् | ६. | घुस गये (तब वे) |
| असुरः | ९. | असुर ने | उदकम् | ५. | जल में |
| अन्तिकम् । | ११. | वरुण के पास | निशि ।। | ४. | रात के समय ही |

श्लोकार्थ—नन्द जी यह नहीं जानते थे कि यह असुरों की वेला है । अतः वे रात के समय ही जल में घुस गये । तब वरुण के सेवक एक असुर ने उन्हें पकड़ लिया और वरुण के पास ले गया ।

## पञ्चमः श्लोकः

वरुण उवाच— अद्य मे निभृतो देहोऽद्यैवार्थोऽधिगतः प्रभो ।
त्वत्पादभाजो भगवन्नवापुः पारमध्वनः ॥५॥

पदच्छेद— अद्य मे निभृतो देहः अद्य एव अर्थः अधिगतः प्रभो ।
त्वत्पाद भाजः भगवन् अवापुः पारम् अध्वनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अद्य मे | २. आज मेरा | | त्वत्पाद | ८. आपके चरण कमलों की | |
| निभृतो देहः | ३. शरीर धारण करना सफल हो गया | | भाजः | ९. सेवा का अवसर पाकर | |
| अद्यएव | ४. आज मुझे | | भगवन् | ७. हे भगवान् ! | |
| अर्थः | ५. सम्पूर्ण पुरुषार्थ | | अवापुः | १२. हो गया | |
| अधिगतः | ६. प्राप्त हो गया | | पारम् | ११. पार | |
| प्रभो । | १. हे प्रभो ! | | अध्वनः ॥ | १०. मैं भवसागर से | |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आज मेरा शरीर धारण करना सफल हो गया । आज मुझे सम्पूर्ण पुरुषार्थ प्राप्त हो गया । हे भगवान् ! आपके चरण कमलों की सेवा का अवसर पाकर मैं भवसागर से पार हो गया ॥

## षष्ठः श्लोकः

नमस्तुभ्यं भगवते ब्रह्मणे परमात्मने ।
न यत्र श्रूयते माया लोकसृष्टिविकल्पना ॥६॥

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते ब्रह्मणे परमात्मने ।
न यत्र श्रूयते माया लोकसृष्टि विकल्पना ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नमः | ५. नमस्कार है | न | १०. नहीं है ऐसा |
| तुभ्यम् | ४. आपको | यत्र | ६. आप के स्वरूप में |
| भगवते | १. भक्तों के भगवान् | श्रूयते | ११. श्रुति कहती है |
| ब्रह्मणे | २. वेदान्तियों के ब्रह्म | माया | ९. माया |
| परमात्मने । | ३. योगियों के परमात्मा | लोकसृष्टि | ७. विभिन्न लोकसृष्टियों की |
| | | विकल्पना ॥ | ८. कल्पना करने वाली |

श्लोकार्थ—भक्तों के भगवान्, योगियों के परमात्मा, वेदान्तियों के ब्रह्म आपको नमस्कार है । आपके स्वरूप में विभिन्न लोक-सृष्टियों की कल्पना करने वाली माया नहीं है । ऐसा श्रुति कहती है ॥

## सप्तमः श्लोकः

**अजानता मामकेन मूढेनाकार्यवेदिना ।**
**आनीतोऽयं तव पिता तद् भवान् क्षन्तुमर्हति ॥७॥**

पदच्छेद— अजानता मामकेन मूढेन अकार्य वेदिना ।
आनीतः अयम् तव पिता तत् भवान् क्षन्तुम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अजानता | ५. | अनजान में ही | अयम् | ७. | इन |
| मामकेन | १. | मेरे | तव | ६. | आपके |
| मूढेन | ४. | इस मूर्ख सेवक द्वारा | पिता | ८. | पिता जी को |
| अकार्य | २. | कार्य को न | तत्भवान् | १०. | इसलिये आप |
| वेदिना । | ३. | जानने वाले | क्षन्तुम् | ११. | इसका अपराध क्षमा |
| आनीतः | ९. | ले आया गया है | अर्हति ॥ | १२. | कीजिये |

श्लोकार्थ—मेरे कार्य को न जानने वाले इस मूर्ख सेवक द्वारा अनजान में ही आप के इन पिता जी को ले आया गया है । इसलिये आप इसका अपराध क्षमा कीजिये ॥

## अष्टमः श्लोकः

**ममाप्यनुग्रहं कृष्ण कर्तुमर्हस्यशेषदृक् ।**
**गोविन्द नीयतामेष पिता ते पितृवत्सल ॥८॥**

पदच्छेद— मम अपि अनुग्रहम् कृष्ण कर्तुम् अर्हसि अशेषदृक् ।
गोविन्द नीयताम् एषः पिता ते पितृ वत्सल ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मम | १०. | मुझ पर | गोविन्द | १. | गोविन्द |
| अपि | ११. | भी | नीयताम् | ७. | ले जाइये |
| अनुग्रहम् | १२. | आप कृपा | एषः | ५. | अपने इन |
| कृष्ण | ९. | श्रीकृष्ण ! | पिता | ६. | पिता जी को |
| कर्तुम् | १३. | करने के | ते | २. | आप |
| अर्हसि | १४. | योग्य हैं | पितृ | ३. | पितृ |
| अशेषदृक् । | ८. | हे सब के साक्षी | वत्सल ॥ | ४. | वत्सल हैं अतः |

श्लोकार्थ—हे गोविन्द ! आप पितृवत्सल हैं, अतः अपने इन पिता जी को ले जाइये । हे सब के साक्षी श्रीकृष्ण, मुझ पर भी आप कृपा करने के योग्य हैं ॥

## नवमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं प्रसादितः कृष्णो भगवानीश्वरेश्वरः ।
आदायागात् स्वपितरं बन्धूनां चावहन् मुदम् ॥९॥

पदच्छेद— एवम् प्रसादितः कृष्णः भगवान् ईश्वर ईश्वरः ।
आदाय अगात् स्वपितरम् बन्धूनाम् च अवहन् मुदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | आदाय | ८. | लेकर |
| प्रसादितः | ६. | वरुण ने प्रसन्न किया | अगात् | ९. | व्रज चले आये |
| कृष्णः | ५. | श्रीकृष्ण को | स्वपितरम् | ७. | भगवान् भी अपने पिता को |
| भगवान् | ४. | भगवान् | बन्धूनाम् च | १०. | बन्धु-बान्धवों को |
| ईश्वर | २. | ईश्वरों के भी | अवहन् | १२. | किया |
| ईश्वरः । | ३. | ईश्वर | मुदम् ॥ | ११. | आनन्दित |

श्लोकार्थ—इस प्रकार ईश्वरों के भी ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण को वरुण ने प्रसन्न किया। भगवान् भी अपने पिता को लेकर व्रज में चले आये। और अपने बन्धु-बान्धवों को प्रसन्न किया ॥

## दशमः श्लोकः

नन्दस्त्वतीन्द्रियं दृष्ट्वा लोकपालमहोदयम् ।
कृष्णे च सन्नतिं तेषां ज्ञातिभ्यो विस्मितोऽब्रवीत् ॥१०॥

पदच्छेद— नन्दः तु अतीन्द्रियम् दृष्ट्वा लोकपाल महोदयम् ।
कृष्णे च सन्नतिम् तेषाम् ज्ञातिभ्यः विस्मितः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्दः तु | १. | नन्दबाबा ने | च | ६. | और |
| अतीन्द्रियम् | ३. | इन्द्रियातीत | सन्नतिम् | ९. | झुक कर प्रणाम करते देखा तो |
| दृष्ट्वा | ५. | देखा | तेषाम् | ७. | वहाँ के लोगों को |
| लोकपाल | २. | लोकपाल वरुण के | ज्ञातिभ्यः | १०. | वे अपने बन्धु-बान्धवों से |
| महोदयम् । | ४. | ऐश्वर्य को | विस्मितः | ११. | आश्चर्य के साथ |
| कृष्णे | ८. | श्रीकृष्ण के चरणों में | अब्रवीत् ॥ | १२. | कहने लगे |

श्लोकार्थ—नन्द बाबा ने लोकपाल वरुण के इन्द्रियातीत ऐश्वर्य को देखा और वहाँ के लोगों को श्रीकृष्ण के चरणों में झुककर प्रणाम करते देखा तो वे अपने बन्धु-बान्धवों से आश्चर्य चकित होकर कहने लगे ॥

## एकादशः श्लोकः

**ते त्वौत्सुक्यधियो राजन् मत्वा गोपास्तमीश्वरम्।**
**अपि नः स्वगतिं सूक्ष्मामुपाधास्यदधीश्वरः ॥११॥**

पदच्छेद— ते तु औत्सुक्य धियः राजन् मत्वा गोपाः तम् ईश्वरम्।
अपि नः स्वगतिम् सूक्ष्माम् उपाधास्यत् अधीश्वरः ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते तु | ५. | और वे | अपि | ८. | कि क्या कभी |
| औत्सुक्य | ६. | उत्सुकता पूर्वक | नः | ९. | हमें भी |
| धियः | ७. | सोचने लगे | स्वगतिम् | १२. | स्थिति |
| राजन् | १. | हे परीक्षित् ! | सूक्ष्माम् | ११. | अपनी सूक्ष्म |
| मत्वा | ४. | जाना | उपाधास्यत् | १३. | दर्शन करायेंगे। |
| गोपाः तम् | २. | ग्वाल-बालों ने तो उन्हें | अधीश्वरः ॥ | १०. | जगदीश्वर भगवान् |
| ईश्वरम्। | ३. | ईश्वर के रूप में | | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! ग्वाल-बालों ने तो उन्हें ईश्वर के रूप में जाना। और वे उत्सुकता पूर्वक सोचने लगे कि क्या कभी हमें भी जगदीश्वर भगवान् अपनी सूक्ष्म स्थिति का दर्शन करायेंगे ॥

## द्वादशः श्लोकः

**इति स्वानां स भगवान् विज्ञायाखिलदृक् स्वयम्।**
**सङ्कल्पसिद्धये तेषां कृपयैतदचिन्तयत् ॥१२॥**

पदच्छेद— इति स्वानाम् सः भगवान् विज्ञाय अखिल दृक् स्वयम्।
सङ्कल्प सिद्धये तेषाम् कृपया एतत् अचिन्तयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ५. | इस बात को | सङ्कल्प | ८. | सङ्कल्प |
| स्वानाम् सः | ४. | वे अपने आत्मीय गोपों की | सिद्धये | ९. | सिद्ध करने के लिये |
| भगवान् | १. | भगवान् श्रीकृष्ण | तेषाम् | ७. | उनका |
| विज्ञाय | ६. | जान गये (और) | कृपया | १०. | कृपा से भर कर |
| अखिल दृक् | ३. | सर्वदर्शी हैं | एतद् | ११. | इस प्रकार |
| स्वयम्। | २. | तो स्वयम् | अचिन्तयत् ॥ | १२. | सोचने लगे। |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण तो स्वयम् सर्वदर्शी हैं। वे अपने आत्मीय गोपों की इस बात को जान गये। और उनका सङ्कल्प सिद्ध करने के लिये कृपा से भरकर इस प्रकार सोचने लगे ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**जनो वै लोक एतस्मिन्नविद्याकामकर्मभिः ।**
**उच्चावचासु गतिषु न वेद स्वां गतिं भ्रमन् ॥१३॥**

पदच्छेद— जनः वै लोक एतस्मिन् अविद्या काम कर्मभिः ।
उच्चावचासु गतिषु नवेद स्वाम् भ्रमन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जनः | २. | जीव | उच्चावचासु | ८. | ऊँची-नीची |
| वै | १. | निश्चय ही | गतिषु | ९. | योनियों में |
| लोक | ४. | लोक में | नवेद | १३. | नहीं जानता है |
| एतस्मिन् | ३. | इस | स्वाम् | ११. | अपनी |
| अविद्या | ५. | अज्ञानवश | गतिम् | १२. | असली गति को |
| काम | ६. | कामना और | भ्रमन् ॥ | १०. | भ्रमण करता हुआ |
| कर्मभिः । | ७. | कर्मों के द्वारा | | | |

श्लोकार्थ—निश्चय ही जीव इस लोक में अज्ञानवश कामना और कर्मों के द्वारा ऊँची-नीची योनियों में भ्रमण करता हुआ अपनी असली गति (आत्मस्वरूप) को नहीं जानता है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**इति सञ्चिन्त्य भगवान् महाकारुणिको हरिः ।**
**दर्शयामास लोकं स्वं गोपानां तमसः परम् ॥१४॥**

पदच्छेद— इति सञ्चिन्त्य भगवान् महाकारुणिकः हरिः ।
दर्शयामास लोकम् स्वम् गोपानाम् तमसः परम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ५. | ऐसा | दर्शयामास | १२. | दर्शन कराया |
| सञ्चिन्त्य | ६. | विचार करके | लोकम् | ११. | धाम का |
| भगवान् | ३. | भगवान् | स्वयम् | १०. | अपने |
| महा | १. | परम | गोपानाम् | ७. | गोपों को |
| कारुणिकः | २. | दयालु | तमसः | ८. | माया के अन्धकार से |
| हरिः । | ४. | श्रीकृष्ण ने | परम् ॥ | ९. | अतीत |

श्लोकार्थ—परम् दयालु भगवान् श्रीकृष्ण ने ऐसा विचार करके गोपों को माया के अन्धकार से अतीत अपने धाम का दर्शन कराया ॥

## पञ्चदश : श्लोकः

सत्यं ज्ञानमनन्तं यद् ब्रह्म ज्योतिः सनातनम् ।
यद्धि पश्यन्ति मुनयो गुणापाये समाहिताः ॥१५॥

पदच्छेद— सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् यत् ब्रह्मज्योतिः सनातनम् ।
यत्‌हि पश्यन्ति मुनयः गुण अपाये समाहितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सत्यम् | २. | सत्य | यत्‌हि | ११. | ही |
| ज्ञानम् | ३. | ज्ञान | पश्यन्ति | १२. | देख पाते हैं |
| अनन्तम् | ४. | अनन्त (और) | मुनयः | ७. | मुनिजन |
| यत् | १. | जिस | गुण | ८. | गुणों के |
| ब्रह्मज्योतिः | ६. | ब्रह्म ज्योति को | अपाये | ९. | अतीत होकर |
| सनातनम् । | ५. | सनातन | समाहितम् ॥ | १०. | समाधि की अवस्था में |

श्लोकार्थ—जिस सत्य, ज्ञान, अनन्त और सनातन ब्रह्म ज्योति को मुनिजन गुणों से अतीत होकर समाधि की अवस्था में ही देख पाते हैं ।

## षोडशः श्लोकः

ते तु ब्रह्महृदं नीता मग्नाः कृष्णेन चोद्धृताः ।
ददृशुर्ब्रह्मणो लोकं यत्राक्रूरोऽध्यगात् पुरा ॥१६॥

पदच्छेद— ते तु ब्रह्महृदम् नीताः मग्नाः कृष्णेन च उद्धृताः ।
ददृशुः ब्रह्मणः लोकम् यत्र अक्रूरः अध्यगात् पुरा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ते तु | ५. | वे ग्वाल-बाल भी उसी | ददृशुः | १४. | दर्शन किया । |
| ब्रह्महृदम् | ६. | ब्रह्महृद में | ब्रह्मणः | १२. | उन्होंने ब्रह्म |
| नीताः | ७. | ले जाये गये | लोकम् | १३. | लोक का |
| मग्नाः | ८. | वे वहाँ डूब गये | यत्र | २. | जिस ब्रह्महृद में |
| कृष्णेन | १०. | श्रीकृष्ण ने | अक्रूरः | ३. | अक्रूर जी |
| च | ९. | और जब | अध्यगात् | ४. | गये थे |
| उद्धृताः । | ११. | उन्हें निकाला तब | पुरा ॥ | १. | पहले |

श्लोकार्थ—पहले जिस ब्रह्महृद में अक्रूर जी गये थे । वे ग्वाल-बाल भी उसी ब्रह्महृद में ले जाये गये । वे वहाँ डूब गये और जब श्रीकृष्ण ने उन्हें निकाला तब उन्होंने ब्रह्मलोक का दर्शन किया ॥

## सप्तदशः श्लोकः

नन्दादयस्तु तं दृष्ट्वा परमानन्दनिर्वृताः ।
कृष्णं च तत्रच्छन्दोभिः स्तूयमानं सुविस्मिताः ॥१७॥

पदच्छेद— नन्द आदयः तु तम् दृष्ट्वा परम आनन्द निर्वृताः ।
कृष्णम् च तत्र छन्दोभिः स्तूयमानम् सु विस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्द | १. | नन्द बाबा | कृष्णम् | ११. | श्रीकृष्ण को |
| आदयः | २. | आदि ग्वाल-बाल | च | ८. | और |
| तु तम् | ३. | उस लोक को | तत्र | ९. | वहाँ पर |
| दृष्टवा | ४. | देख कर | छन्दोभिः | १०. | वेदों के द्वारा |
| परम | ५. | परम | स्तूयमानम् | १२. | स्तुति करते देख कर |
| आनन्द | ६. | आनन्द में | सु | १३. | वे परम |
| निर्वृताः । | ७. | मग्न हो गये | विस्मिताः ॥ | १४. | विस्मित हो गये |

श्लोकार्थ—नन्द बाबा आदि ग्वाल-बाल उस लोक को देख कर परम आनन्द में मग्न हो गये और वहाँ पर वेदों के द्वारा स्तुति करते देख कर वे परम विस्मित हो गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अष्टाविंशः अध्यायः ॥२८॥

## प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥१॥

पदच्छेद— भगवान् अपि ताः रात्रीः शरदा उत्फुल्ल मल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुम् मनः चक्रे योगमायाम् उपाश्रितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | १. | भगवान् ने | वीक्ष्य | ५. | देखा जिनमें |
| अपि | २. | भी | रन्तुम् | १०. | रास क्रीडा करने का |
| ताः रात्रीः | ४. | उन रात्रियों को | मनः | ११. | मन में |
| शरदा | ३. | शरद् ऋतु की | चक्रे | १२. | विचारा |
| उत्फुल्ल | ७. | खिल रहे थे (उन्होंने) | योगमायाम् | ८. | योग माया का |
| मल्लिकाः । | ६. | बेला, चमेली के पुष्प | उपाश्रितः ॥ | ९. | आश्रय लेकर |

श्लोकार्थ—भगवान् ने भी शरद् ऋतु की उन रात्रियों को देखा, जिनमें बेला, चमेली के पुष्प खिल रहे थे। उन्होंने योगमाया का आश्रय लेकर रास क्रीडा करने का मन में विचारा ॥

## द्वितीयः श्लोकः

तदोडुराजः ककुभः करैर्मुखं प्राच्या विलिम्पन्नरुणेन शन्तमैः ।
स चर्षणीनामुदगाच्छुचो मृजन् प्रियः प्रियाया इव दीर्घदर्शनः ॥२॥

पदच्छेद— तदा उडुराजः ककुभः करैः मुखम् प्राच्या विलिम्पन् अरुणेन शन्तमैः ।
सः चर्षणीनाम् उदगात् शुचः मृजन् प्रियः प्रियायाः इव दीर्घदर्शनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तदा उडुराजः | १. उस समय चन्द्रदेव ने | सः | १२. वैसे ही चन्द्रदेव ने |
| ककुभः | ६. दिशा के | चर्षणीनाम् | १४. लोगों के |
| करैः | ४. किरणों से | उदगात् | १३. उदित होकर |
| मुखम् | ७. मुख पर | शुचः | १५. ताप-दुःख को |
| प्राच्या | ५. प्राची | मृजन् | १६. दूर कर दिया |
| विलिम्पन् | ८. रोली मल दी | प्रियः प्रियायाः | १०. प्रियतम ने अपनी प्रिया को |
| अरुणेन | ३. रक्तिम | इव | ९. जैसे |
| शन्तमैः । | २. अपनी शीतल और | दीर्घदर्शनः ॥ | ११. बहुत समय बाद दर्शन देकर प्रसन्न किया हो |

श्लोकार्थ—उस समय चन्द्रदेव ने अपनी शीतल और रक्तिम किरणों से प्राची दिशा के मुख पर रोली मल दी। जैसे प्रियतम ने अपनी प्रिया को बहुत समय बाद दर्शन देकर प्रसन्न किया हो। वैसे ही चन्द्रदेव ने उदित होकर लोगों के ताप-दुःख को दूर कर दिया ॥

## तृतीयः श्लोकः

**दृष्ट्वा कुमुद्वन्तमखण्डमण्डलं रमाननाभं नवकुङ्कुमारुणम् ।**
**वनं च तत्कोमलगोभिरञ्जितं जगौ कलं वामदृशां मनोहरम् ॥३॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा कुमुदवन्तम् अखण्ड मण्डलम् रमाननाभम् नव कुङ्कुम अरुणम् ।
वनम् च तत्कोमल गोभिः रञ्जितम् जगौ कलम् वामदृशाम् मनोहरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | १२. ऐसा देख कर | वनम् च | ८. और सारा वन |
| कुमुद्वन्तम् | ३. कुमुद के समान विकसित तथा | तत्कोमल | ९. उसका कोमल |
| अखण्ड | ४. अखण्ड था | गोभिः | १० किरणों से |
| मण्डलम् | २. चन्द्रदेव का मण्डल | रञ्जितम् | ११. लाल था । |
| रमाननाभम् | १. लक्ष्मी के मुख के समान आभावाले | जगौ | १६. ध्वनि छेड़ दी |
| नव | ५. नवीन | कलम् | १३. उन्होंने सुन्दर और |
| कुङ्कुम | ६. केसर के समान | वामदृशाम् | १४. ब्रज सुन्दरियों के लिये |
| अरुणम् । | ७. लाल हो रहा था | मनोहरम् ॥ | १५. मन को हरने वाली |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के मुख के समान आभा वाले चन्द्रदेव का मण्डल कुमुद के समान विकसित तथा अखण्ड था । नवीन केसर के समान लाल हो रहा था । और सारा वन उसकी कोमल किरणों से लाल था । ऐसा देख कर उन्होंने सुन्दर और ब्रज सुन्दरियों के लिये मन हरने वाली ध्वनि छेड़ दी ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**निशम्य गीतं तदनङ्गवर्धनं व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीतमानसाः ।**
**आजग्मुरन्योन्यमलक्षितोद्यमाः स यत्र कान्तो जवलोलकुण्डलाः ॥४॥**

पदच्छेद— निशम्य गीतम् तत् अनङ्ग वर्धनम् व्रजस्त्रियः कृष्णगृहीत मानसाः ।
आजग्मुः अन्योन्यम् अलक्षित उद्यमाः सः यत्र कान्तः जवलोल कुण्डलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निशम्य | ७. सुना (और) | आजग्मुः | १२. पास चल दीं उस समय |
| गीतम् तत् | ६. उस वंशी की ध्वनि को | अन्योन्यम् | ९. परस्पर एक दूसरे से |
| अनङ्ग | ४. कामभाव को | अलक्षित | १०. छिपाती हुई |
| वर्धनम् | ५. बढ़ाने वाली ऐसी | उद्यमाः | ८. वे अपनी चेष्टा को |
| व्रजस्त्रियः | ३. व्रज की स्त्रियों ने | सः यत्र कान्तः | ११. अपने उन परम प्रियतम के |
| कृष्णगृहीत | २. श्रीकृष्ण ने चुरा लिये थे | जवलोल | १४. वेग के कारण हिल रहे थे |
| मानसाः । | १. जिनके मन | कुण्डलाः ॥ | १३. उनके कुण्डल |

श्लोकार्थ—जिनके मन श्रीकृष्ण ने चुरा लिये थे । व्रज की स्त्रियों ने कामभाव को बढ़ाने वाली ऐसी उस वंशी की ध्वनि को सुना । और वे अपनी चेष्टा को परस्पर एक दूसरे से छिपाती हुई अपने उन प्रियतम के पास चल दीं । उस समय उनके कुण्डल वेग के कारण हिल रहे थे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**दुहन्त्योऽभिययुः काश्चिद् दोहं हित्वा समुत्सुकाः ।**
**पयोऽधिश्रित्य संयावमनुद्वास्यापरा: ययुः ॥५॥**

पदच्छेद— दुहन्त्यः अभिययुः काश्चित् दोहम् हित्वा समुत्सुकाः ।
पयः अधिश्रित्य संयावम् अनुद्वास्य अपराः ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुहन्त्यः | २. | दूध दूह रही थीं | पयः | ८. | उफनता हुआ दूध |
| अभिययुः | ६. | चल पड़ीं | अधिश्रित्य | ९. | छोड़कर और कोई |
| काश्चित् | १. | कोई गोपी | संयावम् | १०. | लपसी |
| दोहम् | ३. | कोई दूध औंटा रही थी | अनुद्वास्य | ११. | बिना उतारे ही |
| हित्वा | ४. | सब कुछ छोड़कर | अपराः | ७. | अन्य कोई |
| समुत्सुकाः । | ५. | वे उत्सुकता वश | ययुः ॥ | १२. | चल पड़ीं |

श्लोकार्थ—कोई गोपी दूध दूह रही थीं। कोई दूध औंटा रही थीं। सब कुछ छोड़ कर वे उत्सुकता वश चल पड़ीं। अन्य कोई उफनता हुआ दूध छोड़कर और कोई लपसी बिना उतारे ही चल पड़ीं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**परिवेषयन्त्यस्तद्धित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।**
**शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चिदश्नन्त्योऽपास्य भोजनम् ॥६॥**

पदच्छेद— परिवेषयन्त्यः तत् हित्वा पाययन्त्यः शिशून् पयः ।
शुश्रूषन्त्यः पतीन् काश्चित् अश्नन्त्यः अपास्य भोजनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| परिवेषयन्त्यः | १. | भोजन परोसने वाली | शुश्रूषयन्त्यः | ८. | सेवा करने वाली |
| तत् | २. | उस भोजन को | पतीन् | ७. | अपने पति की |
| हित्वा | ३. | छोड़कर | काश्चित् | ९. | अन्य कोई सेवा छोड़कर |
| पाययन्त्यः | ६. | पिलाने वाली (उसे छोड़कर) | अश्नन्त्यः | १०. | भोजन करती हुई |
| शिशून् | ४. | बच्चों को | अपास्य | १२. | छोड़कर चल पड़ीं |
| पयः । | ५. | दूध | भोजनम् ॥ | ११. | भोजन को |

श्लोकार्थ—भोजन परोसने वाली उस भोजन को छोड़कर, बच्चों को दूध पिलाने वाली उसे छोड़कर, अपने पति की सेवा करने वाली अन्य कोई सेवा छोड़कर, और भोजन करती हुई भोजन को छोड़कर, चल पड़ीं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**लिम्पन्त्यः प्रमृजन्त्योऽन्या अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।**
**व्यत्यस्तवस्त्राभरणाः काश्चित् कृष्णान्तिकं ययुः ॥७॥**

पदच्छेद— लिम्पन्त्यः प्रमृज्यन्त्यः अन्याः अञ्जन्त्यः काश्च लोचने ।
व्यत्यस्त वस्त्र आभरणाः कश्चित् कृष्ण अन्तिकम ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लिम्पन्त्यः | १. | कोई लीपती हुई | व्यत्यस्त | ९. | उलटे-पलटे धारण करके |
| प्रमृजन्त्या | ३. | उबटन करती हुई | वस्त्राभरणाः | ८. | वस्त्र और आभूषण |
| अन्याः | २. | अन्य कोई गोपी | काश्चित् | ७. | कोई |
| अञ्जन्त्यः | ६. | अञ्जन लगाती हुई | कृष्ण | १०. | श्रीकृष्ण के |
| काश्च | ४. | अन्य कोई | अन्तिकम् | ११. | पास |
| लोचने । | ५. | अपने नेत्रों में | ययुः ॥ | १२. | जा पहुँचा |

श्लोकार्थ—कोई लीपती हुई, अन्य कोई गोपी उबटन करती हुई, अन्य कोई अपने नेत्रों में अञ्जन लगाती हुई और कोई वस्त्र एवं आभूषण उलटे-पलटे धारण करके श्रीकृष्ण के पास जा पहुँची ॥

## अष्टमः श्लोकः

**ता वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिर्भ्रातृबन्धुभिः ।**
**गोविन्दापहृतात्मानो न न्यवर्तन्त मोहिताः ॥८॥**

पदच्छेद— ताः वार्यमाणाः पतिभिः पितृभिः भ्रातृ बन्धुभिः ।
गोविन्द अपहृत आत्मानः न न्यवर्तन्त मोहिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | १. | वे | गोविन्द | १०. | श्रीकृष्ण ने |
| वार्यमाणाः | ६. | रोके जाने पर भी | अपहृत | १२. | हरण कर लिया था |
| पतिभिः | २. | अपने पतियों | आत्मानः | ११. | उनके प्राण मन और आत्मा का |
| पितृभिः | ३. | पिताओं | न | ७. | नहीं |
| भ्रातृ | ४. | भाई और | न्यवर्तन्त | ८. | लौटीं । वे |
| बन्धुभिः । | ५. | बन्धुओं के द्वारा | मोहिताः ॥ | ९. | श्रीकृष्ण पर मोहित थीं क्योंकि |

श्लोकार्थ—वे अपने पतियों, पिताओं, भाई और बन्धुओं के द्वारा रोके जाने पर भी नहीं लौटीं । वे श्रीकृष्ण पर मोहित थीं । क्योंकि श्रीकृष्ण ने उनके प्राण, मन और आत्मा का हरण कर लिया था ॥

## नवमः श्लोकः

**अन्तर्गृहगताः काश्चिद् गोप्योऽलब्धविनिर्गमाः ।**
**कृष्णं तद्भावनायुक्ता दध्युर्मीलितलोचनाः ॥९॥**

पदच्छेद— अन्तः गृह गताः काश्चिद् गोप्यः अलब्ध विनिर्गमाः ।
कृष्णम् तत् भावना युक्ताः दध्युः मीलित लोचनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्तः | ४. | भीतर थी | कृष्णम् | ९. | श्रीकृष्ण की |
| गृह | ३. | घर के | तत् | ८. | उसने |
| गताः | ५. | उसे | भावना | १०. | भवना से |
| काश्चित् | १. | कोई | युक्ताः | ११. | भावित होकर |
| गोप्यः | २. | गोपी | दध्युः | १४. | वहीं ध्यान लगाया |
| अलब्ध | ७. | नहीं मिला | मीलित | १३. | बन्द करके |
| विनिर्गमाः । | ६. | बाहर निकलने का मार्ग | लोचनाः ॥ | १२. | अपने नेत्र |

श्लोकार्थ—कोई गोपी घर के भीतर थीं । उन्हें बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिला । उन्होंने श्रीकृष्ण की भावना से भावित होकर अपने नेत्र बन्द करके वहीं ध्यान लगाया ॥

## दशमः श्लोकः

**दुःसहप्रेष्ठविरहतीव्रतापधुताशुभाः ।**
**ध्यानप्राप्ताच्युताश्लेषनिर्वृत्या क्षीणमङ्गलाः ॥१०॥**

पदच्छेद— दुःसह प्रेष्ठ विरह तीव्र ताप धुत अशुभाः ।
ध्यान प्राप्त अच्युत आश्लेष निर्वृत्या क्षीण मङ्गलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुःसह | ३. | अत्यन्त कठिन | ध्यान | ८. | ध्यान में ही |
| प्रेष्ठ | १. | अपने प्रियतम | प्राप्त | ११. | प्राप्त करके वे |
| विरह | २. | वियोग के | अच्युत | ९. | श्रीकृष्ण का |
| तीव्र | ४. | भीषण | आश्लेष | १०. | आलिङ्गन |
| ताप | ५. | ताप से उसके | निर्वृत्या | १२. | परम आनन्दित हुईं |
| धुत | ७. | नष्ट हो गये । और | क्षीण | १४. | नष्ट हो गये |
| अशुभाः । | ६. | अशुभ संस्कार | मङ्गलाः ॥ | १३. | जिससे उनके अशुभ |

श्लोकार्थ—अपने प्रियतम के अत्यन्त कठिन भीषण ताप से उनके अशुभ संस्कार नष्ट हो गये । और ध्यान में ही श्रीकृष्ण का आलिंगन प्राप्त करके वे परम आनन्दित हुईं । जिससे उनके अशुभ नष्ट हो गये ॥

## एकादशः श्लोकः

**तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः ।**
**जहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः ॥११॥**

पदच्छेद— तम् एव परम आत्मानम् जारबुद्ध्या अपि सङ्गताः ।
जहुःगुणमयम् देहम् सद्यः प्रक्षीण बन्धनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम्एव | १. उन्होंने उन | जहुः | १२. छोड़ दिया |
| परम | २. परम | गुणमयम् | १०. इस गुणमय |
| आत्मानम् | ३. आत्मा श्रीकृष्ण का | देहम् | ११. शरीर को भी |
| जारबुद्ध्या | ४. जारबुद्धि से | सद्यः | ८. तत्काल |
| अपि | ५. ही | प्रक्षीण | ९. छोडकर |
| सङ्गताः | ६. आलिङ्गन किया था परन्तु | बन्धनाः | ७. समस्त बन्धनों को |

श्लोकार्थ— उन्होंने उन परमाआत्मा श्रीकृष्ण का जारबुद्धि से ही आलिङ्गन किया था। परन्तु समस्त बन्धनों को तत्काल छाड़कर इस गुणमय शरीर को भी छोड़ दिया।

## द्वादशः श्लोकः

**राजोवाच—कृष्णं विदुः परं कान्तं न तु ब्रह्मतया मुने ।**
**गुणप्रवाहोपरमस्तासां गुणधियां कथम् ॥ १२ ॥**

पदच्छेद— कृष्णम् विदुः परम् कान्तम् नतु ब्रह्मतया मुने ।
गुण प्रवाह उपरमः तासाम् गुणधियाम् कथम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्णम् | २. उन्होंने श्रीकृष्ण को | गुण | ११. गुणों के |
| विदुः | ५. माना था | प्रवाहः | १२. प्रवाह में |
| परम् | ३. अपना परम | उपरम | १३. आसक्ति |
| कान्तम् | ४. प्रियतम | तासाम् | १०. उनकी |
| न तु | ७. नही माना था । फिर | गुण | ८. गुणों में ही |
| ब्रह्मतया | ६. ब्रह्मरूप में | धियाम् | ९. आसक्त |
| मुने | १. हे भगवन् | कथम् | १४. कैसे हुई |

श्लोकार्थ— हे भगवन् ! उन्होंने ने श्रीकृष्ण को अपना परम प्रियतम माना था। ब्रह्म रूप में नहीं माना था। फिर गुणों में ही आसक्त उनको गुणों के प्रवाह में आसक्ति कैसे हुई।

## त्रयोदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—उक्तं पुरस्तादेतत्ते चैद्यः सिद्धिं यथा गतः ।
द्विषन्नपि हृषीकेशं किमुताधोक्षजप्रियाः ॥१३॥

पदच्छेद— उक्तम् पुरस्तात् एतत् ते चैद्यः सिद्धिम् यथा गतः ।
द्विषन् अपि हृषीकेशम् किम् उत अधोक्षजप्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उक्तम् | ११. कह चुका हूँ | गतः । | ७. पाया था |
| पुरस्तात् | ९. पहले ही | द्विषन् | ३. द्वेष करने पर |
| एत त् | ८. यह कथा मैं | अपि | ४. भी |
| ते | १०. तुमसे | हृषीकेशम् | २. भगवान् के प्रति |
| चैद्यः | १. चेदिराज शिशुपाल ने | किम्उत | १४. क्या आश्चर्य है |
| सिद्धिम् | ६. परमसिद्धि को | अधोक्षज | १२. फिर जो श्रीकृष्ण की |
| यथा | ५. जिस प्रकार | प्रियाः ॥ | १३. प्यारी हैं उनके बारे में |

श्लोकार्थ— चेदिराज शिशुपाल ने भगवान् के प्रति द्वेष करने के कारण भी जिस प्रकार परम सिद्धि को पाया था, यह कथा मैं पहले ही तुमसे कह चुका हूँ। फिर जो श्रीकृष्ण की प्यारी हैं। उनके बारे में तो आश्चर्य ही क्या है।

## चतुर्दशः श्लोकः

नृणां निःश्रेयसार्थाय व्यक्तिर्भगवतो नृप ।
अव्ययस्या प्रमेयस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः ॥१४॥

पदच्छेद— नृणाम् निःश्रेयस अर्थाय व्यक्तिः भगवतः नृप ।
अव्ययस्य अप्रमेयस्य निर्गुणस्य गुण आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नृणाम् | ८. मनुष्यों के | अव्ययस्य | २. अविनाशी |
| निःश्रेयस | ९. परम कल्याण के | अप्रमेयस्य | ३. प्रमेय रहित |
| अर्थाय | १०. लिये ही | निर्गुणस्य | ४. गुणों से परे और |
| व्यक्तिः | ११. अपने को प्रकट किया है | गुण | ५. गुणों के |
| भगवतः | ७. परमात्मा ने | आत्मनः ॥ | ६. आश्राय |
| नृप | १. हे राजन् | | |

श्लोकार्थ— हे राजन् ! अविनाशी, प्रमेयरहित, गुणों से परे और गुणों के आश्रय परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिये ही अपने को प्रकट किया है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च ।**
**नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते ॥१५॥**

पदच्छेद— कामम् क्रोधम् भयम् स्नेहम् ऐक्यम् सौहृदम् एव च ।
नित्यम् हरौ विदधतः यान्ति तन्मयताम् हि ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कामम् | १. | काम | च । | ६. | और |
| क्रोधम् | २. | क्रोध | नित्यम् | ९. | निरन्तर |
| भयम् | ३. | भय | हरौ | १०. | श्रीकृष्ण में |
| स्नेहम् | ४. | स्नेह | विदधतः | ११. | लगाने से |
| ऐक्यम् | ५. | नातेदारी | यान्ति | १४. | हो जाती हैं |
| सौहृदम् | ७. | सौहार्द की | तन्मयताम् | १३. | भगवन्मय |
| एव | ८. | वृत्तियों को भी | हि ते ॥ | १२. | वे वृत्तियाँ भी |

श्लोकार्थ—काम, क्रोध, भय, स्नेह, नातेदारी और सौहार्द की वृत्तियों को भी निरन्तर श्रीकृष्ण में लगाने से वे वृत्तियाँ भगवन्मय हो जाती हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

**न चैवं विस्मयः कार्यो भवता भगवत्यजे ।**
**योगेश्वरेश्वरे कृष्णे यत एतद् विमुच्यते ॥१६॥**

पदच्छेद— न च एवम् विस्मयः कार्यः भवता भगवतिअजे ।
योगेश्वर ईश्वरे कृष्णे यतः एतत् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न च | ८. | नहीं | योगेश्वर | २. | योगेश्वरों के भी |
| एवम् | ६. | इस प्रकार का | ईश्वरे | ३. | ईश्वर |
| विस्मयः | ७. | कोई आश्चर्य | कृष्णे | ५. | श्रीकृष्ण के बारे में |
| कार्यः | ९. | करना चाहिये | यतः | १०. | क्योंकि |
| भवता | १. | आपको | एतत् | ११. | उनके संकेत मात्र से |
| भगवतिअजे । | ४. | अजन्मा भगवान् | विमुच्यते ॥ | १२. | समस्त संसार का कल्याण हो सकता है |

श्लोकार्थ—आपको योगेश्वरों के भी ईश्वर अजन्मा भगवान् श्रीकृष्ण के बारे में इस प्रकार का कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिये । क्योंकि उनके संकेत मात्र से समस्त संसार का कल्याण हो सकता हे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**ता दृष्ट्वान्तिकमायाता भगवान् व्रजयोषितः ।**
**अवदद् वदतां श्रेष्ठो वाचः पेशैर्विमोहयन् ॥१७॥**

पदच्छेद— ताः दृष्ट्वा अन्तिकम् आयाताः भगवान् व्रजयोषितः ।
अवदत् वदताम् श्रेष्ठः वाचः पेशैः विमोहयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ताः | ६. उन | | अवदत् | १२. इस प्रकार कहा |
| दृष्ट्वा | ५. देखा तो | | वदताम् | ७. वक्ताओं में |
| अन्तिकम् | ३. अपने समीप | | श्रेष्ठः | ८. सर्वश्रेष्ठ प्रभु ने |
| आयाताः | ४. आये हुये | | वाचः | ९. अपनी वाणी के |
| भगवान् | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | | पेशैः | १०. चातुर्य से उन्हें |
| व्रजयोषितः । | २. व्रज की सुन्दरियों को | | विमोहयन् ॥ | ११. मोहित करते हुये |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने व्रज की सुन्दरियों को अपने समीप आये हुये देखा। तो उन वक्ताओं में श्रेष्ठ प्रभु ने अपनी वाणी के चातुर्य से उन्हें मोहित करते हुये इस प्रकार कहा ॥

## अष्टादशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— **स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किं करवाणि वः ।**
**व्रजस्यानामयं कच्चिद् ब्रूतागमनकारणम् ॥१८॥**

पदच्छेद— स्वागतम् वः महाभागाः प्रियम् किम् करवाणि वः ।
व्रजस्य अनामयम् कच्चित् ब्रूत आगमन करणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| स्वागतम् | ३. स्वागत है | व्रजस्य | ७. व्रज में |
| वः | २. तुम्हारा | अनामयम् | ९. कुशल तो है |
| महाभागाः | १. महाभाग्यवती गोपियों | कच्चित् | ८. सब |
| प्रियम् | ५. प्रसन्न करने के लिये | ब्रूत | १२. बतायें |
| किम् करवाणि | ६. मैं क्या करूँ | आगमन | १०. आप यहाँ आने का |
| वः । | ४. तुम्हें | करणम् ॥ | ११. कारण |

श्लोकार्थ—महाभाग्यवती गोपियो ! तुम्हारा स्वागत है। तुम्हें प्रसन्न करने के लिये मैं क्या करूँ। व्रज में सब कुशल तो है। आप यहाँ आने का कारण बतायें ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**रजन्येषा घोररूपा घोरसत्त्वनिषेविता ।**
**प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥२९॥**

पदच्छेद— रजनी एषा घोररूपा घोर सत्त्व निषेविता ।
प्रतियात व्रजम् न इह स्थेयम् स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रजनी | ३. | रात्रि | प्रतियात | १२. | लौट जाओ |
| एषा | २. | यह | व्रजम् | ११. | व्रज में |
| घोररूपा | ४. | बड़ी भयावनी है | न इह | ९. | इस समय यहाँ नहीं |
| घोर | ५ | भयानक | स्थेयम् | १०. | रहना चाहिये अतः |
| सत्त्व | ६. | जीव | स्त्रीभिः | ८. | स्त्रियों को |
| निषेविता । | ७. | इसमें घूमते हैं | सुमध्यमाः ॥ | १. | हे सुन्दरी गोपियों ! |

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी गोपियों ! यह रात्रि बड़ी भयावनी है । भयानक जीव इसमें घूमते हैं । स्त्रियों को इस समय यहाँ नहीं रहना चाहिये । अतः व्रज में लौट जाओ ॥

## विंशः श्लोकः

**मातरः पितरः पुत्रा भ्रातरः पतयश्च वः ।**
**विचिन्वन्ति ह्यपश्यन्तो मा कृढ्वं बन्धुसाध्वसम् ॥२०॥**

पदच्छेद— मातरः पितरः पुत्राः भ्रातरः पतयः च वः ।
विचिन्वन्ति हि अपश्यन्तः मा कृढ्वम् बन्धु साध्वसम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मातरः | २. | माता | विचिन्वन्ति | ९. | खोज रहे होंगे (अतः) |
| पितरः | ३. | पिता | हि अपश्यन्तः | ८. | तुम्हें न देखकर |
| पुत्राः | ४. | पुत्र | मा | १२. | मत |
| भ्रातरः | ५. | भाई | कृढ्वम् | १३. | डालो |
| पतयः | ७. | पति | बन्धु | १०. | तुम अपने बन्धुओं को |
| च | ६. | और | साध्वसम् । | ११. | भय में |
| वः ॥ | १. | आपके | | | |

श्लोकार्थ—आपके माता-पिता, पुत्र, भाई और पति तुम्हें न देखकर खोज रहे होंगे । तुम अपने बन्धुओं को भय में मत डालो ॥

## एकविंशः श्लोकः

दृष्टं वनं कुसुमितं राकेशकररञ्जितम् ।
यमुनानिललीलैजत्तरुपल्लवशोभितम्　　॥२१॥

पदच्छेद—　दृष्टम् वनम् कुसुमितम् राकेश कर रञ्जितम् ।
यमुना अनिल लीला एजत् तरु पल्लव शोभितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्टम् | १२. | देखा | यमुना | ४. | तथा यमुना के जल का |
| वनम् | ११ | इस वन को | अनिल लीला | ५. | स्पर्श करके बहने वाली वायु के कारण |
| कुसुमितम् | १०. | पुष्पों से लदे | एजत् | ६. | हिलते हुए |
| राकेश | १. | तुमने चन्द्रमा की | तरु | ७. | वृक्ष के |
| कर | २. | किरणों से | पल्लव | ८. | पत्तों से |
| रञ्जितम् । | ३. | आरक्त | शोभितम् ॥ | ६. | सुशोभित और |

श्लोकार्थ—तुमने चन्द्रमा की किरणों से आरक्त तथा यमुना के जल का स्पर्श करके बहने वाली वायु के कारण हिलते हुए वृक्ष के पत्तों से सुशोभित और पुष्पों से इन वन को देखा ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

तद् यात मा चिरं गोष्ठं शुश्रूषध्वं पतीन् सतीः ।
क्रन्दन्ति वत्सा बालाश्च तान् पाययत दुह्यत ॥२२॥

पदच्छेद—　तत् यात मा चिरम् गोष्ठम् शुश्रूषध्वम् पतीन् सतीः ।
क्रन्दन्ति वत्साः बालाः च तान् पालयत दुह्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | २. | इसलिये | क्रन्दन्ति | ११. | रो रहे हैं |
| यात | ४. | जाओ | वत्साः | ६. | गौओं के बछड़े |
| मा चिरम् | ५. | देर मत करो | बालाः | १०. | तुम्हारे बालक |
| गोष्ठम् | ३. | व्रज में | च | ६. | और |
| शुश्रूषध्वम् | ७. | सेवा करो | तान् | १२. | उन्हें |
| पतीन् | ६. | अपने पतियों की | पालयत | १४. | उनका पालन करो |
| सतीः । | १. | तुम सती साध्वी हो, | दुह्यत ॥ | १३. | दुहकर दूध पिलाओ और |

श्लोकार्थ—तुम सती-साध्वी हो ; इसलिये व्रज में जाओ, देर मत करो । अपने पतियों की सेवा करो। गौओं के बछड़े और तुम्हारे बालक रो रहे हैं । उन्हें दुह कर दूध पिलाओ और उनका पालन करो ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**अथवा मदभिस्नेहाद् भवत्यो यन्त्रिताशयाः ।**
**आगता ह्युपपन्नं वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ॥२३॥**

पदच्छेद— अथवा मत् अभिस्नेहात् भवत्यः यन्त्रित आशयाः ।
आगताः अथवा हि उपपन्नम् वः प्रीयन्ते मयि जन्तवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथवा | १. | अथवा यदि | आगताः | ७. | यहाँ पर आई हो तो यह |
| मत् | २. | मुझसे | हि उपपन्नम् | ९. | उचित ही है |
| अभिस्नेहात् | ३. | प्रेम होने के कारण | वः | ८. | तुम लोगों के लिये |
| भवत्यः | ४. | आप लोग | प्रीयन्ते | १२. | स्नेह करते हैं |
| यन्त्रित | ५. | परवश | मयि | ११. | मुझसे |
| आशयाः । | ६. | चित्त होकर | जन्तवः ॥ | १०. | संसार के समस्त प्राणी |

श्लोकार्थ—अथवा यदि मुझसे प्रेम होने के कारण आप लोग परवश चित्त होकर यहाँ पर आई हो, तो यह तुम लोगों के लिये उचित ही है। संसार के समस्त प्राणी मुझसे स्नेह करते हैं ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणां परो धर्मो ह्यमायया ।**
**तद्बन्धूनां च कल्याण्यः प्रजानां चानुपोषणम् ॥२४॥**

पदच्छेद— भर्तुः शुश्रूषणम् स्त्रीणाम् परः धर्मः हि अमायया ।
तत् बन्धूनाम् च कल्याण्यः प्रजानाम् च अनुपोषणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भर्तुः | ५. | वे पति | तत् | ७. | उनके |
| शुश्रूषणम् | १०. | सेवा करें | बन्धूनाम् | ८. | भाई बन्धुओं की |
| स्त्रीणाम् | २. | स्त्रियों का | च | ६. | और |
| परः | ३. | पर | कल्याण्यः | १. | हे कल्याणि गोपियो ! |
| धर्मः | ४. | धर्म यही है कि | प्रजानाम् च | ११. | और सन्तान का |
| हि अमायया । | ९. | निष्कपट भाव से | अनुपोषणम् | १२. | पालन करें |

श्लोकार्थ—हे कल्याणि गोपियो ! स्त्रियों का परम धर्म यही है कि वे पति और उनके भाई बन्धुओं की निष्कपट भाव से सेवा करें और सन्तान का पालन करें ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपि वा।**
**पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी ॥२५॥**

पदच्छेद— दुशीलः दुर्भगः वृद्धः जडः रोगी अधनः अपि वा।
पतिः स्त्रीभिः न हातव्यः लोकेप्सुभिः अपातकी ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुशीलः | ४. | बुरे स्वभाव वाले | पतिः | १०. | पति का भी |
| दुर्भगः | ५. | भाग्यहीन | स्त्रीभिः | २. | स्त्रियों को |
| वृद्धः जडः | ६. | वृद्ध-मूर्ख | न | ११. | नहीं |
| रोगी | ७. | रोगी | हातव्यः | १२. | त्याग करना चाहिये |
| अधनः | ९. | निर्धन | लोकेप्सुभिः | १. | उत्तम लोक चाहने वाली |
| अपि वा। | ८. | अथवा | अपातकी ॥ | ३. | पापी को छोड़कर |

श्लोकार्थ—उत्तमलोक चाहने वाली स्त्रियों को पापी को छोडकर बुरे स्वभाव वाले, भाग्यहीन, वृद्ध, मूर्ख, रोगी अथवा निर्धन पति का भी त्याग नहीं करना चाहिये ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**अस्वर्ग्यमयशस्यं च फल्गु कृच्छ्रं भयावहम्।**
**जुगुप्सितं च सर्वत्र औपपत्यं कुलस्त्रियाः ॥२६॥**

पदच्छेद— अस्वर्ग्यम् अयशस्यम् च फल्गु कृच्छ्रम् भय आवहम्।
जुगुप्सितम् च सर्वत्र औपपत्यम् कुल स्त्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अस्वर्ग्यम् | ६. | इससे स्वर्ग नहीं मिलता है | जुगुप्सितम् | ५. | निन्दनीय है |
| अयशस्यम् | ७. | अपयश होता है | च | ११. | और |
| च | ८. | और यह कर्म | सर्वत्र | ४. | सब तरह से |
| फल्गु | ९. | तुच्छ | औपपत्यम् | ३. | जार पति की सेवा |
| कृच्छ्रम् | १०. | क्षणिक | कुल | १. | कुल न |
| भयावहम्। | १२. | भयदायक है | स्त्रियाः ॥ | २. | स्त्रियों के लिये |

श्लोकार्थ—कुलीन स्त्रियों के लिये जार पति की सेवा सब तरह से निन्दनीय है। इससे स्वर्ग नहीं मिलता है, तथा अपयश होता है। और यह कर्म तुच्छ, क्षणिक और भयदायक है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**श्रवणाद् दर्शनाद् ध्यानान्मयि भावोऽनुकीर्तनात् ।**
**न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततो गृहान् ॥२७॥**

पदच्छेद— श्रवणात् दर्शनात् ध्यानात् मयि भावः अनु कीर्तनात् ।
न तथा सन्निकर्षेण प्रतियात ततः गृहान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रवणात् | १. | मेरी लीला के श्रवण | न | ९. | नहीं होता है |
| दर्शनात् | २. | रूप के दर्शन | तथा | ७. | वैसा प्रेम |
| ध्यानात् | ४. | ध्यान से | सन्निकर्षेण | ८. | पास रहने से |
| मयि | ५. | मेरे प्रति | प्रतियात | १२. | वापिस लौट जाओ |
| भावः | ६. | जैसा प्रेम होता है | ततः | १०. | इसलिये |
| अनुकीर्तनात् । | ३. | कीर्तन और | गृहान् ॥ | ११. | तुम घर |

श्लोकार्थ—मेरी लीला के श्रवण, रूप के दर्शन, कीर्तन और ध्यान से मेरे प्रति जैसा प्रेम होता है। वैसा प्रेम पास रहने से नहीं होता है। इस लिये तुम घर वापिस लौट जाओ ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**इति विप्रियमाकर्ण्य गोप्यो गोविन्दभाषितम् ।**
**विषण्णा भग्नसङ्कल्पाश्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम् ॥२८॥**

पदच्छेद— इति विप्रियम् आकर्ण्य गोप्यः गोविन्द भाषितम् ।
विषण्णाः भग्नसङ्कल्पाः चिन्ताम् आपुः दुरत्ययाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ३. | इस प्रकार | विषण्णाः | ७. | खिन्न हो गईं |
| विप्रियम् | ४. | अप्रिय | भग्न | ९. | टूट गई और वे |
| आकर्ण्य | ६. | सुना तो वे | सङ्कल्पाः | ८. | उनकी आशा लता |
| गोप्यः | १. | गोपियों ने | चिन्ताम् | १०. | चिन्ता के |
| गोविन्द | २. | श्रीकृष्ण का | आपुः | १२. | डूब गयी |
| भाषितम् । | ५. | भाषण | दुरत्ययाम् ॥ | ११. | अथाह सागर में |

श्लोकार्थ—गोपियों ने श्रीकृष्ण का इस प्रकार अप्रिय भाषण सुना तो वे खिन्न हो गईं। उनकी आशालता टूट गई। और वे चिन्ता के अथाह सागर में डूब गईं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

कृत्वा मुखान्यव शुचः श्वसनेन शुष्यद्-
बिम्बाधराणि चरणेन भुवं लिखन्त्यः ।
अस्रैरुपात्तमषिभिः कुचकुङ्कुमानि
तस्थुर्मृजन्त्य उरुदुःखभराः स्म तूष्णीम् ॥२६॥

पदच्छेद— कृत्वा मुखानिअव शुचः श्वसनेन शुष्यत् बिम्बाधराणि चरणेन भुवम् लिखन्त्यः ।
अस्रैः उपात्तमषिभिः कुच कुङ्कुमानि तस्थुः मृजन्त्यः उरु दुःखभरा स्म तूष्णीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृत्वा | ६. | करके | अस्रैः | ६. | बहते हुये आंसू |
| मुखानिअव | ५. | मुँह नोचे | उपात्तमषिभिः | १०. | काजल के साथ मिलकर |
| शुचः | ३. | शोक से उत्पन्न | कुचकुङ्कुमानि | ११. | वक्षःस्थल पर लगी केसर को |
| श्वसनेन शुष्यत् | ४. | लम्बी सांस से सूख गये | तस्थुः | १६. | खड़ी रह गईं |
| बिम्ब | १. | उनके बिम्बाफल के समान | मृजन्त्यः | १२. | धोने लगे |
| अधराणि | २. | लाल लाल अधर | उरु | १३. | अत्यधिक |
| चरणेन् भुवम् | ७. | वे अपने पैरों से पृथ्वी के | दुःखभराः | १४. | दुःख के भार के कारण |
| लिखन्त्यः । | ८. | कुरेदने लगीं | स्म तूष्णीम् ॥ | १५. | वे चुप होकर |

श्लोकार्थ—उनके बिम्बाफल के समान लाल लाल अधर शोक से उत्पन्न लम्बी साँस से सूख गये । मुँह नोचे करके वे अपने पैरों से धरती कुरेदने लगीं । बहते हुये आँसु काजल के साथ मिल कर वक्षःस्थल पर लगी केसर को धोने लगे । अत्यधिक दुःख के भार के कारण वे चुप होकर खड़ी रह गयीं ॥

## त्रिंशः श्लोकः

प्रेष्ठं प्रियेतरमिव प्रतिभाषमाणं कृष्णं तदर्थविनिवर्तितसर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदितोपहते स्म किञ्चित्संरम्भगद्गदगिरोऽब्रुवतानुरक्ताः ॥३२॥

पदच्छेद—प्रेष्ठम् प्रियइतरम् इव प्रति भाषमाणम् कृष्णम् तत् अर्थ विनिर्वर्तित सर्वकामाः ।
नेत्रे विमृज्य रुदित उपहते स्म किञ्चित् संरम्भगद्गद्गिरः अब्रुवत अनुरक्ताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रेष्ठम् | ४. | उन्हीं प्रियतम | नेत्रे विमृज्य | १०. | फिर आँसुओं को पोंछ कर |
| प्रियइतरम् इव | ६. | निष्ठुरता भरी सी | रुदित | ८. | वे रोने |
| प्रतिभाषमाणम् | ७. | बातों को सुन कर | उपहते स्म | ६. | लगीं |
| कृष्णम् | ५. | श्रीकृष्ण की | किञ्चित्संरम्भ | ११. | तनिक प्रणय कोप के कारण |
| तत् अर्थ | १. | जिन श्रीकृष्ण के लिये उन्होंने | गद्गद् गिरः | १२. | गद् गद् वाणी से |
| विनिर्वर्तित | ३. | त्याग कर दिया था | अब्रुवत | १४. | बोलने लगीं |
| सर्वकामाः । | २. | समस्त कामनाओं का | अनुरक्ताः ॥ | १३. | प्रेम भरे वचन |

श्लोकार्थ—जिन श्री कृष्ण के लिये उन्होंने समस्त कामनाओं का त्याग कर दिया था । उन्हीं प्रियतम श्रीकृष्ण की निष्ठुरता भरी-सी बातों को सुनकर वे रोने लगीं । फिर आँसुओं को पोंछकर तनिक प्रणय कोप के कारण प्रेम भरे वचन बोलने लगीं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

गोप्य: ऊचुः— मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं नृशंसं
सन्त्यज्य सर्वविषयांस्तव पादमूलम् ।
भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा त्यजास्मान्
देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुक्षून् ॥३१॥

पदच्छेद— मैवम् विभो अर्हति भवान् गदितुम्नृशंसम् सन्त्यज्य सर्वविषयान् तवपादमूलम् ।
भक्ताः भजस्व दुरवग्रह मा त्यज अस्मान् देवः यथा आदि पुरुषः भजतेमुमुक्षून् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| मैवम् | ९. नहीं है | भक्ताः | १२. हम भक्तों पर वैसा ही |
| विभो | ५. हे प्रभो ! | भजस्व | १३. प्रेम करिये |
| अर्हति | ८. योग्य | दुरवग्रह | १. हे स्वच्छन्द प्रभो ! |
| भवान् | ६. आपको | मा त्यज | ११. परित्याग मत करिये |
| गदितुम्नृशंसम् | ७. क्रूर वचन बोलना | अस्मान् | १०. आप हमारा |
| सन्त्यज्य | ३. छोड़ कर | देवः | १५. भगवान् नारायण |
| सर्वविषयान् | २. हमने समस्त विषयों को | यथा आदि पुरुषः | १४. जैसे आदि पुरुष |
| तवपादमूलम् । | ४. आपके चरणों को अपनाया है | भजते मुमुक्षून् ॥ | १६. मुमुक्षुओं से प्रेम करते हैं |

श्लोकार्थ—हे स्वच्छन्द प्रभो ! हमने समस्त विषयों को छोड़ कर आपके चरणों को अपनाया है। हे प्रभो ! आपको क्रूर वचन बोलना योग्य नहीं है। आप हमारा परित्याग मत करिये। हम भक्तों पर वैसा ही प्रेम करिये, जैसे आदि पुरुष भगवान् नारायण मुमुक्षुओं से प्रेम करते हैं ।

## द्वात्रिंशः श्लोकः

यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिरङ्ग स्त्रीणां स्वधर्म इति धर्मविदा त्वयोक्तम् ।
अस्त्वेवमेतदुपदेशपदे त्वयीशे प्रेष्ठो भवांस्तनुभृतां किल बन्धुरात्मा ॥३२॥

पदच्छेद— यत् पति अपत्य सुहृदाम् अनुवृत्तिः अङ्ग स्त्रीणाम् स्वधर्म इतिधर्मविदा त्वयाउक्तम् ।
अस्तु एवम् एतत् उपदेश पदे त्वयि ईशे प्रेष्ठः भवान् तनुभृताम् किल बन्धुः आत्मा ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| यत् पति अपत्य | ४. कि पति-पुत्र और | अस्तु एवम् | ९. आपने ठीक ही कहा है । |
| सुहृदाम् अनुवृत्तिः | ५. भाई-बन्धुओं की सेवा ही | एतत् उपदेश | १३. इस उपदेश के |
| अङ्ग | १. हे श्याम सुन्दर | पदे त्वयि ईशे | १४. विषय आप परमेश्वर ही हैं |
| स्त्रीणाम् | ६. स्त्रियों का | प्रेष्ठः भवान् | ११. आप प्रियतम |
| स्वधर्म | ७. स्वधर्म है | तनुभृताम् | १०. शरीरधारियों के लिये |
| इति धर्मविदा | २. धर्म के जानकार यह | किल | ८. निश्चय ही |
| त्वया उक्तम् । | ३. आपके द्वारा जो कहा गया है | बन्धुः आत्मा ॥ | १२. बन्धु और आत्मा होने से |

श्लोकार्थ—हे श्यामसुन्दर ! धर्म के जानकार यह आपके द्वारा जो कहा गया है कि पति-पुत्र और भाई-बन्धुओं की सेवा ही स्त्रियों का स्वधर्म है। निश्चय ही आपने ठीक ही कहा है। शरीर धारियों के लिये आप प्रियतम, बन्धु और आत्मा होने से इस उपदेश के विषय आप परमेश्वर ही हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कुर्वन्ति हि त्वयि रतिं कुशलाः स्व आत्मन्
नित्यप्रिये पतिसुतादिभिरार्तिदैः किम् ।
तन्नः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्या
आशां भृतां त्वयि चिरादरविन्दनेत्र ॥३३॥

पदच्छेद—कुर्वन्ति हि त्वयि रतिम् कुशलाः स्वआत्मन् नित्यप्रिये पति सुतआदिभिः आर्तिदैः किम् ।
तत् नः प्रसीद परमेश्वर मा स्म छिन्द्याः आशाम् भृताम् त्वयि चिरात् अरविन्दनेत्र ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| कुर्वन्ति | ४. करते हैं ! क्योंकि | किम् । | ८. क्या प्रयोजन है |
| हित्वयि रतिम् | ३. आप से ही प्रेम | तत् नः प्रसीद | १०. इसलिये आप हम पर प्रसन्न हों |
| कुशलाः | २. निपुण महापुरुष | परमेश्वर | ९. हे परमेश्वर ! |
| स्वआत्मन् | १. अपने आत्म ज्ञान में | मास्मछिन्द्याः | १४. छेदन मत करो |
| नित्य प्रिये | ५. आप नित्य प्रिय हैं | आशाम् भृताम् | १३. पाली-पोसी आशा का |
| पति सुतआदिभिः | ७. पति, पुत्रादि से उन्हें | त्वयिचिरात् | १२. तुम्हारे प्रति चिरकाल से |
| आर्तिदैः | ६. अनित्य दुःखद | अरविन्दनेत्र ॥ | ११. हे कमल नयन ! |

श्लोकार्थ—अपने आत्मज्ञान में निपुण महापुरुष आपसे ही प्रेम करते हैं । क्योंकि आप नित्य प्रिय हैं । अनित्य दुःखद पति, पुत्रादि से उन्हें क्या प्रयोजन है । हे परमेश्वर ! इसलिये आप हम पर प्रसन्न हों । हे कमल नयन ! तुम्हारे प्रति चिरकाल से पाली-पोसी आशा का छेदन मत करो ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

चित्तं सुखेन भवतापहृतं गृहेषु यन्निर्विशत्युत करावपि गृह्यकृत्ये ।
पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलाद् यामः कथं व्रजमथो करवाम किं वा ॥३४॥

पदच्छेद— चित्तम् सुखेन भवता अपहृतम् गृहेषु यत् निर्विशति उत करौ अपिगृह्यकृत्ये ।
पादौ पदम् न चलतः तव पाद मूलात् यामः कथम् व्रजम् अथो करवाम किम् वा ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| चित्तम् सुखेन | ५. हमारा चित्त सुख पूर्वक | पादौ पदम् | ९. हमारे पैर एक पग भी |
| भवता अपहृतम् | ७. आपने चुरा लिया है | न चलतः | १०. नहीं चलना चाहते हैं |
| गृहेषु | ६. घर में लगा रहता था उसे | तवपाद मूलात् | ८. आपके चरणों का आश्रय छोड़कर |
| यत् | १. हे श्याम सुन्दर ! जो | यामः कथम्व्रजम् | ११. हम व्रज में कैसे जायें |
| निर्विशति उत | ४. लगे रहते थे । और जो | अथो करवाम | १४. करें |
| करौ | २. हमारे हाथ | किम् | १३. क्या |
| अपिगृह्यकृत्ये । | ३. घर के कामों में | वा ॥ | १२. अथवा वहाँ जाकर |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! जो हमारे हाथ घर के कामों में लगे रहते थे और जो हमारा चित्त सुख-पूर्वक घर में लगा रहता था । उसे आपने चुरा लिया है । आपके चरणों का आश्रय छोड़कर हमारे पैर एक पग भी नहीं चलना चाहते हैं । हम व्रज में कैसे जायें । अथवा वहाँ जाकर क्या करें ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**सिञ्चाङ्ग नस्त्वदधरामृतपूरकेण हासावलोककलगीतजहृच्छयाग्निम् ।**
**नो चेद् वयं विरहजाग्न्युपयुक्तदेहा ध्यानेन याम पदयोः पदवीं सखे ते ॥३५॥**

पदच्छेद— सिञ्च अङ्ग नस्त्वद् अधरामृत पूरकेण हास अवलोक कलगीतज हृच्छय अग्निम् ।
नो चेत् वयम् विरहज अग्नि उपयुक्त देहाः ध्यानेन याम पदयोः पदवीम् सखे ते ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| सिञ्च | ८. बुझा दो ! | नोचेत् वयम् | १०. अन्यथा हम आपके |
| अङ्ग | १. हे श्याम सुन्दर ! हमारे | विरहज अग्नि | ११. वियोग की अग्नि में अपना |
| नस्त्वद् | ३. आप अपने | उपयुक्त देहाः | १२. शरीर जलाकर |
| अधरामृत | ४. अधरों की | ध्यानेन | १३. ध्यान के द्वारा |
| पूरकेण | ५. रसधारा | याम | १६. प्राप्त कर लेंगी |
| हास अवलोक | ६. हास चितवन और | पदयोः पदवीम् | १५. चरण कमलों में स्थान |
| कलगीतज | ७. सुन्दर गीतों से | सखे | ९. हे प्यारे सखा |
| हृच्छय अग्निम् । | २. हृदय की अग्नि को | ते ॥ | १४. आपके |

श्लोकार्थ—हे श्यामसुन्दर ! हमारे हृदय की अग्नि को आप अपने अधरों की रस-धारा, हास, मनोहर चितवन और सुन्दर गीतों से बुझा दो । हे प्यारे सखा ! अन्यथा हम आपके वियोग की अग्नि में अपना शरीर जलाकर ध्यान के द्वारा आपके चरण कमलों में स्थान प्राप्त कर लेंगी ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**यर्ह्यम्बुजाक्ष तव पादतलं रमाया दत्तक्षणं क्वचिदरण्यजनप्रियस्य ।**
**अस्प्राक्ष्म तत्प्रभृति नान्यसमक्षमङ्ग स्थातुं त्वयाभिरमिता बत पारयामः ॥३६॥**

पदच्छेद—यर्हि अम्बुजाक्ष तव पाद तलम् रमायाः दत्तक्षणम् स्थातुम् क्वचित् अरण्यजन प्रियस्य ।
अस्प्राक्ष्म तत् प्रभृति न अन्यसमक्षम् अङ्ग स्थातुम् त्वया अभिरमिताः बत पारयामः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| यर्हि | २. जब से | अस्प्राक्ष्म | ९. स्पर्श किया है |
| अम्बुजाक्ष तव | १. हे कमल नयन ! आपने | तत् प्रभृति | १३. तभी से लेकर आज तक |
| पाद तलम् | ४. जिन चरणों की सेवा का | न अन्यसमक्षम् | १४. अन्य किसी के सामने |
| रमायाः | ३. लक्ष्मी जी को भी | अङ्ग | १०. हे श्याम सुन्दर ! |
| दत्तक्षणम् | ६. अवसर दिया है | स्थातुम् | १५. खड़ी होने में भी हम |
| क्वचित् | ५. कभी-कभी | त्वया अभिरमिताः | १२. आपसे आनन्दित होकर |
| अरण्यजन | ७. हम वनवासियों ने | बत | ११. हर्ष का विषय है कि |
| प्रियस्य । | ८. प्रेम से जब से उनका | पारयामः ॥ | १६. समर्थ नहीं हैं |

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! आपने जब से लक्ष्मी जी को भी जिन चरणों की सेवा का कभी-कभी अवसर दिया है, हम वनवासियों ने प्रेम से जब से उनका स्पर्श किया है, हे श्याम सुन्दर ! हर्ष का विषय है कि आपसे आनन्दित होकर तभी से लेकर आज तक अन्य किसी के सामने खड़ी होने में भी हम समर्थ नहीं हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**श्रीर्यत्पदाम्बुजरजश्चकमे तुलस्या लब्ध्वापि वक्षसि पदं किल भृत्यजुष्टम् ।**
**यस्याः स्ववीक्षणकृतेऽन्यसुरप्रयासस्तद्वद् वयं च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥३७॥**

पदच्छेद— श्रीः यत् पदाम्बुज रजः चकमे तुलस्याः लब्ध्वा अपि वक्षसि पदम् किल भृत्य जुष्टम् ।
यस्याः स्ववीक्षणकृते अन्यसुर प्रयासः तत्वत् वयम् च तव पादरजः प्रपन्नाः ॥

| शब्दार्थ—श्रीः | ५. वही लक्ष्मी जी | यस्याः | १. जिन लक्ष्मी जी का |
|---|---|---|---|
| यत् पदाम्बुज | १०. आपके चरण कमलों का | स्ववीक्षणकृते | २. कृपा कटाक्ष पाने के लिये |
| रजः चकमे | ११. रज पाने की अभिलाषा करती हैं | अन्यसुर | ३. बड़े-बड़े देवता |
| तुलस्याः | ८. अपनी सौत तुलसी के साथ | प्रयासः | ४. तपस्या करते रहते हैं |
| लब्ध्वाअपि | ७. प्राप्त कर लेने पर भी | तत् वत् | १२. उन्हीं के समान |
| वक्षसि पदम् | ६. आपके वक्षः स्थल में स्थान | वयम् च तव | १३. हम भी आप की |
| किल भृत्य जुष्टम् । | ९. निश्चय ही भक्तों द्वारा सेवित | पादरजःप्रपन्नाः ॥ | १४. चरण रज की शरण में आई हैं |

श्लोकार्थ—जिन लक्ष्मी जी का कृपा कटाक्ष पाने के लिये बड़े-बड़े देवता तपस्या करते रहते हैं। वही लक्ष्मी जी आप के वक्षः स्थल में स्थान प्राप्त कर लेने पर भी अपनी सौत तुलसी के साथ निश्चय ही भक्तों द्वारा सेवित आपके चरण कमलों की रज पाने की अभिलाषा करती हैं। उन्हीं के समान हम भी आपकी चरण रज की शरण में आई हैं ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**तन्नः प्रसीद वृजिनार्दन तेऽङ्घ्रिमूलं प्राप्ता विसृज्य वसतीस्त्वदुपासनाशाः ।**
**त्वत्सुन्दरस्मितनिरीक्षणतीव्रकामतप्तात्मनां पुरुषभूषण देहि दास्यम् ॥३८॥**

पदच्छेद— तत् नः प्रसीद वृजिन अर्दन ते अङ्घ्रिमूलम् प्राप्ता विसृज्य वसतीः त्वद् उपासनाशाः ।
त्वत् सुन्दर स्मित निरीक्षण तीव्रकामतप्त आत्मानम् पुरुष भूषण देहि दास्यम् ॥

| शब्दार्थ—तत् | १. इसलिये | त्वत् सुन्दर | ९. आप अपने सुन्दर |
|---|---|---|---|
| नः प्रसीद | ३. आप हम पर प्रसन्न हों | स्मित | १०. मुसकान का |
| वृजिन अर्दन | २. हे दुःख-नाशक | निरीक्षण | ११. दर्शन करने की |
| ते अङ्घ्रिमूलम् | ६. आपके चरणों में | तीव्रकामतप्त | १२. बलवती आकांक्षावाली तप्त |
| प्राप्ता | ७. आयी हैं | आत्मानम् | १३. हृदय हम गोपियों को |
| विसृज्य वसतीः | ४. सब कुछ छोड़कर | पुरुष भूषण | ८. हे पुरुषश्रेष्ठ ! |
| त्वद् उपासनाशाः । | ५. अपकी सेवा की आशा से | देहि दास्यम् ॥ | १४. अपनी दासी बनाइये |

श्लोकार्थ—इसलिये हे दुःख-नाशक प्रभो ! आप हम पर प्रसन्न होइये। हम सब कुछ छोड़कर कमलों आपकी सेवा की आशा से आपके चरणों में आयी हैं। हे पुरुषश्रेष्ठ ! आप अपने सुन्दर मुसकान का दर्शन करने की बलवती आकांक्षावाली, तप्त हृदय, हम गोपियों को अपनी दासी बनाइये ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**वीक्ष्यालकावृतमुखं तव कुण्डलश्रीगण्डस्थलाधरसुधं हसितावलोकम् ।**
**दत्ताभयं च भुजदण्डयुगं विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणं च भवाम दास्यः ॥३९॥**

पदच्छेद—वीक्ष्य अलक आवृत मुखम् तव कुण्डल श्रीगण्डस्थल अधर सुधम् हसित अवलोकम् ।
दत्त अभयम् च भुज दण्ड युगम् विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणम् च भवाम दास्यः ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वीक्ष्य | ८. | देखकर | दत्तअभयम् च | ९. | और भक्तों को अभय देने वाले |
| अलक आवृत | १. | घुंघराले केशों से घिरा | भुजदण्ड | ११. | भुजदण्डों को |
| मुखम् तव | २. | आपका मुख | युगम् | १०. | दोनों |
| कुण्डल श्री | ४. | कुण्डलों की शोभा | विलोक्य | १२. | देखकर |
| गण्डस्थल | ३. | गण्ड-स्थल पर | वक्षः | १४. | वक्षः स्थल देखकर |
| अधरसुधाम् | ५. | अधरों में अमृत और | श्रियैकरमणम्च | १३. | और एकमात्र लक्ष्मी जी का विहार |
| हसित | ६. | मधुर हास्य तथा | भवाम | १६. | हो गई हैं |
| अवलोकम् । | ७. | तिरछो चितवन | दास्यः ॥ | १५. | हम आपकी दासी |

श्लोकार्थ—घुंघराले केशों से घिरा आपका मुख गण्डस्थल पर कुण्डलों की शोभा अधरों में अमृत और मधुर हास्य तथा तिरछी चितवन देखकर और भक्तों को अभय देने वाले भुजदण्डों को देखकर और एकमात्र लक्ष्मी जी का विहार वक्षः स्थल देखकर हम आपकी दासी हो गयी हैं ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**का स्त्र्यङ्ग ते कलपदायतमूर्च्छितेन सम्मोहितार्यचरितान्न चलेत्त्रिलोक्याम् ।**
**त्रैलोक्यसौभगमिदं च निरीक्ष्य रूपं यद् गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन् ।४०**

पदच्छेद—का स्त्री अङ्ग ते कल पद आयत मूर्च्छितेन सम्मोहित आर्यचरितात् न चलेत् त्रिलोक्याम् ।
त्रैलोक्य सौभगम् इदम् च निरीक्ष्य रूपम् यत् गोद्विज द्रुममृगाः पुलकानि अबिभ्रन् ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| का स्त्री | ३. | ऐसी कौन स्त्री है | त्रैलोक्य | १४. | तीनों लोकों में |
| अङ्ग | १. | हे श्याम सुन्दर | सौभगम् इदम् | १५. | सुन्दर इस |
| ते | ४. | जो आपकी वंशी की | च | ९. | और |
| कलपद आयत | ५. | मधुर पदों विविध | निरीक्ष्यरूपम् | १६. | रूपकोदेखकर आसक्त नहोजाय |
| मूर्च्छितेन | ६. | मूर्च्छनाओं से | यत् गोद्विज | १०. | जो गाय ब्राह्मण |
| सम्मोहिता | ७. | मोहित होकर | द्रुम मृगाः | ११. | वृक्ष पशु-पक्षियों तक को |
| आर्यचरितात्नचलेत् | ८. | आर्य मर्यादा से विचलित न होगी | पुलकानि | १२. | आनन्द |
| त्रिलोक्याम् । | २. | त्रिलोकी में | अबिभ्रन् ॥ | १३. | प्रदान करने वाले |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! त्रिलोकी में ऐसी कौन स्त्री है । जो आपकी वंशी के मधुर पदों की त्रिविध मूर्च्छनाओं से मोहित होकर आर्य, मर्यादा से विचलित न होगी । और जो गाय ब्राह्मण वृक्ष पशु, पक्षियों तक को आनन्द प्रदान करने वाले तीनों लोकों में सुन्दर इस रूप को देखकर आसक्त न हो जाय ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**व्यक्तं भवान् व्रजभयार्तिहरोऽभिजातो देवो यथाऽऽदिपुरुषः सुरलोकगोप्ता ।**
**तन्नो निधेहि करपङ्कजमार्तबन्धो तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ॥४१॥**

पदच्छेद—व्यक्तम् भवान् व्रजभय आर्तिहरः अभिजातः देवः यथा आदि पुरुषः सुरलोक गोप्ता ।
तत् नः निधेहि कर पङ्कजम् आर्तबन्धो तप्तस्तनेषु च शिरस्सु च किङ्करीणाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्यक्तम् | १. | यह स्पष्ट ही है कि | तत् | १०. | इसलिये |
| भवान् | ५. | आप भी | नः | ११. | हम |
| व्रजभय | ६. | व्रज वासियों का भय और | निधेहि | १६. | स्थापित करिये |
| आर्तिहरः | ७. | दुःखहरण करने के लिये हीं | करपङ्कजम् | १५. | कर कमल |
| अभिजातः | ८. | उत्पन्न हुये हैं | आर्तबन्धो | ९. | हे दीनबन्धु |
| देवः | ३. | नारायण | तप्तस्तनेषु च | १३. | सन्तप्त वक्ष स्थल |
| यथा आदिपुरुषः | २. | जैसे आदि पुरुष | शिरस्सु च | १४. | और शिरों पर |
| सुरलोक गोप्ता । | ४. | देवलोक के रक्षक हैं वैसे ही | किङ्करीणाम् ॥ | १२. | सेविकाओं के |

श्लोकार्थ—यह स्पष्ट ही है कि जैसे आदि पुरुष नारायण देवलोक के रक्षक हैं, वैसे ही आप भी व्रजवासियों का भय और दुःखहरण करने के लिये ही उत्पन्न हुये हैं। हे दीनबन्धु ! इसलिये हम सेविकाओं के सन्तप्त वक्षःस्थल और सिरों पर आप अपना कर कमल स्थापित करिये ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— इति विक्लवितं तासां श्रुत्वा योगेश्वरेश्वरः ।**
**प्रहस्य सदयं गोपीरात्मारामोऽप्यरीरमत् ॥४२॥**

पदच्छेद— इति विक्लवितम् तासाम् श्रुत्वा योगेश्वर ईश्वरः ।
प्रहस्य सदयम् गोपीः आत्मा रामः अपि अरीरमत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ६. | इस प्रकार | प्रहस्य | ९. | हँस कर |
| विक्लवितम् | ७. | व्याकुलता भरी वाणी | सदयम् | १०. | दयापूर्वक |
| तासाम् | ५. | गोपियों की | गोपीः | ११. | गोपियों के साथ |
| श्रुत्वा | ८. | सुनकर (और) | आत्मारामः | ३. | अपने आपमें ही रमण करने वाले |
| योगेश्वर | १. | योगेश्वरों के भी | अपि | ४. | होने पर भी |
| ईश्वरः । | २. | ईश्वर श्री कृष्ण ने | अरीरमत् ॥ | १२. | क्रीडा आरम्भ की |

श्लोकार्थ—योगेश्वरों के भी ईश्वर श्री कृष्ण ने अपने आप में ही रमण करने वाले होने पर भी गोपियों की इस प्रकार व्याकुलता भरी वाणी सुनकर और हँसकर दयापूर्वक गोपियों के साथ क्रीडा आरम्भ की ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**ताभिः समेताभिरुदारचेष्टितः प्रियेक्षणोत्फुल्लमुखीभिरच्युतः ।**
**उदारहासद्विजकुन्ददीधितिर्व्यरोचतैणाङ्क इवोडुभिर्वृतः ॥४३॥**

पदच्छेद— ताभिः समेताभिः उदार चेष्टितः प्रियईक्षण उत्फुल्ल मुखीभिः अच्युतः ।
उदारहास द्विज कुन्द दीधितिः व्यरोचत एणाङ्क इव उडुभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताभिः | ७. | उन गोपियों के | उदारहास | ९. | मधुर हंसी के कारण |
| समेताभिः | ८. | साथ लीला की । तब | द्विज | १०. | दाँतों के |
| उदार | १. | उदार | कुन्द | ११. | कुन्द पुष्प के समान |
| चेष्टितः | २. | लीला तथा | दीधितिः | १२. | चमक से वे |
| प्रियईक्षण | ३. | प्रेम पूर्ण चितवन वाले | व्यरोचत | १६. | सुशोभित हुये |
| उत्फुल्ल | ५. | प्रसन्न | एणाङ्क इव | १५. | चन्द्रमा के समान |
| मुखीभिः | ६. | मुख वाली | उडुभिः | १३. | तारिकाओं से |
| अच्युतः । | ४. | श्रीकृष्ण ने | वृतः ॥ | १४. | घिरे |

श्लोकार्थ—उदार लीला तथा प्रेम पूर्ण चितवन वाले श्रीकृष्ण ने प्रसन्न मुख वाली उन गोपियों के साथ लीला की । तब मधुर हँसी के कारण दाँतों के कुन्दपुष्प के समान चमक से वे तारिकाओं से घिरे चन्द्रमा के समान सुशोभित हुये ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**उपगीयमान उद्गायन् वनिताशतयूथपः ।**
**मालां बिभ्रद् वैजयन्तीं व्यचरन्मण्डयन् वनम् ॥४४॥**

पदच्छेद— उपगीयमानः उद्गायन् वनिता शत यूथपः ।
मालाम् बिभ्रद् वैजयन्तीम् व्यचरत् मण्डयन् वनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उपगीयमानः | १०. | कभी गोपियां कृष्ण के गीत गाती और | मालाम् | ५. | माला |
| उद्गायन् | ११. | कभी श्रीकृष्ण गोपियों के गीत गाते | बिभ्रद् | ६. | पहने |
| वनिता | १. | गोपियों के | वैजयन्तीम् | ४. | वैजयन्ती |
| शत | २. | शत-शत | व्यचरत् | ९. | विचरण करने लगे |
| यूथपः । | ३. | यूथों के स्वामी श्रीकृष्ण | मण्डयन् | ८. | शोभायमान करते हुये |
| | | | वनम् ॥ | ७. | वृन्दावन को |

श्लोकार्थ—गोपियों के शत-शत यूथों के स्वामी श्रीकृष्ण वैजयन्ती माला पहने वृन्दावन को शोभायमान करते हुये विचरण करने लगे । कभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के गीत गातीं और कभी श्रीकृष्ण गोपियों के गीत गाते थे ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**नद्याः पुलिनमाविश्य गोपीभिर्हिमवालुकम् ।**
**रेमे तत्तरलानन्दकुमुदामोदवायुना ॥४५॥**

पदच्छेद— नद्याः पुलिनम् आविश्य गोपीभिः हिम वालुकम् ।
रेमे तत् तरल आनन्द कुमुद आमोद वायुना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नद्याः | २. | यमुना जी के | रेमे | १२. | गोपियों के साथ क्रीड़ा की |
| पुलिनम् | ३. | किनारे | तत् | ७. | यमुना जी |
| आविश्य | ६. | जाकर | तरल आनन्द | ८. | शीतल आनन्द दायक |
| गोपीभिः | १. | गोपियों के साथ | कुमुद | ९. | कुमुदिनी की |
| हिम | ४. | चमकीली | आमोद | १०. | सुगन्ध से सुवासित |
| वालुकम् । | ५. | बालू में | वायुना ॥ | ११. | वायु में |

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण ने तब गोपियों के साथ यमुना जी के किनारे चमकीली बालू में जाकर यमुना जी की शीतल आनन्द दायक कुमुदिनी की सुगन्ध से सुवासित वायु में गोपियों के साथ क्रीड़ा की ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**बाहुप्रसारपरिरम्भकरालकोरुनीवीस्तनालभननर्मनखाग्रपातैः ।**
**क्ष्वेल्यावलोकहसितैर्व्रजसुन्दरीणामुत्तम्भयन् रतिपतिं रमयाञ्चकार ॥४६॥**

पदच्छेद— बाहुप्रसार परिरम्भ कर अलक ऊरु नीवी स्तन आलभन नर्म नखाग्रपातैः ।
क्ष्वेल्या अवलोक हसितैः व्रज सुन्दरीणाम् उत्तम्भयन् रति पतिम् रमयाम् चकार ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बहुप्रसार | १. | हाथ फैलाना | क्ष्वेल्या | ९. | विनोद पूर्ण |
| परिरम्भ | २. | आलिङ्गन करना | अवलोक | १०. | चितवन से देखना और |
| कर | ३. | हाथ दबाना | हसितैः | ११. | मुसकान आदि के द्वारा |
| अलक ऊरु | ४. | चोटी जाँघ | व्रज सुन्दरीणाम् | १२. | व्रज की सुन्दरियों को |
| नीवी स्तन | ५. | नीवी और स्तन का | उत्तम्भयन् | १३. | उत्तेजित करके |
| आलभन | ६. | स्पर्श करना | रतिपतिम् | १४. | श्रीकृष्ण ने उनके साथ |
| नर्म | ७. | विनोद करना | रमयाम् | १५. | रमण |
| नखाग्रपातैः । | ८. | नखक्षत करना | चकार ॥ | १६ | किया ॥ |

श्लोकार्थ—हाथ फैलाना, आलिङ्गन करना, हाथ दबाना, चोटी, जाँघ, नीवी और स्तन का स्पर्श करना, विनोद करना, नख क्षत करना, विनोद पूर्ण चितवन से देखना और मुसकान आदि के द्वारा व्रज की सुन्दरियों को उत्तेजित करके श्रीकृष्ण ने उनके साथ रमण किया ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**एवं भगवतः कृष्णाल्लब्धमाना महात्मनः ।**
**आत्मानं मेनिरे स्त्रीणां मानिन्योऽभ्यधिकं भुवि ॥४७॥**

पदच्छेद— एवम् भगवतः कृष्णात् लब्धमानाः महात्मनः ।
आत्मानम् मेनिरे स्त्रीणाम् मानिन्यः अभ्यधिकम् भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ४. | इस प्रकार | आत्मानम् | ६. | उन्होंने अपने को |
| भगवतः | २. | भगवान् | मेनिरे | १०. | माना और वे |
| कृष्णात् | ३. | श्रीकृष्ण के द्वारा | स्त्रीणाम् | ८. | स्त्रियों में |
| लब्धमानाः | ५. | सम्मान पाकर | मानिन्यः | ११. | मानवती हो गई |
| महात्मनः । | १. | उदार शिरोमणि | अभ्यधिकम् | ९. | सबसे श्रेष्ठ |
| | | | भुवि ॥ | ७. | पृथ्वी की |

श्लोकार्थ—उदारशिरोमणि भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा इस प्रकार सम्मान पाकर उन्होंने अपने को पृथ्वी की स्त्रियों में सबसे श्रेष्ठ माना और वे मानवती हो गई ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।**
**प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥४८॥**

पदच्छेद— तासाम् तत् सौभगमदम् वीक्ष्य मानम् च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्र एव अन्तर् अधीयत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तासाम् | १. | उनके | प्रशमाय | ७. | उनका गर्व शान्त करने के लिये |
| तत् | २. | उस | प्रसादाय | ८. | और प्रसन्नकरने के लिये |
| सौभगमदम् | ३. | सुहाग के गर्व को | तत्र | ९. | वहाँ पर |
| वीक्ष्य | ५. | देखकर | एव | १०. | ही |
| मानम् च | ४. | और मान को | अन्तर् | ११. | अन्तर्ध्यान |
| केशवः । | ६. | श्रीकृष्ण ने | अधीयत ॥ | १२. | हो गये |

श्लोकार्थ—उनके उस सुहाग के गर्व को और मान को देखकर श्रीकृष्ण ने उनका गर्व शान्त करने के लिये और (मानमर्दन करके) प्रसन्न करने के लिये वहीं पर अन्तर्धान हो गये ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमे स्कन्धे पूर्वार्धे भगवतो रास-क्रीडावर्णनं नाम एकोनत्रिंशः अध्यायः ॥२९॥**

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
## दशमः स्कन्धः
## त्रिंशः अध्यायः
### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अन्तर्हिते भगवति सहसैव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यंस्तमचक्षाणाः करिण्य इव यूथपम् ॥१॥

पदच्छेद— अन्तर्हिते भगवति सहसा एव व्रजाङ्गनाः ।
अतप्यन् तम् अचक्षाणाः करिण्यः इव यूथपम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्तर्हिते | ४. | अन्तर्धान हो जाने पर | अतप्यन् | ७. | विरह ज्वालामें वैसे ही जलने लगीं |
| भगवति | १. | भगवान् के | तम् अचक्षाणाः | ६. | उन्हें न देखकर |
| सहसा | २. | अकस्मात् | करिण्यः | ९. | हथिनियाँ |
| एव | ३. | ही | इव | ८. | जैसे |
| व्रजाङ्गनाः । | ५. | व्रज युवतियाँ | यूथपम् ॥ | १०. | हाथी के बिना जलती हैं |

श्लोकार्थ—भगवान् के अकस्मात् ही अन्तर्धान हो जाने पर व्रज युवतियाँ उन्हें न देखकर विरह ज्वाला में वैसे ही जलने लगीं जैसे हथिनियाँ हाथी के बिना जलती हैं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

गत्यानुरागस्मितविभ्रमेक्षितैर्मनोरमालापविहारविभ्रमैः ।
आक्षिप्तचित्ताः प्रमदा रमापतेस्तास्ता विचेष्टा जगृहुस्तदात्मिकाः ॥२॥

पदच्छेद— गत्या अनुराग स्मित विभ्रम ईक्षितैः मनोरमआलाप विहार विभ्रमैः ।
आक्षिप्त चित्ताः प्रमदाः रमापतेः ताःताः विचेष्टाः जगृहुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गत्या अनुराग | २. | चाल, प्रेम भरी | आक्षिप्तचित्ताः | १०. | चित्त चुरा लिया था |
| स्मितविभ्रम | ३. | मुसकान, विलास भरी | प्रमदाः | ९. | उन युवतियों का |
| ईक्षितैः | ४. | चितवन | रमापतेः | १. | भगवान् श्रीकृष्ण की |
| मनोरम | ५. | मनोरम | ताः ताः | ११. | श्रीकृष्ण की उन-उन |
| आलाप | ६. | प्रेमालाप और | विचेष्टाः | १२. | चेष्टाओं को |
| विहार | ८. | लीलाओं ने | जगृहुः | १४. | करने लगीं । |
| विभ्रमैः । | ७. | भिन्न-भिन प्रकार की | तत् आत्मिकाः ॥ | १३. | वे कृष्ण स्वरूप होकर |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की चाल, प्रेम भरी मुसकान, विलास भरी चितवन, मनोरम प्रेमलाप और भिन्न-भिन्न प्रकार की लीलाओं ने उन युवतियों का चित चुरा लिया था । श्रीकृष्ण की उन-उन चेष्टाओं को वे कृष्ण स्वरूप होकर करने लगीं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**गतिस्मितप्रेक्षणभाषणादिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढमूर्तयः ।**
**असावहं त्वित्यबलास्तदात्मिका न्यवेदिषुः कृष्णविहारविभ्रमाः ॥३॥**

पदच्छेद— गति स्मित प्रेक्षण भाषण आदिषु प्रियाः प्रियस्य प्रतिरूढ मूर्तयः ।
असौ अहम् तु इति अबलाः तत् आत्मिकाः न्यवेदिषुः कृष्ण विहार विभ्रमः ॥

| शब्दार्थ— | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गति | २. चाल-ढाल | असौ अहम् तु | १२. | मैं श्रीकृष्ण ही हूँ |
| स्मित | ३. हास-विलास | इति | १३. | इस प्रकार |
| प्रेक्षण | ४. चितवन | अबलाः | ११. | गोपियाँ |
| भाषण आदिषु | ५. बोलने आदि में | तत् | १५. | कृष्ण |
| प्रियाः | ६. प्यारी गोपियाँ | आत्मिकाः | १६. | स्वरूप ही हो गईं |
| प्रियस्य | १. प्रियतम श्रीकृष्ण को | न्यवेदिषुः | १४. | कहती हुईं |
| प्रतिरूढ | ८. बन गयीं | कृष्ण विहार | ६. | श्रीकृष्ण की लीलाओं का |
| मूर्तयः । | ७. उन्हीं की मूर्ति | विभ्रमः ॥ | १०. | अनुकरण करने लगीं |

श्लोकार्थ—प्रियतम श्रीकृष्ण की चाल-ढाल-हास-विलास-बोलने आदि में प्यारी गोपियाँ उन्हीं की मूर्ति बन गईं। श्रीकृष्ण की लीलाओं का अनुकरण करने लगीं। गोपियाँ मैं श्रीकृष्ण हूँ इस प्रकार कहती हुई कृष्ण स्वरूप हो हो गईं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**गायन्त्य उच्चैरमुमेव संहता विचिक्युरुन्मत्तकवद् वनाद् वनम् ।**
**पप्रच्छुराकाशवदन्तरं बहिर्भूतेषु सन्तं पुरुषं वनस्पतीन् ॥४॥**

पदच्छेद— गायन्त्यः उच्चैः अमुम् एव संहताः विचिक्युः उन्मत्तकवद् वनात् वनम् ।
पप्रच्छुः आकाशवत् अन्तरम् बहिः भूतेषु सन्तम् पुरुषम् वनस्पतीन् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| गायन्त्यः | ३. गान करने लगीं | पप्रच्छुः | १४. पूछने लगीं |
| उच्चैः अमुम् | १. वे ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण के गुणों का | आकाशवत् | ८. आकाश के समान |
| एव संहताः | २. ही मिलकर | अन्तरम् बहिः | १०. भीतर-बाहर |
| विचिक्युः | ७. ढूंढने लगीं | भूतेषु | ९. समस्त प्राणियों के |
| उन्मत्तकवद् | ४. मतवाली जैसी होकर | सन्तम् | ११. रहने पर भी वे |
| वनात् | ५. एक वन से | पुरुषम् | १२. परम पुरुष श्रीकृष्ण के बारे में |
| वनम् । | ६. दूसरे वन में उन्हें | वनस्पतीन् ॥ | १३. पेड़ पौधों से |

श्लोकार्थ—वे गोपी ऊँचे स्वर से श्रीकृष्ण के गुणों का ही मिलकर गान करने लगीं। तथा मतवाली जैसी होकर एक वन से दूसरे वन में उन्हें ढूंढने लगीं। आकाश के समान समस्त प्राणियों के भीतर-बाहर रहने पर भी वे परम पुरुष श्रीकृष्ण के बारे में पेड़ पौधों से पूछने लगीं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**दृष्टो वः कच्चिदश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नः मनः ।**
**नन्दसूनुर्गतः हृत्वा प्रेमहासावलोकनैः ॥५॥**

पदच्छेद— दृष्टः वः कच्चित् अश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नः मनः ।
नन्द सूनुः गतः हृत्वा प्रेम हास अवलोकनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दृष्टः | १४. देखा है | | नन्द | ४. नन्द |
| वः | १२. आपने | | सूनुः | ५. नन्दन श्याम सुन्दर |
| कच्चित् | १३. उन्हें कहीं | | गतः | ११. ले गये हैं |
| अश्वत्थ | १. हे पीपल ! | | हृत्वा | १०. चुराकर |
| प्लक्ष | २. पाकर और | | प्रेम | ६. अपनी प्रेम भरी |
| न्यग्रोध | ३. बरगद | | हास | ७. मुसकान और |
| नः मनः । | ९. हमारा मन | | अवलोकनैः ॥ | ८. चितवन से |

श्लोकार्थ—हे पीपल, पाकर, और बरगद ! नन्दनन्दन श्यामसुन्दर अपनी प्रेम भरी मुसकान और मनोहर चितवन से हमारा मन चुराकर ले गये हैं । उन्हें कहीं आपने देखा है ॥

## षष्ठः श्लोकः

**कच्चित् कुरबकाशोकनागपुन्नागचम्पकाः ।**
**रामानुजो मानिनीनामितो दर्पहरस्मितः ॥६॥**

पदच्छेद— कच्चित् कुरबक अशोक नाग पुन्नाग चम्पकाः ।
राम अनुजः मानिनीनाम् इतः दर्पहर स्मितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कच्चित् | ११. क्या | राम | ६. बलराम जी के |
| कुरबक | १. कुरबक | अनुजः | ७. छोटे भाई |
| अशोक | २. अशोक | मानिनीनाम् | ९. मानिनियों का |
| नाग | ३. नागकेसर | इतः | १२. इधर आये थे |
| पुन्नाग | ४. पुन्नाग और | दर्पहर | १०. मानमर्दन होता है |
| चम्पकाः । | ५. चम्पा ! | स्मितः ॥ | ८. जिनकी मुसकान मात्र से |

श्लोकार्थ—हे कुरबक ! अशोक, नागकेसर, पुन्नाग और चम्पा ! बलराम जी के छोटे भाई, जिनकी मुसकान मात्र से मानिनियों का मानमर्दन होता है, क्या इधर आये थे ॥

## सप्तमः श्लोकः

**कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्दचरणप्रिये ।**
**सह त्वालिकुलैर्बिभ्रद् दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥७॥**

पदच्छेद— कच्चित् तुलसि कल्याणि गोविन्द चरण प्रिये ।
सह त्वाअलिकुलैः बिभ्रद् दृष्टः ते अतिप्रियः अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कच्चित् | ९. | क्या | सहत्वा | ७. | साथ तुझे |
| तुलसि | २. | तुलसी | अलिकुलैः | ६. | वे भौंरों के समूह के |
| कल्याणि | १. | हे कल्याणि ! | बिभ्रद् | ८. | धारण करते हैं |
| गोविन्द | ३. | तुम्हारा तो भगवान् के | दृष्टः | १२. | दिखाई पड़े हैं |
| चरण | ४. | चरणों में | ते अतिप्रियः | १०. | तुम्हें अत्यन्त प्रिय |
| प्रिये । | ५. | बड़ा प्रेम है | अच्युतः ॥ | ११. | श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे कल्याणि तुलसी ! तुम्हारा तो भगवान् के चरणों में बड़ा प्रेम है । वे भौंरों के समूह के साथ तुझे धारण करते हैं । क्या तुम्हें अत्यन्त प्रिय श्रीकृष्ण दिखाई पड़े है ॥

## अष्टमः श्लोकः

**मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके ।**
**प्रीतिं वो जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥८॥**

पदच्छेद— मालति अदर्शि वः कच्चित् मल्लिके जाति यूथके ।
प्रीतिम् वः जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मालति | १. | प्यारी मालती ! | प्रीतिम् | १०. | आनन्द |
| अदर्शि | ७. | देखा होगा | वः | ९. | आपको |
| वः | ४. | तुम लोगों ने | जनयन् | ११. | प्रदान करते हुये वे |
| कच्चित् | ५. | कदाचित् | यातः | १२. | यहाँ से निकले हैं |
| मल्लिके | २. | मल्लिके | करस्पर्शेन | ८. | क्या अपने करों के स्पर्श से |
| जातियूथके । | ३. | जाती और जूही | माधवः ॥ | ६. | प्यारे माधव को |

श्लोकार्थ—प्यारी मालती ! मल्लिके, जाती और जूही ! तुम लोगों ने कदाचित् प्यारे माधव को देखा होगा । आपको आनन्द प्रदान करते हुये वे यहाँ से निकले हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलाम्रकदम्बनीपाः ।**
**येऽन्ये परार्थभवका यमुनोपकूलाः शंसन्तु कृष्णपदवीं रहितात्मनां नः ॥९॥**

पदच्छेद— चूत प्रियाल पनस असन कोविदार जम्बु अर्क बिल्व कुल आम्र कदम्ब नीपाः ।
ये अन्ये परार्थ भवका यमुना उपकूलाः शंसन्तु कृष्ण पदवीम् रहित आत्मनाम् नः ॥

| शब्दार्थ | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चूतप्रियाल | १. हे रसाल ! प्रियाल | ये अन्येपरार्थं | ८. | अन्यान्य परोपकार के लिये ही |
| पनस असन | २. कटहल पीतशाल | भवकाः | १०. | उत्पन्न हुये तरुवरों |
| कोविदारजम्बु | ३. कचनार जामुन | यमुनाउपकूलाः | ९. | यमुना के तट पर |
| अर्क बिल्व | ४. आक बेल | शंसन्तु | १४. | हमारा मार्गदर्शन करो |
| बकुलआम्र | ५. मौलसिरी-आम | कृष्णपदवीम् | १२. | श्रीकृष्ण की प्राप्ति के |
| कदम्ब | ६. कदम्ब और | रहित | १३. | बिना सूना हो रहा है |
| नीपाः । | ७. नीम तथा | आत्मानम्नः ॥ | ११. | हमारा जीवन |

श्लोकार्थ—हे रसाल, प्रियाल, कटहल, पीतशाल, कचनार, जामुन, आक, बेल, मौलसिरी, आम कदम्ब और नीम तथा अन्यान्य परोपकार के लिये यमुना के तट पर उत्पन्न हुये तरुवरों ! हमारा जीवन श्रीकृष्ण की प्राप्ति के बिना सूना हो रहा है। हमारा मार्गदर्शन करो ॥

## दशमः श्लोकः

**किं ते कृतं क्षिति तपो बत केशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ।**
**अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुक्रमविक्रमाद् वा आहो वराहवपुषः परिरम्भणेन ॥१०॥**

पदच्छेद—किम् ते कृतम् क्षितितपः बत केशव अङ्घ्रि स्पर्शः उत्सवः उत पुलकित अङ्ग रुहैः विभासि ।
अपि अङ्घ्रि सम्भव उरु क्रम विक्रमात् वा आहो वराह वपुषः परिरम्भणेन ॥

| शब्दार्थ | | | | |
|---|---|---|---|---|
| किम्ते | ३. तुमने कौन सी | पुलकित | १०. | रोमाञ्चित होकर |
| कृतम् | ५. की है जो तुम | अङ्गरुहैः | ९. | तृण-लतारूप से |
| क्षिति | २. हे पृथ्वी देवी ! | विभासि । | ११. | सुशोभित हो रही हो |
| तपः | ४. तपस्या | अपिअङ्घ्रि | १४. | चरण से स्पर्श किया था |
| बत | १. अहो | सम्भव | १३. | धारण करके जो आपका |
| केशव अङ्घ्रि | ६. श्रीकृष्ण के चरण कमलों के | उरुक्रमविक्रमात्वा | १२. | अथवा वामनावतार में विश्वरूप |
| स्पर्शाः | ७. स्पर्श से | आहो वाराह वपुषः | १५. | या वाराहरूप धारण करके जो |
| उत्सव उत | ८. प्रसन्न होकर और | परिरम्भणेन ॥ | १६. | सङ्गप्राप्ताकिया था उससे यह दशा है अथवा |

श्लोकार्थ—अहो हे पृथ्वी देवी ! तुमने कौन सी तपस्या की है। जो तुम श्रीकृष्ण के चरण कमलों के स्पर्श से प्रसन्न हो कर तृण-लतारूप से रोमञ्चित होकर सुशोभित हो रही हो। वामनावतार में विश्वरूप धारण करके जो आपका चरण से स्पर्श किया था। या वाराह रूप धारण करके जो अङ्ग सङ्ग प्राप्त किया था। उससे यह दशा है ॥

## एकादशः श्लोकः

**अप्येणपत्न्युपगतः प्रिययेह गात्रैस्तन्वन् दृशां सखि सुनिर्वृतिमच्युतो वः ।**
**कान्ताङ्गसङ्गकुचकुङ्कुमरञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेरिह वाति गन्धः ॥११॥**

पदच्छेद— अप्येणपत्न्यु उपगतः प्रियया इह गात्रैः तन्वन् दृशाम् सखि सुनिवृतिम् अच्युताः वः ।
कान्ता अङ्ग-सङ्ग कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः कुन्दस्रजः कुलपतेः इह वाति गन्धः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अप्येणपत्नि | २. अरीहरिण पत्नियों ! | वः । | ६. तुम्हारे |
| उपगतः प्रियया | ५. अपनी प्राण प्रिया के साथ | कान्ता | १३. जो उनकी प्रेयसी के |
| इह गात्रैः | ३. यहाँ शरीर को सुख देने वाले | अङ्ग-सङ्ग | १४. अङ्ग-सङ्ग से लगे हुये |
| तन्वन् | ९. दान करने तो नहीं आये | कुचकुङ्कुम | १५. कुचकुङ्कुम से |
| दृशाम् | ७. नयनों को | रञ्जितायाः | १६. अनुरञ्जित रहता है |
| सखि | १. हे सखो ! | कुन्दस्रजः | ११. कुन्दकली की माला की |
| सुनिर्वृतिम् | ८. परम आनन्द का | कुलपतेः | १०. कुलपति श्रीकृष्ण की |
| अच्युतः | ४. श्याम सुन्दर | इह वाति गन्धः ॥ | १२. मनोहर गन्ध यहाँ आ रही है |

श्लोकार्थ— हे सखी ! अरी हरिण पत्नियों ! यहाँ शरीर को सुख देने वाले श्याम सुन्दर अपनी प्राण प्रिया के साथ तुम्हारे नयनों को परम आनन्द का दान करने तो नहीं आये । कुलपति श्रीकृष्ण की कुन्द कली की माला की मनोहर गन्ध यहाँ आ रही है । जो उनकी प्रेयसी के अङ्ग सङ्ग से लगे हुये कुचकुङ्कुम से अनुरञ्जित रहती है ॥

## द्वादशः श्लोकः

**बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मो रामानुजस्तुलसिकालिकुलैर्मदान्धैः ।**
**अन्वीयमान इह वस्तरवः प्रणामं किं वाभिनन्दति चरन् प्रणयावलोकैः ॥१२॥**

पदच्छेद— बाहुम् प्रय अंसे उपधाय गृहीत पद्मः राम अनुजः तुलसिका अलिकुलैः मदान्धैः ।
अन्वीयमानः इह वः तरवः प्रणामम् किम् वा अभिनन्दति चरन् प्रणय अवलोकैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बाहुम् प्रिय | ६. एक हाथ अपनी प्रेयसी के | अन्वीयमानः | १०. विचरण करते हुये |
| अंसे उपधाय | ७. कन्धे पर रखे और दूसरे में | इह वः | ११. यहाँ उन्होंने आपके |
| गृहीत पदमः | ८. लीला कमल लिये होंगे | तरवः | १. हे तरुवरो ! |
| राम अजः | ५. बलराम जी के छोटे भाईश्रीकृष्ण | प्रणामम् | १२. प्रणाम का |
| तुलसिका | २. उनकी माला की तुलसी पर | किम् वा | ९. अथवा क्या |
| अलिकुलैः | ४. भौंरे मंडराते रहते हैं | अभिनन्दति चरन् | १४. अभिनन्दन करते हुये उत्तर दिया है |
| मदान्धैः । | ३. मदान्ध | प्रणय अवलोकैः ॥ | १३. अपनी प्रेम पूर्ण चितवन से |

श्लोकार्थ—हे तरुवरो ! उनकी माला की तुलसी में मदान्ध भौंरे मडराते रहते हैं । बलराम जी के छोटे भाई श्रीकृष्ण एक हाथ अपनी प्रेयसी के कन्धे पर रखे और दूसरे में लीला कमल लिये होंगे । अथवा क्या विचरण करते हुये यहाँ पर उन्होंने आपके प्रणाम का अपनी प्रेम पूर्ण चितवन से अभिनन्दन करते हुये उत्तर दिया है ॥

## त्रयोदश: श्लोकः

**पृच्छतेमा लता बाहूनप्याश्लिष्टा वनस्पतेः ।**
**नूनं तत्करजस्पृष्टा बिभ्रत्युत्पुलकान्यहो ॥१३॥**

पदच्छेद— पृच्छत इमाः लताः बाहून् अपि आश्लिष्टाः वनस्पतेः ।
नूनम् तत् करज स्पृष्टा बिभ्रति उत् पुलकानि अहो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पृच्छत | ३. | पूछो जो | नूनम् | ६. | निश्चय ही |
| इमाः | १. | इन | तत् | १०. | उन्हीं श्याम सुन्दर के |
| लताः | २. | लताओं से | करज | ११. | नखों के |
| बाहून् | ६. | अपनी भुजाओं से | स्पृष्टाः | १२. | स्पर्श से ये |
| अपि | ५. | भी | बिभ्रति | १४. | हो रही हैं |
| आश्लिष्टाः | ७. | आलिङ्गन कर रही हैं | उत् पुलकानि | १३. | पुलकाय मान |
| वनस्पतेः । | ४. | अपने पति वृक्षों का | अहो ॥ | ८. | अहो |

श्लोकार्थ—इन लताओं से पूछो ! जो अपने पति वृक्षों का भी आलिङ्गन कर रही हैं । अहो निश्चय ही उन्हीं श्याम सुन्दर के नखों के स्पर्श से ये पुलकायमान हो रही हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**इत्युन्मत्तवचो गोप्यः कृष्णान्वेषणकातराः ।**
**लीला भगवतस्तास्ता ह्यनुचक्रुस्तदात्मिकाः ॥१४॥**

पदच्छेद— इति उन्मत्त वचः गोप्यः कृष्ण अन्वेषण कातराः ।
लीलाः भगवतः ताः ताः हि अनुचक्रुः तत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | लीला | १३. | लीलाओं का |
| उन्मत्त | २. | मतवाली | भगवतः | १०. | भगवान् की |
| वचः | ४. | प्रलाप करती हुई | ताः | ११. | उन |
| गोप्यः | ३. | गोपियाँ | ताः | १२. | उन |
| कृष्ण | ५. | श्रीकृष्ण को | हि अनुचक्रुः | १४. | अनुकरण करने लगीं |
| अन्वेषण | ६. | ढूंढते-ढूंढते | तत् | ८. | भगवत् |
| कातराः । | ७. | कातर हो रही थीं (और) | आत्मिकाः ॥ | ६. | स्वरूप होकर वे |

श्लोकार्थ—इस प्रकार मतवाली गोपियाँ प्रलाप करती हुई श्रीकृष्ण को ढूंढते-ढूंढते कातर हो रही थीं । और भगवत् स्वरूप होकर वे भगवान् की उन-उन लीलाओं का अनुकरण करने लगीं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्त्यपिबत् स्तनम् ।**
**तोकायित्वा रुदत्यन्या पदाहञ्छकटायतीम् ॥१५॥**

पदच्छेद— कस्याश्चित् पूतनायन्त्याः कृष्णायन्ती अपिबत् स्तनम् ।
तोकायित्वा रुदती अन्या पदा अहन् शकटा आयतीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कस्याश्चित् | १. | कोई एक गोपी | तोकायित्वा | ८. | बालकृष्ण बनकर |
| पूतना | २. | पूतना | रुदती | ९. | रोते हुये |
| यन्त्याः | ३. | बन गयी | अन्या | ७. | अन्य किसी ने |
| कृष्णायन्ती | ४. | दूसरी कृष्ण बनकर | पदाहन् | १२. | पैर से उलट दिया |
| अपिबत् | ६. | पीने लगी | शकटा | १०. | छकड़ा |
| स्तनम् । | ५. | उसका स्तन | यतीम् ॥ | ११. | बनी हुई गोपी को |

श्लोकार्थ—कोई एक गोपी पूतना बन गयी । दूसरी कृष्ण बन कर उसका स्तन पीने लगी । अन्य किसी ने बाल कृष्ण बन कर रोते हुये छकड़ा बनी हुई गोपी को पैर से उलट दिया ॥

## षोडशः श्लोकः

**दैत्यायित्वा जहारान्यामेका कृष्णार्भभावनाम् ।**
**रिङ्गयामास काप्यङ्घ्री कर्षन्ती घोषनिःस्वनैः ॥१६॥**

पदच्छेद— दैत्यायित्वा जहार अन्याम् एका कृष्ण अर्भ भावनाम् ।
रिङ्गयामास कापि अङ्घ्री कर्षन्ती घोष निःस्वनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दैत्या | ४. | कोई दैत्य का | रिङ्गयामास | ९. | चलने लगी । तब |
| यित्वा | ५. | रूप धर कर | कापि | ७. | कोई गोपी |
| जहार अन्याम् | ६. | उसे हर ले गयी | अङ्घ्री | ८. | घुटनों के बल |
| एका | १. | कोई एक सखी | कर्षन्ती | १०. | घिसटते हुये उसकी |
| कृष्ण अर्भ | २. | बाल कृष्ण | घोष | १२. | ध्वनि करने लगे |
| भावनाम् । | ३. | बन कर बैठ गई | निःस्वनैः ॥ | ११. | पायजेब के घुंघरू |

श्लोकार्थ– कोई एक सखी बाल कृष्ण बनकर बैठ गयी । कोई दैत्य का रूप धर कर उसे हर ले गयी । कोई गोपी घुटनों के बल चलने लगी । तब घिसटते हुये उसकी पायजेब के घुंघरू ध्वनि करने लगे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यश्च काश्चन ।**
**वत्सायतीं हन्ति चान्या तत्रैका तु बकायतीम् ॥१७॥**

पदच्छेद— कृष्णरामायिते द्वे तु गोपायन्त्यः च कश्चन ।
वत्सायतीम् हन्ति च अन्या तत्र एका तु बकायतीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्ण | २. श्रीकृष्ण और | वत्सायतीम् | ७. कोई वत्सासुर बनो |
| रामायिते | ३. बलराम बन गयीं | हन्ति | १२. मारने को लीला की |
| द्वे तु | १. दो गोपियाँ | च | ८. और |
| गोपायन्त्यः | ६. ग्वाल बाल बन गयीं | अन्या तत्र | ११. वहाँ अन्य गोपियों ने उन्हें |
| च | ४. और | एका तु | ९. एक गोपी |
| काश्चन । | ५. बहुत सी गोपियाँ | बकायतीम् ॥ | १०. बकासुर बनी |

श्लोकार्थ—दो गोपियाँ श्रीकृष्ण और बलराम बन गयीं। और बहुत सी गोपियाँ ग्वाल-बाल बन गयीं। कोई वत्सासुर बनो। और एक गोपी बकासुर बनी। वहाँ अन्य गोपियों ने उन्हे मारने की लीला की ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**आहूय दूरगा यद्वत् कृष्णस्तमनुकुर्वतीम् ।**
**वेणुं क्वणन्तीं क्रीडन्तीमन्याः शंसन्ति साध्विति ॥१८॥**

पदच्छेद— आहूय दूरगा यत् वत् कृष्णः तम् अनुकुर्वतीम् ।
वेणुम् क्वणन्तीम् क्रीडन्तीम् अन्याः शंसन्ति साधु इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आहूय | ४. बुलाते थे वैसे ही | वेणुम् | ७. और बंशी |
| दूरगाः | ३. दूर गये हुये पशुओं को | क्वणन्तीम् | ८. बजा-बजा कर |
| यत् वत् | १. जैसे | क्रीडन्तीम् | ९. क्रीडा करने लगीं तब |
| कृष्णः | २. श्रीकृष्ण | अन्याः | १०. अन्य गोपियाँ |
| तम् | ५. वह उनका | शंसन्ति | १२. प्रशंसा करने लगीं |
| अनुकुर्वतीम् । | ६. अनुकरण करने लगीं | साधुति ॥ | ११. वाह-वाह कह कर उसकी |

श्लोकार्थ—जैसे श्रीकृष्ण दूर गये हुये पशुओं को बुलाते थे वैसे ही वह उनका अनुकरण करने लगीं। और बंशी बजा-बजा कर क्रीडा करने लगीं। तब अन्य गोपियाँ वाह-वाह कह कर उसकी प्रशंसा करने लगीं।

## एकोनविंशः श्लोकः

कस्यांचित् स्वभुजं न्यस्य चलन्त्याहापरा ननु ।
कृष्णोऽहं पश्यत गतिं ललितामिति तन्मनाः ॥१६॥

पदच्छेद— कस्याम् चित् स्वभुजम् न्यस्य चलन्ती आह अपरा ननु ।
कृष्णः अहम् पश्यत गतिम् ललिताम् इति तन्मनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कस्याम् चित् | १. कोई एक गोपी | कृष्णः | ६. श्रीकृष्ण हूँ |
| स्वभुजम् | २. अपनी भुजा को | अहम् | ८. मैं |
| न्यस्य | ३. अन्य गोपी के गले में डालकर | पश्यत | १४. देखो |
| चलन्ती | ४. चलती हुई | गतिम् | १३. चाल को तो |
| आह | ६. कहने लगी | ललिताम् | १२. मेरी मनोहर |
| अपरा | ५. अन्य सखी से | इति | १०. इस प्रकार |
| ननु । | ७. निश्चय ही | तन्मनाः ॥ | ११. श्रीकृष्णमय होकर बोली |

श्लोकार्थ—कोई एक गोपी अपनी भुजा को अन्य गोपी के गले में डाल कर अन्य सखी से कहने लगी निश्चय ही मैं श्रीकृष्ण हूँ। इस प्रकार श्रीकृष्णमय होकर बोली। मेरी मनोहर चाल को तो देखो ॥

## विंशः श्लोकः

मा भैष्ट वातवर्षाभ्यां तत्त्राणं विहितं मया ।
इत्युक्त्वैकेन हस्तेन यतन्त्युन्निदधेऽम्बरम् ॥२०॥

पदच्छेद— मा भैष्ट वात वर्षाभ्याम् तत्त्राणम् विहितम् मया ।
इति उक्त्वा एकेन हस्तेन यतन्ती उन्निदधे अम्बरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मा | ३. मत | इति | ८. ऐसा |
| भैष्ट | ४. डरो | उक्त्वा | ६. कह कर |
| वात | १. कोई कहती आँधी और | एकेन | १०. एक |
| वर्षाभ्याम् | २. वर्षा से | हस्तेन | ११. हाथ से |
| तत्त्राणम् | ६. उससे रक्षा का उपाय | यतन्ती | १२. प्रयत्न करते हुये उसने |
| विहितम् | ७. कर लिया है | उन्निदधे | १४. ऊपर तान ली |
| मया। | ५. मैंने | अम्बरम् ॥ | १३. अपनी ओढ़नी |

श्लोकार्थ—कोई कहती आँधी और वर्षा से मत डरो। मैंने उससे रक्षा का उपाय कर लिया है। ऐसा कह कर एक हाथ से प्रयत्न करते हुये उसने अपनी ओढ़नी ऊपर तान ली ॥

# एकविंशः श्लोकः

**आरुह्यैका पदाऽऽक्रम्य शिरस्याहापरां नृप।**

**दुष्टाहे गच्छ जातोऽहं खलानां ननु दण्डधृक् ॥२१॥**

पदच्छेद— आरुह्य एका पदा आक्रम्य शिरसि आह अपराम् नृप ।
दुष्ट अहे गच्छ जातः अहम् खलानाम् ननु दण्डधृक् ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आरुह्य | ६. चढ़ कर | दुष्ट अहे | ९. हे दुष्ट ! नाग |
| एका | २. एक गोपी | गच्छ | १०. यहाँ से भाग जा |
| पदा | ४. एक पैर | जातः | १४. उत्पन्न हुआ हूँ |
| आक्रम्य | ५. रख कर और | अहम् | ११. क्योंकि मैं |
| शिरसि | ३. कालियनाग के सिर पर | खलानाम् | १२. दुष्टों को |
| आह अपराम् | ७. अन्य गोपी से बोली | ननु | ८. निश्चय ही |
| नृप । | १. हे परीक्षित् ! | दण्डधृक् ।। | १३. दण्ड देने के लिये ही |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! एक गोपी कालियनाग के सिर पर एक पैर रख कर और चढ़ कर अन्य गोपी से बोली । निश्चय ही हे दुष्ट ! नाग यहाँ से भाग जा । क्योंकि मैं दुष्टों को दण्ड देने के लिये ही उत्पन्न हुआ हूँ ।।

# द्वाविंशः श्लोकः

**तत्रैकोवाच हे गोपा दावाग्निं पश्यतोल्बणम् ।**

**चक्षूंष्याश्वपिदध्वं वो विधास्ये क्षेममञ्जसा ॥२२॥**

पदच्छेद— तत्र एका उवाच हे गोपाः दावाग्निम् पश्यत उल्बणम् ।
चक्षूंषि आशु अपिदध्वम् वो विधास्ये क्षेमम् अञ्जसा ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्र एका | १. तब एक गोपी | चक्षूंषि आशु | ७. शीघ्र ही अपने नेत्र |
| उवाच | २. बोली | अपिदध्वम् | ८. बन्द कर लो |
| हे गोपाः | ३. अरे ग्वालों ! | वः | १०. तुम लोगों |
| दावाग्निम् | ६. दावानल लगी है | विधास्ये | १२. कर लूंगा |
| पश्यत | ४. देखो | क्षेमम् | ११. रक्षा |
| उल्बणम् । | ५. बड़ी भयंकर | अञ्जसा ।। | ९. मैं अनायास ही |

श्लोकार्थ—तब एक गोपी बोली ! अरे ग्वालों ! देखो बड़ी भयंकर दावानल लगी है । शीघ्र ही अपने नेत्र बन्द कर लो । मैं अनायास ही तुम लोगों की रक्षा कर लूंगा ।।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**बद्धान्यया स्रजा काचित्तन्वी तत्र उलूखले ।**
**भीता सुदृक् पिधायास्यं भेजे भीतिविडम्बनम् ॥२३॥**

पदच्छेद— बद्धा अन्यया स्रजा काचित् तन्वी तत्र उलूखले ।
भीता सुदृक् पिधाय अस्यम् भेजे भीति विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बद्ध | ७. बाँध दिया | भीता | ११. | भयभीत जैसी |
| अन्यया | २. अन्य | सुदृक् | ८. | अब वह सुन्दरी गोपी |
| स्रजा | ५. फूलों की माला से | पिधाये | १०. | ढाप कर |
| काचित् | ४. किसी गोपी ने उन्हें | अस्यम् | ९. | मुँह |
| तन्वी | ३. कृशाङ्गी | भेजे | १४. | करने लगी |
| तत्र | १. वहाँ | भीति | १२. | भय की |
| उलूखले । | ६. ऊखल से | विडम्बनम् ॥ | १३ | नकल |

श्लोकार्थ—वहाँ अन्य कृशाङ्गी किसी गोपी ने उन्हें फूलों की माला से ऊखल में बाँध दिया । तब वह सुन्दरी गोपी हाथों से मुँह ढाँप कर भयभीत जैसी भय की नकल करने लगी ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**एवं कृष्णं पृच्छमाना वृन्दावनलतास्तरून् ।**
**व्यचक्षत वनोद्देशे पदानि परमात्मनः ॥२४॥**

पदच्छेद— एवम् कृष्णम् पृच्छमाना वृन्दावन लताः तरून् ।
व्यचक्षत वन उद्देशे पदानि परमात्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार गोपियाँ | व्यचक्षत | १२. देखे |
| कृष्णम् | ५. श्रीकृष्ण का पता | वन | ७. तभी उन्होंने वन में |
| पृच्छमाना | ६. पूछने लगीं | उद्देशे | ८. एक स्थान पर |
| वृन्दावन | २. वृन्दावन के | पदानि | ११. चरण चिह्न |
| लताः | ४. लता आदि से | परम | ९. परम |
| तरून् । | ३. वृक्ष और | आत्मनः ॥ | १०. आत्मा (परमात्मा श्याम सुन्दर के) |

श्लोकार्थ—इस प्रकार गोपियाँ वृन्दावन के वृक्ष और लता-आदि से श्रीकृष्ण का पता पूछने लगीं । तभी उन्होंने वन में एक स्थान पर परमात्मा श्याम सुन्दर के चरण चिह्न देखे ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**पदानि व्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ।**
**लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः ॥२५॥**

पदच्छेद— पदानि व्यक्तम् एतानि नन्द सूनोः महात्मनः ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वज अम्भोज वज्र अङ्कुश यव आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पदानि | ५. चरण हैं क्योंकि | लक्ष्यन्ते | १०. दिखाई दे रहे हैं |
| व्यक्तम् | १. अवश्य ही | हि ध्वज | ६. इनमें ध्वज |
| एतानि | २. ये | अम्भोज | ७. कमल |
| नन्दसूनोः | ४. नन्द नन्दन के | वज्रअङ्कुश | ८. वज्र अङ्कुश |
| महात्मनः । | ३. उदार शिरोमणि | यव आदिभिः ॥ | ९. जौ आदि के चिह्न |

श्लोकार्थ—अवश्य ही ये उदार शिरोमणि नन्द नन्दन के चरण हैं । क्योंकि इनमें ध्वज, कमल, वज्र, अङ्कुश, जौ आदि के चिह्न दिखाई दे रहे हैं ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**तैस्तैः पदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ।**
**वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्यार्ताः समब्रुवन् ॥२६॥**

पदच्छेद— तैः तैः पदैः तत् पदवीम् अन्विचछन्त्यः अग्रतः अबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्य आर्ताः समब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तैः तैः | १. उन-उन | वध्वाः | ८. किसी गोप बन्धु के |
| पदैः | २. चरण चिह्नों के द्वारा | पदैः | ९. चरण चिह्न |
| तत् पदवीम् | ३. उन श्याम सुन्दर के स्थान को | सुपृक्तानि | ७. श्री कृष्ण के साथ |
| अन्वीच्छन्त्यः | ४. खोजती हुई | विलोक्य | १०. देखकर वे |
| अग्रतः | ६. आगे बढ़ो | आर्ताः | ११. दुःखी हो गयीं और |
| अबलाः । | ५. वे गोपाङ्गनायें | समब्रुवन् ॥ | १२. कहने लगीं |

श्लोकार्थ—उन चरण चिह्नों के द्वारा उन श्याम सुन्दर के स्थान को खोजती हुई वे गोपाङ्गनाये आगे बढ़ीं । श्रीकृष्ण के साथ किसी गोपबन्धु के चरण चिह्न देखकर कर वे दुःखी हो गयीं, और कहने लगीं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**कस्याः पदानि चैतानि यातायाः नन्दसूनुना ।**
**अंसन्यस्तप्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ॥२७॥**

पदच्छेद— कस्याः पदानि च एतानि यातायाः नन्द सूनुना ।
अंसन्यस्त प्रकोष्ठायाः करेणोः करिणा यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कस्याः | ९. | किस बड़भागिनी | अंसन्यस्त | ५. | उनके कंधे पर |
| पदानि | १०. | चरण चिह्न हैं | प्रकोष्ठायाः | ६. | हाथ रख कर |
| च एतानि | ८. | ये | करेणोः | २. | हथिनी |
| यातायाः | ७. | चलने वाली | करिणा | ३. | गजराज के साथ गई हो वैसे ही |
| नन्दसूनुना । | ४. | नन्द नन्दन के साथ | यथा ॥ | १. | जैसे |

श्लोकार्थ—जैसे हथिनी गजराज के साथ गई हो वैसे ही नन्द नन्दन के साथ उनके कन्धे पर हाथ रख कर चलने वाली ये किस बड़भागिनी के चरण चिह्न हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः ।**
**यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ॥२८॥**

पदच्छेद— अनया आराधितः नूनम् भगवान् हरिः ईश्वरः ।
यत नःविहाय गोविन्दः प्रीतः याम् अनयत् रहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनया | २. | इसने | यत् | ७. | जो कि |
| आराधितः | ६. | उपासना की है | नःविहाय | ९. | हमें छोड़कर |
| नूनम् | १. | अवश्य ही | गोविन्दः | ८. | श्याम सुन्दर |
| भगवान् | ४. | भगवान् | प्रीतःयाम् | १०. | प्रसन्न होकर इसे |
| हरिः | ५. | श्रीकृष्ण की | अनयत् | १२. | ले गये हैं |
| ईश्वरः । | ३. | सर्वशक्तिमान् | रहः ॥ | ११. | एकान्त में |

श्लोकार्थ—अवश्य ही इसने सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण की उपासना की है । जो कि श्याम सुन्दर हमें छोड़कर प्रसन्न होकर इसे एकान्त में ले गये हैं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

धन्या अहो अमी आल्यो गोविन्दाङ्घ्र्यब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्मेशो रमा देवी दधुर्मूर्ध्न्यघनुत्तये ॥२९॥

पदच्छेद— धन्याः अहो अमी आल्यः गोविन्द अङ्घ्रि अब्जरेणवः ।
यान् ब्रह्म ईशः रमादेवी दधुः मूर्ध्नि अघनुत्तये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धन्याः | ७. | धन्य हैं | यान् | ८. | जिस रज को |
| अहो | १. | अहो ! | ब्रह्मा | ९. | ब्रह्मा |
| अमी | ६. | ये जन | ईशः | १०. | शंकर |
| आल्यः | २. | प्यारी सखियों | रमादेवी | ११. | लक्ष्मी आदि |
| गोविन्द | ३. | श्रीकृष्ण के | दधुः | १४. | धारण करते हैं |
| अङ्घ्रि अब्ज | ४. | चरण-कमलों की | मूर्ध्नि | १३. | अपने सिर पर |
| रेणवः। | ५. | धूली का स्पर्श करने वाले | अघनुत्तये ॥ | १२. | अशुभ नष्ट करने के लिये |

श्लोकार्थ—अहो ! प्यारी सखियों ! श्रीकृष्ण के चरण कमलों की धूली का स्पर्श करने वाले ये जन धन्य हैं। जिस रज को ब्रह्मा, शंकर, लक्ष्मी आदि अशुभ नष्ट करने के लिये अपने सिर पर धारण करते हैं ॥

## त्रिंशः श्लोकः

तस्या अमूनि नः क्षोभं कुर्वन्त्युच्चैः पदानि यत् ।
यैकापहृत्य गोपीनां रहो भुङ्क्तेऽच्युताधरम् ॥३०॥

पदच्छेद— तस्याः अमूनि नः क्षोभम् कुर्वन्ति उच्चैः पदानि यत् ।
या एका अपहृत्य गोपीनाम् रहः भुङ्क्ते अच्युत अधरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्याः | ८. | उसके | या एका | २. | जो एक गोपी |
| अमूनि | ९. | ये | अपहृत्य | ३. | श्रीकृष्ण को ले जाकर |
| नः | १२. | ये हमारे हृदय में | गोपीनाम् | १. | हम गोपियों में |
| क्षोभम् | १३. | क्षोभ | रहः | ४. | एकान्त में |
| कुर्वन्ति | १४. | उत्पन्न कर रहें हैं | भुङ्क्ते | ७. | पान कर रही है |
| उच्चैः पदानि | ११. | चरण चिह्न हैं | अच्युत | ५. | श्रीकृष्ण के |
| यत् । | १०. | जो उभरे हुये | अधरम् ॥ | ६. | अधर रस का |

श्लोकार्थ—हम गोपियों में जो एक गोपी श्रीकृष्ण को ले जाकर एकान्त में श्रीकृष्ण के अधर रस का पान कर रही है। उसके ये जो उभरे हुये चरण चिह्न हैं। ये हमारे हृदय में क्षोभ उत्पन्न कर रहे हैं ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**न लक्ष्यन्ते पदान्यत्र तस्या नूनं तृणाङ्कुरैः ।**
**खिद्यत्सुजाताङ्घ्रितलामुन्निन्ये प्रेयसीं प्रियः ॥३१॥**

**पदच्छेद—** न लक्ष्यन्ते पदानि अत्र तस्याः नूनम् तृण अङ्कुरैः ।
खिद्यत् सुजात अङ्घ्रितलाम् उन्निन्ये प्रेयसीम् प्रियः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न लक्ष्यन्ते | ३. | नहीं दिखलाई देते | खिद्यत् | ११. | न लग जाय इसलिये उसे |
| पदानि | २. | पैर | सुजात | ७. | सुकुमार |
| अत्र तस्याः | १. | यहाँ उस गोपी के | अङ्घ्रितलाम् | ८. | चरणों के नीचे |
| नूनम् | ४. | निश्चय ही | उन्निन्ये | १२. | कन्धे पर चढ़ा लिया होगा |
| तृण | ९. | घास और | प्रेयसीम् | ६. | कहीं मेरी प्रिया के |
| अङ्कुरैः । | १०. | अङ्कुर | प्रियः ॥ | ५. | श्याम सुन्दर ने |

**श्लोकार्थ—**यहाँ पर उस गोपी के पैर नहीं दिखलाई देते । निश्चय ही श्याम सुन्दर ने कहीं मेरी प्रिया के सुकुमार चरणों के नीचे घास और अङ्कुर न लग जाय, इस लिये उसे कन्धे पर चढ़ा लिया होगा ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**इमान्यधिकमग्नानि पदानि वहतो वधूम् ।**
**गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भाराक्रान्तस्य कामिनः ॥३२॥**

**पदच्छेद—** इमानि अधिक मग्नानि पदानि वहतः वधूम् ।
गोप्यः पश्यत कृष्णस्य भार आक्रान्तस्य कामिनः ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इमानि | १०. | यहाँ | गोप्यः | १. | हे गोपियों |
| अधिक | ११. | अधिक | पश्यत | २. | देखो |
| मग्नानि | १२. | गहरे धंस गये हैं | कृष्णस्य | ८. | श्रीकृष्ण के |
| पदानि | ९. | चरण | भार | ५. | भार के |
| वहतः | ४. | ढोने के | आक्रान्तस्य | ६. | कारण उस |
| वधूम् । | ३. | उस गोपी को | कामिनः ॥ | ७. | कामी |

**श्लोकार्थ—**हे गोपियों ! देखो । उस गोपी को ढोने के भार के कारण उस कामी श्रीकृष्ण के चरण यहाँ अधिक गहरे धंस गये है ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**अत्र प्रसूनावचयः प्रियार्थे प्रेयसा कृतः ।**
**प्रपदाक्रमणे एते पश्यतासकले पदे ॥३३॥**

पदच्छेद— अत्र प्रसून अवचयः प्रिया अर्थे प्रेयसा कृतः ।
प्रपदाक्रमणे एते पश्यत असकले पदे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अत्र | १. | यहाँ | प्रिया अर्थे | ८. | अपनी प्रिया के लिये |
| अवरोपिता | ५. | नीचे उतारा है । और | प्रेयसा | ७. | प्रियतम श्रीकृष्ण ने |
| कान्ता | ४. | अपनी प्रेयसी को | कृतः | ११. | किया है |
| पुष्प हेतोः | ३. | फूल चुनने के लिये | प्रपदाक्रमणे | १२. | उचकने के कारण |
| महात्मना । | २. | उदार शिरोमणि श्रीकृष्ण ने | एते | १३. | इन |
| अत्र | ६. | यहाँ | पश्यत | १६. | देखो ! |
| प्रसून | ९. | पुष्पों का | असकले | १४. | आधे-आधे |
| अवचयः | १० | चयन | पदे ॥ | १५. | चरण चिह्नों को |

श्लोकार्थ—यहाँ उदार शिरोमणि श्रीकृष्ण ने फूल चुनने के लिये अपनी प्रेयसी को नीचे उतारा है । और यहाँ प्रियतम श्रीकृष्ण ने अपनी प्रिया के लिये पुष्पों का चयन किया है । उचकने के कारण इन आधे-आधे चरण-चिह्नों को देखो ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**केशप्रसाधनं त्वत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।**
**तानि चूडयता कान्तामुपविष्टमिह ध्रुवम् ॥३४॥**

पदच्छेद — केश प्रसाधनम् तु अत्र कामिन्याः कामिना कृतम् ।
तानि चूडयता कान्ताम् उपविष्टम् इह ध्रुवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| केश | ४. | केशों का | तानि | ७. | फूलों को |
| प्रसाधनम् | ५. | शृंगार | चूडयता | ९. | चोटी में गूंथने के लिये |
| तु अत्र | १. | यहाँ पर | कान्ताम् | ८. | अपनी प्रिया को |
| कामिन्याः | ३. | अपनी प्रेयसी के | उपविष्टम् | १२. | बैठे रहे होगे |
| कामिना | २. | कामी पुरुष के समान | इह | १०. | यहाँ पर |
| कृतम् । | ६. | किया है । और | ध्रुवम् ॥ | ११. | बहुत देर तक |

श्लोकार्थ—यहाँ पर कामी पुरुष के समान अपनी प्रेयसी के केशों का शृंगार किया है । और फूलों को अपनी प्रिया की चोटी में गूंथने के लिये यहाँ पर बहुत देर तक बैठे रहे होंगे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**रेमे तया चात्मरत आत्मारामोऽप्यखण्डितः ।
कामिनां दर्शयन् दैन्यं स्त्रीणां चैव दुरात्मताम् ॥३५॥**

पदच्छेद— रेमे तया च आत्मरतः आत्मारामः अपि अखण्डितः ।
कामिनाम् दर्शयम् दैन्यम् स्त्रीणाम् च एव दुरात्मताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रेमे | १२. | क्रीडा की थी | कामिनाम् | ५. | कामियों का |
| तया | ११. | उन्होंने गोपी के साथ | दर्शयन् | १०. | दिखाने के लिये |
| च आत्मरतः | १. | और श्रीकृष्ण अपने आप में सन्तुष्ट | दैन्यम् | ६. | दैन्य |
| आत्मारामः | २. | आत्माराम | स्त्रीणाम् | ८. | स्त्रियों की |
| अपि | ४. | भी | च एव | ७. | और |
| अखण्डितः । | ३. | पूर्ण होने पर | दुरात्मताम् ॥ | ९. | कुटिलता |

श्लोकार्थ—और श्रीकृष्ण अपने आप में सन्तुष्ट आत्माराम पूर्ण होने पर भी कामियों का दैन्य और स्त्रियों की कुटिलता दिखाने के लिये ही उन्होंने गोपी के साथ क्रीडा की थी ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**इत्येवं दर्शयन्त्यस्ताश्चेरुर्गोप्यो विचेतसः ।
यां गोपीमनयत् कृष्णो विहायान्याः स्त्रियो वने ॥३६॥**

पदच्छेद— इति एवम् दर्शयन्त्यः ताः चेरुः गोप्यः विचेतसः ।
याम् गोपीम् अनयत् कृष्णः विहाय अन्याः स्त्रियः वने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ७. | तब | याम् गोपीम् | १३. | जिस गोपी को |
| एवम् | ३. | इस प्रकार | अनयत् | १४. | अपने साथ ले गये थे |
| दर्शयन्त्यः | ४. | चरण चिह्न दिखाती हुई | कृष्णः | ८. | श्रीकृष्ण |
| ताः | १. | वे गोपियाँ | विहाय | १२. | छोड़कर |
| चेरुः | ६. | हो गईं । | अन्याः | ९. | अन्य |
| गोप्यः | २. | अन्य गोपियों को | स्त्रियः | १०. | स्त्रियों को |
| विचेतसः | ५. | मूर्च्छित | वने ॥ | ११. | वन में |

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ अन्य गोपियों को इस प्रकार चरण चिह्न दिखाती हुई मूर्च्छित हो गईं । तब श्री कृष्ण अन्य स्त्रियों को वन में छोड़ कर जिस गोपी को अपने साथ ले गये थे ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**सा च मेने तदाऽऽत्मानं वरिष्ठं सर्वयोषिताम् ।**
**हित्वा गोपीः कामयाना मामसौ भजते प्रियः ॥३७॥**

पदच्छेद — सा च मेने तदा आत्मानम् वरिष्ठम् सर्व योषिताम् ।
हित्वा गोपीः कामयानाः माम् असौ भजते प्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा | ३. | उसने | हित्वा | १४. | छोड़कर मुझे अपने साथ लिया है |
| च | १. | और | गोपीः | १३. | अन्य गोपियों को |
| मेने | ७. | मानते हुये (विचार किया कि) | कामयानाः | १२. | प्रेम करने वाली |
| तदा | २. | तब | माम् | १०. | मुझे |
| आत्मानम् | ४. | अपने को | असौ | ८. | ये |
| वरिष्ठम् | ६. | सर्वश्रेष्ठ | भजते | ११. | सबसे अधिक प्रेम करते हैं तभी तो |
| सर्वयोषिताम् । | ५. | सभी स्त्रियों में | प्रियः ॥ | ९. | प्रियतम श्याम सुन्दर |

श्लोकार्थ—और तब उसने अपने को सभी स्त्रियों में सर्वश्रेष्ठ मानते हुये विचार किया कि ये प्रियतम श्याम सुन्दर मुझे सबसे अधिक प्रेम करते हैं। तभी तो प्रेम करने वाली अन्य गोपियों को छोड़कर मुझे अपने साथ लिया है ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**ततो गत्वा वनोद्देशं दृप्ता केशवमब्रवीत् ।**
**न पारयेऽहं चलितुं नय मां यत्र ते मनः ॥३८॥**

पदच्छेद— ततः गत्वा वनोद्देशम् दृप्ता केशवम् अब्रवीत् ।
न पारये अहम् चलितुम् नय माम् यत्र ते मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब वह | न पारये | ८. | बिलकुल समर्थ नहीं हूँ |
| गत्वा | ४. | जाकर | अहम् चलितुम् | ७. | मैं चलने में |
| वनोद्देशम् | ३. | वन प्रान्त में | नय | १२. | वहीं ले चलिये |
| दृप्ता | २. | मतवाली | माम् | ११. | मुझे |
| केशवम् | ५. | श्रीकृष्ण से | यत्र | १०. | जहाँ हो |
| अब्रवीत् । | ६. | बोली (हे श्रीकृष्ण) | ते मनः ॥ | ९. | आपका मन |

श्लोकार्थ—तब वह वन प्रान्त में जाकर ब्रह्मा और शंकर के भी शासक श्रीकृष्ण से बोली। मैं चलने में बिलकुल समर्थ नहीं हूँ। आपका मन जहाँ हो मुझे वहीं ले चलिये।

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति।**
**ततश्चान्तर्दधे कृष्णः सा वधूरन्वतप्यत ॥३९॥**

पदच्छेद— एवम् उक्तः प्रियाम् आह स्कन्धे आरुह्यताम् इति।
ततः च अन्तर्दधे कृष्णः सा वधूः अन्वतप्यत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. उसके ऐसा | ततः | ११. | तब |
| उक्तः | २. कहने पर श्याम सुन्दर ने | च | ७. | और |
| प्रियाम् | ३. अपनी प्रेयसी से | अन्तर्दधे | १०. | अन्तर्धान हो गये |
| आह | ४. कहा कि तुम | कृष्णः | ९. | श्रीकृष्ण वहीं पर |
| स्कन्धे | ५. मेरे कन्धे पर | सा | १२. | वह |
| आरुह्यताम् | ६. चढ़ जाओ | वधूः | १३. | गोपी |
| इति। | ८. ऐसा कहने के बाद | अन्वतप्यत ॥ | १४. | रोने तथा पछताने लगी |

श्लोकार्थ—उसके ऐसा कहने पर श्याम सुन्दर ने अपनी प्रेयसी से कहा कि तुम मेरे कन्धे पर चढ़ जाओ। और ऐसा कहने के बाद श्रीकृष्ण वहीं पर अन्तर्धान हो गये। तब वह गोपी रोने तथा पछताने लगी ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज।**
**दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिम् ॥४०॥**

पदच्छेद— हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज।
दास्याः ते कृपणायाः मे सखे दर्शय सन्निधिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हा नाथ | १ हा नाथ ! | दास्याः | ९. | दासी हूँ |
| रमण | २. हा रमण ! | ते कृपणायाः | ८. | मैं आपकी दीन हीन |
| प्रेष्ठ | ३. हा प्रेष्ट ! | मे सखे | ७. | मेरे सखा ! |
| क्वासि | ५. तुम कहाँ हो ? | दर्शय | १०. | मुझे दर्शन देकर अपना |
| क्वासि | ६. कहाँ हो ? | सन्निधिम् ॥ | ११. | सान्निध्य प्राप्त कराओ |
| महाभुज। | ४. हा महाभुज। | | | |

श्लोकार्थ—हा नाथ ! हा रमण ! हा प्रेष्ठ ! हा महाभुज ! तुम कहाँ हो ? कहाँ हो ? मेरे सखा ! मैं आपकी दीन-हीन दासी हूँ। मुझे दर्शन देकर अपना सान्निध्य प्राप्त कराओ ॥

# एकचत्वारिंशः श्लोकः

**अन्विच्छन्त्यो भगवतो मार्गं गोप्योऽविदूरतः ।**
**ददृशुः प्रियविश्लेषमोहितां दुःखितां सखीम् ॥४१॥**

पदच्छेद— अन्विच्छन्त्यः भगवतः मार्गम् गोप्यः अविदूरतः ।
ददृशुः प्रिय विश्लेष मोहिताम् दुःखिताम् सखीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्विच्छन्त्यः | ३. खोजती हुई | ददृशुः | ११. देखा |
| भगवतः | २. भगवान् को | प्रिय | ६. प्रियतम श्रीकृष्ण के |
| मार्गम् | १. मार्ग में | विश्लेष | ७. वियोग के कारण |
| गोप्यः | ४. गोपियों ने | मोहिताम् | ९. अचेत |
| अविदूरतः । | ५. कुछ दूर से ही | दुःखिताम् | ८. दुःखी और |
| | | सखीम् ॥ | १०. अपनी सखी को |

श्लोकार्थ—मार्ग में भगवान् को खोजती हुई गोपियों ने कुछ दूर से ही प्रियतम श्रीकृष्ण के वियोग के कारण दुःखी और अचेत अपनी सखी को देखा ॥

# द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तया कथितमाकर्ण्य मानप्राप्तिं च माधवात् ।**
**अवमानं च दौरात्म्याद् विस्मयं परमं ययुः ॥४२॥**

पदच्छेद— तया कथितम् आकर्ण्य मान प्राप्तिम् च माधवात् ।
अवमानम् च दौरात्म्यात् विस्मयम् परमम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तया | २. उसके द्वारा | अवमानम् | ९. जो अपमान किया उसे सुन कर |
| कथितम् | ५. बात को | च | ७. और |
| आकर्ण्य | ६. सुन कर | दौरात्म्यात् | ८. उसने कुटिलता वश भगवान् का |
| मानप्राप्तिम् | ४. सम्मान प्राप्त होने की | विस्मयम् | ११. आश्चर्य में |
| च | १. और | परमम् | १०. वे अत्यधिक |
| माधवात् । | ३. श्रीकृष्ण से | ययुः ॥ | १२. पड़ गयीं |

श्लोकार्थ—और उसके द्वारा श्रीकृष्ण से सम्मान प्राप्त होने की बात को सुन कर और उसने कुटिलता वश भगवान् का जो अपमान किया उसे सुन कर वे अत्यधिक आश्चर्य में पड़ गयीं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**ततोऽविशं वनं चन्द्रज्योत्स्ना यावद् विभाव्यते ।**
**तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृतुः स्त्रियः ॥४३॥**

पदच्छेद— ततः अविशन् वनम् चन्द्रज्योत्स्ना यावत् विभाव्यते ।
तमः प्रविष्टम् आलक्ष्य ततः निववृतुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | श्रीकृष्णमय मन | तमः | ६. | उन्हीं के |
| अविशन् | ६. | घुसती चली गईं | प्रविष्टम् | ९. | प्रवेश |
| वनम् | ५. | उस वन में | आलक्ष्य | १०. | देख कर |
| चन्द्रज्योत्स्ना | ३. | चन्द्रमा का प्रकाश | ततः | ११. | वहाँ से |
| यावत | २. | जहाँ तक | निववृतुः | १२. | वापिस लौट आयीं |
| विभाव्यते । | ४. | समझ आया वे | स्त्रियः ॥ | ७. | फिर ये स्त्रियाँ |

श्लोकार्थ—इसके बाद जहाँ तक चन्द्रमा का प्रकाश समझ आया वे उस वन में घुसती चलीं गईं। फिर वे स्त्रियाँ अन्धकार का प्रवेश देखकर वहाँ से वापिस लौट आयीं ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तन्मनस्कास्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मिकाः ।**
**तद्गुणानेव गायन्त्यो नात्मागाराणि सस्मरुः ॥४४॥**

पदच्छेद— तत् मनस्काः तत् आलापाः तत् विचेष्टाः तत् आत्मिकाः ।
तत् गुणान् एव गायन्त्यः न अत्मा अगाराणि सस्मरुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् मनस्काः | १. | श्रीकृष्णमय मन | तत् | ६. | उन्हीं के |
| तत् | २. | कृष्णमय | गुणान् | ७. | गुणों का |
| आलापः | ३. | वाणी और | एव | ८. | ही |
| तत् | ४. | कृष्ण की | गायन्त्यः | ९. | गान करती हुई वे |
| विचेष्टाः | ५. | लीलाओं तथा | न | १४. | नहीं किया |
| तत् | १०. | कृष्ण | आत्मागराणि | १२. | फिर उन्होंने अपने घरों का |
| आत्मिकाः । | ११. | स्वरूप ही हो गयीं | सस्मरुः ॥ | १३. | स्मरण |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्णमय मन ,कृष्णमय वाणी और कृष्ण की लीलाओं का तथा उन्हीं के गुणों का ही गान करती हुई वे कृष्ण स्वरूप हो गईं फिर उन्होंने अपने घरों का भी स्मरण नहीं किया ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

पुनः पुलिनमागत्य कालिन्द्याः कृष्णभावनाः ।
समवेता जगुः कृष्णं तदागमनकाङ्क्षिताः ॥४५॥

पदच्छेद— पुनः पुलिनम् आगत्य कालिन्द्याः कृष्ण भावनाः ।
समवेताः जगुः कृष्णम् तत् आगमन काङ्क्षिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुनः | ३. | वे पुनः | समवेताः | १०. | वे सब इकट्ठी होकर |
| पुलिनम् | ५. | किनारे पर | जगुः | १२. | गान करने लगीं |
| आगत्य | ६. | आ गयीं | कृष्णम् | ११. | श्याम सुन्दर के गुणों का |
| कालिन्द्याः | ४. | यमुना नदी के | तत् | ७. | और कृष्ण के |
| कृष्ण | १. | श्री कृष्ण की ही | आगमन | ८. | आगमन की |
| भावनाः । | २. | भावना करती हुई | काङ्क्षिताः ॥ | ९. | आकांक्षा के कारण |

श्लोकार्थ— श्री कृष्ण की ही भावना करती हुई वे पुनः यमुना नदी के किनारे पर आ गयीं । और श्रीकृष्ण के आगमन की आकांक्षा के कारण वे सब इकट्ठी होकर श्याम सुन्दर के गुणों का गान करने लगी ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
रासक्रीडायां कृष्णान्वेषणम् नाम त्रिंशः अध्यायः ॥३०॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## एकत्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।**
**दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥**

पदच्छेद— जयति ते अधिकम् जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वत्अत्र हि ।
दयित दृश्यताम् दिक्षु तावकाः त्वयिधृतअसवः त्वाम् विचिन्वते ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जयति | ४. | बढ़ गयी है | दयित | ८. | हे प्रियतम ! |
| ते | १ | आपके | दृश्यताम् | ९. | देखो |
| अधिकम् | ३. | अधिक | दिक्षु | १३. | सभी दिशाओं में |
| जन्मना व्रज | २. | जन्म से व्रज की महिमा | तावकाः | ११. | आपकी गोपिकायें |
| श्रयत | ७. | वास कर रही है | त्वयिधृतासवः | १०. | आपके लिये प्राण धारण करनेवाली |
| इन्दिरा | ५. | तभी तो लक्ष्मी | त्वाम् | १२. | आपको |
| शश्वत्अत्रहि । | ६. | निरन्तर यहाँ | विचिन्वते ।। | १४. | खोजती भटक रही हैं |

श्लोकार्थ—आपके जन्म से व्रज की महिमा अधिक बढ़ गयी है । तभी तो लक्ष्मी निरन्तर यहाँ वास कर रही हैं । हे प्रियतम ! देखो आपके लिये प्राण धारण करने वाली आपकी गोपिकायें आपको सभी दिशाओं में खोजती भटक रही हैं ।।

### द्वितीयः श्लोकः

**शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदरश्रीमुषा दृशा ।**
**सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका वरदनिघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥**

पदच्छेद— शरत् उदाशये साधुजात सत्सरसिज उदर श्री मुषा दृशा ।
सुरतनाथ ते अशुल्क दासिका वरदनिघ्नतः नेह किम् वधः ।।

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शरत् | १. | शरदकालीन | सुरतनाथ | ८. | हे संभोग पति ! |
| उदाशये | २. | जलाशय में | ते अशुल्क | ९. | हम आपकी बिनामोल की |
| साधुजात | ३. | भली-भाँति उत्पन्न | दासिकाः | १०. | दासी हैं |
| सत्सरसिज | ४. | सुन्दर कमल के | वरद | ११. | हे मनोरथपूर्ण करने वाले |
| उदर श्री | ५. | मध्यभाग की शोभा को | निघ्नतः | ७. | हमें घायल कर दिया है |
| मुषा दृशा । | ६. | चुराने वाले आपके नेत्रों ने | नेहकिम्वधः ।। | १२. | क्या यह (नेत्रों से मारना) वध नहीं है |

श्लोकार्थ—शरद्कालीन जलाशय में भली-भाँति उत्पन्न सुन्दर कमल के मध्यभाग की शोभा को चुराने वाले आपके नेत्रों ने हमें घायल कर दिया है । हे संभोग पति ! हम आपकी बिना मोल की दासी हैं । हे मनोरथ पूर्ण करने वाले ! क्या यह नेत्रों से मारना वध नहीं है ।।

## तृतीयः श्लोकः

**विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।**
**वृषमयात्मजाद् विश्वतोभयादृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥**

पदच्छेद— विषजल अप्ययात् व्याल राक्षसात् वर्षमारुतात् अनलात् ।
वृषमय आत्मजात् विश्वतः भयात् ऋषभ ते वयम् रक्षिताः मुहुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विषजल | २. | यमुना के विषैले जल | वृषमय | ९. | वृषभासुर और |
| अप्ययात् | ३. | विषयक मृत्यु से | आत्मजात् | १०. | व्योमासुर आदि |
| व्याल | ४. | अजगर रूपी | विश्वतः | ११. | सब प्रकार के |
| राक्षसात् | ५. | राक्षस से | भयात् | १२. | भयों से |
| वर्षमारुतात् | ६. | इन्द्र की वर्षा-आँधी | ऋषभ | १. | हे पुरुष शिरोमणि ! |
| वैद्युत | ७. | बिजली और | ते वयम् | १३. | आपने हमारी |
| अनलात् । | ८. | दावानल से | रक्षिता मुहुः ॥ | १४. | बार-बार रक्षा की है |

श्लोकार्थ—हे पुरुष शिरोमणि ! यमुना के विषैले जल विषयक मृत्यु से, अजगररूपी राक्षस से, इन्द्र की वर्षा, आँधी, बिजली और दावानल से, वृषभासुर और व्योमासुर आदि सब प्रकार के भयों से आपने हमारी बार-बार रक्षा की है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ।**
**विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥४॥**

पदच्छेद— न खलु गोपिका नन्दनः भवान् अखिल देहिनाम् अन्तर आत्मदृक् ।
विखनस अर्थितः विश्वगुप्तये सखे उदेयिवान् सात्वताम् कुले ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ४. | नहीं हो, अपितु | विखनस | ९. | ब्रह्माजी की |
| खलु | १. | निश्चय ही | अर्थितः | १०. | प्रार्थना पर |
| गोपिकानन्दनः | ३. | यशोदानन्द नहीं | विश्व | ११. | समस्त संसार की |
| भवान् | २. | तुम केवल | गुप्तये | १२. | रक्षा करने के लिये |
| अखिलदेहिनाम् | ५. | समस्त शरीर धारियों के | सखे | ८ | हे सखे ! |
| अन्तर | ६. | हृदय में रहने वाले | उदेयिवान् | १४. | अवतीर्ण हुये हो |
| आत्मदृक् । | ७. | उनके साक्षी और अन्तर्यामी हो | सात्वताम् कुले ॥ | १३. | तुम यदुवंश में |

श्लोकार्थ—निश्चय ही तुम केवल यशोदानन्दन ही नहीं हो । अपितु समस्त शरीरधारियों के हृदय में रहने वाले, उनके साक्षी और अन्तर्यामी हो । हे सखे ! ब्रह्माजी की प्रार्थना पर समस्त संसार की रक्षा करने के लिमे तुम यदुवंश में अवतीर्ण हुये हो ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात् ।**
**करसरोरुहं कान्त कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥**

पदच्छेद— विरचित अभयम् वृष्णिधुर्य ते चरणम् ईयुषाम् संसृतेः भयात् ।
करसरोरुहम् कन्ति कामदम् शिरसि धेहि नः श्रीकर ग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विरचित | ५. देने वाले | कर | ११. | अपने कर |
| अभयम् | ४. अभय | सरोरुहम् | १२. | कमल को आप |
| वृष्णिधुर्य | १. हे यदुवंश शिरोमणि ! लोग | कान्त | ८. | हे प्रियतम ! समस्त |
| ते चरणम् | ६. आपके चरणों की | कामदम् | ९. | कामनाओं को पूर्ण करने वाले |
| ईयुषाम् | ७. शरण ग्रहण करते हैं (अतः) | शिरसि धेहि | १४. | सिर पर रख दो |
| संसृतेः | २. जन्म मृत्युरूप संसार के | नः | १३. | हमारे |
| भयात् । | ३. भय से डर कर | श्रीकर ग्रहम् ॥ | १०. | लक्ष्मी का हाथ पकड़ने वाले |

श्लोकार्थ—हे यदुवंश शिरोमणि ! लोग जन्म-मृत्युरूप संसार के भय से डर कर अभय देने वाले आपके चरणों की शरण ग्रहण करते हैं । अतः हे प्रियतम ! समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले, लक्ष्मी का हाथ पकड़ने वाले अपने कर कमल को आप हमारे सिर पर रख दो ॥

## षष्ठः श्लोकः

**व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित ।**
**भज सखे भवत्किङ्करीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥**

पदच्छेद— व्रजजन आर्तिहन् वीर योषिताम् निज जनस्मय ध्वंसनस्मित ।
भज सखे भवत् किङ्करीः स्म नो जल रुह आननम् चारु दर्शय ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| व्रजजन | १. व्रजवासियों के | स्मित । | ४. | आपकी मधुर मुस्कान ही |
| आर्तिहन् | २. दुःख को दूर करने वाले | भज | ११. | हमसे प्रेम करो |
| वीर | ३. वीर शिरामणि | सखे भवत् | ९. | हे सखा ! हम तो आपकी |
| योषिताम् | ६. हम गोपियों के | किङ्करीः स्म | १०. | दासी हैं |
| निजजन | ५. अपनी भक्ता | नो जलरुह | १२. | हमें कमल के समान |
| स्मय | ७. गर्व को | आननम् चारु | १३. | अपने सुन्दर मुख का |
| ध्वंसन | ८. नष्ट कर देने वाली है | दर्शय ॥ | १४. | दर्शन कराओ |

श्लोकार्थ—व्रजवासियों के दुख को दूर करने वाले वीर शिरोमणि श्याम सुन्दर आपकी मधुर मुस्कान ही अपनी भक्ता हम गोपियों के गर्व को नष्ट कर देने वाली है । हे सखा ! श्याम सुन्दर ! हम तो आपकी दासी हैं । हम से प्रेम करो । हमें कमल के समान अपने सुन्दर मुख का दर्शन कराओ ॥

## सप्तमः श्लोकः

**प्रणतदेहिनां पापकर्शनं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम् ।**
**फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥**

पदच्छेद— प्रणत देहि नाम् पापकर्शनम् तृणचर अनुगम् श्री निकेतनम् ।
फणिफण अर्पितम् ते पद अम्बुजम् कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रणत | २. | शरणागत | फणिफण | ९. | साँप के फणों पर |
| देहिनाम् | ३. | प्राणियों के | अर्पितम् | १०. | रखे गये उन्हीं चरणों को |
| पापकर्शनम् | ४. | पापों को नष्ट करने वाले | ते पद अम्बुजम् | १. | आपके चरण कमल |
| तृणचर | ५. | बछड़ों के | कृणु | १२ | रखो और |
| अनुगम् | ६. | पीछे चलने वाले तथा | कुचेषु नः | ११. | हमारे स्तनों पर |
| श्री | ७. | शोभा के | कृन्धि | १४. | शान्त करो |
| निकेतनम् । | ८. | धाम हैं | हृच्छयम् ॥ | १३. | हमारे हृदय की ज्वाला को |

श्लोकार्थ—आपके चरण कमल शरणागत प्राणियों के पापों को नष्ट करने वाले, बछड़े के पीछे चलने वाले तथा शोभा के धाम हैं। साँप के फणों पर रखे गये उन्हीं चरणों को हमारे स्तनों पर रखो और हमारे हृदय की ज्वाला को शान्त करो ॥

## अष्टमः श्लोकः

**मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण ।**
**विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीरधरसीधुनाऽऽप्याययस्व नः ॥८॥**

पदच्छेद— मधुरया गिरा वल्गु वाक्यया बुध मनोज्ञया पुष्करेक्षण ।
विधिकरीः इमाः वीर मुह्यतीः अधर सीधुना आप्याययस्व नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मधुरया | ६. | तुम्हारी मधुर | विधिकरीः | १०. | आज्ञाकारिणी दासी बन गईं हैं |
| गिरा | ७. | वाणी से | इमाः | ९. | हम आपकी |
| वल्गु | २. | सुन्दर | वीर | ११. | हे दान वीर |
| वाक्यया | ३. | नयनों के कारण | मुह्यतीः | ८. | मोहित होकर |
| बुध | ५. | विद्वानों को | अधर | १२. | अपने अधरों का |
| मनोज्ञया | ४. | आनन्द देने वाली | सीधुना | १३. | दिव्य अमृत रस |
| पुष्करेक्षण । | १. | हे कमल नयन ! | अप्याययस्व नः ॥ | १४. | पिलाकर हमें कृतार्थ करो |

श्लोकार्थ—हे कमलनयन ! सुन्दर नयनों के कारण विद्वानों को आनन्द देने वाली तुम्हारी मधुर वाणी से मोहित होकर हम आपकी आज्ञाकारिणी दासी बन गईं हैं। हे दानवीर ! अपने अधरों का दिव्य अमृतरस पिलाकर हमें कृतार्थ करो ॥

## नवमः श्लोकः

**तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।**
**श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥९॥**

पदच्छेद— तव कथा अमृतम् तप्त जीवनम् कविभिः ईडितम् कल्मषअपहम् ।
श्रवण मङ्गलम् श्रीमद् आततम् भुवि गृणन्ति ते भूरिदाः जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तव कथा** | १. आपकी लीला कथा | श्रवण | ८. श्रवण मात्र से ही |
| **अमृतम्** | २. अमृत स्वरूप है | मङ्गलम् | ९. परम कल्याण को देने वाली है |
| **तप्त** | ३. विरह से सताये लोगों का | श्रीमद् | १०. परम सुन्दर और |
| **जीवनम्** | ४. जीवन सर्वस्व है | आततम् | ११. अति विस्तृत है |
| **कविभिः** | ५. भक्त कवियों ने | भुवि | १२. पृथ्वी पर जो इसका |
| **ईडितम्** | ६. उसका गान किया है वे | गृणन्ति ते | १३. गान करते हैं वे |
| **कल्मषअपहम् ।** | ७. पाप ताप को नष्ट करने वाली | भूरिदाःजनाः ॥ | १४. सबसे बड़े दाता हैं |

श्लोकार्थ—आपकी लीला कथा अमृत स्वरूप है । विरह से सताये लोगों का जीवन सर्वस्व है । भक्त कवियों ने उसका गान किया है । यह पाप-ताप को नष्ट करने वाली है । श्रवण मात्र से ही परम कल्याण को देने वाली है । परम सुन्दर और अति विस्तृत है । पृथ्वी पर जो इसका गान करते हैं, वे लोग सबसे बड़े दाता हैं ।

## दशमः श्लोकः

**प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।**
**रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥**

पदच्छेद— प्रहसितम् प्रिय प्रेम वीक्षणम् विहरणम् च ते ध्यान मङ्गलम् ।
रहसि संविदः याः हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्तिहि ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **प्रहसितम्** | ३. हँसना | रहसि | ८. तुमने एकान्त में |
| **प्रिय** | १. हे प्यारे ! श्याम सुन्दर | संविदः | १०. ठिठोलियाँ की हैं |
| **प्रेम** | ४. प्रेमपूर्वक | याः हृदिस्पृशाः | ९. हमसे जो हृदय स्पर्शी |
| **वीक्षणम्** | ५. तिरछी चितवन से देखना | कुहक | ११. हमारे कपटी मित्र |
| **विहरणम्** | ६. विहार करना आदि का | नः | १२. वे सब हमारे |
| **च ते** | २. तुम्हारा | मनः | १३. मन को |
| **ध्यानमङ्गलम् ।** | ७. ध्यान भी परम मङ्गल कारक है | क्षोभयन्ति हि ॥ | १४. क्षुब्ध किये देती हैं |

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्याम सुन्दर, तुम्हारा हंसना ! प्रेमपूर्वक तिरछी चितवन से देखना, विहार करना आदि का ध्यान भी परम मङ्गलकारक है । तुमने एकान्त में हमसे जो हृदय स्पर्शी ठिठोलियाँ की हैं, हमारे कपटी मित्र, वे सब हमारे मन को क्षुब्ध किये देती हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम् ।**
**शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥११॥**

पदच्छेद— चलसि यद् व्रजात् चारयन् पशून् नलिन सुन्दरम् नाथ ते पदम् ।
शिलतृण अङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलताम् मनः कान्त गच्छति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चलसि | ७. निकलते हो तब | शिल | ९. आपके चरण कङ्कड़ | | |
| यद् | ४. जब तुम | तृणअङ्कुरैः | १०. तिनके और कुश-काँटे गड़ जाने से | | |
| व्रजात् | ६. व्रज से | सीदतीति | ११. कष्ट पाते होंगे | | |
| चारयन् पशून् | ५. गौओं को चराने के लिये | नः | १२. ऐसा सोच कर हमारा | | |
| नलिन सुन्दरम् | ३. कमल से भी सुन्दर हैं | कलिलताम् मनः | १३. मन दुःखी | | |
| नाथ | १. हे प्यारे स्वामी ! | कान्त | ८. हे प्रियतम ! | | |
| ते पदम् । | २. तुम्हारे चरण | गच्छति ॥ | १४. हो जाता है | | |

श्लोकार्थ—हे प्यारे स्वामी ! तुम्हारे चरण कमल से भी सुन्दर हैं । जब तुम गौओं को चराने के लिये व्रज से निकलते हो तब हे प्रियतम ! आपके चरण कङ्कड़, तिनके और कुश काँटे गड़ जाने से कष्ट पाते होंगे । ऐसा सोचकर हमारा मन दुःखी हो जाता है ॥

## द्वादशः श्लोकः

**दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।**
**घनरजस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥१२॥**

पदच्छेद— दिन परिक्षये नील कुन्तलैः वनरुह आननम् बिभ्रत् आवृतम् ।
घन रजस्वलम् दर्शयन् मुहुः मनसि नः स्मरम् वीर यच्छसि ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दिन | १. दिन के | घन | ९. गऊओं के खुरों से उड़ी हुई |
| परिक्षये | २. ढलने पर वन से लौटते समय | रजस्वलम् | १०. धूली से मण्डित |
| नीलकुन्तलैः | ३. नीली-नीली अलकों से | दर्शयन् मुहुः | ११. आपका मुख बार-बार देखकर |
| वनरुह | ५. आपका कमल के समान | मनसि नः | १२. हमारे मन में |
| आननम् | ६ मुख | स्मरम् | १३. मिलन की आकांक्षा |
| बिभ्रत् | ७. शुशोभित होता है | वीर | ८. हे वीर प्रियतम् ! |
| आवृतम् । | ४. घिरा हुआ | यच्छसि ॥ | १४. उत्पन्न करते हों |

श्लोकार्थ—दिन के ढलने पर वन से लौटते समय नीली-नीली अलकों से घिरा हुआ आपका कमल के समान मुख सुशोभित होता है । हे वीर प्रियतम ! गऊओं के खुरों से उड़ी हुई धूली से मण्डित आपका मुख बार-बार देखकर हमारे मन में मिलन की आकांक्षा उत्पन्न करते हो ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।**

**चरणपङ्कजं शन्तमं च ते रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन् ॥१३॥**

पदच्छेद-- प्रणत कामदम् पद्मज अर्चितम् धरणि मण्डनम् ध्येयम् आपदि ।
चरण पङ्कजम् शन्तमम् चते रमण नः स्तनेषु अर्पय आधिहन् ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रणत | १. शरणागत भक्तों की | चरणपङ्कजम् | २. आपके चरण कमल |
| कामदम् | ४. अभिलाषा पूर्ण करने वाले | शन्तमम् | ११. परमकल्याणमय |
| पद्मजार्चितम् | १. लक्ष्मी जी द्वारा सेवित | च ते | १२. अपने उन्हीं चरणों को |
| धरणि | ७. पृथ्वी के | रमण | ९. हे प्रियतम ! |
| मण्डनम् | ८. अलङ्करण स्वरूप हैं | नः स्तनेषु | १३. तुम हमारे वक्षः स्थल पर |
| ध्येयम् | ६. चिन्तन करने योग्य तथा | अर्पय | १४. स्थापित करो |
| आपदि । | ५. आपत्ति के समय | आधिहन् ।। | १०. मन की व्यथा को नष्ट करनेवाले |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी जी द्वारा सेवित आपके चरण कमल शरणागत भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने वाले, आपत्ति के समय चिन्तन करने योग्य तथा पृथ्वी के अलङ्करण स्वरूप हैं । हे प्रियतम ! मन की व्यथा को नष्ट करने वाले परमकल्याणमय अपने उन्हीं चरणों को तुम हमारे वक्षः स्थल पर स्थापित करो ।

## चतुर्दशः श्लोकः

**सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।**

**इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥**

पदच्छेद— सुरत वर्धनम् शोक नाशनम् स्वरित वेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतरराग विस्मारणम् नृणाम् वितर वीर नः ते अधर अमृतम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुरत | २. मिलन की आकांक्षा को | इतरराग | १०. अन्य सांसारिक आसक्तियों को |
| वर्धनम् | ३. बढ़ाने वाला | विस्मारणम् | ११. विस्मृत कराने वाला |
| शोक | ४. शोक-सन्ताप को | नृणाम् | ९. मनुष्यों में |
| नाशनम् | ५. नष्ट करने वाला | वितर | १४. पिलाइये |
| स्वरित | ६. गाने वाली | वीर | १. हे वीर शिरोमणि ! |
| वेणुना सुष्ठु | ७. बाँसुरी के द्वारा भली-भाँति | नः ते | १२. हमें आप अपना वही |
| चुम्बितम् । | ८. चुम्बित तथा | अधर अमृतम् ।। | १३. अधररूपी अमृत |

श्लोकार्थ—हे वीर शिरोमणि ! मिलन की आकांक्षा को बढ़ाने वाला, शोक-सन्ताप को नष्ट करने वाला, गाने वाली बाँसुरी के द्वारा भली-भाँति चुम्बित तथा मनुष्यों में अन्यसांसारिक आसक्तियों को विस्मृत कराने वाला, हमें आप अपना वही अधररूपी अमृतपिलाइये ।।

## पञ्चदशः श्लोकः

**अटति यद् भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।**
**कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥१५॥**

पदच्छेद— अटति यत् भवान् अह्निकाननम् त्रुटिः युगायते त्वाम् अपश्यताम् ।
कुटिल कुन्तलम् श्री मुखम् च ते जडःउदीक्षताम् पक्ष्मकृत् दृशाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अटति | ३. विचरण करते हैं तो | कुटिलकुन्तलम् | ९. घुँघराली अलकों से |
| यत्भवान् | १. आप जो | श्रीमुखम् | १०. सुशोभित मुख |
| अह्निकाननम् | २. दिन में वन में | च ते | ८. और अथवा |
| त्रुटि | ६. हमें एक क्षण | जडः | १४. हमें मूर्ख लगना है |
| युगायते | ७. युग के समान हो जाता है | उदीक्षताम् | ११. देखते हुए |
| त्वाम् | ४. आपको | पक्ष्मकृत् | १३. पलकों को |
| अपश्यताम् । | ५. देखे बिना | दृशाम् ॥ | १२. नेत्रों की |

श्लोकार्थ—जो आप दिन में वन में विचरण करते हैं । तो आपको देखे बिना हमें एक क्षण युग के समान हो जाता है । अथवा घुँघराली अलकों से सुशोभित मुख देखते हुए नेत्रों की पलकों को बनाने वाला (ब्रह्मा) हमें मूर्ख लगता है !।

## षोडशः श्लोकः

**पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।**
**गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥**

पदच्छेद— पति सुत अन्वय भ्रातृ बान्धवान् अति विलङ्घ्य ते अन्ति अच्युत आगताः ।
गति विदः तव उद्गीत मोहिताः कितव योषितः कस्त्यजेत् निशि ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पति सुत | २. हम अपने पति पुत्र | गतिविदः | ९. गति समझ कर |
| अन्वयः | ४. कुल परिवार का | तवउद्गीत् | ८. हम आपकी मधुर गान की |
| भ्रातृबान्धवान् | ३. भाई-बन्धु और | मोहिताः | १०. मोहित हैं |
| अतिविलङ्घ्य | ५. त्याग करके | कितवः | ११. हे कपटी ! ऐसी |
| ते अन्ति | ६. तुम्हारे पास | योषितः | १३. युवतियों को |
| अच्युत | १. हे श्याम सुन्दर ! | कस्त्यजेत् | १४. तुम्हारे बिना कौन छोड़ सकता है |
| आगताः । | ७. आयी हैं | निशि ॥ | १२. रात्रि के समय |

श्लोकार्थ—हे श्याम सुन्दर ! हम अपने पति, पुत्र, भाई, बन्धु और कुल-परिवार का त्याग करके तुम्हारे पास आयी हैं । हम आपकी मधुर गान की गति समझ कर मोहित हैं । हे कपटी ! ऐसी रात्रि के समय युवतियों को तुम्हारे बिना कौन छोड़ सकता है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।**
**बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥**

पदच्छेद— रहसि संविदम् हृच्छय उदयम् प्रहसित आननम् प्रेम वीक्षणम् ।
बृहत् उरः श्रियः वीक्ष्य धाम ते मुहुः अति स्पृहा मुह्यते मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रहसि | १. | एकान्त में | बृहत् उरः | १०. | विशाल वक्षः स्थल को |
| संविदम् | २. | मिलन की आकांक्षा | श्रियः | ८. | लक्ष्मी जी का |
| हृच्छय | ३. | और प्रेमभाव को | वीक्ष्य | ११. | देखकर |
| उदयम् | ४ | जगाने वाली बातें करते थे | धाम ते | ९. | निवास स्थान तुम्हारे |
| प्रहसित | ६ | हँसते हुये | मुहुः अतिस्पृहा | १३. | बार-बार लालसा बढ़ रही है |
| आननम् | ७. | मुखारविन्द तथा | मुह्यते | १४. | और वह मुग्ध होता जा रहा है |
| प्रेमवीक्षणम् । | ५. | प्रेम भरी चितवन और | मनः ॥ | १२. | हमारे मन में |

श्लोकार्थ—एकान्त में मिलन की इच्छा और प्रेम भाव को जगाने वाली बातें करते थे । प्रेम भरी चितवन और हँसते हुये मुखारविन्द तथा लक्ष्मी जी का निवास स्थान तुम्हारे विशाल वक्षः स्थल को देखकर हमारे मन में बार-बार लालसा बढ़ रही है । और वह मुग्ध होता जा रहा है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**व्रजवनौकसां व्यक्तिरङ्ग ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमङ्गलम् ।**
**त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥**

पदच्छेद— व्रज वनौकसाम् व्यक्तिः अङ्ग ते वृजिनहन्त्री अलम् विश्वमङ्गलम् ।
त्यज मनाक् च नः त्वत् स्पृहा आत्मनाम् स्वजन हृत् रुजाम् यत् निषूदनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्रज वनौकसाम् | ३. | व्रजवनवासियों के | त्यजमनाक् | १०. | थोड़ी सी ऐसी ओषधि दे दो |
| व्यक्तिः | २. | यह अभिव्यक्ति | च नः त्वत् | ८. | और हमारा हृदय तुम्हारे प्रति |
| अङ्ग ते | १. | हे प्यारे श्याम सुन्दर तुम्हारी | सपृहा आत्मानम् | ९. | लालसा से भर रहा है अतः |
| वृजिन | ४. | दुःख ताप को | स्वजनहृत् | १२. | निजजनों के हृदय |
| हन्त्री | ५. | नष्ट करने वाली और | रुजाम् | १३. | रोग को |
| अलम् | ६. | सम्पूर्ण | यत् | ११. | जो |
| विश्वमङ्गलम् । | ७. | विश्व का मङ्गल करने के लिये है | निषूदनम् ॥ | १४. | सर्वथा निर्मूल कर दो |

श्लोकार्थ—हे प्यारे श्याम सुन्दर ! तुम्हारी यह अभिव्यक्ति व्रज वनवासियों के दुःख-ताप को नष्ट करने वाली और सम्पूर्ण विश्व का मङ्गल करने के लिये है । और हमारा हृदय तुम्हारे प्रति लालसा से भर रहा है । अतः थोड़ी सी ऐसी ओषधि दे दो । जो निजजनों के हृदय रोग को सर्वथा निर्मूल कर दे ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रियदधीमहि कर्कशेषु।**
**तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१९॥**

पदच्छेद—

यत् ते सुजात चरण अम्बुरुहम् स्तनेषु,
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेन अटवीम् अटसि तत् व्यथते न किंस्वित्,
कूर्प आदिभिः भ्रमति धीः भवत् आयुषाम् नः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत् | २. | क्योंकि | तेन | १३. | उन्हीं कोमल चरणों से तुम |
| ते | ३. | तुम्हारे | अटवीम् | १५. | वन में |
| सुजात | ६. | सुकुमार हैं | अटसि | १६. | विचरण करते हो तो |
| चरण | ४. | चरण | तत् | १२. | तब |
| अम्बुरुहम् | ५. | कमल से भी | व्यथते | १७. | हमारा मन व्यथित |
| स्तनेषु | ८. | स्तनों पर | न किंस्वित् | १८. | क्यों नहीं होगा हमारी |
| भीताः | ११. | डर रही हैं | कूर्प आदिभिः | १४. | कङ्कड़ पत्थर आदि से युक्त |
| शनैः | ९. | उन्हें धीरे-धीरे | भ्रमति | २०. | भ्रमित हो रही हैं क्योंकि |
| प्रिय | १. | हे प्राण प्यारे ! श्यामसुन्दर | धीः | १९. | बुद्धि भी |
| दधीमहि | १०. | रखते हुये भी | भवत् | २२. | आपके लिये ही है |
| कर्कशेषु। | ७. | हम अपने कठोर | आयुषाम् नः ॥ | २१. | हमारा जीवन तो |

श्लोकार्थ—हे प्राणप्यारे ! श्यामसुन्दर ! क्योंकि तुम्हारे चरण कमल से भी सुकुमार हैं। हम अपने कठोर स्तनों पर उन्हें धीरे-धीरे रखते हुये भी डर रही हैं। तब उन्हीं कोमल चरणों से तुम कङ्कड़ पत्थर आदि से युक्त वन में विचरण करते हो। तो हमारा मन व्यथित क्यों नहीं होगा। हमारी बुद्धि भ्रमित हो रही है। क्योंकि हमारा जीवन तो आपके लिये ही है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां गोपीगीतं नाम एकत्रिंशः अध्यायः ॥३१॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## द्वात्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च चित्रधा ।
रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसाः ॥१॥

पदच्छेद— इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यः च चित्रधा ।
रुरुदुः सुस्वरम् राजन् कृष्ण दर्शन लालसाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | इस प्रकार | रुरुदुः | १२. | रोने लगीं |
| गोप्यः | ३. | भगवान् की प्यारी गोपियाँ | सुस्वरम् | ११. | करुणाजनक स्वर में |
| प्रगायन्त्यः | ५. | सस्वर गाने | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| प्रलपन्त्यः | ७. | प्रलाप करने लगीं तथा | कृष्ण | ८. | श्रीकृष्ण के |
| च | ६. | और | दर्शन | ९. | दर्शन की |
| चित्रधा । | ४. | अनेक प्रकार से | लालसाः ॥ | १०. | लालसा से वे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार भगवान् की प्यारी गोपियाँ अनेक प्रकार से सस्वर गाने और प्रलाप करने लगीं । श्रीकृष्ण के दर्शन की लालसा से वे करुणा जनक स्वर में रोने लगीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥२॥

पदच्छेद— तासाम् आविरभूत् शौरिः स्मयमान मुख अम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षात् मन्मथ मन्मथः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तासाम् | ५. | उन गोपियों के मध्य | पीताम्बर | ७. | वे पीताम्बर |
| आविरभूत् | ६. | प्रकट हो गये | धरः | ८. | धारण किये थे |
| शौरिः | ४. | भगवान् श्रीकृष्ण | स्रग्वी | ९. | गले में वन माला थी |
| स्मयमान | १. | मन्द-मन्द मुसकान युक्त | साक्षात् | १०. | उनका रूप साक्षात् |
| मुख | २. | मुख | मन्मथ | ११. | कामदेव के भी |
| अम्बुजः । | ३. | कमल वाले | मन्मथः ॥ | १२. | मन को हरने वाला था |

श्लोकार्थ—मन्द-मन्द मुसकान युक्त मुख वाले भगवान् श्रीकृष्ण उन गोपियों के मध्य प्रकट हो गये । वे पीताम्बर धारण किये थे । गले में वनमाला थी । उनका रूप साक्षात् कामदेव के भी मन को हरने वाला था ॥

## तृतीयः श्लोकः

**तं विलोक्यागतं प्रेष्ठं प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽबलाः ।**
**उत्तस्थुर्युगपत् सर्वास्तन्वः प्राणमिवागतम् ॥३॥**

पदच्छेद— तम् विलोक्य आगतम् प्रेष्ठम् प्रीति उत्फुल्लदृशः अबलाः ।
उत्तस्थुः युगपत् सर्वाः तन्वः प्राणम् इव आगतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | उन | उत्तस्थुः | १०. | उठ खड़ी हुई |
| विलोक्य | ४. | देखकर | युगपत् | ९. | एक साथ ही |
| आगतम् | २. | आये हुये | सर्वाः | ८. | वे सब |
| प्रेष्ठम् | ३. | परम प्रियतम श्रीकृष्ण | तन्वः | १४. | शरीर में स्फूर्ति आ जाती है |
| प्रीति | ५. | प्रसन्नता के कारण | प्राणम् | १२. | प्राणों का |
| उत्फुल्लदृशः | ७. | नेत्र खिल उठे | इव | ११. | जैसे |
| अबलाः । | ६. | गोपियों के | आगतम् ॥ | १३. | सञ्चार हो जाने से |

श्लोकार्थ—उन आये हुये परम प्रियतम श्रीकृष्ण को देखकर प्रसन्नता के कारण गोपियों के नेत्र खिल उठे । वे सब एक साथ ही उठ खड़ी हुई । जैसे प्राणों का सञ्चार हो जाने से शरीर में स्फूर्ति आ जाती है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**काचित् कराम्बुजं शौरेर्जगृहेऽञ्जलिना मुदा ।**
**काचिद् दधार तद्बाहुमंसे चन्दनरूषितम् ॥४॥**

पदच्छेद — काचित् कर अम्बुजम् शौरेः जगृहे अञ्जलिना मुदा ।
काचित् दधार तत् बाहुम् अंसे चन्दन रूषितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काचित् | १. | एक गोपी ने | काचित् | ८. | दूसरी गोपी ने |
| कर | ४. | कर | दधार | १४. | रख लिया |
| अम्बुजम् | ५. | कमल को | तत् | ९. | उनके |
| शौरेः | ३. | श्रीकृष्ण के | बाहुम् | १२. | भुजदण्ड को |
| जगृहे | ७. | ले लिया तथा | अंसे | १३. | अपने कन्धे पर |
| अञ्जलिना | ६. | अपने दोनों हाथों में | चन्दन | १०. | चन्दन |
| मुदा । | २. | बड़े प्रेम से | रूषितम् ॥ | ११. | चर्चित |

श्लोकार्थ—एक गोपी ने बड़े प्रेम से श्रीकृष्ण के कर कमल को अपने दोनों हाथों में ले लिया तथा दूसरी गोपी ने उनके चन्दन चर्चित भुज दण्ड को अपने कन्धे पर रख लिया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**काचिदञ्जलिनागृह्णात्तन्वी ताम्बूलचर्वितम् ।**
**एका तदङ्घ्रिकमलं सन्तप्ता स्तनयोरधात् ॥५॥**

पदच्छेद— काचित् अञ्जलिना अगृह्णात् तन्वी ताम्बूल चर्वितम् ।
एका तत् अङ्घ्रि कमलम् सन्तप्ता स्तनयोः अधात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| काचित् | १. तीसरी | | एका | ७. चौथी गोपी ने |
| अञ्जलिना | ५. अपने हाथों में | | तत् अङ्घ्रि | ८. उनके चरण |
| अगृह्णात् | ६. ले लिया (तथा) | | कमलम् | ९. कमलों को |
| तन्वी | २. सुन्दरी ने | | सन्तप्ता | १०. अपने सन्तप्त |
| ताम्बूल | ४. पान | | स्तनयोः | ११. वक्षः स्थल पर |
| चर्वितम् । | ३. भगवान् का चबाया हुआ | | अधात् ॥ | १२. रख लिया |

श्लोकार्थ—और तीसरी सुन्दरी ने भगवान् का चबाया हुआ पान अपने हाथों में ले लिया । तथा चौथी गोपी ने उनके चरण कमलों को अपने सन्तप्त वक्षः स्थल पर रख लिया ॥

## षष्ठः श्लोकः

**एका भ्रुकुटिमाबध्य प्रेमसंरम्भविह्वला ।**
**घ्नतीवैक्षत् कटाक्षेपैः संदष्टदशनच्छदा ॥६॥**

पदच्छेद— एका भ्रुकुटिम् आबध्य प्रेमसंरम्भ विह्वला ।
घ्नतीव ऐक्षत् कटाक्षैपैः संदष्ट दशनचछदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| एका | १. पाँचवीं गोपी | | घ्नतीव | ११. बींधती हुई उनकी ओर |
| भ्रुकुटिम् | ५. भौंहें | | ऐक्षत् | १२. ताकने लगी |
| आबध्य | ६. चढ़ाकर | | कटाक्षैपैः | १०. अपने कटाक्ष बाणों से |
| प्रेम | २. प्रणय | | सन्दष्ट | ९. दबाकर |
| संरम्भ | ३. कोप से | | दशन | ७. दाँतों से |
| विह्वला । | ४. विह्वल होकर | | च्छदा ॥ | ८. ओठ |

श्लोकार्थ—पाँचवीं गोपी प्रणय कोप से विह्वल होकर-भौंहें चढ़ाकर दाँतों से ओठ दबाकर अपने कटाक्ष बाणों से बींधती हुई उनकी ओर ताकने लगी ॥

## सप्तमः श्लोकः

अपरानिमिषद्दृग्भ्यां जुषाणा तन्मुखाम्बुजम् ।
आपीतमपि नातृप्यत् सन्तस्तच्चरणं यथा ॥७॥

पदच्छेद— अपरा अनिमिषद् दृग्भ्याम् जुषाणा तत् मुख अम्बुजम् ।
आपीतम् अपि न अतृप्यत् सन्तः तत् चरणम् यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| अपरा | १. छठी गोपी | आपीतम् | ८. | परन्तु उसका पान करते हुये |
| अनिमिषद् | २. अपने निर्निमेष | अपि | १०. | नहीं हुई |
| दृग्भ्याम् | ३. नयनों से | न अतृप्यत् | ९. | वह वैसे ही तृप्त |
| जुषाणा | ७. मकरन्द रस पान करने लगी | सन्तः | १२. | सन्तजन |
| तत् | ४. उनके | तत् | १३. | उनके |
| मुख | ५. मुख | चरणम् | १४. | चरणों के दर्शन से तृप्त नहीं होते हैं |
| अम्बुजम् । | ६. कमल का | यथा ॥ | ११. | जैसे |

श्लोकार्थ—छठी गोपी अपने निर्निमेष नयनों से उनके मुख कमल का मकरन्द रस पान करने लगीं। परन्तु उसका पान करते हुये वह वैसे ही तृप्त नहीं हुई जैसे सन्त जन उनके चरणों के दर्शन से तृप्त नहीं होते हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

तं काचिन्नेत्ररन्ध्रेण हृदिकृत्य निमील्य च ।
पुलकाङ्ग्युपगुह्यास्ते योगीवानन्दसम्प्लुता ॥८॥

पदच्छेद— तम् काचित् नेत्ररन्ध्रेण हृदि कृत्य निमील्य च ।
पुलक अङ्ग उपगुह्य आस्ते योगी इव आनन्द सम्प्लुता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तम् | ४. भगवान् को | पुलक अङ्ग | ९. | उसका शरीर पुलकित हो गया और |
| काचित् | १. सातवीं गोपी | उपगुह्य | ८. | भगवान् का आलिङ्ग करने से |
| नेत्र | २. नेत्रों के | आस्ते | १४. | हो गयीं |
| रन्ध्रेण | ३. मार्ग से | योगी | १०. | वह योगियों के |
| हृदि | ५. अपने हृदय में | इव | ११. | समान |
| कृत्य | ६. ले गयीं और | आनन्द | १२. | परमानन्द में |
| निमील्य च । | ७. फिर उसने आँखें बन्द कर लीं | सम्प्लुता ॥ | १३. | मग्न |

श्लोकार्थ—सातवीं गोपी नेत्रों के मार्ग से भगवान् को अपने हृदय में ले गयी। और उसने आँखें बन्द कर लीं। भगवान का आलिङ्गन करने से उसका शरीर पुलकित हो गया और वह योगियों के समान परमानन्द में मग्न हो गयी ॥

## नवमः श्लोकः

**सर्वास्ताः केशवालोकपरमोत्सवनिर्वृताः ।**
**जहुर्विरहजं तापं प्राज्ञं प्राप्य यथा जनाः ॥९॥**

पदच्छेद— सर्वास्ताः केशव आलोक परम उत्सव निर्वृताः ।
जहुः विरहजम् तापम् प्राज्ञम् प्राप्य यथा जनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वास्ताः | ३. | उन समस्त गोपियों को | जहुः | ९. | समाप्त हो गया |
| केशव | १. | श्रीकृष्ण के | विरहजम् | ७. | श्रीकृष्ण के विरह से उत्पन्न |
| आलोक | २. | दर्शन से | तापम् | ८. | सन्ताप वैसे ही |
| परम | ४. | परम आनन्द और | प्राज्ञम् | ११. | ज्ञानी सन्त को |
| उत्सव | ५. | उल्लास | प्राप्य | १२. | पाकर संसार की पीडा से मुक्त हो जाते हैं |
| निर्वृताः | ६. | प्राप्त हुआ | यथा जनाः ॥ | १०. | जैसे मुमुक्षु जन |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के दर्शन से उन समस्त गोपियों को परम आनन्द और उल्लास प्राप्त हुआ। श्रीकृष्ण के विरह से उत्पन्न सन्ताप वैसे ही समाप्त हो गया जैसे मुमुक्षुजन ज्ञानी सन्त को पाकर संसार की पीडा से मुक्त हो जाते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**ताभिर्विधूतशोकाभिर्भगवानच्युतो वृतः ।**
**व्यरोचताधिकं तात पुरुषः शक्तिभिर्यथा ॥१०॥**

पदच्छेद— ताभिः विधूत शोकाभिः भगवान् अच्युतः वृतः ।
व्यरोचत अधिकम् तात पुरुषः शक्तिभिः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताभिः | ४. | उन गोपियों से | व्यरोचत | ९. | शोभायमान हो रहे थे |
| विधूत | ३. | मुक्त हुईं | अधिकम् | ८. | वैसे ही अधिक |
| शोकाभिः | २. | विरह व्यथा से | तात | १. | हे परीक्षित् |
| भगवान् | ६. | भगवान् | पुरुषः | १२. | परमेश्वर शोभायमान होते हैं |
| अच्युतः | ७. | श्याम सुन्दर | शक्तिभिः | ११. | शक्तियों से सेवित |
| वृतः । | ५. | घिरे हुये | यथा ॥ | १०. | जैसे |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! विरह व्यथा से मुक्त हुईं उन गोपियों से घिरे हुये भगवान् श्याम सुन्दर वैसे ही अधिक शोभायमान हो रहे थे, जैसे शक्तियों से सेवित परमेश्वर शोभायमान होते हैं ॥

# एकादशः श्लोकः

ताः समादाय कालिन्द्या निर्विश्य पुलिनं विभुः ।
विकसत्कुन्दमन्दारसुरभ्यनिलषट्पदम् ॥११॥

पदच्छेद— ताः समादाय कालिन्द्याः निर्विश्य पुलिनम् विभुः ।
विकसत् कुन्द मन्दार सुरभि अनिल षट्पदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः | २. उन्हें | विकसत् | ७. उस समय खिले हुये |
| समादाय | ३. लेकर | कुन्द | ८. कुन्द और |
| कालिन्द्याः | ४. यमुना जी के | मन्दार | ९. मन्दार के पुष्पों की |
| निर्विश्य | ६. प्रवेश किया | सुरभि | १०. सुगन्ध से युक्त |
| पुलिनम् | ५. पुलिन में | अनिल | ११. वायु के कारण |
| विभुः । | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | षट्पदम् ॥ | १२. मतवाले भौंरे गूंज रहे थे |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें लेकर यमुना जी के पुलिन में प्रवेश किया । उस समय खिले हुये कुन्द और मन्दार के पुष्पों की सुगन्ध से युक्त मतवाले भौंरे गूंज रहे थे ॥

# द्वादशः श्लोकः

शरच्चन्द्रांशुसन्दोहध्वस्तदोषातमः शिवम् ।
कृष्णाया हस्ततरलाचितकोमलबालुकम् ॥१२॥

पदच्छेद— शरत् चन्द्रांशु सन्दोह ध्वस्त दोषा तमः शिवम् ।
कृष्णायाः हस्त तरल अचित कोमल बालुकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शरत् | १. शरद् पूर्णिमा के | कृष्णायाः | ६. यमुना जी ने |
| चन्द्रांशु | २. चन्द्र की चाँदनी ने | हस्त | ८. हाथों से |
| सन्दोह | ४. समूह को | तरल | ७. अपनी चञ्चल तरंगों के |
| ध्वस्त | ५. नष्ट कर दिया था | आचित | १२. रंग-मँच बना दिया था |
| दोषा तमः | ३. रात के अन्धकार | कोमल | १०. सुकोमल |
| शिवम् । | ११. सुखकर | बालुकम् ॥ | ९. बालुका का |

श्लोकार्थ—शरद् पूर्णिमा के चन्द्र की चाँदनी ने रात के अन्धकार समूह को नष्ट कर दिया था । यमुना जी ने अपनी चञ्चल तरंगों के हाथों और बालुका का सुकोमल रंगमँच बना दिया था ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**तद्दर्शनाह्लादविधूतहृद्रुजो मनोरथान्तं श्रुतयो यथा ययुः ।**
**स्वैरुत्तरीयैः कुचकुङ्कुमाङ्कितैरचीक्लृपन्नासनमात्मबन्धवे ॥१३॥**

पदच्छेद — तत् दर्शन आह्लाद विधूत हृद् रुजः मनोरथ अन्तम् श्रुतयः यथा ययुः ।
स्वैः उत्तरीयैः कुचकुङ्कुम अङ्कितैः अचीक्लृपन् आसनम् आत्मबन्धवे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तत् दर्शन** | १. उन श्रीकृष्ण के दर्शन के | ययुः | ८. कृतकृत्य हो जाती हैं । |
| **आह्लाद** | २. आनन्द से | स्वैः उत्तरीयैः | ११. अपनी ओढ़नी को |
| **विधूत** | ४. शान्त हो गयी | कुचकुङ्कुम | ९. वक्षः स्थल पर लगी केसर |
| **हृद् रुजः** | ३. उन गोपियों के हृदय की पीडा वैसे ही | अङ्कितैः | १०. से चिह्नित |
| **मनोरथ** | ६. कामनाओं से | अचीक्लृपन् | १४. बिछा दिया |
| **अन्तम्** | ७. परे पहुँच कर | आसनम् | १३. बैठने के लिये |
| **श्रुतयः यथा ।** | ५. जैसे श्रुतियाँ अन्ततः | आत्मबन्धवे ॥ | १२. अपने प्यारे श्याम सुन्दर के |

श्लोकार्थ—उन श्रीकृष्ण के दर्शन के आह्लाद से उन गोपियों के हृदय की पीड़ा वैसे ही शान्त हो गयी जैसे श्रुतियाँ अन्ततः कामनाओं से परे पहुँच कर कृतकृत्य हो जाती हैं । वक्षः स्थल पर लगी केसर से चिह्नित अपनी ओढ़नी को अपने प्यारे श्याम सुन्दर के बैठने के लिये बिछा दिया ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**तत्रोपविष्टो भगवान् स ईश्वरो योगेश्वरान्तर्हृदि कल्पितासनः ।**
**चकास गोपीपरिषद्गतोऽर्चितस्त्रैलोक्यलक्ष्म्येकपदं वपुर्दधत् ॥१४॥**

पदच्छेद— तत्र उपविष्टः भगवान् सः ईश्वरः योगेश्वर अन्तः हृदि कल्पित आसनः ।
चकास गोपी परिषद् गतः अर्चितः त्रैलोक्य लक्ष्मी एक पदम् वपुः दधत् ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| **शब्दार्थ—तत्र** | ६. गोपियों की ओढ़नी पर | चकास | ८. शोभायमान हो रहे थे |
| **उपविष्टः** | ७. बैठे हुये अत्यन्त | गोपीपरिषद् | १२. गोपियों के समूह के |
| **भगवान् सः ईश्वरः** | ५. वे भगवान् श्याम सुन्दर | गतः | १३. मध्य उनके द्वारा |
| **योगेश्वर** | १. बड़े-बड़े योगीश्वरों के | अर्चितः | १४. पूजित हो रहे थे |
| **अन्तः हृदि** | २. हृदय के अन्दर | त्रैलोक्य लक्ष्मी | ९. तीनों लोकों का ऐश्वर्य |
| **कल्पित** | ३. कल्पित किये हुए | एक पदम् | १०. जिनका एक अंशमात्र है |
| **आसनः ।** | ४. आसन पर बैठने वाले | वपुः दधत् ॥ | ११. ऐसे सुन्दर शरीर को धारण किये हुये वे |

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े योगीश्वरों के हृदय के अन्दर कल्पित किये हुये आसन पर बैठने वाले वे भगवान् श्याम सुन्दर गोपियों की ओढ़नी पर बैठे हुये अत्यन्त शोभायमान हो रहे थे । तीनों लोकों का ऐश्वर्य जिनका एक अंशमात्र है, ऐसे सुन्दर शरीर को धारण किये हुये वे गोपियों के समूह के मध्य उनके द्वारा पूजित हो रहे थे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**सभाजयित्वा तमनङ्गदीपनं सहासलीलेक्षणविभ्रमभ्रुवा।**
**संस्पर्शनेनाङ्ककृताङ्घ्रिहस्तयोः संस्तुत्य ईषत्कुपिता बभाषिरे ॥१५॥**

पदच्छेद— सभाजयित्वा तम् अनङ्ग दीपनम् सहास लीला ईक्षण विभ्रम भ्रुवा।
संस्पर्शनेन अङ्क कृत अङ्घ्रि हस्तयोः संस्तुत्य ईषत् कुपिताः बभाषिरे।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सभाजयित्वा | ७. सम्मान किया | संस्पर्शनेन | ११. | और वे उन्हें दबाने लगीं |
| तम् | ३. उन श्री कृष्ण का | अङ्ककृत | १०. | अपनी गोद में रख लिया |
| अनङ्ग | १. प्रेम और आकांक्षा को | अङ्घ्रि | ८. | किसी ने उनके चरणों को |
| दीपनम् | २. उभाड़ने वाले | हस्तयोः | ९. | किसी ने हाथों को |
| सहास | ४. गोपियों ने मन्द मुसकान, | संस्तुत्य | १२. | उनकी प्रशंसा करती हुई |
| लीलाईक्षण | ५. विलास पूर्ण चितवन और | ईषत्कुपिता | १३. | तनिक रूठ कर |
| विभ्रमभ्रुवा। | ६. तिरछी भौंहों से | बभाषिरे ।। | १४. | कहने लगीं |

श्लोकार्थ—प्रेम और आकांक्षा को उभाड़ने वाले उन श्रीकृष्ण का गोपियों ने मन्द मुसकान, विलास भरी चितवन और तिरछी भौंहों से सम्मान किया। किसी ने उनके चरणों को और किसी ने उनके हाथों को अपनी गोद में रख लिया। और वे उन्हें दबाने लगीं। तथा उनकी प्रशंसा करती हुई वे तनिक रूठकर कहने लगीं ॥

## षोडशः श्लोकः

गोप्य ऊचुः—**भजतोऽनुभजन्त्येक एक एतद्विपर्ययम्।**
**नोभयांश्च भजन्त्येक एतन्नो ब्रूहि साधु भोः ॥१६॥**

पदच्छेद— भजतः अनुभजन्ति एके एके एतद् विपर्ययम्।
न उभयान् च भजन्ति एके एतत् नः ब्रूहि साधु भोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| भजतः | ३. प्रेम करने वालों से ही | च | ८. | और |
| अनुभजन्ति | ४. प्रेम करते हैं | भजन्ति | ११. | करते हैं |
| एके | २. कुछ लोग तो | एके | ९. | कुछ लोग तो |
| एके | ५. कुछ लोग | एतत् | १२. | इनमें आपको |
| एतत् | ६. इसके | नः ब्रूहि | १४. | हमें बताइये |
| विपर्ययम्। | ७. विपरीत आचरण करते हैं | साधु | १३. | कौन अच्छा लगता है यह |
| न उभयान् | १०. उन दोनों से ही प्रेम नहीं | भोः ।। | १. | हे नट नागर! |

श्लोकार्थ—हे नट नागर! कुछ लोग तो प्रेम करने वालों से ही प्रेम करते हैं। कुछ लोग इसके विपरीत आचरण करते हैं। और कुछ लोग उन दोनों से ही प्रेम नहीं करते हैं। इनमें आपको कौन अच्छा लगता है। यह हमें बताइये ॥

## सप्तदशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— मिथो भजन्ति ये सख्यः स्वार्थैकान्तोद्यमा हि ते ।
न तत्र सौहृदं धर्मः स्वार्थार्थं तद्धि नान्यथा ॥१७॥

पदच्छेद— मिथः भजन्ति ये सख्यः स्वार्थ एकान्त उद्यमाः हि ते ।
न तत्र सौहृदम् धर्मः स्वार्थ अर्थम् तत् हि न अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मिथः | २. प्रेम करने पर | न तत्र | ८. उनमें न तो |
| भजन्ति | ३. प्रेम करते हैं | सौहृदम् | ९. सौहार्द है |
| ये सख्यः | १. मेरी प्रिय सखियो ! जो लोग | धर्मः | १०. न धर्म है |
| स्वार्थ | ७. स्वार्थ को लेकर है | स्वार्थ | १२. स्वार्थ को |
| एकान्त | ५. सारा | अर्थम् | १३. लेकर ही है |
| उद्यमाः | ६. उद्योग | तत् हि | ११. उनका प्रेम |
| हि ते । | ४. उनका तो | न अन्यथा ॥ | १४. इसके अतिरिक्त कोई प्रयोजन नहीं है |

श्लोकार्थ—मेरी प्रिय सखियो ! जो लोग प्रेम करने पर प्रेम करते हैं उनका तो सारा उद्योग स्वार्थ को लेकर है । उनमें न तो सौहार्द्र है । न धर्म है । उनका प्रेम स्वार्थ को लेकर ही है । इसके अतिरिक्त कोई प्रयोजन नहीं है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

भजन्त्यभजतो ये वै करुणाः पितरो यथा ।
धर्मो निरपवादोऽत्र सौहृदं च सुमध्यमाः ॥१८॥

पदच्छेद— भजन्ति अभजतः ये वै करुणाः पितरः यथा ।
धर्मः निरपवादः अत्र सौहृदम् च सुमध्यमाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भजन्ति | ७. प्रेम करते हैं | धर्मः | १२. धर्म भी होता है |
| अभजतः | ६. प्रेम न करने वालों से | निरपवादः | ११. निश्छल |
| ये वै | ५. वैसे ही जो लोग | अत्र | ८. उनके व्यवहार में |
| करुणाः | ४. करुणाशील होते हैं | सौहृदम् | ९. सौहार्द होता है |
| पितरः | ३. माता-पिता स्वभाव से ही | च | १०. और |
| यथा । | २. जिस प्रकार | सुमध्यमाः ॥ | १. हे सुन्दरियो ! |

श्लोकार्थ—हे सुन्दरियो ! जिस प्रकार माता-पिता स्वभाव से ही करुणाशील होते हैं वैसे ही जो लोग प्रेम न करने वालों से प्रेम करते हैं, उनके व्यवहार में सौहार्द होता है । और निश्छल धर्म भी होता है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**भजतोऽपि न वै केचिद् भजन्त्यभजतः कुतः ।**
**आत्मारामा ह्याप्तकामा अकृतज्ञा गुरुद्रुहः ॥१९॥**

पदच्छेद— भजतः अपि न वै केचित् भजन्ति अभजतः कुतः ।
आत्मारामा हि आप्त कामाः अकृतज्ञाः गुरु द्रुहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भजतः अपि | २. प्रेम करने वालों से भी | आत्मारामाः | ७. अपने आप में ही मस्त रहने वाले |
| न वै | ३. प्रेम नहीं करते तब | हि आप्त | ८. पूर्ण |
| केचित् | १. कुछ लोग जब | कामाः | ९. काम |
| भजन्ति | ६. प्रेम करेंगे । ऐसे लोग | अकृतज्ञाः | १०. उपकार न मानने वाले और |
| अभजतः | ४. प्रेम न करने वालों से | गुरु | ११. गुरु जनों से भी |
| कुतः । | ५. कैसे | द्रुहः ॥ | १२. द्रोह करने वाले होते हैं |

श्लोकार्थ—कुछ लोग जब प्रेम करने वालों से भी प्रेम नहीं करते, तब प्रेम न करने वालों से कैसे प्रेम करेंगे । ऐसे लोग अपने आप में ही मस्त रहने वाले, पूर्ण काम, उपकार न मानने वाले और गुरुजनों से भी द्रोह करने वाले होते हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**नाहं तु सख्यो भजतोपि जन्तून् भजाम्यमीषामनुवृत्तिवृत्तये ।**
**यथाधनो लब्धधने विनष्टे तच्चिन्तयान्यन्निभृतो न वेद ॥२०॥**

पदच्छेद — न अहम् तु सख्यः भजतः अपि जन्तून् भजामि अमीषाम् अनुवृत्ति वृत्तये ।
यथः अधनः लब्धधने विनष्टे तत् चिन्तया अन्य निभृतः न वेद ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ७. प्रेम नहीं | यथा | ९. जैसे |
| अहम् तु सख्यः | १. हे गोपियों ! मैं तो | अधनः | १०. निर्धन व्यक्ति को |
| भजतः | २. प्रेम करने वाले | लब्धधने | ११. कभी बहुत साधन मिल जाय और |
| अपि जन्तून् | ३. प्राणियों से भी | विनष्टे | १२. फिर खो जाय तो |
| भजामि | ८. करता (क्योंकि) | तत् | १३. उस |
| अमीषाम् | ४. उनकी | चिन्तया | १४. चिन्ता से दुःखी |
| अनुवृत्ति | ६. अपने में लगाने के लिये | अन्य निभृतः | १५. भरा होने के कारणअन्य कुछ |
| वृत्तये । | ५. चित्त वृत्ति को | न वेद ॥ | १६. नहीं जानता है |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! मैं तो प्रेम करने वाले प्राणियों से भी उनकी चित्त वृत्ति को अपने में लगाने के लिये प्रेम नहीं करता । क्योंकि जैसे निर्धन व्यक्ति को कभी बहुत धन मिल जाय और फिर खो जाय तो उस खोये हुये धन की चिन्ता से भरा होने के कारण अन्य कुछ नहीं जानता है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**एवं मदर्थोज्झितलोकवेदं स्वानां हि वो मय्यनुवृत्तयेऽबलाः ।**
**मया परोक्षं भजता तिरोहितं मासूयितुं मार्हथ तत् प्रियं प्रियाः ॥२१॥**

पदच्छेद— एवम् मद् अर्थ उज्झित लोक वेदं स्वानाम् हि वः मयि अनुवृत्तये अबलाः ।
मया परोक्षम् भजता तिरोहितम् माअसूयितुम् मा अर्हथ तत् प्रियम् प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ३. | इस प्रकार | मया परोक्षम् | ९. | इसलिये मैं परोक्षरूप से |
| मद् अर्थः | ४. | मेरे लिये | भजता | १०. | तुमसे प्रेम करता हुआ |
| उज्झित | ७. | छोड़ दिया है अतः | तिरोहितम् | ११. | छिप गया था |
| लोक वेदम् | ५. | लोक मर्यादा वेद मार्ग और | माअसूयितुम् | १२. | मेरे प्रेम में दोष निकालना |
| स्वानाम् | ६. | सगे सम्बन्धियों को भी | माअर्हथ | १३. | उचित नहीं है |
| हि वः | २. | तुम लोगों ने | तत् | १४. | अतः |
| मयि अनुवृत्तये | ८. | तुम्हारी चित्त वृत्ति मुझमें लगी रहे | प्रियम् | १६. | मैं तुम्हारा प्यारा हूँ |
| अबलाः । | १. | हे गोपियो ! | प्रियाः ॥ | १५. | तुम मेरी प्यारी हो |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! तुम लोगों ने इस प्रकार मेरे लिये लोक मर्यादा, वेद मार्ग और सगे सम्बन्धियों को भी छोड़ दिया है । अतः तुम्हारी चित्तवृत्ति मुझमें लगी रहे । इसलिये मैं परोक्षरूप से तुम से प्रेम करता हुआ छिप गया था । मेरे प्रेम में दोष निकालना उचित नहीं है । अतः तुम मेरी प्यारी हो और मैं तुम्हारा प्यारा हूँ ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः ।**
**या माभजन् दुर्जरगेहशृङ्खलाः संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना ॥२२॥**

पदच्छेद— न पारये अहम् निरवद्य संयुजाम् स्वसाधु कृत्यम् विबुध आयुषा अपि वः ।
याः मा अभजन् दुर्जर गेह शृङ्खलाः संवृश्च्य तद् वः प्रतियातु साधुना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न पारये | ११. | उपकार नहीं चुका सकता हूँ | याः माअभजन् | २. | जो यह प्रेम में |
| अहम्निरवद्य | ६. | मैं निर्मल | दुर्जरगेह | ३. | कठिन घर गृहस्थी की |
| संयुजाम् | ७. | संयोगवाली तुम्हारा | शृङ्खलाः | ४. | बेड़ियों को |
| स्व साधु | ८. | अपने शुभ | संवृश्च्य | ५. | तोड़ दिया है तो |
| कृत्यम् विबुध | ९. | कार्यों से अनन्त | तत् वः | १२. | इसलिये तुम लोग |
| आयुषा अपि | १०. | वर्षों में भी | प्रतियातु | १४. | मुझे उऋण कर सकती हो |
| वः । | १. | तुमने | साधुना ॥ | १३. | अपने स्वभाव से ही सौम्य |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! तुमने जो यह प्रेम में कठिन घर गृहस्थी की बेड़ियों को तोड़ दिया है तो मैं निर्मल संयोग वाली तुम्हारा अपने शुभ कार्यों से अनन्त वर्षों में भी उपकार नहीं चुका सकता हूँ । इसलिये तुम लोग अपने सौम्य स्वभाव से ही मुझे उऋण कर सकती हो ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां
गोपीसान्त्वनं नाम द्वात्रिंशः अध्यायः ॥३२॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## त्रयस्त्रिंशः अध्यायः

## प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं भगवतो गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः ।
जहुर्विरहजं तापं तदङ्गोपचिताशिषः ॥१॥

पदच्छेद— इत्थम् भगवतः गोप्यः श्रुत्वा वाचः सुपेशलाः ।
जहुः विरहजम् तापम् तत् अङ्ग उपचित आशिषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | २. | इस प्रकार | जहुः | ९. | मुक्त हो गयीं (और) |
| भगवतः | ३. | भगवान् की | विरहजम् | ७. | विरह जन्य |
| गोप्यः | १. | गोपियाँ | तापम् | ८. | ताप से भी |
| श्रुत्वा | ६. | सुनकर | तत् अङ्ग | १०. | उनके अङ्ग सङ्ग से |
| वाचः | ५. | वाणी | उपचित | ११. | सफल |
| सुपेशलाः । | ४. | प्रेम भरी सुमधुर | आशिषः ॥ | १२. | मनोरथ हो गयीं |

श्लोकार्थ—गोपियाँ इस प्रकार भगवान् की प्रेम भरी सुमधुर वाणी सुनकर विरह जन्य ताप से मुक्त हो गयीं और उनके अङ्ग सङ्ग से सफल मनोरथ हो गयीं ॥

## द्वितीयः श्लोकः

तत्रारभत गोविन्दो रासक्रीडामनुव्रतैः ।
स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योन्याबद्धबाहुभिः ॥२॥

पदच्छेद— तत्र आरभत गोविन्दः रासक्रीडाम् अनुव्रतैः ।
स्त्री रत्नैः अन्वितः प्रीतैः अन्योन्य बद्ध बाहुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | ८. | यमुना तट पर | स्त्रीरत्नैः | २. | उन स्त्री रत्नों |
| आरभत | १२. | प्रारम्भ की | अन्वितः | ३. | के साथ |
| गोविन्दः | १. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | प्रीतैः | ९. | प्रेम पूर्वक |
| रास | १०. | रास | अन्योन्य | ४. | जो परस्पर |
| क्रीडाम् | ११. | क्रीडा | बद्ध | ६. | डाले खड़ी थीं तथा |
| अनुव्रतैः । | ७. | उनका अनुसरण करने वाली थीं | बाहुभिः ॥ | ५. | बाँह में बाँह |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उन स्त्री रत्नों के साथ जो परस्पर बाँह में बाँह डाले खड़ी थीं तथा अनुसरण करने वाली थीं। यमुना तट पर प्रेम पूर्वक रास क्रीडा प्रारम्भ की ॥

## तृतीयः श्लोकः

**रासोत्सवः सम्प्रवृत्तो गोपीमण्डलमण्डितः ।**
**योगेश्वरेण कृष्णेन तासां मध्ये द्वयोर्द्वयोः ।**
**प्रविष्टेन गृहीतानां कण्ठे स्वनिकटं स्त्रियः ॥३॥**

पदच्छेद— रास उत्सवः सम्प्रवृत्तः गोपी मण्डल मण्डितः ।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासाम् मध्ये द्वयोः द्वयोः ।
प्रविष्टेन गृहीतानाम् कण्ठे स्वनिकटम् स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रास | १४. रास | तासाम् | ३. | उन |
| उत्सवः | १५. लीला | मध्ये | ५. | मध्य में |
| सम्प्रवृत्तः | १६. प्रारम्भ की | द्वयोः द्वयोः । | ४. | दो-दो गोपियों के |
| गोपी | ११. इस प्रकार गोपियों के | प्रविष्टेन | ६. | प्रकट हो गये और |
| मण्डल | १२. समूह से | गृहीतानाम् | ८. | अपना हाथ डाल दिया तथा |
| मण्डितः । | १३. सुशोभित होकर उन्होंने | कण्ठे | ७. | उनके गले में |
| योगेश्वरेण | १. सम्पूर्ण योगों के स्वामी | स्वनिकटम् | १०. | अपने समीप ही समझा |
| कृष्णेन | २. श्रीकृष्ण | स्त्रियः ॥ | ९. | गोपियों ने उन्हें |

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण योगों के स्वामी श्रीकृष्ण उन दो-दो गोपियों के मध्य में प्रकट हो गये और उनके गले में अपना हाथ डाल दिया तथा गोपियों ने उन्हें अपने समीप ही समझा। इस प्रकार गोपियों के समूह से सुशोभित होकर उन्होंने रासलीला प्रारम्भ की ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**यं मन्येरन् नभस्तावद् विमानशतसङ्कुलम् ।**
**दिवौकसां सदाराणामौत्सुक्यापहृतात्मनाम् ॥४॥**

पदच्छेद— यम् मन्येरन् नभः तावद् विमानशत सङ्कुलम् ।
दिवौकसाम् सदाराणाम् औत्सुक्य अपहृत आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यम् | १. गोपियों ने जब उन्हें | दिवौकसाम् | ६. | सभी देवता अपनी |
| मन्येरन् | २. अपने निकट समझा | सदाराणाम् | ७. | पत्नियों के साथ आ गये |
| नभः तावद् | ३. तब तक आकाश में | औत्सुक्य | ८. | उत्सुकता के कारण |
| विमानशत | ४. शत-शत विमानों की | अपहृत | १०. | वश में नहीं था |
| सङ्कुलम् । | ५. भीड़ लग गयी | आत्मनाम् ॥ | ९. | उनका मन |

श्लोकार्थ—गोपियों ने जब उन्हें अपने निकट समझा तब-तक आकाश में शत-शत विमानों की भीड़ लग गयी। सभी देवता अपनी पत्नियों के साथ आ गये। उत्सुकता के कारण उनका मन वश में नहीं था ॥

## पञ्चमः श्लोकः

ततो दुन्दुभयो नेदुर्निपेतुः पुष्पवृष्टयः ।
जगुर्गन्धर्वपतयः सस्त्रीकास्तद्यशोऽमलम् ॥५॥

पदच्छेद— ततः दुन्दुभयः नेदुः निपेतुः पुष्प वृष्टयः ।
जगुः गन्धर्व पतयः सस्त्रीकाः तत् यशः अमलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब | जगुः | १२. | गान करने लगे |
| दुन्दुभयः | २. | दिव्य दुन्दुभियाँ | गन्धर्व पतयः | ७. | गन्धर्व पति |
| नेदुः | ३. | बज उठीं | सस्त्रीकाः | ८. | अपनी-अपनी पत्नियों के साथ |
| निपेतुः | ६. | होने लगी | तत् | ९. | भगवान् के |
| पुष्प | ४. | दिव्य पुष्पों की | यशः | ११. | यश का |
| वृष्टयः । | ५. | वर्षा | अमलम् ॥ | १०. | निर्मल |

श्लोकार्थ—तब दिव्य दुन्दुभियाँ बज उठीं। दिव्य पुष्पों की वर्षा होने लगी। गन्धर्व पति अपनी-अपनी पत्नियों के साथ भगवान् के निर्मल यश का गान करने लगे ॥

## षष्ठः श्लोकः

वलयानां नूपुराणां किङ्किणीनां च योषिताम् ।
सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ॥६॥

पदच्छेद— वलयानाम् नूपुराणाम् किङ्किणीनाम् च योषिताम् ।
सप्रियाणाम् अभूत् शब्दः तुमुलः रासमण्डले ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वलयानाम् | ४. | कलाइयों के कङ्गन | सप्रियाणाम् | २. | श्रीकृष्ण के साथ |
| नूपुराणाम् | ५. | पैरों के पायजेब | अभूत् | १०. | हो रही थी |
| किङ्किणीनाम् | ७. | करधनी के घुंघरुओं की | शब्दः | ८. | मधुर ध्वनि भी |
| च | ६. | और | तुमुलः | ९. | बड़े ही जोर से |
| योषिताम् । | ३. | गोपियों की | रासमण्डले ॥ | १. | रासमण्डल में |

श्लोकार्थ—उस समय रासमण्डल में गोपियों की कलाइयों के कङ्गन पैरों के पायजेब और करधनी के घुंघरुओं की मधुर ध्वनि भी बड़े ही जोर से हो रही थी ॥

## सप्तमः श्लोकः

**तत्रातिशुशुभे ताभिर्भगवान् देवकीसुतः।**
**मध्ये मणीनां हैमानां महामरकतो यथा ॥७॥**

पदच्छेद— तत्र अति शुशुभे ताभिः भगवान् देवकी सुतः।
मध्ये मणीनाम् हैमानाम् महा मरकतो यथा ॥

| शब्दार्थ— | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. यमुना की रेती पर | मध्ये | १०. | मध्य में |
| अति | ५. उसी प्रकार बड़ी | मणीनाम् | ९. | मणियों के |
| शुशुभे | ६. शोभा हुई | हैमानाम् | ८. | सुवर्ण |
| ताभिः | २. गोपियों के बीच में | महा | ११. | ज्योतिर्मयी |
| भगवान् | ४. भगवान् श्रीकृष्ण की | मरकतो | १२. | नीलमणि चमक रही हो |
| देवकी सुतः। | ३. देवकी नन्दन | यथा ॥ | ७. | जैसे |

श्लोकार्थ—यमुना की रेती पर गोपियों के बीच में देवकी नन्दन श्रीकृष्ण की उसी प्रकार बड़ी शोभा हुई जैसे सुवर्ण मणियों के मध्य में ज्योतिर्मयी नीलमणि चमक रही हो ॥

## अष्टमः श्लोकः

**पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासै-**
**र्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुण्डलैर्गण्डलोलैः।**
**स्विद्यन्मुख्यः कबररशनाग्रन्थयः कृष्णवध्वो**
**गायन्त्यस्तं तडित इव ता मेघचक्रे विरेजुः ॥८॥**

पदच्छेद—

पादन्यासैः भुजविधुतिभिः सस्मितैः भ्रूविलासैः भज्यत् मध्यैः चलत् कुचपटैः कुण्डलैः गण्ड लोलैः।
स्विद्यत् मुख्यः कबररशना ग्रन्थयः कृष्णवध्वः गायन्त्यः तम् तडित इव ताः मेघचक्रे विरेजुः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| पादन्यासैः | १. गोपियाँ पैर नचातीं | स्विद्यत् मुख्यः | ११. मुख पर पसीना आ गया था |
| भुजविधुतिभिः | २. हाथ घुमातीं | कबररशना | १२. केशों की चोटियाँ |
| सस्मितैः | ३. मुसकान सहित | ग्रन्थयः | १३. ढीली पड़ गईं थीं |
| भ्रू विलासैः | ४. भौंहें मटकातीं तो वे | कृष्णवध्वः | १४. श्रीकृष्ण की परम प्रेयसी |
| भज्यत्मध्यैः | ५. मानों कमर से टूट-टूट जातीं | गायन्त्यतम् | १६. गाती हुईं उन श्रीकृष्ण रूपी |
| चलत् | ६. चलने की फुर्ती से उनके | तडितः | १९. चमकती बिजली की भाँति |
| कुचपटैः | ७. स्तन हिलते और वस्त्र उड़ जाते | इव | १८. मानों |
| कुण्डलैः | ९. कुण्डल उनके | ताः | १५. वे गोपियाँ |
| गण्ड | १०. गण्ड स्थल पर चमक रहे थे | मेघचक्रे | १७. मेघ मण्डल के बीच |
| लोलैः। | ८. चञ्चल | विरेजुः ॥ | २०. सुशोभित हो रही थीं। |

श्लोकार्थ—गोपियाँ पैर नचातीं, हाथ घुमातीं, मुसकान सहित भौंहें मटकातीं तो वे मानों कमर से टूट-टूट जातीं। चलने की फुर्ती से उनके स्तन हिलते और वस्त्र उड़ जाते। चञ्चल कुण्डल उनके गण्ड स्थल पर चमक रहे थे। मुख पर पसीना आ गया था। केशों की चोटियाँ ढीली पड़ गईं थीं। श्रीकृष्ण की परम प्रेयसी वे गोपियाँ गाती हुईं श्रीकृष्णरूपी मेघ मण्डल के बीच मानों चमकती बिजली की भाँति सुशोभित हो रहीं थीं ॥

## नवमः श्लोकः

उच्चैर्जगुर्नृत्यमाना रक्तकण्ठ्यो रतिप्रियाः ।
कृष्णाभिमर्शमुदिता यद्गीतेनेदमावृतम् ॥९॥

पदच्छेद— उच्चैः जगुः नृत्यमानाः रक्त कण्ठ्यः रति प्रियाः ।
कृष्ण अभिमर्श मुदिताः यत् गीतेन इदम् आवृतम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्चैः | ४. उच्च | कृष्ण | ७. उन्हीं श्रीकृष्ण का |
| जगुः | ६. कर रही थीं। तथा | अभिमर्श | ८. संस्पर्श पाकर |
| नृत्यमानाः | २. नाचतीं और | मुदिताः | ९. आनन्द मग्न हो रही थीं |
| रक्त | ३. प्रेम पूर्ण | यत् गीतेन | १०. जिनके गान से |
| कण्ठ्यः | ५. स्वर से गान | इदम् | ११. यह सारा जगत् |
| रति प्रियाः । | १. वे कृष्ण को प्यारी गोपियां | आवृतम् ॥ | १२. आज भी गूंज रहा है |

श्लोकार्थ—वे कृष्ण की प्यारी गोपियाँ नाचतीं और प्रेम पूर्ण उच्च स्वर से गान कर रही थीं। तथा उन्हीं श्रीकृष्ण का संस्पर्श पाकर आनन्द मग्न हो रही थीं। जिनके गान से यह सारा जगत् आज भी गूंज रहा है।

## दशमः श्लोकः

काचित् समं मुकुन्देन स्वरजातीरमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु साध्विति
तदेव ध्रुवमुन्निन्ये तस्यै मानं च बह्वदात् ॥१०॥

पदच्छेद— काचित् समम् मुकुन्देन स्वर जातीः अमिश्रिताः ।
उन्निन्ये पूजिता तेन प्रीयता साधु सधुइति ।
तत् एव ध्रुवम् उन्निन्ये तस्यै मानम् च बहु अदात् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| काचित् | १. कोई गोपी | साधु साधुइति | ८. वाह-वाह कह कर उसकी |
| समम् मुकुन्देन | २. भगवान् के साथ | तत् एव | १०. उसी राग को अन्य गोपी ने |
| स्वर | ३. उनके स्वर में | ध्रुवम् उन्निन्ये | ११. ध्रुव पद में गाया |
| जातीः | ४. स्वर मिलाकर | तस्यै | १३. उस गोपी को भी |
| अमिश्रिता : | ५. कुछ ऊँचे स्वर से | मानम् | १५. सम्मान |
| उन्निन्ये | ६. राग अलापने लगी | च | १२. और तब |
| पूजिता | ९. प्रशंसा करने लगे | बहु | १४. भगवान् ने |
| तेन प्रीयता | ७. उससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण | अदात् ॥ | १६. दिया |

श्लोकार्थ—कोई गोपी भगवान् के साथ उनके स्वर में स्वर मिला कर कुछ ऊँचे स्वर से राग अलापने लगी। उससे प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण वाह-वाह कह कर उसकी प्रशंसा करने लगे। उसी राग को दूसरी गोपी ने ध्रुव पद में गाया। और तब उस गोपी को भी भगवान् ने सम्मान दिया॥

## एकादशः श्लोकः

काचिद् रासपरिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धं श्लथद्वलयमल्लिका ॥११॥

पदच्छेद— काचित् रास परिश्रान्ता पार्श्वस्थस्य गदाभृतः ।
जग्राह बाहुना स्कन्धम् श्लथत् वलय मल्लिका ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| काचित् | १. एक गोपी | जग्राह | १२. | कस कर पकड़ लिया |
| रास | २. नृत्य करते-करते | बाहुना | ११. | अपनी बाँह से |
| परिश्रान्ता | ३. थक गई | स्कन्धम् | १०. | कन्धे को |
| पार्श्व | ७. अपने बगल में | श्लथत् | ६. | खिसकने लगे उसने |
| स्थस्य | ८. खड़े | वलय | ४. | उसकी कलाइयों से कंगन और |
| गदाभृतः । | ९. श्याम सुन्दर के | मल्लिका ॥ | ५. | वेला के फूल |

श्लोकार्थ—एक गोपी नृत्य करते-करते थक गई। उसकी कलाइयों से कंगन और वेला के फूल खिसकने लगे। उसने अपने बगल में खड़े श्याम सुन्दर के कन्धे को कस कर पकड़ लिया ॥

## द्वादशः श्लोकः

तत्रैकांसगतं बाहुं कृष्णस्योत्पलसौरभम् ।
चन्दनालिप्तमाघ्राय हृष्टरोमा चुचुम्ब ह ॥१२॥

पदच्छेद— तत्र एका अंसगतम् बाहुम् कृष्णस्य उत्पल सौरभम् ।
चन्दन आलिप्तम् आघ्राय हृष्ट रोमा चुचुम्बह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तत्र एका | २. वहाँ एक गोपी के | चन्दन | ७. | उसमें चन्दन का |
| अंसगतम् | ४. कंधे पर रखा | आलिप्तम् | ८. | लेप भी था, उसे |
| बाहुम् | ३. हाथ | आघ्राय | ९. | सूँघ कर गोपी का |
| कृष्णस्य | १. श्रीकृष्ण ने अपना | हृष्ट | ११. | खिल उठा तब उसने वह |
| उत्पल | ५. वह कमल के समान | रोमा | १०. | रोम-रोम |
| सौरभम् । | ६. सुगन्धित था और | चुचुम्बह ॥ | १२. | चूम लिया |

श्लोकार्थ—वहाँ श्रीकृष्ण ने अपना हाथ एक गोपी के कंधे पर रखा। वह कमल के समान सुगन्धित था। और उसमें चन्दन का लेप भी था। उसे सूँघ कर गोपी का रोम-रोम खिल उठा। तब उसने वह हाथ चूम लिया ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**कस्याश्चिन्नाट्यविक्षिप्तकुण्डलत्विषमण्डितम् ।**
**गण्डं गण्डे सन्दधत्या अदात्ताम्बूलचर्वितम् ॥१३॥**

पदच्छेद— कस्याश्चित् नाट्य विक्षिप्त कुण्डल त्विष मण्डितम् ।
गण्डम् गण्डे सन्दधत्या अदात् ताम्बूल चर्वितम् ॥

शब्दार्थ –

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कस्याश्चित् | १. | एक गोपी के | गण्डम् | ७. | उसने अपने कपोलों को |
| नाट्य | २. | नाचने के कारण | गण्डे | ८. | श्रीकृष्ण के कपोल से |
| विक्षिप्त | ४. | हिल रहे थे, उसकी | सन्दधत्या | ९. | सटा दिया और |
| कुण्डल | ३. | कुण्डल | अदात् | १२. | मुँह में दे दिया |
| त्विष | ५. | छटा से उसके | ताम्बूल | ११. | पान उसके |
| मण्डितम् । | ६. | कपोल और भी चमक रहे थे | चर्वितम् ॥ | १०. | भगवान् ने अपना चबाया हुआ |

श्लोकार्थ—एक गोपी के नाचने के कारण कुण्डल हिल रहे थे। उसकी छटा से उसके कपोल और भी चमक रहे थे। उसने अपने कपोलों को श्रीकृष्ण के कपोल से सटा दिया। और भगवान् ने अपना चबाया हुआ पान उसके मुँह में दे दिया ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**नृत्यन्ती गायती काचित् कूजन्नूपुरमेखला ।**
**पार्श्वस्थाच्युतहस्ताब्जं श्रान्ताधात् स्तनयोः शिवम् ॥१४॥**

पदच्छेद— नृत्यन्ती गायती काचित् कूजत् नू पुर मेखला ।
पार्श्वस्थ अच्युत हस्ताब्जम् श्रान्ता अधात् स्तनयोः शिवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नृत्यन्ती | ५. | नाच और | पार्श्वस्थ | ८. | अपने पास में ही खड़े |
| गायती | ६. | गा रही थी | अच्युत | ९. | श्याम सुन्दर के |
| काचित् | १. | कोई गोपी | हस्ताब्जम् | ११. | कर कमल को |
| कूजत् | ४. | झनकारती हुई | श्रान्ता | ७. | जब वह थक गई तो उसने |
| नू पुर | २. | नूपुर और | अधात् | १३. | रख लिया |
| मेखला । | ३. | करधनी के घुंघरुओं को | स्तनयोः | १२. | अपने दोनों स्तनों पर |
| | | | शिवम् ॥ | १०. | शीतल |

श्लोकार्थ—कोई गोपी नूपुर और करधनी के घुंघरुओं को झनकारती हुई नाच और गा रही थी। जब वह थक गई तो उसने अपने पास में खड़े श्याम सुन्दर के शीतल कर कमल को अपने दोनों स्तनों पर रख लिया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**गोप्यो लब्ध्वाच्युतं कान्तं श्रिय एकान्तवल्लभम् ।**
**गृहीतकण्ठ्यस्तद्दोर्भ्यां गायन्त्यस्तं विजह्रिरे ॥१५॥**

पदच्छेद— गोप्यः लब्ध्वा अच्युतम् कान्तम् श्रियः एकान्त वल्लभम् ।
गृहीत कण्ठ्यः तत् दोर्भ्याम् गायन्त्यः तम् विजह्रिरे ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| गोप्यः | १. गोपियाँ | गृहीत | १४. बाँध रखा था |
| लब्ध्वा | ७. पाकर | कण्ठ्यः | १२. गलों को |
| अच्युतम् | ६. श्रीकृष्ण को | तत् | ११. श्रीकृष्ण ने उनके |
| कान्तम् | ३. परम प्रियतम | दोर्भ्याम् | १३. अपने भुज पाश में |
| श्रियः | २. लक्ष्मी जी के | गायन्त्यः | ८. गान करती हुई |
| एकान्त | ४. एकान्त | तम् | ९. उनके साथ |
| वल्लभम् । | ५. वल्लभ | विजह्रिरे ॥ | १०. विहार करने लगीं |

श्लोकार्थ—गोपियाँ लक्ष्मी जी के परम प्रियतम एकान्त वल्लभ श्रीकृष्ण को पाकर गान करती हुईं उनके साथ बिहार करने लगीं। श्रीकृष्ण ने उनके गलों को अपने भुजपाश में बाँध रखा था ॥

## षोडशः श्लोकः

**कर्णोत्पलालकविटङ्ककपोलघर्मवक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ।**
**गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेशस्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरासगोष्ठ्याम् ॥१६॥**

पदच्छेद— कर्णउत्पल अलकविटङ्क कपोल घर्मवक्त्र श्रियः वलय नूपुर घोष वाद्यैः ।
गोप्यः समम् भगवता ननृतुः स्वकेश स्रस्तस्रजः भ्रमर गायक रास गोष्ठ्याम् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| कर्णउत्पल | १. कानों में कमल के कुण्डल और | गोप्यः | ६. गोपियाँ |
| अलकविटङ्क | ३. अलकों की शोभा थी | समम् भगवता | ८. भगवान् के साथ |
| कपोल | २. कपोलों पर | ननृतुः | ९. नृत्य कर रही थीं |
| घर्मवक्त्र | ४. पसीने से मुख की | स्वकेश | १३. उनके केशों में गुंथी |
| श्रियः | ५. शोभा निराली थी | स्रस्तस्रजः | १४. मालायें टूट कर गिर रही थीं |
| वलय | १०. उनके कंगन और | भ्रमर | १५. भौंरे उनके सुर में |
| नूपुर | ११. पायजेबों के | गायक | १६. सुर मिला रहे थे |
| घोषवाद्यैः । | १२. बाजे बाज रहे थे | रास गोष्ठयाम् ॥ | ७. रास मण्डल में |

श्लोकार्थ—उनके कानों में कमल के कुण्डल और कपोलों पर अलकों की शोभा थी। पसीने से मुख की शोभा निराली थी। गोपियाँ रास मण्डल में भगवान् के साथ नृत्य कर रही थीं। उनके कंगन और पायजेबों के बाजे बज रहे थे। उनके केशों में गुंथी मालायें टूट कर गिर रहो थीं। भौंरें उनके सुर में सुर मिला रहे थे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**एवं परिष्वङ्गकराभिमर्शस्निग्धेक्षणोद्दामविलासहासैः ।**
**रेमे रमेशो व्रजसुन्दरीभिर्यथार्भकः स्वप्रतिबिम्बविभ्रमः ॥१७॥**

पदच्छेद— एवम् परिष्वङ्ग कर अभिमर्श स्निग्ध ईक्षण उद्दाम विलास हासैः ।
रेमे रमेशः व्रजसुन्दरीभिः यथा अर्भकः स्वप्रतिबिम्ब विभ्रमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ५. | वैसे ही | रेमे | १४. | उन्होंने विहार किया |
| परिष्वङ्ग | ७. | हृदय से लगाते थे | रमेशः | ६. | भगवान् श्रीकृष्ण |
| कर | ८. | कभी हाथ से उनका | व्रजसुन्दरीभिः | १३. | व्रज गोपियों के साथ |
| अभिमर्श | ९. | अङ्ग स्पर्श करते कभी | यथा | १. | जैसे |
| स्निग्ध ईक्षण | १०. | प्रेम भरी चितवन से देखने | अर्भकः | २. | नन्हा शिशु |
| उद्दाम विलास | ११. | कभी लीला से | स्वप्रतिबिम्ब | ३. | अपनी परछाँई के |
| हासैः । | १२. | हंसी हंसते हुये | विभ्रमः ॥ | ४. | साथ खेलता है |

श्लोकार्थ—जैसे नन्हा शिशु अपनी परछाईं से खेलता है। वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण कभी उन्हें हृदय से लगाते थे। कभी हाथ से उनका अङ्ग स्पर्श करते और कभी प्रेम भरी चितवन से देखते कभी लीला से हंसी हंसते हुये व्रज गोपियों के साथ उन्होंने विहार किया ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**तदङ्गसङ्गप्रमुदाकुलेन्द्रियाः केशान् दुकूलं कुचपट्टिकां वा ।**
**नाञ्जः प्रतिव्योढुमलं व्रजस्त्रियो विस्रस्तमालाभरणाः कुरूद्वह ॥१८॥**

पदच्छेद— तत् अङ्ग सङ्ग प्रमुदा आकुलेन्द्रियाः केशान् दुकूलम् कुचपट्टिकाम् वा ।
न अञ्जः प्रतिव्योढुम् अलम् व्रजस्त्रियः विस्रस्त मालाआभरणा कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् अङ्ग | २. | भगवान् के अङ्गों का | न | ११. | न हो सकीं |
| सङ्ग | ३. | स्पर्श प्राप्त करके | अञ्जः प्रतिव्योढुम् | ९. | थोड़ा सा भी संभालने में |
| प्रमुदा | ४ | अत्यन्त आनन्द से | अलम् | १०. | समर्थ |
| आकुलेन्द्रियाः | ५ | गोपियों की इन्द्रियाँ | व्रजस्त्रियः | १२. | व्रजवासिनी स्त्रियों के |
| केशान् | ६. | वे अपने केश | विस्रस्त | १४. | अस्त-व्यस्त हो गये |
| दुकूलम् | ७ | वस्त्र | मालाआभरणाः | १३. | हार और गहने भी |
| कुचपट्टिकाम् । | ८. | अथवा कञ्चुकी को | कुरूद्वह ॥ | १. | हे परीक्षित् ! |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् के अङ्गों का स्पर्श प्राप्त करके अत्यन्त आनन्द से गोपियों की इन्द्रियाँ विह्वल हो गयीं। वे अपने केश, वस्त्र अथवा कञ्चुकी को थोड़ा भी संभालने में समर्थ न हो सकीं व्रजवासिनी स्त्रियों के हार और गहने भी अस्त-व्यस्त हो गये ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

कृष्णविक्रीडितं वीक्ष्य मुमुहुः खेचरस्त्रियः ।
कामार्दिताः शशाङ्कश्च सगणो विस्मितोऽभवत् ॥१६॥

पदच्छेद— कृष्ण विक्रीडितम् वीक्ष्य मुमुहुः खेचर स्त्रियः ।
काम अर्दिताः शशाङ्कः च सगणः विस्मितः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | भगवान् श्री कृष्ण की | काम | ६. | मिलन की |
| विक्रीडितम् | २. | रासलीला | अर्दिताः | ७. | कामना से |
| वीक्ष्य | ३. | देखकर | शशाङ्कः च | ९. | और चन्द्रमा |
| मुमुहुः | ८. | मोहित हो गयीं , | सगणः | १०. | तारों तथा ग्रहों के साथ. |
| खेचर | ४. | देवताओं की | विस्मितः | ११. | चकित और विस्मित |
| स्त्रियः । | ५. | स्त्रियाँ भी | अभवत् ॥ | १२. | हो गये |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की रासलीला देखकर देवताओं की स्त्रियाँ भी मिलन की कामना से मोहित हो गयीं । और चन्द्रमा तारों तथा ग्रहों के साथ चकित और विस्मित हो गये ॥

## विंशः श्लोकः

कृत्वा तावन्तमात्मानं यावतीर्गोपयोषितः ।
रेमे स भगवांस्ताभिरात्मारामोऽपि लीलया ॥२०॥

पदच्छेद— कृत्वा तावन्तम् आत्मानम् यावतीः गोपयोषितः ।
रेमे स भगवान् ताभिः आत्मारामः अपि लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृत्वा | १०. | बताये और | रेमे | १२. | विहार किया |
| तावन्तम् | ९. | उतने ही रूप | सः भगवान् | १. | वे भगवान् तो |
| आत्मानम् | ८. | अपने | ताभिः | ११. | उन गोपियों के साथ |
| यावतीः | ५. | जितनी | आत्मारामः | २. | आत्माराम हैं |
| गोप | ६. | गोप | अपि | ३. | फिर भी |
| योषितः । | ७. | स्त्रियां थीं | लीलया ॥ | ४. | लीलापूर्वक उन्होंने |

श्लोकार्थ—वे भगवान् तो आत्माराम हैं। फिर भी लीलापूर्वक उन्होंने जितनी गोप स्त्रियां थीं अपने उतने ही रूप बनाये और उन गोपियों के साथ विहार किया ॥

# एकविंशः श्लोकः

**तासामतिविहारेण श्रान्तानां वदनानि सः।**
**प्रामृजत् करुणः प्रेम्णा शन्तमेनाङ्गपाणिना ॥२१॥**

पदच्छेद— तासाम् अति विहारेण श्रान्तानाम् वदनानि सः।
प्रामृजत् करुणः प्रेम्णा शन्तमेन अङ्ग पाणिना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तासाम् | ४. | गोपियाँ | प्रामृजत् | १२. | पोंछे |
| अति | २. | बहुत देर तक | करुणः | ६. | करुणामय |
| विहारेण | ३. | विहार करने के कारण | प्रेम्णा | ८. | बड़े प्रेम से |
| श्रान्तानाम् | ५. | थक गयीं | शन्तमेन | ९. | अपने सुखद |
| वदनानि | ११. | उनके मुँह | अङ्ग | १. | परीक्षित् |
| सः। | ७. | उन भगवान् श्रीकृष्ण | पाणिना ॥ | १०. | हाथ से |

श्लोकार्थ—परीक्षित् ! बहुत देर तक विहार करने के कारण गोपियाँ थक गयीं। करुणामय भगवान् श्रीकृष्ण ने बड़े प्रेम से अपने सुखद हाथ से उनके मुँह पोंछे ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

**गोप्यः स्फुरत्पुरटकुण्डलकुन्तलत्विड्गण्डश्रिया सुधितहासनिरीक्षणेन।**
**मानं दधत्य ऋषभस्य जगुः कृतानि पुण्यानि तत्कररुहस्पर्शप्रमोदाः ॥२२॥**

पदच्छेद— गोप्यः स्फुरत् पुरट कुण्डल कुन्तलत्विड् गण्ड श्रिया सुधित हास निरीक्षणेन।
मानम् दधत्यः ऋषभस्य जगुः कृतानि पुण्यानि तत् कर रुह स्पर्श प्रमोदाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | ३. | गोपियों को बड़ा ही | मानम्दधत्यः | १२. | सम्मान किया और उनकी |
| स्फुरत् | ५. | झिलमिलाते हुये | ऋषभस्य | ११. | भगवान् श्रीकृष्ण का |
| पुरट कुण्डल | ६. | सोने के कुण्डलों और | जगुः | १४ | गान करने लगीं |
| कुन्तलत्विड् | ७. | घुंघराली अलकों की कान्ति से | कृतानिपुण्यानि | १३ | परम पवित्र लीलाओं का |
| गण्डश्रिया | ८. | सुशोभित कपोलों तथा | तत् कर | १. | भगवान् के कर कमल और |
| सुधितहास | ९. | अमृतमयी मुसकान और | रुहस्पर्श | २. | नख-स्पर्श से |
| निरीक्षणेन। | १०. | प्रेम भरी चितवन से | प्रमोदाः ॥ | ४. | आनन्द प्राप्त हुआ। उन्होंनें |

श्लोकार्थ—भगवान् के कर कमल और नख-स्पर्श से गोपियों को बड़ा ही आनन्द प्राप्त हुआ। उन्होंने झिलमिलाते सोने के कुण्डलों और घुंघराली अलकों की कान्ति से सुशोभित कपोलों तथा अमृतमयी मुसकान और प्रेमभरी चितवन से भगवान् श्रीकृष्ण का सम्मान किया और उनकी परम पवित्र लीलाओं का गान करने लगीं ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**ताभिर्युतः श्रममपोहितुमङ्गसङ्गघृष्टस्रजः स कुचकुङ्कुमरञ्जितायाः ।**
**गन्धर्वपालिभिरनुद्रुत आविशद् वाः श्रान्तो गजीभिरिभराडिव भिन्नसेतुः ॥२३॥**

पदच्छेद— ताभिः युतः श्रमम् अपोहितुम् अङ्ग-सङ्ग घृष्टः स्रजः सः कुचकुङ्कुम रञ्जितायाः ।
गन्धर्व पालिभिः अनुद्रुतः आविशत् वाः श्रान्तः गजीभिः इभराडिव भिन्नसेतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताभिः युतः | ८. गोपियों के साथ | गन्धर्व पालिभिः | १६. गन्धर्व राज की भाँति लग रहे थे |
| श्रमम् | ६. अपनी थकान | अनुद्रुतः | १५. अनुगत भौंरे |
| अपोहितुम् | ७. दूर करने के लिये | आविशत् | १०. प्रवेश किया । उस समय |
| अङ्ग-सङ्गघृष्टः | १२. गोपियों के अङ्ग-सङ्ग की रगड़ से और | वाः | ९. यमुना के जल में |
| स्रजः | ११. भगवान् की वनमाला | श्रान्तः | २. थका हुआ |
| सः | ५. भगवान् श्रीकृष्ण ने | गजीभिः | ४. हथिनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं |
| कुचकुङ्कुम | १३. वक्षः स्थल की केसर से | इभराडिव | ३. गजराज जैसे |
| रञ्जितायाः । | १४. रङ्ग सी गई थी उनके | भिन्नसेतुः ॥ | १. मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाला |

श्लोकार्थ— मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाला थका हुआ गजराज जैसे हथनियों के साथ क्रीड़ा करते हैं, वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी थकान दूर करने के लिये गोपियों के साथ यमुना के जल में प्रवेश किया । उस समय भगवान् की वनमाला गोपियों के अङ्ग-सङ्ग की रगड़ से और वक्षः स्थल की केसर से रंग सी गई थी । उनके अनुगत भौंरे गन्धर्व राज की भाँति लग रहे थे ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**सोऽम्भस्यलं युवतिभिः परिषिच्यमानः प्रेम्णेक्षितः प्रहसतीभिरितस्ततोऽङ्ग ।**
**वैमानिकैः कुसुमवर्षिभिरीड्यमानो रेमे स्वयं स्वरतिरत्र गजेन्द्रलीलः ॥२४॥**

पदच्छेद—सः अम्भसि अलम् युवतिभिः परिषिच्यमानः प्रेम्णा ईक्षितः प्रहसतीभिः इतः ततः अङ्ग ।
वैमानिकैः कुसुम वर्षिभिः ईड्यमानः रेमे स्वयम् स्वरतिः अत्र गजेन्द्रलीलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः अम्भसि | ५. उन भगवान् पर यमुना जल से | वैमानिकैः | ८. विमानों पर चढ़े देवता |
| अलम् युवतिभिः | ६ गोपियों ने खूब | कुसुम वर्षिभिः | ९. पुष्पों की वर्षा करके उनकी |
| परिषिच्यमानः | ७. जल की बौछारें डाली | ईड्यमानः | १०. स्तुति करने लगे |
| प्रेम्णाईक्षितः | २. प्रेमभरी चितवन से | रेमे | १४. की |
| प्रहसतीभिः | ३ हंस-हंस कर | स्वयम् स्वरतिः | ११. स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| इतः ततः | ४. इधर-उधर से | अत्र | १२. इस प्रकार यमुना जल में |
| अङ्ग । | १. हे परीक्षित् ! | गजेन्द्रलीलः ॥ | १३. गजराज के समान क्रीड़ा |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! प्रेमभरी चितवन से हंस-हंस कर इधर-उधर से उन भगवान् पर गोपियों ने खूब जल की बौछारें डाली । विमानों पर चढ़े देवता पुष्पों की वर्षा करके उनकी स्तुति करने लगे । स्वयम् भगवान् श्रीकृष्ण ने इस प्रकार यमुना जल में गजराज के समान क्रीड़ा की ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**ततश्च कृष्णोपवने जलस्थलप्रसूनगन्धानिलजुष्टदिक्तटे ।**
**चचार भृङ्गप्रमदागणावृतो यथा मदच्युद् द्विरदः करेणुभिः ॥२५॥**

पदच्छेद— ततः च कृष्ण उपवने जल स्थल प्रसून गन्ध अनिल जुष्ट दिक्तटे ।
चचार भृङ्ग प्रमदागण आवृतः यथा मदच्युत् द्विरदः करेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | इसके बाद | चचार | १२. | वे विचरण करने लगे |
| च | ४. | और | भृङ्ग | ३. | भौंरों |
| कृष्ण | २. | भगवान् श्रीकृष्ण | प्रमदागण | ५. | युवतियों के समूह से |
| उपवने जल | ८. | उपवन में गये वहाँ जल | आवृतः | ६. | घिरे हुये |
| स्थल | ९. | और स्थल में सुन्दर | यथा | १३. | उसी प्रकार |
| प्रसून गन्ध | १०. | सुगन्ध वाले पुष्प खिले थे | मदच्युत् | १४. | जैसे मतवाला गजराज |
| अनिल जुष्टः | ११. | सुगन्धित वायुयुक्तस्थल में | द्विरदः | १५. | हथिनियों के साथ |
| दिक्तटे । | ७. | यमुना तट के | करेणुभिः ॥ | १६. | घूम रहा हो |

श्लोकार्थ—इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण भौंरों और युवतियों के समूह से घिरे हुये यमुना तट के उपवन में गये, वहाँ जल और स्थल में सुन्दर सुगन्ध वाले पुष्प खिले थे। सुगन्धित वायु युक्त स्थल में वे विचरण करने लगे , उसी प्रकार जैसे मतवाला गजराज हथनियों के साथ घूम रहा हो ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**एवं शशाङ्कांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरताबलागणः ।**
**सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः शरत्काव्यकथारसाश्रयाः ॥२६॥**

पदच्छेद— एवम् सिषेव शशाङ्क अंशु विराजिताः निशाः सः सत्यकामः अनुरत अबला गणः ।
सिषेव आत्मनि अवरुद्ध सौरतः सर्वाः शरत् काव्य कथा रस आश्रयाः ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | सिषेव | १४. | विहार किया |
| शशाङ्क अंशु | २. | चन्द्रमा की किरणों | आत्मनि | १२. | अपने |
| विराजिता | ३. | सुशोभित | अवरुद्ध | १३. | अधीन करके |
| निशाः | ४. | शरद् की रात्रि में | सौरतः | ११. | काम भाव को |
| सः सत्यकामः | ८. | सत्य सङ्कल्प श्रीकृष्ण ने | सर्वाः शरत् | ६. | समस्त शरद् ऋतु |
| अनुरत | १०. | साथ | काव्य कथा | ५. | काव्यों में वर्णित सामग्रियों से |
| अबला गणः । | ९. | स्त्री समूह के | रस आश्रयाः ॥ | ७. | रस से युक्त रात्रियों में |

श्लोकार्थ—इस प्रकार चन्द्रमा की किरणों से सुशोभित शरद् की रात्रि में काव्यों में वर्णित सामग्रियों से समस्त, शरद् ऋतु की रस से युक्त रात्रियों में सत्य सङ्कल्प श्रीकृष्ण ने स्त्री समूह के साथ काम भाव को अपने अधीन करके विहार किया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

राजोवाच— संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च ।
अवतीर्णो हि भगवानंशेन जगदीश्वरः ॥२७॥

पदच्छेद— संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमाय इतरस्य च ।
अवतीर्णः हि भगवान् अंशेन जगत् ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| संस्थापनाय | ६. | स्थापना | अवतीर्णः | १०. | अवतीर्ण हुये हैं |
| धर्मस्य | ५. | धर्म की | हि भगवान् | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण अपने |
| प्रशमाय | ९. | विनाश के लिये | अंशेन | ४. | अंश वलराम जी सहित |
| इतरस्य | ८. | अधर्म के | जगत् | १. | सारे जगत् के |
| च । | ७. | और | ईश्वरः ॥ | २. | ईश्वर |

श्लोकार्थ—सारे जगत् के ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण अपने अंश वलराम जी के सहित धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिये अवतीर्ण हुये हैं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

स कथं धर्मसेतूनां वक्ता कर्ताभिरक्षिता ।
प्रतीपमाचरद् ब्रह्मन् परदाराभिमर्शनम् ॥२८॥

पदच्छेद— सः कथम् धर्मसेतूनां वक्ता कर्ता अभिरक्षिता ।
प्रतीपम् आचरत् ब्रह्मन् पर दारा अभिमर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | २. | वे | प्रतीपम् | ७. | उन्होंने धर्म के विपरीत |
| कथम् | ११. | कैसे | आचरत् | १२. | किया |
| धर्मसेतूनां | ३. | धर्म मर्यादा | ब्रह्मन् | १. | हे ब्रह्मन् ! |
| वक्ता | ५. | उपदेश करने वाले | पर | ८. | परायी |
| कर्ता | ४. | बनाने वाले | दारा | ९. | स्त्रियों का |
| अभिरक्षिता । | ६. | रक्षक थे (और) | अभिमर्शनम् ॥ | १०. | स्पर्श |

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! वे धर्म मर्यादा बनाने वाले, उपदेश करने वाले, रक्षक थे । और उन्होंने धर्म के विपरीत परायी स्त्रियों का स्पर्श कैसे किया ॥

# एकोनविंशः श्लोकः

**आप्तकामो यदुपतिः कृतवान् वै जुगुप्सितम् ।**
**किमभिप्राय एतं नः संशयं छिन्धि सुव्रत ॥२९॥**

पदच्छेद – आप्तकामः यदुपतिः कृतवान् वै जुगुप्सितम् ।
किम् अभिप्रायः एतम् नः संशयम् छिन्धि सुव्रत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आप्तकामः | ३. | पूर्ण काम थे फिर भी | अभिप्रायः | ५. | अभिप्राय से |
| यदुपतिः | २. | भगवान् श्रीकृष्ण | एवम् | ६. | इस |
| कृतवान् | ८. | किया | नः | १०. | हमारे इस |
| वै | १. | निश्चय ही | संशयम् | ११. | संशय को |
| जुगुप्सितम् । | ७. | घृणित कर्म को | छिन्धि | १२. | मिटाइये |
| किम् | ४. | उन्होंने किस | सुव्रत ॥ | ९. | हे परम ब्रह्मचारी मुनीश्वर |

श्लोकार्थ—निश्चय ही भगवान् श्रीकृष्ण पूर्णकाम थे । उन्होंने किस अभिप्राय से इस घृणित कर्म को किया । हे परम ब्रह्मचारी मुनीश्वर ! इस संशय को मिटाइये ॥

# त्रिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— धर्मव्यतिक्रमो दृष्ट ईश्वराणां च साहसम् ।**
**तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा ॥३०॥**

पदच्छेद— धर्म व्यतिक्रमः दृष्टः ईश्वराणाम् च साहसम् ।
तेजीयसाम् न दोषाय वह्नेः सर्वभुजः यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धर्म | २. | धर्म का | तेजीयसाम् | ७. | तेजस्वी पुरुषों को वैसे ही |
| व्यतिक्रमः | ३. | उल्लंघन | न | ९. | नहीं होता |
| दृष्टः | ६. | देखे जाते हैं | दोषाय | ८. | कोई दोष |
| ईश्वराणाम् | १. | समर्थ जन कभी-कभी | वह्नेः | १२. | अग्नि को दोष नहीं होता |
| च | ४. | और | सर्वभुजः | ११. | सर्व कुछ भक्षण करने पर भी |
| साहसम् । | ५. | साहस का काम करते | यथा ॥ | १०. | जैसे |

श्लोकार्थ—समर्थ जन कभी-कभी धर्म का उल्लंघन और साहस का काम करते देखे जाते हैं । तेजस्वी पुरुषों को वैसे ही कोई दोष नहीं होता । जैसे सब कुछ भक्षण कर लेने पर भी अग्नि को दोष नहीं होता है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**नैतत् समाचरेज्जातु मनसापि ह्यनीश्वरः ।**
**विनश्यत्याचरन् मौढ्याद्यथारुद्रोऽब्धिजं विषम् ॥३१॥**

पदच्छेद— न एतत् समाचरेत् जातु मनसा अपि हि अनीश्वरः ।
विनश्यति आचरन् मौढ्यात् यथा रुद्रः अब्धिजम् विषम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | विनश्यति | १०. | वह नष्ट हो जायेगा |
| एतत् | ५. | इस विषय में | आचरन् | ९. | ऐसा आचरण करने से |
| समाचरेत् | ७. | सोचना चाहिये | मौढ्यात् | ८. | क्योंकि मूर्खता वश |
| जातु | २. | कभी | यथा | ११. | जैसे कि |
| मनसा | ३. | मन से | रुद्रः | १४. | शङ्कर ही पी सकते थे |
| अपि हि | ४. | भी | अब्धिजम् | १२. | समुद्र से निकले |
| अनीश्वरः । | १. | असमर्थ व्यक्ति को | विषम् ॥ | १३. | विष को |

श्लोकार्थ—असमर्थ व्यक्ति को कभी मन से भी इस विषय में नहीं सोचना चाहिये । क्योंकि मूर्खता वश ऐसा आचरण करने से वह नष्ट हो जायेगा । जैसे कि समुद्र से निकले विष को शङ्कर ही पी सकते थे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**ईश्वराणां वचः सत्यं तथैवाचरितं क्वचित् ।**
**तेषां स्ववचोयुक्तं बुद्धिमांस्तत् समाचरेत् ॥३२॥**

पदच्छेद— ईश्वराणाम् वचः सत्यम् तथा एव आचरितम् क्वचित् ।
तेषाम् यत् स्ववचः युक्तम् बुद्धिमान् तत् समाचरेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ईश्वराणाम् | १. | शङ्करादि ईश्वरों के | तेषाम् | ८. | उन्होंने |
| वचः | २. | वचन | यत् | ९. | जो |
| सत्यम् | ३. | सत्य होने पर भी | स्ववचः | १०. | अपनी वाणी से |
| तथा | ४. | उस | युक्तम् | ११. | उपदेश किया है |
| एव | ५. | ही प्रकार का | बुद्धिमान् | १२. | बुद्धिमान् व्यक्ति को |
| आचरितम् | ६. | आचरण | तत् | १३. | उसी का |
| क्वचित् । | ७. | कहीं-कहीं ही किया जा सकता है | समाचरेत् ॥ | १४. | आचरण करना चाहिये |

श्लोकार्थ—शङ्करादि ईश्वरों के वचन सत्य होने पर भी उसी प्रकार का आचरण कहीं-कहीं ही किया जा सकता है । उन्होंने जो अपनी वाणी से उपदेश किया है, बुद्धिमान् व्यक्ति को उसी का आचरण करना चाहिये ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**कुशलाचरितेनैषामिह स्वार्थो न विद्यते ।**
**विपर्ययेण वानर्थो निरहंकारिणां प्रभो ॥३३॥**

पदच्छेद— कुशल आचरितेन एषाम् इह स्वार्थः न विद्यते ।
विपर्ययेण वा अनर्थः निरहंकारिणाम् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुशल | ३. शुभ कर्म | विद्यते । | ९. होता है |
| आचरितेन | ४. करने में | विपर्ययेण | ११. अशुभ कर्म करने में |
| एषाम् | ५. उनका कोई | वा | १०. और |
| इह | ६. सांसारिक | अनर्थः | १२. अनर्थ नहीं होता है |
| स्वार्थः | ७. स्वार्थ | निरहंकारिणाम् | २. अहंकार रहित होते हैं |
| न | ८. नहीं | प्रभो ॥ | १. सामर्थ्यवान् पुरुष |

श्लोकार्थ—सामर्थ्यवान् पुरुष अहंकार रहित होते हैं। शुभ कर्म करने में उनका कोई सांसारिक स्वार्थ नहीं होता है। और अशुभकर्म करने में अनर्थ नहीं होता है ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**किमुताखिलसत्त्वानां तिर्यङ्मर्त्यदिवौकसाम् ।**
**ईशितुश्चेशितव्यानां कुशलाकुशलान्वयः ॥३४॥**

पदच्छेद— किमुत अखिल सत्त्वानाम् तिर्यक् मर्त्य दिव ओकसाम् ।
ईशितुः च ईशितव्यानाम् कुशल अकुशल अन्वयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किमुत | १२. कैसे जोड़ा जा सकता है | ईशितुः | ७. स्वामी सर्वेश्वर भगवान् को |
| अखिल | ५. समस्त चराचर | च | ९. और |
| सत्त्वानाम् | ६. जीवों के | ईशितव्यानाम् | ४. शासन करने योग्य |
| तिर्यक् | १. पशु-पक्षी | कुशल | ८. शुभ |
| मर्त्य | २. मनुष्य | अकुशल | १०. अशुभ |
| दिव ओकसाम् । | ३. देवता आदि के | अन्वयः ॥ | ११. सम्बन्ध से |

श्लोकार्थ—फिर पशु-पक्षी-मनुष्य-देवता आदि के शासन करने योग्य समस्त चराचर जीवों के स्वामी सर्वेश्वर भगवान् को शुभ और अशुभ सम्बन्ध से कैसे जोड़ा जा सकता है ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता योगप्रभावविधुताखिलकर्मबन्धाः ।**
**स्वैरं चरन्ति मुनयोऽपि न नह्यमानास्तस्येच्छयाऽऽत्तवपुषः कुत एव बन्धः ॥३५॥**

पदच्छेद—यत् पाद पङ्कज परागनिषेव तृप्ताः योगप्रभाव विधुत अखिल कर्मबन्धाः ।
स्वैरम् चरन्ति मुनयः अपि न नह्यमानाः तस्य इच्छया आत्तवपुषः कुत एव बन्धः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् | १. जिनके | स्वैरम्चरन्ति | ११. स्वच्छन्द विचरण करते हैं |
| पादपङ्कज | २. चरण कमलों के | मुनयः अपि | ९. विचारशील ज्ञानी जन भी उन्हें जानकर |
| पराग निषेव | ३. रजका सेवन करके भक्तजन | न नह्यमानाः | १०. बन्धन को नहीं प्राप्त होते हैं तथा |
| तृप्ताः | ४. तृप्त हो जाते हैं और | तस्य | १४. उन भगवान् को |
| योगप्रभाव | ५. जिनसे योग प्राप्त करके योगी | इच्छया | १२. भक्तों की इच्छा से |
| विधूत | ८. काट डालते हैं | आत्तवपुषः | १३. शरीर धारण करने वाले |
| अखिल | ६. सारे | कुत एव | १६. कैसे हो सकता है |
| कर्मबन्धाः । | ७. कर्म बन्धन को | बन्धः ॥ | १५. कर्म बन्धन |

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों के रज का सेवन करके भक्त जन तृप्त हो जाते हैं। जिनसे योग प्राप्त करके योगी सारे कर्म बन्धन को काट डालते हैं। विचारशीलज्ञानी जन भी उन्हें जानकर बन्धन को नहीं प्राप्त होते हैं, स्वच्छन्द विचरण करते हैं। भक्तों की इच्छा से शरीर धारण करने वाले उन भगवान् को कर्मबन्धन कैसे हो सकता है ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**गोपीनां तत्पतीनां च सर्वेषामेव देहिनाम् ।**
**योऽन्तश्चरति सोऽध्यक्षः क्रीडनेनेह देहभाक् ॥३६॥**

पदच्छेद— गोपीनाम् तत् पतीनाम् सर्वेषाम् एव देहिनाम् ।
यः अन्तः चरति सः अध्यक्षः क्रीडनेन इह देहभाक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोपीनाम् | १. गोपियों के | यः अन्तः | ७. अन्तः करण में जो |
| तत् | २. उनके | चरति | ८. विराजमान हैं |
| पतीनाम् | ३. पतियों के | सः अध्यक्षः | ९. वे ही सबके साक्षी हैं वे |
| च सर्वेषाम् | ४. और सम्पूर्ण | क्रीडनेन | १२. लीला कर रहे हैं |
| एव | ५. ही | इह | १०. ही यहाँ |
| देहिनाम् । | ६. शरीरधारियों के | देहभाक् ॥ | ११. दिव्य विग्रह धारण करके |

श्लोकार्थ—गोपियों के, उनके पतियों के और सभी शरीर धारियों के अन्तः करण में जो विराजमान हैं, वे ही सबके साक्षी हैं। वे ही यहाँ दिव्य विग्रह धारण करके लीला कर रहे हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**अनुग्रहाय भूतानां मानुषं देहमास्थितः।**
**भजते तादृशीः क्रीडा याः श्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥३७॥**

पदच्छेद— अनुग्रहाय भूतानाम् मानुषम् देहम् आस्थितः।
भजते तादृशीः क्रीडाः याः श्रुत्वा तत् परः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनुग्रहाय | २. | कृपा करने के लिये ही | भजते | ८. | करते हैं |
| भूतानाम् | १. | भगवान् जीवों पर | तादृशीः | ६. | और वैसी ही |
| मानुषम् | ३. | अपने को मनुष्य | क्रीडाः | ७. | लीलायें |
| देहम् | ४. | रूप में | याः श्रुत्वा | ९. | जिन्हें सुनकर |
| आस्थितः | ५. | प्रकट करते हैं | तत्परः। | १०. | जीव भगवत परायण |
| | | | भवेत् ॥ | ११. | हो जायें |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण जीवों पर कृपा करने के लिये ही अपने को मनुष्य रूप में प्रकट करते हैं। और वैसी ही लीलायें करते हैं। जिसे सुन कर जीव भगवत्परायण हो जाये ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**नासूयन् खलु कृष्णाय मोहितास्तस्य मायया।**
**मन्यमानाः स्वपार्श्वस्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रजौकसः ॥३८॥**

पदच्छेद— न असूयन् खलु कृष्णाय मोहिताः तस्य मायया।
मन्यमानाः स्वपार्श्व स्थान् स्वान् स्वान् दारान् व्रज ओकसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं की। | मन्यमानाः | १०. | ऐसा समझ रहे थे |
| असूयन् | ५. | तनिक भी दोष बुद्धि | स्वपार्श्व | १३. | हमारे पास ही |
| खलु | ३. | निश्चय ही | स्थान् | १४. | स्थित हैं |
| कृष्णाय | ४. | श्रीकृष्ण में | स्वान् स्वान् | ११. | कि हमारी |
| मोहिताः | ९. | मोहित होकर वे | दारान् | १२. | पत्नियाँ |
| तस्य | ७. | उनकी | व्रज | १. | व्रज |
| मायया। | ८. | योगमाया से | ओकसः ॥ | २. | वासी गोपों ने |

श्लोकार्थ—व्रजवासी गोपों ने निश्चय ही श्रीकृष्ण में तनिक भी दोष बुद्धि नहीं की। वे उनकी योग माया से मोहित होकर ऐसा समझ रहे थे कि हमारी पत्नियाँ हमारे पास ही हैं ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**ब्रह्मरात्र उपावृत्ते वासुदेवानुमोदिताः ।**
**अनिच्छन्त्यो ययुर्गोप्यः स्वगृहान् भगवत्प्रियाः ॥३९॥**

पदच्छेद— ब्रह्मरात्रे उपावृत्ते वासुदेव अनुमोदिताः ।
अनिच्छन्त्यः ययुः गोप्यः स्वगृहान् भगवत् प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्रह्मरात्रे | १. ब्रह्मा की रात्रि के बराबर रात्रि | ययुः | ८. लौट गयीं क्योंकि वे |
| उपावृत्ते | २. बीत जाने पर | गोप्यः | ३. वे गोपियाँ |
| वासुदेव | ४. श्रीकृष्ण की | स्वगृहान् | ७. अपने अपने घरों को |
| अनुमोदिताः | ५. आज्ञा पाकर | भगवत् | ९. भगवान् श्रीकृष्ण को |
| अनिच्छन्त्यः । | ६. न चाहते हुये भी | प्रियाः ॥ | १०. प्रसन्न करना चाहती थीं |

श्लोकार्थ—ब्रह्मा की रात्रि के बराबर रात्रि बीत जाने पर वे गोपियाँ श्रीकृष्ण की आज्ञा पाकर न चाहते हुये भी अपने अपने घरों को लौट गईं। क्योंकि वे भगवान् श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना चाहती थीं ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णोः श्रद्धान्वितोऽनुश्रृणुयादथ वर्णयेद् यः ।**
**भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः ॥४०॥**

पदच्छेद— विक्रीडितम् व्रजवधुभिः इदम् च विष्णोः श्रद्धान्वितः अनुश्रृणुयात् अथ वर्णयेत् यः ।
भक्तिम् पराम् भगवति प्रतिलभ्यकामम् हृद् रोगम् आशु अपहिनोति अचिरेण धीरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| विक्रीडितम् | ७. इस विषय का | भक्तिं पराम् | १३. पराभक्ति को |
| व्रजवधुभिः | ४. व्रज सुन्दरियों के साथ | भगवति | ११. वह भगवान् के चरणों में |
| इदम् | ६. इस चिन्मय तथा | प्रतिलभ्य | १४. प्राप्त करता है और |
| च विष्णोः | ५. भगवान् श्रीकृष्ण के | कामम् | १७. काम विकार से |
| श्रद्धाअन्वितः | ८. श्रद्धा के साथ | हृद् रोगम् | १६. हृदय के रोग |
| अनुश्रृणुयात् | ९. बार बार श्रवण और | आशु | १२. शीघ्र ही |
| अथ | १. अतः | अपहिनोति | १८. छुटकारा पा जाता है |
| वर्णयेत् | १०. वर्णन करता है | अचिरेण | १५. तत्काल |
| यः । | २. जो | धीरः ॥ | ३. धीर पुरुष |

श्लोकार्थ—अतः जो धीर पुरुष व्रज सुन्दरियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण के इस चिन्मय तथा इस विषय का श्रद्धा के साथ बार बार श्रवण और वर्णन करता है। वह भगवान् के चरणों में शीघ्र ही परा भक्ति को प्राप्त करता है। और तत्काल हृदय के रोग काम विकार से छुटकारा पा जाता है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडा वर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशः अध्यायः ॥३३॥

## श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

### दशमः स्कन्धः

### चतुस्त्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एकदा देवयात्रायां गोपाला जातकौतुकाः ।**
**अनोभिरनडुद्युक्तैः प्रययुस्तेऽम्बिकावनम् ॥१॥**

पदच्छेद— एकदा देवयात्रायाम् गोपालाः जात कौतुकाः ।
अनोभिः अनडुत् युक्तैः प्रययुः ते अम्बिका वनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकदा | १. | एक बार | अनडुत् | ७. | बैलों से |
| देवयात्रायाम् | ४. | शिवरात्रि पर | युक्तैः | ८. | जुती हुई |
| गोपालाः | ३. | नन्दबाबा आदि गोप | प्रययुः | १२. | गये |
| जात | ६. | भर कर | ते | २. | वे |
| कौतुकाः । | ५. | कौतूहल में | अम्बिका | १०. | अम्बिका नामक |
| अनोभिः | ९. | गाड़ियों पर सवार होकर | वनम् ॥ | ११. | वन में |

श्लोकार्थ—एक बार वे नन्द बाबा आदि गोप शिवरात्रि पर कौतूहल में भर कर बैलों से जुती हुई गाड़ियों पर सवार होकर अम्बिका वन में गये ॥

### द्वितीयः श्लोकः

**तत्र स्नात्वा सरस्वत्यां देवं पशुपतिं विभुम् ।**
**आनर्चुरर्हणैर्भक्त्या देवीं च नृपतेऽम्बिकाम् ॥२॥**

पदच्छेद— तत्र स्नात्वा सरस्वत्याम् देवम् पशुपतिम् विभुम् ।
आनर्चुः अर्हणैः भक्त्या देवीम् च नृपते अम्बिकाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | २. | वहाँ उन लोगों ने | आनर्चुः | १२. | पूजन किया |
| स्नात्वा | ४. | स्नान करके | अर्हणैः | ११. | अनेक सामग्रियों के द्वारा |
| सरस्वत्याम् | ३. | सरस्वती नदी में | भक्त्या | १०. | बड़ी भक्ति से |
| देवम् | ७. | शंकर जी का और | देवीम् च | ८. | भगवती |
| पशुपतिम् | ६. | पशुपति भगवान् | नृपते | १. | हे राजन् |
| विभुम् । | ५. | सर्वान्तर्यामी | अम्बिकाम् ॥ | ९. | अम्बिका जी का |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वहाँ उन लोगों ने सरस्वती नदी में स्नान करके सर्वान्तर्यामी पशुपति भगवान् शंकर जी का और भगवती अम्बिका जी का बड़ी भक्ति से अनेक सामग्रियों के द्वारा पूजन किया ॥

## तृतीयः श्लोकः

**गावो हिरण्यं वासांसि मधु मध्वन्नमादृताः ।**
**ब्राह्मणेभ्यो ददुः सर्वे देवो नः प्रीयतामिति ॥३॥**

पदच्छेद— गावः हिरण्यम् वासांसि मधु मध्वन्नम् आदृताः ।
ब्राह्मणेभ्यः ददुः सर्वे देवः नः प्रीयताम् इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गावः | ३. | गौएँ | ब्राह्मणेभ्यः | ८ | ब्राह्मणों को |
| हिरण्यम् | ४. | सोना | ददुः | ९. | दिये जिससे |
| वासांसि | ५. | वस्त्र | सर्वे | १. | वहाँ सबने |
| मधु | ६. | मधु और | देवः | १०. | भगवान् शङ्कर |
| मध्वन्नम् | ७. | मधुर अन्नआदि | नः | ११. | हम पर |
| आदृताः । | २. | वहाँ उन्होंने आदर पूर्वक | प्रीयताम् इति ॥ | | प्रसन्न हों |

श्लोकार्थ—वहाँ सबने आदर पूर्वक गौएँ, सोना, वस्त्र, मधु और मधुर अन्न आदि ब्राह्मणों को दिये जिससे भगवान् शङ्कर हम पर प्रसन्न हों ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**ऊषुः सरस्वतीतीरे जलं प्राश्य धृतव्रताः ।**
**रजनीं तां महाभागा नन्दसुनन्दकादयः ॥४॥**

पदच्छेद— ऊषुः सरस्वती तीरे जलम् प्राश्य धृत व्रताः ।
रजनीम् ताम् महाभागाः नन्द सुनन्द आदयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऊचुः | १२. | शयन किया | रजनीम् | ९. | रात |
| सरस्वतो | १०. | सरस्वती नदी के | ताम् | ८. | उस |
| तोरे | ११. | तट पर | महाभागाः | १. | उस दिन परम भाग्यवान् |
| जलम् | ६. | जल | नन्द | २. | नन्द बाबा और |
| प्राश्य | ७. | पीकर उहोंने | सुनन्द | ३. | सुनन्द |
| धृतव्रताः । | ५. | उपवास किया था । अतः | आदयः ॥ | ४. | आदि गोपों ने |

श्लोकार्थ—उस दिन परम भाग्यवान् नन्द बाबा और सुनन्द आदि गोपों ने उपवास किया था । अतः जल पीकर उन्होंने सरस्वती नदी के तट पर शयन किया ।

## पञ्चमः श्लोकः

कश्चिन्महानहिस्तस्मिन् विपिनेऽतिबुभुक्षितः ।
यदृच्छयाऽऽगतो नन्दं शयानमुरगोऽग्रसीत् ॥५॥

पदच्छेद— कश्चित् महान् अहिः तस्मिन् विपिने अतिबुभुक्षितः ।
यदृच्छया आगतः नन्दम् शयानम् उरगः अग्रसीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कश्चित् | ५. | कोई | यदृच्छया | ७. | दैववश |
| महान् अहि | ६. | बड़ा भारी अजगर रहता था | आगतः | ९. | उधर आ गया और |
| तस्मिन् | १. | उस | नन्दम् | ११. | नन्द जी को |
| विपिने | २. | वन में | शयानम् | १०. | सोये हुये |
| अति | ३. | अत्यन्त | उरगः | ८. | वह सर्प |
| बुभुक्षितः । | ४. | भूखा | अग्रसीत् ॥ | १२. | पकड़ लिया |

श्लोकार्थ—उस वन में अत्यन्त भूखा कोई बड़ा भारी अजगर रहता था। दैववश वह सर्प उधर आ गया और सोये हुये नन्द जी को पकड़ लिया ।

## षष्ठः श्लोकः

स चुक्रोशाहिना ग्रस्तः कृष्ण कृष्ण महानयम् ।
सर्पो मां ग्रसते तात प्रपन्नं परिमोचय ॥६॥

पदच्छेद— सः चुक्रोश अहिना ग्रस्तः कृष्ण-कृष्ण महान् अयम् ।
सर्पः माम् ग्रसते तात प्रपन्नम् परिमोचय ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | ३. | नन्दराय जी | सर्पः | ७. | अजगर |
| चुक्रोश | ४. | चिल्लाने लगे | माम् | ८. | मुझे |
| अहिना | १. | अजगर के | ग्रसते | ९. | निगल रहा है |
| ग्रस्तः | २. | पकड़ लेने पर | तात | १०. | बेटे |
| कृष्ण-कृष्ण | ५. | बेटा कृष्ण-कृष्ण | प्रपन्नम् | ११. | मुझ शरणागत को |
| महान् अयम् | ६. | यह विशाल | परिमोचय ॥ | १२. | इस सङ्कट से छुड़ाओ |

श्लोकार्थ—

अजगर के पकड़ लेने नन्द राय जी चिल्लाने लगे। कृष्ण-कृष्ण यह विशाल अजगर मुझे निगल रहा है। बेटे ! मुझ शरणागत को इस सङ्कट से छुड़ाओ ॥

## सप्तमः श्लोकः

**तस्य चाक्रन्दितं श्रुत्वा गोपालाः सहसोत्थिताः ।**
**ग्रस्तं च दृष्ट्वा विभ्रान्ताः सर्पं विव्यधुरुल्मुकैः ॥७॥**

पदच्छेद— तस्य च आक्रन्दितम् श्रुत्वा गोपालाः सहसा उत्थिताः ।
ग्रस्तम् च दृष्ट्वा विभ्रान्ताः सर्पम् विव्यधुः उल्मुकैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्य | १. | नन्द बाबा का | ग्रस्तम् च | ७. | अजगर के मुँह में उन्हे |
| च | ६. | और | दृष्ट्वा | ८. | देख कर |
| आक्रन्दितम् | २. | चिल्लाना | विभ्रान्ताः | ९. | घबरा गये (तब वे) |
| श्रुत्वा | ३. | सुन कर | सर्पम् | १०. | उस सर्प को |
| गोपालाः | ४. | सब के सब गोप | विव्यधुः | १२. | मारने लगे |
| सहसा उत्थिताः । | ५. | एकाएक उठ खड़े हुये | उल्मुकैः ॥ | ११. | लुकाठियों से |

श्लोकार्थ—नन्दबाबा का चिल्लाना सुनकर सब के सब गोप एकाएक उठ खड़े हुये । और अजगर के मुँह में उन्हें देख कर घबरा गये । तब वे उस सर्प को लुकाठियों से मारने लगे ॥

## अष्टमः श्लोकः

**अलातैर्दह्यमानोऽपि नामुञ्चत्तमुरङ्गमः ।**
**तमस्पृशत् पदाभ्येत्य भगवान् सात्वतां पतिः ॥८॥**

पदच्छेद— अलातैः दह्यमानः अपि नअमुञ्चत् तम् उरङ्गमः ।
तम् अस्पृशत् पदाभ्येत्य भगवान् सात्वताम् पतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अलातैः | १. | लुकाठियों से मारे जाने और | तम् | १०. | उस सर्प का |
| दह्यमानः | २. | जलाने पर | अस्पृशत् | १२. | स्पर्श किया |
| अपि | ३. | भी | पदाभ्येत्य | ११. | अपने चरणों से |
| नअमुञ्चत् | ६. | नहीं छोड़ा | भगवान् | ९. | भगवान् ने |
| तम् | ५. | नन्दबाबा को | सात्वताम् | ७. | भक्तों के |
| उरङ्गमः । | ४. | अजगर ने | पतिः ॥ | ८. | रक्षक |

श्लोकार्थ—लुकाठियों से मारे जाने और जलाने पर भी अजगर ने नन्दबाबा को नहीं छोड़ा । भक्तों के रक्षक भगवान् ने उस सर्प का अपने चरणों से स्पर्श किया ॥

## नवमः श्लोकः

स वै भगवतः श्रीमत्पादस्पर्शहताशुभः ।
भेजे सर्पवपुर्हित्वा रूपं विद्याधरार्चितम् ॥९॥

पदच्छेद— सः वै भगवतः श्रीमत् पाद स्पर्श हत अशुभः ।
भेजे सर्प वपुः हित्वा रूपम् विद्याधर अर्चितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | ५. अजगर के | भेजे | १२. धारण कर लिया |
| वै भगवतः | १. निश्चय ही भगवान् के | सर्पं | ७. उसने अजगर का |
| श्रीमत् | २. सुन्दर | वपुः हित्वा | ८. शरीर छोड़ कर |
| पाद | ३. चरणों का | रूपम् | ११. दिव्य रूप |
| स्पर्श | ४. स्पर्श होते ही | विद्याधर | ९. विद्याधरों द्वारा |
| हत अशुभः । | ६. सारे अशुभ भस्म हो गये | अर्चितम् ॥ | १०. सेवित |

श्लोकार्थ—निश्चय ही भगवान् के सुन्दर चरणों का स्पर्श होते ही अजगर के सारे अशुभ नष्ट हो गये । उसने अजगर का शरीर छोड़ कर विद्याधरों द्वारा सेवित दिव्य रूप धारण कर लिया ॥

## दशमः श्लोकः

तमपृच्छद्धृषीकेशः प्रणतं समुपस्थितम् ।
दीप्यमानेन वपुषा पुरुषं हेममालिनम् ॥१०॥

पदच्छेद— तम् अपृच्छत् हृषीकेशः प्रणतम् सम् उपस्थितम् ।
दीप्यमानेन वपुषा पुरुषम् हेम मालिनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | १०. उससे | दीप्यमानेन | ३. दिव्य ज्योति सम्पन्न |
| अपृच्छत् | ११. पूछा | वपुषा | ४. शरीर वाला |
| हृषीकेशः | ९. भगवान् श्रीकृष्ण ने | पुरुषम् | ५. वह पुरुष जब |
| प्रणतम् | ६. प्रणाम करके | हेम | १०. सोने का |
| सम् | ७. भगवान् के सामने | मालिनम् ॥ | २. हार धारण किये हुये |
| उपस्थितम् । | ८. खड़ा हो गया तब | | |

श्लोकार्थ—सोने का हार धारण किये हुये दिव्य ज्योति सम्पन्न शरीर वाला वह पुरुष जब प्रणाम करके भगवान् के सामने खड़ा हो गया तब भगवान् श्रीकृष्ण ने उससे पूछा ॥

# एकादशः श्लोकः

को भवान् परया लक्ष्म्या रोचतेऽद्भुतदर्शनः ।
कथं जुगुप्सितामेतां गतिं वा प्रापितोऽवशः ॥११॥

पदच्छेद— कः भवान् परया लक्ष्म्या रोचते अद्भुत दर्शनः ।
कथम् जुगुप्सिताम् एताम् गतिम् वा प्रापितः अवशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कः | ७. | कौन हैं | कथम् | १०. | कैसे आये |
| भवान् | ६. | आप | जुगुप्सितम् | ८. | इस निन्दनीय |
| परया | १. | अत्यन्त | गतिम् | ९. | अजगर योनि में |
| लक्ष्म्या | २. | सुन्दरता के कारण | वा | ११. | अथवा |
| रोचते | ३ | सुन्दर लगने वाले | प्रापितः | १३. | इस योनि में आना पड़ा |
| अद्भुत | ५. | अद्भुत | अवशः ॥ | १२. | विवश होकर |
| दर्शनः । | ४. | एवम् देखने में बड़े | | | |

श्लोकार्थ—अत्यन्त सुन्दरता के कारण सुन्दर लगने वाले एवम् देखने में बड़े ही अद्भुत आप कौन हैं । इस निन्दनीय अजगर योनि में कैसे आये । अथवा विवश होकर इस योनि में आना पड़ा ॥

# द्वादशः श्लोकः

सर्प उवाच— अहं विद्याधरः कश्चित् सुदर्शन इति श्रुतः ।
श्रिया स्वरूपसम्पत्त्या विमानेनाचरं दिशः ॥१२॥

पदच्छेद— अहम् विद्याधरः कश्चित् सुदर्शन इति श्रुतः ।
श्रिया स्वरूप सम्पत्त्या विमानेन अचरम् दिशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहम् | १. | मैं | श्रिया | ७. | मैं लक्ष्मी और |
| विद्याधरः | ६. | विद्याधर था | स्वरूप | ८. | रूप की |
| कश्चित् | ५. | पहले एक | सम्पत्त्या | ९. | सम्पत्ति से युक्त होकर |
| सुदर्शन | २. | सुदर्शन | विमानेन | १०. | विमान पर चढ़कर |
| इति | ३. | नाम से | अचरम् | १२. | घूमता रहता था |
| श्रुतः । | ४. | विख्यात | दिशः ॥ | ११. | दशों दिशाओं में |

श्लोकार्थ—मैं सुदर्शन नाम से विख्यात पहले एक विद्याधर था । लक्ष्मी और रूप की सम्पत्ति से युक्त होकर और विमान पर चढ़ कर दशों दिशाओं में घूमता रहता था ॥

# त्रयोदशः श्लोकः

**ऋषीन् विरूपानङ्गिरसः प्राहसं रूपदर्पितः ।**
**तैरिमां प्रापितो योनिं प्रलब्धैः स्वेन पाप्मना ॥१३॥**

पदच्छेद— ऋषीन् विरूपान् अङ्गिरसः प्राहसम् रूप दर्पितः ।
तैः इमाम् प्रापितः योनिम् प्रलब्धैः स्वेन पाप्मना ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऋषीन् | ५. ऋषियों का मैंने | तैः इमाम् | १०. उन्होंने मुझे इस |
| विरूपान् | ४. कुरूप | प्रापितः | १२. पहुँचा दिया |
| अङ्गिरसः | ३. अङ्गिरा गोत्र के | योनिम् | ११. अजगर योनि में |
| प्राहसम् | ६. उपहास किया | प्रलब्धैः | ९. कुपित होकर |
| रूप | १. अपने सौन्दर्य के | स्वेन | ७. मेरे इस |
| दर्पितः । | २. घमण्ड के कारण | पाप्मना ॥ | ८. अपराध से |

श्लोकार्थ—अपने सौन्दर्य के घमण्ड के कारण अङ्गिरा गोत्र के कुरूप ऋषियों का मैंने उपहास किया। मेरे इस अपराध से कुपित होकर उन्होंने मुझे इस अजगर योनि में पहुँचा दिया ॥

# चतुर्दशः श्लोकः

**शापो मेऽनुग्रहायैव कृतस्तैः करुणात्मभिः ।**
**यदहं लोकगुरुणा पदा स्पृष्टो हताशुभः ॥१४॥**

पदच्छेद— शापः मे अनुग्रहाय एव कृतः ते करुण आत्मभिः ।
यत् अहम् लोकगुरुणा पदा स्पृष्टः हत अशुभः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शापः मे | ५. मुझे शाप | यत् | ७. उसी के प्रभाव से |
| अनुग्रहाय | ३. अनुग्रह के लिये | अहम् | ९. मेरा |
| एव | ४. ही | लोकगुरुणा | ८. चराचर के गुरु स्वयं आपने |
| कृतः | ६. दिया था। क्योंकि | पदा | १०. अपने चरण कमलों से |
| ते | १. उन | स्पृष्टः | ११. स्पर्श करके |
| करुणआत्मभिः । | २. कृपालु ऋषियों ने | हत अशुभः ॥ | १२. मेरे अशुभ नष्ट कर दिये |

श्लोकार्थ—उन कृपालु ऋषियों ने अनुग्रह के लिये ही मुझे शाप दिया था। क्योंकि उसी के प्रभाव से चराचर के गुरु स्वयं आपने मेरा अपने चरण कमलों से स्पर्श करके मेरे अशुभ नष्ट कर दिये ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**तं त्वाहं भवभीतानां प्रपन्नानां भयापहम् ।**
**आपृच्छे शापनिर्मुक्तः पादस्पर्शादमीवहन् ॥१५॥**

पदच्छेद— तम् त्वा अहम् भव भीतानाम् प्रपन्नानाम् भय अपहम् ।
आपृच्छे शाप निर्मुक्तः पाद स्पर्शात् अमीवहन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ७. | आपके | आपृच्छे | १२. | अपने लोक जाने की अनुमति |
| त्वा अहम् | १३. | मैं आप से चाहता हूँ | शाप | १०. | शाप |
| भव | २. | जन्म मृत्यु रूप संसार के | निर्मुक्तः | ११. | मुक्त होकर |
| भीतानाम् | ३. | भय से भयभीत | पाद | ८. | चरणों के |
| प्रपन्नानाम् | ४. | शरणागत जनों के | स्पर्शात् | ९. | स्पर्श से |
| भय | ५. | भय को | अमीवहन् ॥ | १. | हे दुःख नाशक ! प्रभो |
| अपहम् । | ६. | दूर करने वाले | | | |

श्लोकार्थ—हे दुःखनाशक प्रभो ! जन्म मृत्यु रूप संसार के भय से भयभीत, शरणागत जनों के भय को दूर करने वाले आपके चरणों के स्पर्श से शाप मुक्त होकर अपने लोक जाने की अनुमति मैं आप से चाहता हूँ ॥

## षोडशः श्लोकः

**प्रपन्नोऽस्मि महायोगिन् महापुरुष सत्पते ।**
**अनुजानीहि मां देव सर्वलोकेश्वरेश्वर ॥१६॥**

पदच्छेद— प्रपन्नः अस्मि महा योगिन् महापुरुष सत्पते ।
अनुजानीहि माम् देव सर्व लोकेश्वर ईश्वर ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रपन्नः | ५. | मैं आपकी शरण में | अनुजानीहि | १२. | आज्ञा दीजिये |
| अस्मि | ६. | हूँ | माम् | ११. | मुझे |
| महा | २. | महा | देव | १०. | स्वयं प्रकाश परमात्मा |
| योगिन् | ३. | योगी | सर्व | ७. | (इन्द्रादि) सभी |
| महापुरुष | ४. | पुरुषोत्तम | लोकेश्वर | ८. | लोकेश्वरों के |
| सत्पते । | १. | हे भक्तवत्सल ! | ईश्वर ॥ | ९. | ईश्वर |

श्लोकार्थ— हे भक्तवत्सल ! महायोगी ! पुरुषोत्तम ! मैं आपकी शरण में हूँ । इन्द्रादि लोकेश्वरों के ईश्वर स्वयं प्रकाश परमात्मा मुझे आज्ञा दीजिये ॥

# सप्तदशः श्लोकः

**ब्रह्मदण्डाद् विमुक्तोऽहं सद्यस्तेऽच्युत दर्शनात् ।**
**यन्नाम गृह्णन्नखिलान् श्रोतॄनात्मानमेव च ।**
**सद्यः पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदा हि ते ॥१७॥**

पदच्छेद—
ब्रह्मदण्डात् विमुक्तः अहम् सद्यः ते अच्युत दर्शनात् ।
यत्नाम गृह्णन् अखिलान् श्रोतॄन् आत्मानम् एव च ।
सद्यः पुनाति किम् भूयः तस्य स्पृष्टः पदा हि ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ब्रह्मदण्डात् | ४. ब्राह्मणों के शाप से | श्रोतॄन् | ९. श्रोताओं को और |
| विमुक्तः | ५. मुक्त हो गया। क्योंकि | आत्मानम् एव च | १०. स्वयं को भी |
| अहम् सद्यः | ३. मैं तत्काल | सद्यः पुनाति | ११. तत्काल पवित्र कर देता है |
| ते अच्युत | १. हे अच्युत ! आपके | किम् | १६. आश्चर्य ही क्या है |
| दर्शनात् | २. दर्शनमात्र से | भूयः तस्य | १२. फिर आपके |
| यत्नाम | ६. आपका तो नाम | स्पृष्टः | १५. स्पर्श करने वाले मेरे बारे में |
| गृह्णन् | ७. लेने वाला भी | पदा हि | १४. श्री चरणों का |
| अखिलान् । | ८. समस्त | ते ॥ | १३. उन |

श्लोकार्थ—हे अच्युत ! आपके दर्शनमात्र से मैं तत्काल ब्राह्मणों के शाप से मुक्त हो गया। क्योंकि आपका तो नाम लेने वाला भी समस्त श्रोताओं को और स्वयं को भी तत्काल पवित्र कर देता है। फिर आपके उन श्री चरणों का स्पर्श करने वाले मेरे बारे में आश्चर्य ही क्या है ॥

# अष्टादशः श्लोकः

**इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हं परिक्रम्याभिवन्द्य च ।**
**सुदर्शनो दिवं यातः कृच्छ्रान्नन्दश्च मोचितः ॥१८॥**

पदच्छेद—
इति अनुज्ञाप्य दाशार्हम् परिक्रम्य अभिवन्द्य च ।
सुदर्शनः दिवम् यातः कृच्छ्रात् नन्दः च मोचितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | सुदर्शनः | २. सुदर्शन ने |
| अनुज्ञाप्य | ६. उनसे आज्ञा लेकर | दिवम्यातः | ७. वह अपने लोक को चला गया |
| दाशार्हम् | ३. भगवान् श्रीकृष्ण की | कृच्छ्रात् | ९. इस भारी संकट से |
| परिक्रम्य | ४. परिक्रमा और | नन्दः च | ८. और नन्द बाबा |
| अभिवन्द्य च । | ५. वन्दना की तथा | मोचितः ॥ | १०. मुक्त हो गये |

श्लोकार्थ—इस प्रकार सुदर्शन ने भगवान् श्रीकृष्ण की परिक्रमा और वन्दना की। तथा उनसे आज्ञा लेकर वह अपने लोक को चला गया। और नन्द बाबा इस भारी संकट से मुक्त हो गये ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**निशाम्य कृष्णस्य तदात्मवैभवं व्रजौकसो विस्मितचेतसस्ततः ।**
**समाप्य तस्मिन् नियमं पुनर्व्रजं नृपाययुस्तत् कथयन्त आदृताः ॥१९॥**

पदच्छेद — निशाम्य कृष्णस्य तत् आत्म वैभवम् व्रजओकसः विस्मित चेतसः ततः ।
समाप्य तस्मिन् नियमम् पुनः व्रजम् नृप आययुः तत् कथयन्तः आदृताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशाम्य | ६. | सुना | समाप्य | १०. | पूरा करके |
| कृष्णस्य | ३. | श्रीकृष्ण का | तस्मिन् नियमम् | ९. | उसे क्षेत्र के नियमों को |
| तत् आत्म | ४. | यह अद्भुत | पुनः व्रजम् | ११. | फिर वे व्रज में |
| वैभवम् | ५. | प्रभाव | नृप | १. | हे राजन् ! |
| व्रजओकसः | २. | जब व्रजवासियों ने | आययुः | १२. | लौट आये और |
| विस्मित | ८. | बड़ा विस्मय हुआ तथा | तत् कथयन्तः | १४. | श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करने लगे |
| चेतसः ततः । | ७. | तब उनके मन में | आदृताः ॥ | १३. | आदर पूर्वक |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! जब व्रजवासियों ने श्रीकृष्ण का यह अद्भुत प्रभाव सुना तब उनके मन में बड़ा विस्मय हुआ । तथा उस क्षेत्र के नियमों को पूरा करके फिर वे व्रज में लौट आये । और आदर पूर्वक श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करने लगे ॥

## विंशः श्लोकः

**कदाचिदथ गोविन्दो रामश्चाद्भुतविक्रमः ।**
**विजह्रतुर्वने रात्र्यां मध्यगौ व्रजयोषिताम् ॥२०॥**

पदच्छेद— कदाचित् अथ गोविन्दः रामः च अद्भुत विक्रमः ।
विजह्रतुः वने रात्र्याम् मध्यगौ व्रज योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कदाचित् | २. | एक दिन | विजह्रतुः | १२. | विहार कर रहे थे |
| अथ | १. | इसके बाद | वने | ११. | वन में |
| गोविन्दः | ५. | श्रीकृष्ण | रात्र्याम् | ७. | रात्रि के समय |
| रामः च | ६. | और बलराम जी | मध्यगौ | १०. | मध्य में होकर |
| अद्भुत | ३. | अलौकिक | व्रज | ८. | व्रज |
| विक्रमः । | ४. | कर्म करने वाले | योषिताम् ॥ | ९. | युवतियों के |

श्लोकार्थ—इसके बाद एक दिन अलौकिक कर्म करने वाले श्रीकृष्ण और बलराम जी रात्रि के समय व्रजयुवतियों के मध्य में होकर वन में विहार कर रहे थे ॥

## एकविंशः श्लोकः

**उपगीयमानौ ललितं स्त्रीजनैर्बद्धसौहृदैः ।**
**स्वलङ्कृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौ विरजोऽम्बरौ ॥२१॥**

पदच्छेद— उपगीयमानौ ललितम् स्त्री जनैः बद्ध सौहृदैः ।
स्वलङ्कृत अनुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौ विरज अम्बरैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उपगीयमानौ | ११. | उनके गुणों का गान हो रहा था | स्वलङ्कृत | ५. | सुन्दर आभूषण पहने थे |
| ललितम् | १०. | ललित स्वर में | अनुलिप्ताङ्गौ | ४. | अङ्गराग से लिप्त तथा |
| स्त्री | ६. | स्त्री | स्रग्विणौ | ३. | माला पहने |
| जनैः | ७. | समुदाय द्वारा | विरजः | १. | वे निर्मल |
| बद्ध | ९. | बँधे हुए | अम्बरैः ॥ | २. | वस्त्र धारण किये |
| सौहृदः । | ८. | बन्धुभाव के कारण | | | |

श्लोकार्थ—वे निर्मल वस्त्रधारण किये, माला पहने अङ्गराग से लिप्त तथा सुन्दर आभूषण पहने थे । स्त्री समुदाय द्वारा बँधे हुए बन्धुभाव के कारण ललित स्वर में उनके गुणों का गान हो रहा था ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**निशामुखं मानयन्तावुदितोडुपतारकम् ।**
**मल्लिकागन्धमत्तालिजुष्टं कुमुदवायुना ॥२२॥**

पदच्छेद— निशा मुखम् मानयन्तः उदित उडुप तारकम् ।
मल्लिका गन्ध मत्त अलि जुष्टम् कुमुद वायुना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशा | १. | रात्रि का | मल्लिका | ८. | बेला की |
| मुखम् | २. | शुभागमन | गन्ध | ९. | गन्ध से |
| मानयन्तः | ३. | हो रहा था | मत्त | ११. | मतवाले हो रहे थे |
| उदित | ६. | उदित हो रहे थे | अलि | ७. | भौंरे |
| उडुप | ४. | चन्द्रमा और | जुष्टम् | १०. | युक्त होकर |
| तारकम् । | ५. | तारे | कुमुद | १२. | कुमुदिनी की सुगन्ध से |
| | | | वायुना ॥ | १३. | वायु सुगन्धित हो रही थी |

श्लोकार्थ—रात्रि का शुभागमन हो रहा था । चन्द्रमा और तारे उदित हो रहे थे । भौंरे बेला की गन्ध से युक्त होकर मतवाले हो रहे थे · कुमुदिनी की सुगन्ध से वायु सुगन्धित हो रहा था ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

जगतुः सर्वभूतानां मनःश्रवणमङ्गलम् ।
तौ कल्पयन्तौ युगपत् स्वरमण्डलमूर्च्छितम् ॥२३॥

पदच्छेद— जगतुः सर्व भूतानाम् मनः श्रवण मङ्गलम् ।
तौ कल्पयन्तौ युगपत् स्वर मण्डल मूर्च्छितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जगतुः | ७. | अलापने लगे | तौ | १. | श्रीकृष्ण और बलराम ने |
| सर्व | ८. | वह समस्त | कल्पयन्तौ | ६. | राग की कल्पना करते हुए |
| भूतानाम् | ९. | प्राणियों के | युगपत् | २. | एक साथ मिलकर |
| मनः | १०. | मन और | स्वर | ३. | स्वरों के |
| श्रवण | ११. | कानों को | मण्डल | ४. | समूह और |
| मङ्गलम् । | १२. | आनन्द से भर देने वाला था | मूर्च्छितम् ॥ | ५. | मूर्च्छनाओं से युक्त |

श्लोकार्थ— श्रीकृष्ण और बलराम एक साथ मिलकर स्वरों के समूह और मूर्च्छनाओं से युक्त राग की कल्पना करते हुए अलापने लगे । वह राग जगत् के समस्त प्राणियों के मन और कानों को आनन्द से भर देने वाला था ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

गोप्यस्तद्गीतमाकर्ण्य मूर्च्छिता नाविदन् नृप ।
स्रंसद्दुकूलमात्मानं स्रस्तकेशस्रजं ततः ॥२४॥

पदच्छेद— गोप्यः तत् गीतम् आकर्ण्य मूर्च्छिताः न अविदन् नृप ।
स्रंसद् दुकूलम् आत्मानम् स्रस्तकेश स्रजम् ततः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | ६. | गोपियाँ | स्रंसद् | ८. | उन्हें खिसकते हुये |
| तत् | ३. | उनका | दुकूलम् | ९. | वस्त्रों |
| गीतम् | ४. | यह गान | आत्मानम् | १३. | स्वयं अपना भी |
| आकर्ण्य | ५. | सुनकर | स्रस्त | ११. | खिसकते हुये |
| मूर्च्छिताः | ७. | मोहित हो गईं | केश | १०. | चोटियों से |
| न अविदन् | १४. | ध्यान नहीं रहा | स्रजम् | १२. | पुष्पों तथा |
| नृप । | १. | हे परीक्षित् ! | ततः ॥ | २. | तब |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तब उनका यह गान सुन कर गोपियाँ मोहित हो गयीं । उन्हें खिसकते हुये वस्त्रों और चोटियों से गिरते हुये पुष्पों तथा स्वयं अपना भी ध्यान नहीं रहा ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**एवं विक्रीडतोः स्वैरं गायतोः सम्प्रमत्तवत्।**
**शङ्खचूड इति ख्यातो धनदानुचरोऽभ्यगात् ॥२५॥**

पदच्छेद— एवम् विक्रीडतोः स्वैरम् गायतोः सम्प्रमत्तवत्।
शंखचूड इति ख्यातः धनद अनुचरः अभ्यगात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | दोनों भाई इस प्रकार | शंखचूड | ७. | शङ्खचूड |
| विक्रीडतोः | ३. | विहार कर रहे थे और | इति | ८. | नाम का |
| स्वैरम् | २. | स्वच्छन्द | ख्यातः | ९. | विख्यात |
| गायतोः | ६. | गा रहे थे। उसी समय | धनद | १०. | कुबेर का |
| सम्प्रमत्त | ४. | उन्मत्त के | अनुचरः | ११. | अनुचर |
| वत्। | ५. | समान | अभ्यगात् ॥ | १२. | वहाँ पर आया |

श्लोकार्थ—दोनों भाई इस प्रकार स्वच्छन्द विहार कर रहे थे और उन्मत्त के समान गा रहे थे। उसी समय शङ्खचूड नाम का विख्यात कुबेर का अनुचर वहाँ पर आया ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**तयोर्निरीक्षतो राजंस्तन्नाथं प्रमदाजनम्।**
**क्रोशन्तं कालयामास दिश्युदीच्यामशङ्कितः ॥२६॥**

पदच्छेद— तयोः निरीक्षतोः राजन् तत् नाथम् प्रमदाजनम्।
क्रोशन्तम् कालयामास दिशि उदीच्याम् शङ्कितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | २. | दोनों भाइयों के | क्रोशन्तम् | ५. | रोती हुई |
| निरीक्षतोः | ३. | देखते-देखते | कालयामास | १०. | भाग चला |
| राजन् | १. | हे परीक्षित् ! | दिशि | ९. | दिशा की ओर |
| तत्नाथम् | ४. | श्रीकृष्ण जिनके स्वामी हैं | उदीच्याम् | ८. | उत्तर |
| प्रमदाजनम्। | ६. | स्त्री जनों को लेकर वह उन | अशङ्कितः ॥ | ७. | निडर होकर |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! दोनों भाइयों के देखते-देखते श्री कृष्ण जिनके स्वामी हैं, उन रोती हुई स्त्रीजनों को लेकर वह निडर होकर उत्तर दिशा की ओर भाग चला ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**क्रोशन्तं कृष्ण रामेति विलोक्य स्वपरिग्रहम् ।**
**यथा गा दस्युना ग्रस्ता भ्रातरावन्वधावताम् ॥२७॥**

पदच्छेद— क्रोशन्तम् कृष्ण रामेति विलोक्य स्व परिग्रहम् ।
यथा गाः दस्युना ग्रस्ताः भ्रातरौ अन्वधावताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रोशन्तम् | ३. | रोती हुई | यथा | ९. | समान |
| कृष्ण | १. | हा कृष्ण ! | गाः | ८. | गायों के |
| रामेति | २. | हा बलराम ! इस प्रकार | दस्युना | ६. | डाकू के द्वारा |
| विलोक्य | १०. | देखकर | ग्रस्ताः | ७. | पकड़ी हुई |
| स्व | ४. | अपनी | भ्रातरौ | ११. | वे दोनों भाई उसकी ओर |
| परिग्रहम् । | ५. | प्रेयसियों को | अन्वधावताम् ॥ | १२. | दौड़ पड़े । |

श्लोकार्थ— हा कृष्ण ! हा बलराम ! इस प्रकार रोती हुई अपनी प्रेयसियों को डाकू के द्वारा पकड़ी हुई गायों के समान देखकर वे दोनों भाई उसकी ओर दौड़ पड़े ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**मा भैष्टेत्यभयारावौ शालहस्तौ तरस्विनौ ।**
**आसेदतुस्तं तरसा त्वरितं गुह्यकाधमम् ॥२८॥**

पदच्छेद— मा भैष्टेति अभय आरावौ शालहस्तौ तरस्विनौ ।
आसेदतुः तम् तरसा त्वरितम् गुह्यक अधमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मा | १. | मत | आसेदतुः | १२. | जा पहुँचे |
| भैष्टेति | २. | डरो-इस प्रकार | तम् | ९. | उस |
| अभय | ३. | अभय | तरसा | ७. | शीघ्रतापूर्वक |
| आरावौ | ४. | वाणी कहते हुये ये | त्वरितम् | ८. | तत्काल |
| शालहस्तौ | ५. | हाथ में शालका वृक्ष लेकर | गुह्यक | ११. | यक्ष के पास |
| तरस्विनौ । | ६. | बड़े वेग से | अधमम् ॥ | १०. | नीच |

श्लोकार्थ - मत डरो-इस प्रकार अभय वाणी कहते हुये वे हाथ में शालका वृक्ष लेकर बड़े वेग से शीघ्रता पूर्वक तत्काल उस नीच यक्ष के पास जा पहुँचे ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**स वीक्ष्य तावनुप्राप्तौ कालमृत्यू इवोद्विजन् ।**
**विसृज्य स्त्रीजनं मूढः प्राद्रवज्जीवितेच्छया ॥२९॥**

पदच्छेद— स: वीक्ष्य तौ अनुप्राप्तौ काल मृत्यू इव उद्विजन ।
विसृज्य स्त्री जनम् मूढः प्राद्रवत् जीवित इच्छया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सः | १. वह यक्ष | विसृज्य | ११. | वहीं छोड़कर |
| वीक्ष्य | ६. देखकर | स्त्री | ९. | स्त्री |
| तौ | ४. श्रीकृष्ण और बलराम को | जनम् | १०. | जनों को |
| अनुप्राप्तौ | ५. पीछे आते हुये | मूढः | ८. | वह मूर्ख |
| काल | २. काल और | प्राद्रवत् | १४. | भाग खड़ा हुआ |
| मृत्युइव | ३. मृत्यु के समान | जीवित | १२. | अपने प्राण बचाने |
| उद्विजन् । | ७. घबड़ा गया और | इच्छया॥ | १३. | की इच्छा से |

श्लोकार्थ—वह यक्ष काल और मृत्यु के समान श्रीकृष्ण और बलराम को पीछे आते हुये देखकर घबड़ा गया। और वह मूर्ख स्त्रीजनों को वहीं छोड़कर अपने प्राण बचाने के लिये भाग खड़ा हुआ ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**तमन्वधावद् गोविन्दो यत्र यत्र स धावति ।**
**जिहीर्षुस्तच्छिरोरत्नं तस्थौ रक्षन् स्त्रियो बलः ॥३०॥**

पदच्छेद— तम् अन्वधावत् गोविन्दः यत्र-यत्र सः धावति ।
जिहीर्षुः तत् शिरः रत्नम् तस्थौ रक्षन् स्त्रियः बलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तम् | ८. उनके | जिहीर्षुः | १२. | निकालना चाहते थे |
| अन्वधावत् | ९. पीछे दौड़ने लगे | तत् शिरः | १०. | वे उसके सिर को |
| गोविन्दः | ४. भगवान् श्रीकृष्ण | रत्नम् | ११. | चूड़ामणि |
| यत्र-यत्र | ५. जहाँ-जहाँ | तस्थौ | ३. | वहीं नियुक्त करके |
| सः | ६. वह यक्ष | रक्षन् स्त्रियः | १. | स्त्रियों की रक्षा के लिये |
| धावति । | ७. भाग कर गया | बलः ॥ | २. | बलराम जी को |

श्लोकार्थ—स्त्रियों की रक्षा के लिये बलराम जी को वहीं नियुक्त करके भगवान् श्रीकृष्ण जहाँ-जहाँ वह यक्ष भाग कर गया उसके पीछे दौड़ने लगे। वे उसके सिर की चूड़ामणि निकालना चाहते थे ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

अविदूर इवाभ्येत्य शिरस्तस्य दुरात्मनः ।
जहार मुष्टिनैवाङ्ग सहचूडामणिं विभुः ॥३१॥

पदच्छेद— अविदूरे इव अभ्येत्य शिरः तस्य दुरात्मनः ।
जहार मुष्टिना एव अङ्ग सह चूड़ामणिम् विभुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अविदूरे | १. | कुछ दूर | जहार | १२. | अलग कर दिया |
| इव | २. | ही | मुष्टिना | ८. | एक घूसा जमाया । और |
| अभ्येत्य | ३. | जाने पर | एव अङ्ग | ११. | उसका सिर भी धड़ से |
| शिरः | ७. | सिर पर | सह | १०. | साथ |
| तस्य | ५. | उस | चूड़ामणिम् | ९. | चूडामणि के |
| दुरात्मनः । | ६. | दुष्ट के | विभुः ॥ | ४. | भगवान् श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—कुछ ही दूर जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने उस दुष्ट के सिर पर एक घूंसा जमाया । और चूडामणि के साथ ही उसका सिर ही धड़ से अलग कर दिया ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

शङ्खचूडं निहत्यैवं मणिमादाय भास्वरम् ।
अग्रजायाददात् प्रीत्या पश्यन्तीनां च योषिताम् ॥३२॥

पदच्छेद— शङ्खचूडम् निहत्य एवम् मणिम् आदाय भास्वरम् ।
अग्रजाय अददात् प्रीत्या पश्यन्तीनाम् च योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शङ्खचूडम् | २. | शङ्खचूड का | अग्रजाय | ११. | वह मणि बलराम जी को |
| निहत्य | ३. | वध करके | अददात् | १२. | दे दी |
| एवम् | १. | इस प्रकार श्रीकृष्ण ने | प्रीत्या | १०. | बड़े प्रेम से |
| मणिम् | ६. | मणि | पश्यन्तीनाम् | ९. | देखते-देखते |
| आदाय | ७. | लेकर | च | ४. | और उससे |
| भास्वरम् । | ५. | चमकीली | योषिताम् ॥ | ८. | गोपियों के |

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण ने शङ्खचूड का बध करके और उससे चमकीली मणि लेकर गोपियों के देखते-देखते बड़े प्रेम से वह मणि बलराम जी को दे दी ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे रासक्रीडायां शङ्खचूडवधो नाम चतुस्त्रिंशः अध्यायः ॥३४॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## पञ्चत्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—गोप्यः कृष्णे वनं याते तमनुद्रुतचेतसः ।
कृष्णलीलाः प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥१॥

पदच्छेद— गोप्यः कृष्णे वनम् याते तम् अनुद्रुत चेतसः ।
कृष्ण लीलाः प्रगायन्त्यः निन्युः दुःखेन वासरान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | ७. | गोपियाँ | कृष्ण | ८. | श्रीकृष्ण की |
| कृष्णे | १. | श्रीकृष्ण भगवान् के | लीलाः | ९. | लीलाओं का |
| वनम् | २. | वन में | प्रगायन्त्यः | १०. | गायन करती हुई |
| याते | ३. | चले जाने पर | निन्युः | १३. | बिताती थीं |
| तम् | ४. | उनके | दुःखेन | ११. | बड़े कष्ट से |
| अनुद्रुत | ५. | पीछे गये हुये | वासरान् ॥ | १२. | दिन |
| चेतसः । | ६. | चित्तवाली | | | |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण भगवान् के वन में चले जाने पर उनके पीछे गये हुये चित्तवाली गोपियाँ श्रीकृष्ण की लीलाओं का गायन करती हुई बड़े कष्ट से दिन बिताती थीं ॥

### द्वितीयः श्लोकः

गोप्य ऊचुः—वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रुरधरार्पितवेणुम् ।
कोमलाङ्गुलिभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥२॥

पदच्छेद— वाम बाहु कृत वाम कपोलः वल्गितभ्रुः अधर अर्पित वेणुम् ।
कोमल अङ्गुलिभिः आश्रित मार्गम् गोप्यः ईरयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वाम बाहु | ४. | बायीं बाँह की ओर | कोमल | १०. | सुकुमार |
| कृत | ५. | झुका करके | अङ्गुलिभिः | ११. | अङ्गुलियों को |
| वाम कपोलः | ३. | अपने बाँये कपोल को | आश्रित | १३. | रख कर |
| वल्गितभ्रुः | ६. | भौंहें चलाते हुये | मार्गम् | १२. | छेदों पर |
| अधर | ८. | अधरों से | गोप्यः | १. | हे गोपियो ! |
| अर्पित | ९. | लगाते हैं (तथा अपनी) | ईरयति | १४. | मधुर तान छेड़ते हैं |
| वेणुम् । | ७. | बाँसुरी को | यत्र मुकुन्दः ॥ | २. | जहाँ श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! जहाँ श्रीकृष्ण अपने बाँयें कपोल को बायीं बाँह की ओर झुका करके भौंहें चलाते हुये बाँसुरी को अधरों से लगाते हैं । तथा अपनी सुकुमार अंगुलियों को छेदों पर रख कर मधुर तान छेड़ते हैं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**व्योमयानवनिताः सह सिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य सलज्जाः ।**
**काममार्गणसमर्पितचित्ताः कश्मलं ययुरपस्मृतनीव्यः ॥३॥**

पदच्छेद— व्योमयान वनिताः सह सिद्धैः विस्मिताः तत् उपधार्य सलज्जाः ।
काम मार्गण समर्पित चित्ताः कश्मलम् ययुः अपस्मृत नीव्यः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्योमयान | ३. | विमानों पर आई हुई | काम | ९. | काम के |
| वनिताः | ४. | सुन्दरियाँ | मार्गण | १०. | बाणों से |
| सह | २. | साथ | समर्पित | ११. | बिंधे हुये |
| सिद्धैः | १. | वहाँ सिद्ध गणों के | चित्ताः | १२. | चित्त वाली (होकर) |
| विस्मिताः | ७. | आश्चर्य चकित (और) | कश्मलम् | १३. | अचेत |
| तत् | ५. | उस बात को | ययुः | १४. | हो जाती हैं |
| उपधार्य | ६. | सुनकर | अपस्मृत | १६. | सुधि नहीं रहती है |
| सलज्जाः । | ८. | लज्जित (तथा) | नीव्यः ॥ | १५. | उन्हें नीवी खुलने की भी |

श्लोकार्थ—वहाँ सिद्ध गणों के साथ विमानों पर आई सुन्दरियाँ आश्चर्यचकित और लज्जित तथा काम के बाणों से बिंधे हुये चित्त वाली होकर अचेत हो जाती हैं। उन्हें नीवी खुलने की भी सुधि नहीं रहती है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**हन्त चित्रमबलाः शृणुतेदं हारहास उरसि स्थिरविद्युत् ।**
**नन्दसूनुरयमार्तजनानां नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः ॥४॥**

पदच्छेद— हन्त चित्रम् अबलाः शृणुत इदम् हार हासः उरसि स्थिर विद्युत् ।
नन्द सूनुः अयम् आर्त जनानाम् नर्मदः यर्हि कूजित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हन्त | १. | अहो | नन्द | १२. | नन्द जी के |
| चित्रम् | ४. | आश्चर्य की बात | सूनुः | १३. | पुत्र |
| अबलाः | २. | गोपियो ! तुम | अयम् | ११. | ये |
| शृणुत | ५. | सुनो | आर्तजनानाम् | ९. | दुःखी जनों को |
| इदम् | ३. | यह | नर्मदः | १०. | सुख देने वाले |
| हारहासः | ७. | हार की शोभा | यर्हि | १४. | जब |
| उरसि | ६. | उनके वक्षः स्थल पर | कूजित | १६. | बजाते हैं |
| स्थिर विद्युत् । | ८. | अचल बिजली जैसी है | वेणुः ॥ | १५. | बाँसुरी |

श्लोकार्थ—अहो ! गोपियो ! तुम यह आश्चर्य की बात सुनो। उनके वक्षः स्थल पर हार की शोभा अचल बिजली जैसी है। ये दुःखी जनों को सुख देने वाले नन्द जी के पुत्र जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो वेणुवाद्यहृतचेतस आरात्।**
**दन्तदष्टकवला धृतकर्णा निद्रिता लिखितचित्रमिवासन् ॥५॥**

पदच्छेद— वृन्दशः व्रजवृषाः मृगगावः वेणुवाद्य हृत चेतसः आरात्।
दन्त दष्ट कवलाः धृत कर्णाः निद्रिताः लिखित चित्रम् इव आसन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वृन्दशः | ४. | झुण्ड के झुण्ड | दन्तदष्ट | ८. | दाँतों से काटे गये |
| व्रज | ३. | व्रज के | कवलाः | ६. | घास का ग्रास लिये |
| वृषाः | ५. | बैल | धृतकर्णाः | १०. | कानों को खड़े किये हुये |
| मृगगावः | ६. | हरिण-गाय | निद्रिताः | ११. | सोये हुये से |
| वेणु वाद्य | १. | तब बांसुरी की ध्वनि से | लिखित | १२. | दीवार पर लिखे हुये |
| हृतचेतसः | २. | चुराये गये चित्त वाले | चित्रम् इव | १३. | चित्र के समान |
| आरात्। | ७. | पास में (आकर) | आसन् ॥ | १४. | स्थिर खड़े हो जाते थे |

श्लोकार्थ—तब बांसुरी की ध्वनि से चुराये गये चित्त वाले व्रज के झुण्ड के झुण्ड बैल, हिरण, गाय पास में आकर दाँतों से काटे गये घास का ग्रास लिये, कानों को खड़े किये हुये, सोये हुये से दीवार पर लिखे हुये के समान स्थिर खड़े हो जाते थे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**बर्हिणस्तबकधातुपलाशैर्बद्धमल्लपरिबर्हविडम्बः ।**
**कर्हिचित् सबल आलि स गोपैर्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥६॥**

पदच्छेद— बर्हिणस्तबकधातु पलाशैः बद्ध मल्ल परिबर्ह विडम्बः।
कर्हिचित् सबलः आलि सः गोपैः गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्दः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बर्हिणः | ४. | मोर पंख | कर्हिचित् | ३. | कभी |
| स्तबक | ५. | फूल के गुच्छे | सबलः | १३. | बलराम (और) |
| धातु | ६. | धातु (और) | आलि | १. | हे सखि ! |
| पलाशैः | ७. | पल्लवों को | सः | १२. | वे |
| बद्ध | ८. | बांधे हुये | गोपैः | १४. | गोपों के साथ |
| मल्ल | ९. | पहलवान का सा | गाः | १५. | गौओं को |
| परिबर्ह | १०. | वेष | समाह्वयति | १६. | पुकारते हैं |
| विडम्बः। | ११. | बनाकर | यत्र मुकुन्दः ॥ | २. | जहाँ श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—हे सखि ! जहाँ श्रीकृष्ण कभी मोर पंख, फूल के गुच्छे, धातु और पल्लवों को बांधे हुये पहलवान का सा वेष बनाकर वे बलराम और गोपों के साथ गौओं को पुकराते है ॥

## सप्तमः श्लोकः

**तर्हि भग्नगतयः सरितो वै तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम् ।**
**स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः ।।७।।**

पदच्छेद— तर्हि भग्न गतयः सरितः वै तत् पद अम्बुज रजः अनिल नीतम् ।
स्पृहयतीः वयम् इव अबहु पुण्याः प्रेम वेपित भुजाः स्तिमित आपः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तर्हि | १. | उस समय | स्पृहयतीः | १२. | कामना करती हैं पर |
| भग्न | ४. | रुक जाती है (वे) | वयम् | १६. | हमारी |
| गतयः | ३. | गति | इव | १७. | तरह |
| सरितः वै | २. | नदियों को | अबहु पुण्याः | १८. | अल्प पुण्य वाली है |
| तत् पद | ५. | उन श्रीकृष्ण के चरण | प्रेम | १३. | प्रेम के कारण |
| अम्बुज | ६. | कमल की | वेपित | १४. | काँपती हुई |
| रजः | ७. | धूलि को | भुजाः | १५. | भुजाओं वाली |
| अनिल | ८. | वायु द्वारा | स्तिमित | ११. | रुके हुये |
| नीतम् । | ९. | अपने पास पहुँचाने की | आपः ।। | १०. | जलवाली |

श्लोकार्थ—उस समय नदियों की गति रुक जाती हैं । वे उन श्रीकृष्ण के चरण कमल की धूलि को वायु द्वारा अपने पास पहुँचाने की कामना करती है । रुके हुये जलवाली प्रेम के कारण काँपती हुई भुजाओं वाली हमारी तरह अल्प पुण्य वाली हैं ।।

## अष्टमः श्लोकः

**अनुचरैः समनुवर्णितवीर्य आदिपूरुष इवाचलभूतिः ।**
**वनचरो गिरितटेषु चरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ।।८।।**

पदच्छेद— अनुचरैः समनु वर्णित वीर्य आदि पुरुषः इव अचल भूतिः ।
वन चरः गिरि तटेषु चरन्तीः वेणुना आह्वयति गाः सः यदा हि ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनुचरैः | १. | अनुचरों द्वारा | वनचरः | ९. | वन विहारी |
| समनु | ३. | ज ते हुये | गिरि | ११. | पर्वत की |
| वर्णित | २. | गायन किये | तटेषु | १२. | घाटी में |
| वीर्यः | ४. | पराक्रम वाले (तथा) | चरन्तीः | १३. | चरती हुई |
| आदि पूरुषः | ५. | आदि पुरुष के | वेणुना | १५. | बाँसुरी में |
| इव | ६. | समान | आह्वयति | १६. | पुकारते हैं |
| अचल | ७. | निश्चल | गाः | १४. | गौओं को |
| भूतिः । | ८. | ऐश्वर्य वाले | सः यदाहि ।। | १०. | वे श्रीकृष्ण जब |

श्लोकार्थ—अनुचरों द्वारा गायन किये जाते हुये पराक्रम वाले तथा आदि पुरुष के समान निश्चल ऐश्वर्य वाले वनविहारी वे श्रीकृष्ण जब पर्वत की घाटी में चरती हुई गौओं को बाँसुरी से पुकारते हैं ।।

## नवमः श्लोकः

**वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्याः ।**
**प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवः ससृजुः स्म ॥९॥**

पदच्छेद— वनलताः तरवः आत्मनि विष्णुम् व्यञ्जयन्त्यः इव पुष्प फलआढ्याः ।
प्रणत भार विटपाः मधुधाराः प्रेमहृष्ट तनवः ससृजुः स्म ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वनलताः | ४. | वन की लतायें | प्रणत | १०. | झुकी हुई |
| तरवः | ३. | वृक्ष (तथा) | भार | ९. | भार से |
| आत्मनि | ५. | अपने भीतर | विटपाः | ११. | डालियों वाली (तथा) |
| विष्णुम् | ६. | विष्णु की | मधुधाराः | १४. | मधु की धारायें |
| व्यञ्जयन्त्यः | ७. | अभिव्यक्ति करती हुई के | प्रेमहृष्टाः | १२. | प्रेम से पुलकित |
| इव | ८. | समान | तनवः | १३. | शरीर वाली होकर |
| पुष्प | १. | उस समय पुष्पों और | ससृजुः स्म ॥ | १५. | उडेलने लगती हैं |
| फलाढ्याः । | २. | फलों से लदे हुये | | | |

श्लोकार्थ—उस समय पुष्पों और फलों से लदे हुये वृक्ष तथा वन की लतायें अपने भीतर विष्णु की अभिव्यक्ति करती हुई के समान भार से झुकी हुई डालियों वाली तथा प्रेम से पुलकित शरीर वाली होकर मधु की धारारें उडेलने लगती हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**दर्शनीयतिलको वनमालादिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ।**
**अलिकुलैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥१०॥**

पदच्छेद— दर्शनीय तिलकः वनमाला दिव्य गन्ध तुलसी मधु मत्तैः ।
अलिकुलैः लघु गीतम् अभीष्टम् आद्रियन् यर्हि सन्धित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दर्शनीय | १. | देखने योग्य | अलिकुलैः | ९. | भौंरों के झुन्डों के |
| तिलकः | २. | तिलक वाले (श्रीकृष्ण) | लघु | १०. | उच्चस्वर के |
| वनमाला | ३. | वनमाला की | गीतम् | १२. | गुन्जार का |
| दिव्य | ४. | दिव्य | अभीष्टम् | ११. | अभीष्ट |
| गन्ध | ५. | सुगन्ध (तथा) | आद्रियन् | १३. | आदर करते हुये |
| तुलसी | ६. | तुलसी के | यर्हि | १४. | जब |
| मधु | ७. | मधु से | सन्धित | १६. | बजाते हैं |
| मत्तैः । | ८. | मतवाले | वेणुः ॥ | १५. | बाँसुरी |

श्लोकार्थ—देखने योग्य तिलक वाले श्रीकृष्ण वनमाला की दिव्य सुगन्ध तथा तुलसी के मधु से मतवाले भौंरों के झुन्डों के उच्चस्वर के अभीष्ट गुन्जार का आदर करते हुये जब बाँसुरी बजाते हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**सरसि सारहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य ।**
**हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥११॥**

पदच्छेद— सरसि सारस हंस विहङ्गाः चारु गीत हृत चेतसः एत्य ।
हरिम् उपासते ते यत चित्ताः हन्त मीलित दृशः धृत मौनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरसि | ८. | सरोवर से | हरिम् | १५. | श्रीकृष्ण की |
| सारस | ५. | सारस | उपासते | १६ | उपासना करने लगते हैं |
| हंस | ६. | हंस (आदि) | ते | १०. | और वे |
| विहङ्गाः | ७. | पक्षी | यतचित्ताः | ११. | एकाग्रमन से |
| चारुगीत | २. | सुन्दर गीत से | हन्त | १. | आश्चर्य की बात है कि |
| हृत | ३. | हरे हुये | मीलित | १३. | मूंदकर |
| चेतसः | ४. | चित्त वाले | दृशः | १२. | आँखें |
| एत्य । | ९. | निकल कर आ जाते | धृतमौनाः ॥ | १४. | चुप्पी साधकर |

श्लोकार्थ—आश्चर्य की बात है कि सुन्दर गीत से हरे हुये चित्त वाले सारस हंस आदि पक्षी रसोवर से निकल कर आ जाते हैं। और वे एकाग्रमन से आँखें मूंदकर चुप्पी साधकर श्रीकृष्ण की उपासना करने लगते हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**सहबलः स्रगवतंसविलासः सानुषु क्षितिभृतो व्रजदेव्यः ।**
**हर्षयन् यर्हि वेणुरवेण जातहर्ष उपरम्भति विश्वम् ॥१२॥**

पदच्छेद— सह बलः स्रग् अवतंस विलासः सानुषु क्षिति भृतः व्रज देव्यः ।
हर्षयन् यर्हि वेणु रवेण जात हर्षः उपरम्भति विश्वम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सह | ४. | साथ (श्रीकृष्ण) | व्रजदेव्यः | १. | अरी व्रज देवियो ! |
| बलः | ३. | बलराम जी के | हर्षयन् | ११. | हर्षित करते हुयें मानों |
| स्रग् | ५. | फूलों की माला का | यर्हि | २. | जब |
| अवतंस | ६. | आभूषण | वेणुरवेण | १०. | वंशी की ध्वनि से |
| विलासः | ७. | धारण करके | जातहर्ष | १२. | आनन्द में भर कर |
| सानुषु | ९. | शिखर पर चढ़कर | उपरम्भति | १४. | आलिंगन कर रहे हैं |
| क्षितिभृतः । | ८. | गिरिराज पर्वत के | विश्वम् ॥ | १३. | संसार को |

श्लोकार्थ—अरी व्रजदेवियो ! जब बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण फूलों की माला का आभूषण धारण करके गिरराज पर्वत के शिखर पर चढ़कर वंशी की ध्वनि से हर्षित करते हुये मानों आनन्द में भर कर संसार को आलिंगित कर रहे हैं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**महदतिक्रमणशङ्कितचेता मन्दमन्दमनुगर्जति मेघः ।**
**सुहृदमभ्यवर्षत् सुमनोभिश्छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥१३॥**

पदच्छेद— महत् अतिक्रमण शङ्कित चेताः मन्द-मन्दम् अनुगर्जति मेघः ।
सुहृदम् अभ्यवर्षत् सुमनोभिः छायया च विदधत् प्रतपत्रम् ॥

शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महत् | १. | बड़ों की बात का | सुहृदम् | ८. | अपने मित्र श्रीकृष्ण पर |
| अतिक्रमण | २. | उल्लंघन करने से | अभ्यवर्षत् | १०. | वर्षा करने लगता है |
| शङ्कित | ३. | सशङ्कित | सुमनोभिः | ९. | फूलों की |
| चेताः | ४. | मन वाला | छायया | १४. | छाया करता है |
| मन्दमन्दम् | ६. | धीरे-धीरे | च | ११. | और |
| अनुगर्जति | ७. | गरजता है (और) | विदधत् | १३. | बन कर |
| मेघः । | ५. | बादल | प्रतपत्रम् ॥ | १२. | छाता |

श्लोकार्थ—बड़ों की बात का उल्लंघन करने से सशङ्कित मन वाला बादल धीरे-धीरे गरजता है। और अपने मित्र श्रीकृष्ण पर फूलों की वर्षा करने लगता है। और छाता बन कर छाया करता है॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**विविधगोपचरणेषु विदग्धो वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः ।**
**तव सुतः सति यदाधरबिम्बे दत्तवेणुरनयत् स्वरजातीः ॥१४॥**

पदच्छेद— विविध गोप चरणेषु विदग्धः वेणु वाद्ये उरुधा निज शिक्षाः ।
तव सुतः सति यदा अधर बिम्बे दत्त वेणुः अनयत् स्वर जातीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विविध | ३. | अनेक | तवसुतः | २. | आपके पुत्र श्रीकृष्ण |
| गोप | ४. | ग्वालों के साथ | सति | १. | हे सती यशोदा जी ! |
| चरणेषु | ५. | खेल खेलने में बड़े | यदा | १०. | जब वे |
| विदग्धः | ६. | चतुर हैं (उन्होंने) | अधर बिम्बे | ११. | लाल अधरों पर |
| वेणुवाद्य | ७. | वंशी पर | दत्तवेणुः | १२. | बाँसुरी रख कर |
| उरुधाः | ८. | अनेक प्रकार के राग | अनयत् | १४. | बजाने लगते हैं |
| निजशिक्षाः । | ९. | स्वयं सीख लिये हैं | स्वर जातीः ॥ | १३. | अनेक स्वरों में |

श्लोकार्थ—हे सती यशोदा जी ! आपके पुत्र श्रीकृष्ण अनेक ग्वालों के साथ खेल-खेलनें में बड़े चतुर हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के राग स्वयं सीख लिये हैं। जब लाल अधरों पर बाँसुरी रखकर अनेक स्वरों में बजाने लगते हैं॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।**
**कवय आनतकन्धरचित्ताः कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥१५॥**

पदच्छेद— सवनशः तत् उपधार्य सुरेशाः शक्र शर्व परमेष्ठि पुरोगाः ।
कवयः आनत कन्धर चित्ताः कश्मलम् ययुः अनिश्चित तत्त्वाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सवनशः | १. वंशी की परममोहिनी और | कवयः | ९. सर्वज्ञ हैं (वे) |
| तत् | २. नई तान | आनत | १३. झुका कर |
| उपधार्य | ३. सुनकर | कन्धर | १२. गरदन के |
| सुरेशाः | ४. बड़े बड़े देवता | चित्ताः | १४. मन से |
| शक्र | ५. इन्द्र | कश्मलम् | १५. मोहित |
| शर्व | ६. शंकर | ययुः | १६. हो गये |
| परमेष्ठि | ७. ब्रह्मा | अनिश्चित | ११. निश्चय न कर सकने से |
| पुरोगाः । | ८. आदि (जो) | तत्त्वाः ॥ | १० वास्तविकता का |

श्लोकार्थ—वंशी की परममोहिनी और नई तान सुनकर बड़े बड़े देवता इन्द्र, शंकर, ब्रह्मा आदि जो सर्वज्ञ हैं, वे वास्तविकता का निश्चय न कर सकने से गरदन को झुकाकर मन से मोहित हो जाते हैं ।

## षोडशः श्लोकः

**निजपदाब्जदलैर्ध्वजवज्रनीरजाङ्कुशविचित्रललामैः ।**
**व्रजभुवः शमयन् खुरतोदं वर्ष्मधुर्यगतिरीडितवेणुः ॥१६॥**

पदच्छेद— निज पद अब्ज दलैः ध्वज वज्र नीरज अङ्कुश विचित्र ललामैः ।
व्रजभुवः शमयन् खुरतोदम् वर्ष्मधुर्य गतिः ईडित वेणुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निज | ६. अपने | व्रजभुवः | ८. व्रज भूमि की |
| पद अब्जदलैः | ७. चरण कमलों से | शमयन् | ११. शान्त करते हुये |
| ध्वजवज्र | १. ध्वज वज्र | खुर | ९. गौओं के खुरों से |
| नीरज | २. कमल (तथा) | तोदम् | १०. खुदने की व्यथा को |
| अङ्कुश | ३. अंकुश के | वर्ष्मधुर्य | १३. गजराज के समान |
| विचित्र | ४. अनोखे | गतिः | १४. चाल से चल रहे हैं |
| ललामैः । | ५. सुन्दर चिह्नों से युक्त | ईडितवेणुः ॥ | १२. बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण |

श्लोकार्थ—ध्वज, वज्र, कमल तथा अंकुश के अनोखे सुन्दर चिह्नों से युक्त अपने चरण कमलों से व्रज भूमि की गौओं के खुरों से खुदने की व्यथा को शान्त करते हुये एवम् बाँसुरी बजाते हुये श्रीकृष्ण गजराज के समान चाल से चल रहे हैं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**व्रजति तेन वयं सविलासवीक्षणार्पितमनोभववेगाः ।**
**कुजगतिं गमिता न विदामः कश्मलेन कबरं वसनं वा ॥१७॥**

पदच्छेद— व्रजति तेन वयम् सविलास वीक्षण अर्पित मनोभव वेगाः ।
कुजगतिम् गमिताः न विदामः कश्मलेन कबरम् वसनम् वा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| व्रजति | १. | जब वे चलते हैं | कुजगतिम् | ८. | वृक्षों के समान निश्चल गति को |
| तेन | २. | तब उनकी चाल (और) | गमिता | ९. | प्राप्त कर लेती है |
| वयम् | ७. | हम | न विदामः | १४. | हम नहीं जान पाती हैं |
| सविलास | ३. | विलास भरी | कश्मलेन | १०. | मोह के कारण |
| वीक्षण | ४. | चितवन से (हमारा) | कबरम् | ११. | जूड़ा खुलने |
| अर्पित | ६. | बढ़ जाता है (और) | वसनम् | १३. | वस्त्र उतरने को भी |
| मनोभववेगाः । | ५. | काम वेग | वा ॥ | १२. | अथवा |

श्लोकार्थ—अरी वीर ! जब वे चलते हैं तब उनकी चाल और विलास भरी चितवन से हमारा काम वेग बढ़ जाता है और हम वृक्षों के समान निश्चल गति को प्राप्त कर लेती हैं । मोह के कारण जूड़ा खुलने अथवा वस्त्र उतरने को भी नहीं जान पाती हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**मणिधरः क्वचिदागणयन् गा मालया दयितगन्धतुलस्याः ।**
**प्रणयिनोऽनुचरस्य कदांसे प्रक्षिपन् भुजमगायत यत्र ॥१८॥**

पदच्छेद— मणिधरः क्वचित् आगणयन् गाः मालया दयित गन्ध तुलस्याः ।
प्रणयिनः अनुचरस्य कदा अंसे प्रक्षिपन् भुजम् अगायत यत्र ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मणिधरः | १. | मणि धारण किये हुये | प्रणयिनः | ९. | प्रेमी |
| क्वचित् | २. | कहीं श्रीकृष्ण | अनुचरस्य | १०. | सखा के |
| आगणयन् | ८. | गिनते हुये | कदा | १५. | कभी |
| गाः | ७. | गौओं को | अंसे | ११. | कन्धे पर |
| मालया | ६. | माला से | प्रक्षिपन् | १३. | रख कर |
| दयित | ३. | प्रिय | भुजम् | १२. | बाँह |
| गन्ध | ४. | गन्ध वाली | अगायत | १६. | गाने लगते हैं |
| तुलस्याः । | ५. | तुलसी की | यत्र ॥ | १४. | जब तब |

श्लोकार्थ—मणि धारण किये हुये कहीं श्रीकृष्ण प्रिय गन्ध वाली तुलसी की माला से गौओं को गिनते हुये, प्रेमी सखा के कन्धे पर बाँह रख कर जब तब कभी गाने लगते हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**क्वणितवेणुरववञ्चितचित्ताः कृष्णमन्वसत कृष्णगृहिण्यः ।**
**गुणगणार्णमनुगत्य हरिण्यो गोपिका इव विमुक्तगृहाशाः ॥१९॥**

पदच्छेद— क्वचित् वेणुरव वञ्चित चित्ताः कृष्णम् अन्वसत कृष्ण गृहिण्यः ।
गुणगण अर्णम् अनुगत्य हरिण्यः गोपिका इव विमुक्त गृहाशाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वणित | १. | बजती हुई | गुणगण | १४. | गुण समूह के |
| वेणुरव | २. | बाँसुरी की (ध्वनि से) | अर्णम् | १५. | समुद्र (कृष्ण) का |
| वञ्चित | ३. | मोहित | अनुगत्य | १६. | अनुगमन करने लगती हैं |
| चित्ताः | ४. | चित्तवाली | हरिण्यः | १३. | हरिणियाँ |
| कृष्णम् | ७. | कृष्ण के पास | गोपिकाः | ११. | हम गोपियों के |
| अन्वसत | ८. | दौड़ आती हैं (और) | इव | १२. | समान |
| कृष्ण | ५. | कृष्णसार मृगों की | विमुक्त | १०. | छोड़ चुकने वाली |
| गृहिण्यः । | ६. | रानियाँ | गृहाशाः ॥ | ९. | घर की आशा |

श्लोकार्थ—उस समय बजती हुई बाँसुरी की ध्वनि से मोहित चित्तवाली कृष्णसार मृगों की पत्नियाँ कृष्ण के पास दौड़ आती हैं। और घर की आशा छोड़ चुकने वाली हम गोपियों के समान हरिणियाँ गुण समूह के समुद्र कृष्ण का अनुगमन करने लगती हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**कुन्ददामकृतकौतुकवेषो गोपगोधनवृतो यमुनायाम् ।**
**नन्दसूनुरनघे तव वत्सो नर्मदः प्रणयिनां विजहार ॥२०॥**

पदच्छेद— कुन्द दाम कृत कौतुक वेषः गोप गोधन वृतः यमुनायाम् ।
नन्द सूनुः अनघे तव वत्सः नर्मदः प्रणयिनाम् विजहार ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कुन्ददाम | ६. | कुन्द के पुष्पों की माला से | नन्दसूनुः | ९. | नन्द जी के पुत्र (श्रीकृष्ण) |
| कृत | ८. | धारण किये हुये | अनघे | १. | हे निष्पाप ! यशोदा जी |
| कौतुक वेषः | ७. | कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष | तव | २. | आपके |
| गोप | १०. | ग्वाल वालों तथा | वत्सः | ३. | पुत्र |
| गोधन | ११. | गऊओं से | नर्मदः | ५. | आनन्द देने वाले हैं |
| वृतः | १२. | घिर कर | प्रणयिनाम् | ४. | प्रेमी जनों को |
| यमुनायाम् । | १३. | यमुना में | विजहार ॥ | १४. | खेलने लगते हैं |

श्लोकार्थ—हे निष्पाप यशोदा जी ! आपके पुत्र प्रेमी जनों को आनन्द देने वाले हैं। कुन्द के पुष्पों की माला से कौतुहल उत्पन्न करने वाला वेष धारण किये हुये नन्द जी के पुत्र ग्वालवालों तथा गऊओं से घिर कर यमुना में खेलने लगते है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**मन्दवायुरुपवात्यनुकूलं मानयन् मलयजस्पर्शेन ।**
**वन्दिनस्तमुपदेवगणा ये वाद्यगीतबलिभिः परिवव्रुः ॥२१॥**

पदच्छेद— मन्द वायुः उपवाति अनुकूलम् मानयन् मलयज स्पर्शेन ।
वन्दिनः तम् उपदेवगणाः ये वाद्यगीत बलिभिः परिवव्रुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्द | २. मन्द-मन्द | वन्दिनः | १०. बन्दी बन कर |
| वायुः | १. वायु | तम् | १३. उनकी |
| उपवाति | ४. बह कर | उपदेवगणाः | ९. (गन्धर्वादि) उपदेवतागण हैं वे |
| अनुकूलम् | ३. अनुकूल | ये | ८. (और) जो |
| मानयन् | ७. उनका सम्मान करती है | वाद्यगीत | ११. वाद्य गीत तथा |
| मलयज | ५. चन्दन के समान | बलिभिः | १२. उपहारों से |
| स्पर्शेन । | ६. शीतल स्पर्श से | परिवव्रुः ॥ | १४. सेवा करते हैं |

श्लोकार्थ—उस समय वायु मन्द-मन्द अनुकूल बह कर चन्दन के समान शीतल स्पर्श से उनका सम्मान करती है । और जो गन्धर्वादि उपदेवता गण हैं वे बन्दी बन कर वाद्यगीत तथा उपहारों से उनकी सेवा करते हैं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**वत्सलो व्रजगवां यदगध्रो वन्द्यमानचरणः पथि वृद्धैः ।**
**कृत्स्नगोधनमुपोह्य दिनान्ते गीतवेणुरनुगेडितकीर्तिः ॥२२॥**

पदच्छेद— वत्सलः व्रज गवाम् यत् अगध्रः वन्द्यमान चरणः पथि वृद्धैः ।
कृत्स्न गोधनम् उपोह्य दिन अन्ते गीत वेणुः अनुग ईडित कीर्तिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वत्सलः | ८. स्नेही (श्रीकृष्ण) | कृत्स्न | १०. सब |
| व्रज | ६. व्रज की | गोधनम् | ११. गौओं को |
| गवाम् | ७. गौओं के | उपोह्य | १२. लौटा कर |
| यत् अगध्रः | ५. जिनके लिये पर्वत को धारण किया था | दिन अन्ते | ९. सायंकाल |
| वन्द्यमान | ३. पूजित | गीतवेणुः | १६. बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं |
| चरणः | ४. चरण वाले भगवान् | अनुग | १३. सखाओं द्वारा |
| पथि | १. मार्ग में | ईडित | १४. गायी जाती हुई |
| वृद्धैः । | २. वृद्ध जनों तथा (ब्रह्मादि) द्वारा | कीर्तिः ॥ | १५. कीर्ति वाले (तथा) |

श्लोकार्थ—अरी सखि ! मार्ग में वृद्ध जनों तथा ब्रह्मादि द्वारा पूजित चरण वाले भगवान्, ने जिनके लिये पर्वत को धारण किया था उन व्रज की गौओं के स्नेही श्रीकृष्ण सायंकाल सब गौओं को लौटाकर सखाओं द्वारा गायी जाती हुई कीर्ति वाले तथा बाँसुरी बजाते हुये आ ही रहे हैं।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**उत्सवं श्रमरुचापि दृशीनामुन्नयन् खुररजश्छुरितस्रक् ।**
**दित्सयैति सुहृदाशिष एष देवकीजठरभूरुडुराजः ॥२३॥**

पदच्छेद— उत्सवम् श्रम रुचा अपि दृशीनाम् उन्नयन् खुररजः छुरित स्रक् ।
दित्सयाएति सुहृद् आशिषः एषः देवकी जठर भूः उडुराजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्सवम् | ७. आनन्द | दित्सया | १५. देने की इच्छा से |
| श्रम | ४. परिश्रम की | एति | १७. आ रहे हैं |
| रुचा अपि | ५. शोभा से भी | सुहृद | १३. मित्रों की |
| दृशीनाम् | ६. नेत्रों को | आशिषः | १४. कामनाओं को |
| उन्नयन् | ८. देते हुये | एषः | १६. वे (श्रीकृष्ण) |
| खुररजः | १. गायों के खुरों से उड़ी धूल से | देवकी | ९. देवकी की |
| छुरित | २. शोभित | जठर | १०. कोख से |
| स्रक् | ३. वन माला वाले | भूः | ११. प्रकट |
| | | उडुराजः ॥ | १२. चन्द्रमा के समान अह्लादक |

श्लोकार्थ—गायों के खुरों से उड़ी धूल से शोभित वनमाला वाले, परिश्रम की शोभा से भी नेत्रों को आनन्द देते हुये, देवकी के कोख से प्रकट, चन्द्रमा के समान आह्लादक, मित्रों की कामनाओं को देने की इच्छा से वे श्रीकृष्ण आ रहे हैं ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**मदविघूर्णितलोचन ईषन्मानदः स्वसुहृदां वनमाली ।**
**बदरपाण्डुवदनो मृदुगण्डं मण्डयन् कनककुण्डललक्ष्म्या ॥२४॥**

पदच्छेद— मद विघूर्णित लोचनः ईषत् मानदः स्व सुहृदाम् वनमाली ।
बदर पाण्डु वदनः मृदु गण्डम् मण्डयन् कनक कुण्डल लक्ष्म्या ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मद | १. मद के कारण | बदर | ९. बेर के समान |
| विघूर्णित | २. चढ़ी हुई | पाण्डु | १०. पीले |
| लोचनः | ३. आँखों वाले | वदन | ११. मुख वाले |
| ईषत् | ६. कुछ | मृदु | १४. कोमल |
| मानदः | ७. मान देने वाले | गण्डम् | १५. कपोलों को विभूषित |
| स्व | ४. अपने | मण्डयन् | १६. करते हुये आ रहे हैं |
| सुहृदाम् | ५. मित्रों को | कनक कुण्डल | १२. सोने के बने कुण्डलों को |
| वनमाली । | ८. वनमाला पहने हुये | लक्ष्म्या ॥ | १३. कान्ति से |

श्लोकार्थ—अरी सखी ! मद के कारण चढ़ी हुई आँखों वाले, अपने मित्रों को कुछ मान देने वाले, वनमाला पहने हुये, बेर के समान पीले मुख वाले सोने के बने कुण्डलों की कान्ति से कोमल कपोलों को विभूषित करते हुये आ रहे हैं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**यदुपतिर्द्विरदराजविहारो यामिनीपतिरिवैष दिनान्ते ।**
**मुदितवक्त्र उपयाति दुरन्तं मोचयन् व्रजगवां दिनतापम् ॥२५॥**

पदच्छेद— यदुपतिः द्विरदराज विहारः यामिनीपतिः इव एषः दिन अन्ते ।
मुदित वक्त्रः उपयाति दुरन्तम् मोचयन् व्रज गवाम् दिन तापम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यदुपतिः | ६. | यदुराज श्रीकृष्ण | वक्त्रः | ५. | मुख |
| द्विरदराज | १. | गजराज के समान | उपयाति | १६. | समीप चले आ रहे हैं |
| विहारः | २. | चलने वाले | दुरन्तम् | ११. | असहनीय |
| यामिनोपतिः | १४. | चन्द्रमा की | मोचयन् | १३. | मिटाते हुये |
| इव | १५. | भाँति | व्रज | ८. | व्रज की |
| एषः | ३. | ये | गवाम् | ९. | गौओं के |
| दिन-अन्ते । | ७. | सायंकाल में | दिन | १०. | दिन भर के |
| मुदित | ४. | प्रसन्न | तापम् ॥ | १२. | विरह जनित ताप को |

श्लोकार्थ—ओह सखि ! गजराज के समान चलने वाले ये प्रसन्न मुख यदुराज श्रीकृष्ण सायंकाल में व्रज की गोओं के दिन भर के असहनीय विरह जनित ताप को मिटाते हुये चन्द्रमा की भाँति समीप चले आ रहे हैं ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एवं व्रजस्त्रियो राजन् कृष्णलीला नु गायतीः ।**
**रेमिरेऽहःसु तच्चित्तास्तन्मनस्का महोदयाः ॥२६॥**

पदच्छेद— एवम् व्रजस्त्रियः राजन् कृष्ण लीलाः नु गायतीः ।
रेमिरे अहः सु तत् चित्ताः तत् मनस्काः महोदयाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस प्रकार | रेमिरे | १२. | रम जाती हैं |
| व्रज स्त्रियः | ४. | व्रज की स्त्रियाँ | अहः सु | ६. | दिन में |
| राजन् | १. | हे राजन् ! | तत् चित्ताः | ९. | उन्हीं में चित्त और |
| कृष्ण लीलाः | ५. | कृष्ण की लीलाओं का | तत् | १०. | उन्हीं में |
| नु | ७. | निश्चित रूप से | मनस्काः | ११. | मन को लगा कर |
| गायतीः । | ८. | गान करती हुई | महोदयाः ॥ | ३. | बड़ भागिनी |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार बड़ भागिनी व्रज की स्त्रियाँ कृष्ण की लीलाओं का दिन में निश्चित रूप से गान करती हुई उन्हीं में चित्त और मन को लगा कर रम जाती हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
वृन्दावनक्रीडायाम् गोपिकायुगलगीतं नाम पञ्चत्रिंशः अध्यायः ॥३५॥

## प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—अथ तर्ह्यागतो गोष्ठमरिष्टो वृषभासुरः ।**
**महीं महाककुत्कायः कम्पयन् खुरविक्षताम् ॥१॥**

पदच्छेद— अथ तर्हि आगतः गोष्ठम् अरिष्टः वृषभ असुरः ।
महीम् महाककुत् कायः कम्पयन् खुर विक्षताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | तदनन्तर | महीम् | १२. | पृथ्वी को |
| तर्हि | २. | उस समय | महाककुत् | ९. | डील विशाल था (वह) |
| आगतः | ७. | आ गया (उसका) | कायः | ८. | शरीर और |
| गोष्ठम् | ६. | व्रज में | कम्पयन् | १३. | कंपा रहा था |
| अरिष्टः | ३. | अरिष्ट नाम का | खुर | १०. | खुरों से |
| वृषभ | ४. | एक बैल रूपधारी | विक्षताम् ॥ | ११. | खोद कर |
| असुरः । | ५. | असुर | | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर उस समय अरिष्ट नाम का बैल रूपधारी असुर व्रज में आ गया । उसका शरीर और ककुद् (डील) विशाल था । वह खुरों से खोद कर पृथ्वी को कँपा रहा था ॥

## द्वितीयः श्लोकः

**रम्भमाणः खरतरं पदा च विलिखन् महीम् ।**
**उद्यम्य पुच्छं वप्राणि विषाणाग्रेण चोद्धरन् ॥२॥**

पदच्छेद— रम्भमाणः खरतरम् पदा च विलिखन् महीम् ।
उद्यम्य पुच्छम् वप्राणि विषाण अग्रेण च उद्धरन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रम्भमाणः | २. | रंभाता हुआ | उद्यम्य | ८. | उठाकर |
| खरतरम् | १. | अत्यन्त तीक्ष्ण स्वर से | पुच्छम् | ७. | पूँछ को |
| पदा | ४. | पैर से | वप्राणि | १२. | मिट्टी के ढूहे को |
| च | ३. | और | विषाण | १०. | सींगों के |
| विलिखन् | ६. | खोदता हुआ | अग्रेण | ११. | अग्रभाग से |
| महीम् । | ५. | पृथ्वी को | च | ९. | और |
| | | | उद्धरन् ॥ | १३. | तोड़ रहा था |

श्लोकार्थ—अत्यन्त तीक्ष्ण स्वर से रंभाता हुआ और पैर से पृथ्वी को खोदता हुआ पूँछ को उठाकर और सींगों के अग्रभाग से मिट्टी के ढूहे को तोड़ रहा था ॥

## तृतीयः श्लोकः

**किञ्चित् किञ्चिच्छकृन्मुञ्चन् मूत्रयन् स्तब्धलोचनः ।**
**यस्य निर्ह्रादितेनाङ्ग निष्ठुरेण गवां नृणाम् ॥३॥**

पदच्छेद— किञ्चित् किञ्चित् शकृत् मुञ्चन् मूत्रयन् स्तब्ध लोचनः ।
यस्य निर्ह्रादितेन अङ्ग निष्ठुरेण गवाम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| किञ्चित् | १. वह कुछ | यस्य | ९. उसकी |
| किञ्चित् | २. कुछ | निर्ह्रादितेन | ११. गर्जना से |
| शकृत् | ३. गोबर | अङ्ग | ८. हे राजन् ! |
| मुञ्चन् | ४. छोड़ता (और) | निष्ठुरेण | १०. निष्ठुर |
| मूत्रयन् | ५. मूतता हुआ | गवाम् | १२. गऊओं और |
| स्तब्ध | ७. तरेर कर (दौड़ रहा था) | नृणाम् ॥ | १३. स्त्रियों के गर्भ गिर जाते थे |
| लोचनः । | ६. आँखें | | |

श्लोकार्थ—वह कुछ-कुछ गोबर छोड़ता और मूतता हुआ आँखें तरेर कर दौड़ रहा था । हे राजन् ! उसकी निष्ठुर गर्जना से गऊओं और स्त्रियों के गर्भ गिर जाते थे ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**पतन्त्यकालतो गर्भाः स्रवन्ति स्म भयेन वै ।**
**निर्विशन्ति घना यस्य ककुद्यचलशङ्कया ॥४॥**

पदच्छेद— पतन्ति अकालतः गर्भाः स्रवन्ति स्म भयेन वै ।
निर्विशन्ति घनाः यस्य ककुदि अचल शङ्कया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पतन्ति | ७. गिर जाते थे (और) | निर्विशन्ति | १२. बैठ जाते थे |
| अकालतः | ३. असमय में | घनाः | ६. बादल |
| गर्भाः | २. गर्भ (गौओं और स्त्रियों के) | यस्य | ८. उसके |
| स्रवन्ति स्म | ४. स्रवित हो जाते थे | ककुदि | ९. ककुद् को |
| भयेन | १. भय के कारण | अचल | १०. पर्वत |
| वै । | ५. निश्चित रूप से | शङ्कया ॥ | ११. समझ कर उस पर |

श्लोकार्थ—भय के कारण असमय में गौओं और स्त्रियों के गर्भ स्रवित हो जाते थे । बादल गिर जाते थे । और उसके ककुद् को पर्वत समझ कर उस पर बैठ जाते थे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**तं तीक्ष्णशृङ्गमुद्वीक्ष्य गोप्यो गोपाश्च तत्रसुः ।**
**पशवो दुद्रुवुर्भीता राजन् संत्यज्य गोकुलम् ॥५॥**

पदच्छेद— तम् तीक्ष्ण शृङ्गम् उद्वीक्ष्य गोप्यः गोपाः च तत्रसुः ।
पशवः दुद्रुवुः भीताः राजन् संत्यज्य गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तम् | २. उस | | तत्रसुः । | ९. डर गये (और) |
| तीक्ष्ण | ३. तीखे | | पशवः | ११. पशु |
| शृङ्गम् | ४. सींग वाले बैल को | | दुद्रुवुः | १४. भागने लगे |
| उद्वीक्ष्य | ५. देख कर | | भीताः | १०. डरे हुये |
| गोप्यः | ६. गोपियाँ | | राजन् | १. हे राजन् |
| गोपाः | ८. गोप | | संत्यज्य | १३. छोड़कर |
| च | ७. और | | गोकुलम् ॥ | १२. गोकुल को |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उस तीखे सींग वाले बैल को देखकर गोपियाँ और गोप डर गये । और डरे हुये पशु गोकुल को छोड़ कर भागने लगे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**कृष्ण कृष्णेति ते सर्वे गोविन्दं शरणं ययुः ।**
**भगवानपि तद् वीक्ष्य गोकुलं भयविद्रुतम् ॥६॥**

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण इति ते सर्वे गोविन्दम् शरणम् ययुः ।
भगवान् अपि तत् वीक्ष्य गोकुलम् भय विद्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | ३. कृष्ण | | भगवान् | ९. भगवान् ने |
| कृष्ण | ४. कृष्ण | | अपि | १०. भी |
| इति | ५. यह कहते हुये | | तत् | ११. उस |
| ते | १. उस समय (वे) | | वीक्ष्य | १५. देखा |
| सर्वे | २. सभी (व्रजवासी) | | गोकुलम् | १२. गोकुल को |
| गोविन्दम् | ६. श्रीकृष्ण की | | भय | १३. भय से |
| शरणम् | ७. शरण में | | विद्रुतम् ॥ | १४. आतुर |
| ययुः । | ८. गये | | | |

श्लोकार्थ—उस समय वे सभी व्रजवासी कृष्ण-कृष्ण कहते हुये श्रीकृष्ण की शरण में गये । भगवान् ने भी उस गोकुल को भय से आतुर देखा ॥

## सप्तमः श्लोकः

**मा भैष्टेति गिराऽऽश्वास्य वृषासुरमुपाह्वयत् ।**
**गोपालैः पशुभिर्मन्द त्रासितैः किमसत्तम ॥७॥**

पदच्छेद— मा भैष्ट इति गिरा आश्वास्य वृषासुरम् उपाह्वयत् ।
गोपालैः पशुभिः मन्द त्रासितैः किम् असत्तम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मा भैष्ट | १. | मत डरो | गोपालैः | ६. | ग्वालों को (और) |
| इति | २. | इस प्रकार | पशुभिः | १०. | पशुओं को |
| गिरा | ३. | कह कर (और) | मन्द | ७. | अरे मूर्ख |
| आश्वास्य | ४. | आश्वासन देकर | त्रासितैः | १२. | डरा रहा है |
| वृषासुरम् | ५. | वृषासुर को | किम् | ११. | क्यों |
| उपाह्वयत् । | ६. | ललकारा | असत्तम ॥ | ८. | दुष्ट (तू इन) |

श्लोकार्थ— मत डरो इस प्रकार कह कर और अश्वासन देकर वृत्रासुर को ललकारा अरे मूर्ख ! दुष्ट ! तू इन ग्वालों और पशुओं को क्यों डरा रहा है ॥

## अष्टमः श्लोकः

**बलदर्पहाहं दुष्टानां त्वद्विधानां दुरात्मनाम् ।**
**इत्यास्फोट्याच्युतोऽरिष्टं तलशब्देन कोपयन् ॥८॥**

पदच्छेद— बल दर्पहा अहम् दुष्टानाम् त्वत् विधानाम् दुरात्मनाम् ।
इति आस्फोट्या अच्युतः अरिष्टम् तल शब्देन कोपयन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बल | ५. | बल | इति | ८. | यह कह कर |
| दर्पहा | ६. | घमंड चूर कर देने वाला | आस्फोट्या | १०. | ताल ठोकी (और) |
| अहम् | ७. | मैं (हूँ) | अच्युतः | ६. | श्रीकृष्ण ने |
| दुष्टानाम् | ४. | दुष्टों के | अरिष्टम् | १३. | अरिष्टासुर को |
| त्वत् | १. | तेरे | तल | ११. | ताली |
| विधानाम् | २. | जैसे | शब्देन | १२. | बजाकर |
| दुरात्मनाम् । | ३. | दुरात्मा | कोपयन् ॥ | १४. | क्रुद्ध कर दिया |

श्लोकार्थ—तेरे जैसे दुरात्मा दुष्टों के बल का घमंड चूर कर देने वाला मैं हूँ । यह कह कर श्रीकृष्ण ने ताल ठोकी और ताली बजाकर अरिष्टासुर को क्रुद्ध कर दिया ॥

## नवमः श्लोकः

**सख्युरंसे भुजाभोगं प्रसार्यावस्थितो हरिः ।**
**सोऽप्येवं कोपितोऽरिष्टः खुरेणावनिमुल्लिखन् ।**
**उद्यत्पुच्छभ्रमन्मेघः क्रुद्धः कृष्णमुपाद्रवत् ॥९॥**

पदच्छेद— सख्युः अंसे भुजा भोगम् प्रसार्य अवस्थितः हरिः ।
सः अपि एवम् कोपितः अरिष्टः खुरेण अवनिम् उल्लिखन् ।
उद्यत् पुच्छ भ्रमन् मेघः क्रुद्धः कृष्णम् उपाद्रवत् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सख्युः | १. | एक सखा के | खुरेण | १०. | खुरों से |
| अंसे भुजाभोगम् | २. | कन्धे पर बाँह | अवनिम् | ११. | पृथ्वी को |
| प्रसार्य | ३. | फैला कर | उल्लिखन् | १२. | खोदता हुआ तथा |
| अवस्थितः | ५. | खड़े हो गये | उद्यत्पुच्छ | १३. | उठाई हुई पूँछ से |
| हरिः । | ४. | श्रीकृष्ण | भ्रमन् | १५. | तितर-बितर करता हुआ |
| सः | ६. | वह | मेघः | १४. | बादलों को |
| अपि एवम् | ८. | भी इस प्रकार | क्रुद्धः | १६. | कुपित होकर |
| कोपितः | ९. | क्रुद्ध किये जाने पर | कृष्णम् | १७. | श्रीकृष्ण की ओर |
| अरिष्टः । | ७. | अरिष्टासुर | उपाद्रवत् ॥ | १८. | झपटा |

श्लोकार्थ—एक सखा के कन्धे पर बाँह फैला कर श्रीकृष्ण खड़े हो गये । वह अरिष्टासुर भी इस प्रकार क्रुद्ध किये जाने पर खुरों से पृथ्वी को खोदता हुआ तथा उठाई हुई पूँछ से बादलों को तितर-बितर करता हुआ कुपित होकर श्रीकृष्ण पर झपटा ॥

## दशमः श्लोकः

**अग्रन्यस्तविषाणाग्रः स्तब्धासृग्लोचनोऽच्युतम् ।**
**कटाक्षिप्याद्रवत्तूर्णमिन्द्रमुक्तोऽशनिर्यथा ॥१०॥**

पदच्छेद— अग्रन्यस्त विषाण अग्रः स्तब्ध असृक् लोचनः अच्युतम् ।
कटाक्षिप्य अद्रवत् तूर्णम् इन्द्र मुक्तः अशनिः यथा ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अग्रन्यस्त | ३. | आगे करके | कटाक्षिप्य | ८. | टेढी नज़र से देखकर |
| विषाण | १. | सींग के | अद्रवत् | १०. | उन पर टूट पड़ा |
| अग्रः | २. | अग्रभाग को | तूर्णम् | ९. | उतने वेग से |
| स्तब्ध | ६. | टकटकी लगाकर | इन्द्र | १२. | इन्द्र के द्वारा |
| असृक् | ४. | लाल-लाल | मुक्तः | १४. | छोड़ा गया हो |
| लोचनः | ५. | आँखों से | अशनिः | १३. | वज्र |
| अच्युतम् । | ७. | श्रीकृष्ण की ओर | यथा ॥ | ११. | मानों |

श्लोकार्थ—सींग के अग्रभाग को आगे करके लाल-लाल आँखों से टकटकी लगाकर श्रीकृष्ण की ओर टेढी नजर से देखकर उतने वेग से उन पर टूट पड़ा मानों इन्द्र के द्वारा व्रज छोड़ा गया हो ॥

# एकादशः श्लोकः

**गृहीत्वा शृङ्गयोस्तं वा अष्टादश पदानि सः ।**
**प्रत्यपोवाह भगवान् गजः प्रतिगजं यथा ॥११॥**

पदच्छेद— गृहीत्वा शृङ्गयोः तम् वा अष्टादश पदानि सः ।
प्रति अप उवाह भगवान् गजम् प्रति गजं यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गृहीत्वा | ५. पकड़ कर | प्रति अप उवाह | ८. | ठेल दिया |
| शृङ्गयोः | ४. दोनों सींगों को | भगवान् | १. | भगवान् |
| तम् | ३. उसके | गजः | ११. | एक हाथी |
| वा | ९. अथवा | प्रति | १२. | प्रतिद्वन्द्वी |
| अष्टादश | ६. अठारह | गजः | १३. | हाथी को (ठेलता है) |
| पदानि | ७. पग पीछे | यथा ॥ | १०. | जैसे |
| सः । | २. श्रीकृष्ण ने | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उसके दोनों सींगों को पकड़ कर अठारह पग पीछे ठेल दिया । अथवा जैसे एक हाथी प्रतिद्वन्द्वी हाथी को ठेलता है ॥

# द्वादशः श्लोकः

**सोऽपविद्धो भगवता पुनरुत्थाय सत्वरः ।**
**आपतत् स्विन्नसर्वाङ्गो निःश्वसन् क्रोधमूर्छितः ॥१२॥**

पदच्छेद— सः अपविद्धः भगवता पुनः उत्थाय सत्वरः ।
आपतत् स्विन्न सर्वाङ्गः निःश्वसन् क्रोध मूर्च्छितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सः | ३. वह | आपतत् | १२. | उन पर टूट पड़ा |
| अपविद्धः | २. ठेल दिये जाने पर | स्विन्न | ८. | पसीने से लथ-पथ |
| भगवता | १. भगवान् के द्वारा | सर्वाङ्गः | ७. | शरीर में |
| पुनः | ४. फिर | निःश्वसन् | ११. | लंबी-लंबी साँस लेता हुआ |
| उत्थाय | ६. उठ खड़ा हुआ (और) | क्रोध | ९. | क्रोध से |
| सत्वरः । | ५. शीघ्र | मूर्च्छितः ॥ | १०. | अचेत होकर |

श्लोकार्थ—भगवान् के द्वारा ठेल दिये जाने पर वह फिर शीघ्र ही उठ खड़ा हुआ और शरीर में पसीने से लथ-पथ, क्रोध से अचेत होकर लंबी-लंबी साँस लेता हुआ उन पर टूट पड़ा ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**तमापतन्तं स निगृह्य शृङ्गयोः पदा समाक्रम्य निपात्य भूतले।**
**निष्पीडयामास यथाऽऽर्द्रमम्बरं कृत्वा विषाणेन जघान सोऽपतत् ॥१३॥**

पदच्छेद— तम् आपतन्तम् सः निगृह्य शृङ्गयोः पदा समाक्रम्य निपात्य भूतले।
निष्पीडयामास यथा आर्द्रम् अम्बरम् कृत्वा विषाणेन जघान सः अपतत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | ३. उसके | निष्पीडयामास | १०. इस प्रकार निचोड़ा |
| आपतन्तम् | २. आक्रमण करते हुये | यथा | ११. जैसे (कोई) |
| सः | १. उन भगवान् श्रीकृष्ण ने | आर्द्रम् | १२. गीला |
| निगृह्य | ५. पकड़ कर | अम्बरम् | १३. वस्त्र (निचोड़ता है) |
| शृङ्गयोः | ४. दोनों सींगों को | कृत्वा | १५. उखाड़ कर |
| पदा | ६. पैर से | विषाणेन | १४. फिर उसका सींग |
| समाक्रम्य | ७. ठोकर मार कर | जघान | १६. ऐसा पीटा कि |
| निपात्य | ९. गिरा दिया (और) | सः | १७. वह |
| भूतले। | ८. पृथ्वी पर | अपतत् ॥ | १८. धराशायी हो गया |

श्लोकार्थ—उन भगवान् श्रीकृष्ण ने आक्रमण करते हुये उसके दोनों सींगों को पकड़ कर पैर से ठोकर मार कर पृथ्वी पर गिरा दिया। और इस प्रकार निचोड़ा जैसे कोई गीला वस्त्र निचोड़ता है। फिर उसका सींग उखाड़ कर ऐसा पीटा कि वह धराशायी हो गया॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**असृग् वमन् मूत्रशकृत् समुत्सृजन् क्षिपंश्च पादाननवस्थितेक्षणः।**
**जगाम कृच्छ्रं निर्ऋतेरथ क्षयं पुष्पैः किरन्तो हरिमीडिरे सुराः ॥१४॥**

पदच्छेद— असृक् वमन् मूत्र शकृत् समुत्सृजन् क्षिपन् च पादान् अनवस्थित ईक्षणः।
जगाम कृच्छ्रम् निर्ऋतेः अथ क्षयम् पुष्पैः किरन्तः हरिम् ईडिरे सुराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| असृक् वमन् | १. (वह दैत्य) रक्त उगलता (तथा) | जगाम | १२. हुआ |
| मूत्र शकृत् | २. मूत और गोबर | कृच्छ्रम् | ९. बहुत कष्ट से (उसके) |
| समुत्सृजन् | ३. करता हुआ | निर्ऋतेः | १०. प्राणों का |
| क्षिपन् | ५. पटकने लगा | अथ | १३. तदनन्तर |
| च | ६. और | क्षयम् | ११. नाश |
| पादान् | ४. पैर | पुष्पैः किरन्तः | १५. फूलों की वर्षा करते हुये |
| अनवस्थित | ८ उलट गईं | हरिम् ईडिरे | १६. भगवान् की स्तुति करने लगे |
| ईक्षणः। | ७. (उसकी) आँखें | सुराः ॥ | १४. देव गण |

श्लोकार्थ—वह दैत्य रक्त उगलता हुआ तथा मूत और गोबर करता हुआ पैर पटकने लगा। और उसकी आँखें उलट गईं। बहुत कष्ट से उसके प्राणों का नाश हुआ। तदनन्तर देव गण फूलों की वर्षा करते हुये भगवान् की स्तुति करने लगे॥

# पञ्चदशः श्लोकः

**एवं ककुद्मिनं हत्वा स्तूयमानः स्वजातिभिः ।**
**विवेश गोष्ठं सबलो गोपीनां नयनोत्सवः ॥१५॥**

पदच्छेद— एवम् ककुद्मिनम् हत्वा स्तूयमानः स्वजातिभिः ।
विवेश गोष्ठम् सबलः गोपीनाम् नयन उत्सवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | विवेश | १२. | प्रवेश किया |
| ककुद्मिनम् | २. | वृषभासुर को | गोष्ठम् | ११. | व्रज में |
| हत्वा | ३. | मार कर | सबलः | १०. | बलरामजी के साथ |
| स्तूयमानः | ६. | स्तुति किये जाते हुये | गोपीनाम् | ७. | गोपियों के |
| स्व | ४. | अपने सुहृद् | नयन | ८. | नयनों को |
| जातिभिः । | ५. | गोपों के द्वारा | उत्सवः ॥ | ९. | आनन्द देने वाले |

श्लोकार्थ—इस प्रकार वृषभासुर को मार कर अपने सुहृद गोपों के द्वारा स्तुति किये जाते हुये, गोपियों के नयनों को आनन्द देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ व्रज में प्रवेश किया ॥

# षोडशः श्लोकः

**अरिष्टे निहते दैत्ये कृष्णेनाद्भुतकर्मणा ।**
**कंसायाथाह भगवान् नारदो देवदर्शनः ॥१६॥**

पदच्छेद— अरिष्टे निहते दैत्ये कृष्णेन अद्भुत कर्मणा ।
कंसाय अथ आह भगवान् नारदः देवदर्शनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अरिष्टे | ४. | अरिष्ट नामक | कंसाय | ११. | कंस से (आकर) |
| निहते | ६. | मार दिये जाने के | अथ | ७. | पश्चात् |
| दैत्ये | ५. | दैत्य के | आह | १२. | कहा |
| कृष्णेन | ३. | कृष्ण के द्वारा | भगवान् | ९. | भगवान् |
| अद्भुत | १. | अद्भुत | नारदः | १०. | नारद ने |
| कर्मणा । | २. | कर्म करने वाले | देवदर्शनः ॥ | ८. | देवता का दर्शन कराने वाले |

श्लोकार्थ—अद्भुत कर्म करने वाले कृष्ण के द्वारा अरिष्ट नामक दैत्य के मार दिये जाने के पश्चात् देवता का दर्शन कराने वाले भगवान् नारद ने कंस से आकर कहा ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**यशोदायाः सुतां कन्यां देवक्याः कृष्णमेव च ।**
**रामं च रोहिणीपुत्रं वसुदेवेन बिभ्यता ॥१७॥**

पदच्छेद— यशोदायाः सुताम् कन्याम् देवक्याः कृष्णम् एव च ।
रामम् च रोहिणी पुत्रम् वसुदेवेन बिभ्यता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यशोदायाः | १. | यशोदा की | रामम् | ११. | बलराम को |
| सुताम् | २. | पुत्री | च | ८. | तथा |
| कन्याम् | ३. | उस कन्या (योगमाया) को | रोहिणी | ९. | रोहिणी के |
| देवक्याः | ५. | देवकी के | पुत्रम् | १०. | पुत्र |
| कृष्णम् | ६. | पुत्र श्रीकृष्ण को | वसुदेवेन | १३. | वसुदेवजी ने वहाँ रख छोड़ा है |
| एव | ७. | ही | बिभ्यता ॥ | १२. | तुम से डरते हुये |
| च । | ४. | और | | | |

श्लोकार्थ—यशोदा की पुत्री उस कन्या योगमाया को और देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण को ही तथा रोहिणी के पुत्र बलराम जी को तुम से डरते हुये वसुदेव जी ने वहाँ रख छोड़ा है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**न्यस्तौ स्वमित्रे नन्दे वै याभ्यां ते पुरुषा हताः ।**
**निशम्य तद् भोजपतिः कोपात् प्रचलितेन्द्रियः ॥१८॥**

पदच्छेद— न्यस्तौ स्वमित्रे नन्दे वै याभ्याम् ते पुरुषाः हताः ।
निशम्य तत् भोजपतिः कोपात् प्रचलित इन्द्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न्यस्तौ | ४. | रख दिया | हताः | ८. | मार डाला |
| स्वमित्रे | १. | अपने मित्र | निशम्य | १०. | सुन कर |
| नन्दे | २. | नन्द के पास | तत् | ९. | यह |
| वै | ३. | निश्चित रूप से | भोजपतिः | ११. | कंस की |
| याभ्याम् | ५. | उन्हीं दोनों ने | कोपात् | १३. | क्रोध से |
| ते | ६. | तुम्हारे | प्रचलित | १४. | काँप उठीं |
| पुरुषाः । | ७. | अनुचर दैत्यों को | इन्द्रियः ॥ | १२. | इन्द्रियाँ |

श्लोकार्थ—अपने मित्र नन्द के पास निश्चित रूप से रख दिया । उन्हीं दोनों ने तुम्हारे अनुचर दैत्यों को मार डाला । यह सुनकर कंस की इन्द्रियाँ क्रोध से काँप उठीं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**निशातमसिमादत्त वसुदेवजिघांसया ।**
**निवारितो नारदेन तत्सुतौ मृत्युमात्मनः ॥१९॥**

पदच्छेद-- निशातम् असिम् आदत्त वसुदेव जिघांसया ।
निवारितः नारदेन तत् सुतौ मृत्युम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निशातम् | ३. | उस कंस ने तीखी | निवारितः | ७. | रोक दिया |
| असिम् | ४. | तलवार | नारदेन | ६. | नारद ने |
| आदत्त | ५. | उठा ली (किन्तु) | तत् सुतौ | ८. | उनके पुत्रों को |
| वसुदेव | १. | वसुदेव को | मृत्युम् | १०. | मृत्यु का कारण समझ लिया |
| जिघांसया । | २. | मार डालने की इच्छा से | आत्मनः ॥ | ९. | अपनी |

श्लोकार्थ—वसुदेव को मार डालने की इच्छा से उस कंस ने तीखी तलवार उठा ली किन्तु नारद ने रोक दिया । उनके पुत्रों को अपनी मृत्यु का कारण समझ लिया ।

## विंशः श्लोकः

**ज्ञात्वा लोहमयैः पाशैर्बबन्ध सह भार्यया ।**
**प्रतियाते तु देवर्षौ कंस आभाष्य केशिनम् ॥२०॥**

पदच्छेद— ज्ञात्वा लोह मयैः पाशैः बबन्ध सह भार्यया ।
प्रतियाते तु देवर्षौ कंसः अभाष्य केशिनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञात्वा | २. | (ऐसा) समझ कर | प्रतियाते | १०. | चले जाने पर |
| लोहमयैः | ३. | लोहे की | तु | ८. | फिर |
| पाशैः | ४. | जंजीरों से | देवर्षौ | ९. | नारद के |
| बबन्ध | ७. | बाँध दिया | कंसः | १. | कंस ने |
| सह | ६. | सहित (वसुदेव जी) को | आभाष्य | १२. | बुला कर (कहा) |
| भार्यया । | ५. | पत्नी | केशिनम् ॥ | ११. | केशी को |

श्लोकार्थ—कंस ने ऐसा समझकर लोहे की जंजीरों से पत्नी सहित वसुदेव जी को बाँध दिया । फिर नारद के चले जाने पर केशी को बुलाकर कहा ॥

## एकविंशः श्लोकः

**प्रेषयामास हन्येतां भवता रामकेशवौ ।**
**ततो मुष्टिकचाणूरशलतोशलकादिकान् ॥२१॥**

पदच्छेद— प्रेषयामास हन्येताम् भवता राम केशवौ ।
ततः मुष्टिक चाणूर शल तोशलक आदिकान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रेषयामास | ५. | यह कह कर भेज दिया | ततः | ६. | इसके बाद |
| हन्येताम् | ४. | मार डालो | मुष्टिक | ७. | मुष्टिक |
| भवता | १. | तुम | चाणूर | ८. | चाणूर |
| राम | २. | राम और | शलतोशलक | ९. | शल तोशलक |
| केशवौ । | ३. | कृष्ण को | आदिकान् ॥ | १०. | आदि को बुलाया |

श्लोकार्थ—हे केशी ! तुम राम और कृष्ण को मार डालो । यह कह कर भेज दिया । इसके बाद मुष्टिक, चाणूर, शल, तोशलक आदि को बुलाया ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**अमात्यान् हस्तिपांश्चैव समाहूयाह भोजराट् ।**
**भो भो निशम्यतामेतद् वीरचाणूरमुष्टिकौ ॥२२॥**

पदच्छेद— अमात्यान् हस्तिपान् च एव समाहूय आह भोजराट् ।
भो भो निशम्यता् एतद् वीर चाणूर मुष्टिकौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अमात्यान् | ३. | मन्त्रियों तथा | भो भो | ८. | हे हे |
| हस्तिपान् | ४. | महावतों को | निशम्यताम् | १३. | ध्यान से सुनो |
| च | १. | और | एतद् | १२. | यह बात |
| एव | ५. | भी | वीर | ९. | वीर |
| समाहूय | ६. | बुलाकर | चाणूर | १०. | चाणूर और |
| आह | ७. | कहा | मुष्टिकौ ॥ | ११. | मुष्टिक (मेरी) |
| भोजराट् । | २. | कंस ने | | | |

श्लोकार्थ—और कंस ने मन्त्रियों तथा महावतों को भी बुलाकर कहा—हे हे वीर चाणूर और मुष्टिक ! मेरी यह बात ध्यान से सुनो ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

नन्दव्रजे किलासाते सुतावानकदुन्दुभेः ।
रामकृष्णौ ततो मह्यं मृत्युः किल निदर्शितः ॥२३॥

पदच्छेद— नन्द व्रजे किल आसाते सुतौ आनक दुन्दुभेः ।
राम कृष्णौ ततः मह्यम् मृत्युः किल निदर्शितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्द | २. | नन्द के | राम कृष्णौ | ६. | राम और कृष्ण |
| व्रजे | ३. | व्रज में | ततः | ८. | उनसे |
| किल | १. | ऐसा सुना जाता है कि | मह्यम् | ६. | मेरी |
| आसाते | ७. | रहते हैं | मृत्युः | १०. | मृत्यु |
| सुतौ | ५. | दो पुत्र | किल | १२. | ऐसा हमने सुना है |
| आनकदुन्दुभेः । | ४. | वसुदेव जी के | निर्दशितः ॥ | ११. | बताई गई है |

श्लोकार्थ—ऐसा सुना जाता है कि नन्द के व्रज में वसुदेव जी के दो पुत्र राम और कृष्ण रहते हैं। उनसे मेरी मृत्यु बताई गई है। ऐसा हमने सुना है।

## चतुर्दशः श्लोकः

भवद्भ्यामिह सम्प्राप्तौ हन्येतां मल्ललीलया ।
मञ्चाः क्रियन्तां विविधा मल्लरङ्गपरिश्रिताः ।
पौरा जानपदाः सर्वे पश्यन्तु स्वैरसंयुगम् ॥२४॥

पदच्छेद— भवद्भ्याम् इह सम्प्राप्तौ हन्येताम् मल्ललीलया ।
मञ्चाः क्रियन्ताम् विविधाः मल्लरङ्ग परिश्रिताः ।
पौराः जानपदाः सर्वे पश्यन्तु स्वैर संयुगम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भवद्भ्याम् | ३. | आप दोनों | मल्लरङ्ग | ६. | अखाड़े के |
| इह | १. | यहाँ | परिश्रिताः | ७. | चारों ओर |
| सम्प्राप्तौ | २. | वे आवें तो उनको | पौराः | ११. | नगर निवासी (और) |
| हन्येताम् | ५. | मार देना | जानपदाः | १२. | ग्रामवासी |
| मल्ललीलया | ४. | कुश्ती लड़ने के बहाने | सर्वे | १३. | सभी (इस) |
| मञ्चाः | ६. | मञ्च | पश्यन्तु | १६. | देखें |
| क्रियन्ताम् | १०. | बनाओ (जहाँ बैठ कर) | स्वैर | १४. | स्वच्छन्द |
| विविधाः । | ८. | भाँति भाँति के | संयुगम् ॥ | १५. | दंगल को |

श्लोकार्थ—यहाँ वे आवें तो उनको आप दोनों कुश्ती लड़ने के बहाने मार देना। अखाड़े के चारों ओर भाँति-भाँति के मञ्च बनाओ। जहाँ बैठ कर नगर निवासी और ग्रामवासी सभी इस स्वच्छन्द दंगल को देखें॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**महामात्र त्वया भद्र रङ्गद्वार्युपनीयताम् ।**
**द्विपः कुवलयापीडो जहि तेन ममाहितौ ॥२५॥**

पदच्छेद— महामात्र त्वया भद्र रङ्गद्वारि उपनीयताम् ।
द्विपः कुवलयापीडः जहि तेन मम अहितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महामात्र | २. | महावत | द्विपः | ६. | हाथी को |
| त्वया | ३. | तुम | कुवलयापीडः | ५. | कुवलयापीड |
| भद्र | १. | हे भद्र ! | जहि | १०. | मरवा देना |
| रङ्गद्वारि | ४. | दंगल के घेरे के फाटक पर | तेन मम | ८. | उससे मेरे |
| उपनीयताम् । | ७. | रखना और | अहितौ ॥ | ९. | दोनों शत्रुओं को |

श्लोकार्थ—हे भद्र महावत ! तुम दंगल के घेरे के फाटक पर कुवलयापीड हाथी को रखना । और उससे मेरे दोनों शत्रुओं को मरवा देना ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**आरभ्यतां धनुर्यागश्चतुर्दश्यां यथाविधि ।**
**विशसन्तु पशून् मेध्यान् भूतराजाय मीढुषे ॥२६॥**

पदच्छेद— आरभ्यताम् धनुर्यागः चतुर्दश्याम् यथाविधि ।
विशसन्तु पशून् मेध्यान् भूतराजाय मीढुषे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आरभ्यताम् | ४. | प्रारम्भ कर दो (और) | विशसन्तु | ९. | बलि चढ़ाओ |
| धनुर्यागः | ३. | धनुष यज्ञ | पशून् | ६. | पशुओं की |
| चतुर्दश्याम् | १. | चतुर्दशी को | मेध्यान् | ५. | बहुत से पवित्र |
| यथाविधि । | २. | विधि पूर्वक | भूतराजाय | ७. | भूतनाथ |
| | | | मीढुषे ॥ | ८. | भैरव को |

श्लोकार्थ—चतुर्दशी को विधि पूर्वक धनुषयज्ञ प्रारम्भ कर दो । और बहुत से पवित्र पशुओं की भूतनाथ भैरव की बलि चढ़ाओ ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**इत्याज्ञाप्यार्थतन्त्रज्ञ आहूय यदुपुङ्गवम् ।**
**गृहीत्वा पाणिना पाणिं ततोऽक्रूरमुवाच ह ॥२७॥**

पदच्छेद— इति आज्ञाप्य अर्थ तन्त्रज्ञः आहूय यदु पुङ्गवम् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् ततः अक्रूरम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ३. | इस प्रकार | गृहीत्वा | ९. | पकड़ कर |
| आज्ञाप्य | ४. | आज्ञा देकर | पाणिना | ७. | अपने हाथ में |
| अर्थ | १. | स्वार्थ | पाणिम् | ८. | उनका हाथ |
| तन्त्रज्ञः | २. | साधन का ज्ञाता (कंस) | ततः | १०. | तब |
| आहूय | ६. | बुला कर | अक्रूरम् | ११. | अक्रूर जी से |
| यदुपुङ्गवम् । | ५. | यदुवंशियों में श्रेष्ठ-अक्रूर जी को | उवाच ह ॥ | १२. | कहने लगे |

श्लोकार्थ—स्वार्थ साधन का ज्ञाता कंस इस प्रकार आज्ञा देकर यदुवंशियों में श्रेष्ठ अक्रूर जी को बुलाकर अपने हाथ में उनका हाथ पकड़ कर तब अक्रूर जी से कहने लगा ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**भो भो दानपते मह्यं क्रियतां मैत्रमादृतः ।**
**नान्यस्त्वत्तो हिततमो विद्यते भोजवृष्णिषु ॥२८॥**

पदच्छेद— भो-भो दानपते मह्यम् क्रियताम् मैत्रम् आदृतः ।
न अन्यः त्वत्तः हिततमः विद्यते भोज वृष्णिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भो-भो | १. | हे हे | न | १२. | नहीं |
| दानपते | २. | महादानी | अन्यः | ११. | दूसरा |
| मह्यम् | ३. | मेरे लिये आप | त्वत्तः | ९. | आप से बढ़कर |
| क्रियताम् | ६. | कीजिये | हिततमः | १०. | हित करने वाला |
| मैत्रम् | ५. | मित्रता का काम | विद्यते | १३. | है |
| आदृतः । | ४. | आदरणीय हैं (एक) | भोज | ७. | भोज वंशियों और |
| | | | वृष्णिषु ॥ | ८. | वृष्णि वंशियों में |

श्लोकार्थ—हे हे महादानी ! मेरे लिये आप आदरणीय हैं। एक मित्रता का काम कीजिये। भोज वंशियों और वृष्णि वंशियों में आप से बढ़कर हित करने वाला दूसरा नहीं है ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**अतस्त्वामाश्रितः सौम्य कार्यगौरवसाधनम् ।**
**यथेन्द्रो विष्णुमाश्रित्य स्वार्थमध्यगमद् विभुः ॥२९॥**

पदच्छेद— अतः त्वाम् आश्रितः सौम्य कार्य गौरव साधनम् ।
यथेन्द्रः विष्णुम् आश्रित्य स्वार्थम् अध्यगमत् विभुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अतः | १. इसलिये | यथेन्द्रः | ८. जैसे इन्द्र ने |
| त्वाम् | ६. आपका | विष्णुम् | १०. विष्णु का |
| आश्रितः | ७. आश्रय लिया है | आश्रित्य | ११. आश्रय लेकर |
| सौम्य | २. हे मित्र ! मैंने | स्वार्थम् | १२. स्वार्थ |
| कार्य | ४. काम को | अध्यगमत् | १३. सिद्ध किया था |
| गौरव | ३. श्रेष्ठ | विभुः ॥ | ९. समर्थ |
| साधनम् । | ५. सिद्ध करने वाले | | |

श्लोकार्थ—इसलिये हे मित्र ! मैंने श्रेष्ठ काम को सिद्ध करने वाले आपका आश्रय लिया है। जैसे इन्द्र ने समर्थ विष्णु का आश्रय लेकर स्वार्थ सिद्ध किया था ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**गच्छ नन्दव्रजं तत्र सुतावानकदुन्दुभेः ।**
**आसाते ताविहानेन रथेनानय मा चिरम् ॥३०॥**

पदच्छेद— गच्छ नन्द व्रजम् तत्र सुतौ आनकदुन्दुभेः ।
आसाते तौ इह अनेन रथेन आनय माचिरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गच्छ | २. जाओ | तौ | ७. उन दोनों को |
| नन्द व्रजम् | १. नन्द के व्रज में | इह | ८. यहाँ |
| तत्र | ३. वहाँ | अनेन | ९. इस |
| सुतौ | ४. दो पुत्र | रथेन | १०. रथ में |
| आनकदुन्दुभेः । | ५ वसुदेव जी के | आनय | ११. ले आओ |
| आसाते | ६. रहते हैं | माचिरम् ॥ | १२. देर मत करो |

श्लोकार्थ—हे अक्रूर जी ! तुम नन्द के व्रज में जाओ। वहाँ दो पुत्र वसुदेव जी के रहते हैं। उन दोनों को यहाँ इस रथ में ले आओ ! देर मत करो ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**निसृष्टः किल मे मृत्युर्देवैर्वैकुण्ठसंश्रयैः ।**
**तावानय समं गोपैर्नन्दाद्यैः साभ्युपायनैः ॥३१॥**

पदच्छेद— निसृष्टः किल मे मृत्युः देवैः वैकुण्ठ संश्रयैः ।
तौ आनय समम् गोपैः नन्द आद्यैः स अभिउपायनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निसृष्टः | ७. | निश्चित किया है (अतः) | तौ | ८. | उन दोनों के |
| किल | १. | सुना है कि | आनय | १४. | ले आओ |
| मे | ५. | (उन दोनों को) मेरी | समम् | ९. | साथ ही |
| मृत्युः | ६. | मृत्यु का कारण | गोपैः | ११. | ग्वालों को |
| देवैः | ४. | देवताओं ने | नन्द आद्यैः | १०. | नन्द आदि |
| वैकुण्ठ | २. | विष्णु के | स | १३. | साथ |
| संश्रयैः । | ३. | आश्रित रहने वाले | अभिउपायनैः ॥ | १२. | उपहारों के |

श्लोकार्थ—सुना है कि विष्णु के आश्रित रहने वाले देवताओं ने उन दोनों को मेरी मृत्यु का कारण निश्चित किया है । अतः आप उन दोनों के साथ ही नन्द आदि ग्वालों को उपहारों के साथ ले आओ ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**घातयिष्य इहानीतौ कालकल्पेन हस्तिना ।**
**यदि मुक्तौ ततो मल्लैर्घातये वैद्युतोपमैः ॥३२॥**

पदच्छेद— घातयिष्ये इह आनीतौ काल कल्पेन हस्तिना ।
यदि मुक्तौ ततः मल्लैः घातये वैद्युत उपमैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घातयिष्ये | ६. | मरवा डालूँगा | यदि | ७. | यदि |
| इह | १. | यहाँ | मुक्तौ | ८. | उस हाथी से (बच गये) |
| आनीतौ | २. | आने पर उन्हें | ततः | ९. | तब |
| काल | ३. | काल के | मल्लैः | ११. | पहलवानों से |
| कल्पेन | ४. | समान | घातये | १२. | मरवा डालूंगा |
| हस्तिना । | ५. | हाथी (कुवलयापीड से) | वैद्युत उपमैः ॥ | १०. | वज्र के समान |

श्लोकार्थ—यहाँ आने पर उन्हें काल के समान हाथी कुवलयापीड से मरवा डालूंगा । यदि उस हाँथी से बच गये तब वज्र के समान पहलवानों से मरवा डालूँगा ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तयोर्निहतयोस्तप्तान् वसुदेवपुरोगमान् ।**
**तद्बन्धून् निहनिष्यामि वृष्णिभोजदशार्हकान् ॥३३॥**

पदच्छेद— तयोः निहतयोः तप्तान् वसुदेव पुरोगमान् ।
तद् बन्धून् निहनिष्यामि वृष्णि भोज दशार्हकान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तयोः | १. उन दोनों के | तत् | ९. उनके |
| निहतयोः | २. मारे जाने पर | बन्धून् | १०. बन्धुओं को |
| तप्तान् | ३. शोकाकुल | निहनिष्यामि | ११. (मैं स्वयं) मार डालूंगा |
| वसुदेव | ४. वसुदेव | वृष्णि | ६. वृष्णि |
| पुरोगमात् । | ५. आदि | भोज | ७. भोज और |
| | | दशार्हकान् ॥ | ८. दशार्हवंशी |

श्लोकार्थ—उन दोनों के मारे जाने पर शोकाकुल वसुदेव आदि, वृष्णि, भोज और दर्शाहवंशी, उनके बन्धुओं को मैं स्वयं मार डालूंगा ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**उग्रसेनं पितरं स्थविरं राज्यकामुकम् ।**
**तद्भ्रातरं देवकं च ये चान्ये विद्विषो मम ॥३४॥**

पदच्छेद— उग्रसेनम् च पितरम् स्थविरम् राज्य कामुकम् ।
तत् भ्रातरम् देवकम् च ये च अन्ये विद्विषः ममः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उग्रसेनम् | ५. उग्रसेन को | तत् भ्रातरम् | ७. उसके भाई |
| च | ६. और | देवकम् | ८. देवक को |
| पितरम् | ४. पिता | च ये | ९. और जो |
| स्थविरम् | ३. बूढे | च अन्ये | १०. दूसरे |
| राज्य | १. राज्य के | विद्विषः | १२. द्वेषी हैं (उन्हें मैं मार डालूंगा) |
| कामुकम् । | २. लोभी | मम ॥ | ११. मेरे |

श्लोकार्थ—राज्य के लोभी बूढ़े पिता उग्रसेन को और उसके भाई देवक को और जो दूसरे मेरे द्वेषी हैं, उन्हें मैं मार डालूंगा ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**ततश्चैषा मही मित्र भवित्री नष्टकण्टका ।**
**जरासन्धो मम गुरुर्द्विविदो दयितः सखा ॥३५॥**

पदच्छेद— ततः च एषा मही मित्र भवित्री नष्ट कण्टका ।
जरासन्धः मम गुरुः द्विविदः दयितः सखा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | २. | तब | जरासन्धः | ६. | जरासन्ध |
| च | ६. | और | मम | ७. | मेरे |
| एषा मही | ३. | यह पृथ्वी | गुरुः | ८. | गुरु हैं |
| मित्र | १. | हे मित्र ! | द्विविदः | १०. | द्विविद |
| भवित्री | ५. | हो जायेंगी | दयितः | ११. | मेरे |
| नष्टकण्टका । | ४. | निष्कण्टक | सखा ॥ | १२. | सखा हैं |

श्लोकार्थ—हे मित्र ! तब यह पृथ्वी निष्कण्टक हो जायेगी । जरासन्ध मेरे गुरु हैं । और द्विविद मेरे सखा हैं ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**शम्बरो नरको बाणो मय्येव कृतसौहृदाः ।**
**तैरहं सुरपक्षीयान् हत्वा भोक्ष्ये महीं नृपान् ॥३६॥**

पदच्छेद— शम्बरः नरकः बाणः मयि एव कृत सौहृदाः ।
तैः अहम् सुर पक्षीयान् हत्वा भोक्ष्ये महीम् नृपान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शम्बरः | १. | शम्बरासुर | तैः | ८. | उनके द्वारा |
| नरकः | २. | नरकासुर | अहम् | ६. | मैं |
| बाणः | ३. | बाणासुर | सुरपक्षीयान् | १०. | देवताओं के पक्षपाती |
| मयि | ४. | मुझसे | हत्वा | १२. | मार कर |
| एव | ७. | ही हैं | भोक्ष्ये | १४. | भोग करूँगा |
| कृत | ६. | किये हुये | महीम् | १३. | पृथ्वी का |
| सौहृदाः । | ५. | मित्रता | नृपान् ॥ | ११. | राजाओं को |

श्लोकार्थ—शम्बरासुर, नरकासुर, बाणासुर मुझसे मित्रता किये हुये ही हैं । उनके द्वारा मैं देवताओं के पक्षपाती राजाओं को मार कर पृथ्वी का भोग करूँगा ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**एतज्ज्ञात्वाऽऽनय क्षिप्रं रामकृष्णाविहार्भकौ ।**
**धनुर्मखनिरीक्षार्थं द्रष्टुं यदुपुरश्रियम् ॥३७॥**

पदच्छेद — एतत् ज्ञात्वा आनय क्षिप्रम् रामकृष्णौ इह अर्भकौ ।
धनुः मख निरीक्षार्थम् द्रष्टुम् यदु पुर श्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतत् | १. | यह | धनुः | ५. | धनुष |
| ज्ञात्वा | २. | जान कर | मख | ६. | यज्ञ के |
| आनय | १४. | ले जाओ | निरीक्षार्थम् | ७. | दर्शन और |
| क्षिप्रम् | १३. | शीघ्र | द्रष्टुम् | ११. | देखने के लिये |
| रामकृष्णौ | ४. | बलराम और कृष्ण को | यदु | ८. | यदुवंशियों को |
| इह | १२. | यहाँ | पुर | ९. | नगर मथुरा की |
| अर्भकौ । | ३. | बालक | श्रियम् ॥ | १०. | शोभा |

श्लोकार्थ—यह जान कर बालक बलराम और श्रीकृष्ण को धनुष यज्ञ के दर्शन और यदुवंशियों को नगर मथुरा की शोभा देखने के लिये यहाँ शीघ्र ले आओ ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**अक्रूर उवाच— राजन् मनीषितं सम्यक् तव स्वावद्यमार्जनम् ।**
**सिद्ध्यसिद्ध्योः समं कुर्याद् दैवं हि फलसाधनम् ॥३८॥**

पदच्छेद— राजन् मनीषितम् सम्यक् तव स्व अवद्य मार्जनम् ।
सिद्धि असिद्ध्योः समम् कुर्यात् दैवम् हि फल साधनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राजन् | १. | हे राजन् ! | सिद्धि | ८. | सफलता |
| मनीषितम् | ६. | सोचना | असिद्ध्योः | ९. | और असफलता में |
| सम्यक् | ७. | ठीक है | समम् | १०. | समभाव रखकर |
| तव | ५. | आपका | कुर्यात् | ११. | कार्य करना चाहिये |
| स्व | २. | अपना | दैवम् | १४. | भाग्यानुसार होती है |
| अवद्य | ३. | अनिष्ट | हि फल | १२. | फल की |
| मार्जनम् । | ४. | दूर करने के लिये | साधनम् ॥ | १३. | सिद्धि |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अपना अनिष्ट दूर करने के लिये आपका सोचना ठीक है। सफलता और असफलता में समभाव रखकर कार्य करना चाहिये। फल की सिद्धि भाग्यानुसार होती है ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**मनोरथान् करोत्युच्चैर्जनो दैवहतानपि ।**
**युज्यते हर्षशोकाभ्यां तथाप्याज्ञां करोमि ते ॥३९॥**

पदच्छेद— मनोरथान् करोति उच्चैः जनः दैव हतान् अपि ।
युज्यते हर्ष शोकाभ्याम् तथापि आज्ञाम् करोमि ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मनोरथान् | ६. | मनोरथों को | युज्यते | १०. | हो जाता है |
| करोति | ७. | करता है (और) | हर्ष | ८. | हर्षित तथा |
| उच्चैः | ५. | बड़े-बड़े | शोकाभ्याम् | ९. | शोकातुर |
| जनः | ४. | मनुष्य | तथापि | ११. | फिर भी मैं |
| दैव | १. | भाग्य से | आज्ञाम् | १३. | आज्ञा का पालन |
| हतान् | २. | मारे हुये | करोमि | १४. | कर रहा हूँ |
| अपि । | ३. | भी | ते ॥ | १२. | आपकी |

श्लोकार्थ—भाग्य से मारे हुये भी मनुष्य बड़े-बड़े मनोरथों को करता है और हर्षित तथा शोकातुर होता है । फिर भी मैं आपकी आज्ञा का पालन कर रहा हूँ ॥

# चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **एवमादिश्य चाक्रूरं मन्त्रिणश्च विसृज्य सः ।**
**प्रविवेश गृहं कंसस्तथाक्रूरः स्वमालयम् ॥४०॥**

पदच्छेद— एवम् आदिश्य च अक्रूरम् मन्त्रिणः च विसृज्य सः ।
प्रविवेश गृहम् कंसः तथा अक्रूरः स्वम् आलयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | प्रविवेश | १०. | प्रविष्ट हुआ |
| आदिश्य | २. | आदेश देकर | गृहम् | ९. | घर में |
| च अक्रूरम् | ३. | अक्रूर | कंसः | ८. | कंस |
| मन्त्रिणः | ५. | मन्त्रियों को | तथा | ११. | तथा |
| च | ४. | और | अक्रूरः | १२. | अक्रूर |
| विसृज्य | ६. | बिदा करके | स्वम् | १३. | अनने |
| सः । | ७. | वह | आलयम् ॥ | १४. | घर लौट आये |

श्लोकार्थ—इस प्रकार आदेश देकर अक्रूर और मन्त्रियों को बिदा करके वह कंस घर में प्रविष्ट हुआ । तथा अक्रूर अपने घर लौट आये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे अक्रूर संप्रेषणम् नाम षट्त्रिंशः अध्यायः ॥३६॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
## दशमः स्कन्धः
## सप्तत्रिंशः अध्यायः
### प्रथमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—केशी तु कंसप्रहितः खुरैर्महीं महाहयो निर्जरयन् मनोजवः ।**
**सटावधूताभ्रविमानसङ्कुलं कुर्वन् नभो हेषितभीषिताखिलः ।।१।।**

पदच्छेद— केशी तु कंस प्रहितः खुरैः महीम् महाहयः निर्जरयन् मनोजवः ।
सटावधूत अभ्रविमान सङ्कुलम् कुर्वन् नभः हेषित भीषित अखिलः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| केशी तु | २. | केशी नामक दैत्य | सटावधूत | ९. | गरदन के बालों से |
| कंस प्रहितः | १. | कंस का भेजा हुआ | अभ्रविमान | १०. | बादलों और विमानों की |
| खुरैः | ५. | खुरों से | सङ्कुलम् | ११. | भीड़को तितर-बितर |
| महीम् | ६. | पृथ्वी को | कुर्वन् | १२. | करता हुआ (अपनी) |
| महाहयः | ३. | भारी घोड़े के रूप वाला | नभः | ८. | आकाश को |
| निर्जरयन् | ७. | खोदता हुआ | हेषित | १३. | हिनहिनाहट से |
| मनोजवः । | ४. | मन के समान वेग से दौड़ता हुआ | भीषितअखिलः ।। | १४. | सब को डराता हुआ आ रहा था |

श्लोकार्थ—कंस का भेजा हुआ केशी नामक दैत्य भारी घोड़े के रूप वाला, मन के समान वेग से दौड़ता हुआ, खुरों से पृथ्वी को खोदता हुआ, आकाश में गरदन के बालों से बादलों और विमानों की भीड़ को तितर-बितर करता हुआ अपनी हिनहिनाहट से सबको डराता हुआ आ रहा था ।।

### द्वितीयः श्लोकः

**विशालनेत्रो विकटास्यकोटरो बृहद्गलो नीलमहाम्बुदोपमः ।**
**दुराशयः कंसहितं चिकीर्षुर्व्रजं स नन्दस्य जगाम कम्पयन् ।।२।।**

पदच्छेद— विशाल नेत्रः विकटास्य कोटरः बृहद्गलः नील महाम्बुदउपमः ।
दुराशयः कंसहितं चिकीर्षुः व्रजं स नन्दस्य जगाम कम्पयन् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विशालनेत्रः | १. | बड़ी-बड़ी आँखों वाला | दुराशयः | ८. | दुष्ट चित्तवाला |
| विकटास्य | ३. | विकट मुखवाला | कंसहितम् | ९. | कंस का हित |
| कोटरः | २. | वृक्ष के खोडर जैसा | चिकीर्षुः | १०. | करने की इच्छा वाला |
| बृहत् गलः | ५. | बड़ी गरदन वाला | व्रजम् | १३. | व्रज में |
| नील | ४. | नीली | सः नन्दस्य | १२. | वह केशी नन्द के |
| महाअम्बुदः | ६. | महामेघ के | जगाम | १४. | गया |
| उपमः । | ७. | समान (शरीर वाला) | कम्पयन् ।। | ११. | पृथ्वी को कँपाता हुआ |

श्लोकार्थ—बड़ी-बड़ी आँखों वाला, वृक्ष के खोडर जैसा विकट मुखवाला, नीली गरदन वाला, महामेघ के समान शरीर वाला, दुष्ट चित्तवाला, कंस का हित करने की इच्छा वाला, पृथ्वी को कँपाता हुआ वह केशी नन्द के व्रज में गया ।

## तृतीयः श्लोकः

**तं त्रासयन्तं भगवान् स्वगोकुलं तद्धेषितैर्वालविघूर्णिताम्बुदम् ।**
**आत्मानमाजौ मृगयन्तमग्रणीरुपाह्वयत् स व्यनदन्मृगेन्द्रवत् ॥३॥**

पदच्छेद — तम् त्रासयन्तम् भगवान् स्वगोकुलम् तत् हेषितैः वाल विघूर्णित अम्बुदम् ।
आत्मानम् आजौ मृगयन्तम् अग्रणीः उप आह्वयत् सः व्यनदत् मृगेन्द्रवत् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ११. | उस केशी को | आत्मानम् | ९. | अपने को |
| त्रासयन्तम् | ४. | डराते हुये (तथा) | आजौ | ८. | युद्ध में (अपने को) |
| भगवान् | १४. | भगवान् ने | मृगयन्तम् | १०. | ढूंढते हुये |
| स्वगोकुलम् | १. | अपने गोकुल को | अग्रणीः | १३. | अग्रगामी |
| तत् | २. | उस | उपआह्वयत् | १७. | ललकारा |
| हेषितैः | ३. | हिनहिनाहट से | सः | १२. | उन |
| वाल | ६. | बालों से | व्यनदत् | १६. | गरज कर |
| विघूर्णित | ७. | तितर-बितर करते हुये | मृगेन्द्रवत् ॥ | १५. | सिंह के समान |
| अम्बुदम् । | ५. | बादलों को | | | |

श्लोकार्थ—अपने गोकुल को उस हिनहिनाहट से डराते हुये तथा बादलों को बालों से तितर-बितर करते हुये, युद्ध में अपने को ढूंढते हुये उस केशी को उन अग्रगामी भगवान् ने सिंह के समान गरज कर ललकारा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**स तं निशाम्याभिमुखो मुखेन खं पिबन्निवाभ्यद्रवदत्यमर्षणः ।**
**जघान पद्भ्यामरविन्दलोचनं दुरासदश्चण्डजवो दुरत्ययः ॥४॥**

पदच्छेद— सः तम् निशाम्य अभिमुखः मुखेन खम् पिबन् इव अभ्यद्रवत् अतिअमर्षणः ।
जघान पद्भ्याम् अरविन्द लोचनम् दुरासदः चण्डजवः दुरत्ययः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः तम् | २. | वह उन्हें (हिनहिनाहट) | अतिअमर्षणः । | ९. | अत्यन्त असहनीय |
| निशाम्य | ३. | सुनाकर | जघान | १६. | मारी |
| अभिमुखः | १. | सामने होकर | पद्भ्याम् | १५. | पैरों से (दुलत्ती) |
| मुखेन | ४. | मुँह से | अरविन्द | १३. | कमल के समान |
| खम् | ६. | आकाश को | लोचनम् | १४. | नेत्रों वाले (भगवान् को) |
| पिबन् | ७. | पीता हुआ | दुरासदः | ११. | बड़ी कठिनाई से पकड़ने तथा |
| इव | ५. | मानों | चण्डजवः | १०. | प्रचण्ड वेग वाले |
| अभ्यद्रवत् | ८. | दौड़ा (फिर) | दुरत्ययः ॥ | १२. | जीतने योग्य (दैत्य ने) |

श्लोकार्थ—सामने होकर वह उन्हें हिनहिनाहट सुनाकर मुँह से मानों आकाश को पीता हुआ दौड़ा। फिर अत्यन्त असहनीय प्रचण्ड वेग वाले बड़ी कठिनाई से जीतने योग्य दैत्य ने कमल के समान नेत्रों वाले भगवान् को पैरों से दुलत्ती मारी ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**तद् वञ्चयित्वा तमधोक्षजो रुषा प्रगृह्य दोर्भ्यां परिविध्य पादयोः ।**
**सावज्ञमुत्सृज्य धनुःशतान्तरे यथोरगं तार्क्ष्यसुतो व्यवस्थितः ॥५॥**

पदच्छेद— तत् वञ्चयित्वा तम् अधोक्षजः रुषा प्रगृह्य दोर्भ्याम् परिविध्य पादयोः ।
स अवज्ञम् उत्सृज्य धनुः शत अन्तरे यथा उरगम् तार्क्ष्यसुतः व्यवस्थितः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | उससे | स अवज्ञम् | १२. | अपमान के साथ |
| वञ्चयित्वा | २. | बच कर | उत्सृज्य | १७. | फेंक कर |
| तम् | ५. | उसके | धनुः | १४. | चार |
| अधोक्षजः | ३. | इन्द्रियातीत भगवान् ने | शत | १५. | सौ हाथ की |
| रुषा | ४. | क्रोध से | अन्तरे | १६. | दूरी पर |
| प्रगृह्य | ११. | पकड़ कर और | यथा | ८. | जैसे |
| दोर्भ्याम् | ७. | दोनों हाथों से | उरगम् | १०. | साँप को पकड़ लेता है वैसे ही |
| परिविध्य | १३. | घुमा कर | तार्क्ष्यसुतः | ९. | गरुड़ |
| पादयोः । | ६. | पैरों को | व्यवस्थितः ॥ | १८. | खड़े हो गये |

श्लोकार्थ—उससे बच कर इन्द्रियातीत भगवान् ने क्रोध से उसके पैरों को दोनों हाथों से जैसे गरुड़ साँप को पकड़ लेता है वैसे ही पकड़ कर अपमान के साथ घुमा कर चार सौ हाथ की दूरी पर फेंक कर खड़े हो गये ॥

## षष्ठः श्लोकः

**स लब्धसंज्ञः पुनरुत्थितो रुषा व्यादाय केशी तरसाऽऽपतद्धरिम् ।**
**सोऽप्यस्य वक्त्रे भुजमुत्तरं स्मयन् प्रवेशयामास यथोरगं बिले ॥६॥**

पदच्छेद-- सः लब्ध संज्ञः पुनः उत्थितःरुषा व्यादाय केशी तरसा अपतत् हरिम् ।
सः अपि अस्य वक्त्रे भुजम् उत्तरम् स्मयन् प्रवेशयामास यथा उरगम् बिले ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | वह | सः अपि | ११. | भगवान् ने भी |
| लब्ध | ४. | प्राप्त होने पर | अस्य वक्त्रे | १२. | उसके मुँह में (अपना) |
| संज्ञः | ३. | चेतना | भुजम् | १४. | हाथ |
| पुनः | ५. | फिर | उत्तरम् | १३. | बाँया |
| उत्थितःरुषा | ६. | उठ कर क्रोध से | स्मयन् | १०. | मुस्कराते हुये |
| व्यादाय | ७ | मुँह फैला कर | प्रवेशयामास | १५. | डाल दिया |
| केशी | २. | केशी | यथा | १६. | जैसे |
| तरसा अपतत् | ९. | वेग से टूट पड़ा | उरगम् | १७. | साँप (निःसंकोच होकर) |
| हरिम् । | ८. | भगवान् श्रीकृष्ण पर | बिले ॥ | १८. | बिल में (घुस जाता है) |

श्लोकार्थ—वह केशी चेतना प्राप्त होने पर फिर उठ कर क्रोध से मुँह फैला कर भगवान् श्रीकृष्ण पर वेग से टूट पड़ा। भगवान् ने भी मुस्कराते हुये उसके मुँह में अपना बाँया हाथ डाल दिया जैसे साँप निःसंकोच होकर बिल में घुस जाता है ॥

## सप्तमः श्लोकः

**दन्ता निपेतुर्भगवद्भुजस्पृशस्ते केशिनस्तप्तमयः स्पृशो यथा।**
**बाहुश्च तद्देहगतो महात्मनो यथाऽऽमयः संववृधे उपेक्षितः ॥७॥**

पदच्छेद— दन्ताः निपेतुः भगवत् भुज स्पृशः ते केशिनः तप्तमयः स्पृशः यथा।
बाहुः च तत् देहगतः महात्मनः यथा आमयः संववृधे उपेक्षितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दन्ताः | ४. | दाँत | बाहुः | ११. | भुजा |
| निपेतुः | ८. | गिर गये | च | ९. | और |
| भगवद् भुज | १. | भगवान् की भुजा का | तत् देहगतः | १२. | उसके शरीर में घुसकर |
| स्पृशःते | २. | स्पर्श करने वाले उस | महात्मनः | १०. | महात्मा श्रीकृष्ण की |
| केशिनः | ३. | केशी के | यथा | १४. | जैसे |
| तप्तमयः | ६. | तपे हुये लोहे का | आमयः | १६. | जलोदर रोग (बढ़ जाता है) |
| स्पृशः | ७. | स्पर्श करके | संववृधे | १३. | उसी प्रकार बढ़ने लगी |
| यथा। | ५. | मानों | उपेक्षितः ॥ | १५. | उपेक्षा करने से |

श्लोकार्थ—भगवान् की भुजा का स्पर्श करने वाले उस केशी के दाँत मानों तपे हुये लोहे का स्पर्श करके गिर गये। और महात्मा श्रीकृष्ण की भुजा उसके शरीर में घुस कर उसी प्रकार बढ़ने लगी जैसे उपेक्षा करने से जलोदर रोग बढ़ जाता है॥

## अष्टमः श्लोकः

**समेधमानेन स कृष्णबाहुना निरुद्धवायुश्चरणांश्च विक्षिपन्।**
**प्रस्विन्नगात्रः परिवृत्तलोचनः पपात लेण्डं विसृजन् क्षितौ व्यसुः ॥८॥**

पदच्छेद— समेधमानेन सः कृष्ण बाहुना निरुद्ध वायुः चरणान् च विक्षिपन्।
प्रस्विन्न गात्रः परिवृत्त लोचनः पपात लेण्डम् विसृजन् क्षितौ व्यसुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| समेधमानेन | १. | बढ़ती हुई | प्रस्विन्न | १०. | पसीने से लथ-पथ हो गया |
| सः | ३. | उसकी | गात्रः | ९. | उसका शरीर |
| कृष्ण बाहुना | २. | श्रीकृष्ण की भुजा से | परिवृत्त | १२. | पुतलियाँ उलट गईं (वह) |
| निरुद्ध | ५. | रुक गई | लोचनः | ११. | आँखों की |
| वायुः | ४. | साँस | पपात | १७. | गिर पड़ा |
| चरणान् | ७. | पैरों को | लेण्डम् | १३. | मल |
| च | ६. | और (वह) | विसृजन् | १४. | त्यागता हुआ |
| विक्षिपन्। | ८. | पटकने वाला | क्षितौ | १६. | पृथ्वी पर |
| | | | व्यसुः ॥ | १५. | निष्प्राण होकर |

श्लोकार्थ—बढ़ती हुई श्रीकृष्ण की भुजा से उसकी साँस रुक गई। और वह पैरों को पटकने लगा। उसका शरीर पसीने से लथ-पथ हो गया। आँखों की पुतलियाँ उलट गईं। और वह मल त्यागता हुआ निष्प्राण होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा॥

## नवमः श्लोकः

**तद्देहतः कर्कटिकाफलोपमाद् व्यसोरपाकृष्य भुजं महाभुजः ।**
**अविस्मितोऽयत्नहतारिरुत्स्मयैः प्रसूनवर्षैर्दिविषद्भिरीडितः ॥९॥**

पदच्छेद— तत् देहतः कर्कटिका फल उपमात् व्यसोः अपाकृष्य भुजम् महाभुजः ।
अविस्मितः अयत्न हृत अरि उत्स्मयैः प्रसून वर्षैः दिविषद्भिः ईडितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तत् | ६. उसके | | अविस्मितः | १०. विस्मयरहित तथा |
| देहतः | ७. शरीर से | | अयत्न | ११. बिना प्रयत्न के |
| कर्कटिका | ३. ककड़ी के | | हृत | १३. मार देने वाले (भगवान् पर) |
| फल | ४. फल के | | अरि | १२. शत्रु का |
| उपमात् | ५. समान (फटे हुये) | | उत्स्मयैः | १४. आश्चर्य युक्त |
| व्यसोः | २. निष्प्राण (एवम्) | | प्रसून | १६. फूलों की |
| अपाकृष्य | ९. खींच ली (तब) | | वर्षैः | १७. वर्षा और |
| भुजम् | ८. अपनी भुजा | | दिविषद्भिः | १५. देवगण |
| महाभुजः । | १. महाबाहु श्रीकृष्ण ने | | ईडितः ॥ | १८. उनकी स्तुति करने लगे |

श्लोकार्थ—महाबाहु श्रीकृष्ण ने निष्प्राण एवम् ककड़ी के फल के समान फटे हुये उसके शरीर से अपनी भुजा खींच ली । तब विस्मय रहित तथा बिना प्रयत्न के शत्रु को मार देने वाले भगवान् पर आश्चर्य युक्त देवगण फूलों की वर्षा और स्तुति करने लगे ॥

## दशमः श्लोकः

**देवर्षिरुपसङ्गम्य भागवतप्रवरो नृप ।**
**कृष्णमक्लिष्टकर्माणं रहस्येतदभाषत ॥१०॥**

पदच्छेद— देवर्षिः उपसङ्गम्य भागवत प्रवरः नृप ।
कृष्णम् अक्लिष्ट कर्माणम् रहसि एतत् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| देवर्षिः | ४. देवर्षि नारद | | अक्लिष्ट | ५. अनायास अद्भुत |
| उपसङ्गम्य | ८. मिलकर | | कर्माणम् | ६. कर्म करने वाले |
| भागवत | २. भगवान् के भक्तों में | | रहसि | ९. एकान्त में |
| प्रवरः | ३. श्रेष्ठ | | एतत् | १०. यह |
| नृप । | १. हे राजन् ! | | अभाषत ॥ | ११. कहने लगे |
| कृष्णम् | ७. श्रीकृष्ण से | | | |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् के भक्तों में श्रेष्ठ देवर्षि नारद अनायास अद्भुत कर्म करने वाले श्रीकृष्ण से मिलकर एकान्त में यह कहने लगे ॥

## एकादशः श्लोकः

**कृष्ण कृष्णाप्रमेयात्मन् योगेश जगदीश्वर ।**
**वासुदेवाखिलावास सात्वतां प्रवर प्रभो ॥११॥**

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण अप्रमेय आत्मन् योगेश जगदीश्वर ।
वासुदेव अखिल आवास सात्वताम् प्रवर प्रभो ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. हे कृष्ण ! | वासुदेव | ७. वसुदेवनन्दन |
| कृष्ण | २. कृष्ण ! | अखिल | ८. सब में |
| अप्रमेय | ३. मन और वाणी से परे | आवास | ९. निवास करने वाले |
| आत्मन् | ४. स्वरूप वाले | सात्वताम् | १०. यदुवंशियों में |
| योगेश | ५. योग के ईश्वर | प्रवर | ११. श्रेष्ठ |
| जगदीश्वर । | ६. संसार के स्वामी | प्रभो ।। | १२. स्वामी |

श्लोकार्थ—हे कृष्ण ! कृष्ण ! मन और वाणी से परे स्वरूप वाले ! योग के ईश्वर ! संसार के स्वामी, वसुदेवनन्दन, सब में निवास करने वाले, यदुवंशियों में श्रेष्ठ, प्रभो ! ।।

## द्वादशः श्लोकः

**त्वमात्मा सर्वभूतानामेको ज्योतिरिवैधसाम् ।**
**गूढो गुहाशयः साक्षी महापुरुष ईश्वरः ॥१२॥**

पदच्छेद— त्वम् आत्मा सर्व भूतानाम् एकः ज्योतिः इव एधसाम् ।
गूढः गुहाशयः साक्षी महापुरुषः ईश्वरः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वम् | १. आप ही | एधसाम् । | ८. सभी काष्ठों में रहता है |
| आत्मा | ४. आत्मा है | गूढः | ९. आप गुप्त |
| सर्व | २. सभी | गुहाशयः | १०. पञ्चकोश रूप गुफाओं के भीतर रहने वाले |
| भूतानाम् | ३. प्राणियों की | साक्षी | ११. सबके साक्षी |
| एकः | ६. एक ही | महापुरुषः | १२. महापुरुष |
| ज्योतिः | ७. अग्नि | ईश्वरः ।। | १३. ईश्वर हैं |
| इव | ५. जैसे | | |

श्लोकार्थ—आप ही सभी प्राणियों की आत्मा हैं। जैसे एक ही अग्नि सभी काष्ठों में रहता है उसी प्रकार आप गुप्त, पञ्चकोश गुफाओं के भीतर रहने वाले, सबके साक्षी, महापुरुष, ईश्वर हैं ।।

## त्रयोदशः श्लोकः

आत्मनाऽऽत्माश्रयः पूर्वं मायया ससृजे गुणान् ।
तैरिदं सत्यसंकल्पः सृजस्यत्स्यवसीश्वरः ॥१३॥

पदच्छेद— आत्मना आत्म आश्रयः पूर्वम् मायया ससृजे गुणान् ।
तैः इदम् सत्य संकल्पः सृजसि अत्सि अवसि ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्मना | १. | स्वयम् | तैः | १०. | उन्हीं गुणों के द्वारा |
| आत्म | २. | अपना | इदम् | ११. | इस जगत् की |
| आश्रयः | ३. | आश्रय बने आपने | सत्यसंकल्पः | ८. | सत्यसंकल्प वाले और |
| पूर्वम् | ४. | पहले | सृजसि | १२. | सृष्टि |
| मायया | ५. | माया से | अत्सि | १४. | संहार करते हैं |
| ससृजे | ७. | सृष्टि की (फिर) | अवसि | १३. | पालन और |
| गुणान् । | ६. | गुणों की | ईश्वरः ॥ | ९. | सर्वशक्तिमान् आप |

श्लोकार्थ—स्वयम् अपना आश्रय बने आपने पहले माया से गुणों की सृष्टि की । फिर सत्य संकल्प वाले और सर्वशक्तिमान् आप उन्हीं गुणों के द्वारा इस जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

स त्वं भूधरभूतानां दैत्यप्रमथरक्षसाम् ।
अवतीर्णो विनाशाय सेतूनां रक्षणाय च ॥१४॥

पदच्छेद— सः त्वम् भूधर भूतानाम् दैत्य प्रमथ रक्षसाम् ।
अवतीर्णः विनाशाय सेतूनाम् रक्षणाय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | वही | रक्षसाम् । | ७. | राक्षसों का |
| त्वम् | २. | आप | अवतीर्णः | १२. | अवतीर्ण हुये हैं |
| भूधर | ३. | राजा | विनाशाय | ८. | विनाश करने के लिये |
| भूतानाम् | ४. | बने हुये | सेतूनाम् | १०. | धर्म की मर्यादाओं की |
| दैत्य | ५. | दैत्यों | रक्षणाय | ११. | रक्षा करने के लिये |
| प्रमथ | ६. | प्रमथों (और) | च ॥ | ९. | तथा |

श्लोकार्थ—वही आप राजा बने हुये दैत्यों, प्रमथों और राक्षसों का विनाश करने के लिये तथा धर्म की मर्यादाओं की रक्षा करने के लिये अवतीर्ण हुये हैं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**दिष्ट्या ते निहतो दैत्यो लीलयायं हयाकृतिः ।**
**यस्य हेषितसंत्रस्तास्त्यजन्त्यनिमिषा दिवम् ॥१५॥**

पदच्छेद— दिष्ट्या ते निहतः दैत्यः लीलया अयम् हय आकृतिः ।
यस्य हेषित संत्रस्ताः त्यजन्ति अनिमिषाः दिवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्ट्या | १. | यह आनन्द की बात है कि | यस्य | ५. | जिसकी |
| ते | ११. | आपके द्वारा | हेषित | ६. | हिनहिनाहट से |
| निहतः | १३. | मार डाला गया | संत्रस्ताः | ७. | डरे हुये |
| दैत्यः | ४. | दैत्य केशी | त्यजन्ति | १०. | त्याग दिया था |
| लीलया | १२. | खेल ही खेल में | अनिमिषाः | ८. | देवताओं ने |
| अयम् | ३. | वह | दिवम् ॥ | ९. | स्वर्ग को |
| हय आकृतिः । | २. | घोड़े के आकार का | | | |

श्लोकार्थ—यह आनन्द की बात है कि घोड़े के आकार का वह दैत्य केशी जिसकी हिनहिनाहट से डरे हुये देवताओं ने स्वर्ग को त्याग दिया था, आपके द्वारा खेल ही खेल में वह मार डाला गया ॥

## षोडशः श्लोकः

**चाणूरं मुष्टिकं चैव मल्लानन्यांश्च हस्तिनम् ।**
**कंसं च निहतं द्रक्ष्ये परश्वोऽहनि ते विभो ॥१६॥**

पदच्छेद— चाणूरम् मुष्टिकम् च एव मल्लान् अन्यान् च हस्तिनम् ।
कंसम् च निहतम् द्रक्ष्ये परश्वः अहनि ते विभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चाणूरम् | ३. | चाणूर | कंसम् | १०. | कंस को |
| मुष्टिकम् | ४. | मुष्टिक | च | ११. | भी |
| च एव | ५. | तथा | निहतम् | १३. | मारे हुये |
| मल्लान् | ९. | पहलवानों को और | द्रक्ष्ये | १४. | देखूँगा |
| अन्यान् | ८. | दूसरे | परश्वः अहनि | २. | परसों दिन में |
| च | ७. | और | ते | १२. | आपके द्वारा |
| हस्तिनम् । | ६. | हाथी (कुवलयापीड) | विभो ॥ | १. | हे प्रभो ! |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! परसों दिन में चाणूर, मुष्टिक तथा हाथी कुवलयापीड और दूसरे पहलवानों को और कंस को भी आपके द्वारा मारे हुये देखूँगा ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**तस्यानु शङ्खयवनमुराणां नरकस्य च ।**
**पारिजातापहरणमिन्द्रस्य च पराजयम् ॥१७॥**

पदच्छेद— तस्य अनु शङ्ख यवन मुराणाम् नरकस्य च ।
पारिजात अपहरणम् इन्द्रस्य च पराजयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्य | १. | उसके | च । | ७. | और |
| अनु | २. | बाद | पारिजात | ८. | कल्प वृक्ष का |
| शङ्ख | ३. | शङ्खासुर | अपहरणम् | ६. | अपहरण |
| यवन | ४. | कालयवन | इन्द्रस्य | ११. | इन्द्र की |
| मुराणाम् | ५. | मुर नामक दैत्य एवम् | च | १०. | तथा |
| नरकस्य च | ६. | नरकासुर का | पराजयम् ॥ | १२. | पराजय (देखूंगा) |

श्लोकार्थ—उसके बाद शङ्खासुर, कालयवन, मुर नामक दैत्य एवम् नरकासुर का और कल्पवृक्ष का अपहरण तथा इन्द्र की पराजय देखूंगा ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**उद्वाहं वीरकन्यानां वीर्यशुल्कादिलक्षणम् ।**
**नृगस्य मोक्षणं पापाद् द्वारकायां जगत्पते ॥१८॥**

पदच्छेद— उद्वाहम् वीर कन्यानाम् वीर्य शुल्क आदि लक्षणम् ।
नृगस्य मोक्षणम् पापात् द्वारकायाम् जगत् पते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उद्वाहम् | ६. | विवाह (तथा) | नृगस्य | १०. | नृग का |
| वीर | ७. | वीर | मोक्षणम् | १३. | छुटकारा देखूंगा |
| कन्यानाम् | ८. | कन्यायों का | पापात् | १२. | पाप से |
| वीर्य | ३. | पराक्रम के | द्वारकायाम् | ११. | द्वारका में |
| शुल्क | ४. | शुल्क | जगत् | १. | हे संसार के |
| आदि | ५. | आदि द्वारा | पते ॥ | २. | स्वामी ! |
| लक्षणम् । | ६. | होने वाला | | | |

श्लोकार्थ—हे संसार के स्वामी ! पराक्रम के शुल्क आदि द्वारा होने वाला वीर कन्यायों का विवाह तथा नृग का द्वारका में पाप से छुटकारा देखूंगा ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**स्यमन्तकस्य च मणेरादानं सह भार्यया।**
**मृतपुत्रप्रदानं च ब्राह्मणस्य स्वधामतः ॥१९॥**

पदच्छेद— स्यमन्तकस्य च मणेः आदानम् सह भार्यया।
मृत पुत्र प्रदानम् च ब्राह्मणस्य स्वधामतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **स्यमन्तकस्य** | ४. स्यमन्तक | **मृत** | ९. मरे हुये |
| **च** | १. और | **पुत्र** | १०. पुत्रों का |
| **मणेः** | ५. मणि का | **प्रदानम्** | १२. लाकर देना (देखूँगा) |
| **आदानम्** | ६. ग्रहण करना | **च** | ७. तथा |
| **सह** | ३. सहित | **ब्राह्मणस्य** | ८. ब्राह्मण को |
| **भार्यया।** | २. पत्नी (सत्यभामा) | **स्वधामतः ॥** | ११. अपने धाम से |

श्लोकार्थ—और पत्नी सत्यभामा सहित स्यमन्तक मणि का ग्रहण करना। तथा ब्राह्मण को मरे हुये पुत्रों का अपने धाम से लाकर देना देखूँगा ॥

## विंशः श्लोकः

**पौण्ड्रकस्य वधं पश्चात् काशिपुर्याश्च दीपनम्।**
**दन्तवक्त्रस्य निधनं चैद्यस्य च महाक्रतौ ॥२०॥**

पदच्छेद— पौण्ड्रकस्य वधम् पश्चात् काशीपुर्यान् च दीपनम्।
दन्तवक्त्रस्य निधनम् चैद्यस्य च महा क्रतौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| **पौण्ड्रकस्य** | २. पौण्ड्रक का | **दन्तवक्त्रस्य** | ११. दन्तवक्त्र की |
| **बधम्** | ३. वध | **निधनम्** | १२. मृत्यु (देखूँगा) |
| **पश्चात्** | १. उसके बाद | **चैद्यस्य** | ९. शिशुपाल |
| **काशीपुर्याः** | ५. काशी पुरी का | **च** | १०. और |
| **च** | ४. और | **महा** | ७. महान् |
| **दीपनम्।** | ६. दहन (तथा) | **क्रतौ ॥** | ८. यज्ञ में |

श्लोकार्थ—उसके बाद पौण्ड्रक का वध और काशी पुरी का दहन तथा महान् यज्ञ में शिशुपाल और दन्तवक्त्र की मृत्यु देखूँगा ॥

## एकविंशः श्लोकः

**यानि चान्यानि वीर्याणि द्वारकामावसन् भवान् ।**
**कर्ता द्रक्ष्याम्यहं तानि गेयानि कविभिर्भुवि ॥२१॥**

पदच्छेद— यानि च अन्यानि वीर्याणि द्वारकाम् आवसन् भवान् ।
कर्ता द्रक्ष्यामि अहम् तानि गेयानि कविभिः भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यानि | ४. | जो | कर्ता | ८. | कार्य करेंगें (जिन्हें) |
| च | ५. | और | द्रक्ष्यामि | १४. | देखूँगा |
| अन्यानि | ६. | दूसरे | अहम् | १२. | मैं |
| वीर्याणि | ७. | पराक्रम का | तानि | १३. | उन्हें (भी) |
| द्वारकाम् | १. | द्वारका में | गेयानि | ११. | गायेंगे |
| आवसन् | २. | रहते हुये | कविभिः | १०. | कवि लोग |
| भवान् । | ३. | आप | भुवि ॥ | ९. | पृथ्वी पर |

श्लोकार्थ—द्वारका में रहते हुये आप जो और दूसरे पराक्रम का कार्य करेंगे, जिन्हें पृथ्वी पर कवि लोग गायेंगे, मैं उन्हें भी देखूंगा ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**अथ ते कालरूपस्य क्षपयिष्णोरमुष्य वै ।**
**अक्षौहिणीनां निधनं द्रक्ष्याम्यर्जुनसारथेः ॥२२॥**

पदच्छेद— अथ ते काल रूपस्य क्षपयिष्णोः अमुष्य वै ।
अक्षौहिणीनाम् निधनम् द्रक्ष्यामि अर्जुन सारथेः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | उसके बाद | अक्षौहिणीनाम् | ९. | अक्षौहिणी सेनाओं का |
| ते | ८. | आपके द्वारा | निधनम् | १०. | संहार |
| कालस्वरूप | ५. | कालरूप में | द्रक्ष्यामि | ११. | देखूंगा |
| क्षपयिष्णोः | ४. | भार उतारने के लिये | अर्जुन | ६. | अर्जुन के |
| अमुष्य | ३. | इस पृथ्वी का | सारथेः ॥ | ७. | सारथी बनेहुये |
| वै । | २. | निश्चित रूप से | | | |

श्लोकार्थ—इसके बाद निश्चित रूप से इस पृथ्वी का भार उतारने के लिये काल रूप में अर्जुन के सारथी बने हुये आपके द्वारा अक्षौहिणी सेनाओं का संहार देखूंगा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**विशुद्धविज्ञानघनं स्वसंस्थया समाप्तसर्वार्थममोघवाञ्छितम् ।**
**स्वतेजसा नित्यनिवृत्तमायागुणप्रवाहं भगवन्तमीमहि ॥२३॥**

पदच्छेद— विशुद्ध विज्ञान घनम् स्वसंस्थया समाप्त सर्वार्थम् अमोघ वाञ्छितम् ।
स्वतेजसा नित्य निवृत्त मायागुण प्रवाहम् भगवन्तम् ईमहि ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **विशुद्ध** | १. | आप विशुद्ध | **स्वतेजसा** | ८. | अपने तेज से |
| **विज्ञानघनम्** | २. | विज्ञान घन हैं | **नित्य** | ११. | नित्य |
| **स्वसंस्थया** | ३. | आपकी महिमा से ही | **निवृत्त** | १२. | निवृत्त किये हुये |
| **समाप्त** | ५. | आपको प्राप्त हैं | **माया** | ९. | माया के |
| **सर्वार्थम्** | ४. | सारे पदार्थ | **गुण प्रवाहम्** | १०. | गुणों के प्रवाह को |
| **अमोघ** | ७. | अमोघ हैं | **भगवन्तम्** | १३. | भगवान् की मैं |
| **वाञ्छितम् ।** | ६. | आपका संकल्प | **ईमहि ॥** | १४. | शरण ग्रहण करता हूँ |

श्लोकार्थ—आप विशुद्ध विज्ञान घन हैं । आपकी महिमा से ही सारे पदार्थ आपको प्राप्त हैं । आपका संकल्प अमोघ है । अपने तेज से माया के गुणों के प्रवाह को नित्यनिवृत्त किये हुये भगवान् को मैं शरण ग्रहण करता हूँ ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**त्वामीश्वरं स्वाश्रयमात्ममायया विनिर्मिताशेषविशेषकल्पनम् ।**
**क्रीडार्थमद्यात्तमनुष्यविग्रहं नतोऽस्मि धुर्यं यदुवृष्णिसात्वताम् ॥२४॥**

पदच्छेद— त्वाम् ईश्वरम् स्व आश्रयम् आत्ममायया विनिर्मित अशेष विशेष कल्पनम् ।
क्रीडार्थम् अद्य आत्तमनुष्य विग्रहम् नतः अस्मि धुर्यम् यदुवृष्णि सात्वताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **त्वाम्** | १४. | आप | **क्रीडार्थम्** | ७. | क्रीडा के लिये |
| **ईश्वरम्** | १५. | ईश्वर को | **अद्य** | ८. | आज |
| **स्वआश्रयम्** | १. | अपने आप में स्थित | **आत्तमनुष्य** | ९. | मनुष्य का |
| **आत्ममायया** | २. | अपनी माया से | **विग्रहम्** | १०. | शरीर स्वीकार करने वाले |
| **विनिर्मितः** | ६. | रचना करने वाले | **नतः अस्मि** | १६. | मैं नमस्कार करता हूँ |
| **अशेष** | ३. | अशेष (और) | **धुर्यम्** | १३. | शिरोमणि |
| **विशेष** | ४. | विशेष | **यदुवृष्णि** | ११. | यदुवृष्णि |
| **कल्पनम् ।** | ५. | कल्पनाओं की | **सात्वताम् ॥** | १२. | सात्वत वंशियों के |

श्लोकार्थ—अपने आप में स्थित अपनी माया से अशेष और विशेष कल्पनाओं की रचना करने वाले क्रीडा के लिये आज मनुष्य का शरीर स्वीकार करने वाले यदु, वृष्णि तथा सात्वत वंशियों के शिरोमणि आप ईश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं यदुपतिं कृष्णं भागवतप्रवरो मुनिः ।
प्रणिपत्याभ्यनुज्ञातो ययौ तद्दर्शनोत्सवः ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् यदुपतिम् कृष्णम् भागवत प्रवरः मुनिः ।
प्रणिपत्य अभ्यनुज्ञातः ययौ तत् दर्शन उत्सवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ४. | इस प्रकार | प्रणिपत्य | ७. | प्रणाम करके (और) |
| यदुपतिम् | ५. | यदुवंशियों के स्वामी | अभ्यनुज्ञातः | ८. | आज्ञा लेकर |
| कृष्णम् | ६. | कृष्ण को | ययौ | १२. | चले गये |
| भागवत | १. | भगवद्भक्तों में | तत् | ९. | उनके |
| प्रवरः | २. | श्रेष्ठ | दर्शन | १०. | दर्शन से |
| मुनिः । | ३. | नारद मुनि | उत्सवः ॥ | ११. | आह्लादित होते हुये |

श्लोकार्थ—भगवद्भक्तों में श्रेष्ठ नारद मुनि इस प्रकार यदुवंशियों के स्वामी कृष्ण को प्रणाम करके और आज्ञा लेकर उनके दर्शन से आह्लादित होते हुये चले गये ॥

## षड्विंशः श्लोकः

भगवानपि गोविन्दो हत्वा केशिनमाहवे ।
पशूनपालयत् पालैः प्रीतैर्व्रजसुखावहः ॥२६॥

पदच्छेद— भगवान् अपि गोविन्दः हत्वा केशिनम् आहवे ।
पशून् अपालयत् पालैः प्रीतैः व्रज सुख आवहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | ६. | भगवान् | पशून् | ११. | पशुओं के |
| अपि | ८. | भी | अपालयत् | १२. | पालन में लग गये |
| गोविन्दः | ७. | गोविन्द | पालैः | १०. | ग्वाल वालों के साथ |
| हत्वा | ३. | मारकर | प्रीतैः | ९. | प्रेमी |
| केशिनम् | २. | केशी को | व्रज | ४. | व्रजवासियों को |
| आहवे । | १. | युद्ध में | सुख आवहः ॥ | ५. | सुख देने वाले |

श्लोकार्थ—युद्ध में केशी को मार कर व्रजवासियों को सुख देने वाले भगवान् गोविन्द भी प्रेमी ग्वाल-वालों के साथ पशुओं के पालन में लग गये ॥

# सप्तविंशः श्लोकः

**एकदा ते पशून् पालाश्चारयन्तोऽद्रिसानुषु ।**
**चक्रुर्निलायनक्रीडाश्चोरपालापदेशतः ॥२७॥**

पदच्छेद— एकदा ते पशून् पालाः चारयन्तः अद्रि सानुषु ।
चक्रुः निलायन क्रीडाः चोर पाल अपदेशतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकदा | १. | एक बार | चक्रुः | १३. | खेल रहे थे |
| ते | २. | वे | निलायन | ८. | छिपने-छिपाने का |
| पशून् | ६. | पशुओं को | क्रीडाः | ९. | खेल (लुका-छिपी) |
| पालाः | ३. | ग्वाल-वालों के साथ | चोर | १०. | चोर (और) |
| चारयन्तः | ७. | चराते हुये | पाल | ११. | रक्षक के |
| अद्रि | ४. | पहाड़ की | अपदेशतः ॥ | १२. | बहाने |
| सानुषु । | ५. | चोटियों पर | | | |

श्लोकार्थ—एक बार वे ग्वाल-वालों के साथ पहाड़ की चोटियों पर पशुओं को चराते हुये छिपने-छिपाने का खेल लुका-छिपी चोर और रक्षक के बहाने खेल रहे थे ।

# अष्टाविंशः श्लोकः

**तत्रासन् कतिचिच्चोराः पालाश्च कतिचिन्नृप ।**
**मेषायिताश्च तत्रैके विजह्रुरकुतोभयाः ॥२८॥**

पदच्छेद— तत्र आसन् कतिचित् चोराः पालाः च कतिचित् नृप ।
मेषायिताः च तत्र एके विजह्रुः अकुतः भयाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | २. | उनमें से | मेषायिताः | १०. | भेड़ के समान (आचरण करते हुये) |
| आसन् | ७. | बन गये थे | च तत्र | ८. | तथा उसमें से |
| कतिचित् | ३. | कुछ लोग | एके | ९. | कोई |
| चोराः | ४. | चोर | विजह्रुः | १३. | विहार कर रहे थे |
| पालाः | ६. | रक्षक | अकुतः | १२. | रहित होकर |
| च कतिचित् | ५. | और कुछ | भयाः ॥ | ११. | भय से |
| नृप । | १. | हे राजन् | | | |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उनमें से कुछ लोग चोर और कुछ रक्षक बने हुये थे । तथा उनमें से कोई भेड़ के समान आचरण करते हुये भय से रहित होकर विहार कर रहे थे ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**मयपुत्रो महामायो व्योमो गोपालवेषधृक् ।**
**मेषायितानपोवाह प्रायश्चोरायितो बहून् ॥२९॥**

पदच्छेद— मय पुत्रः महामायः व्योमः गोपाल वेषधृक् ।
मेषायितान् अपोवाह प्रायः चोरायितः बहून् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मय | १. | मय दानव का | मेषायितान् | ९. | भेड़ बने हुये |
| पुत्रः | २. | पुत्र | अपोवाह | ११. | चुरा कर छिपा आता |
| महामायः | ३. | महान् मायावी | प्रायः | ७. | बहुधा |
| व्योमः | ४. | व्योमासुर | चोरायितः | ८. | चोर बनता और |
| गोपाल | ५. | ग्वाल का | बहून् ॥ | १०. | बहुत से बालकों को |
| वेषधृक् । | ६. | वेष धारण करके | | | |

श्लोकार्थ—मय दानव का पुत्र महान् मायावी व्योमासुर ग्वाल का वेषधारण करके बहुधा चोर बनता और भेड़ बने हुये बहुत से बालकों को चुराकर छिपा आता ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**गिरिदर्यां विनिक्षिप्य नीतं नीतं महासुरः ।**
**शिलया पिदधे द्वारं चतुःपञ्चावशेषिताः ॥३०॥**

पदच्छेद— गिरिदर्याम् विनिक्षिप्य नीतम् नीतम् महाअसुरः ।
शिलया पिदधे द्वारम् चतुः पञ्च अवशेषिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गिरि | ४. | पहाड़ की | शिलया | ७. | चट्टान से (उसके) |
| दर्याम् | ५. | गुफा में | पिदधे | ९. | बन्दकर देता (अतः) |
| विनिक्षिप्य | ६. | छोड़ देता (और) | द्वारम् | ८. | दरवाजे को |
| नीतम् | २. | (बालकों को) ले | चतुः | १०. | उनमें से चार |
| नीतम् | ३. | ले जाकर | पञ्च | ११. | पाँच ही |
| महाअसुरः । | १. | वह महान् असुर | अवशेषिताः॥ | १२. | शेष रह गये |

श्लोकार्थ—वह महान् असुर बालकों को ले ले जाकर पहाड़ की गुफा में छोड़ देता । और चट्टान से उसके दरवाजे को बन्द कर देता । अतः उनमें से चार पाँच ही शेष रह गये ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**तस्य तत् कर्म विज्ञाय कृष्णः शरणदः सताम् ।**
**गोपान् नयन्तं जग्राह वृकं हरिरिवौजसा ॥३१॥**

पदच्छेद— तस्य तत् कर्म विज्ञाय कृष्णः शरणदः सताम् ।
गोपान् नयन्तम् जग्राह वृकम् हरिः इव ओजसा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तस्य | १. उसका | गोपान् | ८. | ग्वाल वालों को |
| तत् | २. वह | नयन्तम् | ९. | ले जाते हुये (उसे) |
| कर्म | ३. कर्म | जग्राह | ११. | पकड़ लिया |
| विज्ञाय | ४. जानकर | वृकम् | १४. | भेड़िये को (पकड़ लेता है) |
| कृष्णः | ७. श्रीकृष्ण ने | हरिः | १३. | सिंह |
| शरणदः | ६. शरण देने वाले | इव | १२. | जैसे |
| सताम् । | ५. सज्जनों को | ओजसा ॥ | १०. | अपने पराक्रम से |

श्लोकार्थ—उसका वह कर्म जानकर सज्जनों को शरण देने वाले श्रीकृष्ण ने ग्वाल वालों को ले जाते हुये उसे अपने पराक्रम से पकड़ लिया । जैसे सिंह भेड़िये को पकड़ लेता है ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**स निजं रूपमास्थाय गिरीन्द्रसदृशं बली ।**
**इच्छन् विमोक्तुमात्मानं नाशक्नोद् ग्रहणातुरः ॥३२॥**

पदच्छेद— सः निजम् रूपम् आस्थाय गिरीन्द्र सदृशम् बली ।
इच्छन् विमोक्तुम् आत्मानम् न अशक्नोत् ग्रहण आतुरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सः | ३. वह | इच्छन् | १२. | चाहता हुआ भी |
| निजम् | ७. अपना | विमोक्तुम् | ११. | छुड़ाने के लिये |
| रूपम् | ८. रूप | आत्मानम् | १०. | अपने को |
| आस्थाय | ९. बनाकर | न | १३. | नहीं |
| गिरीन्द्र | ५. बड़े पहाड़ के | अशक्नोत् | १४. | छुड़ा सका |
| सदृशम् | ६. समान | ग्रहण | १. | पकड़ने से |
| बली । | ४. बलवान् (दैत्य) | आतुरः ॥ | २. | व्याकुल |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण के पकड़ने से व्याकुल वह बलवान् दैत्य बड़े पहाड़ के समान अपना रूप बनाकर अपने को छुड़ाने के लिये चाहता हुआ भी नहीं छुड़ा सका ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तं निगृह्याच्युतो दोर्भ्यां पातयित्वा महीतले ।**
**पश्यतां दिवि देवानां पशुमारममारयत् ।।३३।।**

पदच्छेद— तम् निगृह्य अच्युतः दोर्भ्याम् पातयित्वा महीतले ।
पश्यताम् दिवि देवानाम् पशुमारम् अमारयत् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ३. | उसे | पश्यताम् | ९. | देखते ही देखते |
| निगृह्य | ४. | पकड़ कर | दिवि | ७. | आकाश में |
| अच्युतः | १. | श्रीकृष्ण ने | देवानाम् | ८. | देवताओं के |
| दोर्भ्याम् | २. | दोनों हाथों से | पशुमारम् | १०. | पशु की भाँति मार-मार कर |
| पातयित्वा | ६. | गिरा दिया (और) | अमारयत् ।। | ११. | मार दिया |
| महीतले । | ५. | भूमि पर | | | |

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण ने दोनों हाथों से उसे पकड़ कर भूमि पर गिरा दिया और आकाश में देवताओं के देखते ही देखते पशु की भाँति मार-मार कर मार दिया ।।

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**गुहापिधानं निर्भिद्य गोपान् निःसार्य कृच्छ्रतः ।**
**स्तूयमानः सुरैर्गोपैः प्रविवेश स्वगोकुलम् ।।३४।।**

पदच्छेद— गुहा पिधानम् निर्भिद्य गोपान् निःसार्य कृच्छ्रतः ।
स्तूयमानः सुरैः गोपैः प्रविवेश स्व गोकुलम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुहा | १. | गुफा के | स्तूयमानः | ९. | स्तुति किये जाते हुये |
| पिधानम् | २. | ढक्कन को | सुरैः | ७. | देवताओं (एवम्) |
| निर्भिद्य | ३. | तोड़ कर | गोपैः | ८. | ग्वाल-वालों द्वारा |
| गोपान् | ५. | ग्वाल-वालों को | प्रविवेश | १२. | चले आये |
| निःसार्य | ६. | निकाल कर | स्व | १०. | अपने |
| कृच्छ्रतः । | ४. | संकट पूर्ण स्थान से | गोकुलम् ।। | ११. | गोकुल में |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण गुफा के ढक्कन को तोड़ कर संकट पूर्ण स्थान से ग्वाल-वालों को निकाल कर देवताओं एवम् ग्वाल-वालों द्वारा स्तुति किये जाते हुये अपने गोकुल में चले आये ।।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
व्योमासुरवधो नाम सप्तत्रिंशः अध्यायः ।।३७।।

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## अष्टात्रिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अक्रूरोऽपि च तां रात्रिं मधुपुर्यां महामतिः ।
उषित्वा रथमास्थाय प्रययौ नन्दगोकुलम् ॥१॥

पदच्छेद— अक्रूरः अपि च ताम् रात्रिम् मधुपुर्याम् महामतिः ।
उषित्वा रथम् आस्थाय प्रययौ नन्द गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अक्रूरः | २. | अक्रूर जी | उषित्वा | ७. | बिता कर |
| अपि च | ३. | भी | रथम् | ८. | रथ पर |
| ताम् | ४. | उस | आस्थाय | ९. | सवार होकर |
| रात्रिम् | ५. | रात को | प्रययौ | १२. | चल पड़े |
| मधुपुर्याम् | ६. | मधुपुरी में | नन्द | १०. | नन्द जी के |
| महामतिः । | १. | महाबुद्धिमान् | गोकुलम् ॥ | ११. | गोकुल की ओर |

श्लोकार्थ—महाबुद्धिमान् अक्रूर जी भी उस रात को मधुपुरी में ही बिता कर रथ पर सवार होकर नन्द जी के गोकुल की ओर चल पड़े ॥

### द्वितीयः श्लोकः

गच्छन् पथि महाभागो भगवत्यम्बुजेक्षणे ।
भक्तिं परामुपगत एवमेतदचिन्तयत् ॥२॥

पदच्छेद— गच्छन् पथि महाभागः भगवति अम्बुज ईक्षणे ।
भक्तिम् पराम् उपगतः एवम् एतत् अचिन्तयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गच्छन् | २. | जाते हुये | भक्तिम् | ८. | भक्ति |
| पथि | १. | मार्ग में | पराम् | ७. | परम |
| महाभागः | ३. | महाभाग्यवान् अक्रूर जी | उपगतः | ९. | प्राप्त करके |
| भगवति | ६. | भगवान् में | एवम् | १०. | इस प्रकार |
| अम्बुज | ४. | कमल | एतत् | ११. | यह |
| ईक्षणे । | ५. | नयन | अचिन्तयत् ॥ | १२. | सोचने लगे |

श्लोकार्थ—मार्ग में जाते हुये महाभाग्यवान् अक्रूर जी कमल नयन भगवान् में परम भक्ति प्राप्त करके इस प्रकार यह सोचने लगे ॥

## तृतीयः श्लोकः

**किं मयाऽऽचरितं भद्रं किं तप्तं परमं तपः।**
**किं वाथाप्यर्हते दत्तं यद् द्रक्ष्याम्यद्य केशवम् ॥३॥**

पदच्छेद— किम् मया आचरितम् भद्रम् किम् तप्तम् परमम् तपः।
किम् वा अथापि अर्हते दत्तम् यद् द्रक्ष्यामि अद्य केशवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किम मया | १. मैंने क्या | किम् वा | ८. अथवा |
| आचरितम् | २. अच्छा कार्य किया है | अथापि | ९. कौन सा |
| भद्रम् | ४. शुभ कर्म किया है | अर्हते | १०. सत्पात्र को |
| किम् | ३. कौन सा | दत्तम् | ११. दान दिया है |
| तप्तम् | ७. किया है | यद् | १२. जो |
| परमम् | ५. श्रेष्ठ | द्रक्ष्यामि | १४. देखूंगा |
| तपः। | ६. तप | अद्य केशवम् ॥ | १३. आज भगवान् को |

श्लोकार्थ—मैंने क्या अच्छा कार्य किया है। कौन सा शुभकर्म किया है। वा श्रेष्ठ तप किया है। अथवा कौन सा सत्पात्र को दान दिया है। जो आज भगवान् को देखूंगा।

## चतुर्थः श्लोकः

**ममैतद् दुर्लभं मन्य उत्तमश्लोकदर्शनम्।**
**विषयात्मनो यथा ब्रह्मकीर्तनं शूद्र जन्मनः ॥४॥**

पदच्छेद – मम एतद् दुलर्भम् मन्ये उत्तम श्लोक दर्शनम्।
विषय आत्मनः यथा ब्रह्म कीर्तनम् शूद्र जन्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मम | २. मुझ | विषय | ३. विषयासक्त |
| एतद् | ५. यह | आत्मनः | ४. आत्मा के लिए |
| दुलर्भम् | ८. दुर्लभ है | यथा | ९. जैसे |
| मन्ये | १. मैं मानता हूँ कि | ब्रह्म कीर्तनम् | १२. वेदों का कीर्तन दुर्लभ होता है |
| उत्तमश्लोक | ६. भगवान् का | शूद्र | १०. शूद्र कुल में |
| दर्शनम्। | ७. दर्शन | जन्मनः ॥ | ११. उत्पन्न मनुष्य के लिये |

श्लोकार्थ—मैं मानता हूँ कि मुझ विषयासक्त आत्मा के लिये यह भगवान् का दर्शन दुर्लभ है। जैसे शूद्र कुल में उत्पन्न मनुष्य के लिये वेदों का कीर्तन दुर्लभ होता है ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**मैवं ममाधमस्यापि स्यादेवाच्युतदर्शनम् ।**
**ह्रियमाणः कालनद्या क्वचित्तरति कश्चन ॥५॥**

पदच्छेद— मा एवम् मम अधमस्य अपि स्यात् एव अच्युत दर्शनम् ।
ह्रियमाणः काल नद्या क्वचित् तरति कश्चन ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मा एवम् | १. | ऐसा नहीं | ह्रियमाणः | ६. | बहता हुआ |
| मम अधमस्य | २. | मुझ अधम को | काल | ७. | समय के |
| अपि | ३. | भी | नद्या | ८. | प्रवाह में |
| स्यात् एव | ६. | होगा ही | क्वचित् | ११. | कहीं (संसार सागर को) |
| अच्युत | ४. | भगवान् का | तरति | १२. | पार कर लेता है |
| दर्शनम् । | ५. | दर्शन | कश्चन ॥ | १०. | कोई |

श्लोकार्थ—ऐसा नहीं, मुझ अधम को भी भगवान् का दर्शन होगा ही । समय के प्रवाह में बहता हुआ कोई कहीं संसार सागर को पार कर लेता है ।

## षष्ठः श्लोकः

**ममाद्यामङ्गलं नष्टं फलवांश्चैव मे भवः ।**
**यन्नमस्ये भगवतो योगिध्येयाङ्घ्रिपङ्कजम् ॥६॥**

पदच्छेद-- मम अद्य अमङ्गलम् नष्टम् फलवान् च एव मे भवः ।
यत् नमस्ये भगवतः योगि ध्येय अङ्घ्रि पंकजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मम | २. | मेरा | यत् | ८. | जो मैं |
| अद्य | १. | आज | नमस्ये | १४. | नमस्कार करूँगा |
| अमङ्गलम् | ३. | अशुभ | भगवतः | ११. | भगवान् के |
| नष्टम् | ४. | नष्ट हो गया | योगि | ९. | योगियों के द्वारा |
| फलवान् | ७. | सफल हो गया | ध्येय | १०. | ध्यान करने योग्य |
| च एव | ५. | और | अङ्घ्रि | १२. | चरण |
| मे भवः । | ६. | मेरा जन्म भी | पंकजम् ॥ | १३. | कमल को |

श्लोकार्थ—आज मेरा अशुभ नष्ट हो गया । और मेरा जन्म भी सफल हो गया । जो मैं योगियों के द्वारा ध्यान करने योग्य भगवान् के चरण कमल को नमस्कार करूँगा ॥

## सप्तमः श्लोकः

**कंसो बताद्याकृत मेऽत्यनुग्रहं द्रक्ष्येऽङ्घ्रिपद्मं प्रहितोऽमुना हरेः ।**
**कृतावतारस्य दुरत्ययं तमः पूर्वेऽतरन् यन्नखमण्डलत्विषा ॥७॥**

पदच्छेद— कंसः बत अद्य अकृत मे अति अनुग्रहम् द्रक्ष्ये अङ्घ्रिपद्मम् प्रहितः अमुना हरेः ।
कृत अवतारस्य दुरत्ययम् तमः पूर्वे अतरन् यत् नख मण्डल त्विषा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कंसः बत | १. अहा ! कंस ने | कृत | ८. धारण किये हुये |
| अद्य | २. आज | अवतारस्य | ७. पृथ्वी पर अवतार |
| अकृत | ५. की (क्योंकि) | दुरत्ययम् | १६. अपार |
| मे अति | ३. मेरे ऊपर बड़ी | तमः | १७. अन्धकार को |
| अनुग्रहम् | ४. कृपा | पूर्वे अतरन् | १८. पहले के ऋषि महर्षि पार कर चुके हैं |
| द्रक्ष्ये | ११. दर्शन करूँगा | यत् | १२. जिसके |
| अङ्घ्रिपद्मम् | १०. चरण कमल का | नख | १३. नख |
| प्रहितः अमुना | ६. उसी के भेजने से | मण्डल | १४. मण्डल की |
| हरेः । | ९. भगवान् श्रीकृष्ण के | त्विषा ॥ | १५. कान्ति से |

श्लोकार्थ—अहा ! कंस ने आज मेरे ऊपर बड़ी कृपा की । क्योंकि उसी के भेजने से पृथ्वी पर अवतार धारण किये हुये भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमल का दर्शन करूँगा । जिसके नख मण्डल की कान्ति से अपार अन्धकार को पहले के ऋषि-महर्षि पार कर चुके हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

**यदर्चितं ब्रह्मभवादिभिः सुरैः श्रिया च देव्या मुनिभिः ससात्वतैः ।**
**गोचारणायानुचरैश्चरद्वने यद् गोपिकानां कुचकुङ्कुमाङ्कितम् ॥८॥**

पदच्छेद— यत् अर्चितम् ब्रह्मभव आदिभिः सुरैः श्रिया च देव्या मुनिभिः स सात्वतैः ।
गोचारणाय अनुचरैः चरत् वने यत् गोपिकानाम् कुचकुङ्कुम अङ्कितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् | ६. जिनके चरणों की | गोचारणाय | १२. गौओं को चराने के लिये |
| अर्चितम् | ७. अर्चना करते हैं (और) | अनुचरैः | १३ ग्वाल-वालों के साथ |
| ब्रह्मभव आदिभिः | १. ब्रह्मा शंकर आदि | चरत् वने | १४. वन में विचरते हैं |
| सुरैः | २. देवता | यत् | ८. जो (चरण) |
| श्रिया च देव्या | ३. लक्ष्मीदेवी और | गोपिकानाम् | ९. गोपियों के |
| मुनिभिः | ५. मुनिगण | कुचकुङ्कुम | १०. स्तनों पर लगे हुये कुङ्कुमों से |
| स सात्वतैः । | ४. भक्तों के साथ | अङ्कितम् ॥ | ११. रंग जाते हैं (वे ही चरण) |

श्लोकार्थ—ब्रह्मा, शंकर आदि देवता, लक्ष्मीदेवी और भक्तों के साथ मुनिगण जिनके चरणों की अर्चना करते हैं और जो चरण गोपियों के स्तनों पर लगे हुये कुङ्कुमों से रंग जाते हैं वे ही चरण गौओं को चराने के लिये ग्वाल-वालों के साथ वन में विचरते हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**द्रक्ष्यामि नूनं सुकपोलनासिकं स्मितावलोकारुणकञ्जलोचनम् ।**
**मुखं मुकुन्दस्य गुडालकावृतं प्रदक्षिणं मे प्रचरन्ति वै मृगाः ॥९॥**

पदच्छेद— द्रक्ष्यामि नूनम् सुकपोल नासिकम् स्मित अवलोक अरुण कञ्ज लोचनम् ।
मुखम् मुकुन्दस्य गुड अलक आवृतम् प्रदक्षिणम् मे प्रचरन्ति वै मृगाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| द्रक्ष्यामि | १२. | देखूंगा | मुखम् | १०. | मुख को |
| नूनम् | ११. | निश्चय ही मैं | मुकुन्दस्य | ९. | भगवान् श्रीकृष्ण के |
| सुकपोल | १. | सुन्दर कपोल | गुड अलक | ७. | घुघराले बालों से |
| नासिकम् | २. | नासिका | आवृतम् | ८. | ढके हुये |
| स्मित | ३. | मुस्कराहट | प्रदक्षिणम् मे | १४. | मेरी दायीं ओर से |
| अवलोक | ४. | चितवन ओर | प्रचरन्ति | १६. | निकल रहे हैं |
| अरुण कञ्ज | ५. | लाल कमल के समान | वै | १३. | क्योंकि |
| लोचनम् । | ६. | नेत्रों वाले (तथा) | मृगाः ॥ | १५. | हरिण |

श्लोकार्थ—सुन्दर कपोल, नासिका, मुस्कराहट, चितवन और लाल कमल के समान नेत्रों वाले तथा घुंघराले बालों से ढके हुये भगवान श्रीकृष्ण के मुख को निश्चय ही मैं देखूंगा। क्योंकि हरिण मेरी दायीं ओर से निकल रहे हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**अप्यद्य विष्णोर्मनुजत्वमीयुषो भारावताराय भुवो निजेच्छया ।**
**लावण्यधाम्नो भवितोपलम्भनं मह्यं न न स्यात् फलमञ्जसा दृशः ॥१०॥**

पदच्छेद— अपि अद्य विष्णोः मनुजत्वम् ईयुषः भार अवतारस्य भुवः निज इच्छया ।
लावण्य धाम्नः भविता उपलम्भनम् मह्यम् न न स्यात् फलम् अञ्जसा दृशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | १. | और भी | लावण्य धाम्नः | ७. | सौन्दर्य के धाम मूर्तिमान् निधि |
| अद्य | ९. | आज | भविता | १२. | होगा |
| विष्णोः | ८. | भगवान् विष्णु का | उपलम्भनम् | ११. | दर्शन |
| मनुजत्वम् | ५. | मनुष्यावतार | मह्यम् | १०. | मुझे |
| ईयुषः | ६. | धारण किये हुये (तथा) | न | १५. | नहीं मिलेगा |
| भार अवतारस्य | ३. | भार उतारने के लिये | न स्यात् | १६. | ऐसा नहीं अवश्य मिलेगा |
| भुवः | २. | पृथ्वी का | फलम् | १४. | फल |
| निज इच्छया । | ४. | अपनी इच्छा से | अञ्जसा दृशः ॥ | १३. | सहज ही में आँखों का |

श्लोकार्थ—और भी पृथ्वी का भार उतारने के लिये अपनी इच्छा से मनुष्यावतार धारण किये हुये तथा सौन्दर्य के धाम, मूर्तिमान् निधि, भगवान् विष्णु का आज मुझे दर्शन होगा। सहज ही में आँखों का फल नहीं मिलेगा ऐसा नहीं अवश्य मिलेगा ॥

## एकादशः श्लोकः

**य ईक्षिताहंरहितोऽप्यसत्सतोः स्वतेजसापास्ततमोभिदाभ्रमः।**
**स्वमाययाऽऽत्मन् रचितैस्तदीक्षया प्राणाक्षधीभिः सदनेष्वभीयते ॥११॥**

पदच्छेद— यः ईक्षिता अहम् रहितः अपि असत्सतोः स्वतेजसा अपास्त तमोभिदा भ्रमः।
स्वमायया आत्मन् रचितैः तत् ईक्षया प्राण अक्षधीभिः सदनेषु अभिईयते ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यः | १. | जो भगवान् | स्वमायया | १०. | अपनी योग माया से |
| ईक्षिता | ३. | द्रष्टा होने पर | आत्मन् | ११. | अपने आप में |
| अहम् रहितः अपि | ४. | भी अहंकार से रहित | रचितैः | १३. | जीवों की रचना करते हैं वे |
| असत्सतोः | २. | कार्य कारण रूप जगत् के | तत् ईक्षया | ९. | और जो अपने संकल्प से ही |
| स्वतेजसा | ५. | अपने तेज से | प्राण अक्षधीभिः | १२. | प्राण इन्द्रिय और बुद्धि के साथ |
| अपास्त | ८. | मिटा देने वाले हैं | सदनेषु | १४. | गोपियों के घरों में |
| तमोभिदा | ६. | अज्ञान से होने वाले भेद के | अभि | १५. | लीला करते हुये |
| भ्रमः। | ७. | भ्रम को | ईयते ॥ | १६. | प्रतीत होते हैं |

श्लोकार्थ—जो भगवान् कार्य-कारण रूप जगत् के द्रष्टा होने पर भी अहंकार से रहित अपने तेज से अज्ञान से होने वाले भेद के भ्रम को मिटा देने वाले हैं और जो अपने संकल्प से ही अपनी योग माया से अपने आप में प्राण, इन्द्रिय और बुद्धि के साथ जीवों की रचना करते हैं वे गोपियों के घरों में लीला करते हुये प्रतीत होते हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**यस्याखिलामीवहभिः सुमङ्गलैर्वाचो विमिश्रा गुणकर्मजन्मभिः।**
**प्राणन्ति शुम्भन्ति पुनन्ति वै जगद् यास्तद्विरक्ताः शवशोभना मताः ॥१२॥**

पदच्छेद— यस्य अखिल अमीवहभिः सुमङ्गलैः वाचः विमिश्राः गुण कर्म जन्मभिः।
प्राणन्ति शुम्भन्ति पुनन्ति वै जगत् याः तत् विरक्ताः शवशोभनाः मताः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यस्य अखिल | १. | जिनके समस्त | प्राणन्ति | ९. | प्राण से युक्त |
| अमीवहभिः | २. | पापों के नाशक | शुम्भन्ति | १०. | शोभित तथा |
| सुमङ्गलैः | ३. | परम मङ्गलमय | पुनन्ति | ११. | पवित्र करती है (किन्तु) |
| वाचः | ७. | वाणी | वै जगत् | ८. | निश्चित रूप से संसार को |
| विमिश्राः | ६. | युक्त होने पर | याः तत् विरक्ताः | १२. | जो वाणी गुणों के गायन से रहित है |
| गुण कर्म | ४. | गुण-कर्म और | शव | १३. | वह शव को ही |
| जन्मभिः। | ५. | जन्म की (लीलाओं से) | शोभनाः मताः ॥ | १४. | शोभित करने वाली हैं |

श्लोकार्थ—जिनके समस्त पापों के नाशक परम मङ्गलमय गुण-कर्म और जन्म की लीलाओं से युक्त होने पर वाणी निश्चित रूप से संसार को प्राण से युक्त, शोभित तथा पवित्र करती है। किन्तु जो वाणी गुणों के गायन से रहित है, वह शव को ही शोभित करने वाली है ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**स चावतीर्णः किल सात्वतान्वये स्वसेतुपालामरवर्यशर्मकृत्।**
**यशो वितन्वन् व्रज आस्त ईश्वरो गायन्ति देवा यदशेषमङ्गलम् ॥१३॥**

पदच्छेद— स: च अवतीर्णः किल सात्वत अन्वये स्व सेतुपाल अमर वर्य शर्मकृत् ।
यशः वितन्वन् व्रजे आस्ते ईश्वरः गायन्ति देवाः यत् अशेष मङ्गलम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः च | १. वे ही भगवान् | यशः वितन्वन् | ९. अपने यश का विस्तार करते हुये |
| अवतीर्णः किल | ३. अवतीर्ण हुये हैं | व्रजे आस्ते | १०. व्रज में निवास कर रहे हैं |
| सात्वत अन्वये | २. यदुवंश में | ईश्वरः | ८. ऐश्वर्यशाली भगवान् |
| स्व | ४. अपनी बताई | गायन्ति | १४. गायन करते हैं |
| सेतुपाल | ५. मर्यादा का पालन करने वाले | देवाः | १३. देवता लोग |
| अमर वर्य | ६. श्रेष्ठ देवताओं का | यत् अशेष | ११. जिनके सम्पूर्ण |
| शर्मकृत् । | ७. कल्याण करने वाले | मङ्गलम् ।। | १२. मङ्गलमय यश का |

श्लोकार्थ—वे ही भगवान् यदुवंश में अवतीर्ण हुये हैं। अपनी बताई मर्यादा का पालन करने वाले श्रेष्ठ देवताओं का कल्याण करने वाले ऐश्वर्यशाली भगवान् अपने यश का विस्तार करते हुये व्रज में निवास करते हैं। जिनके सम्पूर्ण मङ्गलमय यश का देवता लोग गायन करते हैं ।।

## चतुर्दशः श्लोकः

**तं त्वद्य नूनं महतां गतिं गुरुं त्रैलोक्यकान्तं दृशिमन्महोत्सवम्।**
**रूपं दधानं श्रिय ईप्सितास्पदं द्रक्ष्ये ममासन्नुषसः सुदर्शनाः ॥१४॥**

पदच्छेद— तम् तु अद्य नूनम् महताम् गतिम् गुरुम् त्रैलोक्यकान्तम् दृशिमत् महोत्सवम् ।
रूपम् दधानम् श्रियः ईप्सित आस्पदम् द्रक्ष्ये मम आसन् उषसः सुदर्शनाः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् तु अद्य | ९. आज मैं उन्हें | रूप दधानम् | ८. रूप धारण किये हुये |
| नूनम् | १०. निश्चय ही | श्रियः | ६. तथा लक्ष्मी के लिये |
| महताम्गतिम् | १. महापुरुषों के आश्रय | ईप्सित आस्पदम् | ७. अत्यन्त अभीष्ट |
| गुरुम् | २. सबके गुरू | द्रक्ष्ये मम | ११. देखूंगा (क्योंकि) मुझे |
| त्रैलोक्यकान्तम् | ३. तीनों लोकों के स्वामी | आसन् | १४. रहे हैं |
| दृशिमत् | ४. नेत्र वालों के लिये | उषसः | १२ प्रातःकाल से ही |
| महोत्सवम् । | ५. महान् आनन्द स्वरूप | सुदर्शनाः ।। | १३. अच्छे सगुन दीख |

श्लोकार्थ—महापुरुषों के आश्रय, सबके गुरु, तीनों लोकों के स्वामी, नेत्र वालों के लिये महान् आनन्द स्वरूप तथा लक्ष्मी के लिये अत्यन्त अभीष्ट रूप धारण किये हुये, आज मैं उन्हें निश्चय ही देखूंगा। क्योंकि मुझे प्रातःकाल से ही अच्छे सगुन दीख रहे हैं ।।

## पञ्चदशः श्लोकः

**अथावरूढः सपदीशयो रथात् प्रधानपुंसोश्चरणं स्वलब्धये ।**
**धिया धृतं योगिभिरप्यहं ध्रुवं नमस्य आभ्यां च सखीन् वनौकसः ॥१५॥**

पदच्छेद— अथ अवरूढःसपदि ईशयोः रथात् प्रधान पुंसोः चरणम् स्वलब्धये ।
धिया धृतम् योगिभिः अपि अहम् ध्रुवम् नमस्ये आभ्याम् च सखीन् वनओकसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. तदनन्तर | धिया धृतम् | ८. केवल मन में धारण किये जाने वाले |
| अवरूढः सपदि | ३. तुरन्त उतर कर | योगिभिः अपि | ७. योगियों के द्वारा भी |
| ईशयोः | ६. स्वामी (बलराम और श्रीकृष्ण के) | अहम् | १०. मैं |
| रथात् | २. रथ से | ध्रुवम् नमस्ये | ११. निश्चित ही नमस्कार करूंगा |
| प्रधानपुंसोः | ५. सर्वश्रेष्ठ पुरुष | आभ्याम् च | १२. और उन दोनों के साथ |
| चरणम् | ९. चरणों को | सखीन् | १४. सखाओं को भी नमस्कार करूंगा |
| स्वलब्धये । | ४. अपने लाभ के लिये | वनओकसः ॥ | १३. उनके वनवासी |

श्लोकार्थ—तदनन्तर रथ से तुरन्त उतर कर अपने लाभ के लिये सर्वश्रेष्ठ पुरुष स्वामी बलराम और श्रीकृष्ण के योगियों के द्वारा भी केवल मन से धारण किये जाने वाले चरणों को मैं निश्चित ही नमस्कार करूंगा । और उन दोनों के साथ उनके वनवासी सखाओं को भी नमस्कार करूंगा ॥

## षोडशः श्लोकः

**अप्यङ्घ्रिमूले पतितस्य मे विभुः शिरस्यधास्यन्निजहस्तपङ्कजम् ।**
**दत्ताभयं कालभुजङ्गरंहसा प्रोद्वेजितानां शरणैषिणां नृणाम् ॥१६॥**

पदच्छेद— अपि अङ्घ्रिमूले पतितस्य मे विभुः शिरसि अधास्यत् निज हस्त पङ्कजम् ।
दत्त अभयम् कालभुजङ्ग रंहसा प्रउद्वेजितानाम् शरण एषिणाम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अपि | १. क्या | दत्त | १४. देते हैं |
| अङ्घ्रिमूले | २. चरणों में | अभयम् | १३. अभय दान |
| पतितस्य | ३. गिरे हुये | कालभुजङ्ग | ८. कालरूपी सर्प के |
| मे विभुः शिरसि | ४. मेरे सिर पर भगवान् | रंहसा | ९. भय से |
| अधास्यत् | ७. रख देंगे | प्रउद्वेजितानाम् | १०. अत्यन्त घबरा कर आपकी |
| निजहस्त | ५. अपना कर | शरण एषिणाम् | ११. शरण चाहने वाले |
| पङ्कजम् । | ६. कमल | नृणाम् ॥ | १२. मनुष्यों को वे |

श्लोकार्थ—क्या चरणों में गिरे हुये मेरे सिर पर भगवान् श्रीकृष्ण अपना कर कमल रख देंगे ! कालरूपी सर्प के भय से अत्यन्त घबरा कर उनकी शरण चाहने वाले मनुष्यों को वे अभयदान देते हैं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**समर्हणं यत्र निधाय कौशिकस्तथा बलिश्चाप जगत्त्रयेन्द्रताम् ।**
**यद् वा विहारे व्रजयोषितां श्रमं स्पर्शेन सौगन्धिकगन्ध्यपानुदत् ॥१७॥**

पदच्छेद— सम् अर्हणम यत्र निधाय कौशिकः तथाबलिः च आप जगत् त्रय इन्द्रताम् ।
यत् वा विहारे व्रजयोषिताम् श्रमम् स्पर्शेन सौगन्धिक गन्धि अपानुदत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सम् अर्हणम् | २. | विधिवत् पूजन | यत् | ११. | जिन कर कमलों से |
| यत्र | १. | जिनका | वा | ६. | अथवा |
| निधाय | ३. | करके | विहारे | १२. | विहार के समय |
| कौशिकः | ४. | इन्द्र | व्रजयोषिताम् | १४. | व्रज की रमणियों की |
| तथा बलिः च | ५. | तथा बलि ने | श्रमम् | १५. | थकान |
| आप | ८. | प्राप्त कर लिया था | स्पर्शेन | १३. | स्पर्श के द्वारा |
| जगत् त्रय | ६. | तीनों लोकों का | सौगन्धिक गन्धि | १०. | कमल की सी सुगन्ध वाले |
| इन्द्रताम् । | ७. | प्रभुत्व | अपानुदत् ॥ | १६. | मिटा दी थी |

श्लोकार्थ—जिनका विधिवत् पूजन करके इन्द्र तथा बलि ने तीनों लोकों का प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था। अथवा कमल की सी सुगन्ध वाले जिन कर कमलों से विहार के समय स्पर्श के द्वारा व्रज रमणियों की थकान मिटा दी थी। क्या उन्हें मेरे सिर पर रख देंगे ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**न मय्युपैष्यत्यरिबुद्धिमच्युतः कंसस्य दूतः प्रहितोऽपि विश्वदृक् ।**
**योऽन्तर्बहिश्चेतस एतदीहितं क्षेत्रज्ञ ईक्षत्यमलेन चक्षुषा ॥१८॥**

पदच्छेद— न मयि उपैष्यति अरिबुद्धिम् अच्युतः कंसस्य दूतः प्रहितः अपि विश्वदृक् ।
यः अन्तः बहिः चेतसः एतत् ईहितम् क्षेत्रज्ञः ईक्षति अमलेन चक्षुषा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | यः | ११. | वे |
| मयि | ३. | मुझ पर | अन्तः बहिः | १०. | बाहर और भीतर रहने वाले हैं |
| उपैष्यति | ७. | करेंगे (क्योंकि वे) | चेतसः | ६. | चित्त के |
| अरिबुद्धिम् | ५. | शत्रु का बुद्धि-भाव | एतत् ईहितम् | १५ | इस चेष्टा को |
| अच्युतः | ४. | भगवान् | क्षेत्रज्ञः | १२. | क्षेत्रज्ञ रूप से स्थित होकर |
| कंसस्य | १. | कंस का | ईक्षति | १६. | देखते रहते हैं |
| दूतःप्रहितःअपि | २. | भेजा दूत होने पर भी | अमलेन | १३. | निर्मल |
| विश्वदृक् । | ८. | संसार को देखने वाले (एवं) | चक्षुषा ॥ | १४. | दृष्टि से |

श्लोकार्थ—कंस का भेजा हुआ दूत होने पर भी मुझ पर भगवान् शत्रु का बुद्धि-भाव नहीं करेंगे। क्योंकि वे संसार को देखने वाले एवं चित्त के बाहर और भीतर रहने वाले हैं। वे क्षेत्रज्ञ रूप से स्थित होकर निर्मल दृष्टि से इस चेष्टा को देखते रहते हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**अप्यङ्घ्रिमूलेऽवहितं कृताञ्जलिं मामीक्षिता सस्मितमार्द्रया दृशा ।**
**सपद्यपध्वस्तसमस्तकिल्बिषो वोढा मुदं वीतविशङ्क ऊर्जिताम् ॥१६॥**

पदच्छेद— अपि अङ्घ्रिमूले अवहितम् कृतअञ्जलिम् माम् ईक्षिता सस्मितम् आर्द्रया दृशा ।
सपदि अपध्वस्त समस्त किल्बिषः वोढा मुदम् वीत विशङ्कः ऊर्जिताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | १. | फिर | सपदि | ६. | तत्क्षक्ष |
| अङ्घ्रिमूले | २. | चरण तल में | अपध्वस्त | १२. | नष्ट करके |
| अवहितम् | ३. | सावधानो से | समस्त | १०. | सारे |
| कृतअञ्जलिम् | ४. | हाथ जोड़कर | किल्बिषः | ११. | पापों को |
| माम् | ५. | मुझे वे | वोढा | १६. | प्राप्त करूंगा |
| ईक्षिता | ८. | देखेंगे (तब मैं) | मुदम् | १५. | आह्लाद को |
| सस्मितम् | ६. | मुसकराते हुये | वीत विशङ्कः | १३. | निःशङ्क होकर |
| आर्द्रया दृशा । | ७. | दयाभरी दृष्टि से | ऊर्जितम् ॥ | १४. | परम |

श्लोकार्थ—फिर चरण तल में सावधानी से हाथ जोड़ कर मुझे वे मुस्कराते हुये दयाभरी दृष्टि से देखेंगे। तब मैं तत्क्षण सारे पापों को नष्ट करके निःशङ्क होकर परम आह्लाद को प्राप्त करूंगा ॥

## विंशः श्लोकः

**सुहृत्तमं ज्ञातिमनन्यदैवतं दोर्भ्यां बृहद्भ्यां परिरप्स्यतेऽथ माम् ।**
**आत्मा हि तीर्थीक्रियते तदैव मे बन्धश्च कर्मात्मक उच्छ्वसित्यतः ॥२०॥**

पदच्छेद— सुहृत्तमम् ज्ञातिम् अनन्य दैवतम् दोर्भ्याम् बृहद्भ्याम् परिरप्स्यते अथ माम् ।
आत्मा हि तीर्थीक्रियते तदा एव मे बन्धः च कर्म आत्मकः उच्छ्वसिति अतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुहृत्तमम् | २. | अत्यन्त हितैषी | आत्माहि | ६. | शरीर निश्चित रूप से |
| ज्ञातिम् अनन्य | ३. | बन्धु उनके सिवाय दूसरे | तीर्थीक्रियते | १०. | तीर्थ बन जायेगा (और) |
| दैवतम् | ४. | आराध्यदेव से रहित | तदा एव मे | ८. | उसी क्षण मेरा |
| दोर्भ्याम् बृहद्भ्याम् | ६. | लम्बी-लम्बी बाँहों से | बन्धः च | १३. | बन्धन |
| परिरप्स्यते | ७ | आलिङ्गन करेंगे | कर्म आत्मकः | १२. | कर्ममय |
| अथ | १. | तदनन्तर | उच्छ्वसिति | १४. | टूट जायेगा |
| माम् । | ५. | मेरा वे | अतः ॥ | ११. | इससे (मेरा) |

श्लोकार्थ—तदनन्तर अत्यन्त हितैषी बन्धु उनके सिवाय दूसरे आराध्यदेव से रहित मेरा वे लम्बी-लम्बी बाँहों से आलिङ्गन करेंगे। उसी क्षण मेरा शरीर निश्चित रूप से तीर्थ बन जायेगा। और इससे मेरा कर्ममय बन्धन टूट जायेगा ॥

## एकविंशः श्लोकः

**लब्धाङ्गसङ्गं प्रणतं कृताञ्जलिं मां वक्ष्यतेऽक्रूर ततेत्युरुश्रवाः ।**
**तदा वयं जन्मभृतो महीयसा नैवादृतो यो धिगमुष्य जन्म तत् ॥२१॥**

पदच्छेद— लब्ध अङ्ग सङ्गम् प्रणतम् कृत अञ्जलिम् माम् वक्ष्यते अक्रूर तत इति उरुश्रवाः ।
तदा वयम् जन्मभृतः महीयसा न एव आदृतः यः धिक् अमुष्य जन्म तत् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लब्ध | ३. | पाकर | तदा वयम् | ९. | तब हमारा |
| अङ्ग सङ्गम् | २. | अङ्गों का स्पर्श | जन्मभृतः | १०. | जन्म सफल होगा |
| प्रणतम् | ४. | सिर झुकाये हुये | महीयसा | ११. | भगवान् ने |
| कृत अञ्जलिम् माम् | ५. | हाथ जोड़े हुये मुझे | न एव | १३. | नहीं दिया |
| वक्ष्यते | ८. | कहेंगे | आदृतः यः | १२. | जिसे आदर |
| अक्रूर तत | ६. | चाचा अक्रूर | धिक् | १६. | धिक्कार है |
| इति | ७. | इस प्रकार | अमुष्य | १४. | उसके |
| उरुश्रवाः । | १. | महान् कीर्ति वाले भगवान् के | जन्म तत् ।। | १५. | उस जन्म को |

श्लोकार्थ—महान् कीर्ति वाले भगवान् के अङ्गों का स्पर्श पाकर सिर झुकाये हुये हाथ जोड़े हुये, मुझे चाचा अक्रूर इस प्रकार कहेंगे । तब हमारा जन्म सफल होगा । भगवान् ने जिसे आदर नहीं दिया, उसके उस जन्म को धिक्कार है ।।

## द्वाविंशः श्लोकः

**न तस्य कश्चिद् दयितः सुहृत्तमो न चाप्रियो द्वेष्य उपेक्ष्य एव वा ।**
**तथापि भक्तान् भजते यथा तथा सुरद्रुमो यद्वदुपाश्रितोऽर्थदः ॥२२॥**

पदच्छेद— न तस्य कश्चित् दयितः सुहृत्तमः न च अप्रियः द्वेष्यः एव वा ।
तथापि भक्तान् भजते यथा तथा सुरद्रुमः यद्वत् उपाश्रितः अर्थदः ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न तस्य | १. | नहीं तो उनका | तथापि | ९. | तो भी |
| कश्चित् दयितः | २. | कोई प्रिय | भक्तान् | १३. | भक्तों को |
| सुहृत्तमः | ३. | बन्धु है | भजते | १५. | भजते हैं |
| न च | ४. | और न | यथा | १६. | जैसे (भक्त उन्हें भजते हैं) |
| अप्रियः | ५. | अप्रिय | तथा | १४. | वैसे ही |
| द्वेष्यः | ६. | शत्रु ही है | सुरद्रुमः यद्वत् | १२. | कल्प वृक्ष के समान वे |
| उपेक्ष्यः एव | ८. | उपेक्षा करने योग्य भी नहीं है | उपाश्रितः | १०. | आश्रय लेने वालों की |
| वा । | ७. | अथवा कोई | अर्थदः ।। | ११. | कामना पूर्ण करने वाले हैं |

श्लोकार्थ—न तो उनका कोई प्रिय बन्धु है । और न अप्रिय शत्रु ही है । अथवा कोई उपेक्षा करने योग्य भी नहीं है । तो भी आश्रय लेने वालों की कामना पूर्ण करने वाले हैं । कल्प वृक्ष के समान भक्तों को वे वैसे ही भजते हैं । जैसे भक्त उन्हें भजते हैं ।।

## त्रयोविंशः श्लोकः

**किञ्चाग्रजो मावनतं यदूत्तमः स्मयन् परिष्वज्य गृहीतमञ्जलौ ।**
**गृहं प्रवेश्याप्तसमस्तसत्कृतं संप्रेक्ष्यते कंसकृतं स्वबन्धुषु ॥२३॥**

पदच्छेद— किञ्च अग्रजः मा अवनतम् यदु उत्तमः स्मयन् परिष्वज्य गृहीतम् अञ्जलौ ।
गृहम् प्रवेश्य आप्त समस्त सत्कृतम् संप्रेक्ष्यते कंस कृतम् स्वबन्धुषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किञ्च | १. | और | गृहम् प्रवेश्य | ६. | घर के अन्दर ले जायेंगे |
| अग्रजः | ३. | बलराम जी | आप्त | १२. | चुकने पर |
| माअवनतम् | ४. | झुके हुये मुझे | समस्त | १०. | सम्पूर्ण |
| यदु उत्तमः | २. | यदुवंशियों में श्रेष्ठ | सत्कृतम् | ११. | सत्कार कर |
| स्मयन् | ५. | मुस्कराते हुये | संप्रेक्ष्यते | १६. | पूछेंगे |
| परिष्वज्य | ६. | आलिंगन करके | कंस | १४. | कंस द्वारा |
| गृहीतम् | ८. | पकड़ कर | कृतम् | १५. | किये गये व्यवहार को |
| अञ्जलौ । | ७. | दोनों हाथ | स्वबन्धुषु ॥ | १३. | अपने बन्धुओं के साथ |

श्लोकार्थ—और यदुवंशियों में श्रेष्ठ बलराम जी झुके हुये मुझे मुस्कराते हुये आलिंगन करके दोनों हाथ पकड़ कर घर के अन्दर ले जायेंगे तथा सम्पूर्ण सत्कार कर चुकने पर अपने बन्धुओं के साथ कंस के द्वारा किये गये व्यवहार को पूछेंगे ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— इति सञ्चिन्तयन् कृष्णं श्वफल्कतनयोऽध्वनि ।**
**रथेन गोकुलं प्राप्तः सूर्यश्चास्तगिरिं नृप ॥२४॥**

पदच्छेद— इति सञ्चिन्तयन् कृष्णम् श्वफल्क तनयः अध्वनि ।
रथेन गोकुलम् प्राप्तः सूर्यः च अस्तगिरिम् नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | ३. | इस प्रकार | रथेन | ८. | रथ से |
| सञ्चिन्तयन् | ५. | चिन्तन करते हुये | गोकुलम् | ६. | गोकुल |
| कृष्णम् | ४. | कृष्ण के सम्बन्ध में | प्राप्तः | १०. | पहुँच गये |
| श्वफल्क | ६. | श्वफल्क के | सूर्यः च | ११. | और सूर्य भी |
| तनयः | ७. | पुत्र (अक्रूर जी) | अस्तगिरिम् | १२. | अस्ताचल पर चले गये |
| अध्वनि । | २. | मार्ग में | नृप ॥ | १. | हे राजन् ! |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मार्ग में इस प्रकार कृष्ण के सम्बन्ध में चिन्तन करते हुये श्वफल्क के पुत्र अक्रूर जी रथ से गोकुल पहुँच गये और उस समय सूर्य भी अस्ताचल को चले गये ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**पदानि तस्याखिललोकपालकिरीटजुष्टामलपादरेणोः ।**
**ददर्श गोष्ठे क्षितिकौतुकानि विलक्षितान्यब्जयवाङ्कुशाद्यैः ॥२५॥**

पदच्छेद— पदानि तस्य अखिल लोकपाल किरीट जुष्ट अमल पादरेणोः ।
ददर्श गोष्ठे क्षितिकौतुकानि विलक्षितानि अब्ज यव अङ्कुश आद्यैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पदानि | १२. | चरण चिह्नों को | ददर्श | १४. | देखा |
| तस्य | ६. | उन भगवान् के | गोष्ठे | १३. | गोष्ठ में |
| अखिल | १. | सम्पूर्ण | क्षितिकौतुकानि | ११. | पृथ्वी के शोभा रूप |
| लोकपाल | २. | लोक पालों के | विलक्षितानि | १०. | चिह्नित तथा |
| किरीट जुष्टे | ३. | किरोटों के द्वारा सेवित | अब्ज यव | ७. | कमल यव |
| अमल | ४. | निर्मल | अङ्कुश | ८. | अङ्कुश |
| पादरेणोः। | ५. | चरण धूलि वाले | आद्यैः ॥ | ९. | आदि से |

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण लोकपालों के किरीटों के द्वारा सेवित निर्मल चरण धूलि वाले उन भगवान् के कमल, यव, अङ्कुश आदि से चिह्नित तथा पृथ्वी के शोभा रूप 'चरण चिह्नों को गोष्ठ में देखा ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**तद्दर्शनाह्लादविवृद्धसम्भ्रमः प्रेम्णोर्ध्वरोमाश्रुकलाकुलेक्षणः ।**
**रथादवस्कन्द्य स तेष्वचेष्टत प्रभोरमून्यङ्घ्रिरजांस्यहो इति ॥२६॥**

पदच्छेद— तत् दर्शन आह्लाद विवृद्ध सम्भ्रमः प्रेम्णा ऊर्ध्व रोम अश्रुकला आकुल ईक्षणः ।
रथात् अवस्कन्द्य सः तेषु अचेष्टत प्रभोः अमूनि अङ्घ्रिरजांसि अहो इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् दर्शन | १. | उनके दर्शन के | रथात् अवस्कन्द्य | १०. | रथ से उतर कर |
| आह्लाद | २. | आनन्द से | सः | ९. | वे अक्रूर जी |
| विवृद्ध | ३. | बढ़ी हुई | तेषु | १५. | उस पर |
| सम्भ्रमः | ४. | विह्वलता वाले | अचेष्टत | १६. | लोटने लगे |
| प्रेम्णाऊर्ध्व | ५. | प्रेम से खड़े हुये | प्रभोः अमूनि | १२. | हमारे प्रभु के ये |
| रोम अश्रुकला | ६ | रोंगटे वाले और आंसुओं की धारा से | अङ्घ्रिरजांसि | १३. | चरणों की धूलि है |
| आकुल | ७. | व्याकुल | अहो | ११. | अहा |
| ईक्षणः। | ८. | नेत्रों वाले | इति ॥ | १४. | यह कह कर |

श्लोकार्थ—उनके दर्शन के आनन्द से बढ़ी हुई विह्वलता वाले, प्रेम से खड़े हुये रोंगटे वाले और आंसुओं की धारा से व्याकुल नेत्रों वाले वे अक्रूर जी रथ से उतर कर अहा ये हमारे प्रभु के चरणों की धूलि है यह कह कर उस पर लोटने लगे ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**देहंभृतामियानर्थो हित्वा दम्भं भियं शुचम् ।**
**संदेशाद् यो हरेर्लिङ्गदर्शनश्रवणादिभिः ॥२७॥**

पदच्छेद— देहम् भृताम् इयान् अर्थः हित्वा दम्भम् भियम् शुचम् ।
सन्देशात् यः हरेः लिङ्ग दर्शन श्रवण आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देहम् भृताम् | १. | शरीर धारियों का | सन्देशात् | ७. | कंस के सन्देश लेकर अब तक |
| इयान् अर्थः | २. | यही कर्तव्य है कि | यः | ८. | जो अक्रूर का भाव रहा है |
| हित्वा | ६. | त्याग कर | हरेः लिङ्ग | ९. | भगवान् के चिह्न |
| दम्भम् | ३. | दम्भ | दर्शन | १०. | प्रतिमा दर्शन |
| भियम् | ४. | भय और | श्रवण | ११. | और गुण श्रवण |
| शुचम् । | ५. | शोक | आदिभिः ॥ | १२. | आदि में वैसा भाव रखें |

श्लोकार्थ—शरीर धारियों का यही कर्तव्य है कि दम्भ और भय तथा शोक त्याग कर कंस के सन्देश से लेकर अब तक जो अक्रूर का भाव रहा है, भगवान् के चिह्न, प्रतिमा दर्शन और गुण श्रवण आदि में वैसा ही भाव रखें ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**ददर्श कृष्णं रामं च व्रजे गोदोहनं गतौ ।**
**पीतनीलाम्बरधरौ शरदम्बुरुहेक्षणौ ॥२८॥**

पदच्छेद— ददर्श कृष्णम् रामम् च व्रजे गोदोहनम् गतौ ।
पीत नीलाम्बर धरौ शरद् अम्बुरुह ईक्षणौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ददर्श | १२. | देखा | पीत | ४. | पीले और |
| कृष्णम् | १०. | श्रीकृष्ण | नीलाम्बर | ५. | नीले वस्त्र |
| रामम् च | ११. | और बलराम को | धरौ | ६. | धारण किये हुये (तथा) |
| व्रजे | १. | व्रज में (अक्रूर जी ने) | शरद् | ७. | शरद् ऋतु के |
| गोदोहनम् | २. | गाय दूहने के स्थान में | अम्बुरुह | ८. | कमल के समान |
| गतौ । | ३. | विराजमान | ईक्षणौ ॥ | ९. | नेत्रों वाले |

श्लोकार्थ—व्रज में अक्रूर जी ने गाय दूहने के स्थान में विराजमान, पीले और नीले वस्त्र धारण किये हुये तथा शरद् ऋतु के कमल के समान नेत्रों वाले श्रीकृष्ण और बलराम जी को देखा ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

**किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद्भुजौ ।**
**सुमुखौ सुन्दरवरौ बालद्विरदविक्रमौ ॥२९॥**

**पदच्छेद —** किशोरौ श्यामल श्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद् भुजौ ।
सुमुखौ सुन्दर वरौ बाल द्विरद विक्रमौ ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **किशोरौ** | १. वे दोनों किशोर | **सुमुखौ** | ७. सुन्दर मुख वाले |
| **श्यामल** | २. साँवले और | **सुन्दर** | ६. मनोहर और |
| **श्वेतौ** | ३. गोरे | **वरौ** | ८. परम |
| **श्रीनिकेतौ** | ४. शोभा के धाम | **बाल** | १०. बाल |
| **बृहद्** | ५. लम्बी-लम्बी | **द्विरद** | ११. गज के समान |
| **भुजौ ।** | ६. भुजाओं वाले | **विक्रमौ ॥** | १२. चाल वाले थे |

**श्लोकार्थ—**वे दोनों किशोर, साँवले और गोरे, शोभा के धाम, लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले, सुन्दर मुख वाले, परम मनोहर और बाल गज के समान चाल वाले थे ॥

# त्रिंशः श्लोकः

**ध्वजवज्राङ्कुशाम्भोजैश्चिह्नितैरङ्घ्रिभिर्व्रजम् ।**
**शोभयन्तौ महात्मानावनुक्रोशस्मितेक्षणौ ॥३०॥**

**पदच्छेद—** ध्वज वज्र अङ्कुश अम्भोजैः चिह्नितैः अङ्घ्रिभिः व्रजम् ।
शोभयन्तौ महात्मानौ अनुक्रोश स्मित ईक्षणौ ॥

**शब्दार्थ—**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **ध्वज** | १. ध्वज | **व्रजम् ।** | ७. व्रज को |
| **वज्र** | २. वज्र | **शोभयन्तौ** | ८. शोभायमान करते हुये |
| **अङ्कुश** | ३. अङ्कुश और | **महात्मानौ** | ६. वे दोनों महात्मा |
| **अम्भोजैः** | ४. कमल से | **अनुक्रोश** | १०. दया और |
| **चिह्नितैः** | ५. चिह्नित | **स्मित** | ११. मुस्कराहट से युक्त |
| **अङ्घ्रिभिः** | ६. चरणों से | **ईक्षणौ ॥** | १२. नेत्रों वाले थे |

**श्लोकार्थ—**ध्वज, वज्र, अङ्कुश और कमल से चिह्नित चरणों से व्रज को शोभायमान करते हुये वे दोनों महात्मा दया और मुस्कराहट से युक्त नेत्रों वाले थे ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**उदाररुचिरक्रीडौ स्रग्विणौ वनमालिनौ ।**
**पुण्यगन्धानुलिप्ताङ्गौ स्नातौ विरजवाससौ ॥३१॥**

पदच्छेद— उदार रुचिर क्रीडौ स्रग्विणौ वन मालिनौ ।
पुण्य गन्ध अनुलिप्ताङ्गौ स्नातौ विरज वाससौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| उदार | १. वे दोनों उदार | पुण्य | १०. | पवित्र |
| रुचिर | २. सुन्दर | गन्ध | ११. | गन्धों का |
| क्रीडौ | ३. क्रीडा करने वाले | अनुलिप्ताङ्गौ | १२. | लेप अङ्गों में लगाये थे |
| स्रग्विणौ | ४. मणियों के हार | स्नातौ | ७. | स्नान के पश्चात् |
| वन | ५. तथा वन | विरज | ८. | निर्मल |
| मालिनौ । | ६. माला पहने थे (तथा) | वाससौ ॥ | ९. | वस्त्र धारण करके |

श्लोकार्थ—वे दोनों उदार, सुन्दर क्रीडा करने वाले, मणियों के हार तथा वन माला पहने थे। और स्नान के पश्चात् निर्मल वस्त्र धारण करके पवित्र गन्धों का लेप अङ्गों में लगाये थे ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**प्रधानपुरुषावाद्यौ जगद्धेतू जगत्पती ।**
**अवतीर्णौ जगत्यर्थे स्वांशेन बलकेशवौ ॥३२॥**

पदच्छेद— प्रधान पुरुषौ आद्यैः जगत् हेतू जगत्पती ।
अवतीर्णौ जगती अर्थे स्वअंशेन बल केशवौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रधान | १. प्रधान | अवतीर्णौ | १२. | अवतीर्ण हुये हैं |
| पुरुषौ | २. पुरुषो | जगती | ७. | संसार की |
| आद्यैः | ४. आदि | अर्थे | ८. | रक्षा के लिये |
| जगत् | ३. जगत् के | स्वअंशेन | ९. | अपने अंश से |
| हेतू | ५. कारण और | बल | १०. | बलराम और |
| जगत्पती । | ६. संसार के स्वामी (भगवान्) | केशवौ ॥ | ११. | श्रीकृष्ण के रूप में |

श्लोकार्थ—प्रधान पुरुष जगत् के आदि कारण और संसार के स्वामी भगवान् संसार की रक्षा के लिये अपने अंश से बलराम और श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुये हैं ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**दिशो वितिमिरा राजन् कुर्वाणौ प्रभया स्वया ।**
**यथा मारकतः शैलो रौप्यश्च कनकाचितौ ॥३३॥**

पदच्छेद— दिशः वितिमिराः राजन् कुर्वाणौ प्रभया स्वया ।
यथा मारकतः शैलः रौप्यः च कनक आचितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिशः | ४. | दिशाओं को | यथा | ७. | जैसे |
| वितमिराः | ५. | अन्धकार रहित | मारकतः | ९. | मरकत मणि |
| राजन् | १. | हे राजन् | शैलः | १२. | पहाड़ हों |
| कुर्वाणौ | ६. | करते हुये (वे ऐसे लग रहे थे) | रौप्यः | ११. | चाँदी के |
| प्रभया | ३. | कान्ति से | च | १०. | और |
| स्वया । | २. | अपनी | कनक आचितौ ॥ | ८. | सोने से मढ़े |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अपनी कान्ति से दिशाओं को अन्धकार रहित करते हुये वे ऐसे लग रहे थे । जैसे सोने से मढ़े मरकत मणि और चाँदी के पहाड़ हो ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**रथात्तूर्णमवप्लुत्य सोऽक्रूरः स्नेहविह्वलः ।**
**पपात चरणोपान्ते दण्डवद् रामकृष्णयोः ॥३४॥**

पदच्छेद— रथात् तूर्णम् अवप्लुत्य सः अक्रूरः स्नेह विह्वलः ।
पपात चरण उपान्ते दण्डवत् राम कृष्णयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रथात् | १. | रथ से | पपात | १३. | लौट गये |
| तूर्णम् | २. | शीघ्र | चरणः | १०. | चरणों के |
| अवप्लुत्य | ३. | उतर कर | उपान्ते | ११. | पास |
| सः | ४. | वे | दण्डवत् | १२. | डंडे के समान (साष्टांग) |
| अक्रूरः | ५. | अक्रूर | राम | ८. | राम और |
| स्नेह | ६. | प्रेम से | कृष्णयोः ॥ | ९. | श्रीकृष्ण के |
| विह्वलः । | ७. | विह्वल हुये | | | |

श्लोकार्थ—रथ से शीघ्र उतर कर वे अक्रूर प्रेम से विह्वल हुये, राम और श्रीकृष्ण के चरणों के पास दण्डे के समान साष्टांग लौट गये ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

भगवद्दर्शनाह्लादबाष्पपर्याकुलेक्षणः ।
पुलकाचिताङ्ग औत्कण्ठ्यात् स्वाख्याने नाशकन् नृप ॥३५॥

पदच्छेद— भगवत् दर्शन आह्लाद बाष्प परि आकुल ईक्षणः ।
पुलक आचित अङ्ग औत्कण्ठ्यात् स्व आख्याने न अशकन् नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवत् | २. | भगवान् के | पुलक | ९. | रोमाञ्च से |
| दर्शन | ३. | दर्शन के | आचित | १०. | व्याप्त |
| आह्लाद | ४. | आनन्द के | अङ्ग | ११. | अङ्गों वाले (अक्रूर) |
| बाष्प | ५. | आंसुओं से | औत्कण्ठ्यात् | १२. | उत्कण्ठावश |
| परि | ६. | अत्यन्त | स्व आख्याने | १३. | अपना नाम भी |
| आकुल | ७. | भरे हुये | न अशकन् | १४. | नहीं बता सके |
| ईक्षणः । | ८. | नेत्रों वाले (तथा) | नृप ॥ | १. | हे राजन् ! |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् के दर्शन के आनन्द के आंसुओं से अत्यन्त भरे हुये नेत्रों वाले तथा रोमाञ्च से व्याप्त अङ्गों वाले अक्रूर उत्कण्ठा वश अपना नाम भी नहीं बता सके ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

भगवांस्तमभिप्रेत्य रथाङ्गाङ्कितपाणिना ।
परिरेभेऽभ्युपाकृष्य प्रीतः प्रणतवत्सलः ॥३६॥

पदच्छेद— भगवान् तम् अभिप्रेत्य रथाङ्ग अङ्कित पाणिना ।
परिरेभे अभिउप आकृष्य प्रीतः प्रणत वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | ३. | भगवान् के अक्रूर का | परिरेभे | १०. | आलिंगन किया |
| तम् | ८. | उन्हें | अभिउप आकृष्य | ९. | खींच कर |
| अभिप्रेत्य | ४. | अभिप्राय जान कर | प्रीतः | ५. | प्रसन्न होकर |
| रथाङ्ग अङ्कित | ६. | चक्र से अङ्कित | प्रणतः | १. | शरणागत |
| पाणिना । | ७. | हाथों से | वत्सलः ॥ | २. | वत्सल |

श्लोकार्थ—शरणागत वत्सल भगवान् ने अक्रूर का अभिप्राय जान कर प्रसन्न होकर चक्र से अङ्कित हाथों से उन्हें खींच कर आलिंगन किया ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**संकर्षणश्च प्रणतमुपगुह्य महामनाः ।**
**गृहीत्वा पाणिना पाणी अनयत् सानुजो गृहम् ॥३७॥**

पदच्छेद— संकर्षणः च प्रणतम् उपगुह्य महामनाः ।
गृहीत्वा पाणिना पाणी अनयत् स अनुजः गृहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| संकर्षणः | २. | बलराम जी | पाणिना | ६. | हाथ से |
| च | ३. | भी | पाणी | ७. | हाथ |
| प्रणतम् | ४. | प्रणाम करते हुये | अनयत् | १२. | ले गये |
| उपगुह्य | ५. | उनका आलिङ्गन करके | सः | १०. | सहित उन्हे |
| महामनाः । | १. | महामनस्वी | अनुजः | ९. | छोटे भाई श्रीकृष्ण के |
| गृहीत्वा | ८. | पकड़ कर | गृहम् ॥ | ११. | घर में |

श्लोकार्थ—महामनस्वी बलराम जी भी प्रणाम करते हुये उनका आलिंगन करके हाथ से हाथ पकड़ कर छोटे भाई श्रीकृष्ण के सहित उन्हें घर में ले गये ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**पृष्ट्वाथ स्वागतं तस्मै निवेद्य च वरासनम् ।**
**प्रक्षाल्य विधिवत् पादौ मधुपर्कार्हणमाहरत् ॥३८॥**

पदच्छेद— पृष्ट्वा अथ स्वागतम् तस्मै निवेद्य च वर आसनम् ।
प्रक्षाल्य विधिवत् पादौ मधुपर्क अर्हणम् आहरत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पृष्ट्वा | २. | कुशलमङ्गल पूछ कर | प्रक्षाल्य | १०. | धोया (तथा) |
| अथ | १. | तदनन्तर | विधिवत् | ८. | विधि पूर्वक |
| स्वागतम् | ४. | स्वागत के शब्द | पादौ | ९. | पैरों को |
| तस्मै | ३. | उन्हें | मधुपर्क | ११. | मधुपर्क आदि |
| निवेद्य | ७. | निवेदित करके | अर्हणम् | १२. | पूजन सामग्री |
| च | ५. | और | आहरत् ॥ | १३. | भेंट की |
| वर आसनम् । | ६. | उत्तम आसन | | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर कुशलमङ्गल पूछ कर उन्हें स्वागत के शब्द और उत्तम आसन निवेदित करके विधिवत् पैरों को धोया । तथा मधुपर्क आदि पूजन की सामग्री भेंट की ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**निवेद्य गां चातिथये संवाह्य श्रान्तमादृतः ।**
**अन्नं बहुगुणं मेध्यं श्रद्धयोपाहरद् विभुः ॥३९॥**

पदच्छेद— निवेद्य गाम् च अतिथये संवाह्य श्रान्तम् आदृतः ।
अन्नम् बहुगुणम् मेध्यम् श्रद्धया उपाहरत् विभुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निवेद्य | ३. | (दी और) | अन्नम् | १० | अन्न का |
| गाम् च | २. | एक गाय | बहुगुणम् | ९. | अनेक गुणों से युक्त |
| अतिथये | १. | अतिथि (अक्रूर को) | मेध्यम् | ८. | पवित्र |
| संवाह्य | ४. | पैर दबा कर | श्रद्धया | ११. | श्रद्धा पूर्वक |
| श्रान्तम् | ५ | थकावट दूर की (फिर) | उपाहरत् | १२. | भोजन कराया |
| आदृतः । | ७. | आदर पूर्वक | विभुः ॥ | ७. | प्रभु ने |

श्लोकार्थ—अतिथि अक्रूर को एक गाय दी । और पैर दबा कर थकावट दूर की । फिर प्रभु ने आदर पूर्वक पवित्र अनेक गुणों से युक्त अन्न का श्रद्धापूर्वक भोजन कराया ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**तस्मै भुक्तवते प्रीत्या रामः परमधर्मवित् ।**
**मुखवासैर्गन्धमाल्यैः परां प्रीतिं व्यधात् पुनः ॥४०॥**

पदच्छेद— तस्मै भुक्तवते प्रीत्या रामः परम धर्मवित् ।
मुखवासैः गन्ध माल्यैः पराम् प्रीतिम् व्यधात् पुनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मै | २. | उन्हें | मुखवासैः | ८. | पान इत्यादि और |
| भुक्तवते | १. | भोजन कर चुकने पर | गन्ध | ९. | सुगन्धित |
| प्रीत्या | ६. | प्रेम से | माल्यैः | १०. | मालाओं से |
| रामः | ५. | बलराम ने | पराम् | ११. | परम |
| परम | ३. | परम | प्रीतिम् | १२. | आनन्दित |
| धर्मवित् । | ४. | धर्मज्ञाता | व्यधात् | १३. | किया |
| | | | पुनः ॥ | ७. | फिर |

श्लोकार्थ—भोजन कर चुकने पर उन्हें परम धर्मज्ञाता बलराम जी ने प्रेम से फिर पान, इलायची इत्यादि और सुगन्धित मालाओं से परम आनन्दित किया ॥

# एकचत्वारिंशः श्लोकः

**पप्रच्छ सत्कृतं नन्दः कथं स्थ निरनुग्रहे।**
**कंसे जीवति दाशार्ह सौनपाला इवावयः ॥४१॥**

पदच्छेद— पप्रच्छ सत् कृतम् नन्दः कथम् स्थ निरनुग्रहे।
कंसे जीवति दाशार्ह सौनपालाः इव अवयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पप्रच्छ | ४. (अक्रूर से) पूछा | कंसे | ७. | कंस के |
| सत् | २. सत्कार | जीवति | ८. | जीते जो |
| कृतम् | ३. किये जाने पर | दाशार्ह | ५. | हे अक्रूर जी |
| नन्दः | १. दन्द बाबा ने | सौनपालाः | ११. | कसाई द्वारा पाली हुई |
| कथम् | ६. (आप लोग) कैसे | इव | १३. | समान (आप लोगों की दशा है) |
| स्थ | १०. रहते हैं | अवयः ॥ | १२. | भेड़ों के |
| निरनुग्रहे। | निर्दयी | | | |

श्लोकार्थ— नन्द बाबा ने सत्कार किये जाने पर अक्रूर जी से पूछा—हे अक्रूर जी ! निर्दयी कंस के जीते जी आप लोग कैसे रहते हैं। कसाई द्वारा पाली हुई भेड़ों के समान आप लोगों की दशा है ॥

# द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**योऽवधीत् स्वस्वसुस्तोकान् क्रोशन्त्या असुतृप् खलः।**
**किं नु स्वित्तत्प्रजानां वः कुशलं विमृशामहे ॥४२॥**

पदच्छेद— यः अवधीत् स्वस्वसुः तोकान् क्रोशन्त्या असुतृप् खलः।
किम् नु स्वित् तत् प्रजानाम् वः कुशलम् विमृशामहे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यः | २. जिस | किम् नुस्वित् | ११. | क्या |
| अवधीत् | ७. मार डाला | तत् | ८. | उसको |
| स्वस्वसुः | ५. अपनी बहन | प्रजानाम् | ९. | प्रजा |
| तोकान् | ६. बच्चों को | वः | १०. | आप लोगों का |
| क्रोशन्त्या | ४. बिलखती हुई | कुशलम् | १२. | कुशल |
| असुतृप् | १. प्राणों से तृप्त होने वाले | विमृशामहे ॥ | १३. | सोचे |
| खलः। | ३. दुष्ट ने | | | |

श्लोकार्थ—प्राणों से तृप्त होने वाले जिस दुष्ट ने बिलखती हुई अपनी बहन के बच्चों को मार डाला, उसकी प्रजा आप लोगों का क्या कुशल सोचे ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्थं सूनृतया वाचा नन्देन सुसभाजितः ।
अक्रूरः परिपृष्टेन जहावध्वपरिश्रमम् ॥४३॥

पदच्छेद—
इत्थम् सूनृतया वाचा नन्देन सुसभाजितः ।
अक्रूरः परिपृष्टेन जहौ अध्व परिश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इत्थम् | ३. | इस प्रकार | अक्रूरः | ७. | अक्रूर जी ने |
| सूनृतया | ४. | मधुर | परिपृष्टेन | १. | पहले ही कुशल मंगल पूछे गये |
| वाचा | ५. | वाणी से | जहौ | १०. | त्याग दिया |
| नन्देन | २. | नन्द के द्वारा | अध्व | ८. | मार्ग की |
| सुसभाजितः । | ६. | सम्मानित होने पर | परिश्रमम् ॥ | ९. | थकावट को |

श्लोकार्थ—पहले ही कुशल मंगल पूछे गये नन्द के द्वारा इस प्रकार मधुर वाणी में सम्मानित होने पर अक्रूर जी ने मार्ग की थकावट को त्याग दिया ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे अक्रूर-गमनं नाम अष्टात्रिंशः अध्यायः ॥३८॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## एकोनचत्वारिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—सुखोपविष्टः पर्यङ्के रामकृष्णोरुमानितः।
लेभे मनोरथान् सर्वान् पथि यान् स चकार ह ॥१॥

पदच्छेद— सुख उपविष्टः पर्यङ्के राम कृष्णाय उरु मानितः।
लेभे मनोरथान् सर्वान् पथि यान् सः चकार ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुख | ५. आराम से | लेभे | १४. प्राप्त कर लिया |
| उपविष्टः | ७. बैठ गये | मनोरथान् | १०. मनोरथों को |
| पर्यङ्के | ६. पलंग पर | सर्वान् | १३. उन सब ही को |
| राम | १. बलराम और | पथि | ११. मार्ग में |
| कृष्ण | २. श्रीकृष्ण के द्वारा | यान् | ९. जिन-जिन |
| उरु | ३. बहुत | सः | ८. उन्होंने |
| मानितः। | ४. सम्मानित होकर (अक्रूर जी) | चकार ह ॥ | १२. सोचा था |

श्लोकार्थ—बलराम और श्रीकृष्ण के द्वारा बहुत सम्मानित होकर अक्रूर जी आराम से पलंग पर बैठ गये। उन्होंने जिन-जिन मनोरथों को मार्ग में सोचा था, उन सब ही को प्राप्त कर लिया ॥

### द्वितीयः श्लोकः

किमलभ्यं भगवति प्रसन्ने श्रीनिकेतने।
तथापि तत्परा राजन्न हि वाञ्छन्ति किञ्चन ॥२॥

पदच्छेद— किम् अलभ्यम् भगवति प्रसन्ने श्री निकेतने।
तथापि तत्पराः राजन् न हि वाञ्छन्ति किञ्चन ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| किम् | ५. क्या | तथापि | ७. तो भी |
| अलभ्यम् | ६. दुर्लभ रह जाता है | तत्पराः | ९. उनके भक्त |
| भगवति | ३. भगवान् के | राजन् | ८. हे राजन्! |
| प्रसन्ने | ४. प्रसन्न होने पर | न हि | ११. नहीं |
| श्री | १. लक्ष्मी के | वाञ्छन्ति | १२. चाहते हैं |
| निकेतने। | २. आश्रय स्थान | किञ्चन ॥ | १०. कुछ भी |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के आश्रय स्थान भगवान् के प्रसन्न होने पर क्या दुर्लभ रह जाता है। तो भी हे राजन्! उनके भक्त कुछ भी नहीं चाहते हैं ॥

## तृतीयः श्लोकः

सायंतनाशनं कृत्वा भगवान् देवकीसुतः ।
सुहृत्सु वृत्तं कंसस्य पप्रच्छान्यच्चिकीर्षितम् ॥३॥

पदच्छेद— सायंतन अशनम् कृत्वा भगवान् देवकी सुतः ।
सुहृत्सु वृत्तम् कंसस्य पप्रच्छ अन्यत् चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सायंतन | १. | सायंकाल का | सुहृत्सु | ७. | अपने बन्धुओं के साथ |
| अशनम् | २. | भोजन | वृत्तम् | ६. | व्यवहार और |
| कृत्वा | ३. | करने के बाद | कंसस्य | ८. | कंस के |
| भगवान् | ४. | भगवान् | पप्रच्छ | १२. | पूछा |
| देवकी | ५. | देवकी | अन्यत् | १०. | दूसरे कार्य |
| सुतः । | ६. | पुत्र (श्रीकृष्ण) ने | चिकीर्षितम् ॥ | ११. | करने की इच्छा के बारे में |

श्लोकार्थ—सायंकाल का भोजन करने के बाद भगवान् देवकी पुत्र श्रीकृष्ण ने अपने बन्धुओं के साथ कंस के व्यवहार और दूसरे कार्य करने को इच्छा के बारे में पूछा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—तात सौम्यागतः कच्चित् स्वागतं भद्रमस्तु वः ।
अपि स्वज्ञातिबन्धूनामनमीवमनामयम् ॥४॥

पदच्छेद— तात सौम्य आगतः कच्चित् स्वागतम् भद्रम् अस्तु वः ।
अपि स्वज्ञाति बन्धूनाम् अनमीवम् अनामयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तात | २. | चाचा जी | वः । | ५. | आपका |
| सौम्य | १. | हे सौम्य ! | अपि | १४. | हैं न |
| आगतः | ४. | आये | स्व | ६. | आत्मीय |
| कच्चित् | ३. | आप कुशल पूर्वक तो | ज्ञाति | १०. | सुहृद् |
| स्वागतम् | ६. | स्वागत है (आपका) | बन्धूनाम् | ११. | कुटम्बीजन |
| भद्रम् | ७. | कल्याण | अनमीवम् | १२. | कुशल और |
| अस्तु | ८. | होवे | अनामयम् ॥ | १३. | स्वस्थ तो |

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! चाचा जी ! आप कुशलपूर्वक तो आये । आपका स्वागत है । आपका कल्याण होवे । आत्मीय सुहृद् कुटुम्बीजन कुशल और स्वस्थ तो हैं न ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**किं नु नः कुशलं पृच्छे एधमाने कुलामये ।**
**कंसे मातुलनाम्न्यङ्ग स्वानां नस्तत्प्रजासु च ॥५॥**

पदच्छेद— किम् नु नः कुशलम् पृच्छे एधमाने कुल आमये ।
कंसे मातुल नाम्नि अङ्ग स्वानाम् नः तत् प्रजासुच ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| किम् नु | १३. क्या | | कंसे | ७. कंस के |
| नः | २. हमारे | | मातुल | ६. मामा |
| कुशलम् | १२. कुशल मङ्गल | | नाम्नि | ५. नाम मात्र के |
| पृच्छे | १४. पूछें | | अङ्ग | १. चाचा जी |
| एधमाने | ८. बढ़ते रहते | | स्वानाम् | १०. आत्मीयजन |
| कुल | ३. कुल के लिये | | नः | ९. हमारे |
| आमये । | ४. रोग के समान (और) | | तत् प्रजासु च ॥ | ११. और उनके बाल-बच्चों का |

श्लोकार्थ—चाचा जी ! हमारे कुल के लिये रोग के समान और नाम मात्र के मामा कंस के बढ़ते रहते हमारे आत्मीयजन और उनके बाल-बच्चों का कुशल मङ्गल क्या पूछें ॥

## षष्ठः श्लोकः

**अहो अस्मदभूद् भूरि पित्रोर्वृजिनमार्ययोः ।**
**यद्धेतोः पुत्रमरणं यद्धेतोर्बन्धनं तयोः ॥६॥**

पदच्छेद— अहो अस्मत् अभूत् भूरि पित्रोः वृजिनम् ।
यत् हेतोः पुत्रमरणम् यत् हेतोः बन्धनम् तयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो | १. खेद है कि | आर्ययोः | ३. पूज्य |
| अस्मत् | २. हमारे | यत् हेतोः | ८. जिस मेरे कारण |
| अभूत् | ७. हुआ | पुत्रमरणम् | ९. पुत्रों का मरण और |
| भूरि | ५. बहुत ही | यत् हेतोः | १०. जिस कारण |
| पित्रोः | ४. माता-पिता को | बन्धनम् | १२. बन्धन हुआ |
| वृजिनम् | ६. कष्ट | तयोः ॥ | ११. उन दोनों का |

श्लोकार्थ—खेद है कि हमारे पूज्य माता-पिता को बहुत ही कष्ट हुआ । जिस मेरे कारण पुत्रों का मरण और जिस कारण उन दोनों का बन्धन हुआ ॥

## सप्तमः श्लोकः

**दिष्ट्याद्य दर्शनं स्वानां मह्यं वः सौम्य काङ्क्षितम् ।**
**सञ्जातं वर्ण्यतां तात तवागमनकारणम् ॥७॥**

पदच्छेद— दिष्ट्या अद्य दर्शनम् स्वानाम् मह्यम् वः सौम्य काङ्क्षितम् ।
सञ्जातम् वर्ण्यताम् तात तव आगमन कारणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्ट्या | ७. | भाग्य से | सञ्जातम् | ८. | हुआ है |
| अद्य दर्शनम् | ५. | आज दर्शन | वर्ण्यताम् | १३. | बतलाइये |
| स्वानाम् | २. | आत्मीय | तात | ९. | हे चाचा जी ! अब आप |
| मह्यम् | ६. | मुझे | तव | १०. | अपने |
| वः | ३. | आप लोगों का | आगमन | ११. | आने का |
| सौम्य | १. | हे सौम्य ! चाचा जी | कारणम् ॥ | १२. | कारण |
| काङ्क्षितम् । | ४. | अभिलाषा करते हुये | | | |

श्लोकार्थ—हे सौम्य चाचा जी ! आत्मीय आप लोगों का अभिलाषा करते हुये आज दर्शन मुझे भाग्य से हुआ है । हे चाचा जी ! अब आप अपने आने का कारण बतलाइये ॥

## अष्टमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **पृष्टो भगवता सर्वं वर्णयामास माधवः ।**
**वैरानुबन्धं यदुषु वसुदेववधोद्यमम् ॥८॥**

पदच्छेद— पृष्टः भगवता सर्वम् वर्णयामास माधवः ।
वैर अनुबन्धम् यदुषु वसुदेव बध उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पृष्टः | २. | पूछने पर | वैर | ५. | बैर |
| भगवता | १. | भगवान् के | अनुबन्धम् | ६. | ठान रखना (तथा) |
| सर्वम् | ९. | सब कुछ | यदुषु | ४. | यदुवंशियों से |
| वर्णयामास | १०. | बता दिया | वसुदेव | ७. | वसुदेव जी के |
| माधवः । | ३. | अक्रूर जी ने (कंस का) | बध उद्यमम् ॥ | ८. | वध का प्रयत्न करना |

श्लोकार्थ—भगवान् के पूछने पर अक्रूर जी ने कंस का यदुवंशियों से बैर ठान रखना तथा वसुदेव जी के वध का प्रयत्न करना सब कुछ बता दिया ॥

## नवमः श्लोकः

**यत्संदेशो यदर्थं वा दूतः संप्रेषितः स्वयम् ।**
**यदुक्तं नारदेनास्य स्वजन्मानकदुन्दुभेः ॥९॥**

पदच्छेद— यत् संदेशः यत् अर्थम् वा दूतः संप्रेषितः स्वयम् ।
यत् उक्तम् नारदेन अस्य स्व जन्म आनकदुन्दुभेः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् संदेशः | १. कंस का जो सन्देश था | यत् | ७. और जो |
| यत् अर्थम् | ३. जिस लिये अक्रूर जी | उक्तम् | १२. बताया था (वह सब बता दिया) |
| वा | २. अथवा | नारदेन | ११. नारद जी ने |
| दूतः | ५. दूत बना कर | अस्य | ८. उस कंस को |
| संप्रेषितः | ६. भेजे गये थे | स्व जन्म | १०. अपने जन्म लेने का वृत्तान्त |
| स्वयम् । | ४. स्वयम् | आनकदुन्दुभेः ॥ | ९. वसुदेव जी के यहाँ |

श्लोकार्थ—कंस का जो सन्देश था। अथवा जिस लिये अक्रूर जी स्वयम् भेजे गये थे और जो उस कंस को वसुदेव जी के यहाँ अपने (श्रीकृष्ण के) जन्म लेने का वृत्तान्त नारद जी ने बताया था वह सब बता दिया ॥

## दशमः श्लोकः

**श्रुत्वाक्रूरवचः कृष्णो बलश्च परवीरहा ।**
**प्रहस्य नन्दं पितरं राज्ञाऽऽदिष्टं विजज्ञतुः ॥१०॥**

पदच्छेद— श्रुत्वा अक्रूर वचः कृष्णः बलः च परवीरहा ।
प्रहस्य नन्दम् पितरम् राज्ञा आदिष्टं विजज्ञतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्रुत्वा | ३. सुन कर | प्रहस्य | ७. हंस कर |
| अक्रूर | १. अक्रूर की | नन्दम् | ९. नन्द को |
| वचः | २. बात | पितरम् | ८. पिता |
| कृष्णः | ५. कृष्ण | राज्ञा | १०. राजा (कंस की) |
| बलः च | ६. और बलराम ने | आदिष्ट | ११. आज्ञा |
| परवीरहा । | ४. शत्रुवीर को मारने वाले | विजज्ञतुः ॥ | १२. बता दी |

श्लोकार्थ—अक्रूर की बात सुन कर शत्रुवीर को मारने वाले कृष्ण और बलराम ने हँस कर पिता नन्द को राजा कंस की आज्ञा बता दी ॥

## एकादशः श्लोकः

**गोपान् समादिशत् सोऽपि गृह्यतां सर्वगोरसः ।**
**उपायनानि गृह्णीध्वं युज्यन्तां शकटानि च ॥११॥**

पदच्छेद— गोपान् सम् आदिशत् सः अपि गृह्यताम् सर्वगोरसः ।
उपायनानि गृह्णीध्वम् युज्यन्ताम् शकटानि च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोपान् | ३. गोपों को | उपायनानि | ७. भेंट की सामग्री |
| सम् आदिशत् | ४. आदेश दिया कि | गृह्णीध्वम् | ८. ले लो |
| सः | १. उन नन्द ने | युज्यन्ताम् | ११. तैयार करो |
| अपि | २. भी | शकटानि | १०. बैलगाड़ी |
| गृह्यताम् | ६. एकत्र करो | च ॥ | ९. और |
| सर्वगोरसः । | ५. सारा गोरस | | |

श्लोकार्थ—उन नन्द जी ने भी गोपों को आदेश दिया कि सारा गोरस एकत्र करो। तथा भेंट की सामग्री ले लो और बैलगारी तैयार करो ॥

## द्वादशः श्लोकः

**यास्यामः श्वो मधुपुरीं दास्यामो नृपते रसान् ।**
**द्रक्ष्यामः सुमहत् पर्व यान्ति जानपदाः किल ।**
**एवमाघोषयत् क्षत्त्रा नन्दगोपः स्वगोकुले ॥१२॥**

पदच्छेद— यास्यामः श्वः मधुपुरीम् दास्यामः नृपतेः रसान् ।
द्रक्ष्यामः सुमहत् पर्व यान्ति जानपदाः किल ।
एवम् आघोषयत् क्षत्त्रा नन्दगोपः स्व गोकुले ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यास्यामः | ३. यात्रा करेंगे (तथा) | यान्ति | १०. वहाँ पर |
| श्वः | १. कल हम | जानपदाः | ११. सब ही देशों के वासी इकट्ठे होते हैं |
| मधुपुरीम् | २. मथुरा की | किल । | ९. ऐसा सुना जाता है कि |
| दास्यामः | ६. देंगे और | एवम् | १२. इस प्रकार |
| नृपतेः | ४. राजा कंस को | आघोषयत् | १६. घोषणा करवा दी |
| रसान् | ५. गोरस | क्षत्त्रा | १३. नगर कोतवाल के द्वारा |
| द्रक्ष्यामः | ८. देखेंगे | नन्दगोपः | १४. नन्द बाबा ने |
| सुमहत् पर्व | ७. बहुत बड़ा उत्सव | स्वगोकुले ॥ | १५. अपने गोकुल में |

श्लोकार्थ—कल हम मथुरा की यात्रा करेंगे। तथा राजा कंस को गोरस देंगे। और बहुत बड़ा उत्सव देखेंगे। ऐसा सुना जाता है कि वहाँ पर सब ही देशों के वासी इकट्ठे हो रहे हैं। इस प्रकार नगर कोतवाल के द्वारा नन्द बाबा ने अपने गोकुल में घोषणा करा दी ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**गोप्यस्तास्तदुपश्रुत्य बभूवुर्व्यथिता भृशम् ।**
**रामकृष्णौ पुरीं नेतुमक्रूरं व्रजमागतम् ॥१३॥**

पदच्छेद— गोप्यः ताः तत् उपश्रुत्य बभूवुः व्यथिताः भृशम् ।
राम कृष्णौ पुरीम् नेतुम् अक्रूरम् व्रजम् आगतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | २. | गोपियाँ | राम | ८. | बलराम और |
| ताः | १. | वे | कृष्णौ | ९. | श्रीकृष्ण को |
| तत् | ३. | वह | पुरीम् | १०. | मथुरा |
| उपश्रुत्य | ४. | सुनकर | नेतुम् | ११. | ले जाने के लिये |
| बभूवुः | ७. | हुईं (जब उन्होंने) | अक्रूरम् | १४. | अक्रूर को (देखा) |
| व्यथिताः | ६. | दुःखित | व्रजम् | १२. | व्रज में |
| भृशम् । | ५. | अत्यन्त | आगतम् ॥ | १३. | आये हुये |

श्लोकार्थ—वे गोपियाँ यह सुनकर अत्यन्त दुःखित हुईं । जब उन्होंने बलराम और श्रीकृष्ण को मथुरा ले जाने के लिये व्रज में आये हुये अक्रूर को देखा ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**काश्चित्तत्कृतहृत्तापश्वासम्लानमुखश्रियः ।**
**स्रंसद्दुकूलवलयकेशग्रन्थ्यश्च काश्चन ॥१४॥**

पदच्छेद— काश्चित् तत् कृत हृत् ताप श्वास म्लान मुखश्रियः ।
स्रंसत् दुकूल वलय केश ग्रन्थ्यः च काश्चन ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काश्चित् | २. | कुछ गोपियों के | स्रंसत् | १४. | खिसकने लगे |
| तत् | १. | उसे सुनने से | दुकूल | १०. | ओढनी |
| कृत | ४. | उत्पन्न | वलय | ११. | कंकण और |
| हृत् ताप | ३. | हृदय के ताप से | केश | १२. | बालों के |
| श्वास | ५. | गर्म सांस चलने के कारण | ग्रन्थ्यः | १३. | जूड़े |
| म्लान | ७. | मलिन हो गई | च | ८. | और |
| मुखश्रियः । | ६. | मुख की शोभा | काश्चन ॥ | ९. | कुछ के |

श्लोकार्थ—उसे सुनने से कुछ गोपियों के हृदय के ताप से उत्पन्न गर्म सांस चलने के कारण मुख की शोभा मलिन हो गई । और कुछ के ओढ़नी, कंकण और बालों के जूड़े खिसकने लगे ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

अन्याश्च तदनुध्याननिवृत्ताशेषवृत्तयः ।
नाभ्यजानन्निमं लोकमात्मलोकं गता इव ॥१५॥

पदच्छेद— अन्याः च तत् अनुध्यान निवृत्त अशेष वृत्तयः ।
न अभ्यजानन् इमम् लोकम् आत्मलोकम् गताः इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्याः | २. | अन्य गोपियों की | न | ९. | नहीं |
| च | १. | और | अभ्यजानन् | १४. | जान सकीं अर्थात् भूल गईं |
| तत् | ५. | उन भगवान् के | इमम् | १२. | इस |
| अनुध्यान | ६. | स्वरूप के ध्यान से | लोकम् | १२. | संसार को |
| निवृत्त | ७. | विषयों से विमुख हो गईं | आत्मलोकम् | १०. | आत्मा के लोक में |
| अशेष | ३. | सम्पूर्ण | गताः | ११. | स्थित (समाधिस्थ) होकर |
| वृत्तयः । | ४. | चित्त-वृत्तियाँ | इव ॥ | ८. | मानों वे गोपियाँ |

श्लोकार्थ—और अन्य गोपियों की सम्पूर्ण चित्त वृत्तियाँ उन भगवान् के स्वरूप के ध्यान से विषयों से विमुख हो गईं । मानों वे गोपियाँ आत्मा के लोक में स्थित (समाधिस्थ) होकर इस संसार को भूल गईं ॥

## षोडशः श्लोकः

स्मरन्त्यश्चापराः शौरेरनुरागस्मितेरिताः ।
हृदिस्पृशश्चित्रपदा गिरः संमुमुहुः स्त्रियः ॥१६॥

पदच्छेद— स्मरन्त्यः च अपराः शौरेः अनुराग स्मित ईरिताः ।
हृदिस्पृशः चित्रपदाः गिरः संमुमुहुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्मरन्त्यः | ११. | स्मरण करती हुई | ईरिताः । | ७. | कहे गये |
| च | १. | और (उनके द्वारा) | हृदिस्पृशः | ९. | हृदयस्पर्शी |
| अपराः | २. | दूसरी | चित्रपदाः | ८. | विचित्र पदों से युक्त तथा |
| शौरेः | ४. | श्रीकृष्ण के | गिरः | १०. | वचनों का |
| अनुराग | ५. | प्रेम | संमुमुहुः | १२. | मोहित हो गईं |
| स्मित | ६. | मुसकराहट और | स्त्रियः ॥ | ३. | स्त्रियाँ |

श्लोकार्थ—और दूसरी स्त्रियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम, मुसकराहट और उनके द्वारा कहे गये विचित्र पदों से युक्त तथा हृदयस्पर्शी वचनों का स्मरण करती हुई मोहित हो गईं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**गतिं सुललितां चेष्टां स्निग्धहासावलोकनम् ।**
**शोकापहानि नर्माणि प्रोद्दामचरितानि च ॥१७॥**

पदच्छेद— गतिम् सुललिताम् चेष्टाम् स्निग्ध हास अवलोकनम् ।
शोक अपहानि नर्माणि प्रोद्दाम चरितानि च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गतिम् | २. | चाल | शोक | ७. | शोक |
| सुललिताम् | १. | गोपियाँ श्रीकृष्ण कीअत्यन्त सुन्दर | अपहानि | ८. | मिटाने वाली |
| चेष्टाम् | ३. | भाव-भंगी | नर्माणि | ९. | ठिठोलियाँ |
| स्निग्ध | ४. | प्रेम भरी | प्रोद्दाम | ११. | उदारता भरी |
| हास | ५. | हंसी | चरितानि | १२. | लीलाओं का चिन्तन करने लगीं |
| अवलोकनम् । | ६. | चितवन | च ॥ | १०. | और |

श्लोकार्थ—गोपियाँ श्रीकृष्ण की अत्यन्त सुन्दर चाल, भाव-भंगी, प्रेमभरी हंसी, चितवन, शोक मिटाने वाली ठिठोलियाँ और उदारता भरी लीलाओं का चिन्तन करने लगीं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**चिन्तयन्त्यो मुकुन्दस्य भीता विरहकातराः ।**
**समेताः सङ्घशः प्रोचुरश्रुमुख्योऽच्युताशयाः ॥१८॥**

पदच्छेद— चिन्तयन्त्यः मुकुन्दस्य भीताः विरह कातराः ।
समेताः सङ्घशः प्रोचुः अश्रु मुख्यः अच्युत आशयाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चिन्तयन्त्यः | १. | चिन्तन करती हुई (गोपियाँ) | सङ्घशः | १०. | झुंड की झुंड |
| मुकुन्दस्य | २. | श्रीकृष्ण के | प्रोचुः | १२. | कहने लगीं |
| भीताः | ५. | भयभीत | अश्रु | ६. | आँसू से भीगे |
| विरह | ३. | विरह से | मुख्यः | ७. | मुख वाली |
| कातराः । | ४. | कातर (तथा) | अच्युत | ८. | भगवान् में अर्पित |
| समेताः | ११. | इकट्ठी होकर | आशयाः ॥ | ९. | चित्त वाली (वे गोपियाँ) |

श्लोकार्थ—चिन्तन करती हुई, विरह से कातर तथा भयभीत आँसू से भीगे मुख वाली भगवान् में अर्पित चित्त वाली वे गोपियाँ झुंड की झुंड इकट्ठी होकर कहने लगीं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**गोप्य ऊचुः अहो विधातस्तव न क्वचिद् दया संयोज्य मैत्र्या प्रणयेन देहिनः ।**
**तांश्चाकृतार्थान् वियुनङ्क्ष्यपार्थकं विक्रीडितं तेऽर्भकचेष्टितं यथा ॥१९॥**

पदच्छेद— अहो विधातः तव न क्वचित् दया संयोज्य मैत्र्या प्रणयेन देहिनः ।
तान् च अकृत अर्थान् वियुनङ्क्षि अपार्थकम् विक्रीडितम् ते अर्भकचेष्टितम् यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अहो विधातः | १. हाय ! विधाता | तान् च अकृत | ८. फिर बिना उनकी |
| तव | २. तुम्हें | अर्थान् | ९. अभिलाषा पूर्ण किये |
| न | ४. नहीं है (जो तुम) | वियुनङ्क्षि | ११. अलग-अलग कर देते हो |
| क्वचित् दया | ३. कहीं दया | अपार्थकम् | १०. व्यर्थ में |
| संयोज्य | ७. मिला कर | विक्रीडितम् ते | १४. यह तुम्हारा खिलवाड़ है |
| मैत्र्या प्रणयेन | ६. मित्रता और प्रेम से | अर्भकचेष्टितम् | १२. बच्चों के खेल के |
| देहिनः । | ५. प्राणियों को | यथा ॥ | १३. समान |

श्लोकार्थ—हाय ! विधाता, तुम्हें कहीं दया नहीं है। जो तुम प्राणियों को मित्रता और प्रेम से मिलाकर फिर बिना उनकी अभिलाषा पूर्ण किये व्यर्थ में अलग-अलग कर देते हो। बच्चों के खेल के समान यह तुम्हारा खिलवाड़ है ॥

## विंशः श्लोकः

**यस्त्वं प्रदर्श्यासितकुन्तलावृतं मुकुन्दवक्त्रं सुकपोलमुन्नसम् ।**
**शोकापनोदस्मितलेशसुन्दरं करोषि पारोक्ष्यमसाधु ते कृतम् ॥२०॥**

पदच्छेद— यः त्वम् प्रदर्श्य असितकुन्तल आवृतम् मुकुन्द वक्त्रम् सुकपोलम् उन्नसम् ।
शोक अपनोद स्मित लेश सुन्दरम् करोषि पारोक्ष्यम् असाधु ते कृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः त्वम् | १. जो तुम | शोक अपनोद | ६. शोक मिटाने वाली |
| प्रदर्श्य | १०. दिखा कर | स्मित | ७. मन्द मुसकान की |
| असित कुन्तल | २. काले घुंघराले बालों से | लेश सुन्दरम् | ८. सुन्दर रेखा से युक्त |
| आवृतम् | ३. आच्छादित (ढके हुये) | करोषि | १२. कर देते हो (यह) |
| मुकुन्द वक्त्रम् | ९. श्रीकृष्ण के मुख को | पारोक्ष्यम् | ११. आँखों से ओझल |
| सुकपोलम् | ४. सुन्दर कपोल | असाधु | १४. ठीक नहीं है |
| उन्नसम् । | ५. ऊँची नासिका (और) | ते कृतम् ॥ | १३. तुम्हारी करतूत |

श्लोकार्थ—जो तुम काले घुंघराले बालों से ढके हुये सुन्दर कपोल, ऊँची नासिका और शोक मिटाने वाली मन्द मुसकान की सुन्दर रेखा से युक्त श्रीकृष्ण के मुख को दिखा कर आँखों से ओझल कर देते हो। यह तुम्हारी करतूत ठीक नहीं है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**क्रूरस्त्वमक्रूरसमाख्यया स्म नश्चक्षुर्हि दत्तं हरसे बताज्ञवत् ।**
**येनैकदेशेऽखिलसर्गसौष्ठवं त्वदीयमद्राक्ष्म वयं मधुद्विषः ॥२१॥**

पदच्छेद— क्रूरः त्वम् अक्रूर सम् आख्यया स्म नः चक्षुः हि दत्ताम् हरसे बत अज्ञवत् ।
येन एक देशे अखिल सर्ग सौष्ठवम् त्वदीयम् अद्राक्ष्म वयम् मधुद्विषः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रूर | ४. | क्रूर-हो (जो) | येन | ९. | जिससे |
| त्वम् अक्रूर | २. | तुम अक्रूर के | एक देशे | १२. | एक-एक अङ्ग में |
| सम् आख्यया | ३. | नाम से | अखिल सर्ग | १४. | सम्पूर्ण सृष्टि का |
| स्म | ८. | हो (यह) | सौष्ठवम् | १५. | सौन्दर्य |
| नः चक्षुः हि दत्ताम् | ५. | हमें दी हुई आँखों को ही | त्वदीयम् | १३. | तुम्हारी |
| हरसे | ७. | छीन रहे हो | अद्राक्ष्म | १६. | देखती थीं |
| बत | १. | खेद की बात है कि | वयम् | १०. | हम |
| अज्ञवत् । | ६. | मूर्ख की भाँति | मधुद्विषः ॥ | ११. | श्रीकृष्ण के |

श्लोकार्थ—खेद की बात है कि तुम अक्रूर के नाम से क्रूर हो जो हमें दी हुई आँखों को ही मूर्ख की भाँति छीन रहे हो । जिससे हम श्रीकृष्ण के एक-एक अङ्ग में तुम्हारी सम्पूर्ण सृष्टि का सौन्दर्य देखती थीं ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**न नन्दसूनुः क्षणभङ्गसौहृदः समीक्षते नः स्वकृतातुरा बत ।**
**विहाय गेहान् स्वजनान् सुतान् पतींस्तद्दास्यमद्धोपगता नवप्रियः ॥२२॥**

पदच्छेद— न नन्द सूनुः क्षण भङ्ग सौहृदः समीक्षते नः स्वकृत आतुराः बत ।
विहाय गेहान् स्वजनान् सुतान् पतीन् तत् दास्यम् अद्धा उपगताः नव प्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ८. | नहीं | विहाय | १३. | छोड़ कर |
| नन्द सूनुः | ५. | श्रीकृष्ण | गेहान् | १०. | और हम घरों |
| क्षण | २. | क्षण भर में | स्वजनान् | ११. | स्वजनों |
| भङ्ग सौहृदः | ३. | सौहार्द को भंग कर देने वाले | सुतान् पतीन् | १२. | पुत्रों और पतियों को |
| समीक्षते | ९. | देख रहे हैं | तत् दास्यम् | १५. | उनकी दासी |
| नः | ७. | हमें | अद्धा | १४. | बिलकुल |
| स्वकृत आतुराः | ६. | अपने कृत्य से व्याकुल | उपगताः | १६. | बन गई हैं |
| बत । | १. | खेद की बात है कि | नव प्रियः ॥ | ४. | नये लोगों के प्यारे |

श्लोकार्थ—खेद की बात है कि क्षण भर में सौहार्द को भंग कर देने वाले नये लोगों के प्यारे श्रीकृष्ण अपने कृत्य से व्याकुल हमें नहीं देख रहे हैं । और हम घरों, स्वजनों, पुत्रों और पतियों को छोड़ कर बिलकुल उनकी दासी बन गई हैं ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**सुखं प्रभाता रजनीयमाशिषः सत्या बभूवुः पुरयोषितां ध्रुवम् ।**
**याः संप्रविष्टस्य मुखं व्रजस्पतेः पास्यन्त्यपाङ्गोत्कलितस्मितासवम् ॥२३॥**

पदच्छेद— सुखम् प्रभाता रजनी इयम् आशिषः सत्याः बभूवुः पुरयोषिताम् ध्रुवम् ।
याः संप्रविष्टस्य मुखम् व्रजस्पतेः पास्यन्ति अपाङ्ग उत्कलित स्मित आसवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुखम् | ४. | मंगलमय | याः संप्रविष्टस्य | ६. | जो मथुरा में प्रवेश करने वाले |
| प्रभाता | ५. | प्रभात से युक्त होगी | मुखम् | १४. | मुख के |
| रजनी इयम् | १. | यह रात | व्रजस्पतेः | १०. | व्रजराज के |
| आशिषः | ६. | उनकी अभिलाषायें | पास्यन्ति | १६. | पान करेंगी |
| सत्याः | ७. | सत्य ही पूर्ण | अपाङ्ग | ११. | तिरछी चितवन से |
| बभूवुः | ८. | होंगी | उत्कलित | १२. | उत्कण्ठित भरे |
| पुरयोषिताम् | २. | नगर की स्त्रियों के लिये | स्मित | १३. | मन्द मुसकान से युक्त |
| ध्रुवम् । | ३. | निश्चित ही | आसवम् ॥ | १५. | मादक मधु का |

श्लोकार्थ—यह रात नगर की स्त्रियों के लिये मङ्गलमय प्रभात से युक्त होगी। तथा उनकी अभिलाषायें सत्य ही पूर्ण होंगी। जो मथुरा में प्रवेश करने वाले व्रजराज के तिरछी चितवन से उत्कण्ठित मन्द मुसकान से युक्त मुख के मादक मधु का पान करेंगी ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**तासां मुकुन्दो मधुमञ्जुभाषितैर्गृहीतचित्तः परवान् मनस्व्यपि ।**
**कथं पुनर्नः प्रतियास्यतेऽबला ग्राम्याः सलज्जस्मितविभ्रमैर्भ्रमन् ॥२४॥**

पदच्छेद— तासाम् मुकुन्दः मधुमञ्जु भाषितैः गृहीत चित्तः परवान् मनस्वी अपि ।
कथम् पुनः नः प्रतियास्यते अबलाः ग्राम्याः सलज्ज स्मित विभ्रमैः भ्रमन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तासाम् | ३. | उन (नागरियों) के | कथम् | १३. | क्यों |
| मुकुन्दः | २. | श्रीकृष्ण | पुनः नः | ११. | फिर हम |
| मधुमञ्जु | ४. | मधुर एवं सुन्दर | प्रतियास्यते | १४. | लौटेंगे |
| भाषितैः गृहीत | ५. | वचनों से आकर्षित | अबलाः ग्राम्याः | १२. | गंवार स्त्रियों के पास |
| चित्तः | ६. | चित्त होकर | सलज्ज स्मित | ८. | लज्जा पूर्ण मुस्कराहट एवं |
| परवान् | ७. | पराधीन हो जायेंगे (तथा) | विभ्रमैः | ६. | विलास पूर्ण भाव-भंगिमा में |
| मनस्वी अपि । | १. | धैर्यवान् होने पर भी | भ्रमन् ॥ | १०. | रमे हुये होने पर |

श्लोकार्थ—धैर्यवान् होने पर भी श्रीकृष्ण उन नागरियों के मधुर एवं सुन्दर वचनों से आकर्षित चित्त हो कर पराधीन हो जायेंगे तथा लज्जापूर्ण मुसकराहट एवं विलासपूर्ण भाव भंगिमा में रमे हुये होने पर फिर हम गंवार स्त्रियों के पास क्यों लौटेंगे ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**अद्य ध्रुवं तत्र दृशो भविष्यते दाशार्हभोजान्धकवृष्णिसात्वताम् ।**
**महोत्सवः श्रीरमणं गुणास्पदं द्रक्ष्यन्ति ये चाध्वनि देवकीसुतम् ॥२५॥**

पदच्छेद— अद्य ध्रुवम् तत्र दृशः भविष्यते दाशार्ह भोज अन्धक वृष्णि सात्वताम् ।
महोत्सवः श्रीरमणम् गुण आस्पदम् द्रक्ष्यन्ति ये च अध्वनि देवकीसुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अद्यध्रुवम् | १. आज निश्चित ही | महोत्सवः | ७. महान् आनन्द प्राप्त |
| तत्र | २. वहाँ (मथुरा में) | श्रीरमणम् | १०. लक्ष्मीरमण |
| दृशः | ६. आँखों को | गुण | ११. गुणों के |
| भविष्यते | ८. होगा | आस्पदम् | १२. धाम |
| दाशार्ह भोज | ३. दाशार्ह, भोज | द्रक्ष्यन्ति | १४. देखेंगे |
| अन्धकवृष्णि | ४. अन्धक वृष्णि | ये च अध्वनि | ९. जो मार्ग में |
| सात्वताम् । | ५. सात्वतवंश वालों को | देवकीसुतम् ॥ | १३. देवकी पुत्र श्रीकृष्ण को |

श्लोकार्थ—आज निश्चित ही वहाँ मथुरा में दाशार्ह-भोज-अन्धक-वृष्णि और सात्वत वंश वालों की आँखों को महान् आनन्द होगा। जो मार्ग में लक्ष्मीरमण, गुणों के धाम, देवकी पुत्र श्रीकृष्ण को देखेंगे ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**मैतद्विधस्याकरुणस्य नाम भूदक्रूर इत्येतदतीव दारुणः ।**
**योऽसावनाश्वास्य सुदुःखितं जनं प्रियात्प्रियं नेष्यति पारमध्वनः ॥२६॥**

पदच्छेद— मा एतद्विधस्य अकरुणस्य नाम भूत् अक्रूर इति एतत् अतीव दारुणः ।
यः असौ अनाश्वास्य सुदुःखितम् जनम् प्रियात् प्रियम् न एष्यति पारम् अध्वनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मा | ६. नहीं | यः असौ | ८. जो यह |
| एतद्विधस्य | ३. इस प्रकार के | अनाश्वास्य | ११. सान्त्वना न देकर |
| अकरुणस्य | ४. करुणाहीन व्यक्ति का | सुदुःखितम् | ९. अत्यन्त दुःखी |
| नाम भूत् | ७. नाम होना चाहिये | जनम् | १०. जन को |
| अक्रूर इतिएतत् | ५. अक्रूर यह | प्रियात् प्रियम् | १२. प्रिय से भी प्रिय (परमप्रिय) को |
| अतीव | १. अत्यन्त | न एष्यति | १४. ले जा रहा है |
| दारुणः । | २. भयंकर और | पारम् अध्वनः ॥ | १३. मार्ग से परे (आँखों से दूर करके) |

श्लोकार्थ- अत्यन्त भयंकर और इस प्रकार के करुणाहीन व्यक्ति का अक्रूर यह नाम नहीं होना चाहिये। जो यह अत्यन्त दुःखी जन को सान्त्वना न देकर प्रिय से प्रिय को मार्ग से परे आँखों से दूर करके ले जा रहा है ॥

# सप्तविंशः श्लोकः

**अनार्द्रधीरेष समास्थितो रथं तमन्वमी च त्वरयन्ति दुर्मदाः ।**
**गोपा अनोभिः स्थविरैरुपेक्षितं दैवं च नोऽद्य प्रतिकूलमीहते ॥२७॥**

पदच्छेद— अनार्द्रधीः एषः सम् आस्थितः रथम् तम् अनु अमी च त्वरयन्ति दुर्मदाः ।
गोपाः अनोभिः स्थविरैः उपेक्षितम् दैवम् च नः अद्य प्रतिकूलम् ईहते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनार्द्रधीः | २. दयाहीन होकर | गोपाः अनोभिः | ७. गोपगण छकड़ों द्वारा जाने को |
| एषः | १. ये श्याम सुन्दर | स्थविरैः | १०. बूढ़े लोगों ने इनकी |
| सम् आस्थितः | ४. अच्छी प्रकार बैठ गये हैं | उपेक्षितम् | ११. उपेक्षा कर दी है |
| रथम् | ३. रथ पर | दैवम् | १२. दैव |
| तम् अनु अमी च | ५. और उनके पीछे | च | ९. और |
| त्वरयन्ति | ८. जल्दी मचा रहे हैं | नः अद्य | १३. आज हमारे |
| दुर्मदाः । | ६. मतवाले | प्रतिकूलम् ईहते ॥ | १४. प्रतिकूल चेष्टा कर रहा है |

श्लोकार्थ—ये श्याम सुन्दर दया हीन होकर रथ पर अच्छी प्रकार बैठ गये हैं । और उनके पीछे मतवाले गोप गण छकड़ों द्वारा जाने की जल्दी मचा रहा है । और बूढ़े लोगों ने तो उपेक्षा कर दी है । दैव आज हमारे प्रतिकूल चेष्टा कर रहा है ॥

# अष्टाविंशः श्लोकः

**निवारयामः समुपेत्य माधवं किं नोऽकरिष्यन् कुलवृद्धबान्धवाः ।**
**मुकुन्दसङ्गान्निमिषार्धदुस्त्यजाद् दैवेन विध्वंसितदीनचेतसाम् ॥२८॥**

पदच्छेद— निवारयामः समुपेत्य माधवम् किम् नः अकरिष्यन् कुल वृद्ध बान्धवाः ।
मुकुन्द सङ्गात् निमिषार्ध दुस्त्यजात् दैवेन विध्वंसित दीन चेतसाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निवारयामः | ३. रोकेंगी | मुकुन्द | १३. भगवान् का |
| समुपेत्य | २. चलकर हम उन्हें | सङ्गात् | १४. सङ्ग |
| माधवम् | १. श्याम सुन्दर के पास | निमिषार्ध | १५. आधे क्षण के लिये भी |
| किम् | ७. क्या | दुस्त्यजात् | १६. त्यागने योग्य नहीं है |
| नः | ६. हमारा | दैवेन | ९. भाग्य के द्वारा |
| अकरिष्यन् | ८. कर लेंगे | विध्वंसित | १०. नष्ट किये गये |
| कुलवृद्ध | ४. कुल के बड़े-बूढे और | दीन | ११. दुःखी |
| बान्धवाः । | ५. बन्धु जन | चेतसाम् ॥ | १२. चित्त वाली (हमारे लिये) |

श्लोकार्थ—श्यामसुन्दर के पास चलकर हम उन्हें रोकेंगी । कुल के बड़े-बूढ़े और बन्धु जन हमारा क्या कर लेंगे । भाग्य के द्वारा नष्ट किये गये दुःखी चित्त वाली हमारे लिये भगवान् का सङ्ग आधे क्षण के लिये भी त्यागने योग्य नहीं है ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**यस्यानुरागललितस्मितवल्गुमन्त्रलीलावलोकपरिरम्भणरासगोष्ठ्याम् ।**
**नीताः स्म नः क्षणमिव क्षणदा विना तं गोप्यः कथं न्वतितरेम तमो दुरन्तम्॥२९॥**

पदच्छेद— यस्य अनुराग ललित स्मित वल्गु मन्त्र लीला अवलोक परिरम्भण रास गोष्ठ्याम् ।
नीताः स्म नः क्षणम् इव क्षणदाः विना तम् गोप्यः कथम्नुअतितरेम तमः दुरन्तम् ।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यस्य अनुराग | २. | जिनकी प्रेम भरी | नीताः स्म | १३. | बिता दी थी |
| ललित स्मित | ३. | मनोहर मुसकान | नः | ८. | हमने |
| वल्गु मन्त्र | ४. | मधुर बात चीत | क्षणम् इव | १२. | एक क्षण के समान |
| लीला | ५. | विलास पूर्ण | क्षणदाः | ११. | रात्रियाँ |
| अवलोक | ६. | चितवन और | विना तम् | १४. | उनके बिना |
| परिरम्भण | ७. | आलिंगन से | गोप्यः | १. | हे गोपियो ! |
| रास | ९. | रास | कथम्नुअतितरेम | १६. | कैसे पार कर पायेंगी |
| गोष्ठ्याम् । | १०. | लीला की वे | तमः दुरन्तम् ।। | १५. | अपार विरह व्यथा को |

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! जिनकी प्रेमभरी मनोहर मुसकान, मधुर बातें, विलास पूर्ण चितवन और आलिंगन से हमने रासलीला की वे रात्रियाँ एक क्षण के समान बिता दी थीं, उनके बिना अपार व्यथा को कैसे पार कर पायेंगी ।।

## त्रिंशः श्लोकः

**योऽह्नः क्षये व्रजमनन्तसखः परीतो गोपैर्विशन् खुररजश्छुरितालकस्रक् ।**
**वेणुं क्वणन् स्मितकटाक्षनिरीक्षणेन चित्तं क्षिणोत्यमुमृते नु कथं भवेम ॥३०॥**

पदच्छेद— यः अह्नः क्षये व्रजम् अनन्तसखः परितः गोपैः विशन् खुररजः छुरितालकस्रक् ।
वेणुम् क्वणन् स्मित कटाक्ष निरीक्षणेन चित्तम् क्षिणोति अमुम् ऋते नु कथम् भवेम ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यः | ५. | जो श्रीकृष्ण | वेणुम् क्वणन् | १०. | बाँसुरी बजाते हुये |
| अह्नः क्षये | १. | प्रतिदिन सायंकाल में | स्मित | ११. | मुस्कराते और |
| व्रजम् | ८. | व्रज में | कटाक्ष | १२. | तिरछी |
| अनन्तसखः | ७. | बलराम जी के साथ | निरीक्षणेन | १३. | चितवन से हमारे |
| परितः गोपैः | ६. | ग्वालवालों से घिरे हुये | चित्तम् क्षिणोति | १४. | चित्त को वेध डालते हैं |
| विशन् | ९. | प्रवेश करते हुये (तथा) | अमुम् | १५. | उनके |
| खुररजः | २. | गौओं की खुर की धूली से | ऋते नु | १६. | बिना भला हम |
| छुरितालक | ३. | ढके हुये घुंघराले बाल | कथम् भवेम ।। | १७. | कैसे रहेंगी |
| स्रक् । | ४. | और पुष्प हार वाले | | | |

श्लोकार्थ—प्रतिदिन सायंकाल में गौओं के खुर की धूली से ढके हुये घुंघराले बाल और पुष्पहार वाले जो श्रीकृष्ण ग्वालों से घिरे हुये बलराम जी के साथ व्रज में प्रवेश करते हुये तथा बाँसुरी बजाते हुये मुस्कराते और तिरछी चितवन से हमारे चित्त को बेध डालते हैं उनके बिना हम कैसे रहेंगी ।।

## एकत्रिंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—एवं ब्रुवाणा विरहातुरा भृशं व्रजस्त्रियः कृष्णविषक्तमानसाः ।**
**विसृज्य लज्जां रुरुदुः स्म सुस्वरं गोविन्द दामोदर माधवेति॥३१॥**

पदच्छेद— एवम् ब्रुवाणाः विरह आतुराः भृशम् व्रजस्त्रियः कृष्ण विषक्त मानसाः ।
विसृज्य लज्जाम् रुरुदुः स्म सुस्वरम् गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | विसृज्य | १०. | त्याग कर |
| ब्रुवाणाः | २. | कहती हुई | लज्जाम् | ९. | लज्जा |
| विरह आतुराः | ८. | विरह से व्याकुल होकर | रुरुदुः | १५. | रोने |
| भृशम् | ७. | अत्यन्त | स्म | १६. | लगीं |
| व्रजस्त्रियः | ६. | व्रज की गोपियाँ | सुस्वरम् | १४. | ललित स्वर से |
| कृष्ण | ३. | कृष्ण में | गोविन्द | ११. | हे गोविन्द ! |
| विषक्त | ४. | आसक्त | दामोदर | १२. | हे दामोदर |
| मानसाः । | ५. | मन वाली | माधवेति ॥ | १३. | हे माधव ! इस प्रकार (कह कर) |

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहती हुई कृष्ण में आसक्त मन वाली व्रज की गोपियाँ अत्यन्त विरह से व्याकुल होकर लज्जा छोड़ कर हे गोविन्द, हे दामोदर, हे माधव इस प्रकार कह कर ललित स्वर से रोने लगीं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**स्त्रीणामेवं रुदन्तीनामुदिते सवितर्यथ ।**
**अक्रूरश्चोदयामास कृतमैत्रादिको रथम् ॥३२॥**

पदच्छेद— स्त्रीणाम् एवम् रुदन्तीनाम् उदिते सवितरि अथ ।
अक्रूरः चोदयामास कृत मैत्रादिकः रथम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्त्रीणाम् | १. | गोपियाँ | अक्रूरः | ८. | अक्रूर जी |
| एवम् | २. | इस प्रकार | चोदयामास | १०. | हाँकने लगे |
| रुदन्तीनाम् | ३. | रो रही थीं | कृत | ७. | निवृत्त होकर |
| उदिते | ५. | उदय होने पर | मैत्रादिकः | ६. | सन्ध्यावन्दनादि से |
| सवितरि अथ । | ४. | अनन्तर सूर्य के | रथम् ॥ | ९. | रथ को |

श्लोकार्थ—गोपियाँ इस प्रकार रो रही थीं । अनन्तर सूर्य के उदय होने पर सन्ध्यावन्दनादि से निवृत्त होकर अक्रूर जी रथ को हाँकने लगे ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**गोपास्तमन्वसज्जन्त नन्दाद्याः शकटैस्ततः ।**
**आदायोपायनं भूरि कुम्भान् गोरससम्भृतान् ॥३३॥**

पदच्छेद— गोपाः तम् अनुअसज्जन्त नन्द आद्याः शकटैः ततः ।
आदाय उपायनम् भूरि कुम्भान् गोरस सम्भृतान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोपाः | ३. | गोप गण | आदाय | ९. | लेकर |
| तम् | ११. | उनके | उपायनम् | ८. | भेंट की सामग्रियाँ |
| अनुअसज्जन्त | १२. | पीछे-पीछे चले | भूरि | ७. | बहुत सी |
| नन्द आद्याः | २. | नन्द आदि | कुम्भान् | ६. | मटके (तथा) |
| शकटैः | १०. | छकड़ों से | गोरस | ४. | गोरस (दूध दही आदि से) |
| ततः । | १. | तदनन्तर | सम्भृतान् ॥ | ५. | भरे हुये |

श्लोकार्थ—तदनन्तर नन्द आदि गोपगण गोरस दूध-दही आदि से भरे हुये मटके तथा बहुत सी भेंट की सामग्रियाँ लेकर उनके पीछे-पीछे चले ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**गोप्यश्च दयितं कृष्णमनुव्रज्यानुरञ्जिताः ।**
**प्रत्यादेशं भगवतः काङ्क्षन्त्यश्चावतस्थिरे ॥३४॥**

पदच्छेद— गोप्यः च दयितम् कृष्णम् अनुव्रज्य अनुरञ्जिताः ।
प्रति आदेशम् भगवतः काङ्क्षन्त्यः च अवतस्थिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | २. | गोपियाँ | प्रति आदेशम् | ९. | सन्देश |
| च | ३. | भी | भगवतः | ८. | भगवान् से |
| दयितम् | ४. | प्रियतम | काङ्क्षन्त्यः | १०. | पाने की इच्छा से |
| कृष्णम् | ५. | कृष्ण के | च | ७. | और |
| अनुव्रज्य | ६. | पीछे-पीछे चल कर | अवतस्थिरे ॥ | ११. | खड़ी हो गयीं |
| अनुरञ्जिताः । | १. | अनुरक्त | | | |

श्लोकार्थ—अनुरक्त गोपियाँ भी प्रियतम कृष्ण के पीछे-पीछे चल कर और भगवान् से सन्देश पाने की इच्छा से खड़ी हो गईं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**तास्तथा तप्यतीर्वीक्ष्य स्वप्रस्थाने यदूत्तमः ।**
**सान्त्वयामास सप्रेमैरायास्य इति दौत्यकैः ॥३५॥**

पदच्छेद— ताः तथा तप्यतीः वीक्ष्य स्व प्रस्थाने यदूत्तमः ।
सान्त्वयामास सप्रेमैः आयास्ये इति दौत्येकैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | ६. | उन गोपियों को | यदूत्तमः । | १. | यदुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण ने |
| तथा | ४. | इस प्रकार | सान्त्वयामास | १२. | धीरज बंधाया |
| तप्यतीः | ५. | सन्तप्त होती हुई | सप्रेमैः | ११. | प्रेम सन्देश देकर |
| वीक्ष्य | ७. | देख कर | आयास्ये | ९. | मैं आऊंगा |
| स्व | २. | अपनी | इति | १०. | यह |
| प्रस्थाने | ३. | यात्रा करने पर | दौत्येकैः ॥ | ८. | दूतों के द्वारा |

श्लोकार्थ—यदुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण ने अपनी यात्रा करने पर इस प्रकार सन्तप्त होती हुई उन गोपियों को देख कर दूतों के द्वारा मैं आऊंगा यह प्रेम सन्देश देकर धीरज बंधाया ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**यावदालक्ष्यते केतुर्यावद् रेणू रथस्य च ।**
**अनुप्रस्थापितात्मानो लेख्यानीवोपलक्षिताः ॥३६॥**

पदच्छेद— यावत् आलक्ष्यते केतुः यावत् रेणुः रथस्य च ।
अनुप्रस्थापित आत्मानः लेख्यानि इव उपलक्षिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यावत् | १. | जब-तक | च । | ४. | और |
| आलक्ष्यते | ६. | दिखाई देती रही | अनुप्रस्थापित | १२. | खड़े रहे |
| केतुः | ३. | ध्वजा | आत्मानः | ११. | उनके शरीर |
| यावत् | ७. | तब-तक | लेख्यानि | ८. | चित्र लिखित के |
| रेणुः | ५. | धूल | इव | ९. | समान |
| रथस्य | २. | रथ की | उपलक्षिता ॥ | १०. | ज्यों के त्यों |

श्लोकार्थ—जब-तक रथ की ध्वजा और धूल दिखाई देती रही तब-तक चित्रलिखित के समान ज्यों के त्यों उनके शरीर खड़े रहे ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**ता निराशा निववृतुर्गोविन्दविनिवर्तने ।**
**विशोका अहनी निन्युर्गायन्त्यः प्रियचेष्टितम् ॥३७॥**

पदच्छेद— ताः निराशाः निववृतुः गोविन्द विनिवर्तने ।
विशोकाः अहनी निन्युः गायन्त्यः प्रियचेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | ३. | वे गोपियाँ | विशोकाः | ९. | शोक रहित होकर |
| निराशाः | ४. | निराश होकर | अहनी | ६. | रात-दिन |
| निववृतुः | ५. | लौट गईं (और) | निन्युः | १०. | दिन बताने लगीं |
| गोविन्द | १. | श्रीकृष्ण के | गायन्त्यः | ८. | गान करती हुई |
| विनिवर्तने । | २. | लौटाने के सम्बन्ध में | प्रियचेष्टितम् ॥ | ७. | प्रियतम की लीलाओं का |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के लौटाने के सम्बन्ध में वे गोपियाँ निराश होकर लौट गईं । और रात-दिन प्रियतम की लीलाओं का गान करती हुई शोकरहित होकर दिन बिताने लगीं ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**भगवानपि सम्प्राप्तो रामाक्रूरयुतो नृप ।**
**रथेन वायुवेगेन कालिन्दीमघनाशिनीम् ॥३८॥**

पदच्छेद— भगवान् अपि सम्प्राप्तः राम अक्रूरयुतः नृप ।
रथेन वायु वेगेन कालिन्दीम् अघ नाशिनीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवान् | २. | श्रीकृष्ण | रथेन | ८. | रथ से |
| अपि | ३. | भी | वायु | ६. | वायु के समान |
| सम्प्राप्तः | १२. | पहुँच गये | वेगेन | ७. | वेग वाले |
| राम | ४. | बलराम और | कालिन्दीम् | ११. | यमुना के किनारे |
| अक्रूरयुतः | ५. | अक्रूर के साथ | अघ | ९. | पाप |
| नृप । | १. | हे राजन् ! | नाशिनीम् ॥ | १०. | नाशिनी |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! श्रीकृष्ण भी बलराम और अक्रूर जी के साथ वायु के समान वेग वाले रथ से पापनाशिनी यमुना के किनारे पहुँच गये ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**तत्रोपस्पृश्य पानीयं पीत्वा मृष्टं मणिप्रभम् ।**
**वृक्षषण्डमुपव्रज्य सरामो रथमाविशत् ॥३९॥**

पदच्छेद— तत्र उपस्पृश्य पानीयम् पीत्वा मृष्टम् मणिप्रभम् ।
वृक्ष षण्डम् उपव्रज्य सरामः रथम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. | वहाँ | वृक्ष | ७. | वृक्षों के |
| उपस्पृश्य | २. | आचमन करके | षण्डम् | ८. | झुरमुट से |
| पानीयम् | ५. | जल | उपव्रज्य | ९. | जाकर |
| पीत्वा | ६. | पीकर | सरामः | १०. | बलराम जी के साथ |
| मृष्टम् | ३. | स्वच्छ एवं | रथम् | ११. | रथ पर |
| मणिप्रभम् । | ४. | मणि के समान कान्ति वाला | आविशत् ॥ | १२. | बैठ गये |

श्लोकार्थ—वहाँ आचमन करके स्वच्छ एवं मणि के समान कान्ति वाला जल पीकर वृक्षों के झुरमुट से जाकर बलराम जी के साथ रथ पर बैठ गये ॥

# चत्वारिंशः श्लोकः

**अक्रूरस्तावुपामन्त्र्य निवेश्य च रथोपरि ।**
**कालिन्द्या ह्रदमागत्य स्नानं विधिवदाचरत् ॥४०॥**

पदच्छेद— अक्रूरः तौ उपामन्त्र्य निवेश्य च रथ उपरि ।
कालिन्द्याः ह्रदम् आगत्य स्नानम् विधिवत् आचरत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अक्रूरः | १. | अक्रूर जी | कालिन्द्याः | ७. | यमुना जी के |
| तौ | २. | उन दोनों (भाइयों को) | ह्रदम् | ८. | कुण्ड पर |
| उपामन्त्र्य | ६. | उनसे आज्ञा लेकर | आगत्य | ९. | आये (और) |
| निवेश्य | ४. | बैठा कर | स्नानम् | ११. | स्नान |
| च | ५. | और | विधिवत् | १०. | विधि पूर्वक |
| रथ उपरि । | ३. | रथ पर | आचरत् ॥ | १२. | करने लगे |

श्लोकार्थ—अक्रूर जी उन दोनों भाइयों को रथ पर बैठा कर और उनसे आज्ञा लेकर यमुना जी के कुण्ड पर आये और विधि पूर्वक स्नान करने लगे ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**निमज्ज्य तस्मिन् सलिले जपन् ब्रह्म सनातनम् ।**
**तावेव ददृशेऽक्रूरो रामकृष्णौ समन्वितौ ॥४१॥**

पदच्छेद—
निमज्ज्य तस्मिन् सलिले जपन् ब्रह्म सनातनम् ।
तौ एव ददृशे अक्रूरः राम कृष्णौ समन्वितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निमज्ज्य | २. | स्नान करके | तौ एव | ८. | उन्हीं दोनों |
| तस्मिन् | १. | उस कुण्ड में | ददृशे | १२. | देखा |
| सलिले | ३. | जल में | अक्रूरः | ७. | वहाँ अक्रूर जी ने |
| जपन् | ६. | जप करने लगे | राम | ९. | राम और |
| ब्रह्म | ५. | ब्रह्म (गायत्री) का | कृष्णौ | १०. | श्रीकृष्ण को |
| सनातनम् । | ४. | सनातन | समन्वितौ ॥ | ११. | एक साथ |

श्लोकार्थ—उस कुण्ड में स्नान करके जल में सनातन ब्रह्म गायत्री का जप करने लगे । वहाँ अक्रूर जी ने उन्हीं दोनों राम और कृष्ण को एक साथ देखा ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तो रथस्थौ कथमिह सुतावानकदुन्दुभेः ।**
**तर्हि स्वित् स्यन्दने न स्त इत्युन्मज्ज्य व्यचष्ट सः ॥४२॥**

पदच्छेद—
तो रथस्थो कथम् इह सुतो आनक दुन्दुभेः ।
तर्हि स्वित् स्यन्दने न स्तः इति उन्मज्ज्य व्यचष्ट सः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तौ | १. | वे दोनों | तर्हिस्वित् | ७. | तो कदाचित् वे |
| रथस्थौ | ४. | रथ पर बैठे हैं | स्यन्दने न स्तः | ८. | रथ पर न हों |
| कथम् | ६. | कैसे आये | इति | ९. | ऐसा सोच कर |
| इह | ५. | यहाँ | उन्मज्ज्य | ११. | सिर बाहर निकाल कर |
| सुतौ | ३. | पुत्र | व्यचष्ट | १२. | देखा |
| आनक दुन्दुभेः । | २. | वसुदेव जी के | सः ॥ | १०. | उन्होंने |

श्लोकार्थ—वे दोनों वसुदेव जी के पुत्र रथ पर बैठे हैं । यहाँ कैसे आये । तो कदाचित् वे रथ पर न हों । ऐसा सोच कर उन्होंने सिर बाहर निकाल कर देखा ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तत्रापि च यथापूर्वमासीनौ पुनरेव सः ।**
**न्यमज्जद् दर्शनं यन्मे मृषा किं सलिले तयोः ॥४३॥**

पदच्छेद—
तत्रापि च यथा पूर्वम् आसीनौ पुनः एव सः ।
निअमज्जत् दर्शनम् यत् मे मृषा किम् सलिले तयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत्रापि | २. वहाँ भी | निअमज्जत् | ८. डुबकी लगाई कि |
| च | १. और | दर्शनम् | १२. दर्शन हुआ वह |
| यथा | ४. भाँति (वे) | यत् मे | १०. जो मुझे |
| पूर्वम् | ३. पहले की | मृषा | १४. मिथ्या था |
| आसीनौ | ५. बैठे हुये थे | किम् | १३. क्या |
| पुनः एव | ६. फिर | सलिले | ९. जल में |
| सः । | ७. उन्होंने (यह सोच कर) | तयोः ॥ | ११. उन दोनों का |

श्लोकार्थ—और वहाँ भी पहले की भाँति वे बैठे हुये थे। फिर उन्होंने यह सोच कर डुबकी लगाई कि जल में जो मुझे उन दोनों का दर्शन हुआ वह क्या मिथ्या था ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**भूयस्तत्रापि सोऽद्राक्षीत् स्तूयमानमहीश्वरम् ।**
**सिद्धचारणगन्धर्वैरसुरैर्नतकन्धरैः ॥४४॥**

पदच्छेद—
भूयः तत्रापि सः अद्राक्षीत् स्तूयमानम् अहीश्वरम् ।
सिद्ध चारण गन्धर्वैः असुरैः नत कन्धरैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भूयः | ३. पुनः | सिद्ध | ७. सिद्ध |
| तत्रापि | १. वहाँ भी | चारण | ८. चारण |
| सः | २. उन्होंने | गन्धर्वैः | ९. गन्धर्व |
| अद्राक्षीत् | ४. देखा कि | असुरैः | १०. असुर |
| स्तूयमानम् | १२. स्तुति कर रहे हैं | नत | ६. झुकाये |
| अहीश्वरम् । | ११. अनन्त देव शेष जी की | कन्धरैः ॥ | ५. गर्दन |

श्लोकार्थ—वहाँ भी उन्होंने पुनः देखा कि गर्दन झुकाये सिद्ध, चारण, गन्धर्व असुर अनन्तदेव शेष जी की स्तुति कर रहे हैं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

सहस्रशिरसं देवं सहस्रफणमौलिनम् ।
नीलाम्बरं विसश्वेतं शृङ्गैः श्वेतमिव स्थितम् ॥४५॥

पदच्छेद— सहस्र शिरसम् देवम् सहस्र फण मौलिनम् ।
नीलाम्बरम् बिसश्वेतम् शृङ्गैः श्वेतम् इव स्थितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सहस्र | २. | हजार | नीलाम्बरम् | ७. | वे नीला वस्त्र पहने थे |
| शिरसम् | ३. | सिर हैं (और) | बिसश्वेतम् | ८. | कमल नाल के समान श्वेत हैं (और) |
| देवम् | १. | अनन्त देव के | शृङ्गैः | ९. | शिखरों से युक्त |
| सहस्र | ४. | हजार | श्वेतम् | १०. | कैलास पर्वत के |
| फण | ५. | फणों पर | इव | ११. | समान |
| मौलिनम् । | ६. | मुकुट शोभित हैं | स्थितम् ॥ | १२. | विराजमान हैं |

श्लोकार्थ—अनन्त देव के हजार सिर हैं। और हजार फणों पर मुकुट सुशोभित हैं। वे नीला वस्त्र पहने हैं। कमल नाल के समान श्वेत हैं। और कैलास पर्वत के समान विराजमान हैं ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्योत्सङ्गे घनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ।
पुरुषं चतुर्भुजं शान्तं पद्मपत्रारुणेक्षणम् ॥४६॥

पदच्छेद— तस्य उत्सङ्गे घनश्यामम् पीत कौशेय वाससम् ।
पुरुषम् चतुर्भुजम् शान्तम् पद्मपत्र अरुण ईक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्य | १. | उनकी | पुरुषम् | १२. | पुरुष को देखा |
| उत्सङ्गे | २. | गोद में | चतुर्भुजम् | ८. | चार भुजा वाले और |
| घनश्यामम् | ३. | मेघ के समान साँवले | शान्तम् | ७. | शान्त स्वरूप |
| पीत | ४. | पीले | पद्मपत्र | ९. | कमल दल के समान |
| कौशेय | ५. | रेशमी | अरुण | १०. | रतनारे |
| वाससम् । | ६. | वस्त्र पहने हुये | ईक्षणम् ॥ | ११. | नेत्र वाले |

श्लोकार्थ—उनकी गोद में मेघ के समान साँवले पीले, रेशमी वस्त्र पहने हुये, शान्त स्वरूप, चार भुजा वाले और कमल दल के समान रतनारे नेत्र वाले पुरुष को देखा ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

चारुप्रसन्नवदनं　　चारुहासनिरीक्षणम् ।
सुभ्रून्नसं चारुकर्णं सुकपोलारुणाधरम् ॥४७॥

पदच्छेद— चारु प्रसन्न वदनम् चारु हास निरीक्षणम् ।
सुभ्रु उन्नसम् चारुकर्णम् सुकपोल अरुण अधरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| चारु | २. सुन्दर और | सुभ्रु | ७. भौंहें सुन्दर |
| प्रसन्न | ३. प्रसन्न था | उन्नसम् | ८. नासिका ऊंची |
| वदनम् | १. उनका मुख | चारुकर्णम् | ९. कान मनोहर |
| चारु | ६. मनोहर थी | सुकपोल | १०. कपोल सुन्दर और |
| हास | ४. हंसी और | अरुण | १२. लाल थे |
| निरीक्षणम् । | ५. चितवन | अधरम् ॥ | ११. अधर |

श्लोकार्थ—उनका मुख सुन्दर और प्रसन्न था। हंसी और चितवन मनोहर थी। भौंहें सुन्दर, नासिका ऊंची, कान मनोहर, कपोल सुन्दर और अधर लाल थे ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

प्रलम्बपीवरभुजं　　तुङ्गांसोरःस्थलश्रियम् ।
कम्बुकण्ठं निम्ननाभिं वलिमत्पल्लवोदरम् ॥४८॥

पदच्छेद— प्रलम्ब पीवर भुजम् तुङ्ग अंस उरः स्थल श्रियम् ।
कम्बु कण्ठम् निम्ननाभिम् वलिमत् पल्लव उदरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रलम्ब | १. लम्बी और | कम्बु | ८. शङ्ख के समान |
| पीवर | २. मोटी | कण्ठम् | ७. गला |
| भुजम् | ३. भुजायें थीं | निम्ननाभिम् | ९. नाभि गहरी |
| तुङ्ग अंस | ४. कन्धे ऊँचे और | वलिमत् | १०. त्रिवलि युक्त तथा |
| उरः स्थल | ५. वक्षः स्थल | पल्लव | १२. पीपल के पत्ते के समान था |
| श्रियम् । | ६. लक्ष्मी का निवास है | उदरम् ॥ | ११. उदर |

श्लोकार्थ—लम्बी और मोटी भुजायें थीं। कन्धे ऊँचे और वक्षः स्थल लक्ष्मी का निवास है। गला शङ्ख के समान, नाभि गहरी त्रिवलि युक्त तथा उदर पीपल के पत्ते के समान था ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

बृहत्कटितटश्रोणिकरभोरुद्वयान्वितम् ।
चारुजानुयुगं चारुजङ्घायुगलसंयुतम् ॥४९॥

पदच्छेद— बृहत् कटितट श्रोणि करभ ऊरुद्वय अन्वितम् ।
चारुजानु युगम् चारु जङ्घा युगल संयुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बृहत् | ३. | स्थूल थे वे | चारुजानु | ८. | सुन्दर घुटनों (एवम्) |
| कटितट | १. | कटि प्रदेश और | युगम् | ७. | दोनों |
| श्रोणि | २. | नितम्ब | चारु | ९. | मनोहर |
| करभ | ४. | हाथी की सूंड़ के समान | जङ्घा | ११ | पिंडलियों से |
| ऊरुद्वय | ५. | दोनों जांघों से | युगल | १०. | दोनों |
| अन्वितम् । | ६. | युक्त तथा | संयुतम् ॥ | १२. | सुशोभित थे |

श्लोकार्थ—कटि प्रदेश और नितम्ब स्थूल थे वे हाथी की सूंड़ के समान दोनों जांघों से युक्त तथा दोनों सुन्दर घुटनों एवम् मनोहर दोनों पिंडलियों से सुशोभित थे ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

तुङ्गगुल्फारुणनखव्रातदीधितिभिर्वृतम् ।
नवाङ्गुल्यङ्गुष्ठदलैर्विलसत्पादपङ्कजम् ॥५०॥

पदच्छेद— तुङ्ग गुल्फ अरुण नखव्रात दीधितिभिः वृतम् ।
नव अङ्गुली अंगुष्ठ दलैः विलसत् पाद पङ्कजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तुङ्ग | २. | उभरी हुई थीं | नव | ११. | नयी |
| गुल्फ | १. | एड़ी के ऊपर की गाँठें | अङ्गुली | ९. | अंगुलियाँ और |
| अरुण | ३. | लाल-लाल | अंगुष्ठ दलैः | १०. | अंगुठे पंखुड़ियों के समान |
| नखव्रात | ४. | नख-समूहों की | विलसत् | १२. | सुशोभित थे |
| दीधितिभिः | ५. | किरणों से | पाद | ७. | चरण |
| वृतम् । | ६. | युक्त | पङ्कजम् ॥ | ८. | कमल की |

श्लोकार्थ—एड़ी के ऊपर की गाँठें उभरी हुई थीं। लाल-लाल नख समूहों की किरणों से युक्त चरण कमल की अंगुलियाँ और अंगूठे नयी पंखुड़ियों के समान सुशोभित थे ॥

## एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुमहार्हमणिव्रातकिरीटकटकाङ्गदैः ।
कटिसूत्रब्रह्मसूत्रहारनूपुरकुण्डलैः ॥५१॥

पदच्छेद— सुमहार्ह मणिव्रात किरीट कटक अङ्गदैः ।
कटिसूत्र ब्रह्मसूत्र हार नूपुर कुण्डलैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुमहार्ह | १. | वे अत्यन्त बहुमूल्य | कटिसूत्र | ६. | करधनी |
| मणिव्रात | २. | मणियों से जड़े हुये | ब्रह्मसूत्र | ७. | यज्ञोपवीत |
| किरीट | ३. | मुकुट | हार | ८. | हार |
| कटक | ४. | कड़े और | नूपुर | ९. | नूपुर और |
| अङ्गदैः । | ५. | बाजूबन्द | कुण्डलैः ॥ | १०. | कुण्डलों से विभूषित थे |

श्लोकार्थ—वे अत्यन्त बहुमूल्य मणियों से जड़े हुये मुकुट, कड़े, बाजूबन्द, करधनी, यज्ञोपवीत, हार, नूपुर और कुण्डलों से विभूषित थे ॥

## द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

भ्राजमानं पद्मकरं शङ्खचक्रगदाधरम् ।
श्रीवत्सवक्षसं भ्राजत्कौस्तुभं वनमालिनम् ॥५२॥

पदच्छेद— भ्राजमानम् पद्म करम् शङ्ख चक्र गदाधरम् ।
श्रीवत्स वक्षसम् भ्राजत् कौस्तुभम् वन मालिनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भ्राजमानम् | ३. | शोभायमान था | श्रीवत्स | ८. | श्रीवत्स का चिह्न |
| पद्म | २. | कमल | वक्षसम् | ७. | वक्षः स्थल पर |
| करम् | १. | एक हाथ में | भ्राजत् | ९. | सुशोभित था |
| शङ्ख | ४. | अन्य हाथों में शङ्ख | कौस्तुभम् | १०. | गले में कौस्तुभ मणि और |
| चक्र | ५. | चक्र और | वन | ११. | वन |
| गदाधरम् । | ६. | गदा धारण किये थे | मालिनम् ॥ | १२. | माला पहने थे |

श्लोकार्थ—एक हाथ में कमल शोभायमान था। अन्य हाथों में शङ्ख, चक्र और गदा धारण किये थे। वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का चिह्न सुशोभित था। गले में कौस्तुभ मणि और वन माला पहने थे ॥

## त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुनन्दनन्दप्रमुखैः पार्षदैः सनकादिभिः ।
सुरेशैर्ब्रह्मरुद्राद्यैर्नवभिश्च द्विजोत्तमैः ॥५३॥

पदच्छेद— सुनन्द नन्द प्रमुखैः पार्षदैः सनक आदिभिः ।
सुरेशैः ब्रह्मरुद्र आद्यैः नवभिः च द्विजोत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुनन्द | १. सुनन्द | सुरेशैः | ९. देवेश्वर |
| नन्द | २. नन्द | ब्रह्मरुद्र | ७. ब्रह्मा-शंकर |
| प्रमुखैः | ३. आदि | आद्यैः | ८. इत्यादि |
| पार्षदैः | ४. पार्षद | नवभिः | ११. नौ |
| सनक | ५. सनक | च | १०. और (मरीचि आदि) |
| आदिभिः । | ६. आदि | द्विजोत्तमैः ॥ | १२. द्विजवर उनकी स्तुति कर रहे थे |

श्लोकार्थ—सुनन्द, नन्द आदि पार्षद, सनक आदि, ब्रह्मा, शंकर इत्यादि देवेश्वर और मरीचि आदि द्विजवर उनकी स्तुति कर रहे थे ॥

## चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रह्लादनारदवसुप्रमुखैर्भागवतोत्तमैः ।
स्तूयमानं पृथग्भावैर्वचोभिरमलात्मभिः ॥५४॥

पदच्छेद— प्रह्लाद नारद वसु प्रमुखैः भागवत उत्तमैः ।
स्तूयमानम् पृथक् भावैः वचोभिः अमल आत्मभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रह्लाद | ३. प्रह्लाद | स्तूयमानम् | १२. (भगवान् की स्तुति कर रहे थे) |
| नारद | ४. नारद | पृथक् | ९. भिन्न-भिन्न |
| वसु | ५. वसु | भावैः | १०. भाव वाले |
| प्रमुखैः | ६. आदि | वचोभिः | ११. वचनों से |
| भागवत | ८. भगवत् भक्त | अमल | १. निर्मल |
| उत्तमैः । | ७. श्रेष्ठ | आत्मभिः ॥ | २. अन्तः करण वाले |

श्लोकार्थ—निर्मल अन्तः करण वाले प्रह्लाद, नारद, वसु आदि श्रेष्ठ भगवद् भक्त भिन्न-भिन्न भाव वाले वचनों से भगवान् की स्तुति कर रहे थे ॥

## पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**श्रिया पुष्ट्या गिरा कान्त्या कीर्त्या तुष्ट्येलयोर्जया ।**
**विद्ययाविद्यया शक्त्या मायया च निषेवितम् ॥५५॥**

पदच्छेद— श्रिया पुष्टया गिरा कान्त्या कीर्त्या तुष्टया इलया ऊर्जया ।
विद्यया अविद्यया शक्त्या मायया च निषेवितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| श्रिया | १. लक्ष्मी | ऊर्जया । | ८. | ऊर्जा (लीला शक्ति) |
| पुष्टया | २. पुष्टि | विद्यया | ९. | विद्या |
| गिरा | ३. सरस्वती | अविद्यया | १०. | अविद्या |
| कान्त्या | ४. कान्ति | शक्त्या | १२. | शक्तियाँ |
| कीर्त्या | ५. कीर्ति | मायया | ११. | माया |
| तुष्टया | ६ तुष्टि | च | १२. | और |
| इलया | ७. इला (पृथ्वी शक्ति) | निषेवितम् ॥ | १३. | उनकी सेवा कर रही थीं |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी, पुष्टि सरस्वती, कान्ति, कीर्ति, तुष्टि, इला (पृथ्वी शक्ति) ऊर्जा (लीला शक्ति) विद्या, अविद्या (मोक्ष और बन्धन में कारण रूप) और माया शक्तियाँ उनकी सेवा कर रही थीं ॥

## षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

**विलोक्य सुभृशं प्रीतो भक्त्या परमया युतः ।**
**हृष्यत्तनूरुहो भावपरिक्लिन्नात्मलोचनः ॥५६॥**

पदच्छेद— विलोक्य सुभृशम् प्रीतः भक्त्या परमया युतः ।
हृष्यत् तनूरुहः भाव परिक्लिन्न आत्म लोचनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| विलोक्य | १. यह देख कर (अक्रूर जी) | हृष्यत् | ७. | हर्ष से (उनका) |
| सुभृशम् | २. अत्यन्त | तनूरुहः | ८. | शरीर पुलकित हो गया |
| प्रीतः | ३. प्रसन्न (और) | भाव | ९. | भाव विभोर होने से |
| भक्त्या | ५. भक्ति से | परिक्लिन्न | १२. | आँसू भर आये |
| परमया | ४. परम | आत्म | १०. | उनके |
| युतः । | ६. युक्त हो गये | लोचनः ॥ | ११. | नेत्रों में |

श्लोकार्थ—यह देख कर अक्रूर जी अत्यन्त प्रसन्न और परम भक्ति से युक्त हो गये । हर्ष से उनका शरीर पुलकित हो गया । भाव-विभोर होने से उनके नेत्रों में आँसू भर आये ॥

## सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

**गिरा गद्‌गदयास्तौषीत् सत्त्वमालम्ब्य सात्वतः ।**
**प्रणम्य मूर्ध्नावहितः कृताञ्जलिपुटः शनैः ॥५७॥**

पदच्छेद— गिरा गद्‌गदया अस्तौषीत् सत्त्वम् आलम्ब्य सात्वतः ।
प्रणम्य मूर्ध्ना अवहितः कृत अञ्जलिपुटः शनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गिरा | १०. | वाणी से (भगवान् की) | प्रणम्य | ५. | प्रणाम किया (और) |
| गद्‌गदया | ९. | गद्‌गद | मूर्ध्ना | ४. | सिर से |
| अस्तौषीत् | ११. | स्तुति करने लगे | अवहितः | ६. | सावधान होकर |
| सत्त्वम् | २. | साहस | कृत अञ्जलिपुटः | ७. | हाथ जोड़ कर |
| आलम्ब्य | ३. | बटोर कर | शनैः ॥ | ८. | धीरे-धीरे |
| सात्वतः । | १. | अक्रूर जी ने | | | |

श्लोकार्थ—अक्रूर जी ने साहस बटोर कर सिर से प्रणाम किया। और सावधान होकर हाथ जोड़ कर धीरे-धीरे गद्‌गद वाणी से भगवान् की स्तुति करने लगे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अक्रूरप्रतियाने एकोनचत्वारिंशः अध्यायः ॥३९॥

## प्रथमः श्लोकः

**अक्रूर उवाच— नतोऽस्म्यहं त्वाखिलहेतुहेतुं नारायणं पूरुषमाद्यमव्ययम्।**
**यन्नाभिजातादरविन्दकोशाद् ब्रह्माऽऽविरासीद् यत एष लोकः ॥१॥**

पदच्छेद— नतः अस्मि अहम् तु अखिल हेतु हेतुम् नारायणम् पूरुषम् आद्यम् अव्ययम्।
यत्नाभि जातात् अरविन्दकोशात् ब्रह्मा आविः आसीत् यतः एषः लोकः ॥

शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| नतः अस्मि | ७. प्रणाम करता हूँ | यत्नाभि | ८. जिनकी नाभि से |
| अहम् अखिल | १. मैं समस्त | जातात् | ९. उत्पन्न |
| हेतु हेतुम् | २. कारणों के कारण | अरविन्दकोशात | १०. कमल के कोश से |
| नारायणम् | ३. नारायण | ब्रह्मा | ११. ब्रह्मा जी का |
| पूरुषम् | ६. पुरुष को | आविः आसीत् | १२. आविर्भाव हुआ और |
| आद्यम् | ५. आदि | यतः एषः | १३. जिनसे यह |
| अव्ययम्। | ४. अविनाशी | लोकः ॥ | १४. संसार उत्पन्न हुआ |

श्लोकार्थ—मैं समस्त कारणों के कारण, नारायण, अविनाशी आदि पुरुष को प्रणाम करता हूँ। जिनकी नाभि से उत्पन्न कमल के कोश से ब्रह्मा जी का आविर्भाव हुआ। और जिनसे यह संसार उत्पन्न हुआ ॥

## द्वितीयः श्लोकः

**भूस्तोयमग्निः पवनः खमादिर्महानजादिर्मन इन्द्रियाणि।**
**सर्वेन्द्रियार्था विबुधाश्च सर्वे ये हेतवस्ते जगतोऽङ्गभूताः ॥२॥**

पदच्छेद— भूः तोयम् अग्निः पवनः खम् आदिः महान् अजादिः मनः इन्द्रियाणि।
सर्वे इन्द्रिय अर्थाः विबुधाः च सर्वे ये हेतवः ते जगतः अङ्गभूताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भूः तोयम् | १. पृथ्वी-जल | सर्व इन्द्रिय अर्थाः | ८. सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय |
| अग्निः पवनः | २. अग्नि-वायु | विबुधाः च | ९. और देवता |
| खम् आदिः | ३. आकाश-अहंकार | सर्वे ये | १०. ये सब |
| महान् | ४. महत्तत्त्व | हेतवः | १२. कारण है और |
| अजादिः | ५. प्रकृति पुरुष | ते | १३. आप के |
| मनः | ६. मन और | जगतः | ११. संसार के |
| इन्द्रियाणि। | ७. इन्द्रिय | अङ्गभूताः ॥ | १४. अङ्ग स्वरूप हैं |

श्लोकार्थ—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, प्रकृति, पुरुष, मन और इन्द्रिय, सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय और देवता ये सब संसार के कारण हैं। आपके अङ्ग-स्वरूप हैं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**नैते स्वरूपं विदुरात्मनस्ते ह्यजादयोऽनात्मतया गृहीताः ।**
**अजोऽनुबद्धः स गुणैरजाया गुणात् परं वेद न ते स्वरूपम् ॥३॥**

पदच्छेद— न एते स्वरूपम् विदुः आत्मनः ते हि अजा आदयः अनात्मतया गृहीताः ।
अजः अनुबद्धः सः गुणैः अजायाः गुणात् परम् वेद न ते स्वरूपम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ४. नहीं | अजः | १०. ब्रह्मा जी भी |
| एते | १. ये | अनुबद्धः | १३. युक्त होने के कारण |
| स्वरूपम् | ३. स्वरूप को | सः | ६. वे |
| विदुः | ५. जानते हैं | गुणैः | १२. गुणों से |
| आत्मनः ते | २. आपके आत्मा के | अजायाः | ११. प्रकृति के |
| हि अजा आदयः | ६. क्योंकि प्रकृति आदि | गुणात् परम् | १४. गुणों से परे |
| अनात्मतया | ७. अनात्मा के रूप में | वेद न | १६. नहीं जानते हैं |
| गृहीताः । | ८. अपने को स्वीकार | ते स्वरूपम् ॥ | १५. आपके स्वरूप को |

श्लोकार्थ—ये आपके आत्मा के स्वरूप को नहीं जानते हैं। क्योंकि प्रकृति आदि अनात्मा के रूप में अपने को स्वीकार करते हैं। वे ब्रह्मा जी भी प्रकृति के गुणों से युक्त होने के कारण गुणों से परे आपके स्वरूप को नहीं जानते हैं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**त्वां योगिनो यजन्त्यद्धा महापुरुषमीश्वरम् ।**
**साध्यात्मं साधिभूतं च साधिदैवं च साधवः ॥४॥**

पदच्छेद— त्वाम् योगिनः यजन्ति अद्धा महापुरुषम् ईश्वरम् ।
साधिआत्मम् साधिभूतम् च साधिदैवम् च साधवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वाम् | ११. आपकी | साधिआत्मम् | ३. अन्तर्यामी |
| योगिनः | २. योगीजन | साधिभूतम् | ४. परमात्मा |
| यजन्ति | १२. उपासना करते हैं | च | ५. और |
| अद्धा | १०. निःसन्देह | साधिदैवम् | ६. इष्ट देवता के रूप में |
| महापुरुषम् | ८. महापुरुष | च | ७. तथा |
| ईश्वरम् । | ९. ईश्वर के रूप में | साधवः ॥ | १. साधु |

श्लोकार्थ—साधु योगी जन अन्तर्यामी, परमात्मा और इष्ट देवता के रूप में तथा महा पुरुष ईश्वर के रूप में निःसन्देह आपकी उपासना करते हैं ॥

## पञ्चमः श्लोकः

त्रय्या च विद्यया केचित् त्वां वै वैतानिका द्विजाः ।
यजन्ते विततैर्यज्ञैर्नानारूपामराख्यया ॥५॥

पदच्छेद— त्रय्या च विद्यया केचित् त्वाम् वै वैतानिकाः द्विजाः ।
यजन्ते विततैः यज्ञैः नाना रूप अमर आख्यया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्रय्या च | ४. | वेद | यजन्ते | १२. | उपासना करते हैं |
| विद्यया | ५. | विद्या के द्वारा | विततैः | ९. | विस्तार वाले |
| केचित् | १. | कोई | यज्ञैः | १०. | यज्ञों के द्वारा |
| त्वाम् वै | ११. | आप की ही | नाना | ६. | अनेक |
| वैतानिकाः | २. | कर्मकाण्डी | रूप अमर | ७. | रूप वाले देवताओं के |
| द्विजाः । | ३. | ब्राह्मण | आख्यया ॥ | ८. | नाम से |

श्लोकार्थ—कोई कर्मकाण्डी ब्राह्मण वेद विद्या के द्वारा अनेक रूप वाले देवताओं के नाम से विस्तार वाले यज्ञों के द्वारा आपकी ही उपासना करते हैं ॥

## षष्ठः श्लोकः

एके त्वाखिलकर्माणि संन्यस्योपशमं गताः ।
ज्ञानिनो ज्ञानयज्ञेन यजन्ति ज्ञानविग्रहम् ॥६॥

पदच्छेद— एके तु अखिल कर्माणि संन्यस्य उपशमम् गताः ।
ज्ञानिनः ज्ञान यज्ञेन यजन्ति ज्ञान विग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एके | १. | कोई | ज्ञानिनः | ६. | ज्ञानी लोग |
| तु अखिल | ११. | आपकी | ज्ञान | ७. | ज्ञान |
| कर्माणि | २. | कर्मों का | यज्ञेन | ८. | यज्ञ के द्वारा |
| संन्यस्य | ३. | संन्यास करके | यजन्ति | १२. | आराधना करते है |
| उपशमम् | ४. | शान्ति को | ज्ञान | ९. | ज्ञान |
| गताः । | ५. | प्राप्त कर लेते हैं | विग्रहम् ॥ | १०. | स्वरूप |

श्लोकार्थ—कोई कर्मों का संन्यास करके शान्ति को प्राप्त कर लेते हैं। ज्ञानी लोग ज्ञान यज्ञ के द्वारा ज्ञान स्वरूप आपकी आराधना करते हैं ॥

## सप्तमः श्लोकः

अन्ये च संस्कृतात्मानो विधिनाभिहितेन ते ।
यजन्ति त्वन्मयास्त्वां वै बहुमूर्त्येकमूर्तिकम् ॥७॥

पदच्छेद— अन्ये च संस्कृत आत्मानः विधिना अभिहितेन ते ।
यजन्ति त्वन्मयाः त्वाम् वै बहुमूर्ति एकमूर्तिकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्ये च | १. | और भी बहुत से | यजन्ति | १२. | पूजा करते हैं |
| संस्कृत | २. | संस्कार सम्पन्न | त्वन्मयाः | ७. | आप में लीन होकर |
| आत्मनः | ३. | आत्मा वाले जन | त्वाम् | १०. | आपको |
| विधिना | ६. | विधि से | वै | ११. | ही |
| अभिहितेन | ५. | बतलायी हुई | बहुमूर्ति | ८. | अनेक रूप और |
| ते । | ४. | आपकी | एकमूर्तिकम् ॥ | ९. | एक रूप में |

श्लोकार्थ—और भी बहुत से संस्कार सम्पन्न आत्मा वाले जन आपको बतलायी हुई विधि से आपमें लीन होकर अनेक रूप और एक रूप में आप की ही पूजा करते हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

त्वामेवान्ये शिवोक्तेन मार्गेण शिवरूपिणम् ।
बह्वाचार्यविभेदेन भगवन् समुपासते ॥८॥

पदच्छेद— त्वाम् एव अन्ये शिवउक्तेन मार्गेण शिवरूपिणम् ।
बहु आचार्य विभेदेन भगवन् सम् उपासते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वाम् | ९. | आपकी | बहु | ४. | बहुत से |
| एव | १०. | ही | आचार्य | ६. | आचार्यों के |
| अन्ये | २. | दूसरे लोग | विभेदेन | ५. | भेद वाले |
| शिवउक्तेन | ३. | शिव के बतलाये हुये | भगवन् | १. | हे भगवन् ! |
| मार्गेण | ७. | मार्ग से | सम् | १०. | अच्छी प्रकार |
| शिवरूपिणम् । | ८. | शिवस्वरूप | उपासते ॥ | १२ | उपासना करते हैं |

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! दूसरे लोग शिव के बतलाये हुये बहुत से भेद वाले आचार्यों के मार्ग से शिवस्वरूप आपकी ही अच्छी प्रकार उपासना करते हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**सर्व एव यजन्ति त्वां सर्वदेवमयेश्वरम् ।**
**येऽप्यन्यदेवताभक्ता यद्यप्यन्यधियः प्रभो ॥९॥**

पदच्छेद — सर्व एव यजन्ति त्वाम् सर्व देवमय ईश्वरम् ।
ये अपि अन्य देवता भक्ताः यद्यपि अन्य धियः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वे | ८. | फिर भी वे | ये अपि | २. | जो भी |
| एव | ९. | ही | अन्य देवता | ३. | दूसरे देवताओं के |
| यजन्ति | १४. | पूजा करते हैं | भक्ताः | ४. | भक्त हैं |
| त्वाम् | १३. | आपकी | यद्यपि | ५. | यद्यपि (उन्हें) आप से |
| सर्व | १०. | समस्त | अन्य | ६. | भिन्न |
| देवमय | ११. | देवता स्वरूप | धियः | ७. | समझते हैं |
| ईश्वरम् । | १२. | ईश्वर | प्रभो ॥ | १. | हे प्रभो ! |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जो भी दूसरे देवताओं के भक्त हैं वे यद्यपि उन्हें आप से भिन्न समझते हैं फिर भी वे सब ही समस्त देवता स्वरूप ईश्वर आप की पूजा करते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**यथाद्रिप्रभवा नद्यः पर्जन्यापूरिताः प्रभो ।**
**विशन्ति सर्वतः सिन्धुं तद्वत्त्वां गतयोऽन्ततः ॥१०॥**

पदच्छेद— यथा अद्रि प्रभवा नद्यः पर्जन्य आपूरिताः प्रभो ।
विशन्ति सर्वतः सिन्धुम् तत् वत् त्वाम् गतयः अन्ततः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यथा | २. | जिस प्रकार | विशन्ति | १०. | प्रवेश कर जाती हैं |
| अद्रि | ३. | पर्वतों से | सर्वतः | ८. | सब ओर से |
| प्रभवाः | ४. | निकलने वाली | सिन्धुम् | ९. | समुद्र में |
| नद्यः | ५. | नदियाँ | तत् वत् | ११. | उसी प्रकार सभी (पूजायें) |
| पर्जन्य | ६. | वर्षा के जल से | त्वाम् | १३. | आप ही में |
| आपूरिताः | ७. | भर कर | गतयः | १४. | पहुँच जाती हैं |
| प्रभो । | १. | प्रभो ! | अन्ततः ॥ | १२. | अन्त में |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जिस प्रकार पर्वतों से निकलने वाली नदियाँ वर्षा के जल से भर कर सब ओर से समुद्र में प्रवेश कर जाती हैं, उसी प्रकार सभी पूजायें अन्त में आप ही में पहुँच जाती हैं ॥

## एकादशः श्लोकः

**सत्त्वं रजस्तम इति भवतः प्रकृतेर्गुणाः ।**
**तेषु हि प्राकृताः प्रोता आब्रह्मस्थावरादयः ॥११॥**

पदच्छेद— सत्त्वम् रजः तमः इति भवतः प्रकृतेः गुणाः ।
तेषु हि प्राकृताः प्रोताः आब्रह्म स्थावर आदयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सत्त्वम् | १. सत्त्व | तेषु हि | ७. उनमें |
| रजः तमः | २. रज और तम | प्राकृताः | १०. प्रकृति के गुण से |
| इति | ३. ये | प्रोताः | १२. ओत-प्रोत हैं |
| भवतः | ४. आपकी | आब्रह्म | ८. ब्रह्मा से लेकर |
| प्रकृतेः | ५. प्रकृति के | स्थावर | ९. स्थावर |
| गुणाः । | ६. गुण हैं | आदयः ॥ | १०. आदि |

श्लोकार्थ—सत्त्व रज और तम ये आपकी प्रकृति के गुण हैं । उनमें ब्रह्मा से लेकर स्थावर आदि प्रकृति के गुण से ओत-प्रोत हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**तुभ्यं नमस्तेऽस्त्वविषक्तदृष्टये सर्वात्मने सर्वधियां च साक्षिणे ।**
**गुणप्रवाहोऽयमविद्यया कृतः प्रवर्तते देवनृतिर्यगात्मसु ॥१२॥**

पदच्छेद— तुभ्यम् नमः ते अस्तु अविषक्त दृष्टये सर्वआत्मने सर्वधियाम् च साक्षिणे ।
गुणप्रवाहः अयम् अविद्यया कृतः प्रवर्तते देवनृतिर्यक् आत्मसु ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तुभ्यम् नमः | १. आपको नमस्कार है | गुण प्रवाहः | १०. गुणों का प्रवाह |
| ते अस्तु | ८. आपको नमस्कार हैं | अयम् | ९. यह |
| अविषक्त | २. निर्लिप्त | अविद्यया | १४. अज्ञान से |
| दृष्टये | ३. दृष्टि वाले | कृतः | १५. उत्पन्न होकर |
| सर्वात्मने | ७. सब के आत्म स्वरूप | प्रवर्तते | १६. व्याप्त हैं |
| सर्वधियाम् | ५. समस्त वृत्तियों के | देवनृ | ११. देवता, मनुष्य और |
| च | ४. और | तिर्यक् | १२. पशु-पक्षी आदि |
| साक्षिणे । | ६. साक्षी | आत्मसु ॥ | १३. योनियों में |

श्लोकार्थ—आपको नमस्कार है । निर्लिप्त दृष्टि वाले और समस्त वृत्तियों के साक्षी, सब के आत्म स्वरूप आपको नमस्कार है । यह गुणों का प्रवाह देवता, मनुष्य और पशु-पक्षी आदि योनियों में अज्ञान से उत्पन्न होकर व्याप्त हैं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**अग्निर्मुखं तेऽवनिरङ्घ्रिरीक्षणं सूर्यो नभो नाभिरथो दिशः श्रुतिः ।**
**द्यौः कं सुरेन्द्रास्तव बाहवोऽर्णवाः कुक्षिर्मरुत् प्राणबलं प्रकल्पितम् ॥१३॥**

पदच्छेद— अग्निः मुखम् ते अवनिः अङ्घ्रिः ईक्षणम् सूर्यः नभः नाभिः अथो दिशः श्रुतिः ।
द्यौः कम् सुरेन्द्राः तव बाहवः अर्णवाः कुक्षिः मरुत् प्राण बलम् प्रकम्पितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अग्निः | १. | अग्नि | द्यौः कम् | ९. | स्वर्ग सिर है |
| मुखम् | ३. | मुख है | सुरेन्द्राः | १०. | देवेन्द्र गण |
| ते | २. | आपका | तवबाहवः | ११. | आपकी भुजायें हैं |
| अवनिः अङ्घ्रिः | ४. | पृथ्वी पैर हैं | अर्णवाः | १२. | समुद्र |
| ईक्षणम् सूर्यः | ५. | नेत्र सूर्य हैं | कुक्षिः | १३. | कोख है और |
| नभः नाभिः | ७. | आकाश नाभि है | मरुत् प्राण | १४. | वायु प्राण |
| अथो | ६. | और | बलम् | १५. | शक्ति के रूप में उपासना के लिये |
| दिशः श्रुतिः । | ८ | दिशायें कान हैं | प्रकम्पितम् ॥ | १६. | रची गई है |

श्लोकार्थ—अग्नि आपका मुख है, पृथ्वी पैर हैं, और आकाश नाभि है, दिशायें कान हैं। स्वर्ग सिर है, देवेन्द्र गण आपकी भुजायें हैं। समुद्र कोख है और वायु प्राण शक्ति के रूप में उपासना के लिये रची गयी है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**रोमाणि वृक्षौषधयः शिरोरुहा मेघाः परस्यास्थिनखानि तेऽद्रयः ।**
**निमेषणं रात्र्यहनी प्रजापतिर्मेढ्रस्तु वृष्टिस्तव वीर्यमिष्यते ॥१४॥**

पदच्छेद— रोमाणि वृक्ष ओषधयः शिरोरुहाः मेघाः परस्य अस्थि नखानि ते अद्रयः ।
निमेषणम् रात्रि अहनी प्रजापतिः मेढ्रः तु वृष्टिः तव वीर्यम् इष्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रोमाणि | २. | रोम हैं | निमेषणम् | ९. | पलकों का खोलना-बन्द करना |
| वृक्ष ओषधयः | १. | वृक्ष और ओषधियां | रात्रि अहनी | १०. | रात और दिन है |
| शिरोरुहाः मेघाः | ३. | मेघ सिर के केश हैं | प्रजापतिः | ११. | प्रजापति |
| परस्य | ६. | परमात्मा के | मेढ्रः तु | १२. | जननेन्द्रियां हैं और |
| अस्थि | ७. | अस्थि और | वृष्टिः | १३. | वृष्टि |
| नखानि | ८. | नख हैं | तव | १४. | आपका |
| ते | ५. | आप | वीर्यम् | १५. | वीर्य |
| अद्रयः । | ४. | पर्वत | इष्यते ॥ | १६. | कहा गया है |

श्लोकार्थ—वृक्ष और ओषधियां रोम हैं, मेघ सिर के केश हैं, पर्वत आप परमात्मा के अस्थि और नख हैं। पलकों का खोलना-बन्द करना दिन और रात है। प्रजापति जननेन्द्रिय है। और वृष्टि आपका वीर्य कहा गया है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**त्वय्यव्ययात्मन् पुरुषे प्रकल्पिता लोकाः सपाला बहुजीवसङ्कुलाः ।**
**यथा जले सञ्जिहते जलौकसोऽप्युदुम्बरे वा मशका मनोमये ॥१५॥**

पदच्छेद— त्वयि अव्यय आत्मन् पुरुषे प्रकल्पिताः लोकाः सपालाः बहु जीव सङ्कुलाः ।
यथा जले सञ्जिहते जलओकसः अपि उदुम्बरे वा मशकाः मनोमये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वयि | ११. | आपके | यथा | ३. | जैसे |
| अव्यय | १. | अविनाशी | जले | ४. | जल में |
| आत्मन् | २. | भगवान् ! | सञ्जिहते | ९. | रहते हैं |
| पुरुषे | १३. | पुरुष रूप में | जलओकसः | ५. | जलचर |
| प्रकल्पिताः | १८. | कल्पित किये गये हैं | अपि | ६. | और |
| लोकाः | १६. | लोक और | उदुम्बरे | ७. | गूलर में |
| सपालाः | १७. | लोकपाल | वा | १०. | वैसे ही |
| बहु जीव | १४. | अनेक जीव जन्तुओं से | मशकाः | ८. | सूक्ष्म कीट पतंग |
| सङ्कुलाः । | १५. | भरे हुये | मनोमये ॥ | १२. | मनोमय |

श्लोकार्थ—अविनाशी भगवान् ! जैसे जल में जलचर और गूलर में सूक्ष्म कीट पतंग रहते हैं वैसे ही आपके मनोमय पुरुष रूप अनेक जीव जन्तुओं से भरे हुये लोक और लोकपाल कल्पित किये गये हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

**यानि यानीह रूपाणि क्रीडनार्थं बिभर्षि हि ।**
**तैरामृष्टशुचो लोका मुदा गायन्ति ते यशः ॥१६॥**

पदच्छेद— यानि यानि इह रूपाणि क्रीडन् अर्थम् बिभर्षि हि ।
तैः आमृष्ट शुचः लोकाः मुदा गायन्ति ते यशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यानि | ४. | जो | तैः | ८. | उनसे |
| यानि | ५. | जो | आमृष्ट | ९. | धो बहाये गये |
| इह | ३. | यहाँ | शुचः | १०. | शोक वाले |
| रूपाणि | ६. | रूप | लोकाः | ११. | लोग |
| क्रीडन् | १. | आप क्रीडा | मुदा | १२. | हर्ष से |
| अर्थम् | २. | करने के लिये | गायन्ति | १४. | गायन करते हैं |
| बिभर्षि हि । | ७. | धारण करते हैं | ते यशः ॥ | १३. | आपके यश का |

श्लोकार्थ—आप क्रीडा करने के लिये यहाँ जो-जो रूप धारण करते हैं, उनसे धो बहाये गये शोक वाले लोग हर्ष से आपके यश का गायन करते हैं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**नमः कारणमत्स्याय प्रलयाब्धिचराय च ।**
**हयशीर्ष्णे नमस्तुभ्यं मधुकैटभमृत्यवे ॥१७॥**

पदच्छेद— नमः कारण मत्स्याय प्रलय अब्धि चराय च ।
हयशीर्ष्णे नमः तुभ्यम् मधु कैटभ मृत्यवे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ७. | नमस्कार है | हयशीर्ष्णे | ११. | हयग्रीवावतार |
| कारण | १. | लोक रक्षा के निमित्त | नमः | १३. | नमस्कार है |
| मत्स्याय | २. | मत्स्य रूप धारण करने वाले | तुभ्यम् | १२. | आपको |
| प्रलय | ४. | प्रलय के | मधु | ८. | मधु और |
| अब्धि | ५. | समुद्र में | कैटभ | ९. | कैटभ नामक असुरों को |
| चराय | ६. | विचरण करने वाले को | मृत्यवे ॥ | १०. | मारने वाले |
| च । | ३. | और | | | |

श्लोकार्थ—लोक रक्षा के निमित्त मत्स्य रूप धारण करने वाले और प्रलय के समुद्र में विचरण करने वाले को नमस्कार है। मधु और कैटभ असुर को मारने वाले आप हयग्रीवावतार को नमस्कार है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**अकूपाराय बृहते नमो मन्दरधारिणे ।**
**क्षित्युद्धारविहाराय नमः सूकरमूर्तये ॥१८॥**

पदच्छेद— अकूपाराय बृहते नमः मन्दर धारिणे ।
क्षिति उद्धार विहाराय नमः सूकर मूर्तये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अकूपाराय | ४. | कच्छपावतार को | क्षिति | ६. | पृथ्वी का |
| बृहते | ३. | विशाल | उद्धार | ७. | उद्धार एवम् |
| नमः | ५. | नमस्कार है | विहाराय | ८. | विहार करने वाले |
| मन्दर | १. | मन्दराचल को | नमः | १०. | नमस्कार है |
| धारिणे । | २. | धारण करने वाले | सूकर मूर्तये ॥ | ९. | सूकर रूप को |

श्लोकार्थ—मन्दराचल को धारण करने वाले विशाल कच्छपावतार को नमस्कार है। पृथ्वी का उद्धार एवम् विहार करने वाले सूकर रूप को नमस्कार है ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**नमस्तेऽद्भुतसिंहाय साधुलोकभयापह ।**
**वामनाय नमस्तुभ्यं क्रान्तत्रिभुवनाय च ॥१६॥**

पदच्छेद— नमः ते अद्भुत सिंहाय साधुलोक भयापह ।
वामनाय नमस्तुभ्यम् क्रान्त त्रिभुवनाय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ६. | नमस्कार है | वामनाय | १०. | वामनावतार |
| ते | ५. | आप को | नमः | १२. | नमस्कार है |
| अद्भुत | ३. | अद्भुत | तुभ्यम् | ११. | आप को |
| सिंहाय | ४. | सिंह रूप धारण करने वाले | क्रान्त | ६. | नाप लेने वाले |
| साधुलोक | १. | साधुजनों का | त्रिभुवनाय | ८. | तीनों लोकों को |
| भयापह । | २. | भय दूर करने वाले | च ॥ | ७. | और |

श्लोकार्थ—साधुजनों का भय दूर करने वाले अद्भुत सिंह रूप धारण करने वाले आपको नमस्कार है। और तीनों लोकों को नापने वाले वामनावतार आपको नमस्कार है ॥

## विंशः श्लोकः

**नमो भृगूणां पतये दृप्तक्षत्रवनच्छिदे ।**
**नमस्ते रघुवर्याय रावणान्तकराय च ॥२०॥**

पदच्छेद— नमः भृगूणाम् पतये दृप्त क्षत्र वनच्छिदे ।
नमः ते रघुवर्याय रावण अन्तकराय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ६. | नमस्कार है | नमः | १२. | नमस्कार है |
| भृगुणाम् | ४. | भृगुवंशियों के | ते | ११. | आप को |
| पतये | ५. | पति (परशुराम को) | रघुवर्याय | १०. | रघुवर |
| दृप्त | १. | घमंडी | रावण | ८. | रावण के |
| क्षत्र | २. | क्षत्रियों के | अन्तकराय | ६. | विनाशक |
| वनच्छिदे । | ३. | वंश का छेदन करने वाले | च ॥ | ७. | और |

श्लोकार्थ—घमंडी क्षत्रियों के वंश का छेदन करने वाले भृगुवंशियों के पति परशुराम को नमस्कार है। और रावण के विनाशक रघुवर आप को नमस्कार है ॥

# एकविंशः श्लोकः

**नमस्ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।**
**प्रद्युम्नायानिरुद्धाय सात्वतां पतये नमः ॥२१॥**

पदच्छेद— नमः ते वासुदेवाय नमः सङ्कर्षणाय च।
प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सात्वताम् पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ३. | नमस्कार है | प्रद्युम्नाय | ७. | प्रद्युम्न |
| ते | १. | आपके | अनिरुद्धाय | ८. | अनिरुद्ध |
| वासुदेवाय | २. | वासुदेव रूप को | सात्वताम् | ९. | यदुवंशियों के |
| नमः | ६. | नमस्कार है | पतये | १०. | स्वामी आपको |
| सङ्कर्षणाय | ५. | बलराम रूप को | नमः ॥ | ११. | नमस्कार है |
| च। | ४. | और | | | |

श्लोकार्थ—आपके वासुदेव रूप को नमस्कार है। और बलराम रूप को नमस्कार है। प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और यदुवंशियों के स्वामी आपको नमस्कार है ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

**नमो बुद्धाय शुद्धाय दैत्यदानवमोहिने।**
**म्लेच्छप्रायक्षत्रहन्त्रे नमस्ते कल्किरूपिणे ॥२२॥**

पदच्छेद— नमः बुद्धाय शुद्धाय दैत्य दानव मोहिने।
मलेच्छप्राय क्षत्रहन्त्रे नमः ते कल्कि रूपिणे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ६. | नमस्कार है | मलेच्छप्राय | ७. | म्लेच्छ बने हुये |
| बुद्धाय | ५. | बुद्धावतार को | क्षत्रहन्त्रे | ८. | क्षत्रियों को मारने वाले |
| शुद्धाय | ४. | शुद्ध | नमः | १२. | नमस्कार है |
| दैत्य | १. | दैत्य (और) | ते | ११. | आपको |
| दानव | २. | दानवों को | कल्कि | ९. | कल्कि |
| मोहिने। | ३. | मोहित करने वाले | रूपिणे ॥ | १०. | रूपधारी |

श्लोकार्थ—दैत्य और दानवों को मोहित करने वाले, शुद्ध, बुद्धावतार को नमस्कार है। म्लेच्छ बने हुये क्षत्रियों को मारने वाले कल्कि रूप धारी आपको नमस्कार है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**भगवञ्जीवलोकोऽयं मोहितस्तव मायया ।**
**अहंममेत्यसद्ग्राहो भ्राम्यते कर्मवर्त्मसु ॥२३॥**

पदच्छेद— भगवन् जीवलोकः अयम् मोहितः तव मायया ।
अहम् मम इति असत् ग्राहः भ्राम्यते कर्म वर्त्मसु ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवन् | १. | भगवन् | अहम् | ७. | मैं और |
| जीवलोकः | ३. | जीवों का समूह | मम इति | ८. | मेरा इस |
| अयम् | २. | यह | असत् ग्राहः | ९. | मिथ्या दुराग्रह के कारण |
| मोहितः | ६. | मोहित होकर | भ्राम्यते | १२. | भटक रहा है |
| तव | ४. | आपकी | कर्म | १०. | कर्म के |
| मायया । | ५. | माया से | वर्त्मसु ।। | ११. | मार्गों में |

श्लोकार्थ—भगवन् ! यह जीवों का समूह आपकी माया से मोहित होकर मैं और मेरा इस मिथ्या दुराग्रह के कारण कर्म के मार्गों में भटक रहा है ।।

## चतुर्विंशः श्लोकः

**अहं चात्मात्मजागारदारार्थस्वजनादिषु ।**
**भ्रमामि स्वप्नकल्पेषु मूढः सत्यधिया विभो ॥२४॥**

पदच्छेद — अहम् च आत्म आत्मज आगार दार अर्थ स्वजन आदिषु ।
भ्रमामि स्वप्न कल्पेषु मूढः सत्यधिया विभो ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहम् | ५. | मैं | भ्रमामि | १२. | भटक रहा हूँ |
| च | १. | और | स्वप्न | ३. | स्वप्न के |
| आत्म आत्मज | ६. | देह पुत्र | कल्पेषु | ४. | समान |
| आगार दारा अर्थ | ७. | गृह पत्नी धन और | मूढः | ११. | मूर्ख बना हुआ |
| स्वजन | ८. | स्वजन | सत्यधिया | १०. | सत्य समझकर |
| आदिषु । | ९. | आदि को | विभो ।। | २. | हे स्वामी ! |

श्लोकार्थ—और हे स्वामी ! स्वप्न के समान मैं देह पुत्र, गृह, पत्नी, धन और स्वजन आदि को सत्य समझ कर मूर्ख बना हुआ भटक रहा हूँ ।।

## पञ्चविंशः श्लोकः

**अनित्यानात्मदुःखेषु विपर्ययमतिर्ह्यहम् ।**
**द्वन्द्वारामस्तमोविष्टो न जाने त्वाऽऽत्मनः प्रियम् ॥२५॥**

पदच्छेद—

अनित्यअनात्मदुःखेषु विपर्ययमतिःहि अहम् ।
द्वन्द्वआरामः तमोविष्टः न जाने त्वा आत्मनः प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अनित्य | १. अनित्य | द्वन्द्व | ७. (सांसारिक) सुखदुःख आदि में |
| अनात्म | २. अनात्मा और | आरामः | ८. रमकर |
| दुःखेषु | ३. दुःखों में | तमःविष्ट | ९. अज्ञानवश |
| विपर्यय | ४. उलटी बुद्धिवाला | न जाने | १३. नहीं जान पाया |
| मतिःहि | ५. निश्चित ही | त्वा | १२. आपको |
| अहम् । | ६. मैं | आत्मनः | १०. अपने |
| | | प्रियम् ॥ | ११. पुत्र |

श्लोकार्थ—अनित्य, अनात्मा और दुःखों में उलटी बुद्धिवाला निश्चित ही मैं सांसारिक सुख-दुख आदि में रमकर अज्ञानवश अपने पुत्र आपको नहीं जान पाया ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**यथाबुधो जलं हित्वा प्रतिच्छन्नं तदुद्भवैः ।**
**अभ्येति मृगतृष्णां वै तद्वत्त्वाहं पराङ्मुखः ॥२६॥**

पदच्छेद—

यथा अबुधः जलम् हित्वा प्रतिच्छन्नं तदुद्भवैः ।
अभ्येति मृगतृष्णाम् वै तद्वत् त्वा अहम् पराङ्मुखः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यथाअबुध | १. जैसे अनजान मनुष्य | अभ्येति | ८. दौड़ पड़े |
| जलम् | ५. जल को | मृगतृष्णाम् | ७. मृगतृष्णा की ओर |
| हित्वा | ६. छोड़कर (जल केलिये) | वै | १०. ही |
| प्रतिच्छन्नम् | ४. ढके हुये | तद्वत् | ९. वैसे |
| तत् | २. उस जल से | त्वा अहम् | ११. आप से मैं |
| उद्भवैः । | ३. उत्पन्न (सेवार आदि) से | पराङ्मुखः ॥ | १२. विमुख होकर (विषयों में भटक रहा हूँ) |

श्लोकार्थ—जैसे अनजान मनुष्यउस जल से उत्पन्न सेवार आदि से ढके हुये जल को छोड़कर जल के लिये मृगतृष्णा की ओर दौड़ पड़े, वैसे ही आप से मैं विमुख होकर विषयों में भटक रहा हूँ ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**नोत्सहेऽहं कृपणधीः कामकर्महतं मनः ।**
**रोद्धुं प्रमाथिभिश्चाक्षैर्ह्रियमाणमितस्ततः ॥२७॥**

पदच्छेद— न उत्सहे अहम् कृपणधीः कामकर्म हतम् मनः ।
रोद्धुम् प्रमाथिभिः च अक्षैः ह्रियमाणम् इतः ततः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| न | १३. नहीं | रोद्धुम् | १२. | रोकने के लिये |
| उत्सहे | १४. उत्साह कर पाता हूँ | प्रमाथिभिः | १०. | दुर्दमनीय |
| अहम् | २. मैं | च | ५. | तथा |
| कृपणधीः | १. कृपण बुद्धि वाला | अक्षैः | ६. | इन्द्रियों के द्वारा |
| कामकर्म | ३. कामना और कर्म से | ह्रियमाणम् | ९. | घसीट ले जाते हुये |
| हतम् | ४. विनष्ट | इतः | ७. | इधर |
| मनः । | ११. मन को | ततः ॥ | ८. | उधर |

श्लोकार्थ— कृपण बुद्धि वाला मैं कामना और कर्म से विनष्ट तथा इन्द्रियों के द्वारा इधर-उधर घसीट ले जाते हुये दुर्दमनीय मन को रोकने के लिए उत्साह नहीं कर पाता हूँ ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**सोऽहं तवाङ्घ्र्युपगतोऽस्म्यसतां दुरापं तच्चाप्यहं भवदनुग्रह ईश मन्ये ।**
**पुंसो भवेद् यर्हि संसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभसदुपासनया मतिः स्यात् ॥२८॥**

पदच्छेद—
सः अहम् तव अङ्घ्रि उपगतः अस्मि असताम् दुरापम् तत् च अपि अहम् भवत्अनुग्रहः ईश मन्ये ।
पुंसः भवेत् यर्हि संसरण अपवर्गः त्वयिअब्जनाभसत् उपासनया मतिः स्यात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सःअहम्तव | १. वह मैं आपके | पुंसः | १०. | मनुष्य का |
| अङ्घ्रिउपगतः | २. चरणों में पहुँचा | भवेत् | १२. | होता है तब |
| अस्मिअसताम् | ३. हूँ जो दुष्टों के लिये | यर्हिसंसरण | ९. | जब संसार से |
| दुरापम्तत् | ४. दुर्लभ है उसे | अपवर्गः | ११. | मुक्त होने का समय |
| चअपिअहम्भवत् | ५. भी मैं आपका | त्वयि | १६. | आप में |
| अनुग्रह | ६. अनुग्रह | अब्जनाभ | १३. | हे पद्मनाभ । |
| ईश | ८. हे स्वामी ! | सत् | १४. | सत्पुरुषों की |
| मन्ये । | ७. मानता हूँ | उपासनया | १५. | उपासना से |
| | | मतिःस्यात् ॥ | १७. | चित्तवृत्ति लगती है |

श्लोकार्थ—वह मैं आपके चरणों में पहुँचा हूँ । जो दुष्टों के लिए दुर्लभ है उसे भी मैं आपका अनुग्रह मानता हूँ । स्वामी ! जब संसार से मनुष्य के मुक्त होने का समय होता है तब हे पद्मनाभ ! सत्पुरुषों की उपासना से आप में चित्तवृत्ति लगती है ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**नमो विज्ञानमात्राय सर्वप्रत्ययहेतवे ।**
**पुरुषेशप्रधानाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥२९॥**

पदच्छेद— नमः विज्ञानमात्राय सर्व प्रत्यय हेतवे ।
पुरुष ईशप्रधानाय ब्रह्मणे अनन्तशक्तये ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | १०. | नमस्कार है | पुरुष | ५. | पुरुषों के |
| विज्ञानमात्राय | १. | केवल विज्ञान रूप | ईशप्रधानाय | ६. | स्वामी के भी स्वामी |
| सर्व | २. | सभी | ब्रह्मणे | ७. | ब्रह्म और |
| प्रत्यय | ३. | प्रतीतियों के | अनन्त | ८. | अनन्त |
| हेतवे । | ४. | कारण स्वरूप | शक्तये ॥ | ९. | शक्ति वाले आप को |

श्लोकार्थ—केवल विज्ञान रूप सभी प्रतीतियों के कारण स्वरूप पुरुषों के स्वामी के भी स्वामी ब्रह्म और अनन्त शक्ति वाले आप को नमस्कार है ।

## त्रिंशः श्लोकः

**नमस्ते वासुदेवाय सर्वभूतक्षयाय च ।**
**हृषीकेश नमस्तुभ्यं प्रपन्नं पाहि मां प्रभो ॥३०॥**

पदच्छेद— नमः ते वासुदेवाय सर्वभूत क्षयाय च ।
हृषीकेश नमः तुभ्यम् प्रपन्नम् पाहि माम् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नमः | ६ | नमस्कार है | हृषीकेश | ७. | इन्द्रियों के स्वामी |
| ते | ५. | आप को | नमः | ९. | नमस्कार है |
| वासुदेवाय | १. | वासुदेव | तुभ्यम् | ८. | आप को |
| सर्वभूत | ३. | सभी प्राणियों का | प्रपन्नम् | १२. | शरणागत की |
| क्षयाय | ४. | क्षय करने वाले | पाहि | १३. | रक्षा कीजिये |
| च । | २. | और | माम् | ११. | मुझ |
| | | | प्रभो ॥ | १०. | हे प्रभो ! |

श्लोकार्थ—वासुदेव और सभी प्राणियों का क्षय करने वाले आप को नमस्कार है । इन्द्रियों के स्वामी आप को नमस्कार है । हे प्रभो ! मुझ शरणगत की रक्षा कीजिये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अक्रूरस्तुतिर्नाम चत्वारिंशः अध्यायः ॥४०॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## एकचत्वारिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— स्तुवतस्तस्य भगवान् दर्शयित्वा जले वपुः ।
भूयः समाहरत् कृष्णो नटो नाट्यमिवात्मनः ॥१॥

पदच्छेद— स्तुवतः तस्य भगवान् दर्शयित्वा जले वपुः ।
भूयः समाहरत् कृष्णः नटः नाट्यम् इव आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्तुवतः | १. | स्तुति करते हुये | भूयः | ८. | पुनः |
| तस्य | २. | उस (अक्रूर) को | समाहरत् | ९. | छिपा लिया |
| भगवान् | ३. | भगवान् | कृष्णः | ४. | श्रीकृष्ण ने |
| दर्शयित्वा | ७. | दिखा कर | नटः नाट्यम् | ११. | नट अभिनय में |
| जले | ५. | जल में (अपना) | इव | १०. | जैसे कोई |
| वपुः । | ६. | रूप | आत्मनः ॥ | १२. | अपने को दिखा कर छिपा ले |

श्लोकार्थ—स्तुति करते हुये उस अक्रूर को भगवान् श्रीकृष्ण ने जल में अपना स्वरूप दिखा कर छिपा लिया, जैसे कोई नट अभिनय में अपने को दिखा कर छिपा ले ॥

### द्वितीयः श्लोकः

सोऽपि चान्तर्हितं वीक्ष्य जलादुन्मज्ज्य सत्वरः ।
कृत्वा चावश्यकं सर्वं विस्मितो रथमागमत् ॥२॥

पदच्छेद— सः अपि च अन्तर्हितम् वीक्ष्य जलात् उन्मज्ज्य सत्वरः ।
कृत्वा च आवश्यकम् सर्वम् विस्मितः रथम् आगमत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः अपि | ४. | उन्होंने भी | कृत्वा च | १०. | करके |
| च | १. | तब (रूप को) | आवश्यकम् | ८. | आवश्यक |
| अन्तर्हितम् | २. | अन्तर्ध्यान हुआ | सर्वम् | ९. | कार्य |
| वीक्ष्य | ३. | जान कर | विस्मितः | ११. | अति आश्चर्य चकित होकर |
| जलात् | ५. | जल से | रथम् | १२. | रथ पर |
| उन्मज्ज्य | ६. | बाहर निकल कर | आगमत् ॥ | १३. | आ गये |
| सत्वरः । | ७. | शीघ्र ही | | | |

श्लोकार्थ—तब रूप को अन्तर्ध्यान हुआ जान कर उन्होंने भी जल से बाहर निकल कर शीघ्र ही आवश्यक कार्य करके अति आश्चर्य चकित होकर रथ पर आ गये ॥

# तृतीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— तमपृच्छद्धृषीकेशः किं ते दृष्टमिवाद्भुतम् ।
भूमौ वियति तोये वा तथा त्वां लक्षयामहे ॥३॥

पदच्छेद—

तम् अपृच्छत् हृषीकेशः किम् ते दृष्टम् इव अद्भुतम् ।
भूमौ वियति तोये वा तथा त्वाम् लक्षयामहे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | २. उनसे | भूमौ | ५. पृथ्वी |
| अपृच्छत् | ३. पूछा (चाचा जी) | वियति | ६. आकाश |
| हृषीकेशः | १. श्रीकृष्ण ने | तोये | ८ जल में |
| किम् ते | ४. क्या आपको | वा | ७. या |
| दृष्टम् | ११. दिखाई पड़ी है क्योंकि | तथा | १३. आश्चर्यचकित |
| इव | १०. सी वस्तु | त्वाम् | १२. आपको |
| अद्भुतम् । | ९. कोई अद्भुत | लक्षयामहे ॥ | १४. देख रहे हैं |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने उनसे पूछा चाचा जी क्या आपको पृथ्वी, आकाश वा जल में कोई अद्भुत सी वस्तु दिखाई पड़ी है। क्योंकि आपको आश्चर्य-चकित देख रहे है ॥

# चतुर्थः श्लोकः

अद्भुतानीह यावन्ति भूमौ वियति वा जले ।
त्वयि विश्वात्मके तानि किं मेऽदृष्टं विपश्यतः ॥४॥

पदच्छेद—

अद्भुतानि इह यावन्ति भूमौ वियति वा जले ।
त्वयि विश्वात्मके तानि किम् मे अदृष्टम् विपश्यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अद्भुतानि | ७. अद्भुत पदार्थ है | त्वयि | १०. आपमें हैं |
| इह | १. यहाँ | विश्वात्मके | ९. विश्वरूप |
| यावन्ति | ६. जितने | तानि | ८. वे (सब) |
| भूमौ | २. भूमि | किम् | १३. क्या |
| वियति | ३. आकाश | मे | ११. मैंने |
| वा | ४. या | अदृष्टम् | १४. नहीं देखा |
| जले । | ५. जल में | विपश्यतः ॥ | १२. आपको देखते हुये |

श्लोकार्थ—यहाँ भूमि, आकाश या जल में जितने अद्भुत पदार्थ हैं, वे सब विश्वरूप आप में है। मैंने आपको देखते हुये क्या नहीं देखा ॥

## पञ्चमः श्लोकः

यत्राद्‌भुतानि सर्वाणि भूमौ वियति वा जले ।
तं त्वानुपश्यतो ब्रह्मन् किं मे दृष्टमिहाद्‌भुतम् ॥५॥

पदच्छेद—

यत्र अद्‌भुतानि सर्वाणि भूमौ वियति वा जले ।
तम् त्वा अनुपश्यतः ब्रह्मन् किम् मे दृष्टम् इह अद्‌भुतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत्र | ७. जिनमें हैं | तम् | ९. उन्हीं |
| अद्‌भुतानि | ६. अद्‌भुत वस्तुयें | त्वा | १०. आपके |
| सर्वाणि | ५. सबकी सब | अनुपश्यतः | ११. देखते हुये |
| भूमौ | १. पृथ्वी | ब्रह्मन् | ८. हे ब्रह्मन् ! |
| वियति | २. आकाश | किम् मे | १३. क्या मैंने |
| वा | ३. या | दृष्टम् | १५. देखी है |
| जले । | ४. जल में | इह | १२. यहाँ |
| | | अद्‌भुतम् | १४. अलौकिक वस्तु |

श्लोकार्थ—पृथ्वी, आकाश या जल में सबकी सब अद्‌भुत वस्तुयें जिनमें हैं, हे ब्रह्मन् ! उन्हीं आपके देखते हुये यहाँ क्या मैंने अलौकिक वस्तु देखी है ॥

## षष्ठः श्लोकः

इत्युक्त्वा चोदयामास स्यन्दनं गान्दिनीसुतः ।
मथुरामनयद् रामं कृष्णं चैव दिनात्यये ॥६॥

पदच्छेद—

इति उक्त्वा चोदयामास स्यन्दनम् गान्दिनीसुतः ।
मथुराम् अनयद् रामम् कृष्णम् च एव दिनात्यये ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. यह | अनयद् | १२. ले गये |
| उक्त्वा | २. कहकर | रामम् | ९. राम और |
| चोदयामास | ५. हाँक दिया | कृष्णम् | १०. कृष्ण को |
| स्यन्दनम् | ४. रथको | च | ६. और |
| गान्दिनीसुतः । | ३. अक्रूर ने | एव | ८. ही |
| मथुराम् | ११. मथुरा | दिनात्यये ॥ | ७. दिन ढलते-ढलते |

श्लोकार्थ—यह कहकर अक्रूर ने रथ को हाँक दिया और दिन ढलते-ढलते ही राम और कृष्ण को मथुरा ले गये ॥

## सप्तमः श्लोकः

**मार्गे ग्रामजना राजंस्तत्र तत्रोपसंगताः ।**
**वसुदेवसुतौ वीक्ष्य प्रीता दृष्टिं न चाददुः ॥७॥**

पदच्छेद— मार्गे ग्रामजनाः राजन् तत्र-तत्र उपसंगताः ।
वसुदेव सुतौ वीक्ष्य प्रीताः दृष्टिम् न च आददुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मार्गे | २. मार्ग में | वासुदेव | ७. वसुदेव के |
| ग्रामजनाः | ३. गांव के लोग | सुतौ | ८. दोनों पुत्रों को |
| राजन् | १. हे राजन् ! | वीक्ष्य | ९. देख कर |
| तत्र | ४. स्थान | प्रीताः | १०. प्रसन्न हो जाते (और) |
| तत्र | ५. स्थान पर | दृष्टिम् | ११. उन पर से अपनी दृष्टि को |
| उपसंगताः । | ६. मिलने के लिये आते | न च आददुः ॥ | १२. नहीं हटा पाते थे |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मार्ग में गांव के लोग स्थान-स्थान पर मिलने के लिये आते और वसुदेव के पुत्रों को देख कर प्रसन्न हो जाते और उन पर से अपनी दृष्टि नहीं हटा पाते थे ॥

## अष्टमः श्लोकः

**तावद् व्रजौकसस्तत्र नन्दगोपादयोऽग्रतः ।**
**पुरोपवनमासाद्य प्रतीक्षन्तोऽवतस्थिरे ॥८॥**

पदच्छेद— तावत् व्रजओकसः तत्र नन्दगोप आदयः अग्रतः ।
पुर उपवनम् आसाद्य प्रतीक्षन्तः अवतस्थिरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तावत् | ४. तो | पुर | ७. नगर के |
| व्रजओकसः | १. व्रजवासी | उपवनम् | ८. उद्यान में |
| तत्र | ६. वहाँ | आसाद्य | ९. पहुँच कर |
| नन्दगोप | २. नन्दगोप | प्रतीक्षन्तः | १०. उनकी प्रतीक्षा |
| आदयः | ३. आदि | अवतस्थिरे ॥ | ११. कर रहे थे |
| अग्रतः । | ५. पहले से ही | | |

श्लोकार्थ—व्रजवासी, नन्दगोप आदि तो पहले से ही नगर के उद्यान में पहुँच कर उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे ॥

## नवमः श्लोकः

**तान् समेत्याह भगवानक्रूरं जगदीश्वरः ।**
**गृहीत्वा पाणिना पाणिं प्रश्रितं प्रहसन्निव ॥९॥**

पदच्छेद— तान् समेत्य आह भगवान् अक्रूरम् जगदीश्वरः ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् प्रश्रितम् प्रहसन् इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तान् | १. | उनके | गृहीत्वा | ८. | लेकर |
| समेत्य | २. | पास पहुँच कर | पाणिना | ७. | अपने हाथ में |
| आह | १२. | कहा | पाणिम् | ६. | हाथ |
| भगवान् | ३. | भगवान् | प्रश्रितम् | ९. | विनम्र होकर |
| अक्रूरम् | ५. | अक्रूर का | प्रहसन् | १०. | हंसते हुये |
| जगदीश्वरम् । | ४. | श्रीकृष्ण ने | इव ॥ | ११. | उनसे |

श्लोकार्थ—उनके पास पहुँच कर भगवान् श्रीकृष्ण ने अक्रूर का हाथ अपने हाथ में लेकर विनम्र होकर हंसते हुये उनसे कहा ॥

## दशमः श्लोकः

**भवान् प्रविशतामग्रे सहयानः पुरीं गृहम् ।**
**वयं त्विहावमुच्याथ ततो द्रक्ष्यामहे पुरीम् ॥१०॥**

पदच्छेद— भवान् प्रविशताम् अग्रे सहयानः पुरीम् गृहम् ।
वयम् तु इह अवमुच्य अथ ततः द्रक्ष्यामहे पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भवान् | २. | आप | वयम् तु | ७. | हम लोग तो |
| प्रविशताम् | ५. | प्रवेश कीजिये (और) | इह | ९. | यहाँ |
| अग्रे | १. | पहले | अवमुच्य | १०. | उतर कर |
| सहयानः | ३. | रथ लेकर | अथ | ८. | पहले |
| पुरीम् | ४. | नगर में | ततः | ११. | बाद में |
| गृहम् । | ६. | घर जाइये | द्रक्ष्यामहे | १३. | देखेंगे |
| | | | पुरीम् ॥ | १२. | नगर को |

श्लोकार्थ—पहले आप रथ लेकर नगर में प्रवेश कीजिये और घर जाइये । हम लोग पहले यहाँ उतर कर बाद में नगर को देखेंगे ॥

## एकादशः श्लोकः

अक्रूर उवाच— नाहं भवद्भ्यां रहितः प्रवेक्ष्ये मथुरां प्रभो ।
त्यक्तुं नार्हसि मां नाथ भक्तं ते भक्तवत्सल ॥११॥

पदच्छेद— न अहम् भवद्भ्याम् रहितः प्रवेक्ष्ये मथुराम् प्रभो ।
त्यक्तुम् न अर्हसि माम् नाथ भक्तम् ते भक्तवत्सल ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ६. | नहीं | त्यक्तुम् | १३. | छोड़ दे |
| अहम् | २. | मैं | न अर्हसि | १४. | उचित नहीं है |
| भवद्भ्याम् | ३. | आप दोनों से | माम् | १२. | मुझको आप |
| रहितः | ४. | रहित होकर | नाथ | ८. | हे नाथ ! |
| प्रवेक्ष्ये | ७. | प्रवेश करूँगा | भक्तम् | ११. | भक्त |
| मथुराम् | ५. | मथुरा में | ते | १०. | आपके |
| प्रभो । | १. | हे प्रभो ! | भक्तवत्सल ॥ | ९. | भक्त वत्सल |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं आप दोनों से रहित होकर मथुरा में प्रवेश नहीं करूँगा । हे नाथ ! भक्त वत्सल आपके भक्त मुझको आप छोड़ दें यह उचित नहीं है ॥

## द्वादशः श्लोकः

आगच्छ याम गेहान् नः सनाथान् कुर्वधोक्षज ।
सहाग्रजः सगोपालैः सुहृद्भिश्च सुहृत्तम ॥१२॥

पदच्छेद— आगच्छ याम गेहान् नः सनाथान् कुरु अधोक्षज ।
सह अग्रजः सगोपालैः सुहृद्भिः च सुहृत्तम ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आगच्छ | २. | आइये | सह | ८. | के साथ |
| याम | ३. | चलें | अग्रजः | ५. | बलराम जी |
| गेहान् | १२. | घर को | स | १०. | सहित |
| नः | ११. | हमारे | गोपालैः | ७. | ग्वाल वालों |
| सनाथान् | १३. | सनाथ | सुहृद्भिः | ९. | बन्धुओं |
| कुरु | १४. | कीजिये | च | ६. | और |
| अधोक्षज । | १. | हे भगवान् ! | सुहृत्तम ॥ | ४. | अत्यन्त हितैषी प्रभो |

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! आइये चलें ! अत्यन्त हितैषी प्रभो ! बलराम जी और ग्वाल-बालों के साथ और बन्धुओं सहित हमारे घर को सनाथ कीजिये ।'

## त्रयोदशः श्लोकः

**पुनीहि पादरजसा गृहान् नो गृहमेधिनाम् ।**
**यच्छौचेनानुतृप्यन्ति पितरः साग्नयः सुराः ॥१३॥**

पदच्छेद— पुनीहि पादरजसा गृहान् नः गृहमेधिनाम् ।
यत्शौचेन अनुतृप्यन्ति पितरः सअग्नयः सुराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पुनीहि | ६. पवित्र कीजिये | यत् | ७. जिन (आपके) |
| पाद | ४. चरणों | शौचेन | ८. (चरणों की) धोवन से |
| रजसा | ५. धूलि से | अनुतृप्यन्ति | १२. तृप्त होते हैं |
| गृहान् | ३. घर को (अपने) | पितरः | ९. पितर (और) |
| नः | १. हम | सअग्नयः | १०. अग्नि सहित |
| गृहमेधिनाम् । | २. गृहस्थों के | सुराः ॥ | ११. देवता |

श्लोकार्थ—हम गृहस्थों के घर को अपने चरणों की धूलि से पवत्रि कीजिये । जिन आपके चरणों के धोवन से पितर और अग्नि सहित देवता तृप्त हो जाते हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**अवनिज्याङ्घ्रियुगलमासीच्छ्लोक्यो बलिर्महान् ।**
**ऐश्वर्यमतुलं लेभे गतिं चैकान्तिनां तु या ॥१४॥**

पदच्छेद— अवनिज्यअङ्घ्रियुगलम्आसीत् श्लोक्यः बलिः महान् ।
ऐश्वर्यम् अतुलम् लेभे गतिम् च एकान्तिनाम् तु:या ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अवनिज्य | ३. पखारकर | ऐश्वर्यम् | १०. ऐश्वर्य (तथा) |
| अङ्घ्रि | २. चरणों को | अतुलम् | ९. अतुलनीय |
| युगलम् | १. आपके दोनों | लेभे | १४. प्राप्त कर लिया |
| आसीत् | ७. हो गये | गतिम् | १३. गति मिलती है उसे भी |
| श्लोक्यः | ६. धन्य | च | ८. और |
| बलिः | ५. बलि | एकान्तिनाम् | ११. अनन्य भक्तों को |
| महान् । | ४. महात्मा | तु या । | १२. जो |

श्लोकार्थ—आपके दोनों चरणों को पखारकर महात्मा बलि धन्य हो गये । और अतुलनीय ऐश्वर्य तथा अनन्य भक्तों को जो गति मिलती है उसे भी प्राप्त कर लिया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**आपस्तेऽङ्घ्र्यवनेजन्यस्त्रींल्लोँकाञ्छुचयोऽपुनन् ।**
**शिरसाधत्त याः शर्वः स्वर्याताः सगरात्मजाः ॥१५॥**

पदच्छेद — आपः ते अङ्घ्रि अवनेजन्यः त्रीन्लोकान् शुचयः अपुनन् ।
शिरसा आधत्त याः शर्वः स्वः याताः सगर आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आपः | ३. | (गंगा जी के) जल ने | शिरसि | ९. | अपने सिर पर |
| ते अङ्घ्रि | १. | आपके चरण से | आधत्त | १०. | धारण किया और |
| अवनेजन्यः | २. | निकले हुये | याःशर्वः | ८. | जिस गंगाजल को शिव |
| त्रीन् | ४. | तीनों | स्वः | ११. | स्वर्ग को |
| लोकान् | ५. | लोकों को | याताः | १३. | चले गये |
| शुचयः | ६. | पवित्र | सगर | १२. | सगर के |
| अपुनन् । | ७. | कर दिया | आत्मजाः ॥ | | पुत्र (जिसके स्पर्श से) |

श्लोकार्थ— आपके चरण से निकले हुये गंगाजी के जल ने तीनों लोकों को पवित्र कर दिया । जिस गंगा जल को शिव ने अपने सिर पर धारण किया । और सगर के पुत्र जिसके स्पर्श से स्वर्ग को चले गये ॥

## षोडशः श्लोकः

**देवदेव जगन्नाथ पुण्यश्रवणकीर्तन ।**
**यदूत्तमोत्तमश्लोक नारायण नमोऽस्तु ते ॥१६॥**

पदच्छेद— देवदेव जगन्नाथ पुण्य श्रवण कीर्तन ।
यदूत्तम उत्तमश्लोक नारायण नमः अस्तु ते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देवदेव | १. | हे देवों के देव | यदूत्तम | ६. | यदुवंशियों में श्रेष्ठ |
| जगन्नाथ | २. | संसार के स्वामी | उत्तमश्लोक | ७. | उत्तम पुरुषों द्वारा स्तुति किये जाते हुये |
| पुण्य | ५. | मंगल कारी है | नारायण | ८. | नारायण |
| श्रवण | ३. | आपकी लीलाओं का | नमःअस्तु | १०. | नमस्कार है |
| कीर्तन । | ४. | कीर्तन | ते ॥ | ९. | आपको |

श्लोकार्थ—हे देवों के देव ! संसार के स्वामी आपकी लीलाओं का कीर्तन मंगलकारी है । यदुवंशियों में श्रेष्ठ उत्तम पुरुषों द्वारा स्तुति किये जाते हुये नारायण आपको नमस्कार है ॥

## सप्तदशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— आयास्ये भवतो गेहमहमार्यसमन्वितः ।
यदुचक्रद्रुहं हत्वा वितरिष्ये सुहृत्प्रियम् ॥१७॥

पदच्छेद—

आयास्ये भवतः गेहम् अहम् आर्य समन्वितः ।
यदुचक्र द्रुहम् हत्वा वितरिष्ये सुहृत् प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आयास्ये | ६. आऊँगा (और) | यदुचक्र | ७. यदुवंशियों के |
| भवतः | ४. आपके | द्रुहम् | ८. द्रोही |
| गेहम् | ५. घर | हत्वा | ९. (कंसको) मारकर |
| अहम् | १. मैं | वितरिष्ये | १२. करूँगा |
| आर्य | २. बड़े भाई के | सुहृत् | १०. बन्धुओं का |
| समन्वितः । | ३. साथ | प्रियम् | ११. प्रिय |

श्लोकार्थ—मैं बड़े भाई के साथ आपके घर आऊँगा और यदुवंशियों के द्रोही कंस को मारकर बन्धुओं का प्रिय करूँगा ॥

## अष्टादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवमुक्तो भगवता सोऽक्रूरो विमना इव ।
पुरीं प्रविष्टः कंसाय कर्मावेद्य गृहं ययौ ॥१८॥

पदच्छेद—

एवम् उक्तः भगवता सः अक्रूरः विमनाः इव ।
पुरीम् प्रविष्टः कंसाय कर्म आवेद्य गृहम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | २. इस प्रकार | पुरीम् | ८. नगर में |
| उक्तः | ३. कहने पर | प्रविष्टः | ९. प्रवेश करके (और) |
| भगवता | १. भगवान् के | कंसाय | १०. कंसकी |
| सः | ४. वे | कर्म | ११. (अपना) कार्य |
| अक्रूरः | ५. अक्रूर | आवेद्य | १२. बताकर |
| विमनाः | ६. अनमने | गृहम् | १३. घर |
| इव । | ७. से होकर | ययौ ॥ | १४. चले गये |

श्लोकार्थ—भगवान् के इस प्रकार कहने पर वे अक्रूर अनमने से होकर नगर में प्रवेश करके और कंसको अपना कार्य बताकर घर को चले गये ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

अथापराह्णे भगवान् कृष्णः सङ्कर्षणान्वितः ।
मथुरां प्राविशद् गोपैर्दिदृक्षुः परिवारितः ॥१९॥

पदच्छेद— अथ अपराह्णे भगवान् कृष्णः संकर्षण अन्वितः ।
मथुराम् प्राविशद् गोपैः दिदृक्षुः परिवारितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १०. | तदनन्तर | मथुराम् | ९. | मथुरापुरी को |
| अपराह्णे | २. | तीसरे पहर | प्राविशद् | ११. | प्रवेश किया |
| भगवान् | ३. | भगवान् | गोपैः | ६. | ग्वाल वालों से |
| कृष्णः | ५. | श्री कृष्ण ने | दिदृक्षुः | १०. | देखने के लिये |
| संकर्षण | ६. | बलराम जी के | परिवारितः ॥ | ८. | घिरे हुये |
| अन्वितः । | | साथ | | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर तीसरे पहर भगवान् श्रीकृष्ण नेबलराम जी के साथ ग्वाल-वालों से घिरे हुये, मथुरा पुरी को देखने के लिये प्रवेश किया ॥

## विंशः श्लोकः

ददर्श तां स्फाटिकतुङ्गगोपुरद्वारां बृहद्धेमकपाटतोरणाम् ।
ताम्रारकोष्ठां परिखादुरासदामुद्यानरम्योपवनोपशोभिताम् ॥२०॥

पदच्छेद— ददर्श ताम् स्फाटिकतुङ्गगोपुर द्वाराम्बृहत्हेमकपाट तोरणाम् ।
ताम्रअरकोष्ठाम् परिखादुरासदाम्उद्यानरम्यःउपवनउपशोभिताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ददर्श | १६. | देखा | ताम्र | ७. | तांबे और |
| ताम् | १५. | उस (नगरी) को | अरकोष्ठाम् | ८. | पीतल की चहार दीवारीवाली |
| स्फाटिक | १. | स्फाटिक मणियों के | परिखा | ९. | खाइयों के कारण |
| तुङ्ग | २. | ऊँचे-ऊँचे | दुरासदाम् | १०. | अगम्य |
| गोपुर | ३. | प्रधान दरवाजे तथा | उद्यान | ११ | बगीचों और |
| द्वाराम् | ४. | फाटकवाली | रम्यः | १३. | (सुन्दर उपहारों से) |
| बृहत्हेमकपाट | ५. | बड़े-बड़े सोने के किवाड़ों | उपवन | १२. | उपवनों से |
| तोरणाम् | ६. | बाहरी दरवाजों वाली | उपशोभिताम् ॥ | १४. | सुशोभित |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने स्फटिक मणियों के ऊँचे-ऊँचे प्रधान दरवाजे तथा फाटक वाली, बड़े-बड़े सोने के किवाड़ों और बाहरी दरवाजों वाली, तांबें और पीतल की चहार दीवारी वाली, खाइयों के कारण अगम्य, बगीचों और उपवनों से सुन्दर उपहारों से सुशोभित उस नगरी को देखा ॥

# एकविंशः श्लोकः

**सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कुटैः श्रेणीसभाभिर्भवनैरुपस्कृताम् ।**
**वैदूर्यवज्रामलनीलविद्रुमैर्मुक्ताहरिद्भिर्वलभीषु वेदिषु ॥२१॥**

पदच्छेद— सौवर्णशृङ्गाटकहर्म्यनिष्कुटैः श्रेणीसभाभिः भवनैः उपस्कृताम् ।
वैदूर्यवज्रअमलनीलविद्रुमैः मुक्ताहरिद्भिःवलभीषु वेदिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सौवर्ण | १. | सोने से | वैदूर्य | ९. | वैदूर्य मणि |
| शृङ्गाटक | २. | सजे हुये चौराहों | वज्र | १०. | हीरे |
| हर्म्य | ३. | धनियों के महलों | अमल | ११. | स्फटिक |
| निष्कुटैः | ४. | साथ के बगीचों | नीलविद्रुमैः | १२. | नीलम मूंगे |
| श्रेणी | ५. | कारीगारों के स्थानों | मुक्ता | १३. | मोती और |
| सभाभिः | ६. | सभागारों तथा | हरिद्भिः | १४. | पन्ने आदि से जड़े हुये |
| भवनैः | ७. | भवनों से | वलभीषु | १५. | छज्जों एवम् |
| उपस्कृताम् । | ८. | सुशोभित और | वेदिषु ॥ | १६. | चबूतरे वाली नगरी को देखा |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने सजे हुये चौराहों, धनियों के महलों, साथ के बगीचों, कारीगरों के स्थानों, सभागारों तथा भवनों से सुशोभित और वैदूर्यमणि, हीरे, स्फटिक, नीलम, मूंगे, मोती और पन्ने आदि से जड़े हुये छज्जों एवम् चबूतरे वाली नगरी को देखा ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

**जुष्टेषु जालामुखरन्ध्रकुट्टिमेष्वाविष्टपारावतबर्हिनादिताम् ।**
**संसिक्तरथ्यापणमार्गचत्वरां प्रकीर्णमाल्याङ्कुरलाजतण्डुलाम् ॥२२॥**

पदच्छेद— जुष्टेषु जालामुखरन्ध्रकुट्टिमेषुआविष्टपारावतबर्हिनादिताम् ।
संसिक्त रथ्या आपणमार्गचत्वराम् प्रकीर्णमाल्यअङ्कुरलाजतण्डुलाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जुष्टेषु | १. | सुन्दर | संसिक्तरथ्या | ८. | सींचीं गई गलियों और |
| जालामुखरन्ध्र | २. | झरोखों एवं | आपणमार्ग | ९. | और बाजारों के मार्गों तथा |
| कुट्टिमेषु | ३. | फर्शों पर | चत्वाराम् | १०. | चौराहों वाली |
| आविष्ट | ४. | बैठे हुये | प्रकीर्ण | १३. | बिखरी हुई |
| पारावत | ५. | कबूतर एवं | माल्याकुङ्र | ११. | माला, तथा |
| बर्हि | ६. | मोरों से | लाज | १२. | खील और |
| नादिताम् ॥ | ७. | शब्दायमान | तण्डुलाम् ॥ | १४. | चावल वाली (नगरी को देख |

श्लोकार्थ –श्रीकृष्ण ने सुन्दर झरोखों एवम् फर्शों पर बैठे हुये कबूतर एवम् मोरों से शब्दायमान सींची गई गलियों और बाजारों के मार्गों तथा चौराहों वाली, माला तथा अङ्कुर, खील और बिखरे हुए चावल वाली उस नगरी को देखा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**आपूर्णकुम्भैर्दधिचन्दनोक्षितैः प्रसूनदीपावलिभिः सपल्लवैः ।**
**सवृन्दरम्भाक्रमुकैः सकेतुभिः स्वलङ्कृतद्वारगृहां सपट्टिकैः ॥२३॥**

पदच्छेद— आपूर्णकुम्भैः दधिचन्दनोक्षितैः प्रसून दीपावलिभिः सपल्लवैः ।
सवृन्दरम्भाक्रमुकैः सकेतुभिः सुअलङ्कृतद्वारगृहाम् सपट्टिकैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आपूर्ण | ७. | जलभरे | सवृन्द | ९. | फल सहित |
| कुम्भैः | ८. | कलशों (और | रम्भा | १०. | केले के और |
| दधि | १. | दही और | क्रमुकैः | ११. | सुपारी के वृक्षों तथा |
| चन्दन | २. | चन्दन से | सकेतुभिः | १२. | पताकाओं और |
| उक्षितैः | ३. | चर्चित | सुअलङ्कृत | १४. | सुसज्जित |
| प्रसून | ४. | फूलों और | द्वारा | १५. | द्वार वाले |
| दीपावलिभिः | ६. | दीपसमूहों से युक्त | गृहाम् | १६. | गृहों से युक्त (नगर को देखा) |
| सपल्लवैः । | ५. | पल्लव सहित | सपट्टिकैः ॥ | १२. | रेशमी वस्त्रों से |

श्लोकार्थ - दही और चन्दन से चर्चित फूलों और पल्लवों सहित दीपों के समूहों से युक्त जल भरे कलशों से और फल सहित केले के और सुपारी के वृक्षों से तथा पताकाओं से और रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित द्वार वाले गृहों से युक्त नगरी को देखा ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**तां सम्प्रविष्टौ वसुदेवनन्दनौ वृतौ वयस्यैर्नरदेववर्त्मना ।**
**द्रष्टुं समीयुस्त्वरिताः पुरस्त्रियो हर्म्याणि चैवारुरुहुर्नृपोत्सुकाः ॥२४॥**

पदच्छेद— तां सम्प्रविष्टौ वसुदेवनन्दनौ वृतौ वयस्यैःनरदेववर्त्मना ।
द्रष्टुं समीयुःत्वरिताः पुरस्त्रियः हर्म्याणि च एव आरुरुहुः नृपउत्सुकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम् | ८. | उस नगरी में | द्रष्टुम् | १०. | उन्हें देखने के लिए |
| सम्प्रविष्टौ | ९. | प्रवेश किया (और) | समीयुः | १३. | आयीं और |
| वसुदेव | २. | वसुदेव के | त्वरिताः | १४. | झट-पट |
| नन्दनौ | ३. | दोनों पुत्रों ने | पुरस्त्रियः | १२. | नगर की स्त्रियाँ |
| वृतौ | ५. | साथ | हर्म्याणि | १२. | अटारियों पर |
| वयस्यैः | ४. | सखाओं के | चएव आरुरुहुः | १६. | चढ़ गई |
| नरदेव | ६ | राज | नृप | १. | हे राजन् । |
| वर्त्मना । | ७. | मार्ग से | उत्सुकाः ॥ | ११. | उत्सुकतावश |

श्लोकार्थ—हे राजन् । वसुदेव के दोनों पुत्रों ने सखाओं के साथ राज मार्ग से उस नगरी में प्रवेश किया और उन्हें देखने के लिये उत्सुकतावश नगर की स्त्रियाँ आईं और झटपट अटारियों पर चढ़ गईं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**काश्चिद् विपर्यग्धृतवस्त्रभूषणा विस्मृत्य चैकं युगलेष्वथापराः ।**
**कृतैकपत्रश्रवणैकनूपुरा नाङ्क्त्वा द्वितीयं त्वपराश्च लोचनम् ॥२५॥**

पदच्छेद— काश्चित् विपर्यक्धृतवस्त्रभूषणा विस्मृत्य च एकम्युगलेषुअथअपराः ।
कृतएकपत्रश्रवणाएकनूपुरा न अङ्क्त्वा द्वितीयं तुअपराः च लोचनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काश्चित् | १. | किसी-किसी ने | कृत | ११. | धारण किया |
| विपर्यक् | २. | उलटे | एकपत्र | १०. | पत्रनामक आभूषण, |
| धृतवस्त्रभूषणाः | ३. | वस्त्र और गहने पहनलिये | श्रवणा | ९. | किसी ने एक ही कान में |
| विस्मृत्य च | ६. | भूलकर | एकनूपुराः | १२. | किसी ने एक ही नूपुर पहना |
| एकम् | ८. | एक ही (गहना पहना) | न अङ्क्त्वा | १६. | अञ्जन बिना लगाये चल पड़ी |
| युगलेषु | ७. | जोड़े में से | द्वितीय तु | १४. | दूसरी |
| अथ | ४. | और | न अपराः च | १३. | दूसरी स्त्रियाँ |
| अपराः । | ५. | किसी-किसी ने | लोचनम् ॥ | १५. | आख में |

श्लोकार्थ—किसी-किसी ने उलटे वस्त्र और गहने पहन लिये और किसी-किसी ने भूलकर जोड़े में से एक ही गहना पहना । किसी ने एक ही कान में पत्र नामक आभूषण धारण किया । और किसी ने एक ही नूपुर पहना । दूसरी स्त्रियाँ दूसरी आँख में अञ्जन बिना लगाये चल पड़ीं ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**अश्नन्त्य एकास्तदपास्य सोत्सवा अभ्यज्यमाना अकृतोपमज्जनाः ।**
**स्वपन्त्य उत्थाय निशम्य निःस्वनं प्रपाययन्त्योऽर्भमपोह्य मातरः ॥२६॥**

पदच्छेद— अश्नन्त्यः एकाः तत्अपास्य स उत्सवाः अभ्यज्यमानाः अकृतउपमज्जनाः ।
स्वपन्त्य उत्थायः निशम्य निःस्वनम्प्रपाययन्त्यः अर्भम्अपोह्य मातरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अश्नन्त्यः | १. | खाती हुई | स्वपन्त्यः | ९. | सोती हुई स्त्रियाँ |
| एकाः | २. | कोई स्त्रियाँ | उत्थाय | १२. | उठकर चल दीं |
| तत् | ३. | उसे | निशम्य | ११. | सुनकर |
| अपास्य | ४. | छोड़कर | निःस्वनम् | १०. | कोलाहल |
| स उत्सवाः | ५. | आनन्द के साथ चलपड़ीं (कोई) | प्रपाययन्त्यः | १४. | पिलाती हुई |
| अभ्यज्यमानाः | ६. | उबटन लगवाती हुई | अर्भम् | १३. | बच्चों को दूध |
| अकृत | ८. | किये बिना चल पड़ीं | अपोह्य | १६. | उन्हें हटाकर चल पड़ीं |
| उपमज्जनाः । | ७. | स्नान | मातरः ॥ | १५. | मातायें |

श्लोकार्थ—खाती हुई कोइ स्त्रियाँ उसे छोड़कर अनन्द के साथ चल पड़ीं, कोई उबटन लगवाती हुई स्नान किये बिना चल पड़ीं । सोती हुई स्त्रियाँ कोलाहल सुनकर उठकर चल दीं । बच्चों को दूध पिलाती हुई मातायें उन्हें हटाकर चल पड़ीं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**मनांसि तासामरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितावलोकनैः ।**
**जहार मत्तद्विरदेन्द्रविक्रमो दृशां ददच्छ्रीरमणात्मनोत्सवम् ॥२७॥**

पदच्छेद— मनांसि तासाम् अरविन्दलोचनः प्रगल्भलीलाहसितअवलोकनैः ।
जहार मत्तद्विरदइन्द्र विक्रमः दृशाम् ददत् श्रीरमण आत्मना उत्सवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मनांसि | १५. | मन को | जहार | १६. | हर लिया |
| तासाम् | १४. | उनके | मत्तद्विरदइन्द्र | १. | मतवाले गजराज के समान |
| अरविन्द | ३. | कमल | विक्रमः | २. | चलने वाले |
| लोचनः | ४. | नयन (भगवान् ने) | दृशाम् | ७. | स्त्रियों के नेत्रों को |
| प्रगल्भ | ११. | निर्भय | ददत् | ९. | देते हुये |
| लीला | १०. | विलासपूर्ण | श्रीरमण | ५. | लक्ष्मी को आनन्दित करने वाले |
| हसित | १२. | हंसी तथा | आत्मना | ६. | अपने शरीर से |
| अवलोकनैः । | १३. | चितवन से | उत्सवम् ॥ | ८. | आनन्द |

श्लोकार्थ—मतवाले गजराज के समान चलने वाले कमल नयन भगवान् ने लक्ष्मी को आनन्दित करने वाले अपने शरीर से आनन्द देते हुये विलास पूर्ण निर्भय हंसी तथा चितवन से उनके मन को हर लिया ।

## अष्टाविंशः श्लोकः

**दृष्ट्वा मुहुःश्रुतमनुद्रुतचेतसस्तं तत्प्रेक्षणोत्स्मितसुधोक्षणलब्धमानाः ।**
**आनन्दमूर्तिमुपगुह्य दृशाऽऽत्मलब्धं हृष्यत्त्वचो जहुरनन्तमरिन्दमाधिम् ॥२८॥**

पदच्छेद—दृष्ट्वा मुहुःश्रुतम्अनुद्रुतचेतसः तम् तत् प्रेक्षण उत्स्मितसुधाउक्षणलब्धमानाः ।
आनन्द मूर्तिम्उपगुह्य दृशआत्मलब्धम् हृष्यत्त्वचःजहुः अनन्तम्अरिन्दम्आधिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ४. | देख कर | आनन्द मूर्तिम् | १०. | आनन्दमय स्वरूप का |
| मुहुः श्रुतम् | २. | बार-बार सुने गये | उपगुह्य दृशा | ११. | आलिंगन करके नेत्रों के द्वारा |
| अनुद्रुत चेतसः | ५. | चंचल व्याकुल चित्त वाली | आत्म लब्धम् | १२. | भगवान् को हृदय में ले जाकर |
| तम् | ३. | उन (श्रीकृष्ण को) | हृष्यत् त्वचः | १३. | रोमाञ्च से युक्त होकर त्वचा में |
| तत् प्रेक्षण | ६. | उनकी चितवन तथा | जहुः | १६. | त्याग दिया |
| उत्स्मित | ७. | मन्द मुसकान के | अनन्तम् | १४. | बहुत दिनों की |
| सुधा उक्षण | ८. | अमृत से सींच कर | अरिन्दम | १. | हे शत्रु दमनकारी परीक्षित् ! |
| लब्धमानाः । | ९. | सम्मानित की गई | आधिम् ॥ | १५. | मनोव्यथा को |

श्लोकार्थ—हे शत्रु दमनकारी परीक्षित् ! बार-बार सुने गये उन श्रीकृष्ण को देख कर चंचल व्याकुल चित्त वाली उनकी चितवन तथा मन्द मुसकान के अमृत से सींच कर सम्मानित की गई स्त्रियों ने आनन्दमय स्वरूप का आलिंगन करके नेत्रों के द्वारा भगवान् को हृदय में ले जाकर त्वचा में रोमाञ्च से युक्त होकर बहुत दिनों की मनो व्यथा को त्याग दिया ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**प्रासादशिखरारूढाः प्रीत्युत्फुल्लमुखाम्बुजाः ।**
**अभ्यवर्षन् सौमनस्यैः प्रमदा बलकेशवौ ॥२९॥**

पदच्छेद—

प्रासादशिखरआरूढाः प्रीति उत्फुल्लमुखअम्बुजाः ।
अभ्यवर्षन् सौमनस्यैः प्रमदा बलकेशवौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रासाद | ५. महलों की | अभ्यवर्षन् | ११. वर्षा करने लगीं |
| शिखर | ६. अटारियों पर | सौमनस्यैः | १०. फूलों की |
| आरूढाः | ७. चढ़कर | प्रमदा | ४. स्त्रियाँ |
| प्रीति | १. प्रेम से | बल | ८. बलराम और |
| उत्फुल्लमुख | २. विकसित मुखवाली | केशवौ ॥ | ९. श्रीकृष्ण पर |
| अम्बुजाः । | ३. कमलनयनी | | |

श्लोकार्थ—प्रेम से विकसित मुखवाली कमल नयनी स्त्रियाँ महलों की अटारियों पर चढ़कर बलराम और श्रीकृष्ण पर फूलों की वर्षा करने लगीं ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**दध्यक्षतैः सोदपात्रैः स्रग्गन्धैरभ्युपायनैः ।**
**तावानर्चुः प्रमुदितास्तत्र तत्र द्विजातयः ॥३०॥**

पदच्छेद—

दधिअक्षतैः स उदपात्रैः स्रक्गन्धैः अभिउपायनैः ।
तौआनर्चुः प्रमुदिताः तत्र-तत्र द्विजातयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दधि | ५. दही | तौ | १० उन दोनों की |
| अक्षतैः | ६. चावल | आनर्चुः | ११. पूजा की |
| स उदपात्रैः | ७. जल से भरे पात्र | प्रमुदिताः | ३. आनन्द मग्न होकर |
| स्रक् | ८. फूलों के हार | तत्र-तत्र | १. स्थान-स्थान पर |
| गन्धैः | ९. चन्दन आदि से | द्विजातयः ॥ | २. ब्राह्मण आदि ने |
| अभिउपायनैः । | ४. भेंट की सामग्रियों से | | |

श्लोकार्थ—स्थान-स्थान पर ब्राह्मण आदि ने आनन्दमग्न होकर भेंट की सामग्रियों दही, चावल, जल से भरे पात्र, फूलों के हार और चन्दन आदि—से उन दोनों की पूजा की ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**ऊचुः पौरा अहो गोप्यस्तपः किमचरन् महत् ।**
**या ह्येतावनुपश्यन्ति नरलोकमहोत्सवौ ॥३१॥**

पदच्छेद—

ऊचुः पौराः अहो गोप्यःतपः किम्अचरन् महत् ।
याः हि एतौ अनुपश्यन्ति नरलोक महोत्सवौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऊचुः | २. कहने लगे | महत् । | ५. महान् |
| पौराः | १. पुरवासी आपस में | याः हि | ८. जो वे |
| अहो | ३. अहा | एतौ | ११. इन दोनों को |
| गोप्यः | ४. गोपियों ने | अनुपश्यन्ति | १२. देखती रहती हैं |
| तपः किम् | ६. कौन सी तपस्या | नरलोक | ९. मनुष्य समूह को |
| अचरन् | ७. की है | महोत्सवौ ॥ | १०. परमानन्द देनेवाले |

श्लोकार्थ—पुरवासी आपस में कहने लगे । अहा ! गोपियों ने कौन सी महान् तपस्या की है जो वे मनुष्य समूह को परमानन्द देनेवाले इन दोनों को देखती रहती हैं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**रजकं कञ्चिदायान्तं रङ्गकारं गदाग्रजः ।**
**दृष्ट्वायाचत वासांसि धौतान्यत्युत्तमानि च ॥३२॥**

पदच्छेद—

रजकम् कञ्चित् आयान्तम् रङ्गकारम् गदाग्रजः ।
दृष्ट्वा अयाचत वासांसि धौतानि अतिउत्तमानि च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| रजकम् | ४. धोबी को | दृष्ट्वा | ५. देखकर |
| कञ्चित् | २. किसी | अयाचत | ११. मांगे |
| अयान्तम् | १. आते हुये | वासांसि | १०. वस्त्र |
| रङ्गकारम् | ३. रंगरेज | धौतानि | ७. धुले हुये |
| गदाग्रजः । | ६. श्रीकृष्ण ने (उमसे) | अतिउत्तमानि | ९. अत्यन्त उत्तम |
| | | च ॥ | ८. और |

श्लोकार्थ—यहाँ पर आते हुये किसी रंगरेज धोबी को देखकर श्रीकृष्ण ने उससे धुले हुये और अत्यन्त उत्तम वस्त्र मांगे ॥

## त्रयस्त्रिंश श्लोकः

देह्यावयोः समुचितान्यङ्ग वासांसि चार्हतोः ।
भविष्यति परं श्रेयो दातुस्ते नात्र संशयः ॥३३॥

पदच्छेद—

देहि आवयोः समुचितानि अङ्ग वासांसि च अर्हतोः ।
भविष्यति परम् श्रेयः दातुः ते न अत्र संशयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| देहि | ६. दो (क्योंकि) | भविष्यति | ९. होगा |
| आवयोः | ३. हम दोनों को | परम्श्रेयः | ८. परम कल्याण |
| समुचितानि | ४. समुचित (बहुत ठीक और सुन्दर) | दातुः ते | ७. देने वाले तुम्हारा |
| अङ्ग | १. हे भाई | न | १२. नहीं है |
| वासांसि च | ५. वस्त्र | अत्र | १०. इसमें |
| अर्हतोः । | २. वस्त्रों के योग्य | संशयः ॥ | ११. सन्देह |

श्लोकार्थ—हे भाई ! वस्त्रों के योग्य हम दोनों को समुचित, बहुत ठीक और सुन्दर वस्त्र दो । क्योंकि देने वाले तुम्हारा परम कल्याण होगा । इसमें सन्देह नहीं है ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

स याचितो भगवता परिपूर्णेन सर्वतः ।
साक्षेपं रुषितः प्राह भृत्यो राज्ञः सुदुर्मदः ॥३४॥

पदच्छेद—

सः याचितः भगवता परिपूर्णेन सर्वतः ।
स आक्षेपम् रुषितः प्राह भृत्यः राज्ञः सुदुर्मदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | ६. उस | स आक्षेपम् | १०. आक्षेप के साथ |
| याचितः | ४. याचना करने पर | रुषितः | ९. क्रोध में भरकर |
| भगवता | ३. भगवान् के | प्राह | ११. कहा |
| परिपूर्णेन | २. परिपूर्ण | भृत्यः | ८. सेवक ने |
| सर्वतः । | १. सब ओर से | राज्ञः | ५. राजा के |
| | | सुदुर्मदः ॥ | ७. मदमत्त |

श्लोकार्थ—सब ओर से परिपूर्ण भगवान् के याचना करने पर राजा के उस मदमत्त सेवक ने क्रोध में भरकर आक्षेप के साथ कहा ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**ईदृशान्येव वासांसि नित्यं गिरिवनेचराः ।**

**परिधत्त किमुद्वृत्ता राजद्रव्याण्यभीप्सथ ॥३५॥**

पदच्छेद— ईदृशानि एव वासांसि नित्यम् गिरि वनेचराः ।
परिधत्त किम् उद्वृत्ताः राज्य द्रव्याणि अभीप्सथ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ईदृशानि | ५. | ऐसे | परिधत्त | ८. धारण करते हो |
| एव | ६. | ही | किम् | ४. क्या |
| वासांसि | ७. | वस्त्र | उद्वृत्ताः | ९. उद्दण्डो ! जो तुम |
| नित्यम् | १. | नित्य | राज्य | १०. राजा के |
| गिरि | २. | पहाड़ और | द्रव्याणि | ११. वस्त्रों को |
| वनेचराः । | ३. | जंगलों में रहने वाले तुम लोग | अभीप्सथ ॥ | १२. चाहते हो |

श्लोकार्थ—नित्य पहाड़ और जङ्गलों में रहने वाले तुम लोग क्या ऐसे ही वस्त्र धारण करते हो । उद्दण्डो ! जो तुम राजा के वस्त्रों को चाहते हो ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**याताशु बालिशा मैवं प्रार्थ्यं यदि जिजीविषा ।**

**बध्नन्ति घ्नन्ति लुम्पन्ति दृप्तं राजकुलानि वै ॥३६॥**

पदच्छेद— यात आशु बालिशाः मा एवम् प्रार्थ्यम् यदि जिजीविषा ।
बध्नन्ति घ्नन्ति लुम्पन्ति दृप्तम् राजकुलानि वै ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यात आशु | २. | शीघ्र चले जाओ | बध्नन्ति | १०. बाँध देते हैं |
| बालिशाः | १. | हे मूर्खों ! | घ्नन्ति | ११. मार डालते हैं (और) |
| मा | ६. | मत करना | लुम्पन्ति | १२. लूट लेते हैं |
| एवम् | ४. | ऐसी | दृप्तम् | ८. उच्छृंखल व्यक्ति को |
| प्रार्थ्यम् | ५. | प्रार्थना | राजकुलानि | ७. राजा के कर्मचारी |
| यदि जिजीविषा । | ३. | यदि जीने की इच्छा हो तो | वै ॥ | ९. निश्चित रूप से |

श्लोकार्थ—हे मूर्खों ! शीघ्र चले जाओ । यदि जीने की इच्छा हो तो ऐसी प्रार्थना मत करना । राजा के कर्मचारी उच्छृंखल व्यक्ति को निश्चित ही बाँध देते हैं, मार डालते हैं और लूट लेते हैं ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**एवं विकत्थमानस्य कुपितो देवकीसुतः ।**
**रजकस्य कराग्रेण शिरः कायादपातयत् ॥३७॥**

पदच्छेद— एवम् विकत्थमानस्य कुपितः देवकी सुतः ।
रजकस्य कराग्रेण शिरः कायात् अपातयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | रजकस्य | ३. धोबी पर |
| विकत्थमानस्य | २. बहक कर बातें करते हुये | कराग्रेण | ७. हाथ के अग्र भाग से |
| कुपितः | ४. क्रुद्ध हुये | शिरः | ८. उसके सिर को |
| देवकी | ५. देवकी के | कायात् | ९. धड़ से |
| सुतः । | ६. पुत्र (श्रीकृष्ण) ने | अपातयत् ॥ | १०. अलग कर दिया |

श्लोकार्थ—इस प्रकार बहक कर बातें करते हुये धोबी पर क्रुद्ध हुये देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण ने हाथ के अग्रभाग से उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**तस्यानुजीविनः सर्वे वासः कोशान् विसृज्य वै ।**
**दुद्रुवुः सर्वतो मार्गं वासांसि जगृहेऽच्युतः ॥३८॥**

पदच्छेद— तस्य अनुजीविनः सर्वे वासः कोशान् विसृज्य वै ।
दुद्रुवुः सर्वतः मार्गम् वासांसि जगृहे अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तस्य | १. उसके | दुद्रुवुः | ९. भाग गये |
| अनुजीविनः | २. अधीन कर्मचारी | सर्वतः | ७. सब ओर के |
| सर्वे | ३. सबके सब | मार्गम् | ८. मार्गों में |
| वासः | ४. कपड़ों के | वासांसि | १०. उन वस्त्रों को |
| कोशान् | ५. गट्ठरों को | जगृहे | १२. ले लिया |
| विसृज्य वै । | ६. छोड़ कर | अच्युतः ॥ | ११. भगवान् श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—उसके अधीन कर्मचारी सबके सब कपड़ों के गट्ठरों को छोड़ कर सब ओर के मार्गों में भाग गये । उन वस्त्रों को भगवान् श्रीकृष्ण ने ले लिया ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**वसित्वाऽऽत्मप्रिये वस्त्रे कृष्णः सङ्कर्षणस्तथा ।**
**शेषाण्यादत्त गोपेभ्यो विसृज्य भुवि कानिचित् ॥३९॥**

पदच्छेद— वसित्वा आत्मप्रिये वस्त्रे कृष्णः सङ्कर्षणः तथा ।
शेषाणि आदत्त गोपेभ्यः विसृज्य भुवि कानिचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वसित्वा | ६. | पहन कर | शेषाणि | ७. | बचे हुये वस्त्र |
| आत्मप्रिये | ४. | अपने प्रिय | आदत्त | ९. | दे दिये (और) |
| वस्त्रे | ५. | वस्त्रों को | गोपेभ्यः | ८. | ग्वाल वालों को |
| कृष्णः | १. | भगवान् श्रीकृष्ण | विसृज्य | १२. | छोड़ कर चल दिये |
| सङ्कर्षणः | ३. | बलराम ने | भुवि | ११. | भूमि पर ही |
| तथा । | २. | और | कानिचित् ॥ | १०. | कुछ |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने प्रिय वस्त्रों को पहन कर बचे हुये वस्त्र ग्वाल-वालों को दे दिये । और कुछ भूमि पर ही छोड़ कर चल दिये ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**ततस्तु वायकः प्रीतस्तयोर्वेषमकल्पयत् ।**
**विचित्रवर्णैश्चैलेयैराकल्पैरनुरूपतः ॥४०॥**

पदच्छेद— ततः तु वायकः प्रीतः तयोः वेषम् अकल्पयत् ।
विचित्र वर्णैः चैलेयैः आकल्पैः अनुरूपतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः तु | १. | तदनन्तर | विचित्र | ७. | जो अनेक |
| वायकः | २. | एक दर्जी ने | वर्णैः | ८. | रङ्गों में |
| प्रीतः | ३. | प्रसन्न होकर | चैलेयैः | ९. | सुन्दर और |
| तयोः | ४. | उन दोनों के | आकल्पैः | ११. | लग रहा था |
| वेषम् | ५. | ऐसा वेश | अनुरूपतः ॥ | १०. | ठीक-ठीक |
| अकल्पयत् । | ६. | बना दिया | | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर एक दर्जी ने प्रसन्न होकर उन दोनों के ऐसा वेश बना दिया । जो अनेक रङ्गों में सुन्दर और ठीक-ठीक लग रहा था ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**नानालक्षणवेषाभ्यां कृष्णरामौ विरेजतुः ।**
**स्वलङ्कृतौ बालगजौ पर्वणीव सितेतरौ ॥४१॥**

पदच्छेद— नाना लक्षण वेषाभ्याम् कृष्ण रामौ विरेजतुः ।
सु अलङ्कृतौ बालगजौ पर्वणि इव सितेतरौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नाना | १. | अनेक | सु | ११. | भली भाँति |
| लक्षण | २. | प्रकार के | अलङ्कृतौ | १२. | सजा दिये गये हों |
| वेषाभ्याम् | ३. | वस्त्र धारण किये हुये | बालगजौ | १०. | गज शावक |
| कृष्ण | ४. | कृष्ण और | पर्वणि | ८. | उत्सव के समय |
| रामौ | ५. | बलराम | इव | ७. | जैसे |
| विरेजतुः । | ६. | विशेष रूप से ऐसे शोभित हुये | सितइतरौ ॥ | ९. | श्वेत और श्याम |

श्लोकार्थ—अनेक प्रकार के वस्त्र धारण किये हुये कृष्ण और बलराम ऐसे शोभित हुये जैसे उत्सव के समय श्वेत और श्याम गज शावक सजा दिये गये हों ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तस्य प्रसन्नो भगवान् प्रादात् सारूप्यमात्मनः ।**
**श्रियं च परमां लोके बलैश्वर्यस्मृतीन्द्रियम् ॥४२॥**

पदच्छेद— तस्य प्रसन्नः भगवान् प्रादात् सारूप्यम् आत्मनः ।
श्रियम् च परमाम् लोके बल ऐश्वर्य स्मृति इन्द्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्य | १. | उस पर | च | ११. | और |
| प्रसन्नः | २. | प्रसन्न होकर | परमाम् | ५. | भरपूर |
| भगवान् | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण ने (उसे) | लोके | ४. | इस लोक में |
| प्रादात् | १४. | दे दिया | बल | ७. | बल |
| सारूप्यम् | १३. | सारूप्य मोक्ष | ऐश्वर्य | ८. | ऐश्वर्य |
| आत्मनः । | १२. | अपना | स्मृति | ९. | स्मरण शक्ति |
| श्रियम् | ६. | धन-सम्पत्ति | इन्द्रियम् ॥ | १०. | इन्द्रिय शक्ति |

श्लोकार्थ—उस पर प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे इस लोक में भरपूर धन-सम्पत्ति, बल, ऐश्वर्य, स्मरण शक्ति, इन्द्रिय शक्ति और अपना सारूप्य मोक्ष दे दिया ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**ततः सुदाम्नो भवनं मालाकारस्य जग्मतुः ।**
**तौ दृष्ट्वा स समुत्थाय ननाम शिरसा भुवि ॥४३॥**

पदच्छेद— ततः सुदाम्नः भवनम् मालाकारस्य जग्मतुः ।
तौ दृष्ट्वा सः समुत्थाय ननाम शिरसा भुवि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तदनन्तर (दोनों भाई) | दृष्ट्वा | ७. | देख कर |
| सुदाम्नः | २. | सुदामा | सः | ८. | उसने |
| भवनम् | ४. | घर | समुत्थाय | ९. | उठ कर |
| मालाकारस्य | ३. | माली के | ननाम | १२. | प्रणाम किया |
| जग्मतुः । | ५. | गये | शिरसा | ११. | माथा टेक कर |
| तौ | ६. | उन दोनों को | भुवि ॥ | १०. | पृथ्वी पर |

श्लोकार्थ—तदनन्तर दोनों भाई सुदामा माली के घर गये । उन दोनों को देख कर उसने उठ कर पृथ्वी पर माथा टेक कर प्रणाम किया ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तयोरासनमानीय पाद्यं चार्घ्यार्हणादिभिः ।**
**पूजां सानुगयोश्चक्रे स्रक्ताम्बूलानुलेपनैः ॥४४॥**

पदच्छेद— तयोः आसनम् आनीय पाद्यम् च अर्घ्य अर्हण आदिभिः ।
पूजाम् सः अनुगयोः चक्रे स्रक् ताम्बूल अनुलेपनैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | ३. | उन दोनों के लिये | पूजाम् | १४. | उनकी पूजा |
| आसनम् | ४. | आसन तथा | सः | २. | सहित |
| आनीय | ६. | लाकर | अनुगयोः | १. | ग्वाल वालों सहित |
| पाद्यम् | ५. | पैर धोने के लिये जल | चक्रे | १५. | की |
| च | ७. | और | स्रक् | ९. | पुष्प माला |
| अर्घ्य | ८. | अर्घ्य | ताम्बूल | १०. | पान तथा |
| अर्हण | १३. | सामग्रियों से | अनुलेपनैः ॥ | ११. | चन्दन |
| आदिभिः । | १२. | आदि | | | |

श्लोकार्थ—ग्वाल-वालों के सहित उन दोनों के लिये आसन तथा पैर धोने के लिये जल लाकर और अर्घ्य, पुष्प माला, पान तथा चन्दन आदि सामग्रियों से उनको पूजा की ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**प्राह नः सार्थकं जन्म पावितं च कुलं प्रभो ।**
**पितृदेवर्षयो मह्यं तुष्टा ह्यागमनेन वाम् ॥४५॥**

पदच्छेद— प्राह नः सार्थकम् जन्म पावितम् च कुलम् प्रभो ।
पितृ देवर्षयः मह्यम् तुष्टाः हि अगमनेन वाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्राह | १. उसने कहा | पितृ | ९. पितर |
| नः | ५. हमारा | देवर्षयः | १०. देवता और ऋषि |
| सार्थकम् जन्म | ६. जन्म सुफल हो गया | मह्यम् | ११. मुझ पर |
| पावितम् च | ८. पवित्र कर दिया | तुष्टाः हि | १२. सन्तुष्ट हो गये |
| कुलम् | ७. हमारे कुल को | अगमनेन | ४. आने से |
| प्रभो । | २. हे प्रभो ! | वाम् ॥ | ३. आप दोनों के |

श्लोकार्थ—उसने कहा है—प्रभो ! आप दोनों के आने से हमारा जन्म सफल हो गया, हमारे कुल को पवित्र कर दिया । पितर, देवता और ऋषि मुझ पर सन्तुष्ट हो गये ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**भवन्तौ किल विश्वस्य जगतः कारणं परम् ।**
**अवतीर्णाविहांशेन क्षेमाय च भवाय च ॥४६॥**

पदच्छेद— भवन्तौ किल विश्वस्य जगतः कारणम् परम् ।
अवतीर्णौ इह अंशेन क्षेमाय च भवाय च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भवन्तौ | १. आप दोनों | अवतीर्णौ | १२. अवतीर्ण हुये हैं |
| किल | २. निश्चित ही | इह | १०. यहाँ |
| विश्वस्य | ३. सम्पूर्ण | अंशेन | ११. अंशों के सहित |
| जगतः | ४. जगत् के | क्षेमाय | ७. संसार के कल्याण |
| कारणम् | ६. कारण हैं | च | ८. और |
| परम् । | ५. परम | भवाय च ॥ | ९. अभ्युदय के लिये |

श्लोकार्थ—आप दोनों निश्चित ही सम्पूर्ण जगत् के परम कारण हैं। संसार के कल्याण और अभ्युदय के लिये यहाँ अंशों सहित अवतीर्ण हुये हैं ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**न हि वां विषमा दृष्टिः सुहृदोर्जगदात्मनोः ।**
**समयोः सर्वभूतेषु भजन्तं भजतोरपि ॥४७॥**

पदच्छेद— न हि वाम् विषमा दृष्टिः सुहृदोः जगत् आत्मनोः ।
समयोः सर्व भूतेषु भजन्तम् भजतोः अपि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न हि | १३ | नहीं है | समयोः | ९. | समभाव में स्थित |
| वाम् | १०. | आप दोनों की | सर्व | ७. | सभी |
| विषमा | १२. | विषमता | भूतेषु | ८. | प्राणियों में |
| दृष्टिः | ११. | दृष्टि में | भजन्तम् | ४. | भजन करने वालों के |
| सुहृदोः | २. | सुहृद् और | भजतोः | ५. | भजते हुये |
| जगत् | १. | संसार के | अपि ॥ | ६. | भी |
| आत्मनोः । | ३. | आत्म स्वरूप (तथा) | | | |

श्लोकार्थ—संसार के सुहृद् और आत्म स्वरूप तथा भजन करने वालों के भजते हुये भी सभी प्राणियों में समभाव में स्थित आप दोनों की दृष्टि में विषमता नहीं है ।

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**तावाज्ञापयतं भृत्यं किमहं करवाणि वाम् ।**
**पुंसोऽस्त्यनुग्रहो ह्येष भवद्भिर्यन्नियुज्यते ॥४८॥**

पदच्छेद— तौ आज्ञापयतम् भृत्यम् किम् अहम् करवाणि वाम् ।
पुंसः अति अनुग्रहः हि एषः भवद्भिः यत् नियुज्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तौ | १. | आप दोनों | पुंसः | ८. | जीव पर |
| आज्ञापयतम् | ३. | आज्ञा दें कि | अति | १०. | बड़ी |
| भृत्यम् | २. | इस दास को | अनुग्रहः | ११. | कृपा है |
| किम् | ६. | क्या (सेवा) | हि एषः | ९. | यह आपकी |
| अहम् | ४. | मैं | भवद्भिः | १३. | आप (उसे किसी कार्य में) |
| करवाणि | ७. | करूँ | यत् | १२. | जो कि |
| वाम् । | ५. | आप दोनों की | नियुज्यते ॥ | १४. | नियुक्त करते हैं |

श्लोकार्थ—आप दोनों इस दास को आज्ञा दें कि मैं आप दोनों की क्या सेवा करूँ । जीव पर यह आप की बड़ी कृपा है जो आप उसे किसी कार्य में नियुक्त करते हैं ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

इत्यभिप्रेत्य राजेन्द्र सुदामा प्रीतमानसः।
शस्तैः सुगन्धैः कुसुमैर्माला विरचिता ददौ ॥४९॥

पदच्छेद— इति अभिप्रेत्य राजेन्द्र सुदामा प्रीत मानसः।
शस्तैः सुगन्धैः कुसुमैः माला विरचिता ददौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | इस प्रकार | शस्तैः | ७. | उत्तम और |
| अभिप्रेत्य | ३. | अभिप्राय जान कर | सुगन्धैः | ८. | सुगन्धित |
| राजेन्द्र | १. | हे राजेन्द्र ! | कुसुमैः | ९. | पुष्पों से |
| सुदामा | ६. | सुदामा ने | माला | ११. | माला (उन्हें) |
| प्रीत | ४. | प्रसन्न | विरचिता | १०. | बनायी गई |
| मानसः। | ५. | चित्त | ददौ ॥ | १२. | पहनायो |

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! इस प्रकार अभिप्राय जान कर प्रसन्न चित्त सुदामा ने उत्तम और सुगन्धित पुष्पों से बनाई गई माला उन्हें पहिनायी ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

ताभिः स्वलङ्कृतौ प्रीतौ कृष्णरामौ सहानुगौ।
प्रणताय प्रपन्नाय ददतुर्वरदौ वरान् ॥५०॥

पदच्छेद— ताभिः सुअलङ्कृतौ प्रीतौ कृष्ण रामौ सह अनुगौ।
प्रणताय प्रपन्नाय ददतुः वरदौ वरान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताभिः | १. | उन मालाओं से | प्रणताय | ८. | विनीत एवम् |
| सुअलङ्कृतौ | २. | भली भाँति अलंकृत होने पर | प्रपन्नाय | ९. | शरणागत (सुदामा को) |
| प्रीतौ | ३. | प्रसन्न हुये | ददतुः | ११. | दिये |
| कृष्ण रामौ | ७. | कृष्ण और बलराम ने | वरदौ | ६. | वरदायक |
| सह | ५. | सहित | वरान् ॥ | १०. | वर |
| अनुगौ। | ४. | ग्वाल वालों के | | | |

श्लोकार्थ—उन मालाओं से भली-भाँति अलङ्कृत होने पर प्रसन्न हुये ग्वाल-वालों के सहित वरदायक कृष्ण और बलराम ने विनीत एवम् शरणागत सुदामा को वर दिये ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

**सोऽपि वव्रेऽचलां भक्तिं तस्मिन्नेवाखिलात्मनि ।**
**तद्भक्तेषु च सौहार्दं भूतेषु च दयां पराम् ॥५१॥**

पदच्छेद— सः अपि वव्रे अचलाम् भक्तिम् तस्मिन् एव अखिल आत्मनि ।
तत् भक्तेषु च सौहार्दम् भूतेषु च दयाम् पराम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः अपि | १. | उस सुदामा ने भी | तत् | ८. | उनके |
| वव्रे | १४. | माँगी | भक्तेषु | ९. | भक्तों के प्रति |
| अचलाम् | ५. | निश्चल | च | ७. | और |
| भक्तिम् | ६. | भक्ति | सौहार्दम् | १०. | सुहृद्भाव (तथा) |
| तस्मिन् एव | २. | उन्हीं | भूतेषु च | ११. | प्राणियों के प्रति |
| अखिल | ३. | सब के | दयाम् | १३. | दया |
| आत्मनि । | ४. | आत्मा (भगवान् में) | पराम् ॥ | १२. | श्रेष्ठ |

श्लोकार्थ—उस सुदामा ने भी उन्हीं सबके आत्मा भगवान् में निश्चल भक्ति और उनके भक्तों के प्रति सुहृद्भाव तथा प्राणियों के प्रति श्रेष्ठ दया माँगी ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

**इति तस्मै वरं दत्त्वा श्रियं चान्वयवर्धिनीम् ।**
**बलमायुर्यशः कान्तिं निर्जगाम सहाग्रजः ॥५२॥**

पदच्छेद— इति तस्मै वरम् दत्त्वा श्रियम् च अन्वय वर्धिनीम् ।
बलम् आयुः यशः कान्तिम् निर्जगाम सह अग्रजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | बलम् | ६. | बल |
| तस्मै | २. | उसे | आयुः | ७. | आयु |
| वरम् दत्त्वा | ११. | वरदान देकर (भगवान्) | यशः | ८. | यश |
| श्रियम् | ५. | लक्ष्मी | कान्तिम् | १०. | कान्ति का |
| च | ९. | और | निर्जगाम | १४. | चले गये |
| अन्वय | ३. | वंश | सह | १३. | साथ |
| वर्धिनीम् । | ४. | बढ़ाने वाली | अग्रजः ॥ | १२. | बलराम जी के |

श्लोकार्थ—इस प्रकार उसे वंश बढ़ाने वाली लक्ष्मी, बल, आयु, यश और कान्ति का वरदान देकर भगवान् बलराम जी के साथ चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
पुरप्रवेशो नाम एकचत्वारिंशः अध्यायः ॥४१॥

## श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
### दशमः स्कन्धः
### द्विचत्वारिंशः अध्यायः
### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथ व्रजन् राजपथेन माधवः स्त्रियं गृहीताङ्गविलेपभाजनम्।
विलोक्य कुब्जां युवतीं वराननां पप्रच्छ यान्तीं प्रहसन् रसप्रदः ॥१॥

पदच्छेद— अथ व्रजन् राजपथेन माधवः स्त्रियम् गृहीत अङ्ग विलेप भाजनम्।
विलोक्य कुब्जाम् युवतीम् वराननाम् पप्रच्छ यान्तीम् प्रहसन् रसप्रदः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. इसके बाद | विलोक्य | १४. देख कर |
| व्रजन् | ३. जाते हुये | कुब्जाम् | ११. कुबड़ी |
| राजपथेन | २. राज मार्ग से | युवतीम् | १२. युवती |
| माधवः | ५. भगवान् श्रीकृष्ण ने | वराननाम् | १०. उत्तम मुख वाली |
| स्त्रियम् | १३. स्त्री को | पप्रच्छ | १६. पूछा |
| गृहीत | ८. लेकर | यान्तीम् | ९. जाती हुई (एक) |
| अङ्ग विलेप | ६. अङ्गों में लेप करने वाले | प्रहसन् | १५. हँसते हुये |
| भाजनम्। | ७. चन्दन का पात्र | रसप्रदः ॥ | ४. रस देने वाले |

श्लोकार्थ—इसके बाद राज मार्ग से जाते हुये रस देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने अङ्गों में लेप करने वाले चन्दन का पात्र लेकर जाती हुई एक उत्तम मुख वाली कुबड़ी युवती स्त्री को देख कर हंसते हुये पूछा ॥

### द्वितीयः श्लोकः

का त्वं वरोर्वेतदु हानुलेपनं कस्याङ्गने वा कथयस्व साधु नः।
देह्यावयोरङ्गविलेपमुत्तमं श्रेयस्ततस्ते न चिराद् भविष्यति ॥२॥

पदच्छेद— का त्वम् वरोरु एतत् उ ह अनुलेपनम् कस्य अङ्गने वा कथयस्व साधु नः।
देहि आवयोः अङ्ग विलेपम् उत्तमम् श्रेयः ततः ते न चिरात् भविष्यति ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| का त्वम् | २. तुम कौन हो | देहि आवयोः | १२. हमें दे दो |
| वरोरु | १. हे सुन्दरि ! | अङ्ग | ९. अङ्गों का |
| एतत् उह | ५. यह | विलेपम् | ११. लेप चन्दन |
| अनुलेपनम् कस्य | ६. चन्दन किसका है | उत्तमम् | १०. उत्तम |
| अङ्गने | ४. हे कल्याणी ! | श्रेयः | १५. कल्याण |
| वा | ३. अथवा | ततः ते | १३. इससे तुम्हारा |
| कथयस्व | ८. बतला दो | न चिरात् | १४. शीघ्र |
| साधु नः। | ७. हमें सच-सच | भविष्यति ॥ | १६. होगा |

श्लोकार्थ—हे सुन्दरि ! तुम कौन हो, अथवा हे कल्याणी ! यह चन्दन किसका है। हमें सच-सच बतला दो। अङ्गों का उत्तम लेप चन्दन हमें दे दो। इससे तुम्हारा शीघ्र कल्याण होगा ॥

## तृतीयः श्लोकः

**सैरन्ध्र्युवाच— दास्यस्म्यहं सुन्दर कंससम्मता त्रिवक्रनामा ह्यनुलेपकर्मणि ।**
**मद्भावितं भोजपतेरतिप्रियं विना युवां कोऽन्यतमस्तदर्हति ॥३॥**

पदच्छेद— दासी अस्मि अहम् सुन्दर कंस सम्मता त्रिवक्रनामा हि अनुलेप कर्मणि ।
मत् भावितम् भोजपतेः अतिप्रियम् विना युवाम् कः अन्यतमः तत् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दासी अस्मि | ८. दासी हूँ | मत् भावितम् | ९. मेरे द्वारा तैयार किया हुआ चन्दन |
| अहम् | २. मैं | भोजपतेः | १०. कंस को |
| सुन्दर | १. हे सुन्दर ! | अतिप्रियम् | ११. अत्यन्त प्रिय है |
| कंस | ६. कंस की | विना युवाम् | १२. बिना आप दोनों के |
| सम्मता | ७. प्रिय | कः | १३. कौन |
| त्रिवक्रनामा | ५. कुब्जा नाम की | अन्यतमः | १४. दूसरा |
| हि अनुलेप | ३. चन्दन लगाने के | तत् | १५. इसके |
| कर्मणि । | ४. काम में | अर्हति ॥ | १६. योग्य है |

श्लोकार्थ-- हे सुन्दर ! मैं चन्दन लगाने के काम में कुब्जा नाम की कंस की प्रिय दासी हूँ । मेरे द्वारा तैयार किया हुआ चन्दन कंस को अत्यन्त प्रिय है । बिना आप दोनों के दूसरा कौन इसके योग्य है ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**रूपपेशलमाधुर्यहसितालापवीक्षितैः ।**
**धर्षितात्मा ददौ सान्द्रमुभयोरनुलेपनम् ॥४॥**

पदच्छेद— रूप पेशल माधुर्य हसित आलाप वीक्षितैः ।
धर्षित आत्मा ददौ सान्द्रम् उभयोः अनुलेपनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| रूप | १. भगवान् के सौन्दर्य | धर्षित | ७. विह्वल |
| पेशल | २. सुकुमारता | आत्मा | ८. आत्मा होकर कुब्जा ने |
| माधुर्य | ३. मधुरता | ददौ | १२. दे दिया |
| हसित | ४. हास्य | सान्द्रम् | १०. गाढ़ा |
| आलाप | ५. आलाप और | उभयोः | ९. दोनों को |
| वीक्षितैः । | ६ चितवन से | अनुलेपनम् ॥ | ११. अङ्गराग |

श्लोकार्थ—भगवान् के सौन्दर्य, सुकुमारता, मधुरता, हास्य, आलाप और चितवन से विह्वल आत्मा होकर कुब्जा ने दोनों को गाढ़ा अङ्गराग दे दिया ॥

## पञ्चमः श्लोकः

ततस्तावङ्गरागेण स्ववर्णेतरशोभिना ।
सम्प्राप्तपरभागेन शुशुभातेऽनुरञ्जितौ ॥५॥

पदच्छेद— ततः तौ अङ्गरागेण स्ववर्ण इतर शोभिना ।
सम्प्राप्त पर भागेन शुशुभाते अनुरञ्जितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तब | सम्प्राप्त | ९. | लगाने से |
| तौ | २. | वे दोनों | पर | ३. | नाभि से ऊपर के |
| अङ्गरागेण | ८. | अङ्गराग | भागेन | ४. | भाग में |
| स्ववर्ण | ५. | अपने वर्ण से | शुशुभाते | ११. | सुशोभित हुये |
| इतर | ६. | भिन्न वर्ण की | अनुरञ्जितौ ॥ | १०. | अनुरञ्जित होकर |
| शोभिना । | ७. | शोभा वाले (लाल-पीले रंग के) | | | |

श्लोकार्थ—तब वे दोनों नाभि से ऊपर के भाग में अपने वर्ण से भिन्न वर्ण की शोभा वाले लाल-पीले रंग के अङ्गराग लगाने से अनुरञ्जित होकर सुशोभित हुये ॥

## षष्ठः श्लोकः

प्रसन्नो भगवान् कुब्जां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ।
ऋज्वीं कर्तुं मनश्चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ॥६॥

पदच्छेद— प्रसन्नः भगवान् कुब्जाम् त्रिवक्राम् रुचिर आननाम् ।
ऋज्वीम् कर्तुम् मनः चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रसन्नः | १. | प्रसन्न हुये | ऋज्वीम् | ९. | सीधी |
| भगवान् | २. | भगवान् ने (अपने) | कर्तुम् | १०. | करने का |
| कुब्जाम् | ८. | कुब्जा को | मनः | ११. | विचार |
| त्रिवक्राम् | ५. | तीन जगह टेढ़ी | चक्रे | १२. | किया |
| रुचिर | ६. | सुन्दर | दर्शयन् | ४. | दिखाने के लिये |
| आनानम् । | ७. | मुख वाली | दर्शने फलम् ॥ | ३. | दर्शन करने का फल |

श्लोकार्थ— प्रसन्न हुये भगवान् ने अपने दर्शन करने का फल दिखाने के लिये तीन जगह टेढ़ी, सुन्दर मुख वाली कुब्जा को सीधी करने का विचार किया ॥

## सप्तमः श्लोकः

**पद्भ्यामाक्रम्य प्रपदे द्व्यङ्गुल्युत्तानपाणिना ।**
**प्रगृह्य चुबुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ॥७॥**

पदच्छेद— पद्भ्याम् आक्रम्य प्रपदे द्वि अङ्गुलि उत्तान पाणिना ।
प्रगृह्य चुबुके अध्यात्मम् उदनीनमत् अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पद्भ्याम् | २. अपने पैरों से | प्रगृह्य | ९. लगायीं और उसके |
| आक्रम्य | ४. दबा कर | चुबुके | ८. उसकी ठोड़ी में |
| प्रपदे | ३. कुब्जा के पैर के दोनों पञ्जे | अध्यात्मम् | १०. शरीर को |
| द्वि अङ्गुलि | ७. दो अंगुलियां | उदनीनमत् | ११. तनिक उचका दिया |
| उत्तान | ६. ऊँचा करके | अच्युतः ॥ | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने |
| पाणिना । | ५. हाथ | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने पैरों से कुब्जा के पैर के पञ्जे दबा कर हाथ ऊँचा करके दो अंगुलियाँ उसकी ठोड़ी में लगायीं और उसके शरीर को तनिक उचका दिया ॥

## अष्टमः श्लोकः

**सा तदर्जुसमानाङ्गी बृहच्छ्रोणिपयोधरा ।**
**मुकुन्दस्पर्शनात् सद्यो बभूव प्रमदोत्तमा ॥८॥**

पदच्छेद— सा तत् ऋजु समान अङ्गी बृहत् श्रोणि पयोधरा ।
मुकुन्द स्पर्शनात् सद्यः बभूव प्रमदा उत्तमा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा तत् | १. वह | मुकुन्द | २. भगवान् के |
| ऋजु | ५. सीधे और | स्पर्शनात् | ३. स्पर्श से |
| समान | ६. समान | सद्यः | ४. तुरन्त |
| अङ्गी बृहत् | ७. अङ्गोंवाली एवं विशाल | बभूव | १२. हो गई |
| श्रोणि | ८. नितम्बों और | प्रमदा | ११. रमणी |
| पयोधरा । | ९. कुचों वाली | उत्तमा ॥ | १०. श्रेष्ठ |

श्लोकार्थ—वह भगवान् के स्पर्श से तुरन्त सीधे और समान अङ्गों वाली एवं विशाल नितम्बों और कुचों वाली श्रेष्ठ रमणी हो गई ॥

## नवमः श्लोकः

**ततो रूपगुणौदार्यसम्पन्ना प्राह केशवम् ।**
**उत्तरीयान्तमाकृष्य स्मयन्ती जातहृच्छया ॥९॥**

पदच्छेद— ततः रूप गुण औदार्य सम्पन्ना प्राह केशवम् ।
उत्तरीय अन्तम् आकृष्य स्मयन्ती जात हृच्छया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तदनन्तर | उत्तरीय | ७. | दुपट्टे का |
| रूप गुण | २. | सौन्दर्य-गुण और | अन्तम् | ८. | छोर |
| औदार्य | ३. | उदारता से | आकृष्य | ९. | खींच कर (और) |
| सम्पन्ना | ४. | समान (तथा) | स्मयन्ती | १०. | मुस्कराती हुई |
| प्राह | १२. | कहा | जात | ५. | मिलन की |
| केशवम् । | ११. | श्रीकृष्ण से | हृच्छया ॥ | ६. | इच्छा वाली कुब्जा ने |

श्लोकार्थ—तदनन्तर सौन्दर्य, गुण और उदारता से सम्पन्न तथा मिलन की इच्छा वाली कुब्जा ने दुपट्टे का छोर खींच कर मुसकराती हुई श्रीकृष्ण से कहा ॥

## दशमः श्लोकः

**एहि वीर गृहं यामो न त्वां त्यक्तुमिहोत्सहे ।**
**त्वयोन्मथितचित्तायाः प्रसीद पुरुषर्षभ ॥१०॥**

पदच्छेद— एहि वीर गृहम् यामः न त्वाम् त्यक्तुम् इह उत्सहे ।
त्वया उन्मथित चित्तायाः प्रसीद पुरुष ऋषभ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एहि वीर | १. | हे वीर ! आइये | त्वया | ९. | आप के द्वारा |
| गृहम् यामः | २. | घर चलें (मैं) | उन्मथित | १०. | मथे गये |
| न | ५. | नहीं | चित्तायाः | ११. | चित्त वाली मुझ पर |
| त्वाम् | ३. | आप को | प्रसीद | १२. | प्रसन्न होइये |
| त्यक्तुम् इह | ४. | यहाँ छोड़ | पुरुष | ७. | हे पुरुष |
| उत्सहे । | ६. | सकती | ऋषभ ॥ | ८. | श्रेष्ठ ! |

श्लोकार्थ—हे वीर ! आइये घर चलें । मैं आप को यहाँ नहीं छोड़ सकती । हे पुरुष श्रेष्ठ ! आप के द्वारा मथे गये चित्त वाली मुझ पर प्रसन्न होइये ॥

## एकादशः श्लोकः

**एवं स्त्रिया याच्यमानः कृष्णो रामस्य पश्यतः ।**
**मुखं वीक्ष्यानुगानां च प्रहसंस्तामुवाच ह ॥११॥**

पदच्छेद— एवम् स्त्रिया याच्यमानः कृष्णः रामस्य पश्यतः ।
मुखम् वीक्ष्य अनुगानाम् च प्रहसन् ताम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ३. | इस प्रकार | मुखम् | ८. | मुख की ओर |
| स्त्रिया | ४. | स्त्री के द्वारा | वीक्ष्य | ९. | देख कर |
| याच्यमानः | ५. | प्रार्थना करने पर | अनुगानाम् च | ७. | साथी ग्वाल वालों के |
| कृष्णः | ६. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | प्रहसन् | १०. | हंसते हुये |
| रामस्य | १. | बलराम जी के | ताम् | ११. | उससे |
| पश्यतः । | २. | सामने ही | उवाच ह ॥ | १२. | कहा |

श्लोकार्थ—बलराम जी के सामने ही इस प्रकार स्त्री के द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने साथी ग्वाल वालों के मुंह की ओर देख कर हंसते हुये उससे कहा ॥

## द्वादशः श्लोकः

**एष्यामि ते गृहं सुभ्रूः पुंसामाधिविकर्शनम् ।**
**साधितार्थोऽगृहाणां नः पान्थानां त्वं परायणम् ॥१२॥**

पदच्छेद— एष्यामि ते गृहम् सुभ्रूः पुंसाम् आधि विकर्शनम् ।
साधित अर्थः अगृहाणाम् नः पान्थानाम् त्वम् परायणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एष्यामि | ६. | आऊँगा | साधित | ३. | सिद्ध हो जाने पर |
| ते | ४. | तुम्हारे | अर्थः | २. | कार्य |
| गृहम् | ५. | घर | अगृहाणाम् | ११. | गृहविहीन |
| सुभ्रूः | १. | हे सुन्दरी ! | नः | १०. | हम जैसे |
| पुंसाम् | ७. | पुरुषों की | पन्थानाम् | १२. | बटोहियों के लिये |
| आधि | ८. | मानसिक व्याधि | त्वम् | १३. | तुम्हारा ही |
| विकर्शनम् । | ९. | मिटाने वाली | परायणम् ॥ | १४. | सहारा है ॥ |

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! कार्य सिद्ध हो जाने पर तुम्हारे घर आऊँगा । पुरुषों की मानसिक व्याधि मिटाने वाली हम जैसे गृह विहीन बटोहियों के लिये तुम्हारा ही सहारा है ॥

# त्रयोदशः श्लोकः

**विसृज्य माध्व्या वाण्या तां व्रजन् मार्गे वणिक्पथैः ।**
**नानोपायनताम्बूलस्रग्गन्धैः साग्रजोऽर्चितः ॥१३॥**

पदच्छेद— विसृज्य माध्व्या वाण्या ताम् व्रजन् मार्गे वणिक्पथैः ।
नाना उपायन ताम्बूल स्रक् गन्धैः स अग्रजः अर्चितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| विसृज्य | ४. | बिदा किया और | नाना | ९. | अनेक |
| माध्व्या | १. | मीठी-मीठी | उपायन | १०. | उपहार |
| वाण्या | २. | बातों से | ताम्बूल | ११. | पान |
| ताम् | ३. | उसे | स्रक् | १२. | माला |
| व्रजन् | ६. | जाते हुये | गन्धैः | १३. | चन्दन आदि से |
| मार्गे | ५. | मार्ग में | स अग्रजः | ७. | बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण का |
| वणिक्पथैः । | ८. | व्यापारियों ने | अर्चितः ॥ | १४. | पूजन किया |

श्लोकार्थ—भगवान् ने मीठी-मीठी बातों से उसे बिदा किया और मार्ग में जाते हुये बलराम जी के श्रीकृष्ण का व्यापारियों ने अनेक उपहार पान, माला, चन्दन आदि से पूजन किया ॥

# चतुर्दशः श्लोकः

**तद्दर्शनस्मरक्षोभादात्मानं नाविदन् स्त्रियः ।**
**विस्रस्तवासःकबरवलयालेख्यमूर्तयः ॥१४॥**

पदच्छेद— तत् दर्शन स्मरक्षोभात् आत्मानम् न अविदन् स्त्रियः ।
विस्रस्त वासः कबर वलय आलेख्य मूर्तयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | उनके | विस्रस्त | १०. | ढीले पड़ जाते थे तथा |
| दर्शन | २. | दर्शन से (उत्पन्न) | वासः | ७. | उनके वस्त्र |
| स्मरक्षोभात् | ३. | काम वेग के कारण | कबर | ८. | जूड़े |
| आत्मानम् न | ५. | अपने को नहीं | वलय | ९. | और कंगन |
| अविदन् | ६. | जानती थीं | आलेख्य | ११. | वे चित्र लिखित |
| स्त्रियः । | ४. | स्त्रियाँ | मूर्तयः ॥ | १२. | मूर्तियों के समान हो जाती थीं |

श्लोकार्थ—उनके दर्शन से उत्पन्न काम वेग के कारण स्त्रियाँ अपने को नहीं जानती थीं। उनके वस्त्र, जूड़े और कंकन ढीले पड़ जाते थे। तथा वे चित्र लिखित मूर्तियों के समान हो जाती थीं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**ततः पौरान् पृच्छमानो धनुषः स्थानमच्युतः ।**
**तस्मिन् प्रविष्टो ददृशे धनुरैन्द्रमिवाद्भुतम् ॥१५॥**

पदच्छेद— ततः पौरान् पृच्छमानः धनुषः स्थानम् अच्युतः ।
तस्मिन् प्रविष्टः ददृशे धनुः ऐन्द्रम् इव अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ —

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | १. | तदनन्तर | तस्मिन् | ७. | वहाँ |
| पौरान् | ३. | पुरवासियों से | प्रविष्टः | ८. | पहुँचे (उन्होंने) |
| पृच्छमानः | ६. | पूछते हुये | ददृशे | १२. | देखा |
| धनुषः | ४. | धनुषयज्ञ का | धनुः | ११. | धनुष |
| स्थानम् | ५. | स्थान | ऐन्द्रम् | ९. | इन्द्रधनुष के |
| अच्युतः । | २. | भगवान् श्रीकृष्ण | इव अद्भुतम् ॥ | १०. | समान एक अद्भुत |

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्ण पुरवासियों से धनुषयज्ञ का स्थान पूछते हुये वहाँ पहुँचे । उन्होंने इन्द्रधनुष के समान एक अद्भुत धनुष देखा ॥

## षोडशः श्लोकः

**पुरुषैर्बहुभिर्गुप्तमर्चितं परमर्द्धिमत् ।**
**वार्यमाणो नृभिः कृष्णः प्रसह्य धनुराददे ॥१६॥**

पदच्छेद— पुरुषैः बहुभिः गुप्तम् अर्चितम् परम् ऋद्धिमत् ।
वार्यमाणः नृभिः कृष्णः प्रसह्य धनुः आददे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरुषैः | २. | पुरुषों द्वारा | वार्यमाणः | ८. | रोके जाने पर भी |
| बहुभिः | १. | वह धनुष बहुत से | नृभिः | ७. | लोगों द्वारा |
| गुप्तम् | ३. | सुरक्षित | कृष्णः | ९. | श्रीकृष्ण ने |
| अर्चितम् | ४. | पूजित (तथा) | प्रसह्य | १०. | बल पूर्वक उस |
| परम | ५. | महान् | धनुः | ११. | धनुष को |
| ऋद्धिमत् । | ६. | व्यय से तैयार हुआ था | आददे ॥ | १२. | उठा लिया |

श्लोकार्थ—वह धनुष बहुत से पुरुषों द्वारा सुरक्षित, पूजित तथा महान् व्यय से तैयार हुआ था । लोगों द्वारा रोके जाने पर भी श्रीकृष्ण ने बल पूर्वक उस धनुष को उठा लिया ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**करेण वामेन सलीलमुद्धृतं सज्यं च कृत्वा निमिषेण पश्यताम् ।**
**नृणां विकृष्य प्रबभञ्ज मध्यतो यथेक्षुदण्डं मदकर्युरुक्रमः ॥१७॥**

पदच्छेद— करेण वामेन सलीलम् उद्धृतम् सज्यम् च कृत्वा निमिषेण पश्यताम् ।
नृणाम् विकृष्य प्रबभञ्ज मध्यतः यथा इक्षुदण्डम् मदकरी उरुक्रमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| करेण | २. | हाथ से | नृणाम् | ७. | लोगों के |
| वामेन | १. | श्रीकृष्ण ने बाँयें | विकृष्य | १०. | खींच कर |
| सलीलम् | ३. | लीला पूर्वक उसे | प्रबभञ्ज | १२. | तोड़ डाला |
| उद्धृतम् | ४. | उठाया | मध्यतः | ११. | बीचो-बीच से (उसी प्रकार) |
| सज्यम् च | ५. | और उस पर डोरी | यथा | १३. | जैसे |
| कृत्वा | ६. | चढ़ा कर | इक्षुदण्डम् | १६. | ईख को तोड़ डालता है |
| निमिषेण | ९. | क्षण भर में | मदकरी | १५. | मतवाला हाथी |
| पश्यताम् । | ८. | देखते-देखते | उरुक्रमः ।। | १४. | बलवान् |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने बाँयें हाथ से लीला पूर्वक उसे उठाया और उस पर डोरी चढ़ा कर लोगों के देखते-देखते क्षण भर में खींच कर बीचो-बीच से उसी प्रकार तोड़ डाला, जैसे बलवान् मतवाला हाथी ईख को तोड़ डालता है ।।

## अष्टादशः श्लोकः

**धनुषो भज्यमानस्य शब्दः खं रोदसी दिशः ।**
**पूरयामास यं श्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् ॥१८॥**

पदच्छेद— धनुषः भज्यमानस्य शब्दः खम् रोदसी दिशः ।
पूरयामास यम् श्रुत्वा कंसः त्रासम् उपागमत् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धनुषः | २. | धनुष के | पूरयामास | ७. | भर गई |
| भज्यमानस्य | १. | टूटते हुये | यम् | ८. | जिसे |
| शब्दः | ३. | शब्द से | श्रुत्वा | ९. | सुन कर |
| खम् | ४. | आकाश | कंसः | १०. | कंस |
| रोदसी | ५. | पृथ्वी और | त्रासम् | ११. | भयभीत |
| दिशः । | ६. | दिशायें | उपागमत् ।। | १२. | हो गया । |

श्लोकार्थ—टूटते हुये धनुष के शब्द से आकाश, पृथ्वी और दिशायें भर गईं । जिसे सुन कर कंस भयभीत हो गया ।।

## एकोनविंशः श्लोकः

**तद्रक्षिणः सानुचराः कुपिता आततायिनः ।**
**ग्रहीतुकामा आवव्रुर्गृह्यतां बध्यतामिति ॥१९॥**

पदच्छेद— तत् रक्षिणः स अनुचराः कुपिताः आततायिनः ।
ग्रहीतुकामाः आवव्रुः गृह्यताम् बध्यताम् इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | १. उसके | ग्रहीतु | ६. श्रीकृष्ण को पकड़ लेने की |
| रक्षिणः | २. रक्षक | कामाः | ७. इच्छा से |
| स अनुचराः | ४. सहायकों के साथ | आवव्रुः | ८. घेर लिया (और) |
| कुपिताः | ५. क्रुद्ध होकर | गृह्यताम् | ९. पकड़ लो |
| आततायिनः । | ३. आततायी असुरों ने | बध्यताम् | १०. बांध लो |
| | | इति ॥ | ११. इस प्रकार चिल्लाया |

श्लोकार्थ—उसके रक्षक आततायी असुरों ने सहायकों के साथ क्रुद्ध होकर श्रीकृष्ण को पकड़ लेने की इच्छा से घेर लिया । और पकड़ लो, बाँध लो इस प्रकार चिल्लाया ॥

## विंशः श्लोकः

**अथ तान् दुरभिप्रायान् विलोक्य बलकेशवौ ।**
**क्रुद्धौ धन्वन आदाय शकले तांश्च जघ्नतुः ॥२०॥**

पदच्छेद— अथ तान् दुरभि प्रायान् विलोक्य बल केशवौ ।
क्रुद्धौ धन्वनः आदाय शकले तान् च जघ्नतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. तदनन्तर | क्रुद्धौ | ७. क्रोधित हो गये |
| तान् | २. उनका | धन्वनः | ८. धनुष के |
| दुरभिप्रायान् | ३. दुष्ट अभिप्राय | आदाय | १०. लेकर |
| विलोक्य | ४. जान कर | शकले | ९. टुकड़े |
| बल | ५. बलराम और | तान् च | ११. उन्हें |
| केशवौ । | ६. श्रीकृष्ण | जघ्नतुः ॥ | १२. मार डाला |

श्लोकार्थ—तदनन्तर उनका अभिप्राय जान कर बलराम और श्रीकृष्ण क्रोधित हो गये । तथा धनुष के टुकड़े लेकर उन्हें मार डाला ॥

# एकविंशः श्लोकः

**बलं च कंसप्रहितं हत्वा शालामुखात्ततः ।**
**निष्क्रम्य चेरतुर्हृष्टौ निरीक्ष्य पुरसम्पदः ॥२१॥**

पदच्छेद— बलम् च कंस प्रहितम् हत्वा शालामुखात् ततः ।
निष्क्रम्य चेरतुः हृष्टौ निरीक्ष्य पुर सम्पदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बलम् च | ४. | सेना को भी | निष्क्रम्य | ७. | निकल कर |
| कंस | २. | कंस का | चेरतुः | १२. | विचरने लगे |
| प्रहितम् | ३. | भेजी गई | हृष्टौ | ८. | हर्षित होकर (दोनों भाई) |
| हत्वा | ५. | मार कर | निरीक्ष्य | ११. | देखते हुये |
| शालामुखात् | ६. | यज्ञ शाला के प्रधान द्वार से | पुर | ९. | नगर की |
| ततः । | १. | पश्चात् | सम्पदः ॥ | १०. | शोभा को |

श्लोकार्थ—पश्चात् कंस की भेजी गई सेना को भी मार कर यज्ञ शाला के प्रधान द्वार से निकल कर हर्षित होकर दोनों भाई नगर की शोभा देखते हुये विचरने लगे ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

**तयोस्तदद्भुतं वीर्यं निशाम्य पुरवासिनः ।**
**तेजः प्रागल्भ्यं रूपं च मेनिरे विबुधोत्तमौ ॥२२॥**

पदच्छेद— तयोः तत् अद्भुतम् वीर्यम् निशाम्य पुर वासिनः ।
तेजः प्रागल्भ्यम् रूपम् च मेनिरे विबुध उत्तमौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | ३. | उन दोनों का | तेजः | ७. | तेज |
| तत् | ४. | वह | प्रागल्भ्यम् | ८. | साहस |
| अद्भुतम् | ५. | अद्भुत | रूपम् | १०. | रूप |
| वीर्यम् | ६. | पराक्रम | च | ९. | और |
| निशाम्य | ११. | सुन कर | मेनिरे | १४. | माना |
| पुर | १. | नगर | विबुध | १३. | देवता |
| वासिनः । | २. | निवासियों ने | उत्तमौ ॥ | १२. | (उन्हें) श्रेष्ठ |

श्लोकार्थ—नगर निवासियों ने उन दोनों का वह अद्भुत पराक्रम, तेज, साहस और रूप सुन कर उन्हें श्रेष्ठ देवता माना ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**तयोर्विचरतोः स्वैरमादित्योऽस्तमुपेयिवान् ।**
**कृष्णरामौ वृतौ गोपैः पुराच्छकटमीयतुः ॥२३॥**

पदच्छेद— तयोः विचरतोः स्वैरम् आदित्यः अस्तम् उपेयिवान् ।
कृष्ण रामौ वृतौ गोपैः पुरात् शकटम् ईयतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तयोः | १. उन दोनों के | कृष्ण | ९. कृष्ण और |
| विचरतोः | ३. विचरण करते हुये | रामौ | १०. बलराम |
| स्वैरम् | २. स्वेच्छा पूर्वक | वृतौ | ८. घिरे हुये |
| आदित्यः | ४. सूर्य | गोपैः | ७. ग्वाल-बालों से |
| अस्तम् | ५. अस्त | पुरात् | ११. नगर से बाहर |
| उपेयिवान् । | ६. हो गये (तब) | शकटम् | १२. अपने छकड़े के पास |
| | | ईयतुः ॥ | १३. चले गये |

श्लोकार्थ—उन दोनों के स्वेच्छा पूर्वक विचरण करते हुये सूर्य अस्त हो गये। तब ग्वाल-बालों से घिरे हुये कृष्ण और बलराम नगर से बाहर अपने छकड़े के पास चले गये ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**गोप्यो मुकुन्दविगमे विरहातुरा या आशासताशिष ऋता मधुपुर्यभूवन् ।**
**सम्पश्यतां पुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतरान् नु भजतश्चकमेऽयनं श्रीः ॥२४॥**

पदच्छेद— गोप्यः मुकुन्द विगमे विरहं आतुरा याः आशासत आशिषः ऋताः मधुपुरि अभूवन् ।
सम्पश्यताम् पुरुष भूषण गात्रलक्ष्मीम् हित्वा इतरान् नु भजतः चकमे अयनम् श्रीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोप्यः | ३. गोपियों ने | सम्पश्यतम् | ९. देखते हुये लोगों के लिये |
| मुकुन्द विगमे | १. श्रीकृष्ण की यात्रा के समय | पुरुष भूषण | ७. पुरुष भूषण भगवान् के |
| विरह आतुराः | २. विरह से आतुर हो कर | गात्रलक्ष्मीम् | ८. अङ्गों की शोभा को |
| याः आशासत | ४. जो कही थीं वे | हित्वा | १५. छोड़ कर (चाहा और अपना) |
| आशिषः | ५. बातें | इतरान् | १४. दूसरों को |
| ऋताः | १० सत्य सिद्ध | नु भजत | १३. चाहते हुये |
| मधुपुरि | ६. मथुरा में | चकमे अयनम् | १६. निवास स्थान बना लिया |
| अभूवन् । | ११. हुई (जिन भगवान् को) | श्रीः ॥ | १२. लक्ष्मी ने |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण की यात्रा के समय विरह से आतुर होकर गोपियों ने जो बातें कही थीं वे मथुरा में पुरुष भूषण भगवान् के अङ्गों को शोभा को देखते हुये लोगों के लिये सत्य सिद्ध हुईं। जिन भगवान् को लक्ष्मी ने चाहते हुये दूसरों को छोड़ कर चाहा और निवास-स्थान बना लिया ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**अवनिक्ताङ्घ्रियुगलौ भुक्त्वा क्षीरोपसेचनम् ।**
**ऊषतुस्तां सुखं रात्रिं ज्ञात्वा कंसचिकीर्षितम् ॥२५॥**

पदच्छद— अवनिक्त अङ्घ्रि युगलौ भुक्त्वा क्षीर उपसेचनम् ।
ऊषतुः ताम् सुखम् रात्रिम् ज्ञात्वा कंस चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अवनिक्त | ३. धोकर | ऊषतुः | १३. निवास किया |
| अङ्घ्रि | २. पैर | ताम् | १०. उस |
| युगलौ | १. दोनों | सुखम् | १२. सुख से |
| भुक्त्वा | ६. भोजन करके | रात्रिम् | ११. रात्रि में वहीं |
| क्षीर | ४. दूध से बने हुये | ज्ञात्वा | ९. जान कर |
| उपसेचनम् । | ५. पदार्थ | कंस | ७. कंस के |
| | | चिकीर्षितम् ॥ | ८. करने की इच्छा को |

श्लोकार्थ—दोनों पैर धोकर दूध से बने हुये पदार्थ भोजन करके कंस के करने की इच्छा को जान कर उस रात्रि वहीं सुख से निवास किया ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**कंसस्तु धनुषो भङ्गं रक्षिणां स्वबलस्य च ।**
**वधं निशम्य गोविन्दरामविक्रीडितं परम् ॥२६॥**

पदच्छेद— कंसः तु धनुषः भङ्गम् रक्षिणाम् स्वबलस्य च ।
वधम् निशम्य गोविन्द राम विक्रीडितम् परम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कंसः तु | १. कंस तो | वधम् | ७. वध |
| धनुषः | २. धनुष का | निशम्य | ८. सुन कर (डर गया) जो |
| भङ्गम् | ३. तोड़ना | गोविन्द | ९. श्रीकृष्ण और |
| रक्षिणाम् | ५. रक्षकों (तथा) | राम | १०. बलराम के लिये |
| स्वबलस्य | ६. अपनी सेना का | विक्रीडितम् | १२. खिलवाड़ था |
| च । | ४. और | परम् ॥ | ११. केवल एक |

श्लोकार्थ—कंस तो धनुष का तोड़ना और रक्षकों तथा अपनी सेना का बध सुन कर डर गया । जो श्रीकृष्ण और बलराम के लिये केवल एक खिलवाड़ था ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**दीर्घप्रजागरो भीतो दुर्निमित्तानि दुर्मतिः ।**
**बह्वन्यचष्टोभयथा मृत्योर्दौत्यकराणि च ॥२७॥**

पदच्छेद— दीर्घ प्रजागरः भीतः दुर्निमित्तानि दुर्मतिः ।
बहूनि अचष्ट उभयथा मृत्योः दौत्यकराणि च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दीर्घ | ३. | बहुत देर तक | बहूनि | ९. | बहुत से |
| प्रजागरः | ४. | जागता रहा | अचष्ट | ११. | हुये |
| भीतः | १. | डरा हुआ | उभयथा | ६. | जाग्रत्-स्वप्न दोनों अवस्था में |
| दुर्निमित्तानि | १०. | अपशकुन | मृत्योः | ७. | मृत्यु के |
| दुर्मतिः । | २. | दुर्बुद्धि (कंस) | दौत्यकराणि | ८. | सूचक |
| | | | च ॥ | ५. | और (उसे) |

श्लोकार्थ—डरा हुआ कंस बहुत देर तक जागता रहा । और उसे जाग्रत्, स्वप्न अवस्था में मृत्यु के सूचक बहुत से अपशकुन हुये ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**अदर्शनं स्वशिरसः प्रतिरूपे च सत्यपि ।**
**असत्यपि द्वितीये च द्वैरूप्यं ज्योतिषां तथा ॥२८॥**

पदच्छेद— अदर्शनम् स्व शिरसः प्रतिरूपे च सति अपि ।
असति अपि द्वितीये च द्वैरूप्यम् ज्योतिषाम् तथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अदर्शनम् | ६. | दिखाई नहीं देता था | असति | १०. | नहीं रहने पर |
| स्व | ४. | अपना | अपि | ११. | भी |
| शिरसः | ५. | सिर | द्वितीये च | ९. | दूसरे रूप के |
| प्रतिरूपे | २. | जल आदि में परछांई | द्वैरूप्यम् | १२. | दो रूप दिखाई देते थे |
| च | १. | और (कंस को) | ज्योतिषाम् | ८. | ज्योतियों के |
| सति अपि । | ३. | पड़ने पर भी | तथा ॥ | ७. | और |

श्लोकार्थ—और कंस को जल आदि में परछांई पड़ने पर भी अपना सिर दिखाई नहीं देता था । और ज्योतियों के दूसरे रूप के नहीं रहने पर भी दो रूप दिखाई देते थे ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

छिद्रप्रतीतिश्छायायां प्राणघोषानुपश्रुतिः ।
स्वर्णप्रतीतिर्वृक्षेषु स्वपदानामदर्शनम् ॥२६॥

पदच्छेद— छिद्र प्रतीतिः छायायाम् प्राण-घोष अनुप श्रुतिः ।
स्वर्ण प्रतीतिः वृक्षेषु स्व पदानाम् अदर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| छिद्र | २. | छिद्र | स्वर्ण | ८. | सोने की |
| प्रतीतिः | ३. | दिखाई पड़ता था | प्रतीतिः | ६. | प्रतीति होती थी (तथा) |
| छायायाम् | १. | छाया में | वृक्षेषु | ७. | वृक्षों में |
| प्राण-घोष | ४. | प्राणों का शब्द | स्व | १०. | कीचड़ आदि में अपने |
| अनुप | ५. | नहीं | पदानाम् | ११. | पैरों के |
| श्रुतिः । | ६. | सुनाई देता था | अदर्शनम् ॥ | १२. | चिह्न नहीं दिखाई पड़ते थे |

श्लोकार्थ—छाया में छिद्र दिखाई पड़ता था । प्राणों का शब्द नहीं सुनाई देता था । और वृक्षों में सोने की प्रतीति होती थी तथा कीचड़ आदि में अपने पैरों के चिह्न नहीं दिखाई पड़ते थे ॥

## त्रिंशः श्लोकः

स्वप्ने प्रेतपरिष्वङ्गः खरयानं विषादनम् ।
यायान्नलदमाल्येकस्तैलाभ्यक्तो दिगम्बरः ॥३०॥

पदच्छेद— स्वप्ने प्रेत परिष्वङ्गः खर यानम् विषादनम् ।
यायात् नलद माली एकः तैलाभ्यक्तः दिगम्बरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वप्ने | १. | उसने स्वप्न में | यायात् | १०. | जाना |
| प्रेत | २. | प्रेतों का | नलद | ७. | अड़हुल फूल की |
| परिष्वङ्गः | ३. | आलिङ्गन | माली | ८. | माला पहने |
| खर | ४. | गधे की | एकः | ६. | अकेले |
| यानम् | ५. | सवारी | तैलाभ्यक्तः | १२. | तैल से तर शरीर को देखा |
| विषादनम् । | ६. | विष खाता हुआ (तथा) | दिगम्बरः ॥ | ११. | नग्न तथा |

श्लोकार्थ—उसने स्वप्न में प्रेतों का आलिंगन, गधे की सवारी, विष खाता हुआ तथा अड़हुल फूल की माला पहने अकेले जाना नग्न तथा तैल से तर शरीर को देखा ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**अन्यानि चेत्थंभूतानि स्वप्नजागरितानि च ।**
**पश्यन् मरणसन्त्रस्तो निद्रां लेभे न चिन्तया ॥३१॥**

पदच्छेद— अन्यानि च इत्थम् भूतानि स्वप्न जागरितानि च ।
पश्यन् मरण संत्रस्तः निद्राम् लेभे न चिन्तया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्यानि | ५. और | पश्यन् | ७. देखता हुआ वह |
| च | ६. भी (स्वप्न) | मरण | ८. मृत्यु से बहुत |
| इत्थम् भूतानि | ४. इस प्रकार के | संत्रस्तः | ९. डर गया |
| स्वप्न | १. स्वप्न | निद्राम् | ११. नींद |
| जागरितानि | ३. जाग्रत् अवस्था में | लेभे न | १२. नहीं आई |
| च । | २. और | चिन्तया ॥ | १०. चिन्ता के कारण उसे |

श्लोकार्थ—स्वप्न और जाग्रत् अवस्था में इस प्रकार के और भी स्वप्न देखता हुआ वह डर गया । चिन्ता के कारण उसे नींद नहीं आयी ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**व्युष्टायां निशि कौरव्य सूर्ये चाद्भ्यः समुत्थिते ।**
**कारयामास वै कंसो मल्लक्रीडामहोत्सवम् ॥३२॥**

पदच्छेद— व्युष्टायाम् निशि कौरव्य सूर्ये च अद्भ्यः समुत्थिते ।
कारयामास वै कंसः मल्ल क्रीडा महोत्सवम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्युष्टायाम् | ३. बीत जाने पर | कारयामास | १२. कराया |
| निशि | २. रात्रि के | वै | ८. निश्चित रूप से |
| कौरव्य | १. हे परीक्षित् ! | कंसः | ७. कंस ने |
| सूर्ये च | ४. और सूर्य नारायण के | मल्ल | ९. मल्ल |
| अद्भ्यः | ५. पूर्व में समुद्र से | क्रीडा | १०. क्रीड़ा (दङ्गल) का |
| समुत्थिते । | ६. ऊपर उठने पर | महोत्सवम् ॥ | ११. महोत्सव |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! रात्रि के बीत जाने पर और सूर्य नारायण के पूर्व में ऊपर उठने पर कंस ने निश्चित रूप से मल्लक्रीड़ा का दङ्गल महोत्सव कराया ॥

# त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**आनर्चुः पुरुषा रङ्गं तूर्यभेर्यश्च जघ्निरे ।**
**मञ्चाश्चालङ्कृताः स्रग्भिः पताकाचैलतोरणैः ॥३३॥**

पदच्छेद— आनर्चुः पुरुषाः रङ्गम् तूर्य भेर्यः च जघ्निरे ।
मञ्चाः च अलङ्कृताः स्रग्भिः पताका चैल तोरणैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आनर्चुः | ३. | खूब सजाया | मञ्चाः | ७. | मञ्च |
| पुरुषाः | १. | लोगों ने | च | ८. | भी |
| रङ्गम् | २. | रङ्ग-मञ्च को | अलङ्कृताः | १२. | सजा दिये गये |
| तूर्य | ४. | तुरही | स्रग्भिः | ९. | मालाओं |
| भेर्यः च | ५. | और भेरियाँ | चैल | १०. | झन्डियों और |
| जघ्निरे । | ६. | बजायी जाने लगीं | तोरणैः ॥ | ११. | बन्दनवारों से |

श्लोकार्थ—लोगों ने रङ्ग मञ्च को खूब सजाया । तुरही और भेरियाँ बजायी जाने लगीं । मञ्च भी मालाओं, झन्डियों और बन्दनवारों से सजा दिये गये ॥

# चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**तेषु पौरा जानपदा ब्रह्मक्षत्रपुरोगमाः ।**
**यथोपजोषं विविशू राजानश्च कृतासनाः ॥३४॥**

पदच्छेद— तेषु पौराः जानपदाः ब्रह्म क्षत्र पुरोगमाः ।
यथा उपजोषम् विविशुः राजानः च कृत आसनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेषु | १. | उन पर | यथा | ७. | यथा |
| पौराः | २. | पुरवासी | उपजोषम् | ८. | स्थान |
| जानपदाः | ३. | ग्रामवासी | विविशुः | ९. | बैठ गये |
| ब्रह्म | ४. | ब्राह्मण | राजानः च | १०. | और राजा लोग |
| क्षत्र | ५. | क्षत्रिय | कृत | १२. | आ डटे |
| पुरोगमाः । | ६. | आदि | आसनाः ॥ | ११. | आसनों पर |

श्लोकार्थ—उन पर पुरवासी, ग्राम वासी, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि यथा स्थान बैठ गये । और राजा लोग आसनों पर आ डटे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**कंसः परिवृतोऽमात्यै राजमञ्च उपाविशत् ।**
**मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेन विदूयता ॥३५॥**

पदच्छेद— कंसः परिवृतः अमात्यैः राजमञ्चे उपाविशत् ॥
मण्डल ईश्वर मध्यस्थः हृदयेन विदूयता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कंसः | १. | कंस | मण्डल | ४. | मण्डल |
| परिवृतः | ३. | साथ | ईश्वर | ५. | के ईश्वरों (छोटे-छोटे राजाओं के) |
| अमात्यैः | २. | मन्त्रियों के | मध्यस्थः | ६. | बीच में |
| राजमञ्चे | ९. | राज सिंहासन पर | हृदयेन | ७. | हृदय से |
| उपाविशत् । | १०. | बैठ गया | विदूयता ॥ | ८. | दुःखी होता हुआ |

श्लोकार्थ—कंस मन्त्रियों के साथ मण्डल के ईश्वरों (छोटे-छोटे राजाओं) के ईश्वरों के बीच में हृदय से दुःखी होता हुआ राजसिंहासन पर बैठ गया ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**वाद्यमानेषु तूर्येषु मल्लतालोत्तरेषु च ।**
**मल्लाः स्वलङ्कृता दृप्ताः सोपाध्यायाः समाविशन् ॥३६॥**

पदच्छेद— वाद्यमानेषु तूर्येषु मल्लताल उत्तरेषु च ।
मल्लाः सु अलङ्कृताः दृप्ताः स उपाध्यायाः समाविशन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वाद्यमानेषु | ५. | बजने लगे | मल्लाः | ७. | पहलवान |
| तूर्येषु | ४. | बाजे | सु अलङ्कृताः | ८. | खूब सज-धज कर |
| मल्लताल | १. | पहलवानों के ताल | दृप्ताः | ६. | गर्वीले |
| उत्तरेषु | २. | ठोकने के साथ | स उपाध्यायाः | ९. | अपने शिक्षकों के साथ |
| च । | ३. | ही | समाविशन् ॥ | १०. | अखाड़े में आ उतरे |

श्लोकार्थ—पहलवानों के ताल ठोकने के साथ ही बाजे बजने लगे। गर्वीले पहलवान खूब सज-धज कर अपने शिक्षकों के साथ अखाड़े में आ उतरे ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**चाणूरो मुष्टिकः कूटः शलस्तोशल एव च ।**
**त आसेदुरुपस्थानं वल्गुवाद्यप्रहर्षिताः ॥३७॥**

पदच्छेद— चाणूरः मुष्टिकः कूटः शलः तोशलः एव च ।
ते आसेदुः उपस्थानम् वल्गु वाद्य प्रहर्षिताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| चाणूर | २. | चाणूर | ते | १. | वे |
| मुष्टिकः | ३. | मुष्टिक | आसेदुः | १२. | बैठ गये |
| कूटः | ४. | कूट | उपस्थानम् | ११. | अखाड़े में आकर |
| शलः | ५. | शल | वल्गु | ८. | मधुर |
| तोशलः | ७. | तोशल | वाद्य | ९. | बाजे की ध्वनि से |
| एव च । | ६. | और | प्रहर्षिताः ॥ | १०. | उत्साहित होकर |

श्लोकार्थ—वे चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल और तोशल मधुर बाजे की ध्वनि से उत्साहित होकर अखाड़े में आकर बैठ गये ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**नन्दगोपादयो गोपा भोजराजसमाहुताः ।**
**निवेदितोपायनास्त एकस्मिन् मञ्च आविशन् ॥३८॥**

पदच्छेद— नन्दगोप आदयः गोपाः भोजराज समाहुताः ।
निवेदित उपायनाः ते एकस्मिन् मञ्चे आविशन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्दगोप | ४. | नन्दगोप | निवेदित | ८. | देकर |
| आदयः | ५. | आदि | उपायनाः | ७. | भेंटें |
| गोपाः | ६. | गोप | ते | १. | वे |
| भोजराज | २. | कंस के | एकस्मिन् | ९. | एक |
| समाहुताः । | ३. | बुलाने पर | मञ्चे | १०. | मञ्च पर |
| | | | आविशन् ॥ | ११. | बैठ गये |

श्लोकार्थ—वे कंस के बुलाने पर नन्दगोप आदि गोप भेंटें देकर एक मञ्च पर बैठ गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
मल्लरङ्गोपवर्णनम् नाम द्विचत्वारिंशः अध्यायः ॥४२॥

## प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथ कृष्णश्च रामश्च कृतशौचौ परन्तप ।
मल्लदुन्दुभिनिर्घोषं श्रुत्वा द्रष्टुमुपेयतुः ॥१॥

पदच्छेद— अथ कृष्णः च रामः च कृत शौचौ परन्तप ।
मल्ल दुन्दुभि निर्घोषम् श्रुत्वा द्रष्टुम् उपेयतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | २. | इसके बाद | मल्ल | ७. | पहलवानों के |
| कृष्णः च | ३. | कृष्ण और | दुन्दुभि | ८. | नगाड़े की |
| रामः च | ४. | बलराम और | निर्घोषम् | ९. | ध्वनि |
| कृत | ६. | निवृत्त होकर | श्रुत्वा | १०. | सुनकर |
| शौचौ | ५. | स्नानादि से | द्रष्टुम् | ११. | रंगभूमि देखने को |
| परन्तप । | १. | हे शत्रुविजयी परीक्षित् ! | उपेयतुः ॥ | १२. | चल पड़े |

श्लोकार्थ—हे शत्रुविजयी परीक्षित् ! इसके बाद कृष्ण और बलराम स्नानादि से निवृत्त होकर पहलवानों के नगाड़े की ध्वनि सुनकर रंगभूमि देखने को चल पड़े ॥

## द्वितीयः श्लोकः

रङ्गद्वारं समासाद्य तस्मिन् नागमवस्थितम् ।
अपश्यत् कुवलयापीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् ॥२॥

पदच्छेद— रङ्गद्वारम् समासाद्य तस्मिन् नागम् अवस्थितम् ।
अपश्यत् कुवलयापीडम् कृष्णः अम्बष्ठ प्रचोदितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रङ्गद्वारम् | १. | रङ्गभूमि के दरवाजे पर | अपश्यत् | १०. | देखा |
| समासाद्य | २. | पहुँच कर | कुवलयापीडम् | ७. | कुवलयापीड नामक |
| तस्मिन् | ४. | वहाँ | कृष्णः | ३. | कृष्ण ने |
| नागम् | ८. | हाथी को | अम्बष्ठ | ५. | महावत की |
| अवस्थितम् । | ९. | खड़े हुये | प्रचोदितम् ॥ | ६. | प्रेरणा से |

श्लोकार्थ—रङ्गभूमि में पहुँचकर श्रीकृष्ण ने वहाँ महावत की प्रेरणा से कुवलयापीडनामक हाथी को खड़े हुये देखा ॥

## तृतीयः श्लोकः

**बद्ध्वा परिकरं शौरिः समुह्य कुटिलालकान् ।**
**उवाच हस्तिपं वाचा मेघनादगभीरया ॥३॥**

पदच्छेद— बद्ध्वा परिकरम् शौरिः समुह्य कुटिल अलकान् ।
उवाच हस्तिपम् वाचा मेघनाद गभीरया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बद्ध्वा | ३. कसकर | उवाच | ११. ललकारा |
| परिकरम् | २. कमर | हस्तिपम् | १०. महावत को |
| शौरिः | १. श्रीकृष्ण ने | वाचा | ९. वाणी से |
| समुह्य | ६. समेट कर | मेघनाद | ७. मेघध्वनि के समान |
| कुटिल | ४. घुंघराले | गभीरया ॥ | ८. गम्भीर |
| अलकान् । | ५. बालों को | | |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने कमर कसकर घुंघराले बालों को समेटकर मेघध्वनि के समान गम्भीर वाणी से कहा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**अम्बष्ठाम्बष्ठ मार्गं नौ देह्यपक्रम मा चिरम् ।**
**नो चेत् सकुञ्जरं त्वाद्य नयामि यमसादनम् ॥४॥**

पदच्छेद— अम्बष्ठ अम्बष्ठ मार्गम् नौ देहि अपक्रम मा चिरम् ।
नोचेत् सकुञ्जरम् त्वा अद्य नयामि यम सादनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अम्बष्ठ | १. महावत | नो | ८. नहीं |
| अम्बष्ठ | २. महावत | चेत् | ९. तो |
| मार्गम् | ४. रास्ता | सकुञ्जरम् | १०. हाथी सहित |
| नौ | ३. हम दोनों को | त्वा अद्य | ११. तुझे आज |
| देहि | ५. दो | नयामि | १४. पहुँचा दूंगा |
| अपक्रम | ६. यहाँ से हट जाओ | यम् | १२. यमराज के |
| मा चिरम् । | ७. देर मत करो | सादनम् ॥ | १३. घर |

श्लोकार्थ—महावत, महावत ! हम दोनों को रास्ता दो । यहाँ से हट जाओ, देर मत करो, नहीं । हाथी सहित तुझे यमराज के घर पहुँचा दूंगा ।

## पञ्चमः श्लोकः

एवं निर्भर्त्सितोऽम्बष्ठः कुपितः कोपितं गजम् ।
चोदयामास कृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ॥५॥

पदच्छेद— एवम् निर्भर्त्सितः अम्बष्ठः कुपितः कोपितम् गजम् ।
चोदयामास कृष्णाय काल अन्तक यम उपमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | चोदयामास | १२. बढ़ाया |
| निर्भर्त्सितः | २. धमकाने पर | कृष्णाय | ११. श्रीकृष्ण की ओर |
| अम्बष्ठ | ३. महावत ने | काल | ५. काल |
| कुपितः | ४. क्रुद्ध होकर | अन्तक | ६. मृत्यु और |
| कोपितम् | ९. कुपित किये गये | यम | ७. यमराज के |
| गजम् । | १०. हाथी को | उपमम् ॥ | ८. समान |

श्लोकार्थ—इस प्रकार धमकाने पर महावत ने क्रुद्ध होकर काल, मृत्यु और यमराज के समान कुपित किये गये हाथी को श्रीकृष्ण की ओर बढ़ाया ॥

## षष्ठः श्लोकः

करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेण तरसाग्रहीत् ।
करादू विगलितः सोऽमुं निहत्याङ्घ्रिष्वलीयत ॥६॥

पदच्छेद— करीन्द्रः तम् अभिद्रुत्य करेण तरसाअग्रहीत् ।
करात् विगलितः सः अमुम् निहत्यअङ्घ्रिषु अलीयत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| करीन्द्र | १. गजराज ने | करात् | ७. सूंड से |
| तम् | २. उन पर | विगलित | ८. बाहर सरक कर |
| अभिद्रुत्य | ३. आक्रमण करके | सः अमुम् | ९. वे भगवान् हाथी पर |
| करेण | ४. सूंड से | निहत्य | १०. प्रहार करके (उसके) |
| तरसा | ५. फुर्ती के साथ | अङ्घ्रिषु | ११. पैरों के बीच में |
| अग्रहीत् । | ६. पकड़ लिया | अलीयत ॥ | १२. जा छिपे |

श्लोकार्थ—गजराज ने उन पर आक्रमण करके सूंड से फुर्ती के साथ पकड़ लिया । सूंड से बाहर सरक कर वे भगवान् हाथी पर प्रहार करके उसके पैरों के बीच में जा छिपे ॥

## सप्तमः श्लोकः

**संक्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिः स केशवम् ।**
**परामृशत् पुष्करेण स प्रसह्य विनिर्गतः ॥७॥**

पदच्छेद— संक्रुद्धः तम् अचक्षाणः घ्राण दृष्टिः स केशवम् ।
परामृशत् पुष्करेण सः प्रसह्य विनिर्गतः ॥

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| संक्रुद्धः | १. अत्यन्त कुपित | केशवम् । | ७. | श्रीकृष्ण को |
| तम् | ३. उन्हें | परामृशत् | ८. | ढूंढ़कर पकड़ लिया |
| अचक्षाणः | ४. सामने | पुष्करेण | १०. | सूंड से |
| घ्राण | ६. सूंघकर | सः | ९. | परन्तु वे (उसकी) |
| दृष्टिः | ५. देखकर (और) | प्रसह्य | ११. | बलपूर्वक बाहर |
| सः | २. कुवलयापीड ने | विनिर्गतः ॥ | १२. | निकल गये |

श्लोकार्थ—अत्यन्त कुपित कुवलयापीड ने उन्हें सामने देखकर और सूंघकर श्रीकृष्ण को ढूंढ़कर पकड़ लिया । परन्तु वे उसकी सूंड से बल पूर्वक बाहर निकल गये ॥

शब्दार्थ—

## अष्टमः श्लोकः

**पुच्छे प्रगृह्यातिबलं धनुषः पञ्चविंशतिम् ।**
**विचकर्ष यथा नागं सुपर्ण इव लीलया ॥८॥**

पदच्छेद— पुच्छे प्रगृह्य अतिबलम् धनुषः पञ्चविंशतिम् ।
विचकर्ष यथा नागम् सुपर्णः इव लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| पुच्छे | २. पूंछ | विचकर्ष | ८. | घसीट लाये |
| प्रगृह्य | ३. पकड़ कर (श्रीकृष्ण) | यथा | ९. | जैसे |
| अतिबलम् | १. अत्यन्त बलवान् हाथी की | नागम् | ११. | सांप को (घसीटता है) |
| धनुषः | ७. धनुष (सौ हाथ) | सुपर्णः | १०. | गरुड़ |
| पञ्च | ६. पञ्चविंशतिम् | इव | ५. | साथ (उसे) |
| | | लीलया ॥ | ४. | लीला के |

श्लोकार्थ—अत्यन्त बलवान् हाथी की पूंछ पकड़ कर श्रीकृष्ण लीला के साथ उसे पच्चीस धनुष (सौ हाथ) घसीट लाये, जैसे गरुड़ सांप को घसीटता है ॥

## नवमः श्लोकः

**स पर्यावर्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽच्युतः ।**
**बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेनेव बालकः ॥९॥**

पदच्छेद— सः पर्यावर्तमानेन सव्यदक्षिणतः अच्युतः ।
बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेन इव बालकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | १. वे भगवान् | बभ्राम | १२. घुमाने लगे |
| पर्यावर्त | १०. घुमाने के | भ्राम्य | ४. घुमाये |
| मानेन | ११. प्रमाण से | माणेन | ५. जाने वाले |
| सव्य | ८. बांये और | गोवत्सेन | ६. गाय के बछड़े के |
| दक्षिणतः | ९. दायें की ओर | इव | ७. समान (उस हाथी को) |
| अच्युतः । | २. श्री कृष्ण | बालकः ॥ | ३. बालक के द्वारा (पूंछ पकड़ कर |

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण बालक के द्वारा पूंछ पकड़ कर घुमाये जाने-वाले गाय के बछड़े के समान उस हाथी को बांये और दायें की ओर घुमाने के प्रमाण से घुमाने लगे ॥

## दशमः श्लोकः

**ततोऽभिमुखमभ्येत्य पाणिनाऽऽहत्य वारणम् ।**
**प्राद्रवन् पातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे ॥१०॥**

पदच्छेद— ततः अभिमुखम् अभ्येत्य पाणिना आहत्य वारणम् ।
प्राद्रवन् पातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ततः | १. तदनन्तर (वे श्रीकृष्ण) | प्राद्रवन् | ७. दौड़ते हुये |
| अभिमुखम् | २. सामने | पातयामास | ११. गिराने लगे |
| अभ्येत्य | ३. आकर | स्पृश्यमानः | १०. छूते हुये |
| पाणिना | ४. हाथ से | पदे | ८. पग |
| आहत्य | ६. मार कर | पदे ॥ | ९. पग पर |
| वारणम् । | ५. हाथी को | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर वे श्रीकृष्ण सामने आकर हाथ से हाथी को मार कर दौड़ते हुये पग-पग पर छूते हुये गिराने लगे ॥

# एकादशः श्लोकः

**स धावन् क्रीडया भूमौ पतित्वा सहसोत्थितः ।**
**तं मत्वा पतितं क्रुद्धो दन्ताभ्यां सोऽहनत्क्षितिम् ॥११॥**

पदच्छेद— सः धावन् क्रीडया भूमौ पतित्वा सहसा उत्थितः ।
तम् मत्वा पतितम् क्रुद्धः दन्ताभ्याम् सः अहनत् क्षितिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | वे (श्रीकृष्ण) | तम् | ८. | उन्हें |
| धावन् | २. | दौड़ते हुये | मत्वा | १०. | मानकर |
| क्रीडया | ३. | खेल-खेल में | पतितम् | ९. | गिरा हुआ |
| भूमौ | ४. | भूमि पर | क्रुद्धः | ११. | कुपित होकर |
| पतित्वा | ५. | गिर कर | दन्ताभ्याम् | १२. | दोनों दाँतों से |
| सहसा | ६. | एकाएक | सः | १३. | वह हाथी |
| उत्थितः । | ७. | उठ जाते थे (और) | अहनत् | १५. | मारता था |
| | | | क्षितिम् ॥ | १४. | पृथ्वी को |

श्लोकार्थ—वे श्रीकृष्ण दौड़ते हुये खेल-खेल में भूमि पर गिर कर एकाएक उठ जाते थे । और उन्हें गिरा हुआ मानकर कुपित होकर दोनों दाँतों से वह हाथी पृथ्वी को मारता था ॥

# द्वादशः श्लोकः

**स्वविक्रमे प्रतिहते कुञ्जरेन्द्रोऽत्यमर्षितः ।**
**चोद्यमानो महामात्रैः कृष्णमभ्यद्रवद् रुषा ॥१२॥**

पदच्छेद— स्वविक्रमे प्रतिहते कुञ्जर इन्द्रः अति अमर्षितः ।
चोद्यमानः महामात्रैः कृष्णम् अभ्यद्रवत् रुषा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्व | १. | अपने | चोद्यमानः | ८. | प्रेरित किये जाने पर |
| विक्रमे | २. | पराक्रम के | महामात्रैः | ७. | महावत द्वारा |
| प्रतिहते | ३. | व्यर्थ हो जाने पर | कृष्णम् | १०. | कृष्ण पर |
| कुञ्जर इन्द्रः | ४. | गजराज | अभ्यद्रवत् | ११. | टूट पड़ा |
| अति | ५. | अत्यन्त | रुषा ॥ | ९. | वह क्रोधित होकर |
| अमर्षितः । | ६. | कुपित हुआ (फिर) | | | |

श्लोकार्थ—अपने पराक्रम के व्यर्थ हो जाने पर गजराज अत्यन्त कुपित हुआ फिर महावत द्वारा प्रेरित किये जाने पर वह क्रोधित होकर कृष्ण पर टूट पड़ा ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**तमापतन्तमासाद्य भगवान् मधुसूदनः ।**
**निगृह्य पाणिना हस्तं पातयामास भूतले ॥१३॥**

पदच्छेद— तम् आपतन्तम् आसाद्य भगवान् मधुसूदनः ।
निगृह्य पाणिना हस्तम् पातयामास भूतले ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | ३. उसे | निगृह्य | ८. पकड़कर |
| आपतन्तम् | ४. अपनी ओर झपटते हुये | पाणिना | ६. हाथ से (उसकी) |
| आसाद्य | ५. पाकर | हस्तम् | ७. सूंड |
| भगवान् | १. भगवान् | पातयामास | १०. गिरा दिया |
| मधुसूदनः । | २. श्रीकृष्ण ने | भूतले ॥ | ९. धरती पर |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे अपनी ओर झपटते हुये पाकर हाथ से उसकी सूंड पकड़कर धरती पर गिरा दिया ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**पतितस्य पदाऽऽक्रम्य मृगेन्द्र इव लीलया ।**
**दन्तमुत्पाटय तेनेभं हस्तिपांश्चाहनद्धरिः ॥१४॥**

पदच्छेद— पतितस्य पदा आक्रम्य मृगेन्द्र इव लीलया ।
दन्तम् उत्पाटय तेन इभम् हस्तिपान् च अहनत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पतितस्य | १. (उसके) गिर जाने पर | दन्तम् | ८. दाँतों को |
| पदा | ६. पैर से | उत्पाटय | ९. उखाड़ कर |
| आक्रम्य | ७. दबाकर | तेन इभम् | १०. उससे हाथी और |
| मृगेन्द्र | ३. सिंह के | हस्तिपान् | ११. महावतों को |
| इव | ४. समान | अहनत् | १२. मार दिया |
| लीलया । | ५. लीलापूर्वक | हरिः ॥ | २. भगवान् श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—उसके गिर जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने सिंह के समान लीलापूर्वक पैर से दबाकर दाँतो को उखाड़ कर उससे हाथी और महावतों को मार दिया ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

मृतकं द्विपमुत्सृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ।
अंसन्यस्तविषाणोऽसृङ्मदबिन्दुभिरङ्कितः ।
विरूढस्वेदकणिकावदनाम्बुरुहो बभौ ॥१५॥

पदच्छेद— मृतकम् द्विपम् उत्सृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ।
अंसन्यस्त विषाणः असृक्मद बिन्दुभिः अङ्कितः ।
विरुढ स्वेद कणिका वदन अम्बुरुहः बभौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मृतकम् | १. मरे हुये | बिन्दुभिः | ९. | बूंदों से |
| द्विपम् | २. हाथी को | अङ्कितः | १०. | चिह्नित और |
| उत्सृज्य | ३. छोड़ कर | विरुढ | ११. | उत्पन्न हुई |
| दन्तपाणिः | ४. हाथ में दांतलिये हुये उन्होंने | स्वेद | १२. | पसीने के |
| समाविशत् । | ५. रंगभूमि में प्रवेश किया | कणिका | १३. | कणों से युक्त |
| अंसन्यस्त | ६. कन्धे पर रखे हुये | वदन | १४. | मुख |
| विषाणः | ७. दांत वाले | अम्बुरुह | १५. | कमल वाले (भगवान्) |
| असृक्मद | ८. रक्त और मद की | बभौ ॥ | १६. | शोभा पा रहे थे |

श्लोकार्थ—मरे हुये हाथी को छोड़कर हाथ में दांत लिये उन्होंने रंग भूमि में प्रवेश किया । उस समय कन्धे पर रखे हुये दांत वाले, रक्त और मद की बूंदों से चिह्नित और उत्पन्न हुए पसीने के कणों से युक्त मुख कमल वाले भगवान् शोभा पा रहे थे ।

## षोडशः श्लोकः

वृतौ गोपैः कतिपयैर्बलदेवजनार्दनौ ।
रङ्गं विविशतू राजन् गजदन्तवरायुधौ ॥१६॥

पदच्छेद— वृतौ गोपैः कतियैः बलदेव जनार्दनौ ।
रङ्गं विविशतुः राजन् गज दन्त वर आयुधौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वृतौ | ४. युक्त | रङ्गं विविशतुः | १०. | रंगभूमि में प्रवेश किया |
| गोपैः | ३. ग्वाल वालों से | राजन् | १. | हे राजन् ! |
| कतिपयैः | २. कुछ | गजदन्त | ९. | हाथी के दांत लिये हुये |
| बलदेव | ५. बलदेव और | वर | ७. | श्रेष्ठ |
| जनार्दनौ । | ६. श्रीकृष्ण ने | आयुधौ ॥ | ८. | अस्त्र के रूप में |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! कुछ ग्वालवालों से युक्त बलदेव और श्रीकृष्ण ने श्रेष्ठ अस्त्र के रूप में हाथी के दांत लिये हुये रंगभूमि में प्रवेश किया ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान् ।**
**गोपानां स्वजनोऽसतां क्षितिभुजां शास्ता स्वपित्रोः शिशुः ॥**
**मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषां तत्त्वं परं योगिनां ।**
**वृष्णीनां परदेवतेति विदितो रङ्गं गतः साग्रजः ॥१७॥**

पदच्छेद— मल्लानाम् अशनिः नृणाम् नरवरः स्त्रीणाम् स्मरः मूर्तिमान् ।
गोपानाम् स्वजनः असताम् क्षितिभुजाम् शास्ता स्वपित्रोः शिशुः ॥
मृत्युः भोजपतेः विराट् अविदुषाम् तत्त्वम् परम् योगिनाम् ।
वृष्णीनाम् परदेवता इति विदितः रङ्गम् गतः स अग्रजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मल्लानाम् | ५. | पहलवानों को | मृत्युः | २१. | मृत्यु |
| अशनिः | ६. | वज्र | भोजपतेः | २०. | कंस को |
| नृणाम् | ७. | (साधारण) मनुष्यों को | विराट् | २३. | विराट् |
| नरवरः | ८. | नररत्न | अविदुषाम् | २२. | अज्ञानियों को |
| स्त्रीणाम् | ९. | स्त्रियों को | तत्त्वम् | २६. | तत्त्व |
| स्मरः | ११. | कामदेव | परम् | २५. | परम |
| मूर्तिमान् | १०. | मूर्तिमान् | योगिनाम् | २४. | योगियों को |
| गोपानाम् | १२. | गोपों को | वृष्णीनाम् | २७. | वृष्णिवंशियों को |
| स्वजनः | १३. | स्वजन | परदेवता | २८. | श्रेष्ठदेवता |
| असताम् | १४. | दुष्ट | इति | २९. | ऐसे |
| क्षितिभुजाम् | १५. | राजाओं को | विदितः | ३०. | जान पड़े |
| शास्ता | १६. | शासक | रङ्गम् | १. | रङ्गभूमि में |
| स्व | १७. | अपने | गतः | २. | पहुँचे हुये |
| पित्रोः | १८. | माता-पिता को | स | ४. | सहित श्रीकृष्ण |
| शिशुः । | १९. | बालक | अग्रजः ॥ | ३. | बलराम जी |

श्लोकार्थ—रङ्गभूमि में पहुँचे हुये बलराम जी सहित वे भगवान् श्रीकृष्ण पहलवानों को वज्र, साधारण मनुष्यों को नररत्न, स्त्रियों को मूर्तिमान् कामदेव, गोपों को स्वजन, दुष्ट राजाओं को शासक, अपने माता-पिता को बालक, कंस को मृत्यु, अज्ञानियों को विराट्, योगियों को परमतत्त्व, वृष्णिवंशियों को श्रेष्ठ देवता ऐसे जान पड़े ॥

## अष्टादशः श्लोकः

हतं कुवलयापीडं दृष्ट्वा तावपि दुर्जयौ ।
कंसो मनस्व्यपि तदा भृशमुद्विविजे नृप ॥१८॥

पदच्छेद— हतम् कुवलयापीडम् दृष्ट्वा तौ अपि दुर्जयौ ।
कंसः मनस्वी अपि तदा भृशम् उद्विविजे नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हतम् | ३. | मारा हुआ और | कंसः | ८. | कंस |
| कुवलयापीडम् | २. | कुवलयापीड को | मनस्वी अपि | ९. | मनस्वी होने पर भी |
| दृष्ट्वा | ७. | देखकर | तदा | १०. | उस समय |
| तौ | ४. | उन दोनों को | भृशम् | ११. | बहुत |
| अपि | ५. | भी | उद्विविजे | १२. | घबरा गया |
| दुर्जयौ । | ६. | अजेय | नृप ॥ | १. | हे राजन् |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! कुवलयापीड को मारा हुआ और उन दोनों को भी अजेय देखकर कंस मनस्वी होने पर भी उस समय बहुत घबरा गया ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

तौ रेजतू रङ्गगतौ महाभुजौ विचित्रवेषाभरणस्रगम्बरौ ।
यथा नटावुत्तमवेषधारिणौ मनः क्षिपन्तौ प्रभया निरीक्षताम् ॥१९॥

पदच्छेद— तौ रेजतुः रङ्ग गतौ महाभुजौ विचित्रवेष आभरण स्रक् अम्बरौ ।
यथा नटौ उत्तम वेष धारिणौ मनः क्षिपन्तौ प्रभया निरीक्षताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तौ | ५. | वे दोनों | यथा | ११. | जैसे |
| रेजतुः | १०. | शोभायमान हुये | नटौ | १४. | नट (शोभित होते हैं) |
| रङ्गगतौ | ६. | रङ्गभूमि में जाकर | उत्तम | १२. | उत्तम |
| महाभुजौ | १. | लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले | वेषधारिणौ | १३. | वेष धारण किये हुये |
| विचित्रवेष | २. | विचित्र वेष | मनः क्षिपन्तौ | ९. | मन को खींचते हुये (वैसे ही) |
| आभरण | ३. | आभूषण | प्रभया | ७. | अपनी कान्ति से |
| स्रक्अम्बरैः । | ४. | माला और वस्त्र वाले | निरीक्षताम् ॥ | ८. | देखने वालों के |

श्लोकार्थ—लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले, विचित्र वेष, आभूण, माला और वस्त्र वाले वे दोनों रङ्गभूमि में जाकर अपनी कान्ति से देखने वालों के मन को खींचते हुये—वैसे ही शोभायमान हुये जैसे उत्तम वेष धारण किये हुये नट शोभित होते हैं ॥

## विंशः श्लोकः

**निरीक्ष्य तावुत्तमपूरुषौ जना मञ्चस्थिता नागरराष्ट्रका नृप ।**
**प्रहर्षवेगोत्कलितेक्षणाननाः पपुर्न तृप्ता नयनैस्तदाननम् ॥२०॥**

पदच्छेद— निरीक्ष्य तौ उत्तम पूरुषौ जनाः मञ्च स्थिताः नागर राष्ट्रकाः नृप ।
प्रहर्ष वेग उत्कलित ईक्षण आननाः पपुः न तृप्ताः नयनैः तत् आननम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| निरीक्ष्य | ३. | देखकर | प्रहर्ष वेग | ७. | अत्यन्त आनन्द के वेग से |
| तौ उत्तम पुरुषौ | २. | उन दोनों उत्तम पुरुषों को | उत्कलित | ८. | विकसित |
| जनाः | १०. | लोग | ईक्षण आननाः | ९. | नेत्र और मुख वाले |
| मञ्च स्थिताः | ४. | मञ्चों पर बैठे हुये | पपुः | १३. | पीने लगे (परन्तु) |
| नागर | ५. | नगर के और | न तृप्ताः | १४. | तृप्त नहीं होते थे |
| राष्ट्रकाः | ६. | राज्य के मनुष्य तथा | नयनैः | ११. | नेत्रों से |
| नृप । | १. | हे राजन् | तत् आननम् ॥ | १२. | उनके मुख माधुर्य को |

श्लोकार्थ—हेराजन् ! उन दोनों उत्तम पुरुषों को देखकर मञ्चों पर बैठे हुये नगर के और राज्य के मनुष्य अत्यन्त आनन्द के वेग से विकसित नेत्र और मुख वाले होकर नेत्रों से उनके मुख माधुर्य को पीने लगे । परन्तु तृप्त नहीं होते थे ॥

## एकविंशः श्लोकः

**पिबन्त इव चक्षुर्भ्यां लिहन्त इव जिह्वया ।**
**जिघ्रन्त इव नासाभ्यां श्लिष्यन्त इव बाहुभिः ॥२१॥**

पदच्छेद— पिबन्तः इव चक्षुर्भ्याम् लिहन्तः इव जिह्वया ।
जिघ्रन्तः इव नासाभ्याम् श्लिष्यन्तः इव बाहुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पिबन्तः | ३. | पीते हुये | जिघ्रन्तः | ९. | सूंघते हुये |
| इव | १. | मानों | इव | ७. | मानों |
| चक्षुर्भ्याम् | २. | नेत्रों से | नासाभ्याम् | ८. | नासिका से |
| लिहन्तः | ६. | चाटते हुये | श्लिष्यन्तः | १२. | लपटाते हुये (कहने लगे) |
| इव | ४. | मानों | इव | १०. | मानों |
| जिह्वया । | ५. | जीभ से | बाहुभिः ॥ | ११. | बाहों में |

श्लोकार्थ—वे उन्हें मानों नेत्रों से पीते हुये, मानों जीभ से चाटते हुये, मानों नासिका सूंघते हुये, मानों बाहों में लपटाते हुये कहने लगे ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

ऊचुः परस्परं ते वै यथादृष्टं यथाश्रुतम् ।
तद्रूपगुणमाधुर्यप्रागल्भ्यस्मारिता इव ॥२२॥

पदच्छेद— ऊचुः परस्परम् ते वै यथा दृष्टम् यथा श्रुतम् ।
तद्रूप गुण माधुर्य प्रागल्भ्य स्मारिताः इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऊचुः | १२. | कहने लगे | तद्रूप | १. | उनके सौन्दर्य |
| परस्परम् | ११. | आपस में | गुण | २. | गुण |
| ते वै | ७. | जिससे वे | माधुर्य | ३. | माधुर्य और |
| यथा दृष्टम् | ८. | जैसा देखा और | प्रागल्भ्य | ४. | निर्भयता ने |
| यथा | ९. | जैसा | स्मारिताः | ६. | स्मरण करा दिया |
| श्रुतम् । | १०. | सुना था | इव ॥ | ५. | मानों (दर्शकों को) |

श्लोकार्थ—उनके सौन्दर्य, गुण, माधुर्य और निर्भयता ने मानों दर्शकों को स्मरण करा दिया । जिससे वे, जैसा देखा और जैसा सुना था, आपस में कहने लगे ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

एतौ भगवतः साक्षाद्धरेर्नारायणस्य हि ।
अवतीर्णाविहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि ॥२३॥

पदच्छेद— एतौ भगवतः साक्षात् हरेः नारायणस्य हि ।
अवतीर्णौ इह अंशेन वसुदेवस्य वेश्मनि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतौ | १. | वे दोनों | अवतीर्णौ | १०. | अवतीर्ण हुये |
| भगवतः | ३. | भगवान् | इह | ७. | इस पृथ्वी पर |
| साक्षात् | २. | साक्षात् | अंशेन | ६. | अंश से |
| हरेः | ४. | श्री हरि | वसुदेवस्य | ८. | वसुदेव के |
| नारायणस्य हि । | ५. | नारायण के | वेश्मनि ॥ | ९. | घर में |

श्लोकार्थ—वे दोनों साक्षात् भगवान् श्री हरि नारायण के अंश से इस पृथ्वी पर वसुदेव के घर में अवतीर्ण हुए ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**एष वै किल देवक्यां जातो नीतश्च गोकुलम् ।**
**कालमेतं वसन् गूढो ववृधे नन्दवेश्मनि ॥२४॥**

पदच्छेद— एषः वै किल देवक्याम् जातः नीतः च गोकुलम् ।
कालम् एतम् वसन् गूढः ववृधे नन्दवेश्मनि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एषः | २. | ये | कालम् | ८. | समय तक |
| वै किल | १. | कहते हैं कि | एतम् | ७. | इतने |
| देवक्याम् | ३. | देवकी से | वसन् | ११. | निवास करते हुये |
| जातः | ४. | उत्पन्न हुये | गूढः | १०. | छिप कर |
| नीतः | ६. | पहुँचा दिये गये | ववृधे | १२. | इतने बड़े हुये हैं |
| च गोकुलम् । | ५. | और गोकुल | नन्दवेश्मनि ॥ | ९. | नन्द के घर में |

श्लोकार्थ—कहते हैं कि ये देवकी से उत्पन्न हुये और गोकुल पहुँचा दिये गये । इतने समय तक नन्द के घर में छिप कर निवास करते हुये इतने बड़े हुये हैं ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**पूतनानेन नीतान्तं चक्रवातश्च दानवः ।**
**अर्जुनौ गुह्यकः केशी धेनुकोऽन्ये च तद्विधाः ॥२५॥**

पदच्छेद— पूतना अनेन नीता अन्तम् चक्रवातः च दानवः ।
अर्जुनौ गुह्यकः केशी धेनुकः अन्ये च तत्विधाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पूतना | २. | पूतना | अर्जुनौ | ६. | यमलार्जुन |
| अनेन | १. | इन्होंने | गुह्यकः | ७. | शंख चूड |
| नीता अन्तम् | १२. | नाश किया | केशी | ८. | केशी |
| चक्रवातः | ३. | तृणावर्त | धेनुकः | ९. | धेनुक |
| च | ५. | और | अन्ये च | ११. | और दूसरे दैत्यों का भी |
| दानवः । | ४. | नामक दानव | तत्विधाः ॥ | १०. | उस प्रकार के |

श्लोकार्थ—उन्होंने पूतना, तृणावर्त नामक दानव और यमलार्जुन, शंखचूड, केशी, धेनुक और उस प्रकार के दूसरे दैत्यों का भी वध किया ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**गावः सपाला एतेन दावाग्नेः परिमोचिताः ।**
**कालियो दमितः सर्प इन्द्रश्च विमदः कृतः ॥२६॥**

पदच्छेद— गावः सपालाः एतेन दावाग्नेः परिमोचिताः ।
कालियः दमितः सर्पः इन्द्रः च विमदः कृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गावः | ३. | गौओं को | दमितः | ८. | दमन (किया) |
| सपालाः | २. | ग्वालों सहित | सर्पः | ७. | नाग का |
| एतेन | १. | इन्होंने | इन्द्रः | १०. | इन्द्र का |
| दावाग्नेः | ४. | दावानल से | च | ९. | और |
| परिमोचिताः । | ५. | बचाया | विमदः | ११. | मानमर्दन |
| कालियः | ६. | कालिय | कृतः ॥ | १२. | किया |

श्लोकार्थ—इन्होंने ग्वालों सहित गौओं को दावानल से बचाया । कालिय नाग का दमन किया । और इन्द्र का मानमर्दन किया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽद्रिप्रवरोऽमुना ।**
**वर्षवाताशनिभ्यश्च परित्रातं च गोकुलम् ॥२७॥**

पदच्छेद— सप्ताहम् एक हस्तेन धृतः अद्रिप्रवरः अमुना ।
वर्षवात अशनिभ्यः च परित्रातम् च गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सप्ताहम् | ३. | सप्ताह तक | वर्षवात | ८. | वर्षा आँधी |
| एक | २. | एक | अशनिभ्यः | १०. | वज्रपात से |
| हस्तेन | ४. | हाथ पर | च | ७. | तथा |
| धृतः | ६. | उठाये रखा | परित्रातम् | १२. | बचा लिया |
| अद्रिप्रवरः | ५. | गिरिराज पर्वत को (गोवंधन) | च | ९. | और |
| अमुना । | १. | इन्होंने | गोकुलम् ॥ | ११. | गोकुल को |

श्लोकार्थ—इन्होंने एक सप्ताह तक हाथ पर गिरिराज गोवंधन पर्वत को उठाये रखा । तथा वर्षा, आँधी और वज्रपात से गोकुल को बचा लिया ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**गोप्योऽस्य नित्यमुदितहसितप्रेक्षणं मुखम् ।**
**पश्यन्त्यो विविधांस्तापांस्तरन्ति स्माश्रमं मुदा ॥२८॥**

पदच्छेद— गोप्यः अस्य नित्यम् उदित हसित प्रेक्षणम् मुखम् ।
पश्यन्त्यः विविधान् तापान् तरन्ति स्म आश्रमम् मुदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः | १. | गोपियाँ | पश्यन्त्यः | ८. | देखती हुई |
| अस्य | २. | इनके | विविधान् | ११. | अनेक प्रकार के |
| नित्यम् | ३. | नित्य | तापान् | १२. | तापों से |
| उदित | ४. | मन्द | तरन्ति | १३. | मुक्त हो जाती |
| हसित | ५. | मुसकान | स्म | १४. | थीं |
| प्रेक्षणम् | ६. | चितवन और | आश्रमम् | १०. | अनायास ही |
| मुखम् । | ७. | मुख को | मुदा ॥ | ९. | हर्ष से |

श्लोकार्थ—गोपियाँ इनके नित्य मन्द मुसकान, चितवन और मुख को देखती हुई हर्ष से अनायास ही अनेक प्रकार के तापों से मुक्त हो जाती थीं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**वदन्त्यनेन वंशोऽयं यदोः सुबहुविश्रुतः ।**
**श्रियं यशो महत्त्वं च लप्स्यते परिरक्षितः ॥२९॥**

पदच्छेद— वदन्ति अनेन वंशः अयम् यदोः सुबहु विश्रुतः ।
श्रियम् यशः महत्त्वम् च लप्स्यते परिरक्षितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वदन्ति | १. | कहते हैं कि | श्रियम् | १०. | समृद्धि |
| अनेन | २. | इनके द्वारा | यशः | ११. | यश एवम् |
| वंशः | ६. | वंश | महत्त्वम् | १२. | गौरव को |
| अयम् | ४. | यह | च | ९. | और |
| यदोः | ५. | यदु का | लप्स्यते | १३. | प्राप्त करेगा |
| सुबहु | ७. | बहुत अधिक | परिरक्षितः ॥ | ३. | सुरक्षित |
| विश्रुतः । | ८. | विख्यात होगा | | | |

श्लोकार्थ—कहते हैं कि इनके द्वारा सुरक्षित यह यदु का वंश बहुत अधिक विख्यात होगा और समृद्धि तथा गौरव को प्राप्त करेगा ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**अयं चास्याग्रजः श्रीमान् रामः कमललोचनः ।**
**प्रलम्बो निहतो येन वत्सको ये बकादयः ॥३०॥**

पदच्छेद— अयम् च अस्य अग्रजः श्रीमान् रामः कमल लोचनः ।
प्रलम्बः निहतः येन वत्सकः ये बक आदयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अयम् च | १. ये | प्रलम्बः | ९. प्रलम्ब नामक |
| अस्य | २. इनके | निहतः | १०. असुर |
| अग्रजः | ३. बड़े भाई | येन | ८. जिन्होंने |
| श्रीमान् | ६. श्रीमान् | वत्सकः | ११. वत्सासुर |
| रामः | ७. बलराम जी है | ये | १२. और दूसरे |
| कमल | ४. कमल के समान | बक | १३. बक |
| लोचनः । | ५. नेत्र वाले | आदयः ॥ | १४. आदि को मारा है |

श्लोकार्थ—ये इनके बड़े भाई कमल के समान नेत्र वाले श्रीमान् बलराम जी हैं । जिन्होंने प्रलम्ब नामक असुर, वत्सासुर और दूसरे बक आदि को मारा है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**जनेष्वेवं ब्रुवाणेषु तूर्येषु निनदत्सु च ।**
**कृष्णरामौ समाभाष्य चाणूरो वाक्यमब्रवीत् ॥३१॥**

पदच्छेद— जनेषु एवम् ब्रुवाणेषु तूर्येषु निनदत्सु च ।
कृष्ण रामौ समाभाष्य चाणूरः वाक्यम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जनेषु | १. लोग | कृष्ण | ७. उस समय श्रीकृष्ण |
| एवम् | २. इस प्रकार | रामौ | ८. और बलराम को |
| ब्रुवाणेषु | ३. कह रहे थे | समाभाष्य | ९. सम्बोधित करके |
| तूर्येषु | ५. तुरही आदि बाजे | चाणूरः | १०. चाणूर ने |
| निनदत्सु | ६. बज रहे थे | वाक्यम् | ११. यह बात |
| च । | ४. और | अब्रवीत् ॥ | १२. कही |

श्लोकार्थ—लोग इस प्रकार कह रहे थे । और तुरही आदि बाजे बज रहे थे । उस समय श्रीकृष्ण और बलराम को सम्बोधित करके चाणूर ने यह बात कही ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**हे नन्दसूनो हे राम भवन्तौ वीरसंमतौ ।**
**नियुद्धकुशलौ श्रुत्वा राज्ञाऽऽहूतौ दिदृक्षुणा ॥३२॥**

पदच्छेद— हे नन्द सूनो हे राम भवन्तौ वीर संमतौ ।
नियुद्ध कुशलौ श्रुत्वा राज्ञा आहूतौ दिदृक्षुणा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हे नन्द सूनो | १. | हे नन्द के पुत्र (श्रीकृष्ण) | नियुद्ध | ६. | तुम्हें कुश्ती लड़ने में |
| हे राम ! | २. | हे बलराम ! | कुशलौ | ७. | निपुण |
| भवन्तौ | ३. | आप दोनों | श्रुत्वा | ८. | सुनकर |
| वीर | ४. | वीरों के | राज्ञा | १०. | महाराजने |
| संमतौ । | ५. | आदरणीय हो | आहूतौ | ११. | तुम दोनों को बुलाया है |
| | | | दिदृक्षुणा ॥ | ९. | दङ्गल देखने के इच्छुक |

श्लोकार्थ—हे नन्द पुत्र श्री कृष्ण ! हे बलराम ! आप वीरों के आदरणीय हो। तुम्हें कुश्ती लड़ने में निपुण सुनकर दङ्गल देखने के इच्छुक महाराजने तुम दोनों को बुलाया है ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**प्रियं राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयो विन्दन्ति वै प्रजाः ।**
**मनसा कर्मणा वाचा विपरीतमतोऽन्यथा ॥३३॥**

पदच्छेद— प्रियम् राज्ञः प्रकुर्वन्त्यः श्रेयः विन्दन्ति वै प्रजाः ।
मनसा कर्मणा वाचा विपरीतम् अतः अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रियम् | ५. | प्रिय | मनसा | १. | मन |
| राज्ञः | ४. | राजा का | कर्मणा | २. | कर्म और |
| प्रकुर्वन्त्यः | ६. | करने वाली | वाचा | ३. | वाणी से |
| श्रेयः | ८. | कल्याण | विपरीतम् | ११. | विपरीत करने वाली प्रजायें |
| विन्दन्ति | ९. | प्राप्त करती हैं | अतः | १०. | इसके |
| वै प्रजाः । | ७. | प्रजायें निश्चित ही | अन्यथा ॥ | १२. | हानि उठाती हैं |

श्लोकार्थ—मन, कर्म और वाणी से राजा का प्रिय करने वाली प्रजायें निश्चित ही कल्याण प्राप्त करती हैं ! इसके विपरीत करने वाली प्रजायें हानि जठाती हैं ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**नित्यं प्रमुदिता गोपा वत्सपाला यथा स्फुटम् ।**
**वनेषु मल्लयुद्धेन क्रीडन्तश्चारयन्ति गाः ॥३४॥**

पदच्छेद— नित्यम् प्रमुदिताः गोपाः वत्सपालाः यथा स्फुटम् ।
वनेषु मल्ल युद्धेन क्रीडन्तः चारयन्ति गाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नित्यम् | ५. सदा | वनेषु | ७. जङ्गलों में |
| प्रमुदिताः | ६. हर्षित रह कर | मल्ल | ८. कुश्ती |
| गोपाः | ४. ग्वाले | युद्धेन | ९. लड़-लड़ कर |
| वत्सपालाः | ३. गाय-बछड़े चराने वाले | क्रीडन्तः | १०. खेलते रहते हैं (और) |
| यथा | २. हैं कि | चारयन्ति | १२. चराते रहते हैं |
| स्फुटम् । | १. सच तो यह | गाः ॥ | ११. गायें |

श्लोकार्थ—सच तो यह है कि गाय-बछड़े चराने वाले सदा हर्षित रह कर जङ्गलों में कुश्ती लड़-लड़ कर खेलते रहते हैं और गाय चराते रहते हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**तस्माद् राज्ञः प्रियं यूयं वयं च करवामहे ।**
**भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्वभूतमयो नृपः ॥३५॥**

पदच्छेद— तस्मात् राज्ञः प्रियं यूयं वयं च करवामहे ।
भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्व भूत मयः नृपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. इसलिये | भूतानि | ८. ऐसा करने से (सभी प्राणी) |
| राज्ञः | ५. राजा का | नः | ९. हम पर |
| प्रियम् | ६. प्रिय | प्रसीदन्ति | १०. प्रसन्न होंगे (क्योंकि) |
| यूयम् | ४. तुम लोग | सर्व | १२. सभी |
| वयम् | २. हम लोग | भूतमयः | १३. प्राणियों का स्वरूप होता है |
| च | ३. और | नृपः ॥ | ११. राजा |
| करवामहे । | ७. करें | | |

श्लोकार्थ—इसलिये हम लोग और तुम लोग राजा का प्रिय करें । ऐसा करने से सभी प्राणी हम पर प्रसन्न होंगे । क्योंकि राजा सभी प्राणियों का स्वरूप होता है ॥

# षट्त्रिंशः श्लोकः

**तन्निशम्याब्रवीत् कृष्णो देशकालोचितं वचः ।**
**नियुद्धमात्मनोऽभीष्टं मन्यमानोऽभिनन्द्य च ॥३६॥**

पदच्छेद— तत् निशम्य अब्रवीत् कृष्णः देशकाल उचितम् वचः ।
नियुद्धम् आत्मनः अभीष्टम् मन्यमानः अभिनन्द्य च ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | १. यह | नियुद्धम् | ४. कुश्ती को |
| निशम्य | २. सुनकर | आत्मनः | ५. अपना |
| अब्रवीत् | १३. कही | अभीष्टम् | ६. अभीष्ट |
| कृष्णः | ३. भगवान् श्रीकृष्ण ने | मन्यमानः | ७. मानते हुये |
| देशकाल | १०. देश काल के | अभिनन्द्य | ८. अनुमोदन किया |
| उचितम् | ११. अनुसार | च ॥ | ९. और |
| वचः । | १२. बात | | |

श्लोकार्थ—यह सुन कर भगवान् श्रीकृष्ण ने कुश्ती को अपना अभीष्ट मानते हुये अनुमोदन किया और देश-काल के अनुसार बात कही ॥

# सप्तत्रिंशः श्लोकः

**प्रजा भोजपतेरस्य वयं चापि वनेचराः ।**
**करवाम प्रियं नित्यं तन्नः परमनुग्रहः ॥३७॥**

पदच्छेद— प्रजाः भोजपतेः अस्य वयम् च अपि वनेचराः ।
करवाम प्रियम् नित्यम् तत् नः परम् अनुग्रहः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रजाः | ६. प्रजा हैं (हम उनका) | करवाम | ९. करें |
| भोजपतेः | ४. कंस की | प्रियम् | ८. प्रिय |
| अस्य | ३. इस | नित्यम् | ७. नित्य |
| वयम् च | १. हम | तत् नः | १०. यह हम पर उनका |
| अपि | २. भी | परम् | ११. परम |
| वनेचराः । | ५. वनवासी | अनुग्रहः ॥ | १२. अनुग्रह होगा |

श्लोकार्थ—हम भी इस कंस की वनवासी प्रजा हैं । हम उनका नित्य प्रिय करें । यह हम पर उनका परम अनुग्रह होगा ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**बाला वयं तुल्यबलैः क्रीडिष्यामो यथोचितम् ।**
**भवेन्नियुद्धं माधर्मः स्पृशेन्मल्ल सभासदः ॥३८॥**

पदच्छेद— बालाः वयम् तुल्य बलैः क्रीडिष्यामः यथा उचितम् ।
भवेत् नियुद्धम् मा अधर्मः स्पृशेत् मल्ल सभासदः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बालाः | २. बालक हैं | भवेत् | ९. होगी (इससे) |
| वयम् | १. हम | नियुद्धम् | ८. कुश्ती |
| तुल्य | ३. समान | मा | १३. नहीं |
| बलैः | ४. बल वालों के साथ | अधर्मः | १२. पाप |
| क्रीडिष्यामः | ५. खेल करेंगे | स्पृशेत् | १४. छू सकेगा |
| यथा | ६. जो कि | मल्ल | १०. कुश्ती देखने वाले |
| उचितम् । | ७. उचित | सभासदः ॥ | ११. सभासदों को |

श्लोकार्थ—हम बालक हैं । समान बल वालों के साथ खेल करेंगे । जो कि उचित कुश्ती होगी । कुश्ती देखने वाले सभासदों को पाप नहीं छू सकेगा ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**चाणूर उवाच— न बालो न किशोरस्त्वं बलश्च बलिनां वरः ।**
**लीलयेभो हतो येन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ॥३९॥**

पदच्छेद— न बालः न किशोरः त्वम् बलः च बलिनाम् वरः ।
लीलया इभः हतः येन सहस्रद्विप सत्त्वभृत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न बालाः | ५. न बालक हो | लीलया | ११. खेल ही खेल में |
| न किशोरः | ६. न किशोर हो | इभः | १०. कुवलयापीड हाथी को |
| त्वम् | ४. तुम (भी) | हतः | १२. मार डाला |
| बलः च | १. बलराम | येन | ७. जिन तुमने |
| बलिनाम् | २. बलवानों में | सहस्रद्विप | ८. हजार हाथियों का |
| वरः । | ३. श्रेष्ठ हैं | सत्त्वभृत् ॥ | ९. बल रखने वाले |

श्लोकार्थ—बलराम बलवानों में श्रेष्ठ हैं । तुम भी न बालक हो, न किशोर हो । जिन तुमने हजार हाथियों का बल रखने वाले कुवलयापीड हाथी को खेल ही खेल में मार डाला ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**तस्माद् भवद्भ्यां बलिभिर्योद्धव्यं नानयोऽत्र वै।**
**मयि विक्रम वार्ष्णेय बलेन सह मुष्टिकः ॥४०॥**

पदच्छेद— तस्मात् भवद्भ्याम् बलिभिः योद्धव्यम् न अनयः अत्र वै।
मयि विक्रम वार्ष्णेय बलेन सह मुष्टिकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | १. | इसलिए | मयि | ९. | मुझ पर |
| भवद्भ्याम् | २. | आप दोनों को | विक्रम | १०. | जोर अजमाओ |
| बलिभिः | ३. | बलवानों के साथ | वार्ष्णेय | ८. | श्रीकृष्ण तुम |
| योद्धव्यम् | ४. | युद्ध करना चाहिये | बलेन | ११. | बलराम जी |
| न | ७. | नहीं है | सह | १३. | साथ लड़ेंगे |
| अनयः | ६. | अन्याय | मुष्टिकः ॥ | १२. | मुष्टिक के |
| अत्र वै। | ५. | इसमें निश्चित ही | | | |

श्लोकार्थ—इसलिये आप दोनों को बलवानों के साथ युद्ध करना चाहिये। इसमें अन्याय नहीं है। श्रीकृष्ण तुम मुझ पर जोर अजमाओ। बलराम जी मुष्टिक के साथ लड़ेंगे॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
कुवलयापीडवधः नाम त्रिचत्वारिंशः अध्यायः ॥४३॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## चतुश्चत्वारिंशः अध्यायः

## प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं चर्चितसङ्कल्पो भगवान् मधुसूदनः ।
आससादाथ चाणूरं मुष्टिकं रोहिणीसुतः ॥१॥

पदच्छेद— एवम् चर्चित सङ्कल्पः भगवान् मधुसूदनः ।
आससाद अथ चाणूरम् मुष्टिकम् रोहिणी सुतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | १. इस प्रकार | आससाद | १०. पास पहुँच गये |
| चर्चित | २. निश्चित | अथ | ७. और |
| सङ्कल्पः | ३. सङ्कल्प करके | चाणूरम् | ६. चाणूर के |
| भगवान् | ४. भगवान् | मुष्टिकम् | ९. मुष्टिक के |
| मधुसूदनः । | ५. श्रीकृष्ण | रोहिणीसुतः ॥ | ८. बलराम जी |

श्लोकार्थ—इस प्रकार निश्चित सङ्कल्प करके भगवान् श्रीकृष्ण चाणूर के और बलराम जी मुष्टिक के पास पहुँच गये ॥

## द्वितीयः श्लोकः

हस्ताभ्यां हस्तयोर्बद्ध्वा पद्भ्यामेव च पादयोः ।
विचकर्षतुरन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया ॥२॥

पदच्छेद— हस्ताभ्याम् हस्तयोः बद्ध्वा पद्भ्याम् एव च पादयोः ।
विचकर्षतुः अन्योन्यं प्रसह्य विजिगीषया ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| हस्ताभ्याम् | २. (वे लोग) हाथों से | पादयोः | ७. पैरों को |
| हस्तयोः | ३. हाथों को | विचकर्षतुः | ११. खींचने लगे |
| बद्ध्वा | ८. बाँधकर | अन्योन्य | १०. परस्पर |
| पद्भ्याम् | ५. पैरों से | प्रसह्य | ९. बलपूर्वक |
| एव | ६. ही | विजिगीषया ॥ | १. एक दूसरे को जीतने की इच्छा से |
| च । | ४. और | | |

श्लोकार्थ—एक दूसरे को जीतने की इच्छा से वे लोग हाथों से, हाथों को और पैरों से ही पैरों को बाँधकर बल पूर्वक परस्पर खींचने लगे ॥

## तृतीयः श्लोकः

**अरत्नी द्वे अरत्निभ्यां जानुभ्यां चैव जानुनी ।**
**शिरः शीर्ष्णोरसोरस्तावन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥३॥**

पदच्छेद— अरत्नी द्वे अरत्नीभ्याम् जानुभ्याम् च एव जानुनी ।
शिरः शीर्ष्णा उरसा उरः तौ अन्योन्यम् अभिजघ्नतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अरत्नी | ३. पञ्जे | शिरः | ९. माथा |
| द्वे | २. दोनों | शीर्ष्णा | ८. माथे से |
| अरत्नीभ्याम् | १. पञ्जों से | उरसा | १०. छाती से |
| जानुभ्याम् | ७. घुटने | उरः तौ | ११. छाती मिला कर वे |
| च | ४. और | अन्योन्यम् | १२. परस्पर |
| एव | ६. ही | अभिजघ्नतुः ॥ | १३. चोट करने लगे |
| जानुनी । | ५. घुटनों से | | |

श्लोकार्थ—पञ्जों से दोनों पञ्जे और घुटनों से ही घुटने, माथे से माथा, छाती से छाती मिलाकर वे परस्पर चोट करने लगे ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**परिभ्रामणविक्षेपपरिरम्भावपातनैः ।**
**उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योन्यं प्रत्यरुन्धताम् ॥४॥**

पदच्छेद— परिभ्रामण विक्षेप परिरम्भ अवपातनैः ।
उत्सर्पण अपसर्पणैः च अन्योन्यम् प्रतिअरुन्धताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| परिभ्रामण | १. वे एक दूसरे को घुमाने | उत्सर्पणा | ५. छूट कर निकल जाने |
| विक्षेप | २. दूर ढकेलने | अपसर्पणैः | ७. छोड़ कर पीछे हटने आदि से |
| परिरम्भ | ३. जोर से पकड़ने | च | ६. और |
| अवपातनैः । | ४. पटकने | अन्योन्यम् | ८. परस्पर |
| | | प्रतिअरुन्धताम् ॥ | ९. रोकने लगे |

श्लोकार्थ—वे एक दूसरे को घुमाने, दूर ढकेलने, और जोर से पकड़ने, पटकने, छूट कर निकल जाने और छोड़ कर पीछे हटने आदि से, परस्पर रोकने लगे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैः स्थापनैरपि।**
**परस्परं जिगीषन्तावपचक्रतुरात्मनः ॥५॥**

पदच्छेद— उत्थापनैः उन्नयनैः चालनैः स्थापनैः अपि।
परस्परम् जिगीषन्तौ अपचक्रतुः आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्थापनैः | ४. उठाने | परस्परम् | २. एक दूसरे को |
| उन्नयनैः | ५. ऊपर ले जाने | जिगीषन्तौ | १. जीतने की इच्छा से वे |
| चालनैः | ६. हिलाने | अपचक्रतुः | ९. अपकार करते थे |
| स्थापनैः | ८. स्थिर करने के द्वारा | आत्मनः ॥ | ३. अपने आप |
| अपि। | ७. और | | |

श्लोकार्थ—जीतने की इच्छा से वे एक दूसरे को अपने आप उठाने, ऊपर ले जाने, हिलाने और स्थिर करने के द्वारा अपकार करते थे ॥

## षष्ठः श्लोकः

**तद् बलाबलवद्युद्धं समेताः सर्वयोषितः।**
**ऊचुः परस्परं राजन् सानुकम्पा वरूथशः ॥६॥**

पदच्छेद— तत् बलाबलवत् युद्धम् समेताः सर्वं योषितः।
ऊचुः परस्परम् राजन् स अनुकम्पा वरूथशः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | २. उस | ऊचुः | ११. कहने लगीं |
| बलाबलवत् | ३. बलवान् और निर्बल का | परस्परम् | १०. परस्पर |
| युद्धम् | ४. युद्ध देख कर | राजन् | १. हे राजन्! |
| समेताः | ५. वहाँ आयी हुईं | स अनुकम्पा | ८. करुणा वश |
| सर्वं | ६. सभी | वरूथशः ॥ | ९. अलग-अलग टोलियों में |
| योषितः। | ७. महिलायें | | |

श्लोकार्थ—हे राजन्! उस बलवान् और निर्बल का युद्ध देख कर वहाँ आयी हुईं सभी महिलायें करुणा वश अलग-अलग टोलियों में परस्पर कहने लगीं ॥

## सप्तमः श्लोकः

महानयं बताधर्म एषां राजसभासदाम्।
ये बलाबलवद्युद्धं राज्ञोऽन्विच्छन्ति पश्यतः ॥७॥

पदच्छेद— महान् अयम् बत अधर्मः एषाम् राज सभा सदाम्।
ये बल अबलवत् युद्धम् राज्ञः अन्विच्छन्ति पश्यतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महान् | ६. | बड़ा | ये | ८. | (जो) के |
| अयम् | ५. | यह | बल | ९. | बलवान् और |
| बत | १. | खेद है कि | अबलवत् | १०. | निर्बल के |
| अधर्मः | ७. | अधर्म है कि | युद्धम् | ११. | युद्ध का |
| एषाम् | २. | इस | राज्ञः | १२. | राजा के |
| राज सभा | ३. | राज सभा के | अन्विच्छन्ति | १४. | अनुमोदन करते हैं |
| सदाम् | ४. | सदस्यों का | पश्यतः | १३. | सामने ही |

श्लोकार्थ—खेद है कि इस राज सभा के सदस्यों का यह बड़ा अधर्म है, जो ये बलवान् और निर्बल के युद्ध का राजा के सामने ही अनुमोदन करते हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

क्व वज्रसारसर्वाङ्गौ मल्लौ शैलेन्द्रसन्निभौ।
क्व चातिसुकुमाराङ्गौ किशोरौ नाप्तयौवनौ ॥८॥

पदच्छेद— क्व वज्रसार सर्वाङ्गौ मल्लौ शैलेन्द्र सन्निभौ।
क्व च अति सुकुमार अङ्गौ किशोरौ नआप्तयौवनौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्व | १. | कहाँ | क्व | ८. | कहाँ |
| वज्रसार | २. | वज्र के समान कठोर | च | ७. | और |
| सर्वाङ्गौ | ३. | सभी अङ्गों वाले | अति | ९. | अत्यन्त |
| मल्लौ | ६. | दोनों पहलवान | सुकुमार | १०. | सुकुमार |
| शैलेन्द्र | ४. | भारी पर्वत | अङ्गौ | ११. | अङ्गों वाले |
| सन्निभौ। | ५. | जैसे दिखाई देने वाले | किशोरौ | १२. | वे दोनों किशोर |
| | | | न आप्त यौवनौ ॥ | १३. | जो अभी जवान भी नहीं हुये हैं। |

श्लोकार्थ—कहाँ वज्र के समान कठोर सभी अङ्गों वाले, भारी पर्वत के जैसे दिखाई देने वाले दोनों पहलवान और कहाँ अत्यन्त सुकुमार अङ्गों वाले वे दोनों किशोर जो अभी जवान भी नहीं हुये हैं ॥

## नवमः श्लोकः

धर्मव्यतिक्रमो ह्यस्य समाजस्य ध्रुवं भवेत् ।
यत्राधर्मः समुत्तिष्ठेन्न स्थेयं तत्र कर्हिचित् ॥९॥

पदच्छेद— धर्म व्यतिक्रमः हि अस्य समाजस्य ध्रुवम् भवेत् ।
यत्र अधर्मः सम् उत्तिष्ठेत् न स्थेयम् तत्र कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| धर्म | ३. धर्म के | यत्र | ७. जहाँ |
| व्यतिक्रमः | ४. उल्लंघन करने का पाप | अधर्मः | ८. अधर्म |
| हि अस्य | १. इस | सम्उत्तिष्ठेत् | ९. होता हो |
| समाजस्य | २. समाज को | न स्थेयम् | १२. नहीं रहना चाहिये |
| ध्रुवम् | ५. निश्चित ही | तत्र | १०. वहाँ |
| भवेत् । | ६. लगेगा | कर्हिचित् ॥ | ११. कभी भी |

श्लोकार्थ—इस समाज को धर्म के उल्लंघन करने का पाप निश्चित ही लगेगा । जहाँ अधर्म होता हो वहाँ कभी भी नहीं रहना चाहिये ॥

## दशमः श्लोकः

न सभां प्रविशेत् प्राज्ञः सभ्यदोषाननुस्मरन् ।
अब्रुवन् विब्रुवन्नज्ञो नरः किल्विषमश्नुते ॥१०॥

पदच्छेद— न सभाम् प्रविशेत् प्राज्ञः सभ्यदोषान् अनुस्मरन् ।
अब्रुवन् विब्रुवन् अज्ञः नरः किल्विषम् अश्नुते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न | ६. नहीं | अब्रुवन् | ८. दोषों को न कहने वाला |
| सभाम् | ५. सभा में | विब्रुवन् | ९. विरुद्ध कहने वाला और |
| प्रविशेत् | ७. प्रवेश करना चाहिये | अज्ञः | १०. अनजान बन जाने वाला |
| प्राज्ञः | ४. बुद्धिमान् को | नरः | ११. मनुष्य |
| सभ्य | १. सभासदों के | किल्विषम् | १२. पाप |
| दोषान् | २. दोषों को | अश्नुते ॥ | १३. का भागी होता है |
| अनुस्मरन् । | ३. जानते हुये | | |

श्लोकार्थ—सभासदों के दोषों को जानते हुये बुद्धिमान् को सभा में प्रवेश नहीं करना चाहिये । क्योंकि दोषों को न कहने वाला, विरुद्ध कहने वाला, अनजान बन जाने वाला मनुष्य पाप का भागी होता है ॥

## एकादशः श्लोकः

**वल्गतः शत्रुमभितः कृष्णस्य वदनाम्बुजम् ।**
**वीक्ष्यतां श्रमवार्युप्तं पद्मकोशमिवाम्बुभिः ॥११॥**

पदच्छेद— वल्गतः शत्रुम् अभितः कृष्णस्य वदन अम्बुजम् ।
वीक्ष्यताम् श्रमवारि उप्तम् पद्मकोशम् इव अम्बुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वल्गतः | ३. | पैंतरा बदलते हुये | वीक्ष्यताम् | ७. | देखो (उनके शरीर पर) |
| शत्रुम् | १. | शत्रु के | श्रमवारि | ८. | पसीने की |
| अभितः | २. | चारों ओर | उप्तम् | ९. | बूंदें |
| कृष्णस्य | ४. | श्रीकृष्ण का | पद्मकोशम् | ११. | कमल कोश पर |
| वदन | ५. | मुख | इव | १०. | वैसी लग रही हैं (जैसी) |
| अम्बुजम् । | ६. | कमल | अम्बुभिः ॥ | १२. | जल की बूंदें होती हैं |

श्लोकार्थ—शत्रु के चारों ओर पैंतरा बदलते हुये श्रीकृष्ण का मुख कमल देखो। उनके शरीर पर पसीने की बूंदें वैसी लग रही हैं जैसी कमल कोश पर जल की बूंदें होती हैं ॥

## द्वादशः श्लोकः

**किं न पश्यत रामस्य मुखमाताम्रलोचनम् ।**
**मुष्टिकं प्रति सामर्षं हाससंरम्भशोभितम् ॥१२॥**

पदच्छेद— किम् न पश्यत रामस्य मुखम् अताम्र लोचनम् ।
मुष्टिकम् प्रति स अमर्षम् हास संरम्भ शोभितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | १. | क्या तुम | मुष्टिकम् | ८. | जो मुष्टिक के |
| न | ६. | नहीं | प्रति | ९. | प्रति |
| पश्यत | ७. | देख रही हो | स अमर्षम् | १०. | क्रोध से युक्त (परन्तु) |
| रामस्य | ४. | बलराम के | हास | ११. | हास्य के |
| मुखम् | ५. | मुख को | संरम्भ | १२. | आवेग से |
| अताम्र | २. | कुछ-कुछ लाल | शोभितम् ॥ | १३. | शोभित हैं |
| लोचनम् । | ३. | नेत्रों वाले | | | |

श्लोकार्थ—क्या तुम कुछ-कुछ लाल नेत्रों वाले बलराम के मुख को नहीं देख रही हो। जो मुष्टिक के प्रति क्रोध से युक्त परन्तु हास्य के आवेग से शोभित है ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**पुण्या बत व्रजभुवो यदयं नृलिङ्गगूढः पुराणपुरुषो वनचित्रमाल्यः ।**
**गाः पालयन् सहबलः क्वणयंश्च वेणुं विक्रीडयाञ्चति गिरित्ररमार्चिताङ्घ्रिः॥१३॥**

पदच्छेद— पुण्याः बत् व्रज भुवः यद् अयम् नृलिङ्ग गूढः पुराण पुरुषः वन चित्र माल्यः ।
गाः पालयन् सहबलः क्वणयन् च वेणुम् विक्रीडया अञ्चति गिरित्ररमा अङ्घ्रिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पुण्याः | २. परम पवित्र है | गाः पालयन् | १०. गौयें चराते |
| बत् व्रज भुवः | १. अहा व्रज भूमि | सहबलः | ९. बलरामजी के साथ |
| यद् अयम् | ३. जहाँ यह भगवान् | क्वणयन् | १३. बजाते |
| नृलिङ्ग गूढः | ६. मनुष्य के वेश में छिप कर रहते हैं | च | ११. और |
| पुराण पुरुषः | ५. पुराण पुरुष | वेणुम् | १२. बांसुरी |
| वन चित्र | ७. जंगली पुष्पों की रंगबिरंगी | विक्रीडया अञ्चति | १४. खेल खेलतेहुये विचरते हैं |
| माल्यः । | ८. मालायें धारण करते हैं | गिरित्ररमा अङ्घ्रि ॥ | ४. शंकर, लक्ष्मी के द्वारा पूजित चरण वाले |

श्लोकार्थ—अहा ! व्रज भूमि परम पवित्र है । जहाँ यह भगवान् शंकर, लक्ष्मी के द्वारा पूजित चरण वाले पुराण पुरुष मनुष्य के वेश में छिप कर रहते हैं । जंगली पुष्पों की रंग बिरंगी मालायें धारण करते हैं । बलरामजी के साथ गौयें चराते और बांसुरी बजाते खेल खेलते हुये विचरते हैं ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**गोप्यस्तपः किमचरन् यदमुष्य रूपं लावण्यसारमसमोर्ध्वमनन्यसिद्धम् ।**
**दृग्भिः पिबन्त्यनुसवाभिनवं दुरापमेकान्तधाम यशसः श्रिय ऐश्वरस्य ॥१४॥**

पदच्छेद— गोप्यः तपः किम् अचरन् यत् अमुष्य रूपम् लावण्य सारम् असम ऊर्ध्वम् अनन्य सिद्धम् ।
दृग्भिः पिबन्ति अनुसव अभिनवम् दुरापम् एकान्तधाम यशसः श्रियः ऐश्वरस्य ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गोप्यः तपः | १. | गोपियों ने तपस्या | दृग्भिः पिबन्ति | १४. | नेत्रों से पान करती हैं |
| किम् अचरन् | २. | कौन सी की थी | अनुसव | ६. | प्रतिक्षण |
| यत् अमुष्य | ३. | जो इनके श्रेष्ठ | अभिनवम् | ७. | नवीन |
| रूपम् | १३ | रूप का | दुरापम् | ८. | दुर्लभ |
| लावण्य सारम् | १२. | सौन्दर्य के सार भूत | एकान्तधाम | ११. | परम आश्रय एवम् |
| असम ऊर्ध्वम् | ४. | अद्वितीय सबसे ऊपर | यशसः श्रियः | ९ | यश सौन्दर्य और |
| अनन्य सिद्धम् । | ५. | स्वयं सिद्ध | ऐश्वरस्य ॥ | १०. | ऐश्वर्य के |

श्लोकार्थ—गोपियों ने कौन सी तपस्या की थी । जो इनके श्रेष्ठ, अद्वितीय, सबसे ऊपर, स्वयं सिद्ध, प्रतिक्षण, नवीन, दुर्लभ, यश, सौन्दर्य और ऐश्वर्य के परम आश्रय एवम् सौन्दर्य के सार-भूत रूप का नेत्रों से पान करती हैं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**या दोहनेऽवहनने मथनोपलेपप्रेङ्खेङ्खनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ।**
**गायन्ति चैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयानाः ॥१५॥**

पदच्छेद— या दोहने अवहनने मथने उपलेप प्रेङ्खेङ्खन अर्भ रुदित उक्षण मार्जन आदौ ।
गायन्ति च एनम् अनुरक्तधियः अश्रु कण्ठ्यः धन्याः व्रजस्त्रियः उरुक्रम चित्तयानाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| या दोहने | ६. | जो दुहने | गायन्ति | १६. | गाती रहती हैं |
| अवहनने | ७. | कूटने | च | १३. | और |
| मथने | ८ | मथने | एनम् | १५. | इनके गुणों को |
| उपलेप | ९. | लीपने | अनुरक्तधियः | ३. | अनुरक्त बुद्धि वाली और |
| प्रेङ्खईङ्खन | १०. | झूला-झुलाने | अश्रुकण्ठ्यः | ४. | आँसुओं के कारण गद्-गद कण्ठ वाली |
| अर्भरुदित | ११. | बच्चों के रोने पर | धन्याव्रजस्त्रियः | ५. | व्रज स्त्रियाँ धन्य हैं |
| उक्षण | १२. | चुप कराने | उरुक्रम | १. | श्रीकृष्ण में |
| मार्जन आदौ । | १४. | झाड़ू लगाने आदि के समय | चित्तयानाः | २. | चित्त लगाने वाली |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण में चित्त लगाने वाली अनुरक्तबुद्धि वाली आँसुओं के कारण गद्-गद कण्ठ वाली व्रज स्त्रियाँ धन्य हैं । जो दुहने, कूटने, मथने, लीपने, झूला-झुलाने और बच्चों के रोने पर चुप कराने और झाड़ू लगाने आदि के समय इनके गुणों को गाती रहती हैं ॥

## षोडशः श्लोकः

**प्रातर्व्रजाद् व्रजत आविशतश्चसायंगोभिः समं क्वणयतोऽस्य निशम्य वेणुम् ।**
**निर्गम्य तूर्णमबलाः पथि भूरिपुण्याःपश्यन्ति सस्मितमुखं सदयावलोकम् ॥१६॥**

पदच्छेद—प्रातः व्रजात् व्रजतः आविशतः च सायम् गोभिः सायम् क्वणयतः अस्य निशम्य वेणुम् ।
निर्गम्य तूर्णम् अबलाः पथिभूरि पुण्याः पश्यन्ति सस्मित मुखम् सदय अवलोकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रातःकाल | १. | प्रातःकाल | निर्गम्य | १२. | निकलकर |
| व्रजात् व्रजतः | ४. | व्रज से जाते हुये | तूर्णम् अबलाः | १०. | गोपियाँ शीघ्र घर से |
| आविशतः | ६. | लौटते हुये | पथि | ११. | मार्ग में |
| च सायम् | ५. | और सायंकाल | भूरि पुण्याः | ९. | परम पुण्यवती |
| गोभिः समम् | ३. | गायों के साथ | पश्यन्ति | १६. | देखती रहती हैं |
| क्वणयतः | २. | बांसुरी बजाते हुये | सस्मित | १३. | मन्द मुसकान एवम् |
| अस्य | ७. | उनकी | मुखम् | १५. | श्रीकृष्ण के मुख को |
| निशम्य वेणुम् । | ८. | बांसुरी की धुन सुन कर | सदय उवलोकम् ।। | १४. | दयाभरी चितवन से युक्त |

श्लोकार्थ—प्राप्तःकाल बांसुरी बजाते हुये गायों के साथ जाते हुये और सायंकाल लौटते हुये उनकी बांसुरी को धुन सुन कर परम पुण्यवती गोपियाँ शीघ्र घर से मार्ग में निकल कर मन्द मुसकान एवम् दयाभरी चितवन से युक्त श्रीकृष्ण के मुख को देखती रहती हैं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**एवं प्रभाषमाणासु स्त्रीषु योगेश्वरो हरिः ।**
**शत्रुं हन्तुं मनश्चक्रे भगवान् भरतर्षभ ॥१७॥**

पदच्छेद— एवम् प्रभाष माणासु स्त्रीषु योगेश्वरः हरिः ।
शत्रुम् हन्तुम् मनः चक्रे भगवान् भरतर्षभ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एवम् | ३. इस प्रकार | शत्रुम् | ९. शत्रु को |
| प्रभाष | ४. बातें करते | हन्तुम् | १०. मार डालने का |
| माणासु | ५. रहने पर | मनः | ११. मन में निश्चय |
| स्त्रीषु | २. स्त्रियों के | चक्रे | १२. किया |
| योगेश्वरः | ६. योगिराज | भगवान् | ७. भगवान् |
| हरिः । | ८. श्रीकृष्ण ने | भरतर्षभ ॥ | १. हे भरतवंशियों में शिरोमणि । |

श्लोकार्थ—हे भरतवंशियों में शिरोमणि ! स्त्रियों के इस प्रकार बातें करते रहने पर योगिराज भगवान् श्रीकृष्ण ने शत्रु को मारने का मन में निश्चय किया ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**सभयाः स्त्रीगिरः श्रुत्वा पुत्रस्नेहशुचाऽऽतुरौ ।**
**पितरावन्वतप्येतां पुत्रयोरबुधौ बलम् ॥१८॥**

पदच्छेद— सभयाः स्त्री गिरः श्रुत्वा पुत्र स्नेह शुचा आतुरौ ।
पितरौ अनुअतप्येताम् पुत्रयोः अबुध बलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सभयाः | २. भयपूर्ण | पितरौ | १०. माता-पिता |
| स्त्री | १. स्त्रियों की | अनुअतप्येताम् | ११. पश्चात्ताप करने लगे |
| गिरः | ३. बातें | पुत्रयोः | ७. पुत्रों के |
| श्रुत्वा | ४. सुनकर | अबुधौ | ९. न जानने वाले |
| पुत्रस्नेह | ५. पुत्र स्नेह वश | बलम् ।। | ८. बल को |
| शुचाआतुरौ । | ६. शोक से विह्वल (तथा) | | |

श्लोकार्थ—स्त्रियों की भय पूर्ण बातें सुनकर पुत्र स्नेहवश शोक से विह्वल तथा पुत्रों के बल को न जानने वाले माता-पिता (वसुदेव-देवकी) पश्चात्ताप करने लगे ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

तैस्तैर्नियुद्धविधिभिर्विविधैरच्युतेतरौ ।
युयुधाते यथान्योन्यं तथैव बलमुष्टिकौ ॥१९॥

पदच्छेद— तैः तैः नियुद्ध विधिभिः विविधैः अच्युत इतरौ ।
युयुधाते यथा अन्योन्यम् तथा एव बल मुष्टिकौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तैः तैः | २. | उन-उन | युयुधाते | ९. | लड़ रहे थे |
| नियुद्ध | ३. | कुश्ती लड़ने की | यथा | ७. | जिस प्रकार |
| विधिभिः | ४. | विधियों से | अन्योन्यम् | ८. | परस्पर |
| विविधैः | १. | विभिन्न प्रकार की | तथा एव | १०. | उसी प्रकार |
| अच्युत | ५. | भगवान् श्रीकृष्ण और | बल | ११. | बलराम और |
| इतरौ । | ६. | चाणूर | मुष्टिकौ ॥ | १२. | मुष्टिक भी (भिड़े हुये थे) |

श्लोकार्थ—विभिन्न प्रकार की उन-उन कुश्ती लड़ने की विधियों से भगवान् श्रीकृष्ण और चाणूर लड़ रहे थे । उसी प्रकार बलराम और मुष्टिक भी भिड़े हुये थे ॥

## विंशः श्लोकः

भगवद्गात्रनिष्पातैर्वज्रनिष्पेषनिष्ठुरैः ।
चाणूरो भज्यमानाङ्गो मुहुर्ग्लानिमवाप ह ॥२०॥

पदच्छेद— भगवत् गात्र निष्पातैः वज्र निष्पेष निष्ठुरैः ।
चाणूरः भज्यमान अङ्गः मुहुः ग्लानिम् अवाप ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भगवत् | ४. | भगवान् के | चाणूरः | ९. | चाणूर |
| गात्र | ५. | अङ्गों की | भज्यमान | ७. | टूटते हुये |
| निष्पातैः | ६. | रगड़ से | अङ्गः | ८. | अङ्गों वाला |
| वज्र | १. | वज्र की | मुहुः | १०. | बार-बार |
| निष्पेषु | २. | कीलों के समान | ग्लानिम् | ११. | ग्लानि और व्यथा को |
| निष्ठुरैः । | ३. | कठोर | अवाप ह ॥ | १२. | प्राप्त हुआ |

श्लोकार्थ—वज्र की कीलों के समान कठोर भगवान् के अङ्गों की रगड़ से टूटते हुये अङ्गों वाला चाणूर बार-बार ग्लानि और व्यथा को प्राप्त हुआ ॥

## एकविंशः श्लोकः

**स श्येनवेग उत्पत्य मुष्टीकृत्य करावुभौ ।**
**भगवन्तं वासुदेवं क्रुद्धो वक्षस्यबाधत ॥२१॥**

पदच्छेद— सः श्येनवेगः उत्पत्य मुष्टीकृत्य करौ उभौ ।
भगवन्तम् वासुदेवम् क्रुद्धः वक्षसि अबाधत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | २. उसने | भगवन्तम् | ८. भगवान् |
| श्येनवेग | १. बाज के समान वेग वाले | वासुदेवम् | ९. श्रीकृष्ण की |
| उत्पत्य | ७. झपट कर | क्रुद्धः | ३. कुपित होकर |
| मुष्टीकृत्य | ६. मुट्ठी बाँध कर (और) | वक्षसि | १०. छाती पर |
| करौ | ५. हाथों को | अबाधत ॥ | ११. प्रहार किया |
| उभौ । | ४. दोनों | | |

श्लोकार्थ—बाज के समान वेग वाले उसने कुपित होकर दोनों हाथों की मुट्ठी बाँध कर और झपट कर भगवान् श्रीकृष्ण की छाती पर प्रहार किया ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**नाचलत्तत्प्रहारेण मालाहत इव द्विपः ।**
**बाह्वोर्निगृह्य चाणूरं बहुशो भ्रामयन् हरिः ॥२२॥**

पदच्छेद— न अचलत् तत् प्रहारेण माला आहतः इव द्विपः ।
बाह्वोः निगृह्य चाणूरम् बहुशः भ्रामयन् हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न अचलत् | ३. विचलित नहीं हुये | बाह्वोः | १०. दोनों भुजायें |
| तत् | १. उसके | निगृह्य | ११. पकड़ कर |
| प्रहारेण | २. प्रहार से (भगवान्) | चाणूरम् | ९. चाणूर की |
| माला | ५. पुष्प माला की | बहुशः | १२. बहुत वार |
| आहत | ६. मार से | भ्रामयन् | १३. घुमाया |
| इव | ४. जैसे | हरिः ॥ | ८. भगवान् (श्रीकृष्ण ने) |
| द्विपः । | ७. हाथी (तब) | | |

श्लोकार्थ—उसके प्रहार से भगवान् श्रीकृष्ण विचलित नहीं हुये, जैसे पुष्प माला की मार से हाथी । तब भगवान् श्रीकृष्ण ने चाणूर की दोनों भुजायें पकड़ कर बहुत बार घुमाया ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**भूपृष्ठे पोथयामास तरसा क्षीणजीवितम् ।**
**विस्रस्ताकल्पकेशस्रगिन्द्रध्वज इवापतत् ॥२३॥**

पदच्छेद— भूपृष्ठे पोथयामास तरसा क्षीण जीवितम् ।
विस्रस्त आकल्प केश स्रक् इन्द्रध्वज इव आपतत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भूपृष्ठे | ४. | पृथ्वी पर | आकल्प | ६. | उसकी वेश भूषा |
| पोथयामास | ५. | पटक दिया | केश | ७. | केश और |
| तरसा | ३. | जोर से | स्रक् | ८. | मालायें |
| क्षीण | १. | उसे अध- | इन्द्रध्वज | १०. | वह इन्द्रधनुष के |
| जीवितम् । | २. | मरा करके | इव | ११. | समान |
| विस्रस्त | ९. | बिखर गयीं | आपतत् ॥ | १२. | गिर पड़ा |

श्लोकार्थ— उसे अधमरा करके जोर से पृथ्वी पर पटक दिया। उसकी वेश भूषा केश और मालायें बिखर गयीं। वह इन्द्र ध्वज के समान गिर पड़ा ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**तथैव मुष्टिकः पूर्वं स्वमुष्ट्याभिहतेन वै ।**
**बलभद्रेण बलिना तलेनाभिहतो भृशम् ॥२४॥**

पदच्छेद— तथा एव मुष्टिकः पूर्वम् स्वमुष्ट्या अभिहतेन वै ।
बलभद्रेण बलिना तलेन अभिहतः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथा एव | १. | उसी प्रकार | बलभद्रेण | ७. | बलरामजी ने |
| मुष्टिकः | २. | मुष्टिक ने | बलिना | ६. | बलशाली |
| पूर्वम् | ३. | पहले | तलेन | ९. | एक तमाचा |
| स्वमुष्ट्या | ४. | अपने घूंसे से | अभिहतः | १०. | लगा दिया |
| अभिहतेन वै । | ५. | प्रहार किया (तब) | भृशम् ॥ | ८. | बड़े जोर से (उसे) |

श्लोकार्थ— उसी प्रकार मुष्टिक ने पहले अपने घूंसे से प्रहार किया। तब बलशाली बलरामजी ने बड़े जोर से उसे एक तमाचा लगा दिया ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**प्रवेपितः स रुधिरमुद्वमन् मुखतोऽर्दितः ।**
**व्यसुः पपातोर्व्युपस्थे वाताहत इवाङ्घ्रिपः ॥२५॥**

पदच्छेद— प्रवेपितः सः रुधिरम् उद्वमन् मुखतः अर्दितः ।
व्यसुः पपातः उर्वीउपस्थे वात आहतः इव अङ्घ्रिपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रवेपितः | २. | कांपता हुआ | व्यसुः | ७. | निष्प्राण होकर |
| सः | १. | वह मुष्टिक | पपात | १२. | गिर पड़ा |
| रुधिरम् | ४. | रक्त | उर्वीउपस्थे | ११. | पृथ्वी की गोद में |
| उद्वमन् | ५. | गिराता हुआ | वात | ८. | आंधी से |
| मुखतः | ३. | मुंह से | आहतः | ९. | उखड़े हुये |
| अर्दितः । | ६. | व्यथित और | इव अङ्घ्रिप॥ | १०. | वृक्ष के समान |

श्लोकार्थ—वह मुष्टिक कांपता हुआ मुंह से रक्त गिराता हुआ, व्यथित और निष्प्राण होकर आंधी से उखड़े हुये वृक्ष के समान पृथ्वी की गोद में गिर पड़ा ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**ततः कूटमनुप्राप्तं रामः प्रहरतां वरः ।**
**अवधील्लीलया राजन् सावज्ञं वाममुष्टिना ॥२६॥**

पदच्छद— ततः कूटम् अनुप्राप्तम् रामः प्रहरतां वरः ।
अवधीत् लीलया राजन् स अवज्ञम् वाम मुष्टिना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ततः | २. | तदनन्तर | अवधीत् | १२. | मार डाला |
| कूटम् | ७. | कूट नामक पहलवान को | लीलया | ८. | खेल-खेल में ही |
| अनुप्राप्तम् | ६. | सामने आये हुये | राजन् | १. | हे राजेन्द्र ! |
| रामः | ५. | बलराम ने | स अवज्ञम् | ११. | उपेक्षा पूर्वक |
| प्रहरताम् | ३. | योद्धाओं में | वाम | ९. | बायें हाथ के |
| वरः । | ४. | श्रेष्ठ | मुष्टिना ॥ | १०. | घूंसे |

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! तदनन्तर योद्धाओं में श्रेष्ठ बलराम ने सामने आये हुये कूट नामक पहलवान को खेल-खेल में ही बांये हाथ के घूंसे से उपेक्षा पूर्वक मार डाला ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

तर्ह्येव हि शलः कृष्णपदापहतशीर्षकः ।
द्विधा विदीर्णस्तोशलक उभावपि निपेततुः ॥२७॥

पदच्छेद— तर्हि एव हि शलः कृष्ण पदा अपहत शीर्षकः ।
द्विधा विदीर्णः तोशलकः उभौ अपि निपेततुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तर्हि एव हि | १. उसी समय | द्विधा | ७. दो भागों में |
| शलः | ६. शल और | विदीर्णः | ८. चीरा गया |
| कृष्ण | २. कृष्ण के | तोशलकः | ९. तोशल |
| पदा | ३. पैर (की ठोकर) से | उभौ | १०. दोनों |
| अपहत | ४. कटे हुये | अपि | ११. ही |
| शीर्षकः । | ५. सिर वाला | निपेततुः ॥ | १२. गिर पड़े |

श्लोकार्थ—उसी समय कृष्ण के पैर की ठोकर से कटे हुये सिर वाला शल और दो भागों में चीरा गया तोशलक दोनों ही गिर पड़े ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

चाणूरे मुष्टिके कूटे शले तोशलके हते ।
शेषाः प्रदुद्रुवुर्मल्लाः सर्वे प्राणपरीप्सवः ॥२८॥

पदच्छेद— चाणूरे मुष्टिके कूटे शले तोशलके हते ।
शेषाः प्रदुद्रुवुः मल्लाः सर्वे प्राण परीप्सवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| चाणूरे | १. चाणूर | शेषाः | ७. बचे हुये |
| मुष्टिके | २. मुष्टिक | प्रदुद्रुवुः | १२. भाग खड़े हुये |
| कूटे | ३. कूट | मल्लाः | ९. पहलवान |
| शले | ४. शल (और) | सर्वे | ८. सभी |
| तोशलके | ५. तोशलक के | प्राण | १०. प्राण |
| हते । | ६. मार दिये जाने पर | परीप्सवः ॥ | ११. बचाने के लिये |

श्लोकार्थ—चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल और तोशलक के मार दिये जाने पर बचे हुये सभी पहलवान् प्राण बचाने के लिये भाग खड़े हुये ॥

# एकोनत्रिंशः श्लोकः

**गोपान् वयस्यानाकृष्य तैः संसृज्य विजह्नतुः ।**
**वाद्यमानेषु तूर्येषु वल्गन्तौ रुतनूपुरौ ॥२९॥**

दपच्छेद— गोपान् वयस्यान् आकृष्य तैः संसृज्य विजह्लतुः ।
वाद्यमानेषु तूर्येषु वल्गन्तौ रुत नूपुरौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोपान् | २. ग्वाल वालों को | वाद्यमानेषु | ५. बजती हुई |
| वयस्यान् | १. दोनों भाई समवयस्क | तूर्येषु | ६. तुरहियों के साथ |
| आकृष्य | ३. खींचकर | वल्गन्तौ | ९. मिलाकर |
| तैः संसृज्य | ४. उनके साथ मिलकर | रुत | ८. झनकार को |
| विजह्लतुः | १०. खेल करने लगे | नूपुरौ ॥ | ७. नूपुरों की |

श्लोकार्थ—दोनों भाई समवयस्क ग्वाल वालों को खींचकर उनके साथ मिलकर बजती हुई नूपुरो की झनकार को मिलाकर खेल करने लगे ॥

# त्रिंशः श्लोकः

**जनाः प्रजहृषुः सर्वे कर्मणा रामकृष्णयोः ।**
**ऋते कंसं विप्रमुख्याः साधवः साधु साध्विति ॥३०॥**

पदच्छेद— जनाः प्रजहृषुः सर्वे कर्मणा राम कृष्णयोः ।
ऋते कंसम् विप्रमुख्याः साधवः साधु साधु इति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जनाः | ५. लोग | ऋते | ८. छोड़कर |
| प्रजहृषुः | ६. आनन्दित हुये | कंसम् | ७. केवल कंस को |
| सर्वे | ४. सभी | विप्रमुख्याः | ९. श्रेष्ठ ब्राह्मण और |
| कर्मणा | ३. कार्य से | साधवः | १०. साधु पुरुष |
| राम | १. बलराम और | साधु | ११. धन्य हैं |
| कृष्णयोः । | २. कृष्ण के | साधु इति ॥ | १२. धन्य है ऐसा कहने लगे |

श्लोकार्थ— बलराम और कृष्ण के कार्य से सभी लोग आनन्दित हुये केवल कंस को छोड़कर । श्रेष्ठ ब्राह्मण और साधु पुरुष धन्य है, धन्य है, ऐसा कहने लगे ।

# एकत्रिंशः श्लोकः

हतेषु मल्लवर्येषु विद्रुतेषु च भोजराट्।
न्यवारयत् स्वतूर्याणि वाक्यं चेदमुवाच ह ॥३१॥

पदच्छेद— हतेषु मल्लवर्येषु विद्रुतेषु च भोजराट्।
न्यवारयत् स्व तूर्याणि वाक्यम् च इदम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| हतेषु | २. मार दिये जाने पर | स्व | ६. अपने |
| मल्लवर्येषु | १. प्रधान पहलवानों के | तूर्याणि | ७. बाजों को |
| विद्रुतेषु | ४. भाग जाने पर | वाक्यम् | ११. वाक्य |
| च | ३. दूसरों के | च | ९. और |
| भोजराट् | ५. कंस ने | इदम् | १०. यह |
| न्यवारयत्। | ८. बन्द करा दिया | उवाच ह ॥ | १२. कहा |

श्लोकार्थ—प्रधान पहलवानों के मार दिये जाने पर दूसरों के भाग जाने पर कंस ने अपने बाजों को बन्द करा दिया और यह वाक्य कहा ॥

# द्वात्रिंशः श्लोकः

निःसारयत दुर्वृत्तौ वसुदेवात्मजौ पुरात्।
धनं हरत गोपानां नन्दं बध्नीत दुर्मतिम् ॥३२॥

पदच्छेद— निःसारयत दुर्वृत्तौ वसुदेव आत्मजौ पुरात्।
धनम् हरत गोपानाम् नन्दम् बध्नीत दुर्मतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| निःसारयत | ५. निकाल दो | धनम् | ७. धन |
| दुर्वृत्तौ | १. दुराचारी | हरत | ८. हर लो (और) |
| वसुदेव | २. वसुदेव के | गोपानाम् | ६. गोपों का |
| आत्मजौ | ३. दोनों पुत्रों को | नन्दम् | १०. लग रहा था |
| पुरात्। | ४. नगर से बाहर | बध्नाति | ११. बाँध लो |
| | | दुर्मतिम् ॥ | ९. दुर्बुद्धि |

श्लोकार्थ—दुराचारी वसुदेव के दोनों पुत्रों को नगर के बाहर निकाल दो। गोपों का धन हर लो। दुर्बुद्धि नन्द को बाँध लो ॥

# त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**वसुदेवस्तु दुर्मेधा हन्यतामाश्वसत्तमः ।**
**उग्रसेनः पिता चापि सानुगः परपक्षगः ॥३३॥**

पदच्छेद— वसुदेवः तु दुर्मेधाः हन्यताम् आशु असत्तमः ।
उग्रसेनः पिता च अपि स अनुगः परपक्षकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वसुदेवः तु | ३. | वसुदेव को | उग्रसेनः | ९. | उग्रसेन को |
| दुर्मेधाः | १. | दुर्बुद्धि (और) | पिता | ८. | पिता |
| हन्यताम् | ५. | मार डालो | च अपि | १०. | भी (मार डालो) |
| आशु | ४. | शीघ्र | स अनुगः | ६. | अनुयायियों के साथ |
| असत्तमः । | २. | दुष्ट | पर पक्षकः ॥ | ७. | शत्रुपक्ष से मिले हुये |

श्लोकार्थ—दुर्बुद्धि और दुष्ट वसुदेव को शीघ्र मार डालो । अनुयायियों के साथ शत्रुपक्ष से मिले हुये पिता उग्रसेन को भी मार डालो ॥

# चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**एवं विकत्थमाने वै कंसे प्रकुपितोऽव्ययः ।**
**लघिम्नोत्पत्य तरसा मञ्चमुत्तुङ्गमारुहत् ॥३४॥**

पदच्छेद— एवम् विकत्थमाने वै कंसे प्रकुपितः अव्ययः ।
लघिम्ना उत्पत्य तरसा मञ्चम् उत्तुङ्गम् आरुहत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस प्रकार | लघिम्ना | ६. | फुर्ती से |
| विकत्थमाने | ३. | बढ़-बढ़ कर कहने पर | उत्पत्य | ८. | उछलकर |
| वै कंसे | १. | कंस से | तरसा | ७. | वेग पूर्वक |
| प्रकुपितः | ४. | कुपित होकर | मञ्चम् | १०. | मञ्च पर |
| अव्ययः । | ५. | अविनाशी भगवान् श्रीकृष्ण | उत्तुङ्गम् | ९. | ऊंचे |
| | | | आरुहत् ॥ | ११. | जा चढ़े |

श्लोकार्थ—कंस के इस प्रकार बढ़-बढ़ कर कहने पर कुपित होकर अविनाशी भगवान् श्रीकृष्ण फुर्ती से वेग पूर्वक उछल कर ऊँचे मञ्च पर जा चढ़े ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**तमाविशन्तमालोक्य मृत्युमात्मन आसनात् ।**
**मनस्वी सहसोत्थाय जगृहे सोऽसिचर्मणी ॥३५॥**

पदच्छेद— तम् आविशन्तम् आलोक्य मृत्युम् आत्मनः आसनात् ।
मनस्वी सहसा उत्थाय जगृहे सः असि चर्मणी ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ३. | उन (श्रीकृष्ण) को | मनस्वी | ६. | मनस्वी कंस ने |
| आविशन्तम् | ४. | आते हुये | सहसा | ८. | एकाएक |
| आलोक्य | ५. | देख कर | उत्थाय | ९. | उठ कर |
| मृत्युम् | २. | मृत्यु रूप | जगृहे | १२. | उठा ली |
| आत्मनः | १. | अपने | सः असि | १०. | उसने तलवार और |
| आसनात् । | ७. | आसन से | चर्मणी ॥ | ११. | ढाल |

श्लोकार्थ—उसने अपने मृत्यु रूप उन श्रीकृष्ण को आते हुये देख कर मनस्वी कंस ने आसन से एकाएक उठ कर तलवार और ढाल उठा ली ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**तं खड्गपाणिं विचरन्तमाशु श्येनं यथा दक्षिणसव्यमम्बरे ।**
**समग्रहीद् दुर्विषहोग्रतेजा यथोरगं तार्क्ष्यसुतः प्रसह्य ॥३६॥**

पदच्छेद— तम् खड्गपाणिम् विचरन्तम् आशु श्येनम् यथा दक्षिण सव्यम् अम्बरे ।
समग्रहीत् दुर्विषह उग्रतेजाः यथा उरगम् तार्क्ष्यसुतः प्रसह्य ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ७. | उसे | समग्रहीत | ११. | पकड़ लिया |
| खड्गपाणिम् | १. | हाथ में तलवार लेकर | दुर्विषह | ८. | अत्यन्त दुःसह |
| विचरन्तम् | ६. | पैंतरा बदलते हुये | उग्रतेजाः | ९. | प्रचण्ड वेग वाले (भगवान् ने) |
| आशु | ५. | शीघ्र ही फुर्ती से | यथा | १२. | जैसे |
| श्येनम् यथा | ३. | बाज के समान | उरगम् | १४. | सांप को (पकड़ लेता है) |
| दक्षिण सव्यम् | ४. | दाँयीं और बायीं ओर | तार्क्ष्य सुतः | १३. | गरुड़ |
| अम्बरे । | २. | आकाश में | प्रसह्य ॥ | १०. | वैसे ही बल पूर्वक |

श्लोकार्थ—हाथ में तलवार लेकर आकाश में बाज के समान दाँयीं और बाँयीं ओर शीघ्र ही फुर्ती से उसे पैंतरा बदलते हुये अत्यन्त दुःसह प्रचण्ड वेग वाले भगवान् ने वैसे ही बल पूर्वक पकड़ लिया, जैसे गरुड़ सांप को पकड़ लेता है ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**प्रगृह्य केशेषु चलत्किरीटं निपात्य रङ्गोपरि तुङ्गमञ्चात् ।**
**तस्योपरिष्टात् स्वयमब्जनाभः पपात विश्वाश्रय आत्मतन्त्रः ॥३७॥**

पदच्छेद— प्रगृह्य केशेषु चलत् किरीटम् निपात्य रङ्ग उपरि तुङ्ग मञ्चात् ।
तस्य उपरिष्टात् स्वयम् अब्जनाभः पपात विश्व आश्रयः आत्मतन्त्रः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रगृह्य | ४. पकड़ कर (श्रीकृष्ण ने) | तस्य | १२. उसके |
| केशेषु | ३. उसके केशों को | उपरिष्टात् | १३. ऊपर |
| चलत् | १. गिरे हुये | स्वयम् | ११. स्वयम् |
| किरीटम् | २. मुकुट वाले | अब्जनाभः | १०. कमलनाभ भगवान् |
| निपात्य | ७. गिरा दिया (और) | पपात | १४. कूद पड़े |
| रङ्ग उपरि | ६. रङ्ग भूमि में | विश्व आश्रय | ८. संसार के आश्रय एवं |
| तुङ्ग मञ्चात् । | ५. ऊंचे मञ्च से (उसे) | आत्मतन्त्रः ॥ | ९. परम स्वतन्त्र |

श्लोकार्थ—गिरे हुये मुकुट वाले उसके केशों को पकड़ कर श्रीकृष्ण ने ऊंचे मञ्च से उसे रङ्ग भूमि में गिरा दिया । और संसार के आश्रय एवम् परम स्वतन्त्र कमल नाभ भगवान् स्वयम् उसके ऊपर कूद पड़े ॥

## अष्टात्रिंशः श्लोकः

**तं सम्परेतं विचकर्ष भूमौ हरिर्यथेभं जगतो विपश्यतः ।**
**हाहेति शब्दः सुमहांस्तदाभूदुदीरितः सर्वजनैर्नरेन्द्र ॥३८॥**

पदच्छेद— तम् सम्परेतम् विचकर्ष भूमौ हरिः यथा इभम् जगतः विपश्यतः ।
हा हा इति शब्दः सुमहान् तदाभः उदीरितः सर्व जनैः नरेन्द्र ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | ३. कंस को (भगवान् श्रीकष्ण) | हा हा इति | १२. हाय-हाय ऐसा |
| सम्परेतम् | २. मरे हुये | शब्दः सुमहान् | १३. शब्द बहुत ऊंची |
| विचकर्ष | ५. घसीटने लगे | तदा | ९. उस समय |
| भूमौ | ४. धरती पर (उसी प्रकार) | अभूत् | १५. होने लगा |
| हरिः यथा | ६. जैसे सिंह | उदरतः | १४. आवाज में |
| इभम् | ७. हाथी को (घसीटता है) | सर्व | १०. सभी |
| जगतः विपश्यतः । | १. सबके देखते-देखते | जनैः | ११. लोगों के मुंह से |
| | | नरेन्द्र ॥ | ८. हे महाराज ! |

श्लोकार्थ—सबके देखते-देखते मरे हुये कंस को भगवान् श्रीकष्ण धरती पर उसी प्रकार घसीटने लगे । जैसे सिंह हाथी को घसीटता है । हे महाराज ! उस समय सभी लोगों के मुंह से हाय-हाय ऐसा शब्द बहुत ऊंची आवाज में होने लगा ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**स नित्यदोद्विग्नधिया तमीश्वरं पिबन् वदन् वा विचरन् स्वपञ्छ्वसन् ।**
**ददर्श चक्रायुधमग्रतो यस्तदेव रूपं दुरवापमाप ॥३९॥**

पदच्छेद— सः नित्यदा उद्विग्नधिया तम् ईश्वरम् पिबन् वदन् वा विचरन् स्वपन् श्वसन् ।
ददर्श चक्र आयुधम् अग्रतः यः तत् एव रूपम् दुरवापम् आप ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः नित्यदा | २. वह नित्य ही | ददर्श | ११. देखता रहता था |
| उद्विग्नधिया | ३. घबराई हुई बुद्धि से | चक्र आयुधम् | ९. चक्रनामक अस्त्र लिये हुये |
| तम् ईश्वरम् | १०. उन भगवान् श्रीकृष्ण को | अग्रतः | ८. अपने सामने |
| पिबन् वदन् | ४. खाते-पीते बोलते | यः | १. जो |
| वा विचरन् | ५. या चलते | तत् एव | १२. अतः वह उसी |
| स्वयम् | ६. सोते और | रूपम् दुरवापम् | १३. रूप को दुर्लभ |
| श्वपन् । | ७. सांस लेते | आप ॥ | १४. प्राप्त हुआ |

श्लोकार्थ—जो वह नित्य ही घबराई हुई बुद्धि से खाते, पीते बोलते या चलते सोते और सांस लेते अपने सामने चक्र नामक अस्त्र लिये हुये उन भगवान् श्रीकृष्ण को देखता रहता था। अतः वह उसी दुर्लभ रूप को प्राप्त हुआ ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**तस्यानुजा भ्रातरोऽष्टौ कङ्कन्यग्रोधकादयः ।**
**अभ्यधावन्नभिक्रुद्धा भ्रातुर्निर्वेशकारिणः ॥४०॥**

पदच्छेद— तस्य अनुजाः भ्रातरः अष्टौ कङ्क न्यग्रोधक आदयः ।
अभ्यधावन् अभिक्रुद्धाः भ्रातुः निर्वेश कारिणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तस्य | १. उसके | आदयः | ४. आदि |
| अनुजाः | ६. छोटे | अभ्यधावन् | १२. भगवान् श्रीकृष्ण की ओर दौड़े |
| भ्रातरः | ७. भाई | अभिक्रुद्धाः | ८. अत्यन्तक्रुद्ध होकर |
| अष्टौ | ५. आठ | भ्रातुः | ९. भाई का |
| कङ्क | २. कङ्क | निर्वेश | १०. बदला |
| न्यग्रोधक । | ३. न्यग्रोधक | कारिणः ॥ | ११. लेने के लिये |

श्लोकार्थ—उसके कङ्क, न्यग्रोधक आदि आठ छोटे भाई अत्यन्त क्रुद्ध होकर भाई का बदला लेने के लिये भगवान् श्रीकृष्ण की ओर दौड़े ॥

# एकचत्वारिंशः श्लोकः

**तथातिरभसांस्तांस्तु संयत्तान् रोहिणीसुतः ।**
**अहन् परिघमुद्यम्य पशूनिव मृगाधिपः ॥४१॥**

पदच्छेद— तथा अति रभसान् तान् तु संयत्तान् रोहिणी सुतः ।
अहन् परिघम् उद्यम्य पशून् इव मृगाधिपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तथा | १. उस प्रकार | अहन् | ९. मार दिया |
| अति | २. अत्यन्त | परिघम् | ७. परिघ अस्त्र |
| रभसान् | ३. वेग से | उद्यम्य | ८. उठाकर वैसे ही |
| तान् तु | ५. उन्हें | पशून् | १२. पशुओं को (मार देता है) |
| संयत्तान् | ४. युद्ध के लिये तैयार | इव | १०. जैसे |
| रोहिणी सुतः । | ६. बलराम जी ने | मृगाधिपः ॥ | ११. सिंह |

श्लोकार्थ—उस प्रकार अत्यन्त वेग से युद्ध के लिये तैयार उन्हें बलराम जी ने परिघ अस्त्र उठाकर वैसे ही मार दिया, जैसे सिंह पशुओं को मार देता है ॥

# द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**नेदुर्दुन्दुभयो व्योम्नि ब्रह्मेशाद्या विभूतयः ।**
**पुष्पैः किरन्तस्तं प्रीताः शशंसुर्ननृतुः स्त्रियः ॥४२॥**

पदच्छेद— नेदुः दुन्दभयः व्योम्नि ब्रह्मा ईश आद्याः विभूतयः ।
पुष्पैः किरन्तः तम् प्रीताः शशंसुः ननृतुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नेदुः | ३. बजने लगीं | पुष्पैः | ८. पुष्पों की |
| दुन्दुभयः | २. दुन्दुभियाँ | किरन्तः तम् | ९. वर्षा करते हुये उनकी |
| व्योम्नि | १. उस समय आकाश में | प्रीताः | ७. प्रसन्न होकर |
| ब्रह्मा ईश | ४. ब्रह्मा-शङ्कर | शशंसुः | १०. स्तुति करने लगे (और) |
| आद्याः | ५. आदि | ननृतुः | १२. नाचने लगीं |
| विभूतयः । | ६. देवता | स्त्रियः ॥ | ११. और स्त्रियाँ |

श्लोकार्थ—उस समय आकाश में दुन्दुभियाँ बजने लगीं । ब्रह्मा शङ्कर आदि देवता प्रसन्न होकर पुष्पों की वर्षा करते हुये उनकी स्तुति करने लगे । और स्त्रियाँ नाचने लगीं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**तेषां स्त्रियो महाराज सुहृन्मरणदुःखिताः ।**
**तत्राभीयुर्विनिघ्नन्त्यः शीर्षाण्यश्रुविलोचनाः ॥४३॥**

पदच्छेद— तेषाम् स्त्रियः महाराज सुहृत् मरण दुःखिताः ।
तत्र अभीयुः विनिघ्नन्त्यः शीर्षाणि अश्रु विलोचनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेषाम् | २. | उनकी | तत्र | ११. | वहाँ |
| स्त्रियः | ३. | स्त्रियाँ | अभीयुः | १२. | आयीं |
| महाराज | १. | हे महाराज ! | विनिघ्नन्त्यः | ८. | पीटती हुईं |
| सुहृत् | ४. | बन्धुओं की | शीर्षाणि | ७. | सिर |
| मरण | ५. | मृत्यु से | अश्रु | १०. | आंसू भरे |
| दुःखिताः । | ६. | दुःखो होकर (अपने) | विलोचनाः ॥ | ९. | नेत्रों में |

श्लोकार्थ—हे महाराज ! उनकी स्त्रियाँ बन्धुओं की मृत्यु से दुःखी होकर अपने सिर पीटती हुई नेत्रों में आंसू भरे वहाँ आयीं ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**शयानान् वीरशय्यायां पतीनालिङ्ग्य शोचतीः ।**
**विलेपुः सुस्वरं नार्यो विसृजन्त्यो मुहुः शुचः ॥४४॥**

पदच्छेद— शयानान् वीर शय्यायाम् पतीन् आलिङ्ग्य शोचतीः ।
विलेपुः सुस्वरम् नार्यः विसृजन्त्यः मुहुः शुचः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शयानान् | ३. | सोये हुये | विलेपुः | १२. | विलाप करने लगीं |
| वीर | १. | वीरों की | सुस्वरम् | ११. | ऊंचे स्वर से |
| शय्यायाम् | २. | शय्या पर | नार्यः | ७. | स्त्रियाँ |
| पतीन् | ४. | पतियों का | विसृजन्त्यः | १०. | गिराकर |
| आलिङ्ग्य | ५. | आलिङ्गन करके | मुहुः | ८. | बार-बार |
| शोचतीः । | ६. | शोक मानती हुई | शुचः ॥ | ९. | आंसू |

श्लोकार्थ—वीरों को शय्या पर सोये हुये पतियों का आलिङ्गन करके शोक मानती हुई स्त्रियाँ बार-बार आंसू गिरा कर ऊंचे स्वर से विलाप करने लगीं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

हा नाथ प्रिय धर्मज्ञ करुणानाथवत्सल ।
त्वया हतेन निहता वयं ते सगृहप्रजाः ॥४५॥

पदच्छेद— हा नाथ प्रिय धर्मज्ञ करुण अनाथ वत्सल ।
त्वया हतेन निहताः वयम् ते सगृह प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हा नाथ | १. | हा नाथ | त्वया | ७. | आपके |
| प्रिय | २. | हे प्यारे ! | हतेन | ८. | मार दिये जाने से |
| धर्मज्ञ | ३. | हे धर्मज्ञ ! | निहताः | १२. | मार दिये गये हैं |
| करुण | ४. | हे करुणामय ! | वयम् | ११. | हम सब |
| अनाथ | ५. | अनाथों के ! | ते संगृह | ९. | आपके घर और |
| वत्सल । | ६. | स्नेही | प्रजाः ॥ | १०. | प्रजा सहित |

श्लोकार्थ—हा नाथ ! हे प्यारे, हे धर्मज्ञ, हे करुणामय, हे अनाथों के स्नेही ! आपके मार दिये जाने पर आपके घर और प्रजासहित हम सब मार दिये गये हैं ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

त्वया विरहिता पत्या पुरीयं पुरुषर्षभ ।
न शोभते वयमिव निवृत्तोत्सवमङ्गला ॥४६॥

पदच्छेद— त्वया विरहिता पत्या पुरी इयम् पुरुषर्षभ ।
न शोभते वयम् इव निवृत्ता उत्सव मङ्गला ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वया | ३. | आप | शोभते | ७. | शोभित हो रही है (और) |
| विरहिता | ५. | विरह से | वयम् | ८. | हमारी |
| पत्या | ४. | स्वामी के | इव | ९. | तरह |
| पुरी इयम् | २. | यह नगरी | निवृत्ता | १२. | रहित हो गई है |
| पुरुषर्षभ । | १. | पुरुष श्रेष्ठ | उत्सव | १०. | आनन्द |
| न | ६. | नहीं | मङ्गला ॥ | ११. | मङ्गल से |

श्लोकार्थ—हे पुरुषश्रेष्ठ ! यह नगरी आप स्वामी के विरह से शोभित नहीं हो रही है । और हमारी तरह आनन्द मङ्गल से रहित हो गई है ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**अनागसां त्वं भूतानां कृतवान् द्रोहमुल्बणम् ।**
**तेनेमां भो दशां नीतो भूतध्रुक् को लभेत शम् ॥४७॥**

पदच्छेद— अनागसाम् त्वम् भूतानाम् कृतवान् द्रोहम् उल्बणम् ।
तेन इमाम् भो दशाम् नीतः भूत ध्रुक् कः लभेत शम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अनागसाम् त्वम् | २. | आपने निरपराध | तेन इमाम् | ७. | उसी से इस |
| भूतानाम् | ३. | प्राणियों से | भो | १. | हे स्वामी |
| कृतवान् | ६. | किया | दशाम् नीतः | ८. | गति को प्राप्त हुये |
| द्रोहम् | ५. | द्रोह | भूतध्रुक् | ९. | प्राणियों से द्रोह करने वाला |
| उल्बणम् । | ४. | घोर | कः | १०. | कौन मनुष्य |
| | | | लभेत शम् ॥ | ११. | शान्ति पा सकता है |

श्लोकार्थ—हे स्वामी ! आपने निरपराध प्राणियों से घोर द्रोह किया । उसी से इस गति को प्राप्त हुये । प्राणियों से द्रोह करने वाला कौन मनुष्य शान्ति पा सकता है ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**सर्वेषामिह भूतानामेष हि प्रभवाप्ययः ।**
**गोप्ता च तदवध्यायी न क्वचित् सुखमेधते ॥४८॥**

पदच्छेद— सर्वेषाम् इह भूतानाम् एव हि प्रभव अप्ययः ।
गोप्ता च तत् अवध्यायी न क्वचित् सुखम् एधते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वेषाम् | ३. | सभी | गोप्ता च | ७. | रक्षक हैं तथा |
| इह | १. | यहाँ | तत् | ८. | उनका |
| भूतानाम् | ४. | प्राणियों की | अवध्यायी | ९. | तिरस्कार करने वाला |
| एषः हि | २. | ये ही (भगवान्) | न क्वचित् | १०. | कहीं नहीं |
| प्रभव | ५. | उत्पत्ति और | सुखम् | ११. | सुख |
| अप्ययः । | ६. | पालन के आधार | एधते ॥ | १२. | पा सकता है |

श्लोकार्थ—यहाँ वे ही भगवान् सभी प्राणियों की उत्पत्ति और पालन के आधार तथा रक्षक हैं । उनका तिरस्कार करने वाला कहीं नहीं सुख पा सकता है ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—राजयोषित आश्वास्य भगवाँल्लोकभावनः।
यामाहुर्लौकिकीं संस्थां हतानां समकारयत् ॥४९॥

पदच्छेद— राजयोषितः आश्वास्य भगवान् लोक भावनः।
याम् आहुः लौकिकीम् संस्थाम् हतानाम् समकारयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| राजयोषितः | ४. | रानियों को | याम् | ८. | जो |
| आश्वास्य | ५. | सान्त्वना देकर | आहुः | १०. | कही गई है |
| भगवान् | ३. | भगवान् श्रीकृष्ण ने | लौकिकीम् | ७. | लोक रीति के अनुसार |
| लोक | १. | संसार के | संस्थाम् | ९. | अन्त्येष्टि क्रिया |
| भावनः। | २. | जीवन दाता | हतानाम् | ६. | मरने वालों की |
| | | | समकारयत् ॥ | ११. | वह सब करवायी |

श्लोकार्थ—संसार के जीवन दाता भगवान् श्रीकृष्ण ने रानियों को सान्त्वना देकर मरने वालों की लोक रीति के अनुसार जो अन्त्येष्टि क्रिया कही गई है, वह सब करवायी ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

मातरं पितरं चैव मोचयित्वाथ बन्धनात्।
कृष्णरामौ ववन्दाते शिरसाऽऽस्पृश्य पादयोः ॥५०॥

पदच्छेद— मातरम् पितरम् च एव मोचयित्वा अथ बन्धनात्।
कृष्ण रामौ ववन्दाते शिरसा आस्पृश्य पादयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मातरम् | २. | माता | कृष्ण | ८. | कृष्ण और |
| पितरम् | ४. | पिता को | रामौ | ९. | बलराम ने |
| च | ३. | और | ववन्दाते | १३. | वन्दना की |
| एव | ७. | ही | शिरसा | १०. | सिर से (उनके) |
| मोचयित्वा | ६. | छुड़ाकर | आस्पृश्य | १२. | स्पर्श करके |
| अथ | १. | (तदनन्तर) | पादयोः ॥ | ११. | चरणों का |
| बन्धनात्। | ५. | बन्धन से | | | |

श्लोकार्थ—तदनन्तर माता और पिता को बन्धन से छुड़ाकर ही कृष्ण और बलराम ने सिर से उनके चरणों का स्पर्श करके वन्दना की ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ ।
कृतसंवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शङ्कितौ ।।५१।।

पदच्छेद— देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ ।
कृत संवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शङ्कितौ ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| देवकी | १. | देवकी | कृत | ७. | करने वाले |
| वसुदेवश्च | २. | वसुदेव ने और | संवन्दनौ | ६. | वन्दना |
| विज्ञाय | ५. | जान कर | पुत्रौ | ८. | (अपने) पुत्रों को |
| जगत् | ३. | उन्हें संसार के | सस्वजाते | १०. | हृदय सेलगाया |
| ईश्वरौ । | ४. | स्वामी | न | ११. | नहीं |
| | | | शङ्कितौ ।। | ९. | शंका युक्त होने के कारण |

श्लोकार्थ—देवकी और वसुदेव ने उन्हें संसार के स्वामी जान कर वन्दना करने वाले अपने पुत्रों को शंकायुक्त होने के कारण हृदय से नहीं लगाया ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
कंसवधो नाम चतुश्चत्वारिंशः अध्यायः ।।४४।।

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## पञ्चचत्वारिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— पितरावुपलब्धार्थौ विदित्वा पुरुषोत्तमः ।

मा भूदिति निजां मायां ततान जनमोहिनीम् ॥१॥

पदच्छेद— पितरौ उपलब्ध अर्थौ विदित्वा पुरुषोत्तमः ।

मा भूत् इति निजाम् मायाम् ततान जनमोहिनीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पितरौ | २. माता-पिता को | इति | ५. यह सोचकर कि |
| उपलब्ध अर्थौ | ३. मेरा ज्ञान हो गया है | निजाम् | ८. अपनी |
| विदित्वा | ४. ऐसा समझ कर (और) | मायाम् | ९. माया को |
| पुरुषोत्तमः । | १. भगवान् श्रीकृष्ण ने | ततान | १०. फैला दिया |
| मा भूत् | ६. ऐसा नहीं होना चाहिये | जनमोहिनीम् ॥ | ७. लोगों को मोहित करने वाली |

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने माता-पिता को मेरा ज्ञान हो गया है। ऐसा समझ कर और यह सोच कर कि ऐसा नहीं होना चाहिये, लोगों को मोहित करने वाली अपनी माया को फैला दिया ॥

### द्वितीयः श्लोकः

उवाच पितरावेत्य साग्रजः सात्वतर्षभः ।

प्रश्रयावनतः प्रीणन्नम्ब तातेति सादरम् ॥२॥

पदच्छेद— उवाच पितरौ एत्य स अग्रजः सात्वत ऋषभः ।

प्रश्रय अवनतः प्रीणन् अम्ब तात इति सादरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उवाच | १२. | कहने लगे | प्रश्रय | ६. | विनय से |
| पितरौ | ४. | माता-पिता के | अवनतः | ७. | झुक कर |
| एत्य | ५. | पास जाकर | प्रीणन् | ११. | प्रसन्न करते हुये |
| स अग्रजः | ३. | बड़े भाई के साथ | अम्ब तात | ८. | मा-पिता जी |
| सात्वत | १. | यदुवंशियों में | इति | ९. | इन शब्दों से |
| ऋषभः । | २. | श्रेष्ठ (श्रीकृष्ण ने) | सादरम् ॥ | १०. | आदरपूर्वक |

श्लोकार्थ—यदुवंशियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण बड़े भाई के साथ माता-पिता के पास जाकर विनय से झुक कर माता-पिता जी इन शब्दों से आदर पूर्वक प्रसन्न करते हुये कहने लगे ॥

## तृतीयः श्लोकः

**नास्मत्तो युवयोस्तात नित्योत्कण्ठितयोरपि ।**
**बाल्यपौगण्डकैशोराः पुत्राभ्यामभवन् क्वचित् ॥३॥**

पदच्छेद— न अस्मत्तः युवयोः तात नित्य उत्कण्ठितयोः अपि ।
बाल्य पौगण्ड कैशोराः पुत्राभ्याम् अभवन् क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १२. | नहीं | बाल्य | ८. | बाल्यावस्था |
| अस्मत्तः | २. | हमारे लिये | पौगण्ड | ९. | पौगण्ड और |
| युवयोः | ६. | आप दोनों को | कैशोराः | १०. | किशोरावस्था का सुख |
| तात | १. | पिता जी-माता जी | पुत्राभ्याम् | ७. | पुत्रों से |
| नित्य | ३. | सदा | अभवन् | १३. | प्राप्त हुये |
| उत्कण्ठितयोः | ४. | उत्कण्ठित रहने पर | क्वचित् | ११. | कहीं |
| अपि । | ५. | भी | | | |

श्लोकार्थ—पिता जी-माता जी ! हमारे लिये सदा उत्कण्ठित रहने पर भी आप दोनों को पुत्रों से बाल्यावस्था, पौगण्ड और किशोरावस्था का सुख कहीं नहीं प्राप्त हुये ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**न लब्धो दैवहतयोर्वासो नौ भवदन्तिके ।**
**यां बालाः पितृगेहस्था विन्दन्ते लालिता मुदम् ॥४॥**

पदच्छेद— न लब्धः दैव हतयोः वासः नौ भवत् अन्तिके ।
याम् बालाः पितृ गेहस्थाः विन्दन्ते लालिताः मुदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न लब्धः | ६. | नहीं मिला | याम् | ९. | जिस |
| दैवहतयोः | १. | दुर्भाग्य के मारे | बालाः | ८. | बालक |
| वासः | ५. | निवास | पितृगेहस्थाः | ७. | पिता के घर रहने वाले |
| नौ | २. | हम लोगों को | विन्दन्ते | १२. | पाते हैं (वह हमें नहीं मिला) |
| भवत् | ३. | आपके | लालिताः | १०. | लाड़ प्यार के |
| अन्तिके । | ४. | पास | मुदम् ॥ | ११. | सुख को |

श्लोकार्थ—दुर्भाग्य के मारे हम लोगों को आप के पास निवास नहीं मिला । पिता के घर रहने वाले बालक जिस लाड़प्यार के सुख को पाते हैं, वह हमें नहीं मिला ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**सर्वार्थसम्भवो देहो जनितः पोषितो यतः ।**
**न तयोर्याति निर्वेशं पित्रोर्मर्त्यः शतायुषा ।।५।।**

पदच्छेद— सर्वार्थं सम्भवः देहः जनितः पोषितः यतः ।
न तयोः याति निर्वेशम् पित्रोः मर्त्यः शत आयुषा ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वार्थ | १. सभी प्रयोजनों को | तयोः | ७. उन दोनों |
| सम्भवः | २. सिद्ध करने वाला | याति | १४. चुका सकता है |
| देहः | ३. शरीर | निर्वेशम् | ९. उपकार का बदला |
| जनितः | ५ उत्पन्न एवम् | पित्रोः | ८. माता-पिता के |
| पोषितः | ६. पालित होता है | मर्त्यः | १०. मनुष्य |
| यतः | ४. जिस माता-पिता से | शत | ११. सौ |
| न । | १३. नहीं | आयुषा ।। | १२. वर्षों की आयु में भी |

श्लोकार्थ —सभी प्रयोजनों को सिद्ध करने वाला शरीर जिस माता-पिता से उत्पन्न एवम् पालित होता है। उन दोनों माता-पिता के उपकार का बदला मनुष्य सौ वर्षों की आयु में भी नहीं चुका सकता है ।।

## षष्ठः श्लोकः

**यस्तयोरात्मजः कल्प आत्मना च धनेन च ।**
**वृत्तिं न दद्यात्तं प्रेत्य स्वमांसं खादयन्ति हि ।।६।।**

पदच्छेद— यः तयोः आत्मजः कल्पः आत्मना च धनेन च ।
वृत्तिम् न दद्यात् तम् प्रेत्य स्वमांसम् खादयन्ति हि ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यः | १. जो | वृत्तिम् | ७. सेवा |
| तयोः | ३. माता-पिता की | न दद्यात् | ८. नहीं करता है |
| आत्मजः | २. पुत्र (अपने) | तम् प्रेत्य | ९. उसके मरने पर यमदूत उसे |
| कल्पः | ४. सामर्थ्य रहते भी | स्वमांसम् | ११. अपना मांस |
| आत्मना | ५. शरीर से | खादयन्ति | १२. खिलाते हैं |
| च धनेन च । | ६. और धन से भी | हि ।। | १० निश्चित ही (उसको उसी का) |

श्लोकार्थ – जो पुत्र अपने माता-पिता की सामर्थ्य रहते भी शरीर से और धन से भी सेवा नहीं करता है। उसके मरने पर यमदूत उसे निश्चित ही उसको उसी का अपना मांस खिलाते हैं ।।

## सप्तमः श्लोकः

**मातरं पितरं वृद्धं भार्यां साध्वीं सुतं शिशुम् ।**
**गुरुं विप्रं प्रपन्नं च कल्पोऽबिभ्रच्छ्वसन् मृतः ॥७॥**

पदच्छेद— मातरम् पितरम् वृद्धम् भार्याम् साध्वीम् सुतम् शिशुम् ।
गुरुम् विप्रम् प्रपन्नम् च कल्पः अबिभ्रद् श्वसन् मृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मातरम् | ३. | माता- | गुरुम् | ९. | गुरु |
| पितरम् | ४. | पिता | विप्रम् | १०. | ब्राह्मण |
| वृद्धम् | २. | वृद्ध | प्रपन्नम् च | ११. | और शरणगत का |
| भार्याम् | ६. | पत्नी | कल्पः | १. | जो समर्थ होते हुये भी |
| साध्वीम् | ५. | सती | अबिभ्रद् | १२. | पालन-पोषण नहीं करता है |
| सुतम् | ८. | पुत्र | श्वसन् | १३. | वह जीता हुआ भी |
| शिशुम् । | ७. | अबोध | मृतः ॥ | १४. | मृतक तुल्य है |

श्लोकार्थ—जो पुरुष वृद्ध माता-पिता, सती पत्नी, अबोध पुत्र, गुरु, ब्राह्मण और शरणागत का पालन-पोषण नहीं करता है वह जीता हुआ भी मृतक के तुल्य है ॥

## अष्टमः श्लोकः

**तन्नावकल्पयोः कंसान्नित्यमुद्विग्नचेतसोः ।**
**मोघमेते व्यतिक्रान्ता दिवसा वामनर्चतोः ॥८॥**

पदच्छेद— तत् नौ अकल्पयोः कंसात् नित्यम् उद्विग्न चेतसोः ।
मोघम् एते व्यतिक्रान्ताः दिवसाः वाम् अनर्चतोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत् | १. | इसलिये | मोघम् | ११. | व्यर्थ |
| नौ | ६. | हम दोनों के | एते | ७. | इतने |
| अकल्पयोः | ५. | असमर्थ | व्यतिक्रान्ताः | १२. | बीत गये |
| कंसात् | २. | कंस से | दिवसाः | ८. | दिन |
| नित्यम् उद्विग्न | ३. | नित्य उद्विग्न | वाम् | ९. | आप दोनों को |
| चेतसोः । | ४. | चित्त रहने के कारण | अनर्चतोः ॥ | १०. | सेवा न करते हुये |

श्लोकार्थ—इसलिये कंस से नित्य उद्विग्न चित्त रहने के कारण असमर्थ हम दोनों के इतने दिन आप दोनों की सेवा न करते हुये व्यर्थ बीत गये ॥

## नवमः श्लोकः

तत् क्षन्तुमर्हथस्तात मातर्नौ परतन्त्रयोः ।
अकुर्वतोर्वां शुश्रूषां क्लिष्टयोर्दुर्हृदा भृशम् ॥९॥

पदच्छेद— तत् क्षन्तुम् अर्हथः तात-मातः नौ परतन्त्रयोः ।
अकुर्वतोः वाम् शुश्रूषाम् क्लिष्टयोः दुर्हृदा भृशम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | १. इसलिये | अकुर्वतोः | ८. कर सके |
| क्षन्तुम् | ११. क्षमा | वाम् | ६. हम दोनों आपकी |
| अर्हथः | १२. करने योग्य हैं | शुश्रूषाम् | ७. सेवा |
| तात-मातः | २. हे पिता जी और माता जी | क्लिष्टयोः | ५. क्लेश दिये गये |
| नौ | ९. हम दोनों को आप | दुर्हृदा | ३. दुष्ट हृदय कंस के द्वारा |
| परतन्त्रयोः । | १०. पराधीन होने के कारण | भृशम् ॥ | ४. अत्यन्त |

श्लोकार्थ—इसलिये हे पिता जी और माता जी ! दुष्ट हृदय कंस के द्वारा अत्यन्त क्लेश दिये गये हम आपकी सेवा न कर सके । हम दोनों को आप पराधीन होने के कारण क्षमा करने योग्य हैं ॥

## दशमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति मायामनुष्यस्य हरेर्विश्वात्मनो गिरा ।
मोहितावङ्कमारोप्य परिष्वज्यापतुर्मुदम् ॥१०॥

पदच्छेद— इति माया मनुष्यस्य हरेः विश्वात्मनः गिरा ।
मोहितौ अङ्कम् आरोप्य परिष्वज्य आपतुः मुदम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | मोहितौ | ७. मोहित हो (देवकी-वसुदेव ने उनको) |
| माया | २. माया से | अङ्कम् | ८. गोद में |
| मनुष्यस्य | ३. मनुष्य बने हुये | आरोप्य | ९. उठा लिया और |
| हरेः | ५. भगवान् श्रीकृष्ण की | परिष्वज्य | १०. हृदय से चिपका कर |
| विश्वात्मनः | ४. संसार के आत्मा | आपतुः | १२. प्राप्त किया |
| गिरा । | ६. वाणी से | मुदम् ॥ | ११. हर्ष को |

श्लोकार्थ—इस प्रकार माया से मनुष्य बने हुये संसार को आत्मा भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी से मोहित हो देवकी-वसुदेव ने उनको गोद में उठा लिया और हृदय से चिपका कर हर्ष प्राप्त किया ॥

## एकादशः श्लोकः

सिञ्चन्तावश्रुधाराभिः स्नेहपाशेन चावृतौ ।
न किञ्चिदूचतू राजन् बाष्पकण्ठौ विमोहितौ ॥११॥

पदच्छेद— सिञ्चन्तौ अश्रु धाराभिः स्नेह पाशेन च आवृतौ ।
न किञ्चित् ऊचतुः राजन् बाष्प कण्ठौ विमोहितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सिञ्चन्तौ | ८. | भिगोते हुये | न किञ्चित् | ११. | कुछ नहीं |
| अश्रु | ६. | आँसुओं की | ऊचतुः | १२. | बोल सके |
| धाराभिः | ७. | धारा से (उनको) | राजन् | १. | हे राजन् ! |
| स्नेह | २. | वे स्नेह | बाष्प | ६. | आँसुओं के कारण |
| पाशेन | ३. | पाश से | कण्ठौ | १०. | गला रूंध जाने से |
| आवृतौ । | ४. | बंधकर | विमोहितौ ॥ | ५. | पूर्णतः मोहित होकर |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वे स्नेह पाश से बंधकर पूर्णतः मोहित होकर आँसुओं की धारा से उनको भिगोते हुये आँसुओं के कारण गला रूंध जाने से कुछ नहीं बोल सके ॥

## द्वादशः श्लोकः

एवमाश्वास्य पितरौ भगवान् देवकीसुतः ।
मातामहं तूग्रसेनं यदूनामकरोन्नृपम् ॥१२॥

पदच्छेद— एवम् आश्वास्य पितरौ भगवान् देवकी सुतः ।
मातामहम् तु उग्रसेनम् यदूनाम् अकरोत् नृपम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ४. | इस प्रकार | मातामहम् | ७. | अपने नाना |
| आश्वास्य | ६. | सान्त्वना देकर | तु उग्रसेनम् | ८. | उग्रसेन को |
| पितरौ | ५. | माता-पिता को | यदूनाम् | ६. | यदुवंशियों का |
| भगवान् | ३. | भगवान् ने | अकरोत् | ११. | बना दिया |
| देवकी | १. | देवकी | नृपम् ॥ | १०. | राजा |
| सुतः । | २. | नन्दन | | | |

श्लोकार्थ—देवकी-नन्दन भगवान् ने इस प्रकार माता-पिता को सान्त्वना देकर अपने नाना उग्रसेन को यदुवंशियों का राजा बना दिया ॥

# त्रयोदशः श्लोकः

आह चास्मान् महाराज प्रजाश्चाज्ञप्तुमर्हसि ।
ययातिशापाद् यदुभिर्नासितव्यं नृपासने ॥१३॥

पदच्छेद — आह च अस्मान् महाराज प्रजाः च आज्ञप्तुम् अर्हसि ।
ययाति शापात् यदुभिः न आसितव्यम् नृप आसने ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आह च | १. | और कहा | ययाति | ७. | ययाति के |
| अस्मान् | ३. | आप हम | शापात् | ८. | शाप के कारण |
| महाराज | २. | हे महाराज ! | यदुभिः | ९. | यदुवंशी |
| प्रजाः च | ४. | प्रजाओं को | न आसतव्यम् | १२. | नहीं बैठ सकते हैं |
| आज्ञप्तुम् | ५. | आज्ञा | नृप | १०. | राज |
| अर्हसि । | ६. | दीजिये | आसने ॥ | ११. | सिंहासन पर |

श्लोकार्थ—और कहा हे महाराज ! आप हम प्रजाओं को आज्ञा दीजिये । ययाति के शाप के कारण यदुवंशी राजसिंहासन पर नहीं बैठ सकते हैं ॥

# चतुर्दशः श्लोकः

मयि भृत्य उपासीने भवतो विबुधादयः ।
बलिं हरन्त्यवनताः किमुतान्ये नराधिपाः ॥१४॥

पदच्छेद — मयि भृत्ये उपासीने भवतः विबुध आदयः ।
बलिम् हरन्ति अवनताः किम् उत अन्ये नराधिपाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मयि | २. | मुझ | बलिम् | ८. | उपहार |
| भृत्ये | ३. | दास के रहते | हरन्ति | ९. | देते रहेंगे |
| उपासीने | १. | सेवा में लगे हुये | अवनता | ७. | सिर झुकाकर |
| भवतः | ४. | आपको | किम् उत | १२. | कहना ही क्या है |
| विबुध | ५. | देवता | अन्ये | १०. | दूसरे |
| आदयः । | ६. | आदि | नराधिपाः ॥ | ११. | राजाओं के बारे में तो |

श्लोकार्थ—सेवा में लगे हुये मुझ दास के रहते आपको देवता आदि सिर झुकाकर उपहार देते रहेंगे । दूसरे राजाओं के बारे में तो कहना ही क्या है ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**सर्वान् स्वाञ्ज्ञातिसंबन्धान् दिग्भ्यः कंसभयाकुलान् ।**
**यदुवृष्ण्यन्धकमधुदाशार्हकुकुरादिकान् ॥१५॥**

पदच्छेद— सर्वान् स्वान् ज्ञाति संबन्धान् दिग्भ्यः कंसभय आकुलान् ।
यदु वृष्णि अन्धक मधु दाशार्ह कुकुर आदिकान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वान् | ११. | सभी | यदु | ३. | यदु |
| स्वान् | १०. | अपने | वृष्णि | ४. | वृष्णि |
| ज्ञाति | १२. | सजातीय | अन्धक | ५. | अन्धक |
| संबन्धान् | १३. | सम्बन्धियों को (श्रीकृष्ण ने) | मधु | ६. | मधु |
| दिग्भ्यः | १४. | सभी दिशाओं से (बुला लिया) | दाशार्ह | ७. | दाशार्ह और |
| कंसभय | १. | कंस के भय से | कुकुर | ८. | कुकुर |
| आकुलान् । | २. | व्याकुल | आदिकान् ॥ | ९. | आदि वंशों में उत्पन्न |

श्लोकार्थ—कंस के भय से व्याकुल यदु, वृष्णि, अन्धक, मधु, दाशार्ह और कुकुर आदि वंशों में उत्पन्न अपने सभी सजातीय सम्बन्धियों को श्रीकृष्ण ने सभी दिशाओं से बुला लिया ॥

## षोडशः श्लोकः

**सभाजितान् समाश्वास्य विदेशावासकर्शितान् ।**
**न्यवासयत् स्वगेहेषु वित्तैः संतर्प्य विश्वकृत् ॥१६॥**

पदच्छेद— सभाजितान् समाश्वास्य विदेश आवास कर्शितान् ।
न्यवासयत् स्वगेहेषु वित्तैः संतर्प्य विश्वकृत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सभाजितान् | ५. | सत्कार करके | न्यवासयत् | १०. | बसा दिया |
| समाश्वास्य | ६. | सान्त्वना दी और | स्वगेहेषु | ७. | अपने-अपने घरों में |
| विदेश | २. | परदेश में | वित्तैः | ८. | द्रव्यों से |
| आवास | ३. | निवास करते हुये | संतर्प्य | ९. | सन्तुष्ट करके |
| कर्शितान् । | ४. | दुःखी उन लोगों का | विश्वकृत् ॥ | १. | संसार के रचयिता भगवान् ने |

श्लोकार्थ—संसार के रचयिता भगवान् श्रीकृष्ण ने परदेश में निवास करने वाले दुःखी उन लोगों का सत्कार करके सान्त्वना दी और अपने-अपने घरों में द्रव्यों से सन्तुष्ट करके बसा दिया ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**कृष्णसंकर्षणभुजैर्गुप्ता लब्धमनोरथाः ।**
**गृहेषु रेमिरे सिद्धाः कृष्णरामगतज्वराः ॥१७॥**

पदच्छेद— कृष्ण संकर्षण भुजैः गुप्ताः लब्ध मनोरथाः ।
गृहेषु रेमिरे सिद्धाः कृष्ण राम गतज्वराः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण | १. | श्रीकृष्ण और | गृहेषु | ११. | अपने-अपने घरों में |
| संकर्षण | २. | बलराम की | रेमिरे | १२. | विहार करने लगे |
| भुजैः | ३. | भुजाओं से | सिद्धाः | ९. | कृतार्थ और |
| गुप्ताः | ४. | सुरक्षित (और) | कृष्ण | ७. | कृष्ण और |
| लब्ध | ५. | सफल | राम | ८. | बलराम के कारण |
| मनोरथाः । | ६. | मनोरथ | गतज्वराः ॥ | १०. | व्यथा रहित होकर |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण और बलराम की भुजाओं से सुरक्षित, सफल मनोरथ, कृष्ण और बलराम के कारण कृतार्थ और व्यथा रहित होकर अपने-अपने घरों में विहार करने लगे ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**वीक्षन्तोऽहरहः प्रीता मुकुन्दवदनाम्बुजम् ।**
**नित्यं प्रमुदितं श्रीमत् सदयस्मितवीक्षणम् ॥१८॥**

पदच्छेद— वीक्षन्तः अहरहः प्रीताः मुकुन्द वदन अम्बुजम् ।
नित्यम् प्रमुदितम् श्रीमत् सदय स्मित वीक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वीक्षन्तः | ११. | देखते हुये यदुवंशी | नित्यम् | १. | नित्य |
| अहरहः | १०. | प्रतिदिन | प्रमुदितम् | २. | प्रमुदित |
| प्रीताः | १२. | प्रसन्न होते थे | श्रीमत् | ३. | शोभा सम्पन्न |
| मुकुन्द | ७. | श्रीकृष्ण के | सदय | ४. | दया सहित |
| वदन | ८. | मुख | स्मित | ५. | हास और |
| अम्बुजम् । | ९. | कमल को | वीक्षणम् ॥ | ६. | चितवन से युक्त |

श्लोकार्थ—नित्य प्रमुदित, शोभा सम्पन्न, दया सहित, हास और चितवन से युक्त श्रीकृष्ण के मुख कमल को देखते हुये यदुवंशी प्रतिदिन प्रसन्न होते थे ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

तत्र प्रवयसोऽप्यासन् युवानोऽतिबलौजसः ।
पिबन्तोऽक्षैर्मुकुन्दस्य मुखाम्बुजसुधां मुहुः ॥१९॥

पदच्छेद— तत्र प्रवयसः अपि आसन् युवानः अतिबल ओजसः ।
पिबन्तः अक्षैः मुकुन्दस्य मुख अम्बुज सुधाम् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तत्र | १. | वहाँ पर (मथुरा में) | पिबन्तः | ८. | पीते हुये |
| प्रवयसः | ९. | वृद्ध पुरुष | अक्षैः | ७. | नेत्रों से |
| अपि | १०. | भी | मुकुन्दस्य | २. | श्रीकृष्ण के |
| आसन् | १४. | थे | मुख | ३. | मुख |
| युवानः | ११. | युवक जैसे | अम्बुज | ४. | कमल के |
| अतिबल | १२. | अत्यन्त बल और | सुधाम् | ५. | अमृततुल्य (मकरन्द रस) का |
| ओजसः । | १३. | उत्साह से युक्त | मुहुः ॥ | ६. | बार-बार |

श्लोकार्थ—वहाँ पर मथुरा में श्रीकृष्ण के मुख कमल के अमृत तुल्य मकरन्द रस को बार-बार नेत्रों से पीते हुये वृद्ध पुरुष भी युवक जैसे अत्यन्त बल और उत्साह से युक्त थे ॥

## विंशः श्लोकः

अथ नन्दं समासाद्य भगवान् देवकीसुतः ।
संकर्षणश्च राजेन्द्र परिष्वज्येदमूचतुः ॥२०॥

पदच्छेद— अथ नन्दम् समासाद्य भगवान् देवकी सुतः ।
संकर्षणः च राजेन्द्र परिष्वज्य इदम् ऊचतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | २. | अब | संकर्षणः | ७. | बलराम ने |
| नन्दम् | ८. | नन्द के | च | ६. | और |
| समासाद्य | ९. | पास जाकर | राजेन्द्र | १. | हे परीक्षित् ! |
| भगवान् | ३. | भगवान् | परिष्वज्य | १०. | गले लगने के बाद |
| देवकी | ४. | देवकी | इदम् | ११. | यह |
| सुतः । | ५. | नन्दन | ऊचतुः ॥ | १२. | कहा |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अब भगवान् देवकीनन्दन और बलराम ने नन्द के पास जाकर गले लगने के बाद यह कहा ॥

## एकविंशः श्लोकः

**पितर्युवाभ्यां स्निग्धाभ्यां पोषितौ लालितौ भृशम् ।**
**पित्रोरभ्यधिका प्रीतिरात्मजेष्वात्मनोऽपि हि ॥२१॥**

पदच्छेद— पितः युवाभ्याम् स्निग्धाभ्याम् पोषितौ लालितौ भृशम् ।
पित्रोः अभ्यधिका प्रीतिः आत्मजेषु आत्मनः अपि हि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पितः | १. | पिता जी | पित्रोः | ८. | पिता-माता को |
| युवाभ्याम् | ३. | आप दोनों ने | अभ्यधिका | ११. | अधिक |
| स्निग्धाभ्याम् | २. | स्नेही | प्रीतिः | १२. | स्नेह रहता है |
| पोषितौ | ६. | पालन किया है | आत्मजेषु | ९. | सन्तान पर |
| लालितौ | ५. | लालन | आत्मनः अपि | १०. | अपने शरीर से भी |
| भृशम् । | ४. | हमारा बहुत | हि ॥ | ७. | निश्चित ही |

श्लोकार्थ—पिता जी ! स्नेही आप दोनों ने हमारा बहुत लालन-पालन किया है । निश्चित ही पिता-माता को सन्तान पर अपने शरीर से भी अधिक स्नेह रहता है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**स पिता सा च जननी यौ पुष्णीतां स्वपुत्रवत् ।**
**शिशून् बन्धुभिरुत्सृष्टानकल्पैः पोषरक्षणे ॥२२॥**

पदच्छेद— स पिता सा च जननी यौ पुष्णीताम् स्व पुत्रवत् ।
शिशून् बन्धुभिः उत्सृष्टान् अकल्पैः पोष रक्षणे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १०. | वही (उसका) | शिशून् | ६. | बालकों की |
| पिता | ११. | पिता है | बन्धुभिः | ४. | स्वजनों के द्वारा |
| सा च | १२. | वही (उसकी) | उत्सृष्टान् | ५. | त्यागे गये |
| जननी | १३. | माता है | अकल्पैः | ३. | असमर्थ |
| यौ | ७. | जो | पोष | १. | पोषण और |
| पुष्णीताम् | ९. | पालते हैं | रक्षणे | २. | रक्षा करने में |
| स्व पुत्रवत् । | ८. | अपने पुत्र के समान | | | |

श्लोकार्थ—पोषण और रक्षा करने में असमर्थ स्वजनों के द्वारा त्यागे गये बालकों को जो अपने पुत्र के समान पालते हैं, वही उसका पिता है, वही उसकी माता है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**यात यूयं व्रजं तात वयं च स्नेहदुःखितान् ।**
**ज्ञातीन् वो द्रष्टुमेष्यामो विधाय सुहृदां सुखम् ॥२३॥**

पदच्छेद— यात यूयम् व्रजम् तात वयम् च स्नेह दुःखितान् ।
ज्ञातीन् वः द्रष्टुम् एष्यामः विधाय सुहृदाम् सुखम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यात | ४. | जाइये | ज्ञातीन् | १२. | बन्धुओं से |
| यूयम् | २. | आप लोग | वः | ११. | आप |
| व्रजम् | ३. | व्रज में | द्रष्टुम् | १३. | मिलने के लिये |
| तात | १. | हे पिता जी ! | एष्यामः | १४. | आवेंगे |
| वयम् च | ५. | और हम | विधाय | ८. | करके |
| स्नेह | ९. | स्नेह वश | सुहृदम् | ६. | यहाँ (सम्बन्धियों) को |
| दुःखिताम् । | १०. | दुःखी | सुखम् ॥ | ७. | सुखी |

श्लोकार्थ—हे पिता जी ! आप लोग व्रज में जाइये और हम यहाँ के सम्बन्धियों को सुखी करके स्नेह वश दुःखी आप लोगों से मिलने आवेंगे ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**एवं सान्त्वय्य भगवान् नन्दं सव्रजमच्युतः ।**
**वासोऽलङ्कारकुप्याद्यैरर्हयामास सादरम् ॥२४॥**

पदच्छेद— एवम् सान्त्वय्य भगवान् नन्दम् सव्रजम् अच्युतः ।
वासः अलङ्कार कुप्य आद्यैः अर्हयामास सादरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | वासः | ८ | वस्त्र |
| सान्त्वय्य | ६. | सान्त्वना देकर | अलङ्कार | ९. | आभूषण और |
| भगवान् | २. | भगवान् | कुप्य | १०. | अनेक धातुओं के बने |
| नन्दम् | ५. | नन्द को | आद्यैः | ११. | बरतन आदि देकर |
| सव्रजम् | ४. | व्रजवासियों सहित | अर्हयामास | १२. | सत्कार किया |
| अच्युतः । | ३. | श्रीकृष्ण ने | सादरम् ॥ | ७. | आदर के साथ |

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने व्रजवासियों सहित नन्द को सान्त्वना देकर आदर के साथ वस्त्र आभूषण और अनेक धातुओं के बने बरतन देकर सत्कार किया ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**इत्युक्तस्तौ परिष्वज्य नन्दः प्रणयविह्वलः ।**
**पूरयन्नश्रुभिर्नेत्रे सह गोपैर्व्रजं ययौ ॥२५॥**

पदच्छेद— इति उक्तः तौ परिष्वज्य नन्दः प्रणय विह्वलः ।
पूरयन् अश्रुभिः नेत्रे सह गोपैः व्रजम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | पूरयन् | १०. | भर कर |
| उक्तः | २. | कहे जाने पर | अश्रुभिः | ९. | आँसू |
| तौ | ६. | उन दोनों भाइयों को | नेत्रे | ८. | नेत्रों में |
| परिष्वज्य | ७. | गले लगा कर (और) | सह | १२. | साथ |
| नन्दः | ३. | नन्द ने | गोपैः | ११. | गोपों के |
| प्रणय | ४. | प्रेम से | व्रजम् | १३. | व्रज में |
| विह्वलः । | ५. | अधीर होकर | ययौ ॥ | १४. | चले गये |

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहे जाने पर नन्द ने प्रेम से अधीर होकर उन दोनों भाइयों को गले लगा कर और नेत्रों में आंसू भर कर गोपों के साथ व्रज में चले गये ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**अथ शूरसुतो राजन् पुत्रयोः समकारयत् ।**
**पुरोधसा ब्राह्मणैश्च यथावद् द्विजसंस्कृतिम् ॥२६॥**

पदच्छेद— अथ शूरसुतः राजन् पुत्रयोः समकारयत् ।
पुरोधसा ब्राह्मणैः च यथावत् द्विज संस्कृतिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | २. | इसके बाद | पुरोधसा | ४. | पुरोहित (गर्गाचार्य) |
| शूरसुतः | ३. | वसुदेव जी ने | ब्राह्मणैः च | ५. | और ब्राह्मणों द्वारा |
| राजन् | १. | हे राजन् ! | यथावत् | ७. | विधि पूर्वक |
| पुत्रयोः | ६. | दोनों पुत्रों का | द्विजः | ८. | द्विज जनोचित |
| समकारयत् । | १०. | करवाया | संस्कृतिम् ॥ | ९. | यज्ञोपवीत संस्कार |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इसके बाद वसुदेव जी ने पुरोहित गर्गाचार्य और ब्राह्मणों के द्वारा दोनों पुत्रों का विधि पूर्वक द्विज जनोचित यज्ञोपवीत संस्कार करवाया ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**तेभ्योऽदाद् दक्षिणा गावो रुक्ममालाः स्वलंकृताः ।**
**स्वलंकृतेभ्यः संपूज्य सवत्साः क्षौममालिनीः ॥२७॥**

पदच्छेद— तेभ्यः अदात् दक्षिणाः गावः रुक्म मालाः स्वलंकृताः ।
सु अलंकृतेभ्यः संपूज्य सवत्साः क्षौम मालिनीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेभ्यः | १०. | उन ब्राह्मणों को | सु अलंकृतेभ्यः | ६. | भली भांति अलंकृत किये गये |
| अदात् | ११. | दी | संपूज्य | ९. | पूजन के बाद |
| दक्षिणाः | ८. | दक्षिणायें | सवत्साः | ५. | बछड़े सहित |
| गावः | ७. | गाय तथा | क्षौम | ३. | रेशमी वस्त्रों और |
| रुक्म मालाः | १. | सोने की माला पहने हुये | मालिनीः ॥ | ४. | मालाओं से विभूषित |
| स्वलंकृताः । | २. | सुसज्जित | | | |

श्लोकार्थ—सोने की माला पहने हुये सुसज्जित, रेशमी वस्त्रों और मालाओं से विभूषित, बछड़े सहित, भली-भाँति अलंकृत किये गये गाय तथा दक्षिणायें पूजन के बाद उन ब्राह्मणों को दीं ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**याः कृष्णरामजन्मर्क्षे मनोदत्ता महामतिः ।**
**ताश्चाददादनुस्मृत्य कंसेनाधर्मतो हृताः ॥२८॥**

पदच्छेद— याः कृष्ण राम जन्म ऋक्षे, मनः दत्ताः महामतिः ।
ताः च अदात् अनुस्मृत्य कंसेन अधर्मतः हृताः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| याः | ६. | जो गौएँ | ताः | ११. | उनका |
| कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण और | च | १३. | फिर से (ब्राह्मणों को) |
| राम | ३. | बलराम के | अदात् | १४. | दे दिया |
| जन्म ऋक्षे | ४. | जन्म नक्षत्र में | अनुस्मृत्य | १२. | स्मरण करके |
| मनः | ५ | मन से संकल्प करके | कंसेन | ८. | जिन्हें कंस ने |
| दत्ताः | ७. | दी थीं (और) | अधर्मतः | ९. | अन्याय से |
| महामतिः । | १ | महाबुद्धिमान् वसुदेव जी ने | हृताः ॥ | १०. | छीन लिया था |

श्लोकार्थ—महाबुद्धिमान् वसुदेव जी ने श्रीकृष्ण और बलराम के जन्म नक्षत्र में मन से संकल्प करके जो गौएं दीं थीं और जिन्हें कंस ने अन्याय से छीन लिया था। उनका फिर से स्मरण करके ब्राह्मणों को दे दिया।

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**ततश्च लब्धसंस्कारौ द्विजत्वं प्राप्य सुव्रतौ ।**
**गर्गाद् यदुकुलाचार्याद् गायत्रं व्रतमास्थितौ ॥२९॥**

पदच्छेद— ततः च लब्ध संस्कारौ द्विजत्वम् प्राप्य सुव्रतौ ।
गर्गाद् यदुकुल आचार्यात् गायत्रम् व्रतम् आस्थितौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ततः च | १. तब | गर्गात् | ४. गर्ग जी से |
| लब्ध | ६. प्राप्त करके | यदुकुल | २. यदुवंश के |
| संस्कारौ | ५. संस्कार | आचार्यात् | ३. आचार्य |
| द्विजत्वम् | ७. श्रीकृष्ण और बलराम ने (द्विजत्व) | गायत्रम् | ९. गायत्री मंत्र |
| प्राप्य | ८. करके | व्रतम् | १०. व्रत, (वेदाध्ययन में) |
| सुव्रतौ । | १२. उत्तम व्रतधारी हो गये | आस्थितौ ॥ | ११. स्थित होकर |

श्लोकार्थ—तब यदुवंश के आचार्य गर्ग जी से संस्कार प्राप्त करके श्रीकृष्ण और बलराम जी ने द्विजत्व पाकर के गायत्री मंत्र, व्रत, वेदाध्ययन में स्थित होकर उत्तम व्रतधारी हो गये ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**प्रभवौ सर्वविद्यानां सर्वज्ञौ जगदीश्वरौ ।**
**नान्यसिद्धामलज्ञानं गूहमानौ नरेहितैः ॥३०॥**

पदच्छेद— प्रभवौ सर्व विद्यानाम् सर्वज्ञौ जगत् ईश्वरौ ।
न अन्य सिद्ध अमल ज्ञानम् गूह मानौ नरेहितैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रभवौ | ३. उत्पत्ति स्थान | न अन्य | ७. स्वतः |
| सर्व | १. समस्त | सिद्ध | ८. सिद्ध |
| विद्यानाम् | २. विद्याओं के | अमल | ९ निर्मल |
| सर्वज्ञौ | ४. सर्वज्ञ | ज्ञानम् | १०. ज्ञान को |
| जगत् | ५. संसार के | गूहमानौ | १२. छिपाये हुये थे |
| ईश्वरौ । | ६. प्रभु (दोनों भाई) | नरेहितैः ॥ | ११. मानव लीलाओं से |

श्लोकार्थ—समस्त विद्याओं के उत्पत्ति स्थान, सर्वज्ञ, संसार के प्रभु, दोनों भाई स्वतः सिद्ध, निर्मल ज्ञान को मानव लीलाओं से छिपाये हुये थे ॥

# एकत्रिंशः श्लोकः

**अथो गुरुकुले वासमिच्छन्तावुपजग्मतुः ।**
**काश्यं सान्दीपनिं नाम ह्यवन्तीपुरवासिनम् ॥३१॥**

पदच्छेद— अथो गुरुकुले वासम् इच्छन्तौ उपजग्मतुः ।
काश्यम् सान्दीपनिम् नाम अवन्तीपुर वासिनम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथो | १. इसके बाद | काश्यम् | ७. काश्यपगोत्रीय |
| गुरुकुले | २. गुरुकुल में | सान्दीपनिम् | ८. सान्दीपनि |
| वासम् | ३. निवास | नाम | ६. नामक गुरु के |
| इच्छन्तौ | ४. चाहने वाले (दोनों भाई) | अवन्तीपुर | ५. अवन्तीपुर (उज्जैन के) |
| उपजग्मतुः । | १०. पास चले गये | वासिनम् ॥ | ६. रहने वाले |

श्लोकार्थ—इसके बाद गुरुकुल में निवास चाहने वाले दोनों भाई अवन्तीपुर उज्जैन के रहने वाले काश्य गोत्रीय सान्दीपनि नामक गुरु के पास चले गये ॥

# द्वात्रिंशः श्लोकः

**यथोपसाद्य तौ दान्तौ गुरौ वृत्तिमनिन्दिताम् ।**
**ग्राहयन्तावुपेतौ स्म भक्त्या देवमिवाहतौ ॥३२॥**

पदच्छेद— यथा उपसाद्य तौ दान्तौ गुरौ वृत्तिम् अनिन्दिताम् ।
ग्राहयन्तौ उपेतौ स्म भक्त्या देवम् इव आहृतौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यथा | ११. विधि पूर्वक | ग्राहयन्तौ | ४. करते हुये |
| उपसाद्य | १०. पास रह कर | उपेतौ | ७. सम्पन्न |
| तौ | ६. वे दोनों भाई | स्म | १४. सेवा करने लगे |
| दान्तौ | ५. सुसंयत | भक्त्या | ६. भक्ति से |
| गुरौ | १. गुरु के प्रति | देवम् | १२. देवता के |
| वृत्तिम् | ३. आचरण | इव | १३. समान गुरु की |
| अनिन्दिताम् । | २. प्रशंसनीय | आहृतौ ॥ | ८. गुरु से आदर पाने वाले |

श्लोकार्थ—गुरु के प्रति प्रशंसनीय आचरण करते हुये सुसंयत, भक्ति से सम्पन्न, गुरु से आदर पाने वाले वे दोनों भाई पास रहकर विधि पूर्वक देवता के समान गुरु की सेवा करने लगे ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तयोर्द्विजवरस्तुष्टः शुद्धभावानुवृत्तिभिः ।**
**प्रोवाच वेदानखिलान् साङ्गोपनिषदो गुरुः ॥३३॥**

पदच्छेद— तयोः द्विजवरः तुष्टः शुद्ध भाव अनुवृत्तिभिः ।
प्रोवाच वेदान् अखिलान् साङ्ग उपनिषदः गुरुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तयोः | १. उनके | प्रोवाच | १२. | शिक्षा दी |
| द्विजवर | ६. श्रेष्ठ ब्राह्मण | वेदान् | ११. | वेदों की |
| तुष्टः | ५. सन्तुष्ट | अखिलान् | १०. | सम्पूर्ण |
| शुद्ध | २. शुद्ध | साङ्ग | ८. | छहों अंग और |
| भाव | ३. भाव से युक्त | उपनिषद् | ९. | उपनिषदों के सहित |
| अनुवृत्तिभिः । | ४. सेवा से | गुरुः ॥ | ७. | गुरु ने |

श्लोकार्थ—उनके शुद्ध भाव से युक्त, सेवा से सन्तुष्ट, श्रेष्ठ ब्रह्मण गुरु ने छहों अंग और उपनिषदों के सहित सम्पूर्ण वेदों की शिक्षा दी ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**सरहस्यं धनुर्वेदं धर्मान् न्यायपथांस्तथा ।**
**तथा चान्वीक्षिकीं विद्यां राजनीतिं च षड्विधाम् ॥३४॥**

पदच्छेद— सरहस्यम् धनुर्वेदं धर्मान् न्याय पथान् तथा ।
तथा च आन्वीक्षिकीम् विद्याम् राजनीतिम् च षड्विधाम् ॥

शब्दार्थ —

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सरहस्यम् | १. मंत्र और देवताओं के साथ | च तथा | ६. | और |
| धनुर्वेद | २. धनुर्वेद | आन्वीक्षिकीम् | ७. | वेदों का तात्पर्य बोधक शास्त्र |
| धर्मान् | ३. धर्मशास्त्र | विद्याम् | ८. | तर्क विद्या (न्याय शास्त्र) |
| न्याय पथान् | ५. मीमांसादि | राजनीतिम् | १०. | राजनीति की शिक्षा दी |
| तथा । | ४. तथा | चषड्विधाम् । | ९. | एवं सन्धि विग्रह आदि |

श्लोकार्थ—मंत्र और देवताओं के सहित धनुर्वेद, धर्मशास्त्र तथा मीमांसादि और वेदों का तात्पर्य बोधक शास्त्र, तर्क विद्या (न्याय शास्त्र) एवं सन्धि, विग्रह आदि राजनीति की शिक्षा दी ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**सर्वं नरवरश्रेष्ठौ सर्वविद्याप्रवर्तकौ ।**
**सकृन्निगदमात्रेण तौ संजगृहतुर्नृप ॥३५॥**

पदच्छेद— सर्वम् नरवर श्रेष्ठौ सर्व विद्या प्रवर्तकौ ।
सकृत् निगद मात्रेण तौ संजगृहतुः नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वम् | ११. | सब विद्याओं को | सकृत् | ८. | एक बार |
| नरवर | २. | श्रेष्ठ मनुष्यों में भी | निगद | ९. | कहने |
| श्रेष्ठौ | ३. | उत्तम | मात्रेण | १०. | मात्र से ही |
| सर्व | ४. | सभी | तौ | ७. | उन दोनों भाइयों ने |
| विद्या | ५. | विद्याओं के | संजगृहतुः | १२. | ग्रहण कर लिया |
| प्रवर्तकौ । | ६. | बनाने वाले | नृप ॥ | १. | हे राजन् ! |

श्लोकार्थ—हे ! राजन् ! श्रेष्ठ मनुष्यों में भी उत्तम सभी विद्याओं के बनाने वाले उन दोनों भाइयों ने एक बार कहने मात्र से ही सब विद्याओं को ग्रहण कर लिया ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**अहोरात्रैश्चतुःषष्ट्या संयत्तौ तावतीः कलाः ।**
**गुरुदक्षिणयाऽऽचार्यं छन्दयामासतुर्नृप ॥३६॥**

पदच्छेद— अहोरात्रैः चतुःषट्या संयत्तौ तावतीः कलाः ।
गुरु दक्षिणया आचार्यं छन्दयामासतुः नृप ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहोरात्रैः | ३. | दिन रात में ही | गुरु दक्षिणया | ७. | तब गुरु दक्षिणा लेने के लिये |
| चतुःषष्ट्या | २. | चौंसठ | आचार्यं | ८. | आचार्य से |
| संयत्तौ | ४. | संयमी दोनों भाइयों ने | छन्दयामासतुः | ९. | प्रार्थना करने लगे |
| तावतीः | ५. | उतनी | नृप ॥ | १. | हे राजन् ! |
| कलाः । | ६. | कलायें सीख लीं | | | |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! चौंसठ दिन रात में ही संयमी दोनों भाइयों ने उतनी कलायें सीख लीं । तब गुरु दक्षिणा लेने के लिये आचार्य से प्रार्थना करने लगे ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**द्विजस्तयोस्तं महिमानमद्भुतं संलक्ष्य राजन्नतिमानुषीं मतिम् ।**
**सम्मन्त्र्य पत्न्या स महार्णवे मृतं बालं प्रभासे वरयाम्बभूव ह ॥३७॥**

पदच्छेद— द्विजःतयोःतम् महिमानम् अद्भुतम् संलक्ष्य राजन् अतिमानुषीम् मतिम् ।
सम्मन्त्र्य पत्न्या सः महार्णवे मृतम् बालम् प्रभासे वरयाम्बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्विजःतयोःतम् | ३. ब्राह्मण ने उन दोनों की | सम्मन्त्र्य | १०. सलाह करके |
| महिमानम् | ४. महिमा और | पत्न्या | ९. पत्नी से |
| अद्भुतम् | ५. अद्भुत | सः | २. उस |
| संलक्ष्य | ८. जान कर | महार्णवे मृतम् | १२. महा समुद्र में मरे हुये |
| राजन् | १. हे राजन् ! | बालम् | १३. बालक को (लाने की) |
| अतिमानुषीम् | ६. अलौकिक | प्रभासे | ११. प्रभास क्षेत्र में |
| मतिम् । | ७. बुद्धि | वरयाम्बभूव ह ॥ | १४. गुरु ने दक्षिणा माँगी |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उस ब्राह्मण ने उन दोनों की अद्भुत और अलौकिक बुद्धि जान कर पत्नी से सलाह करके प्रभास क्षेत्र में महासमुद्र में मरे हुये बालक को लाने की गुरु दक्षिणा माँगी ॥

## अष्टत्रिंशः श्लोकः

**तथेत्यथारुह्य महारथौ रथं प्रभासमासाद्य दुरन्तविक्रमौ ।**
**वेलामुपव्रज्य निषीदतुः क्षणं सिन्धुर्विदित्वार्हणमाहरत्तयोः ॥३८॥**

पदच्छेद— तथा इति अथ आरुह्य महारथौ रथम् प्रभासम् आसाद्य दुरन्त विक्रमौ ।
वेलाम् उपव्रज्य निषीदतुः क्षणम् सिन्धुः विदित्वा अर्हणम् अहरत्तयोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तथा इति | २. अच्छा यह कह कर | वेलाम् उपव्रज्य | ८. समुद्र तट पर जाकर |
| अथ | १. तब | निषीदतुः | १०. बैठे रहे |
| आरुह्य | ५. चढ़ कर | क्षणम् | ९. कुछ क्षण |
| महारथौ रथम् | ४. महारथी रथ पर | सिन्धुः | ११. समुद्र यह |
| प्रभासम् | ६. प्रभास क्षेत्र में | विदित्वा | १२. जान कर |
| आसाद्य | ७. पहुँच कर | अर्हणम् | १३. पूजन सामग्री लेकर |
| दुरन्तविक्रमौ । | ३. अनन्त पराक्रमी | आहरत्तयोः ॥ | १४. उनके पास आया |

श्लोकार्थ—तब अच्छा यह कह कर अनन्त पराक्रमी महारथी रथ पर चढ़ कर प्रभास क्षेत्र में पहुँच कर समुद्र तट पर जाकर कुछ क्षण बैठे रहे । समुद्र यह जान कर पूजन सामग्री लेकर उनके पास आया ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**तमाह भगवानाशु गुरुपुत्रः प्रदीयताम् ।**
**योऽसाविह त्वया ग्रस्तो बालको महतोर्मिणा ॥३९॥**

पदच्छेद— तम् आह भगवान् आशु गुरु पुत्रः प्रदीयताम् ।
यः असौ इह त्वया ग्रस्तः बालकः महता ऊर्मिणा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १. | उससे | यः | ७. | जिस |
| आह | ३. | कहा | असौ | ९. | गुरु पुत्र को |
| भगवान् | २. | भगवान् ने | इह त्वया | १०. | यहाँ तुम |
| आशु | ४. | शीघ्र (हमें) | ग्रस्तः | १३. | बहा ले गये थे |
| गुरु पुत्रः | ५. | गुरु के पुत्र | बालकः | ८. | बालक |
| प्रदीयताम् । | ६. | दे दो | महता | ११. | अपनी महान् |
| | | | ऊर्मिणा ॥ | १२. | तरंग में |

श्लोकार्थ—उससे भगवान् ने कहा शीघ्र हमें गुरु पुत्र दे दो । जिस बालक गुरु पुत्र को यहाँ तुम अपनी महान् तरंग में बहा ले गये थे ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**समुद्र उवाच—नैवाहार्षमहं देव दैत्यः पञ्चजनो महान् ।**
**अन्तर्जलचरः कृष्ण शङ्खरूपधरोऽसुरः ॥४०॥**

पदच्छेद— न एव अहार्षम् अहम् देव दैत्यः पञ्चजनः महान् ।
अन्तः जलचरः कृष्ण शङ्ख रूपधरः असुरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न एव | ४. | नहीं | अन्तः | ६. | भीतर |
| अहार्षम् | ५. | लिया है | जलचरः | ७. | जल में विचरण करने वाला |
| अहम् | ३. | मैंने | कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण |
| देव | १. | हे महाराज ! | शङ्ख | १२. | शङ्ख का |
| दैत्यः | १०. | दैत्य जाति का | रूपधरः | १३. | रूप धारण करके रहता है |
| पञ्चजनः | ८. | पञ्चजन नामक | असुरः ॥ | ११. | असुर |
| महान् । | ९. | एक बड़ा भारी | | | |

श्लोकार्थ—हे महाराज ! श्रीकृष्ण ! मैंने नहीं लिया है । भीतर जल में विचरण करने वाला पञ्चजन नामक एक बड़ा भारी दैत्य जाति का असुर शङ्ख का रूप धारण करके रहता है ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**आस्ते तेनाहृतो नूनं तच्छ्रुत्वा सत्वरं प्रभुः ।**
**जलमाविश्य तं हत्वा नापश्यदुदरेऽर्भकम् ॥४१॥**

पदच्छेद— आस्ते तेन आहृतः नूनम् तत् श्रुत्वा सत्वरम् प्रभुः ।
जलम् आविश्य तम् हत्वा न अपश्यत् उदरे अर्भकम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आस्ते | ४. है | जलम् | ८. जल में |
| तेन | २. उसी ने | आविश्य | ९. घुसकर (और) |
| आहृतः | ३. अपहरण किया | तम् | १०. उसे |
| नूनम् | १. निश्चित रूप से | हत्वा | ११. मारकर |
| तत् श्रुत्वा | ५. यह सुनकर | न अपश्यत् | १४. नहीं देखा। |
| सत्वरम् | ७. शीघ्र ही | उदरे | १२. उसके पेट में |
| प्रभुः । | ६. भगवान् श्रीकृष्ण ने | अर्भकम् ॥ | १३. बालक को |

श्लोकार्थ—निश्चित रूप से उसी ने अपहरण किया है। यह सुनकर भगवान् श्रीकृष्ण ने जल मे घुसकर और उसे मार कर उसके पेट में बालक को नहीं देखा ॥

## द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**तदङ्गप्रभवं शङ्खमादाय रथमागमत् ।**
**ततः संयमनीं नाम यमस्य दयितां पुरीम् ॥४२॥**

पदच्छेद— तत् अङ्ग प्रभवम् शङ्खम् आदाय रथम् आगमत् ।
ततः सयमनीं नाम यमस्य दयिताम् पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तत् | १. उसके | ततः | ७. वहाँ से |
| अङ्ग प्रभवम् | २. अङ्गों से उत्पन्न | संयमनीम् | ८. संयमनी |
| शङ्खम् | ३. शङ्ख को | नाम | ९. नामक |
| आदाय | ४. लेकर | यमस्य | १०. यम की |
| रथम् | ५. रथ पर | दयिताम् | ११. प्रिय |
| आगमत् । | ६. आ गये | पुरीम् । | १२. पुरी में गये |

श्लोकार्थ—उसके अङ्गों से उत्पन्न शङ्ख को लेकर रथ पर आ गये। वहाँ से संयमनी नामक यम की प्रिय पुरी में गये ॥

## त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

गत्वा जनार्दनः शङ्खं प्रदध्मौ सहलायुधः ।
शङ्खनिर्ह्रादमाकर्ण्य प्रजासंयमनो यमः ॥४३॥

पदच्छेद— गत्वा जनार्दनः शङ्खं प्रदध्मौ सहलायुधः ।
शङ्ख निर्ह्रादम् आकर्ण्य प्रजा संयमनो यमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गत्वा | २. | जाकर | शङ्खं | ६. | शङ्ख का |
| जनार्दनः | ३. | श्रीकृष्ण ने | निर्ह्रादम् | ७. | शब्द |
| शङ्खं | ४. | शङ्ख | आकर्ण्य | ८. | सुनकर |
| प्रदध्मौ | ५. | बजाया | प्रजा | ९. | प्रजा का |
| सहलायुधः । | १. | बलराम जी के साथ | संयमनः यमः ॥ | १०. | शासन करने वाले यमराज आये |

श्लोकार्थ—तब बलराम जी के साथ जाकर श्रीकृष्ण ने शङ्ख बजाया । शङ्ख का शब्द सुनकर प्रजा का शासन करने वाले यमराज आये ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तयोः सपर्यां महतीं चक्रे भक्त्युपबृंहिताम् ।
उवाचावनतः कृष्णं सर्वभूताशयालयम् ।
लीला मनुष्य हे विष्णो युवयोः करवाम किम् ॥४४॥

पदच्छेद— तयोः सपर्याम् महतीम् चक्रे भक्त्या उपबृंहिताम् ।
उवाच अवनतः कृष्णम् सर्वभूत आशय आलयम् ।
लीला मनुष्य हे विष्णो युवयोः करवाम किम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | १. | उनका | सर्वभूतः | ७. | सभी प्राणियों के |
| सपर्याम् | ४. | पूजा | आशयः | ८. | हृदय में |
| महतीम् | ३. | बड़ी | आलयम् | ९. | विराजमान |
| चक्रे | ५. | की और | लीला मनुष्य | १२. | लीला से मनुष्य बने हुये |
| भक्ति उपबृंहितम् | २. | भक्ति से भरकर विधिपूर्वक | हे विष्णो | १३. | हे परमेश्वर ! |
| उवाच | ११. | कहा | युवयोः | १४. | आप दोनों की |
| अवनतः | ६. | विनम्र होकर | करवाम | १६. | करूँ |
| कृष्णम् । | १०. | श्रीकृष्ण से | किम् | १५. | क्या सेवा |

श्लोकार्थ—उनकी भक्ति से भरकर विधिपूर्वक बड़ी पूजा की और विनम्र होकर सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान श्रीकृष्ण से कहा-लीला से मनुष्य बने हुये हे परमेश्वर ! आप दोनों की क्या सेवा करूँ ॥

# पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**श्रीभगवानुवाच—गुरुपुत्रमिहानीतं निजकर्मनिबन्धनम् ।**
**आनयस्व महाराज मच्छासनपुरस्कृतः ॥४५॥**

पदच्छेद— गुरु पुत्रम् इह आनीतम् निजकर्म निबन्धनम् ।
आनयस्व महाराज मत् शासन पुरस्कृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | ६. | मेरे गुरु के | आनयस्व | ११. | ले आओ |
| पुत्रम् | ७. | पुत्र को | महाराज | १. | हे महाराज ! |
| इह | ४ | यहाँ | मत् | ८. | मेरी |
| आनीतम् | ५. | लाये गये | शासन | ९. | आज्ञा को |
| निजकर्म | २. | अपने कर्म | पुरस्कृतः | १०. | स्वीकार करके |
| निबन्धनम् । | ३. | बन्धन के अनुसार | | | |

श्लोकार्थ—हे महाराज ! अपने कर्म बन्धन के अनुसार यहाँ लाये गये मेरे गुरु के पुत्र को मेरी आज्ञा स्वीकार करके ले आओ ॥

# षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**तथेति तेनोपानीतं गुरुपुत्रं यदूत्तमौ ।**
**दत्त्वा स्वगुरवे भूयो वृणीष्वेति तमूचतुः ॥४६॥**

पदच्छेद— तथा इति तेन उपानीतम् गुरु पुत्रम् यदुउत्तमौ ।
दत्त्वा स्व गुरवे भूयः वृणीष्व इति तम् ऊचतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तथा | १. | बहुत अच्छा | दत्त्वा | ९. | देकर |
| इति | २. | इस प्रकार कहकर | स्व | ७. | अपने |
| तेन | ३. | यमराज के घर से | गुरवे | ८. | गुरु को |
| उपानीतम् | ४. | लाये गये | भूयः वृणीष्व | १२. | जो चाहें माँग लें |
| गुरु पुत्रम् | ५. | गुरु पुत्र को | इति | ११. | कि (और) |
| यदुउत्तमौ । | ६. | श्रीकृष्ण और बलराम ने | तम् ऊचतुः । | १०. | उनसे कहा |

श्लोकार्थ—बहुत अच्छा, इस प्रकार कहकर यमराज के घर से लाये गये गुरुपुत्र को श्रीकृष्ण और बलराम ने अपने गुरु को देकर उनसे कहा कि और जो चाहें माँग लें ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

गुरुः उवाच— सम्यक् संपादितो वत्स भवद्भ्यां गुरुनिष्क्रयः ।
को नु युष्मद्विधगुरोः कामानामवशिष्यते ॥४७॥

पदच्छेद— सम्यक् सम्पादितः वत्स भवद्भ्याम् गुरु निष्क्रयः ।
कः नु युष्मत् विधगुरोः कामानाम् अवशिष्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सम्यक् | ३. | भली भाँति | कः नु | ९. | कौन सा |
| सम्पादितः | ६. | दी | युष्मत् | ७. | आप |
| वत्स | १. | हे वत्स ! | विधगुरोः | ८. | जैसे पुरुषोत्तम के गुरु का |
| भवद्भ्याम् | २. | आप दोनों ने | कामानाम् | १०. | मनोरथ |
| गुरु | ४. | गुरु | अवशिष्यते ॥ | ११. | अपूर्ण रह सकता है |
| निष्क्रयः । | ५. | दक्षिणा | | | |

श्लोकार्थ—हे वत्स ! आप दोनों ने भली भाँति गुरु दक्षिणा दी । आप जैसे पुरुषोत्तम के गुरु का कौन सा मनोरथ अपूर्ण रह सकता है ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

गच्छतं स्वगृहं वीरो कीर्तिर्वामस्तु पावनी ।
छन्दांस्ययातयामानि भवन्त्विह परत्र च ॥४८॥

पदच्छेद— गच्छतम् स्वगृहम् वीरो कीर्तिः वाम् अस्तु पावनी ।
छन्दांसि अयातय यामानि भवन्तु इह परत्र च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गच्छतम् | ३. | जाओ | छन्दांसि | ७. | तुम्हारे पढ़े हुये वेद |
| स्वगृहम् | २. | अपने घर | अयात | १०. | सदा |
| वीरो | १. | हे वीरो ! | यामानि | ११. | नवीन |
| कीर्तिः | ५. | कीर्ति | भवन्तु | १२. | बने रहें |
| वाम् अस्तु | ६. | तुम दोनों को प्राप्त हो | इह | ८. | इस लोक |
| पावनी । | ४. | लोकों को पवित्र करने वाली | परत्र च ॥ | ९. | और परलोक में |

श्लोकार्थ—हे वीरो ! अपने घर जाओ । लोकों को पवित्र करने वाली कीर्ति तुम दोनों को प्राप्त हो । तुम्हारे पढ़े हुये वेद इस लोक और परलोक में सदा नवीन बने रहें ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

**गुरुणैवमनुज्ञातौ रथेनानिलरंहसा ।**
**आयातौ स्वपुरं तात पर्जन्यनिनदेन वै ॥४९॥**

पदच्छेद— गुरुणा एवम् अनुज्ञातौ रथेन अनिल रंहसा ।
आयातौ स्वपुरम् तात पर्जन्य निनदेन वै ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गुरुणा | ३. | गुरु से | आयातौ | १२. | आ गये |
| एवम् | २. | इस प्रकार | स्वपुरम् | ११. | अपने नगर में |
| अनुज्ञातौ | ४. | आज्ञा लेकर | तात | १. | हे परीक्षित् ! |
| रथेन | १०. | रथ से | पर्जन्य | ८. | मेघ के समान |
| अनिल | ५. | वायु के समान | निनदेन | ९. | शब्द वाले |
| रंहसा । | ६. | वेग वाले | वै ॥ | ७. | और |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार गुरु से आज्ञा लेकर वायु के समान वेग वाले और मेघ के समान शब्द वाले रथ से अपने नगर में आ गये ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

**समनन्दन् प्रजाः सर्वा दृष्ट्वा रामजनार्दनौ ।**
**अपश्यन्त्यो बह्वहानि नष्टलब्धधना इव ॥५०॥**

पदच्छेद— सम् अनन्दन् प्रजाः सर्वाः दृष्ट्वा राम जनार्दनौ ।
अपश्यन्त्यः बहु अहानि नष्ट लब्धधनाः इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सम् अनन्दन् | १२. | बहुत आनन्दित हुईं | अपश्यन्त्यः | ५. | न देखती हुईं |
| प्रजाः | ७. | प्रजायें | बहु | १. | बहुत |
| सर्वाः | ६. | सभी | अहानि | २. | दिनों से |
| दृष्ट्वा | ८. | देख कर | नष्ट | १०. | खोया हुआ |
| राम | ३. | बलराम और | लब्धधनाः | ११. | धन मिल गया हो |
| जनार्दनौ । | ४. | श्रीकृष्ण को | इव ॥ | ९. | मानों |

श्लोकार्थ—बहुत दिनों से बलराम और श्रीकृष्ण को न देखती हुईं सभी प्रजायें उन्हें देख कर मानों खोया हुआ धन मिल गया हो इस प्रकार बहुत आनन्दित हुईं ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे गुरुपुत्रआनयनं नाम पञ्चचत्वारिंशः अध्यायः ॥४५॥

## दशमः स्कन्धः

## षट्चत्वारिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—वृष्णीनां प्रवरो मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा ।
शिष्यो बृहस्पतेः साक्षादुद्धवो बुद्धिसत्तमः ॥१॥

पदच्छेद— वृष्णीनाम् प्रवरः मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा ।
शिष्यः बृहस्पतेः साक्षात् उद्धवः बुद्धिसत्तमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वृष्णीनाम् | २. | वृष्णि वंशियों में | शिष्यः | ८. | शिष्य (और) |
| प्रवरः | ३. | श्रेष्ठ | बृहस्पतेः | ७. | बृहस्पति के |
| मन्त्री | १२. | मन्त्री थे | साक्षात् | ६. | साक्षात् |
| कृष्णस्य | ९. | श्रीकृष्ण के | उद्धवः | १. | उद्धव |
| दयितः | १०. | प्रिय | बुद्धि | ५. | बुद्धिमान् |
| सखा । | ११. | मित्र (एवम्) | सत्तमः ॥ | ४. | परम |

श्लोकार्थ उद्धव वृष्णि वंशियों में श्रेष्ठ परम बुद्धिमान् साक्षात् बृहस्पति के शिष्य, श्रीकृष्ण के प्रिय मित्र एवम् मन्त्री थे ॥

### द्वितीयः श्लोकः

तमाह भगवान् प्रेष्ठं भक्तमेकान्तिनं क्वचित् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिं प्रपन्नार्तिहरो हरिः ॥२॥

पदच्छेद— तम् आह भगवान् प्रेष्ठम् भक्तम् एकान्तिनम् क्वचित् ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् प्रपन्न आर्तिहरः हरिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १०. | उन उद्धव का | गृहीत्वा | १३. | लेकर |
| आह | १४. | कहा | पाणिना | १२. | अपने हाथ में |
| भगवान् | ५. | भगवान् | पाणिम् | ११. | हाथ |
| प्रेष्ठम् | ७. | अत्यन्त प्रिय | प्रपन्न | २. | शरणागतों के |
| भक्तम् | ८. | भक्त और | आर्ति | ३. | दुःख |
| एकान्तिनम् | ९. | एकान्त प्रेमी | हरः | ४. | हरने वाले |
| क्वचित् । | १. | एक दिन | हरिः ॥ | ६. | श्रीकृष्ण ने |

श्लोकार्थ—एक दिन शरणागतों के दुःख हरने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने अत्यन्त प्रिय भक्त और एकान्त प्रेमी उन उद्धव का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा ॥

## तृतीयः श्लोकः

**गच्छोद्धव व्रजं सौम्य पित्रोर्नौ प्रीतिमावह ।**
**गोपीनां मद्वियोगाधिं मत्सन्देशैर्विमोचय ॥३॥**

पदच्छेद— गच्छ उद्धव व्रजम् सौम्य पित्रोः नौ प्रीतिम् आवह ।
गोपीनाम् मत् वियोग आधिम् मत् सन्देशैः विमोचय ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गच्छ | ४. जाओ (और) | गोपीनाम् | १०. गोपियों को |
| उद्धव | २. उद्धव | मत् | ११. मेरे |
| व्रजम् | ३. तुम व्रज में | वियोग | १२. वियोग की |
| सौम्य | १. हे सौम्य स्वभाव ! | आधिम् | १३. व्याधि से |
| पित्रोः नो | ५. हमारे माता-पिता को | मत् | ८. मेरा |
| प्रीतिम् | ६. हर्षित | सन्देशैः | ९. सन्देश देकर |
| आवह । | ७. करो (और) | विमोचय ॥ | १४. दूर करो |

श्लोकार्थ—हे सौम्य स्वभाव उद्धव ! तुम व्रज में जाओ और हमारे माता-पिता को हर्षित करो । तथा मेरा सन्देश देकर गोपियों को मेरे वियोग की व्याधि से दूर करो ।

## चतुर्थः श्लोकः

**ता मन्मनस्का मत्प्राणा मदर्थे त्यक्तदैहिकाः ।**
**मामेव दयितं प्रेष्ठमात्मानं मनसा गताः ।**
**ये त्यक्तलोकधर्माश्च मदर्थे तान् बिभर्म्यहम् ॥४॥**

पदच्छेद— ताः मत् मनस्काः मत् प्राणाः मत् अर्थे त्यक्त दैहिकाः ।
माम् एव दयितम् प्रेष्ठम् आत्मानम् मनसा गताः ।
ये त्यक्त लोक धर्माः च मत् अर्थे तान् बिभर्मि अहम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः मत् मनस्काः | १. मुझमें मन तथा | ये | ९. जिन्होंने |
| मत् प्राणाः | २. प्राण लगाने वाली | त्यक्त | १२. त्याग दिया है |
| मत् अर्थे | ३. मेरे लिये | लोकधर्मान | ११. लोक धर्म को |
| त्यक्त दैहिकाः | ४. सगे सम्बिन्धियों को त्यागने वाली | च | ८. और |
| माम् एव दयितम् | ५. मुझे ही प्रिय | मत् अर्थे | १०. मेरे लिये |
| प्रेष्ठम् आत्मानम् | ६. प्रियतम और आत्मा | तान् | १३. उनका |
| मनसा गताः । | ७. मानने वाली हैं | बिर्भमि अहम् ॥ | १४. मैं पोषण करता हूँ |

श्लोकार्थ—वे मुझमें मन तथा प्राण लगाने वाली, मेरे लिये सगे सम्बन्धियों को त्यागने वाली, मुझे ही प्रिय, प्रियतम और आत्मा मानने वाली हैं । और जिन्होंने मेरे लिये लोक धर्म को त्याग दिया है, उनका मैं पोषण करता हूँ ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**मयि ताः प्रेयसां प्रेष्ठे दूरस्थे गोकुलस्त्रियः ।**

**स्मरन्त्योऽङ्ग विमुह्यन्ति विरहौत्कण्ठ्यविह्वलाः ॥५॥**

पदच्छेद— मयि ताः प्रेयसाम् प्रेष्ठे दूरस्थे गोकुल स्त्रियः ।
स्मरन्त्यः अङ्ग विमुह्यन्ति विरह औत्कण्ठ्य विह्वलाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मयि | ८. | मेरा | स्मरन्त्यः | ९. | स्मरण करके |
| ताः | २. | वे | अङ्ग | १. | हे प्रिय उद्धव ! |
| प्रेयसाम् | ५. | प्रिय से भी | विमुह्यन्ति | १०. | मोहित हो रही हैं और |
| प्रेष्ठे | ६. | अत्यन्त प्रिय | विरह | ११. | विरह वश |
| दूरस्थे | ७. | दूर में स्थित | औत्कण्ठ्य | १२. | उत्कण्ठा से |
| गोकुल | ३. | गोकुल की | विह्वलाः ॥ | १३. | विह्वल हो रही हैं |
| स्त्रियः । | ४. | स्त्रियाँ | | | |

श्लोकार्थ—हे प्रिय उद्धव ! वे गोकुल की स्त्रियाँ प्रिय के भी अत्यन्त प्रिय, दूर में स्थित मेरा स्मरण करके मोहित हो रही हैं और विरहवश उत्कण्ठा से अति विह्वल हो रही हैं ॥

## षष्ठः श्लोकः

**धारयन्त्यतिकृच्छ्रेण प्रायः प्राणान् कथञ्चन ।**

**प्रत्यागमनसन्देशैर्बल्लव्यो मे मदात्मिकाः ॥६॥**

पदच्छेद— धारयन्ति अति कृच्छ्रेण प्रायः प्राणान् कथञ्चन ।
प्रत्यागमन सन्देशैः बल्लव्यः मे मत् आत्मिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धारयन्ति | १२. | धारण कर रही हैं | प्रत्यागमन | ५. | मेरे लौटने के |
| अति | ८. | अत्यन्त | सन्देशैः | ६. | सन्देशों से |
| कृच्छ्रेण | ९. | कष्ट से | बल्लव्यः | ४. | गोपियाँ |
| प्रायः | ७. | प्रायः | मे | ३. | मेरी |
| प्राणान् | ११. | प्राणों को | मत् | १. | मुझ में |
| कथञ्चन । | १०. | किसी प्रकार | आत्मिकाः ॥ | २. | तन्मय रहने वाली |

श्लोकार्थ—मुझमें तन्मय रहने वाली मेरी गोपियाँ मेरे लौटने के सन्देशों को पाकर प्रायः अत्यन्त कष्ट से किसी प्रकार प्राणों को धारण कर रही हैं ॥

## सप्तमः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—इत्युक्त उद्धवो राजन् संदेशं भर्तुराहृतः ।**
**आदाय रथमारुह्य प्रययौ नन्दगोकुलम् ॥७॥**

पदच्छेद— इति उक्तः उद्धवः राजन् संदेशम् भर्तुः आदृतः ।
आदाय रथम् आरुह्य प्रययौ नन्द गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | २. | इस प्रकार | आदाय | ८. | लेकर |
| उक्तः | ३. | कहे जाने पर | रथम् | ९. | रथ पर |
| उद्धवः | ४. | उद्धव | आरुह्य | १०. | चढ़ कर |
| राजन् | १. | हे राजन् ! | प्रययौ | १३. | चल पड़े |
| सन्देशम् | ७. | सन्देश | नन्द | ११. | नन्द |
| भर्तुः | ६. | स्वामी का | गोकुलम् ॥ | १२. | गाँव के लिये |
| आदृतः । | ५. | आदर से | | | |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार कहे जाने पर उद्धव आदर से स्वामी का सन्देश लेकर रथ पर चढ़कर नन्द गाँव के लिये चल पड़े ॥

## अष्टमः श्लोकः

**प्राप्तो नन्दव्रजं श्रीमान् निम्लोचति विभावसौ ।**
**छन्नयानः प्रविशतां पशूनां खुररेणुभिः ॥८॥**

पदच्छेद— प्राप्तः नन्द व्रजम् श्रीमान् निम्लोचति विभावसौ ।
छन्नयानः प्रविशताम् पशूनां खुर रेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्राप्तः | ६. | पहुँच गये (उस समय) | छन्नयानः | ११. | उनका रथ ढक गया |
| नन्द | ४. | नन्द के | प्रविशताम् | ७. | गाँव में प्रवेश करते हुये |
| व्रजम् | ५. | व्रज में | पशूनां | ८. | पशुओं के |
| श्रीमान् | १. | श्रीमान् उद्धव | खुर | ९. | खुरों की |
| निम्लोचति | ३. | अस्त होने के समय | रेणुभिः ॥ | १०. | धूली से |
| विभावसौ । | २. | सूर्य के | | | |

श्लोकार्थ—श्रीमान् उद्धव सूर्य के अस्त होने के समय नन्द के व्रज में पहुँच गये । उस समय गाँव में प्रवेश करते हुये, पशुओं के खुरों की धूली से उनका रथ ढक गया ॥

## नवमः श्लोकः

वासितार्थेऽभियुध्यद्भिर्नादितं शुष्मिभिर्वृषैः ।
धावन्तीभिश्च वास्राभिरूधोभारैः स्ववत्सकान् ॥९॥

पदच्छेद— वासिता अर्थे अभियुध्यद्भिः नादितम् शुष्मिभिः वृषैः ।
धावन्तीभिः च वास्राभिः ऊधोभारैः स्व वत्सकान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वासिता | १. | ऋतुमती गऊओं | धावन्तीभिः | १२. | दौड़ रही थीं |
| अर्थे | २. | के लिये | च | ७. | और |
| अभियुध्यद्भिः | ३. | आपस में लड़ते हुये | वास्राभिः | ८. | नई ब्याही हुई गौयें |
| नादितम् | ६. | गर्जना कर रहे थे | ऊधोभारैः | ९. | थनों के भार से दबी हुई |
| शुष्मिभिः | ४. | मतवाले | स्व | १०. | अपने-अपने |
| वृषैः । | ५. | साँड़ | वत्सकान् ॥ | ११. | बछड़ों की ओर |

श्लोकार्थ—ऋतुमती गऊओं के लिये आपस में लड़ते हुये मतवाले साँड़ गर्जना कर रहे थे। और नई ब्याही हुई गौएँ थनों के भार से दबी हुई अपने-अपने बछड़ों की ओर दौड़ रही थीं ॥

## दशमः श्लोकः

इतस्ततो विलङ्घद्भिर्गोवत्सैर्मण्डितं सितैः ।
गोदोहशब्दाभिरवं वेणूनां निःस्वनेन च ॥१०॥

पदच्छेद— इतः ततः विलङ्घद्भिः गोवत्सैः मण्डितम् सितैः ।
गोदोह शब्दअभिरवम् वेणूनाम् निःस्वनेन च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इतः | १ | इधर | गोदोह | ७. | गाय दूहने के |
| ततः | २. | उधर | शब्दअभि | ८. | शब्द से |
| विलङ्घद्भिः | ३. | उछल-कूद करते हुये | रवम् | १२. | शब्दायमान था |
| गोवत्सैः | ५. | बछड़ों से व्रज | वेणूनाम् | १०. | बाँसुरी की |
| मण्डितम् | ६. | शोभित हो रहा था | निःस्वनेन | ११. | ध्वनि से |
| सितैः । | ४. | उजले | च ॥ | ९. | और |

श्लोकार्थ—इधर-उधर उछल-कूद करते हुये उजले बछड़ों से व्रज शोभित हो रहा था। वह गाय दूहने के शब्द से और बाँसुरी की ध्वनि से शब्दायमान था ॥

## एकादशः श्लोकः

**गायन्तीभिश्च कर्माणि शुभानि बलकृष्णयोः ।**
**स्वलङ्कृताभिर्गोपीभिर्गोपैश्च सुविराजितम् ॥११॥**

पदच्छेद— गायन्तीभिः च कर्माणि शुभानि बल कृष्णयोः ।
सु अलङ्कृताभिः गोपीभिः गोपैः च सुविराजितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गायन्तीभिः | ६. | गायन करती हुई | सु | ७. | भलीभाँति |
| च | २. | और | अलङ्कृताभिः | ८. | सजी धजी |
| कर्माणि | ५. | चरित्रों को | गोपीभिः | ९. | गोपियों |
| शुभानि | ४. | मंगलमय | गोपैः | ११. | गोपों से |
| बल | १. | बलराम | च | १०. | और |
| कृष्णयोः । | ३. | श्रीकृष्ण के | सुविराजितम् ॥ | १२. | व्रज की शोभा बढ़ गई थी |

श्लोकार्थ—बलराम और श्रीकृष्ण के मंगलमय चरित्रों का गायन करती हुई भली-भाँति सजी-धजी गोपियों और गोपों से व्रज की शोभा बढ़ गई थी ॥

## द्वादशः श्लोकः

**अग्न्यर्कातिथिगोविप्रपितृदेवार्चनान्वितैः ।**
**धूपदीपैश्च माल्यैश्च गोपावासैर्मनोरमम् ॥१२॥**

पदच्छेद— अग्नि अर्क अतिथि गो विप्र पितृदेव अर्चन अन्वितैः ।
धूप दीपैः च माल्यैः च गोप आवासैः मनोरमम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अग्नि | १. | अग्नि | धूप | ८. | धूप |
| अर्क | २. | सूर्य | दीपैः | ९. | दीप |
| अतिथि | ३. | अतिथि | च | १०. | और |
| गो विप्र | ४. | गो, ब्राह्मण | माल्यैः | ११. | मालाओं से |
| पितृदेव | ५. | पितरों, देवताओं के | च | १२. | तथा |
| अर्चन | ६. | पूजन से | गोप आवासैः | १३. | गोप गृहों से |
| अन्वितैः । | ७. | युक्त | मनोरमम् ॥ | १४. | व्रज मनोहर लग रहा था |

श्लोकार्थ—अग्नि, सूर्य, अतिथि, गो, ब्राह्मण, पितरों, देवताओं के पूजन से युक्त धूप, दीप और मालाओं से तथा गोप-गृहों से व्रज मनोहर लग रहा था ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**सर्वतः पुष्पितवनं द्विजालिकुलनादितम् ।**
**हंसकारण्डवाकीर्णैः पद्मषण्डैश्च मण्डितम् ॥१३॥**

पदच्छेद— सर्वतः पुष्पित वनम् द्विज अलिकुल नादितम् ।
हंस कारण्डव आकीर्णैः पद्मषण्डैः च मण्डितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्वतः | २. | चारों ओर | हंस | ७. | हंसों और |
| पुष्पित | ३. | फूलों से लदा था (उसमें) | कारण्डव | ८. | बत्तखों से |
| वनम् | १. | वहाँ का वन | आकीर्णैः | ९. | व्याप्त |
| द्विज | ४. | पक्षी और | पद्मषण्डैः | ११. | कमल सरोवरों से |
| अलिकुल | ५. | भौंरे | च | १०. | तथा |
| नादितम् । | ६. | गुञ्जार कर रहे थे | मण्डितम् ॥ | १२. | शोभित था |

श्लोकार्थ—वहाँ का वन चारों ओर फूलों से लदा था। उसमें पक्षी और भौंरे गुञ्जार कर रहे थे। हंसो और बत्तखों से व्याप्त तथा कमल-सरोवरों से शोभित था।

## चतुर्दशः श्लोकः

**तमागतं समागम्य कृष्णस्यानुचरं प्रियम् ।**
**नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वासुदेवधियाऽर्चयत् ॥१४॥**

पदच्छेद— तम् आगतम् समागम्य कृष्णस्य अनुचरम् प्रियम् ।
नन्दः प्रीतः परिष्वज्य वासुदेव धिया अर्चयत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | ५. | उन (उद्धव से) | नन्दः | ७. | नन्द जी |
| आगतम् | १. | आये हुये | प्रीतः | ८. | प्रसन्न हुये (और उनको) |
| समागम्य | ६. | मिलकर | परिष्वज्य | ९. | गले लगाकर (उनकी) |
| कृष्णस्य | २. | कृष्ण के | वासुदेव | १०. | श्रीकृष्ण |
| अनुचरम् | ४. | सेवक | धिया | ११. | बुद्धि से |
| प्रियम् । | ३. | प्रिय | अर्चयत् ॥ | १२. | पूजा की |

श्लोकार्थ—आये हुये कृष्ण के प्रिय सेवक उन उद्धव से मिलकर नन्द जी प्रसन्न हुये और उनको गले लगाकर उनकी श्रीकृष्ण-बुद्धि से पूजा की ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**भोजितं परमान्नेन संविष्टं कशिपौ सुखम् ।**
**गतश्रमं पर्यपृच्छत् पादसंवाहनादिभिः ॥१५॥**

पदच्छेद— भोजितम् परमान्नेन संविष्टं कशिपौ सुखम् ।
गतश्रमम् पर्यपृच्छत् पाद संवाहन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भोजितम् | २. भोजन कराया और | गतश्रमम् | ९. थकावट दूर हो गई (तब) |
| परमान्नेन | १. उन्हें खीर का | पर्यपृच्छत् | १०. उनसे पूछा |
| संविष्टम् | ५. लेट जाने पर | पाद | ६. पैर |
| कशिपौ | ४. पलंग पर | संवाहन | ७. दबाने |
| सुखम् । | ३. सुख से | आदिभिः ॥ | ८. आदि से (जब) |

श्लोकार्थ—उन्हें खीर का भोजन कराया और सुख से पलंग पर लेट जाने पर पैर दबाने आदि से जब थकावट दूर हो गई तब उनसे पूछा ॥

## षोडशः श्लोकः

**कच्चिदङ्ग महाभाग सखा नः शूरनन्दनः ।**
**आस्ते कुशल्यपत्याद्यैर्युक्तो मुक्तः सुहृद्वृतः ॥१६॥**

पदच्छेद— कच्चिद् अङ्ग महाभाग सखा नः शूरनन्दनः ।
आस्ते कुशली अपत्य आद्यैः युक्तः मुक्तः सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कच्चिद् | ३. क्या | आस्ते कुशली | १२. कुशल से तो हैं |
| अङ्ग | २. बन्धु (उद्धव जी) | अपत्य | ९. पत्नी और सन्तान |
| महाभाग | १. हे परम भाग्यवान् ! | आद्यैः | १०. आदि से |
| सखा | ५. मित्र | युक्तः | ११. युक्त होकर |
| नः | ४. हमारे | मुक्तःसुहृद् | ७. जेल से छूटे हुये मित्रों से |
| शूरनन्दनः । | ६. वसुदेव जो | वृतः ॥ | ८. घिरे हुये |

श्लोकार्थ—हे परम भाग्यवान् बन्धु उद्धव जी ! क्या हमारे मित्र वसुदेव जी जेल से छूटे हुये, मित्रों से घिरे हुये, पत्नी और सन्तान से युक्त होकर कुशल से तो हैं ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**दिष्ट्या कंसो हतः पापः सानुगः स्वेन पाप्मना।**
**साधूनां धर्मशीलानां यदूनां द्वेष्टि यः सदा।१७॥**

पदच्छेद— दिष्टया कंसः हतः पापः सानुगः स्वेन पाप्मना।
साधूनाम् धर्म शीलानाम् यदूनाम् द्वेष्टि यः सदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्टया | १. | भाग्य की बात है कि | साधूनाम् | १०. | साधु और |
| कंसः | ३. | कंस | धर्म | १२. | धार्मिक |
| हतः | ७. | मारा गया | शीलानाम् | ११. | परम |
| पापः | २. | पापी | यदूनाम् | १३. | यदुवंशियों से |
| स अनुगः | ६. | अपने अनुयायियों के साथ | द्वेष्टि | १४. | द्वेष करता था |
| स्वेन | ४. | अपने | यः | ८. | वह |
| पाप्मना। | ५. | पाप के कारण | सदा॥ | ९. | सदा |

श्लोकार्थ—उद्धव जी ! भाग्य की बात है कि पापी कंस अपने पाप के कारण अपने अनुयायियों के साथ मारा गया। वह सदा साधु और परम धार्मिक यदुवंशियों से द्वेष करता था।

## अष्टादशः श्लोकः

**अपि स्मरति नः कृष्णो मातरं सुहृदः सखीन्।**
**गोपान् व्रजम् चात्मनाथं गावो वृन्दावनं गिरिम् ॥१८॥**

पदच्छेद— अपि स्मरति नः कृष्णः मातरम् सुहृदः सखीन्।
गोपान् व्रजम् च आत्म नाथम् गावः वृन्दावनम् गिरिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | १. | क्या | गोपान् | ७. | गोपों |
| स्मरति | १४. | स्मरण करते हैं | व्रजम् | १३. | व्रज का |
| नः | ३. | हमारा | च आत्म | ११. | और उन्हीं को अपना |
| कृष्णः | २. | कृष्ण | नाथम् | १२. | स्वामी मानने वाले |
| मातरम् | ४. | माता | गावः | ८. | गौओं |
| सुहृदः | ५. | मित्रों | वृन्दावनम् | ९. | वृन्दावन |
| सखीन्। | ६. | सखाओं | गिरिम्॥ | १०. | गोवर्धन |

श्लोकार्थ—क्या कृष्ण हमारा, माता, मित्रों, सखाओं, गोपों, वृन्दावन, गोवर्धन और उन्हीं को अपना मानने वाले व्रज का स्मरण करते हैं॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**अप्यायास्यति गोविन्दः स्वजनान् सकृदीक्षितुम् ।**
**तर्हि द्रक्ष्याम तद्वक्त्रं सुनसं सुस्मितेक्षणम् ॥१६॥**

पदच्छेद— अपि आयास्यति गोविन्दः स्वजनान् सकृत् ईक्षितुम् ।
तर्हि द्रक्ष्यामः तत् वक्त्रम् सुनसम् सुस्मित ईक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | १. | क्या | तर्हि | ७. | तब-हम |
| आयास्यति | ६. | आयेंगे | द्रक्ष्यामः | १३. | देख लेते |
| गोविन्दः | २ | श्रीकृष्ण | तत् | ११. | उनका |
| स्वजनान् | ३. | अपने लोगों को | वक्त्रम् | १२. | मुख |
| सकृत् | ५. | एक बार (यहाँ) | सुनसम् | ८. | सुघड़ नासिका से |
| ईक्षितुम् । | ४. | देखने के लिये | सुस्मितम् | ६. | मधुर मुसकान से और |
| | | | ईक्षणम् ॥ | १०. | चितवन से युक्त |

श्लोकार्थ—क्या श्रीकृष्ण अपने लोगों को देखने के लिये एक बार यहाँ आयेंगे । तब हम सुघड़ नासिका, मधुर मुसकान से और चितवन से युक्त उनका मुख देख लेते ॥

## विंशः श्लोकः

**दावाग्नेर्वातवर्षाच्च वृषसर्पाच्च रक्षिताः ।**
**दुरत्ययेभ्यो मृत्युभ्यः कृष्णेन सुमहात्मना ॥२०॥**

पदच्छेद— दावाग्नेः वात वर्षात् च वृष सर्पात् च रक्षिताः ।
दुरत्ययेभ्यः मृत्युभ्यः कृष्णेन सुमहात्मना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दावाग्नेः | ४. | दावानल | रक्षिताः | १२. | रक्षा की है |
| वात | ५. | आँधी | दुरत्ययेभ्यः | १०. | न टालने योग्य |
| वर्षात् | ६. | जल | मृत्युभ्यः | ११. | मृत्यु से (हमारी) |
| च | ७. | और | कृष्णेन | ३. | श्रीकृष्ण ने |
| वृष | ८. | वृषासुर | सु | १. | अत्यन्त |
| सर्पात् च । | ६ | अजगर आदि से और | महातमना ॥ | २. | महान् आत्मा |

श्लोकार्थ—महान् आत्मा श्रीकृष्ण ने दावानल, आँधी, पानी, और वृषासुर, अजगर आदि से और न टालने योग्य मृत्यु से हमारी रक्षा की है ॥

# एकविंशः श्लोकः

स्मरतां कृष्णवीर्याणि लीलापाङ्गनिरीक्षितम् ।
हसितं भाषितं चाङ्ग सर्वा नः शिथिलाः क्रियाः ॥२१॥

पदच्छेद— स्मरताम् कृष्ण वीर्याणि लीला अपाङ्ग निरीक्षितम् ।
हसितम् भाषितम् च अङ्ग सर्वा नः शिथिलाः क्रियाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्मरताम् | ९. | स्मरण करते हुये | हसितम् | ७. | हास्य (और) |
| कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण के | भाषितम् च | ८. | मधुर भाषण का |
| वीर्याणि | ३. | पराक्रमों | अङ्ग | १. | हे उद्धव जी ! |
| लीला | ४. | विलास पूर्ण | सर्वा नः | १०. | हमारी सभी |
| अपाङ्ग | ५. | तिरछी | शिथिलाः | १२. | शिथिल हो गई हैं |
| निरीक्षितम् । | ६. | चितवन | क्रियाः ॥ | ११. | क्रियायें |

श्लोकार्थ—हे उद्धव जी ! श्रीकृष्ण के पराक्रमों, विलास पूर्ण तिरछी चितवन, हास्य और मधुर भाषण का स्मरण करते हुये हमारी सभी क्रियायें शिथिल हो गई हैं ॥

# द्वाविंशः श्लोकः

सरिच्छैलवनोद्देशान् मुकुन्दपदभूषितान् ।
आक्रीडानीक्षमाणानां मनो याति तदात्मताम् ॥२२॥

पदच्छेद— सरित् शैल वन उद्देशान् मुकुन्द पद भूषितान् ।
आक्रीडानि ईक्षमाणानाम् मनः याति तत् आत्मताम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरित् | ४. | नदी | आक्रीडानि | ८. | खेल के स्थानों को |
| शैल | ५. | पर्वत | ईक्षमाणानाम् | ९. | देखते हुये हमारा |
| वन | ६. | वन के | मनः | १०. | मन |
| उद्देशान् | ७. | प्रदेशों और | याति | १३. | हो जाता है |
| मुकुन्द | १. | श्रीकृष्ण के | तत् | ११. | उन |
| पद | २. | चरण चिह्नों से | आत्मताम् ॥ | १२. | श्रीकृष्ण मय |
| भूषितान् । | ३. | शोभित | | | |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के चरण चिह्नों से शोभित नदी, पर्वत, वन के प्रदेशों और खेल के स्थानों को देखते हुये हमारा मन उन श्रीकृष्ण मय हो जाता है ॥

# त्रयोविंशः श्लोकः

**मन्ये कृष्णं च रामं च प्राप्ताविह सुरोत्तमौ ।**
**सुराणां महदर्थाय गर्गस्य वचनं यथा ॥२३॥**

पदच्छेद— मन्ये कृष्णम् च रामम् प्राप्तौ इह सुर उत्तमौ ।
सुराणाम् महत् अर्थाय गर्गस्य वचनम् यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मन्ये | ९. | मानता हूँ | सुराणाम् | ३. | देवताओं का |
| कृष्णम् च | १. | मैं श्रीकृष्ण और | महत् | ४. | महान् |
| रामम् | २. | बलराम को | अर्थाय | ५. | प्रयोजन सिद्ध करने के लिये |
| प्राप्तौ | ७. | आये हुये | गर्गस्य | १०. | गर्गाचार्य ने मुझसे |
| इह | ६. | यहाँ | वचनम् | १२. | कहा था |
| सुर उत्तमौ । | ८. | देव शिरोमणि | यथा ॥ | ११. | जैसा कि |

श्लोकार्थ—मैं श्रीकृष्ण और बलराम को देवताओं का महान् प्रयोजन सिद्ध करने के लिये यहाँ आये हुये देवशिरोमणि मानता हूँ, जैसा कि गर्गाचार्य ने मुझसे कहा था ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

**कंसं नागायुतप्राणं मल्लौ गजपतिं तथा ।**
**अवधिष्टां लीलयैव पशूनिव मृगाधिपः ॥२४॥**

पदच्छेद— कंसम् नाग अयुत प्राणम् मल्लौ गजपतिम् तथा ।
अवधिष्टाम् लीलया एव पशून् इव मृग अधिपः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कंसम् | ७. | कंस को | अवधिष्टाम् | १०. | मार डाला |
| नाग | २. | हाथियों का | लीलया | ८. | खेल-खेल में |
| अयुत | १. | दस हजार | एव | ९. | ही |
| प्राणम् | ३. | बल रखने वाले | पशून् | १४. | पशुओं को (मार डालता है) |
| मल्लौ | ५. | दोनों पहलवानों तथा | इव | ११. | जैसे |
| गजपतिम् | ४. | गजराज कुवलयापीड को | मृग | १२. | सिंह |
| तथा । | ६. | तथा | अधिपः ॥ | १३. | राज |

श्लोकार्थ—दस हजार हाथियों का बल रखने वाले गजराज कुवलयापीड को, दोनों पहलवानों तथा कंस को खेल-खेल में ही मार डाला, जैसे सिंह पशुओं को मार डालता है ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**तालत्रयं महासारं धनुर्यष्टिमिवेभराट्।**
**बभञ्जैकेन हस्तेन सप्ताहमदधाद् गिरिम् ॥२५॥**

पदच्छेद— ताल त्रयम् महासारम् धनुः य यष्टिम् इव इभराट्।
बभञ्जकेन हस्तेन सप्ताहम् अदधात् गिरिम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताल | २. | ताल लम्बे और | बभञ्ज | ५. | वैसे ही तोड़ दिया |
| त्रयम् | १. | तीन | एकेन | ८. | उन्होंने एक |
| महासारम् | ३. | अत्यन्तदृढ | हस्तेन | ९. | हाथ से |
| धनुः | ४. | धनुष को | सप्ताहम् | १०. | सात दिनों तक |
| यष्टिम् | ७. | छड़ी को (तोड़ डाले) | अदधात् | १२. | उठाये रखा था |
| इव इभराट्। | ६. | जैसे गजराज | गिरिम् ॥ | ११. | गिरिराज पर्वत को |

श्लोकार्थ- तीन हाथ लम्बे और अत्यन्त दृढ धनुष को वैसे ही तोड़ डाला। जैसे गजराज छड़ी को तोड़ डाले। उन्होंने एक हाथ से सात दिनों तक गिरिराज पर्वत को उठाये रखा था।

## षड्विंशः श्लोकः

**प्रलम्बो धेनुकोऽरिष्टस्तृणावर्तो बकादयः।**
**दैत्याः सुरासुरजितो हता येनेह लीलया ॥२६॥**

पदच्छेद— प्रलम्बः धेनुकः अरिष्टः तृणावर्तः बक आदयः।
दैत्याः सुर असुर जिताः हताः येन इह लीलया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रलम्ब | ४. | प्रलम्ब | दैत्याः | १०. | दैत्यों को |
| धेनुकः | ५. | धेनुक | सुर-असुर | २. | देवता और असुरों को |
| अरिष्टः | ६. | अरिष्टासुर | जिताः | ३. | जीत लेने वाले |
| तृणावर्तः | ७. | तृणावर्त और | हताः | १२. | मार डाला |
| बक | ८. | बक | येन-इह | १. | जिन्होंने यहाँ पर |
| आदयः। | ९. | आदि | लीलया ॥ | ११. | लीला पूर्वक |

श्लोकार्थ—जिन्होंने यहाँ पर देवता और असुरों को जीत लेने वाले प्रलम्ब, धेनुक, अरिष्टासुर, तृणावर्त और बक आदि दैत्यों को लीला पूर्वक मार डाला ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—इति संस्मृत्य संस्मृत्य नन्दः कृष्णानुरक्तधीः ।**
**अत्युत्कण्ठोऽभवत्तूष्णीं प्रेमप्रसरविह्वलः ॥२७॥**

पदच्छेद— इति संस्मृत्य संस्मृत्य नन्दः कृष्ण अनुरक्तधीः ।
अति उत्कण्ठः अभवत् तूष्णीम् प्रेमप्रसर विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | अति | ९. | अत्यन्त |
| संस्मृत्य | ५. | स्मरण कर | उत्कण्ठः | १०. | उत्कण्ठित होकर |
| संस्मृत्य | ६. | करके | अभवत् | १२. | हो गये |
| नन्दः | ४. | नन्द जी | तूष्णीम् | ११. | चुप |
| कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण में | प्रेम-प्रसर | ७. | प्रेम की बाढ़ से |
| अनुरक्तधीः । | ३. | अनुरक्त बुद्धि वाले | विह्वलः ॥ | ८. | विह्वल होने के कारण |

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण में अनुरक्त बुद्धि वाले नन्द जी स्मरण कर करके प्रेम की बाढ़ से विह्वल होने के कारण अत्यन्त उत्कण्ठित होकर चुप हो गये ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**यशोदा वर्ण्यमानानि पुत्रस्य चरितानि च ।**
**शृण्वन्त्यश्रूण्यवास्राक्षीत् स्नेहस्नुतपयोधरा ॥२८॥**

पदच्छेद— यशोदा वर्ण्यमानानि पुत्रस्य चरितानि च ।
शृण्वन्ती अश्रूणि अवास्राक्षीत् स्नेह स्नुत पयोधरा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यशोदा | ७. | यशोदा जी | शृण्वन्ती | ४. | सुनकर |
| वर्ण्यमानानि | १. | वर्णन किये जाते हुये | अश्रूणि | ९. | आँसू |
| पुत्रस्य | २. | पुत्र के | अवास्राक्षीत् | १०. | बहाने लगीं |
| चरितानि | ३. | चरित्रों को | स्नेह-स्नुत | ५. | स्नेह वश दूध बहाते हुये |
| च । | ८. | भी | पयोधरा ॥ | ६. | स्तनों वाली |

श्लोकार्थ—वर्णन किये जाते हुये पुत्र के चरित्रों को सुनकर स्नेह वश दूध बहाते हुये स्तनों वाली यशोदा जी भी आँसू बहाने लगीं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**तयोरित्थं भगवति कृष्णे नन्दयशोदयोः ।**
**वीक्ष्यानुरागं परमं नन्दमाहोद्धवो मुदा ॥२६॥**

पदच्छेद— तयोः इत्थम् भगवति कृष्णे नन्द यशोदयोः ।
वीक्ष्य अनुरागम् परमम् नन्दम् आह उद्धवः मुदा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तयोः | १. | उन दोनों | वीक्ष्य | ६. | देख कर |
| इत्थम् | ६. | इस प्रकार | अनुरागम् | ८. | अनुराग |
| भगवति | ४. | भगवान् | परमम् | ७. | परम |
| कृष्णे | ५. | कृष्ण के प्रति | नन्दम् आह | १२. | नन्द जी से कहने लगे |
| नन्द | २. | नन्द और | उद्धवः | ११. | उद्धव जी |
| यशोदयोः । | ३. | यशोदा का | मुदा ॥ | १०. | प्रसन्नता पूर्वक |

श्लोकार्थ—उन दोनों नन्द और यशोदा का भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति इस प्रकार परम अनुराग देख कर प्रसन्नता पूर्वक उद्धव जी नन्द जी से कहने लगे ॥

## त्रिंशः श्लोकः

उद्धव उवाच— **युवां श्लाघ्यतमौ नूनं देहिनामिह मानद ।**
**नारायणेऽखिलगुरौ यत् कृता मतिरीदृशी ॥३०॥**

पदच्छेद— युवाम् श्लाघ्यतमौ नूनम् देहिनाम् इह मानद ।
नारायणे अखिल गुरौ यत् कृता मतिः ईदृशी ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| युवाम् | ४. | आप दोनों | नारायणे | ९. | भगवान् में |
| श्लाघ्यतमौ | ६. | अत्यन्त भाग्यवान् हैं | अखिल गुरौ | ८. | सबके गुरु |
| नूनम् | ५. | निश्चित ही | यत् | ७. | जो (आप दोनों ने) |
| देहिनाम् | ३. | शरीरधारियों में | कृता | १२. | लगायी है |
| इह | २. | यहाँ | मतिः | ११. | बुद्धि |
| मानद । | १. | हे मान देने वाले ! | ईदृशी ॥ | १०. | ऐसी |

श्लोकार्थ—हे मान देने वाले ! यहाँ शरीरधारियों में आप दोनों निश्चित ही अत्यन्त भाग्यवान् हैं । जो आप दोनों ने सब के गुरु भगवान् में ऐसी बुद्धि लगायी है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**एतौ हि विश्वस्य च बीजयोनी रामो मुकुन्दः पुरुषः प्रधानम् ।**
**अन्वीय भूतेषु विलक्षणस्य ज्ञानस्य चेशात इमौ पुराणौ ॥३१॥**

पदच्छेद— एतौ हि विश्वस्य च बीजयोनी रामः मुकुन्दः पुरुषः प्रधानम् ।
अन्वीय भूतेषु विलक्षणस्य ज्ञानस्य च ईशाते इमौ पुराणौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एतौ हि | १. | ये दोनों | अन्वीय | ११. | प्रविष्ट होकर |
| विश्वस्य | ६. | संसार के | भूतेषु | १०. | समस्त शरीरों में |
| च बीजयोनी | ७. | बीज और कारण हैं | विलक्षणस्य | १२. | विलक्षण |
| रामः | २. | बलराम और | ज्ञानस्य | १३. | ज्ञानमय (जीव) का |
| मुकुन्दः | ३. | श्रीकृष्ण | च ईशाते | १४. | नियमन करते हैं |
| पुरुषः | ५. | पुरुष (तथा) | इमौ | ८. | वे दोनों |
| प्रधानम् । | ४. | प्रधान | पुराणौ ॥ | ९. | पुराण पुरुष |

श्लोकार्थ—ये दोनों बलराम और श्रीकृष्ण प्रधान-पुरुष तथा संसार के बीज और कारण हैं। और वे दोनों पुराण-पुरुष समस्त शरीरों में विलक्षण ज्ञानमय जीव का नियमन करते हैं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**यस्मिञ्जनः प्राणवियोगकाले क्षणं समावेश्य मनो विशुद्धम् ।**
**निर्हृत्य कर्माशयमाशु याति परां गतिं ब्रह्ममयोऽर्कवर्णः ॥३२॥**

पदच्छेद— यस्मिन् जनः प्राण वियोग काले क्षणम् समावेश्य मनःविशुद्धम् ।
निर्हृत्य कर्माशयम् आशु याति पराम् गतिम् ब्रह्ममयः अर्कवर्णः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यस्मिन् | ७. | उन (श्रीकृष्ण में) | निर्हृत्य | १०. | धो बहा कर |
| जनः | १. | जो जीव | कर्माशयम् | ९. | कर्म वासनाओं को |
| प्राण | २. | मृत्यु के | आशु | ११. | शीघ्र ही |
| वियोग | ३. | वियोग के | याति | १६. | प्राप्त करता है |
| काले | ४. | समय | पराम् | १४. | परम |
| क्षणम् | ५. | क्षण भर के लिये | गतिम् | १५. | गति को |
| समावेश्य | ८. | लगा देता है (वह) | ब्रह्ममयः | १३. | ब्रह्ममय होकर |
| मनःविशुद्धम् । | ६. | अपने शुद्ध मन को | अर्कवर्णः ॥ | १२. | सूर्य के समान तेजस्वी |

श्लोकार्थ—जो जीव मृत्यु के वियोग के समय क्षण भर के लिये अपने शुद्ध मन को उन श्रीकृष्ण में लगा देता है। वह कर्मवासनाओं को धो बहा कर शीघ्र ही सूर्य के समान तेजस्वी और ब्रह्ममय होकर परम गति को प्रात करता है ॥

# त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**तस्मिन् भवन्तावखिलात्महेतौ नारायणे कारणमर्त्यमूर्तौ।**
**भावं विधत्तां नितरां महात्मन् किं वावशिष्टं युवयोः सुकृत्यम् ॥३३॥**

पदच्छेद— तस्मिन् भवन्तौ अखिल आत्महेतौ नारायणे कारण मर्त्य मूर्तौ।
भावम् विधत्ताम् नितराम् महात्मन् किम् वा अवशिष्टम् युवयोः सुकृत्यम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मिन् | ६. | उन | भावम् | १०. | वात्सल्य भाव |
| भवन्तौ | ८. | आप दोनों | विधत्ताम् | ११. | रखते हैं |
| अखिल | १. | सबके | नितराम् | ६. | सुहृद |
| आत्म हेतौ | २. | आत्मा और कारण | महात्मन् | १२. | हे महात्मा ! |
| नारायणे | ७. | नारायण में | किम् वा | १४. | कौन सा |
| कारण | ३. | कारणवश | अशिष्टम् | १६. | शेष रह गया है |
| मर्त्य | ४. | मनुष्य | युवयोः | १३. | आप दोनों के लिये |
| मूर्तौ । | ५. | शरीर धारण करने वाले | सुकृत्यम् ॥ | १५. | शुभ कर्म |

श्लोकार्थ—सबके आत्मा और कारण, कारणवश, मनुष्य शरीर धारण करने वाले उन नारायण में आप दोनों सुहृद, वात्सल्य भाव धारण करते हैं। हे महात्मा ! आप दोनों के लिये कौन सा शुभ कर्म शेष रह गया है ॥

# चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**आगमिष्यत्यदीर्घेण कालेन व्रजमच्युतः।**
**प्रियं विधास्यते पित्रोर्भगवान् सात्वतां पतिः ॥३४॥**

पदच्छेद— आगमिष्यति दीर्घेण कालेन व्रजम् अच्युतः।
प्रियम् विधास्यते पित्रोः भगवान् सात्वताम् पतिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आगमिष्यति | ८. | आयेंगे (और) | प्रियम् | १०. | प्रिय कार्य |
| दीर्घेण | ५. | थोड़े ही | विधास्यते | ११. | करेंगे |
| कालेन | ६. | दिनों में | पित्रोः | ६. | माता-पिता का |
| व्रजम् | ७. | व्रज में | भगवान् | ३. | भगवान् |
| अच्युतः । | ४. | श्रीकृष्ण | सात्वताम् | १. | यदुवंशियों के |
| | | | पतिः ॥ | २. | स्वामी |

श्लोकार्थ—यदुवंशियों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण थोड़े ही दिनों में व्रज में आयेंगे और माता-पिता का प्रिय कार्य करेंगे ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**हत्वा कंसं रङ्गमध्ये प्रतीपं सर्वसात्वताम् ।**
**यदाह वः समागत्य कृष्णः सत्यं करोति तत् ॥३५॥**

पदच्छेद— हत्वा कंसम् रङ्गमध्ये प्रतीपम् सर्व सात्वताम् ।
यत् आह वः समागत्य कृष्णः सत्यम् करोति तत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हत्वा | ७. | मार कर | यत् आह | ११. | जो वहाँ आने के बारे में कहा था |
| कंसम् | ४. | कंस को | वः | ८. | आपके पास |
| रङ्ग | ५. | रंग भूमि के | समागत्य | ९. | आकर |
| मध्ये | ६. | बीच | कृष्णः | १०. | श्रीकृष्ण ने |
| प्रतीपम् | ३. | द्रोही | सत्यम् | १३. | सत्य |
| सर्व | १. | सभी | करोति | १४. | करेंगे |
| सात्वताम् । | २. | यदुवंशियों के | तत् ॥ | १२. | उसे |

श्लोकार्थ—सभी यदुवंशियों के द्रोही कंस को रंगभूमि के बीच मार कर आपके पास आकर श्रीकृष्ण ने जो वहाँ आने के बारे में कहा था, उसे सत्य करेंगे ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**मा खिद्यतं महाभागौ द्रक्ष्यथः कृष्णमन्तिके ।**
**अन्तर्हृदि स भूतानामास्ते ज्योतिरिवैधसि ॥३६॥**

पदच्छेद— मा खिद्यतम् महाभागौ द्रक्ष्यथः कृष्णम् अन्तिके ।
अन्तः हृदि सः भूतानाम् आस्ते ज्योतिः इव एधसि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मा | २. | मत | अन्तः हृदि | ९. | हृदय में (वैसे ही) |
| खिद्यतम् | ३. | खेद कीजिये (आप) | सः | ७. | वे |
| महाभागौ | १. | हे महाभाग्यशालियो ! | भूतानाम् | ८. | प्राणियों के |
| द्रक्ष्यथः | ६. | देखेंगे | आस्ते | १०. | विराजमान रहते हैं |
| कृष्णम् | ४. | श्रीकृष्ण को | ज्योतिः | १२. | अग्नि रहता है |
| अन्तिके । | ५. | समीप में | इव एधसि ॥ | ११. | जैसे काष्ठ में |

श्लोकार्थ—हे भाग्यशालियो ! खेद मत कीजिये । आप श्रीकृष्ण को समीप में देखेंगे । वे प्राणियों के हृदय में वैसे ही विराजमान हैं जैसे काष्ठ में अग्नि रहती है ॥

## सप्तत्रिंशः श्लोकः

**न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चिन्नाप्रियो वास्त्यमानिनः ।**
**नोत्तमो नाधमो नापि समानस्यासमोऽपि वा ॥३७॥**

पदच्छेद— नहि अस्य अस्ति प्रियः कश्चित् न अप्रियः वा अस्ति अमानिनः ।
न उत्तमः न अधमः न अपि समानस्य असमः अपि वा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नहि अस्य | २. | उनका न तो | न उत्तमः | ६. | न श्रेष्ठ है |
| अस्ति | ५. | है और | न अधम | १०. | न अधम है |
| प्रियः | ४. | प्रिय | न अपि | १४. | नहीं है |
| कश्चित् | ३. | कोई | समानस्य | ८. | सब के लिये समान होने से |
| न अप्रियः वा | ६. | न अप्रिय अथवा | असमः | १२. | विषम |
| अस्ति | ७. | है | अपि | १३. | भी |
| अमानिनः । | १. | अभिमान न होने से | वा ॥ | ११. | अथवा |

श्लोकार्थ—अभिमान न होने से उनका न तो कोई प्रिय है। अथवा न अप्रिय है। न श्रेष्ठ है, न अधम है, अथवा सब के लिये समान होने से विषम भी नहीं है ॥

## अष्टत्रिंशः श्लोकः

**न माता न पिता तस्य न भार्या न सुतादयः ।**
**नात्मीयो न परश्चापि न देहो जन्म एव च ॥३८॥**

पदच्छेद— न माता न पिता तस्य न भार्या न सुत आदयः ।
न आत्मीयः न परः च अपि न देहः जन्म एव च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न माता | २. | न माता | न आत्मीयः | ८. | न अपना |
| न पिता | ३. | न पिता | न परः | ६. | न पराया |
| तस्य | १. | उनका | न अपि | ७. | और |
| न भार्या | ४. | न पत्नी | न देहः | १०. | न शरीर तथा |
| न सुत | ५. | न पुत्र | जन्म | ११. | जन्म |
| आदयः । | ६. | आदि हैं | एव च ॥ | १२. | ही है |

श्लोकार्थ—उनका न माता, न पिता, न पत्नी, न पुत्र आदि हैं। और न अपना, न पराया, न शरीर तथा जन्म ही है ॥

# एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

**न चास्य कर्म वा लोके सदसन्मिश्रयोनिषु ।**
**क्रीडार्थः सोऽपि साधूनां परित्राणाय कल्पते ॥३६॥**

पदच्छेद— न च अस्य कर्म वा लोके सद् असत् मिश्र योनिषु ।
क्रीडार्थः सः अपि साधूनाम् परित्राणाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| न च | ३. नहीं है | क्रीडार्थः | ६. लीला के लिये |
| अस्य कर्म | २. उनका कोई कर्म | सः | ५. वे |
| वा लोके | १. अथवा लोक में | अपि | ४. फिर भी |
| सद असत् | ६. सात्त्विक-असात्त्विक | साधूनाम् | ६. साधुओं की |
| मिश्र | १०. एवम् मिश्र आदि | परित्राणाय | ७. रक्षा के निमित्त और |
| योनिषु । | ११. मनुष्य योनियों में | कल्पते ॥ | १२. शरीर धारण करते हैं |

श्लोकार्थ—अथवा लोक में उनका कोई कर्म नहीं है। फिर भी वे साधुओं की रक्षा के निमित्त और लीला के लिये सात्त्विक-असात्त्विक एवम् मिश्र आदि मनुष्य योनियों में शरीर धारण करते हैं ॥

# चत्वारिंशः श्लोकः

**सत्त्वं रजस्तम इति भजते निर्गुणो गुणान् ।**
**क्रीडन्नतीतोऽत्र गुणैः सृजत्यवति हन्त्यजः ॥४०॥**

पदच्छेद— सत्त्वम् रजःतमः इति भजते निर्गुणः गुणान् ।
क्रीडन् अतीतः अत्र गुणैः सृजति अवति हन्ति अजः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सत्त्वम् | २. सत्त्व | क्रीडन् | १०. क्रीडा के लिये |
| रजःतमः | ३. रज और तम | अतीतःअत्र | ६. परे होने पर भी यहाँ |
| इति | ४. इन | गुणैः | ८. गुणों से |
| भजते | ६. स्वीकार करते हैं (तथा) | सृजति | ११. सृष्टि |
| निर्गुणः | १. निर्गुण होने पर भी वे | अवति हन्ति | १२. रक्षा और संहार करते हैं |
| गुणान् । | ५. गुणों को | अजः ॥ | ७. अजन्मा एवम् |

श्लोकार्थ—निर्गुण होने पर भी वे सत्त्व, रज और तम इन गुणों को स्वीकार करते हैं। तथा अजन्मा एवम् गुणों से परे होने पर भी यहाँ क्रीडा के लिये सृष्टि, रक्षा और संहार करते हैं ॥

# एकचत्वारिंशः श्लोकः

**यथा भ्रमरिकादृष्ट्या भ्राम्यतीव महीयते ।**
**चित्ते कर्तरि तत्रात्मा कर्तेवाहंधिया स्मृतः ॥४१॥**

पदच्छेद— यथा भ्रमरिका दृष्ट्या भ्राम्यती इव महीयते ।
चित्ते कर्तरि तत्र आत्मा कर्ता इव अहम्धिया स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यथा | १. | जैसे | चित्ते | ६. | चित्त में |
| भ्रमरिका | २. | घूमने वाली | कर्तरितत्र | ८. | वैसे ही वहाँ |
| दृष्ट्या | ३. | दृष्टि से | आत्मा | १२. | जीव अपने को |
| भ्राम्यती | ५. | घूमती हुई | कर्ता इव | १३. | कर्ता के समान |
| इव | ६. | सी | अहम् | १०. | अहम् |
| मही | ४. | पृथ्वी | धिया | ११. | बुद्धि होने से |
| यते । | ७. | जान पड़ती है | स्मृतः ॥ | १४. | मान लेता है |

श्लोकार्थ—जैसे घूमने वाली दृष्टि से पृथ्वी घूमती हुई, सी जान पड़ती है । वैसे ही यहाँ चित्त में अहम् बुद्धि होने से जीव अपने को कर्ता के समान मान लेता है ॥

# द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

**युवयोरेव नैवायमात्मजो भगवान् हरिः ।**
**सर्वेषामात्मजो ह्यात्मा पिता माता स ईश्वरः ॥४२॥**

पदच्छेद— युवयोः एव न एव अयम् आत्मजः भगवान् हरिः ।
सर्वेषाम् आत्मजः हि आत्मा पिता, माता सः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| युवयोः | ४. | आप दोनों के | सर्वेषाम् | ६. | सभी के |
| एव | ५. | ही | आत्मजः | १०. | पुत्र |
| न एव | ७. | नहीं हैं | हि आत्मा | ११. | आत्मा |
| अयम् | १. | ये | पिता | १२. | पिता |
| आत्मजः | ६. | पुत्र | माता | १३. | माता और |
| भगवान् | २. | भगवान् | सः | ८. | वे |
| हरिः । | ३. | श्रीकृष्ण | ईश्वरः ॥ | १४. | स्वामी हैं |

श्लोकार्थ—ये भगवान् श्रीकृष्ण आप दोनों के ही पुत्र नहीं हैं । वे सभी के पुत्र, आत्मा, पिता, माता और स्वामी हैं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**दृष्टं श्रुतं भूतभवद् भविष्यत् स्थास्नुश्चरिष्णुर्महदल्पकं च।**
**विनाच्युताद् वस्तु तरां न वाच्यं सर्वं एव स परमार्थभूतः ॥४३॥**

पदच्छेद— दृष्टम् श्रुतम् भूतभवत् भविष्यत् स्थास्नुः चरिष्णुः महत् अल्पकम् च।
विना अच्युतात् वस्तुतराम् न वाच्यम् सः एव सर्वम् परमार्थ भूतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्टम् | १. | जो कुछ देखा या | विना | ८. | वह विना |
| श्रुतम् | २. | सुना जाता है वह | अच्युतात् | ९. | श्रीकृष्ण के |
| भूत-भवत् | ३. | भूत-वर्तमान या | वस्तुतराम् | १०. | कुछ वस्तु |
| भविष्यत् | ४. | भविष्य में हो (अथवा) | न वाच्यम् | ११. | कहलाने के योग्य नहीं है |
| स्थास्नुः चरिष्णुः | ५. | स्थावर या जङ्गम हो | सः एव | १३. | वे ही |
| महत् अल्पकम् | ७. | महान् या अल्प हो | सर्वम् | १२. | सब कुछ |
| च। | ६. | और | परमार्थ भूतः | १४. | परमार्थ सत्य हैं |

श्लोकार्थ—जो कुछ देखा या सुना जाता है। वह भूत-वर्तमान या भविष्य में हो। अथवा स्थावर-जङ्गम हो और महान् या अल्प हो। वह विना श्रीकृष्ण के कुछ वस्तु कहलाने के योग्य नहीं है। सब कुछ वे ही परमार्थ सत्य हैं ॥

## चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

**एवं निशा सा ब्रुवतोर्व्यतीता नन्दस्य कृष्णानुचरस्य राजन्।**
**गोप्यः समुत्थाय निरूप्य दीपान् वास्तून् समभ्यर्च्य दधीन्यमन्थन् ॥४४॥**

पदच्छेद— एवम् निशा सा ब्रुवतोः व्यतीता नन्दस्य कृष्णानुचरस्य राजन्।
गोप्यः समुत्थाय निरूप्य दीपान् वास्तून् समभ्यर्च्य दधीनि अमन्थन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | ५. | इस प्रकार | गोप्यः | ९. | गोपियाँ |
| निशा सा | ७. | यह रात्रि | समुत्थाय | १०. | उठकर |
| ब्रुवतोः | ६. | बात-चीत करते हुये | निरूप्य | १२. | जलाकर |
| व्यतीता | ८. | व्यतीत हो गई (तब) | दीपान् | ११. | दीपक |
| नन्दस्य | ४. | नन्द | वास्तून् | १३. | वास्तुदेव की |
| कृष्ण | २. | कृष्ण के | समभ्यर्च्य | १४. | पूजा करके |
| अनुचरस्य | ३ | सखा (उद्धव) और | दधीनि | १५. | दही |
| राजन्। | १. | हे परीक्षित्! | अमन्थन् ॥ | १६. | मथने लगीं |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! श्रीकृष्ण के सखा उद्धव और नन्द के इस प्रकार बात चीत करते हुये वह रात्रि व्यतीत हो गई। तब गोपियां उठकर दीपक जलाकर वास्तुदेव की पूजा करके दही मथने लगीं ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

ता दीपदीप्तैर्मणिभिर्विरेजू रज्जूर्विकर्षद्भुजकङ्कणस्रजः ।
चलन्नितम्बस्तनहारकुण्डलत्विषत्कपोलारुणकुङ्कुमाननाः ॥४५॥

पदच्छेद— ताः दीप दीप्तैः मणिभिः विरेजुः रज्जूःविकर्षद् भुजकङ्कण स्रजः ।
चलत् नितम्ब स्तन-हार कुण्डलत्विषत् कपोल अरुण कुङ्कुम आननाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताः दीप | १. वे दीपक की ज्योति से | चलत् | १०. हिल रहे थे |
| दीप्तैः | २. जगमगाते हुये | नितम्ब | ८. उनके नितम्ब |
| मणिभिः | ३. मणियों के समान | स्तन-हार | ९. स्तन और हार |
| विरेजुः | ४. शोभायमान हो रही थीं | कुण्डलत्विषत् | ११. कुण्डलों की कान्ति से |
| रज्जूः विकर्षद् | ५. रस्सी खींचते समय | कपोल अरुण | १२. कपोलों की लालिमा |
| भुजकङ्कण | ६. भुजाओं के कंगन और | कुङ्कुम | १३. कुङ्कुममण्डित |
| स्रजः । | ७. मालायें भली लग रही थीं | आननाः ॥ | १४. मुख की शोभा बढ़ा रही थी |

श्लोकार्थ—वे दीपक की ज्योति से जगमगाते हुये मणियों के समान शोभायमान हो रही थीं। रस्सी खींचते समय भुजाओं के कंगन और मालायें भली लग रही थीं। उनके नितम्ब, स्तन और हार हिल रहे थे। कुण्डलों की कान्ति से कपोलों की लालिमा कुङ्कुममण्डित मुख की शोभा को बढ़ा रही थी ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

उद्गायतीनामरविन्दलोचनं व्रजाङ्गनानां दिवमस्पृशद्ध्वनिः ।
दध्नश्च निर्मन्थनशब्दमिश्रितो निरस्यते येन दिशाममङ्गलम् ॥४६॥

पदच्छेद— उद्गायतीनाम् अरविन्द लोचनम् व्रजाङ्गनानाम् दिवम् अस्पृशत् ध्वनिः ।
दध्नः च निर्मन्थन शब्द मिश्रितः निरस्यते येन दिशाम् अमङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उद्गायनतीनाम् | ३. चरित्र का गान करती हुई | दध्नः च | ६. दही |
| अरविन्द | १. कमल | निर्मन्थन | ७. मथने के |
| लोचनम् | २. नयन (श्रीकृष्ण के) | शब्द | ८. शब्द से |
| व्रजाङ्गनानाम् | ४. व्रज बालाओं की | मिश्रितः | ९. मिल कर |
| दिवम् | १०. आकाश का | निरस्यते | १४. नष्ट हो रहा था |
| अस्पृशत् | ११. स्पर्श कर रही थी | येन दिशाम् | १२. जिससे दिशाओं का |
| ध्वनिः । | ५. ध्वनि | अमङ्गलम् ॥ | १३. अमङ्गल |

श्लोकार्थ—कमल नयन श्रीकृष्ण के चरित्र का गान करती हुई व्रजबालाओं की ध्वनि दही मथने के शब्द से मिल कर आकाश को स्पर्श कर रही थी। जिससे दिशाओं का अमङ्गल नष्ट हो रहा था ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**भगवत्युदिते सूर्ये नन्दद्वारि व्रजौकसः ।**
**दृष्टवा रथं शातकौम्भं कस्यायमिति चाब्रुवन् ॥४७॥**

पदच्छेद— भगवति उदिते सूर्ये नन्द द्वारि व्रज ओकसः ।
दृष्ट्वा रथम् शातकौम्भम् कस्य अयम् इति च अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भगवति | १. भगवान् | दृष्ट्वा | १०. देख कर |
| उदिते | ३. उदित होने पर | रथम् | ९. रथ को |
| सूर्ये | २. सूर्य के | शातकौम्भम् | ८. सोने के |
| नन्द | ४. नन्द के | कस्य | १२. किसका है |
| द्वारि | ५. द्वार पर | अयम् | ११. यह |
| व्रज | ६. व्रज की | इति च | १३. इस प्रकार |
| ओकसः । | ७. महिलायें | अब्रुवन् ॥ | १४. कहने लगीं |

श्लोकार्थ—भगवान् सूर्य के उदित होने पर नन्द के द्वार पर व्रज की महिलायें सोने के रथ को देखकर यह किसका है इस प्रकार कहने लगीं ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

**अक्रूर आगतः किं वा यः कंसस्यार्थसाधकः ।**
**येन नीतो मधुपुरीं कृष्णः कमललोचनः ॥४८॥**

पदच्छेद— अक्रूरः आगतः किम् वा यः कंसस्य अर्थ साधकः ।
येन नीतः मधु पुरीम् कृष्णः कमल लोचनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अक्रूरः | २. अक्रूर | येन | ७. जिसने |
| आगतः | ३. आया है | नीतः | १२. पहुँचा दिया था |
| किम् वा | १. अथवा क्या | मधु पुरीम् | ११. मथुरा |
| यः कंसस्य | ४. जो कंस का | कृष्णः | १०. भगवान् श्रीकृष्ण को |
| अर्थ | ५. प्रयोजन | कमल | ८. कमल |
| साधकः । | ६. सिद्ध करने वाला था | लोचनः ॥ | ९. नयन |

श्लोकार्थ—अथवा क्या अक्रूर आया है । जो कंस का प्रयोजन सिद्ध करने वाला था । जिसने कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण को मथुरा पहुँचा दिया था ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

किं साधयिष्यत्यस्माभिर्भर्तुः प्रेतस्य निष्कृतिम् ।
इति स्त्रीणां वन्दतीनामुद्धवोऽगात् कृताह्निकः ॥४६॥

पदच्छेद—

किम् साधयिष्यति अस्माभिः भर्तुः प्रेतस्य निष्कृतिम् ।
इति स्त्रीणाम् वदन्तीनाम् उद्धवः अगात् कृत आह्निकः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | १. | क्या (वह अब) | इति | ८. | इस प्रकार |
| साधयिष्यति | ६. | करेगा | स्त्रीणाम् | ७. | स्त्रियाँ |
| अस्माभिः | २. | हमें ले जाकर | वदन्तीनाम् | ९. | बात चीत कर रही थीं कि |
| भर्तुः | ४. | स्वामी कंस का | उद्धवः | ११. | उद्धव जी |
| प्रेतस्य | ३. | अपने मरे हुये | अगात् | १२. | आ पहुँचे |
| निष्कृतिम् । | ५. | पिण्डदान | कृतआह्निकः | १०. | नित्य कर्म से निवट कर |

श्लोकार्थ—क्या वह अब हमें ले जाकर अपने मरे हुये स्वामी का पिण्ड दान करेगा । स्त्रियाँ इस प्रकार बात चीत कर रही थीं कि नित्य कर्म से निबट कर उद्धव जी आ पहुँचे ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
नन्दशोकापनयनं नाम षट्चत्वारिंशः अध्यायः ॥४६॥

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## सप्तचत्वारिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—

तं वीक्ष्य कृष्णानुचरं व्रजस्त्रियः,
प्रलम्बबाहुं नवकञ्जलोचनम् ।
पीताम्बरं पुष्करमालिनं लस-,
न्मुखारविन्दं मणिमृष्टकुण्डलम् ॥१॥

पदच्छेद—

तम् वीक्ष्य कृष्ण अनुचरम् व्रजस्त्रियः,
प्रलम्ब बाहुम् नव कञ्ज लोचनम् ।
पीताम्बरम् पुष्कर मालिनम् लसत्,
मुखार विन्दम् मणि मृष्ट कुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तम् | १८. | उस उद्धव को | पीताम्बरम् | ७. | पीला वस्त्र और |
| वीक्ष्य | १९. | देखा | पुष्करम् | ८. | कमल पुष्प की |
| कृष्ण | १६. | श्रीकृष्ण के | मालिनम् | ९ | माला पहने हुये |
| अनुचरम् | १७. | सेवक | लसत् | १३. | शोभायमान |
| व्रज | १. | व्रज की | मुख | १४. | मुख |
| स्त्रियः | २. | स्त्रियों ने | अरविन्दम् | १५. | कमल वाले |
| प्रलम्ब | ३. | लम्बी | मणि | १०. | मणि |
| बाहुम् | ४. | भुजाओं वाले | मृष्ट | ११. | जटित |
| नव कञ्ज | ५. | नूतन कमल दल के समान | कुण्डलम् ॥ | १२. | कुण्डलों से |
| लोचनम् । | ६. | नेत्र वाले | | | |

श्लोकार्थ—व्रज की स्त्रियों ने लम्बी भुजाओं वाले नूतन कमल दल के समान नेत्र वाले पीला वस्त्र और कमल पुष्प की माला पहने हुये, मणि जटित कुण्डलों से शोभायमान श्रीकृष्ण के सेवक उस उद्धव को देखा ॥

## द्वितीयः श्लोकः

**शुचिस्मिताः कोऽयमपीच्यदर्शनः कुतश्च कस्याच्युतवेषभूषणः ।**
**इति स्म सर्वाः परिवव्रुरुत्सुकास्तमुत्तमश्लोकपदाम्बुजाश्रयम् ॥२॥**

पदच्छेद— शुचिस्मिताः कः अयम् अपीच्य दर्शनः कुतः च कस्य अच्युत वेषभूषणः ।
इति स्म सर्वाः परिवव्रुः उत्सुकाः तम् उत्तमश्लोक पदअम्बुज आश्रयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शुचिस्मिताः | ९. | पवित्र मुसकान वाली | इति स्म | ८. | इस प्रकार कहती हुईं |
| कः अयम् | ५. | कौन है यह | सर्वाः | १०. | सभी गोपियाँ |
| अपीच्य | ४. | बहुत सुन्दर हैं | परिवव्रुः | १६. | घेर कर खड़ी हो गईं |
| दर्शनः | ३. | देखने में | उत्सुकाः | ११. | उत्सुक होकर |
| कुतः च | ६. | कहाँ से आया है | तम् | १५. | उस (उद्धव) को |
| कस्य | ७. | किसका दूत है | उत्तमश्लोक | १२. | श्रीकृष्ण के |
| अच्युत | १. | श्रीकृष्ण जैसी | पदअम्बुज | १३. | चरण कमलों के |
| वेषभूषणः । | २. | वेषभूषा धारण किये हैं (तथा) | आश्रयम् ॥ | १४. | आश्रित |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण जैसी वेषभूषा धारण किये हैं। तथा देखने में बहुत सुन्दर हैं। कौन है यह कहाँ से आया है। किसका दूत है। इस प्रकार कहती हुई पवित्र मुसकान वाली सभी गोपियाँ उत्सुक होकर श्रीकृष्ण के चरण कमलों के आश्रित उस उद्धव को घेर कर खड़ी हो गईं ॥

## तृतीयः श्लोकः

**तं प्रश्रयेणावनताः सुसत्कृतं सव्रीडहासेक्षणसूनृतादिभिः ।**
**रहस्यपृच्छन्नुपविष्टमासने विज्ञाय सन्देशहरं रमापतेः ॥३॥**

पदच्छेद— तम् प्रश्रयेण अवनताः सुसत्कृतम् सव्रीडहास ईक्षण सुनृत आदिभिः ।
रहसि अपृच्छन् नु उपविष्टम् आसने विज्ञाय सन्देश हरम् रमापतेः ॥

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शब्दार्थ— तम् | ९. | उनका | रहसि | ११. | एकान्त में |
| प्रश्रयेण | ४. | विनय से | अपृच्छन् नु | १४. | पूछने लगीं |
| अवनताः | ५. | झुक कर | उपविष्टम् | १३. | बैठे हुये उनसे |
| सुसत्कृतम् | १०. | सत्कार किया (और) | आसने | १२. | आसन पर |
| सव्रीडहास | ६. | सलज्ज-हास्य | विज्ञाय | ३. | जान कर (गोपियों ने) |
| ईक्षण सूनृत | ७. | चितवन मधुरवाणी | सन्देशहरम् | २. | सन्देश-वाहक |
| आदिभिः । | ८. | आदि से | रमापतेः ॥ | १. | लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण का |

श्लोकार्थ—लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण का सन्देश-वाहक जान कर गोपियों ने विनय से झुक कर सलज्ज-हास्य, चितवन, मधुरवाणी आदि से उनका सत्कार किया। और एकान्त में आसन पर बैठे हुये उनसे पूछने लगीं ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**जानीमस्त्वां यदुपतेः पार्षदं समुपागतम् ।**
**भर्त्रेह प्रेषितः पित्रोर्भवान् प्रियचिकीर्षया ।।४।।**

पदच्छेद— जानीमः त्वाम् यदुपतेः पार्षदः सम्उपागतम् ।
भर्त्रा इह प्रेषितः पित्रोः भवान् प्रिय चिकीर्षया ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जानीमः | ५. समझती हैं | इह | ११. यहाँ |
| त्वाम् | २. आपको (हम) | प्रेषितः | १२. भेजा है |
| यदुपतेः | ३. यदुनाथ का | पित्रोः | ७. माता-पिता का |
| पार्षदः | ४. सेवक | भवान् | १०. आप को |
| सम्उपागतम् । | १. यहाँ आये हुये | प्रिय | ८. प्रिय |
| भर्त्रा | ६. स्वामी ने | चिकीर्षया ।। | ९. करने की इच्छा |

श्लोकार्थ—यहाँ आये हुये आप को हम यदुनाथ का सेवक समझती हैं । स्वामी ने माता-पिता का प्रिय करने की इच्छा से आपको यहाँ भेजा है ।।

## पञ्चमः श्लोकः

**अन्यथा गोव्रजे तस्य स्मरणीयं न चक्ष्महे ।**
**स्नेहानुबन्धो बन्धूनां मुनेरपि सुदुस्त्यजः ।।५।।**

पदच्छेद— अन्यथा गोव्रजे तस्य स्मरणीयम् न चक्ष्महे ।
स्नेह अनुबन्धः बन्धूनाम् मुनेः अपि सुदुस्त्यजः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्यथा | १. अन्यथा | स्नेह | ८. स्नेह |
| गोव्रजे | २. नन्द गाँव में | अनुबन्धः | ९. बन्धन तो |
| तस्य | ३. उनके | बन्धूनाम् | ७. सगे सम्बन्धियों का |
| स्मरणीयम् | ४. स्मरण करने योग्य कोई वस्तु | मुनेः | १०. मुनि के लिये |
| न | ६. नहीं देती है | अपि | ११. भी |
| चक्ष्महे । | ५. हमें दिखाई | सुदुस्त्यजः ।। | १२. कठिनाई से त्यागने योग्य होता है |

श्लोकार्थ—अन्यथा नन्द गाँव में उनके स्मरण करने योग्य कोई वस्तु हमें दिखाई नहीं देती है । सगे सम्बन्धियों का स्नेह बन्धन तो मुनि के लिये भी कठिनाई से त्यागने योग्य होता है ।।

## षष्ठः श्लोकः

**अन्येष्वर्थकृता मैत्री यावदर्थविडम्बनम् ।**
**पुम्भिः स्त्रीषु कृता यद्वत् सुमनस्स्विव षट्पदैः ॥६॥**

पदच्छेद— अन्येषु अर्थ कृता मैत्री यावत् अर्थ विडम्बनम् ।
पुम्भिः स्त्रीषु कृता यद्वत् सुमनस्सु इव षट्पदैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्येषु | १. दूसरों के साथ | | पुम्भिः | १३. | पुरुषों का |
| अर्थ | २. प्रयोग वश | | स्त्रीषु | १२. | स्त्रियों से |
| कृता | ३. की गई | | कृता | १४. | प्रेम सम्बन्ध रहता |
| मैत्री | ४. मित्रता तभी तक रहती है | | यद्वत् | ८. | इसी प्रकार |
| यावत् | ५. जब-तक | | सुमनस्सु | ९. | पुरुषों से |
| अर्थ | ६. स्वार्थ का | | इव | ११. | समान |
| विडम्बनम् । | ७. सम्बन्ध रहता है | | षट्पदैः | १०. | भौंरों के |

श्लोकार्थ—दूसरों के साथ प्रयोजन वश की गई मित्रता तभी-तक रहती है, जब-तक स्वार्थ का सम्वन्ध रहता है। इसी प्रकार पुरुषों से भौंरों के समान पुरुषों का और स्त्रियों का प्रेम सम्बन्ध रहता है ॥

## सप्तमः श्लोकः

**निस्स्वं त्यजन्ति गणिका अकल्पं नृपतिं प्रजाः ।**
**अधीतविद्या आचार्यमृत्विजो दत्तदक्षिणम् ॥७॥**

पदच्छेद— निस्स्वं त्यजन्ति गणिकाः अकल्पं नृपतिं प्रजाः ।
अधीत विद्याः आचार्यम् ऋत्विजः दत्त दक्षिणम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| निस्स्वम् | १. धनहीन पुरुष को | अधीत | ८. | पढ़ने पर (शिष्य) |
| त्यजन्ति | ६. त्याग देती हैं | विद्याः | ७. | विद्यायें |
| गणिकाः | २. वेश्यायें और | आचार्यम् | ९. | आचार्य को (तथा) |
| अकल्पम् | ३. असमर्थ | ऋत्विजः | १२. | ऋत्विज त्याग देते हैं |
| नृपतिम् | ४. राजा को | दत्त | ११. | दे देने पर (यजमान को) |
| प्रजाः । | ५. प्रजायें | दक्षिणम् | १०. | दक्षिणा |

श्लोकार्थ—धनहीन पुरुषों को वेश्यायें और असमर्थ राजा को प्रजायें त्याग देती हैं विद्यायें पढ़ लेने पर शिष्य आचार्य को तथा दक्षिणा दे देने पर यजमान को ऋत्विज त्याग देते हैं ॥

## अष्टमः श्लोकः

**खगा वीतफलं वृक्षं भुक्त्वा चातिथयो गृहम् ।**
**दग्धं मृगास्तथारण्यं जारो भुक्त्वा रतां स्त्रियम् ॥८॥**

पदच्छेद— खगाः वीत फलम् वृक्षम् भुक्त्वा च अतिथयः गृहम् ।
दग्धम् मृगाः तथा अरण्यम् जारः भुक्त्वा रताम् स्त्रियम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| खगाः | १. पक्षी | दग्धम् | ९. जल जाने पर |
| वीत | ३. समाप्त हो जाने पर | मृगाः | ८. पशु |
| फलम् | २. फल | तथा | ११. तथा |
| वृक्षम् | ४. वृक्ष को | अरण्यम् | १०. वन को |
| भुक्त्वा | ७. भोजन कर लेने पर | जारः | १२. जार पुरुष |
| च | ५. और | भुक्त्वा | १३. भोग कर लेने पर |
| अतिथयः | ६. अतिथि लोग | रताम् | १४. अनुरक्त |
| गृहम् । | ८. (खिलाने वाले के) घर को | स्त्रियम् ॥ | १५. स्त्रियों को (छोड़ देता है) |

श्लोकार्थ—पक्षी फल समाप्त हो जाने पर वृक्ष को, अतिथि लोग भोजन कर लेने पर खिलाने वाले के घर को, पशु जल जाने पर वन को तथा जार पुरुष भोग कर लेने पर अनुरक्त स्त्रियों को छोड़ देता है ॥

## नवमः श्लोकः

**इति गोप्यो हि गोविन्दे गतवाक्कायमानसाः ।**
**कृष्णदूते व्रजं याते उद्धवे त्यक्तलौकिकाः ॥९॥**

पदच्छेद— इति गोप्यः हि गोविन्दे गत वाक् काय मानसाः ।
कृष्ण दूते व्रजे याते उद्धवे त्यक्त लौकिकाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | कृष्णदूते | ७. श्रीकृष्ण के दूत |
| गोप्यः हि | ६. गोपियाँ | व्रजे | ९. व्रज में |
| गोविन्दे | ४. श्रीकृष्ण | याते | १०. आने पर |
| गत | ५. तल्लीन | उद्धवे | ८. उद्धव के |
| वाक्काय | २. वाणी, शरीर | त्यक्त | १२. छोड़ चुकी थीं ॥ |
| मानसाः । | ३. और मन से | लौकिकाः ॥ | ११. लौकिक मर्यादा को |

श्लोकार्थ—इस प्रकार वाणी, शरीर और मन से श्रीकृष्ण में तल्लीन गोपियां श्रीकृष्ण के दूत उद्धव के व्रज में आने पर लौकिक मर्यादा को छोड़ चुकी थीं ॥

## दशमः श्लोकः

**गायन्त्यः प्रियकर्माणि रुदत्यश्च गतह्रियः ।**
**तस्य संस्मृत्य संस्मृत्य यानि कैशोरबाल्ययोः ॥१०॥**

पदच्छेद— गायन्त्यः प्रिय कर्माणि रुदत्यः च गत ह्रियः ।
तस्य संस्मृत्य संस्मृत्य यानि कैशोर बाल्ययोः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गायन्त्यः | ८. | गाने लगीं | तस्य | १. | श्रीकृष्ण ने |
| प्रिय कर्माणि | ५. | प्रिय कार्य किये थे | संस्मृत्य | ६. | उनका स्मरण |
| रुदत्यः | १२. | रोने लगीं | संस्मृत्य | ७. | कर करके (गोपियाँ) |
| च | ६. | और | यानि | ४. | जो |
| गतः | ११. | त्याग कर | कैशोर | ३. | किशोर अवस्था तक |
| ह्रियः । | १०. | लज्जा | बाल्ययोः ॥ | २. | बचपन से |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने बचपन से किशोरावस्था तक जो प्रिय कार्य किये थे, उनका स्मरण कर करके गोपियाँ गाने लगीं और लज्जा त्याग कर रोने लगीं ॥

## एकादशः श्लोकः

**काचिन्मधुकरं दृष्ट्वा ध्यायन्ती कृष्णसङ्गमम् ।**
**प्रियप्रस्थापितं दूतं कल्पयित्वेदमब्रवीत् ॥११॥**

पदच्छेद— काचित् मधुकरम् दृष्ट्वा ध्यायन्ती कृष्ण सङ्गमम् ।
प्रिय प्रस्थापितम् दूतम् कल्पयित्वा इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काचित् | ४. | कोई (गोपी) | प्रिय | ७. | प्रिय (श्रीकृष्ण का) |
| मधुकरम् | ५. | भौंरे को | प्रस्थापितम् | ८. | भेजा हुआ |
| दृष्ट्वा | ६. | देख कर (उसे) | दूतम् | ९. | दूत |
| ध्यायन्ती | ३. | ध्यान करती हुई | कल्पयित्वा | १०. | समझ कर |
| कृष्ण | १. | श्रीकृष्ण के | इदम् | ११. | यह |
| सङ्गमम् । | २. | मिलन का | अब्रवीत् ॥ | १२. | कहने लगीं |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के मिलन का ध्यान करती हुई कोई गोपी भौंरें को देख कर उसे प्रिय श्रीकृष्ण का भेजा हुआ दूत समझ कर यह कहने लगीं ॥

## द्वादशः श्लोकः

गोप्युवाच— मधुप कितवबन्धो मा स्पृशाङ्घ्रिं सपत्न्याः
कुचविलुलितमालाकुङ्कुमश्मश्रुभिर्नः ।
वहतु मधुपतिस्तन्मानिनीनां प्रसादं
यदुसदसि विडम्ब्यं यस्य दूतस्त्वमीदृक् ॥१२॥

पदच्छेद— मधुप कितवबन्धो मा स्पृश अङ्घ्रिम् सपत्न्याःकुच विलुलितमाला कुङ्कुमश्मश्रुभिः नः ।
वहतु मधुपतिः तत् मानिनी नाम् प्रसादम् यदुसदसि विडम्ब्यम् यस्य दूतःत्वम् ईदृक् ॥

| शब्दार्थ— मधुप | १. हे भ्रमर ! | वहतु | १६. वृथा ढोते हैं |
|---|---|---|---|
| कितवबन्धो | २. धूर्त का मित्र | मधुपतिः | ११. श्रीकृष्ण |
| मा स्पृश | ८. मत छू | तत मानिनीनाम् | १२. मथुरा की मानिनीनायिकाओं का |
| अङ्घ्रिम् | ७. पैरों को | प्रसादम् | १५. कुङ्कुमरूप प्रसाद को |
| सपत्न्याःकुच | ४. सौत के कुचों पर | यदुसदसि | १३. यदुवंशियों की सभा में |
| विलुलितमाला | ५. मसली गई माला के | विडम्ब्यम् | १४. उपहास करने योग्य |
| कुङ्कुमश्मश्रुभिः | ६. कुङ्कुम से लिप्त मूछों से | यस्य दूतःत्वम् | ९. जिनका दूत तू |
| नः । | ३. हमारी | ईदृक् ॥ | १०. ऐसा है (वे) |

श्लोकार्थ—हे भ्रमर ! धूर्त का मित्र ! हमारी सौत के कुचों पर मसली गई माला के कुङ्कुम से लिप्त मूंछों से पैरों को मत छू । जिनका दूत तू ऐसा है, वे श्रीकृष्ण मथुरा की मानिनी नायिकाओं का उपहास करने योग्य कुङ्कुम रूप प्रसाद को वृथा ढोते हैं ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

सकृदधरसुधां स्वां मोहिनीं पाययित्वा सुमनस इव सद्यस्तत्यजेऽस्मान् भवादृक् ।
परिचरति कथं तत्पादपद्मं तु पद्मा ह्यपि बत हृतचेता उत्तमश्लोकजल्पैः ॥१३॥

पदच्छेद—सकृत् अधर सुधाम् स्वाम् मोहिनीम् पाययित्वा सुमनस इव सद्यः तत्यजे अस्मान् भवादृक् ।
परिचरति कथम् तत् पादपद्मम् तु पद्मा हि अपि बत हृतचेताः उत्तमश्लोक जल्पैः ॥

| शब्दार्थ— सकृत् | १. उन्होंने एक बार | परिचरति | १२. सेवा करती रहती हैं |
|---|---|---|---|
| अधर सुधाम् | ३. अधरामृत | कथम् तत् | १०. कैसे उनके |
| स्वाम् मोहिनीम् | २. अपना मादक | पादपद्मम् | ११. चरण कमलों की |
| पाययित्वा | ४. पिला कर | तु पद्मा | ९. लक्ष्मी |
| सुमनसः इव | ५. मानों फूलों से रस लेकर | हि अपि | १५. उनका भी |
| सद्यः | ६. तत्काल उड़ जाने वाले | बत | १३. मालूम पड़ता है |
| तत्यजे अस्मान् | ८. हमें त्याग दिया | हृतचेताः | १६. चित्त चुरा लिया है |
| भवादृक् | ७. आपके समान | उत्तमश्लोक जल्पैः ॥ | १४. श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने |

श्लोकार्थ—उन्होंने एक बार अपना मादक अधरामृत पिला कर मानों फूलों से रस लेकर तत्काल उड़ जाने वाले आप के समान हमें त्याग दिया । लक्ष्मी कैसे उनके चरणों की सेवा करती रहती हैं । मालूम पड़ता है श्रीकृष्ण की मीठी बातों ने उनका भी चित्त चुरा लिया है ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**किमिह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वं यदूनामधिपतिमगृहाणामग्रतो नः पुराणम् ।
विजयसखसखीनां गीयतां तत्प्रसङ्गः क्षपितकुचरुजस्ते कल्पयन्तीष्टमिष्टाः ॥१४॥**

पदच्छेद—किम् इह बहु षडङ्घ्रे गायसि त्वम् यदूनाम् अधिपतिः अगृहाणाम् अग्रतः नः पुराणम् ।
विजय सख सखीनाम् गीयताम् तत् प्रसङ्गः क्षपित कुचरुजः ते कल्पयन्ति इष्टम् इष्टाः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| किं इह बहु | ७. क्यों यहाँ बहुत | विजय सख | ९ विजय के साथी श्रीकृष्ण की |
| षडङ्घ्रे | १. अरे भ्रमर ! | सखीनाम् | १०. मथुरा वासिनी सखियों के सामने |
| गायसि | ८. गुण-गान कर रहा है | गीयताम् | १२. गायनकर (उन्होंने) |
| त्वम् | २. तू | तत् प्रसङ्गः | ११. उनकी लीलाओं का |
| यदूनाम् अधिपतिम् | ६. यदुवंशियों के स्वामी का | क्षपित | १४. मिटा दिया है (वे) |
| अगृहाणाम् | ३ घर-द्वार से रहित | कुचरुजः | १३. उनके हृदय की पीड़ा को |
| अग्रतः नः | ४ हमारे आगे | ते कल्पयन्ति | १६. तुझे देंगी |
| पुराणम् । | ५. पुराने परिचित | इष्टमिष्टाः ॥ | १५. प्रसन्न होकर मुह मांगी वस्तुयें |

श्लोकार्थ—अरे भ्रमर ! घर-द्वार से रहित हमारे आगे पुराने परिचित यदुवंशियों के स्वामी का क्यों यहां बहुत गुण-गान कर रहा है । विजय के साथी श्रीकृष्ण की मथुरा वासिनी सखियों के सामने उनको लीलाओं का गायन कर, उन्होंने उनके हृदय की पीड़ा को मिटा दिया है । वे प्रसन्न होकर तुझे मुँह माँगी वस्तुयें देंगी ।

## पञ्चदशः श्लोकः

**दिवि भुवि च रसायां काः स्त्रियस्तद्दुरापाः कपटरुचिरहासभ्रूविजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरज उपास्ते यस्य भूतिर्वयं का अपि च कृपणपक्षे ह्युत्तमश्लोकशब्दः ॥१५॥**

पदच्छेद—दिवि भुवि च रसायाम् काः स्त्रियः तत् दुरापाः कपट रुचिर हास भ्रू विजृम्भस्य याः स्युः ।
चरणरजः उपास्ते यस्य भूतिः वयम् का अपि च कृपणपक्षे हि उत्तम श्लोक शब्दः ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| दिविभुवि | १. स्वर्ग में पृथ्वी में | स्युः । | १२. हैं |
| च रसायाम् | २. और पाताल में (ऐसी) | चरणरजः | १०. चरणों की धूलि की |
| काः स्त्रियः | ३. कौन स्त्रियाँ हैं | उपास्ते | ११. उपासना करती |
| तत् दुरापाः | ८. भगवान् के लिये दुर्लभ हों | यस्यभूतिः | ९. लक्ष्मी जिनकी |
| कपट रुचिर | ५. कपट भरी मनोहर | वयम् का | १३. उनके लिये हम कौन हैं |
| हास भ्रू | ६. मुसकान तथा भौहों के | अपि च | १४. किन्तु उनका |
| विजृम्भस्य | ७. मटकाने वाले | कृपणपक्षे हि | १६. कृपण पक्ष में ही है |
| याः । | ४. जो श्रीकृष्ण की | उत्तमश्लोकशब्दः | १५. उत्तम श्लोक यह नाम |

श्लोकार्थ—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में ऐसी कौन स्त्रियाँ हैं, जो भगवान् के लिये दुर्लभ हों । कपट भरी मनोहर मुसकान तथा भौहों को मटकाने वाले जिन श्रीकृष्ण के चरणों की धूली की उपासना लक्ष्मी करती हैं, उनके लिये हम कौन हैं । किन्तु उनका उत्तम श्लोक यह नाम कृपण पक्ष में ही है ॥

## षोडशः श्लोकः

**विसृज शिरसि पादं वेद्म्यहं चाटुकारैरनुनयविदुषस्तेऽभ्येत्य दौत्यैर्मुकुन्दात् ।**
**स्वकृत इह विसृष्टापत्यपत्यन्यलोका व्यसृजदकृतचेताः किं नु सन्धेयमस्मिन् ॥१६**

पदच्छेद—विसृज शिरसिपादम् वेद्मि अहम चाटुकारैः अनुनय विदुषः ते अभ्येत्य दौत्यैः मुकुन्दात् ।
स्वकृत इह विसृष्ट अपत्य पति अन्य लोकाः व्यसृजत् अकृत चेताः किम् न सन्धेयम् अस्मिन् ॥

| शब्दार्थ— | | | |
|---|---|---|---|
| विसृज | २. मत टेक | स्वकृत इह | १०. अपने लिये यहाँ |
| शिरसि पादम् | १. पैरों पर सिर | विसृज | १३. त्यागने वाली हम लोगों को |
| वेद्मि अहम् | ३. मैं जानती हूँ कि | अपत्य पति | ११. सन्तान, पति तथा |
| चाटुकारैः | ४. चापलूसी से | अन्यलोकाः | १२. दूसरे लोगों को |
| अनुनय | ५ मनाने में | व्यसृजत् | १४. छोड़कर चले गये |
| विदुषः ते | ५. तू पण्डित है | अकृतचेताः | ६. वे अकृतज्ञ हैं |
| अभ्येत्य | ८. आया है | किम् नु | १५. क्या |
| दौत्यैः | ७. दूतकर्म सीखकर | सन्धेयम् | १६. सन्धि करनी चाहिये |
| मुकुन्दात् । | ६. भगवान् श्रीष्ण के पास से | अस्मिन् ॥ | १६. उनसे |

श्लोकार्थ—पैरों पर सिर मत टेक मैं जानती हूँ कि चापलूसी से मनाने में तू पण्डित है। भगवान् श्रीकृष्ण के पास से दूत कर्म सीख कर आया है। वे अकृतज्ञ हैं। अपने लिये यहाँ सन्तान, पति तथा दूसरे लोगों को त्यागने वाली हम लोगों को छोड़ कर चले गये। क्या उनसे सन्धि करनी चाहिये ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**मृगयुरिव कपीन्द्रं विव्यधे लुब्धधर्मा स्त्रियमकृत विरूपां स्त्रीजितः कामयानाम् ।**
**बलिमपि बलिमत्त्वावेष्टयद् ध्वाङ्क्षवद् यस्तदलमसितसख्यैर्दुस्त्यजस्तत्कथार्थः१७**

पदच्छेद—मृगयुः इव कपीन्द्रम् विव्यथे लुब्ध धर्मा स्त्रियम् अकृत विरूपाम् स्त्री जितः कामयानाम् ।
बलिम् अपि बलिम् अत्त्वा आवेष्टयत् ध्वाङ्क्षवत यः तत् अलम् असित सख्यैः दुस्त्यजः तत् कथाअर्थः ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| मृगयुः इव | ३. व्याध के समान (छिपकर) | बलिम् अपि | १२. राजा बलि को भी |
| कपोन्द्रम् | ४. वानरराजबालि को | बलिम् अत्वा | ११. बलि खाकर भी |
| विव्यथे | ५. मार डाला था | आवेष्टयत् | १३. बाँध दिया था |
| लुब्धधर्मा | २. शिकारी | ध्वाङ्क्षवत् | १०. कौए के समान |
| स्त्रियम् | ७. स्त्री (शूर्पणखा) को | यः तत् | १. जिन्होंने |
| अकृतविरूपाम् | ६. विरूप कर दिया और | अलम्असितसख्यैः | १४. ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है |
| स्त्रीजितः | ८. स्त्री के वश में होकर | दुस्त्यजः तत् | १६. छोड़ देना कठिन है |
| कामयानाम् । | ६. कामना करती हुई | कथा अर्थः ॥ | १५. किन्तु उनकी चर्चा को |

श्लोकार्थ—उन्होंने शिकारी व्याध के समान छिपकर वानरराजबालि को मार डाला था। कामना करती हुई स्त्री सूर्पणखा को स्त्री के वश में होकर विरूप कर दिया और कौए के समान बलि खाकर भी राजा बलि को बाँध दिया था। ऐसे काले व्यक्ति से मित्रता व्यर्थ है। किन्तु उनकी चर्चा को छोड़ना कठिन है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**यदनुचरितलीलाकर्णपीयूषविप्रुट्सकृददनविधूतद्वन्द्वधर्मा विनष्टाः ।**
**सपदि गृहकुटुम्बं दीनमुत्सृज्य दीना बहव इह विहङ्गा भिक्षुचर्यां चरन्ति ॥१८॥**

पदच्छेद— यत् अनुचरित लीला कर्ण पीयूष विप्रुट् सकृत् अदन विधूत द्वन्द्वधर्माः विनष्टाः ।
सपदि गृह कुटुम्बम् दीनम् उत्सृज्य दीनाः बहवः इहविहङ्गाः भिक्षुचर्याम् चरन्ति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यत् अनुचरित | १. जिनको की हुई | सपदि | १०. शीघ्र ही |
| लीला | २. लीलाओं का | गृह | ११. घर और |
| कर्ण पीयूष | ३. कर्णामृत के | कुटुम्बम् दीनम् | १२. दुःखी परिवार को |
| विप्रुट् सकृत् | ४. एक कण का एक बार भी | उत्सृज्य | १३. छोड़ कर |
| अदन | ५ रसास्वादन कर लेता है उसके | दीनाः बहवः | ९. अकिञ्चन लोग बहुत से |
| विधूत | ७. धुले हुये के समान | इहविहङ्गाः | १४. यहाँ पक्षियों के समान |
| द्वन्द्वधर्माः | ६. राग-द्वेष आदि | भिक्षुचर्याम् | १५. भिक्षाटन |
| विनष्टाः । | ८. नष्ट हो जाते हैं (ऐसे) | चरन्ति ॥ | १६. करते हैं |

श्लोकार्थ—जिनकी की हुई लीलारूप कर्णामृत के एक कण का एक बार भी जो रसास्वादन कर लेता है, उसके राग-द्वेष आदि धुले हुये के समान नष्ट हो जाते हैं । ऐसे बहुत से अकिञ्चन लोग शीघ्र ही घर और दुःखी परिवार को छोड़ कर यहाँ पक्षियों के समान भिक्षाटन करते हैं ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**वयमृतमिव जिह्मव्याहृतं श्रद्दधानाः कुलिकरुतमिवाज्ञाः कृष्णवध्वो हरिण्यः ।**
**ददृशुरसकृदेतत्तन्नखस्पर्शतीव्रस्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यतामन्यवार्ता ॥१९॥**

पदच्छेद—वयम् ऋतम् इव जिह्म व्याहृतम् श्रद्दधानाः कुलिकरुतम् इव अज्ञाः कृष्णवध्वः हरिण्यः ।
ददृशुः असकृत् एतत् तत् नख स्पर्श तीव्र स्मररुज उपमन्त्रिन् भण्यताम् अन्य वार्ता ॥

| | | | |
|---|---|---|---|
| शब्दार्थ— वयम् | २. हम लोगों ने (श्रीकृष्ण की) | हरिण्यः । | ८. हरिणियाँ |
| ऋतम् इव | ३. सत्य के समान | ददृशुः असकृत् | १३. अनुभव किया |
| जिह्म व्याहृतम् | ४. कपट भरी बातों पर | एतत् तत् नख | १०. और उनके नख |
| श्रद्दधानाः | ५ श्रद्धा की | स्पर्शतीव्र | ११. स्पर्श से तीव्र |
| कुलिकरुतम् | ९. व्याध के गान पर विश्वास कर लेती है | स्मररुज | १२. काम पीडा का |
| इव | ६. जैसे | उपमन्त्रिन् | १४. हे दूत ! भ्रमर |
| अज्ञाः | १. भोली-भाली | भण्यताम् | १५. दूसरी कोई |
| कृष्णवध्वः | ७. कृष्णसार मृग की पत्नी | अन्य वार्ता ॥ | १६. बात कहो |

श्लोकार्थ—भोली-भाली हम लोगों ने श्रीकृष्ण की सत्य के समान कपट भरी बातों पर श्रद्धा की । जैसे कृष्ण सार मृग की पत्नी हरिणियाँ व्याध के गान पर विश्वास कर लेती हैं । और हमने उनके नख स्पर्श से तीव्र काम पीडा का अनुभव किया । हे दूत भ्रमर ! दूसरी कोई बात कहो ॥

## विंशः श्लोकः

**प्रियसख पुनरागाः प्रेयसा प्रेषितः किं वरय किमनुरुन्धे माननीयोऽसि मेऽङ्ग ।**
**नयसि कथमिहास्मान् दुस्त्यजद्वन्द्वपार्श्वं सततमुरसि सौम्य श्रीर्वधूःसाकमास्ते २०**

पदच्छेद—प्रियसख पुनः आगाः प्रेयसाप्रेषितः किम् वरय किम् अनुरुन्धे माननीयः असिमे अङ्ग ।
नयसि कथम् इह अस्मान् दुस्त्यज द्वन्द्वपार्श्वं सततम् उरसि सौम्य श्रीः वधूः साकम् आस्ते ।।

| शब्दार्थ— प्रियसख | १. प्रिय मित्र ! तुम | नयसि | ११. ले चलना चाहते हो |
|---|---|---|---|
| पुनः गाः | २. फिर लौट आये हो | कथम् इह | ९. क्या वहाँ पर |
| प्रेयसाप्रेषितः | ४. प्रियतम ने भेजा है | अस्मान् | १०. हमें |
| किम् | ३. क्या | दुस्त्यज | १३. लौटना कठिन है |
| वरय | ६. माँग लो | द्वन्द्वपार्श्वं | १२. उनके पास से |
| किम् अनुरुन्धे | ५. क्या चाहते हो | सततम् उरसि | १५ उनके वक्षः स्थल पर सदा |
| माननीयः असि | ८. माननीय हो | सौम्य श्रीःवधूः | १४. सौम्य उनकी पत्नी लक्ष्मी |
| मे अङ्ग । | ७ मेरे प्रिय भ्रमर तुम | साकम् आस्ते ।। | १६. साथ रहती हैं |

श्लोकार्थ—प्रिय मित्र ! तुम फिर लौट आये हो । क्या प्रियतम ने भेजा है । क्या चाहते हो माँग लो । मेरे प्रिय भ्रमर ! तुम माननीय हो । क्या वहाँ पर हमें ले चलना चाहते हो । उनके पास से लौटना कठिन है । सौम्य ! उनकी पत्नी लक्ष्मी उनके वक्षः स्थल पर सदा साथ रहती हैं ।।

## एकविंशः श्लोकः

**अपि बत मधुपुर्यामार्यपुत्रोऽधुनाऽऽस्ते स्मरति स पितृगेहान्सौम्य बन्धूंश्च गोपान्**
**क्वचिदपि स कथा नः किङ्करीणां गृणीते भुजमगुरुसुगन्धंमूर्ध्न्यधास्यत्कदानु २१**

पदच्छेद—अपि बत मधुपुर्याम् आर्यपुत्र अधुना आस्ते स्मरति सःपितृगेहान् सौम्य बन्धून् च गोपान् ।
क्वचित् अपि सः कथाः नः किङ्करीणाम् गृणीते भुजम् अगुरु सुगन्धम् मूर्ध्नि अधास्यत् कदा नु ।।

| शब्दार्थ—अपि बत | २. अच्छा क्या | क्वचित् | १२. कभी कुछ |
|---|---|---|---|
| मधुपुर्याम् | ५. मधुपुरी में | अपि सः | १० और वे |
| आर्यपुत्र | ३. आर्य पुत्र श्रीकृष्ण | कथाः | १३. बातें |
| अधुना | ४. इस समय | नःकिङ्करीणाम् | ११. हम दासियों की |
| आस्ते | ६. हैं (क्या) | गृणीते | १४. करते हैं क्या |
| स्मरति | ९ स्मरण करते हैं | भुजम् | १७. भुजा (हमारे) |
| सः पितृगेहान् | ७ वे पिता के घरों | अगुरु सुगन्धम् | १६. अगर के सुगन्ध के समान |
| सौम्य | १. हे सौम्य ! | मूर्ध्नि अधास्यत् | १८. सिर पर रखेंगे |
| बन्धून् च गोपान् । | ८. बन्धुओं और गौओं का | कदा नु ।। | १५. कब वे अपनी |

श्लोकार्थ—हे सौम्य ! अच्छा, आर्य पुत्र श्रीकृष्ण इस समय मधुपुरी में हैं क्या ? वे पिता के घरों बन्धुओं और गौओं को स्मरण करते हैं । और वे हम दासियों की कभी कुछ बातें करते हैं क्या ? कब वे अपनी अगर के सुगन्ध के समान भुजा हमारे सिर पर रखेंगे ।।

## द्वाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथोद्धवो निशम्यैवं कृष्णदर्शनलालसाः ।
सान्त्वयन् प्रियसन्देशैर्गोपीरिदमभाषत ॥२२॥

पदच्छेद— अथ उद्धवः निशम्य एवम् कृष्णदर्शन लालसाः ।
सान्त्वयन् प्रिय सन्देशैः गोपीः इदम् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अथ | १. | तदनन्तर | सान्त्वयन् | १०. | सान्त्वना देते हुये |
| उद्धवः | २. | उद्धव जी ने | प्रिय | ८. | प्रियतम के |
| निशम्य | ४. | सुन कर | सन्देशैः | ९. | सन्देशों से |
| एवम् | ३. | इस प्रकार | गोपीः | ७. | गोपियों को |
| कृष्ण दर्शन | ५. | कृष्ण दर्शन की | इदम् | ११. | यह |
| लालसाः । | ६. | लालसा वाली | अभाषत ॥ | १२. | कहा |

श्लोकार्थ—तदनन्तर उद्धव जी ने इस प्रकार सुन कर कृष्ण दर्शन की लालसा वाली गोपियों को प्रियतम के सन्देशों से सान्त्वना देते हुये यह कहा ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

उद्धव उवाच— अहो यूयं स्म पूर्णार्था भवत्यो लोकपूजिताः ।
वासुदेवे भगवति यासामित्यर्पितं मनः ॥२३॥

पदच्छेद— अहो यूयम् स्म पूर्णार्थाः भवत्यः लोक पूजिताः ।
वासुदेवे भगवति यासाम् इति अर्पितम् मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अहो | १. | अहा | वासुदेवे | १०. | श्रीकृष्ण को अपना |
| यूयम् स्म | २. | तुम लोग | भगवति | ९. | भगवान् |
| पूर्णार्थाः | ३. | कृत कृत्य हो गई हो | यासाम् | ७. | क्योंकि तुम लोगों ने |
| भवत्यः | ४. | तुम | इति | ८. | इस प्रकार |
| लोक | ५. | संसार में | अर्पितम् | १२. | समर्पित कर दिया है |
| पूजिताः । | ६. | पूजनीय हो | मनः ॥ | ११. | हृदय |

श्लोकार्थ—अह तुम लोग कृतकृत्य हो गई हो। तुम संसार में पूजनीय हो। क्योंकि तुम लोगों ने इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण को अपना हृदय समर्पित कर दिया है ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**दानव्रततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः ।**
**श्रेयोभिर्विविधैश्चान्यैः कृष्णे भक्तिर्हि साध्यते ॥२४॥**

पदच्छेद— दान व्रत तपः होम जप स्वाध्याय संयमैः ।
श्रेयोभिः विविधैः च अन्यैः कृष्णे भक्तिःहि साध्यते ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दान | १. दान | श्रेयोभिः | ९. कल्याण के |
| व्रत | २. व्रत | विविधैः | ११. अनेक साधनों से |
| तप | ३. तपस्या | च | ८. और |
| होम | ४. हवन | अन्यैः | १०. अन्य |
| जप | ५. जप | कृष्णे | १२. श्रीकृष्ण में |
| स्वाध्याय | ६. शास्त्रों का अध्ययन | भक्तिःहि | १३. भक्ति |
| संयमैः । | ७. संयम | साध्यते ॥ | १४. प्राप्त की है |

श्लोकार्थ—आप लोगों ने दान, व्रत, तपस्या, हवन, जप, शस्त्रों का अध्ययन, संयम और कल्याण अनेक साधनों से श्रीकृष्ण में भक्ति प्राप्त की है ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**भगवत्युत्तमश्लोके भवतीभिरनुत्तमा ।**
**भक्तिः प्रवर्तिता दिष्ट्या मुनीनामपि दुर्लभा ॥२५॥**

पदच्छेद— भगवति उत्तम श्लोके भवतीभिः अनुत्तमा ।
भक्तिःप्रवर्तितता विष्टचा मुनीनाम् अपि दुर्लभा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भगवति | ५. भगवान् श्रीकृष्ण में | भक्तिःप्रवर्तितता | ७. भक्ति प्राप्त की है जो |
| उत्तम | ३. पवित्र | दिष्टचा | १. भाग्य की बात है कि |
| श्लोके | ४. कीर्ति | मुनीनाम् | ८ मुनियों के लिये |
| भवतीभिः | २. आप लोगों ने | अपि | ९. भी |
| अनुत्तमा । | ६. सर्वोत्तम | दुर्लभा ॥ | १०. दुर्लभ है |

श्लोकार्थ—भाग्य की बात है कि आप लोगों ने पवित्र कीर्ति भगवान् श्रीकृष्ण में सर्वोत्तम भक्ति प्राप्त की है, जो मुनियों के लिये भी दुर्लभ है ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**दिष्ट्या पुत्रान् पतीन् देहान् स्वजनान् भवनानि च ।**
**हित्वावृणीत यूयं यत् कृष्णाख्यं पुरुषं परम् ॥२६॥**

पदच्छेद— दिष्टया पुत्रान् पतीन् देहान् स्वजनान् भवनानि च ।
हित्वा अवृणीत यूयम् यत् कृष्णाख्यम् पुरुषम् परम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दिष्टया | १. भाग्य की बात है कि | हित्वा | ६. छोड़कर |
| पुत्रान् | ३. अपने पुत्रों | अवृणीत | १४. वरण किया है |
| पतीन् | ४. पतियों | यूयम् | २. तुम लोगों ने |
| देहान् | ५. शरीरों | यत् | १०. जो कि |
| स्वजनान् | ६. सगे सम्बन्धियों | कृष्णाख्यम् | ११. श्रीकृष्ण नामक |
| भवनानि | ८. घरों को | पुरुषम् | १३. पुरुष को पति के रूप में |
| च । | ७. और | परम् ॥ | १२. परम |

श्लोकार्थ—भाग्य की बात है कि तुम लोगों ने अपने पुत्रों, पतियों, शरीरों, सगे सम्बन्धियों और घरों को छोड़कर श्रीकृष्ण नामक परम पुरुष को पति रूप में वरण किया है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**सर्वात्मभावोऽधिकृतो भवतीनामधोक्षजे ।**
**विरहेण महाभागा महान् मेऽनुग्रहः कृतः ॥२७॥**

पदच्छेद— सर्व आत्म भावः अधिकृतः भवतीनाम् अधोक्षजे ।
विरहेण महाभागाः महान् मे अनुग्रहः कृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्व | ५. सम्पूर्ण | विरहेण | २. (श्रीकृष्ण के) वियोग से |
| आत्म भावः | ६. आत्म भाव | महाभागाः | १. हे महाभाग्यवती गोपियों ! |
| अधिकृतः | ७ दिखाकर | महान् मे | ८. मेरे ऊपर बड़ी |
| भवतीनाम् | ३. आप लोगों ने | अनुग्रहः | ६. कृपा |
| अधोक्षजे । | ४. भगवान् के प्रति | कृतः ॥ | १०. की है |

श्लोकार्थ—हे भाग्यवती गोपियों ! श्रीकृष्ण के वियोग में आप लोगों ने भगवान् के प्रति सम्पूर्ण आत्म भाव दिखाकर मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**श्रूयतां प्रियसन्देशो भवतीनां सुखावहः ।**
**यमादायागतो भद्रा अहं भर्तू रहस्करः ॥२८॥**

पदच्छेद— श्रूयताम् प्रिय सन्देशः भवतीनाम् सुखावहः ।
यम् आदाय आगतः भद्राः अहम्भर्तुः रहस्करः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रुयताम् | ४. | सुनो जो | यम् आदाय | ७. | जिसे लेकर मैं |
| प्रिय | २. | प्रियतम का | आगतः | ८. | आया हूँ |
| सन्देशः | ३. | सन्देश | भद्राः | १. | हे कल्याणियो ! |
| भवतीनाम् | ५. | तुम लोगों को | अहम्भर्तुः | ९. | मैं स्वामी का |
| सुखावहः । | ६. | सुख देने वाला है (और) | रहस्करः ॥ | १०. | गुप्त काम करने वाला सेवक हूँ |

श्लोकार्थ—हे कल्याणियो ! प्रियतम का सन्देश सुनो । जो तुम लोगों को सुख देने वाला है । जिसे लेकर मैं आया हूँ । मैं स्वामी का गुप्त काम करने वाला सेवक हूँ ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**श्रीभगवानुवाच—भवतीनां वियोगो मे न हि सर्वात्मना क्वचित् ।**
**यथा भूतानि भूतेषु खं वाय्वग्निर्जलं मही ।**
**तथाहं च मनःप्राणभूतेन्द्रियगुणाश्रयः ॥२९॥**

पदच्छेद— भवतीनाम् वियोगः मे न हि सर्वात्मना क्वचित् ।
यथा भूतानि भूतेषु खम् वायु अग्निः जलम् मही ।
तथा अहम् च मनः प्राण भूत इन्द्रिय गुण-आश्रयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भवतीनाम् | २. | तुम लोगों का | खम्-वायु | ८. | आकाश-वायु |
| वियोगः मे | ३. | वियोग मुझसे | अग्निः जलम् | ९. | अग्नि, जल |
| न हि | ५. | नहीं हो सकता | मही । | १०. | पृथ्वी ये पाँचों |
| सर्वात्मना | १. | सबके आत्मा | तथा अहम् | १२. | उसी प्रकार मैं |
| क्वचित् । | ४. | कभी भी | च मनः | १३. | मन |
| यथा | ६. | जैसे | प्राण-भूत | १४. | प्राण-पञ्चभूत |
| भूतानि | ११. | भूत व्याप्त है | इन्द्रिय | १५. | इन्द्रिय और उनके |
| भूतेषु | ७. | सभी भौतिक पदार्थों में | गुण-आश्रयः ॥ | १६. | विषयों का आश्रय हूँ |

श्लोकार्थ—सबके आत्मा मुझसे तुम लोगों का वियोग कभी भी नहीं हो सकता । जैसे सभी भौतिक पदार्थों में आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पांचों भूत व्याप्त हैं उसी प्रकार मैं मन, प्राण, पञ्चभूत, इन्द्रिय और उनके विषयों का आश्रय हूँ ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**आत्मन्येवात्मनाऽऽत्मानं सृजे हन्म्यनुपालये ।**
**आत्ममायानुभावेन भूतेन्द्रियगुणात्मना ॥३०॥**

पदच्छेद— आत्मनि एव आत्मना आत्मानम् सृजे हन्मि अनुपालये ।
आत्ममाया अनुभावेन भूत इन्द्रिय गुण आत्मना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्मनि | ८. | अपने में | आत्म | १. | अपनी |
| एव | ९. | ही | माया | २. | माया के |
| आत्मना | १०. | अपने से | अनुभावेन | ३. | प्रभाव से |
| आत्मानम् | ११. | अपने को | भूत | ४. | भूत |
| सृजे | १२. | रचता | इन्द्रिय | ५. | इन्द्रिय और उनके |
| हन्मि | १४. | समेट लेता हूँ | गुण | ६. | विषयों के रूप में उनका |
| अनुपालये । | १३. | पालता (और) | आत्मना ॥ | ७. | आश्रय तथा निमित्त बनाकर |

श्लोकार्थ—अपनी माया के प्रभाव से भूत, इन्द्रिय और उनके विषयों के रूप में उनका आश्रय तथा निमित्त बनाकर अपने में ही अपने से अपने को रचता, पालता और समेट लेता हूँ ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**आत्मा ज्ञानमयः शुद्धो व्यतिरिक्तोऽगुणान्वयः ।**
**सुषुप्तिस्वप्नजाग्रद्भिर्मायावृत्तिभिरीयते ॥३१॥**

पदच्छेद— आत्मा ज्ञानमयः शुद्धः व्यतिरिक्तः अगुण अन्वयः ।
सुषुप्ति स्वप्न जाग्रद्भिः माया वृत्तिभिः ईयते ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्मा | १. | आत्मा | सुषुप्ति | ११. | सुषुप्ति रूप में |
| ज्ञानमयः | २. | ज्ञानस्वरूप | स्वप्न | १०. | स्वप्न और |
| शुद्धः | ३. | शुद्ध | जाग्रद्भिः | ९. | जाग्रत् |
| व्यतिरिक्तः | ४. | माया के कार्यों से पृथक् | माया | ७. | माया की |
| अगुण | ५. | निर्गुण तथा अपने | वृत्तिभिः | ८. | वृत्तियों के द्वारा |
| अन्वयः । | ६. | अवान्तर भेदों से रहित है वह | ईयते ॥ | १२. | प्रतीत होती है |

श्लोकार्थ—आत्मा ज्ञानस्वरूप, शुद्ध, माया के कार्यों से पृथक्, निर्गुण तथा अपने अवान्तर भेदों से रहित है। वह माया की वृत्तियों के द्वारा जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति रूप में प्रतीत होती है ॥

# द्वात्रिंशः श्लोकः

येनेन्द्रियार्थान् ध्यायेत मृषा स्वप्नवदुत्थितः ।
तन्निरुन्ध्यादिन्द्रियाणि विनिद्रः प्रत्यपद्यत ॥३२॥

पदच्छेद— येन इन्द्रिय अर्थान् ध्यायेत् मृषा स्वप्नवत् उत्थितः ।
तत् निरुन्ध्यात् इन्द्रियाणि विनिद्राः पत्यपद्यत ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| येन | १. जिससे | उत्थितः । | ११. उठा हो इस प्रकार |
| इन्द्रिय | २ इन्द्रियों के | तत् | ७. इसलिये |
| अर्थान् | ३ विषयों को | निरुन्ध्यात् | ६. रोक ले, जैसे |
| ध्यायेत | ६. समझे | इन्द्रियाणि | ८. इन्द्रियों को |
| मृषा | ५. मिथ्या | विनिद्रः | १०. सोकर |
| स्वप्नवत् | ४. स्वप्न के समान | प्रत्यपद्यत ।। | १२. मुझे प्राप्त करे |

श्लोकार्थ—जिससे इन्द्रियों के विषयों को स्वप्न के समान मिथ्या समझे। इसलिये इन्द्रियों को रोक ले, और जैसे सोकर उठा हो इस प्रकार मुझे प्राप्त कर ले ।।

# त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

एतदन्तः समाम्नायो योगः सांख्यं मनीषिणाम् ।
त्यागस्तपो दमः सत्यं समुद्रान्ता इवापगाः ॥३३॥

पदच्छेद— एतद् अन्तः समाम्नायः योगः सांख्यम् मनीषिणाम् ।
त्यागः तपः दमः सत्यम् समुद्र अन्ताः इव आपगाः ।।

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एतद् | ५. मेरी प्राप्ति में हेतु हैं | त्यागः तपः | ५. त्याग, तपस्या |
| अन्तः | ७. अन्त | दमः सत्यम् | ६. इन्द्रिय संयम और सत्य का |
| समाम्नायः | २. वेद | समुद्र | १२. समुद्र में इकट्ठा हो जाता है |
| योगः | ३. योगशास्त्र | अन्ताः | ११. अन्त में |
| सांख्यम् | ४. सांख्यशास्त्र | इव | ६. जैसे |
| मनीषिणाम् । | १. विद्वानों का | आपगाः ।। | १०. सभी नदियों का जल |

श्लोकार्थ—विद्वानों के वेद, योग शास्त्र, सांख्य शास्त्र, त्याग, तपस्या, इन्द्रिय संयम और सत्य का अन्त मेरी प्राप्ति में हेतु है। जैसे सभी नदियों का जल अन्त में समुद्र में इकट्ठा हो जाता है ।।

## चतुःस्त्रिंशः श्लोकः

**यत्त्वहं भवतीनां वै दूरे वर्ते प्रियो दृशाम् ।**
**मनसः सन्निकर्षार्थं मदनुध्यानकाम्यया ॥३४॥**

पदच्छेद— यत् तु अहम् भवतीनाम् वै दूरे वर्ते प्रियः दृशाम् ।
मनसः सन्निकर्ष अर्थम् मत् अनुध्यान काम्यया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यत् तु अहम् | ४. | मैं जो | मनसः | १०. | मन को |
| भवतीनाम् | १. | तुम्हारे | सन्निकर्ष | ११. | अपने पास पहुँचाने |
| वै दूरे | ५. | तुमसे दूर | अर्थम् | १२. | के लिये (ही करता हूँ) |
| वर्ते | ६. | रहता हूँ (वह) | मत् | ७. | मेरे |
| प्रियः | ३. | प्रिय | अनुध्यान | ८. | निरन्तर ध्यान की |
| दृशाम् । | २. | नयनों का | काम्यया ॥ | ९. | कामना से |

श्लोकार्थ—तुम्हारे नयनों का प्रिय मैं जो तुमसे दूर रहता हूँ, वह मेरे निरन्तर ध्यान की कामना से मन को अपने पास पहुँचाने के लिये ही करता हूँ ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**यथा दूरचरे प्रेष्ठे मन आविश्य वर्तते ।**
**स्त्रीणां च न तथा चेतः सन्निकृष्टेऽक्षिगोचरे ॥३५॥**

पदच्छेद— यथा दूर चरे प्रेष्ठे मनः आविश्य वर्तते ।
स्त्रीणाम् च न तथा चेतः सन्निकृष्टे अक्षिगोचरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यथा | ५. | जितना | स्त्रीणाम् | १. | स्त्रियों का |
| दूर चरे | ३. | दूर में रहने वाले | च न | १२. | नहीं लगता है |
| प्रेष्ठे | ४. | प्रियतम में | तथा | ८. | उतना (उनका) |
| मनः | २. | मन | चेतः | ९. | चित्त |
| आविश्य | ६. | निश्चल भाव से लगा | सन्निकृष्टे | ११. | रहने वाले (प्रियतम) में |
| वर्तते । | ७. | रहता है | अक्षिगोचरे ॥ | १०. | आँखों के सामने |

श्लोकार्थ—स्त्रियों का मन दूर में रहने वाले प्रियतम में जितना निश्चल भाव से लगा रहता है, उतना उनका चित्त आँखों के सामने रहने वाले प्रियतम में नहीं लगता है ॥

# षट्त्रिंशः श्लोकः

**मय्यावेश्य मनः कृत्स्नं विमुक्ताशेषवृत्ति यत् ।**
**अनुस्मरन्त्यो मां नित्यमचिरान्मामुपैष्यथ ॥३६॥**

पदच्छेद— मयि आवेश्य मनः कृत्स्नम् विमुक्त अशेष वृत्ति यत् ।
अनुस्मरन्त्यः माम् नित्यम् अचिरात् माम् उपैष्यथ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मयि आवेश्य | ६. | मुझ में लगा कर | अनुस्मरन्त्यः | ९. | स्मरण करती हुई तुम लोग |
| मनः | ५. | मन है उसे | माम् | ७. | मेरा |
| कृत्स्नम् | ४. | सम्पूर्ण | नित्यम् | ८. | नित्य |
| विमुक्त | २. | रहित | अचिरात् | १०. | शीघ्र |
| अशेष वृत्ति | १. | समस्त वृत्तियों से | माम् | ११. | मुझे |
| यत् । | ३ | जो | उपैष्यथ ॥ | १२. | प्राप्त हो जाओगी |

श्लोकार्थ—समस्त वृत्तियों से रहित जो सम्पूर्ण मन है उसे मुझमें लगा कर मेरा नित्य स्मरण करती हुई तुम लोग शीघ्र मुझे प्राप्त हो जाओगी ॥

# सप्तत्रिंशः श्लोकः

**या मया क्रीडता राव्यां वनेऽस्मिन् व्रज आस्थिताः ।**
**अलब्धरासाः कल्याण्यो माऽऽपुर्मद्वीर्यचिन्तया ॥३७॥**

पदच्छेद— या मया क्रीडता राव्याम् वने अस्मिन् व्रजे आस्थिताः ।
अलब्धरासाः कल्याण्यः मा आपुः मत् वीर्य चिन्तया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| याः | ५. | जो गोपियाँ | अलब्धरासाः | ८. | रासलीला में नहीं आ सकीं वे |
| मया क्रीडता | ४. | जब मैंने क्रीडा की थी (तब) | कल्याण्यः | १. | हे कल्याणियो ! |
| राव्याम् | ३. | रात्रि के समय | मा आपुः | १२. | मुझे प्राप्त हो गईं थीं |
| वने | २. | वृन्दावन में | मत् | ९. | मेरे |
| अस्मिन् व्रजे | ६. | इस व्रज में | वीर्य | १०. | पराक्रम का |
| आस्थिताः । | ७. | रह गईं थीं | चिन्तया ॥ | ११. | चिन्तन करने से |

श्लोकार्थ—हे कल्याणियो ! वृन्दावन में रात्रि के समय जब मैंने क्रीडा की थी तब जो गोपियाँ इस व्रज में रह गईं थीं, रासलीला में नहीं आ सकी थीं, वे मेरे पराक्रम का चिन्तन करने से मुझे प्राप्त हो गईं थीं ॥

## अष्टत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं प्रियतमादिष्टमाकर्ण्य व्रजयोषितः ।
ता ऊचुरुद्धवं प्रीतास्तत्सन्देशागतस्मृतीः ॥३८॥

पदच्छेद— एवम् प्रियतम आदिष्टम् आकर्ण्यं व्रज योषितः ।
ताः ऊचुः उद्धवम् प्रीताः तत् सन्देश आगत स्मृतीः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | १. | इस प्रकार | ताः | ५. | वे |
| प्रियतम | २. | प्रियतम का | ऊचुः | १२. | कहने लगी |
| आदिष्टम् | ३. | आदेश | उद्धवम् | ११. | उद्धव जी से |
| आकर्ण्य | ४. | सुनकर | प्रीताः | ८. | आनन्दित हुईं और |
| व्रज | ६. | व्रज की | तत् सन्देश | ९. | उनके सन्देश से |
| योषितः । | ७. | स्त्रियाँ | आगत स्मृतिः | १०. | स्मरण हो आने से |

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रियतम का आदेश सुनकर वे व्रज की स्त्रियाँ आनन्दित हुईं और उनके सन्देश से स्मरण हो आने से उद्धव जो से कहने लगीं ॥

## एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

गोप्य ऊचुः— दिष्ट्याहितो हतः कंसो यदूनां सानुगोऽघकृत् ।
दिष्ट्याऽऽप्तैर्लब्धसर्वार्थैः कुशल्यास्तेऽच्युतोऽधुना ॥३९॥

पदच्छेद — दिष्टचा अहितः हतः कंसः यदूनाम् स अनुगः अघकृत् ।
दिष्टचा आप्तैः लब्ध सर्वार्थैः कुशलीआस्ते अच्युत अधुना ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्टचा | १. | भाग्य से | दिष्टचा | ८. | भाग्य से |
| अहितः | ३. | शत्रु | आप्तैः | ९. | गुरुजनों के |
| हतः | ७. | मारा गया | लब्ध | ११. | पूर्ण हो गयी |
| कंसः | ५. | कंस | सर्वार्थैः | १०. | सभी मनोरथ |
| यदूनाम् | २. | यदुवंशियों | कुशली आस्ते | १४. | सकुशल रह रहे हैं |
| स अनुग | ६. | अनुयायिओं के साथ | अच्युत | १३. | श्रीकृष्ण |
| अघकृत् । | ४. | पापी | अधुना ॥ | १२. | अब |

श्लोकार्थ—भाग्य से यदुवंशियों का शत्रु पापी कंस अनुयायिओं के साथ मारा गया। भाग्य से गुरुजनों के सभी मनोरथ पूर्ण हो गये। अब श्रीकृष्ण कुशल से रह रहे हैं ॥

## चत्वारिंशः श्लोकः

**कच्चिद् गदाग्रजः सौम्य करोति पुरयोषिताम् ।**
**प्रीतिं नः स्निग्धसव्रीडहासोदारेक्षणार्चितः ॥४०॥**

पदच्छेद— कच्चित् गदाग्रजः सौम्य करोति पुरयोषिताम् ।
प्रीतिम् नः स्निग्ध सव्रीड हास उदार ईक्षण अर्चितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कच्चित् | ८. | क्या | प्रीतिम् | ११. | प्रेम |
| गदाग्रजः | ७. | श्रीकृष्ण | नः स्निग्ध | २. | हमारी प्रेम भरी |
| सौम्य | १. | हे सौम्य (उद्धव जी) | सव्रीडहास | ३. | लजीली मुसकान |
| करोति | १२. | करते हैं | उदार | ४. | और उन्मुक्त |
| पुर् | ९. | नगर की | ईक्षण | ५. | चितवन से |
| योषिताम् । | १०. | स्त्रियों से | अर्चितः ॥ | ६. | पूजित |

श्लोकार्थ—हे सौम्य उद्धव जी ! हमारी प्रेम भरी लजीली मुसकान और उन्मुक्त चितवन से पूजित श्रीकृष्ण क्या नगर की स्त्रियों से प्रेम करते हैं ॥

## एकचत्वारिंशः श्लोकः

**कथं रतिविशेषज्ञः प्रियश्च वरयोषिताम् ।**
**नानुबध्येत तद्वाक्यैर्विभ्रमैश्चानुभाजितः ॥४१॥**

पदच्छेद— कथम् रति विशेषज्ञः प्रियः च वर योषिताम् ।
न अनुबध्येत तत् वाक्यैः विभ्रमैः च अनुभाजितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कथम् | ११. | क्यों | न अनुबध्येत | १२. | आकृष्ट होकर |
| रति | १. | रतिकला के | तत् | ६. | उनके |
| विशेषज्ञः | २. | विशेषज्ञ | वाक्यैः | ७. | नयनों |
| प्रियः | ५. | प्यारे श्रीकृष्ण | विभ्रमैः | ९. | हाव-भावों से |
| च वर | ३. | और श्रेष्ठ | च | ८. | और |
| योषिताम् । | ४. | स्त्रियों के | अनुभाजितः | १०. | आकृष्ट होकर |

श्लोकार्थ—रतिकला के विशेषज्ञ और श्रेष्ठ स्त्रियों के प्यारे श्रीकृष्ण उनके नयनों और हाव-भावों से आकृष्ट होकर क्यों नहीं रीझेंगे ॥

## द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**अपि स्मरति नः साधो गोविन्दः प्रस्तुते क्वचित् ।**
**गोष्ठीमध्ये पुरस्त्रीणां ग्राम्याः स्वैरकथान्तरे ॥४२॥**

पदच्छेद— अपि स्मरति नः साधो गोविन्दः प्रस्तुते क्वचित् ।
गोष्ठी मध्ये पुर स्त्रीणाम् ग्राम्याः स्वैरः कथा अन्तरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | २. | क्या | गोष्ठी | ६. | मण्डली के |
| स्मरति | १४. | स्मरण करते हैं | मध्ये | ७. | बीच |
| नः | १२. | हमारी | पुर | ४. | नगर की |
| साधो | १. | हे साधु उद्धव जी ! | स्त्रीणाम् | ५. | स्त्रियों की |
| गोविन्दः | ११. | श्रीकृष्ण | ग्राम्याः | १३. | गंवारू बातों का |
| प्रस्तुते | १०. | चलने पर | स्वैर | ८. | स्वच्छन्द |
| क्वचित् । | ३. | कभी | कथा अन्तरे ॥ | ९. | बात-चीत |

श्लोकार्थ—हे साधु उद्धव जी ! क्या कभी नगर की स्त्रियों की मण्डली के बीच स्वच्छन्द बात-चीत चलने पर श्रीकृष्ण हमारी गंवारू बातों का स्मरण करते हैं ॥

## त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

**ताः किं निशाः स्मरति यासु तदा प्रियाभिर्वृन्दावने कुमुदकुन्दशशाङ्करम्ये ।**
**रेमे क्वणच्चरणनूपुररासगोष्ठ्यामस्माभिरीडितमनोज्ञकथः कदाचित् ॥४३॥**

पदच्छेद— ताः किम् निशाःस्मरति यासु तदा प्रियाभिः वृन्दावने कुमुद-कुन्द शशाङ्करम्ये ।
रेमे क्वणत् चरण नूपुर रास गोष्ठ्याम् अस्माभिः ईडित मनोज्ञकथः कदाचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ताः | ९. | उन | रेमे | १६. | रमण किया था |
| किम् | ७. | क्या | क्वणत् चरण | १. | बजते हुये पैरों की |
| निशाःस्मरति | १०. | रात्रियों का स्मरण करते हैं | नूपुर | २. | नूपुर वाली |
| यासु तदा | ११. | जिनमें उस समय | रासगोष्ठ्याम् | ३. | रासलीला की गोष्ठी में |
| प्रियाभिः | १५. | प्रियाओं के साथ | अस्माभिः | ४. | हम लोगों के द्वारा |
| वृन्दावने | १४. | वृन्दावन में | ईडित | ५. | गायी गई |
| कुमुद-कुन्द | १२. | कुमुद और कुन्द पुष्पों से | मनोज्ञकथः | ६. | सुन्दरलीला वाले श्रीकृष्ण |
| शशाङ्करम्ये। | १३. | चन्द्रमा से रमणीय | कदाचित् ॥ | ८. | कभी |

श्लोकार्थ—बजते हुये पैरों के नूपुर वाली रासलीला की गोष्ठी में हम लोगों के द्वारा गायी गई सुन्दर लीला वाले श्रीकृष्ण क्या कभी उन रात्रियों का स्मरण करते हैं। जिनमें उस समय कुमुद और कुन्द पुष्पों से तथा चन्द्रमा से रमणीय वृन्दावन में प्रियाओं के साथ रमण किया था ॥

## चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

**अप्येष्यतीह दाशार्हस्तप्ताः स्वकृतया शुचा ।**
**सञ्जीवयन् नु नो गात्रैर्यथेन्द्रो वनमम्बुदैः ॥४४॥**

पदच्छेद— अपि एष्यति इह दाशार्हः तप्ताः स्वकृतया शुचा ।
सञ्जीवयन् नु नः गात्रैः यथाइन्द्रः वनम् अम्बुदैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | १२. | क्या | सञ्जीवयन् | ११. | जीवन दान देने के लिये |
| एष्यति | १४. | आवेंगे | नु नः | ६. | हमें (अपने) |
| इह | १३. | यहाँ | गात्रैः | १०. | अङ्गों के स्पर्श से |
| दाशार्हः | १. | हे उद्धव जी ! | यथा | ५. | समान (श्रीकृष्ण) |
| तप्ताः | ८. | तपी हुई | इन्द्रः | ४. | इन्द्र के |
| स्वकृतया | ६. | अपने किये हुये | वनम् | २. | वन के |
| शुचा । | ७. | शोक से | अम्बुजैः ॥ | ३. | मेघों से हरा भरा करने वाले |

श्लोकार्थ—हे उद्धव जी ! वन के मेघों से हरा-भरा करने वाले इन्द्र के समान श्रीकृष्ण अपने किये हुये शोक से तपी हुई हमें अपने अङ्गों के स्पर्श से जीवन दान देने के लिये यहाँ कब आवेंगे ॥

## पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

**कस्मात् कृष्ण इहायाति प्राप्तराज्यो हताहितः ।**
**नरेन्द्रकन्या उद्वाह्य प्रीतः सर्वसुहृद्वृतः ॥४५॥**

पदच्छेद— कस्मात् कृष्णः इह आयाति प्राप्त राज्यः हत अहितः ।
नरेन्द्रकन्याः उद्वाह्य प्रीतः सर्व सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कस्मात् | १३. | क्यों | नरेन्द्र | ५. | राजाओं की |
| कृष्णः इह | १२. | श्रीकृष्ण यहाँ | कन्याः | ६. | कुमारियों से |
| आयाति | १४. | आयेंगे ? | उद्वाह्य | ७. | विवाह करके |
| प्राप्त | ४. | पाकर | प्रीतः | ८. | प्रसन्न (एवम्) |
| राज्यः | ३. | राज्य | सर्व | ६. | सभी |
| हत | २. | मार कर | सुहृत् | १०. | मित्रों से |
| अहितः । | १. | शत्रुओं को | वृतः ॥ | ११. | घिरे हुये |

श्लोकार्थ—शत्रुओं को मार कर राज्य पाकर राजाओं की कुमारियों से विवाह करके प्रसन्न एवम् मित्रों से घिरे हुये श्रीकृष्ण यहाँ क्यों आयेंगे ॥

## षट्चत्वारिंशः श्लोकः

**किमस्माभिर्वनौकोभिरन्याभिर्वा महात्मनः ।**
**श्रीपतेराप्तकामस्य क्रियेतार्थः कृतात्मनः ॥४६॥**

पदच्छेद— किम् अस्माभिः वनौकोभिः अन्याभिः वा महात्मनः ।
श्रीपतेः आप्तकामस्य क्रियेत अर्थः कृत आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| किम् | १०. | कौन सा | श्रीपतेः | ९. | लक्ष्मी पति (भगवान् का) |
| अस्माभिः | १. | हम | आप्त | ६. | पूर्ण |
| वनौकोभिः | २. | वनवासिनी (ग्वालिनियों) | कामस्य | ७. | कामना वाले |
| अन्याभिः | ४. | दूसरी (राजकन्याओं से) | क्रियेत | १२. | सिद्ध होगा |
| वा | ३. | अथवा | अर्थः | ११. | काम |
| महात्मनः । | ५. | महात्मा श्रीकृष्ण | कृत आत्मनः। | ८. | कृतकृत्य |

श्लोकार्थ—हम वनवासिनी ग्वालिनियों से अथवा दूसरी राजकन्याओं से महात्मा, पूर्ण कामना वाले, कृतकृत्य, लक्ष्मीपति भगवान् का कौन सा काम सिद्ध होगा ॥

## सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

**परं सौख्यं हि नैराश्यं स्वैरिण्यप्याह पिङ्गला ।**
**तज्जानतीनां नः कृष्णे तथाप्याशा दुरत्यया ॥४७॥**

पदच्छेद— परम् सौख्यम् हि नैराश्यम् स्वैरिणी अपि आह पिङ्गला ।
तत् जानतीनाम् नः कृष्णे तथापि आशा दुरत्यया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| परम् | ६. | परम | तत् | ८. | यह |
| सौख्यम् | ७. | सुख है | जानतीनाम् | ९. | जानते हुये |
| हि नैराश्यम् | ५. | निराशा ही | नः | ११. | हमारी |
| स्वैरिणी | १. | वेश्या | कृष्णे | १२. | कृष्ण के प्रति |
| अपि | ३. | भी | तथापि | १०. | भी |
| आह | ४. | कहा है कि | आशा | १३. | आशा |
| पिङ्गला । | २. | पिङ्गला ने | दुरत्यया ॥ | १४. | नहीं छूटती है |

श्लोकार्थ—वेश्या पिङ्गलाने भी कहा है कि निराशा ही परम सुख है। यह जानते हुये भी हमारी श्रीकृष्ण के प्रति आशा नहीं छूटती है ॥

## अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

क उत्सहेत सन्त्यक्तुमुत्तमश्लोकसंविदम् ।
अनिच्छतोऽपि यस्य श्रीरङ्गान्न च्यवते क्वचित् ॥४८॥

पदच्छेद— कः उत्सहेत सन्त्यक्तुम् उत्तम श्लोक संविदम् ।
अनिच्छतः अपि यस्य श्रीःअङ्गात् न च्यवते क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कः | ४. | कौन | अनिच्छतः | ७. | न चाहते हुये |
| उत्सहेत | ५. | साहस करेगा | अपि | ८. | भी |
| सन्त्यक्तुम् | ३. | छोड़ने का | यस्य | ६. | जिनके |
| उत्तम श्लोक | १ | उत्तम श्लोक भगवान् की | श्रीःअङ्गात् | ६. | लक्ष्मी अङ्ग-सङ्ग |
| संविदम् । | २. | प्रेम भरी बातों को | न च्यवते | ११. | नहीं छोड़ती हैं |
| | | | क्वचित् ॥ | १०. | कहीं |

श्लोकार्थ—उत्तम श्लोक भगवान् की प्रेम भरी बातों को छोड़ने का कौन साहस करेगा । जिनके न चाहने पर भी लक्ष्मी अङ्ग-सङ्ग कहीं नहीं छोड़ती हैं ॥

## एकोनपञ्चाशः श्लोकः

सरिच्छैलवनोद्देशा गावो वेणुरवा इमे ।
सङ्कर्षणसहायेन कृष्णेनाचरिताः प्रभो ॥४९॥

पदच्छेद— सरित् शैल वन उद्देशाः गावः वेणुरवाः इमे ।
सङ्कर्षण सहायेन कृष्णेन आचरिताः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरित्-शैल | ३. | नदी-पर्वत | सङ्कर्षण | ७. | बलराम जी के |
| वन उद्देशाः | ४. | वन के प्रदेश | सहायेन | ८. | साथ |
| गावः | ५. | गौएँ और | कृष्णेन | ६. | श्रीकृष्ण ने (जिनका) |
| वेणुरवाः | ६. | वंशी के शब्द हैं | आचरिताः | १०. | सेवन किया था |
| इमे । | २. | ये वे ही | प्रभो ॥ | १. | हे उद्धव जी ! |

श्लोकार्थ— हे उद्धव जी ! ये वे हो नदी, पर्वत, वन के प्रदेश, गौएँ और बंशी के शब्द हैं । बलराम जी के साथ श्रीकृष्ण ने जिनका सेवन किया था ॥

## पञ्चाशः श्लोकः

पुनः पुनः स्मारयन्ति नन्दगोपसुतं बत ।
श्रीनिकेतैस्तत्पदकैर्विस्मर्तुं नैव शक्नुमः ॥५०॥

पदच्छेद— पुनः पुनः स्मारयन्ति नन्दगोप सुतम् बत ।
श्रीनिकेतैः तत् पदकैः विस्मर्तुम् न एव शक्नुमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| पुनः पुनः | ६. बार-बार | श्रीनिकेतैः | २. शोभाधाम |
| स्मारयन्ति | ७. स्मरण कराते हैं | तत् पदकैः | ३. उनके चरण चिह्नों से युक्त ये सब |
| नन्दगोप | ४. हमें नन्दगोप के | विस्मर्तुम् | ८. उन्हें हम भूल |
| सुतम् | ५. पुत्र श्रीकृष्ण का | न एव | ९. नहीं |
| बत । | १. आनन्द की बात है कि | शक्नुमः ॥ | १०. सकती हैं |

श्लोकार्थ आनन्द की बात है कि शोभाधाम उनके चरण चिह्नों से युक्त ये सब हमें नन्दगोप के पुत्र श्रीकृष्ण का बार-बार स्मरण कराते हैं । उन्हें हम भूल नहीं सकती हैं ॥

## एकपञ्चाशः श्लोकः

गत्या ललितयोदारहासलीलावलोकनैः ।
माध्व्या गिरा हृतधियः कथं तं विस्मरामहे ॥५१॥

पदच्छेद— गत्या ललितया उदार हास लीला अवलोकनैः ।
माध्व्या गिरा हृतधियः कथम् तम् विस्मरामहे ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गत्या | २. चाल | माध्व्या | ७. मधुमयी |
| ललितया | १. उनकी सुन्दर | गिरा | ८. वाणी ने (हमारा) |
| उदार | ३. उन्मुक्त | हृतधियः | ९. चित्त चुरा लिया है |
| हास | ४. हंसी | कथम् तम् | १०. कैसे उन्हें |
| लीला | ५. विलास पूर्ण | विस्मरामहे ॥ | ११ हम भूलें |
| अवलोकनैः । | ६. चितवन और | | |

श्लोकार्थ—उनकी सुन्दर चाल, उन्मुक्त हंसी, विलास पूर्ण चितवन, मधुमयी वाणी ने हमारा चित्त चुरा लिया है । कैसे उन्हें हम भूलें ? ॥

## द्विपञ्चाशः श्लोकः

**हे नाथ हे रमानाथ व्रजनाथार्तिनाशन ।**
**मग्नमुद्धर गोविन्द गोकुलं वृजिनार्णवात् ॥५२॥**

पदच्छेद— हे नाथ हे रमानाथ व्रजनाथ आर्ति नाशन ।
मग्नम् उद्धर गोविन्द गोकुलम् वृजिन अर्णवात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हे नाथ | १. हे नाथ ! | मग्नम् | ९. | डूबे हुये |
| हे रमानाथ | २. हे रमानाथ ! | उद्धर | ११. | बचाइये |
| व्रजनाथ | ३. हे व्रज के स्वामी | गोविन्द | ६. | हे गोविन्द ! |
| आर्ति | ४. हे पीडा को | गोकुलम् | १०. | गोकुल को |
| नाशन । | ५. मिटाने वाले ! | वृजिन | ७. | दुःख के |
| | | अर्णवात् ॥ | ८. | सागर से |

श्लोकार्थ— हे नाथ! हे रमानाथ ! हे व्रज के स्वामी ! हे पीड़ा को मिटाने वाले ! हे गोविन्द ! दुःख के सागर से डूबे हुये गोकुल को बचाइये ॥

## त्रिपञ्चाशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच—ततस्ता कृष्णसन्देशैर्व्यपेतविरहज्वराः ।**
**उद्धवं पूजयाचक्रुर्ज्ञात्वाऽऽत्मानमधोक्षजम् ॥५३॥**

पदच्छेद— ततः ताः कृष्ण सन्देशैः व्यपेत विरह ज्वराः ।
उद्धवम् पूजयाम् चक्रुः ज्ञात्वा आत्मानम् अधोक्षजम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ततः | १. तदनन्तर | उद्धवम् | १०. | उद्धव की |
| ताः | ६. वे गोपियाँ | पूजयाम् | ११. | पूजा |
| कृष्ण | २. श्रीकृष्ण के | चक्रुः | १२. | करने लगीं |
| सन्देशैः | ३. सन्देश से | ज्ञात्वा | ९. | समझ कर |
| व्यपेत | ४. मिटी हुई | आत्मानम् | ८. | (अपना) आत्मा |
| विरह ज्वराः । | ५. वियोग जनित व्यथा वाली | अधोक्षजम् ॥ | ७. | श्रीकृष्ण को |

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण के सन्देश से मिटी हुई वियोग जनित व्यथा वाली वे गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपना आत्मा समझ कर उद्धव जी की पूजा करने लगीं ॥

## चतुःपञ्चाशः श्लोकः

**उवास कतिचिन्मासान् गोपीनां विनुदञ्छुचः ।**
**कृष्णलीलाकथां गायन् रमयामास गोकुलम् ॥५४॥**

पदच्छेद— उवास कतिचित् मासान् गोपीनाथ विनुदन् शुचः ।
कृष्ण लीला कथाम् गायन् रमयामास गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उवास | ६. | निवास किया | कृष्ण | ७. | श्रीकृष्ण की |
| कतिचित् | १. | उद्धव ने कई | लीला | ८. | लीला सम्बन्धि |
| मासान् | २. | महीनों तक | कथाम् | ९. | कथा का |
| गोपीनाथ | ३. | गोपियों के | गायन् | १०. | गायन करते हुये |
| विनुदन् | ५. | मिटाते हुये (वहीं) | रमयामास | १२. | आनन्दित किया |
| शुचः । | ४. | शोक को | गोकुलम् ॥ | ११. | व्रज वासियों को |

श्लोकार्थ—उद्धव ने कई महीनों तक गोपियों के शोक को मिटाते हुये वहीं निवास किया । श्रीकृष्ण की लीला सम्बन्धी कथा का गायन करते हुये व्रजवासियों को आनन्दित किया ॥

## पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

**यावन्त्यहानि नन्दस्य व्रजेऽवात्सीत् स उद्धवः ।**
**व्रजौकसां क्षणप्रायाण्यासन् कृष्णस्य वार्तया ॥५५॥**

पदच्छेद— यावन्ति अहानि नन्दस्य व्रजे अवात्सीत् सः उद्धवः ।
व्रजौकसाम् क्षण प्रायाणि आसन् कृष्णस्य वार्तया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यावन्ति | ४. | जितने | व्रजौकसाम् | ७. | व्रजवासियों को |
| अहानि | ५. | दिन | क्षण | १०. | एक क्षण |
| नन्दस्य व्रजे | ३. | नन्द के व्रज में | प्रायाणि | ११. | जैसे |
| अवात्सीत् | ६. | रहे (उतने दिन) | आसन् | १२. | मालूम हुये |
| सः | १. | वे | कृष्णस्य | ८. | श्रीकृष्ण की |
| उद्धवः । | २. | उद्धव | वार्तया ॥ | ९. | चर्चा होते रहने के कारण |

श्लोकार्थ—वे उद्धव नन्द के व्रज में जितने दिन रहे, उतने दिन व्रजवासियों को कृष्ण की चर्चा होते रहने के कारण एक क्षण जैसे मालूम हुये ॥

## षट्पञ्चाशः श्लोकः

**सरिद्वनगिरिद्रोणीर्वीक्षन् कुसुमितान् द्रुमान् ।**
**कृष्णं संस्मारयन् रेमे हरिदासो व्रजौकसाम् ॥५६॥**

पदच्छेद— सरित् वनगिरि द्रोणीः वीक्षन कुसुमितान् द्रुमान् ।
कृष्णम् संस्मारयन् रेमे हरिदासः व्रज ओकसाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सरित् | १. | नदी | कृष्णम् | १०. | श्रीकृष्ण का |
| वनगिरि | २. | वन, पर्वत | संस्मारयन् | ११. | स्मरण दिलाते हुये |
| द्रोणीः | ३. | घाटियों तथा | रेमे | १२. | विहार करने लगे |
| वीक्षन् | ६. | देखते हुये | हरिदासः | ७. | भगवान् के भक्त उद्धव जी |
| कुसुमितान् | ४. | फूलों से लदे | व्रज | ८. | व्रज |
| द्रुमान् । | ५. | वृक्षों को | ओकसाम् ॥ | ९. | वासियों को |

श्लोकार्थ—नदी, वन, पर्वत, घाटियों तथा फूलों से लदे वृक्षों को देखते हुये भगवान् के भक्त उद्धव जी व्रजवासियों को श्रीकृष्ण का स्मरण दिलाते हुये विहार करने लगे ॥

## सप्तपञ्चाशः श्लोकः

**दृष्ट्वैवमादि गोपीनां कृष्णावेशात्मविक्लवम् ।**
**उद्धवः परमप्रीतस्ता नमस्यन्निदं जगौ ॥५७॥**

पदच्छेद— दृष्ट्वा एवम् आदि गोपीनाम् कृष्ण आवेश आत्मविक्लवम् ।
उद्धवः परम प्रीतः ताः नमस्यन् इदम् जगौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दृष्ट्वा | ७. | देख कर | उद्धवः | ८. | उद्धव जी |
| एवम् | ३. | इस प्रकार की | परम प्रीतः | ९. | अत्यन्त आनन्दित होकर |
| आदि | ६. | आदि | ताः | १०. | उन्हें |
| गोपीनाम् | १. | गोपियों की | नमस्यन् | ११. | नमस्कार करते हुये |
| कृष्ण | २. | श्रीकृष्ण में | इदम् | १२. | यह |
| आवेश आत्म | ४. | तन्मयता और प्रेम | जगौ ॥ | १३. | कहने लगे |
| विक्लवम् । | ५. | विकलता | | | |

श्लोकार्थ—गोपियों की श्रीकृष्ण में इस प्रकार की तन्मयता और प्रेम विकलता आदि देख कर उद्धव जी अत्यन्त आनन्दित होकर नमस्कार करते हुये यह कहने लगे ॥

## अष्टपञ्चाशः श्लोकः

**एताः परं तनुभृतो भुवि गोपवध्वो गोविन्द एव निखिलात्मनि रूढभावाः।**
**वाञ्छन्ति यद् भवभियो मुनयो वयं च किं ब्रह्मजन्मभिरनन्तकथारसस्य ॥५८**

पदच्छेद—एताः परम् तनुभृतः भुवि गोपवध्वः गोविन्द एव निखिल आत्मनि रूढभावाः।
वाञ्छन्ति यत् भवभियः मुनयः वयम् च किम् ब्रह्मजन्मभि अनन्त कथा रसस्य ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एताः | ४. | इन | वाञ्छन्ति | १४. | चाहते हैं |
| परम | ९. | श्रेष्ठ है | यत् | १०. | क्योंकि उनके महाभावको |
| तनुभृतः | ७. | शरीर धारण करना | भवभियः | ११. | संसार के भयसे डरते हुये |
| भुवि | ८. | पृथ्वी पर सबसे | मुनयः | १२. | मुनि |
| गोपवध्वः | ५. | गोप स्त्रियों का | वयम् च | १३. | और हम भी |
| गोविन्दे | २. | श्रीकृष्ण में | किम् | १८. | समय ही क्या है |
| एव | ६. | ही | ब्रह्मजन्मभिः | १७. | ब्रह्माकेजन्ममहाकल्पोंतकका |
| निखिलआत्मनि | १. | सबके आत्मा | अनन्तकथा | १५. | श्रीकृष्ण की कथा में |
| रूढभावाः। | ३. | भावबांधे हुये | रसस्य ॥ | १६. | रस पाने वालों के लिये |

श्लोकार्थ—सबके आत्मा श्रीकृष्ण में भाव बांधे हुये इन गोप स्त्रियों का ही शरीर धारण करना पृथ्वी पर सबसे श्रेष्ठ हैं। क्योंकि उनके महाभाव को संसार के भय से डरे हुये मुनि और हम भी चाहते हैं। श्रीकृष्ण की कथा में रस पाने वालों के लिये ब्रह्मा के जन्म महाकल्पों तक का समय ही क्या है ॥

## एकोनषष्टितमः श्लोकः

**क्वेमाः स्त्रियो वनचरीर्व्यभिचारदुष्टाः कृष्णे क्व चैष परमात्मनि रूढभावः**
**नन्वीश्वरोऽनुभजतोऽविदुषोऽपि साक्षाच्छ्रेयस्तनोत्यगदराज इवोपयुक्तः ॥५९**

पदच्छेद—क्व इमाः स्त्रियः वनचरीः व्यभिचार दुष्टाः कृष्णे क्व च एषः परम आत्मनि रूढभावः।
ननुईश्वरः अनुभजतः अविदुषः अपि साक्षात् श्रेयः तनोति अगदराजः इव उपयुक्तः ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्वाइमाः | १. | कहाँ ये | ननुईश्वरः | ८. | अहो ! ईश्वर |
| स्त्रियः वनचरीः | ३. | वनवासी स्त्रियाँ और | अनुभजतः | ९. | भजन करने वाले |
| व्यभिचार दुष्टाः | २. | व्यभिचार से दूषित | अविदुषः अपि | १०. | अनजान मूर्खका भी |
| कृष्णे | ६. | कृष्ण में (इनका) | साक्षात् श्रेयः | ११. | स्वयं कल्याण |
| क्व च एषः | ४. | कहाँ यह | तनोति | १२. | कर देते हैं |
| परम आत्मनि | ५. | परमात्मा | अगदराजइव | १३. | जैसे अमृत (अनजान में भी पी लेने से) |
| रूढभावः। | ७. | महाभाव | उपयुक्तः ॥ | १४. | कल्याण करता है |

श्लोकार्थ—कहाँ ये व्यभिचार से दूषित वनवासी स्त्रियाँ और कहाँ यह परमात्मा, कृष्ण में इनका महाभाव। अहो ! ईश्वर भजन करने वाले अनजान मूर्ख का भी स्वयं कल्याण कर देते हैं। जैसे अमृत अनजान में भी पी लेने पर से कल्याण ही करता है ॥

## षष्टितमः श्लोकः

**नायं श्रियोऽङ्ग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्योषितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः ।**
**रासोत्सवेऽस्य भुजदण्डगृहीतकण्ठलब्धाशिषां य उदगाद् व्रजवल्लवीनाम् ॥६०**

पदच्छेद—न अयम् श्रियः अङ्ग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्योषिताम् नलिन गन्धरुचाम् कुतः अन्याः ।
रासोत्सवे अस्य भुजदण्ड गृहीत कण्ठ लब्ध आशिषाम् यः उदगात् व्रज वल्लवीनाम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न अयम् | १३. | वह नहीं मिला | रासोत्सवेअस्य | १. | रासोत्सव में इन भगवान् की |
| श्रियः | १२. | लक्ष्मी को भी | भुजदण्ड | २. | भुजाओं को |
| अङ्ग उ | ११. | अङ्गसंगिनी | गृहीतकण्ठ | ३. | गले में डालकर |
| नितान्तरतेःप्रसादः | ८. | परमरति का प्रसाद | लब्ध | ५. | पूर्ण करने वाली |
| स्वर्योषिताम् | १०. | देवाङ्गनाओं को तथा | आशिषाम् | ४. | मनोरथ को |
| नलिनगन्धरुचाम् | ९. | कमल की सी गन्ध और कान्ति वाली | यःउद्गात् | ७. | जो सुख प्राप्त हुआ वह |
| कुतः अन्याः । | १४. | दूसरी स्त्रियों की तो बात ही क्या है | व्रजवल्लवीनाम् ॥ | ६. | व्रजाङ्गनाओं को |

श्लोकार्थ—रासोत्सव में भगवान् की भुजाओं को गले में डालकर मनोरथ को पूर्ण करने वाली व्रजाङ्गनाओं को जो सुख प्राप्त हुआ, वह परमरति का प्रसाद कमल की सी गंध और कान्ति वाली देवाङ्गनाओं तथा अङ्ग संगिनी लक्ष्मी को भी नहीं मिला, दूसरी स्त्रियों की तो बात ही क्या है ॥

## एकषष्टितमः श्लोकः

**आसामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम् ।**
**या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥६१**

पदच्छेद—आसाम्‌अहो चरणरेणु जुषाम् अहम् स्याम् वृन्दावने किम् अपि गुल्मलता ओषधीनाम् ।
याः दुस्त्यजम् स्वजन आर्य पथम् च हित्वा भेजुः मुकुन्द पदवीम् श्रुतिभिः विमृग्याम् ॥

| शब्दार्थ— | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आसाम् अहो | १ | अहो इन व्रजाङ्गनाओं की | याः दुस्त्यजम् | ९. | जिन्होंनेकठिनाईसेछोड़नेयोग्य |
| चरणरेणु | २. | चरण धूली का | स्वजनम् | १०. | सगेसम्बन्धियों |
| जुषाम् | ३. | सेवन करने वाली | आर्यपथम् च | ११. | और आर्यों के पथ का |
| अहम् स्याम् | ८. | मैं हो जाऊँ | हित्वा | १२. | परित्याग करके |
| वृन्दावने | ४. | वृन्दावन में | भेजुः | १६. | प्राप्त किया है |
| किमपि | ७. | कुछ भी | मुकुन्दपदवीम् | १५. | भगवान् को पदवी परम प्रेम को |
| गुल्मलता | ५. | झाड़ी-लता | स्मृतिभिः | १३. | वेदों द्वारा |
| ओषधीनाम् । | ६. | वनौषधियों में से | विमृग्याम् ॥ | १४. | ढूंढ़ने योग्य |

श्लोकार्थ—अहो इन व्रजाङ्गनाओं की चरण धूली का सेवन करने वाली वृन्दावन में झाड़ी लता वनौषधियों में से कुछ भी मैं हो जाऊँ । जिन्होंने कठिनाई से छोड़ने योग्य सगे सम्बन्धियों और आर्यों के पथ का परित्याग करके वेदों द्वारा ढूंढ़ने योग्य भगवान् की पदवी परम प्रेम को प्राप्त किया है ।

## द्विषष्टितमः श्लोकः

**या वै श्रियार्चितमजादिभिराप्तकामैर्योगेश्वरैरपि यदात्मनि रासगोष्ठ्याम् ।**
**कृष्णस्य तद् भगवतश्चरणारविन्दं न्यस्तं स्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम् ॥६२॥**

पदच्छेद—

या: वै श्रिया अर्चितम् अजादिभिः आप्तकामैः योगेश्वरैः अपि यत् आत्मनि रास गोष्ठ्याम् ।
कृष्णस्य तत् भगवतः चरणारविन्दम् न्यस्तम् स्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| याः वै | १४. जिन्होंने निश्चित रूप से | कृष्णस्य | ६. श्रीकृष्ण के जिस |
| श्रिया | १. लक्ष्मी और | तत् भगवतः | ५. भगवान् के उस |
| अर्चिताम् | ९. पूजते रहते हैं उसको | चरणारविन्दम् | ७. चरणारविन्द को |
| आदिभिः | २. ब्रह्मा आदि | न्यस्तम् | १२. रख कर (और उनका) |
| आप्तकामैः | ३. पूर्ण काम | स्तनेषु | ११. स्तनों पर |
| योगेश्वरैः अपि | ४. योगेश्वर भी | विजहुः | १६. शान्त किया |
| यत् आत्मनि | ८. अपने हृदय में रखकर | परिरभ्य | १३. आलिङ्गन करके |
| रास गोष्ठ्याम् । | १०. रासलीला में अपने | तापम् ॥ | १५. अपनी विरह व्यथा को |

श्लोकार्थ—लक्ष्मी और ब्रह्मा आदि पूर्णकाम योगेश्वर भी भगवान् श्रीकृष्ण के जिस चरणारविन्द को अपने हृदय में रख कर पूजते रहते हैं, उन चरण को रासलीला में अपने स्तनों पर रख कर और उनका आलिङ्गन करके जिन्होंने निश्चित रूप से अपनी विरह व्यथा को शान्त किया ॥

## त्रिषष्टितमः श्लोकः

**वन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णशः ।**
**यासां हरिकथोद्गीतं पुनाति भुवनत्रयम् ॥६३॥**

पदच्छेद— वन्दे नन्द व्रज स्त्रीणाम् पादरेणुम् अभीक्ष्णशः ।
यासाम् हरिकथा उद्गीतम् पुनाति भुवन त्रयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वन्दे | ६. प्रणाम करता हूँ | यासाम् | ७. जिनकी |
| नन्द | १. नन्द के | हरिकथाम् | ८. श्रीकृष्ण सम्बन्धी कथा का |
| व्रज | २. व्रज की | उद्गीतम् | ९. गीत |
| स्त्रीणाम् | ३. स्त्रियों की | पुनाति | १२. पवित्र करता है |
| पादरेणुम् | ४. चरणधूली को | भुवन | ११. लोकों को |
| अभीक्ष्णशः । | ५. मैं बार-बार | त्रयम् ॥ | १०. तीनों |

श्लोकार्थ—नन्द के व्रज की स्त्रियों की चरण धूली को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ। जिनकी श्रीकृष्ण सम्बन्धी कथा का गीत तीनों लोकों को पवित्र करता है ॥

## चतुःषष्टितमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथ गोपीरनुज्ञाप्य यशोदां नन्दमेव च ।
गोपानामन्त्र्य दाशार्हो यास्यन्नारुरुहे रथम् ॥६४॥

पदच्छेद— अथ गोपीः अनुज्ञाप्य यशोदाम् नन्दम् एव च ।
गोपान् आमन्त्र्य दाशार्हः यास्यन् आरुरुहे रथम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अथ | १. तदनन्तर | गोपान् | ७. ग्वाल-वालों से |
| गोपीः | २. गोपियों | आमन्त्र्य | ८. बिदा लेकर |
| अनुज्ञाप्य | ५. आज्ञा लेकर | दाशार्हः | ९. उद्धव जी |
| यशोदाम् | ४. यशोदा से | यास्यन् | १०. यात्रा करने के लिये |
| नन्दम् | ३. नन्द और | आरुरुहे | १२. सवार हुये |
| एव च । | ६. और | रथम् ॥ | ११. रथ पर |

श्लोकार्थ—तदनन्तर गोपियों, नन्द और यशोदा से आज्ञा लेकर और ग्वाल-वालों से बिदा लेकर उद्धव जी यात्रा करने के लिये रथ पर सवार हुये ॥

## पञ्चषष्टितमः श्लोकः

तं निर्गतं समासाद्य नानोपायनपाणयः ।
नन्दादयोऽनुरागेण प्रावोचन्नश्रुलोचनाः ॥६५॥

पदच्छेद— तम् निर्गतम् समासाद्य नाना उपायन पाणयः ।
नन्द आदयः अनुरागेण प्रावोचत् अश्रुलोचनाः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तम् | २. उनके | नन्द | ७. नन्द |
| निर्गतम् | १. व्रज से बाहर | आदयः | ८. आदि ने |
| समासाद्य | ३. पास जाकर | अनुरागेण | ११. प्रेम पूर्वक |
| नाना | ५. बहुत सी | प्रावोचत् | १२. कहा |
| उपायन | ६. भेंट की सामग्री लिये हुये | अश्रु | १०. आंसू भर कर |
| पाणयः । | ४. हाथों में | लोचनाः ॥ | ९. आंखों में |

श्लोकार्थ—व्रज से बाहर हांथों में बहुत सी भेंट की सामग्री लिये हुये नन्द आदि ने आंखों में आंसू भर कर प्रेम पूर्वक कहा ॥

## षट्षष्टितमः श्लोकः

**मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः ।**
**वाचोऽभिधायिनीर्नाम्नां कायस्तत्प्रह्वणादिषु ॥६६॥**

पदच्छेद — मनसः वृत्तयः नः स्युः कृष्ण पाद अम्बुज आश्रयाः ।
वाचः अभिधायिनीः नाम्नाम् कायः तत् प्रह्वण आदिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मनसः | २. | मन की | वाचः | ८. | वाणी |
| वृत्तयः | ३. | वृत्तियाँ | अभिधायिनीः | १०. | उच्चारण करती रहे |
| नः | १. | हमारे | नाम्नाम् | ९. | उन्हीं के नामों का |
| स्युः | ७. | हों | कायः | ११ | और शरीर |
| कृष्ण | ४. | श्रीकृष्ण के | तत् | १२ | उनकी |
| पाद अम्बुज | ५. | चरण कमलों के | प्रह्वण | १३. | वन्दना |
| आश्रयः । | ६. | आश्रय | आश्रयः ॥ | १४. | आदि में लगा रहे |

श्लोकार्थ—हमारे मन की वृत्तियाँ श्रीकृष्ण के चरण कमलों के आश्रय हों। वाणी उन्हीं के नामों का उच्चारण करती रहे। और शरीर उनकी वन्दना आदि में लगा रहे।

## सप्तषष्टितमः श्लोकः

**कर्मभिर्भ्राम्यमाणानां यत्र क्वापीश्वरेच्छया ।**
**मङ्गलाचरितैर्दानै रतिर्नः कृष्ण ईश्वरे ॥६७॥**

पदच्छेद— कर्मभिः भ्राम्य माणानाम् यत्र क्व अपि ईश्वर इच्छया ।
मङ्गल आचरितैः दानैः रतिः नः कृष्णे ईश्वरे ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कर्मभिः | १. | कर्मों के अनुसार | मङ्गल | ८. | शुभ |
| भ्राम्य | २. | चक्कर | आचरितैः | ९. | आचरणों से |
| माणानाम् | ३. | काटते हुये हम | दानैः | १०. | दानों से |
| यत्र | ६. | जहाँ | रतिः | १४. | प्रीति हो |
| क्व अपि | ७. | कहीं भी (जन्म लें) वहाँ | नः | ११. | हमारी |
| ईश्वर | ४. | ईश्वर की | कृष्णे | १३. | श्रीकृष्ण में |
| इच्छया । | ५. | इच्छा से | ईश्वरे ॥ | १२. | भगवान् |

श्लोकार्थ—कर्मों के अनुसार चक्कर काटते हुये हम ईश्वर की इच्छा से जहाँ कहीं भी जन्म लें। वहाँ शुभ आचरणों तथा दानों से हमारी भगवान् श्रीकृष्ण में प्रीति हो॥

## अष्टषष्टितमः श्लोकः

**एवं सभाजितो गोपैः कृष्णभक्त्या नराधिप ।**
**उद्धवः पुनरागच्छन्मथुरां कृष्णपालिताम् ॥६८॥**

पदच्छेद— एवम् सभाजितः गोपैः कृष्ण भक्त्या नराधिप ।
उद्धवः पुनः आगचछत् मथुराम् कृष्ण पालिताम् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एवम् | २. | इस प्रकार | उद्धवः | ७. | उद्धव जी |
| सभाजितः | ६. | सम्मानित होकर | पुनः | ११. | पुनः |
| गोपैः | ३. | गोपों से | आगचछत् | १२. | आ गये |
| कृष्ण | ४. | कृष्ण | मथुराम् | १०. | मथुरा पुरी में |
| भक्त्या | ५. | भक्ति के द्वारा | कृष्ण | ८. | श्रीकृष्ण के द्वारा |
| नराधिप | १. | हे राजन् ! | पालिताम् | ९. | सुरक्षित |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार गोपों से कृष्ण भक्ति के द्वारा सम्मानित होकर उद्धव जी श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित मथुरा पुरी में पुनः आ गये ।।

## एकोनसप्ततितमः श्लोकः

**कृष्णाय प्रणिपत्याह भक्त्युद्रेकं व्रजौकसाम् ।**
**वसुदेवाय रामाय राज्ञे चोपायनान्यदात् ॥६९॥**

पदच्छेद— कृष्णाय प्रणिपत्य आह भक्ति उद्रेकम् व्रज ओकसाम् ।
वसुदेवाय रामाय राज्ञे च उपायनानि अदात् ।।

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णाय | १. | श्रीकृष्ण | वसुदेवाय | ८. | वसुदेव |
| प्रणिपत्य | २. | प्रणाम करके | रामाय | ९. | बलराम |
| आह | ७. | बताई (तथा) | राज्ञे | ११. | राजा उग्रसेन को |
| भक्ति | ५. | भक्ति की | च | १०. | और |
| उद्रेकम् | ६. | अधिकता | उपायनानि | १२ | भेंट की सामग्रियाँ |
| व्रज | ३. | व्रज | अदात् ।। | १३. | दे दीं |
| ओकसाम् | ४. | वासियों की | | | |

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को प्रणाम करके व्रजवासियों की भक्ति की अधिकता बताई तथा श्रीकृष्ण, बलराम और राजा उग्रसेन को भेंट की सामग्रियाँ दे दीं ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
उद्धव प्रतियाने सप्तचत्वारिंशः अध्यायः ।।४७।।

# श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

## दशमः स्कन्धः

## अष्टचत्वारिंशः अध्यायः

### प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— अथ विज्ञाय भगवान् सर्वात्मा सर्वदर्शनः।
सैरन्ध्र्याः कामतप्तायाः प्रियमिच्छन् गृहं ययौ ॥१॥

पदच्छेद— अथ विज्ञाय भगवान् सर्वात्मा सर्व दर्शनः।
सैरन्ध्र्याः काम तप्तायाः प्रियम् इच्छन् गृहम् ययौ ॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शब्दार्थ—अथ | १. | तदनन्तर | सैरन्ध्र्याः | ८. | कुब्जा की (व्याकुलता) |
| विज्ञाय | ९. | जान कर (उसका) | काम | ६. | काम से |
| भगवान् | ५. | भगवान् श्रीकृष्ण | तप्तायाः | ७. | संतप्त |
| सर्वात्मा | २. | सब के आत्मा | प्रियम् | १०. | प्रिय करने की |
| सर्व | ३. | सब कुछ | इच्छन् | ११. | इच्छा से |
| दर्शनः। | ४. | देखने वाले | गृहम्ययौ॥ | १२. | उसके घर गये |

श्लोकार्थ—तदनन्तर सबके आत्मा, सब कुछ देखने वाले भगवान् श्रीकृष्ण काम से संतप्त कुब्जा की व्याकुलता जान कर उसका प्रिय करने की इच्छा से उसके घर गये॥

### द्वितीयः श्लोकः

महार्होपस्करैराढ्यं कामोपायोपबृंहितम्।
मुक्तादामपताकाभिर्वितानशयनासनैः।
धूपैः सुरभिभिर्दीपैः स्रग्गन्धैरपि मण्डितम् ॥२॥

पदच्छेद— महार्ह उपस्करैः आढ्यम् काम उपाय उपबृंहितम्।
मुक्तादाम पताकाभिः वितान शयन आसनैः।
धूपैः सुरभिभिः दीपैः स्रक् गन्धैः अपि मण्डितम्॥

| शब्दार्थ | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शब्दार्थ—महार्ह | १. | कुब्जा का घर बहुमूल्य | वितान | ८. | चंदोवों और |
| उपस्करैः | २. | सामग्रियों से | शयन | ९. | शय्याओं |
| आढ्यम् | ३. | सम्पन्न | आसनैः। | १०. | आसनों से |
| काम उपाय | ४. | कामोद्दीपक सामग्रियों से | धूपैः सुरभिभिः | ११. | सुगन्धित धूपों से |
| बृंहितम्। | ५. | भरा हुआ था (तथा) | दीपैः स्रक् | १२. | दीपों पुष्पहारों (एवम्) |
| मुक्तादाम | ६. | मोतियों की झालरों से | गन्धैः अपि | १३. | चन्दनादि से भी |
| पताकाभिः | ७. | पताकाओं से | मण्डितम्॥ | १४. | सुशोभित था |

श्लोकार्थ—कुब्जा का घर बहुमूल्य सामग्रियों से सम्पन्न कामोद्दीपक सामग्रियों से भरा हुआ था। तथा मोतियों की झालरों से, पताकाओं से, चंदोवों, शय्याओं और आसनों से सुगन्धित धूपों दीपों, पुष्पहारों एवम् चन्दनादि से भी सुशोभित था॥

## तृतीयः श्लोकः

**गृहं तमायान्तमवेक्ष्य साऽऽसनात् सद्यः समुत्थाय हि जातसम्भ्रमा ।**
**यथोपसङ्गम्य सखीभिरच्युतं सभाजयामास सदासनादिभिः ॥३॥**

पदच्छेद— गृहम् तम् अयान्तम् अवेक्ष्यासा आसनात् सद्यः समुत्थाय हि जातसम्भ्रमाः ।
यथा उपसङ्गम्य सखीभिः अच्युतम् सभाजयामास सद् आसन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गृहम् तम् | १. उन्हें अपने घर | यथा | १०. यथोचित |
| आयान्तम् | २. आते हुये | उपसङ्गम्य | ११. अगवानी करके |
| अवेक्ष्य सा | ३. देख कर वह कुब्जा | सखीभिः | ८. सखियों के साथ |
| आसनात् | ६. आसन से | अच्युतम् | ९. भगवान् श्रीकृष्ण को |
| सद्यः | ४. तुरन्त | सभाजयामास | १४. स्वागत सत्कार किया |
| समुत्थाय हि | ७. उठ खड़ी हुई (और) | सद् आसन | १२. उत्तम आसन |
| जातसम्भ्रमा । | ५. हड़बड़ा कर | आदिभिः ॥ | १३. आदि से |

श्लोकार्थ—उन्हें अपने घर आते हुये देख कर वह कुब्जा तुरन्त हड़बड़ा कर आसन से उठ खड़ी हुई। और सखियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण की यथोचित अगवानी करके उत्तम आसन आदि से स्वागत सत्कार किया ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**तथोद्धवः साधु तयाभिपूजितो न्यषीददुर्व्यामभिमृश्य चासनम् ।**
**कृष्णोऽपि तूर्णं शयनं महाधनं विवेश लोकाचरितान्यनुव्रतः ॥४॥**

पदच्छेद— तथा उद्धवः साधु तया अभिपूजितः न्यषीदत् उर्व्याम् अभिमृश्य च आसनम् ।
कृष्णः अपि तूर्णम् शयनम् महाधनम् विवेश लोक आचरितानि अनुव्रतः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तथा | १. उसी प्रकार | कृष्णः अपि | ९. श्रीकृष्ण भी |
| उद्धवः साधु | ३. उद्धव की भलीभाँति | तूर्णम् | १२. शीघ्र ही |
| तया | २. उसने | शयनम् | १५. शय्या पर |
| अभिपूजितः | ४. पूजा की | महाधनम् | १४ बहुमूल्य |
| न्यषीदत् | ८. बैठ गये | विवेश | १६. जा बैठे |
| उर्व्याम् | ७. भूमि पर ही | लोक | ११. लोक के |
| अभिमृश्य | ६. छूकर | आचरितानि | १२. आचार का |
| च आसनम् । | ५. किन्तु उद्धव आसन को | अनुव्रतः ॥ | १३. अनुकरण करते हुये |

श्लोकार्थ—उसी प्रकार उसने उद्धव जी की भली भाँति पूजा की किन्तु उद्धव आसन को छूकर भूमि पर बैठ गये श्रीकृष्ण भी शीघ्र ही लोक के आचार का अनुसरण करते हुये बहुमूल्य शय्या पर जा बैठे ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**सा मञ्जनालेपदुकूलभूषणस्रग्गन्धताम्बूलसुधासवादिभिः ।**
**प्रसाधितात्मोपससार माधवं सव्रीडलीलोत्स्मितविभ्रमेक्षितैः ॥५॥**

पदच्छेद—सा मञ्जन आलेप दुकूल भूषण स्रक् गन्ध ताम्बूल सुधासव आदिभिः ।
प्रसाधित आत्मा उपससार माधवम् सव्रीड लीला उत्स्मित विभ्रम ईक्षितैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सा मञ्जन | १. | तब वह कुब्जा स्नान | प्रसाधित आत्मा | ८. | अपने को सुसज्जित करके |
| आलेप | २. | अङ्गराग | उपससार | १४. | पास गई |
| दुकूलभूषण | ३. | वस्त्र आभूषण | माधवम् | १३. | भगवान् श्रीकृष्ण के |
| स्रक् गन्ध | ४. | पुष्पहार गन्ध (इत्रादि) | सव्रीड लीला | ९. | लजीली लीलामयी |
| ताम्बूल | ५. | ताम्बूल | उत्स्मित | १०. | मुसकान तथा |
| सुधासव | ६. | सुधासव (चूर्ण विशेष) | विभ्रम | ११. | हाव-भाव से |
| आदिभिः । | ७. | आदि से | ईक्षितैः ॥ | १२. | देखती हुई |

श्लोकार्थ—तब वह कुब्जा स्नान, अङ्गराग, वस्त्र, आभूषण, पुष्पहार, गन्ध इत्यादि ताम्बूल, सुधासव चूर्ण विशेष आदि से अपने को सुसज्जित करके लजीली लीलामयी मुसकान तथा हाव-भाव से देखती हुई भगवान् श्रीकृष्ण के पास गई ॥

## षष्ठः श्लोकः

**आहूय कान्तां नवसङ्गमह्रिया विशङ्कितां कङ्कणभूषिते करे ।**
**प्रगृह्य शय्यामधिवेश्य रामया रेमेऽनुलेपार्पणपुण्यलेशया ॥६॥**

पदच्छेद— आहूय कान्ताम् नवसङ्गम ह्रिया विशङ्किताम् कङ्कण भूषिते करे ।
प्रगृह्य शय्याम् अधिवेश्य रामया रेमे अनुलेप अर्पण पुण्य लेशया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आहूय | ५. | बुला कर | प्रगृह्य | ८. | पकड़ कर |
| कान्ताम् | ४. | प्रिया को | शय्याम् | ९. | शय्या पर |
| नवसङ्गम | १. | नवीन मिलन के | अधिवेश्य | १०. | बैठा कर |
| ह्रिया | २. | संकोच से | रामया रेमे | १४. | सुन्दरी के साथ क्रीड़ा करने लगे |
| विशङ्किताम् | ३. | झिझकती हुई | अनुलेप | ११. | अंगराग |
| कङ्कण भूषिते | ६. | कङ्कण से सुशोभित उसकी | अर्पण | १२. | समर्पित करने के |
| करे । | ७. | कलाई | पुण्यलेशया ॥ | १३. | पुण्य से सम्बन्धित उस |

श्लोकार्थ—नवीन मिलन के संकोच से झिझकती हुई प्रिया को बुलाकर कङ्कण से सुशोभित उसकी कलाई पकड़कर शय्या पर बैठाकर अङ्गराग समर्पित करने के पुण्य से सम्बन्धित उस सुन्दरी के साथ क्रीडा करने लगे ॥

## सप्तमः श्लोकः

**सानङ्गतप्तकुचयोरुरसस्तथाक्ष्णोर्जिघ्रन्त्यनन्तचरणेन रुजो मृजन्ती ।**
**दोर्भ्यां स्तनान्तरगतं परिरभ्य कान्तमानन्दमूर्तिमजहादतिदीर्घतापम् ॥७॥**

पदच्छेद—सा अनङ्ग तप्त कुचयोः उरसः तथा अक्ष्णोः जिघ्रन्ति अनन्त चरणेन रुजःमृजन्ती ।
दोर्भ्याम् स्तन अन्तर गतम् परिरभ्य कान्तम् आनन्द मूर्तिम् अजहात् अति दीर्घ तापम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा अनङ्ग | ४. उसने अपने काम से | दोर्भ्याम् | १. अपनी दोनों भुजाओं से |
| तप्त कुचयोः | ५. तपे हुये स्तन | स्तन अन्तर | ११. तथा स्तनों के मध्य |
| उरसः तथा | ६. वक्षः स्थल तथा | गतम् | १२. प्राप्त |
| अक्ष्णोः | ७. नेत्रों पर (रखकर) | परिरभ्य | १५. गाढ़ आलिंगन करके |
| जिघ्रन्ति | ८. सूंघती हुई | कान्तम् | १४. प्रियतम श्रीकृष्ण का |
| अनन्त | २. भगवान् श्रीकृष्ण के | आनन्द मूर्तिम् | १३ आनन्द मूर्ति |
| चरणेन | ३. चरण कमलों को | अजहात् | १८. मिटा लिया |
| रुजः | ९. अपनी व्याधि को | अतिदीर्घ | १६. बहुत दिनों से बढ़े हुये |
| मृजन्ती । | १०. शान्त किया | तापम् ।। | १७. ताप को |

श्लोकार्थ—अपनी दोनों भुजाओं से भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमलों को उसने अपने काम से तपे हुये स्तन, वृक्षः स्थल तथा नेत्रों पर रखकर अपनी व्याधि को शान्त किया। तथा स्तनों के मध्य प्राप्त आनन्द मूर्ति प्रियतम श्रीकृष्ण का गाढ़ आलिंगन करके बहुत दिनों से बढ़े हुये ताप को मिटा लिया ॥

## अष्टमः श्लोकः

**सैवं कैवल्यनाथं तं प्राप्य दुष्प्रापमीश्वरम् ।**
**अङ्गरागार्पणेनाहो दुर्भगेदमयाचत ॥८॥**

पदच्छेद — सा एवम् कैवल्य नाथं तं प्राप्य दुष्प्रापम् ईश्वरम् ।
अङ्गराग अर्पणेन अहो दुर्भगा इदम् अयाचत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा | ६. उसने | अङ्गराग | २. अङ्गराग |
| एवम् | ४. इस प्रकार | अर्पणेन | ३. समर्पण करने के कारण |
| कैवल्यनाथम् | ५. कैवल्य मोक्ष के स्वामी | अहो | १. अहो ! |
| तम् | ७. उन | दुर्भगा | ११. अभागिन ने |
| प्राप्य | १०. पाकर (उस) | इदम् | १२. यह वरदान |
| दुष्प्रापम् | ८. दुर्लभ | अयाचत ।। | १३. माँगा |
| ईश्वरम् । | ९. भगवान् को | | |

श्लोकार्थ—अहो ! अङ्गराग समर्पण करने के कारण इस प्रकार कैवल्य मोक्ष के स्वामी उसने उन दुर्लभ भगवान् को पाकर उस अभागिन ने यह वरदान माँगा ॥

## नवमः श्लोकः

**आहोष्यतामिह प्रेष्ठ दिनानि कतिचिन्मया ।**
**रमस्व नोत्सहे त्यक्तुं सङ्गं तेऽम्बुरुहेक्षण ॥९॥**

पदच्छेद— आह उष्यताम् इह प्रेष्ठ दिनानि कतिचित् मया ।
रमस्व न उत्सहे त्यक्तुम् सङ्गम् ते अम्बुरुह ईक्षण ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आह | १. | (वह) बोली | रमस्व | ८. | क्रीडा कीजिये |
| उष्यताम् | ७. | रहिये (और) | न उत्सहे | १४. | मैं असमर्थ हूँ |
| इह | ६. | यहाँ | त्यक्तुम् | १३. | छोड़ने में |
| प्रेष्ठ | २. | हे प्रियतम ! | सङ्गम् | १२. | साथ |
| दिनानि | ४. | दिन | ते | ११. | आपका |
| कतिचित् | ३. | कुछ | अम्बुरुह | ९. | हे कमल |
| मया । | ५. | मेरे साथ | ईक्षण ॥ | १०. | नयन |

श्लोकार्थ—वह बोली-हे प्रियतम ! कुछ दिन मेरे साथ यहाँ रहिये । और क्रीडा कीजिये । हे कमल नयन ! आपका साथ छोड़ने में मैं असमर्थ हूँ ॥

## दशमः श्लोकः

**तस्यै कामवरं दत्त्वा मानयित्वा च मानदः ।**
**सहोद्धवेन सर्वेशः स्वधामागमदर्चितम् ॥१०॥**

पदच्छेद— तस्यै कामवरम् दत्त्वा मानयित्वा च मानदः ।
सह उद्धवेन सर्वेशः स्वधाम अगमत् अर्चितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्यै | ३. | उसका | सह | ९. | साथ |
| कामवरम् | ६. | अभीष्ट वर | उद्धवेन | ८. | उद्धव के |
| दत्त्वा | ७. | देकर | सर्वेशः | २. | सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण |
| मानयित्वा | ४. | मान रख कर | स्वधाम | ११. | अपने घर |
| च | ५. | और | अगमत् | १२. | चले गये |
| मानदः । | १. | मान देने वाले | अर्चितम् ॥ | १०. | सर्व पूजित |

श्लोकार्थ—मान देने वाले सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण उसका मान रख कर और अभीष्ट वर देकर उद्धव के साथ सर्वपूजित अपने घर चले गये ॥

## एकादशः श्लोकः

**दुराराध्यं समाराध्य विष्णुं सर्वेश्वरेश्वरम् ।**
**यो वृणीते मनोग्राह्यमसत्त्वात् कुमनीष्यसौ ॥११॥**

पदच्छेद— दुराराध्यम् समाराध्य विष्णुम् सर्वेश्वर ईश्वरम् ।
यः वृणीते मनः ग्राह्यम् असत्त्वात् कुमनीषी असौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दुराराध्यम् | ३. | कठिनाई से (आराधना करने योग्य) | वृणीते | ९. | माँगता है |
| समाराध्य | ४. | आराधना करके | मनः | ७. | मन |
| विष्णुम् | ५. | श्रीकृष्ण की | ग्राह्यम् | ८. | पसन्द (विषय सुख) |
| सर्वेश्वर | १. | समस्त ईश्वरों के | असत्त्वात् | ११. | तुच्छ होने के कारण |
| ईश्वरम् । | २. | ईश्वर तथा | कुमनीषी | १२. | दुर्बुद्धि है |
| यः | ६. | जो | असौ ॥ | १०. | वह (उस सुख के) |

श्लोकार्थ—समस्त ईश्वरों के ईश्वर तथा कठिनाई से आराधना करने योग्य श्रीकृष्ण की आराधना करके जो मन पसन्द विषय सुख माँगता है। वह सुख के तुच्छ होने के कारण दुर्बुद्धि है ॥

## द्वादशः श्लोकः

**अक्रूरभवनं कृष्णः सहरामोद्धवः प्रभुः ।**
**किञ्चिच्चिकीर्षयन् प्रागादक्रूरप्रियकाम्यया ॥१२॥**

पदच्छेद— अक्रूर भवनम् कृष्णः सहराम उद्धवः प्रभुः ।
किञ्चित् चिकीर्षयन् प्रागात् अक्रूर प्रिय काम्यया ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अक्रूर | १०. | अक्रूर के | किञ्चित् | ४. | कुछ |
| भवनम् | ११. | घर | चिकीर्षयन् | ५. | कार्य कराने की इच्छा से |
| कृष्णः | ७. | श्रीकृष्ण | प्रागात् | १२. | गये |
| सहरामः | ९. | बलराम जी के साथ | अक्रूर | १. | अक्रूर का |
| उद्धवः | ८. | उद्धव और | प्रिय | २. | प्रिय करने |
| प्रभुः । | ६. | प्रभु | काम्यया ॥ | ३. | की कामना से |

श्लोकार्थ—अक्रूर का प्रिय करने की कामना से तथा कुछ कार्य कराने की इच्छा से प्रभु श्रीकृष्ण और उद्धव बलराम जी के साथ अक्रूर के घर गये ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**स तान् नरवर श्रेष्ठानाराद् वीक्ष्य स्वबान्धवान् ।**
**प्रत्युत्थाय प्रमुदितः परिष्वज्याभ्यनन्दत ॥१३॥**

पदच्छेद— सः तान् नरवर श्रेष्ठान् आरात् वीक्ष्य स्वबान्धवान् ।
प्रति उत्थाय प्रमुदितः परिष्वज्य अभ्यनन्दत ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः | १. अक्रूर ने | स्वबान्धवान् । | ५. अपने बन्धुओं को |
| तान् | २. उन | प्रति उत्थायम् | ७. उठकर |
| नरवर | ३. मनुष्य शिरोमणियों में | प्रमुदितः | ८. प्रेम पूर्वक |
| श्रेष्ठान् | ४. श्रेष्ठ | परिष्वज्य | १०. आलिंगन किया |
| आरात् वीक्ष्य | ६. दूर से देखकर | अभ्यनन्दत ॥ | ९. उनका अभिनन्दन और |

श्लोकार्थ—अक्रूर ने उन मनुष्य शिरोमणियों में श्रेष्ठ अपने बन्धुओं को दूर से देखकर उठकर प्रेम पूर्वक उनका अभिनन्दन और आलिङ्गन किया ।।

## चतुर्दशः श्लोकः

**ननाम कृष्णं रामं च स तैरप्यभिवादितः ।**
**पूजयामास विधिवत् कृतासनपरिग्रहान् ॥१४॥**

पदच्छेद— ननाम कृष्णम् रामम् च सः तैः अपि अभिवादितः ।
पूजयामास विधिवत् कृत आसन परिग्रहान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ननाम | ३. नमस्कार किया | पूजयामास | ११. पूजा करने लगे |
| कृष्णम् | १. अक्रूर ने श्रीकृष्ण और | विधिवत् | १०. उनकी विधिवत् |
| रामम् च | २. बलराम को | कृत | ९. कर लेने पर अक्रूर |
| सः | ५. उनको | आसन | ७. आसन |
| तैः अपि | ४. उन्होंने भी | परिग्रहान् ॥ | ८. ग्रहण |
| अभिवादितः । | ६. प्रणाम किया | | |

श्लोकार्थ—अक्रूर ने श्रीकृष्ण और बलराम को नमस्कार किया । उन्होंने भी उनको प्रणाम किया । आसन ग्रहणकर लेने पर अक्रूर उनकी विधिवत् पूजा करने लगे ।।

## पञ्चदशः श्लोकः

**पादावनेजनीरापो धारयञ्छिरसा नृप ।**
**अर्हणेनाम्बरैर्दिव्यैर्गन्धस्रग्भूषणोत्तमैः ॥१५॥**

पदच्छेद— पाद अवनेजनीः आपः धारयन् शिरसा नृप ।
अर्हणेन अम्बरैः दिव्यैः गन्ध स्रक् भूषण उत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पाद | २. | चरणों के | अर्हणेन | १२. | पूजन किया |
| अवनेजनीः | ३. | धोने से गिरे | अम्बरैः | ८. | वस्त्र |
| आपः | ४. | जल को | दिव्यैः | ७. | दिव्य |
| धारयन् | ६. | धारण करके | गन्ध | ९. | गन्ध |
| शिरसा | ५. | सिर पर | स्रक् | १०. | माला और |
| नृप । | १. | हे राजन् ! | भूषण उत्तमैः | ११. | उत्तम आभूषणों से उनका |

श्लोकार्थ— हे राजन् ! चरणों के धोने से गिरे हुये जल को सिर पर धारण करके दिव्य वस्त्र, गन्ध, माला, उत्तम आभूषणों से उनका पूजन किया ॥

## षोडशः श्लोकः

**अर्चित्वा शिरसाऽऽनम्य पादावङ्कगतौ मृजन् ।**
**प्रश्रयावनतोऽक्रूरः कृष्णरामावभाषत ॥१६॥**

पदच्छेद— अर्चित्वा शिरसा आनम्य पादौ अङ्कगतौ मृजन् ।
प्रश्रय अवनतः अक्रूरः कृष्ण रामौ अभाषत ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अर्चित्वा | १. | पूजन के पश्चात् (अक्रूर ने) | प्रश्रयः | ८. | विनय से |
| शिरसा | २. | सिर | अवनतः | ९. | झुककर |
| आनम्य | ३. | झुकाकर (प्रणाम किया और | अक्रूरः | ७. | अक्रूर ने |
| पादौ | ४. | उनके चरणों को | कृष्ण | १०. | श्रीकृष्ण और |
| अङ्कगतौ | ५. | गोद में लेकर | रामौ | ११. | बलराम जी से |
| मृजन् । | ६. | दबाने लगे (फिर) | अभाषत ॥ | १२. | कहा |

श्लोकार्थ—पूजन के पश्चात् अक्रूर ने सिर झुकाकर प्रणाम किया। और उनके चरणों को गोद में लेकर दबाने लगे । फिर अक्रूर ने विनय से झुककर श्रीकृष्ण और बलराम से कहा ॥

## सप्तदशः श्लोकः

**दिष्ट्या पापो हतः कंसः सानुगो वामिदं कुलम् ।**
**भवद्भ्यामुद्धृतं कृच्छ्राद् दुरन्ताच्च समेधितम् ॥१७॥**

पदच्छेद— दिष्टचा पापः हतः कंसः स अनुगः वाम् इदम् कुलम् ।
भवद्भ्याम् उद्धृतम् कृच्छ्रात् दुरन्तात् च समेधितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| दिष्ट्या | १. | आनन्द की बात है कि | भवद्भ्याम् | ८. | आप दोनों ने |
| पापः | २. | पापी | उद्धृतम् | ११. | बचा लिया है |
| हतः | ५. | मारा गया (और) | कृच्छ्रात् | १०. | संकट से |
| कंसः | ३. | कंस | दुरन्तात् | ९. | बहुत बड़े |
| स अनुगः | ४. | अनुयायियों के साथ | च | १२. | तथा |
| वाम् इदम् | ६. | अपने इस | समेधितम् ॥ | १३. | समृद्धिशाली बनाया है |
| कुलम् । | ७. | यदुकुल को | | | |

श्लोकार्थ—भगवान् आनन्द की बात है कि पापी कंस अपने अनुयायियों के साथ मारा गया । और अपने इस यदुकुल को आप दोनों ने बहुत बड़े संकट से बचा लिया है तथा समृद्धिशाली बनाया है ॥

## अष्टादशः श्लोकः

**युवां प्रधानपुरुषौ जगद्धेतू जगन्मयौ ।**
**भवद्भ्यां न विना किञ्चित् परमस्ति न चापरम् ॥१८॥**

पदच्छेद— युवाम् प्रधान पुरुषौ जगत् हेतू जगन्मयौ ।
भवद्भ्याम् न विना किञ्चित् परम् अस्ति न च अपरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| युवाम् | १. | आप दोनों | भवद्भ्याम् | ७. | आप दोनों के |
| प्रधान | २. | आदि | न विना | ८. | बिना नहीं |
| पुरुषौ | ३. | पुरुष | किञ्चित् | ९. | कोई (वस्तु है) न |
| जगत् | ४. | संसार के | परम् अस्ति | १०. | कारण है |
| हेतू | ५. | कारण और | न च | ११. | और न |
| जगन्मयौ । | ६. | संसार रूप हैं | अपरम् ॥ | १२. | कार्य है |

श्लोकार्थ—आप दोनों आदि पुरुष, संसार के कारण और संसार रूप हैं । आप दोनों के बिना नहीं कोई वस्तु है न कारण है, और न कार्य है ॥

# एकोनविंशः श्लोकः

**आत्मसृष्टमिदं विश्वमन्वाविश्य स्वशक्तिभिः ।**
**ईयते बहुधा ब्रह्मन् श्रुतप्रत्यक्षगोचरम् ॥१९॥**

पदच्छेद— आत्मसृष्टम् इदम् विश्वम् अनुआविश्य स्व शक्तिभिः ।
ईयते बहुधा ब्रह्मन् श्रुत प्रत्यक्ष गोचरम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आत्मसृष्टम् | २. | अपने रचे हुये | ईयते | १२. | प्रतीत हो रहे हैं |
| इदम् | ३. | इस | बहुधा | ११. | अनेक प्रकार से |
| विश्वम् | ४. | जगत् में | ब्रह्मन् | १. | हे परमात्मन् ! आप |
| अनुआविश्य | ७. | प्रविष्ट होकर | श्रुत | ८. | सुनी और |
| स्व | ५. | अपनी | प्रत्यक्ष | ९. | देखी |
| शक्तिभिः । | ६. | शक्तियों से | गोचरम् ॥ | १०. | वस्तुओं के रूप में |

श्लोकार्थ—हे परमात्मन् ! आप अपने रचे हुये इस जगत् में अपनी शक्तियों से प्रविष्ट होकर सुनी और देखी वस्तुओं के रूप में अनेक प्रकार से प्रतीत हो रहे हैं ॥

# विंशः श्लोकः

**यथा हि भूतेषु चराचरेषु मह्यादयो योनिषु भान्ति नाना ।**
**एवं भवान् केवल आत्मयोनिष्वात्माऽऽत्मतन्त्रो बहुधा विभाति ॥२०॥**

पदच्छेद— यथा हि भूतेषु चराचरेषु मही आदयः योनिषु भान्ति नाना ।
एवम् भवान् केवल आत्मयोनिषु आत्मा आत्मतन्त्रः बहुधा विभाति ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यथा हि | १. | जैसे | एवम् | ९. | इसी प्रकार |
| भूतेषु | ५. | प्राणियों तथा | भवान् | १२. | आप |
| चराचरेषु | ४. | अपने कार्य रूप स्थावर जङ्गम | केवल | १०. | केवल |
| मही | २. | पृथ्वी | आत्मयोनिषु | १३. | अपने कार्य रूप जगत् में |
| आदयः | ३. | आदि कारण तत्त्व | आत्मा | ११. | आत्मा |
| योनिषु | ६. | योनियों में | आत्मतन्त्रः | १४. | स्वेच्छा से |
| भान्ति | ८. | प्रतीत होते हैं | बहुधा | १५. | अनेक रूपों में |
| नाना । | ७. | अनेक रूपों में | विभाति ॥ | १६. | प्रतीत होती है |

श्लोकार्थ—जैसे पृथ्वी आदि कारणतत्त्व अपने कार्य रूप स्थावर-जङ्गम प्राणियों तथा योनियों में अनेक रूपों में प्रतीत होते हैं । इसी प्रकार केवल आत्मा आप अपने कार्य रूप जगत् में स्वेच्छा से अनेक रूपों में प्रतीत होती है ॥

## एकविंशः श्लोकः

**सृजस्यथो लुम्पसि पासि विश्वं रजस्तमः सत्त्वगुणैः स्वशक्तिभिः ।**
**न बध्यसे तद्गुणकर्मभिर्वा ज्ञानात्मनस्ते क्व च बन्धहेतुः ॥२१॥**

पदच्छेद— सृजसि अथो लुम्पसि पासि विश्वम् रजः तमः सत्त्व गुणैः स्व शक्तिभिः ।
न बध्यसे तद् गुण कर्मभिः वा ज्ञान आत्मनः ते क्व च बन्ध हेतुः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सृजसि | ५. सृष्टि करते हैं | न बध्य से | १०. नहीं पड़ते बन्धन में |
| अथो लुम्पसि | ७. तथा संहार करते हैं | तद्गुण | ८. किन्तु आप उन गुणों से |
| पासि | ६. पालन करते हैं | कर्मभिः वा | ९. अथवा कर्मों से |
| विश्वम् | ४. संसार की | ज्ञान आत्मनः | ११ ज्ञान स्वरूप |
| रजः तमः | १. रजोगुण -तमोगुण और | ते | १२. आपके लिये |
| सत्त्व गुणैः | २. सत्त्वगुण रूपी | क्व च | १४. कहाँ हैं |
| स्व शक्तिभिः । | ३. अपनी शक्तियों से आप | बन्ध हेतुः ॥ | १३. बन्धन का कारण |

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! रजोगुण, तमोगुण, और सत्त्वगुण रूपी अपनी शक्तियों से आप संसार की सृष्टि, पालन तथा संहार करते हैं । किन्तु आप उन गुणों से अथवा कर्मों से बन्धन में नहीं पड़ते हैं । ज्ञान स्वरूप आपके लिये बन्धन का कारण कहाँ है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

**देहाद्युपाधेरनिरूपितत्वाद् भवो न साक्षान्न भिदाऽऽत्मनः स्यात् ।**
**अतो न बन्धस्तव नैव मोक्षः स्यातां निकामस्त्वयि नोऽविवेकः ॥२२॥**

पदच्छेद— देह आदि उपाधेः अनिरूपितत्वात् भवः न साक्षात् न भिदा आत्मनः स्यात् ।
अतः न बन्धः तव न एव मोक्षः स्याताम् निकामः त्वयि नो अविवेक ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| देह आदि | १. देह आदि | अतः न बन्धः | १०. इसलिये न बन्धन है |
| उपाधेः | २. उपाधि के | तव न एव मोक्षः | ८. आप में न मोक्ष ही |
| अनिरूपितत्वात् | ३ न होने के कारण | स्याताम् | ९. है (तथा) |
| भवः न | ५. न तो जन्म | निकामः | १३. बन्धन मोक्ष की कल्पना करना निरा |
| साक्षात् न भिदा | ७ न साक्षात् भेद भाव होता है | त्वयि | ११. आप में |
| आत्मनः | ४. आत्मा का | नः | १२. हमारा |
| स्यात् । | ६. होता है (और) | अविवेकः ॥ | १४. अविवेक है |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! देह आदि उपाधि के न होने के कारण आत्मा का न तो जन्म होता है । और न साक्षात् भेद-भाव होता है । आप में न मोक्ष है । तथा इसलिये न बन्धन है । आप में हमारा बन्धन, मोक्ष की कल्पना करना निरा अविवेक है ॥

## त्रयोविंशः श्लोकः

**त्वयोदितोऽयं जगतो हिताय यदा यदा वेदपथः पुराणः ।**
**बाध्येत पाखण्डपथैरसद्भिस्तदा भवान् सत्त्वगुणं बिभर्ति ॥२३॥**

पदच्छेद— त्वया उदितः अयम् जगतः हिताय यदा-यदा वेद पथः पुराणः ।
बाध्येत पाखण्ड पथैः असद्भिः तदा भवान् सत्त्व गुणम् बिभर्ति ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वया | २. आपने | बाध्येत | १०. बाधा पहुँचती है |
| उदितः | ६. प्रकट किया है | पाखण्ड पथैः | ९. पाखण्ड मार्गों से |
| अयम् | ३. यह | असद्भिः | ८. दुष्टों के द्वारा |
| जगतः हिताय | १. संसार के कल्याण के लिये | तदा | ११. तब-तब |
| यदा-यदा | ७. जब-जब इसे | भवान् | १२. आप |
| वेद पथः | ५. वेद मार्ग | सत्त्वगुणम् | १३. सत्त्वगुणी (शरीर को) |
| पुराणः । | ४. सनातन | बिभर्ति ॥ | १४. धारण करते हैं |

श्लोकार्थ—संसार के कल्याण के लिये आपने यह सनातन वेद मार्ग प्रकट किया है। जब-जब इसे दुष्टों के द्वारा पाखण्ड मार्गों से बाधा पहुँचती है तब-तब आप सत्त्वगुणी शरीर को धारण करते हैं ॥

## चतुर्विंशः श्लोकः

**स त्वं प्रभोऽद्य वसुदेवगृहेऽवतीर्णः स्वांशेन भारमपनेतुमिहासि भूमेः ।**
**अक्षौहिणीशतवधेन सुरेतरांशराज्ञाममुष्य च कुलस्य यशो वितन्वन् ॥२४॥**

पदच्छेद— सः त्वम् प्रभो अद्य वसुदेव गृहे अवतीर्णः स्व अंशेन भारम् अपनेतुम् इह असि ।
अक्षौहिणी शत वधेन सुरेतर अंश राज्ञाम् अमुष्य च कुलस्य यशः वितन्वन् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सः त्वम् प्रभो | १. हे प्रभो ! वे आप | अक्षौहिणी शत | ११. सैकड़ों अक्षौहिणी सेना के |
| अद्य | २. इस समय | वधेन | १२. विनाश से |
| वसुदेव गृहे | ७. वसुदेव के घर में | सुरेतर अंश | ९. असुरों के वेश में उत्पन्न |
| अवतीर्ण | ८. अवतोर्ण हुये हैं | राज्ञाम् | १०. राजाओं की |
| स्व अंशेन | ५. अपने अंश बलराम जी के साथ | अमुष्य च | १३. इस |
| भारम् अपनेतुम् | ४. भार दूर करने लिये | कुलस्य | १४. यदुवंश का |
| इह असि | ६. यहाँ | यशः | १५. यश का |
| भूमेः । | ३. पृथ्वी का | वितन्वन् ॥ | १६. विस्तार करेंगे ॥ |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! वे आप इस समय पृथ्वी का भार दूर करने के लिये अपने अंश बलरामजी के साथ यहाँ वसुदेव जी के घर में अवतीर्ण हुये हैं। असुरों के वेश में उत्पन्न राजाओं की सैकड़ों अक्षौहिणी सेना के विनाश से इस यदुवंश के यश का विस्तार करेंगे ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**अद्येश नो वसतयः खलु भूरिभागा यः सर्वदेवपितृभूतनृदेवमूर्तिः ।**
**यत्पादशौचसलिलं त्रिजगत् पुनाति सत्त्वं जगद्गुरुरधोक्षज याः प्रविष्टः ॥२५॥**

पदच्छेद— अद्य ईश नो वसतयः खलु भूरिभागाः यः सर्वदेव पितृ भूत नृदेव मूर्तिः ।
यत्पाद शौच सलिलम् त्रिजगत् पुनाति सः त्वम् जगत् गुरुः अधोक्षज याः प्रविष्टः ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| अद्य | १३. आज | यत्पाद शौच | ६. जिनके चरणों का धोवन |
| ईश | २. प्रभो ! | सलिलम् | ७. गंगा जी |
| नो वसतयः | १२. हमारे घर | त्रिजगत् पुनाति | ८. तीनों लोकों को पवित्र करती हैं |
| खलु भूरिभागाः | १४. निश्चित ही धन्य-धन्य हो गये | सः त्वम् | ९. वे आप |
| यः सर्वदेव | ३. जिनकी सभी देवता | जगत् गुरुः | १०. संसार के गुरु होकर |
| पितृ-भूत | ४. पितर भूत गण और | अधोक्षज | १. इन्द्रियातीत |
| नृदेव मूर्तिः । | ५. राजाओं की मूर्ति हैं | याः प्रविष्टः ॥ | ११. जहाँ पधारे हैं । वे |

श्लोकार्थ—इन्द्रियातीत प्रभो ! जो सभी देवता, पितर, भूत गण और राजाओं की मूर्ति हैं और जिनके चरणों की धोवन गंगा जी तीनों लोकों को पवित्र करती हैं वे आप संसार के गुरु हो कर जहाँ पधारे हैं वे हमारे घर आज निश्चित ही धन्य-धन्य हो गये ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**कः पण्डितस्त्वदपरं शरणं समीयाद् भक्तप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात् ।**
**सर्वान् ददाति सुहृदो भजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौ न यस्य ॥२६॥**

पदच्छेद—कः पण्डितः त्वद् अपरम् शरणम् समीयात् भक्तप्रिय आदृत गिरः सुहृदः कृतज्ञात् ।
सर्वान् ददाति सुहृदः भजतः अभिकामान् आत्मानम् अपि उपचय अपचयौ न यस्य ॥

| शब्दार्थ | | | |
|---|---|---|---|
| कः पण्डितः | १. कौन बुद्धिमान् पुरुष | सर्वान् | ९. उसकी समस्त |
| त्वद् अपरम् | ६. आपको छोड़ कर दूसरे की | ददाति | ११. पूर्ण कर देते हैं तथा |
| शरणम् समीयात् | ७. शरण में जायेगा (क्योंकि) | सुहृदः भजतः | ८. प्रेमी भक्त का भजन करने वाले आप |
| भक्तप्रिय | २. आप भक्तों के प्रिय | अभिकामान् | १०. अभिलाषायें |
| आदृता गिरः | ३. वचन का आदर करने वाले | आत्मानम् अपि | १५. उस आत्मा का भी |
| सुहृदः | ४. बन्धु (एवम्) | उपचय | १३. वृद्धि और |
| कृतज्ञात् । | ५. कृतज्ञ | अपचयौ न | १४. क्षति नहीं होती |
| | | यस्य ॥ | १२. जिसकी |

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! कौन बुद्धिमान् पुरुष आप भक्तों के प्रिय, वचन का आदर करने वाले, बन्धु एवम् कृतज्ञ आप को छोड़ कर दूसरे की शरण में जायेगा । क्योंकि प्रेमी भक्त का भजन करने वाले आप उसकी समस्त अभिलाषायें पूर्ण कर देते हैं । तथा जिसकी वृद्धि और क्षति नहीं होती उस आत्मा का भी दान कर देते हैं ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**दिष्ट्या जनार्दन भवानिह नः प्रतीतो योगेश्वरैरपि दुरापगतिः सुरेशैः ।**
**छिन्ध्याशु नः सुतकलत्रधनाप्तगेहदेहादिमोहरशनां भवदीयमायाम् ॥२७॥**

पदच्छेद— दिष्टया जनार्दन भवान् इह नः प्रतीतः योगेश्वरैः अपि दुरापगतिः सुरेशैः ।
छिन्धि आशु नः सुतकलत्र धन आप्तगेह देह आदि मोहरशनाम् भवदीय मायाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दिष्टया | २. सौभाग्य की बात है कि | छिन्धि आशु | १४. शीघ्र काट दीजिये |
| जनार्दन | १. हे प्रभो ! | नः सुतकलत्र | १०. हमारे पुत्र-स्त्री |
| भवान् इह नः | ६. आप यहाँ हमें | धन आप्तगेह | ११. धन-स्वजन-घर और |
| प्रतीतः | ७. दृष्टि गोचर हो रहे हैं | देह आदि | १२. देह आदि के |
| योगेश्वरैः अपि | ३. योगेश्वरों और | मोहरशनाम् | १३. मोह की रस्सी को आप |
| दुरापगतिः | ५. दुष्प्राप्य स्वरूप वाले | भवदीय | ८. आपकी |
| सुरेशैः । | ४. देवराजों से भी | मायाम् ॥ | ९. माया रूप |

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! सौभाग्य की बात है कि योगेश्वरों और देवराजों से भी दुष्प्राप्य स्वरूप वाले आप यहाँ हमें दृष्टि गोचर हो रहे हैं । आप की माया रूप हमारे पुत्र-स्त्री-धन-स्वजन-घर और देह आदि के मोह रूपी रस्सी को आप शीघ्र काट दीजिये ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— इत्यर्चितः संस्तुतश्च भक्तेन भगवान् हरिः ।**
**अक्रूरं सस्मितं प्राह गीर्भिः सम्मोहयन्निव ॥२८॥**

पदच्छेद— इति अर्चितः संस्तुतः च भक्तेन भगवान् हरिः ।
अक्रूरम् सस्मितं प्राह गीर्भिः सम्मोहयन् इव ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| इति | १. इस प्रकार | अक्रूरम् | ११. अक्रूर से |
| अर्चितः | ३. पूजित | सस्मित | ७. मुसकरा कर |
| संस्तुत | ५. स्तुति किये जाने पर | प्राह | १२. कहा |
| च | ४. और | गीर्भिः | ८. अपनी वाणी से |
| भक्तेन | २. भक्त अक्रूर द्वारा | सम्मोहयन् | १०. मोहित करते हुये |
| भगवान् हरिः । | ६. भगवान् श्रीकृष्ण ने | इव ॥ | ९. मानों |

श्लोकार्थ—इस प्रकार भक्त अक्रूर द्वारा पूजित और स्तुति किये जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने मुसकरा कर अपनी वाणी से मानों मोहित करते हुये अक्रूर से कहा ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**श्रीभगवानुवाच—त्वं नो गुरुः पितृव्यश्च श्लाघ्यो बन्धुश्च नित्यदा ।**
**वयं तु रक्ष्याः पोष्याश्च अनुकम्प्याः प्रजा हि वः ॥२९॥**

पदच्छेद— त्वम् नः गुरुः पितृव्यः च श्लाघ्यः बन्धुः च नित्यदा ।
वयम् तु रक्ष्याः पोष्याः च अनुकम्प्याः प्रजा हि वः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| त्वम् नः | १. | आप हमारे | वयम् तु | ७. | हम तो |
| गुरुः | २. | गुरु | रक्ष्याः | ९. | रक्षणीय |
| पितृव्यः | ३. | चाचा | पोष्याः च | १०. | पालनीय और |
| च श्लाघ्यः | ४. | और प्रशंसनीय | अनुकम्प्याः | ११. | अनुकम्पनीय |
| बन्धुः | ६. | हितैषी हैं | प्रजाः | १२. | प्रजा है |
| च नित्यदा । | ५. | तथा सदा के | हि वः ॥ | ८. | आपकी ही |

श्लोकार्थ—आप हमारे गुरु, चाचा और प्रशंसनीय सदा के हितैषी है । हम तो आपकी ही रक्षणीय, पालनीय, अनुकम्पनीय प्रजा हैं ॥

## त्रिंशः श्लोकः

**भवद्विधाः महाभागा निषेव्या अर्हसत्तमाः ।**
**श्रेयस्कामैर्नृभिर्नित्यं देवाः स्वार्था न साधवः ॥३०॥**

पदच्छेद— भवत् विधाः महाभागाः निषेव्याः अर्हसत्तमाः ।
श्रेयः कामैः नृभिः नित्यम् देवाः स्वार्थाः न साधवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भवत् | ३. | आप | श्रेयः कामैः | १. | कल्याण चाहने वाले |
| विधाः | ४. | जैसे | नृभिः | २. | मनुष्यों को |
| महाभागाः | ५. | महाभाग्यवान् | नित्यम् | ७. | नित्य |
| निषेव्याः | ८. | सेवा करनी चाहिये | देवाः | ९. | देवताओं में |
| अर्हं सत्तमाः । | ६. | परम पूजनीय सन्तों की | स्वार्थाः | १०. | स्वार्थ रहता है |
| | | | न साधवः ॥ | ११ | भक्तों में स्वार्थ नहीं होता है |

श्लोकार्थ—कल्याण चाहने वाले मनुष्यों को आप जैसे महा भाग्यवान् परम पूजनीय सन्तों की सेवा करना चाहिये । देवताओं में स्वार्थ रहता है, भक्तों में स्वार्थ नहीं होता है ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः।**
**ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः ॥३१॥**

पदच्छेद— नहि अम्मयानि तीर्थानि न देवाः मृच्छिलामयाः।
ते पुनन्ति उरु कालेन दर्शनात् एव साधवः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | १. | न तो | ते | ८. | वे (तीर्थ) |
| अम्मयानि | २. | जलमय | पुनन्ति | ११. | पवित्र करते हैं (किन्तु) |
| तीर्थानि | ३. | तीर्थ (ही तीर्थ हैं) | उरु | ९. | बहुत |
| न | ४. | और न | कालेन | १०. | समय के बाद |
| देवाः | ७. | देवता हैं | दर्शनात् | १३. | दर्शन मात्र से |
| मृच्छिला | ५. | मिट्टी और पत्थर की | एव | १४. | ही (पवित्र कर देते हैं)। |
| मयाः। | ६. | बनी मूर्तियाँ ही | साधवः ॥ | १२. | सन्त पुरुष |

श्लोकार्थ—न तो जल मय तीर्थ हैं। और न मिट्टी और पत्थर की बनी मूर्तियाँ ही देवता हैं। वे तीर्थ बहुत समय के बाद पवित्र करते हैं। किन्तु सन्त पुरुष दर्शन मात्र से पवित्र कर देते हैं ॥

## द्वात्रिंशः श्लोकः

**स भवान् सुहृदां वै नः श्रेयाञ्छ्रेयश्चिकीर्षया।**
**जिज्ञासार्थं पाण्डवानां गच्छस्व त्वं गजाह्वयम् ॥३२॥**

पदच्छेद— सः भवान् सुहृदाम् वै नः श्रेयान् श्रेयः चिकीर्षया।
जिज्ञासा अर्थम् पाण्डवानाम् गच्छस्व त्वम् गजाह्वयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सः | १. | सो | जिज्ञासा | १०. | कुशल मंगल |
| भवान् | २. | आप | अर्थम् | ११. | जानने के लिये |
| सुहृदाम् | ४. | हितैषियों में | पाण्डवानाम् | ७. | पाण्डवों का |
| वै नः | ३. | निश्चित ही हमारे | गच्छस्व | १३. | जाइये |
| श्रेयान् | ५. | सर्वश्रेष्ठ हैं (अतः) | त्वम् | ६. | आप |
| श्रेयः | ८. | कल्याण | गजाह्वयम् ॥ | १२ | हस्तिनापुर |
| चिकीर्षया। | ९. | चाहने की इच्छा से (और) | | | |

श्लोकार्थ— सो आप निश्चित ही हमारे हितैषियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। अतः आप पाण्डवों का कल्याण करने की इच्छा से और कुशल मङ्गल जानने के लिये हस्तिनापुर जाइये ॥

## त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

**पितर्युपरते बालाः सह मात्रा सुदुःखिताः ।**
**आनीताः स्वपुरं राज्ञा वसन्त इति शुश्रुम ॥३३॥**

पदच्छेद— पितरि उपरते बालाः सह मात्रा सुदुःखिताः ।
आनीताः स्वपुरम् राज्ञा वसन्तः इति शुश्रुमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पितरि | १. | पिता (पाण्डु के) | आनीताः | ४. | लाये गये (तथा) |
| उपरते | २. | मर जाने पर | स्वपुरम् | ३. | अपने घर (हस्तिनापुर में) |
| बालाः | ७. | बालक (पाण्डव) | राज्ञा | ५. | राजा (धृतराष्ट्र के) साथ |
| सह | ९. | साथ | वसन्तः | ६. | रहते हुये |
| मात्रा | ८. | माता (कुन्ती के) | इति | ११. | ऐसा |
| सुदुःखिता। | १०. | बड़े दुःख में पड़ गये थे | शुश्रुमः ॥ | १२. | हमने सुना है |

श्लोकार्थ—पिता पाण्डु के मर जाने पर अपने घर हस्तिनापुर में लाये गये। तथा राजा धृतराष्ट्र के साथ रहते हुये बालक पाण्डव माता कुन्ती के साथ बड़े दुःख में पड़ गये थे। ऐसा हमने सुना है ॥

## चतुस्त्रिंशः श्लोकः

**तेषु राजाम्बिकापुत्रो भ्रातृपुत्रेषु दीनधीः ।**
**समो न वर्तते नूनं दुष्पुत्रवशगोऽन्धदृक् ॥३४॥**

पदच्छेद— तेषु राजा अम्बिकापुत्रः भ्रातृ पुत्रेषु दीन धीः ।
समः न वर्तते नूनम् दुष्पुत्र वशगः अन्ध दृक् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेषु | ३. | उन | समः | १३. | समभाव |
| राजा | २. | राजा धृतराष्ट्र | न वर्तते | १४. | नहीं रखते हैं |
| अम्बिका पुत्रः | १. | अम्बिका पुत्र | नूनम् | १०. | निश्चित ही |
| भ्रातृ | ४. | भाई के | दुष्पुत्र | ८. | कुपुत्रों के |
| पुत्रेषु | ५. | पुत्रों (पाण्डवों के) प्रति | वशगः | ९. | वश में पड़े हुये |
| दीन | ६. | दुष्ट | अन्ध | ११. | अन्धे |
| धीः । | ७. | बुद्धि वाले हैं (और) | दृक् ॥ | १२. | नेत्र वाले (वे धृतराष्ट्र) |

श्लोकार्थ—अम्बिका पुत्र राजा धृतराष्ट्र उन भाई के पुत्रों पाण्डवों के प्रति दुष्ट बुद्धि वाले हैं। और कुपुत्रों के वश में पड़े हुये निश्चित ही अन्धे नेत्र वाले वे धृतराष्ट्र समभाव नहीं रखते हैं ॥

## पञ्चत्रिंशः श्लोकः

**गच्छ जानीहि तद्वृत्तमधुना साध्वसाधु वा।**
**विज्ञाय तद् विधास्यामो यथा शं सुहृदां भवेत् ॥३५॥**

पदच्छेद— गच्छ जानीहि तत् वृत्तम् अधुना साधु असाधु वा।
विज्ञाय तत् विधास्यामः यथा शम् सुहृदाम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| गच्छ | २. | जाइये (और) | विज्ञाय | ९. | जान कर |
| जानीहि | ५. | मालूम कीजिये कि | तत् | ८. | उसे |
| तत् | ३. | उनका | विधास्यामः | १०. | वैसा हम करेंगे |
| वृत्तम् | ४. | समाचार | यथा | ११. | जिससे |
| अधुना | १. | इस समय (आप) | शम् | १३. | सुख |
| साधु | ६. | अच्छा है | सुहृदाम् | १२. | बन्धुओं को |
| असाधु वा। | ७. | या बुरा | भवेत् ॥ | १४. | मिले |

श्लोकार्थ—इस समय आप जाइये और उनका समाचार मालूम कीजिये कि अच्छा है या बुरा, उसे जान कर वैसा हम करेंगे, जिससे बन्धुओं को सुख मिले ॥

## षट्त्रिंशः श्लोकः

**इत्यक्रूरं समादिश्य भगवान् हरीरीश्वरः।**
**सङ्कर्षणोद्धवाभ्यां वै ततः स्वभवनं ययौ ॥३६॥**

पदच्छेद— इति अक्रूरम् समादिश्य भगवान् हरिः ईश्वरः।
सङ्कर्षण उद्धवाभ्याम् वै ततः स्व भवनम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | सङ्कर्षण | ७. | बलराम और |
| अक्रूरम् | २. | अक्रूर को | उद्धवाभ्याम् | ८. | उद्धव के साथ |
| समादिश्य | ३. | आदेश देकर | वै ततः | ९. | वहाँ से |
| भगवान् | ५. | भगवान् | स्व | १०. | अपने |
| हरिः | ६. | श्रीकृष्ण | भवनम् | ११. | घर को |
| ईश्वरः। | ४. | सर्वशक्तिमान् | ययौ ॥ | १२. | चले गये |

श्लोकार्थ—इस प्रकार अक्रूर को आदेश देकर सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण बलराम और उद्धव जी के साथ वहाँ से अपने घर को चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
अष्टचत्वारिंशः अध्यायः ॥४८॥

## प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—स गत्वा हास्तिनपुरं पौरवेन्द्रयशोऽङ्कितम् ।
दददर्श तत्राम्बिकेयं सभीष्मं विदुरं पृथाम् ॥१॥

पदच्छेद— स: गत्वा हास्तिनपुरम् पौरवेन्द्र यश: अङ्कितम् ।
ददर्श तत्र आम्बिकेयम् सभीष्मम् विदुरम् पृथाम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स: | १. | उन्होंने | ददर्श | १२. | देखा |
| गत्वा | ६. | जाकर | तत्र | ७. | वहाँ |
| हस्तिनापुरम् | ५. | हस्तिनापुर | आम्बिकेयम् | ९. | धृतराष्ट्र और |
| पौरवेन्द्र | २. | पुरुवंशी राजाओं के | सभीष्मम् | ८. | भीष्म सहित |
| यश: | ३. | यश से | विदुरम् | १०. | विदुर तथा |
| अङ्कितम् । | ४. | अङ्कित | पृथाम् ॥ | ११. | कुन्ती को |

श्लोकार्थ—उन्होंने पुरुवंशी राजाओं के यश से अङ्कित हस्तिनापुर जाकर वहाँ भीष्म सहित धृतराष्ट्र और विदुर तथा कुन्ती को देखा ॥

## द्वितीयः श्लोकः

सहपुत्रं च बाह्लीकं भारद्वाजं सगौतमम् ।
कर्णं सुयोधनं द्रौणिं पाण्डवान् सुहृदोऽपरान् ॥२॥

पदच्छेद— सह पुत्रम् च बाह्लीकम् भारद्वाजम् स गौतमम् ।
कर्णम् सुयोधनम् द्रौणिम् पाण्डवान् सुहृद: अपरान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सह | ३. | सहित | कर्णम् | ७. | कर्ण |
| पुत्रम् | २. | पुत्र (सोम दत्त) | सुयोधनम् | ८. | दुर्योधन |
| च | १. | और (वे) | द्रौणिम् | ९. | अश्वत्थामा |
| बाह्लीकम् | ४. | बाह्लीक | पाण्डवान् | १०. | पाण्डवों (तथा) |
| भारद्वाजम् | ५. | भारद्वाज (द्रोणाचार्य) | सुहृद: | १२. | इष्ट-मित्रों से मिले |
| सगौतमम् । | ६. | गौतम (कृपाचार्य) सहित | अपरान् ॥ | ११. | अन्य |

श्लोकार्थ—और वे पुत्र सोमदत्त सहित बाह्लीक, भारद्वाज (द्रोणाचार्य) गौतम (कृपाचार्य) सहित कर्ण, दुर्योधन, अश्वत्थामा, पाण्डवों तथा अन्य इष्ट-मित्रों से मिले ॥

## तृतीयः श्लोकः

**यथावदुपसङ्गम्य बन्धुभिर्गान्दिनीसुतः ।**
**सम्पृष्टस्तैः सुहृद्वार्तां स्वयं चापृच्छदव्ययम् ॥३॥**

पदच्छेद— यथावत् उपसङ्गम्य बन्धुभिः गान्दिनी सुतः ।
सम्पृष्टः तैः सुहृद् वार्तां स्वयम् च अपृच्छत् अव्ययम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यथावत् | ४. | भली-भाँति | सम्पृष्टः | ८. | पूछे जाने पर |
| उपसङ्गम्य | ५. | मिलकर | तैः | ६. | उनके द्वारा (मथुरा वासी) |
| बन्धुभिः | ३. | सगे सम्बन्धियों से | सुहृद्वार्तां | ७. | बन्धुओं का कुशल क्षेम |
| गान्दिनी | १. | गान्दिनो | स्वयम् च | ९. | स्वयम् भी (हस्तिनापुर वासियों को) |
| सुतः । | २. | पुत्र (अक्रूर) ने | अपृच्छत् | ११. | पूछा |
| | | | अव्ययम् ॥ | १०. | कुशल मंगल |

श्लोकार्थ—गान्दिनी पुत्र अक्रूर ने सगे सम्बन्धियों से भली-भाँति मिलकर उनके द्वारा मथुरावासी बान्धवों का कुशल क्षेम पूछे जाने पर स्वयम् भी हस्तिनापुर वासियों का कुशल मंगल पूछा ॥

## चतुर्थः श्लोकः

**उवास कतिचिन्मासान् राज्ञो वृत्तविवित्सया ।**
**दुष्प्रजस्याल्पसारस्य खलच्छन्दानुवर्तिनः ॥४॥**

पदच्छेद— उवास कतिचित् मासान् राज्ञः वृत्त विवित्सया ।
दुष्प्रजस्य अल्प सारस्य खलः छन्द अनुवर्तिनः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उवास | १२. | रह गये | दुष्प्रजस्य | १. | दुष्ट पुत्रों वाले |
| कतिचित् | १०. | कुछ | अल्प | २. | कम |
| मासान् | ११. | महीनों तक (वहीं) | सारस्य | ३. | बल वाले |
| राज्ञः | ७. | राजा धृतराष्ट्र के | खलः | ४. | दुष्टों की |
| वृत्त | ८. | व्यवहार को | छन्दः | ५. | सलाह के |
| विवित्सया । | ९. | जानने की इच्छा से (अक्रूर) | अनुवर्तिनः ॥ | ६. | अनुसार चलने वाले उन |

श्लोकार्थ—दुष्ट पुत्रों वाले, कम बल वाले दुष्टों की सलाह के अनुसार चलने वाले उन राजा धृतराष्ट्र के व्यवहार को जानने की इच्छा से अक्रूर कुछ महीनों वहीं पर रह गये ॥

## पञ्चमः श्लोकः

**तेज ओजो बलं वीर्यं प्रश्रयादींश्च सद्गुणान् ।**
**प्रजानुरागं पार्थेषु न संहद्भिश्चिकीर्षितम् ॥५॥**

पदच्छेद— तेज ओजः बलम् वीर्यम् प्रश्रय आदीन् च सद्गुणान् ।
प्रजा अनुरागम् पार्थेषु न संहद्भिः चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तेजः | १. | पाण्डवों के प्रभाव | प्रजा | ८. | प्रजाओं का |
| ओजः | २. | शस्त्र कौशल | अनुरागम् | ९. | प्रेम |
| बलम् | ३. | बल | पार्थेषु | ७. | पाण्डवों के प्रति |
| वीर्यम् | ४. | वीरता (और) | न | १०. | न |
| प्रश्रय आदीन् | ५. | विनय आदि | सहद्भिः | ११. | सहन करते हुये (कौरवों ने) |
| च सद्गुणान् । | ६. | उत्तम गुणों और | चिकीर्षितम् । | १२. | पाण्डवों का (अनिष्ट करना चाहा) |

श्लोकार्थ—पाण्डवों के प्रभाव, शस्त्र कौशल, बल, वीरता, विनय आदि उत्तम गुणों और पाण्डवों के प्रति प्रजाओं का प्रेम न सहन करते हुये कौरवों ने पाण्डवों का अनिष्ट करना चाहा ॥

## षष्ठः श्लोकः

**कृतं च धार्तराष्ट्रैर्यद् गरदानाद्यपेशलम् ।**
**आचख्यौ सर्वमेवास्मै पृथा विदुर एव च ॥६॥**

पदच्छेद— कृतम् च धार्त राष्ट्रैः यत् गरदान आदि अपेशलम् ।
आचख्यौ सर्वम् एव अस्मै पृथा विदुरः एव च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृतम् | ६. | किये थे उन | आचख्यौ | १२. | कहा |
| च धार्तराष्ट्रैः | १. | और धृतराष्ट्र के पुत्रों (ने) | सर्वम् एव | ७. | सब ही बातों का |
| यत् | २. | जो | अस्मै | ११. | अक्रूर जी से |
| गरदान | ३. | विषदान | पृथा | ८. | कुन्ती |
| आदि | ४. | आदि | विदुर | १०. | विदुरने ही |
| अपेशलम् । | ५. | अत्याचार | एव च ॥ | ९. | और |

श्लोकार्थ—और धृतराष्ट्र के पुत्रों ने जो विष दान आदि अत्याचार किये थे, उन सब ही बातों को कुन्ती और विदुर जी ने ही अक्रूर जी से कहा ॥

## सप्तमः श्लोकः

**पृथा तु भ्रातरं प्राप्तमक्रूरमुपसृत्य तम् ।**
**उवाच जन्मनिलयं स्मरन्त्यश्रुकलेक्षणा ॥७॥**

पदच्छेद— पृथा तु भ्रातरम् प्राप्तम् अक्रूरम् उपसृत्य तम् ।
उवाच जन्म निलयम् स्मरन्ती अश्रुकलेक्षणा ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पृथा तु | १. | कुन्ती तो | उवाच | १२. | बोली |
| भ्रातरम् | २. | भाई | जन्म | ७. | जन्म |
| प्राप्तम् | ४. | आने पर | निलयम् | ८. | भूमि का |
| अक्रूरम् | ३. | अक्रूर के | स्मरन्ती | ९. | स्मरण करती हुई |
| उपसृत्य | ६. | पास जाकर | अश्रुकल | ११. | आँसू भर कर |
| तम् । | ५. | उनके | ईक्षणा ॥ | १०. | आँखों में |

श्लोकार्थ—कुन्ती तो भाई अक्रूर के आने पर उनके पास जाकर जन्म भूमि का स्मरण करती हुई आँखों में आँसू भरकर कर बोली ॥

## अष्टमः श्लोकः

**अपि स्मरन्ति नः सौम्य पितरौ भ्रातरश्च मे ।**
**भगिन्यो भ्रातृपुत्राश्च जामयः सख्य एव च ॥८॥**

पदच्छेद— अपि स्मरन्ति नः सौम्य पितरौ भ्रातरः च मे ।
भगिन्यः भ्रातृ पुत्राः च जामयः सख्यः एव च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अपि | २. | क्या | भगिन्यः | ६. | बहिनें |
| स्मरन्ति | १३. | स्मरण करती है | भ्रातृ पुत्राः | ८. | भतीजे |
| नः | १२. | हमारा | च | ७. | और |
| सौम्य | १. | प्यारे भाई | जामयः | ९. | कुल की स्त्रियाँ |
| पितरौ | ४. | माँ-बाप | सख्यः | ११. | सहेलियाँ |
| भ्रातरः च | ५. | और भाई | एव च ॥ | १०. | तथा |
| मे । | ३. | मेरे | | | |

श्लोकार्थ—प्यारे भाई, क्या मेरे माँ-बाप और भाई-बहिनें भतीजे और कुल की स्त्रियाँ तथा सहेलियाँ हमारा स्मरण करती हैं ॥

## नवमः श्लोकः

**भ्रात्रेयो भगवान् कृष्णः शरण्यो भक्तवत्सलः ।**
**पैतृष्वसेयान् स्मरति रामश्चाम्बुरुहेक्षणः ॥९॥**

पदच्छेद— भ्रात्रेयः भगवान् कृष्णः शरण्यः भक्त वत्सलः ।
पैतृष्वसेयान् स्मरति रामः च अम्बुरुह ईक्षणः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भ्रात्रेयः | ४. हमारे भतीजे | पैतृष्वसेयान् | ११. क्या फुफेरे भाइयों का |
| भगवान् | ५. भगवान् | स्मरति | १२. स्मरण करते हैं |
| कृष्णः | ६. श्रीकृष्ण | रामः | १०. बलराम |
| शरण्यः | १. शरणागत रक्षक (और) | च | ७. और |
| भक्त | २. भक्त | अम्बुरुह | ८. कमल |
| वत्सलः । | ३. वत्सल | ईक्षणः ॥ | ९. नयन |

श्लोकार्थ—शरणागतरक्षक और भक्तवत्सल हमारे भतीजे भगवान् श्रीकृष्ण और कमलनयन बलराम क्या फुफेरे भाइयों का स्मरण करते हैं ॥

## दशमः श्लोकः

**सापत्नमध्ये शोचन्तीं वृकाणां हरिणीमिव ।**
**सान्त्वयिष्यति मां वाक्यैः पितृहीनांश्च बालकान् ॥१०॥**

पदच्छेद— सपत्न मध्ये शोचन्ती वृकाणाम् हरिणीम् इव ।
सान्त्वयिष्यति माम् वाक्यैः पितृ हीनान् च बालकान् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सपत्न | १. शत्रुओं के | सान्त्वयिष्यति | १२. सान्त्वना देंगे |
| मध्ये | २. बीच (घिर कर) वैसे ही | माम् | ७. (क्या श्रीकृष्ण) मुझे |
| शोचन्ती | ३. शोक कर रही थी | वाक्यैः | ११. वचनों से |
| वृकाणाम् | ५. भेड़ियों के बीच में | पितृ हीनान् | ९. पिता से रहित |
| हरिणीम् | ६. हरिणी हों (और बोलो) | च | ८. और |
| इव । | ४. जैसे | बालकान् ॥ | १०. इन बालकों को (अपने) |

श्लोकार्थ—हे भाई ! शत्रुओं के बीच घिर कर वैसे ही शोक कर रही थी । जैसे भेड़ियों के बीच में हरिणी हो । और बोली क्या कभी श्रीकृष्ण मुझे और पिता से रहित इन बालकों को अपने वचनों से सान्त्वना देंगे ॥

## एकादशः श्लोकः

**कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन ।**
**प्रपन्नां पाहि गोविन्द शिशुभिश्चावसीदतीम् ॥११॥**

पदच्छेद— कृष्ण-कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्व भावन ।
प्रपन्नाम् पाहि गोविन्द शिशुभिः च अवसीदतीम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्ण कृष्ण | १. | हे कृष्ण हे कृष्ण ! | प्रपन्नाम् | ९. | शरणागत की |
| महायोगिन् | २. | तुम महायोगी हो | पाहि | १०. | रक्षा करो |
| विश्वात्मन् | ३. | विश्व के आत्मा और | गोविन्द | ६. | हे गोविन्द ! |
| विश्व | ४. | विश्व के | शिशुभिः च | ७. | बालकों के साथ |
| भावन । | ५. | जीवनदाता हो | अवसीदतीम् ॥ | ८. | दुःख भोगती हुई मुझ |

श्लोकार्थ—हे कृष्ण-हे कृष्ण ! तुम महायोगी हो ! विश्व के आत्मा और विश्व के जीवनदाता हो ! हे गोविन्द ! बालकों के साथ दुःख भोगती हुई मुझ शरणागत की रक्षा करो ॥

## द्वादशः श्लोकः

**नान्यत्तव पदाम्भोजात् पश्यामि शरणं नृणाम् ।**
**बिभ्यतां मृत्युसंसारादीश्वरस्यापवर्गिकात् ॥१२॥**

पदच्छेद— न अन्यत् तव पदाम्भोजात् पश्यामि शरणम् नृणाम् ।
बिभ्यताम् मृत्यु संसारात् ईश्वरस्य आपवर्गिकात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न अन्यत् | ९. | अतिरिक्त कोई नहीं | बिभ्यताम् | ३. | डरते हुये |
| तव | ५. | आप | मृत्यु | १. | मृत्यु मय इस |
| पदाम्भोजात् | ८. | चरण कमल के | संसारात् | २. | संसार से |
| पश्यामि | ११. | देखती हूँ | ईश्वरस्य | ६. | ईश्वर के |
| शरणम् | १०. | सहारा | आपवर्गिकात् ॥ | ७. | मोक्षदायक |
| नृणाम् ॥ | ४. | मनुष्यों के लिये | | | |

श्लोकार्थ— मैं मृत्युमय इस संसार से डरते हुये मनुष्यों के लिये आप ईश्वर के मोक्षदायक चरण कमलों के अतिरिक्त कोई सहारा नहीं देखती हूँ ॥

## त्रयोदशः श्लोकः

**नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ।**
**योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणं गता ॥१३॥**

पदच्छेद— नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ।
योगेश्वराय योगाय त्वाम् अहम् शरणम् गता ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नमः | ७. नमस्कार है | योगेश्वराय | ४. | योगों के स्वामी और |
| कृष्णाय | ६. श्रीकृष्ण को | योगाय | ५. | योगरूप |
| शुद्धाय | १. शुद्ध | त्वाम् | ६. | आप की |
| ब्रह्मणे | २. ब्रह्म | अहम् | ८. | मैं |
| परमात्मने । | ३. परमात्मा | शरणम् गता ॥ | १०. | शरण में आई हूँ |

श्लोकार्थ—शुद्ध ब्रह्म परमात्मा, योगों के स्वामी, योग रूप श्रीकृष्ण को नमस्कार है। मैं आपकी शरण में आई हूँ ॥

## चतुर्दशः श्लोकः

**श्रीशुक उवाच— इत्यनुस्मृत्य स्वजनं कृष्णं च जगदीश्वरम् ।**
**प्रारुदद् दुःखिता राजन् भवतां प्रपितामही ॥१४॥**

पदच्छेद— इति अनुस्मृत्य स्वजनम् कृष्णम् च जगदीश्वरम् ।
प्रारुदत् दुःखिता राजन् भवताम् प्रपितामही ॥

शब्दार्थ—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| इति | २. इस प्रकार | प्रारुदत् | ११. | बहुत रोने लगीं |
| अनुस्मृत्य | ७. स्मरण करके | दुःखिता | १०. | दुःखित होकर |
| स्वजनम् | ३. सगे-सम्बन्धियों | राजन् | १. | हे परीक्षित् ! |
| कृष्णम् | ६. श्रीकृष्ण का | भवताम् | ८. | आपकी |
| च | ४. और | प्रपितामही ॥ | ६. | परदादी (कुन्ती) |
| जगदीश्वरम् । | ५. संसार के ईश्वर | | | |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार सगे सम्बन्धियों और संसार के ईश्वर श्रीकृष्ण का स्मरण करके आपको परदादी कुन्ती दुःखित होकर रोने लगीं ॥

## पञ्चदशः श्लोकः

**समदुःखसुखोऽक्रूरो विदुरश्च महायशाः ।**
**सान्त्वयामासतुः कुन्तीं तत्पुत्रोत्पत्तिहेतुभिः ॥१५॥**

पदच्छेद— सम दुःख सुख अक्रूरः विदुरः च महायशाः ।
सान्त्वयामासतुः कुन्तीम् तत् पुत्र उत्पत्ति हेतुभिः ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सम | ३. समान भाव रखने वाले | सान्त्वयामासतुः | १२. सान्त्वना देने लगे |
| दुःख | १. दुःख और | कुन्तीम् | ७. कुन्ती को |
| सुख | २. सुख में | तत् | ८. उसके |
| अक्रूरः | ६. अक्रूर | पुत्र | ९. पुत्रों की |
| विदुरः च | ५. विदुर और | उत्पत्ति | १०. उत्पत्ति के |
| महायशाः । | ४. महान् यशस्वी | हेतुभिः ॥ | ११. कारण के द्वारा |

श्लोकार्थ—दुःख और सुख को समान समझने वाले महान् यशस्वी विदुर और अक्रूर कुन्ती को उसके पुत्रों की उत्पत्ति के कारण के द्वारा सान्त्वना देने लगे ॥

## षोडशः श्लोकः

**यास्यन् राजानमभ्येत्य विषमं पुत्रलालसम् ।**
**अवदत् सुहृदां मध्ये बन्धुभिः सौहृदोदितम् ॥१६॥**

पदच्छेद— यास्यन् राजानम् अभ्येत्य विषमम् पुत्र लालसम् ।
अवदत् सुहृदाम् मध्ये बन्धुभिः सौहृद उदितम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यास्यन् | १. घर जाते हुये अक्रूर ने | अवदत् | १२. कहने लगे |
| राजानम् | ५. राजा धृतराष्ट्र के | सुहृदाम् | १०. मित्रों के |
| अभ्येत्य | ६. पास पहुँच कर | मध्ये | ११. बीच |
| विषमम् | ३. विषम | सबन्धुभिः | ७. बन्धु (बलराम आदि) का |
| पुत्र | २. पुत्रों के प्रति | सौहृदः | ८. हितैषिता से भरा |
| लालसम् । | ४. पक्षपात करने वाले | उदितम् ॥ | ९. सन्देश |

श्लोकार्थ—घर जाते हुये अक्रूर ने पुत्रों के प्रति विषम पक्षपात करने वाले राजा धृतराष्ट्र के पास पहुँच कर बन्धु बलराम आदि का हितैषिता से भरा सन्देश मित्रों के बीच कहने लगे ॥

## सप्तदशः श्लोकः

अक्रूर उवाच— भो भो वैचित्रवीर्य त्वं कुरूणां कीर्तिवर्धन ।
भ्रातर्युपरते पाण्डावधुनाऽऽसनमास्थितः ॥१७॥

पदच्छेद— भो भो वैचित्रवीर्य त्वम् कुरूणाम् कीर्तिवर्धन ।
भ्रातरि उपरते पाण्डौ अधुना आसनम् आस्थितः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भो भो | ४. | हे | भ्रातरि | ७. | भाई |
| वैचित्रवीर्य | ५. | विचित्र वीर्य के पुत्र | उपरते | ६. | मर जाने पर |
| त्वम् | ६. | आप | पाण्डौ | ८. | पाण्डु के |
| कुरूणाम् | १. | कुरुवंश की | अधुना | १०. | इस समय |
| कीर्ति | २. | कीर्ति का | आसनम् | ११. | राज्य सिंहासन पर |
| वर्धन । | ३. | बढ़ाने वाले | आस्थितः ॥ | १२. | विराजमान हैं |

श्लोकार्थ—कुरुवंश की कीर्ति को बढ़ाने वाले हे विचित्र वीर्य के पुत्र ! आप भाई पाण्डु के मर जाने पर इस समय राज्य सिंहासन पर विराज मान हैं ॥

## अष्टादशः श्लोकः

धर्मेण पालयन्नुर्वीं प्रजाः शीलेन रञ्जयन् ।
वर्तमानः समः स्वेषु श्रेयः कीर्तिमवाप्स्यसि ॥१८॥

पदच्छेद— धर्मेण पालयन् उर्वीम् प्रजाः शीलेन रञ्जयन् ।
वर्तमानः समः स्वेषु श्रेयः कीर्तिम् अवाप्स्यसि ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धर्मेषु | १. | धर्म से | वर्तमानः | ६. | बर्ताव करते हुये |
| पालयन् | ३. | पालन करते हुये | समः | ८. | समान |
| उर्वीम् | २. | पृथ्वी का | स्वेषु | ७. | अपने स्वजनों के साथ |
| प्रजाः | ५. | प्रजाओं को | श्रेयः | १०. | कल्याण और |
| शीलेन | ४. | सद् व्यहार से | कीर्तिम् | ११. | कीर्ति को |
| रञ्जयन् । | ६. | प्रसन्न रखते हुये | अवाप्स्यसि । | १२. | प्राप्त करेंगे । |

श्लोकार्थ धर्म से पृथ्वी का पालन करते हुये सद् व्यवहार से प्रजाओं को प्रसन्न रखते हुये अपने स्वजनों के साथ समान बर्ताव करते हुये कल्याण और कीर्ति को प्राप्त करेंगे ॥

## एकोनविंशः श्लोकः

**अन्यथा त्वाचरँल्लोके गर्हितो यास्यसे तमः ।**
**तस्मात् समत्वे वर्तस्व पाण्डवेष्वात्मजेषु च ॥१९॥**

पदच्छेद— अन्यथा तु आचरम् लोके गर्हितः यास्यसे तमः
तस्मात् समत्वे वर्तस्व पाण्डवेषु आत्मजेषु च ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अन्यथा | १. | इसके विपरीत | तस्मात् | ८. | इसलिये |
| तु | ३. | तो | समत्वे | १२. | समानता का |
| आचरन् | २. | आचरण करने पर | वर्तस्व | १३. | बर्ताव कीजिये |
| लोके | ४. | लोक में | पाण्डवेषु | ११. | पाण्डवों के साथ |
| गर्हितः | ५. | निन्दित होकर | आत्मजेषु | ९. | अपने पुत्रों |
| यास्यसे | ७. | जायेंगे | च ॥ | १०. | और |
| तमः । | ६. | नरक में | | | |

श्लोकार्थ—इसके विपरीत आचरण करने पर तो लोक में निन्दित होकर नरक में जायेंगे इसलिये अपने पुत्रों और पाण्डवों के साथ समानता का व्यवहार कीजिये ॥

## विंशः श्लोकः

**नेह चात्यन्तसंवासः कर्हिचित् केनचित् सह ।**
**राजन् स्वेनापि देहेन किमु जायात्मजादिभिः ॥२०॥**

पदच्छेद— न इह च अत्यन्त संवासः कर्हिचित् केनचित् सह ।
राजन् स्वेन् अपि हेहे न किमु जाया आत्मज आदिषु ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| न | ८. | नहीं होता है | राजन् | १. | हे राजन् |
| इह च | २. | इस संसार में | स्वेन | ९. | अपने |
| अत्यन्त | ६. | सदा | अपि | ११. | भी (बिछुड़ना पड़ता है) |
| संवासः | ७. | रहना | देहेन | १०. | शरीर से |
| कर्हिचित् | ३. | कभी | किमु | १५. | कहना ही क्या है |
| केनचित् | ४. | किसी के | जाया | १२. | फिर (स्त्री) |
| सह । | ५. | साथ | आत्मज | १३. | पुत्र |
| | | | आदिभिः ॥ | १४. | आदि से तो |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस संसार में कभी किसी के साथ सदा रहना नहीं होता है । अपने शरीर से भी बिछुड़ना पड़ता है । फिर स्त्री, पुत्र आदि से तो कहना ही क्या है ॥

## एकविंशः श्लोकः

एकः प्रसूयते जन्तुरेक एव प्रलीयते ।
एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम् ॥२१॥

पदच्छेद— एकः प्रसूयते जन्तुः एकः एव प्रलीयते ।
एकः अनुभङ्क्ते सुकृतम् एकः एव च दुष्कृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| एकः | २. | अकेला | एकः | ७. | अकेला |
| प्रसूयते | ३. | पैदा होता है और | अनुभुङ्क्ते | ६. | भुगतता है |
| जन्तुः | १. | जीव | सुकृतम् | ८. | पुण्य का फल |
| एकः | ४. | अकेला | एकः एव | ११. | अकेला ही |
| एव | ५. | ही | च | १०. | और |
| प्रलीयते । | ६. | मर कर जाता है | दुष्कृतम् ॥ | १२. | पाप का फल भोगता है |

श्लोकार्थ—जीव अकेला पैदा होता है। और अकेला ही मर कर जाता है। अकेला पुण्य का फल भुगतता है। और अकेला ही पाप का फल भोगता है ॥

## द्वाविंशः श्लोकः

अधर्मोपचितं वित्तं हरन्त्यन्येऽल्पमेधसः ।
सम्भोजनीयापदेशैर्जलानीव जलौकसः ॥२२॥

पदच्छेद— अधर्म उपचितम् वित्तम् हरन्ति अन्ये अल्प मेधसः ।
सम्भोजनीय अपदेशैः जलानीव जल ओकसः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अधर्म | ४. | अधर्म से | सम्भोजनीय | १. | हम भरण-पोषण करने वाले हैं |
| उपचितम् | ५. | बढ़े हुये | अपदेशैः | २. | इस प्रकार की बातें बना कर |
| वित्तम् | ६. | धन को | जलानि इव | ११. | जल को (उन्हीं के सम्बन्धी चाट जाते हैं)। |
| हरन्ति | ८. | हरण कर लेते हैं | इव | ६. | जैसे |
| अन्ये | ७. | दूसरे | जल ओकसः ॥ | १०. | जल में रहने वाले जन्तु के |
| अल्प मेधसः । | ३. | मूर्ख प्राणी के | | | |

श्लोकार्थ—हम भरण-पोषण करने वाले हैं—इस प्रकार की बातें बना कर मूर्ख प्राणी के अधर्म से बढ़े हुये धन को दूसरे हरण कर लेते हैं, जैसे जल में रहने वाले जन्तु के जल को उन्हीं के सम्बन्धी चाट जाते हैं।

# त्रयोविंशः श्लोकः

पुष्णाति यानधर्मेण स्वबुद्ध्या तमपण्डितम् ।
तेऽकृतार्थं प्रहिण्वन्ति प्राणा रायः सुतादयः ॥२३॥

पदच्छेद— पुष्णाति यान् अधर्मेण स्वबुद्धया तम् अपण्डितम् ।
ते अकृतार्थम् प्रहिण्वन्ति प्राणा रायः सुत आदयः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुष्णाति | ४. | पालता-पोसता है | ते | ७. | वे |
| याम् | २. | जिसे (वह) | अकृतार्थम् | ११. | असन्तुष्ट |
| अधर्मेण | ३. | अधर्म से | प्रहिण्वन्ति | १२. | छोड़कर चले जाते हैं |
| स्वबुद्धया | १. | अपना समझ कर | प्राणाः | ८. | प्राण |
| तम् | ५. | उस | रायः | ९. | धन और |
| अपण्डितम् । | ६. | मूर्ख को | सुतआदयः ॥ | १०. | पुत्र आदि |

श्लोकार्थ—अपना समझकर जिसे वह अधर्म से पालता-पोसता है, उस मूर्ख को वे प्राण, धन, और पुत्र आदि आदि असन्तुष्ट छोड़कर चले जाते हैं ॥

# चतुर्विंशः श्लोकः

स्वयं किल्विषमादाय तैस्त्यक्तो नार्थकोविदः ।
असिद्धार्थो विशत्यन्धं स्वधर्म विमुखस्तमः ॥२४॥

पदच्छेद— स्वयम् किल्विषम् आदाय तैः त्यक्तः न अर्थ कोविदः ।
असिद्ध अर्थः विशति अन्धम् स्वधर्म विमुखः तमः ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वयम् | ७. | स्वयं | असिद्ध | १०. | प्रयोजन बिना सिद्ध |
| किलिवषम् | ८. | पाप | अर्थः | ११. | किये ही |
| आदाय | ९. | लेकर (अपना) | विशति | १४. | प्रवेश करता है |
| तैः | ५. | उन सगे सम्बन्धियों से | अन्धम् | १२. | घोर |
| त्यक्तः | ६. | छोड़ा जाने पर | स्वधर्म | ३. | अपने धर्म से |
| न अर्थः | २. | न जानने वाला | विमुखः | ४. | विमुख व्यक्ति |
| कोविदः । | १. | स्वार्थ को | तमः ॥ | १३. | नरक में |

श्लोकार्थ—स्वार्थ को न जानने वाला अपने धर्म से विमुख व्यक्ति उन सगे सम्बन्धियों से छोड़ा जाने पर स्वयं पाप लेकर अपना प्रयोजन बिना सिद्ध किये ही घोर नरक में प्रवेश करता है ॥

## पञ्चविंशः श्लोकः

**तस्माल्लोकमिमं राजन् स्वप्नमायामनोरथम् ।**
**वीक्ष्यायम्यात्मनाऽऽत्मानं समः शान्तो भव प्रभो ॥२५॥**

पदच्छेद— तस्मात् लोकम् इमम् राजन् स्वप्न माया मनोरथम् ।
वीक्ष्य आयम्य आत्मना आत्मानम् समः शान्तः भव प्रभो ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तस्मात् | ३. | इसलिये | वीक्ष्य | ९. | समझ कर |
| लोकम् | ५. | लोक को | आयम्य | १२. | रोक कर |
| इमम् | ४. | इस | आत्मना | १०. | अपने से |
| राजन् | १. | हे राजन् ! | आत्मानम् | ११ | अपने चित्त को |
| स्वप्न | ६. | स्वप्न | समः शान्तः | १३. | समत्व में शान्त |
| माया | ७ | माया और | भव | १४. | हो जाइये |
| मनोरथम् । | ८. | मनो राज्य | प्रभो ॥ | २. | प्रभो ! |

श्लोकार्थ—हे राजन् ! प्रभो ! इसलिये इस लोक को स्वप्न माया और मनो राज्य समझ कर अपने से अपने चित्त को रोक कर समत्व में शान्त हो जाइये ॥

## षड्विंशः श्लोकः

**धृतराष्ट्र उवाच—यथा वदति कल्याणीं वाचं दानपते भवान् ।**
**तथानया न तृप्यामि मर्त्यः प्राप्य यथामृतम् ॥२६॥**

पदच्छेद— यथा वदति कल्याणीम् वाचम् दानपते भवान् ।
तथा अनया न तृप्यामि मर्त्यः प्राप्य यथा अमृतम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यथा | ३. | जिस प्रकार | तथा | ८. | उसी प्रकार |
| वदति | ६. | कह रहे हैं | अनया | ७. | उससे |
| कल्याणीम् | ४ | कल्याण की | न तृप्यामि | ९. | मैं नहीं तृप्त हो रहा हूँ |
| वाचम् | ५ | बात | मर्त्यः | ११. | मनुष्य |
| दानपते | १. | अक्रूर जी | प्राप्य | १३. | पाकर (तृप्त नहीं होता है) |
| भवान् । | २ | आप | यथा | १०. | जैसे |
| | | | अमृतम् ॥ | १२. | अमृत को |

श्लोकार्थ—अक्रूर जी आप जिस प्रकार कल्याण की बात कह रहे है। उससे उसी प्रकार मैं नहीं तृप्त हो रहा हूँ, जैसे मनुष्य अमृत को पाकर तृप्त नहीं होता है ॥

## सप्तविंशः श्लोकः

**तथापि सूनृता सौम्य हृदि न स्थीयते चले ।**
**पुत्रानुरागविषमे विद्युत् सौदामनी यथा ॥२७॥**

पदच्छेद— तथापि सूनृता सौम्य हृदि न स्थीयते चले ।
पुत्र अनुराग विषमे विद्युत् सौदामनी यथा ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तथापि | १. तो भी | पुत्र | ३. पुत्रों के प्रति (अत्यन्त) |
| सूनृता | ८. आप की यह (प्रिय शिक्षा) | अनुराग | ४. स्नेह के कारण |
| सौम्य | २. हे सौम्य अक्रूर जी | विषमे | ५. विषम (तथा) |
| हृदि | ७. हृदय में | विद्युत् | १२. बिजली नहीं ठहरती है |
| न स्थीयते | ९. नहीं ठहर रही है | सौदामनी | ११. मेघ की |
| चले । | ६. चञ्चल मेरे | यथा ॥ | १०. जैसे |

श्लोकार्थ—तो भी हे सौम्य अक्रूर जी ! पुत्रों के प्रति अत्यन्त स्नेह के कारण विषम तथा चञ्चल मेरे हृदय में आप की यह प्रिय शिक्षा नहीं ठहर रही हैं। जैसे मेघ की बिजली नहीं ठहरती है ॥

## अष्टाविंशः श्लोकः

**ईश्वरस्य विधिं को नु विधुनोत्यन्यथा पुमान् ।**
**भूमेर्भारावताराय योऽवतीर्णो यदोः कुले ॥२८॥**

पदच्छेद— ईश्वरस्य विधिम् कः नु विधुनोति अन्यथा पुमान् ।
भूमेः भारावताराय यः अवतीर्णः यदोः कुले ॥

शब्दार्थ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ईश्वरस्य | १. ईश्वर के | भूमेः | ८. पृथ्वी का |
| विधिम् | २. विधान में | भारावताराय | ९. भार उतारने के लिये |
| कः नु | ३ भला कौन | यः | ७. जो |
| विधुनोति | ६. कर सकता है | अवतीर्णः | १२. अवतीर्ण हुये हैं |
| अन्यथा | ५. उलट-फेर | यदोः | १०. यदु के |
| पुमान् । | ४. पुरुष | कुले ॥ | ११. वंश में |

श्लोकार्थ—ईश्वर के विधान में भला कौन पुरुष उलट-फेर कर सकता है। जो पृथ्वी का भार उतारने के लिये यदु के वंश में अवतीर्ण हुये हैं ॥

## एकोनत्रिंशः श्लोकः

**यो दुर्विमर्शपथया निजमाययेदं सृष्ट्वा गुणान् विभजते तदनुप्रविष्टः ।**
**तस्मै नमो दुरवबोधविहारतन्त्रसंसारचक्रगतये परमेश्वराय ॥२९॥**

पदच्छेद—यः दुर्विमर्श पथया निज मायया इदम् सृष्ट्वा गुणान् विभजते तत् अनुप्रविष्टः ।
तस्मै नमः दुरवबोध विहार तन्त्र संसार चक्र गतये परमेश्वराय ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| यः दुर्विमर्श | १. | जो अचिन्त्य | तस्मै | ९. | उन |
| पथयानिज | २. | मार्ग वाली अपनी | नमः | १६. | नमस्कार है |
| मायया इदम् | ३. | माया से इस संसार की | दुरव बोध | १३. | अचिन्त्य |
| सृष्ट्वा | ४. | सृष्टि करके | विहार तन्त्र | १४. | लीला शक्ति वाले |
| गुणान् | ७ | गुणों (कर्म तथा कर्म फलों का) | संसार | १०. | संसार |
| विभजेत् | ८. | विभाजन करते हैं | चक्र | ११. | चक्र की |
| तत् | ५. | इसमें | गतये | १२. | चाल में कारण रूप |
| अनुप्रविष्टः। | ६. | प्रवेश करते हैं और | परमेश्वराय। | १५. | परमेश्वर को |

श्लोकार्थ—जो अचिन्त्य मार्ग वाली अपनी माया से इस संसार की सृष्टि करके इसमें प्रवेश करते हैं। और गुणों कर्म तथा कर्म फलों का विभाजन करते हैं, उन संसार चक्र की चाल में कारण रूप अचिन्त्य लीला शक्ति वाले परमेश्वर को नमस्कार है ॥

## त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **इत्यभिप्रेत्य नृपतेरभिप्रायं स यादवः ।**
**सुहृद्भिः समनुज्ञातः पुनर्यदुपुरीमगात् ॥३०॥**

पदच्छेद— इति अभिप्रेत्य नृपतेः अभिप्रायम् सः यादवः ।
सुहृद्भिः समनुज्ञातः पुनः यदुपुरीम् अगात् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इति | १. | इस प्रकार | सुहृद्भिः | ७. | स्वजन (सम्बन्धियों) से |
| अभिप्रेत्य | ४. | जान कर | समनुज्ञातः | ८. | अनुमति लेकर। |
| नृपतेः | २. | राजा (धृतराष्ट) का | पुनः | ९. | फिर |
| अभिप्रायम् | ३. | अभिप्राय | यदु | १०. | मथुरा |
| सः | ५ | वे | पुरीम् | ११. | पुरी में |
| यादवः। | ६. | यादव (अक्रूर जी) | अगात्। | १२. | लौट आये |

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा धृतराष्ट्र का अभिप्राय जानकर वे यादव अक्रूर जी स्वजन सम्बन्धियों से अनुमति लेकर फिर से मथुरा पुरी में लौट आये ॥

## एकत्रिंशः श्लोकः

**शशंस रामकृष्णाभ्यां धृतराष्ट्रविचेष्टितम् ।**
**पाण्डवान् प्रति कौरव्य यदर्थं प्रेषितः स्वयम् ॥३१॥**

पदच्छेद—

शशंस राम कृष्णाभ्याम् धृतराष्ट्र विचेष्टितम् ।
पाण्डवान् प्रति कौरव्य यदर्थम् प्रेषितः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शशंश | ७. | बता दिया | पाण्डवान् प्रति | २. | पाण्डवों के प्रति |
| राम | ५. | बलराम और | कौरव्य | १. | हे परीक्षित् ! |
| कृष्णाभ्याम् | ६. | श्रीकृष्ण को | यदर्थम् | ८. | जिसके लिये |
| धृतराष्ट्र | ३. | धृतराष्ट्र का | प्रेषितः | १०. | भेजे गये थे |
| विचेष्टितम् । | ४. | व्यवहार | स्वयम् ॥ | ६. | वे स्वयम् |

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पाण्डवों के प्रति धृतराष्ट्र का व्यवहार बलराम और श्रीकृष्ण को बता दिया । जिसके लिये वे स्वयम् भेजे गये थे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे वैयासिक्यामष्टादश साहस्र्यां पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥४६॥

॥ दशमस्कन्धस्य पूर्वार्धं समाप्तम् ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु

## ईश प्रार्थना

केशव रखना मेरी लाली ।।केशव०।।
गिरधर माधव अलख निरंजन कमलापति वनमाली ।।केशव०।।

परमेश्वर नारायण श्री पति करुणामय गोपाली ।
विश्वम्भर जगपालक व्रजपति, पतित उधारननामी ।।केशव०।।

कृपासिन्धु गोपी मनरञ्जन, कंसनिकन्दन प्यारी ।
राधावर मुकुन्द मधुसूदन, अधर मुरलियाधारी ।।केशव०।।

चक्रपाणि दामोदर श्रीधर, गोकुल के रखवारी ।
मनमोहन घनश्याम जगत्पति, तीन लोक से न्यारी ।।केशव०।।

पारब्रह्म मङ्गल सुख दायक, माखन चाखन हारी ।
पाप क्षमा कर दो हम सबके, हे गोविन्द मुरारी ।।केशव०।।

हृदय तुम्हारा प्रेम सरोवर, राधा मञ्जु मराली ।
देख मनोहर दृश्य यह, नाचैं शिव दै तारी । केशव०।।

## ईश्वर प्रार्थना

ओ अनन्त तुम निखिल नियन्ता, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हो ।
रघुनन्दन यदुनन्दन हो तुम, सम्पूर्ण देवि देवेश्वर हो ।।ओ०।।

निराकार साकार सगुण तुम, निर्गुण भी हो त्रिगुणेश्वर हो ।
अजअनादि अव्यक्त अगोचर, सर्वेश्वर परमेश्वर हो ।।ओ०।।

अखिलेश्वर तुम अविनाशी, अजरामर लोको जागर हो ।
निर्विकार निर्लिप्त निरञ्जन, भक्त हृदय नट नागर हो ।।ओ०।।

दीन बन्धु हो प्रेम सिन्धु हो, अक्षय करुणा सागर हो ।
अतुलित वैभव ऋद्धि-सिद्धि पति, सकल शक्ति के आगर हो ।।ओ०।।

जगाधार पंकिल तमसावृत, अन्त स्थल उज्ज्वल कर दो ।
विनय यही नीरस जीवन की, प्रभो प्रेम पूरण कर दो ।ओ०।।

दया सिन्धु कर उद्‌बोधन, विस्मृत प्राणी को सत्वर दो ।
भव के भय से मुक्त करो, सर्वज्ञ विभो मङ्गल कर दो ।।ओ०।।

## ईश प्रार्थना

दीनबन्धु दीनों को तुमने, युग - युग दिया सहारा।
मेरे जैसे महादीन को, कैसे नाथ विसारा ॥दीन०॥

भव सागर में गिरे जनों को, नौका नाम तुम्हारा।
दीख न पड़ता मुझको भगवन्, उसका कोर किनारा ॥दीन०॥

सुख की मृग तृष्णा के पीछे, जीवन व्यर्थ गुजारा।
जीवन पथ पर भटक रहा हूँ, व्यर्थ प्रयत्न हमारा ॥दीन०॥

दया सिन्धु दीनों ने जब - जब, तुमको कभी पुकारा।
दौड़े आये शीघ्र वहाँ पर, किया दुःख से न्यारा ॥दीन०॥

दीनबन्धु कहलाते आये, यह है सुयश तुम्हारा।
करुणामय सुनो करुण प्रार्थना, पकड़ो हाथ हमारा ॥दीन०॥

## ईश्वर नमस्कार

हे अनन्त प्रभु पाद पद्म में, शत - शत नमो नमः।
श्री अनन्त प्रतिमा अनन्त में, शत - शत नमो नणः ॥

तू अनन्त नभ तू अनन्त प्रभ, महाकाल विकराल तू अलभ।
चित्त अनन्त प्रज्ञा अनन्त में, शत - शत नमो नमः ॥

हे अनन्त रस दिगि दिगन्तरस, देव संसृति वाङ्मय वसन्तरस।
चन्द्र सुधा ज्योत्सना अनन्त में, शत - शत नमो नमः ॥

तू अनन्त श्रुति तू अनन्त धृति, प्रमति अनन्त हे अनन्त कलाकृत्ति।
संसृति लास्य विलास अमित गति, शत - शत नमो नमः ॥